GLSANS294.5211
DAI

125353
LBSNAA

:त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
l Academy of Administration
मसूरी
MUSSOORIE
पुस्तकालय
LIBRARY

अवाप्ति संख्या
Accession No. ~~12893~~ 125353
वर्ग संख्या GL Sans
Class No. 294.5211
पुस्तक संख्या
Book No. दैवत DAI

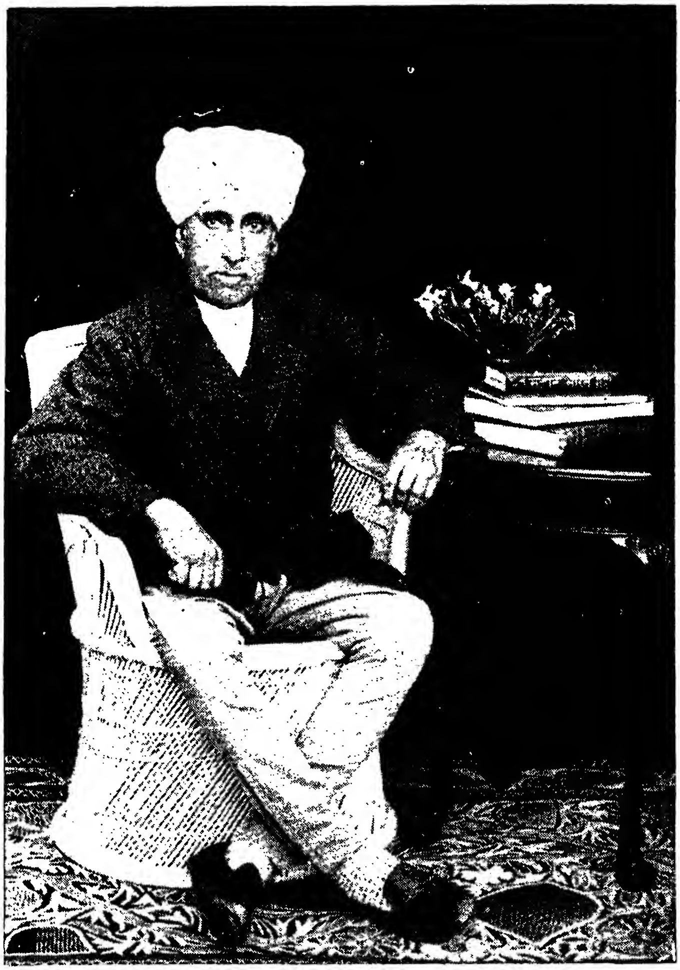

पं० नाथूलालजी शर्मा जोशी, पेन्शनर, आदर्शनगर-अजमेर

एकसहस्रोत्तरनवशताधिकाष्टादशे विक्रमाब्दे ज्येष्ठस्य शुक्लपक्षस्य षष्ठ्यां तिथौ सिंहलग्ने लब्धजन्मना, राजस्थानान्तर्गत-कृष्णगढाधीशस्य ['हिज हाईनेस' उपाधिविभूषितस्य] राष्ट्रकूटा-(राठोडा) न्वयमुक्तामणेर्पुरन्दरपुरातिथेर्महाराजाधिराज-श्री-शार्दूलसिंहस्य सूनोः मदनसिंहदेववर्मणो राजपरिषदि सेवां विधाय सम्मानितेन श्रीनगरवासिनः गुर्जरगौडविप्रांतर्गत-मुद्गलगोत्रोत्पन्नस्य जोशी इत्युपाह्वस्य श्री-पंडित-बदरीनाथस्यात्मजेन नाथूलालशर्मणा, भूतपूर्वेण कृष्णगढराज्यस्य न्यायाधीशेन सम्प्रति सेवानिवृत्तेन अजमेरांतर्गतमादर्शनगरमधिवसता दैवतसंहितामुद्रणार्थं द्विसहस्रमिता मुद्राः प्रदत्तास्तेन धनेन मुद्रितोऽयं दैवतसंहिताग्रन्थः ।

राष्ट्रकूट (राठोड) नामसे विख्यात क्षत्रिय कुलके विभूषण, कृष्णगढ (राजस्थान) रियासतके नरेश, हिज हाईनेस स्वर्गीय महाराजाधिराज श्री शार्दूल सिंहके सुपुत्र स्व० श्री० महाराजाधिराज हिज हाईनेस वीरश्रेष्ठ श्री महाराजा मदनसिंहजी देववर्माकी सेवाद्वारा सम्मानित हुए और श्रीनगर (अजमेर) के निवासी गुर्जर गौड ब्राह्मणजातिके अंतर्गत मुद्गल गोत्रमें उत्पन्न श्री पंडित बदरीनाथके सुपुत्र नाथूलालजी जोशी, जो अब कृष्णगढरियासत के सेवानिवृत्त न्यायाधीश हैं और आदर्शनगरमें निवास करते हैं। जन्म विक्रम संवत् १९१८ ज्येष्ठ शुक्ला ६ सिंहलग्न। आपने दैवतसंहिताके मुद्रण के लिये २०००) दो सहस्र रु० का दान किया, जिससे दैवतसंहिता मुद्रित हुई है।

दैवत-संहिता

(१)

अग्निदेवता

संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)

संवत् १९९८, शक १८६३, सन १९४१

मुद्रक और प्रकाशक- श्री० दा० सातवळेकर, B. A.
स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध, (जि० सातारा)

दैवत-संहिता का परिचय ।

दैवत-संहिताका प्रथम भाग पाठकोंके सामने रखा जाता है, इसका अध्ययन पाठक करें ।

अग्निदेवता के करीब ढाई हजार मंत्र संग्रहित हुए हैं और **इन्द्रदेवता** के करीब साढे तीन हजार मंत्र संग्रहित हुए हैं । अर्थात् दोनों देवताओं के मिलकर करीब छः हजार अर्थात् आधे ऋग्वेद के जितने मन्त्र हुए हैं । इससे वेदमें इन दोनों देवताओं का महत्व कितना है यह स्पष्ट होता है । वेदों में इन दो देवताओं के जितने मन्त्र हैं, करीब उतने ही अन्य सब देवताओं के मिलकर हैं । वेदों का आधा भाग इन दो देवताओं के लिये समर्पित हुआ है, इससे स्पष्ट हो जाता है कि, इन देवताओं का महत्व वेद में अधिकसे अधिक है ।

प्रत्येक देवता के मन्त्र छापनेके बाद (१) **पुनरुक्त मंत्र** तथा **पुनरुक्त मन्त्रभागों की सूची** छापी है । इस सूची से कौनसा मन्त्र कहां दुबारा आया है, यह स्पष्ट हो जाता है, जो स्वाध्याय के लिये और नित्य पाठसे अर्थज्ञान होने के लिये अत्यन्त ही आवश्यक है । इस के पश्चात् मंत्रों की (२) **वर्णानुक्रमसूची** छापी है, जिससे कौनसा मंत्र कहां है, इसका पता लगता है । केवल मन्त्र छापे जांय और सूची न हो, तो कौनसा मन्त्र कहां है, इसका पता नहीं लग सकता। इस कारण से यह सूची आवश्यक है । इसके पश्चात् (३) '**विशेषणसूची**' छापी है । अग्निदेवता के स्वरूप का निर्णय उस देवता के विशेषणों से हो सकता है । ये सब विशेषण इस सूची में वर्णानुक्रम से दिये हैं और उनके पते भी दिये हैं । चतुर्थ सूची (४) '**उपमाओं की सूची**' है । अग्नि को कितनी उपमाएं वेद में दी हैं, यह इससे पता लग सकता है । उपमाओं से देवता के स्वरूप की पहचान होती है ।

इस तरह सूचियां प्रत्येक देवता के साथ रहेंगीं । पाठक विचार करके देखेंगे, तो उन को पता लग जायगा कि, इन सूचियों के विना दैवतों का मंत्रसंग्रह विशेष लाभदायक नहीं होगा ।

आजतक किसीने इन सूचियोंका संग्रह नहीं किया था । कोई पाठक अब इन सूचियों के विचार से अर्थात् अग्नि आदि देवताओं के **विशेषण, उपमा, पुनरुक्त मन्त्रभाग** आदि का मनन करके अग्निदेवता का ठीकठीक स्वरूप जान सकता है । यह सुविधा इस से पूर्व नहीं थी । यह सुविधा **दैवत-संहिताद्वारा** हो रही है । जैसी अग्निदेवता की ये सूचियां छापी हैं, वैसी ही इन्द्र की भी छपेंगीं और अन्यान्य देवताओंकी भी छपेंगीं ।

जो पाठक इन के बनानेके कष्टों को जानेंगे और इनका महत्व स्वाध्यायमें कितना है, यह समझेंगे, वे इनका उपयोग करके देवताका स्वरूप ठीकठीक जानेंगे ।

आर्षेय-संहिता ।

सब वेदोंमें जो मन्त्र हैं, वे विभिन्न विभागोंमें बांटे हैं, जैसा (१) ऋग्वेद के प्रथम सात मण्डलों के सब मन्त्र ऋषिवार ग्रथित हैं, केवल नवम मण्डल दैवत-संहिता के रूप में है, अर्थात् इस में 'सोम' देवताके ही मन्त्र हैं । प्रथम के छः मण्डल ऋषिवार हैं—

२. द्वितीय	मण्डल	गृत्समद ऋषि	सूक्त	४३	मंत्र	४२९
३. तृतीय	"	विश्वामित्र	"	६२	"	६१७
४. चतुर्थ	"	वामदेव	"	५८	"	५८९
५. पञ्चम	"	अत्रि	"	८७	"	७२७
६. षष्ठ	"	भरद्वाज	"	७५	"	७६५
७. सप्तम	"	वसिष्ठ	"	१०४	"	८४१

यदि चतुर्थ और तृतीय आगेपीछे किये जांय, तो ये मण्डल '**बढती हुई मन्त्रसंख्या**' के दीखते हैं ।

प्रथम मण्डलके सूक्त १९१ हैं, वैसे ही दशम मण्डलके भी १९१ ही सूक्त हैं । पर प्रथम मण्डल की मंत्रसंख्या २००६ है और दशम मण्डलकी १७५४ है । अष्टम मण्डल बहुतांश '**कण्व**' ऋषिवाला दीखता है और प्रथम मण्डल मधुच्छंदा से शुरू है । पर इन दोनों में अन्यान्य ऋषियों के भी मंत्र दीखते हैं, इस का कारण भी है ।

इस ऋग्वेद में केवल नवम मण्डल 'दैवत-संहिता' है, शेष मण्डल प्रायः 'आर्षेय-संहिता' के रूप में हैं। इस नवम मण्डल के सोमदेवता के मन्त्र देखने से हमें दैवत-संहिताकी कल्पना प्रथम आ गयी। और वह हमने पाठकोंके सामने रख दी, जो प्रायः सब पाठकोंको पसंद आ गयी।

हार्दिक धन्यवाद।

इस संहिता की कल्पना पसंद आते ही अजमेरनिवासी श्री० पं० **नथूलाल शर्माजी** पेन्शनर ने इस के निर्माण और मुद्रण के लिये दो सहस्र रु० का दान किया, जिससे इस का कार्य शुरू हुआ है। इनके सब स्वाध्यायशील सज्जनोंपर उक्त दानके कारण अनन्त उपकार हुए हैं। अतः वे धन्यवाद के लिये पात्र हैं।

दैवत-संहिता के निर्माण करने में प्रथम हमारी इतनी हि इच्छा थी कि, केवल एक एक देवता के मंत्र छाटकर एक स्थानपर छापना और इसमें जैसे ऋषिवार मंत्र हैं वैसे ही रखना। अर्थात् एक देवताके मंत्र एक स्थानपर छापना और उस एक देवताके मंत्रों में एक एक ऋषि के मन्त्र इकट्ठे छापना। इससे नित्य पाठ करनेवालोंके लिये आसानी होगी, और अर्थ का विचार करनेवालों के लिये भी अर्थ का मनन करना सहज हो जायगा।

इस समय एक देवता के मंत्र किसी वेदमें एक स्थानपर नहीं हैं। इसलिये किस देवता के विषय में कहां क्या लिखा है, इसका किसी को पता नहीं रहता, अनुसन्धान करना कठिन होता है। 'दैवत-संहिता' बननेसे प्रत्येक देवताके मन्त्र इकट्ठे होंगे और स्वाध्याय करना सुगम हो जायगा।

उक्त प्रकार सहायता आते ही हमने **अग्निमन्त्रों** का मुद्रण करना शुरू किया। इस समय विचार यही था कि, साल दो साल में देवतावार चारों वेदों के मन्त्र छाटकर छाप देना। इससे अधिक विचार इस समय नहीं था। इस कारण इस समय हमने जो विज्ञापन छापे, उसमें इस दैवत-संहिता का मुद्रण दो वर्षोंमें होगा, ऐसा छाप दिया था।

सूचियाँ।

अग्नि-मंत्रों का मुद्रण होते होते, यह विचार मन में आया कि यदि इन देवता-मंत्रों के साथ साथ—

(१) अकारादि मन्त्रसूची।
(२) पुनरुक्त मन्त्र-भागोंकी सूची।
(३) विशेषण-सूची।
(४) उपमा-सूची।

ऐसी सूचियाँ दी जायगीं, तो देवता-निर्णय करना सुगम हो जायगा और स्वाध्याय करनेवालों की बहुत ही सहायता हो जायगी।

ऐसा करनेसे पृष्ठसंख्या डेढ गुनी हो जायगी, यह भी ख्याल आया और डेढ गुना व्यय भी बढेगा, इसका भी विचार हुआ। पर स्वाध्याय करनेवाला जो कोई होगा उसकी सहायता होनी चाहिये। एक स्वाध्याय करनेवाले को भी सहायता मिली, तो हमारे श्रम और सब व्यय सफल हुए, ऐसा विचार करके हमने उक्त सूचियां छापी हैं।

स्वाध्याय की सहायता निर्माण करना, व्यय का भी विचार करना नहीं, पर जो आवश्यक वेद का भाग है, वह छापना। यह हमारा विचार हुआ है और इस दिशा से कार्य चलाया जा रहा है।

दैवत-संहिताकी प्राचीनता।

ऋग्वेद में ही नवम मण्डल **दैवत-संहिता** ही है, वेदमें इतनाही दैवतसंहिता का नमूना है, ऐसा हमारा पहिले ख्याल था। पर सामवेद का विचार करते करते यह बात स्पष्ट हुई है कि, **सामवेद-पूर्वार्ध** निःसंदेह **दैवत-संहिता** है, देखिये—

पूर्वार्ध में- १. **आग्नेय काण्ड** ११४ मंत्र
२. **ऐन्द्र काण्ड** ३५२ मंत्र
३. **पावमान काण्ड** ११९ मंत्र

इस तरह तीन देवताओंके मंत्र पूर्वार्धमें क्रमपूर्वक हैं। यह **दैवत-संहिता** ही है। अर्थात् जैसी ऋग्वेद के नवम मण्डल में सोम की **दैवत-संहिता** है, वैसीहि सामवेद-पूर्वार्ध में तीन देवताओंकी '**दैवत-संहिता**' ही है। अतः हम अब कह सकते हैं कि, '**दैवत-संहिता**' की कल्पना, यद्यपि हमारी कल्पना में उत्पन्न हुई ऐसा हमें प्रथम प्रतीत हुआ, तथापि वह कल्पना निःसंदेह वैदिक है और इस का स्वरूप ऋग्वेद के नवम मण्डल में तथा सामवेद के पूर्वार्ध में आज भी दीख पडता है।

छांदस-संहिता।

सामवेद-पूर्वार्ध देखने से एक और बात भी स्पष्ट हो गयी कि, यहां गायत्री, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, बृहती ऐसे छंद-वार मंत्र संग्रहित हुए हैं। वेद के अध्ययन की जो पाठ-विधि हमने निर्धारित की है, उस में भी हमने अपने अनुभव से छन्द के क्रम से ही पाठविधि निर्धारित की है। यही प्रणाली सामवेद में हमें दीख रही है । अर्थात् यह 'छांदस-संहिता' भी वैदिक ही है।

इस पद्धति को अनुसरते हुए हमें इस दैवत-संहिता में छन्दों के क्रम से हि मन्त्र रखने चाहिये थे। पर हमने ऋषियों के क्रम से ही रखे हैं, जैसे ऋग्वेद में हैं। छन्द के क्रम से रखने से अध्ययन की सुगमता होती है, यह सत्य है; पर ऋषिक्रम में भी बडा लाभ है । दोनों लाभ एक ही ग्रन्थ में शामील नहीं किये जा सकते। इसलिये हमने ऋग्वेद-क्रम को प्राधान्य देकर देवता के मन्त्र ऋषि-क्रमानुसार रखे हैं और उसकी उक्त सूचियां भी दी हैं।

इस ग्रन्थमें अग्निके मन्त्र सूचियोंसमेत तथा इन्द्रके मंत्र भी सूचियोंसमेत हैं।

इन दो देवताओं के मन्त्र चारों वेदों के मन्त्र-संग्रह के तीसरे भाग के बराबर हैं। अर्थात् इन दो देवताओं की हि मन्त्र-संख्या अधिक है। इसके आगे के देवता बहुत मन्त्र-वाले नहीं हैं। एक तिहाई मन्त्रसंख्या में ये दो देवता हैं और दो-तिहाई मंत्रसंख्या में संपूर्ण अन्य देवतागण हैं।

मंत्रोंके तीन संग्रह।

सब मंत्रोंके तीन प्रकारके संग्रह हो सकते हैं (१) एक आर्षेय मंत्रसंग्रह, इसी को 'आर्षेय-संहिता' कह सकते हैं। ऋग्वेदका मुख्य भाग इस तरहके संग्रहका है। (२) दूसरी 'दैवत-संहिता'। ऋग्वेदका नवम मंडल तथा सामवेद पूर्वार्धमें इस तरह का संग्रह है। यह दैवत-संहिता भी उसी का अनुसरण करके बनायी है । (३) तीसरी 'छांदस-संहिता' जो छन्दानुसार मंत्रसंग्रहसे बनती है। सामवेद पूर्वार्ध में ऐसी ही रचना है । इससे एक छंद के मंत्र इकट्ठे रहते हैं।

ये तीन ही मंत्रसंग्रह बडे कामके हैं। वास्तवमें देखा जाय, तो सब वेदमंत्र इस तरहकी तीनों प्रकार की संहिताओं में छापने चाहिये। प्रत्येक के अध्ययन का विभिन्न फल है। इस तरह के मंत्रसंग्रह बननेके पूर्व साधारण मनुष्य नहीं जान सकता कि, इनसे क्या लाभ होगा। पर हम अनुभवसे कह सकते हैं कि, वेदमंत्रों का उत्तम अध्ययन करना है, तो इन तीनों मंत्रसंग्रहों की अत्यंत आवश्यकता है।

आर्षेय-संहिता से ऋषिपरंपरा का इन मंत्रोंके साथ जो संबंध है, वह जाना जा सकता है। ऋषिज्ञान के विना मंत्रज्ञान नहीं होता। यह प्राचीन परंपरा से सिद्ध हुई बात है। दैवत-संहितासे देवताओं का ज्ञान उत्तम हो सकता है। और छांदस-संहिता से शीघ्र अध्ययन हो सकता है। ये तीन लाभ इन तीन संहिताओं से स्पष्ट रूपसे होते हैं। अतः जो धन इन संहिताओंपर खर्च होगा, वह वेदसेवामें लगेगा, इसमें बिलकुल संदेह नहीं।

एक व्यर्थ भय।

जब हमने 'दैवत-संहिता' की कल्पना प्रगट की, तब कई लोगोंने हमें लिखा कि, यदि यह दैवतसंहिता बन गयी, तो मूल चार वेदोंकी संहिताएं कोई देखेगा नहीं। पर यह भय व्यर्थ है। ऊपर हमने तीनों प्रकारकी संहिताओंका वर्णन किया है, इनमें से एक दूसरे की मारक नहीं है, परंतु ये सब परस्पर उपकारक ही हैं।

इसलिये ऐसा भय करनेकी कोई भी आवश्यकता नहीं है। अध्ययनोंके मार्ग सुगम करने ही चाहियें। यही हमारा कार्य है, जो इस दैवत-संहिता द्वारा किया गया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि, इससे वेदपाठकों का अत्यंत लाभ होगा और वेद का तत्त्वज्ञान समझने में तथा उसके प्रचार में बडी सहायता होगी।

इस ग्रंथमें उपमा और विशेषणसूचियां श्री० पं० अनंत दिनकर रास्ते पूनानिवासीने बनायीं, इसलिये वे धन्यवाद के लिये योग्य हैं।

इस तरह यह दैवत-संहिता का प्रथम भाग पाठकोंके सामने रखा है। हमें पूर्ण आशा है कि सब वेदानुयायी इसका हार्दिक स्वागत करेंगे।

मार्गशीर्ष शुक्ल ६
शके १८६३
संवत १९९८

संपादक
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
अध्यक्ष-स्वाध्याय मंडळ, औंध

अग्निदेवता का परिचय।

(१) विषयप्रवेश।

वेदकी " अग्नि-विद्या " ठीक प्रकार समझमें आनेके लिये सबसे प्रथम " अग्निदेवताका परिचय " होनेकी आवश्यकता है। देवताका परिचय हुए बिना मंत्रका आशय समझना अशक्य है। इस कारण हरएक देवताके विषयमें निश्चित ज्ञान होनेके लिये उस उस देवता के संपूर्ण मंत्रोंका उत्तम अध्ययन करके, प्रत्येक देवताका मंत्रोक्त स्वरूप निश्चित करनेके यत्न की आवश्यकता है। इस लिये अध्ययन करनेवालोंको उचित है कि, वे वेदमंत्रोंके अध्ययनसे वैदिक देवताका वैदिक स्वरूपही जाननेका यत्न करें। तथा जो विद्वान् इन देवताओंका रूपान्तर पुराणोंमें देखना चाहते हैं, वे वेद और पुराणोंका तुलनात्मक अध्ययन करें और दोनों कल्पनाओंमें समानता कहां है और विषमता कहां है, इस का निश्चय करें। ऐसा जिन्होंने किया नहीं है, उनके कथनमें बडी अशुद्धियां हुई हैं; इसलिये इस विषयमें पूर्वोक्त प्रकार सावधानता रखनेकी अत्यंत आवश्यकता है।

यहां इस निबंधमें अग्निदेवताका वैदिक स्वरूप निश्चित करनेका यत्न करना है।

(२) भाषामें अग्नि शब्दका भाव।

अग्निदेवताके स्वरूपका निश्चय इस लेखमें करना है। पाठक यहां कहेंगे कि, "अग्नि" के स्वरूपके निश्चय का तात्पर्य क्या है? अग्नि शब्द "आग" का पर्याय है और उसका उपयोग पकानेके समय हर एक दिन हम करते हैं। उसका स्वरूप सभी मनुष्य जानते हैं, इसलिये उसके स्वरूपका तो और क्या निश्चय करना है? इस शंकाके उत्तर में निवेदन है कि, यद्यपि "अग्नि" शब्द "आग" का वाचक है, तथापि वेदके अग्नि देवताके सब मंत्र "आग" का ही वर्णन कर रहे हैं, ऐसा मानना बडी भारी भूल है। लौकिक संस्कृत भाषामें भी "अग्नि" शब्दके आगके अतिरिक्त बहुतसे अन्य अर्थ हैं। जैसा—"अग्निजार वृक्ष, केशर, स्वर्ण, निंबु, भिलावा, चित्रक, रक्तचित्रक, कपित्थाष्टक, जठराग्नि, पित्त" आदि अनेक अर्थ लौकिक संस्कृत भाषामें भी अग्नि शब्दके हैं। इसलिये "अग्नि" शब्द केवल "आग" का ही वाचक मानना गलती है। इसके अतिरिक्त अग्निवाचक कई ऐसे शब्द हैं कि, जो "आग" में कदापि सार्थ नहीं हो सकते, इनमेंसे कुछ यहां देखिये—

(३) अग्निके पर्याय शब्द।

(१) वैश्वानरः=विश्वमें (नर) पुरुषशक्ति, विश्वका चालक, (विश्व) सब (नर) मनुष्योंके संबंधसे होनेवाला, इत्यादि।

(२) धनंजयः= धनको जीतनेवाला, धन प्राप्त करनेवाला।

(३) जातवेदाः= जिससे वेद उत्पन्न हुए हैं, जिससे धन उत्पन्न होता है, जिससे ज्ञान होता है।

(४) तनूनपात्=(तनू) शरीरोंको (न-पात्) न गिरानेवाला, जिसके कारण शरीरोंका पतन नहीं होता।

(५) रोहिताश्वः- लाल रंगके घोडोंसे युक्त।

(६) हिरण्यरेताः- सुवर्णका वीर्य।

(७) सप्तार्चिः-सात ज्वालाओंसे युक्त।

(८) सप्तजिह्वः-सात जिह्वाओंसे युक्त।

(९) सर्वदेवमुखः- सब देवोंमें प्रमुख, किंवा सब देवोंका मुख।

इत्यादि शब्द ' अग्नि ' के पर्याय हैं, परंतु ये ' आग ' में सार्थ नहीं हो सकते। उक्त शब्दोंका भाव ' आग ' में नहीं दिखाई देता है, कमसे कम उक्त अर्थ आगमें चरितार्थ होनेका अनुभव नहीं है। इस लिये ' अग्नि ' शब्दका आशय आगसे भिन्न मानना आवश्यक ही है। वेदमंत्रोंको देखकर भी यही निश्चय होता है। देखिये—

(४) पहला मानव " अग्नि "।

पहला जो मानव प्राणी हुआ था, उसका नाम ' अग्नि ' है, ऐसा वेदमें ही कहा है, देखिये—

त्वामग्ने प्रथममायुमायवे देवा अकृण्वन्नहुषस्य विश्पतिं। इळामकृण्वन्मनुषस्य शासनीं पितुर्यत् पुत्रो ममकस्य जायते ॥ (ऋ. १।३१।११)

"हे अग्ने! (नहुषस्य विश्पतिं) मनुष्योंके नरपतिरूप (त्वां प्रथमं आयुं) तुझ प्रथम मनुष्य को (देवाः) देवोंने (आयवे अकृण्वन्) मानवजातिके लिये बनाया है। (इळां) वाणी को (नहुषस्य शासनीं) मानवजातिकी शासनकर्त्री (अकृण्वन्) बनाई है। (यत् ममकस्य पितुः) जो ममत्वरूप पिताका पुत्र होता है।" उसके आगे वैसी ही संतति होती जाती है और वंशानुरूप वाणी आदिका प्रचार होता है। इस मंत्रका यह भाव देखनेसे निम्न बातोंका पता निःसंदेह लग जाता है—

(१) देवोंने जो पहला मानवप्राणी बनाया, उसीका नाम "अग्नि" था। मनुष्यजातिकी उत्पत्ति करनेकी इच्छासे देवोंने इस प्रथम मानवप्राणी को बनाया था।

(२) यही पहला मानव मनुष्यों का पिता होनेसे इसी को (विश्‍पति) नरपति अथवा नरेश कहते हैं।

(३) जिस प्रकार इस मानवप्राणी को प्रारंभ में देवोंने बनाया था, उसी प्रकार उसके साथ वाणी की भी उत्पत्ति की गई थी। इसे उसकी धर्मपत्नी भी मान सकते हैं।

(४) इस मानवमें ममता रखी गई है। इस ममत्व के कारण स्त्रीपुरुष इकट्ठे होते हैं और आगे संतति बढाते हैं, इसलिये सब संतति इस "ममत्व" की ही है और पिता की वाणी इसी कारण संतान बोलते हैं।

निघंटु २।३में मनुष्य नामोंमें 'आयवः (आयुः), नहुषः विशः' ये शब्द पठित होनेसे, इनका अर्थ मनुष्यही है। तथा निघंटु १।११ में '**इळा**' शब्द वाङ्नामों में पठित होनेसे इसका अर्थ वाणी है। देवोंके द्वारा इस प्रकार जो '**पहला मनुष्य**' बनाया गया, उसका नाम अग्नि है और उसकी पत्नी वाणी है। तात्पर्य, मनुष्योंमें भी अग्नि है, अर्थात् मानवप्राणी अग्नि शब्द से वेदमें लिया जाता है। वेदमंत्रों में अग्नि के अनेक अर्थ होंगे, परंतु उसमें एक अर्थ '**मानव प्राणी**' है, इसमें कोई शंका नहीं है। क्योंकि जो मानव-प्राणी सबसे प्रारंभ में देवोंने बनाया, उसके वंशजों में भी वही भाव और वही वाणी होने के कारण उसमें उसका 'अग्निपन' भी उतरा ही है। पिताके गुणधर्म आनुवंशिक होकर पुत्रमें उतरते हैं, इसी रीतिसे पिताका अग्निपन पुत्रों में उतरा है। '**अग्नि**' का '**वाणी**' के साथ संबंध इस प्रकार माना गया है। मनुष्य उत्पन्न होनेके पूर्व पशुपक्षियों की अनेक योनियोंमें अनेक प्राणी उत्पन्न हो गये थे, परन्तु जैसी वाणी की पूर्णता इस मनुष्यमें हुई है, वैसी किसी अन्य प्राणीमें नहीं हुई। इसलिये उक्त मन्त्रमें कहा है कि, **(१) जिस प्रकार मनुष्यरूप अग्निको मानवजातिके पितृस्थानमें देवोंने उत्पन्न किया, (२) उसी प्रकार वाणीको मानवजातिकी शासनकर्त्री देवोंने बनाई।** और मानवका इस वाणीके साथ सम्बन्ध भी कर दिया है। इसलिए वाणी मनुष्य की ही अर्धांगी है। अन्य प्राणियोंमें और मनुष्योंमें यदि किसी विशेष गुण के कारण भेद है, तो इस वाणीके कारण ही है। मनुष्यने इस वाणीके कारण ही इतनी उन्नति की है। अनादि कालसे जो ज्ञानका संग्रह हो रहा है, वह वाणी के कारण ही है और यह ज्ञानही, जो वाणीद्वारा प्राप्त हो रहा है, वही मानवजातिका शासन कर रहा है। इस प्रकार देखनेसे पता लग सकता है, कि वेदका कथन कितना ठीक है। तात्पर्य (१) **पहला मानवप्राणी** अग्नि है, (२) **और उसकी 'अग्नायी' वाणी ही है।**

अग्नि	अग्नायी
प्रथम मनुष्य	इळा (वाणी)
यम	यमी
शासक	शासनी
विश्पति	विश्पत्नी
पिता	माता
आत्मा	अवा (रक्षणशक्ति)
आदम	हव्वा

'इळा' शब्दका दूसरा अर्थ 'भूमि' है। भूमि बीज बोनेके लिये होती है। मनुष्य अपना ज्ञानरूप बीज इस वाणी में बोता है और इस प्रकार जो ज्ञानवृक्ष फैलता है, उसके फलही हम आज खा रहे हैं। इसके अतिरिक्त भूमि का अर्थ क्षेत्र है और स्त्रीको भी क्षेत्र कहते हैं। इस अर्थ के लेनेसे यह तात्पर्य होगा कि, देवोंने एक पुरुष और एक स्त्री सबसे प्रथम निर्माण की। इसलिए कि यह पुरुष अपने वीर्यसे इस स्त्रीमें पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न करे। और इस प्रकार ममत्वसे संतति उत्पन्न हो। इसी रीतिसे यह संतति उत्पन्न हो गई है।

(५) वृषभ और धेनु।

'इळा' शब्द का तीसरा अर्थ 'गाय' है और गायवाचक 'गो' शब्दके संस्कृतमें 'वाणी, भूमि और गाय' ऐसे अर्थ

हैं। तात्पर्य ये शब्द परस्परों के वाचक हैं। इस भाव को लेकर निम्न मंत्र देखिये—

असच्च सच्च परमे व्योमन् दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थे। अग्निर्ह नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्व आयुनि वृषभश्च धेनुः॥ (१५१९; ऋ० १०।५।७)

'(दक्षस्य जन्मन्) दक्ष के जन्म के समय (अदितेः उपस्थे) अदितिके पास (परमे व्योमन्) परम आकाश में असत् और सत् ये दो पदार्थ थे। अग्निही हमारा (ऋतस्य प्रथमजाः) ऋत का पहला प्रवर्तक है और पूर्व आयु में वृषभ और धेनु है।' पूर्व आयु में अग्नि वृषभ था और उसकी धर्मपत्नी धेनु थी। वृषभ शब्द का अर्थ वीर्यवान् और धेनु शब्द का अर्थ वीर्य का धारण करनेवाली है। पूर्व कोष्टकमें निम्न शब्द और मिलाइये—

अग्नि	अग्नायी
वृषभ	धेनुः
पुरुषशक्ति	स्त्रीशक्ति
क्षेत्रपति	इळा (क्षेत्र)
वाक्पति, गोपति	गौः (वाक्)

उक्त मन्त्रमें भी कहा है कि "अग्नि पहला प्रवर्तक" अर्थात् शासक है। अग्नि मनुष्यरूपमें अवतीर्ण होनेके पूर्व आयुमें "वृषभ" रूपमें था। अर्थात् पशुरूपमें था, तत्पश्चात् वही मनुष्यरूपमें प्रकट हुआ है। यह कथन 'उत्क्रांतिवाद' का सूचक है। वैदिक उत्क्रांतिवादका तत्व बतानेके लिये इस निबंधमें स्थान नहीं है, तथापि उक्त बातमें वैदिक उत्क्रांतिवाद की ध्वनि है, इतनाही यहां बताना है। इस प्रकार अग्नि न केवल मनुष्योंमें है, प्रत्युत पशुपक्षियोंमें भी है, यह बात उक्त कथनसे सिद्ध होती है। पशुपक्षियोंमें जो अग्नि होगा, उसका विचार हम किसी अन्य स्थानमें करेंगे, यहां मनुष्योंमें जो पहला मानव अग्नि हुआ, उसीका अधिक विचार करना है। इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

(६) पहला अंगिरा ऋषि।

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा। तव व्रते कवयो विद्मनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः॥ (५०; ऋ. १।३१।१)

'हे अग्ने! (त्वं प्रथमः अंगिरा ऋषिः) तू पहिला अंगिरा ऋषि है। तू स्वयं (देवः) दिव्य शक्तिसे युक्त है और (देवानां शिवः सखा अभवः) देवोंका शुभ मित्र हुआ है। (तव व्रते) तेरे नियम में (विद्मनाऽपसः) ज्ञानयुक्त होकर पुरुषार्थ करनेवाले (मरुतः कवयः) मर्त्य कवि (भ्राजदृष्टयः) तेजस्वी दृष्टिसे युक्त होते हैं।' इस मन्त्रमें कहा है कि, पहला 'अंगिरा ऋषि' अग्नि ही है, इसेही पहला मानव समझना उचित है। पहला मानव जो अंगिरा ऋषि था, वही अग्नि नामसे प्रसिद्ध है। तथा और देखिये—

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरस्तमः कविर्देवानां परिभूषसि व्रतं। विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे॥ (५१; ऋ. १।३१।२)

'हे अग्ने! तू (प्रथमः अंगिरस्तमः कविः) अंगिरसोंमें पहला कवि है और (देवानां व्रतं) देवोंका व्रत सुभूषित करता है। तू (विभुः) विशेष प्रकार होनेवाला (विश्वस्मै भुवनाय) सब भुवनों अर्थात् बने हुए प्राणी आदिकोंके लिये (मेधि-रः) बुद्धिसे प्रकाशित करनेवाला, (द्विमाता) दोनों पुरुषार्थोंका निर्माता तथा (आयवे) मनुष्यमात्रके लिये (कतिधा चित) कई प्रकारसे (शयुः) आराम देनेवाला है।'

इस मन्त्रमें कहा है कि, अंगिरसोंमें सबसे पहला कवि अग्नि ही है। यहां मनुष्योंमें पहला मानव अग्नि है। वाणी इसके साथ उत्पन्न हुई थी, अतः यह कवि है। यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि, यदि पहला मानवप्राणी ही अग्नि है, तो उसीकी संतति भी अग्निरूप ही होनी चाहिये, अर्थात् जैसा एक मानवप्राणी अग्नि है, उसी प्रकार मानवजाति भी अग्नि ही होनी चाहिये। जैसी एक व्यक्ति होती है, वैसाही उसका समाज होता है, इस सार्वमानुष अग्नि का वर्णन निम्न मंत्रमें हुआ है। देखिये—

(७) वैश्वानर अग्नि।

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो विभावा। शातवनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान्॥ (१७२९; ऋ० १।५९।७)

'वैश्वानर अग्नि अपने महत्त्वसे (विश्व-कृष्टिः) सर्व मनुष्य ही है। (भरत्-वाजेषु) पोषक अन्नों के यज्ञों में (यजतः)

पूजनीय और (विभावा) विशेष प्रभावयुक्त है। (सूनृतावान्) सत्य वाणी से युक्त होने के कारण यह (अग्निः) सर्व मनुष्यरूप अग्नि (शत-वनेये) सैंकडो द्वारा जहां सेवन होता है, ऐसे (पुरु-नीथे) बहुतोंके नेतृत्वसे चलनेवाले कार्यों में (शतिनीभिः) सैंकडो की संख्याओं से (जरते) प्रशंसित होता है।'

'विश्व+कृष्टिः' अर्थात् 'सर्व-मनुष्य' रूप ही यह अग्नि है। मनुष्यों का समाजरूप ही यह अग्नि है। इसी का नाम **'वैश्वा-नर'** अग्नि है। **'विश्व-नर'** शब्द का अर्थ भी **'सर्व मनुष्य'** ही है। सब मनुष्यों का जो एक संघ होता है, उस के अन्दर एक प्रकार का तेज रहता है, यही वैश्वानर अग्नि है। इस को 'राष्ट्रीय जीवनाग्नि' अथवा 'सामाजिक जीवनाग्नि' समझिये। इस के छोटे नाम 'राष्ट्राग्नि, सामाजिक अग्नि' हैं। इस की पूजा उन यज्ञों में होती है, कि जिन में (भरत्-वाज) अन्न और बल का संवर्धन करना होता है। संघ के कारण बल-संवर्धन होना प्रत्यक्ष ही है। इसलिये जिस जाति में अपना बल बढाने की सदिच्छा होती है, उसी में **'वैश्वानर अग्निकी उपासना'** की जाति है। मानवसंघरूप अग्नि की उपासना वे ही करेंगे कि, जो संघशक्ति बढाना चाहते हैं। वैश्वानर में (विश्व-नर) सब मनुष्यों की अभेद्य संघशक्ति की निश्चित कल्पना है। वही भाव 'विश्व-कृष्टि' में है। इस शब्द का भाव श्रीसायणाचार्य निम्न प्रकार देते हैं—

विश्वकृष्टिः। कृष्टिरिति मनुष्य नाम। विश्वे सर्वे मनुष्याः यस्य स्वभूताः स तथोक्तः।

(ऋ. सायणभाष्य १-५९-७)

वैश्वानरः सर्वनेता। विश्वकृषिः विश्वाः सर्वाः कृष्टीर्मनुष्यादिकाः प्रजाः॥

(ऋ. दयानंदभाष्य १-५९-७)

सायणभाष्य- कृष्टि मनुष्यवाचक शब्द है। सब मनुष्य जिस के लिये अपने ही निज होते हैं, वह विश्व-कृष्टि है। **दयानन्दभाष्य-** वैश्वानर सब का नेता है। विश्वकृष्टि सब प्रजाओं का संघ है।

दोनों भाष्यकारों के उक्त अर्थ देखनेयोग्य हैं। सब प्रजाओं का जो एक अभेद्य संघ होता है, उस का नाम **'विश्व-कृष्टि अग्नि'** है। इसी का वर्णन निम्न लिखित मंत्र में देखिये—

स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता॥
विप्रेभिरस्तु सनिता॥ (४६; ऋ. १-२७-९)

'वह (विश्व-चर्षणिः) सर्व-मनुष्यरूप अग्नि (अर्वद्भिः) फूर्तिवालों के साथ (वाजं) युद्ध के (तरुता) पार होनेवाला और (विप्रेभिः) ज्ञातियों के साथ (सनिता) पूज्य (अस्तु) होवे।'

यह अग्नि ही मानवों का संघ बनाता है, यही इस का तात्पर्य है।

(८) ब्राह्मण और क्षत्रिय।

मानवजातिरूप जो समाज है, वह पुरुषार्थियों के प्रयत्नोंद्वारा आपत्ति से पार होता है और ज्ञानियों के उद्योग से पूज्य होता है। '**अर्वन्**' शब्द 'गमन करनेवाला, हलचल करनेवाला, प्रयत्नशील, पुरुषार्थी, घोडा जिस के पास है, घुडसवार' इन अर्थोंमें प्रयुक्त होता है। इसलिये यह क्षत्रियों का सूचक है, तथा '**विप्र**' शब्द विशेषतः ज्ञानी का भाव बताता है, इसलिये ब्राह्मणों का बोधक है। यह अर्थ लेने से उक्त मंत्र का भाव निम्न प्रकार बनता है- '**सर्व-मनुष्यसंघरूपी** जो अग्नि है, वह क्षत्रियों के प्रयत्नों से युद्धों में यशस्वी होता है, और ब्राह्मणों के प्रयत्न से वंदनीय होता है।' इस प्रकार क्षत्रियों और ब्राह्मणों के द्वारा इस मानवसंघ की उन्नति होती रहती है। ब्राह्मण-क्षत्रियों के संघ का महत्व वेद में अन्यत्र बहुत स्थानों पर वर्णन किया है, देखिये—

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरतः सह॥
तं देशं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥ य. २०-२५

'जहां (ब्रह्म क्षत्रं च) ब्राह्मण और क्षत्रिय (सम्यंचौ सह चरतः) मिल कर हलचल करते हैं, वही पुण्यदेश है, और (प्रज्ञा-इषं) बुद्धिसे इच्छा करनेयोग्य है, तथा वहांही देव अग्निके साथ रहते हैं।'

ब्राह्मण-क्षत्रियोंकी मिलजुलकर जो हलचल होती है, वही राष्ट्रीय हलचल होती है। क्योंकि येही राष्ट्र के प्रधान अवयव हैं। वास्तव में यह ब्राह्मण-क्षत्रियोंकी हलचल नहीं है, परन्तु (ब्रह्म क्षत्र) ज्ञान और पुरुषार्थकी संगठित हलचलही है। जहां ज्ञान और कर्मका संगठित कार्य

होता है, वहांही सिद्धि मिलती है। सब मनुष्य जिस अग्निसे संबंधित हुए हैं, वह **विश्वकृष्टि, वैश्वानर** या **विश्वचर्षणि** अग्नि है। इस प्रकार जो अभेद्य संघ होता है, उसीका नाम " **विश्व-कृष्टि** " अग्नि है। इस विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखिए—

मंद्रं होतारं शुचिमद्वयाविनं दमूनसमुक्थ्यं विश्वचर्षणिम्॥ रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुर्हितं सदमिद् राय ईमहे॥ (१०४१; ऋ० ३।२।१५)

'(मंद्रं) आनंदकारक (होतारं) दाता (शुचिं) पवित्र (अद्वयाविनं) द्वैत अर्थात् झगडा जिसमें नहीं है, (दमूनसं) संयमी, (उक्थ्यं) प्रशंसनीय, (मनुः-हितं) मनुष्यमात्रका हित करनेमें तत्पर ऐसे (विश्व-चर्षणिं) सर्व-मनुष्यसंघरूप अग्निकी (सदं इत्) सदा (राये) श्रेष्ठ ऐश्वर्यके लिए (ईमहे) हम प्राप्ति करते हैं, जिस प्रकार सुन्दर दर्शनीय आकृतिसे युक्त रथकी प्राप्ति की जाती है।'

इस मंत्र में '**सार्व-मानव अग्नि**' के कई गुण वर्णन किये हैं। उनका विचार करनेसे '**राष्ट्राग्नि**' का स्वरूप ठीक ध्यान में आ सकता है। '**अ-द्वयाविन्**' यह **शब्द जाति जाति के आपस के झगडों का निषेध कर रहा है**। जिन में आपस के झगडे नहीं हैं, परस्पर कपट और ईर्ष्याद्वेष के भाव नहीं हैं और जो मानवसंघ एकता से अपनी शक्ति बढा रहा है; परस्पर अभेद्य एकता प्रस्थापित कर जो उन्नति प्राप्त कर रहा है और जो निष्कपट भाव के आचरण करने के कारण उन्नत हो रहा है, उस प्रकार का अभेद्य मानवसंघ इस शब्द से बोधित हो रहा है। '**मनुः+हितं**' मनुष्यमात्र का हित करनेवाला, यह भाव इस शब्द में है। मानवसंघ निष्कपट भाव से जो कार्य करेगा, उस से संपूर्ण मनुष्यों का ही हित होगा, इस में संदेह ही नहीं हो सकता। '**दम्-नस् =** जिस का मन स्वाधीन है, अर्थात् जो संयमी है। तात्पर्य, जो नियमों से बंधा है और नियमानुकूल चल रहा है। नियम छोडकर स्वेच्छासे जो स्वैर वर्तन नहीं करता, इस प्रकारका जो मनुष्य तथा मानवसंघ होता है, वही उन्नति प्राप्त कर सकता है। इन शब्दों के विचार से वैदिक राष्ट्रीय अग्नि का पता लग सकता है। इस के संवर्धन का उपाय देखिये।

(९) अग्निसंवर्धन।

अग्निं घृतेन वावृधुः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम्॥ स्वाधीभिर्वचस्युभिः॥ (८६५; ऋ० ५-१४-६)

'(विश्व-चर्षणिं अग्निं) सार्व-मानुष अग्निको (घृतेन) तेजस्वितासे (स्तोमेभिः) संघभावसे (स्वा-धीभिः) आत्म-बुद्धिसे तथा (वचस्युभिः) वाणीके योगसे (वावृधुः) बढाते हैं।' यह मंत्र विशेष अर्थसे प्रयुक्त हुआ है। '**घृत**' शब्दके दो अर्थ हैं, **घी** और **तेजस्विता**। '**स्तोम**' शब्द के भी दो अर्थ हैं- **यज्ञ** और **संघभाव** (group, assemblage)। '**स्वा-धी**' शब्द के दो अर्थ हैं- **अध्ययन** और **आत्मबुद्धि**'। '**वचस्+यु**' के दो अर्थ हैं, प्रशंसाकी इच्छा और मंत्रणा, सुविचार इ०। ये सब अर्थ लेकर सार्वजनिक भावदर्शक उक्त मंत्र का तात्पर्य निम्न प्रकार है। '**सर्व-मानव-संघरूप जो अग्नि है, वह तेजस्विता, संघ-भाव, आत्म-बुद्धि तथा सुविचारसे बढाया जाता है**।' मनुष्यसंघ का हित इन गुणों से होता है। इसलिये जिस राष्ट्र को अपना उद्धार करना है, उस को चाहिये कि, वह अपने अन्दर तेजस्विता, संघभाव, एकता, आत्मबुद्धि, तथा सुविचार आदि गुण बढावे। यही राष्ट्रीय उन्नति का मूल मंत्र है। अस्तु। उक्त मंत्र में सार्वमानुष अग्निकी उन्नति का मार्ग बताया है। यह सार्वजनिक अग्नि क्या देता है, इसका वर्णन निम्न लिखित मंत्र में देखनेयोग्य है—

अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः॥ अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिषं स्तोतृभ्य आभर॥ (८०३; ऋ० ५-६-३)

'यह (विश्व-चर्षणिः अग्निः) सार्वमानुष अग्नि (विशे) प्रजाओं के लिये (वाजिनं) अन्नयुक्त बल देता है। यह अग्नि संतुष्ट (प्रीतः) होकर (राये) ऐश्वर्य के लिये (सु+आभुवं वार्यं इषं) उत्तम प्रभावयुक्त वरणीय अन्न (याति) प्राप्त करता है। यह सब याजकों को भर दो।'

मानवसंघरूप यह अग्नि यदि संतुष्ट हुआ, तो सब प्रजाओं को अन्न, बल, संतति, यश, प्रभाव, ऐश्वर्य तथा हरएक प्रकार का इष्ट सुख देता है। इसलिये इस की संतुष्टि सिद्ध करनी चाहिये। संघ, समाज और राष्ट्र की संतुष्टि उस के स्वातन्त्र्य के संरक्षण से होती है। व्यक्ति-

स्वातंत्र्य और संघ का नियमन योग्य रीति से होने से इस की संतुष्टता होती है । व्यक्तिस्वातन्त्र्य संघभाव का घातक न हो और संघभाव व्यक्ति को परतंत्र न बनावे; यह उपदेश निम्न मंत्रों में कहा है—

(१०) व्यक्तिभाव और संघभाव ।

(१) अंधं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ संभूत्यां रताः ॥९॥
(२) अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१०॥
(३) सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते॥११॥
(वा० य० ४०; ईश० उ० १२-१४)

'(१) जो (अ-सं-भूति) केवल अ-संघभाव अर्थात् व्यक्तिभावकी उपासना करते हैं, वे अंधकार में गिरते हैं; तथा उससे घने अंधकार में वे पहुंचते हैं, कि जो केवल (सं-भूत्यां) संघभाव में ही रमते हैं । (२) संघभाव का फल भिन्न है और व्यक्तिभाव का फल भिन्न है, ऐसा धीर लोग कहते आये हैं । (३) संघभाव और असंघभाव किंवा व्यक्तिभाव को जो साथ साथ उपयोगी समझते हैं, वे व्यक्तिभाव से अपमृत्यु आदि के कष्ट दूर करके संघभाव से अमर होते हैं । '

संघभाव की उपासना करने की वैदिक रीति इसमें दी है । केवल सङ्घभाव बढाया गया, तो व्यक्ति की सत्ता दब जाती है और व्यक्तिस्वातन्त्र्य नष्ट होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति में परतन्त्रता बढने से सब समाज कालांतर से परतन्त्र हो जाता है, यह दोष संघभाव का अतिरेक करने से होता है । तथा जो व्यक्तिस्वातन्त्र्य को हद से अधिक बढाते हैं, उनमें संघशक्ति बढ नहीं सकती, क्योंकि हरएक व्यक्ति किसी एक नियंत्रणा में बद्ध नहीं होती । इसलिये उक्त गुण केवल अकेला अकेलाही रहने से लाभदायक नहीं होता । परन्तु संघभाव से बल बढता है और व्यक्तिस्वातन्त्र्य से हरएक की शक्ति विकसित होती है, यह देख कर बुद्धिमान् पुरुष युक्तिसे संघभाव को भी बढाते हैं और सीमित व्यक्तिस्वातन्त्र्यको भी सीमित रखते हैं । इस प्रकार करने से वैयक्तिक शक्तियों की वृद्धि होती है और संघभाव से समाज में बल भी बढ जाता है । यही समविकास का वैदिक सिद्धांत है और मानवसंघ की सच्ची उन्नति करने का यही उपाय है । इस रीति से जो जनता अपना समविकास करती है, उनका समाज अथवा राष्ट्र प्रसन्न होता है और उन प्रजाजनों में पूर्वमंत्रोक्त आनन्द पाया जाता है । इस संघरूप अग्नि से और एक लाभ होता है, उसे भी यहां देखिये —

(११) संघशक्ति का अद्भुत बल ।

स हि ष्मा विश्वचर्षणिरभिमाति सहो दधे ।
अग्न एषु क्षयेष्वा रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक दीदिहि ॥ (१०६: ऋ० ५।२३।४)

'स: (विश्व-चर्षणिः) सार्व-मानुष अग्नि (अभिमाति) शत्रु का नाश करने का (सहः) बल (दधे) धारण करता है । हे (शुक्र अग्ने) शुद्ध अग्ने ! हमारे (क्षयेषु) स्थानों में (रेवत्) धनयुक्त (दीदिहि) प्रकाश रखो । हे (द्युमत् पावक) तेजस्वी शुद्धिकर्ता ! प्रकाश करो । '

सर्व मनुष्यों के संघ का जो एक राष्ट्राग्नि है, वह शत्रु का नाश करने का बल अपने राष्ट्र में रखता है । इसका तात्पर्य स्पष्ट ही है । संघशक्ति से समाज में जो एकता पाई जाती है, उससे उस समाज में इतना बल बढ जाता है कि, उस के सामने कोई शत्रु ठहर नहीं सकता । जो अपनी राष्ट्रीयता का विकास करना चाहते हैं, उन को इस मंत्र से बहुत ही बोध मिल सकता है । जो राष्ट्र अपनी संघशक्ति बढावेगा, उस की शक्ति भी वैसी प्रचंड हो जायगी ।

विश्वचर्षणिः= विश्वे चर्षणयो मनुष्या रक्षणीया यस्य ।
(ऋ० सायणभाष्य ५-६-२)

' सब मनुष्य जिस के रक्षणीय हैं, उस का नाम विश्वचर्षणि है ।' यह सार्वमानुष अग्नि है । सब मनुष्योंका संघ ही यह अग्नि है । इसी प्रकार सर्व मनुष्यों के संघ के दर्शक शब्द वेद में बहुत हैं, देखिये—

विश्व+कृष्टिः= सर्व मनुष्य, सब कृषि करनेवाले ।
विश्व+चर्षणिः= ,, ,, ,, ,, ,,
विश्वायुः (विश्व+आयुः)= सब मनुष्य (पूर्णायुषी मानव) ।
विश्व+जन्यः= सब जनों के संबंध से उत्पन्न ।

पांच+जन्यः=	पंच जनों के संबन्ध से उत्पन्न। ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र और निषादोंके संघ से बननेवाला एक राष्ट्र।
विश्व+मानुषः=	सब मनुष्यों से बना हुआ संघ।
विश्वा+नरः / वैश्वा+नरः =	संपूर्ण मनुष्यों का संघ, अथवा सब का नेता।
सर्व+पुरुषः=	सब पुरुषों से युक्त।

इन सब वैदिक शब्दों का भाव अत्यन्त स्पष्ट है। इसलिये इन का अधिक स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं। तथा अग्निदेवता से भिन्न अन्य देवों के मंत्रों में जो इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग हुआ है, उन का यहां अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं है। जो शब्द अग्निसूक्तों में आ गये हैं, उन का विचार इस के पूर्व किया ही है। उसमें दिये मंत्रों से '**सर्व-जन-सङ्घ**' की वैदिक कल्पना पाठकों के मन में आ चुकी होगी। यही संघात्मक अग्नि है, अथवा इस को राष्ट्रीय अग्नि भी कह सकते हैं। अस्तु। इस प्रकार हमने देखा कि, (१) एक मनुष्य भी अग्नि है और (२) मानवसंघ भी एक प्रकार का अग्नि है। यह स्पष्ट ही है कि, यदि एक मनुष्य अग्निरूप है, तो उस का संघ भी अग्निरूप ही होना चाहिये; तथा जो संघ अग्निरूप होगा, उस का एक अवयव भी अग्निरूप ही होना चाहिये। तात्पर्य, मनुष्य और मानवसंघ ये दोनों अग्निरूप हैं। यही '**वैश्वानर अग्नि**' है। देखिये इस का वर्णन--

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिः॥ (ऋ० १-५९-७)

'वैश्वानर अग्नि अपने महत्त्व से सब-मनुष्य ही है।'

इस से वैश्वानर अग्नि की उत्तम कल्पना हो सकती है। सब मनुष्यों का जो एक संघ है, वही वैश्वानर है। 'विश्वनर' शब्द का अर्थ 'सब-मनुष्य' ऐसा ही है, वही भाव वैश्वानर शब्दसे व्यक्त होता है। इसका और वर्णन देखिये-

(१२) जनता का केंद्र।

वया इदग्ने अग्नयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते॥ वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव जनाँ उपमिद्ययन्थ॥ (१७१७; ऋ० १-५९-१)

'हे अग्ने! (ते अन्ये अग्नयः) वे दूसरे अग्नि (त्वे) तेरे अन्दर (वया इद) शाखाओं के समानही हैं। वे सब अमृत अग्नि तेरेसे ही (मादयंते) हर्षित होते हैं। हे वैश्वानर अग्ने! तू (क्षितीनां नाभिः) सब मनुष्यों का केंद्र है। तू (स्थूणा इव) स्तंभ के समान (जनान्) सब जनता का तू आधार है।'

अग्नि का अर्थ एक मनुष्य और वैश्वानर का अर्थ मनुष्य-संघ। ये अर्थ पहले बताये ही हैं। ये अर्थ लेकर इस मंत्र का भाव निम्न प्रकार होता है। 'हे मानवसंघ! ये सब मनुष्य तेरी शाखायें ही हैं। तेरे आधार से ही ये सब मनुष्य अमर बने हैं। तू सब जनताका केंद्र है। जिस प्रकार स्तंभ आधार देता है, उस प्रकार तू ही इन सब का आधार है।'

(१३) समाज का अमरत्व।

संघ, समाज अथवा राष्ट्र सब मनुष्यों का आधार है, सब का केंद्र है, सब का उपास्य और सब का आधार है। सब मनुष्य संघभाव से ही अमर होते हैं। यद्यपि एक एक व्यक्ति मरती है, तथापि जाति अमर होती है।

सम्भूत्याऽमृतमश्नुते॥ (वा० य० ४०।११)

'(सं+भूत्याः एकीभूय संस्थित्या) संघभाव से अमरत्व प्राप्त होता है।' यही भाव पूर्वोक्त मंत्र में स्पष्ट शब्दों से कहा है, देखिये- (१) सब अन्य मनुष्य राष्ट्र-पुरुष की शाखायें हैं, राष्ट्रपुरुष वृक्ष है और जनता उसकी फैली हुई शाखायें हैं। (२) राष्ट्र के आधार से सब जनता अमर है, यद्यपि एक एक व्यक्ति मरती है, तथापि राष्ट्र अमर है। (३) राष्ट्रही सब जनता का केंद्र हैं, (४) राष्ट्रही सब जनता का आधारस्तंभ है। वैश्वानर का अर्थ ठीक समझने से वेदमंत्रों के अर्थ इस प्रकार सुगम हो जाते हैं। वैश्वानर की उत्पत्ति के विषय में निम्न मंत्र देखिये—

तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय॥ (१७१८; ऋ० १।५९।२)

'हे वैश्वानर! तुझे देवों ने देव बनाया है, क्योंकि तू आर्यों के लिये ज्योति है।' मानवसंघरूपी यह देव देवों के द्वारा इसलिये निर्माण हुआ कि, यह आर्यों के लिये उन्नति का मार्ग बतानेवाला दीप बने। अर्थात् इसके तेज से अपनी उन्नति का मार्ग आर्य देख सकते हैं, और चल कर अभ्युदय प्राप्त कर सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि, सब आर्यों को अपने पञ्चजनरूपी राष्ट्र को ही

देव मानना चाहिये और उसके साथ अपनी उन्नति प्राप्त करनी चाहिये। तथा–

आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि। या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषेष्वसि तस्य राजा॥ (१७१९; ऋ० १।५९।३)

'जिस प्रकार सूर्य में किरणें स्थिर हैं उसी प्रकार इस वैश्वानर अग्नि में धन स्थिर हैं। जो धन पर्वतों औषधियों और मनुष्यों में हैं, उन सब का तू राजा है।''

(१४) सब धन संघका ही है।

सब धन मानवसंघ का ही है। उस पर किसी व्यक्ति का अधिकार नहीं है। जो धन पर्वतों में, वृक्षों और वनस्पतियों में, तथा मनुष्यों में अथवा भूमि आदि में है, वह सब मानवसंघ का ही है। व्यक्ति के पास जो धन है, वह भी उस व्यक्ति को, प्रसंग आने पर, संघ के चरणोंपर न्यौछावर करना आवश्यक है। मनुष्यों के पास तन, मन, धन जो कुछ है, वह सब जाति का ही है, इसलिये योग्य समय आते ही श्रेष्ठ पुरुष अपने सर्वस्वकी आहुति राष्ट्र-पुरुष की पूजा करने के लिये अर्पण कर देते हैं। क्योंकि वही सर्वस्व का सच्चा राजा है। देखिये—

स्वर्वते सत्यशुष्माय पूर्वीर्वैश्वानराय नृतमाय यह्वीः॥ (१७२०; ऋ० ३।५९।४)

'(सु+अर्वते) उत्तम हलचल करनेवाले, (सत्य+शुष्माय) सच्चे बलवान् (नृ+तमाय) अत्यंत मनुष्यों से युक्त (वैश्वा+नराय) सब मानवसंघ के लिये (पूर्वीः) सनातन (यह्वीः) बडी प्रशंसा होती है।' अर्थात् जो पंचजन मानवसंघ किंवा राष्ट्र उत्तम हलचल करता है, सच्चा बल रखता है और संख्या में अत्यंत अधिक मनुष्यों से युक्त है, वही प्रशंसनीय है। इसलिये राष्ट्रीय उन्नति चाहनेवालों को चाहिये कि, वे (सु+अर्वत्) अच्छी हलचल करें, (सत्य+शुष्म) सच्चा बल प्राप्त करें, (नृ+तमः) अपने मनुष्यों की संख्या अधिक से अधिक बढावें, ऐसा करने से ही उनकी सर्वत्र प्रशंसा होगी। तथा और देखिये—

दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्ररिरिचे महित्वम्॥ राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ॥ (१७२१; ऋ० १।५९।५)

'हे जातवेद वैश्वानर! तेरी महिमा बडे द्युलोक से भी अधिक फैली है। तू (मानुषीणां कृष्टीनां) मानवी प्रजाओं का राजा है। युद्ध से तूही देवों के लिये धन देता है।'

मानवी संघ की महिमा सब से बडी है। यही संघ मानवों का राजा अर्थात् सच्चा राजा है। युद्ध में विजय इसी के कारण होता है। राष्ट्रीय भावना से, जातीय महत्वाकांक्षा से प्रेरित हो कर जो युद्ध करते हैं, उनका ही विजय होता है। देश के हित के लिये लडने का उपदेश इस मंत्र से सूचित होता है। इस प्रकार इस सूक्त में मानव-संघ का स्वरूप बताया है। यही वैश्वानर अग्नि है। इसका और वर्णन देखिये।

(१५) संघ के विजयमें व्यक्ति का जय।

अस्माकमग्ने मघवत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यं। वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः। (१७८५; ऋ० ६।८।६)

'हे वैश्वानर अग्ने! हमारे (मघ+वत्सु) धनिकों में उत्तम वीर्ययुक्त क्षात्र तेज धारण कर। तेरे संरक्षणों से हम सब सौ अथवा हजारों सैनिकों के साथ हमला करनेवाले शत्रु को भी पराजित करेंगे।'

मानवसंघ के प्रेमसे लडनेवालोंको इस प्रकार बल प्राप्त होना स्वाभाविक ही है। जो अपने राष्ट्रहितके लिये जागते हैं,उनसे ही राष्ट्रकी उन्नति होती है, इस विषयमें कहा है–

वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः॥ (१७९४; ऋ० ७।५।१)

'मानवसंघरूप अग्नि जागनेवालोंके द्वाराही बढता है।' जो लोग अपनी जातीय उन्नतिके लिये जागते हैं, वेही अपनी जातीय अथवा राष्ट्रीय उन्नति सिद्ध करते हैं। अस्तु। इस प्रकार सर्व मनुष्यों के संघरूप अग्नि का वर्णन वेद में है। इतने स्पष्टीकरण से पाठकों को पता लगा ही होगा कि, जिस प्रकार एक मनुष्य-विशेषतः पहिला मनुष्य-अग्नि है, उसी प्रकार मानवसमाज भी अग्नि है। इसीलिये धर्म-कर्मों में एक मनुष्य के साथ अग्नि उपासना का सम्बन्ध आता है; अग्निकार्य, हवन, आदि धार्मिक विधियों में वैयक्तिक अग्नि की उपासना है। तथा सामाजिक, जातीय, राष्ट्रीय अथवा सामुदायिक अग्निपूजा भी सामाजिक अग्नि की द्योतक है इस। सामुदायिक पूजा का रूप अग्निष्टोम

ज्योतिष्टोम, अश्वमेध, वाजपेय आदि महान् यज्ञों में दिखाई देता है। व्यक्तिगत अग्नि तथा सामुदायिक अग्नि जो कुंडों में जलाया जाता है, वह सब के मनों का केंद्रीकरण करने के लिये ही है। वास्तविक उस का स्वरूप वैयक्तिक और सामुदायिक दृष्टि से जो वेदमंत्रों में है, वह ऊपर बताया ही है। अब वैयक्तिक अग्नि की और अधिक खोज करने की आवश्यकता है, इसलिये निम्न मंत्र देखिये—

(१६) बुद्धि में पहिला अग्नि।

अग्निं वो देवयज्ययाग्निं प्रयत्यध्वरे ॥ अग्निं धीषु प्रथममग्निमर्वत्यग्निं क्षैत्राय साधसे। (१४२०;ऋ.८-७१-१२)

'(१) (देव-यज्यया) देवों के यज्ञ से आप के पास एक अग्नि है। (२) (अध्वरे प्रयति) यज्ञ की प्रगति में एक अग्नि है। (३) (धीषु प्रथमं अग्निं) बुद्धियों में पहला एक अग्नि है। (४) (अर्वति अग्निं) हलचल करनेवालेमें एक अग्नि है। (५) (क्षैत्राय साधसे अग्निं) भूमिकी प्राप्ति करानेवाला एक अग्नि है। इन सबकी पूजा मैं करता हूं। ' इस मंत्र में पांच प्रकार की अग्नियों का वर्णन है। इन में एक अग्नि है, जो यज्ञकुंड में प्रदीप्त होता है। दूसरा अग्नि बडे बडे अध्वरों में जलता रहता है। तीसरा अग्नि मनुष्यों की बुद्धि में है, जिस की चेतना से मनुष्य धारणाशक्ति के कार्य करता है। चौथा अग्नि सामुदायिक हलचल करनेवालों में होता है। इसलिये इनकी हलचल से जनता में एक प्रकार की आग जलती हुई दिखाई देती है। पांचवां अग्नि क्षत्रियों में जलता है और उस के कारण वे अपने राज्य का विस्तार करते रहते हैं। इन पांच अग्नियों में पहले तीन अग्नि ब्राह्मण्य के साथ विशेषतः सम्बन्ध रखते हैं और आगे के दो अग्नि क्षत्रियों के साथ विशेष कर सम्बन्ध रखते हैं। जो पाठक इस मंत्र का विचार करेंगे, उन को ' अग्नि ' शब्द के व्यापक भाव का पता लग सकता है। हवनों और यागों में जलनेवाला अग्नि और है, और मानवी बुद्धियों में जलनेवाला ' ज्ञानाग्नि ' उससे भिन्न है। इस ज्ञानाग्नि को प्रदीप्त करने की और उस में ज्ञान के हवन की विधि भी भिन्न ही है। हलचल कर के सामुदायिक जीवन पैदा करनेवालों में तथा राज्य विस्तार करनेवाले क्षत्रियों के जोश में जो अग्नि होता है, वह और ही है। विचारकी दृष्टिसे इन अग्नियोंकी निश्चित कल्पना करनी चाहिये। हवनों और यज्ञों में प्रयुक्त होनेवाले अग्नि को सब जानते ही हैं। इसलिये उसका अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं है। बुद्धि में जो अग्नि किंवा ज्ञानाग्नि बसता है, उस का विचार करना चाहिये। इस अग्नि स्वरूप ' चित् ' है। सत्, चित्, आनन्द में यही चित् है, यही आत्मा नाम से प्रसिद्ध है। इस के स्वरूप का वर्णन निम्न प्रकार है—

(१) ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एव ॥ (बृ. १-५-३)

(२) धियो यो नः प्रचोदयात्।

(बृ. ६-३-६) (ऋ. ३-६२-१०)

(३) इंद्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु पराबुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः ॥

(कठ० ३-१०)

(४) इन्द्रियाणि पराण्याहुरिंद्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥

भ. गी. ३-४२)

'(१) (ह्री) नम्रता, (धीः) बुद्धि, (भीः) भीति जो अधर्म से उत्पन्न होती है, यह सब मन ही है। (२) जो हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करता है। (३) इंद्रियोंसे परे अर्थ हैं, अर्थोंसे मन परे है, मन से बुद्धि परे है और बुद्धि से महान् आत्मा परे है। (४) विषयों से परे इंद्रिय, इंद्रियों से परे मन, मन से परे बुद्धि और बुद्धि से परे वह है। ' बुद्धि के अन्दर, परन्तु बुद्धि से परे, जो अग्नि है, वह आत्माग्नि ही है। इस की स्थिति साथ–वाले चित्र में बताई है।

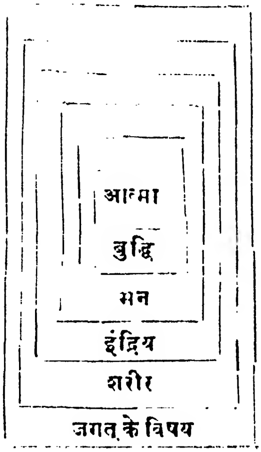

यह आत्माग्नि बुद्धि की वेदीमें प्रज्वलित होता है। मन आदि इंद्रियां इसी में विविध ज्ञान-संस्कारों का हवन कर रही हैं और इस प्रकार यह '**ज्ञानयज्ञ**' चल रहा है। बुद्धि के अंदर जो चिद्रूप पहिला अग्नि है, वह यही आत्माग्नि है। मनुष्यको इसी आत्माग्नि का प्रज्वलन करना चाहिये। यही आत्मशक्तिका विकास

कहलाता है।

सामुदायिक हलचल करनेवालों में तथा राज्य बढानेवालों में जो उत्साही क्षात्राग्नि होता है, वह क्षत्रियों के इतिहास में सुप्रसिद्ध है। यह भी क्षात्रबुद्धि में वसता है और क्षत्रियों को सुस्त रहने नहीं देता। अस्तु। ये सब अग्नि केवल 'आग' के स्वरूप के ही नहीं हैं, प्रत्युत मानवी बुद्धि के ये शक्ति-विशेष हैं। आत्मा बुद्धि के अन्दर बैठा हुआ, बुद्धि मन तथा इंद्रियादिकों में विशेष शक्ति की प्रेरणा करता है। ब्राह्म प्रवृत्ति, क्षात्र-प्रवृत्ति तथा अन्य प्रवृत्तियां इसी से निर्माण होती हैं। इस लिये यही आत्माग्नि मुख्य है और अन्य गौण अग्नि बहुत से हैं। इन सब का मूल बुद्धि में जो पहला प्रवर्तक आत्मा है, उसी में है। इस आत्माग्नि का और वर्णन देखिये—

(१७) पहिला मननकर्ता अग्नि।

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोताऽस्या धियो अभवो दस्म होता। त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु सहो विश्वस्मै सहसे सहध्यै ॥ (९३९; ऋ० ६।१।१)

'हे अग्ने! (त्वं प्रथमः मनोता) तू पहिला मनन-कर्ता है। हे (दस्म) दर्शनीय! (अस्याः धियः होता अभवः) इस बुद्धि का हवनकर्ता तूही है। हे (वृषन्) बलवान्! तू (सीं) सब प्रकार से (दुस्+तरीतु) पार होने के लिये कठिन (सहः) बल (विश्वस्मै सहसे) सब बलवान् शत्रु को (सहध्यै) पराजित करने के लिये धारण (अकृणोः) करता है।'

इस मंत्र में 'अग्नि' का विशेषण 'मनोता' है। श्री सायणाचार्य इस शब्द का अर्थ- **देवानां मनः यत्र ऊतं संबद्धं भवति तादृशः** ' अर्थात् देवों का मन जिसमें संबंधित होता है, ' ऐसा करते हैं। देव शब्द का एक अर्थ इंद्रियगण है। इंद्रियों का मन आत्मा में संबंधित होता है, इसका सचित्र वर्णन इस से पूर्व किया ही है। इससे स्पष्ट होता है, '**मनोता अग्नि**' वही आत्मा है कि, जिस से मन आदि सब इंद्रियां संबंधित होतीं हैं। इस विषय में ऐतरेय ब्राह्मण में निम्न प्रकार कहा है—

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोतेति। ...तिस्रो वै देवानां मनोतास्तासु हि तेषां मनांस्योतानि। वाग्वै देवानां मनोता, तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि। गौर्वै देवानां मनोता, तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि। अग्निर्वै देवानां मनोता, तस्मिन् हि तेषां मनांस्योतान्यग्निः सर्वा मनोता, अग्नौ मनोताः संगच्छन्ते ॥ (ऐ० ब्रा० २।१०)

'देवों के तीन मनोता हैं। वाणी देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें देवों का मन संबंधित होता है। गौ देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें उनके मन संबंधित होते हैं। अग्नि देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें सब देवों के मन संबंधित होते हैं। अग्नि ही सब मनोता है, क्योंकि अग्नि में ही सब मनोता संगत होते हैं।' अग्नि, सूर्य आदि देवों का सम्बन्ध जैसा परमात्मा से है, उसी प्रकार वाणी, नेत्र, कान आदि इंद्रियों का सम्बन्ध शरीर में जीवात्मा के साथ है। दोनों का तात्पर्य यही है कि, देवों का आत्माग्नि से नित्य सम्बन्ध है। यही आत्माग्नि अत्यंत बलवान् है और सब शत्रुओं को दूर करने की अनिवार्य शक्ति अपने अन्दर धारण करता है। सब बलवानों से यह अधिक बलवान् है और इसके समान किसी अन्य का बल नहीं है। अपनी आत्मा का यह सामर्थ्य है। यह विश्वास हरएक वैदिकधर्मी मनुष्य के अन्दर स्थिर होना चाहिये, क्योंकि प्रत्येक प्राणी के अन्दर यह शक्ति विद्यमान है।

(१८) मनुष्यमें अग्नि।

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः॥ यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे ॥ (६९३; ऋ० ४।७।१)

'यह (प्रथमः) पहला (होता) हवनकर्ता यज्ञ में अत्यन्त पूज्य धाताओं द्वारा यहां रखा है। जिस को (अप्नवानो भृगवः) कर्मकुशल भृगु (विशे विशे विभ्वं) प्रत्येक मनुष्य के लिये विशेष प्रभावसंपन्न और (वनेषु चित्रं) वंदनीय पदार्थों में विलक्षण देखकर (विरुरुचुः) विशेष तेजस्वी करते रहे।' अर्थात् यह अग्नि प्रत्येक मनुष्य में है और विशेष प्रभाव से युक्त है। यद्यपि प्रत्येक मनुष्य छोटासा है, तथापि उस की आकृति के अनुसार यह आत्मा तुच्छ नहीं है। छोटेसे छोटे प्राणीमें भी यह विशेष प्रभाव-युक्त है और सबसे पहला पूजनीय है। मनुष्य के जीवन में इस आत्मशक्ति का विकास करने का ही मुख्य कर्तव्य है। प्रत्येक मनुष्य में जो आत्माग्नि है, उस का उत्तम और स्पष्ट

वर्णन इस मंत्र में हुआ है। मर्त्य मनुष्यों में जो अमर तत्त्व है, वह यही है, यह बात निम्न मंत्र में देखिये—

(१९) मर्त्यों में अमृत अग्नि।

अयं होता प्रथमः पश्यतेममिदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु। अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तोऽमर्त्यस्तन्वा वर्धमानः॥ (१७९०: ऋ. ६-९-४)

'(अयं प्रथमः होता) यह पहिला हवनकर्ता है। (इमं पश्यत) इस को देखिये। (मर्त्येषु इदं अमृतं ज्योतिः) मर्त्यों में यह अमर ज्योति है। (सः अयं ध्रुवः जज्ञे) यह स्थिर प्रकट हुआ है। (तन्वा सह वर्धमानः अमर्त्यः) शरीर के साथ बढनेवाला अमर (आनिषत्तः) प्रकट हुआ है।' इस में स्पष्ट शब्दों से कहा है कि, यह (मर्त्येषु अमृतं ज्योतिः= He is light immortal in the mortal men) मर्त्यों में अमर तेज है। मरणधर्मवाले देहों में यह एक न मरनेवाला तेज है, इस का वर्णन गीता में देखिये—

**अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः॥
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥१८॥
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो।
न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥२०॥
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय। नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि॥ तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥२२॥
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत॥३०॥**
(भ. गी. २)

'कहा है, कि जो शरीर का स्वामी (आत्मा) नित्य अविनाशी और अचिंत्य है, उसे प्राप्त होनेवाले ये शरीर नाशवान् हैं। अत एव हे भारत ! तू युद्ध कर॥१८॥ यह आत्मा अज, नित्य, शाश्वत और पुरातन है, एवं शरीर का वध हो जाय, तो वह मारा नहीं जाता॥२०॥ जिस प्रकार कोई मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोडकर नये ग्रहण करता है, उसी प्रकार देही अर्थात् शरीर का स्वामी आत्मा पुराने शरीर त्याग कर दूसरे नये शरीर धारण करता है॥२२॥ सब के शरीर में यह शरीर का स्वामी सर्वदा अवध्य अर्थात् कभी वध न किया जानेवाला है'॥३०॥

यह गीता का कथन पूर्वोक्त मंत्र के कथन का ही विस्तार है। '**मर्त्यों में यह अमर ज्योति है।**' इस बात की सचाई हरएक मनुष्य के अनुभव में भी है। अनेक शास्त्र यही बात कह रहे हैं। वेद कहता है कि, (**इमं** पश्यत) इस को देखिये। इस आत्मा की ज्योति का साक्षात्कार करना मनुष्य का कर्तव्य है। मनुष्य अपने आप को शरीररूप समझकर मरनेवाला न समझे, परन्तु आत्मरूप से अपने आप को अमर समझें। वेद का यह उपदेश विशेष रीति से देखनेयोग्य है। वेद कहता है कि, यह '**ध्रुव**' है। इसी का वर्णन वेद में अन्यत्र '**स्थाणु, स्कम्भ, स्थूण**' आदि नामों से किया है। इस मंत्र में '**अमर्त्यः तन्वा वर्धमानः।**' अर्थात् '**यह अमर शरीर के साथ बढता है,** ऐसा कहा है,' इसका तात्पर्य यह है कि, '**यह अमर होता हुआ भी मर्त्य शरीर के साथ बढता है।**' यह बताता है कि, यह आत्मा ही है। अजर, अमर और अजन्मा आत्मा जीर्ण होनेवाले, मरनेवाले और जन्म को प्राप्त होनेवाले शरीर के साथ बढता है, अथवा ऐसा दिखाई देता है कि, यह शरीर के साथ बढ रहा है। वास्तविक तत्त्वज्ञान की दृष्टि से देखा जाय, तो न यह शरीर के साथ जन्मता है, न जीर्ण होता है और न मरता है। परन्तु सामान्य दृष्टि से ऐसा भासमान हो रहा है। इस परका सायणभाष्य देखिये-

(२०) जाठराग्नि।

मर्त्येषु मरणस्वभावेषु शरीरेषु अमृतं मरणरहितं इदं वैश्वानराख्यं ज्योतिः जाठररूपेण वर्तते। अपि च सोऽयमग्निः ध्रुवो निश्चल आ समंतान्निषण्णः सर्वव्यापि अतएवामर्त्यो मरणरहितोऽपि तन्वा शरीरेण सम्बन्धाज्जज्ञे॥ (ऋ. सायणभाष्य ६-९-४)

'मरनेवाले शरीरोंमें मरणधर्मरहित वैश्वानर नामक तेज जठराग्नि रूप से रहता है। यह ध्रुव सर्वव्यापक अमर होता हुआ भी शरीर के सम्बन्ध से उत्पन्न होता है।' अस्तु। यह मंत्र मर्त्यों में जो अमर अग्नि का स्वरूप है, उस का स्पष्टीकरण कर रहा है। यही वेदप्रतिपाद्य मुख्य अग्नि है। श्री सायणाचार्य पूर्व मंत्रोक्त अग्नि को जाठराग्नि कहते हैं, तथा निम्न मंत्र में भी उन के मत से जाठराग्नि का ही वर्णन है–

मथीद्यदीं विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं विश्वदेव्यम्। नि यं दधुर्मनुष्यासु विक्षु स्वर्ण चित्रं वपुषे विभावं ॥ (३४८; ऋ. १-१४८-१)

सायणभाष्य-देवाः मनुष्यासु मनोरपत्यभूतासु विक्षु प्रजासु प्राणिषु वपुषे स्वरूपाय शरीरधारणाय जाठराग्निरूपेण निदधुः स्थापितवंतः ॥

'(होतारं) हवनकर्ता (विश्व-अप्सुं) विश्वरूपी, नाना रूप धारण करनेवाले (विश्व-देव्यं) सब देवों से युक्त (इं-एनं) इस आत्माग्नि को (विष्टः मातरिश्वा) व्यापक प्राण (मथीत्) मंथन से उत्पन्न करता है। (यं) जिस को देव (मनुष्यासु विक्षु) मानवी प्रजाओं में (वपुषे) शारीरिक स्वरूप के लिये (निदधुः) धारण करते हैं। (न) जिस प्रकार (चित्रं विभावं स्वः) विचित्र प्रभावशाली दीप घर में रखते हैं।'

शरीररूपी घरमें यह आत्माका दीप देवोंने जगाया है। देखिये इस दीपको और इसका प्रकाश फैलाइये। यद्यपि श्री सायणाचार्यजी के मत से ये दोनों मंत्र जाठराग्निका वर्णन कर रहे हैं, तथापि इस विषयमें मतभेद होना संभव है। ऋ० ६।९।४ यह मंत्र पहिले दिया ही है। इस का अर्थ श्री० स्वा० दयानंद सरस्वतिजीने आत्मा परमात्मापरक लगाया है। मंत्रका स्पष्टार्थ निःसंदेह आत्माकाही भाव बता रहा है। यहां श्री सायणाचार्यजी का मत देनेका उद्देश्य इतनाही है कि, ये भी इसका अर्थ आग नहीं करते, परन्तु '**मनुष्यकी पाचक शक्ति**' कर रहे हैं। पहलेसेही हमारा कथन रहा है कि, अग्निका मुख्य भाव मानवी शरीरमें दिखा देनेका वेद का मंतव्य है और वह वेदमंत्रों में विविध प्रकारके वर्णनोंसे बताया गया है।

मान लीजिये कि, उक्त मंत्रों में पाचक जाठराग्निका वर्णन है, परन्तु विचार करनेपर उसके पीछे आत्माका अस्तित्व माननाही पडेगा, क्योंकि वह आत्माही इस शरीर में सब कार्य कर रहा है, वही कान से सुनता और आंखसे देखता है, उसी प्रकार वही पेटमें अन्नका पचन कर रहा है। वही वाणी के मूलमें है और शब्द बोल रहा है, देखिये—

(२१) वाणी के स्थानमें अग्नि।

जोहूत्रो अग्निः प्रथमः पितेवेळस्पदे मनुषा यत्समिद्धः। श्रियं वसानो अमृतो विचेता मर्मृजेन्यः श्रवस्यः स वाजी॥ (४०९;ऋ०२।१०।१)

'(जोहूत्रः) उपास्य अग्नि (प्रथमः पिता इव) पहला पिता जैसा जो है, वह (इळः पदे) वाणीके पदोंमें (मनुषा समिद्धः) मनुष्यने प्रदीप्त किया है। यह (श्रियं वसानः) शोभा देनेवाला अमर (विचेता) विशेष चेतन (मर्मृजेन्यः) शुद्धता करनेवाला (श्रवस्यः) प्रसिद्ध है और वही (वाजी) बलवान् है।'

वाणी के पदोंमें, वाचा के मूलस्थान में यह अमर चेतन अग्नि है। यही सबसे बलवान् प्रेरक है। विशेष चेतन, विशेष चित्तसे युक्त अथवा चित्स्वरूप यह अग्नि है। चित्स्वरूप होनेसे यही आत्मा है, यह बात सिद्ध होती है। आत्मा चित्स्वरूप अर्थात् ज्ञानस्वरूप है और वही वाणी के पदों के मूल में विराजमान होता है। क्योंकि यहीं '**आत्मा बुद्धिके साथ मिलकर मनके द्वारा प्राण को संचारित करके नाना प्रकारके शब्द उत्पन्न करता है।**' (पाणिनी-शिक्षा)। यह वर्णन यहां देखनेसे मंत्र का भाव स्पष्ट हो जाता है। और देखिये—

(२२) दिव्य जन्मकर्ता अग्नि।

दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारुं सुहवं जनेभ्यः॥ होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं न शेवं दिव्याय जन्मने॥ (११५; ऋ० १।५८।६)

'हे अग्ने! भृगु (दिव्याय जन्मने) दिव्य जन्मके लिये (चारुं रयिं न) उत्तम धनके समान (मानुषेषु आ दधुः) मनुष्योंमें धारण करते रहे हैं। ऐसा तू (मित्रं शेवं न) सेवनीय मित्र के समान, (होतारं) दाता, (अ-तिथिं) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, ऐसा (वरेण्यं) श्रेष्ठ है।'

दिव्य जन्मकी प्राप्तिकी इच्छासे श्रेष्ठ लोग मनुष्योंमें इस अग्निकी धारणा करते हैं। इसकी धारणा करनेसे वह संतुष्ट होता है और उनका जन्म दिव्य करता है। यह अग्नि वैसा धारण किया जाता है कि, जैसा अत्यंत श्रेष्ठ धन धारण करते हैं। मनुष्यमें सबसे श्रेष्ठ धन किंवा (रयि) श्रेष्ठ शोभा 'आत्मा' ही है। यदि इस मानवी शरीरमें आत्मा न रहा, तो अन्य धन और अन्य शोभाएं कुछ भी कार्य नहीं कर सकतीं। जिससे धनका धनपन रहा है और जिसकी शोभासे शोभा सुशोभित हो रही है, वही सच्चा धन और सच्ची शोभा है। यही धनका धन आत्माही है। सब जानते ही हैं कि, यह आत्मा '**अ+तिथि**' है, क्योंकि

दूसरेकी शरीरमें आनेकी और शरीर छोडकर चले जानेकी तिथि निश्चित नहीं है। यही सेवा करनेयोग्य सच्चा मित्र है, क्योंकि यही सबका मान्य कर रहा है। इसलिये इसकी शक्तिकी धारणा सबको करनी चाहिये। क्योंकि इसकी शक्तिका चिंतन करनेसे ही अपनी शक्तिका विकास हो सकता है। कोई अन्य मार्ग नहीं। इसकी धारणा करनेसे शक्तिकी वृद्धि होती है। इसका कारण यह है कि, यह उपासकको विलक्षण शक्तियां देता है, देखिये—

(२३) शक्ति प्रदाता अग्नि।

ऋाणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निषत्तो रयिषाळमर्त्यः॥ रथो न विक्ष्वृंजसान आयुषु व्यानुषग्वार्या देव ऋण्वति॥ (११२; ऋ० १।५८।३)

'(वसुभिः रुद्रेभिः पुरोहितः) वसुओं और रुद्रोंने जिसको अग्रभागमें रखा है, इस प्रकारका यह (ऋाणा) कर्ता, (होता) दाता, आह्वाता, (निषत्तः) व्यास, (रयि+षाट्) धनके साथ रहनेवाला, (अ-मर्त्यः) अमर देव, (रथो न) रथके समान, (विक्षु आयुषु) प्रजाजनोंमें, (ऋंजसानः) आगे बढनेवाला प्रेरक (वार्याणि) विविध शक्तियाँ (आनुषक् वि ऋण्वति) प्राप्त कराता है।'

इस मन्त्रमें शक्तिप्रदान करनेका गुण स्पष्टतापूर्वक कहा है। जो शक्ति इससे मिलती है, वह साधारण शक्ति नहीं है, परन्तु ऐसी विलक्षण शक्ति होती है कि, जो सब (वार्य) शत्रुओंका निवारण कर सकती है। जो शक्ति शरीरमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य अपने सब प्रकारके शत्रुओंको दूर भगा देता है। सब अन्य शक्तियोंसे **'आत्मशक्ति'** ही सबसे विशेष प्रभावशाली होती है। आत्मशक्ति के द्वारा अन्य शक्तियोंका उपयोग किया जाता है, तथा आत्माकी दुर्बलता होनेसे अन्य शक्तियाँ कुछ भी कार्य नहीं कर सकतीं; इतनी इस शक्तिकी योग्यता है और यही शक्ति आत्माग्निसे प्राप्त होती है।

(२४) पुरोहित अग्नि। गणराज।

इस मन्त्रमें 'पुरोहित' शब्दके अर्थका निश्चय हुआ है। 'पुरः+हित' शब्दका अर्थ 'अग्रभागमें रखा हुआ, अग्रेसर, प्रमुख, मुखिया' है। इस अर्थका स्वीकार करनेसे प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि, यह किनका अग्रेसर है, किन्होंने इसको अग्रभागमें अथवा मुख्य स्थानमें रखा है, किनका यह मुखिया है? इत्यादि प्रश्नोंका उत्तर इस मंत्रमें दिया गया है= (वसुभिः रुद्रेभिः पुरोहितः) वसु तथा रुद्र देवोंने इसको अपना अग्रेसर अथवा मुखिया बनाया है। वसु रुद्र और आदित्य ये **'गणदेव'** हैं। गणदेव वे होते हैं कि, जो अपने संघमें रहते हैं और संघसे ही कार्य करते हैं। संघशक्ति का महत्त्व इन **'गणदेवों'** के द्वारा बताया जाता है। गणदेवों के प्रत्येक संघका एक मुखिया होता ही है, और उस मुखिया को **'पुरो-हित'** कहते हैं, क्योंकि गणोंके सब घटकों द्वारा वह स्वीकृत होता है। यह एक प्रकारकी **'गण-राज-संस्था'** है जो वैदिक मन्त्रोंमें वर्णन की है। इसका व्यापक स्वरूप बतानेके लिये यहां स्थान नहीं है, तथापि इतना कहना आवश्यक है कि, इसके मुखिया को जैसा **'पुरो-हित'** कहते हैं, उसी प्रकार **'गण-राज, गणपति, गणेश'** आदि नाम होते हैं और इसकी अनुमतिके विना कोई गण कोई कार्य कर नहीं सकता। प्रत्येक कार्यमें इसको बुलाया जाता है, इसका सत्कार किया जाता है और इसकी अनुमतिसे ही सब कार्य किये जाते हैं। यद्यपि गणके प्रत्येक व्यक्तिको अपना मुखिया चुननेका अधिकार होता है, तथापि मुखिया चुननेके पश्चात् मुखियाका अधिकार सर्वतोपरि होता है।

इस मंत्रमें वसुगण और रुद्रगण का नाम आया है। अध्यात्मदृष्टिसे 'रुद्र' नाम प्राणोंका है। पंच प्राण और पंच उपप्राण मिलकर दस प्राण मानवी शरीरमें कार्य करते हैं। यही प्राणगण किंवा रुद्रगण हैं। स्थूल शक्तियों के अर्थात् पृथिवी आप तेज आदिकों के गणों का नाम **'वसुगण'** है। इन दोनों गणोंका अग्रेसर मुखिया आत्मा ही है। इन दोनों गणों के सब देवताओंने इस आत्माको ही अपना मुखिया बनाया है। सब कार्य करनेके समय ये सब देवगण इसको अपने अग्रभागमें रखते हैं और इसीसे शक्ति लेकर कार्य करते हैं। यह पुरोहितका भाव पाठकों को यहां ठीक ध्यान में धरना चाहिये।

यह अमर आत्मदेव सब अन्य देवताओं का अग्रेसर है और सब प्रजाओं में बैठा हुआ उन सबको विलक्षण शक्ति देता है। इस दृष्टिसे इस मंत्रका विचार करनेपर आत्माग्नि की ठीक ठीक कल्पना आ सकती है। इसी का और वर्णन देखिये—

(२५) हस्तपादहीन गुह्य अग्नि।

स जायत प्रथमः पस्त्यासु महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ। अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायोयुवानो वृषभस्य नीळे॥११॥ प्र शर्ध आर्त प्रथमं विपन्यं ऋतस्य योना वृषभस्य नीळे। स्पार्हो युवा वपुष्यो विभावा सप्त प्रियासोऽजनयन्त वृष्णे॥१२॥ (६३७-३८; ऋ० ४।१)

'(स प्रथमः) वह पहला (पस्त्यासु जायत) प्रजाओंमें हुआ है। तथा वह (अस्य महः रजसः बुध्ने योनौ) इस महान् अंतरिक्षके मूल स्थानमें होता है। यह (आपाद्-शीर्षा) पांव सिर आदि अवयवोंसे रहित (अंतः-गुहमानः) अंदर गुप्त है। (वृषभस्य नीळे) वीर्ययुक्त पुरुषके स्थानमें (आ योयुवानः) संघटनाका कार्य करता है, संमेलन का कार्य करता है।' इस मन्त्रका का तात्पर्य यह है कि, सब देवोंमें अत्यंत प्राचीन तथा सबसे पहिला यह देव है, इस महान् अवकाशमें इसका स्थान है। न इसको हाथ हैं और न पांव, न सिर आदि अवयव हैं; अर्थात् यह अशरीरी निराकार है और सबके अंदर गुप्त अथवा व्याप्त है। शरीररहित होनेके कारण ही यह निरवयव होनेसे सबमें व्याप्त और अव्यक्त है। बलवान् मनुष्यके अंदर यह संमिश्रणका कार्य करता है, अर्थात् निर्बलके अंदर यह भेदन का कार्य करता है। '**नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः**' (मुंडक० ३।२।४) यह आत्मा बलहीनको प्राप्त नहीं होता, यह तत्त्वज्ञान का सिद्धांत ही है। निश्चयपूर्वक दृढ अनुष्ठानसे ही इसकी प्राप्ति होती है और जिस समय इसकी प्राप्ति होती है, उस समय उस मनुष्यकी शक्ति, शोभा और योग्यता बढ जाती है।

'(ऋतस्य योनौ) ऋतके मूल कारणमें (वृषभस्य नीळे) बलवान् के स्थानमें (प्रथमं विपन्यं) पहले ज्ञानी को (शर्धः प्र आर्त) तेज और बल प्राप्त होता है। यह (स्पार्हः) स्पृहणीय, प्राप्त करने की इच्छा करनेयोग्य, युवा (वपुष्यः) देहधारी, (विभावा) प्रभावयुक्त है। (वृष्णे) इस बलवान् के लिये (सप्त प्रियासः) सात प्रिय देव (अजनयंत) उत्पन्न करते हैं।'

इस मन्त्रके अन्य शब्द पूर्व लेखके अनुसार सुगमतासे ध्यानमें आ सकते हैं, इसलिये उनका विशेष वर्णन करनेकी यहां आवश्यकता नहीं है। पूर्व मन्त्रमें 'अ-पाद्-शीर्ष' हस्तपाद आदि अवयवहीन है, ऐसा वर्णन है, परन्तु यहां इस मन्त्रमें 'वपुष्यः' शरीरधारी है, ऐसा है। यद्यपि इसमें परस्पर विरोध दिखाई देता है, तथापि विचारकी दृष्टिसे इसमें कोई विरोध नहीं है। क्योंकि यह आत्माग्नि यद्यपि वस्तुतः शरीररहित है, तथापि इस शरीरको धारण करनेवाला यही है। इसलिये दोनों शब्द इस आत्मामें सुसंगत होते हैं। इस आत्मासेही इस शरीरमें तेज, बल, वीर्य आदि होता है, इसीलिये इसके विषयमें सब ही प्राणी हार्दिक प्रेमभाव रखते हैं, सबको ही यह प्रिय है। इस मन्त्र में 'सात प्रिय देव इसको प्रकट करते हैं,' ऐसा जो कहा है, इसका स्पष्टीकरण इस लेखके अंतिम भागमें होगा। वहांही इसको पाठक देख सकते हैं। (सप्त) सात संख्या का महत्त्व क्या है, इसका पता वहांही पाठकोंको लग सकता है। अस्तु। इस प्रकार इस गुह्य अग्निका वर्णन वेदमन्त्रोंमें है। इससे स्पष्ट होता है कि, यह आत्माग्नि हृदयाकाशमें सब प्रजाओंके अंदर गुह्य रीतिसे विराजमान है। तात्पर्य, 'अग्नि' शब्दसे केवल 'आग' का ही भाव नहीं लिया जाता, परन्तु प्रकरणानुसार अन्य अर्थ भी इस शब्दसे व्यक्त होते हैं। इसका अब और एक विलक्षण रूपक देखिये-

(२६) वृद्ध नागरिक।

अधा हि विक्ष्वीड्योऽसि प्रियो नो अतिथिः।
रण्वः पुरीव जूर्यः सूनुर्न त्रययाय्यः॥

(९५८; ऋ० ६।२।७)

'(अधा हि) और तू (नः प्रियः अतिथिः) हमारा प्रिय अतिथि तथा (विक्षु ईड्यः असि) प्रजाओंमें पूजनीय है। जैसा (पुरि जूर्यः रण्वः इव) नगरीमें वृद्ध पुरुष रमणीय होता है, अथवा (सूनुः न त्रययाय्यः) जैसा पुत्र संरक्षणीय होता है।'

नगरीमें जो सबसे वृद्ध बुजुर्ग होता है, वह सबको वंदनीय होता है। इसी प्रकार यह इस शरीररूपी नवद्वार पुरीमें बहुत समय से रहनेवाला सबसे प्राचीन पुरुष होनेसे सबको पूज्य है। तथा घरमें जैसा बालक सबको संरक्षणीय होता है, वैसा यहां इस शरीररूपी घरमें यह बालकवत् ही है और इसलिये इसका संगोपन करना और इसकी सब शक्तियोंका विकास करना सबको उचित है।

दोनों उपमाओंमें एक विशेष बात बताई है कि, यह स्वयं अशक्त है और इसलिये दूसरोंकी सहायताकी अपेक्षा करता है। यद्यपि वृद्ध मनुष्य पूज्य होता है, तथापि तरुणोंके साथ उसकी शक्तिका मुकाबला नहीं हो सकता। तथा यद्यपि बालक सुकुमार होनेसे सबको प्यारा होता है, तथापि तरुणोंकी अपेक्षा वह अशक्त ही होता है। यद्यपि वृद्ध और बालक अशक्त होते हैं, तथापि वृद्धमें अनुभवकी शक्ति होनेसे वह सबको वंदनीय होता है और बालक सुकुमार होनेसे तथा सब शक्तियोंको बीजवत् अपने अंदर धारण करता है, इसलिये सबको प्यारा होता है। आत्मा इस शरीरके जन्मसे पहिले विद्यमान था, इसलिये शरीरसे वृद्ध है और उसकी संपूर्ण शक्तियोंका विकास होनेवाला है, इस कारण वह बालकवत् ही है। तथा यह आत्मा जो कार्य करता है, यद्यपि अपनी शक्तिसे करता है, तथापि इंद्रियोंद्वारा कराता है, इसलिये इंद्रियोंकी सहायताकी अपेक्षा रहनेके कारण वह वृद्धवत् अथवा बालकवत् दूसरेकी सहायता चाहता है। ये सब रूपकके भाव यहां देखनेयोग्य हैं। अग्निके रूपसे यह आत्माका भाव यहां बताया है। अग्निकी चिनगारी छोटी होनेके कारण जैसी उसकी रक्षा करनी आवश्यक है, परंतु अनुकूल परिस्थिति प्राप्त होनेके पश्चात् वही चिनगारी बडे दावानल का रुद्ररूप धारण करती है और बडे धुरंधर शत्रुओंको भी डराती है, उसी प्रकार यह आत्मा प्रारंभमें अपने अंदर सब शक्तियां बीजरूपसे धारण करता है, इस समय बडा अशक्तसा प्रतीत होता है, परंतु अनुकूल माता-पिता, गुरु, मित्र आदिकी परिस्थिति प्राप्त होनेके पश्चात् जिस समय यह आत्माका "महात्मा" बनता है, तब यही सबको पूज्य होता है, और इसके तेजसे इसके शत्रुभी डरने लग जाते हैं। इस प्रकार अग्निके साथ इस आत्माकी समानता देखनेयोग्य है। इसका ग्रहण कैसे किया जाता है, इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

(२७) प्रजामें देवताका अनुभव।

अग्ने कदा त आनुषग्भुवद्देवस्य चेतनम्।
अधा हि त्वा जगृभिरे मर्तासो विक्ष्वीड्यम्॥
(६९४; ऋ. ४।७।२)

'हे अग्ने! जब तुझ देवताकी चेतनता हुई, तब ही तुझे सब मर्त्योंने (विक्षु ईड्यं) सब प्रजाओंमें पूजनीयको (जगृभिरे) धारण किया।' अर्थात् जब तेरे चैतन्यका पता लगा, तब मनुष्योंने तेरा ग्रहण किया। आत्माका ग्रहण उस समय होता है कि, जब आत्माकी चेतनशक्तिका पता लग जाता है। विचारशील मनुष्य पहले शरीरमें अनुभव करता है कि, इसमें एक चेतन चालक शक्ति है, तत्पश्चात् उसकी खोज की जाती है और उसका ग्रहण करनेके लिये अनुष्ठानपूर्वक साधन होता है। इसके पश्चात् उसका ग्रहण हो जाता है। यह उसकी अंतिम उन्नतिकी सीमा है। इसका वर्णन देखिये—

(२८) न दबनेवाला।

स मानुषीषु दूळभो विक्षु प्रावीरमर्त्यः।
दूतो विश्वेषां भुवत्॥ (७१३; ऋ० ४।९।२)

'वह (मानुषीषु विक्षु) मानवी प्रजाओंमें (दूळभः दुर्दमः) न दबनेवाला (अमर्त्यः) अमर (प्रावीः) प्रकट हुआ है, वह सबका दूत हो गया है।' इस के पूर्व एक मंत्रमें कहा है कि, यह वृद्धके समान अथवा बालकके समान है। यह प्रारंभिक अवस्था थी। इस प्रारंभिक अवस्थामें इसका बचाव करना आवश्यक होता है। परंतु जिस समय यह अपनी शक्तियोंके उत्कर्षके साथ प्रकट हो जाता है, उस समय यही (दूळभः- दुर्दमः) न दबनेवाला हो जाता है। कितनी भी शक्ति शत्रुकी हो, उसके दबावसे यह दबाया नहीं जायगा, इतनी प्रचंड शक्ति यह प्राप्त करता है। इस मंत्रमें एक विशेष बात कही है। वह यह है कि, यह आत्मा (मानुषीषु विक्षु दूळभः) मानवी प्रजाओंमें ही यह न दबनेवाला बन जाता है, यह अवस्था उसको मानवयोनीमें ही प्राप्त होती है। पशुपक्षियोंकी योनिमें इस प्रकार उन्नति यह प्राप्त नहीं कर सकता। इस विधानसे इस अग्निका आत्मा ही स्वरूप है। यह बात निश्चित होती है, क्योंकि आत्माके विकासकी कर्मभूमि या कुरुक्षेत्र यह मानवयोनि ही है। अन्यत्र ऐसा पुरुषार्थ नहीं हो सकता। यह सबका 'दूत' है। जिस समय श्रद्धाभक्तिसे इसको कहा जाता है कि, यह कार्य ऐसा करो, तो यह वैसा बना देता है। '**मानस-चिकित्सा**' से जो आरोग्य प्राप्त होता है, वह इसी आत्माकी निज शक्तिसे होता है। 'हे आत्मदेव! तुम मुझे आरोग्य दो, इस अवयवमें नीरोगता करो,' ऐसा विश्वासपूर्वक कहनेसे इसकी

शक्ति वहां इष्ट कार्य कर देती है । इसको कहनेसे यह वैसाही कर देता है, इसलिये इसको आज्ञाधारक ' दूत ' कहते हैं । अग्निमंत्रोंमें दूत के विषयमें बहुत वर्णन है । प्रसंगविशेषसे भिन्न भिन्न प्रकारका भाव उस वर्णन में है, तथापि उनमें एक भाव यह है, जो यहां बताया है। अन्य भाव स्थान स्थान में बताये जांयगे । इस विषय में निम्न मंत्र देखिये—

अग्निर्देवेषु राजत्यग्निर्मर्तेष्वाविशन् ।
अग्निर्नो हव्यवाहनोऽग्निं धीभिः सपर्यत ॥
(९१४; ऋ. ५।२५।४)

(१) अग्नि देवोंमें प्रकाशता है, (२) अग्नि मर्त्योंमें आवेश करता है, (३) अग्नि हमारा अन्नवाहक है, (४) इसलिये अग्नि की बुद्धियों और कर्मोंसे पूजा कीजिये ।'

इस मंत्रमें चार विधान हैं । अग्नि देवोंमें प्रकाशता है, यह पहिला कथन है । देव शब्द इंद्रियवाचक सुप्रसिद्ध है। इंद्रियोंमें आत्माकी शक्ति प्रकाशित होती है । सब मनुष्यों को इसका अनुभव अपने ही शरीरमें हो सकता है । आंख, नाक, कानोंमें आत्माकी ही शक्ति वहांका कार्य कर रही है । यही आत्माका आवेश मर्त्योंमें है । शरीर स्वयं चेतन नहीं है, आत्माकी शक्तिसे ही इसकी चेतनता है । आत्म-शक्तिका आवेश जब इस शरीरमें होता है, तभी यह मूक शरीर वक्तृत्व करने लग जाता है, जड शरीर दौडने लग जाता है, मुर्दा शरीर सचेतन प्रतीत होता है । यही इस महा-भूत का संचार है, इसीको आवेश कहते हैं । यही आत्माग्नि इस शरीर में अन्न का भोग लेता है और सब इंद्रियोंको पहुंचाता है । प्रत्येक इंद्रियमें एक एक देव बैठा है, वहां उसके पास योग्य अन्नरसको पहुंचानेका कार्य यह करता है, यही उसका ' दूत ' भाव है । जिस प्रकार दूत, उसको दिये हुए पदार्थ बांट देता है, ठीक इसी प्रकार यह दूत शरीरस्थानीय देवताओंको अन्नरसका विभाग यथायोग्य रीतिसे बांटता रहता है । इस दूतकर्मसे ही अन्य देव अर्थात् इंद्रियगण पुष्ट होते हैं और अपना अपना कार्य यथायोग्य रीतिसे करते रहते हैं । यह आत्मा इतना कार्य कर रहा है, इसलिये बुद्धियोंद्वारा इसकी उपासना करनी अत्यावश्यक है । यह इस मंत्रका तात्पर्य है । यह जैसा अचेतन देहको सचेतन करता है, वैसेही मूकसे वक्तृत्व कराता है, इस विषयमें निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(२९) मूकमं वाचाल ।

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो निधायि । स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम ॥ (११३७; ऋ० ७।४।४)

'(अयं प्रचेताः अग्निः) यह ज्ञानी अग्नि (अ-कविषु कविः) शब्द न करनेवालों में शब्दका प्रवर्तक, (मर्तेषु अमृतः) मरनेवालोंमें अमर (निधायि) रहा है। हे (सहस्-वः) बलवान् ! तेरे विषयमें सदा हम (सु-मनसः) मन का उत्तम भाव धारण करेंगे, इसलिये वह तू हमारी (मा जुहुरः) हिंसा न कर ।'

इस मंत्रके प्रथमार्धमें आत्माग्निके गुण वर्णन किये हैं । (१) यह आत्माग्नि (अ-कविषु) जो शब्दका उच्चार नहीं कर सकते, जो स्वयं ज्ञानी नहीं है, उनमें (कविः) शब्द का प्रवर्तक और ज्ञानी है । (२) तथा (मर्तेषु) मरनेवालों में यह अमर तत्त्व है। इस विधानकी सत्यता हमने इससे पूर्व देखी है । मुख जड है, स्वयं मुखसे शब्द नहीं निकल सकता, परन्तु यह जड मुखसे बडा ओजस्वी वक्तृत्व करा सकता है । सब हस्तपादादि अवयव और इंद्रिय मरनेवाले और क्षीण होनेवाले हैं, उन सबमें यह अविनाशी और अमर है। जो ज्ञानी लोग इसके विषयमें मनमें (सु-मनसः) उत्तम भावना धारण करेंगे, उनकी उन्नति होगी, क्योंकि यह आत्माग्नि अपनी शक्ति उनमें विकसित करता है और उनको तेजस्वी करता है । इसीलिये आत्मनिष्ठ मनुष्योंका तेज सर्वत्र फैलता है । यह आत्माग्नि सच्चा मित्र है और इसीलिये उपासकोंकी सहायता करता है—

(३०) पुराना मित्र ।

द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रत्नमृत्विजमध्व-रस्य जारं। बाहुभ्यामग्निमायवोऽजनयंत विक्षु होतारं न्यसादयन्त ॥ (१५३१; ऋ० १०।७।५)

'(द्युभिः हितं) तेजस्वियोंके साथ रहनेवाला, (प्रत्नं मित्रं इव प्रयोगं) पुराने मित्रके समान योग्य सहायता देनेवाला, (ऋतु+इज) ऋतुके अनुकूल कर्म करनेवाला, (अ-ध्वरस्य जारं) सत्कर्म की समाप्ति करनेवाला, अग्नि है । इसको (आयवः) मनुष्य अपने पुरुषार्थसूचक बाहुओंसे प्रकट करते रहें और उस (होतारं) दाताको (विक्षु) प्रजाओंमें रखते रहें ।'

यह आत्माग्नि (प्रत्नं मित्रं) पुराने मित्रके समान योग्य समयमें योग्य सहायता करनेवाला है। जो इस आत्माग्नि की यह मित्रता जानते हैं, वेही उसका सच्चा मूल्य अनुभव करते हैं और वेही अपने आपको धन्य धन्य बना सकते हैं। बाहुबलों अर्थात् पुरुषार्थोंसेही उसकी प्रसिद्धि होती है। यह महात्मा ऐसे शुभ कर्म करनेसे जगत् में वंदनीय बना है। योग्य सर्वजन हितकारी पुरुषार्थों से ही प्रशंसा होती है। तात्पर्य यह है कि, निष्ठापूर्वक ज्ञानसे आत्माग्निका अनुभव होता है और सर्वजन हितकारी पुरुषार्थोंसे उसकी प्रसिद्धि होती है। इस प्रकार पुराने मित्रकी उदारता है, इसलिये सबको इसके विषयमें आदर रखना उचित है। अब और इसका अमरत्व देखिये—

(३१) विनाशियोंमें अविनाशी।

अपश्यमस्य महतो महित्वममर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु॥
(१६३७; ऋ० १०।७९।१)

'(मर्त्यासु विक्षु) मर्त्य प्रजाओंमें (अस्य महतः अमर्त्यस्य) इस महान् अमरका महत्त्व देखा है।' यह अनुभव की बात इस मंत्रमें कही है। सब देह मरनेपर भी यह अमर रहता है। मरणधर्मी शरीरों में यह अमर और अविनाशी आत्मशक्ति रहती है। इसीका नाम आत्माग्नि है। तथा—

अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम्।
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मंद्रतमो विशि॥
(१४१९; ऋ० ८।७१।११)

'(सहसः सूनुं) सहनशक्तिको बढानेवाले, (जातवेदसं) जिससे ज्ञान और धन की उत्पत्ति हुई है, ऐसे अग्निकी (वार्याणां दानाय) शत्रुनिवारक शक्तियोंके दानके लिये प्रशंसा करता हूं। जो (मर्त्येषु अमृतः) मरणधर्मवालों में अमर, (विशि मंद्रतमः) प्रजामें अत्यंत तृप्ति करनेवाला (होता) दाता (द्वि-ता भूत्) दो प्रकारसे होता है।'

(१) यह आत्माग्नि सहनशक्ति अर्थात् शत्रुको दूर भगानेकी शक्ति बढाता है, आत्मिक बलसेही संपूर्ण शत्रु दूर भाग जाते हैं। (२) यह चित्स्वरूप होनेसे इससे ही ज्ञान का प्रवाह चलता है (३) शत्रुता-निवारक धन और शक्ति का प्रदान यही करता है। (४) '**सब मर्त्यों में यही अमर है,**' और (५) सबको अत्यंत हर्ष देनेवाला भी यही है। (६) इसकी शक्ति स्थूल और सूक्ष्ममें संचारित हो रही है। यह इसका वर्णन स्पष्टतासे इसका आत्मिक स्वरूप व्यक्त कर रहा है। तथा और देखिये—

स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोरग्निर्वंदारु
वेद्यश्चनो धात्। विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषू-
षर्भुद् भूदतिथिर्जातवेदाः॥(९७२; ऋ० ६।४।२)

'(वस्तोः चक्षणिः न) दिनमें सूर्य जैसा (विभावा) प्रकाशक (वेद्यः) और जाननेयोग्य, वह अग्नि (वंदारु चनः) वंदनीय अन्न (नः धात्) हम सबको देवे। (विश्व+आयुः अमृतः) पूर्ण आयु देनेवाला यह अमर (मर्त्येषु उषर्भुत्) मर्त्यों में ब्राह्ममुहूर्तके समय जागनेवाला (जातवेदाः) ज्ञान का प्रकाशक (अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है ऐसा है।'

सूर्य जैसा सब को प्रकाश देता है, उसी प्रकार यह आत्माग्नि सबको ज्ञानका प्रकाश देता है। इसलिये यह (वेद्यः) जाननेयोग्य है। इसकी खोज करनी चाहिये, ऐसा जो कहते हैं, उसका यही कारण है। (विश्व-आयुः) सब आयु का धारण यही करता है, जबतक यह अमर देव मर्त्य शरीर में रहता है, तब तकही इसकी आयु होती है। जब यह चला जाता है, तब कहते हैं कि, इसकी आयु पूरी हो गई। इसका तात्पर्य ही यह है कि, सबकी आयु इसके साथही सम्बन्धित होती है। इस प्रकारका यह आत्माग्नि मर्त्योंमें अमर रूपसे रहता है। तथा और देखिये—

स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा
विभाति॥ (९८३; ऋ० ६।५।५)

'हे अमृत! वह मर्त्योंमें (प्र-चेता) विशेष ज्ञानसंपन्न (राया) धन और (द्युम्नेन श्रवसा) तेजस्वी यशसे (विभाति) विशेष चमकता है।' अमर आत्माग्निके कारण ही यह यश और यह धनयुक्त तेज उसको प्राप्त होता है, इसलिये यह धन, शोभा, तेज और यश उसीका है और उसीसे सबको प्राप्त होता है। इसलिये इसीकी उपासना प्रातःकाल करनी चाहिये। देखिये—

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेतातिथिः।
विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्तेषु रण्यति॥
(८८१; ऋ० ५।१८।१)

'(अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, वह (विशः) सबका निवासक (पुरु+प्रियः) सबको प्रिय अग्नि (प्रातः स्तवेत) प्रातःकाल में प्रशंसित होवे। वह मर्त्योंमें अमर (विश्वानि हव्या) सब अन्नों को (रण्यति) चाहता है।'

यह पूर्वोक्त आत्माग्नि सबको प्रिय है, इससे अधिक प्रिय वस्तु दुनियाभरमें और कोई भी नहीं है। इसलिये इसको 'पुरु-प्रिय' कहते हैं, इस विषयमें उपनिषदों में निम्न प्रकार वर्णन है—

आत्मानमेव प्रियमुपासीत॥ (बृ० उ० १।४।८)
न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं भवति आत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति॥ .... न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवंत्यात्मनस्तु कामाय देवाः प्रिया भवंति॥ ..... न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवत्यात्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति। आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्यः॥
(बृ० उ० २।४।५)

'आत्माको ही प्रिय मानकर उपासना करनी चाहिये। अरे वित्त के लिये वित्त प्रिय नहीं होता है, परन्तु आत्माके लिये ही वित्त प्रिय होता है। ... देवोंके लिये देवतायें प्रिय नहीं होती हैं, परन्तु आत्माके लिये ही देव प्रिय होते हैं। .... सबके लिये ही सब प्रिय नहीं होता है, परन्तु आत्माके लिये ही सब कुछ प्रिय होता है। इसलिये आत्मा की खोज करनी चाहिये और उसीका श्रवण, मनन, निदिध्यासन करना चाहिये।' पूर्वोक्त वेदमंत्रमें जो 'पुरु+प्रिय' शब्द है, उसीका यह स्पष्टीकरण है। प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्तमें इसीका चिंतन करना चाहिये—

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय चिंतयेदात्मनो हितं॥

'ब्राह्म मुहूर्त में उठकर आत्मा का हित करनेका उपाय सोचना चाहिये।' यह आर्योंकी सनातन रीति है। अस्तु।

पूर्वोक्त मंत्रमें कहा है कि, यह आत्मा सब अन्न, (विश्वानि हव्या) सब प्रकारका भक्ष्य चाहता है। इसकी सत्यता देखनेके लिये हरएक योनिके प्राणियोंका निरीक्षण कीजिये। हरएक योनिके प्राणीका भक्ष्य अलग अलग रहता है। प्रायः सब योनियों के प्राणी सब कुछ पदार्थ खाते हैं। इसलिये कहा है कि—

स यद्यदेवाऽसृजत तत्तदत्तुमध्रियत सर्वं वा अत्तीति तददितेरदितित्वं सर्वस्यैतस्यात्ता भवति सर्वमस्यान्नं भवति य एवमदितेरदितित्वं वेद॥ (बृ० उ० १।२।५)
सर्वस्यात्ता भवति सर्वमस्यान्नं भवति।
(बृ० उ० २।२।४)

व्रात्यस्त्वं प्राणैक ऋषिरत्ता विश्वस्य सत्पतिः॥
(प्रश्न उ० २।११)

'उसने जो उत्पन्न किया, वह सब खाने के लिये धर दिया, क्योंकि यह सबका भक्षक है। इसीलिये इसको अदिति कहते हैं, यह सबका भक्षक है और सब इसका अन्न है। हे प्राण! तू व्रात्य, एक, ऋषि, सत्पति और सब विश्वका भक्षक है।' यह उपनिषदों का वर्णन पूर्वोक्त मंत्र के साथ देखनेयोग्य है। इस विधानों की तुलना करने से मंत्र का आशय अधिक स्पष्ट होता है और वैदिक कल्पना विशेष स्पष्ट होनेमें सहायता हो जाती है अस्तु। तात्पर्य यह कि, यह आत्माग्नी ही (अत्ता) भक्षक किंवा सर्वभक्षक है। यह न केवल मर्त्योंका अपितु देवोंका भी हित करता है, इस विषय में निम्न मंत्र देखिये—

(३२) अनेक देवोंका प्रेरक एक देव।

यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा होता यजिष्ठ इत्कृणोति देवान्॥ (२३४; ऋ० १।७७।१)

'यह मर्त्योंमें अमर, (ऋता-वान्) सत्य नियमों का पालक, दाता, (यजिष्ठः) पूज्य है, और यह देवोंका हित करता है।' यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि, यह मर्त्य शरीरमें रहता हुआ देवोंका हित कैसा करता है? इस प्रश्नका उत्तर इतनाही है कि, इस शरीरमें ही स्थानस्थानमें अनेक देवताएं अंशरूपसे आकर बैठीं हैं, उनका हित यही करता है। आंखमें सूर्यनारायण है, नाकमें अश्विनी देव हैं, छातीमें मरुत् हैं, इसी प्रकार अन्यान्य स्थानोंमें अन्यान्य देव हैं। इन सब देवगणोंका हित यही आत्माग्नि कर रहा है। देवोंका अपने अपने स्थानमें निवास कराना, उनको अन्नरस पहुंचाना, उनसे योग्य कार्य लेना, अपने साथ उनको लाना और ले जाना, उनको हृष्टपुष्ट करना, इत्यादि सब कार्य इसी आत्माग्निके हैं। अग्निसूक्तोंमें स्थानस्थानमें

इस विषय के वर्णन अनेक हैं, उनका विशेष विचार किसी समय हो जायगा। यहां केवल सूचानाके लिये लिखा है। तथापि कुछ थोडे वाक्य देखिये—

[१] स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ य. ३४।५१
[२] स देवषु वनते वार्याणि ॥ ऋ. ५।४।३
[३] देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत् ऋ. २।१२।१
[४] देवो देवान् परिभूर्ऋतेन ॥ ऋ. १०।१२।२
[५] देवो देवान् यजत्वग्निरर्हन् ॥ ऋ. २।३।१
[६] देवो देवान् यजसि जातवेदः ॥ ऋ. १०।११०।१
[७] देवो देवान् स्वेन रसेन पृंचन् ॥ ऋ.९।२७।१२

'(१) वह देवोंमें दीर्घ आयु करता है। (२) वह देवोंमें शक्तियां देता है। (३) वह देव अपने कर्मसे देवोंको सुभूषित करता है। (४) सत्यसे वह देव देवोंको व्यापता है। (५) अग्नि देव योग्य होनेसे देवोंका यजन करता है, (६) जातवेद अग्नि देव देवोंका यज्ञ करता है। (७) देव अपने रससे देवोंको पुष्ट करता है।'

इस प्रकारके सेंकडो वचन हैं कि, जो आत्मा और इंद्रियोंका ही संबंध वर्णन कर रहे हैं। आत्मा अग्नि है और इंद्रिय-स्थानमें सब देवतागण हैं। इनका ही वर्णन यहां अग्निसूक्तों में मुख्यतया है और इसी प्रकार अन्य देवता के सूक्तोंमें भी है। परंतु यहां अग्निविषयक ही वर्णन का विचार करना है, इसलिये अन्य देवताके मंत्र देखनेकी आवश्यकता नहीं है। अब निम्न लिखित मंत्रमें इसका संबंध अन्य देवोंके साथ देखिये—

त्वां ह्यग्ने सदमित् समन्यवो देवासो देवमरतिं न्येरिरे इति क्रत्वा न्येरिरे। अमर्त्यं यजत मर्त्येष्वा देवमा देवं जनत प्रचेतसं विश्वमादेवं जनत प्रचेतसम् ॥ (६३१; ऋ. ४।१।१)

' हे अग्ने! (स-मन्यवः) अत्यंत उत्साही देव (अरतिं त्वां देवं) गतियुक्त तुझ देवको (सदं इत्) सदा (न्येरिरे) प्रेरित करते हैं। हे (यजत) पूज्य ! (मर्त्येषु अमर्त्य) मर्त्योंमें अमर (आदेवं देवं) देवताको (आजनत) प्रकट करते हैं, तथा (प्र-चेतसं) चित्स्वरूप देवको प्रकट करते हैं।'

यह आत्माग्नि मरणधर्मवालोंमें अमर है और इसको अन्य देव प्रकट कर रहे हैं। अर्थात् अन्य देवताओंके कारण इसका अनुभव हो रहा है। बाह्य जगत् में देखिये कि, सूर्यादि देवताओंके अस्तित्व से ही परमात्माका अस्तित्व है, यह कल्पना उत्पन्न होती है। इसी प्रकार अध्यात्मपक्षमें अपने देहमें आंख, नाक, कानोंके व्यापार देखकर इनके अंदर एक आत्मतत्त्व है, ऐसा अनुभव होता है। दोनों दृष्टियोंसे देवताएं आत्माको प्रकट करती हैं, यह कथन सत्य है। इस प्रकार मर्त्योंमें अमर आत्माग्निका वर्णन वेदमें अग्निके मिषसे होता है। इस विषयमें और एक ही मंत्र देखिये—

यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा देवो देवेष्वरतिर्निधायि। होता यजिष्ठो मह्ना शुचध्यै हव्यैरग्निर्मनुष ईरयध्यै॥ (६४७; ऋ. ४।२।१)

' (यः अमृतः) जो अमर (ऋतावा) सत्य धर्मसे युक्त, (अरतिः) गतिमान् अग्निदेव है, वह (मर्त्येषु) मर्त्योंमें (निधायि) रखा है। यह (होता) दाता (यजिष्ठः) पूज्य (मह्ना) अपने महत्त्वसे (शुचध्यै) प्रकाश करनेके लिये रखा है। तथा (हव्यैः) अन्नोंसे (मनुषः) मनुष्यको (ईरध्यै) प्रेरणा अर्थात् उन्नति करने के लिये रखा है।'

इस मंत्रमें यह आत्माग्नि किस प्रयोजन के लिये यहां इस शरीरमें रखा है, उसका वर्णन है। श्री सायणाचार्य इस मंत्रपर निम्न प्रकार भाष्य करते हैं।

मर्त्येषु मनुष्यसम्बंधिषु वागादींद्रियेषु निहितः। अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत् इति श्रुतेः। (सा० भाष्य०, ऋ० ४।२।१)

' मर्त्यों में अर्थात् मनुष्यसंबंधी वाग् आदि इंद्रियोंमें रखा है। क्योंकि अग्नि वाक् बनकर मुखमें प्रविष्ट हुआ, ऐसा श्रुतिवचन है। (तै. ब्रा. ३।९।१७)'। यह आत्माग्नि मनुष्योंमें रहकर (शुचध्यै) उनमें तेज उत्पन्न करता है, तथा (ईरध्यै) उन्नतिकी ओर प्रेरणा करता है। ये दो कार्य इसके इस शरीरमें हैं। मर्त्य प्राणियोंमें अमर आत्माग्निका यह कार्य हरएक को देखनेयोग्य है। अपने अंदर इस प्रकार की दिव्य और अमर आत्मशक्ति है और वह हमको उन्नतिकी ओर प्रेरणा कर रही है, यह विश्वास उत्पन्न होना चाहिये। वैदिक धर्मका यही उद्देश्य है। अपने नित्य जपके गायत्री मंत्रमें (धियो यो नः प्रचोदयात् । ऋ. ३।६२।१०) 'जो हमारी बुद्धियोंको प्रेरणा

करता है, " उसका हम ध्यान करते हैं; ऐसा जो कहा है, उसका भी यहां विचार करना चाहिये । क्योंकि दोनों में उन्नतिकी प्रेरणा समानही है । अस्तु । इस प्रकार प्रेरक आत्माग्नि मर्त्योंमें है और वह अमर है, यह बात उक्त मंत्रोंद्वारा सिद्ध हुई । अब अन्य बातका विचार करेंगे । वेदमें देवों के साथ अग्नि आता है, अथवा जाता है, इस आशयके वर्णन अनेक स्थानोंमें हैं । इनमेंसे कुछ मंत्र इससे पूर्व दिये गये हैं और कुछ आगे दिये जांयगे । यहां उक्त आशय के ही परंतु वही आशय अन्य शब्दोंद्वारा जिनमें बताया है, ऐसे मंत्र पहिले दिये जाते हैं । उनका विचार होनेके पश्चात् देवोंका संबंध अग्निके साथ देखेंगे—

(२३) अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि ।

जिस समय अग्निका स्वरूप निश्चय करना होता है, उस समय ' अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि है. ' यह वेदका वर्णन सब से पहले देखना चाहिये । क्योंकि कि ऐसे मंत्रोंमें " अग्नि " शब्द विशेष भावसे प्रयुक्त होता है । देखिये—

विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः ।
चनो धाः सहसो यहो ॥ (३७; ऋ० १।२६।१०)

' हे (सहसः यहो) बल के संरक्षक ! हे अग्ने ! तू (विश्वेभिः अग्निभिः) सब अग्नियोंके साथ इस यज्ञमें आ और इस वचन को सुनो । तथा हमको (चनः) अन्न दो ।" इस मन्त्रका कथन स्पष्ट है कि, यह अग्नि एक यज्ञमें अपने साथ सब अग्नियोंको लाता है । अब पता लगाना चाहिए कि, यह एक अग्नि कौन है और उसके साथ आनेवाले अनेक अग्नि कौन हैं । इसका पता लगानेके लिए निम्न लिखित मन्त्र देखिए-

अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः ।
यज्ञेषु य उ चायवः ॥ (५३०; ऋ० ३।२४।४)

' हे अग्ने ! (विश्वेभिः अग्निभिः देवेभिः) सब अग्निदेवों के साथ तू (गिरः महय) वाणीको सुपूजित करो, तथा जो (चायवः) यज्ञमें पूजक होते हैं, उनको भी उन्नत करो ।'

इस मन्त्रमें (अग्निभिः देवेभिः) अग्नि और देव ये शब्द एकही पदार्थके द्योतक हैं । तात्पर्य, किसी स्थानपर ' देव ' शब्द प्रयुक्त हुआ अथवा किसी स्थानपर ' अग्नि ' शब्द का उपयोग हुआ, तोभी उन दोनोंसे एकही वक्तव्य सिद्ध होता है । अर्थात् " हे अग्ने ! तू देवोंके साथ आ " तथा " हे अग्ने ! तू अग्नियोंके साथ आ " इसका भाव एकही है । " देव " शब्दका भाव अध्यात्ममें " इंद्रिय " है, यह बात पहिले निश्चित की गई है, वही भाव ' अग्नि " शब्दमें है, यह यहां निश्चित हो रहा है । इस विषयमें भगवद्गीताका प्रमाण देखिए-

शब्दादीन्विषयानन्य इंद्रियाग्निषु जुह्वति ॥
(भ० गी० ४।२६)

' शब्दादि विषयोंका इंद्रियाग्नियों में हवन करते हैं ।'

इस श्लोकमें इंद्रियरूप अग्नि अनेक हैं, यह स्पष्ट है । प्रत्येक इंद्रियमें एक एक अग्निकुंड है और वहां उस उस विषयका हवन हो रहा है । आंखके स्थानीय अग्निमें रूप का हवन होता है. कर्णस्थानीय अग्निमें शब्द का हवन, इसी प्रकार अन्यान्य इंद्रियाग्नियोंमें अन्यान्य विषयों का हवन हो रहा है । और जिसका हवन होता है, उसको वह अग्नि महान् आत्माग्नि तक पहुंचाता है । यह केवल आलंकारिक वर्णन नहीं है, परन्तु इसका अनुभव भी पाठक कर सकते हैं । इंद्रियस्थानीय संपूर्ण अग्नि यदि नियत रीतिसे योग्य आहुतियां डालकर सुपूजित किये गये, तो वे इस शरीरके अधिष्ठाता मुख्य आत्माको इष्ट उन्नतितक पहुंचाते हैं, परन्तु यदि कोई एक इंद्रियाग्नि हदसे अधिक बढ गया, तो सबको जलाकर सबका नाश करता है । फिर सब इंद्रियाग्नि भडकने लगें, तो क्या अवस्था होगी, इसका विचार कल्पनासेही पाठक कर सकते हैं !!! इस अवस्थाको देखनेसे प्रत्येक इंद्रियमें अग्नि है, यह बात सिद्ध होती है, अर्थात् यहां जितनी इंद्रियां हैं, उतनेही अग्नि हैं । इसलिए " **हे अग्ने ! तू सब अग्निदेवोंके साथ सुपूजित हो ।** " इस वाक्यका तात्पर्य, " **हे आत्मन् ! तू सब इंद्रिय-शक्तियोंके साथ पूज्य बनो** " यही है । जहाँ '**आत्माग्नि**' जाता है, वहाँ सब इतर '**इंद्रियाग्नि**' जाते हैं, यह सब स्वाभाविक ही है । शरीरस्थानीय इंद्रियाग्नियोंके विषयमें यह विचार हुआ । इनके अतिरिक्त भी और बहुतसे अग्नि यहां रहते हैं, उनका विचार निम्न लिखित उपनिषद्वाक्य में देखिए-

शरीरमिति कस्मात् । अग्नयो ह्यत्र श्रियन्ते, ज्ञानाग्निर्दर्शनाग्निः कोष्ठाग्निरिति । तत्र कोष्ठा-

ग्निर्नामाशितपीतलेह्यचोष्यं पचति । दर्शनाग्नी रूपाणां दर्शनं करोति । ज्ञानाग्निः शुभाशुभं च कर्म विन्दति । त्रीणि स्थानानि भवंति, मुखे आहवनीय, उदरे गार्हपत्यो, हृदि दक्षिणाग्निः। आत्मा यजमानो, मनो ब्रह्मा, लोभादयः पशवो, धृतिर्दीक्षा संतोषश्च, बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि, हवींषि कर्मेन्द्रियाणि, शिरः कपालं, केशा दर्भाः, मुखमंतर्वेदिः ॥ (गर्भोपनिषद् ५)

' इस को शरीर क्यों कहते हैं ? क्योंकि यहां अग्नि आश्रय लेते हैं, ज्ञानाग्नि, दर्शनाग्नि और कोष्ठाग्नि । उस में कोष्ठाग्नि अन्न का पचन करता है । दर्शनाग्नि रूपों को देखता है । ज्ञानाग्नि शुभाशुभ कर्मोंको प्राप्त करता है । अग्नियों के तीन स्थान होते हैं, मुख में आहवनीयाग्नि, उदर में गार्हपत्याग्नि और हृदय में दक्षिणाग्नि है । इस यज्ञ में आत्मा यजमान है, मन ब्रह्मा, लोभादि पशु, धृति दीक्षा, ज्ञानेन्द्रियां यज्ञपात्र हैं, कर्मेंद्रियां हविर्द्रव्य हैं, सिर कपाल है, केश दर्भ हैं और मुख अन्तर्वेदि है । ' इस प्रकार यह यज्ञ चल रहा है । यही शतसांवत्सरिक महासत्र है । यहां यज्ञपुरुष प्रत्यक्ष आत्मा है । जो इस यज्ञ को अपने अन्दर देखेगा, उस को ही एक अग्निकी तथा उस के साथवाले अनेक अग्नियों की कल्पना ठीक प्रकार हो सकती है और उसी को संदेहरहित ज्ञान होना सम्भव है । इस प्रकार ये अनेक अग्नि यहां इस देहरूपी यज्ञशाला में प्रत्यक्ष हैं और इसी का नकशा बाहिर की यज्ञशाला में किया जाता है । बाह्य यज्ञ जो हवनकुंडों में किया जाता है, वह इसलिये ही है कि, उस नकशे को देख कर इस असली यज्ञ का पता लगे । परन्तु शोक की बात इतनी ही है कि, यह ' नकशा ' ही अधिक प्रिय हो गया है और वास्तविक यज्ञ की ओर कोई देखता ही नहीं है !! वेद का अर्थ जानने की इच्छा करनेवालों को तो यह आध्यात्मिक यज्ञ अवश्यमेव ध्यानपूर्वक समझना चाहिये । अन्यथा वेदमंत्र का अर्थ समझना ही अशक्य है ।

' **अनेक अग्नियों के साथ एक अग्नि आता है** ' यह वेदमंत्र का कथन पूर्वोक्त रूपक का सूचक है, इस विषय में अब संदेह नहीं हो सकता । अब निम्न लिखित मंत्र देखिये --

तमु ष्टुमः पुर्वणीक होतरग्ने अग्निभिर्मनुष इधानः । स्तोमं यमस्मै ममतेव शूषं घृतं न शुचि मतयः पवंते ॥ (९९४; ऋ. ६-१०-२)

' हे (पुरु+अनीक) बहुसेनायुक्त, बहुबलयुक्त अग्ने ! (अग्निभिः) अग्नियों के साथ प्रज्वलित होनेवाला तू (मनुषः) मनुष्य के उस स्तुति का श्रवण कर । (यं स्तोमं) जिस स्तोत्र को, (शुचि शूषं घृतं न) शुद्ध सुखकर घी के समान, (मतयः) बुद्धियां पुनीत करती हैं । '

इस मंत्र में एक अग्नि अनेक अग्नियों के साथ प्रदीप्त हो रहा है, यही वर्णन है । इस का भाव पूर्वोक्त स्पष्टीकरण के साथ विशेष खुल सकता है । एक आत्माग्नि अनेक इंद्रियों के साथ यहां इस देह में प्रदीप्त हो रहा है । यह मुख्य आत्माग्नि (पुरु-अनीक) अनेक बलों से युक्त है, अनेक शक्तियां इस में हैं, तथा अनेक सेनासमूह भी इस के साथ रहते हैं । प्रत्येक इंद्रियस्थान में सैनिकों का एक एक गण है और सब गणों का यही एक अध्यक्ष '**गणपति**' है । गणेश को सैनिकों के गणों का स्वामी कहते ही हैं । शरीरके प्रत्येक इंद्रिय में सूक्ष्म कीटाणुओं का एक एक गण रहता है, वहां प्रत्येक गण का एक अधिष्ठाता रहता है । और संपूर्ण गणों का यह मुख्याधिष्ठाता होता है । इसलिये इस को (पुर्वणीक= पुरु-अनीक) बहु सेना से युक्त कहते हैं । प्रत्येक गण का अधिष्ठाता एक अग्नि और सब गणों के अधिष्ठातारूप अनेक अग्नियों का मुख्याधिष्ठाता यह महान् अग्नि है । यही गणराज होता है । इस गणराज-संस्था को अपने शरीर में ही देखना चाहिये । यहां इस का अनुभव होने के पश्चात् राष्ट्र में ' **गणराज-संस्था** ' किस प्रकार होती है, इस का ज्ञान होना सम्भव है । इस लिये पाठक इस संस्थाको अपने अन्दर देखें और अनुभव करें । तथा अपने समाज में इसी गणराज-संस्था को जीवित कर के अपना राज्ययन्त्र उत्तम सजीव करने का यत्न करें । अस्तु । अब इन अग्नियों के विषय में एक वर्णन देखिये-

(३४) अग्नियोंमें अग्नि ।

प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु विश्वं पुष्यंति वार्यं ।

ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यंत्यानुषगिषं स्तोतृभ्य आभर ॥ (८०६; ऋ. ५-६-६)

'(अग्नयः) ये अग्नि (अग्निषु) अग्नियों में (विश्ववार्यं) सब शक्ति का (प्रो पुष्यंति) पोषण करते हैं। (ते हिन्विरे) वे संतुष्टता करते हैं, (ते इन्विरे) वे व्यापते हैं, (ते इषण्यंति) वे अन्न की इच्छा करते हैं। इसलिये स्तोताओं का क्रमशः पोषण करो।'

इस मंत्रमें चार विधान हैं, जो अग्निका वास्तविक स्वरूप बता रहे हैं- (१) (विश्वं वार्यं पुष्यंति) सब निवारक शक्तिको बढाते हैं। शरीर में एक निवारक शक्ति है, जो रोगादिकों का प्रतिबन्ध करती है, अपमृत्यु का निवारण करती है। उस का पोषण यह अग्नि कर रहा है। (२) (हिन्विरे) संतोष करते हैं। संतोष भरी, आनन्द दे रहे हैं। पूर्वोक्त अग्नि अपने अन्दर विविध प्रकार के हवन स्वीकार कर के देवताओं की संतुष्टता कर रहे हैं। यह भाव अपने अन्दर पूर्वोक्त स्पष्टीकरण से विशद हो सकता है। (३) (इन्विरे) व्यापते हैं। अपनी इंद्रियशक्तियां से व्यापक होते हैं। देखिये, अपना ही दर्शनाग्नि जो आंख में है, वह जगत् में सूर्यचंद्रादिकों तक फैलता है, इसी प्रकार कर्णस्थानीय श्रवणाग्नि दश दिशाओं में फैल रहा है। इसी प्रकार अपनी शक्तियां फैल रहीं हैं। (४) (इषण्यंति) अन्न की इच्छा करते हैं। ये इंद्रियाग्नि अपने अपने भोग्य अन्न को प्रतिदिन चाहते हैं। अपना अपना अन्न मिल जाने से ही वे शक्तियों को पुष्ट करते हैं, संतोष देते हैं, तथा व्यापते हैं और अन्न न मिलने पर वे शक्तिहीन होते हैं, संतोष नहीं देते और अपनी शक्ति को फैला भी नहीं सकते।

सूक्ष्म दृष्टि से यदि पाठक इस मंत्र का विचार करेंगे, तो उन के ध्यान में स्पष्ट रीति से आ सकता है कि, इस मंत्र में कहे हुए अग्नि ' इंद्रियाग्नि ' ही मुख्यतया हैं। क्योंकि इन में ही मंत्रोक्त बातों का अनुभव हो सकता है। अन्यत्र लक्षणा से भी अनुभव आना अशक्य है। इसलिये ये अग्नि मुख्यतः अपने शरीर की शक्तियां ही हैं और उनका सम्बन्ध व्यक्त करने के लिये ही बाहर के यज्ञ में विविध अग्नियों की योजना की गई है। यही बात निम्न लिखित मंत्र में और स्पष्ट हुई है। देखिये-

(३५) देवोंद्वारा प्रदीप्त अग्नि ।

मा नो अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेद्धेष्वग्निषु प्रवोचः। मा ते अस्मान् दुर्मतयो भृमाच्चिद्देवस्य सूनो सहसो नशन्त (११२१; ऋ. ७-१-२२)

'हे अग्ने ! (सचा) हमारा सहायक तू है, इसलिये इन (देवेद्धेषु) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये हुए अग्नियों में (दुर्भृतये) कृशता के लिये (मा प्रवोचः) न कहो। तथा हे (सहसः सूनो) बलपुत्र ! (ते देवस्य दुर्मतयः) तुझ देव की दुर्बुद्धियां (भृमात् चित्) भ्रम से भी हमारा नाश न करें।'

इस मुख्य अग्नि की प्रार्थना की गई है कि, यह मुख्याग्नि गौण अग्नियों में कृशता के शब्द न बोले और भ्रम से भी दुष्ट भाव न धारण करे। मुख्याग्नि आत्माग्नि है और गौणाग्नि इंद्रियाग्नि ही हैं। आत्माग्नि की प्रेरणा इंद्रियाग्नियों में होती है और वहां का सब कार्य चलता है। यह आत्माग्नि गुप्त शब्दोंद्वारा इंद्रियाग्नियों में प्रेरणा करता है। इस की यह प्रेरणा (दुर्भृतये) कृशता के लिये न हो, परन्तु (सुभृति) पुष्टि के लिये होवे। जिस भाव की धारणा होती है, वैसी ही यहां की अवस्था बन जाती है। ' मैं प्रतिदिन उन्नत, पुष्ट और नीरोग हो रहा हूं। ' ऐसी भावना धरने से उन्नति, पुष्टि और नीरोगता सिद्ध होती है। तथा इस के विपरीत भाव धारण करने से विपरीत परिणाम होता है। इसलिये भ्रम से भी दुष्ट भावना मन में धारण नहीं करनी चाहिये। क्योंकि यदि दुष्ट भावना का धारण हुआ, तो निःसंदेह नाश होगा। इतनी प्रबल शक्ति भावना में है। यह मंत्र मानसशास्त्र के एक बडे भारी सिद्धांत का प्रकाश कर रहा है। आशा है कि, पाठक इस का विचार कर के अपना लाभ करने का यत्न करेंगे। नित्य शुद्ध भावना की स्थिरता करने से नित्य लाभ होगा, यह अटल सिद्धांत है।

इस मंत्र में (देवेद्धः अग्नयः) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये अग्नियों का उल्लेख है। यहां कौनसे अग्नि, देवों के प्रयत्न से प्रदीप्त हुए हैं ? इस का पता लगाना आवश्यक है। उपनिषदों में कहा है कि- (१) सूर्य भगवान् नेत्रस्थान में आकर रहे हैं और दर्शनाग्नि को प्रदीप्त कर रहे हैं। (२) अश्विनी देव नासिकास्थान में प्राणाग्नि

को प्रदीप्त कर रहे हैं। (३) अग्नि वाक् स्थान में बैठ कर शब्दाग्निको जला रहा है। (४) शिस्नस्थान में जल-देवताएं बैठी हैं और वीर्याग्नि का प्रदीपन कर रही हैं। (५) नाभिस्थान में मृत्युदेव आकर अपानाग्नि को उद्दीपित कर रहा है, इसी प्रकार अन्यान्य देवताएं अन्यान्य इंद्रिय-स्थानों में बैठ कर अपने अपने हवनकुंड में अपने अपने अग्नि प्रदीप्त कर रही हैं। ये सब अग्नि (देव+इद्ध) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये हैं। पाठक इतना अनुभव अपने देह में कर सकते हैं।

दैवी शक्तियोंद्वारा इंद्रियाग्नियों का प्रज्वलन सर्वत्र उपनिषदादि ग्रंथों में वर्णन किया है। इसलिये वही यहां लेना उचित है और यह लेने से ही मंत्रका गर्भिताशय स्पष्ट हो जाता है। यही भाव निम्न लिखित मंत्र में देखिये-

दशस्या नः पुर्वणीक होतर्देवेभिरग्ने अग्निभि-
रिधानः। रायः सूनो सहसो वावसाना अति
स्रसेम वृजनं नांहः॥ (१००५; ऋ. ६-११-६)

'हे (पुरु-अनीक) बहुबलयुक्त (होतः) दाता अग्ने! (देवेभिः अग्निभिः) अग्निदेवों के साथ (इधानः) प्रदीप्त होता हुआ, (नः) हम को (रायः) धन (दशस्य) दो। हे (सहसः सूनो) बल-पुत्र! (वावसानाः) बसने की इच्छा करनेवाले हम सब (वृजनं न) शत्रु के समान (अंहः) पाप को भी (अतिस्रसेम) अतिक्रमण कर के पर चले जायेंगे।'

इसमें भी अनेक अग्निदेवों के साथ प्रदीप्त होनेवाले एक मुख्य अग्निका वर्णन है और इस में प्रायः वे ही शब्द हैं, कि जो पहिले आ चुके हैं,इसलिये इनका अधिक स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार निम्न लिखित मंत्र में भी यही वर्णन है-

स त्वं नो अर्वन्निदाया विश्वेभिरग्ने अग्निभि-
रिधानः। वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मदेम
शतहिमा सुवीराः॥ (१०११; ऋ. ६-१२-६)

'हे (अर्वन्) गतिशील अग्ने! तू (विश्वेभिः अग्निभिः) सब अग्नियोंके साथ प्रदीप्त होता हुआ (निदायाः) निंदा से (पाहि) हमारा रक्षण कर, (रायः वेषि) धन दो, (दुच्छुना वियासि) दुःखकारकोंको विविध प्रकारसे भगाओ, जिससे हम (शत-हिमाः) सौ वर्ष (सु-वीराः) उत्तम वीरोंसे युक्त होकर (मदेम) आनंदित हों।'

सब इंद्रियाग्नियोंसे युक्त होता हुआ आत्माग्नि ऐसी प्रेरणा करे कि, हम सब निंदासे बचें, धन प्राप्त करें, विपरीत भावनाओंको दूर भगा दें। ऐसा करनेसे हम सौ वर्ष आनंद से व्यतीत करेंगे। इस का तात्पर्य यह है कि, यदि हम घृणित कर्म करेंगे, धन नहीं प्राप्त करेंगे, विपरीत भावना-रूपी शत्रुओंको दूर न भगायेंगे, तो घृणित कर्मों के कारण हमारा अंतःकरण मलिन होगा, धनहीनताके कारण संसार-यात्रा कष्टप्रद होगी, विरुद्ध भावनाओंके कारण क्लेश होंगे और इन सबका यही परिणाम होगा कि, हमारी आयु क्षीण हो जायगी। इसलिए मंत्रोक्त उपदेशके अनुसार आचरण करके दीर्घायु बनना हरएक वैदिक धर्मीको उचित है। अस्तु। अब उक्त विषयकाही और एक मन्त्र देखिए—

(३६) दूत अग्नि।

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूत-
मध्वरे कृणुध्वं॥ यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा
तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः॥ (११२४; ऋ० ७।३।१)

'(अग्निभिः) अग्नियोंके साथ रहनेवाले (यजिष्ठं देवं) पूज्य अग्निदेव को (अध्वरे) यज्ञमें दूत कीजिए। जो अग्नि (मर्त्येषु) मर्त्योंमें (नि-ध्रुविः) ध्रुव, (ऋतावा) सत्यवान्, (तपुर्मूर्धा) तपस्वी, (घृत+अन्नः) घीयुक्त अन्न खानेवाला और (पावकः) शुद्धिकर्ता है।'

इंद्रियोंके साथ रहनेवाला आत्माग्नि पूज्य, अमर, स्थिर, दृढ, सत्य, तपस्वी और शुद्ध है। इसीको यज्ञ में दूत करना चाहिए। दूत वह होता है कि जो नियत कार्यको करता है, जिस प्रकार कहा जाय, वैसा ही कर लेता है। क्या यह आत्माग्नि हमारा दूत है? आध्यात्मिक दृष्टिसे विचार करनेपर पता लग जायगा कि, विशेष अवस्थामें यह दूत भी बनता ही है। योगसाधन से जिनका मन शांत और स्थिर हुआ है, वे योगी जो भाव मनमें लाते हैं, वैसा ही बन जाता है। यह कौन करता है? विचार करनेपर मानना पडता है कि, यह आत्माही करता है। मनमें जो इच्छा होगी, वह बन जायगी। अर्थात् मनकी इच्छाके अनुसार यह दूत बनकर कार्य करता है। इस अर्थमें यह दूत है। पौराणिक मतसे श्रीकृष्ण भगवान् परमात्माका पूर्णावतार होता हुआ भी साधक जीव अर्जुन के रथपर

सारथी अर्थात् दूत ही बना था, उसके घोडे साफ किया करता था, महायज्ञमें भोजनके बाद उच्छिष्ट निकालनेका काम करता था और पांडवोंकी इच्छाके अनुसार सब कार्य करता था। इस कथामें परमात्मा, जीवात्माका दौत्य करता है। वास्तविक यह अलंकार है। और वही अलंकार अग्नि के मिषसे यहां इस इस मन्त्रमें बताया है। योगबलसे साधक जीवको इतना अधिकार प्राप्त हो सकता है कि, वह जिसकी इच्छा करेगा, वह उसको परमात्मा देगा। इच्छा करनेवाला योगी और सिद्ध करनेवाला आत्मा यहां होता है। इसीलिए इसको दूत कहा है। इस दूतकर्म के विषयमें वेदमें सैंकडो प्रकारके आलंकारिक वर्णन हैं उनका स्पष्टीकरण स्थानस्थानमें किया जायगा; उनमेंसे एक भाव यहां बताया है। इसी विषयमें दूसरा अलंकार देखिये-

(३७) होता अग्नि ।

अग्न आयाह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
आ त्वामनक्तु हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे ॥
(१३८९; ऋ. ८-६०-१)

'हे अग्ने ! तूं अग्नियों के साथ आ। तुझे हम हवनकर्ता ऋत्विज् स्वीकार करते हैं। (हविष्मती बर्हिः) अन्नयुक्त वेदी तुझ पूज्य को प्राप्त करके सुपूजित करे।'

पूर्वमंत्र में इस आत्माग्नि को दूत स्वीकार किया था, अब इस मंत्र में ऋत्विज् हवनकर्ता स्वीकार करते हैं। 'होता' शब्द का अर्थ दाता, आदाता, आह्वानकर्ता और हवनकर्ता है। यह आत्माग्नि इंद्रियाग्नियों, प्राणाग्नियों तथा जाठरादि अग्नियों में विविध प्रकार के हवन कर रहा है। इस प्रत्यक्ष बात का ही यह वर्णन है, इसलिये अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। अब और एक अलंकार देखिये—

(३८) अग्निरूप होना ।

स्वग्नयो वो अग्निभिः स्याम सूनो सहस ऊर्जां पते ॥ सुवीरस्त्वमस्मयुः । (१३३०; ऋ. ८।१९।७)

'हे (सहसः सूनो) बल पुत्र ! हे (ऊर्जां पते) अन्नपते ! आप के अग्नियों के साथ (अग्नयः) हम अग्नि (स्याम) बनेंगे। तूं (सुवीरः) उत्तम वीर और (अस्मयुः) हम सब को चाहनेवाला हो।'

इस मंत्र में कहा है कि, हम सब अग्निरूप बनेंगे। आत्मा मुख्याग्नि है और हम उस के साथी अन्य अग्नि बनेंगे। अर्थात् उन के समान उन के गुणधर्मों से युक्त और उन के मित्र बनकर रहेंगे। तथा वह भी हम को चाहनेवाला होवे, अर्थात् हमारे द्वारा कोई ऐसा आचरण न हो कि, जिस से वह आत्मशक्ति हम से विमुख हो। हम आत्मशक्ति से विमुख न हों और वह आत्मा हम से विमुख न हो।

माहं ब्रह्म निराकुर्यां
मा मा ब्रह्म निराकरोत् ॥ (उप. शांति. केन. उ.)

'मैं ब्रह्म का निराकरण न करूं, ब्रह्म मेरा निराकरण न करे।' यह केनोपनिषद् की शांति का वाक्य यही भाव बता रहा है, तथा -

(वयं) अग्नयः स्याम ।
(अग्निः) अस्मयुः (भवतु) ॥ (ऋ. ८-१९-७)

'हम अग्नि बनें, अग्नि हमारा भला चाहनेवाला बने।' यह भाव शांतिमंत्र के समान ही है। यहां शंका हो सकती है कि, एक अग्नि का दूसरे अनेक अग्नियों के साथ कौनसा सम्बन्ध है ? इस का विचार करने के लिये (१) एक परमात्मा का अनेक जीवात्माओं के साथ सम्बन्ध, (२) एक महात्मा का दूसरे अल्प आत्माओं के साथ सम्बन्ध, (३) एक जीवका अन्य जीवों के साथ संबन्ध, (४) एक आत्मा का अन्य इंद्रियों से सम्बन्ध, (५) एक अवयव का अन्य अवयवों के साथ सम्बन्ध देखना चाहिये। विचार करने पर पता लगेगा कि, यह एक विलक्षण सम्बन्ध है और उस सम्बन्ध के कारण ही यह विश्व चल रहा है। एक के द्वारा दूसरे के जीवन में परिणाम होता है। इस का भाव निम्न लिखित मंत्र में है—

(३९) एक अग्नि से दूसरे अग्नि का जलना ।

अग्निनाऽग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा ।
हव्यवाड् जुह्वास्यः ॥ (१५; ऋ. १-१२-६)

'(अग्निना अग्निः) एक अग्नि से दूसरा अग्नि (सं इध्यते) प्रदीप्त किया जाता है। यह अग्नि कवि, गृह-पति (युवा) जवान्, (हव्य-वाट्) अन्नवाहक और (जुहु+आस्यः) चमस से घी मुख में डालनेवाला है।'

इस मंत्र में कवि, गृहपति, युवा ये शब्द हैं। ये शब्द

मानवी अग्नि के ही वाचक हैं। जो गृहस्थी युवा कवि हैं, वह भी समाज में अग्निवत् ही है। वह अन्न से पुष्ट होता है और चमस से घी पीता है, इसलिये हृष्टपुष्ट रहता है। पहला मनुष्य अग्नि था, यह बात मानवी अग्नि के विषय में इस लेख के प्रारम्भ में ही कही है। उस बात की स्पष्टता पुन: यह मंत्र कर रहा है। अध्यात्म-दृष्टि से जीवात्मा का घर यह शरीर है। इस कारण आत्मा गृहपति है, इस की गृहपत्नी बुद्धि है। यह युवा इसलिये है कि, यह न शरीर के साथ जन्मता और न मरता है, शरीर के बाल्य और वार्धक्य ये गुण इस को बाधित नहीं करते, इसलिये यह सदा युवा ही कहलाता है। यही बुद्धि, मन और प्राणद्वारा शब्द की प्रेरणा करता है, इस कारण यह कवि है। यह अन्नभक्षक और घी पीनेवाला है। शरीर के साथ रहने से इस को खानपान करना पडता है। यद्यपि शरीर ही खानपान करता है, तथापि इस के होने तक शरीर खातापीता है, इसलिये ही इस को (अत्ता) भक्षक कहते हैं। तात्पर्य व्यक्ति में आत्मा और समाज में गृहस्थी कवि अग्निरूप है।

एक अग्नि दूसरे अग्नि को प्रदीप्त करता है, यह इस मंत्र का कथन है। इस की सत्यता देखिये— राष्ट्र में अध्यापक शिष्यों को ज्ञान देते हैं। विद्वान् अध्यापक युवा शिष्यों को ज्ञान देते हैं। इसमें ज्ञानाग्नि का प्रज्वलन है। अध्यापक अपने ज्ञानाग्नि से शिष्य के अन्दर ज्ञानाग्नि प्रदीप्त कर रहा है। सब अध्ययन का क्रम इसी प्रकार चलता है। एक कवि अपने काव्य से दूसरों में काव्यस्फूर्ति उत्पन्न करता है। प्राचीन ज्ञानी अपने ग्रंथों और उपदेशों-द्वारा नवीनों में स्फूर्ति दे रहे हैं। यही भाव निम्न लिखित मंत्र में है—

त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन् सता।
सखा सख्या समिध्यसे॥ (१२३३; ऋ. ८-४३-१४)

'हे अग्ने! तू (अग्निः अग्निना) अग्नि अग्नि से (विप्रः विप्रेण) ज्ञानी ज्ञानी से, (सन् सता) साधु साधु से, (सखा सख्या) मित्र मित्र से प्रदीप्त होता है।'

इस मंत्र के निम्न शब्द देखनेयोग्य हैं—

अग्निः	**अग्निना (समिध्यते)।**	ऋ० ११२।६
हे अग्ने ! त्वं	**अग्निना (समिध्यसे)।**	ऋ० ८।४३।१४
विप्रः	**विप्रेण (समिध्यते)।**	ऋ० ११२।६
सन्	**सता** ,,	,,
सखा	**सख्या** ,,	,,
(शिष्यः	**अध्यापकेन)** ,,	,,

पहला कथन अग्निविषयक होनेसे देवताविषयक है। दूसरा ज्ञानीके विषयमें है, तीसरा सज्जनों के संबंध में है और चौथा साधारण मित्रताके संबंधमें है। इसके साथ हम "**शिष्य** अध्यापकके द्वारा उत्तेजित होता है" यह वाक्य जोड सकते हैं। मित्रता करनेसे ही मैत्री बढती है, साधुके साथ रहनेसे साधुता प्राप्त होती है, विद्वान् की संगतिसे ज्ञान बढता है, तेजस्वीके साथ रहनेसे तेजस्विता बढती है, गुरुके साथ रहनेसे शिष्यको विद्या प्राप्त होती है, यही तात्पर्य है कि, अग्निके द्वारा दूसरे अग्निका प्रज्वलन होता है। अग्निसंकेतसे कितनी बातें लेनी होती हैं, इसका यहां स्पष्टीकरण हुआ है। यही वैदिक "**अग्निविद्या**" है। इस रीतिसे मंत्रोंका भाव अन्य वेदमंत्रों के साथ देखने से वैदिक आशयका ठीक ठीक रीतिसे पता लग जाता है और मंत्रके भावार्थके विषयमें किसी प्रकारका संदेह नहीं रहता। अस्तु।

इस प्रकार यहां एक अग्नि अनेक अग्नियोंके साथ किस रूपमें रहता है, यह बात देखी है। आत्माग्नि इंद्रियाग्नियोंके साथ रहता है, परमात्माग्नि सूर्यादि तेजोंके साथ रहता है, ज्ञानी ज्ञानियोंके साथ प्रकाशता है, कवि कवियोंके साथ रहता है, तेजस्वी तेजस्वियोंके साथ शोभता है, साधु साधुओंके साथ रहता है, विप्र विप्रोंके साथ रहता है, मित्र मित्रोंके साथ रहते हैं, गुरु शिष्योंके साथ प्रकाशते हैं, तात्पर्य एक अग्नि दूसरे अनेक अग्नियोंके साथ ही रहता है, वह कदापि अपने विरोधियोंके साथ नहीं रह सकता। समानधर्मियोंके साथ रहनेसे शोभा बढती है और विरोधियोंके साथ रहनेसे शक्ति क्षीण होती है। इत्यादि सहस्रों उपदेश यहां विचारी पाठकों को प्राप्त हो सकते हैं। अस्तु। यहां इस विषयको समाप्त करके अब अनेक देवों द्वारा स्थापित एक अग्निका मनोरंजन विषय देखेंगे-

(४०) देवोंद्वारा स्थापित अग्नि।

इस समयतक देवोंके साथ रहनेवाला, अग्नियोंके साथ आनेजानेवाला, देवोंको बुलानेवाला अग्नि किस भावका

द्योतक है, यह देख लिया। अब देवोंद्वारा स्थापित अग्निकी कल्पना देखनी है। इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र देखिए-

अग्निं देवासो मानुषीषु विक्षु प्रियं धुः क्षेष्यन्तो न मित्रं। स दीदयदुशतीरूर्म्या आ दक्षाय्यो यो दास्वते दम आ ॥ (४१८; ऋ० २।४।३)

‘ (क्षेष्यन्तः देवासः) गतिमान देवोंने (मानुषीषु विक्षु) मानवी प्रजाओंमें प्रिय (अग्निं) अग्निकी (मित्रं न) मित्रके समान (धुः) स्थापना की अथवा धारणा की है। वह (दक्षाय्यः) दक्ष अग्नि अपने दमनमें तथा (उशतीः ऊर्म्याः) स्पृहणीय रात्रियोंमें (दास्वते) दाताके लिए (आ दीदयत्) प्रकाश देता है। ’

‘ देव ’ शब्द का अर्थ बाह्य जगत में सूर्य, चन्द्र आदि देवता हैं और शरीरमें चक्षुरादि इंद्रियगण हैं। इस मंत्रमें मनुष्य में आत्माग्नि की स्थापना करनेवाली जो देवताएं हैं, वही शरीरस्थानीय चक्षुरादि इंद्रिय ही हैं। इन इंद्रियों के द्वारा आत्मा शरीर में रखा गया है, किंवा ये इंद्रिय-शक्तियां शरीर के अन्दर आत्मा का धारण कर रही हैं। जिस प्रकार सब ओहदेदार राष्ट्र में राजा का धारण करते हैं, उसी प्रकार ये आत्मा के ओहदेदार चक्षुरादि इंद्रियगण शरीर में आत्मा की धारणा कर रहे हैं। यह आत्माग्नि ही सब के लिये प्रिय और हितकारी है और सब का सच्चा मित्र भी है। आत्मा से अधिक प्रिय और अधिक हितकारक मित्र दूसरा कोई भी नहीं है, यह बात पूर्व स्थल में बता दी है। इस की दक्षता इतनी है कि, यह रात्रि के अन्धकार में प्रकाश देकर सब का मार्गदर्शक होता है। धर्मके लक्षणों में ‘ आत्मा की तुष्टि ’ एक लक्षण इसी हेतु से कहा है, देखिये—

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं ज्ञेयं साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥१२॥

तथा—

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥६॥

(मनु. २)

यहां धर्म के लक्षणों में (१) श्रुति, (२) स्मृति, (३) सदाचार, (४) आत्माकी तुष्टि ये चार लक्षण कहे हैं। धर्म का अंतिम निश्चय अपनी आत्मा की तुष्टि से होता है, इतना आत्मा का अधिकार है, क्योंकि अन्धकार-पूर्ण रात्रि के अत्यन्त विकट प्रसंग में यही आत्मा शुद्ध प्रकाश देकर ठीक मार्ग बताता है। सच्चा मित्र कौन है ? इस प्रश्न के उत्तर में कहना पडेगा कि, वही सच्चा मित्र है, जो कि कठीण प्रसंग में सहायक होता है। यह लक्षण आत्मा के मित्रत्व की सिद्धि करता है, क्योंकि जहां अन्य बल काम नहीं देते, वहां ‘ **आत्मिक बल** ’ ही सहायता देता है ; यह आत्मिक बल संयम में है, यह भाव उक्त मंत्र में ‘ दम ’ शब्दद्वारा व्यक्त किया है। इस प्रकार देवों द्वारा स्थापित आत्माग्नि की कल्पना है। इसी विषय का निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(४१) मानवी प्रजा में अग्नि।

आधय्यग्निर्मानुषीषु विक्ष्वपां गर्भो मित्र ऋतेन साधन्। आ हर्यतो यजतः सान्वस्थादभूदु विप्रो हव्यो मतीनाम् ॥ (४७२; ऋ० ३-५-३)

‘ (ऋतेन साधन्) सीधे मार्ग से जाने पर सिद्धि देने-वाला सच्चा मित्र और (अपां गर्भः) कर्मों का केंद्र अग्नि (मानुषीषु विक्षु) मानवी प्रजाओं में (देवैः) देवों द्वारा (अधायि) रखा गया है। यह (हर्यतः) स्पृहणीय और (यजतः) पूज्य होता हुआ (सानु) उच्च स्थान में (आ स्थात्) रहता है। यह (वि-प्रः) विशेष ज्ञानी (मतीनां हव्यः) बुद्धियों का हवन करनेवाला (अभूत्) है। ’

आत्माग्नि मानवी देह में उच्च स्थान में निवास करता है, इस बात को यह मंत्र कहता है। मानवी देह में हृदय से लेकर मस्तक तक जो स्थान है, वही उच्च स्थान है। इसमें आत्माग्नि का निवास है। यह सच्चा मित्र है और यही सीधे मार्गसे चलाता है, यही सब कर्मों और संपूर्ण हलचलोंका प्रेरक है। जिस प्रकार किरणोंका केंद्र सूर्य है, उसी प्रकार कर्मों का केंद्र यही आत्माग्नि है। यह इस शरीरमें सौ वर्ष निवास करके सैंकडो कर्म करता है, इसीलिए इसको “ **शत-क्रतु** ” कहते हैं। इसका स्वभाव-धर्म ही कर्म है, इसलिए इसको “ **क्रतु** ” भी कहते हैं। यह आत्मा चित्स्वरूप अर्थात् ज्ञानस्वरूप होनेसे ही इसको “ **वि-प्र** ” कहते हैं, तथा यही बुद्धिका प्रेरक है। इस प्रकार इस मन्त्रका वर्णन आत्माका परिचय करा रहा

है, इसका अधिक विचार पाठक करें। इसीके विषयमें अब निम्न लिखित मन्त्र देखिए-

(४२) जीवन-रसरूप अग्नि।

अच्छा नो अंगिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः।
होता यो अस्ति विक्ष्वा यशस्तमः॥

(१२७९; ऋ० ८।२३।१०)

'(नः संयतः यज्ञासः) हमारे नियत यज्ञ (अंगि-रस्-तमं) अंगोंके रसोंमें मुख्य अग्निके प्रति (यंतु) पहुंचें। जो (विक्षु) प्रजाओं में (होता) हवनकर्ता और (यशस्-तमः) अत्यंत यशस्वी है।'

यह मन्त्र अग्निका निश्चित रूप बता रहा है। यह अग्नि "**अंगि-रस्-तम**" है। प्रत्येक अंगमें जो जीवनरस है, उस प्रकारके जीवनरसों में अत्यंत मुख्य जीवन-रस यही है। सब हमारे कर्म इस मुख्य जीवनरस के संवर्धनके लिए ही होने चाहिये। मनुष्यों से ऐसा कोई कर्म नहीं होना चाहिए कि, जिससे इस मुख्य जीवनरस में कुछ क्षति हो सके। इसीका नाम " आत्मघातक कर्म " है। वास्तव में आत्माका घात नहीं हो सकता, परन्तु आत्माके विकास में प्रतिबन्ध जिससे होता है, उस को आत्मघातक कर्म कहते हैं। इसी प्रकार आत्माग्निमें किसी प्रकारकी क्षति भी नहीं होती, तथापि उसके आत्मिक बलके विस्तार में जिनसे न्यूनता हो सकती है, वैसे कर्म नहीं करने चाहिए और ऐसे करने चाहिए कि, जिनसे अंगोंमें मुख्य जीवनरस की समृद्धि हो। मनुष्योंमें यही आत्मा यशका प्रदाता है। इसीलिए जो मनुष्य शांतिसे आत्मिक बलके कार्य करता है, उसीका यश होता है। इस मन्त्रका '**अंगि-रस्तम**' शब्द इस अग्निकी मुख्य विभूति आत्माही है, यह भाव स्पष्ट कर रहा है। यह "**जीवनरस**" होनेके कारण इसीसे सबकी पुष्टि होती है, इस विषय में निम्न लिखित मंत्र देखिए-

(४३) देवोंका निवासक अग्नि।

अग्निर्देवेषु संवसुः स विक्षु यज्ञियास्वा॥
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुष्यति।
देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके समे॥

(१३०६; ऋ० ८।३९।७)

' अग्नि देवों में तथा (यज्ञियासु विक्षु) पूज्य प्रजा-ओंमें (संवसुः) उत्तम निवासक है। वह (भूमा इव) भूमिके समान (पुरु विश्वं) सब कुछ पुष्ट करता है, तथा (मुदा) आनंदसे (काव्या) काव्योंको करता है। वही देवों में पूजनीय है। (समे) सब (अन्यके) शत्रु (नभन्ताम्) नष्ट हो जावें।'

यह मन्त्र अग्निका स्वरूप-विज्ञान होनेके लिए अनेक दृष्टियोंसे उपयोगी है। देवोंके अन्दर रहता हुआ यह अग्नि देवोंका उत्तम प्रकार से निवासक होता है। पाठक विचार करेंगे, तो उनको पता लग जायगा कि, यह बात आत्मा-ग्निमें ही विशेष कर घट सकती है, क्योंकि देवों अर्थात् इंद्रियों में रहता हुआ ही आत्मा उन इंद्रियों का निवास उत्तम प्रकार कर रहा है। जिस प्रकार भूमि सब का पोषण कर रही है, उसी प्रकार आत्मा सबका पोषण कर रहा है। कई पाठक यहां शंका करेंगे कि, पौष्टिक अन्न से पोषण होता है, आत्माग्नि का किस प्रकार पोषक हो सकता है? इसका उत्तर इतनाही है कि मुर्देमें कितना भी पौष्टिक अन्न रखा जाय, उस अन्नसे मुर्दा पुष्ट नहीं होगा; क्योंकि '**सच्चा पोषक**' वहां नहीं है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि, आत्मा ही पोषक है और अन्य पौष्टिक अन्नादि सहा-यक हैं। यह आत्माग्नि सबसे प्रमुख है, इसलिए (**देवेषु यज्ञियो देवः**) देवोंमें पूज्य देव अर्थात् सब इंद्रियोंमें पूज्य आत्माही है, यह मन्त्रका वर्णन सार्थ हो जाता है, इस प्रकार यह वर्णन देवों के निवासक अग्नि का है। पाठक इस मंत्रमें यह वर्णन देखें और देवोंद्वारा स्थापित अग्नि का वर्णन पूर्व मंत्रोंमें पढें। इन दोनों वर्णनोंका विचार करने से उनको स्पष्ट पता लग जायगा कि यद्यपि ये दोनों वर्णन दो भिन्न दृष्टिकोनोंसे हुए हैं, तथापि एकही पदार्थ के हैं। इंद्रियोंमें रहनेवाला, इंद्रियोंको पुष्टि देनेवाला, इंद्रियोंद्वारा प्रकट होनेवाला एकही आत्मा है। यही भाव विश्वव्यापक परमात्माके विषयमें सत्य है, क्योंकि वह परमात्मा सूर्यादि देवोंमें रहता है, इन देवताओंको पुष्ट करता है और इन देवताओंसे ही प्रकट हो रहा है। व्यापकता का वर्तुल छोटा लिया, तो वही वर्णन आत्मा के विषयमें हुआ और व्यापकता का वर्तुल अमर्याद बढा लिया, तो वही वर्णन परमात्माका हुआ। यह बात यहां स्पष्ट हो जाती है। वेद

की वर्णनशैली की यही अद्भुतता है। पाठक यहां इसका अनुभव करें। अस्तु। इस प्रकारका यह आत्माग्नि मनुष्योंमें ही प्रज्वलित होता है, अर्थात् अन्य प्राणिमात्रमें यह वैसा तेजस्वी नहीं होता, जैसा कि मानवी देहमें होता है। इसका कारण स्पष्टही है कि, मानवी योनि 'कर्मयोनि' है, यहां ही पुरुषार्थ होना संभव है; उस प्रकार अन्य योनियोंमें संभव ही नहीं है। पुरुषार्थके विना उन्नति होनी अशक्य है। इसीलिए मन्त्र में कहा होता है कि, 'मानवी प्रजामें यह आत्माग्नि प्रदीप्त होता है' और देखिए

न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरा पितरा नूचिदिष्टौ ॥ अधा मित्रो न सुधितः पावकोऽग्निर्दीदाय मानुषीषु विक्षु ॥ (१०८; ऋ० ४,६,७)

'जिस (जनितोः) उत्पादक (सातुः) तेजको मातापितादि कोई भी (न अवारि) प्रतिबन्ध कर नहीं सकते, इस प्रकारका (मित्रः न) मित्रके समान हितकारी (सुधितः पावकः अग्निः) सुरक्षित शुद्ध अग्नि (मानुषीषु विक्षु) मानवी प्रजाओंमें (दीदाय) प्रदीप्त होता है।'

जिस समय यह आत्माग्नि मानवी प्रजाओं में प्रदीप्त होता है, उस समय उस महान् आत्माका तेज फैलता जाता है, कोई उसको प्रतिबन्ध कर नहीं सकते। इतनाही नहीं, परन्तु जो प्रतिबन्ध करनेका यत्न करते हैं, वेही नष्टभ्रष्ट होते हैं; अथवा उनके प्रतिबन्ध के कारण उस महान् आत्माका तेज अधिक विस्तृत होने लगता है। इस बातकी साक्षी इतिहास में सर्वत्र मिलती है। आत्मिक बलकी उग्रता सर्वत्र प्रसिद्ध ही है। यह आत्मा सबका मित्र होने से जिसमें इसका तेज प्रदीप्त होता है, वह बडा यशस्वी हो जाता है। इस मन्त्रमें (मानुषीषु विक्षु दीदाय) मानवी प्रजाओंमें यह आत्माग्नि प्रदीप्त होता है, यह बात स्पष्ट कही है। इसका अर्थ यह है कि, अन्य प्राणियोंमें यह निवास करता है, परन्तु वहां यह विकसित नहीं हो सकता, क्योंकि उन्नतिसाधक योनि मनुष्ययोनि ही है। इसका वर्णन ऐतरेय उपनिषद् में देखिए -

ता एता देवताः सृष्टा अस्मिन्महत्यर्णवे प्रापतन्...॥ ता एनमब्रुवन्नायतनं नः प्रजानीहि यस्मिन्प्रतिष्ठिता अन्नमदामेति ॥ १ ॥ ताभ्यो गामानयत्, ता अब्रुवन्न वै नोऽयमलमिति ॥ ताभ्योऽश्वमानयत्ता अब्रुवन्न वै नोऽयमलमिति ॥ २ ॥ ताभ्यः पुरुषमानयत्ता अब्रुवन् सुकृतं बतेति ॥ पुरुषो वाव सुकृतम् ॥ ता अब्रवीद्यथाऽऽयतनं प्रविशतेति ॥३॥ (ऐ० उ० १।२)

'वे सब देवताएं इस बडे समुद्रमें आ पडीं। सब देवताएं उससे कहने लगीं कि, हमें स्थान दो कि जहां बैठकर हम अन्न खायेंगे। वह देवताओंके सम्मुख गौ लाया। देवताओंने कहा कि यह ठीक नहीं है, पश्चात् घोडा लाया, उसको देखकर देवताओंने कहा कि यह भी ठीक नहीं है। इसके अनन्तर मनुष्य लाया गया, उसे देखकर देवताएं कहने लगीं कि यह ठीक है, मनुष्य ही ठीक है। ऐसा कह कर सब देवताएं अपने अपने स्थानपर इस मानवी देहमें बैठ गईं।'

यह विकास-वादका वर्णन स्पष्टतासे कह रहा है कि, मानवी योनि ही उत्कर्षकी योनि है और इसके अंगप्रत्यंगोंमें संपूर्ण देवताएं निवास कर रही हैं, और अपना अपना भोग्य भोग ले रही हैं। इन सब देवताओंका अधिष्ठाता आत्मा है, जिसके साथ देवताएं आती हैं और वह जिस समय इस देहको छोडकर चला जाता है, उस समय चली जाती हैं। यह वर्णन ही वेदमन्त्रों में अनेक प्रकार के रूपरूपांतरोंसे आया है। अस्तु। तात्पर्य यह है कि यह आत्मा इस मानवी योनिमें ही उत्कर्षको प्राप्त हो सकता है और जिस समय इसका तेज फैलने लगता है, उस समय उसको कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती। यही वर्णन उक्त मन्त्रमें है। अब और एक दृष्टिकोन से देखिए। पूर्वस्थल में एक मन्त्र दिया ही है, जिसमें कहा है कि, यह आत्माग्नि देवों द्वारा प्रकट होता है। यही भाव निम्न लिखित मन्त्र में भिन्न रूपक से वर्णन किया है -

(४४) दस बहिनें इसको प्रकट करती हैं।

द्विर्यं पंच जीजनन्त्संवसानाः स्वसारो अग्निं मानुषीषु विक्षु ॥ (१०९; ऋ० ४,६,८)

'इस अग्नि को (द्विः पंच स्वसारः) दो गुणा पांच बहिनें मानवी प्रजाओं में (संवसानाः) रहती हुईं, (जीजनन्) प्रकट करती हैं।'

दो गुणा पांच बहिनें अर्थात् दस बहिनें मानवी शरीर में हैं और ये दस बहिनें आत्माग्नि को प्रकट करती हैं।

पंच ज्ञानेन्द्रियां और पंच कर्मेन्द्रियां इस देह में हैं और उन के द्वारा यह आत्मा प्रकट हो रहा है। अरणियों के घर्षण से जो अग्नि सिद्ध होता है, वह भी दस अंगुलियों से ही घर्षण होता है। इसलिये ये वह्निं कहलाती हैं। ये भाव इस मंत्र में स्पष्ट हैं।

अन्दर आत्मा का अस्तित्व है। यह बात इंद्रियों के द्वारा ही प्रकट हो रही है, यदि इंद्रियां न होतीं, तो अन्दर के मुख्य देव को जानना ही अशक्य होता। विचार कर के पाठक देखेंगे, तो उन को इस बात का पता लग जायगा कि, इंद्रियों के कार्य से ही आत्मा के अस्तित्व का अनुमान होता है। तात्पर्य, इंद्रियों से आत्मा प्रकट होता है। यही भाव देवोंद्वारा प्रकट होनेवाले अग्नि में है। पाठक यहां देखें कि, विभिन्न दृष्टिकोनों के वर्णनोंसे एक ही बात किस प्रकार व्यक्त हो जाती है। और इस मुख्य बात को ही सर्वत्र देखने का यत्न करें। इंद्रिय-शक्तियां आत्मा की वह्निं हैं, इस में अलंकार की दृष्टिसे कोई अत्युक्ति ही नहीं है। परन्तु इस में एक विशेष विचार करनेयोग्य श्लेषार्थ भी है। 'स्व-सृ' शब्द का अर्थ 'बहिन' है, परन्तु इस का यौगिक अर्थ (**स्वं सरति**) अपने निज के प्रति जो जाती है, अथवा (**स्वस्मात् सरति**) अपने निज से जो चलती है, वह '**स्व-सृ**' है। अर्थात् जागृति की अवस्थामें जो इंद्रियां आत्मा से शक्ति लेकर बाहर जाती हैं और सुषुप्ति अवस्था में इंद्रियां बाहर से आकर आत्मा के अन्दर लीन हो जाती हैं, वह सब इंद्रिय शक्तियां आत्मा की वह्निं ही हैं। यह श्लेषार्थ पूर्णतया आत्मा और इंद्रिय-शक्तियों में संगत हो रहा है। इस रीतिसे अनेक दृष्टिकोनों द्वारा ही सद्वस्तु के भिन्न भिन्न आशय प्रकट हो रहे हैं। वेद के वर्णन में यह श्लेषार्थ की अपूर्वता पाठक देख सकते हैं। यह अग्नि मनुष्यों के अन्दर ही है, इस विषय में निम्न मन्त्र देखिये—

त्वं होता मंद्रतमो नो अध्रुगंतर्देवो विदथा मर्त्येषु। (१००१; ऋ० ६।११।२)

'हे अग्ने! तू ((मर्त्येषु अन्तः) मनुष्यों के अन्दर है और (विदथा) इस यज्ञ में हवनकर्ता तू ही है। तथा (मंद्रतमः) सुखदायक और (अ-ध्रुक्) द्रोह न करनेवाला देव तूही एक है।'

अग्नि मनुष्य के अन्दर है, मानवी आयुष्य में जो शतसांवत्सरिक यज्ञ चलता है, उसका होता अर्थात् याजक यही आत्माग्नि है। यह बात अब अधिक स्पष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वेद ही स्वयं कह रहा है कि, यह आत्माग्नि मनुष्य के अन्दर रहता है और द्रोह न करता हुआ सबको सुख देता है। यही सबको पूज्य और प्राप्तव्य है, क्योंकि यही सबसे मुख्य है। कितनी स्पष्टता से वेद यह कह रहा है, यहां देखनेयोग्य है। इतना स्पष्ट कथन होनेपर किसीको शंका नहीं होनी चाहिये। परन्तु वैदिक दृष्टिकोन ठीक प्रकार ध्यान में न आनेके कारण यह सब गडबड हो रही है। एक वार वेदका दृष्टिकोन समझमें आ गया, तो कोई शंका ही नहीं रहेगी। अस्तु।

इस आत्माग्नि के पूज्य होने के विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखिये—

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा॥ त्वं यज्ञेष्वीड्यः॥ (१२१४; ऋ० ८।११।१)

'हे अग्ने! हे देव! तू मर्त्यों में व्रतपालक है और तू ही यज्ञोंमें पूज्य है।' मर्त्य शरीरमें अमर आत्मा है, इसलिए अमर की ही पूजा करनेयोग्य है। अमरको छोडकर मरनेवालेकी पूजा कौन करेगा? सब प्रकार के यज्ञों में जिसकी पूजा होती है, वह यही आत्माग्नि है। यही व्रतपालक अर्थात् नियमपालक है। उन्नति के सब नियमों का पालन करके विकसित होना इसका ही स्वभाव-धर्म है। इस प्रकार आत्माकी उपासना वेदमंत्रोंद्वारा सूचित होती है। यही आत्मा सबका रक्षक है, इस विषय में निम्न मन्त्र देखिए—

(४५) प्रजाका रक्षक।

अग्निं द्वेषो योतवै नो गृणीमस्यग्निं शंयोश्च दातवे॥ विश्वासु विक्ष्ववितेव हव्यो भवद्वस्तुर्ऋषूणाम्॥ (१४२३; ऋ० ८।७१।१५)

'(नः द्वेषः) हम शत्रुओंको (योतवै) दूर करनेके लिए अग्निकी (गृणीमसि) स्तुति करते हैं। तथा (शं योः च) सुखप्राप्ति और दुःखदूरीकरण के लिये अग्नि की उपासना करते हैं। क्योंकि यही अग्नि (विश्वासु विक्षु) सब प्रजाओंमें (अविता) रक्षण करता है और इसलिए (ऋषूणां) ऋषियोंका (वस्तुः) निवासक (हव्यः)

और प्राकट्य हुआ है ।'

आत्माग्निकी उपासना करनेसे कौनसे लाभ होते हैं, यह इस मन्त्रमें उत्तम प्रकार वर्णन किया है- (१) शत्रु के साथ युद्ध करके उनको दूर भगानेका सामर्थ्य प्राप्त होता है, (२) शांति प्राप्त होती है और दुःख दूर होते हैं। क्योंकि यही आत्मिक बलसे युक्त होनेके कारण सब प्रजाओंमें सच्चा रक्षक है और इसीलिए ऋषि इसकी प्राप्तिके लिए यत्न करते हैं।

इस मन्त्रमें अग्नि शब्दसे आत्माका वर्णन स्पष्ट ही हुआ है। यह वर्णन आत्मामें ही सार्थ होता है, इस विषय में अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है। क्योंकि इस समय तक यही एक विषय बारंबार आ गया है। यह आत्माग्नि मुख्य है, और इससे ही सब इंद्रियादिकों को सुख होता है, इस विषयमें स्पष्ट मन्त्र यह है-

महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता मादयन्ते । आ विश्वेभिः स-रथं याहि देवै-र्न्यग्ने होता प्रथमः सदेह ॥ (११६: ऋ० ७।११।१)

' हे अग्ने ! तू (अध्वरस्य) इस यज्ञका (महान् प्रकेतः) बडा ध्वज है। (त्वत् ऋते) तेरे बिना (अमृताः) देव (न मादयन्ते) सुखी नहीं होते। (विश्वेभिः देवैः) सब देवोंके साथ (स-रथं) अपने रथपर से आओ और (प्रथमः होता) मुख्य याजक बनकर (इह) यहां (नि सद) बैठो। ' देखिए, कैसा इस वर्णन का प्रत्येक वाक्य अपने अन्दर अनुभव होता है- (१) इस शत-सांवत्सरिक महायज्ञका यही आत्माग्नि मुख्य चिह्न है। (२) इस आत्माग्निके बिना कोई इंद्रिय सुख का अनुभव कर ही नहीं सकती। (३) सब इंद्रियशक्तियोंके साथ यह आत्मा यहां इस देहमें आता है और जानेके समय भी सबको साथ ले जाता है, मानो सब देव इसके रथ परसे यहां आते हैं, किंचित् काल रहते हैं और इसीके रथपर बैठकर इसके साथ ही चले जाते हैं। (४) यहां इस देहमें-इस कर्म भूमिमें- जो यह शतसांवत्सरिक यज्ञ चल रहा है, उसका मुख्य याजक यही आत्माग्नि है। इत्यादि प्रकार विचार करनेसे उक्त मन्त्रके कथनका साक्षात् अनुभव अपने शरीरमें ही होता है। और जिस समय अपनेमें यह दृष्टि खुल जाती है, उस समय वेदमन्त्रोंकी सत्यता अधिकाधिक अनुभवमें आ जाती है। सब अनुभव अपने अन्दर ही होना है, किसी बातका अनुभव बाहर नहीं हो सकता। अपने अन्दर जो अनुभव बीजरूपसे होता है, विस्तृत रूपसे वही अवस्था बाह्य जगत् में है, परन्तु यह तर्क से जानी जाती है, अर्थात् अनुभव की बात अपने अन्दर ही होती है। पाठक इस दृष्टि से मंत्रों का विचार करें और सत्य बातका साक्षात् अनुभव लेने और देखने का पुरुषार्थ करें। अब एक अनुभव की बात देखिये। देवों के साथ यह आत्माग्नि इस शरीर में आता है, रहता है और चला जाता है, यह वर्णन पूर्वस्थल में आया है। इस के आने का मार्ग देखिये—

(४६) देवोंके साथ अग्निका बैठनेका स्थान।

अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैरूर्णावन्तं प्रथमः सीद योनिं । कुलायिनं घृतवन्तं सवित्रे यज्ञं नय यजमानाय साधु ॥ (१०३८, ऋ. ६।१५।१६)

' हे (स्वनीक अग्ने) उत्तम सेनापते अग्ने ! तू प्रथम देवों के साथ आकर (ऊर्णा-वंतं योनिं) ऊनसे युक्त योनिके स्थान में (सीद) बैठ जाओ। और (सवित्रे) प्रसव करनेवाले यजमान के लिये (साधु) उत्तम प्रकार से (कुलायिनं) घर बढानेवाले तेजस्वी यज्ञ को (नय) चलाओ।'

' सब देवों के साथ ऊनवाली योनि के स्थान में आकर बैठ जाओ।' यह मंत्र का पहिला कथन है। स्त्री का योनिस्थान देहका जन्मस्थान है, इसलिये स्पष्ट है कि, यदि किसी रीति से आत्माग्नि का अन्य देवों के साथ आगमन इस देह में होता है, तो योनिमार्ग से ही होना चाहिये, दूसरा कोई मार्ग नहीं। मंत्र के ' ऊर्णावंतं योनिं ' ऊनवाली योनि ये शब्द स्पष्टतया बता रहे हैं कि, गर्भधारणयोग्य तरुण युवती के ही सूचक ये शब्द हैं, क्योंकि तारुण्य में ही उस स्थान पर बालों की उत्पत्ति होती है। गर्भधारणा के समय सब देवी शक्तियों के समेत जीवात्मा यहां आवे और प्रवेश करे, यह इच्छा यहां स्पष्ट रीति से व्यक्त हो रही है।

शरीर में देवों का अंशावतार होने का वर्णन ऐतरेयोपनिषद् के प्रारम्भ में ही है। अग्नि, वायु, रवि आदि देव क्रमशः वाक्, प्राण, चक्षु आदि के रूप धारण करके इस

शरीर में आ बसे हैं और यहां का कार्य कर रहे हैं। यह उपनिषद् का कथन सत्य होने के लिये आत्माको अन्य देवों के साथ इस शरीर में आना आवश्यक ही है। इसलिए का आगमन जिस मार्ग से होता है, उस मार्ग का वर्णन उक्त मंत्र में किया है। रजवीर्य का संयोग होकर जिस समय गर्भ बनने लगता है, उस समय आत्मा के समेत सब देवताएं आती हैं और अपने अपने स्थान में रहती हैं, (ऐ. उ. २) आत्माग्नि (स्वनीक=सु+अनीक) उत्तम सैन्ययुक्त है, अन्य देवताओं के अंश ही उस का सैन्य है। जहां यह सेनापति जाता है, वहां उस के सैनिक जाते हैं। (विश्वेभिः देवेभिः) सब देवों के अंशों के साथ यह आत्माग्नि ऋतवाली योनि में आता है।

इस कथनसे एक बात सिद्ध होती है कि, जगत्में जितने देव हैं, अर्थात् दैवी तत्त्व हैं, उन सबके अंश इस देहमें हैं। पंच महाभूत पांच बडे देव हैं। इन महाभूतोंके अंश इस देहमें हैं। इसी प्रकार अन्य देवोंके अंश इस देहमें रहते हैं। देवताका जो अंश इस शरीरमें आता है, वह इस शरीरका मित्र बनकर रहता है। पृथ्वीका अंश मिट्टीके रूप से शरीरमें नहीं है, परन्तु उसका शरीर बन कर वह अंश रहता है। इसी प्रकार अन्यान्य देवों के विषय में समझना चाहिए। ये सब देव यहां आकर इस शतसांवत्सरिक सत्र को चलाते हैं। यह बात (यज्ञं नय) 'यज्ञ को चलाओ' इन शब्दों द्वारा सूचित की है। यह यज्ञ (कुलायिनं घृतवंतं) कुल अथवा घर बढानेवाला और तेज वृद्धिंगत करनेवाला है। आत्मा इस शरीरमें जब संपूर्ण देवोंके साथ आता है, तब घर बढता है, इसका अनुभव संतान उत्पत्ति की खुशीसे पाठकोंको हुआ ही है। इसलिए इस विषयमें अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है। पाठक देखें कि, वैदिक तत्त्वज्ञान कैसा प्रत्यक्ष होता है, देखिए निम्न मन्त्र-

(४७) यज्ञका झंडा।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समीधिरे। इंद्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः॥ (८४३; ऋ० ५,११,२)

'(नरः) मनुष्य (प्रथमं पुरोहितं) पहिले पूर्ण हितकारी (इंद्रेण देवैः) इंद्रके तथा अन्य देवोंके साथ (सरथं) एक रथमें आनेवाले अग्निको प्रदीप्त (त्रि-सधस्थे) तीन स्थानोंमें करते हैं। यह अग्नि यज्ञका ध्वज है। वह उत्तम यज्ञ करनेवाला (बर्हिषि) अन्तःकरणमें बैठकर हवन करता है।'

इंद्र और अन्य देवोंके साथ एक रथमें आनेवाला यह अग्निदेव है। इंद्र देवोंका अधिपति है। तैतीस कोटि देवोंके साथ इंद्रको भी अपने रथपर से लानेवाले अग्निका रथ कितना बडा होगा? इसका अंदाजा हो सकता है? यदि सूर्यचंद्रादि सबही देव अग्निके रथ में बैठने हैं, तो उस अग्निका रथ इस विश्वके बराबर विशाल होना चाहिए। तात्पर्य, व्यापक दृष्टिसे देखा जाय, तो संपूर्ण जगत् ही इस अग्निका रथ है; इस रथपर सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, वायु आदि सब देव बैठे हैं। यहां विश्वव्यापक परमात्मा रथी है और अन्य देव उसके रथपर बैठनेवाले उसके सहायक हैं। इस का प्रतिरूप दूसरा छोटा रथ है, जिसको देह कहते हैं; इसमें आत्माग्नि रथी है और संपूर्ण देवताओंके अंश अर्थात् इंद्रिय उसके सहायक हैं। यह जीवात्माका रथ छोटा है और परमात्मा बडा है। तथापि दोनोंमें, छोटे और बडेपन को छोड दिया जाय, तो तत्वोंकी एकता ही है। देह में अंशरूप ३३ देव हैं और विश्वमें विस्तृत ३३ देवता विराजमान हुए हैं। इस प्रकार विचार करके मन्त्रका तत्त्व जानना चाहिए। इस मन्त्रका तत्त्व इस शरीर में ही प्रत्यक्ष होता है, इसलिए अध्यात्मदृष्टिसे मन्त्रका अर्थ मुख्य और अन्य रीतिसे गौण है।

'यज्ञ का झंडा' यही आत्माग्नि है। शरीर में जो शतसांवत्सरिक सत्र चल रहा है, उस का सब से प्रमुख अधिकारी यही है, यही पूर्ण हितकर्ता है। इस की पूजा तीन (त्रि-सधस्थे) तीन स्थानों में होती है- (१) मस्तिष्क, (२) हृदय और (३) पेट में इस की पूजा हो रही है। जो केवल पेट की पूजा करते हैं, वे गिरते हैं; परन्तु जो साथ साथ मस्तिष्क के ज्ञान से और हृदय की भक्ति से भी इस की पूजा करते हैं, वे दुःख के पार हो जाते हैं। तीन स्थानों में, तीन धामों में इस प्रकार इस की उपासना करना आवश्यक है। यही तीन धामों की यात्रा है, जो करने से पुण्य मिलता है और न करने से पाप लगता है। यही आत्माग्नि मस्तिष्क में ज्ञानरूप कार्य करता है, हृदय में शांति का अनुभव

करता है और पेट में भक्षक बनकर अन्नरसों को अपनाता है। ये इस के कार्य देखनेयोग्य हैं। वेद में इन तीन धामों और स्थानों का वर्णन अनेक स्थानोंमें है, इसलिये इस बात का ठीक ज्ञान होने पर उन मंत्रों की संगति लग सकती है। यह आत्मा (बर्हिषि) अन्तःकरण में बैठता है, यहीं इस का मुख्य स्थान है। यही सब का केंद्र है, यहीं से यह राजा सर्वत्र प्रेरणा भेजता है, यहींसे यह यजमान सर्व यज्ञमण्डप का यज्ञप्रबन्ध करता है, यहीं से यह रथी अपने रथके घोडे दौडाता है और विरोध करनेवाले शत्रुओं से लडकर अपना जय प्राप्त करता है। इसीलिए इसको (सु+क्रतु) उत्तम कर्म करनेवाला कहा है। इस प्रकार जो उत्तम कर्म करता है, उसकी शक्ति विकसित होती है और जो नहीं करता, उसका विकास वैसा नहीं होता। इसलिये ही कर्मका महत्त्व बडा भारी है। इसका यह यज्ञ किस स्थानमें दिखाई देता है? ऐसा प्रश्न यहां पूछा जा सकता है, उसका उत्तर निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

(४८) देवोंमें यज्ञ।

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहीमा हव्या जातवेदो जुषस्व ॥
[६१८; ऋ० ३।२१।१]

'इस हमारे यज्ञ को (अ-मृतेषु) अमर देवोंमें (धेहि) पहुंचाओ और हे (जात-वेदः) वेदजनक अग्ने! इन हवनीय पदार्थोंको स्वीकार करो।'

इस मंत्रमें कहा है कि, यह अग्नि यज्ञके हव्य पदार्थोंको लेता है और देवों में पहुंचाता है। जो अग्नि हवनकुंड में रहता है, उसमें डाली हुई आहुतियां सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि देवोंतक पहुंचती हैं, या नहीं इस विषयमें कोई प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है। यह बात तर्कसे नहीं विदित हो सकती। किसी ग्रंथ के वचनपर कोई विश्वास करे, यह बात दूसरी है, परंतु प्रत्यक्ष अनुभव इस विषयमें कोई भी नहीं है। परंतु इसका अनुभव अध्यात्ममें अर्थात् अपने शरीरमें प्रत्यक्ष हो सकता है। जो अन्न पेटमें डाला जाता है, उसके अंश संपूर्ण इंद्रियां और अवयवों में यथाभाग पहुंचते हैं। इस जठराग्निमें डाली हुई आहुतिएं सूर्यके प्रतिनिधिरूप नेत्रमें जाती हैं और वहांकी पुष्टि करती हैं, इसी प्रकार अन्य देवताओंके प्रतिनिधिभूत जो अन्य इंद्रियगण हैं, उनकी भी इसी प्रकार पुष्टि होती है। यह प्रतिदिनके अनुभवका ज्ञान है। यद्यपि यह आत्माग्नि अन्नके विभाग किस प्रकार करता है और इंद्रियों में रहनेवाले देवोंतक किस रीति से पहुंचाता है, इसका भी हमें प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है; तथापि अनुभव से पता है कि, वह पहुंचाता है और वहांके देवताकी पुष्टि करता है। वैद्यलोग इसका ज्ञान अधिक विस्तार से बता सकते हैं, उस प्रकार सामान्य मनुष्यको बताना असंभव है। परंतु अन्न खानेके बाद शरीरकी पुष्टिका अनुभव बताता है कि, यह आत्माग्निका ही कार्य है, क्योंकि आत्माग्नि चला गया, तो शरीरकी पुष्टि नहीं होती। इस बातका विचार करनेसे इसका नाम '(हव्य-वाह्)हव्य पदार्थोंको देवताओंतक पहुंचानेवाला' किस उद्देश्यसे रखा है, इस बातका पता लग सकता है।

(४९) यही दूत है।

दूत नाम सेवक का होता है। आज्ञाकारी सेवक आज्ञाके अनुसार कार्य सत्वर करता है। पेटमें रखा हुआ अन्न संपूर्ण इंद्रियोंतक पहुंचानेका दूतका कार्य यह करता है। इसीलिये इस आत्माग्निको अनेक सूक्तों में 'दूत' कहा है—

विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमक्रत ॥
श्रुष्टी देव प्रथमो यज्ञियो भुवः॥(१२८७;ऋ.८।२३।१८)

'(स-जोषसः) एक विचारसे कार्य करनेवाले सब देवोंने तुमको दूत (अक्रत) बनाया है। हे देव! तू पहला (यज्ञियः) पूज्य देव है।'

इस मंत्रके प्रथम अर्धमें कहा है कि, "**देवोंने इसको दूत बनाया है।**" और दूसरे अर्ध भागमें कहा है कि, "**यह पहला पूज्य देव है।**" जो सबसे प्रथम पूजनीय देव है, वह सबसे श्रेष्ठ देव होना स्वाभाविक है, इसलिये यहां शंका हो सकती है कि, जो सबसे श्रेष्ठ देव है, वह सब गौण देवों का दूत कैसा हो सकता है? इस शंकाका समाधान होनेके लिये एक उदाहरण लेता हूं। राजा, महाराजा अथवा सम्राट् अपने राज्यमें सबसे श्रेष्ठ होता है, उसके नीचे अनेक ओहदेदार होते हैं, और इनके आधीन सब प्रजाजन रहते हैं। तथापि सब ओहदेदारोंको प्रजाके नौकर (Public servant) ही कहा जाता है। प्रजाके नौकरोंमें जो '**सबसे बडा नौकर**' होता है, वही '**राजा, महाराजा और सम्राट्**' कहलाता है। तात्पर्य यह है कि, यद्यपि राजाके और राजपुरुषों के आधीन प्रजाजन

होते हैं, तथापि वे सबही अधिकारी प्रजाजनोंके नौकर ही होते हैं, और राजा नौकरोंका भी बडा नौकर होता है। इसलिये वही राजा इतिहास में सुपूजित होता है कि, जो अपनी नौकरी सबसे उत्तम करता है। जिस प्रकार अधिभूत में अर्थात् राष्ट्रमें यह बात सत्य है, उसी प्रकार अध्यात्ममें भी सत्य है। यहां आत्मा राजा महाराजा और सम्राट् है और इसी लिये उक्त प्रकार वह सबका सबसे बडा दूत, नौकर अथवा सेवक है। इसी कारण जो अन्न उसके पास दिया जाता है, वह सब देवोंके पास पहुंचाता है, तथा हरएक प्रकारसे (देवों) इंद्रियोंकी सेवा करता है। वह अपने लिये कुछ भी चाहता नहीं। जो कुछ चाहता है, सब इंद्रियोंके लिये ही चाहता है। यह इस आत्माग्निका दूतकर्म विचार की दृष्टिसे देखनेयोग्य है। परमात्माका यही दूतकर्म त्रिभुवनमें हो रहा है।

पाठक यहां एक नया दृष्टिकोणका अनुभव कर सकते हैं। पूर्व समयमें इस आत्माग्निका वर्णन अधिकारीके भावसे किया, अब उसी का वर्णन दूतभावसे किया जाता है। वेदमें इस प्रकार अनेक दृष्टिकोण हैं। हरएक दृष्टिकोणसे वस्तु देखी जाती है और उसीके अनेक विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया जाता है। यह प्रयास इसलिये है कि, उस सद्वस्तुका सब पहलुओं से यथार्थ ज्ञान सबको हो जावे। जो पाठक इन सब दृष्टिकोणों को यथावत् जान सकते हैं, वेही वेदकी गंभीरता जान सकते हैं। अस्तु। अब इसके अनंतर अग्निके गुहानिवासित्वका विचार करेंगे। इसके विचारसे अग्निके शुद्ध स्वरूपका पता लग सकता है।

(५०) गुहासंचारी अग्नि।

गुहासंचारी अग्निका स्वरूप अब देखना है। इसका मूल स्वरूप देखनेके लिये "गुहा" शब्दका वैदिक अर्थ देखना चाहिये। इस लिये निम्नलिखित वचन देखिये—

आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्॥ (कठ. उ. २।२०)
विद्धि त्वमेतं निहितं गुहायाम्॥ (कठ. उ. १।१४)
गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्॥ (कठ. उ. २।१२)
आत्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः॥ (श्वे.उ. ३।२०; महा. ना. उ. ८।३)
एष पंचधात्मानं विभज्य निहितो गुहायाम्॥ (मैत्री उ. २।६)
एतद्यो वेद निहितं गुहायाम्॥ (मुंड. उ. २।१।१०)
अंतश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः॥ (महा. ना. उ. १५।६)
आविः संनिहितं गुहाचरं नाम महत्पदम्॥ (मुंड. उ. २।२।१)

इस प्रकार "गुहा" शब्दका प्रयोग उपनिषदोंमें अनेक स्थानपर आया है। इन सब वचनोंका यही तात्पर्य है कि '**आत्मा इस प्राणीकी (गुहा) अर्थात् हृदयमें रहता है।**' गुहा शब्दका अर्थ इस दृष्टिसे 'हृदय, अंतःकरण,' आदि है। कोशोंमें भी 'गुहा' शब्दका अर्थ 'हृदय, बुद्धि, अंतःकरण, गुफा, गुप्त रहनेका स्थान' इस प्रकार दिया है। आत्मा हृदय की गुहामें छिपा है, वहांही उसको देखना चाहिये, यह भाव वेद और वेदांतशास्त्रमें सर्वत्र है इस प्रकार गुहा शब्दका अर्थ '**हृदय**' निश्चित हुआ। जो गुहामें होता है, उसको 'गुह्य' कहते हैं। हृदयके अंदर अपने मनमें ही जो रखनेकी बात होती है, उसको गुह्य कहते हैं। आत्माका भी नाम गुह्य इसलिये है कि, वह हृदयमें गुप्त होता है। इस दृष्टिसेभी गुहाका अर्थ अंतःकरणही होता है। इस अर्थको लेकर निम्नलिखित मंत्र देखिये—

पश्वा न तायुं गुहा चरन्तं नमो युजानं नमो वहन्तम्॥ सजोषा धीराः पदैरनु ग्मन्नुप त्वा सीदन् विश्वे यजत्राः॥(१२४-१२५; ऋ. १।६५।१)

इस मंत्रके दो अर्थ हैं। एक अर्थ चोरके विषयका है और दूसरा आत्माके विषयका है। इस मंत्रका ऋषि पराशर है और देवता अग्नि है। देखिये इसके दोनों अर्थ—

(१) चोरविषयक अर्थ— (न) जैसा पशुकी चोरी करके (तायुं) चोर उस (पश्वा) पशुके साथ (गुहा-चरन्तं) पर्वतों की गुहाओंमें जा कर छिप जाता है, वहां वह चोर अपने साथ (नमः वहन्तं) अन्न भी रखता है और (नमः युजानं) शस्त्र की भी योजना करता है। इस प्रकारके बडे डाकू को पकडनेके लिये (स-जोषाः यजत्राः विश्वे धीराः) एक विचारसे प्रयत्न करनेवाले सब धैर्यशाली वीर [पदैः अनुग्मन्] पशुके और चोरके पांवोंके चिह्न जो भूमिपर लगे होते हैं, उनको देख देखकर पास पहुंचते हैं और [उप सीदन्] बिलकुल समीप जाकर उसको पकडते हैं। इसी प्रकार धैर्यसे चोरको पकडना चाहिये।

जो डाकू, चोर, लुटेरे आदि होते हैं, वे शहरों में चोरी करके पशु, धन, अन्न आदि पदार्थ अपने साथ लेकर भागते हैं और पर्वतों के दुर्गम स्थानों में जाकर छिपते हैं । वहां वे रहते हैं, अपने साथ का अन्न खाते हैं और पकडनेका प्रयत्न करनेवाले नागरिकोंके ऊपर अपने पासके शस्त्रप्रयोग करते हैं और पास आने नहीं देते!! इस प्रकारके चोरोंको पकडकर दंड देना चाहिये। पकडने की यह युक्ति है कि सबको एक विचारसे मिलकर, संघ बनाकर, आगे बढना चाहिये और उसके पदचिह्नों को देखदेखकर उसका पता लगाना चाहिये और युक्तिसे उसको पकडना चाहिये। यह चोरको दंड देने और उससे जनताका बचाव करनेके विषय में वेदका उपदेश है। इसका यहां अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं। जैसी गुहामें चोरकी खोज की जाती है, उसी प्रकार हृदयकंदरामें आत्माकी खोज होती है। इस विषय का अर्थ देखिये—

(२) आत्मा के विषयमें अर्थ- (न) जिस प्रकार (तायुं) चोर पशुकेसाथ गुहामें रहता है, उस प्रकार (पश्वा) इंद्रियादि शक्तियों को लेकर (गुहा चरन्तं) जो हृदयमें रहता है और वहां (नमः वहन्तं) नमस्कारों को स्वीकार करता है और (नमः युजानं) नमन का योग करता है, उसको देखनेके लिये (स-जोषाः धीराः) समान ज्ञानवाले बुद्धिमान् लोग (पदैः) मंत्रों के पदों के साथ, अथवा आत्माके जो पद इंद्रियादि स्थानोंमें दिखाई देते हैं, उनको देखदेखकर (अनु-ग्मन्) पीछेसे जाते हैं और वे (विश्व-यजत्राः) सब याजक (उप सीदन्) पास बैठते हैं, अर्थात् उपासना करते हैं।

एकही मंत्रमें ये दोनों भाव देखनेयोग्य हैं। चोरकी उपमा आत्माको देनेसे कोई हानि नहीं है। '**छिपकर रहने का भाव**' ही दोनों स्थानपर विशेषतया देखना है। सब इंद्रियोंकी शक्तियोंका आकर्षण करनेवाला यह '**कृष्ण**' किंवा '**संकर्षण**,' गौवों (इंद्रियों) का पालन करनेवाला यह '**गोपाल**,' गौवोंके साथ पर्वतकी गुहामें छिपकर रहनेवाला यह मायाविहारी '**गोपनाथ**,' पशुओंकी पालना करनेवाला यह '**पशुपति**' एकही है। इन सब विविध रूपकों और अलंकारों में एकही आत्मतत्त्वका वर्णन होता है। इसीको 'चोर-जार-कपटनाटकी' भी कहा जाता है!!

यद्यपि ये शब्द बाह्य अर्थमें निंदाव्यंजक हैं, तथापि इसका गुप्त अर्थ बुरा नहीं है। रुद्रके वर्णन में '**तस्कर, स्तेन, स्तेनानां पतिः**' ये 'चोर' वाचक शब्द रुद्रदेवताके लिये आये हैं। रुद्र पशुपति है अर्थात् पशुपतिही तस्कर है। इसका तात्पर्य इतनाहि है कि, ये शब्द किसी एक आशयके साथ मंत्रमें देखने होते हैं। अर्थात् 'चोरके समान छिपकर रहनेवाला आत्मदेव है। इसमें '**गुप्त रहना**' ही देखना है, चोर का दूसरा भाव देखना नहीं है। अब इस आत्माकी खोज कैसी करनी है, देखिये। एकविचारसे, एकनिष्ठा से अनुष्ठान करने का निश्चय करना चाहिये। उसके जो पद अर्थात् चिह्न इंद्रियों और अवयवों में दिखाई देते हैं, उन को देखते हुए उसका मार्ग ढूंढना चाहिये। इन पदोंपर अपना कदम रखकर जायेंगे, तो संभवतः उसके मूल स्थान-गुहामें-पहुंच सकते हैं और वहां उसका पता लगा सकते हैं। वह जिस गुहामें छिपकर बैठा है, उसके पता लगानेका यही एक उपाय है। इसके गुहानिवासी होनेके विषयमें और एक मन्त्र देखिये—

हस्ते दधानो नृम्णा विश्वान्यमे देवान्धाद्गुहा-
निषीदन् ॥ विदन्तीमत्र नरो धियं धा हृदा
यत्तष्टान्मंत्राँ अशंसन् ॥ [१४६; ऋ० १।६७।२]

'(विश्वानि नृम्णानि) सब सुखों को (हस्ते दधानः) अपने हाथमें धारण करनेवाला, (गुहा निषीदन्) अपनी अंतःकरण की गुहामें बैठनेवाला, (देवान् अमे धात्) सब देवों को अर्थात् इंद्रियों को जीवनमें धारण करता है। (धियं-धाः नराः) बुद्धि को धारण करनेवाले नर (अत्र) इस गुहामें ही (ईं विदंति) इसको जानते हैं, (यत्) जिस समय (हृदा तष्टान् मंत्रान्) हृदयसे निकले हुए सुविचारों को (अशंसन्) कहते हैं।'

जिस समय हृदयमें भक्ति के भाव चलने लगते हैं और दिलमें सच्ची भक्ति होती है, उसी समय ज्ञानी मनुष्य इस को हृदयकंदरामेंही प्राप्त करते हैं। यह यहां हृदयमें बैठा हुआ, सब सुखों को अपने पास रखकर, सब इंद्रियों में जीवन का प्रवाह चलाता है। पाठक इस वर्णन से जान सकते हैं कि, इस मंत्रमें जिस अग्निका वर्णन है, वह अग्नि कौन है? निःसंदेह चूल्हेमें जलनेवाली आग इस मंत्रमें अभिप्रेत नहीं है। मनुष्यके हृदयमें जो आत्माग्नि है, वही

यहां वर्णित है। यहां (१) सब सुखों को अपने में धारण करता है, (२) इंद्रियोंमें जीवनका प्रवाह चलाता है और (३) भक्तिकी भावनासे आनंदित होकर यही ज्ञानियोंको प्राप्त होता है। और देखिये—

य ईं चिकेत गुहा भवन्तमा यः ससाद धारामृतस्य ॥ वि ये चृतन्त्यृता सपन्त आदिद्वसूनि प्रववाचास्मै ॥
[१५०-१५१; ऋ० १।६७।४]

'(यः) जो ज्ञानी (गुहा भवन्तं) हृदयकंदरामें रहनेवाले (ईं) इसको (चिकेत) जानता है, (यः) वह मानो (ऋतस्य धारां) सत्यके स्रोतको (आससाद) प्राप्त करता है। (ये च ऋतानि सपन्तः) जो सत्यका आश्रय करनेवाले पुरुष हैं, जो सत्याग्रही हैं, वे (आत् इत्) निश्चयसे (अस्मै) इसके लिये ही (वसूनि प्रववाच) धन हैं, ऐसा कहते हैं। अर्थात् सब धन इसी का है, ऐसा कहकर इसीको अपना सर्वस्व अर्पण करते हैं।'

हृदयमें जहां यह आत्माग्नि रहता है, वहांसे ही सत्यका स्रोत चलता है और इसीलिये जो सत्यके ऊपर स्थिर रहनेवाले होते हैं, वे ही इसको प्राप्त करते हैं। जिस प्रकार नदीके प्रवाहके साथ उलटा जानेसे नदीके उगम-स्थानतक पहुंच सकते हैं, उसी प्रकार सत्यकी नदी इससे शुरू होती है, इसलिये जो सत्यका आश्रय करते हैं, वे इसके पास पहुंचते हैं, क्योंकि इसके पास सत्य है और इससे दूर असत्य है। इसके पास जितना जितना जाय, उतना उतना सत्य अधिक होता है और जितना इससे विमुख होता है, उतना असत्य पास आने लगता है। इसी कारणही कहते हैं कि असत्य छोडकर सत्य को पास करने से देवत्व प्राप्त होता है। अस्तु। इस रीतिसे इन मन्त्रों का विचार करनेपर निश्चय होता है कि यह गुहानिवासी अग्नि आत्मा ही है। और देखिये—

गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिः॥ (४५५; ऋ० ३।१।९)

'शुभ मित्रोंके साथ गुहामें संचार करनेवाला' यह अग्नि है। यह भी आत्माग्निकाही रूपक है। आत्माग्नि के शुभ मित्र संपूर्ण इंद्रियशक्तियांही हैं। क्योंकि ये शक्तियां इसके साथ आती हैं, इसके साथ रहती हैं और इसके जानेके समय इसके साथ चली जाती हैं। अर्थात् मित्रवत् इनका बर्ताव होता है। कई समझते हैं कि, इसका ज्ञान प्राप्त होना कठिन है, परन्तु वेद कहता है कि यह बात सुगम है, देखिये—

चित्रं सन्तं गुहाहितं सुवेदं ॥ (६९८; ऋ० ४।७।६)

'यह गुहानिवासी बडा विलक्षण है, परन्तु यह (सु-वेदं) उत्तम प्रकारसे अथवा सुगमतासे जाननेयोग्य है।' इन मंत्रोंके विचारसे अग्निका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। यह विचार यहांही समाप्त करके और एक रीतिसे विचार करेंगे। सहचारी देवोंके विचारसे इसका विचार अब करना है।

(५१) अग्निके साथी अनेक देव।

अग्निके साथी जो अनेक देव हैं, उनकी संख्याका उल्लेख निम्न मन्त्रमें किया है। इसलिये वह मंत्र देखिये-

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ॥ (५०८; ऋ० ३।९।९)

'तीन सहस्र, तीन सौ, तीस और नौ देव इस अग्निकी (सपर्यन्) सेवा करते हैं।' इस मन्त्रमें अग्निदेवकी पूजा अथवा सेवा करनेवाले देवोंकी संख्या कही है। जहां अग्निदेव जाता है, वहां उसके साथ ये भी देव जाते हैं। ये देव उसके रथपरसे जाते हैं और अग्निके साथ उसके रथपर बैठकर ही आते हैं। देखिये इसका वर्णन-

एभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः ॥ पत्नीवतस्त्रिंशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयस्व ॥ (४८८; ऋ० ३।६।९)

'हे अग्ने! आपके अश्व (वि-भवः) प्रभावशाली हैं, इसलिये (एभिः) इन सब देवोंके साथ (स-रथं) एक ही रथ परसे अथवा (नाना-रथ) अनेक रथोंके ऊपर (आ याहि) आओ। पत्नियोंके साथ तीस और तीन देवोंको बल के लिये यहां ले आओ और आनंदित रखो।'

इस मंत्रमें ३३ देवोंका संबंध अग्निके साथ बतलाया है। पूर्व मंत्रमें ३३३९ देवोंका संबंध वर्णन किया है।

१
३
३३
३३३
३३३९

यह देवोंकी संख्या विशेष महत्त्व रखती है। उक्त संख्या बढनेका क्रम ३३ करोड तक है। स्थानस्थानमें इस संख्या

का वर्णन ब्राह्मणोंमें आता है। एक मुख्य देव है, जिसको आत्मदेव कहते हैं। उसके साथ अनेक देवताएं हैं। अन्य देवताएं प्राकृतिक शक्तियां हैं और एक देव आत्मा है। आत्मा और प्रकृति, पुरुष और प्रकृति, आदि शब्द इस भेदका वर्णन कर रहे हैं। आत्माकी शक्तियां प्रकृतिमें जाकर सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, अग्नि, वायु, जल आदि अनेक देव बने हैं। इसका क्रम निम्न लिखित प्रकार है-

१ एक देव--आत्मा।

२ दो देव-आत्मा और प्रकृति, पुरुष और प्रकृति, इत्यादि।

३ तीन देव—पृथ्वीस्थानपर अग्नि, अंतरिक्ष स्थानपर विद्युत् और द्युस्थानमें सूर्य। त्रिमूर्ति।

३३ तेतीस देव— ११ पृथ्वीपर, ११ अंतरिक्षमें, ११ द्युलोकमें।

इन्हीं के विभाग ३३३९ और इसी क्रम से इससे भी अधिक हुए हैं। इसका चित्र निम्न प्रकार बन सकता है—

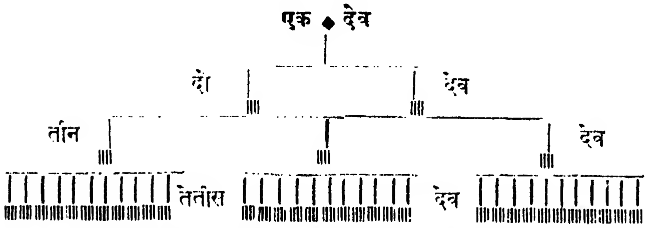

इस प्रकार प्रत्येकके और भेद होनेसे अनेक देव हो जाते हैं। ये सब 'अनेक विभिन्न देव' हैं। ये विभिन्न देव 'एक अभिन्न देव' के साथी हैं।

(१) एक अभिन्न देव (आत्मा) = आत्मा।

(२) अनेक विभिन्न देव (अनात्मा) = देवताएं।

यह कल्पना ठीक प्रकार ध्यानमें आ गई, तो वेदके बहुतसे मन्त्रोंके वर्णन सुगमतया ध्यानमें आ सकते हैं। इसलिये पाठकोंसे प्रार्थना है कि, वे इस कल्पनाको ध्यानमें लानेका यत्न करें।

अनेक विभिन्न देवोंमें एक अभिन्न देवकी शक्ति कार्य करती है, इसलिये एक अभिन्न देव श्रेष्ठ और अनेक विभिन्न देव गौण हैं। पूर्वोक्त मंत्रमें एक अग्निदेवके साथी ३३३९ अथवा ३३ होनेका वर्णन है। इसका भाव इसी प्रकार समझना चाहिये। इस समयतक के वर्णन से पाठकोंके मनमें यह बात आ गई होगी, कि इन मन्त्रोंमें जो अग्नि शब्दसे वर्णन हो रहा है, वह मुख्यतया '**आत्माग्नि**' का ही वर्णन है। इस आत्माग्निके साथ तीन, तेतीस अथवा इसी प्रमाणसे अधिक देवताएं आतीं हैं, रहतीं हैं और जातीं हैं। इन सबका आना और रहना इस शरीरमें होता है, इस विषयमें पूर्व स्थलमें बहुत बार कह दिया है। अस्तु, इस प्रकार अग्निदेवके वर्णनसे मुख्यतया आत्माका वर्णन होता है। और इसकी सूचनाएं पूर्वोक्त प्रकार स्थानस्थान के सूक्तोंमें वर्णन की गई हैं। अब अग्निदेवके वर्णनमें 'सप्त' अर्थात् 'सात' संख्याका विशेष महत्त्व है, इसका विचार करके निश्चय करना है कि यह किस बातका वर्णन है-

(५२) "सात" संख्या का महत्त्व।

वैदिक तथा लौकिक सारस्वतमें अग्निके वर्णनमें '**सप्त-हस्त**' '**सप्त-जिह्व**' आदि शब्द आते हैं। [१] सात हाथोंसे युक्त। [२] सात जिह्वाओंसे युक्त यह उन शब्दोंका भाव है। देखिये--

सप्तहस्तश्चतुःशृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः ॥ त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः ॥ स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधां तथा ॥ बिभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्नं स्रुचं स्रुवम् ॥ तोमरं व्यजनं वामैर्घृतपात्रं च धारयन् ॥ आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो हुताशनः ॥

हुताशन अग्निका यह वर्णन सुप्रसिद्ध है। इसमें 'सप्त-हस्त, सप्त-जिह्व' शब्द हैं। यह पौराणिक वर्णन जिस वेदमंत्रके आधार पर रचा गया है, वह मंत्रभी यहां देखिये—

(५३) सात हाथ।

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आविवेश॥(१८९७;ऋ. ४।५८।३)

इस अग्नि देवताके मंत्रका आशय भगवान् पतंजलि

मुनिने शब्दविषयक लिया है और बताया है कि, यहांके ' सप्त हस्त ' शब्दका भाव सात विभक्तियां है । इस मंत्रका शब्दविषयक यह एक अर्थ है। परंतु इसके अनेक अर्थ हैं, क्यों कि यह ' **कूट मंत्र** ' है, इसका विशेष स्पष्टीकरण ' **तर्कसे वेदका अर्थ** ' इस पुस्तकके अंदर ' **भाष्यकारोंका मतभेद** ' इस शीर्षक के लेखमें विशेष रूपसे दिया है। पाठक वह लेख इस प्रकरणमें अवश्य अवलोकन करें। इस कूट मंत्रके अनेक अर्थ होनेका कारण यहां ही स्पष्ट कर दिया है। इसके अध्यात्मपरक अर्थ केवल आत्माके विषयमेंही होते हैं, प्रायः सब भाष्यकार इसको मानते हैं। आरण्यकादिकोंमें यह प्रणव अर्थात् ओंकार पर मंत्र घटाया है। इससे स्पष्ट है कि, आत्मा पर इसका अर्थ होनेके प्रसंगमें इस मंत्रका ' **सप्त-हस्त** ' शब्द आत्माकी सात शक्तियोंका ही वाचक होगा । यही बात ' **सप्त-जिह्व** ' शब्दके विषयमें समझनी चाहिये। यहां सूचना मिलती है कि, आत्माकी सात शक्तियां हैं, जो ' **सात हाथ** ' अथवा ' **सात जिह्वाएं** ' शब्दोंद्वारा वर्णन की गई हैं, यही बात निम्न लिखित मंत्रमें देखिये —

(५४) सात जिह्वाएं ।

दिवश्चिदग्ने महिना पृथिव्या ।
वच्यन्तां ते वह्नयः सप्तजिह्वाः ॥
(४८१; ऋ. ३।६।२)

' हे अग्ने! [महिना] अपनी महिमासे पृथ्वीमें और द्युलोकमें वह्निरूप तेरी सात जिह्वाएं [वच्यन्तां] घोषणा करें। ' इसमें अग्निकी सात जिह्वाओंका वर्णन है । इन सात जिह्वाओंसे अग्नि तीनों लोकोंमें घोषणा कर रहा है। प्रत्येक जिह्वाकी अलग अलग घोषणा हो रही है । एक जिह्वाकी घोषणा दूसरी जिह्वाकी घोषणासे भिन्न है, यह बात यहां ध्यानमें धरने योग्य है। इस मंत्रमें सात जिह्वाओंका स्वरूप [वह्नयः सप्तजिह्वाः] वह्निरूप है, ऐसा स्पष्ट कहा है। वह्नि शब्द जैसा अग्निवाचक है, उसी प्रकार ' वाहक ' अर्थमेंभी प्रसिद्ध है। अर्थात् ये सात जिह्वाएं वाहक हैं। वाहक होनेके कारण यहां प्रश्न हो सकता है कि ये किस पदार्थको लाती हैं? इसका उत्तर निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

(५५) सात नदियां ।

अवर्धयत्सुभगं सप्त यह्वीः श्वेतं जज्ञानमरुषं महित्वा। शिशुं न जातमभ्यारुरश्वा देवासो अग्निं जनिमन्वपुष्यन् ॥ (४५०; ऋ. ३।१।४)

' जिस प्रकार [अश्वाः शिशुं जातं अभ्यारुः न] घोडियां नूतन उत्पन्न बच्चेके चारों ओर रहती हैं, उसी प्रकार यह (सप्त यह्वीः) सात नदियां उस (सुभगं) उत्तम भाग्यशालीको (अवर्धयत्) बढातीं हैं कि, जो (जज्ञानं श्वेतं) उत्पत्तिके समय श्वेत था, परंतु पश्चात् (महित्वा) अपने महत्त्वसे (अरुषं) लाल बन गया। इस प्रकारके अग्निके जन्म की देव पुष्टि करते हैं। '

इस मंत्रमें निम्न लिखित बातें हैं कि, जो अग्निका स्वरूप तथा सप्त नदियोंकी कल्पनाका तत्त्व विशद कर रही है—

[१] बछडेको बीचमें रखकर जिस प्रकार घोडियां अथवा माताएं चारों ओर बैठतीं हैं।

[२] उस प्रकार इस अग्निको बीचमें रख कर उसके चारों ओर ये सात नदियां प्रवाहित होती हैं।

[३] अपने प्रवाहके साथ ये सातों नदियां भाग्यशाली इस अग्निको बढातीं हैं;

[४] यह अग्नि आरंभ में श्वेत था, परंतु पश्चात् लाल हो गया है।

[५] इस अग्निकी पुष्टि देवोंने भी की है।

अग्निको बीचमें रख कर उस मध्यस्थानसे चारों ओर अथवा सातों ओर सात नदियां बह रही हैं, अर्थात् सात नदियोंके उगमस्थानमें यह अग्नि है। कौनसे एक स्थानसे सात नदियां बह रही हैं? और कौनसी नदीके उगमस्थानमें प्रतापी अग्नि रहता है? बहुतसे विद्वान् कहते हैं कि,वेदमें वर्णित सात नदियां पंजाब में हैं, कई कहते हैं कि, मध्य एशियामें हैं, कई कहते हैं कि उत्तर ध्रुवके पास हैं। परंतु स्थानस्थानमें प्रयत्नपूर्वक देखनेपर एक स्थानपर उगम होनेवाली सात नदियां कहीं भी दिखाई नहीं देतीं और जो थोडीं हैं, उनके उगमस्थानोंमें ऐसा कोई अग्नि नहीं है। चूंकि यह वर्णन पृथ्वीपर का नहीं है। इसलिये जो विद्वान् इसको इस भूमिपर देखनेका यत्न करते हैं, वे फलीभूत नहीं होते !! इसका स्वरूप देखना है तो निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(५६) सप्त ऋषि और सप्त नद।

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्। सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ ॥

[वा० य० ३४।५५]

'प्रत्येक (शरिरे) शरीरमें (सप्त ऋषयः) सात ऋषि (हिताः) रहते हैं। ये सात इस (सदं) घरका रक्षण करते हैं। ये (सप्त आपः) जल के सात प्रवाह (स्वपतः) सोनेवाले आत्माके (लोकं ईयुः) स्थान को पहुंचते हैं। इस (सत्र-सदौ) यज्ञमें जागनेवाले और (अ-स्वप्न-जौ) कभी न सोनेवाले (देवौ) दो देव हैं।'

इस मंत्रमें कई गूढ़ तत्त्वोंका स्पष्टीकरण किया है, उसका आशय निम्न प्रकार है—

(१) प्रत्येक शरीरमें सात ऋषि रहते हैं।

(२) इस शरीरका संरक्षण ये सात ऋषि कर रहे हैं।

(३) सात जलप्रवाह (सात नदियां) भी इसी शरीरमें हैं, जो सुषुप्तिकी अवस्थामें आत्माके स्थानको वापस जाते हैं। अर्थात् जागृति की अवस्था में ये सात नदियां आत्मा से चलकर बाहर जगत् में फैलती हैं।

(४) मनुष्य-जीवन एक सत्र अर्थात् शतसांवत्सरिक महायज्ञ है। इसीमें ये सप्त ऋषि यज्ञ कर रहे हैं। सप्त नदियों के किनारे पर इनका यज्ञ चल रहा है। ये सात ऋषि कुछ काल सोते हैं और कुछ काल जागते हैं।

(५) सोने के समय इन सप्त नदियोंका प्रवाह उलटा होता है और इस समय ये नदियां अंतर्मुख होतीं हैं। तथा जागने के समय इनका प्रवाह बहिर्मुख होता है।

(६) इस सत्र में दो देव खडे पहरा दे रहे हैं, जो कभी सोते नहीं। सदैव इसके संरक्षण करने में ये दक्ष रहते हैं।

इस वर्णनसे स्पष्ट पता लग जाता है कि, यह सप्त नदियोंका वर्णन आत्माग्निपरही विशेष रूपसे घट सकता है।

सप्त नद।

आत्माग्नि मध्यमें है और इस उगमस्थानसे अहंकार, मन, श्रोत्र, स्पर्श, नेत्र, रसना और नासिका ये सात प्रवाह चलते हैं। (१) अहंकार की नदी घमंडके क्षेत्रमें बह रही

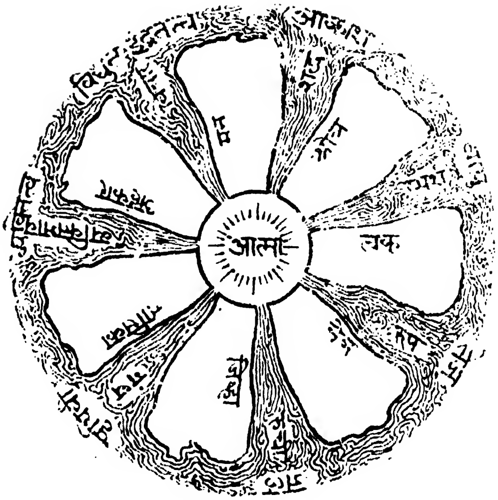

सप्त नद।

है। (२) मनका नद मननके प्रदेश को भिगो रहा है। (३) श्रोत्रकी नदी कानोंके द्वारा प्रवाहित होकर शब्दकी भूमिमें बह रही है। (४) स्पर्श की नदी चर्ममार्गसे स्पर्शके प्रदेश में फैल रही है। (५) नेत्रकी नदी दृष्टिके मार्गसे दर्शनक्षेत्र में प्रवाहित हो रही है। (६) रसना नदी रुचिके क्षेत्रमें जिह्वाके स्थानसे व्याप्त हो रही है। इसी प्रकार (७) नासिका द्वारा सुवासके क्षेत्रमें नासा नदी बह रही है। प्रत्येक नदी का क्षेत्र भिन्न है, प्रत्येक नदीका जल भी भिन्न है और प्रत्येक नदीका स्वभाव भी भिन्न है। ये सप्त नदियां हैं, जो कि आत्माके स्थानसे बह रहीं हैं। सुषुप्तिकी अवस्थामें ये सातों नदियां अंतर्मुख होकर उलटी बहने लग जातीं हैं और आत्मामें मग्न होती हैं; परन्तु जागृतिमें आत्मासे बहिर्मुख होकर फिर बाहर प्रवाहित होकर जगत् में कार्य करने लग जातीं है।

प्रतिदिन इन सातों नदियोंका यह प्रवाह हरएकके अनुभवमें आता है। इनका प्रवाह उलटा चलनेकाही नाम सुषुप्ति और इनका प्रवाह बाहरकी ओर बहनेकाही नाम जागृति है।

प्रत्येक नदीके तटपर एक एक अधिष्ठाता ऋषि है, जो वहां तप कर रहा है। ये सात ऋषि इस जीवनरूपी महा-

यज्ञ में यजन कर रहे हैं। जिस समय ये सातों अधिष्ठाता ऋषिगण थक कर सो जाते हैं, उस समय तथा अन्य समय में भी इस देहरूपी सत्रमें दो देव जागते हैं !! इन देवोंका नाम प्राण अर्थात् श्वास और उच्छ्वास है। जन्मसे मरनेतक ये श्वासोच्छ्वासरूपी दो देव जागते हैं और खडे पहरा करते हैं। इनके कारणही इस सत्र अर्थात् देहरूपी यज्ञभूमिका संरक्षण हो रहा है।

पाठक विचार करेंगे, तो उनको पता लग जायगा कि, यह वर्णन हमारे देहका ही है और इसीमें (१) सात ऋषि, (२) सात नदियां और (३) जलके सात प्रवाह अपना अपना कार्य कर रहे हैं।

अब पूर्वोक्त मंत्र का अनुसंधान कीजिये, तो पता लग जायगा कि आत्माग्निको मध्यमें रख कर सात नदियां चारों ओर फैल रही हैं, इसका तात्पर्य क्या है ? नदियोंके उगमस्थानमें कौनसा अग्नि है? उससे कौनसे प्रवाह किस भूमिमें फैलते हैं? और समयपर वापस भी किस रीतिसे होते हैं ?

यह आत्माग्नि प्रारंभमें श्वेत और पश्चात् रक्तवर्ण होता है। यह भी स्पष्ट है। श्वेतवर्ण सत्वगुण और रक्तवर्ण रजोगुण का द्योतक है। प्रथमतः आत्मबुद्धिमें सात्विक भाव होते हैं, परन्तु जब वे भाव भोगोंके साथ परिणत होते हैं, तब रजोगुणमय होते हैं। इत्यादि विषय अब पूर्णतासे स्पष्ट हो सकता है।

(१) ये ही आत्माग्निके सात हाथ हैं, जिनसे वह कार्य करता है।

(२) ये ही आत्माग्निकी सात जिह्वाएं हैं, जिनसे वह आत्माकी घोषणा करता है, अथवा जगत् की हवि लेता है।

(३) ये ही सात नदियां हैं, जो अपने अपने क्षेत्रमें बहती हैं।

(४) ये ही सात जलप्रवाह हैं, जिनपर सात ऋषि तपस्या कर रहे हैं।

(५) ये ही सप्त ऋषि हैं, जो सात प्रकारका ज्ञान दे रहे हैं और शरीरका अर्थात् ऋषि-आश्रमका संरक्षण कर रहे हैं

(६) ये ही ऋषि-आश्रम हैं, जिनपर रोगरूपी राक्षस वारंवार हमला करते हैं और इस शतसांवत्सरिक सत्रका विध्वंस करते हैं। जिनका कि दो देव रक्षण कर रहे हैं।

(७) ये ही सप्तरश्मि हैं, जो आत्मारूपी सूर्यके सात किरण हैं, इस विषयमें निम्न लिखित मंत्र देखिये-

(५७) सात किरण।

आ यस्मिन्त्सप्त रश्मयस्तता यज्ञस्य नेतरि। मनुष्वद्दैव्यमष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति॥
(४२६; ऋ० २।५।२)

'(यस्मिन् यज्ञस्य नेतरि) जिस यज्ञ के नेताके अंदर सप्त रश्मयः) सात किरण अथवा सात लगाम (तताः) तने हुए हैं। वह यज्ञका नेता (पोता) पवित्र कर्ता आत्मा (मनुष्-वत्) मनुष्ययुक्त (दैव्यं विश्वं) देवतामय विश्वको अष्टम होकर (इन्वति) प्राप्त करता है।'

" यज्ञका नेता " आत्माही है, जो इस शरीररूपी यज्ञमंडपमें इस शतसांवत्सरिक महायज्ञ को चलाता है। इसी आत्माके पूर्वोक्त सात किरण इस देहरूपी यज्ञमंडपमें प्रकाशित हो रहे हैं। यह सूर्यचंद्रादि देवतामय विश्व जो मनुष्यप्राणियोंके कारण विशेष रूपसे प्रसिद्ध है, उसको अष्टम अर्थात् आठवां मान कर यही प्राप्त करता है। सात इंद्रियशक्तियां, आठवां देवतामय विश्व और उसको प्राप्त करनेवाला स्वयं यजमान आत्मा है। यह मंत्र भी आत्माग्निकाही वर्णन कर रहा है।

इस मंत्रका मनन करनेसे पता लग सकता है कि, वेदमें जो सप्त रश्मि, सप्त किरण, आदि वर्णन है, वह केवल सूर्यप्रकाश के ही सात किरणोंका वर्णन नहीं है, प्रत्युत आत्माकी सात शक्तियों का वह मुख्य वर्णन है और गौणवृत्तिसे अन्य भाव को भी व्यक्त करता है। वेदमें केवल सप्त रश्मियोंकाही वर्णन नहीं है, प्रत्युत यह सप्त संख्या अनेक वार विविध प्रकारके वर्णनमें आई है, देखिये—

(५८) सप्त रत्न।

दमेदमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता नि षसादा यजीयान्॥ (७५९; ऋ० ५।१।५)

'घरघरमें सात प्रकारके रत्नोंको धारण करनेवाला अग्नि यज्ञ करता हुआ बैठा है ।' इस मंत्रमें सात रत्नोंको धारण करनेवाला अग्नि यही आत्माग्नि है और उनके सात रत्न पूर्वोक्त सात शक्तियांही हैं । "दमे दमे" का अर्थ प्रत्येक घरमें अर्थात् प्रत्येक शरीरमें है, क्योंकि शरीरही आत्माका घर है । रत्न शब्दका अर्थ रमणीय है । उक्त सात इंद्रियां ज्ञान देनेके कारण आत्माको रममाण करती हैं, इसलिये रत्न शब्दका मूल धात्वर्थ भी यहां संगत होता है । जो सप्त रत्न हैं, वे ही "सप्त धातु" हैं । इनका वर्णन निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

(५९) सप्त धातु ।

बृहद्धाथ धृषता गभीरं यह्वं पृष्ठं प्रयसा सप्त धातु ॥

(१७६३; ऋ० ४।५।७)

'(धृषता प्रयसा) वीर्ययुक्त प्रयत्नके साथ रहनेवाला गंभीर (पृष्ठं) प्रशंसनीय महान् (सप्तधातु) सप्तधातुरूप धन दो ।'

आत्माकी उक्त सात शक्तियां ही शरीरमें मुख्य धन हैं । इनमें एकाध शक्ति न होनेसे अन्य धन उतने उपयोगी नहीं हो सकते । इसीलिये वेदमें इन सात शक्तियोंको ही मुख्य धन कहा है । इस विषयका और एक अलंकार देखिये-

(६०) सात घोडे ।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं
हविष्मंत ईळते सप्तवाजिनम् ॥

(६७८; ऋ. १०।१२२।४)

'यज्ञका केतु, पहला पुरोहित (सप्त-वाजिनं) सात घोडोंसे युक्त है, उसीकी प्रशंसा करते हैं ।' इस मंत्रमें '**सप्तवाजी**' शब्द है । 'वाज' शब्दका अर्थ बल है और 'वाजी' शब्दका अर्थ घोडा है । 'सप्तवाजी' शब्दका अर्थ सात प्रकारके बलोंसे युक्त, अथवा सात घोडोंसे युक्त है । पूर्व वर्णन के साथ विचार करनेपर पता लग जायगा कि, ये 'सात घोडे' कौनसे हैं । इस अग्निके रथको येही सात घोडे जोते हैं । सूर्यके रथको जो सात घोडे जोते हैं, वेभी येही हैं । सात ऋषि, सात किरण, सात घोडे, सात नदियां, सात प्रवाह, सात रत्न, सात धातु, ये सर्व भिन्न नाम पूर्वोक्त सात शक्तियोंके ही वाचक हैं । ये ही अग्निकी सात बहिनें हैं—

(६१) सात बहिनें ।

सप्त स्वसृररुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व
उज्जभारा दृशे कम् । अंतर्येमे अंतरिक्षे
पुराजा इच्छन् वव्रिमविदत् पूषणस्य ॥

(१५१७; ऋ. १०।५।५)

'[वावशानः] इच्छा करनेवाला विद्वान् [अरुषीः] गमनशील [सप्त स्वसॄः] सात बहिनों को [मध्वः] मीठेपनका [कं दृशे] सुख देखनेके लिये [उत् जभार] ऊपर उठाता है । यह [पुरा जाः] पुराणपुरुष [पूषणस्य वव्रिं] पूषाके रूपकी इच्छा करता हुआ अंतरिक्ष में [अंतःयेमे] अंदरसे नियमन करता है और [अविदत्] प्राप्त करता है।'

इस मंत्रमें 'सात बहिनों' का वर्णन है । एक मूलस्थानसे जो सात शक्तियां उत्पन्न होतीं हैं, उनको सात बहिनें कहा है । एक मातासे भाईबहिनोंकी उत्पत्ति होती है । यहां भी परमात्मा, परम पिता और प्रकृति परम माता है । वहांसे ही पूर्वोक्त सातों शक्तियोंकी उत्पत्ति है, इसलिये परमात्माका अमृत पुत्र आत्मा है और पूर्वोक्त सातों शक्तियां उसकी बहिनें हैं । अलंकार इसी रीतिसे स्पष्ट हो जाता है । ये ही सात हवन करनेवाले ऋत्विज हैं, इसका वर्णन देखिये—

(६२) सात ऋत्विज् ।

सप्त होतारस्तमिदीळते त्वाग्ने ।

[१४०४; ऋ. ८।६०।१६]

'हे अग्ने! [सप्त होतारः] सात ऋत्विज् तेरी ही स्तुति करते हैं ।' 'होता' उसको कहते हैं कि जो हवन करता है । यहां आत्माग्निमें पूर्वोक्त सात इंद्रियां हवन कर रहीं हैं । नेत्र रूपका हवन करता है, कान शब्दोंका हवन करता है । इसी प्रकार अन्यान्य ज्ञानेंद्रियां अन्यान्य ज्ञानोंकी आहुतियां आत्मातक पहुंचाती हैं, मानो, आत्माके हवनकुंडमें ये सात इंद्रियगणरूपी ऋत्विज् अपने अपने विषयकी आहुतियां ही डाल रहे हैं और इस प्रकारका यह हवन इस यज्ञमंडपमें सौ वर्षतक चलता है । शतसांवत्सरिक यज्ञ यही है । इसके ये होता गण हैं । ये ही ऋत्विज्-सप्त ऋषि नामसे अन्य स्थानमें कहे गये हैं । सप्त ऋषि, सप्त होता, सप्त ऋत्विजः, सप्त मानुषः, आदि शब्द यही भाव बता रहे हैं । इसके साथ अब निम्न लिखित मंत्र देखिये-

(६३) पांच और दो दोहनकर्ता।

दुहन्ति सप्तैकामुप द्वा पंच सृजतः।
तीर्थे सिंधोरधि स्वरे॥ (१४३०; ऋ. ८।७२।७)

'[एकां] एक गौ माताका [सप्त दुहन्ति] सात दोहन कर रहे हैं। उनमें [द्वौ] दो [पंच] अन्य पांचोंको [उप सृजतः] प्रेरित करते हैं। [अधि स्वरे] स्वरयुक्त सिंधुके तीर्थ पर यह हो रहा है।'

एक गौका सात ग्वालियों द्वारा दोहन निःसंदेह आलंकारिक है। इसमें भी दो गवालिये अन्य पांचको प्रेरणा करनेवाले हैं। यह सब बात अपना पूर्वोक्त अलंकार स्वीकार करनेपर ठीक प्रकारसे ध्यानमें आ सकती है। पूर्वोक्त सातोंमें [१] मन तथा [२] अहंकार ये दो अन्य इंद्रियशक्तियोंके प्रेरक हैं; [१] श्रोत्र, [२] त्वक्, [३] चक्षु, [४] रसना और [५] घ्राण ये पांच उन दोनों द्वारा प्रेरित होकर अपना अपना दोहन का कार्य कर रहे हैं। आत्मारूपी एक गौ से ये सात ग्वालिये अपने लिये अलग अलग प्रकारका दूध निचोड रहे हैं, और एक ही वह गाय इनमेंसे प्रत्येक को भिन्न प्रकारका दूध दे रही है!!!

अब विचार कीजिये, वेदमें एक ही बात कितने भिन्न अलंकारोंसे वर्णन की है। 'सात' संख्याका अलंकार अग्नि के विषयमें इतना ही नहीं है प्रत्युत बहुत ही प्रकारका है; यहां केवल नमूनेके लिये थोडेसे ही उदाहरण दिये हैं। पाठक विचार करके इन उदाहरणोंके मननसे अन्य अलंकारोंको भी जान सकते हैं।

तात्पर्य, इन सब विभिन्न अलंकारोंके वर्णनसे वेदको एक आत्मा का ही वर्णन करना है। उसके जितने पहलू हो सकते हैं, उन सब पहलुओंके द्वारा विभिन्न अलंकारोंमें वेद वर्णन करता है। इसलिये पाठकोंको उचित है कि, वे सबसे प्रथम वैदिक शैलीको देखकर वेदमंत्रोंका मनन करें और वेदके गंभीर आशयको समझनेका यत्न करें। एक समय वेदकी मूलभूत कल्पना ठीक प्रकार ध्यानमें आगई तो पश्चात् वेदका कोई भी वर्णन समझनेमें कठिनता नहीं रहेगी।

(६४) तनूनपात् अग्नि।

अब 'तनूनपात्' शब्दका विचार करेंगे। यह शब्द अग्निका वाचक है। इसका अर्थ (तनू+न+पात्) शरीरोंको न गिरानेवाला होता है। जिसके रहनेसे शरीरोंका पतन नहीं होता और जिसके न होनेसे शरीरोंका पतन होता है। पाठकोंके ध्यानमें यह बात आ गई होगी कि, यहां स्थूल सूक्ष्म कारण नामक शरीरोंको धारण करनेवाला और उन शरीरोंपर कार्य करनेवाला आत्माही है। इसलिये '**तनू-न-पात्**' अग्नि निःसंदेह 'आत्माऽग्नि' है। इस समयतक अग्निवाचक मंत्रोंका जो विचार किया गया है, उसके साथ यह अर्थ कितना ठीक सजता है, इसकी सत्यता पाठक यहां अवश्य देखें और वेदमें अग्नि शब्दसे आत्माग्निका भाव ही मुख्यतः लेना है, यह बात यहां ठीक समझनेका यत्न करें। क्यों कि यह शब्द मुख्यतः इसी अर्थमें प्रयुक्त होता है। गौण वृत्तिसे इसके तथा अन्य शब्दोंके भाव विविध होनेपर भी मुख्य अर्थको भूलना कदापि उचित नहीं है। यह '**तनू-न-पात्**' शब्द निम्न मंत्रमें देखिये—

मधुमंतं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे॥
अद्या कृणुहि वीतये॥ [१००७; ऋ. १।१३।२]

'हे [तनू-न-पात्] शरीरोंको न गिरानेवाले [कवे] शब्दके प्रेरक अग्ने! तू मधुयुक्त यज्ञ आज ही देवोंके अंदर [वीतये] रक्षण के लिये [कृणुहि] कर।'

देवोंके अंदर '**शरीरोंको न गिरानेवाले आत्माग्नि**' द्वारा होनेवाले इस शतसांवत्सरिक महायज्ञका वर्णन ही विभिन्न रूपसे स्थानस्थानपर है। यह बात इस समयतक अनेक मंत्रोंके उदाहरणोंसे पूर्व स्थलमें बताई गई है। वही बात इस मंत्रमें 'तनू-न-पात्' देवताके मिषसे वर्णन की गई है।

यह तनूनपात् शब्द अग्निदेवका वास्तविक स्वरूप व्यक्त कर रहा है। जितने दिन यह 'तनू+न+पात्' आत्माग्नि इस शरीरमें निवास करता है, उतने दिन ही यह शरीर सचेतन रहता है और जीवित रहता है। इसके चले जानेके पश्चात् इस शरीरका ऐसा पतन होता है कि, कोई इसको पास रखना नहीं चाहते। इस से स्पष्ट होता है कि यही आत्माग्नि तनूको न गिरानेवाला '**तनू-न-पात्**' अग्नि है। इस तनूनपात् आत्माग्निका शरीरमें अवस्थान निम्न लिखित प्रकार है—

अपनी शरीर की रचनाका संबन्ध यज्ञशालासे कैसा है, यह बात विचार करनेसे ज्ञात हो सकती है। यज्ञशालाके विविध अग्निकुंडोंके स्थान अपने शरीरके आधारपर रचे गए हैं। इसका स्पष्टीकरण सहजहीसे हो सकता है। अपने शरीरमें आत्मा, हृदय, मतिष्क, प्रजनन आदिके स्थान हैं। वही स्थान हवनकुंडोंके आकारमें यज्ञशालामें बताये जाते हैं। अपने शरीरमें आत्माको आधार रखकर जो घटनाएं होतीं हैं, उनकोही यज्ञशालामें विविध अग्नियोंके नामसे बताया है। मानो यज्ञशाला एक अपने देहका ही नकशा है। जिस प्रकार पाठशालाओंमें देशोंके नकशे होते हैं और उनमें ग्राम, प्रांत, नदी, पर्वत, आदि बताये जाते हैं; उसी प्रकार शरीरका नकशा यज्ञशालाके रूपसे बताया गया है। जो बातें अव्यक्त रूप से शरीर में हो रही हैं, वही बातें यज्ञशाला में हवनरूप से की जातीं हैं।

(१) मुखमें अन्न डालनेसे वह पेटमें जाता है और वहां उसका जठराग्निद्वारा पचन होता है। आहवनीय अग्नि के हवनकुंड में भी उसी अन्न का हवन किया जाता है। अग्नि प्रदीप्त हुआ, तो हवन अच्छा होता है, प्रदीप्त न होनेकी अवस्था में किया हुआ हवन धूवें को बढाता है। उसी प्रकार जठराग्नि प्रदीप्त न होनेकी अवस्था में खाये हुए अन्न से पेट में वायु कुपित होता है और अग्निमांद्य, डकार, अपान वायु आदि होता है।

(२) गार्हपत्याग्नि वास्तविक स्त्रीके योनिस्थानमें है। इसके विशेष वर्णन की यहाँ आवश्यकता नहीं है। पाठक अपनी विचारशक्तिसेही इसको जान सकते हैं।

(३) उत्तर वेदीमें ज्ञानाग्नि है, जो मस्तिष्क नामसे प्रसिद्ध है। इसमें दुष्ट मनोविकारोंका हवन होता है। पाशवीय भावनाओंका हवन यहां होता है।

इस प्रकार सारांशरूपसे यज्ञशालाका संबन्ध अपने शरीर के व्यापारों से है। पाठक विशेष विचार करके यह जान सकते हैं। यहां विशेष विचार करनेके लिये स्थान नहीं है, परन्तु प्रसंग प्राप्त होनेके कारण संक्षेपसे लिखना पडा है।

यज्ञशालाकी रचना शरीरकी घटनापर हुई है, यह ज्ञान हो जानेके पश्चात् ' **आत्माग्नि ही तनूनपात् अग्नि है** ' यह बात स्पष्ट हो जाती है और पूर्वोक्त सब वर्णन ठीक प्रकार ध्यानमें आ सकता है। इसका ठीक ठीक ज्ञान होनेके पश्चात् ही वैदिक यज्ञोंका तत्वज्ञान ठीक प्रकार समझ में आ सकता है, इसलिए पाठकोंसे प्रार्थना है, कि वे इस बात को विशेष रूपसे समझनेका यत्न करें।

उपनिषदोंमें भी इस शारीरयज्ञका वर्णन इसी प्रकार है, देखिए-

तस्यैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः श्रद्धा पत्नी० ॥ (नारायणोपनिषद् ८०)

पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विंशति वर्षाणि तत्प्रातःसवनम् ॥ (छां. उ. ३,१६,१)

' इस यज्ञका यजमान आत्मा है और यजमानपत्नी श्रद्धा है। पुरुषही यज्ञ है, उसकी चौबीस वर्षकी आयु प्रातःसवन है। ' इत्यादि वचनोंसे स्पष्ट हो जाता है कि, इस शरीरमें जो शतसांवत्सरिक यज्ञ चल रहा है, वही सत्य यज्ञ है और उसीका यजमान आत्मा और यजमानपत्नी श्रद्धाबुद्धि है और इसी यज्ञका प्रातःसवन प्रारंभ की २४ वर्षोंकी आयु है। इस यज्ञकी दृष्टिसेही वेदके मंत्रोंको हमें देखना चाहिए।

इस से पूर्व जो विचार किया है, वह इसी दृष्टि से किया है, इस से पाठकों के मन में बात आ गई होगी कि, यही उपनिषदों की दृष्टि होने से सत्यदृष्टि है। और इसी सत्य दृष्टि से वेद का अर्थ देखना चाहिये।

(६५) अन्य बातों का उपदेश।

इस से कोई यह न समझे कि, वेद में अध्यात्म से भिन्न कोई अन्य बात ही नहीं है। अन्य बातें बहुत ही हैं, उन का प्रसंगवशात् विचार अवश्य होगा। परन्तु पूर्वोक्त विवरण से यही बताया है कि, ये देवतावाचक शब्द मुख्य अर्थ में किस प्रकार आत्मा का भाव बताते हैं। स्थान स्थान के सूक्तों में परमात्मा ब्रह्म, राजा, विद्वान्, शूर आदि प्रकरणों के अनुसार अग्निशब्द ही उक्त पदार्थों का वाचक है। इस बात के उदाहरण भी यहां विशेष रूप से देने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

' **चत्वारि शृंगाः** ' यह ऋग्वेद का अग्निदेवता का मंत्र भगवान् पतंजलि महामुनिने ' शब्द ' पर लगाया है। इस से ' अग्नि ' देवता का एक अर्थ ' शब्द ' है, यह बात स्पष्ट होती है। यह मंत्र (ऋ. ४.५८.३) में

है और इस का अध्यात्मविषयक अर्थ इसी लेख में दिया ही है। यहां इतना ही बताना है कि, जिस प्रकार इस का अध्यात्मविषयक अर्थ होने पर ' शब्द ' विषयक अर्थ हटा नहीं है, उसी प्रकार अन्यान्य मंत्रों के विषय में पाठकों को समझना चाहिये। ' अग्नि ' शब्द परमात्म-वाचक भी है, देखिये—

(६६) परम आत्माग्नि।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम। स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च॥ (२७; ऋ. १-२४-२)

' हम (अमृतानां प्रथमस्य) अमर देवों में पहले (देवस्य अग्नेः) अग्निदेव का अर्थात् तेजस्वी परमात्मा का (चारु नाम) सुन्दर नाम (मनामहे) मन में लाते हैं। वही हम सब को (अदितये) प्रकृति में पुनः डालता है और जिस से हम माता-पिता को देखते हैं। '

इस मंत्र में ' सब से पहले अग्निदेव ' अर्थात् तेजस्वी परमात्मा का वर्णन स्पष्ट है। इसी प्रकार अन्यान्य पदार्थों के वाचक स्पष्ट मन्त्र अनेक हैं। उन का यहां भूमिका में विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन का स्पष्ट विचार सूक्तों के विचार करने के समय ठीक प्रकार किया जायगा। यहां इस भूमिका में अग्निमन्त्रों का आध्यात्मिक विचार करने की रीति इसलिये विशेष रूप से बताई है कि साधारण पाठक ' अग्नि ' शब्द से ' आग ' का ही ग्रहण करते हैं और वेदमन्त्रों के अर्थ का अनर्थ करते हैं, इसलिये अग्नि-देवता का मुख्य अध्यात्म स्वरूप जानने की इस स्थानपर विशेष आवश्यकता है। उपनिषदोंमें यही बात स्थान स्थानपर कही है, देखिए—

अयमग्निर्वैश्वानरो योऽयमन्तः पुरुषे येनेदमन्नं पच्यते, यदिदमद्यते॥ (बृ. उ. ५।९)

' यही वैश्वानर अग्नि है, जो इस मनुष्यशरीर के अन्दर है, जो खाये हुए अन्नका पचन करता है। ' यहां वैश्वानर अग्निका आध्यात्मिक रूप बताया है, वैश्वानर अग्निका आधिभौतिक रूप इसी लेखके प्रारंभमें बताया है। वहीं उसको पाठक देख सकते हैं। इसी प्रकार अग्निके भिन्न-भिन्न स्वरूप का विचार वेदमें स्थानस्थानके मंत्रोंमें है और उसको उसी प्रकार उस उस स्थानपर समझना चाहिए।

(६७) सारांश।

सारांश यह है कि, इस भूमिकामें जो विचार किया है, वह बिलकुल नया नहीं है! ब्राह्मणग्रंथोंमें, उपनिषदोंमें तथा संपूर्ण आर्ष वाङ्मयमें यही विचार स्थानस्थानपर है। उसको स्पष्ट शब्दों में यहां एकत्रित किया है। इसका अधिक विचार पाठक भी अपनी स्वतंत्र बुद्धिसे करें और वेदके अर्थकी अधिक खोज करें।

अग्निदेवताके विचार करनेकी दिशा।

ऋग्वेद का प्रथम सूक्त ' **वैश्वामित्र मधुच्छंदा** ' ऋषिका देखा हुआ है। इसी प्रकार का गाथी '**विश्वामित्र**' ऋषिका देखा हुआ एक सूक्त तृतीय मंडलमें है। दोनों सूक्त ' **अग्नि** ' देवता के हैं और दोनों में ९ मन्त्र हैं, तथा शब्दों और वाक्यों की समानता भी बहुत है। सबसे प्रथम यह समानता देखने योग्य है--

वैश्वामित्रो मधुच्छंदाः (ऋ० १।१)	गाथिनो विश्वामित्रः (ऋ० ३।१०)
(१) अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं ॥ १ ॥	त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने होतारमीळते ॥ २ ॥
(२) गोपामृतस्य दीदिविं ॥ वर्धमानं स्वे दमे ॥८॥	गोपा ऋतस्य दीदिहि स्वे दमे ॥ २ ॥
(३) राजन्तमध्वराणां ॥ ८ ॥	स केतुरध्वराणाम् ॥ ४ ॥
(४) देवो देवेभिरागमत् ॥ ८ ॥	अग्निर्देवेभिरागमत् ॥ ४ ॥

इस प्रकार देवताकी स्तुतिमें अनेक स्थानोंमें समानता है। शब्द, वाक्य और मन्त्रभाग तथा पूर्ण मन्त्र एक देवता के वर्णनमें तथा भिन्न देवताओं के वर्णन में भी पुनःपुनः वैसेके वैसेही आ गये हैं। यह समानता यहां प्रथमतः

देखने का उद्देश्य इतनाही है कि, मंत्रोंका अर्थ निश्चित करने के लिए इस समानताके देखनेसे बहुत सहायता होती है।

अग्निका विचार करनेके पूर्व '**अग्नि**' के विशेषणरूप जो शब्द इस सूक्तमें आ गये हैं, वे किस पदार्थके विशेषतया बोधक हो सकते हैं, इसका प्रथम विचार करना आवश्यक है। '**अग्नि**' शब्दसे लोकभाषामें '**आग**' का बोध होता है, परन्तु इस सूक्तमें केवल '**आग**' का भावही है, ऐसा नहीं माना जा सकता; क्योंकि कई शब्दोंकी सार्थकता '**आग**' अर्थ लेनेसे नहीं होती है। देखिये-

(१) **रत्न-धा-तमः** = रत्नोंका धारण करनेवाला '**रत्न+धा**' होता है, और अनेक प्रकारके रत्नोंका धारण करनेवाला '**रत्न+धा+तम**' कहलाता है। प्रत्यक्ष देखा जाय, तो यह '**आग**' स्वयं अपने शरीरपर अनेक रत्नोंका धारण करती हुई दिखाई नहीं देती, इसलिए यह शब्द विशेष कर किसी अन्य पदार्थ की सूचना दे रहा है, ऐसा प्रतीत होना स्वाभाविक है।

(२) **कविक्रतुः** = 'कवि' शब्द केवल 'आग' का गुण बतानेके लिए प्रयुक्त हुआ है, ऐसा मानना असंभव है। क्योंकि आग में कवित्वकी प्रत्यक्षता नहीं है। कवि वह होता है कि, जो अतींद्रिय बातोंको शब्दोंके द्वारा प्रकट करता है। यह बात 'आग' में नहीं है। 'क्रतु' शब्द 'प्रज्ञा' वाचक मानते हैं, यह भाव भी 'आग' में नहीं है। इसलिए मुख्य दृष्टिसे 'कवि+क्रतु' शब्द आगका सूचक यहां नहीं हो सकता। कवि मानव ही होगा। क्रतु भी मानव ही करता है।

(३) **सत्यः** = यह शब्द भी त्रिकालाबाधित तत्त्वका बोधक है। इसलिए 'आग' का बोधक नहीं है, क्योंकि आग बुझ जाती है और तीनों कालोंमें एक जैसी नहीं रहती।

(४) **पुरोहित, ऋत्विज्, होता** = ये शब्द भी मुख्य वृत्तिसे आगके बोधक नहीं हो सकते। ये मानवोंके बोधक हैं।

इस प्रकार ये विशेषणरूप शब्द 'आग' का बोध नहीं कराते, परन्तु किसी अन्य पदार्थमें ये अन्वर्थक होते हैं। जिस पदार्थ में सूक्तके सब शब्द सुसंगत हो सकते हैं, वही पदार्थ सूक्त का 'मुख्य देवता' है। अन्य भाव गौण वृत्ति से मानना न मानना योजक की योजना पर ही अवलंबित है। यहां हमें देखना है कि, इस सूक्तमें मुख्य दृष्टिसे किस का वर्णन हो रहा है और किस रीतिसे गौण दृष्टिमें अन्य पदार्थोंका बोध हो सकता है। इसका निश्चय करनेके लिए इस सूक्तमें निम्न दो शब्द विशेष महत्त्व रखते हैं-

(५) **अंग** = 'अंग' शब्द का अर्थ 'अवयव' है। 'शरीर, अवयव, शरीरके अंग अथवा भाग' इस अर्थमें मुख्यतः यह शब्द प्रयुक्त होता है। हरएक प्राणिमात्रको अपना शरीर अथवा अपने शरीर के अंग अत्यंत प्रिय होते हैं, इसलिए अवयववाचक 'अंग' शब्दका 'प्रिय' ऐसा अर्थ पीछेसे होने लगा। यदि इस सूक्तका 'अंग' शब्द अपने ही निज 'अवयव' का बोधक माना जायगा, तो मानना पडेगा कि, इस सूक्तमें वर्णित '**अग्नि**' अपने ही शरीरमें निज अवयवरूप अथवा अपना अंगभूत ही कोई पदार्थ है, जहां यह 'अंग' शब्द पूर्ण रीतिसे सार्थक हो सकता है। इस विषय में निम्नलिखित शब्द विशेष सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेयोग्य हैं-

(६) **अंगिराः** = (अंगि+रस) = अपने शरीरके अंगोंमें जो एक जीवनरूप रस होता है, उसको 'अंगीय-रस' कहते हैं। यही जीवनरूप अंग-रस 'अंगि+रस्' शब्दसे बताया जाता है। इस विषय में ब्राह्मण ग्रंथों का कथन देखनेयोग्य है-

(१) **तद्देवा रेतः प्राजनयन्, ततोऽङ्गाराः समभवन्, अंगारेभ्योऽङ्गिरसः।** (श० ब्रा० ४।५।१।८)

(२) **तं वा एतं अंगरसं सन्तं अंगिरा इत्याचक्षते।** (गो० ब्रा० पू० १।७)

(३) **येऽङ्गिरसः स रसः ये अथर्वाणः...तद्भेषजं... तदमृतं ... तद् ब्रह्म।** (गो० ब्रा० पू० ३।४)

"(१) देवोंने रेत उत्पन्न किया, उससे अंगार (जलते हुए कोयले) उत्पन्न हुए, उनसे अंगिरस हुए हैं। (२) जो अंग+रस है, वही अंगिरः (अंगि-रस्) है। (३) जो अंगिरस् है, वह रस है, यही अथर्वा है और यही ... औषधी ... अमृत ... और ब्रह्म है।"

इस कथन से स्पष्ट हो रहा है कि "अंगि-रस्" मुख्यतया शरीर का जीवनरस है। क्योंकि जो यह जीवनरस शरीरके अंगों और अवयवों में है, वही अमृत रस है, उसे

में रक्षा की शक्ति रहती है। इसलिये जबतक यह जीवन-रस शरीर में ठीक अवस्था में रहता है, तबतक ही आरोग्य रहता है। इसीलिये इस रस को गोपथ-ब्राह्मण में 'भेषज' अर्थात् दोषनिवारक औषधि कहा है। अंगिरस का यह मूल स्वरूप है। और यह अपने शरीर के अंगों में ही व्यापक है, इतनाही नहीं, परन्तु अपना अंगरूप ही सत्व है। इस प्रकार जो जीवन का तत्त्व 'अंगिरस् और अंग' शब्दों से बताया जाता है, वही इस सूक्तका प्रतिपाद्य विषय मुख्य रूप से है। इस अर्थ को ध्यान में धरनेसे सूक्त का मुख्यार्थ ध्यान में आ सकता है।

मुख्य दृष्टि और गौण दृष्टि, ऐसी दो दृष्टियोंसे वेदका अर्थ देखना होता है। मुख्य प्रतिपाद्य विषय में मन्त्र के संपूर्ण शब्द पूर्णतया संगत होते हैं और गौण विषय में लक्षणा करके, अर्थ का संकोच करके, केवल भाव ही देखा जाता है। इन दो प्रकार के अर्थों का अन्य वर्गीकरण, जो वैदिक सारस्वत में सुप्रसिद्ध है, यहां अवश्य देखना चाहिये। वेद-मंत्रोंका अर्थ- (१) **आध्यात्मिक**, (२) **आधिभौतक**, और (३) **आधिदैविक** ज्ञानक्षेत्रसे भिन्न भिन्न होता है। आध्यात्मिक क्षेत्र वह है कि, जो आत्मासे लेकर स्थूल देह-तक फैला है, आधिभौतिक क्षेत्र वह है कि, जो प्राणिमात्रके संघात में फैला है, तथा आधिदैविक क्षेत्र वह है कि जो संपूर्ण जगत् की स्थिर चर समष्टिमें व्यापक है। उक्त तीनों क्षेत्रोंका भाव बतानेवाले संक्षिप्त और बालबोध शब्द '(१) व्यक्ति, (२) **समाज** और (३) **जगत्**' यही हैं। यद्यपि इनसे संपूर्ण पूर्वोक्त क्षेत्रों का बोध नहीं होता, तथापि उनका साधारण तात्पर्य इन शब्दोंसे जाना जा सकता है।

'अंग, अंगरस्' आदि शब्दोंसे बोधित होनेवाला जो अग्नि है, वह 'आग' नहीं है, प्रत्युत हमारे शरीर के अंगों में कार्य करनेवाला जीवनरूप अंगरस ही है, इस बातकी सूचना इससे पूर्व दी गई है। शरीरका '**अंगरस**' व्यक्तिगत होनेसे आध्यात्मिक पदार्थ है। इसीका आधि-भौतिक अर्थात् सामाजिक किंवा राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिनिधि '**राष्ट्रीय जीवन**' उत्पन्न करनेवाला संघ होना स्वाभाविक है। यही '**पंचजन, वैश्वानर या विश्वमानुष**' है। तथा आधिदैविक क्षेत्र में इसीका रूप अग्नि अथवा आगमें देखा जा सकता है। इस से स्पष्ट हुआ है कि, यहां का 'अग्नि' शब्द किस क्षेत्र में किस पदार्थ का बोधक है। यद्यपि सूक्त का मुख्य प्रतिपाद्य विषय '**जीवनाग्नि**' है, तथापि '**राष्ट्रीय जीवनाग्नि**' और '**पांचभौतिक अग्नि**' भी उक्त प्रकार बोधित होते हैं।

प्रत्येक प्राणिमात्र के शरीर में जो जीवनरस है, वही उस व्यक्ति का सच्चा कल्याण करता है। इसलिये यह जीवनशक्ति संपूर्ण अन्य शक्तियों की अपेक्षा सब से अधिक कल्याण करनेवाली है। इसी प्रकार जगत् के व्यवहार में अग्नि का महत्त्व है। इस आग्नेय शक्ति का यह कार्य विचार की दृष्टि से सर्वत्र देखनेयोग्य है। इसलिये वेद में अन्यत्र कहा है—

(१) अग्निमीडिष्व यंतुरम् ॥ (ऋ. ८-१९-२)
(२) अग्निमीडिष्वावसे ॥ (ऋ. ८-७१-१४)
(३) अग्निमीडीत मर्त्यः ॥ (ऋ. ५-२१-४)
(४) अग्निमीडीताध्वरे हविष्मान् ॥ ऋ. ६-१६-४६
(५) अग्निमीडे कविक्रतुम् ॥ (ऋ. ३-२७-१२)
(६) अग्निमीडेन्यं कविम् ॥ (ऋ. ५ १४-५)
(७) अग्निमीडे पूर्वचित्तिं नमोभिः ॥
(वा. य. १३-४३)
(८) अग्निमीडे भुजां यविष्ठम् ॥ (ऋ. १०-२०-२)
(९) अग्निमीडे व्युष्टिषु ॥ (ऋ. १-४४-४)

'(१) नियामक अग्नि की प्रशंसा कर, (२) अपने संरक्षण के लिये अग्नि का वर्णन कर, (३) मर्त्य अग्नि की स्तुति करे, (४) यज्ञ में हविर्द्रव्य लेनेवाला अग्नि का महत्त्व कहे, (५) कवि और क्रतुरूप अग्नि का वर्णन करता हूं, (६) कवि अग्नि वर्णनीय है, (७) पहिले प्रदीप्त अग्नि को नमस्कारों या अन्नोंद्वारा बढाता हूं, (८) (भुजां) भोग करनेवालों में (यविष्ठ) युवा अग्नि का वर्णन करता हूं, (९) (व्युष्टिषु) उदय के समयों में अग्नि का वर्णन करता हूं।'

ये मंत्रभाग बता रहे हैं कि आग्नेय शक्ति का महत्त्व कितना है। इन मंत्रों का महत्त्व उस समय ध्यान में आ सकता है कि, जिस समय तीनों क्षेत्रों में अग्निस्वरूप का ठीक ठीक पता लग जाय। उक्त मंत्रभागों में स्पष्ट बताया है कि, यह अग्नि (यंतुर) नियामक, व्यवस्थापक

अथवा प्रबंधकर्ता है, (कवि) शब्दशास्त्र में प्रवीण है, (भुजां यविष्ठ) भोग करनेवालों में युवा है, तथा (व्युष्टिषु) उदय के समय में इस का चिंतन किया जाता है। ये शब्द अग्नि का स्वरूप व्यक्त कर सकते हैं। अग्नि की जो प्रशंसा की जाती है, वह अपने (अवसे) संरक्षण के लिये ही है, क्योंकि यही अपना सच्चा संरक्षण करता है। इतने वर्णन से अग्नि के स्वरूप का थोडासा निश्चय हुआ है और उस का पुरोहित होने का भाव भी ध्यान में आ गया है। अब देखना है कि, ' ईडे ' शब्द का वास्तविक तात्पर्य क्या है। क्योंकि अग्नि के साथ ' ईडे ' शब्द का प्रयोग कई मंत्र में हुआ है और यह शब्द विशेष हेतु से ही प्रयुक्त होता है। प्रायः इस का अर्थ ' प्रशंसा, स्तुति, वर्णन ' आदि करते हैं और हमने भी ये ही अर्थ ऊपर रखे हैं, परन्तु इस का विशेष भाव यहां है। यह भाव निम्न लिखित मंत्रों से व्यक्त हो सकता है-

(१) ईळामहा ईड्याँ आज्येन ॥ (ऋ. १०-५३-२)
(२) तं हि शश्वंत ईळते स्रुचा देवं घृतश्चुता अग्निं हव्याय वोळ्हवे ॥ (ऋ. ५-१४-३)
(३) देवाँ ईळाना हविषा घृताची॥ (ऋ.५-२८.१)
(४) को अग्निमीट्टे हविषा घृतेन॥ (ऋ.१-८४-१८)

'(१) (आज्येन) घी के साथ पूजनीयों की पूजा करेंगे, (२) (घृतश्चुता स्रुचा) घीवाले चमस से अग्निदेव की पूजा करते हैं, (३) घी से देवों की पूजा होती है, (४) घृतयुक्त हवि से कौन अग्नि की पूजा करता है ? '

इन मंत्रभागों में ' ईड् ' के साथ ' आज्य ' का संबंध है। अर्थात् इस के विचार से पता लगेगा कि, ' ईडे ' शब्द का अर्थ केवल स्तुति नहीं है, परन्तु घी, (हवि) अन्न आदि के साथ अर्पण का संबंध है। यह भाव ध्यान में धरकर निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(१) अग्निमीडे पूर्वचित्तिं नमोभिः। (वा.य. १३-४१)
(२) अग्निमीडे भुजां यविष्ठम् ॥ (ऋ. १०-२०-२)
(३) घृता चिदीडानो वह्निर्नमसा ॥ (अ.५ २७-४)

'(१) (नमोभिः) अन्नोंद्वारा अग्नि की पूजा करता हूं, (२) भोग करनेवालोंमें युवा अग्निकी अर्थात् जवान होने के कारण अधिक खानेवाले अग्नि की मैं पूजा करता हूं. (३) घी और (नमसा) अन्न से अग्नि की पूजा होती है।'

इन मंत्रों में ' नमः ' शब्द है, पूर्वमंत्रों के साथ इनका विचार करने से यहां 'नमः' का अर्थ 'अन्न' प्रतीत होता है। अन्न, वज्र और नमन ये तीन अर्थ ' नमः ' के हैं। प्रसंगानुकूल यहां अन्न इष्ट है, क्योंकि उसके साथ घी भी है। अन्न और घीसे अग्नि की स्तुति, प्रशंसा आदि नहीं हो सकती, परन्तु उसका संवर्धन हो सकता है। इसलिये 'अग्निमीडे पुरोहितं' इन पदोंका अर्थ मैं प्रत्यक्ष हितकर्ता (अग्नि) जीवनाग्नि का संवर्धन करता हूं। ' ऐसा हो सकता है। घी और उत्तम अन्नों से जीवनशक्ति का संवर्धन होना संभवनीय भी है, इसलिये यह अर्थ प्रत्यक्ष अनुभव में भी आ सकता है।

वेद में अन्न वाचक 'इष्, इष' ये शब्द हैं। नैरुक्त दृष्टिसे इनका संबंध 'इष, इर, इरा, इडा,ईरा, इड्,ईडा,इळा, इला' शब्दों के साथ है और इसीलिये इन सब शब्दों के अनेक अर्थों में ' अन्न ' भी एक अर्थ है। यही कारण है कि, अन्न और घी के साथ ही अग्नि की (ईडा) बधाई होती है, जो पूर्वोक्त मंत्रोंसे सूचित हो गई है। सब प्राणी अन्न चाहते हैं, इसलिये ' इष् (इच्छ) ' का अर्थ अन्न होता है और वही भाव ' ईड्, ईळ् ' आदि शब्दों में है। इससे ' ईडे ' का सम्बन्ध अन्नसे है, यह बात सिद्ध है।

इस सूक्त में अग्नि शब्द का मुख्य स्वरूप जीवनाग्नि है, यह बात पूर्व ही बताई गई है। यह जीवनाग्नि घी और अन्न के योग्य सेवन से बढ सकता है, यह दीर्घायुप्राप्ति का बोध यहां इस मंत्र में बताया गया है। यही जीवनाग्नि किंवा आत्माग्नि, अंगिरस्, अंगरस, अमृत रस अथवा ब्राह्म रस है, जिसका योग्य अन्न और उत्तम घीद्वारा पोषण होता है, यही सूचना इस मंत्र में ' ईड् ' धातु कर रहा है। यह आध्यात्मिक जीवनाग्नि के पक्ष में अर्थ है। आधिभौतिक पक्ष में राष्ट्रीय जीवनाग्नि गुरु और उपाध्यायों के रूपमें समाजमें होता है, इनका सत्कार अन्नादिद्वारा करना योग्य है। आधिदैविक पक्ष में हवनीय अग्नि घी आदि हवनीय पदार्थों द्वारा बढाया जाता है, इत्यादि भाव प्रत्येक समयमें पाठक विचार की दृष्टिसे देखते जांय। वैयक्तिक और सामाजिक अर्थ मानवी उन्नति के साधक हैं और पांचभौतिक अग्निपरक अर्थ सामान्य दृष्टि से स्थूल उपासनाका साधक है। अब और दो पादोंका विचार करेंगे-

' यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥
होतारं रत्नधातमम् ॥ '

इन दोनों पादों में अग्नि का स्वरूप-वर्णन है। सब से प्रथम ' यज्ञस्य देवं ' ये शब्द विशेष महत्त्व रखने के कारण यहां देखनेयोग्य हैं। यह अग्नि यज्ञ का देवता है। जिस यज्ञ का देवता अग्नि है, वह यज्ञ कौनसा है ? और कहां चल रहा है ? इस बात का पता लगाना आवश्यक है। इसका विचार करने के लिये निम्न वाक्य देखिये-

हृदयमें यज्ञ।

अविन्दन्ते अतिहितं यदासीत्
यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् ॥ (ऋ० १०।१८१।२)

' जो (यज्ञस्य परमं धाम) यज्ञ का परम स्थान (गुहा) बुद्धि में, हृदय में है, वह (अति-हितं) अत्यंत गुप्त है, परन्तु ज्ञानी सत्पुरुष उस को (अविन्दन्ते) प्राप्त करते हैं। ' इस मंत्र में यज्ञ का स्थान हृदय है, ऐसा स्पष्ट कहा है। हृदयस्थान में अत्यन्त गुप्त रूप से अर्थात् अदृश्य रीति से यह यज्ञ चल रहा है। जो विशेष ज्ञानी हैं, वे ही इस को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से जानते हैं। अन्य साधारण मनुष्य जो स्थूल दृष्टि के हैं, वे इस यज्ञ को देख नहीं सकते, इस का कारण उन का अज्ञान ही है। ऐसे अज्ञानी मनुष्यों को व्यक्त रूप में बताने के लिये ही बाह्य यज्ञ रचा गया है, जो अग्नि में आहुतियां डाल कर किया जाता है। तात्पर्य यह कि, मनुष्य की हृदयरूप गुहा में सच्चा यज्ञ गुप्त रीति से चल रहा है, उस का नकशा ही यह बाह्य यज्ञ है। इस बात का विशेष वर्णन क्रमशः आगे आ जायगा। अब यहां इस का और भाव देखना है, इसलिये निम्न लिखित वचन देखिये-

(१) पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विंशति वर्षाणि तत्प्रातःसवनं... ॥ १ ॥...यानि चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तन्माध्यंदिनं सवनं... ॥ ३ ॥ . यान्यष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि तत्तृतीयसवनं...॥५॥ (छां.३-१६)

(२) यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तत् ॥ (छां. ८-५-१)

(३) अहं ब्रह्माहं यज्ञः ॥ (बृ. १-५-१७)

(४) तस्यैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः, श्रद्धा पत्नी, शरीरमिध्मं, उरो वेदिः, लोमानि बर्हिः, वेदः शिखा, हृदयं यूपः, काम आज्यं, मन्युः पशुः, तपोऽग्निः, दमः शमयिता, वाग्घोता, प्राण उद्गाता, चक्षुरध्वर्युः, मनो ब्रह्मा, श्रोत्रमग्नीत्, यावद् ध्रियते सा दीक्षा, यदश्नाति तद्धविः, यत्पिबति तदस्य सोमपानं......... यन्मुखं तदाहवनीयः......॥

(५) स्वे शरीरे यज्ञं परिवर्तयामि ॥ (प्राणाग्नि उ.२)

(६) अहं क्रतुरहं यज्ञः ॥ (भ. गी. ९-१६)

(७) बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि ॥ (गर्भ उ. ४; प्राणाग्नि उ. ४)

(८) वाग्वै यज्ञस्य होता, चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः, ... प्राणो वै यज्ञस्योद्गाता, मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा (बृ० ३-१-१)

' (१) मनुष्य का जीवन-संपूर्ण आयु-ही एक यज्ञ है, पहिले २४ वर्ष का प्रातःसवन है, मध्य के ४४ वर्ष माध्यंदिन सवन है, अंत के ४८ वर्ष तृतीय सवन है। (२) जो यह यज्ञ है, वही ब्रह्मचर्य है। (३) मैं ब्रह्मा और मैं यज्ञ हूं। (४) इस ज्ञानी के यज्ञ में आत्मा यजमान, श्रद्धा यजमान पत्नी शरीर इध्म, छाती वेदी, बाल बर्हि, वेद शिखा, हृदय यूप, वासना घी, क्रोध पशु, तप अग्नि, दम शमिता, वाणी होता, प्राण उद्गाता, चक्षु अध्वर्यु, मन ब्रह्मा, कान आग्नीध्र, व्रतपालन दीक्षा, भोजन हवि, जल सोमपान, मुख आहवनीय अग्नि है। (५) अपने शरीर में यज्ञ का परिवर्तन करता हूं। (६) मैं क्रतु और मैं ही यज्ञ हूं। (७) बुद्धि और इतर इंद्रिय यज्ञपात्र हैं। (८) यज्ञ का होता वाक् है, ... अध्वर्यु चक्षु है, ... उद्गाता प्राण है, ... और ब्रह्मा मन है। '

यह यज्ञ का वर्णन विस्पष्ट रूप से बता रहा है कि, यह यज्ञ मनुष्य के अंदर ही हो रहा है। ' यज्ञ का स्थान हृदय में गुप्त है ' (ऋ० १०।१८१।२) इस ऋग्वेद के कथन का आशय ही उपनिषत्कारों ने उक्त प्रकार स्पष्ट किया है। यही यज्ञ यहां इस ऋग्वेद के प्रथम सूक्त में है और इसी यज्ञ का देव (यज्ञस्य देवं) जो अग्नि है, वह हृदयस्थान में ही विराजमान है। अब पाठकों को पता लग सकता है कि, 'अंग, अंगिरस्' आदि पदोंद्वारा किस

रहस्य का कथन हुआ है। हृदय में जो आत्मशक्ति है, वही यह अग्नि है। यहां हृदय में बैठकर यही आत्मा आयुष्य की समाप्ति तक यज्ञ कर रहा है। यही क्रतु है। प्रत्येक वर्ष एक एक क्रतु करता है और इस प्रकार १०० वर्षों में १०० क्रतु होनेके कारण इसीका नाम '**शतक्रतु**' होता है। यह शतक्रतु आत्मा ही '**इंद्र**' नाम से प्रसिद्ध है और इसी आत्मा शतक्रतु इंद्र की शक्ति '**इंद्रियों**' में कार्य कर रही है। इस प्रकार यहां इंद्र और अग्नि एक ही हैं। इसीलिये कहा है कि—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥ (ऋ. १।१६४।४६)

'एकही सद्वस्तुका ज्ञानी लोग इंद्र, अग्नि, मित्र, वरुण, सुपर्ण, यम, मातरिश्वा आदि विविध नामोंसे वर्णन करते हैं।' जिस एक आत्माका विविध नामोंसे उक्त प्रकार वर्णन होता है, वही आत्माग्नि इस ऋग्वेद के प्रथम सूक्तमें वर्णन किया गया है। और यही '**यज्ञका देव**' है। क्योंकि जबतक यह इस शरीर के हृदयमंडप में रहकर यज्ञ करता है, तबतक ही यह यज्ञ चलता रहता है। जब यह चला जाता है, तब यज्ञ समाप्त हो जाता है। पूर्ण शतायु (अर्थात् १०८ अथवा १२० वर्ष की आयु) का उपभोग लेकर स्वेच्छा से यज्ञ समाप्त करके यह चला गया, तो कहा जाता है कि, '**इसका यज्ञ समाप्त हुआ,**' परन्तु जब विविध व्याधियां इस पर आक्रमण करती हैं और इसका अकालमृत्यु होता है, तब कहा जाता है कि राक्षसोंने इस यज्ञ का विध्वंस किया। इस प्रकार बीच में अकाल में ही यज्ञ का विध्वंस न हो, ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये। क्या ऐसा प्रबन्ध करना मनुष्य के अधीन है? वेदादि शास्त्रों के परिशीलन से पता लग सकता है कि, योगादि साधन प्रारम्भ से ही यदि किये जांय, तो उक्त सिद्धि प्राप्त हो सकती है। इस हेतु से ही इस प्रथम मंत्र में कहा है कि, यही 'यज्ञ का देव' है। यदि इसका यथायोग्य सत्कार हुआ, तो यह यज्ञकी समाप्ति ठीकप्रकार कर सकेगा, अन्यथा चला जायगा। प्रत्येक मनुष्य को यह सूचना यहां मिल रही है कि, '**यज्ञका देव**' अपने हृदय में है, उसको देखना चाहिये और इसका महत्त्व जानना चाहिये। इस आध्यात्मिक दृष्टि से वेदमंत्रों का मनन करने से उक्त ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

यह '**यज्ञ का देव**' है और यही '**ऋत्विज्**' है। पाठकों को यहां ध्यानपूर्वक देखना चाहिये कि, यहां यज्ञ का देव और ऋत्विज् एक ही हुए हैं (१) **यज्ञ का देव,** (२) **पुरोहित,** (३) **ऋत्विज्,** (४) **होता** आदि सब बाह्य यज्ञ में अलग अलग होते हैं, परन्तु इस प्रथम मंत्र में वर्णित यज्ञ में ये सब एकही वस्तु में मिल गये हैं। जो यज्ञ का देव है, वही पुरोहित, ऋत्विज् और वही होता है। इतना ही नहीं प्रत्युत अन्य याजक भी वही एक है। इसीलिये इस मंत्र में वर्णन किया हुआ यज्ञ अध्यात्म-यज्ञ है और बाह्य यज्ञ नहीं है। क्योंकि अध्यात्मयज्ञ में आत्मा ही सब कुछ बनता है, वैसा इस बाह्य यज्ञ में नहीं हो सकता। इस बाह्य यज्ञ में यज्ञ का देव अन्य होता है तथा ऋत्विज्, यजमान आदि उससे भिन्न होते हैं। जहां अग्निष्टोमादि यज्ञ होते हैं, वहां देखने से पता लग सकता है कि, उक्त भिन्नता कितनी स्पष्ट होती है। परन्तु इस मंत्र में स्पष्ट रीति से कहा है कि, यज्ञ का देव और ऋत्विज् एक ही है। अध्यात्म में यह एकता कैसी होती है देखिये।

'**वाणी, प्राण, चक्षु, मन, ये क्रमशः होता, उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा हैं।** (बृ० उ० ३।१।१-६)' जिन्होंने आत्मविचार किया है, उनको पता है कि, आत्मा की शक्ति ही वाणी, प्राण, चक्षु और मन में कार्य कर रही है, इसलिये आत्मा ही सब यज्ञ कर रहा है। वही यज्ञ का देव है, जिसकी उपासना यज्ञ में की जाती है, वही यजमान है, जो यज्ञ करता है, वही होता, उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा आदि ऋत्विज् है, जिन के द्वारा यज्ञ कराया जाता है। इस अवस्था में उपास्य और उपासक एक ही हो जाते हैं। यह भाव प्रथम मंत्र में वेदने दिया है। जो कहते हैं कि, अध्यात्मविद्या उपनिषदों में ही है और वेद में नहीं है, उनको इस मंत्र का विचार उक्त प्रकार अवश्य करना चाहिये। तब पता लगेगा कि वेदमंत्रों की गुप्त विद्या अब तक ही गूढ रही है और उसमें से थोडीसी उपनिषदों में प्रकट हो गई है। अस्तु। अब ऋत्विज् आदि शब्दों का तात्पर्य देखना चाहिये।

ऋत्विज् = (ऋतु + यज्) = जो ऋतु के अनुसार यज्ञ करता है। अध्यात्मदृष्टि से व्यक्ति में छः ऋतु हैं। (१) उत्पत्ति, (२) अस्तित्व, (३) वर्धन, (४) विपरिणाम, (५) क्षीणता और (६) नाश। जगत् के संपूर्ण पदार्थों में ये छः ऋतु हैं। कोई पदार्थ ऐसा नहीं है कि, जिसमें ये न हों। वनस्पति, पशु, पक्षी, तथा मनुष्य इनमें ये प्रत्यक्ष हैं। प्राणिमात्र में जो आत्माग्नि है, वह इन छः ऋतुओं में प्राप्त ऋतु के अनुकूल व्यापार करता है। आत्मा की प्रेरणा से बालक पैदा होता है, वह अपने अस्तित्व के लिये प्रयत्न करता है, शरीरादि को बढाता है, बढते बढते परिपक्व हो जाता है, पश्चात् क्षीणता का ऋतु प्रारम्भ होता है और अन्त में नाश होता है। इस प्रकार इस यज्ञ का प्रारम्भ और अंत आत्मा ही करता है। इन व्यापारों में आत्मा की शक्ति का कार्य देखना इष्ट है। वैदिक धर्म की यदि कोई विशेषता है, तो यही है कि, यह वैदिक धर्म हरएक स्थान पर आत्मा की शक्ति की जागृति कराता है। अस्तु।

इस रीतिसे व्यक्तिके शरीरमें आत्मा का ऋतुओंके अनुकूल कार्य देखा जाता है, यही अध्यात्मज्ञान है। आत्माके संबंधसे जिसकी उत्पत्ति है, वह अध्यात्म (अधि+आत्मा) है। हरएक मनुष्य को ऋतुओं के अनुकूल कार्य करना चाहिए, यह उपदेश यहां मिलता है। बाल्य, तारुण्य और वार्धक्य इन तीन कालोंमें प्रत्येकमें दो ऋतु होनेसे आयुभर में छः ऋतु होते हैं। प्रत्येक ऋतुमें जो करनेयोग्य कर्तव्य होते हैं, उनको उत्तम प्रकार करना अत्यावश्यक है। कर्तव्य स्वयं अपने विषयमें जैसे होते हैं, वैसे ही दूसरोंके संबंधके कारण भी उत्पन्न होते हैं। ये सब ऋतुके अनुकूल ही करने चाहिए। मनुष्यके संपूर्ण आयुमें छः ऋतु हैं, उसी प्रकार सालमें छः ऋतु हैं। इन ऋतुओंके अनुसार अपनी ऋतुचर्या रखनेसे आयु, आरोग्य और बल प्राप्त होता है। इसी प्रकार मासमें और प्रतिदिन ऋतु होते हैं। इसका कोष्टक यह है-

आयुमें ऋतु	वर्षमें ऋतु	मासमें ऋतु	दिनमें ऋतु
१०० वर्ष	१२ मास	३० दिन	२४ घण्टे
जन्म, बालपन	वसंत	प्रतिपदा	प्रातःकाल
कुमारावस्था	ग्रीष्म	अष्टमी	मध्याह्न
तारुण्य	वर्षा	पूर्णिमा	सायंकाल
वृद्धता	शरद्	षष्ठी	रात्रिका प्रारंभ
क्षीणावस्था	हेमंत	द्वादशी	मध्यरात्र
अंतसमय	शिशिर	अमावास्या	रात्रि का अंतिम प्रहर।

इस प्रकार समय के छोटे या बडे विभाग में ऋतुओंकी कल्पना की जाती है और प्रत्येक प्राप्त ऋतुकाल में व्यक्ति-विषयक, समाजविषयक और जगद्विषयक कर्तव्य अवश्य पालन होना चाहिए। यज्ञका देव आत्माग्नि है, वह ऋतुके अनुसार अपने कर्तव्य करता है, इसलिए हरएकको वैसा करना अत्यावश्यक है; जो ऋतुके अनुसार अपना कर्तव्य योग्य रीतिसे करेगा, वही उन्नत होगा और जो न करेगा वह अवनत होगा। यज्ञका देव हमारा आदर्श है। उसके गुण, धर्म और कर्म वेदमंत्रों में इसलिए कहे हैं, कि उसके अनुसार मनुष्य कार्य करें और अपनी उन्नतिका साधन करें।

आधिभौतिक दृष्टिसे सामाजिक और राष्ट्रीय कार्यक्षेत्र में भी राष्ट्रीय जीवनमें जो ऋतु होते हैं, उनके अनुसार हर-एक को अपने कर्तव्य अवश्य करने चाहिए। राष्ट्रीय ऋतु-परिवर्तन राजकीय क्रांतिरूपसे इतिहासमें प्रसिद्ध है। इसी प्रकार अन्यान्य अवस्थामें राष्ट्रके और समाज, संघ अथवा जातिके ऋतु होते हैं। इन ऋतुओंके अनुकूल अपना कर्तव्य पालन करनेसे राष्ट्रीय उन्नति और कर्तव्यपालन न करनेसे राष्ट्रीय अवनति होती है। सब अन्य व्यवहारोंके विषयमें भी यही बात सनातन है। योग्य विचार करके इस विषय का अनुभव पाठक ले लें। जगत् के अन्दर जो सांवत्सरिक ऋतु परिवर्तन होता है अथवा राष्ट्रके तथा समाजके जीवन में ऋतुपरिवर्तन होता है, उसके अनुकूल मनुष्यमात्र को अपना आचरण करना आवश्यक ही है। जो ऋतुके अनु-सार अपना कर्तव्यपालन न करेगा, उसका नाश होगा। सामान्यतः बहुत से यज्ञयाग ऋतुसंधि में जो बीमारियां होतीं हैं, उनके निवारण के लिए किए जाते हैं, इसलिए कहा है—

भैषज्ययज्ञा वा एते। तस्मादृतुसंधिषु प्रयुज्यन्ते। ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायते (गो. उ. प्र. १-१९)

' औषधियोंके ही ये यज्ञ हैं, इसलिए ऋतुके संधिसमय में ये किए जाते हैं, क्योंकि ऋतुसंधिमें व्याधियां होतीं हैं। ' इस प्रकार यह आधिदैविक दृष्टिसे विचार हुआ है।

पाठक विचार करके इससे अधिक बोध ले लें।

होता = इस शब्दका अर्थ दाता, आदाता और आह्वान-कर्ता है। देनेवाला, लेनेवाला और बुलानेवाला ये तीन भाव इस शब्दमें हैं। पहिला दान लेना है, पश्चात् दूसरों को बुलाना और तदनंतर उनको दान देना होता है। विद्या प्राप्त करनी, विद्यार्थियोंको अपने पास बुलाना और उनको विद्यादान करना, यह '**ज्ञानयज्ञ**' का हवन है। धन प्राप्त करना, जिनको धनकी आवश्यकता है, उनको निमंत्रण देना और उनको धनका अर्पण करना, यह '**द्रव्ययज्ञ**' है। इसी प्रकार अन्यान्य यज्ञोंमें '**होता**' का काम निश्चित है। अध्यात्मदृष्टिसे व्यक्ति के शरीरमें आत्माग्नि प्राकृतिक पदार्थों को अपने पास कर रहा है, वायु, सूर्य, जल आदि देवता-ओंके अंशोंको बुलाकर उनको शरीरके भिन्नभिन्न स्थानोंमें रखता है और अपनी शक्ति उनको देकर उनके द्वारा यह शतसांवत्सरिक यज्ञ कराता है। इसी प्रकार अपनी उन्नतिके लिए हरएकको अपने अपने कार्यक्षेत्र में करना चाहिये।

रत्नधातमः = (रत्न+धा+तमः) = रत्नोंका धारण करनेवाला है। यहां शंका हो सकती है कि यह आत्मा रत्नोंका धारक कैसा है, इसके रत्न कौनसे हैं और उनका धारण यह कैसा करता है? इन प्रश्नोंके उत्तर के लिए निम्नलिखित मन्त्र देखिये—

दमे दमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता निषसादा यजीयान्॥ (७५९; ऋ० ५.१.५)

'(दमे) घर घर में सात रत्नोंको धारण करनेवाला अग्नि यज्ञ करनेके लिये होता बनकर बैठा है।' आत्माग्नि शरीरमें बैठा है, आत्माका घर यही शरीर है, इत्यादि बातों का निश्चय पहिले हो चुका है। इस शरीरमें यह आत्माग्नि सात रत्नोंका धारण करता है। ये सात रत्न- (१) मुख, (२) नेत्र, (३) कर्ण, (४) नासिका, (५) त्वचा ये पंच ज्ञानेंद्रियाँ और (६) मन तथा (७) बुद्धि (किंवा कईयों के मतसे अहंकार) मिलकर होते हैं। जिस प्रकार विविध रत्नोंके अलंकारोंसे शरीरकी शोभा बढती है, उसी प्रकार उक्त इंद्रिय-शक्तियोंके विकास से मनुष्यकी शोभा वृद्धिंगत होती है। परन्तु इसमें विशेष बात यह है कि, यदि ये आत्माके सात रत्न उत्तम अवस्थामें रहें, तो बाह्य रत्नोंके विना भी शोभा और यश बढता है और ये आत्मा के सप्त रत्न ठीक न रहें, तो बाह्य रत्नोंसे शरीरके अलंकार बढानेपर भी उसका कोई उपयोग नहीं होता। तात्पर्य ये आत्माके रत्न मुख्य हैं और बाह्य रत्न गौण हैं।

व्यक्तिमें और जगत्में भी सप्त रत्न हैं। समाज और राष्ट्रमें प्रकाश, शांति, उग्रता, ज्ञान, गुरुत्व, वीर्य और स्थैर्य इन सप्त गुणोंके कर्म करनेवाले श्रेष्ठ पुरुष रत्नरूप होते हैं और वेही राष्ट्रकी शोभा बढाते हैं। इस प्रकार सर्वत्र सप्त रत्नोंका रूप देखकर उनका धारण, पोषण करना आवश्यक है।

प्रत्येक रत्नका वर्ण भिन्न होता है और '**वर्णचिकित्सा**' के नियमानुसार अपने अनुरूप वर्णका रत्न शरीरपर धारण करनेसे शरीरका आरोग्य, आयुष्य और बल बढनेमें सहा-यता होती है। इस विषयका विचार सुविचारी वैद्योंको करना उचित है।

यहां प्रथम मंत्रके संपूर्ण शब्दोंका विचार हुआ। इस मन्त्र में कहे सब शब्द अग्निका स्वरूप निश्चित करनेके लिए सहायता दे रहे हैं। इन शब्दोंके आशयका विचार करनेसे जो स्वरूप निश्चित होता है, वह ऊपर बताया ही है। इस स्वरूपको ध्यानमें धरकर इस प्रकार का यह अग्नि '**यज्ञ का देव**' है और यह यज्ञ मुख्यतया अपने शरीरमेंही चल रहा है, इसके नियम देखकर मानवसंघका व्यवहार होना चाहिए, इत्यादि बोध अंशरूपसे हमने देखा है।

अब और देखिये—

" स देवाँ एह वक्षति ॥ २ ॥ (२)

'वह देवों को यहां लाता है।' यह क्रिया वर्तमान-काल की और प्रत्यक्ष अनुभव की है। इस कथन से प्रश्न होता है कि (१) यह देवों को कहां लाता है? किस रीति से लाता है? किस समय लाता है? और कहां से लाता है? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर देने के पूर्व यह देखना चाहिये कि, इस मंत्रभाग की वेदमें कहाँ द्विरुक्ति हुई है। देखिये—

(१) मधुच्छंदा वैश्वामित्रः ॥ अग्निः ॥

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति ॥ (२; ऋ० १.१.२)

(२) वामदेवो गौतमः ॥ अग्निः ॥

स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः।
स देवाँ एह वक्षति ॥ (७०५; ऋ० ४.८.२)

दो भिन्न ऋषियों के देखे हुए मंत्रों में इस तृतीय चरण की द्विरुक्ति हुई है। जो मंत्र वेद में वारंवार आता है, उस में विशेष महत्त्व का उपदेश होता है, इसलिये उस बात को वारंवार कहकर पाठकों के मन में वह बात स्थिर की जाती है। पुनरुक्त मंत्रों का इस प्रकार महत्त्व है। अब पता लगाना चाहिये कि, कौनसी महत्त्व की बात इस मंत्रभाग में कही है? इसका विचार करने के लिये निम्न लिखित मंत्र देखिये--

(१) **स देवान् विश्वान् बिभर्ति ॥** ऋ० ३-५९-८
(२) **स देवान् सर्वानुरस्युपदद्य सपश्यन् याति भुवनानि विश्वा ॥** (अ० १०-८-१८)

'(१) वह एक देव सब अन्य देवों का धारण, पोषण करता है। (२) वह एक देव सब अन्य देवों को अपनी छाती में धारण करके सब भुवनों को देखता हुआ चलता है।' यह उस एक आत्मा का वर्णन है कि, जिस के आधार से अन्य देवगण रहते हैं। यही सब अन्य देवों का धारण, पोषण करनेवाला और सब से उचित कार्य करानेवाला देव है। इसलिये कहा है--

(१) **यज्ञो बभूव, स आबभूव, स प्रजज्ञे, स उ वावृधे पुनः। स देवानामधिपतिर्बभूव०।** (अ० ७-५-२)
(२) **स योनिमैति, स उ जायते पुनः, स देवानामधिपतिर्बभूव ॥** (अ० १३-२-२५)

'(१) एक यज्ञ था, वह प्रकट हुवा, वह बन गया और पुनः बढने लगा। वह देवों का अधिपति हो गया। (२) वह योनि को प्राप्त हुआ, वह निःसंदेह पुनः पुनः जन्म लेता है, वह देवों का अधिपति हुआ है।'

यज्ञ प्रकट होता है, पुनः पुनः बनता है, बनने के पश्चात् बढता है, यह वर्णन 'जीवनरूप यज्ञ' का है। क्योंकि अगले मंत्रमें ही कहा है कि वह देवों का अधिपति बननेवाला है, वह योनि में प्रविष्ट होकर पुनः पुनः जन्म लेता है।

इस प्रकार वारंवार जन्म लेता हुआ, अनेक वार यज्ञ करने का यत्न करता है। इसके यज्ञ पर राक्षस हमला करते हैं, और बीच में विघ्न करते हैं। इस प्रकार यज्ञों में विघ्न होने पर वह फिर योनि में प्रविष्ट होकर पुनः जन्म लेता है और पुनः यज्ञ करता है। यह उसका प्रयत्न यज्ञ की पूर्णता होने तक चलता है। यह मंत्र पुनर्जन्म का स्वरूप बता रहा है, परन्तु उसका अधिक विचार करने का यह स्थान नहीं है। पुराणों में ऋषियों के यज्ञों का नाश राक्षसों के द्वारा होने की अनेक कथाएं हैं, उनका मूल यहां इन मंत्रों में है। विचारशील पाठकों को पता लग सकता है कि, यह आत्मा का शतसांवत्सरिक जीवन-यज्ञ ही है। जिस समय यज्ञ करने की इच्छा से यह योनिक्षेत्र में उतरता है, उस समय यह देवों को अपने साथ लाता है और इसका आह्वान सुन कर सब ३३ कोटी देव अपने अंशरूप से इस गर्भ में अवतार लेते हैं और उन सब देवों का अधिराजा यह स्वयं हृदयस्थान में रहने लगता है। इसका प्रभाव देखिये—

(१) **स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः॥** (य. ३४-५१)
(२) **स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः॥** (अ. १-३५-२)
(३) **स देवेषु वनते वार्याणि ॥** (ऋ. ५-४-३)
(४) **स देवो देवान्प्रति पप्रथे पृथु ॥** (ऋ.२-२४-११)

'(१) वह देवों में दीर्घ आयु करता है. (२) वह जीवों में दीर्घ आयु करता है, (३) वह देवों में से वरने-योग्य सत्वों को स्वीकार करता है, (४) वही एक देव है, जो अन्य सब देवों के प्रति फैला है।' इस एक आत्म-देव का इतना प्रभाव होने के कारण इसका शब्द सुनते ही इसके साथ सब अन्य देव जाते हैं। अब और देखिये-

(१) **देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति ॥** (ऋ. ९-९५-२)
(२) **देवो देवानां जनिमा विवक्ति ॥** (ऋ. ९-९७-७)
(३) **आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां न मिनामि धाम।**
ते मा भद्राय शवसे ततक्षुरपराजितमस्तृतमषाळ्हम् ॥ (ऋ. १०-४८-११)
(४) **त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा ॥**
तव व्रते कवयो विद्मनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः (५०; ऋ० १।३१।१)

(५) त्वमग्ने प्रथमो अंगिरस्तमः कविर्देवानां
परिभूषसि व्रतम् ॥ (५१; ऋ० १।३१।२)

(६) देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्व-
सूनामसि चारुरध्वरे । शर्मन्त्स्याम तव
सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं
तव ॥ (२६८; ऋ० १।९४।१३)

(७) देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत् ॥
(ऋ० २।१२।१)

(८) देवो देवान् परिभूर्ऋतेन (ऋ० १०।१२।२)

(९) होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो
देवान् यजत्वग्निरर्हन् ॥ (ऋ० २।३।१)

(१०) समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्
यजसि जातवेदः ॥ (ऋ० १०।११०।१)

(११) देवो देवान् स्वेन रसेन पृञ्चन् ॥
(ऋ० ९।९७।१२)

'(१) यह एक देव अन्य देवोंके (नामानि) नामोंको प्रकट करता है, (२) यह एक देव अन्य सब देवोंके जन्म कहता है, (३) वसु, रुद्र और आदित्यादि देवोंके धामका मैं नाश नहीं करता । क्योंकि मैं अपराजित, अजेय और असह्य हूं और वेही कल्याण और बल के लिये मुझे व्यक्त करते हैं, (४) हे अग्ने ! वही पहिला अंगिरा ऋषि है, और तू एक देव अन्य सब देवोंका सच्चा शुभ मित्र है। तेरे नियममें ही ज्ञानसे पुरुषार्थ करनेवाले कवि तेजस्वी होते हैं, (५) हे अग्ने ! तू पहिला अत्यंत अंगरस है, और अन्य देवोंके नियमको सुभूषित करता है, (६) तू सब देवोंका एक देव अद्भुत मित्र है, और यज्ञमें वसुओंकाभी वसु तूही है । हे अग्ने ! तेरे सख्यमें हम (मा रिषाम) नष्ट नहीं होंगे और (शर्मन्) सुख ही प्राप्त करेंगे, (७) तू एक देव अन्य देवोंको कर्मसे भूषित करता है, (८) सत्य नियमसे तू एक देव अन्य देवोंको व्यापता है, (९) होता, (पावकः) पवित्रकर्ता, उत्तम मेधावान् योग्य अग्निदेव देवोंका यजन करे, (१०) हे जातवेद अग्ने ! तू (मनुषः दुरोणे) मनुष्यके घरमें प्रदीप्त होकर देवोंके लिये यज्ञ करता है, (११) एक देव अपने रससे अन्य देवोंको तृप्त करता है ।'

यह एक देवका महत्त्व है । यह एक देव सब अन्य देवोंको अपने यज्ञ में बुलाता है, वे देव उसके यज्ञमें आते हैं, उसके साथ रहते हैं और वह चला गया, तो उसके साथ चले जाते हैं। यह सब वेदका आलंकारिक वर्णन एक ही बातको बता रहा है । वह बात यह है कि, '(१) आत्मा जन्म लेने के समय योनि में प्रवेश करना चाहता है, उस समय वह अन्य देवोंके अर्थात् पृथिवी, आप, तेज, वायु सूर्य, चंद्र, विद्युत, आदि सब देवताओंको अपने साथ बुलाता है, (२) उसका शब्द सुनकर सब ३३ कोटी देव अपने अपने अंशको उसके साथ भेजते हैं, (३) सब देवोंका यह देह बनता है और उसका अधिष्ठाता आत्मदेव होता है और इस प्रकार बनकर वह जन्म लेता है और शतसांवत्सरिक यज्ञ प्रारंभ करता है । ये देव आकर कहां रहते हैं, इसका वर्णन भी देखिये—

[१] सर्वं संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥१२॥
[२] गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥१३॥
[३] रेतः कृत्वा आज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥२९॥
[४] सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य विभेजिरे ॥३१॥
[५] तस्माद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।
सर्वा ह्यस्मिन् देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥३२॥
(अ. ११।८)

[६] अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,
वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्,
आदित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणी प्राविशत्,
चंद्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,
आपो रेतो भूत्वा शिश्नं प्राविशन् ॥ (ऐ. उ. २।४)

'(१) सब मर्त्य शरीरका सिंचन करके देव पुरुषमें घुसे हैं, (२) मर्त्य घर करके देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं, (३) रेत का घी बनाकर देव पुरुष में वसने लगे हैं; (४) सूर्य चक्षु बना है, वायु प्राण हुआ है, (५) इसलिये ज्ञानी इस पुरुषको ब्रह्म मानता है, क्योंकि सब देवताएं इसीके अंदर रहतीं हैं, जैसीं गौवें गोशालामें रहतीं हैं । (६) अग्नि वाचा बनकर मुखमें घुसा है, वायु प्राण बनकर नासिकामें रहने लगा, सूर्य चक्षु बनकर आंखमें वसने लगा, चंद्र मन बनकर हृदयमें रहने लगा, जलदेव वीर्य बनकर शिश्नमें रहा ।' इस प्रकार अन्यान्य देवताएं इस एक देवके साथ आ गईं और यहां इस शरीरमें अपने अपने

स्थानमें रहने लगी । यह सब वेदों और उपनिषदोंका वर्णन देखनेसे पता लग सकता है कि, इस शरीरमें आत्माके साथ देव आकर बसे हैं । इस हेतुसे ही कहा है कि ' **स देवान् एह वक्षति** ' अर्थात् ' **वह सब देवोंको यहां लाता है ।** ' उक्त मंत्रोंके विचारसे पाठकोंको पता लगाही होगा कि कहां और किस प्रकार लाता है, इसलिये इसका अधिक विचार अब करनेकी आवश्यकता नहीं है । परमात्मा संपूर्ण जगत् में व्यापक होकर सूर्यादि सब देवताओंका धारण-पोषण करता है, उसी प्रकार उसका अमृतपुत्र जीवात्मा इस देहमें रहकर सूर्यादि देवतांशोंका धारण-पोषण करता है, यह दोनोंमें समानता होनेके कारण मंत्रोंमें दोनोंका वर्णन एकही रीतिसे होता है, यह बात पाठक पूर्वोक्त मंत्रोंमें स्पष्ट रूपसे देख सकते हैं । अस्तु । इस रीतिसे यह आत्माग्नि अन्य देवोंको यहां- इस देहमें- इस कर्मभूमिमें- लाता है और शतसांवत्सरिक यज्ञ करनेकी तैयारी करता है ।

अध्यात्मदृष्टिसे शरीरमें देखिये कि यह आत्मा, प्राण अथवा जीवनका सत्त्वरस शरीर में प्राणघातक व्याधि-कीटकोंके साथ सदैव युद्ध करता है, युद्धमें उनका पराभव करता है और आरोग्य का रक्षण करता है । व्याधिकीटक आसुरी स्वभावके कारण शरीरकी हिंसा करना चाहते हैं, उस हिंसासे इस शरीरका बचाव करनेके कारण आत्माके इस सत्कर्म को " अ-ध्वर यज्ञ " अर्थात् हिंसारहित यज्ञ कहते हैं । शरीरका सर्वतोपरि संरक्षण करनेका कार्य पूर्णतया यही जीवनका केंद्र कर रहा है, इसलिये मंत्रमें कहा है कि (विश्वतः परि-भूः) सब प्रकारसे सबका नियामक और शासक यही है । सब जानते ही हैं कि, आत्माकी श्रेष्ठता है और अन्य इंद्रिय--शक्तियोंकी गौणता है, क्यों-कि आत्माकी जीवनरूप प्राणशक्ति ही अन्य इंद्रियों, अंगों और अवयवोंमें पहुंच कर कार्य करती है । यही भाव (स, इत् देवेषु गच्छति) "वह यज्ञ देवोंमें पहुंचता है" इस वाक्यसे व्यक्त किया है । आत्माग्नि यज्ञ करता है, उसका मुख्य प्रबंधकर्ता स्वयं आत्माही है और वह यज्ञ (देवों द्वारा) इंद्रियोंद्वारा होता है, इंद्रियोंमें उसका प्रभाव पहुंचता है । यह सब हरएक के अनुभव में है ।

आधिभौतिक दृष्टिसे संघ में, समाज में अथवा राष्ट्रमें भी यही भाव दिखाई देता है। तीनों स्थानोंमें इस बातकी सार्वत्रिकता देखनेयोग्य है । **(१) अपना संरक्षण, (२) शत्रुशक्तिका पराभव, आत्मशक्तिका विजय, (३) अपनी उन्नति और स्वकीय शक्तिका विकास, (४) सहाय्यकर्ताओंका संघीकरण और उनका पोषण,** यही मुख्य बातें हैं, जो इस यज्ञसे ध्वनित होती हैं । जिस व्यक्तिमें और जिस राष्ट्रमें ये होती रहेंगी, उसका संरक्षण होगा और जहां न होगीं वहां नाश होगा । इसलिये सबको उचित है कि, इस प्रकार अपनी उन्नतिके लिए हरएक प्रयत्न करे । अब द्विरुक्तिका विचार करना है—

[१] मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । अग्निः ।
विश्वतः परिभूरसि ॥ (४; ऋ० १।१।४)

[२] कुत्सः आंगिरसः । अग्निः शुचिः ।
त्वं हि विश्वतो मुखो ' **विश्वतः परिभूरसि** ॥ '
अप नः शोशुचदघम् ॥ (१८९२; ऋ०१।९७।६)

दो विभिन्न ऋषियोंके मंत्रोंमें ' **विश्वतः परिभूः असि** ' (सब प्रकारसे सर्वोपरि है) यह वाक्य द्विरुक्त हुआ है । अग्निका सर्वतोपरि शासक होना इस द्विरुक्तिसे व्यक्त होता है । सबका नियामक आत्मा होनेसे यहां विशेषतया आत्माग्नि ही वक्तव्य है, इसकी सिद्धता पहिले हो चुकी है । आत्माका वर्णन भी इन्ही शब्दोंसे ईशोपनिषद् में हुआ है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धं। कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥
(वाय० ४०।८; ईश. ८)

' वह आत्मा (पर्यगात्) व्यापक है और (शुक्रं) वीर्यरूप, देहरहित, व्रणहीन, स्नायुहीन, शुद्ध, निष्पाप, कवि, बुद्धिमान्, (परिभूः) सबका नियंता, तथा (स्वयंभूः) स्वयंसिद्ध है । वह शाश्वत कालसे यथायोग्य रीतिसे सब अर्थों को करता आया है । ' वही आत्माग्निका यज्ञ जो शाश्वत कालसे चल रहा है, वही ऋग्वेदके प्रथम सूक्तमें वर्णन किया है । ' परिभू, कवि, ' आदि शब्द इस सूक्तमें आ गये हैं; अग्निका नाम ' **पावकः, शुचिः** ' प्रसिद्ध है, इस नाममें ' शुद्ध ' शब्दका भाव आ गया है । वह स्वयं ' अ-पाप-विद्ध ' अर्थात् निष्पाप है, इतनाही नहीं, परंतु

वह (**नः अघं अप शोशुचत्** । (ऋ. १।९७।६) वह हमारे पापको दूर करके हमको भी पवित्र करता है, अर्थात् वह स्वयं शुद्ध है और दूसरोंको भी पवित्र करता है । वह एकदेशी नहीं है, परंतु वह (पर्यगात्) सर्वत्र है, यही भाव (त्वं हि विश्वतो मुखः) ' तू सर्वत्र मुखवाला है ' इस कथनमें व्यक्त हुआ है । एक देवता का वर्णन वेदमें निम्न प्रकार आया है—

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो
विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैः
द्यावाभूमी जनजन् देव एकः ॥ (ऋ. १०।८१।३)

' जिस एक देवके (विश्वतः चक्षुः) सर्वत्र आंख, (विश्वतः मुखः) सर्वत्र मुख, सर्वत्र बाहु और सर्वत्र पांव हैं, जो बाहुओंसे और पंखोंसे सबका धारण और नियमन करता है, वही द्युलोक और पृथिवीको उत्पन्न करता है । ' इस मंत्रका ' **विश्वतो मुखः** ' शब्द इस आत्माग्निके वर्णनमें इस मंत्रमें है । आत्माकी सर्वव्यापकता इस मंत्रसे बताई है । अग्नि भी सब जगत्के सब पदार्थोंमें विद्यमान है, देखिये—

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ॥ (कठ. उ. ५।९)

' जिस प्रकार एकही अग्नि सब भुवनमें प्रविष्ट हो कर प्रत्येक रूपमें प्रतिरूप हुआ है, वैसाही एक सब भूतोंका अंतरात्मा प्रत्येक रूपमें प्रतिरूप हुआ है और बाहिर भी है । ' यहां प्रसंगतः अग्निके विषयका उपनिषदोंका मंतव्य देखनेयोग्य है—

(१) **एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यदग्निर्ज्वलति ।** (कौ.उ.१२)
(२) **यः पुरुषः सोऽग्निर्वैश्वानरः ।** (मैत्री. उ.२।६)
(३) **प्राणोऽग्निः परमात्मा ।** (मैत्री.६।९;प्राणाग्नि.२)
(४) **प्राणोऽग्निरुदयते ।** (मुंड. २।१।७; प्रश्न. १।७)
(५) **अग्निर्ह वै प्राणः ।** (जाबा. ४)
(६) **अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।**
मंत्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥
(भ. गी. ९।१६)

' (१) यह ब्रह्मही प्रकाशता है जो अग्नि जलता है, (२) जो पुरुष है वही वैश्वानर अग्नि है, (३) प्राण अग्नि परमात्मा है, (४) यह प्राण अग्निही उदय पाता है, (५) प्राण ही निःसंदेह अग्नि है, (६) (अहं) मैं आत्माही क्रतु, यज्ञ, स्वधा, औषध, मंत्र, आज्य, अग्नि और हवन हूं । ' इन उपनिषदोंके कथनेके साथ निम्न उपनिषद्वाक्य देखिये—

(१) पुरुषो वाव गौतमाग्निः; तस्य वागेव समित्, प्राणो धूमो, जिह्वा अर्चिः, चक्षुरंगाराः, श्रोत्रं विस्फुलिंगाः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति, तस्या आहुते रेतः संभवति ॥ २ ॥ ७॥

(२) योषा वाव गौतमाग्निः, तस्या उपस्थ एव समित्, यदुपमंत्रयते स धूमो, योनिरर्चिः, यदन्तः करोति ते अंगाराः, अभिनंदा विस्फुलिंगाः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुह्वति तस्या आहुते-र्गर्भः संभवति ॥ २ ॥ ८ ॥ (छां. उ. ५।३)

यही कथन थोडेसे भिन्नत्वके साथ बृहदारण्यकमें आया है, वह भी यहां देखिये—

अंशावतार

पुरुषो वाऽग्निर्गौतम, व्यात्तमेव समित्, प्राणा धूमो, वागर्चिः, चक्षुरंगाराः, श्रोत्रं विस्फुलिंगाः, तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति, तस्या आहुत्यै रेतः संभवति ॥ १२ ॥

(२) योषा वा अग्निर्गौतम, तस्या उपस्थ एव समित्, लोमानि धूमो, योनिरर्चिः, यदन्तः करोति ते अंगाराः, अभिनंदा विस्फुलिंगाः, तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुह्वति, तस्या आहुत्यै पुरुषः संभवति, स जीवति यावज्जीवति ॥ १३ ॥

(बृ. आ. ६।२)

' (१) पुरुष अग्नि है, इसमें अन्नका हवन होता है, इस हवन से रेतकी उत्पत्ति होती है; (२) स्त्री अग्नि है, इसमें रेतका हवन होता है, इस हवनसे बालक उत्पन्न होता है । ' इस वर्णनसे पता लग सकता है कि किस अपूर्व अलंकार से अग्निकी विभूति स्थानस्थानमें देखनी होती है और वहां का भाव समझना होता है । स्त्रीरूप अग्निमें जिस समय आत्मा आता है, उस समय वह त्रैलोक्यके संपूर्ण

देवोंको अपने साथ बुलाता है और उनके साथ ' **अंशावतार** ' लेता है। यही बालक है। बालक का जन्म होते ही उसके शरीरमें यह शतसांवत्सरिक क्रतु करने लगता है, जो भोग इसको दिये जाते हैं, वे उस उस देवता तक पहुंचाता है। रूपके भोग आंखमें रहनेवाले सूर्यके अंशको देता है, सुगंधके भोग नासिकानिवासी अश्विनी देवोंको देता है, रुचिके भोग जिह्वानिवासी जलदेव वरुणको देता है, स्पर्शके भोग वायुको पहुंचाता है, इसी प्रकार अन्यान्य भोग अन्यान्य देवताओंके अंशोंके द्वारा उस उस देवतातक पहुंचाता है। यही इस आत्माग्निका दूत्य है। अग्नि दूत होनेका वर्णन आगे अनेक **सूक्तोंमें** आनेवाला है, इसलिये पाठक इस विषयको ठीक प्रकार समझनेका यत्न करें। यदि यह बात ठीक रीतिसे ध्यानमें आ गई, तो आत्माग्नि यज्ञ (देवेषु गच्छति) देवोंतक कैसा पहुंचाता है, इसका ठीक विज्ञान हो सकता है। अपने शरीरमें ही यह यज्ञ पाठक देख सकते हैं। वेदको अभीष्ट है कि पाठक इस यज्ञको अपने अंदर अनुभव करें। यही आत्माग्नि सब देवोंका केंद्र है, देखिये—

(१) **अग्ने नेमिरराँ इव देवांस्त्वं परिभूरसि॥**

(८५१; ऋ. ५।१३।६)

(२) **स होता विश्वं परि भूत्वध्वरं॥**(३८०; ऋ. २।२।५)

' (१) हे अग्ने! जैसे चक्रकी नाभिमें आरे होते हैं, वैसे देव तेरे में हैं, और देवोंका तू नियामक है। (२) वही अग्नि हवनकर्ता है और सब (अ-ध्वरं) यज्ञका प्रबंधकर्ता है। ' इन मंत्रोंसे अग्नि शब्द आत्माग्निका ही मुख्यतया वाचक है, यह बात ध्यानमें ठीक प्रकार आ सकती है। पूर्वोक्त भगवद्गीताके श्लोकमें ' मैं (आत्माग्नि) यज्ञ हूं, **और मैं ही अग्नि, घी, मंत्र, तथा हवन भी मैं ही** हूं ' (गी. ९।१६) यह बात ध्यानमें धर कर इस सूक्तका कथन देखिये— ' **अग्नि यज्ञका देव, पुरोहित, होता और ऋत्विज् आदि है।** ' दोनोंका एकही तात्पर्य है। दोनोंको आत्माकाही वर्णन भिन्न रीतिसे करना है। यह आत्माग्नि यहां इस देहमें सब देवोंको लाता है और सौ वर्ष तक यज्ञ करनेका यत्न करता है। यह आत्माग्नि जो यह यज्ञ करता है, यह यज्ञ निःसंदेह देवोंतक पहुंचता है। पूर्वोक्त स्पष्टीकरणसे यह कथन अब पाठकोंको प्रत्यक्ष हुआही होगा।

यहां आत्माग्नि मुख्य केंद्र है और अन्य देव उसके साथी हैं। ये साथी उसको यथाशक्ति सहाय्यता करते हैं। यद्यपि आत्माकी शक्तिके बिना आंख, नाक, कुछ भी कार्य नहीं कर सकते, तथापि आंखके विना देखना तथा अन्य इंद्रियोंके विना अन्य अनुभव लेना आत्माके लिये अशक्य है। इसलिये (१) आत्मा सम्राट् है और ये अन्य देव उसके मांडलिक राजे हैं। ये मांडलिक राजे अपने देशके उत्पन्नका करभार सम्राट्को देते हैं, और सम्राट्ही उनको यथायोग्य प्रसाद देता है। अथवा (२) अन्य देव इसके सेवक हैं, अपना कार्य करनेद्वारा उसकी सेवा करते हैं और वह भी उन को यथायोग्य वेतन देता है। अथवा (३) ये देव उसके मित्र हैं, वे इसकी सहाय्यता करते हैं और वह भी अपना धन उनको बांटता है। किंवा (४) वह यज्ञ करनेवाला है और ये ऋत्विज् हैं, ये उसका यज्ञ यथायोग्य रीतिसे करते हैं और वह भी इसको योग्य दक्षिणा देता है। कोई अलंकार लीजिये, ये तथा बहुतसे अन्य अलंकार वेदमें स्थान स्थानमें आ गये हैं। सब अलंकारोंका तात्पर्य एकसा ही है। (**स इत् देवेषु गच्छति**) वह यज्ञ देवोंमें पहुंचता है, इसका तात्पर्य उक्त प्रकार है। यदि किसीने किसीसे सेवा ली, तो उसको उचित है कि, वह सहाय्यकर्ताका ऋण प्रत्युपकार द्वारा वापस करे, यह बोध यहां मिलता है।

' **स देवानेह वक्षति।** ' इस प्रथम मंत्रके कथनसे पता लगा है, कि ' आत्माग्नि देवोंको यहां लाता है। ' इसका शब्द सुनकर सब देव अंशरूपसे आते हैं, अथवा अपने अपने सूक्ष्म अंशोंको भेजते हैं। सब देव आनेके पश्चात् इसका यज्ञ शुरू होता है और यज्ञमें यह आत्माग्नि '(**स इत् देवेषु गच्छति**)'सब देवोंको यथायोग्य यज्ञभाग देता है। परस्पर सहायता करनेका यह बोध हरएक मनुष्यको देखना चाहिये और इस प्रकार परस्पर सहायता करके संघशक्तिद्वारा अपनी उन्नति करनी चाहिये। यहां यह विशेष रूपसे कहनेकी आवश्यकता नहीं कि, यह शरीर देवोंके ' **संघका ही कार्य** ' है। इस प्रकार जो अभेद्य संघ बनायेंगे, वे भी विलक्षण शक्तिसे युक्त होकर उन्नत हो जायंगे।

यह आत्मा (होता) हवनकर्ता है। यह अपने श्रोत्रादि सब इंद्रियोंको ' **संयमाग्नि** ' में हवन करता है

और संयमी बनकर अभ्युदयको प्राप्त करता है। शब्दादि सब विषयोंको यही ' इंद्रियाग्नि ' में हवन करता है और उपभोग लेकर सुखी होता है। तथा सब इंद्रियकर्मोंको और प्राणकर्मों को ' योगाग्नि ' में हवन करके योगी बनता है और स्वाधीनता प्राप्त करता है। हवन किसी प्रकारका हो, यही हवनकर्ता है, इसमें कोई संदेह ही नहीं है।

साधारण सुबोध भाषामें बोलना हो, तो इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह आत्मा इंद्रियोंको विषयभोग देता है, यही उसका इंद्रियाग्निमें हवन है और इसीलिये इसको ' होता ' कहते हैं। हवन किये पदार्थ वह देवों तक पहुंचाता है, इसका यही तात्पर्य है। ' देव '-शब्दका अध्यात्मदृष्टिसे अर्थ 'इंद्रिय' ही है। जो आत्माका इंद्रियों से संबंध है, वही ब्रह्माग्निका अन्य देवोंसे है। ब्रह्माग्नि, आत्माग्नि और अग्नि सांकेतिक दृष्टिसे एकही पदार्थ हैं।

(कवि-क्रतुः) ज्ञानी और पुरुषार्थी ' अग्नि ' अर्थात् आत्माग्नि है। आत्माका चित् स्वरूप सुप्रसिद्ध है तथा चेतन आत्मा सबका प्रेरक होनेसे सब पुरुषार्थोंका प्रवर्तक निःसंदेह है। ' कवि ' शब्दका अर्थ ज्ञानी, बुद्धिमान् और शब्दप्रेरक है। इसलिये कहा है कि—

अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ॥
(१६५३; ऋ० १०।९१।३)

अग्ने कविर्वेधा असि ॥ (१३९; १ ऋ० ८।६०।३)

' हे अग्ने! तू कवि है और अपने काव्यसे (विश्व-वित्) सर्व-ज्ञ है। हे अग्ने! तू कवि और (वेधाः) ज्ञानी है। '

यह अग्निका वर्णन उसके 'आत्माग्नि' होनेकी सिद्धता कर रहा है। क्योंकि (विश्व-वित्) सर्वज्ञत्व एक आत्मा में ही संभवनीय है। कवि काव्य करता है और सर्वज्ञ कविका काव्य भी सर्वज्ञानसे परिपूर्ण होना संभवनीय है। इसीलिये परमात्माका 'शब्द' प्रमाण माना जाता है। आत्माभी शब्दका प्रेरक ही है—

आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान् मनो युंक्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहंति स प्रेरयति मारुतम् ॥६॥
मारुतस्तूरसि चरन् मंद्रं जनयति स्वरम् ॥७॥
सोदीर्णो मूर्ध्न्यभिहतो वक्त्रमापद्य मारुतः।
वर्णान् जनयते तेषां विभागः पंचधा स्मृतः ॥९॥
(पाणिनीय शिक्षा)

' आत्मा बुद्धिके साथ मिलकर अर्थकी प्रेरणा मनमें करता है। मन शरीरकी उष्णता पर आघात करके वायुको प्रेरित करता है। वह वायु छातिसे ऊपर चलने लगता है, उस समय सूक्ष्म स्वर उत्पन्न करता है। यही स्वर मुखमें विविध स्थानोंमें आकर विविध वर्णोंमें परिणत होता है। '

इस प्रकार आत्मा शब्द का प्रेरक है, इसलिये ' कवि ' है। आत्माग्नि का कवि होना इस प्रकार शास्त्रसिद्ध है। उपनिषदोंमें भी कहा है—

[१] केनेषितां वाचमिमां वदन्ति ?
[२] वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः ॥
[३] यद्वाचाऽनभ्युदितं येन वागभ्युद्यते ॥
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि० ॥ (केन उ० १।१-४)

' (१) किससे प्रेरित हुई वाणी बोलते हैं? (२) (वह प्रेरक) वाणीकी वाणी और प्राण का प्राण है। (३) जो वाणीसे प्रकाशित नहीं होता, परन्तु जिससे वाणी प्रेरित होती है, वह ब्रह्म है, ऐसा तू जान। ' इससे स्पष्ट है कि आत्माग्नि ही वाणीका प्रेरक है। इसीलिये इसको कवि कहते हैं। इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

[१] युवा कविरध्वरस्य प्रणेता ॥
(६२७; ऋ० ३।२३।१)

[२] अहं कविरुशना पश्यता मा ॥
(ऋ० ४।२६।१)

[३] युवा कविः पुरुनिःष्ठ ऋतावा धर्ता कृष्टीनामुत मध्य इद्धः ॥ (७६०; ऋ० ५।१।६)

[४] अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो निधायि ॥ (११३७; ऋ० ७।४।४)

[५] अमूरः कविरदितिर्विवस्वान् त्सु सं सन्मित्रो अतिथिः शिवो नः ॥ (११५७; ऋ० ७।९।३)

[६] सत्यो यज्वा कवितमः स वेधाः ॥
(५८१; ऋ० ३।१४।१)

[७] होता मंद्रः कवितमः पावकः ॥
(११५५; ऋ० ७।९।१)

'(१) यह जवान कवि यज्ञका चालक है, (२) मैं ही इच्छा करनेवाला कवि हूं, मुझे देखिये, (३) जवान कवि (पुरु+निः-ष्ठः) सब पदार्थोंमें स्थित, सत्यवान्, (कृष्टीनां धर्ता) प्रजाओं का धारण करनेवाला और मध्यमें प्रदीप्त है, (४) यह (अ-कविषु कविः) शब्द न करनेवालोंमें

शब्दकर्ता है, (प्र-चेता) चेतन और यही मर्त्योंमें अमृत है, (५) यह (अ-मूरः) मूढ नहीं है, कवि, (अ-दितिः) अमर्याद, (विवस्वान्) सबका निवासक, उत्तम मित्र, (अ-तिथिः) जिसकी आनेकी तिथि निश्चित नहीं होती, ऐसा और (शिवः) कल्याणकारी है, (६) सत्य, याजक श्रेष्ठ कवि और (वेधाः) ज्ञानी है, (७) यह हवनकर्ता, हर्षकारक, श्रेष्ठ कवि और (पावकः) पवित्रकर्ता अग्नि है।'

इन मन्त्रोंमें 'कवि' शब्द है और उसका शब्दकी उत्पत्तिके साथ ही संबंध है। (अहं कविः) 'मैं कवि हूं' ऐसा अध्यात्म वचन है। इसका स्पष्ट भाव है कि, मैं इंद्र कवि हूं, जिसका दूसरा नाम अग्नि भी है। क्योंकि एकही सद्वस्तुको अग्नि, इंद्र, आदि अनेक नाम ज्ञानी देते हैं। यह कवि अग्नि (युवा) जवान है। जो अज और अनंत होता है, उसको ही 'युवा' कहते हैं। आत्माही अजन्मा और अविनाशी है, इसलिये युवा भी है। यह 'पुरु+निष्ठ' सबमें व्याप्त है। (कृष्टीनां धर्ता) प्रजाओंका धारणपोषण-कर्ता यही है। (अ-कविषु कविः) शब्द न करनेवालोंमें यह शब्द उत्पन्न करनेवाला है, जडोंमें यह वक्ता है, शरीरके मूक जड अवयवोंमें यही एक शब्द बोलनेवाला है और यही (मर्त्येषु अमृतः) मरनेवालोंमें अमर है। सब शरीर मरता है और उसमें यही एक आत्मा अमर है। यह ऐसा है कि (अ-तिथिः) जिसकी तिथि निश्चित नहीं है, जिसके आनेकी और जानेकी तिथि निश्चित नहीं है, जन्म और मरणकी तिथि इस आत्माकीहि निश्चित नहीं है। इस प्रकारका यह अग्नि निःसंदेह 'आत्माग्नि' ही है। उक्त शब्द यदि किसीका सत्य वर्णन कर रहे हैं, तो वह निःसंदेह आत्माग्नि ही है, क्योंकि उक्त शब्दोंकी सार्थकता आत्माग्नि-मेंही होती है। अस्तु। इस प्रकार यह आत्माग्नि कवि है।

यह 'क्रतु' अर्थात् 'यज्ञ' भी है। क्योंकि 'पुरुषार्थ' ही इसका स्वरूप है। सतत पुरुषार्थ इसका निज धर्म है। 'पुरुषो वाव यज्ञः' (छां० उ० ३।१६) पुरुष अर्थात् आत्मा यज्ञस्वरूपही है। इसलिये उसको 'क्रतु' तथा 'शत-क्रतु' कहते हैं। 'क्रतु' शब्दका दूसरा अर्थ 'प्रज्ञा' है। ज्ञानरूप चित्स्वरूप, होने से इसके भावमें यह अर्थ भी योग्य हो सकता है।

'कवि-क्रतु' का दूसरा अर्थ 'क्रांत-प्रज्ञ' अर्थात् 'विशेष ज्ञानी' है। यह अर्थ भी पूर्व अर्थोंके साथ सुसंगतहि है।

'सत्यः' यह इस मंत्रका शब्द विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसका भाव 'तीनों कालोंमें विद्यमान' ऐसा होता है। यह आग भूतकालमें नहीं होती, बीचमें जलती है और फिर बुझ जाती है, तीनों कालोंमें एक रूपमें नहीं रहती, परन्तु यह आत्मा तीनों कालोंमें समरस रहता है। यद्यपि गुप्त, व्यापक अग्नि सर्वदा विद्यमान होता है, तथापि इस अग्निका अग्निपन भी उस आत्मापर तो अवलंबित है, क्योंकि इस अग्निका अग्निही यह 'आत्माग्नि' है। 'सत, सत्य' ये शब्द एक सत्यस्वरूप आत्माकेही मुख्यतया वाचक हैं।

"चित्र+श्रवः+तमः" विलक्षण यशसे युक्त। यह शब्द मुख्य वृत्तिसे आत्माग्निकाही वर्णन कर रहा है। देखिये इसका वर्णन—

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः। आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्॥ (भ०गी० २।२९)

'कोई तो आश्चर्य समझकर इसकी ओर देखते हैं, कोई आश्चर्य सरीखा इसका वर्णन करता है, कोई आश्चर्यसे सुनता है, परंतु सुन कर भी कोई इसे जानता नहीं है।"

इस प्रकार आत्माग्निके अपूर्व यशका गुणगान सब शास्त्र कर रहे हैं। इस प्रकारकी यह अद्भुत वस्तु है। अस्तु। इतना विवेचन चतुर्थ मंत्रके प्रथम दो पादोंका हुआ और इससे निश्चय हुआ है कि, यह मुख्यतया आत्माग्निका ही वर्णन है और गौण वृत्तिसे अन्य पदार्थोंका वर्णन है।

आधिभौतिक दृष्टिसे समाज और राष्ट्रमें मनुष्य कोभी इसी प्रकार बर्ताव करना चाहिये। सुज्ञ मनुष्य (अग्निः) अग्निके समान तेजस्वी, (होता) दाता, यज्ञ करनेवाला, (सत्यः) सच्चा, सत्याग्रही, सत्यनिष्ठ, (चित्र-श्रवः-तमः) विलक्षण यशस्वी बने और अनुकरणीय बनकर सबका चालक बने। इस रीतिसे येही शब्द मनुष्यके सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्योंके बोधक हैं। इस प्रकार दो पादोंका स्पष्टीकरण करनेके पश्चात् अब विशेष महत्त्वका तृतीय पाद देखना है—

देवो देवेभिरागमत् ॥ (ऋ० १।१।५)

'यह एक देव अन्य सब देवोंके साथ आ जावे।' इस विषयमें जो वक्तव्य है, वह स इद्देवेषु गच्छति।'' (ऋ०१।१।४) तथा ''स देवान् एह वक्षति।'' (ऋ०१।१।२) इनकी व्याख्या करते हुए कहा ही है।

[१] स देवान् इह आवक्षति = वह देवोंको यहां लाता है।
[२] स देवेषु इत् गच्छति = वह देवोंमें पहुंचता है।
[३] देवो देवेभिः आगमत् = देव देवोंके साथ आ जाय।

इन तीनों कथनोंमें एकही विशेष भाव है। एक आत्मा का अन्य देवोंके साथ जो संबंध है, वही यहां बताया है। इसका स्वरूप ठीक ठीक ध्यानमें आनेके लिये निम्न मंत्रोंका विचार करना आवश्यक है—

[१] अग्निर्देवेभिरागमत् ॥ (५।१२; ऋ० ३।१०।४)
[२] विश्वेभिः देवेभिर्याहि यक्षि च ॥ (ऋ० १।१४।१)
[३] देवेभिरग्न आगहि ॥ (ऋ० १।१४।२)
[४] क्षयं बृहन्त परिभूषति द्युभिर्देवेभिरग्निः॥ (ऋ० ३।३।२)
[५] अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च जंतुभिस्तन्वानो यज्ञं पुरुपेशसं धिया ॥ (ऋ० ३।३।६)
[६] गमद्देवेभिरा स नो यजिष्ठः॥ (ऋ० ३।१३।१)
[७] देवेभिर्देव सुरुचा रुचानः॥ (ऋ० ३।१५।६)
[८] अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः॥ (ऋ० ३।२४।४)
[९] अग्ने विश्वेभिरागहि देवेभिर्हव्यदातये ॥
[१०] देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ॥ (ऋ० ६।११।६)
[११] त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने ॥ (ऋ० ६।१६।१)
[१२] आ नो देवेभिरुप देवहूतिमग्ने याहि ॥ (ऋ० ७।१४।३)
[१३] यो भानुभिर्विभावा विभात्यग्निर्देवेभिर्ऋतावाजस्रः। (ऋ० १०।६।२)

'(१) देवोंके साथ अग्नि आया है, (२) सब देवोंके साथ आओ और यजन करो, (३) हे अग्ने! तू देवोंके साथ आ, (४) अग्नि सब तेजस्वी देवोंके साथ बडे (क्षयं) निवासस्थानको भूषित करता है, (५) देवोंके साथ और मनुष्यके संतानोंके साथ बुद्धिसे विविध रूपवाला यज्ञ अग्नि फैलाता है, (६) पूज्य अग्नि देवोंके साथ हमारे पास आता है, (७) हे देव! अनेक देवोंके साथ तू तेजसे तेजस्वी है, (८) हे अग्ने! सब अग्निरूप देवोंके साथ वाणीको बढाओ, (९) हे अग्ने! सब देवोंके साथ अन्नदानके लिये आओ, (१०) हे अग्ने! तू सब अग्निरूप देवोंसे प्रदीप्त होता है, (११) हे अग्ने तू मानवी जनोंमें सब यज्ञोंका हितकारक और सब देवोंके साथ हवन करनेवाला है, (१२) हे अग्ने! सब देवोंके साथ हमारे यज्ञमें आओ, (१३) जो तेजस्वी अग्नि तेजस्वियोंके साथ चमकता है।'

इत्यादि मंत्रोंमें भी अनेक देवोंके साथ अग्निका रहना वर्णन किया है। ''अनेक अग्नियोंके साथ अग्नि (अग्निभिः अग्निः) आता है।'' यह इन मंत्रोंका वर्णन स्पष्टतासे सिद्ध कर रहा है कि, यहां अग्नि शब्द विशेष अर्थसे प्रयुक्त हुआ है, और केवल आगका ही वाचक नहीं है। इसी प्रकार देवतावाचक अन्य शब्दोंका भी उपयोग किया है। देखिये—

देवता इंद्र—

(१) स वह्निभिर्ऋक्वभिर्गोषु शश्वन् मितज्ञुभिः पुरुकृत्वा जिगाय। पुरः पुरोहा सखिभिः सखीयान् दृळ्हा रुरोज कविभिः कविः सन् ॥ (ऋ० ६।३२।३)
(२) इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिः देवेभिः। तिरस्तवान विश्वते ॥ (ऋ० ३।४०।३)
(३) प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो अप्रतीतः॥ (ऋ० ३।४६।३)

देवता अश्विनौ—

(१) आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ॥ (ऋ० १।३४।११)
(२) आ नो देवेभिरुप यातमर्वाक् सजोषसा नासत्या रथेन ॥ (ऋ० ७।७२।२)
(३) आ...गतं ॥ देवा देवेभिरद्य सचनस्तमा ॥ (ऋ० ८।२६।८)

इंद्र देवता के मंत्र (१) (पुरु-कृत्वा) विविध कर्म करनेवाला वह इंद्र (शश्वत्) सर्वदा (मित-ज्ञुभिः वह्निभिः ऋक्‌भिः) घुटनोंके बल बैठनेवाले अग्निके समान तेजस्वी उपासकोंके साथ (गोपु) गौवों, इंद्रियों और भूमि आदिकोंके संबंधमें (जिगाय) विजय प्राप्त करता है । (पुरो-हा) शत्रुके नगरोंका नाश करनेवाला (सखिभिः कविभिः) मित्ररूप कवियोंके साथ (सखीयन् कविः) मित्रता करनेवाला कवि (दृढा पुरः) बलयुक्त नगरोंका (रुरोज) भेदन करता है ॥ (२) हे (विश्‌+पते इंद्र) प्रजापालक प्रभो! (नः पिता+वानं यज्ञं) हमारे उत्तम उपकारी यज्ञको (विश्वेभिः देवेभिः) सब देवोंके साथ (प्र तिरः) पूर्ण करो ॥ (३) यह इंद्र (रोचमानः) तेजस्वी होता हुआ (मात्राभिः) सब प्रमाणोंसे (प्र रिरिचे) विशेष तेजस्वी हुआ है और (देवेभिः) देवोंके साथ (विश्वतः) सब प्रकारसे (अ-प्रतीतः) पीछे हटनेवाला नहीं है ।

अश्विनी देवताके मंत्र = (१) (त्रिभिः एकादशैः देवेभिः) तीन गुणा ग्यारह देवोंके साथ, हे अश्विदेवो! यहां मधुपान के लिये आइये । (२) हे (नासत्या) अश्विदेवो! देवोंके साथ रथमें बैठकर वेगसे हमारे पास आइये । (३) हे (सचनस्तमौ देवौ) पूज्य देवो! अन्य देवोंके साथ यहां आइये ।

अग्नि, इंद्र और अश्विनी देवताओंके मंत्र ऊपर दिये हैं। उनको देखनेसे पता लग सकता है कि, वाक्य कैसे समान भावके ही हैं। देखिये—

अग्निदेवता—

देवो देवेभिः आगमत् ॥ (ऋ. १।१।५)
अग्निः देवेभिः आगमत् ॥ (ऋ. ३।१०।४)
अग्ने, अग्निभिः देवेभिः महय ॥ (ऋ. ३।२४।४)
भानुभिः देवेभिः अग्निः विभाति ॥
(ऋ. १०।६।२)

इंद्र देवता—

वह्निभिः सः गोपु जिगाय ॥ (ऋ. ६।३२।३)
पुरोहा सखिभिः सखीयान् रुरोज ॥
(ऋ.६।३२।३)
कविभिः कविः पुरः रुरोज ॥ (ऋ. ६।३२।३)

अश्विनी देवता—

त्रिभिरेकादशैः देवैः आयातं ॥ (ऋ. १।३४।११)
नासत्यौ देवेभिः आयातं ॥ (ऋ. ७।७२।२)

देखिये ,भिन्न शब्दोंसे किस प्रकार एकही भाव व्यक्त किया गया है । ' इंद्र ' शब्द ' आत्मा ' अर्थ में सुप्रसिद्ध है, क्यों कि ' इंद्रिय ' शब्द इंद्रशक्तिका वाचक आजकलकी भाषामें भी अवयवोंके अर्थमें प्रयुक्त है, अर्थात् ' अनेक देवोंके साथ देवोंका राजा इंद्र शत्रुके किले तोडता है ' इस वर्णनमें ' आत्मा इंद्रियशक्तियोंके साथ विरोधकोंका नाश करता है ' यही भाव है । तात्पर्य, इंद्रवर्णनसे आत्मवर्णन होनेमें कोई शंका नहीं हो सकती । अश्विनीदेवोंके विषयमें किसीको शंका होना स्वाभाविक है। परंतु **' नास+त्य '** शब्द **' नासिका में रहनेवाला '** प्राण इस अर्थमें प्रयुक्त होता है । **' नास+त्य '** यह विशेषण अश्विनी देवोंका है, इससे इनका स्थान नासिका है । इसलिये प्राणापान, श्वास-उच्छ्वास आदिकोंका वाचक यह शब्द है, इसमें शंका नहीं । यह प्राण अन्य देवोंके साथ शरीरमें आता है और यहां यज्ञ करता है, यह वर्णन पूर्वोक्त अग्निके वर्णन के साथ मिलानेसे पता लग सकता है कि, दोनों वर्णनोंसे एक ही यज्ञका भाव बताया गया है । **(देवो देवेभिः आगमत्)** ' एक देव अनेक देवोंके साथ यहां आता है, यहां यज्ञ करता है। देवोंसे यज्ञ कराता है, देवोंको हविर्भाग देता है, यज्ञसमाप्तिके पश्चात् देवोंके साथ चला जाता है । ' यह सब वर्णन यहांही इस शरीरमें देखनेका है । आत्मा इंद्रियशक्तियोंके साथ यहां आता है, इंद्रियोंसे कार्य कराता है, खाये हुए अन्नसे अंशरूप भोग प्रत्येक इंद्रियतक पहुंचाता है, इस अंशभोगसे इंद्रियस्थानीय देवतागण संतुष्ट होता है और वह इस आत्माको भी सुखी करता है । यह भाव निम्न गीतावचनमें देखिये—

देवान् भावयताऽनेन ते देवा भावयंतु वः ।
परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥
(भ. गी. ३।११)

' तुम इस यज्ञसे देवताओंको संतुष्ट करते रहो और वे देवता तुम्हें संतुष्ट करते रहें । इस प्रकार परस्पर एक दूसरे को संतुष्ट करते हुए दोनों परम श्रेय अर्थात् कल्याण प्राप्त कर लो । '

आत्मा और अन्य ३३ देव इतनेही पदार्थ इस जगत् में हैं। आत्मा स्वयंप्रकाशी सम्राट् है और ३३ देव आत्माके तेजसे प्रकाशित होनेवाले और आत्माके आदेशानुसार अपना नियत कार्य करनेवाले हैं। जहां आत्मा जाता है, वहां ये जाते हैं, जिस प्रकार सम्राट् के साथ ओहदेदारोंको जाना पडता है। अकेला आत्मा कुछ कर नहीं सकता और न सब देव आत्मशक्तिके विना कुछ कर सकते हैं। इस प्रकार अन्योन्य सहाय्यताकी आवश्यकता है। अन्योन्य संगतिका ही नाम यज्ञ है। परस्पर सहकारितासे बडे बडे कार्य हो सकते हैं। आत्मा और ३३ देवोंकी सहकारितासे ही यह शरीरका कार्य चल रहा है। इसका इतना महत्त्व है कि, इससे और आश्चर्यकारक घटना जगत्में दूसरी हैही नहीं। परस्पर सहकारितासे इतने आश्चर्यकारक कार्य होना संभव है। यदि एक देव यहां बिगड बैठा, तो सब बिगाड हो जाता है, तात्पर्य सबसे सहकार्यसेही आनंद होना संभव है।

तुलना।

मधुच्छंदा वैश्वामित्रः। अग्निः।

[१] **राजन्तमध्वराणां** ॥ (८; ऋ० १।१।८)

प्रस्कण्वः काण्वः। अग्निः।

[२] **राजन्तमध्वराणां** ॥ (१०३; ऋ० १।४५।४)

[३] **पतिर्ह्यध्वराणामग्ने** ॥ (९४; ऋ० १।४४।९)

देवरातः, शुनःशेप अजीगर्तिः। अग्निः।

[४] **सम्राजन्तमध्वराणां**॥ (३८; ऋ० १।२७।१)

विश्वामित्रः। अग्निः।

[५] **स केतुरध्वराणां** ॥ (५१२; ऋ० ३।१०।४)

सध्वंसः काण्वः। अश्विनौ।

[६] **राजन्तौ अध्वराणां** ॥ (ऋ० ८।८।१८)

वत्सप्रिः। अग्निः।

[७] **नेतारमध्वराणाम्** ॥ (१६०४; ऋ० १०।४६।४)

भिन्न ऋषि-दृष्ट मन्त्रोंमें वर्णन की समानता इस प्रकार है। अश्विनी देवोंका भी वर्णन इन्हीं शब्दोंसे हुआ है। इसका तात्पर्य यह कि द्रष्टा ऋषिकी भिन्नता और वर्णनीय देवताकी भिन्नता होनेपर भी '**प्रतिपाद्य विषयकी एकता**' है, अर्थात् जो 'यज्ञ' अग्निदेवताके मिषसे वेदमें बताया है, वही यज्ञ 'अश्विनौ' देवताके नामसे वर्णन किया है और इसी प्रकार अन्यान्य देवताओंके वर्णनोंसे उसी बातका दर्शन होता है। 'अग्नि यज्ञोंका राजा किंवा प्रकाशक अथवा नेता है,' यही आशय ऊपरके मन्त्रोंका है। यहां इसके द्वारा जो यज्ञ किया जाता है, उसका सविस्तर वर्णन इसी स्पष्टीकरण में इसीसे पूर्व बताया जाता है। उसको देखनेसे पाठकोंको स्वयं अनुभव हो सकता है कि, यह यज्ञोंका राजा कैसा है और किस रीतिसे यज्ञ कर रहा है।

'**ऋतस्य गोपा**' अर्थात् 'अनादि सत्य नियमोंका पालनकर्ता' यही है। 'ऋत और सत्य' ये दो अनादिसिद्ध त्रिकालाबाधित सत्य नियम इस जगत् में सनातन हैं। इनका कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। इनका संरक्षक यही आत्माग्नि है। इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

[१] **ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत** ॥ (ऋ० १०।१९०।१)

[२] **ऋतं पिपर्त्यनृतं नि तारीत्** ॥ (ऋ० १।१५२।३)

[३] **ऋतं चिकित्व ऋतमिच्चिकिद्ध्यृतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वीः** ॥ (ऋ० ५।१२।२)

[४] **ऋतं ऋताय पवते सुमेधाः** ॥ (ऋ० ९।९७।२३)

[५] **ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते** ॥ (ऋ० ५।६८।४)

'(१) प्रदीप्त तपसे ऋत और सत्य उत्पन्न हुए हैं, (२) ऋतका पालन करता है और अनृतको हटाता है, (३) ऋतके जाननेवाले ऋतके नियमको जानो, सनातन ऋतके प्रवाह फैलाओ, (४) उत्तम बुद्धिमान् ऋतके लिये ही ऋत को पवित्र करता है, (५) ऋत नियमसे ऋतका पोषण करनेवाले बहुत सामर्थ्य प्राप्त करते हैं।'

जिन दो अटल सत्य और सनातन नियमोंसे यह जगत् चल रहा है, वे 'ऋत और सत्य' ये दो नियम हैं। ऋतके विषयमें और देखिये—

[१] हंसः शुचिषद्वसुरंतरिक्षसद्धोता वेदिषद्-
तिथिर्दुरोणसत्॥ नृषद् वरसदृतसद्व्योमस-
दब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥
(ऋ. ४।४०।५; कठ० ५।२)

[२] प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य॥(महा.ना. उ.२।७)
[३] अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य॥(तै.उ. ३।१०।६)
[४] ऋतं तपः सत्यं तपः॥ (महा. ना. उ. ८।१)
[५] ऋतं सत्यं परं ब्रह्म॥ (महा. ना. उ. १२।१)

'(१) (हं+सः) जिस प्राणका बाहिर आनेके समय 'ह' ध्वनि होता है और अंदर जानेके समय 'स' ध्वनि होता है, वह प्राण (शुचि+षद्) शुद्धमें रहनेवाला, (वसुः) निवासक, (अंतरिक्ष+सद्) हृदयके मध्यमें रहनेवाला, (होता) हवन करनेवाला, (वेदि-षद्) हृदय की वेदिमें रहनेवाला, (अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, (दुरोण-सत्) स्वस्थानमें रहनेवाला, (नृ+षद्) मनुष्यके अंदर-हृदयमें-रहनेवाला, (वर-सद्) श्रेष्ठ स्थान में रहनेवाला, (ऋत-सद्) सत्यमें रहनेवाला, (व्योम-सद्) आकाशमें रहनेवाला, (अप्-जा) कर्मके साथ होनेवाला, जीवनके साथ रहनेवाला, (गो-जा) इंद्रियोंके साथ रहनेवाला, (ऋत-जा) ऋतका प्रवर्तक, (अ-द्रि-जा) जडमें रहनेवाला, जो है, वही 'बृहत् ऋत' है। (२) ऋतका प्रथम प्रवर्तक प्रजापति है। (३) मैं (अहं) आत्मा ऋतका पहिला प्रवर्तक हूं। (४) ऋत और सत्य तपही हैं। (५) ऋत और सत्य परब्रह्म है।'

यह ऋत की महिमा है। ऋत स्वयं आत्माका रूपही है। पूर्व मंत्रमें प्राण और आत्माही ऋत है, ऐसा स्पष्ट कहा है, इस लिये आत्माके निज धर्म ही ऋत और सत्य नामसे प्रसिद्ध हैं। 'ऋत' नाम यज्ञकाभी है इसलिये (ऋतस्य गोपा) 'ऋतका रक्षक' का अर्थ 'यज्ञका रक्षक' भी है। इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

यज्ञस्य देवः।	(ऋ. १।१।१)
ऋतस्य गोपा।	(ऋ.१।१।८; ३।१०।२)
अध्वराणां राजन्।	(ऋ. १।१।८)
अध्वराणां नेता।	(ऋ. १०।४६।४)
यज्ञस्य नेता।	(ऋ. २।५।२)
यज्ञस्य प्राविता।	(ऋ. ३।२१।३)
यज्ञस्य साधनः।	(ऋ. १।२७।८)

अग्निदेवता का यह वर्णन एकही भावका द्योतक होना स्वाभाविक है। यज्ञका स्वरूप पहले निश्चित किया ही है। पुरुषका जीवन यज्ञ ही है। इस जीवनरूप यज्ञका नेता, चालक, रक्षक यही आत्माग्नि है, इसमें कोई शंका नहीं है। यही बात पूर्वोक्त उपनिषद्वचनोंसे सिद्ध हो रही है। वहां भी ऋतका स्वरूप 'आत्मा' ही बताया है। इस प्रकार अनेक रीतिसे विचार करनेपर तात्पर्य एकही सिद्ध होता है, यही सत्य अर्थका लक्षण है।

'दीदिविं' शब्द इसके पश्चात् आता है। इसका अर्थ 'प्रकाशमान' है। इसके समान जो अन्यत्र मंत्रभाग है, उसमें 'दीदिहि' पाठ है, देखिये—

मधुच्छंदा वैश्वामित्रः। अग्निः।
गोपामृतस्य दीदिविम्। (ऋ. १।१।८)
विश्वामित्रो गाथिनः। अग्निः।
गोपा ऋतस्य दीदिहि। (ऋ. ३।१०।२)
उरुक्षय आमहीयवः। अग्नी रक्षोहा।
गोपा ऋतस्य दीदिहि। (ऋ. १०।११८।७)

थोडासा पाठभेद होनेपर भी अर्थकी एकता ही है, 'दीदिवि' शब्दका अर्थ 'प्रकाशमान' है और 'दीदिहि' का अर्थ 'प्रकाशित हो,' ऐसा है, इसलिये अर्थकी दृष्टिसे कोई भेद नहीं है।

'वर्धमानं स्वे दमे' अपने दमनमें बढनेवाला, अपने घरमें वृद्धिको प्राप्त होनेवाला, यह इसका भाव है। 'दम' शब्दका अर्थ 'संयम, दमन, आत्मसंयम, मनोविकार और इंद्रिय वृत्तियोंका संयम मनकी स्थिरता; घर, परिवार' इतना है। संयमसे अपनी शक्ति बढती है। मनोनिग्रहसे आत्मशक्तिका विकास होता है। यही उन्नतिका नियम है।

(१) सत्कर्मोंका फैलाव करना, (२) सत्यनिष्ठा बढानी, (३) अज्ञानांधकार दूर करके ज्ञानका प्रकाश करना, और (४) संयमसे अपनी शक्तिका विकास करना चाहिये। इस मंत्रसे सब मनुष्योंके लिये यही उपदेश है और जो आत्मोन्नति चाहते हैं, उनके लिये ये बोध अमूल्य हैं। इनका पालन करनेसे मनुष्य अग्निके समान तेजस्वी हो सकता है।

इस तरह तुलनात्मक अध्ययन वेदके मंत्रोंका करना उचित है। इस तरहके अध्ययनसे ही वेद मंत्रोंका रहस्य ध्यानमें आ सकता है। इस दैवत-संहितासे इस तरहके अध्ययनकी अतीव सहायता होनेवाली है। आशा है, इस तरह का अध्ययन करके पाठक लाभ उठावेंगे।

सूचियोंका उपयोग।

अग्निदेवताकी **'पुनरुक्त-मन्त्र-सूची'** पृ० १८७से२१६ तक है। इस सूचीसे किस मन्त्रका कौनसा भाग कहां पुनरुक्त हुआ है, इसका पता लग सकता है। अग्निके विवरणमें तथा भूमिकामें जो पुनरुक्त मन्त्र दिये हैं और जो विवरण किया है, उससे इस सूची की सहायता वेद-मन्त्रोंका अर्थ करनेमें कितनी है, इसका पता लग सकता है। भूमिका पृ० ४८ से ६६ तक पाठक देख सकते हैं कि पुनरुक्त मन्त्रसूचीसे कैसा लाभ हो सकता है। यदि पाठक इस सूचीका उत्तम उपयोग कर सकेंगे, तो मन्त्रका अर्थ अन्तर्गत प्रमाणोंसे निश्चित होनेमें बडी सहायता हो सकती है।

दूसरी उपमा-सूची है। इससे पता लग सकता है कि अग्निको कितनी उपमाएं किस अर्थमें दी हैं।

तीसरी सूची मन्त्रोंकी अकारादि वर्णानुक्रम-सूची है। इससे कौनसा मन्त्र कहां है, इसका पता लग सकता है। अन्तिम सूची विशेषणोंकी है, इससे अग्निके गुण जाने जा सकते हैं। गुणोंका बोध होनेसे स्वरूप का निश्चय होता है। इस तरह ये सब सूचियां बडी उपयोगी हैं।

अन्तिम निवेदन।

यहां अन्तिम निवेदन यह है कि यहां अग्निके विषयमें जो लिखा है, वही परिपूर्ण है, ऐसा नहीं समझना चाहिये। पाठक विचार करते रहेंगे, तो उनके सामने कई अन्य बातें स्वयं उपस्थित होंगी और प्रकाशित होती रहेंगी। इसलिये हरएक पाठक अपनी स्वतंत्र विचार-शक्तिसे इन मंत्रोंका विचार करें और जो विचार होगा, वह जनताके सामने रखते जांय। इसी तरह करनेसेही वेद-विद्याका प्रकाश होगा।

—संपादक

अग्निदेवता का परिचय।

भूमिका की विषय-सूची।

विषय	पृष्ठ
१ विषय प्रवेश।	६
२ भाषामें अग्नि शब्दका भाव।	,,
३ अग्निके पर्याय शब्द।	,,
४ पहला मानव " अग्नि "	,,
५ वृषभ और धेनु।	७
६ पहला अंगिरा ऋषि।	८
७ वैश्वानर अग्नि।	,,
८ ब्राह्मण और क्षत्रिय।	९
९ अग्निसंवर्धन।	१०
१० व्यक्तिभाव और संघभाव।	११
११ संघशक्ति का अतुल बल।	,,
१२ जनता का केंद्र।	१२
१३ समाज का अमरत्व।	,,
१४ सब धन संघका ही है।	१३
१५ संघ के विजयमें व्यक्ति का जय।	,,
१६ बुद्धि में पहिला अग्नि।	१४
१७ पहिला मननकर्ता अग्नि।	१५
१८ मनुष्यमें अग्नि।	,,
१९ मर्त्यों में अमृत अग्नि।	१६
२० जाठराग्नि।	,,
२१ वाणी के स्थानमें अग्नि।	१७
२२ दिव्य जन्मकर्ता अग्नि।	,,
२३ शक्ति प्रदाता अग्नि।	१८
२४ पुरोहित अग्नि। गणराज।	,,
२५ हस्तपादहीन गुह्य अग्नि।	१९
२६ वृद्ध नागरिक।	१९
२७ प्रजामें देवताका अनुभव।	२०
२८ न दबनेवाला।	,,
२९ मूकमें वाचाल।	२१
३० पुराना मित्र।	,,
३१ विनाशियोंमें अविनाशी।	२२
३२ अनेक देवोंका प्रेरक एक देव।	२३
३३ अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि।	२५
३४ अग्नियोंमें अग्नि।	२६
३५ देवोंद्वारा प्रदीप्त अग्नि।	२७
३६ दूत अग्नि।	२८
३७ होता अग्नि।	२९
३८ अग्निरूप होना।	,,
३९ एक अग्नि से दूसरे अग्निका जलना।	,,
४० देवोंद्वारा स्थापित अग्नि।	३०
४१ मानवी प्रजा में अग्नि।	३१
४२ जीवन-रसरूप अग्नि।	३२
४३ देवोंका निवासक अग्नि।	,,
४४ दस बहिनें इसको प्रकट करती हैं।	३३
४५ प्रजाका रक्षक।	३४
४६ देवोंके साथ अग्निका बैठनेका स्थान।	३५
४७ यज्ञका झंडा।	३६

४८ देवोंमें यज्ञ।	३७	५८ सप्त धातु।	४५
४९ यही दूत है।	,,	६० सात घोडे।	,,
५० गुहा संचारी अग्नि।	३८	६१ सात बहिनें।	,,
५१ अग्निके साथी अनेक देव।	४०	६२ सात ऋत्विज्।	,,
५२ "सात" संख्या का महत्त्व।	४१	६३ पांच और दो दोहनकर्ता।	४६
५३ सात हाथ।	,,	६४ तनूनपात् अग्नि।	,,
५४ सात जिह्वाएं।	४२	६५ अन्य बातों का उपदेश।	४७
५५ सात नदियां।	४२	६६ परम आत्माग्नि।	४८
५६ सप्त ऋषि और सप्त नद।	४३	६७ सारांश।	,,
५७ सात किरण।	४४	६८ अग्नि देवताके विचार करनेकी दिशा।	,,
५८ सप्त रत्न।	,,	६९ हृदयमें यज्ञ	५१

अग्निदेवताकी सूचियाँ।

१ पुनरुक्त-मन्त्रसूची	पृ० १८७-२१६
प्रथम-मण्डल	१८७-१९४
द्वितीय "	१९४-१९५
तृतीय "	१९५-१९८
चतुर्थ "	१९८-२००
पञ्चम "	२००-२०४
षष्ठ "	२०४-२०६
सप्तम "	२०६-२०८
अष्टम "	२०८-२१०
दशम "	२१०-२१६
२ उपमासूची	२१७-२२४
३ मंत्राणां अकारानुक्रमसूची	२२५-२३८
४ (विशेषण)गुणबोधकपदसूची	२३८-२७४

अग्निमन्त्राणां ऋषिसूची ।

(१) अग्निः ।

ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठं
मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	१-९	१
मेधातिथिः काण्वः	१०-२६	”
शुनः शेप आजीगर्तिः, स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः	२७-४९	२
हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	५०-६७	३
कण्वो घौरः	६८-८५	५
प्रस्कण्वः काण्वः	८६-१०९	६
नोधा गौतमः	११०-१२३	८
पराशरः शाक्त्यः	१२४-२१४	९
गौतमो राहूगणः	२१५-२५५	१४
कुत्स आङ्गिरसः	२५६-२७१	१६
परुच्छेपो दैवोदासिः	२७२-२९१	१८
दीर्घतमा औचथ्यः	२९२-३६०	२०
अगस्त्यो मैत्रावरुणः	३६१-३६८	२६
गृत्समदः शौनकः	३६९-४१५	२७
सोमाहुतिर्भार्गवः	४१६-४४६	३०
विश्वामित्रो गाथिनः	४४७-५७३	३२
ऋषभो वैश्वामित्रः	५७४-५८७	४१
उत्कीलः कात्यः	५८८-५९९	४२
कतो वैश्वामित्रः	६००-६०९	४३
गाथी कौशिकः	६१०-६२६	४४
देवश्रवा देववातश्च भारतौ	६२७-६३०	४६
वामदेवो गौतमः	६३१-७५४	”
बुधगविष्ठिरावात्रेयौ	७५५-७६६	५५
कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः उभौ वा	७६७-७७८	५६
वसुश्रुत आत्रेयः	७७९-८१०	५७
इष आत्रेयः	८११-८२७	६०
गय आत्रेयः	८२८-८४१	६१
सुतंभर आत्रेयः	८४२-८६५	६३
धरुण आङ्गिरसः	८६६-८७०	६४
पूरुरात्रेयः	८७१-८८०	६५
द्वितो मृक्तवाहा आत्रेयः	८८१-८८५	”
वव्रिरात्रेयः	८८६-८९०	६६
प्रयस्वन्त आत्रेयाः	८९१-८९४	”
सस आत्रेयः	८९५-८९८	६७
विश्वसामा आत्रेयः	८९९-९०२	”
द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः	९०३-९०६	”
बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबंधुश्च क्रमेण गौपायना लौपायना वा	९०७-९१०	”
वसूयव आत्रेयाः	९११-९१७	”
त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरुकुत्सः, अश्वमेधश्च भारताः राजानः (अत्रिर्भौम इति केचित्)	९१८-९३२	६९
विश्ववारात्रेयी	९३३-९३८	”
भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	९३९-१०८९	७०
शंयुर्बार्हस्पत्यः (तृणपाणिः)	१०९०-१०९९	८०
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	११००-१२१३	८१
वत्सः काण्वः	१२१४-२३	८९
सोभरिः काण्वः	१२२४-६९	९०
विश्वमना वैयश्वः	१२७०-९९	९३
नाभाकः काण्वः	१३००-१३०९	९४
विरूप आङ्गिरसः	१३१०-१३८८	९५
भर्गः प्रागाथः	१३८९-१४०८	९८
सुदीति-पुरुमीळ्हावाङ्गिरसौ, तयोर्वान्यतरः	१४०९-१४२३	१००
हर्यतः प्रागाथः	१४२४-४१	१०१
गोपवन आत्रेयः	१४४२-५३	१०२
उशना काव्यः	१४५४-६२	”

प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्नि-बार्हस्पत्यो वा गृहस्पति-यविष्ठौ सहसः पुत्रावान्यतरो वा	१४६३-८४	१०३
त्रित आप्त्यः	१४८५-१५३३	,,
त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः	१५३४-३९	१०८
हविर्धान आङ्गिः	१५४०-५६	,,
दमनो यामायनः	१५५७-७०	११०
विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा वासुक्रः	१५७१-८८	१११
वत्सप्रिर्भालन्दनः	१५८९-१६१०	११२
देवाः	१६११-२४	११४
सुमित्रो वाध्र्यश्वः	१६२५-३६	११५
सौचीकोऽग्निः, वैश्वानरो वा, (सप्तिर्वाजंभरो वा)	१६३७-५०	११६
अरुणो वैतहव्यः	१६५१-६५	११७
उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः	१६६६-७४	११८
चित्रमहा वासिष्ठः	१६७५-८२	११९
अग्निः	१६८३	१२०
पावकोऽग्निः	१६८४-८९	,,
शार्ङ्गाः (जरिता, द्रोणः, सारिसृक्वः, स्तम्बमित्रः)	१६९०-९७	१२१
मृळीको वासिष्ठः	१६९८-१७०२	,,
केतुराग्नेयः	१७०३-७	१२२
मूनुरार्भवः	१७०८-१०	,,
वत्स आग्नेयः	१७११-१५	,,
संवनन आङ्गिरसः	१७१६	,,

(२) वैश्वानरोऽग्निः ।

नोधा गौतमः	१७१७-२३	१२३
कुत्स आङ्गिरसः	१७२४-२६	,,
विश्वामित्रो गाथिनः	१७२७-५७	१२४
वामदेवो गौतमः	१७५८-७२	१२६
भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	१७७३-९३	१२७
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	१७९४-१८१२	१२९

(३) रक्षोहाऽग्निः ।

वामदेवो गौतमः	१८१३-२७	१३१
पायुर्भारद्वाजः	१८२८-५२	१३२
उरुक्षय आमहीयवः	१८५३-६१	१३४

(४) जातवेदा अग्निः ।

कश्यपो मारीचः	१८६२	,,
श्येन आग्नेयः	१८६३-६५	१३५
भृगुः	१८६६	,,

(५) घर्मोऽग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८६७	,,

(६) औषसोऽग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८६८-७८	,,

(७) द्रविणोदा अग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८७९-८६	१३६

(८) शुचिरग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८८७-९४	१३७

(९) अग्निरापो गावश्च ।

वामदेवो गौतमः	१८९५-१९०५	१३८

(१०) आप्री सूक्तानि ।

मेधातिथिः काण्वः	१९०६-१७	१३९
दीर्घतमा औचथ्यः	१९१८-३०	,,
अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	१९३१-४१	१४०
गृत्समदः शौनकः	१९४२-५२	,,
विश्वामित्रो गाथिनः	१९५३-६३	१४१
वसुश्रुत आत्रेयः	१९६४-७३	१४२
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	१९७४-८०	१४३
असितः काश्यपो देवलो वा	१९८१-९१	१४४
सुमित्रो वाध्र्यश्वः	१९९२-२००२	,,
जमदग्निर्भार्गवः, रामो वा जामदग्न्यः	२००३-१३	१४५
चित्रस्वानृषिः	२०१४-७१	१४६
ब्रह्मा	२०७२-८३	१५२
चित्रस्वानृषिः	२०८४-२११८	१५३

विवस्वानृषिः	२१२९-४१	१५७
अथर्वा	२१४२-२२१६	१५९
भृगुः	२२१७-७४	१६५
भृग्वङ्गिराः	२२७५-७८	१६९
अङ्गिराः	२२७९-८३	१७०
चातनः	२२८४-२३१८	,,
शौनकः	२३१९-२९	१७२
मृगारः	२३३०-३६	१७३
गार्ग्यः	२३३७-३८	१७४
पतिवेदनः	२३३९-४०	,,
गृत्समदो मेधातिथिर्वा	२३४१	,,
शुक्रः	२३४२	,,
ब्रह्मा	२३४३-५४	,,
वसिष्ठः	२३५५-६४	१७५
बादरायणिः	२३६५-७१	१७६
अङ्गिराः प्रचेताः	२३७२	१७७
मरीचिः काश्यपः	२३७३	,,
जातवेदाः	२३७४	,,
कौशिकः	२३७५-८९	,,
कबन्धः	२३९०-९६	१७८

अग्निसहचारी देवगणः ।

(१) वैश्वानरोऽग्निः सूर्यश्च ।

मूर्धन्वाङ्गिरसो, वामदेव्यो वा	२३९७-२४१५	१७९

(२) रक्षोहाऽग्निः ।

रक्षोहा ब्राह्मः	२४१६-२१	१८१

(३) अपां-न-पादग्निः ।

गृत्समदः शौनकः	२४२२-३६	,,

(४) अग्नीन्द्रादयः ।

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	२४३७	१८२

(५) अग्निर्मरुतश्च ।

मेधातिथिः काण्वः	२४३८-४६	१८३
सोभरिः काण्वः	२४४७	,,

(६) अग्निमित्रवरुणादयः ।

हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	२४४८	,,

(७) अग्निर्वरुणश्च ।

वामदेवो गौतमः	२४४९-५२	,,

(८) अग्नाविष्णू ।

मेधातिथिः	२४५३-५४	१८४

(९) अग्निसूर्यौ ।

पृषध्रः काण्वः	२४५५	,,

(१०) अग्निः सूर्यो वायुश्च ।

दीर्घतमा औचथ्यः	२४५६	,,

(११) अग्निसूर्यानिलाः ।

हिरिम्बिठिः काण्वः	२४५७	,,

(१२) [केशिनः=] अग्निसूर्यवायवः ।

वातरशना मुनयः= (१-७ क्रमेण जूतिः, वातजूतिः, विप्रजूतिः, वृषाणकः, करिक्रतः, एतशः, ऋष्यशृङ्गः)	२४५८-६४	१८५

(१३) अग्नीषोमौ ।

गोतमो राहूगणः	२४६५-७६	,,
ब्रह्मा	२४७७-७९	१८६
अथर्वा (यशस्कामः)	२४८०	,,
शन्तातिः	२४८१	,,
भार्गवः	२४८२-८३	,,

ॐ

दैवत-संहिता

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मंत्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता)

१ अग्निदेवता ।

॥ १ ॥ (ऋग्वेदस्य मण्डलं १, सूक्तं १, मंत्राः १-९) [१ - ९] मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री (८×३) ।

॥ॐ॥ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् १
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिर् ईड्यो नूतनैरुत । स देवाँ एह वक्षति २
अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे । यशसं वीरवत्तमम् ३
अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि । स इद् देवेषु गच्छति ४
अग्निर्होता कविक्रतुस् सत्यश्चित्रश्रवस्तमः । देवो देवेभिरा गमत् ५
यदङ्ग दाशुषे त्वम् अग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेत् तत् सत्यमङ्गिरः ६
उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि ७
राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् । वर्धमानं स्वे दमे ८
स नः पितेव सूनवे ऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ९

॥ २ ॥ (ऋ० १ । १२ । १-१२) [१० - २६] मेधातिथिः काण्वः ।

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् १०
अग्निमग्निं हवीमभिस् सदा हवन्त विश्पतिम् । हव्यवाहं पुरुप्रियम् ११
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे । असि होता न ईड्यः १२
ताँ उशतो वि बोधय यदग्ने यासि दूत्यम् । देवैरा सत्सि बर्हिषि १३

घृताहवन दीदिवः प्रति ष्म रिषतो दह । अग्ने त्वं रक्षस्विनः १४
अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा । हव्यवाड् जुह्वास्यः १५
कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे । देवममीवचातनम् १६
यस्त्वामग्ने हविष्पतिर् दूतं देव सपर्यति । तस्य स्म प्राविता भव १७
यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति । तस्मै पावक मृळय १८
स नः पावक दीदिवो ऽग्ने देवाँ इहा वह । उप यज्ञं हविश्च नः १९
स नः स्तवान आ भर गायत्रेण नवीयसा । रयिं वीरवतीमिषम् २०
अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वाभिर्देवहूतिभिः । इमं स्तोमं जुषस्व नः २१

॥ ३ ॥ (ऋ० १ । १५ । ४, १२)

अग्ने देवाँ इहा वह सादया योनिषु त्रिषु । परि भूष पिब ऋतुना २२
गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरसि । देवान् देवयते यज २३

॥ ४ ॥ (ऋ० १ । २२ । ९-१०)

अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप । त्वष्टारं सोमपीतये २४
आ ग्ना अग्न इहावसे होत्रां यविष्ठ भारतीम् । वरूत्रीं धिषणां वह २५

॥ ५ ॥ (ऋ० १ । २३ । २४) अनुष्टुप् (८×४)।

सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ।
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः २६

॥ ६ ॥ (ऋ० १ । २४ । २)

[२७-४९] शुनःशेप आजीगर्तिः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । त्रिष्टुप् (११×४)।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम ।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च २७

॥ ७ ॥ (ऋ० १ । २६ । १-१०) गायत्री (८×३)।

वसिष्वा हि मियेध्य वस्त्राण्यूर्जां पते । सेमं नो अध्वरं यज २८
नि नो होता वरेण्यस् सदा यविष्ठ मन्मभिः । अग्ने दिवित्मता वचः २९
आ हि ष्मा सूनवे पिता ऽऽपिर्यजत्यापये । सखा सख्ये वरेण्यः ३०

आ नो बर्ही रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा। सीदन्तु मनुषो यथा ३१
पूर्व्य होतरस्य नो मन्दस्व सख्यस्य च। इमा उ षु श्रुधी गिरः ३२
यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे । त्वे इद्धूयते हविः ३३
प्रियो नो अस्तु विश्पतिर् होता मन्द्रो वरेण्यः। प्रियाः स्वग्नयो वयम् ३४
स्वग्नयो हि वार्यं देवासो दधिरे च नः । स्वग्नयो मनामहे ३५
अथा न उभयेषाम् अमृत मर्त्यानाम् । मिथः सन्तु प्रशस्तयः ३६
विश्वेभिरग्ने अग्निभिर् इमं यज्ञमिदं वचः । चनो धाः सहसो यहो ३७

॥ ८ ॥ (ऋ० १ । २७ । १-१२)।

अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः। सम्राजन्तमध्वराणाम् ३८
स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः । मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात् ३९
स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः । पाहि सदमिद् विश्वायुः ४०
इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः ४१
आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु । शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ४२
विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ । सद्यो दाशुषे क्षरसि ४३
यमग्ने पृत्सु मर्त्यम् अवा वाजेषु यं जुनाः । स यन्ता शश्वतीरिषः ४४
नकिरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित् । वाजो अस्ति श्रवाय्यः ४५
स वाजं विश्वचर्षणिर् अर्वद्भिरस्तु तरुता । विप्रेभिरस्तु सनिता ४६
जराबोध तद् विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय । स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ४७
स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः । धिये वाजाय हिन्वतु ४८
स रेवाँ इव विश्पतिर् दैव्यः केतुः शृणोतु नः। उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः ४९

॥ ९ ॥ (ऋ० १ । ३१ । १-१८) [५० - ६७] हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। जगती (१२×४); ५७, ६५, ६७ त्रिष्टुप् (११×४)।

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर् देवो देवानामभवः शिवः सखा।
तव व्रते कवयो विद्मनापसो ऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ५०

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः कविर्देवानां परि भूषसि व्रतम्।
विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे ५१

❀

त्वम॑ग्ने प्रथ॒मो मा॑त॒रिश्व॑न आ॒विर्भ॑व सुक्रतू॒या वि॒वस्व॑ते ।
अरे॑जेतां॒ रोद॑सी होतृ॒वूर्ये॒ ऽस॑घ्नोर्भा॒रमय॑जो म॒हो व॑सो ५२

त्वम॑ग्ने॒ मन॑वे॒ द्याम॑वाशयः पु॒रूर॑वसे सु॒कृते॑ सु॒कृत्त॑रः ।
श्वा॒त्रेण॒ यत् पि॒त्रोर्मु॑च्य॒से पर्या ऽऽ त्वा॒ पूर्व॑मनय॒न्नाप॑रं॒ पुनः॑ ५३

त्वम॑ग्ने वृष॒भः पु॑ष्टि॒वर्ध॑न॒ उद्य॑तस्रुचे भवसि श्र॒वाय्यः॑ ।
य आहु॑तिं॒ परि॒ वेदा॒ वष॑ट्कृ॒तिम् एका॑युर॒ग्रे विश॒ आ॒विवा॑ससि ५४

त्वम॑ग्ने वृ॒जि॒नव॑र्तनिं॒ नरं॒ सक्म॑न् पिपर्षि वि॒दथे॑ विचर्षणे ।
यः शूर॑साता॒ परि॑तक्म्ये॒ धने॑ द॒भ्रेभि॑श्चि॒त् समृ॑ता॒ हंसि॒ भूय॑सः ५५

त्वं तम॑ग्ने अमृत॒त्व उ॑त्त॒मे मर्तं॑ दधासि॒ श्रव॑से दि॒वेदि॑वे ।
यस्ता॑तृषा॒ण उ॒भया॑य॒ जन्म॑ने॒ मयः॑ कृ॒णोषि॒ प्रय॒ आ च॑ सू॒रये॑ ५६

त्वं नो॑ अग्ने स॒नये॒ धना॑नां य॒शसं॑ का॒रुं कृ॑णुहि॒ स्तवा॑नः ।
ऋ॒ध्याम॒ कर्मा॒पसा॒ नवे॑न दे॒वैर्द्या॑वापृथिवी॒ प्राव॑तं नः ५७

त्वं नो॑ अग्ने पि॒त्रोरु॒पस्थ॒ आ दे॒वो दे॒वेष्व॑नवद्य॒ जागृ॑विः ।
त॒नू॒कृद् बो॑धि॒ प्रम॑तिश्च का॒रवे॒ त्वं क॑ल्या॒ण व॒सु विश्व॒मोपि॑षे ५८

त्वम॑ग्ने॒ प्रम॑ति॒स्त्वं पि॒तासि॑ न॒स् त्वं व॑य॒स्कृत् तव॑ जा॒मयो॑ व॒यम् ।
सं त्वा॒ रायः॑ श॒तिनः॒ सं स॑ह॒स्रिणः॑ सु॒वीरं॑ यन्ति व्रत॒पाम॑दाभ्य ५९

त्वाम॑ग्ने प्रथ॒मम॒ायुमा॒यवे॑ दे॒वा अ॑कृण्व॒न् नहु॑षस्य वि॒श्पति॑म् ।
इळा॑मकृण्व॒न् मनु॑षस्य॒ शास॑नीं पि॒तुर्यत् पु॒त्रो मम॑कस्य॒ जाय॑ते ६०

त्वं नो॑ अग्ने॒ तव॑ देव पा॒युभि॑र् म॒घोनो॑ रक्ष त॒न्व॑श्च वन्द्य ।
त्रा॒ता तो॒कस्य॒ तन॑ये॒ गवा॑म॒सि अनि॑मेषं॒ रक्ष॑माण॒स्तव॑ व्र॒ते ६१

त्वम॑ग्ने॒ यज्य॑वे पा॒युरन्त॑रो ऽनिष॒ङ्गाय॑ चतुर॒क्ष इ॑ध्यसे ।
यो रा॒तह॑व्यो ऽवृ॒काय॒ धाय॑से की॒रेश्चि॒न् मन्त्रं॒ मन॑सा व॒नोषि॒ तम् ६२

त्वम॑ग्न उरु॒शंसा॑य वा॒घते॑ स्पा॒र्हं यद् रेक्णः॑ पर॒मं व॒नोषि॒ तत् ।
आ॒ध्रस्य॑ चि॒त् प्रम॑तिरुच्यसे पि॒ता प्र पाकं॒ शास्सि॒ प्र दिशो॑ वि॒दुष्ट॑रः ६३

त्वम॑ग्ने॒ प्रय॑तदक्षिणं॒ नरं॒ वर्मे॑व स्यू॒तं परि॑ पासि वि॒श्वतः॑ ।
स्वा॒दु॒क्षद्मा॒ यो व॑स॒तौ स्यो॑न॒कृज् जी॑वया॒जं यज॑ते॒ सोप॒मा दि॒वः ६४

इमामग्ने शरणिं मीमृषो न　इममध्वानं यमगाम दूरात्।
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां　भृमिरस्यृषिकृन् मर्त्यानाम्　६५

मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरो　ययातिवत् सदने पूर्ववच्छुचे।
अच्छ याह्या वहा दैव्यं जनम्　आ सादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम्　६६

एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व　शक्ती वा यत्ते चकृमा विदा वा।
उत प्र णेष्यभि वस्यो अस्मान्त्　सं नः सृज सुमत्या वाजवत्या　६७

॥ १० ॥ (ऋ० १।३६।१-१२, ५-२०)

[६८ - ८५] कण्वो घौरः। प्रगाथः = बृहती (८।८।१२।८) + सतो बृहती (१२।८।१२।८)।

प्र वो यह्वं पुरूणां　विशां देवयतीनाम्।
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिरीमहे　यं सीमिदन्य ईळते　६८

जनासो अग्निं दधिरे सहोवृधं　हविष्मन्तो विधेम ते।
स त्वं नो अद्य सुमना इहाविता　भवा वाजेषु सन्त्य　६९

प्र त्वा दूतं वृणीमहे　होतारं विश्ववेदसं।
महस्ते सतो वि चरन्त्यर्चयो　दिवि स्पृशन्ति भानवः　७०

देवासस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा　सं दूतं प्रत्नमिन्धते।
विश्वं सो अग्ने जयति त्वया　धनं यस्ते ददाश मर्त्यः　७१

मन्द्रो होता गृहपतिर्　अग्ने दूतो विशामसि।
त्वे विश्वा संगतानि व्रता　ध्रुवा यानि देवा अकृण्वत　७२

त्वे इदग्ने सुभगे यविष्ठ्य　विश्वमा हूयते हविः।
स त्वं नो अद्य सुमना उतापरं　यक्षि देवान्त्सुवीर्या　७३

तं घेमित्था नमस्विन　उप स्वराजमासते।
होत्राभिरग्निं मनुषः समिन्धते　तितिर्वांसो अति स्रिधः　७४

घ्नन्तो वृत्रमतरन् रोदसी अप　उरु क्षयाय चक्रिरे।
भुवत् कण्वे वृषा द्युम्न्याहुतः　क्रन्ददश्वो गविष्टिषु　७५

सं सीदस्व महाँ असि　शोचस्व देववीतमः।
वि धूममग्ने अरुषं मियेध्य　सृज प्रशस्त दर्शतम्　७६

यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन ।
यं कण्वो मेध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा यमुपस्तुतः ७७

यमग्निं मेध्यातिथिः कण्व ईध ऋतादधि ।
तस्य प्रेषो दीदियुस्तमिमा ऋचस् तमग्निं वर्धयामसि ७८

रायस्पूर्धि स्वधावोऽस्ति हि तेऽग्ने देवेष्वाप्यम् ।
त्वं वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि स नो मृळ महाँ असि ७९

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः ।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य ८०

घनेव विष्वग् वि जह्यराव्णस् तपुर्जम्भ यो अस्मध्रुक् ।
यो मर्त्यः शिशीते अत्यक्तुभिर् मा नः स रिपुरीशत ८१

अग्निर्वव्ने सुवीर्यम् अग्निः कण्वाय सौभगम् ।
अग्निः प्रावन् मित्रोत मेध्यातिथिम् अग्निः साता उपस्तुतम् ८२

अग्निना तुर्वशं यदुं परावत उग्रादेवं हवामहे ।
अग्निर्नयन् नववास्त्वं बृहद्रथं तुर्वीतिं दस्यवे सहः ८३

नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ८४

त्वेषासो अग्नेरमवन्तो अर्चयो भीमासो न प्रतीतये ।
रक्षस्विनः सदमिद्यातुमावतो विश्वं समत्रिणं दह ८५

॥ ११ ॥ (ऋ० १ । ४४ । १-१४)

[८६ - १०९] प्रस्कण्वः काण्वः । प्रगाथः = बृहती (८।८।१२।८) + सतो बृहती (१२।८।१२।८) ।

अग्ने विवस्वदुषसश् चित्रं राधो अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वम् अद्या देवाँ उषर्बुधः ८६

जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनो ऽग्ने रथीरध्वराणाम् ।
सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यम् अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ८७

अद्या दूतं वृणीमहे वसुमग्निं पुरुप्रियम् ।
धूमकेतुं भाऋजीकं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम् ८८

श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे ।
देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसम् अग्निमीळे व्युष्टिषु ८९

स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृत भोजन ।
अग्ने त्रातारममृतं मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन ९०
सुशंसो बोधि गृणते यविष्ठ्य मधुजिह्वः स्वाहुतः ।
प्रस्कण्वस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे नमस्या दैव्यं जनम् ९१

होतारं विश्ववेदसं सं हि त्वा विश इन्धते ।
स आ वह पुरुहूत प्रचेतसो ऽग्ने देवाँ इह द्रवत् ९२
सवितारमुषसमश्विना भगम् अग्निं व्युष्टिषु क्षपः ।
कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर ९३

पतिर्ह्यध्वराणाम् अग्ने दूतो विशामसि ।
उषर्बुध आ वह सोमपीतये देवाँ अद्य स्वर्दृशः ९४
अग्ने पूर्वा अनूषसो विभावसो दीदेथ विश्वदर्शतः ।
असि ग्रामेष्वविता पुरोहितो ऽसि यज्ञेषु मानुषः ९५

नि त्वा यज्ञस्य साधनम् अग्ने होतारमृत्विजम् ।
मनुष्वद् देव धीमहि प्रचेतसं जीरं दूतममर्त्यम् ९६
यद् देवानां मित्रमहः पुरोहितो ऽन्तरो यासि दूत्यम् ।
सिन्धोरिव प्रस्वनितास ऊर्मयो ऽग्नेर्भ्राजन्ते अर्चयः ९७

श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर् देवैरग्ने सयावभिः ।
आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम् ९८
शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः सुदानवो ऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
पिबन्तु सोमं वरुणो धृतव्रतो ऽश्विभ्यामुषसा सजूः ९९

॥ १२ ॥ (ऋ० १ । ४५ । १-१०) अनुष्टुप् (८×४) ।

त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत । यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् १००
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः। तान् रोहिदश्व गिर्वणस् त्रयस्त्रिंशतमा वह १०१
प्रियमेधवदत्रिवज् जातवेदो विरूपवत् । अङ्गिरस्वन् महिव्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् १०२

महिकेरव ऊतये प्रियमेधा अहूषत । राजन्तमध्वराणाम् अग्निं शुक्रेण शोचिषा १०३
घृताहवन सन्त्य इमा उ षु श्रुधी गिरः । याभिः कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा १०४
त्वां चित्रश्रवस्तम हवन्ते विक्षु जन्तवः । शोचिष्केशं पुरुप्रिय अग्ने हव्याय वोळ्हवे १०५
नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तमम् । श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं विप्रा अग्ने दिविष्टिषु १०६
आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः सुतसोमा अभि प्रयः। बृहद् भा बिभ्रतो हविर् अग्ने मर्ताय दाशुषे १०७
प्रातर्याव्णः सहस्कृत सोमपेयाय सन्त्य । इहाद्य दैव्यं जनं बर्हिरा सादया वसो १०८
अर्वाञ्चं दैव्यं जनम् अग्ने यक्ष्व सहूतिभिः । अयं सोमः सुदानवस् तं पात तिरोअह्न्यम् १०९

॥१३॥ (ऋ० १।५८।१-९) [११०-१२३] नोधा गौतमः। जगती; (१२×४) ११५-१२३ त्रिष्टुप् (११×४)।

नू चित् सहोजा अमृतो नि तुन्दते होता यद् दूतो अभवद् विवस्वतः ।
वि साधिष्ठेभिः पथिभी रजो मम आ देवताता हविषा विवासति ११०

आ स्वमद्म युवमानो अजरस् तृष्वविष्यन्नतसेषु तिष्ठति ।
अत्यो न पृष्ठं प्रुषितस्य रोचते दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदत् १११

क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निषत्तो रयिषाळमर्त्यः ।
रथो न विक्ष्वृञ्जसान आयुषु व्यानुषग् वार्या देव ऋण्वति ११२

वि वातजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा जुहूभिः सृण्या तुविष्वणिः ।
तृषु यदग्ने वनिनो वृषायसे कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर ११३

तपुर्जम्भो वन आ वातचोदितो यूथे न साह्वाँ अव वाति वंसगः ।
अभिव्रजन्नक्षितं पाजसा रजः स्थातुश्चरथं भयते पतत्रिणः ११४

दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारुं सुहवं जनेभ्यः ।
होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं न शेवं दिव्याय जन्मने ११५

होतारं सप्त जुह्वो३ यजिष्ठं यं वाघतो वृणते अध्वरेषु ।
अग्निं विश्वेषामरतिं वसूनां सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ११६

अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य स्तोतृभ्यो मित्रमहः शर्म यच्छ ।
अग्ने गृणन्तमंहस उरुष्य ऊर्जो नपात् पूर्भिरायसीभिः ११७

भवा वरूथं गृणते विभावो भवा मघवन् मघवद्भ्यः शर्म ।
उरुष्याग्ने अंहसो गृणन्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ११८

॥ १४ ॥ (ऋ० १ । ६० । १-५)

[११९—१२३] नोधा गौतमः । त्रिष्टुप् ।

वह्निं यशसं विदथस्य केतुं　सुप्राव्यं दूतं सद्योअर्थम् ।
द्विजन्मानं रयिमिव प्रशस्तं　रातिं भरद् भृगवे मातरिश्वा　११९

अस्य शासुरुभयासः सचन्ते　हविष्मन्त उशिजो ये च मर्ताः ।
दिवश्चित् पूर्वो न्यसादि होता　ऽऽपृच्छ्यो विश्पतिर्विक्षु वेधाः　१२०

तं नव्यसी हृद आ जायमानम्　अस्मत् सुकीर्तिर्मधुजिह्वमश्याः ।
यमृत्विजो वृजने मानुषासः　प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त　१२१

उशिक् पावको वसुर्मानुषेषु　वरेण्यो होताधायि विक्षु ।
दमूना गृहपतिर्दम आँ　अग्निर्भुवद् रयिपती रयीणाम्　१२२

तं त्वा वयं पतिमग्ने रयीणां　प्र शंसामो मतिभिर्गोतमासः ।
आशुं न वाजंभरं मर्जयन्तः　प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्　१२३

॥ १५ ॥ (ऋ० १ । ६५ । १-१०)

[१२४-२१४] पराशरः शाक्त्यः । द्विपदा विराट् ।

पश्वा न तायुं, गुहा चतन्तं　नमो युजानं, नमो वहन्तम्　१२४
सजोषा धीराः, पदैरनु ग्मन्न्　उप त्वा सीदन्, विश्वे यजत्राः　१२५
ऋतस्य देवा, अनु व्रता गुर्　भुवत् परिष्टिर्, द्यौर्न भूम　१२६
वर्धन्तीमापः, पन्वा सुशिश्विम्　ऋतस्य योना, गर्भे सुजातम्　१२७
पुष्टिर्न रण्वा, क्षितिर्न पृथ्वी　गिरिर्न भुज्म, क्षोदो न शंभु　१२८
अत्यो नाज्मन्,त्सर्गप्रतक्तः　सिन्धुर्न क्षोदः, क ईं वराते　१२९
जामिः सिन्धूनां, भ्रातेव स्वस्राम्　इभ्यान् न राजा, वनान्यत्ति　१३०
यद्वातजूतो, वना व्यस्थाद्　अग्निर्ह दाति, रोमा पृथिव्याः　१३१
श्वसित्यप्सु, हंसो न सीदन्　क्रत्वा चेतिष्ठो, विशामुषर्भुत्　१३२
सोमो न वेधा, ऋतप्रजातः　पशुर्न शिश्वा, विभुर्दूरेभाः　१३३

॥ १६ ॥ (ऋ० १।६६।१-१०)

रयिर्न चित्रा, सूरो न संदृग्　आयुर्न प्राणो, नित्यो न सूनुः　१३४
तक्वा न भूर्णिर्,वना सिषक्ति　पयो न धेनुः, शुचिर्विभावा　१३५

२

दाधार क्षेमम्,ओको न रण्वो यवो न पक्वो, जेता जनानाम् १३६
ऋषिर्न स्तुभ्वा, विक्षु प्रशस्तो वाजी न प्रीतो, वयो दधाति १३७
दुरोकशोचिः, क्रतुर्न नित्यो जायेव योनाव्,अरं विश्वस्मै १३८
चित्रो यदभ्राट्,छ्वेतो न विक्षु रथो न रुक्मी, त्वेषः समत्सु १३९
सेनेव सृष्टा,ऽमं दधाति अस्तुर्न दिद्युत्, त्वेषप्रतीका १४०
यमो ह जातो, यमो जनित्वं जारः कनीनां, पतिर्जनीनाम् १४१
तं वश्चराथा, वयं वसत्यास् तं न गावो, नक्षन्त इद्धम् १४२
सिन्धुर्न क्षोदः, प्र नीचीरैनोन् नवन्त गावः, स्वर्दृशीके १४३

॥ १७ ॥ (ऋ० १। ६७। १-१०)

वनेषु जायुर्,मर्तेषु मित्रो वृणीते श्रुष्टिं, राजेवाजुर्यम् १४४
क्षेमो न साधुः, क्रतुर्न भद्रो भुवत् स्वाधीर्,होता हव्यवाट् १४५
हस्ते दधानो, नृम्णा विश्वानि अमे देवान् धाद्, गुहा निषीदन् १४६
विदन्तीमत्र, नरो धियंधा हृदा यत् तष्टान्, मन्त्राँ अशंसन् १४७
अजो न क्षां, दाधार पृथिवीं तस्तम्भ द्यां, मन्त्रेभिः सत्यैः १४८
प्रिया पदानि, पश्वो नि पाहि विश्वायुरग्ने, गुहा गुहं गाः १४९
य ईं चिकेत, गुहा भवन्तम् आ यः ससाद, धारामृतस्य १५०
वि ये चृतन्ति,ऋता सपन्त आदिद् वसूनि, प्र ववाचास्मै १५१
वि यो वीरुत्सु, रोधन् महित्वा उत प्रजा, उत प्रसूष्वन्तः १५२
चित्तिरपां, दमे विश्वायुः सद्मेव धीराः, संमाय चक्रुः १५३

॥ १८ ॥ (ऋ० १। ६८। १—१०)

श्रीणन्नुप स्थाद्, दिवं भुरण्युः स्थातुश्चरथम्,अक्तून् व्यूर्णोत् १५४
परि यदेषाम्,एको विश्वेषां भुवद् देवो, देवानां महित्वा १५५
आदित् ते विश्वे, क्रतुं जुषन्त शुष्काद्यद् देव, जीवो जनिष्ठाः १५६
भजन्त विश्वे, देवत्वं नाम ऋतं सपन्तो, अमृतमेवैः १५७
ऋतस्य प्रेषा, ऋतस्य धीतिर् विश्वायुर्विश्वे, अपांसि चक्रुः १५८
यस्तुभ्यं दाशाद्, यो वा ते शिक्षात् तस्मै चिकित्वान्, रयिं दयस्व १५९
होता निषत्तो, मनोरपत्ये स चिन् न्वासां, पती रयीणाम् १६०

इच्छन्त रेतो, मिथस्तनूषु सं जानत स्वैर्,दक्षैरमूराः १६१
पितुर्न पुत्राः, क्रतुं जुषन्त श्रोषन् ये अस्य, शासं तुरासः १६२
वि राय और्णोद्, दुरः पुरुक्षुः पिपेश नाकं, स्तृभिर्दमूनाः १६३

॥१९॥ (ऋ० १।६९।१-१०)

शुक्रः शुशुक्वाँ, उषो न जारः पप्रा समीची, दिवो न ज्योतिः १६४
परि प्रजातः, क्रत्वा बभूथ भुवो देवानां, पिता पुत्रः सन् १६५
वेधा अदृप्तो, अग्निर्विजानन्न् ऊधर्न गोनां, स्वाद्मा पितूनाम् १६६
जने न शेव, आहूर्यः सन् मध्ये निषत्तो, रण्वो दुरोणे १६७
पुत्रो न जातो, रण्वो दुरोणे वाजी न प्रीतो, विशो वि तारीत् १६८
विशो यदह्वे, नृभिः सनीळा अग्निर्देवत्वा, विश्वान्यश्याः १६९
नकिष्ट एता, व्रता मिनन्ति नृभ्यो यदेभ्यः, श्रुष्टिं चकर्थ १७०
तत् तु ते दंसो, यदहन्त्समानैर् नृभिर्यद् युक्तो, विवे रपांसि १७१
उषो न जारो, विभावोस्रः संज्ञातरूपश्,चिकेतदस्मै १७२
त्मना वहन्तो, दुरो व्यृण्वन् नवन्त विश्वे, स्व१र्दृशीके १७३

॥२०॥ (ऋ० १।७०।१-११)

वनेम पूर्वीर्, अर्यो मनीषा अग्निः सुशोको, विश्वान्यश्याः १७४
आ दैव्यानि, व्रता चिकित्वान् आ मानुषस्य, जनस्य जन्म १७५
गर्भो यो अपां, गर्भो वनानां गर्भश्च स्थातां, गर्भश्चरथाम् १७६
अद्रौ चिदस्मा, अन्तर्दुरोणे विशां न विश्वो, अमृतः स्वाधीः १७७
स हि क्षपावाँ, अग्नी रयीणां दाशद् यो अस्मा, अरं सूक्तैः १७८
एता चिकित्वो, भूमा नि पाहि देवानां जन्म, मर्तांश्च विद्वान् १७९
वर्धान्यं पूर्वीः, क्षपो विरूपाः स्थातुश्च रथम्,ऋतप्रवीतम् १८०
अराधि होता, स्व१र्निषत्तः कृण्वन् विश्वानि,अपांसि सत्या १८१
गोषु प्रशस्तिं, वनेषु धिषे भरन्त विश्वे, बलिं स्वर्णः १८२
वि त्वा नरः, पुरुत्रा सपर्यन् पितुर्न जिव्रेर्,वि वेदो भरन्त १८३
साधुर्न गृध्नुर्,अस्तेव शूरो यातेव भीमस्,त्वेषः समत्सु १८४

॥ २१ (ऋ० १ । ७१ । १—१०) । त्रिष्टुप् ।

उप प्र जिन्वन्नुशतीरुशन्तं पतिं न नित्यं जनयः सनीळाः ।
स्वसारः श्यावीमरुषीमजुषून् चित्रमुच्छन्तीमुषसं न गावः १८५

वीळु चिद् दृळ्हा पितरो न उक्थैर् अद्रिं रुजन्नङ्गिरसो रवेण ।
चक्रुर्दिवो बृहतो गातुमस्मे अहः स्वर्विविदुः केतुमुस्राः १८६

दधन्नृतं धनयन्नस्य धीतिम् आदिदर्यो दिधिष्वोऽ विभृत्राः ।
अतृष्यन्तीरपसो यन्त्यच्छा देवाञ् जन्म प्रयसा वर्धयन्तीः १८७

मथीद् यदीं विभृतो मातरिश्वा गृहेगृहे श्येतो जेन्यो भूत् ।
आदीं राज्ञे न सहीयसे सचा सन्ना दूत्यं भृगवाणो विवाय १८८

महे यत् पित्र ईं रसं दिवे कर् अव त्सरत् पृशन्यश्चिकित्वान् ।
सृजदस्ता धृषता दिद्युमस्मै स्वायां देवो दुहितरि त्विषिं धात् १८९

स्व आ यस्तुभ्यं दम आ विभाति नमो वा दाशादुशतो अनु द्यून् ।
वर्धो अग्ने वयो अस्य द्विबर्हा यासद् राया सरथं यं जुनासि १९०

अग्निं विश्वा अभि पृक्षः सचन्ते समुद्रं न स्रवतः सप्त यह्वीः ।
न जामिभिर्वि चिकिते वयो नो विदा देवेषु प्रमतिं चिकित्वान् १९१

आ यदिषे नृपतिं तेज आनट् शुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीके ।
अग्निः शर्धमनवद्यं युवानं स्वाध्यं जनयत् सूदयच्च १९२

मनो न योऽध्वनः सद्य एति एकः सत्रा सूरो वस्व ईशे ।
राजाना मित्रावरुणा सुपाणी गोषु प्रियममृतं रक्षमाणा १९३

मा नो अग्ने सख्या पित्र्याणि प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन् ।
नभो न रूपं जरिमा मिनाति पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि १९४

॥ २२ ॥ (ऋ० १ । ७२ । १-१०)

नि काव्या वेधसः शश्वतस्कर् हस्ते दधानो नर्या पुरूणि ।
अग्निर्भुवद् रयिपती रयीणां सत्रा चक्राणो अमृतानि विश्वा १९५

अस्मे वत्सं परि षन्तं न विन्दन् इच्छन्तो विश्वे अमृता अमूराः ।
श्रमयुवः पदव्यो धियंधास् तस्थुः पदे परमे चार्वग्नेः १९६

तिस्रो यदग्ने शरदस्त्वामिच् छुचिं घृतेन शुचयः सपर्यान्।
नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि असूदयन्त तन्वः सुजाताः १९७

आ रोदसी बृहती वेविदानाः प्र रुद्रिया जभ्रिरे यज्ञियासः।
विदन् मर्तो नेमधिता चिकित्वान् अग्निं पदे परमे तस्थिवांसम् १९८

संजानाना उप सीदन्नभिज्ञु पत्नीवन्तो नमस्यं नमस्यन्।
रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः सखा सख्युर्निमिषि रक्षमाणाः १९९

त्रिः सप्त यद् गुह्यानि त्वे इत् पदाविदन् निहिता यज्ञियासः।
तेभी रक्षन्ते अमृतं सजोषाः पशूञ्च स्थातॄञ्चरथं च पाहि २००

विद्वाँ अग्ने वयुनानि क्षितीनां व्यानुषक्छुरुधो जीवसे धाः।
अन्तर्विद्वाँ अध्वनो देवयानान् अतन्द्रो दूतो अभवो हविर्वाट् २०१

स्वाध्यो दिव आ सप्त यह्वी रायो दुरो व्यृतज्ञा अजानन्।
विदद् गव्यं सरमा दृळ्हमूर्वं येना नु कं मानुषी भोजते विट् २०२

आ ये विश्वा स्वपत्यानि तस्थुः कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम्।
मह्ना महद्भिः पृथिवी वि तस्थे माता पुत्रैरदितिर्धायसे वेः २०३

अधि श्रियं नि दधुश्चारुमस्मिन् दिवो यदक्षी अमृता अकृण्वन्।
अध क्षरन्ति सिन्धवो न सृष्टाः प्र नीचीरग्ने अरुषीरजानन् २०४

॥२३॥ (ऋ० १।७३।१-१०)

रयिर्न यः पितृवित्तो वयोधाः सुप्रणीतिश्चिकितुषो न शासुः।
स्योनशीरतिथिर्न प्रीणानो होतेव सद्म विधतो वि तारीत् २०५

देवो न यः सविता सत्यमन्मा क्रत्वा निपाति वृजनानि विश्वा।
पुरुप्रशस्तो अमतिर्न सत्य आत्मेव शेवो दिधिषाय्यो भूत् २०६

देवो न यः पृथिवीं विश्वधाया उपक्षेति हितमित्रो न राजा।
पुरःसदः शर्मसदो न वीरा अनवद्या पतिजुष्टेव नारी २०७

तं त्वा नरो दम आ नित्यमिद्धम् अग्ने सचन्त क्षितिषु ध्रुवासु।
अधि द्युम्नं नि दधुर्भूर्यस्मिन् भवा विश्वायुर्धरुणो रयीणाम् २०८

वि पृक्षो अग्ने मघवानो अश्युर् वि सूरयो ददतो विश्वमायुः ।
सनेम वाजं समिथेष्वर्यो भागं देवेषु श्रवसे दधानाः । २०९

ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः स्मदूध्नीः पीपयन्त द्युभक्ताः ।
परावतः सुमतिं भिक्षमाणा वि सिन्धवः समया सस्रुरद्रिम् २१०

त्वे अग्ने सुमतिं भिक्षमाणा दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियासः ।
नक्ता च चक्रुरुषसा विरूपे कृष्णं च वर्णमरुणं च सं धुः २११

यान् राये मर्तान्त्सुषूदो अग्ने ते स्याम मघवानो वयं च ।
छायेव विश्वं भुवनं सिसक्षि आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् २१२

अर्वद्भिरग्ने अर्वतो नृभिर्नॄन् वीरैर्वीरान् वनुयामा त्वोताः ।
ईशानासः पितृवित्तस्य रायो वि सूरयः शतहिमा नो अश्युः २१३

एता ते अग्न उचथानि वेधो जुष्टानि सन्तु मनसे हृदे च ।
शकेम रायः सुधुरो यमं ते ऽधि श्रवो देवभक्तं दधानाः २१४

॥ २४ ॥ (ऋ० १ । ७४ । १-९) [२१५-२५५] गोतमो राहूगणः । गायत्री ।

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये । आरे अस्मे च शृण्वते २१५
यः स्नीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु । अरक्षद् दाशुषे गयम् २१६
उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि । धनंजयो रणेरणे २१७
यस्य दूतो असि क्षये वेषि हव्यानि वीतये । दस्मत् कृणोष्यध्वरम् २१८
तमित् सुहव्यमङ्गिरः सुदेवं सहसो यहो । जना आहुः सुबर्हिषम् २१९
आ च वहासि ताँ इह देवाँ उप प्रशस्तये । हव्या सुश्चन्द्र वीतये २२०
न योरुपब्दिरश्व्यः शृण्वे रथस्य कच्चन । यदग्ने यासि दूत्यम् २२१
त्वोतो वाज्यह्रयो ऽभि पूर्वस्मादपरः । प्र दाश्वाँ अग्ने अस्थात् २२२
उत द्युमत् सुवीर्यं बृहदग्ने विवासासि । देवेभ्यो देव दाशुषे २२३

॥ २५ ॥ (ऋ० १ । ७५ । १-५)

जुषस्व सप्रथस्तमं वचो देवप्सरस्तमम् । हव्या जुह्वान आसनि २२४
अथा ते अङ्गिरस्तम अग्ने वेधस्तम प्रियम् । वोचेम ब्रह्म सानसि २२५
कस्ते जामिर्जनानाम् अग्ने को दाश्वध्वरः । को ह कस्मिन्नसि श्रितः २२६

त्वं जामिर्जनानाम् अग्ने मित्रो असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईड्यः २२७
यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत्। अग्ने यक्षि स्वं दमम् २२८

॥ २६ ॥ (ऋ० १। ७६। १-५) त्रिष्टुप्।

का त उपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शंतमा का मनीषा।
को वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम २२९

एह्यग्न इह होता नि षीद अदब्धः सु पुरएता भवा नः।
अवतां त्वा रोदसी विश्वमिन्वे यजा महे सौमनसाय देवान् २३०

प्र सु विश्वान् रक्षसो धक्ष्यग्ने भवा यज्ञानामभिशस्तिपावा।
अथा वह सोमपतिं हरिभ्याम् आतिथ्यमस्मै चकृमा सुदाव्ने २३१

प्रजावता वचसा वह्निरासा च हुवे नि च सत्सीह देवैः।
वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र बोधि प्रयन्तर्जनितर्वसूनाम् २३२

यथा विप्रस्य मनुषो हविर्भिर् देवाँ अयजः कविभिः कविः सन्।
एवा होतः सत्यतर त्वमद्य अग्ने मन्द्रया जुह्वा यजस्व २३३

॥ २७ ॥ (ऋ० १। ७७। १-५)

कथा दाशेमाग्नये कास्मै देवजुष्टोच्यते भामिने गीः।
यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा होता यजिष्ठ इत् कृणोति देवान् २३४

यो अध्वरेषु शंतम ऋतावा होता तमू नमोभिरा कृणुध्वम्।
अग्निर्यद् वेर्मर्ताय देवान् त्स चा बोधाति मनसा यजाति २३५

स हि क्रतुः स मर्यः स साधुर् मित्रो न भूदद्भुतस्य रथीः।
तं मेधेषु प्रथमं देवयन्तीर् विश उप ब्रुवते दस्ममारीः २३६

स नो नृणां नृतमो रिशादा अग्निर्गिरोऽवसा वेतु धीतिम्।
तना च ये मघवानः शविष्ठा वाजप्रसूता इषयन्त मन्म २३७

एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा विप्रेभिरस्तोष्ट जातवेदाः।
स एषु द्युम्नं पीपयत् स वाजं स पुष्टिं याति जोषमा चिकित्वान् २३८

॥ २८ ॥ (ऋ०१। ७८। १-५) गायत्री

अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे। द्युम्नैरभि प्र णोनुमः २३९

तमु त्वा गोतमो गिरा रायस्कामो दुवस्यति । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः २४०
तमु त्वा वाजसातमम् अङ्गिरस्वद् हवामहे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः २४१
तमु त्वा वृत्रहन्तमं यो दस्यूँरवधूनुषे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः २४२
अवोचाम रहूगणा अग्नये मधुमद् वचः । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः २४३

॥ २९ ॥ (ऋ० १ । ७९ । १-१२)

२४४-४६ त्रिष्टुप्; २४७-४९ उष्णिक्; २५०-२५५ गायत्री ।

हिरण्यकेशो रजसो विसारे ऽहिर्धुनिर्वात इव ध्रजीमान् ।
शुचिभ्राजा उषसो नवेदा यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः २४४

आ ते सुपर्णा अमिनन्तँ एवैः कृष्णो नोनाव वृषभो यदीदम् ।
शिवाभिर्न स्मयमानाभिरागात् पतन्ति मिहः स्तनयन्त्यभ्रा २४५

यदीमृतस्य पयसा पियानो नयन्नृतस्य पथिभी रजिष्ठैः ।
अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा त्वचं पृञ्चन्त्युपरस्य योनौ २४६

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो । अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः २४७
स इधानो वसुष्कवि अग्निरीळेन्यो गिरा । रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि २४८
क्षपो राजन्नुत त्मना ऽग्ने वस्तोरुतोषसः । स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति २४९
अवा नो अग्न ऊतिभिर् गायत्रस्य प्रभर्मणि । विश्वासु धीषु वन्द्य २५०
आ नो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम् । विश्वासु पृत्सु दुष्टरम् २५१
आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम् । मार्डीकं धेहि जीवसे २५२
प्र पूतास्तिग्मशोचिषे वाचो गोतमाग्नये । भरस्व सुम्नयुर्गिरः २५३
यो नो अग्नेऽभिदासति अन्ति दूरे पदीष्ट सः । अस्माकमिद् वृधे भव २५४
सहस्राक्षो विचर्षणिर् अग्नी रक्षांसि सेधति । होता गृणीत उक्थ्यः २५५

॥ ३० ॥ (ऋ० १ । ९४ । १-१६)

[२५६-२७१] कुत्स आङ्गिरसः । जगती; २७०-७१ त्रिष्टुप् ।

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसदि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २५६

यस्मै त्वमायजसे स साधति अनर्वा क्षेति दधते सुवीर्यम् ।
स तूताव नैनमश्नोत्यंहतिर् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २५७

शकेम त्वा समिधं साधया धियस् त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।
त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्युश्मसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २५८

भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् ।
जीवातवे प्रतरं साधया धियो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २५९

विशां गोपा अस्य चरन्ति जन्तवो द्विपच्च यदुत चतुष्पदक्तुभिः ।
चित्रः प्रकेत उषसो महाँ असि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६०

त्वमध्वर्युरुत होतासि पूर्व्यः प्रशास्ता पोता जनुषा पुरोहितः ।
विश्वा विद्वाँ आर्त्विज्या धीर पुष्यसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६१

यो विश्वतः सुप्रतीकः सदृङ्ङसि दूरे चित् सन्तळिदिवाति रोचसे ।
रात्र्याश् चिदन्धो अति देव पश्यसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६२

पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो ऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः ।
तदा जानीतोत पुष्यता वचो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६३

वधैर्दुःशंसाँ अप दूढ्यो जहि दूरे वा ये अन्ति वा के चिदत्रिणः ।
अथा यज्ञाय गृणते सुगं कृधि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६४

यदयुक्था अरुषा रोहिता रथे वातजूता वृषभस्येव ते रवः ।
आदिन्वसि वनिनो धूमकेतुना ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६५

अध स्वनादुत बिभ्युः पतत्रिणो द्रप्सा यत् ते यवसादो व्यस्थिरन् ।
सुगं तत् ते तावकेभ्यो रथेभ्यो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६६

अयं मित्रस्य वरुणस्य धायसे ऽवयातां मरुतां हेळो अद्भुतः ।
मृळा सु नो भूत्वेषां मनः पुनर् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६७

देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे ।
शर्मन् त्स्याम तव सप्रथस्तमे ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६८

तत् ते भद्रं यत् समिद्धः स्वे दमे सोमाहुतो जरसे मृळयत्तमः ।
दधासि रत्नं द्रविणं च दाशुषे ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २६९

यस्मै त्वं सुद्रविणो ददाशो ऽनागास्त्वमदिते सर्वताता ।
यं भद्रेण शवसा चोदयासि प्रजावता राधसा ते स्याम २७०

स त्वमग्ने सौभगत्वस्य विद्वान् अस्माकमायुः प्र तिरेह देव ।
तन् नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः २७१

॥ ३१ ॥ (ऋ० १ । १२७ । १—११)

[२७२—२९१] परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, २७७ अतिधृतिः ।

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।
घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषा ऽऽजुह्वानस्य सर्पिषः २७२

यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां विप्र मन्मभिर् विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः ।
परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम् ।
शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु जूतये विशः २७३

स हि पुरू चिदोजसा विरुक्मता दीद्यानो भवति द्रुहंतरः परशुर्न द्रुहंतरः ।
वीळु चिद् यस्य समृतौ श्रुवद् वनेव यत् स्थिरम् ।
निष्षहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते २७४

दृळ्हा चिदस्मा अनु दुर्यथा विदे तेजिष्ठाभिररणिभिर्दाष्ट्यवसे ऽग्नये दाष्ट्यवसे ।
प्र यः पुरूणि गाहते तक्षद् वनेव शोचिषा ।
स्थिरा चिदन्ना नि रिणात्योजसा नि स्थिराणि चिदोजसा २७५

तमस्य पृक्षमुपरासु धीमहि नक्तं यः सुदर्शतरो दिवातराद् अप्रायुषे दिवातरात् ।
आदस्यायुर्ग्रभणवद् वीळु शर्म न सूनवे ।
भक्तमभक्तमवो व्यन्तो अजरा अग्नयो व्यन्तो अजराः २७६

स हि शर्धो न मारुतं तुविष्वणिर् अप्नस्वतीषूर्वरास्विष्टनिर् आर्तनास्विष्टनिः ।
आदद्धव्यान्याददिर् यज्ञस्य केतुरर्हणा ।
अध स्मास्य हर्षतो हृषीवतो विश्वे जुषन्त पन्थां नरः शुभे न पन्थाम् २७७

द्विता यदीं कीस्तासो अभिद्यवो नमस्यन्त उपवोचन्त भृगवो मथ्नन्तो दाशा भृगवः ।
अग्निरीशे वसूनां शुचिर्यो धर्णिरेषाम् ।
प्रियाँ अपिधीँर्वनिषीष्ट मेधिर आ वनिषीष्ट मेधिरः २७८

विश्वासां त्वा विशां पतिं हवामहे सर्वासां समानं दंपतिं भुजे सत्यगिर्वाहसं भुजे।
अतिथिं मानुषाणां पितुर्न यस्यासया।
अमी च विश्वे अमृतास आ वयो हव्या देवेष्वा वयः २७९

त्वमग्ने सहसा सहन्तमः शुष्मिन्तमो जायसे देवतातये रयिर्न देवतातये।
शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युम्निन्तम उत क्रतुः।
अध स्मा ते परि चरन्त्यजर श्रुष्टीवानो नाजर २८०

प्र वो महे सहसा सहस्वत उषर्बुधे पशुषे नाग्नये स्तोमो बभूत्वग्नये।
प्रति यदीं हविष्मान् विश्वासु क्षासु जोगुवे।
अग्रे रेभो न जरत ऋषूणां जूर्णिर्होत ऋषूणाम् २८१

स नो नेदिष्ठं ददृशान आ भर अग्ने देवेभिः सचनाः सुचेतुना महो रायः सुचेतुना।
महि शविष्ठ नस्कृधि संचक्षे भुजे अस्यै।
महि स्तोतृभ्यो मघवन् त्सुवीर्यं मथीरुग्रो न शवसा २८२

॥ ३२ ॥ (ऋ० १ । १२८ । १-८)

अयं जायत मनुषो धरीमणि होता यजिष्ठ उशिजामनु व्रतम् अग्निः स्वमनु व्रतम्।
विश्वश्रुष्टिः सखीयते रयिरिव श्रवस्यते।
अदब्धो होता नि षददिळस्पदे परिवीत इळस्पदे २८३

तं यज्ञसाधमपि वातयामसि ऋतस्य पथा नमसा हविष्मता देवताता हविष्मता।
स न ऊर्जामुपाभृत्य अया कृपा न जूर्यति।
यं मातरिश्वा मनवे परावतो देवं भाः परावतः २८४

एवेन सद्यः पर्येति पार्थिवं मुहुर्गी रेतो वृषभः कनिक्रदद् दधद् रेतः कनिक्रदत्।
शतं चक्षाणो अक्षभिर् देवो वनेषु तुर्वणिः।
सदो दधान उपरेषु सानुष्वग्निः परेषु सानुषु २८५

स सुक्रतुः पुरोहितो दमेदमे ऽग्निर्यज्ञस्याध्वरस्य चेतति क्रत्वा यज्ञस्य चेतति।
क्रत्वा वेधा इषूयते विश्वा जातानि पस्पशे।
यतो घृतश्रीरतिथिरजायत वह्निर्वेधा अजायत २८६

ऋत्वा यदस्य तविषीषु पृञ्चते ऽग्नेरवेण मरुतां न भोज्या इषिराय न भोज्या ।
स हि ष्मा दानमिन्वति वसूनां च मज्मना ।
स नस् त्रासते दुरितादभिहुतः शंसादघादभिहुतः २८७

विश्वो विहाया अरतिर्वसुर्दधे हस्ते दक्षिणे तरणिर्न शिश्रथच् छ्रवस्यया न शिश्रथत् ।
विश्वस्मा इदिषुध्यते देवत्रा हव्यमोहिषे ।
विश्वस्मा इत् सुकृते वारमृण्वति अग्निर्द्वारा व्यृण्वति २८८

स मानुषे वृजने शंतमो हितो३ ऽग्निर्यज्ञेषु जेन्यो न विश्पतिः प्रियो यज्ञेषु विश्पतिः ।
स हव्या मानुषाणाम् इळा कृतानि पत्यते ।
स नस् त्रासते वरुणस्य धूर्तेर् महो देवस्य धूर्तेः २८९

अग्निं होतारमीळते वसुधितिं प्रियं चेतिष्ठमरतिं न्येरिरे हव्यवाहं न्येरिरे ।
विश्वायुं विश्ववेदसं होतारं यजतं कविम् ।
देवासो रण्वमवसे वसूयवो गीर्भी रण्वं वसूयवः २९०

॥ ३३ ॥ (ऋ० १ । १३९ । ७)

ओ षू णो अग्ने शृणुहि त्वमीळितो देवेभ्यो ब्रवसि यज्ञियेभ्यो राजभ्यो यज्ञियेभ्यः ।
यद्ध त्यामङ्गिरोभ्यो धेनुं देवा अदत्तन ।
वि तां दुह्रे अर्यमा कर्तरी सचाँ एष तां वेद मे सचा २९१

॥ ३४ ॥ (ऋ० १ । १४० । १-१३)

[२९२-३००] दीर्घतमा औचथ्यः । जगती, ३०१ त्रिष्टुब्वा, ३०३-४ त्रिष्टुप् ।

वेदिषदे प्रियधामाय सुद्युते धासिमिव प्र भरा योनिमग्नये ।
वस्त्रेणेव वासया मन्मना शुचिं ज्योतीरथं शुक्रवर्णं तमोहनम् २९२

अभि द्विजन्मा त्रिवृदन्नमृज्यते संवत्सरे वावृधे जग्धमी पुनः ।
अन्यस्यासा जिह्वया जेन्यो वृषा न्य१न्येन वनिनो मृष्ट वारणः २९३

कृष्णप्रुतौ वेविजे अस्य सक्षिता उभा तरेते अभि मातरा शिशुम् ।
प्राचाजिह्वं ध्वसयन्तं तृषुच्युतम् आ साच्यं कुपयं वर्धनं पितुः २९४

मुमुक्ष्वो३ मनवे मानवस्यते रघुद्रुवः कृष्णसीतास ऊ जुवः ।
असमना अजिरासो रघुष्यदो वातजूता उप युज्यन्त आशवः २९५

आदस्य ते ध्वसयन्तो वृथेरते कृष्णमभ्वं महि वर्पः करिक्रतः ।
यत् सीं महीमवनिं प्राभि मर्मृशद् अभिश्वसन् त्स्तनयन्नेति नानदत् २९६

भूषन् न योऽधि बभ्रूषु नम्नते वृषेव पत्नीरभ्येति रोरुवत् ।
ओजायमानस् तन्वश्च शुम्भते भीमो न शृङ्गा दविधाव दुर्गृभिः २९७

स संस्तिरो विष्टिरः सं गृभायति जानन्नेव जानतीर्नित्य आ शये ।
पुनर्वर्धन्ते अपि यन्ति देव्यम् अन्यद् वर्पः पित्रोः कृण्वते सचा २९८

तमग्रुवः केशिनीः सं हि रेभिर ऊर्ध्वास् तस्थुर्मम्रुषीः प्रायवे पुनः ।
तासां जरां प्रमुञ्चन्नेति नानदद् असुं परं जनयञ्जीवमस्तृतम् २९९

अधीवासं परि मातू रिहन्नह तुविग्रेभिः सत्वभिर्याति वि ज्रयः ।
वयो दधत् पद्वते रेरिहत् सदा अनु श्येनी सचते वर्तनीरह ३००

अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिहि अध श्वसीवान् वृषभो दमूनाः ।
अवास्या शिशुमतीरदीदेर् वर्मेव युत्सु परिजर्भुराणः ३०१

इदमग्ने सुधितं दुर्धितादधि प्रियादु चिन् मन्मनः प्रेयो अस्तु ते ।
यत् ते शुक्रं तन्वो३ रोचते शुचि तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम् ३०२

रथाय नावमुत नो गृहाय नित्यारित्रां पद्वतीं रास्यग्ने ।
अस्माकं वीराँ उत नो मघोनो जनाँश्च या पारयाच्छर्म या च ३०३

अभी नो अग्न उक्थमिज् जुगुर्या द्यावाक्षामा सिन्धवश्च स्वगूर्ताः ।
गव्यं यव्यं यन्तो दीर्घाहा इषं वरमरुण्यो वरन्त ३०४

॥ ३५ ॥ (ऋ० १ । १४१ । १-१३) जगती, ३१६-१७ त्रिष्टुप् ।

बळित्था तद् वपुषे धायि दर्शतं देवस्य भर्गः सहसो यतो जनि ।
यदीमुप ह्वरते साधते मतिर् ऋतस्य धेना अनयन्त सस्रुतः ३०५

पृक्षो वपुः पितुमान् नित्य आ शये द्वितीयमा सप्तशिवासु मातृषु ।
तृतीयमस्य वृषभस्य दोहसे दशप्रमतिं जनयन्त योषणः ३०६

निर्यदीं बुध्नान् महिषस्य वर्पस ईशानासः शवसा क्रन्त सूरयः ।
यदीमनु प्रदिवो मध्व आधवे गुहा सन्तं मातरिश्वा मथायति ३०७

प्र यत् पितुः परमान्नीयते पर्या पृक्षुधो वीरुधो दंसु रोहति ।
उभा यदस्य जनुषं यदिन्वत आदिद् यविष्ठो अभवद् घृणा शुचिः ३०८
आदिन्मातॄराविशद् यास्वा शुचिर् अहिंस्यमान उर्विया वि वावृधे ।
अनु यत् पूर्वा अरुहत् सनाजुवो नि नव्यसीष्ववरासु धावते ३०९
आदिद्धोतारं वृणते दिविष्टिषु भगमिव पपृचानास ऋञ्जते ।
देवान् यत् क्रत्वा मज्मना पुरुष्टुतो मर्तं शंसं विश्वधा वेति धायसे ३१०
वि यदस्थाद् यजतो वातचोदितो ह्वारो न वक्वा जरणा अनाकृतः ।
तस्य पत्मन् दक्षुषः कृष्णजंहसः शुचिजन्मनो रज आ व्यध्वनः ३११
रथो न यातः शिक्वभिः कृतो द्याम् अङ्गेभिररुषेभिरीयते ।
आदस्य ते कृष्णासो दक्षि सूरयः शूरस्येव त्वेषथादीषते वयः ३१२
त्वया ह्यग्ने वरुणो धृतव्रतो मित्रः शाशद्रे अर्यमा सुदानवः ।
यत् सीमनु क्रतुना विश्वथा विभुर् अरान् न नेमिः परिभूरजायथाः ३१३
त्वमग्ने शशमानाय सुन्वते रत्नं यविष्ठ देवतातिमिन्वसि ।
तं त्वा नु नव्यं सहसो युवन् वयं भगं न कारे महिरत्न धीमहि ३१४
अस्मे रयिं न स्वर्थं दमूनसं भगं दक्षं न पपृचासि धर्णसिम् ।
रश्मीँरिव यो यमति जन्मनी उभे देवानां शंसमृत आ च सुक्रतुः ३१५
उत नः सुद्योत्मा जीराश्वो होता मन्द्रः शृणवच् चन्द्ररथः ।
स नो नेषन्नेषतमैरमूरो ऽग्निर्वामं सुवितं वस्यो अच्छ ३१६
अस्ताव्यग्निः शिमीवद्भिरर्कैः साम्राज्याय प्रतरं दधानः ।
अमी च ये मघवानो वयं च मिहं न सूरो अति निष्टतन्युः ३१७

॥ ३६ ॥ (ऋ० १ । १४३ । १-८) जगती, ३२५ त्रिष्टुप् ।

प्र तव्यसीं नव्यसीं धीतिमग्नये वाचो मतिं सहसः सूनवे भरे ।
अपां नपाद् यो वसुभिः सह प्रियो होता पृथिव्यां न्यसीददृत्वियः ३१८
स जायमानः परमे व्योमनि आविरग्निरभवन् मातरिश्वने ।
अस्य क्रत्वा समिधानस्य मज्मना प्र द्यावा शोचिः पृथिवी अरोचयत् ३१९

अस्य त्वेषा अजरा अस्य भानवः सुसंदृशः सुप्रतीकस्य सुद्युतः ।
भात्वक्षसो अत्यक्तुर्न सिन्धवो ऽग्ने रेजन्ते असंसन्तो अजराः ३२०
यमेरिरे भृगवो विश्ववेदसं नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्मना ।
अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमे य एको वस्वो वरुणो न राजति ३२१
न यो वराय मरुतामिव स्वनः सेनेव सृष्टा दिव्या यथाशनिः ।
अग्निर्जम्भैस् तिगितैरत्ति भर्वति योधो न शत्रून् त्स वना न्यृञ्जते ३२२
कुविन्नो अग्निरुचथस्य वीरसद् वसुष्कुविद् वसुभिः काममावरत् ।
चोदः कुवित् तुतुज्यात् सातये धियः शुचिप्रतीकं तमया धिया गृणे ३२३
घृतप्रतीकं व ऋतस्य धूर्षदम् अग्निं मित्रं न समिधान ऋञ्जते ।
इन्धानो अक्रो विदथेषु दीद्यच् छुक्रवर्णामुदु नो यंसते धियम् ३२४
अप्रयुच्छन्नप्रयुच्छद्भिरग्ने शिवेभिर्नः पायुभिः पाहि शग्मैः ।
अदब्धेभिरदृपितेभिरिष्टे ऽनिमिषद्भिः परि पाहि नो जाः ३२५

॥ ३७ ॥ (ऋ० १ । १४४ । १-७) जगती ।

एति प्र होता व्रतमस्य मायया ऊर्ध्वां दधानः शुचिपेशसं धियम् ।
अभि स्रुचः क्रमते दक्षिणावृतो या अस्य धाम प्रथमं ह निंसते ३२६
अभीमृतस्य दोहना अनूषत योनौ देवस्य सदने परीवृताः ।
अपामुपस्थे विभृतो यदावसद् अध स्वधा अधयद् याभिरीयते ३२७
युयूषतः सवयसा तदिद् वपुः समानमर्थं वितरित्रता मिथः ।
आदीं भगो न हव्यः समस्मदा वोळ्हुर्न रश्मीन् त्समयंस्त सारथिः ३२८
यमीं द्वा सवयसा सपर्यतः समाने योना मिथुना समोकसा ।
दिवा न नक्तं पलितो युवाजनि पुरू चरन्नजरो मानुषा युगा ३२९
तमीं हिन्वन्ति धीतयो दश व्रिशो देवं मर्तास ऊतये हवामहे ।
धनोरधि प्रवत आ स ऋण्वति अभिव्रजद्भिर्वयुना नवाधित ३३०
त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य राजसि त्वं पार्थिवस्य पशुपा इव त्मना ।
एनी त एते बृहती अभिश्रिया हिरण्ययी वक्वरी बर्हिराशाते ३३१

अग्ने जुषस्व प्रति हर्य तद् वचो मन्द्र स्वधाव ऋतजात सुक्रतो ।
यो विश्वतः प्रत्यङ्ङसि दर्शतो रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयः ३३२

॥ ३८ ॥ (ऋ० १ । १४५ । १-५) जगती, ३३७ त्रिष्टुप् ।

तं पृच्छता स जगामा स वेद स चिकित्वाँ ईयते सा न्वीयते ।
तस्मिन्त्सन्ति प्रशिषस्तस्मिन्निष्टयः स वाजस्य शवसः शुष्मिणस्पतिः ३३३

तमित् पृच्छन्ति न सिमो वि पृच्छति स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत् ।
न मृष्यते प्रथमं नापरं वचो ऽस्य क्रत्वा सचते अप्रदृपितः ३३४

तमिद् गच्छन्ति जुह्वस्तमर्वतीर् विश्वान्येकः शृणवद् वचांसि मे ।
पुरुप्रैषस् ततुरिर्यज्ञसाधनो ऽच्छिद्रोतिः शिशुरादत्त सं रभः ३३५

उपस्थायं चरति यत् समारत सद्यो जातस् तत्सार युज्येभिः ।
अभि श्वान्तं मृशते नान्द्ये मुदे यदीं गच्छन्त्युशतीरपिष्ठितम् ३३६

स ईं मृगो अप्यो वनर्गुर् उप त्वच्युपमस्यां नि धायि ।
व्यब्रवीद् वयुना मर्त्येभ्यो ऽग्निर्विद्वाँ ऋतचिद्धि सत्यः ३३७

॥ ३९ ॥ (ऋ० १ । १४६ । १-५) त्रिष्टुप् ।

त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिं गृणीषे ऽनूनमग्निं पित्रोरुपस्थे ।
निषत्तमस्य चरतो ध्रुवस्य विश्वा दिवो रोचनापप्रिवांसम् ३३८

उक्षा महाँ अभि ववक्ष एने अजरस् तस्थावितऊतिर्ऋष्वः ।
उर्व्याः पदो नि दधाति सानौ रिहन्त्यूधो अरुषासो अस्य ३३९

समानं वत्समभि संचरन्ती विष्वग् धेनू वि चरतः सुमेके ।
अनपवृज्याँ अध्वनो मिमाने विश्वान् केताँ अधि महो दधाने ३४०

धीरासः पदं कवयो नयन्ति नाना हृदा रक्षमाणा अजुर्यम् ।
सिषासन्तः पर्यपश्यन्त सिन्धुम् आविरेभ्यो अभवत् सूर्यो नॄन् ३४१

दिदृक्षेण्यः परि काष्ठासु जेन्य ईळेन्यो महो अर्भाय जीवसे ।
पुरुत्रा यदभवत् सूरहैभ्यो गर्भेभ्यो मघवा विश्वदर्शतः ३४२

॥ ४० ॥ (ऋ० १ । १४७ । १-५)

कथा ते अग्ने शुचयन्त आयोर् ददाशुर्वाजेभिराशुषाणाः ।
उभे यत् तोके तनये दधाना ऋतस्य सामन् रणयन्त देवाः ३४३

बोधा मे अस्य वचसो यविष्ठ मंहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः।
पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति वन्दारुस् ते तन्वं वन्दे अग्ने ३४४
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन्।
ररक्ष तान् सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद् रिपवो नाह देभुः ३४५
यो नो अग्ने अररिवाँ अघायुर् अरातीवा मर्चयति द्वयेन।
मन्त्रो गुरुः पुनरस्तु सो अस्मा अनु मृक्षीष्ट तन्वं दुरुक्तैः ३४६
उत वा यः सहस्य प्रविद्वान् मर्तो मर्तं मर्चयति द्वयेन।
अतः पाहि स्तवमान स्तुवन्तम् अग्ने माकिर्नो दुरिताय धायीः ३४७

॥ ४१ ॥ (ऋ० १ । १४८ । १-५)

मथीद् यदीं विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं विश्वदेव्यम्।
नि यं दधुर्मनुष्यासु विक्षु स्वर्ण चित्रं वपुषे विभावम् ३४८
ददानमिन्न ददभन्त मन्म अग्निर्वरूथं मम तस्य चाकन्।
जुषन्त विश्वान्यस्य कर्म उपस्तुतिं भरमाणस्य कारोः ३४९
नित्ये चिन्नु यं सदने जगृभ्रे प्रशस्तिभिर्दधिरे यज्ञियासः
प्र सू नयन्त गृभयन्त इष्टौ अश्वासो न रथ्यो रारहाणाः ३५०
पुरूणि दस्मो नि रिणाति जम्भैर् आद् रोचते वन आ विभावा।
आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् अस्तुर्न शर्यामसनामनु द्यून् ३५१
न यं रिपवो न रिषण्यवो गर्भे सन्तं रेषणा रेषयन्ति।
अन्धा अपश्या न दभन्नभिख्या नित्यास ईं प्रेतारो अरक्षन् ३५२

॥ ४२ ॥ (ऋ० १ । १४९ । १-५) विराट्

महः स राय एषते पतिर्दन्न् इन इनस्य वसुनः पद आ।
उप ध्रजन्तमद्रयो विधन्नित् ३५३
स यो वृषा नरां न रोदस्योः श्रवोभिरस्ति जीवपीतसर्गः।
प्र यः सस्राणः शिश्रीत योनौ ३५४
आ यः पुरं नार्मिणीमदीदेद् अत्यः कविर्नभन्यो३ नार्वा।
सूरो न रुरुक्वाञ्छतात्मा ३५५

अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात् ।
होता यजिष्ठो अपां सधस्थे ३५६

अयं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दधे वार्याणि श्रवस्या ।
मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश ३५७

॥ ४३ ॥ (ऋ० १ । १५० । १-३) उष्णिक् ।

पुरु त्वा दाश्वान् वोचे अरिरग्ने तव स्विदा । तोदस्येव शरण आ महस्य ३५८
व्यनिनस्य धनिनः प्रहोषे चिदररुषः । कदा चन प्रजिगतो अदेवयोः ३५९
स चन्द्रो विप्र मर्त्यो महो व्राधन्तमो दिवि । प्रप्रेत् ते अग्ने वनुषः स्याम ३६०

॥ ४४ ॥ (ऋ० १ । १८९ । १-८)

(३६१-३६८) अगस्त्यो मैत्रावरुणः । त्रिष्टुप् ।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम ३६१

अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान् स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शं योः ३६२

अग्ने त्वमस्मद् युयोध्यमीवा अनग्नित्रा अभ्यमन्त कृष्टीः ।
पुनरस्मभ्यं सुवितायं देव क्षां विश्वेभिरमृतेभिर्यजत्र ३६३

पाहि नो अग्ने पायुभिरजस्रैर् उत प्रिये सदन आ शुशुक्वान् ।
मा ते भयं जरितारं यविष्ठ नूनं विदन् मापरं सहस्वः ३६४

मा नो अग्नेऽव सृजो अघाय अविष्यवे रिपवे दुच्छुनायै ।
मा दत्वते दशते मादते नो मा रीषते सहसावन् परा दाः ३६५

वि घ त्वावाँ ऋतजात यंसद् गृणानो अग्ने तन्वे वरूथम् ।
विश्वाद् रिरिक्षोरुत वा निनित्सोर् अभिह्रुतामसि हि देव विष्पद् ३६६

त्वं ताँ अग्न उभयान् वि विद्वान् वेषि प्रपित्वे मनुषो यजत्र ।
अभिपित्वे मनवे शास्यो भूर् मर्मृजेन्य उशिग्भिर्नाक्रः ३६७

अवोचाम निवचनान्यस्मिन् मानस्य सूनुः सहसाने अग्नौ ।
वयं सहस्रमृषिभिः सनेम विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ३६८

॥ ४५ ॥ (ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलं २, सूक्तं १, मन्त्राः १-१६)
जगती । (३६९—४१५) गृत्समदः शौनकः (आङ्गिरसः शौनहोत्रो भार्गवः) ।

त्वमग्ने द्युभिस् त्वमाशुशुक्षणिस् त्वमद्भ्यस् त्वमश्मनस् परि ।
त्वं वनेभ्यस् त्वमोषधीभ्यस् त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः ३६९

तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः ।
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश् च नो दमे ३७०

त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वं विष्णुरुरुगायो नमस्यः ।
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरंध्या । ३७१

त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस् त्वं मित्रो भवसि दस्म ईड्यः ।
त्वमर्यमा सत्पतिर्यस्य संभुजं त्वमंशो विदथे देव भाजयुः ३७२

त्वमग्ने त्वष्टा विधते सुवीर्यं तव ग्नावो मित्रमहः सजात्यम् ।
त्वमाशुहेमा ररिषे स्वश्व्यं त्वं नरां शर्धो असि पुरूवसुः ३७३

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस् त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे ।
त्वं वातैररुणैर्यासि शंगयस् त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मना ३७४

त्वमग्ने द्रविणोदा अरंकृते त्वं देवः सविता रत्नधा असि ।
त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे त्वं पायुर्दमे यस् तेऽविधत् ३७५

त्वामग्ने दम आ विश्पतिं विशस् त्वां राजानं सुविदत्रमृञ्जते ।
त्वं विश्वानि स्वनीक पत्यसे त्वं सहस्राणि शता दश प्रति ३७६

त्वामग्ने पितरमिष्टिभिर्नरस् त्वां भ्रात्राय शम्या तनूरुचम् ।
त्वं पुत्रो भवसि यस् तेऽविधत् त्वं सखा सुशेवः पास्याधृषः ३७७

त्वमग्न ऋभुराके नमस्य1स् त्वं वाजस्य क्षुमतो राय ईशिषे ।
त्वं वि भास्यनु दक्षि दावने त्वं विशिक्षुरसि यज्ञमातनिः ३७८

त्वमग्ने अदितिर्देव दाशुषे त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा ।
त्वमिळा शतहिमासि दक्षसे त्वं वृत्रहा वसुपते सरस्वती ३७९

त्वमग्ने सुभृत उत्तमं वयस् तव स्पार्हे वर्ण आ संदृशि श्रियः ।
त्वं वाजः प्रतरणो बृहन्नसि त्वं रयिर्बहुलो विश्वतस्पृथुः ३८०

त्वाम॑ग्न आदि॒त्यास॑ आ॒स्यं१॒ त्वां जि॒ह्वां शुच॑यश् चक्रिरे कवे ।
त्वां रा॑ति॒षाचो॑ अध्व॒रेषु॑ सश्चिरे त्वे दे॒वा ह॒विर॑द॒न्त्याहु॑तम् । ३८१

त्वे अ॑ग्ने॒ विश्वे॑ अ॒मृता॑सो अ॒द्रुह॑ आ॒सा दे॒वा ह॒विर॑द॒न्त्याहु॑तम्
त्वया॒ मर्ता॑सः स्वदन्त आसु॒तिं त्वं गर्भो॑ वी॒रुधां॑ जज्ञिषे॒ शुचि॑ः ३८२

त्वं तान्त्सं च॒ प्रति॑ चासि म॒ज्मना अग्ने॑ सुजात॒ प्र च॑ देव रिच्यसे ।
पृ॒क्षो यद॑त्र महि॒ना वि ते॒ भुव॒द् अनु॒ द्यावा॑पृथि॒वी रोद॑सी उ॒भे ३८३

ये स्तो॒तृभ्यो॒ गोअ॑ग्रा॒मश्व॑पेशस॒म् अग्ने॑ रा॒तिमु॑पसृ॒जन्ति॑ सू॒रय॑ः ।
अ॒स्मा॒ञ्च॒ तांश्च॒ प्र हि नेषि॒ वस्य॒ आ बृ॒हद् व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीरा॑ः ३८४

॥ ४६ ॥ (ऋ० २ । २ । १-१३)

य॒ज्ञेन॑ वर्धत जा॒तवे॑दसम् अ॒ग्निं य॑जध्वं ह॒विषा॒ तना॑ गि॒रा ।
स॒मि॒धा॒नं सु॑प्र॒यसं॒ स्व॑र्णरं द्यु॒क्षं होता॑रं वृ॒जने॑षु धूर्षद॑म् ३८५

अ॒भि त्वा॒ नक्ती॑रु॒षसो॑ ववाशि॒रे अग्ने॑ व॒त्सं न स्वस॑रेषु धे॒नव॑ः ।
दि॒व इ॒वेद॑र॒तिर्मानु॑षा यु॒गा आ क्षपो॑ भासि पुरुवार सं॒यत॑ः ३८६

तं दे॒वा बु॒ध्ने रज॑सः सु॒दंस॑सं दि॒वस्पृ॑थि॒व्योर॑र॒तिं न्ये॑रिरे ।
रथ॑मिव॒ वेद्यं॑ शु॒क्रशो॑चिषम् अ॒ग्निं मि॒त्रं न क्षि॒तिषु॑ प्र॒शंस्य॑म् ३८७

तमु॒क्षमा॑णं॒ रज॑सि॒ स्व आ दमे॑ च॒न्द्रमि॑व सु॒रुचं॑ ह्वा॒र आ द॑धुः ।
पृश्न्या॑ः पत॒रं चि॒तय॑न्तम॒क्षभि॑ः पा॒थो न पा॒युं जन॑सी उ॒भे अनु॑ ३८८

स होता॒ विश्वं॒ परि॑ भूत्वध्व॒रं तमु॑ ह॒व्यैर्मनु॑ष ऋञ्जते गि॒रा ।
हि॒रि॒शि॒प्रो वृ॑धसा॒नासु॒ जर्भु॑र॒द् द्यौर्न स्तृ॒भिश् चि॑तय॒द् रोद॑सी॒ अनु॑ ३८९

स नो॑ रे॒वत् स॑मिधा॒नः स्व॒स्तये॑ संद॑द॒स्वान् र॒यिम॒स्मासु॑ दीदिहि ।
आ नः॑ कृणुष्व सुवि॒ताय॒ रोद॑सी॒ अग्ने॑ ह॒व्या मनु॑षो देव वी॒तये॑ ३९०

दा नो॑ अग्ने बृह॒तो दाः स॑हस्रि॒णो दु॒रो न वाजं॒ श्रुत्या॒ अपा॑ वृधि ।
प्राची॒ द्यावा॑पृथि॒वी ब्रह्म॑णा कृधि॒ स्व१॒र्ण शु॒क्रमु॒षसो॒ वि दि॑द्युतुः ३९१

स इ॑धा॒न उ॒षसो॒ राम्या॒ अनु॒ स्व१॒र्ण दी॑देदरु॒षेण॑ भा॒नुना॑ ।
होत्रा॑भिर॒ग्निर्मनु॑षः स्वध्व॒रो राजा॑ वि॒शामति॑थि॒श् चारु॑राय॒वे ३९२

एवा नो अग्ने अमृतेषु पूर्व्य धीष् पीपाय बृहद्दिवेषु मानुषा ।
दुहाना धेनुर्वृजनेषु कारवे त्मना शतिनं पुरुरूपमिषणि ३९३

वयमग्ने अर्वता वा सुवीर्यं ब्रह्मणा वा चितयेमा जनाँ अति ।
अस्माकं द्युम्नमधि पञ्च कृष्टिषु उच्चा स्वर्ण शुशुचीत दुष्टरम् ३९४

स नो बोधि सहस्य प्रशंस्यो यस्मिन् त्सुजाता इषयन्त सूरयः ।
यमग्ने यज्ञमुपयन्ति वाजिनो नित्ये तोके दीदिवांसं स्वे दमे ३९५

उभयासो जातवेदः स्याम ते स्तोतारो अग्ने सूरयश् च शर्मणि ।
वस्वो रायः पुरुश्चन्द्रस्य भूयसः प्रजावतः स्वपत्यस्य शग्धि नः ३९६
ये स्तोतृभ्यो० (३८४)

॥ ४७ ॥ (ऋ० २ । ८ । १-६) गायत्री, ४०२ अनुष्टुप् ।

वाजयन्निव नू रथान् योगाँ अग्नेरुप स्तुहि । यशस्तमस्य मीळ्हुषः ३९७
यः सुनीथो ददाशुषे अजुर्यो जरयन्नरिं । चारुप्रतीक आहुतः ३९८
य उ श्रिया दमेष्वा दोषोषसि प्रशस्यते । यस्य व्रतं न मीयते ३९९
आ यः स्वर्ण भानुना चित्रो विभात्यर्चिषा । अञ्जानो अजरैरभि ४००
अत्रिमनु स्वराज्यम् अग्निमुक्थानि वावृधुः । विश्वा अधि श्रियो दधे ४०१
अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य देवानामूतिभिर्वयम् । अरिष्यन्तः सचेमहि अभि ष्याम पृतन्यतः ४०२

॥ ४८ ॥ (ऋ० २ । ९ । १-६) । त्रिष्टुप् ।

नि होता होतृषदने विदानस् त्वेषो दीदिवाँ असदत् सुदक्षः ।
अदब्धव्रतप्रमतिर्वसिष्ठः सहस्रंभरः शुचिजिह्वो अग्निः ४०३

त्वं दूतस् त्वमु नः परस्पास् त्वं वस्य आ वृषभ प्रणेता ।
अग्ने तोकस्य नस् तने तनूनाम् अप्रयुच्छन् दीद्यद् बोधि गोपाः ४०४

विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे ।
यस्माद् योनेरुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवींषि जुहुरे समिद्धे ४०५

अग्ने यजस्व हविषा यजीयाञ् छ्रुष्टी देष्णमभि गृणीहि राधः ।
त्वं ह्यसि रयिपती रयीणां त्वं शुक्रस्य वचसो मनोता ४०६

उभयं ते न क्षीयते वसव्यं दिवेदिवे जायमानस्य दस्म ।
कृधि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पतिं स्वपत्यस्य रायः ४०७

सैनानीकेन सुविदत्रो अस्मे यष्टा देवाँ आयजिष्ठः स्वस्ति ।
अदब्धो गोपा उत नः परस्पा अग्ने द्युमदुत रेवद् दिदीहि ४०८

॥ ४९ ॥ (ऋ० २ । १० । १-६)

जोहूत्रो अग्निः प्रथमः पितेव इळस्पदे मनुषा यत् समिद्धः ।
श्रियं वसानो अमृतो विचेता मर्मृजेन्यः श्रवस्यः स वाजी ४०९

श्रूया अग्निश् चित्रभानुर्हवं मे विश्वाभिर्गीर्भिरमृतो विचेताः ।
श्यावा रथं वहतो रोहिता वा उतारुषाह चक्रे विभृत्रः ४१०

उत्तानायामजनयन् त्सुषूतं भुवदग्निः पुरुपेशासु गर्भः ।
शिरिणायां चिदक्तुना महोभिर् अपरीवृतो वसति प्रचेताः ४११

जिघर्म्यग्निं हविषा घृतेन प्रतिक्षियन्तं भुवनानि विश्वा ।
पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तं व्यचिष्ठमन्नै रभसं दृशानं ४१२

आ विश्वतः प्रत्यञ्चं जिघर्मि अरक्षसा मनसा तज्जुषेत ।
मर्यश्रीः स्पृहयद् वर्णो अग्निर् नाभिमृशे तन्वा३ जर्भुराणः ४१३

ज्ञेया भागं सहसानो वरेण त्वादूतासो मनुवद् वदेम ।
अनूनमग्निं जुह्वा वचस्या मधुपृचं धनसा जोहवीमि ४१४

॥ ५० ॥ (ऋ० २ । ४१ । १९ तृतीयः पादः) गायत्री ।

अग्निं च हव्यवाहनम् ४१५

॥ ५१ ॥ (ऋ० २ । ४ । १-२) (४१६-४४६) सोमाहुतिर्भार्गवः । त्रिष्टुप् ।

हुवे वः सुद्योत्मानं सुवृक्तिं विशामग्निमतिथिं सुप्रयसम् ।
मित्र इव यो दिधिषाय्यो भूद् देव आदेवे जने जातवेदाः ४१६

इमं विधन्तो अपां सधस्थे द्वितादधुर्भृगवो विक्ष्वा३योः ।
एष विश्वान्यभ्यस्तु भूमा देवानामग्निररतिर्जीराश्वः ४१७

अग्निं देवासो मानुषीषु विक्षु प्रियं धुः क्षेष्यन्तो न मित्रम् ।
स दीदयदुशतीरूर्म्या आ दक्षाय्यो यो दास्वते दम आ ४१८

अस्य रण्वा स्वस्येव पुष्टिः संदृष्टिरस्य हियानस्य दक्षोः ।
वि यो भरिभ्रदोषधीषु जिह्वाम् अत्यो न रथ्यो दोधवीति वारान् ४१९
आ यन्मे अभ्वं वनदः पनन्त उशिग्भ्यो नामिमीत वर्णम् ।
स चित्रेण चिकिते रंसु भासा जुजुर्वाँ यो मुहुरा युवा भूत् ४२०
आ यो वना तातृषाणो न भाति वार्ण पथा रथ्येव स्वानीत् ।
कृष्णाध्वा तपू रण्वश् चिकेत द्यौरिव स्मयमानो नभोभिः ४२१
स यो व्यस्थादभि दक्षदुर्वी पशुर्नैति स्वयुरगोपाः ।
अग्निः शोचिष्माँ अतसान्युष्णन् कृष्णव्यथिरस्वदयन्न भूम ४२२
नू ते पूर्वस्यावसो अधीतौ तृतीये विदथे मन्म शंसि ।
अस्मे अग्ने संयद्वीरं बृहन्तं क्षुमन्तं वाजं स्वपत्यं रयिं दाः ४२३
त्वया यथा गृत्समदासो अग्ने गुहा वन्वन्त उपराँ अभि ष्युः ।
सुवीरासो अभिमातिषाहः स्मत् सूरिभ्यो गृणते तद् वयो धाः ४२४

॥ ५२ ॥ (ऋ० २।५।१-८)। अनुष्टुप्।

होताजनिष्ट चेतनः पिता पितृभ्य ऊतये ।
प्रयक्षञ्जेन्यं वसु शकेम वाजिनो यमम् ४२५
आ यस्मिन् त्सप्त रश्मयस् तता यज्ञस्य नेतरि ।
मनुष्वद् दैव्यमष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति ४२६
दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्माणि वेरु तत् ।
परि विश्वानि काव्या नेमिश् चक्रमिवाभवत् ४२७
साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि ।
विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानु रोहते ४२८
ता अस्य वर्णमायुवो नेष्टुः सचन्त धेनवः ।
कुवित् तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं ययुः ४२९
यदी मातुरुप स्वसा घृतं भरन्त्यस्थित ।
तासामध्वर्युरागतौ यवो वृष्टीव मोदते ४३०
स्वः स्वाय धायसे कृणुतामृत्विगृत्विजम् ।
स्तोमं यज्ञं चादरं वनेमा ररिमा वयम् ४३१

यथा विद्वाँ अरं करद् विश्वेभ्यो यजतेभ्यः ।
अयमग्ने त्वे अपि यं यज्ञं चकृमा वयम् ४३२

॥ ५३ ॥ (ऋ० २ । ६ । १-८) गायत्री ।

इमां मे अग्ने समिधम् इमामुपसदं वनेः । इमा उ षु श्रुधी गिरः ४३३
अया ते अग्ने विधेम ऊर्जो नपादश्वमिष्टे । एना सूक्तेन सुजात ४३४
तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं द्रविणस्युं द्रविणोदः । सपर्येम सपर्यवः ४३५
स बोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन् । युयोध्यस्मद् द्वेषांसि ४३६
स नो वृष्टिं दिवस्परि स नो वाजमनर्वाणम् । स नः सहस्रिणीरिषः ४३७
ईळानायावस्यवे यविष्ठ दूत नो गिरा । यजिष्ठ होतरा गहि ४३८
अन्तर्ह्यग्न ईयसे विद्वान् जन्मोभया कवे । दूतो जन्येव मित्र्यः ४३९
स विद्वाँ आ च पिप्रयो यक्षि चिकित्व आनुषक् । आ चास्मिन् त्सत्सि बर्हिषि ४४०

॥ ५४ ॥ (ऋ० २ । ७ । १-६)

श्रेष्ठं यविष्ठ भारत अग्ने द्युमन्तमा भर । वसो पुरुस्पृहं रयिम् ४४१
मा नो अरातिरीशत देवस्य मर्त्यस्य च । पर्षि तस्या उत द्विषः ४४२
विश्वा उत त्वया वयं धारा उदन्या इव । अति गाहेमहि द्विषः ४४३
शुचिः पावक वन्द्यो अग्ने बृहद् वि रोचसे । त्वं घृतेभिराहुतः ४४४
त्वं नो असि भारत अग्ने वशाभिरुक्षभिः । अष्टापदीभिराहुतः ४४५
द्र्वन्नः सर्पिरासुतिः प्रत्नो होता वरेण्यः । सहसस्पुत्रो अद्भुतः ४४६

॥ ५५ ॥ (ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलं ३, सूक्तं १, मन्त्राः १ - २३)
(४४७—५७३) विश्वामित्रो गाथिनः । त्रिष्टुप् ।

सोमस्य मा तवसं वक्ष्यग्ने वह्निं चकर्थ विदथे यजध्यै ।
देवाँ अच्छा दीद्यद् युञ्जे अद्रिं शमाये अग्ने तन्वं जुषस्व ४४७
प्राञ्चं यज्ञं चकृम वर्धतां गीः समिद्भिरग्निं नमसा दुवस्यन् ।
दिवः शशासुर्विदथा कवीनां गृत्साय चित् तवसे गातुमीषुः ४४८
मयो दधे मेधिरः पूतदक्षो दिवः सुबन्धुर्जनुषा पृथिव्याः ।
अविन्दन्नु दर्शतमप्स्वन्तर् देवासो अग्निमपसि स्वसृणाम् ४४९

अवर्धयन् त्सुभगं सप्त यह्वीः श्वेतं जज्ञानमरुषं महित्वा।
शिशुं न जातमभ्यारुरश्वा देवासो अग्निं जनिमन् वपुष्यन् ४५०

शुक्रेभिरङ्गै रज आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियो मिमीते बृहतीरनूनाः ४५१

वव्राजा सीमनदतीरदब्धा दिवो यह्वीरवसाना अनग्नाः।
सना अत्र युवतयः सयोनीर् एकं गर्भं दधिरे सप्त वाणीः ४५२

स्तीर्णा अस्य संहतो विश्वरूपा घृतस्य योनौ स्रवथे मधूनाम्।
अस्थुरत्र धेनवः पिन्वमाना मही दस्मस्य मातरा समीची ४५३

बभ्राणः सूनो सहसो व्यद्यौद् दधानः शुक्रा रभसा वपूंषि।
श्चोतन्ति धारा मधुनो घृतस्य वृषा यत्र वावृधे काव्येन ४५४

पितुश् चिदूधर्जनुषा विवेद व्यस्य धारा असृजद् वि धेनाः।
गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिर् दिवो यह्वीभिर्न गुहा बभूव ४५५

पितुश् च गर्भं जनितुश् च बभ्रे पूर्वीरेको अधयत् पीप्यानाः।
वृष्णे सपत्नी शुचये सबन्धू उभे अस्मै मनुष्ये३ नि पाहि ४५६

उरौ महाँ अनिबाधे ववर्ध आपो अग्निं यशसः सं हि पूर्वीः।
ऋतस्य योनावशयद् दमूना जामीनामग्निरपसि स्वसॄणाम् ४५७

अक्रो न बभ्रिः समिथे महीनां दिदृक्षेयः सूनवे भाऋजीकः।
उदुस्रिया जनिता यो जजान अपां गर्भो नृतमो यह्वो अग्निः ४५८

अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां वना जजान सुभगा विरूपम्।
देवासश् चिन्मनसा सं हि जग्मुः पनिष्ठं जातं तवसं दुवस्यन् ४५९

बृहन्त इद् भानवो भाऋजीकम् अग्निं सचन्त विद्युतो न शुक्राः।
गुहेव वृद्धं सदसि स्वे अन्तर् अपार ऊर्वे अमृतं दुहानाः ४६०

ईळे च त्वा यजमानो हविर्भिर् ईळे सखित्वं सुमतिं निकामः।
देवैरवो मिमीहि सं जरित्रे रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ४६१

उपक्षेतारस् तव सुप्रणीते अग्ने विश्वानि धन्या दधानाः।
सुरेतसा श्रवसा तुञ्जमाना अभि ष्याम पृतनायूँरदेवान् ४६२

आ देवानामभवः केतुरग्ने मन्द्रो विश्वानि काव्यानि विद्वान् ।
प्रति मर्ताँ अवासयो दमूना अनु देवान् रथिरो यासि साधन् ४६३

नि दुरोणे अमृतो मर्त्यानां राजा ससाद विदथानि साधन् ।
घृतप्रतीक उर्विया व्यद्यौद् अग्निर्विश्वानि काव्यानि विद्वान् ४६४

आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर् महान् महीभिरूतिभिः सरण्यन् ।
अस्मे रयिं बहुलं संतरुत्रं सुवाचं भागं यशसं कृधी नः ४६५

एता ते अग्ने जनिमा सनानि प्र पूर्व्याय नूतनानि वोचम् ।
महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा जन्मञ्जन्मन् निहितो जातवेदाः ४६६

जन्मञ्जन्मन् निहितो जातवेदा विश्वामित्रेभिरिध्यते अजस्रः ।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्य अपि भद्रे सौमनसे स्याम ४६७

इमं यज्ञं सहसावन् त्वं नो देवत्रा धेहि सुक्रतो रराणः ।
प्र यंसि होतर्बृहतीरिषो नो अग्ने महि द्रविणमा यजस्व ४६८

इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस् तनयो विजावा अग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ४६९

॥ ५६ ॥ (ऋ० ३ । ५ । १-११)

प्रत्यग्निरुषसश् चेकितानो ऽबोधि विप्रः पदवीः कवीनाम् ।
पृथुपाजा देवयद्भिः समिद्धो ऽप द्वारा तमसो वह्निरावः ४७०

प्रेद्वग्निर्वावृधे स्तोमेभिर् गीर्भिः स्तोतॄणां नमस्य उक्थैः ।
पूर्वीर्ऋतस्य संदृशश् चकानः सं दूतो अद्यौदुषसो विरोके ४७१

अधाय्यग्निर्मानुषीषु विक्षु अपां गर्भो मित्र ऋतेन साधन् ।
आ हर्यतो यजतः सान्वस्थाद् अभूदु विप्रो हव्यो मतीनाम् ४७२

मित्रो अग्निर्भवति यत् समिद्धो मित्रो होता वरुणो जातवेदाः ।
मित्रो अध्वर्युरिषिरो दमूना मित्रः सिन्धूनामुत पर्वतानाम् ४७३

पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश् चरणं सूर्यस्य ।
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः ४७४

ऋभुश् चक्र ईड्यं चारु नाम विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान् ।
ससस्य चर्म घृतवत् पदं वेस् तदिदग्नी रक्षत्यप्रयुच्छन् ४७५

आ योनिमग्निर्घृतवन्तमस्थात् पृथुप्रगाणमुशन्तमुशानः ।
दीद्यानः शुचिर्ऋष्वः पावकः पुनःपुनर्मातरा नव्यसी कः ४७६

सद्यो जात ओषधीभिर्ववक्षे यदी वर्धन्ति प्रस्वो घृतेन ।
आप इव प्रवता शुम्भमाना उरुष्यदग्निः पित्रोरुपस्थे ४७७

उदु ष्टुतः समिधा यह्वो अद्यौद् वर्ष्मन् दिवो अधि नाभा पृथिव्याः ।
मित्रो अग्निरीड्यो मातरिश्वा दूतो वक्षद् यजथाय देवान् ४७८

उदस्तम्भीत् समिधा नाकमृष्वोऽ३ग्निर्भवन्नुत्तमो रोचनानाम् ।
यदी भृगुभ्यः परि मातरिश्वा गुहा सन्तं हव्यवाहं समीधे ४७९
इळामग्ने० (४६९)

॥ ५७ ॥ (ऋ० ३ । ६ । १-११)

प्र कारवो मनना वच्यमाना देवद्रीचीं नयत देवयन्तः ।
दक्षिणावाड् वाजिनी प्राच्येति हविर्भरन्त्यग्नये घृताची ४८०

आ रोदसी अपृणा जायमान उत प्र रिक्था अध नु प्रयज्यो ।
दिवश् चिदग्ने महिना पृथिव्या वच्यन्तां ते वह्नयः सप्तजिह्वाः ४८१

द्यौश् च त्वा पृथिवी यज्ञियासो नि होतारं सादयन्ते दमाय ।
यदी विशो मानुषीर्देवयन्तीः प्रयस्वतीरीळते शुक्रमर्चिः ४८२

महान् त्सधस्थे ध्रुव आ निषत्तो अन्तर्द्यावा माहिने हर्यमाणः ।
आस्क्रे सपत्नी अजरे अमृक्ते सबर्दुघे उरुगायस्य धेनू ४८३

व्रता ते अग्ने महतो महानि तव क्रत्वा रोदसी आ ततन्थ ।
त्वं दूतो अभवो जायमानस् त्वं नेता वृषभ चर्षणीनाम् ४८४

ऋतस्य वा केशिना योग्याभिर् घृतस्नुवा रोहिता धुरि धिष्व ।
अथा वह देवान् देव विश्वान् त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ४८५

दिवश् चिदा ते रुचयन्त रोका उषो विभातीरनु भासि पूर्वीः ।
अपो यदग्न उशधग् वनेषु होतुर्मन्द्रस्य पनयन्त देवाः ४८६

उरौ वा ये अन्तरिक्षे मदन्ति दिवो वा ये रोचने सन्ति देवाः ।
ऊमा वा ये सुहवासो यजत्रा आयेमिरे रथ्यो अग्ने अश्वाः ४८७

ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः ।
पत्नीवतस् त्रिंशतं त्रींश् च देवान् अनुष्वधमा वह मादयस्व ४८८*

स होता यस्य रोदसी चिदुर्वी यज्ञंयज्ञमभि वृधे गृणीतः ।
प्राची अध्वरेव तस्थतुः सुमेके ऋतावरी ऋतजातस्य सत्ये ४८९
इळामग्ने० (४६९)

॥ ५८ ॥ (ऋ० ३ । ७ । १-११)

प्र य आरुः शितिपृष्ठस्य धासेर् आ मातरा विविशुः सप्त वाणीः ।
परिक्षिता पितरा सं चरेते प्र सर्स्राते दीर्घमायुः प्रयक्षे ४९०

दिवक्षसो धेनवो वृष्णो अश्वा देवीरा तस्थौ मधुमद् वहन्तीः ।
ऋतस्य त्वा सदसि क्षेमयन्तं पर्येका चरति वर्तनिं गौः ४९१

आ सीमरोहत् सुयमा भवन्तीः पतिश् चिकित्वान् रयिविद् रयीणाम् ।
प्र नीलपृष्ठो अतसस्य धासेस् ता अवासयत् पुरुधप्रतीकः ४९२

महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्तीरजुर्यं स्तभूयमानं वहतो वहन्ति ।
व्यङ्गेभिर्दिद्युतानः सधस्थ एकामिव रोदसी आ विवेश ४९३

जानन्ति वृष्णो अरुषस्य शेवम् उत ब्रध्नस्य शासने रणन्ति ।
दिवोरुचः सुरुचो रोचमाना इळा येषां गण्या माहिना गीः ४९४

उतो पितृभ्यां प्रविदानु घोषं महो महद्भ्यामनयन्त शूषम् ।
उक्षा ह यत्र परि धानमक्तोर् अनु स्वं धाम जरितुर्ववक्ष ४९५

अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त विप्राः प्रियं रक्षन्ते निहितं पदं वेः ।
प्राञ्चो मदन्त्युक्षणो अजुर्या देवा देवानामनु हि व्रता गुः ४९६

दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति ।
ऋतं शंसन्त ऋतमित् त आहुर् अनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः ४९७

वृषायन्ते महे अत्याय पूर्वीर् वृष्णे चित्राय रश्मयः सुयामाः ।
देव होतर्मन्द्रतरश् चिकित्वान् महो देवान् रोदसी एह वक्षि ४९८

---

* ४८८ अथर्व० २० । १३ । ४

पृक्षप्रयजो द्रविणः सुवाचः सुकेतवं उषसो रेवदूषुः । ४९९
उतो चिदग्ने महिना पृथिव्याः कृतं चिदेनः सं महे दशस्य

इळामग्ने० (४६९)

॥ ५९ ॥ (ऋ० ३।९।१—९) बृहती, ५०८ त्रिष्टुप् ।

सखायस् त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये । ५००
अपां नपातं सुभगं सुदीदितिं सुप्रतूर्तिमनेहसम्

कायमानो वना त्वं यन्मातॄरजगन्नपः । ५०१
न तत् ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभवः

अतिं तृष्टं ववक्षिथ अथैव सुमना असि । ५०२
प्रप्रान्ये यन्ति पर्यन्य आसते येषां सख्ये असि श्रितः

ईयिवांसमति स्रिधः शश्वतीरति सश्चतः । ५०३
अन्वीमविन्दन् निचिरासो अद्रुहो अप्सु सिंहमिव श्रितम्

ससृवांसमिव त्मना अग्निमित्था तिरोहितम् । ५०४
ऐनं नयन् मातरिश्वा परावतो देवेभ्यो मथितं परि

तं त्वा मर्ता अगृभ्णत देवेभ्यो हव्यवाहन । ५०५
विश्वान् यद् यज्ञाँ अभिपासि मानुष तव क्रत्वा यविष्ठ्य

तद् भद्रं तव दंसना पाकाय चिच्छदयति । ५०६
त्वां यदग्ने पशवः समासते समिद्धमपिशर्वरे

आ जुहोता स्वध्वरं शीरं पावकशोचिषम् । ५०७
आशुं दूतमजिरं प्रत्नमीड्यं श्रुष्टी देवं सपर्यत

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् । ५०८
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त

॥ ६० ॥ (ऋ० ३।१०।१-९)। उष्णिक् ।

त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं चर्षणीनाम् । देवं मर्तास इन्धते समध्वरे ५०९
त्वां यज्ञेष्वृत्विजम् अग्ने होतारमीळते । गोपा ऋतस्य दीदिहि स्वे दमे ५१०
स घा यस् ते ददाशति समिधा जातवेदसे । सो अग्ने धत्ते सुवीर्यं स पुष्यति ५११

स केतुरध्वराणाम् अग्निर्देवेभिरा गमत् । अञ्जानः सप्त होतृभिर्हविष्मते ५१२
प्र होत्रे पूर्व्यं वचो अग्नये भरता बृहत् । विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे ५१३
अग्निं वर्धन्तु नो गिरो यतो जायत उक्थ्यः । महे वाजाय द्रविणाय दर्शतः ५१४
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज । होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिधः ५१५
स नः पावक दीदिहि द्युमदस्मे सुवीर्यम् । भवा स्तोतृभ्यो अन्तमः स्वस्तये ५१६
तं त्वा विप्रा विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम् ५१७

॥ ६१ ॥ (ऋ० ३ । ११ । १–९) गायत्री ।

अग्निर्होता पुरोहितो अध्वरस्य विचर्षणिः । स वेद यज्ञमानुषक् ५१८
स हव्यवाळमर्त्य उशिग् दूतश् चनोहितः । अग्निर्धिया समृण्वति ५१९
अग्निर्धिया स चेतति केतुर्यज्ञस्य पूर्व्यः । अर्थं ह्यस्य तरणि ५२०
अग्निं सूनुं सनश्रुतं सहसो जातवेदसम् । वह्निं देवा अकृण्वत ५२१
अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम् । तूर्णी रथः सदा नवः ५२२
साह्वान् विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः । अग्निस् तुविश्रवस्तमः ५२३
अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वाँ अश्नोति मर्त्यः । क्षयं पावकशोचिषः ५२४
परि विश्वानि सुधिता अग्नेरश्याम मन्मभिः । विप्रासो जातवेदसः ५२५
अग्ने विश्वानि वार्या वाजेषु सनिषामहे । त्वे देवास एरिरे ५२६

॥ ६२ ॥ (ऋ० ३ । २४ । १–५) ५२७ अनुष्टुप्; ५२८–५३१ गायत्री ।

अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य । दुष्टरस् तरन्नरातीर् वर्चो धा यज्ञवाहसे ५२७
अग्न इळा समिध्यसे वीतिहोत्रो अमर्त्यः । जुषस्व सू नो अध्वरम् ५२८
अग्ने द्युम्नेन जागृवे सहसः सूनवाहुत । एदं बर्हिः सदो मम ५२९
अग्ने विश्वेभिरग्निभिर् देवेभिर्महया गिरः । यज्ञेषु य उ चायवः ५३०
अग्ने दा दाशुषे रयिं वीरवन्तं परीणसम् । शिशीहि नः सूनुमतः ५३१

॥ ६३ ॥ (ऋ० ३ । २५ । १–५) विराट् ।

अग्ने दिवः सूनुरसि प्रचेतास् तना पृथिव्या उत विश्ववेदाः ।
ऋधग् देवाँ इह यजा चिकित्वः ५३२
अग्निः सनोति वीर्याणि विद्वान् त्सनोति वाजममृताय भूषन् ।
स नो देवाँ एह वहा पुरुक्षो ५३३

अग्निर्द्यावापृथिवी विश्वजन्ये आ भाति देवी अमृते अमूरः । ५३४
क्षयन् वाजैः पुरुश्चन्द्रो नमोभिः

अग्न इन्द्रश् च दाशुषो दुरोणे सुतावतो यज्ञमिहोप यातम् । ५३५
अमर्धन्ता सोमपेयाय देवा

अग्ने अपां समिध्यसे दुरोणे नित्यः सूनो सहसो जातवेदः । ५३६
सधस्थानि महयमान ऊती

॥ ६४ ॥ (ऋ० ३ । २७ । १-१५) गायत्री ।

प्र वो वाजा अभिद्यवो हविष्मन्तो घृताच्या । देवाञ्जिगाति सुम्नयुः ५३७
ईळे अग्निं विपश्चितं गिरा यज्ञस्य साधनम् । श्रुष्टीवानं धितावानम् ५३८
अग्ने शकेम ते वयं यमं देवस्य वाजिनः । अति द्वेषांसि तरेम ५३९
समिध्यमानो अध्वरे३ अग्निः पावक ईड्यः । शोचिष्केशस् तमीमहे ५४०
पृथुपाजा अमर्त्यो घृतनिर्णिक् स्वाहुतः । अग्निर्यज्ञस्य हव्यवाट् ५४१
तं सबाधो यतस्रुच इत्था धिया यज्ञवन्तः । आ चक्रुरग्निमूतये ५४२
होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया । विदथानि प्रचोदयन् ५४३
वाजी वाजेषु धीयते अध्वरेषु प्र णीयते । विप्रो यज्ञस्य साधनः ५४४
धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे । दक्षस्य पितरं तना ५४५
नि त्वा दधे वरेण्यं दक्षस्येळा सहस्कृत । अग्ने सुदीतिमुशिजम् ५४६
अग्निं यन्तुरमप्तुरम् ऋतस्य योगे वनुषः । विप्रा वाजैः समिन्धते ५४७
ऊर्जो नपातमध्वरे दीदिवांसमुप द्यवि । अग्निमीळे कविक्रतुम् ५४८
ईळेन्यो नमस्यस् तिरस् तमांसि दर्शतः । समग्निरिध्यते वृषा ५४९ *
वृषो अग्निः समिध्यते अश्वो न देववाहनः । तं हविष्मन्त ईळते ५५० *
वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः समिधीमहि । अग्ने दीद्यतं बृहत् ५५१ *

॥ ६५ ॥ (ऋ० ३ । २८ । १-६)
५५२-५५३, ५५७ गायत्री, ५५४ उष्णिक्, ५५५ त्रिष्टुप्, ५५६ जगती ।

अग्ने जुषस्व नो हविः पुरोळाशं जातवेदः । प्रातःसावे धियावसो ५५२
पुरोळा अग्ने पचतस् तुभ्यं वा घा परिष्कृतः । तं जुषस्व यविष्ठ्य ५५३
अग्ने वीहि पुरोळाशम् आहुतं तिरोअह्न्यम् । सहसः सूनुरस्यध्वरे हितः ५५४

* ५४९-५५१ अथर्व. २० । १०२ । १-३

माध्यंदिने सवने जातवेदः पुरोळाशमिह कवे जुषस्व ।
अग्ने यह्वस्य तव भागधेयं न प्र मिनन्ति विदथेषु धीराः ५५५

अग्ने तृतीये सवने हि कानिषः पुरोळाशं सहसः सूनवाहुतम् ।
अथा देवेष्वध्वरं विपन्यया धा रत्नवन्तममृतेषु जागृविम् ५५६

अग्ने वृधान आहुतिं पुरोळाशं जातवेदः । जुषस्व तिरोअह्न्यम् ५५७

॥ ६६ ॥ (ऋ० ३ । २९ । १-१६) त्रिष्टुपः
५५८, ५६१, ५६७, ५६९ अनुष्टुप्; ५६३, ५६८, ५७१, ५७२ जगती ।

अस्तीदमधिमन्थनम् अस्ति प्रजननं कृतम् ।
एतां विश्पत्नीमा भर अग्निं मन्थाम पूर्वथा ५५८

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इव सुधितो गर्भिणीषु ।
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर् हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ५५९

उत्तानायामव भरा चिकित्वान् त्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान ।
अरुषस्तूपो रुशदस्य पाज इळायास् पुत्रो वयुनेऽजनिष्ट ५६०

इळायास् त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्या अधि ।
जातवेदो नि धीमहि अग्ने हव्याय वोळ्हवे ५६१

मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकम् ।
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्ताद् अग्निं नरो जनयता सुशेवम् ५६२

यदी मन्थन्ति बाहुभिर्वि रोचते अश्वो न वाज्यरुषो वनेष्वा ।
चित्रो न यामन्नश्विनोरनिवृतः परि वृणक्त्यश्मनस् तृणा दहन् ५६३

जातो अग्नी रोचते चेकितानो वाजी विप्रः कविशस्तः सुदानुः ।
यं देवास ईड्यं विश्वविदं हव्यवाहमदधुरध्वरेषु ५६४

सीद होतः स्व उ लोके चिकित्वान् त्सादया यज्ञं सुकृतस्य योनौ ।
देवावीर्देवान् हविषा यजासि अग्ने बृहद् यजमाने वयो धाः ५६५

कृणोत धूमं वृषणं सखायो अस्रेधन्त इतन वाजमच्छ ।
अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवासो असहन्त दस्यून् ५६६

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः ।
तं जानन्नग्न आ सीद अथा नो वर्धया गिरः ५६७

तनूनपादुच्यते गर्भ आसुरो नराशंसो भवति यद् विजायते ।
मातरिश्वा यदमिमीत मातरि वातस्य सर्गो अभवत् सरीमणि ५६८

सुनिर्मथा निर्मथितः सुनिधा निहितः कविः ।
अग्ने स्वध्वरा कृणु देवान् देवयते यज ५६९

अजीजनन्नमृतं मर्त्यासो अस्रेमाणं तरणिं वीळुजम्भम् ।
दश स्वसारो अग्रुवः समीचीः पुमांसं जातमभि सं रभन्ते ५७०

प्र सप्तहोता सनकादरोचत मातुरुपस्थे यदशोचदूधनि ।
न नि मिषति सुरणो दिवेदिवे यदसुरस्य जठरादजायत ५७१

अमित्रायुधो मरुतामिव प्रयाः प्रथमजा ब्रह्मणो विश्वमिद् विदुः ।
द्युम्नवद् ब्रह्म कुशिकास एरिर एकएको दमे अग्निं समीधिरे ५७२

यदद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन् होतश् चिकित्वोऽवृणीमहीह ।
ध्रुवमया ध्रुवमुताशमिष्ठाः प्रजानन् विद्वाँ उप याहि सोमम् ५७३

॥ ६७ ॥ (ऋ० ३ । १३ । १-७) [५७४-५८१] ऋषभो वैश्वामित्रः । अनुष्टुप् ।

प्र वो देवायाग्नये बर्हिष्ठमर्चास्मै ।
गमद् देवेभिरा स नो यजिष्ठो बर्हिरा सदत् ५७४

ऋतावा यस्य रोदसी दक्षं सचन्त ऊतयः ।
हविष्मन्तस् तमीळते तं सनिष्यन्तोऽवसे ५७५

स यन्ता विप्र एषां स यज्ञानामथा हि षः ।
अग्निं तं वो दुवस्यत दाता यो वनिता मघम् ५७६

स नः शर्माणि वीतये अग्निर्यच्छतु शंतमा ।
यतो नः प्रुष्णवद् वसु दिवि क्षितिभ्यो अप्स्वा ५७७

दीदिवांसमपूर्व्यं वस्वीभिरस्य धीतिभिः ।
ऋक्वाणो अग्निमिन्धते होतारं विश्पतिं विशाम् ५७८

उत नो ब्रह्मन्नविष उक्थे... तमः ।
शं नः शोचा मरुद्वृधो अग्ने सहस्रसातमः ५७९

नू नो रास्व सहस्रवत् तोकवत् पुष्टिमद् वसु ।
द्युमदग्ने सुवीर्यं वर्षिष्ठमनुपक्षितम् ५८०

॥ ६८ ॥ (ऋ० ३ । १४ । १-७) त्रिष्टुप् ।

आ होता मन्द्रो विदथान्यस्थात् सत्यो यज्वा कवितमः स वेधाः ।
विद्युद्रथः सहसस्पुत्रो अग्निः शोचिष्केशः पृथिव्यां पाजो अश्रेत् ५८१

अयामि ते नमउक्तिं जुषस्व ऋतावस्तुभ्यं चेतते सहस्वः ।
विद्वाँ आ वक्षि विदुषो नि षत्सि मध्य आ बर्हिरूतये यजत्र ५८२

द्रवतां त उषसा वाजयन्ती अग्ने वातस्य पथ्याभिरच्छ ।
यत् सीमञ्जन्ति पूर्व्यं हविर्भिर् आ वन्धुरेव तस्थतुर्दुरोणे ५८३

मित्रश् च तुभ्यं वरुणः सहस्वो अग्ने विश्वे मरुतः सुम्नमर्चन् ।
यच्छोचिषा सहसस्पुत्र तिष्ठा अभि क्षितीः प्रथयन् त्सूर्यो नॄन् ५८४

वयं ते अद्य ररिमा हि कामम् उत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।
यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवान् अस्रेधता मन्मना विप्रो अग्ने ५८५

त्वद्धि पुत्र सहसो वि पूर्वीर् देवस्य यन्त्यूतयो वि वाजाः ।
त्वं देहि सहस्रिणं रयिं नो अद्रोघेण वचसा सत्यमग्ने ५८६

तुभ्यं दक्ष कविक्रतो यानीमा देव मर्तासो अध्वरे अकर्म ।
त्वं विश्वस्य सुरथस्य बोधि सर्वं तदग्ने अमृत स्वदेह ५८७

॥ ६९ ॥ (ऋ० ३ । १५ । १-७) (५८८-५९४) उत्कीलः कात्यः । त्रिष्टुप् ।

वि पाजसा पृथुना शोशुचानो बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः ।
सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्याम् अग्नेरहं सुहवस्य प्रणीतौ ५८८

त्वं नो अस्या उषसो व्युष्टौ त्वं सूर उदिते बोधि गोपाः ।
जन्मेव नित्यं तनयं जुषस्व स्तोमं मे अग्ने तन्वा सुजात ५८९

त्वं नृचक्षा वृषभानु पूर्वीः कृष्णास्वग्ने अरुषो वि भाहि ।
वसो नेषि च पर्षि चात्यंहः कृधी नो राय उशिजो यविष्ठ ५९०

अषाळ्हो अग्ने वृषभो दिदीहि   पुरो विश्वाः सौभगा संजिगीवान् ।
यज्ञस्य नेता प्रथमस्य पायोर्   जातवेदो बृहतः सुप्रणीते   ५९१

अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरूणि   देवाँ अच्छा दीद्यानः सुमेधाः ।
रथो न सस्निरभि वक्षि वाजम्   अग्ने त्वं रोदसी नः सुमेके   ५९२

प्र पीपय वृषभ जिन्व वाजान्   अग्ने त्वं रोदसी नः सुदोघे ।
देवेभिर्देव सुरुचा रुचानो   मा नो मर्तस्य दुर्मतिः परि ष्ठात्   ५९३
इळामग्ने० (४६९)

॥ ७० ॥ (ऋ० ३ । १६ । १-६) प्रगाथः (= बृहती + सतोबृहती ।)

अयमग्निः सुवीर्यस्य   ईशे महः सौभगस्य ।
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत   ईशे वृत्रहथानाम्   ५९४

इमं नरो मरुतः सश्चता वृधं   यस्मिन् रायः शेवृधासः ।
अभि ये सन्ति पृतनासु दूढ्यो   विश्वाहा शत्रुमादभुः   ५९५

स त्वं नो रायः शिशीहि   मीढ्वो अग्ने सुवीर्यस्य ।
तुविद्युम्न वर्षिष्ठस्य प्रजावतो   अनमीवस्य शुष्मिणः   ५९६

चक्रिर्यो विश्वा भुवनाभि सासहिश्   चक्रिर्देवेष्वा दुवः ।
आ देवेषु यतत आ सुवीर्ये   आ शंस उत नृणाम्   ५९७

मा नो अग्नेऽमतये   मावीरतायै रीरधः ।
मागोतायै सहसस्पुत्र मा निदे   अप द्वेषांस्या कृधि   ५९८

शग्धि वाजस्य सुभग प्रजावतो   अग्ने बृहतो अध्वरे ।
सं राया भूयसा सृज मयोभुना   तुविद्युम्न यशस्वता   ५९९

॥ ७१ ॥ (ऋ० ३ । १७ । १-५) ६००—६०९ कतो वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

समिध्यमानः प्रथमानु धर्मा   समक्तुभिरज्यते विश्ववारः ।
शोचिष्केशो घृतनिर्णिक् पावकः   सुयज्ञो अग्निर्यजथाय देवान्   ६००

यथायजो होत्रमग्ने पृथिव्या   यथा दिवो जातवेदश् चिकित्वान् ।
एवानेन हविषा यक्षि देवान्   मनुष्वद् यज्ञं प्र तिरेममद्य   ६०१

त्रीण्यायूंषि तव जातवेदस् तिस्र आजानीरुषसस् ते अग्ने ।
ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वान् अथा भव यजमानाय शं योः ६०२

अग्निं सुदीतिं सुदृशं गृणन्तो नमस्यामस् त्वेड्यं जातवेदः ।
त्वां दूतमरतिं हव्यवाहं देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम् ६०३

यस् त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान् द्विता च सत्ता स्वधया च शंभुः ।
तस्यानु धर्म प्र यजा चिकित्वो अथा नो धा अध्वरं देववीतौ ६०४

॥ ७२ ॥ (ऋ० ३ । १८ । १-५)

भवा नो अग्ने सुमना उपेतौ सखेव सख्ये पितरेव साधुः ।
पुरुद्रुहो हि क्षितयो जनानां प्रति प्रतीचीर्दहतादरातीः ६०५

तपो ष्वग्ने अन्तराँ अमित्रान् तपा शंसमररुषः परस्य ।
तपो वसो चिकितानो अचित्तान् वि ते तिष्ठन्तामजरा अयासः ६०६

इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय ।
यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् ६०७

उच्छोचिषा सहसस्पुत्र स्तुतो बृहद् वयः शशमानेषु धेहि ।
रेवदग्ने विश्वामित्रेषु शं योर् मर्मृज्मा ते तन्वं भूरि कृत्वः ६०८

कृधि रत्नं सुसनितर्धनानां स घेदग्ने भवसि यत् समिद्धः ।
स्तोतुर्दुरोणे सुभगस्य रेवत् सृप्रा करस्ना दधिषे वपूंषि ६०९

॥ ७३ ॥ (ऋ० ३ । १९ । १-५) [६१०—६२६] गाथी कौशिकः ।

अग्निं होतारं प्र वृणे मियेधे गृत्सं कविं विश्वविदममूरम् ।
स नो यक्षद् देवताता यजीयान् राये वाजाय वनते मघानि ६१०

प्र ते अग्ने हविष्मतीमियर्म्यच्छा सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम् ।
प्रदक्षिणिद् देवतातिमुराणः सं रातिभिर्वसुभिर्यज्ञमश्रेत् ६११

स तेजीयसा मनसा त्वोत उत शिक्ष स्वपत्यस्य शिक्षोः ।
अग्ने रायो नृतमस्य प्रभूतौ भूयाम ते सुष्टुतयश् च वस्वः ६१२

भूरीणि हि त्वे दधिरे अनीका अग्ने देवस्य यज्यवो जनासः ।
स आ वह देवतातिं यविष्ठ शर्धो यदद्य दिव्यं यजासि ६१३

यत् त्वा होतारमनजन् मियेधे निषादयन्तो यजथाय देवाः।
स त्वं नो अग्नेऽवितेह बोधि अधि श्रवांसि धेहि नस् तनूषु ६१४

॥ ७४ ॥ (ऋ० ३।२०।२—४)

अग्ने त्री ते वाजिना त्री षधस्था तिस्रस् ते जिह्वा ऋतजात पूर्वीः।
तिस्र उ ते तन्वो देववातास् ताभिर्नः पाहि गिरो अप्रयुच्छन् ६१५
अग्ने भूरीणि तव जातवेदो देव स्वधावोऽमृतस्य नाम।
याश् च माया मायिनां विश्वमिन्व त्वे पूर्वीः संदधुः पृष्टबन्धो ६१६
अग्निर्नेता भग इव क्षितीनां दैवीनां देव ऋतुपा ऋतावा।
स वृत्रहा सनयो विश्ववेदाः पर्षद् विश्वाति दुरिता गृणन्तम् ६१७

॥ ७५ ॥ (ऋ० ३।२१।१-५)

६१८, ६२१ त्रिष्टुप्, ६१९-२० अनुष्टुप्, ६२२ विराड्रूपा सतोबृहती।

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहि इमा हव्या जातवेदो जुषस्व।
स्तोकानामग्ने मेदसो घृतस्य होतः प्राशान प्रथमो निषद्य ६१८
घृतवन्तः पावक ते स्तोकाः श्चोतन्ति मेदसः।
स्वधर्मन् देववीतये श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ६१९
तुभ्यं स्तोका घृतश्चुतो अग्ने विप्राय सन्त्य।
ऋषिः श्रेष्ठः समिध्यसे यज्ञस्य प्राविता भव ६२०
तुभ्यं श्चोतन्त्यध्रिगो शचीवः स्तोकासो अग्ने मेदसो घृतस्य।
कविशस्तो बृहता भानुनागा हव्या जुषस्व मेधिर ६२१
ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद उद्भृतं प्र ते वयं ददामहे।
श्चोतन्ति ते वसो स्तोका अधि त्वचि प्रति तान् देवशो विहि ६२२

॥ ७६ ॥ (ऋ० ३।२२।१-५) ६२६ पुरीष्याग्नयः। त्रिष्टुप्, ६२६ अनुष्टुप्।

अयं सो अग्निर्यस्मिन् त्सोमम् इन्द्रः सुतं दधे जठरे वावशानः।
सहस्रिणं वाजमत्यं न सप्तिं ससवान् त्सन् त्स्तूयसे जातवेदः ६२३
अग्ने यत् ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र।
येनान्तरिक्षमुर्वाततन्थ त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षाः ६२४

अग्ने दिवो अर्णमच्छा जिगासि अच्छा देवाँ ऊचिषे धिष्ण्या ये ।
या रोचने परस्तात् सूर्यस्य याश् चावस्तादुपतिष्ठन्त आपः ६२५
पुरीष्यासो अग्नयः प्रावणेभिः सजोषसः ।
जुषन्तां यज्ञमद्रुहो अनमीवा इषो महीः ६२६
इळामग्ने० (४६९)

॥ ७७ ॥ (ऋ० ३ । २३ । १-५)

६२७-६३० देवश्रवा देववातश्च भारतौ । त्रिष्टुप्, ६२९ सतोबृहती ।

निर्मथितः सुधित आ सधस्थे युवा कविरध्वरस्य प्रणेता ।
जूर्यत्स्वग्निरजरो वनेषु अत्रा दधे अमृतं जातवेदाः ६२७
अमन्थिष्टां भारता रेवदग्निं देवश्रवा देववातः सुदक्षम् ।
अग्ने वि पश्य बृहताभि राया इषां नो नेता भवतादनु द्यून् ६२८
दश क्षिपः पूर्व्यं सीमजीजनन् त्सुजातं मातृषु प्रियम् ।
अग्निं स्तुहि दैववातं देवश्रवो यो जनानामसद् वशी ६२९
नि त्वा दधे वर आ पृथिव्या इळायास्पदे सुदिनत्वे अह्नाम् ।
दृषद्वत्यां मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि ६३०
इळामग्ने० (४६९)

॥ ७८ ॥ (ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलं , सूक्तं १, मंत्राः १, ६-२०)
[६३१—७५५] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, ६३१ अष्टिः ।

त्वां ह्यग्ने सदमित् समन्यवो देवासो देवमरतिं न्येरिर इति क्रत्वा न्येरिरे ।
अमर्त्यं यजत मर्त्येष्वा देवमादेवं जनत प्रचेतसं विश्वमादेवं जनत प्रचेतसम् ६३१
अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य संदृग् देवस्य चित्रतमा मर्त्येषु ।
शुचि घृतं न तप्तमघ्न्यायाः स्पार्हा देवस्य मंहनेव धेनोः ६३२
त्रिरस्य ता परमा सन्ति सत्या स्पार्हा देवस्य जनिमान्यग्नेः ।
अनन्ते अन्तः परिवीत आगात् शुचिः शुक्रो अर्यो रोरुचानः ६३३
स दूतो विश्वेदभि वष्टि सद्मा होता हिरण्यरथो रंसुजिह्वः ।
रोहिदश्वो वपुष्यो विभावा सदा रण्वः पितुमतीव संसत् ६३४

स चेतयन् मनुषो यज्ञबन्धुः　प्र तं मह्या रशनया नयन्ति।
स क्षेत्यस्य दुर्यासु साधन्　देवो मर्तस्य सधनित्वमाप　६३५

स तू नो अग्निर्नयतु प्रजानन्　अच्छा रत्नं देवभक्तं यदस्य।
धिया यद् विश्वे अमृता अकृण्वन्　द्यौष्पिता जनिता सत्यमुक्षन्　६३६

स जायत प्रथमः पस्त्यासु　महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ।
अपादशीर्षा गुहमानो अन्ता　आयोयुवानो वृषभस्य नीळे　६३७

प्र शर्ध आर्त प्रथमं विपन्याँ　ऋतस्य योना वृषभस्य नीळे।
स्पार्हो युवा वपुष्यो विभावा　सप्त प्रियासोऽजनयन्त वृष्णे　६३८

अस्माकमत्र पितरो मनुष्या　अभि प्र सेदुर्ऋतमाशुषाणाः।
अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तर्　उदुस्रा आजन्नुषसो हुवानाः　६३९

ते मर्मृजत ददृवांसो अद्रिं　तदेषामन्ये अभितो वि वोचन्।
पश्वयन्त्रासो अभि कारमर्चन्　विदन्त ज्योतिश् चकृपन्त धीभिः　६४०

ते गव्यता मनसा दृध्रमुब्धं　गा येमानं परि षन्तमद्रिम्।
दृळ्हं नरो वचसा दैव्येन　व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः　६४१

ते मन्वत प्रथमं नाम धेनोस्　त्रिः सप्त मातुः परमाणि विन्दन्।
तज्जानतीरभ्यनूषत व्रा　आविर्भुवदरुणीर्यशसा गोः　६४२

नेशत् तमो दुधितं रोचत द्यौर्　उद् देव्या उषसो भानुरर्त।
आ सूर्यो बृहतस् तिष्ठदज्राँ　ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्　६४३

आदित् पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्　आदिद् रत्नं धारयन्त द्युभक्तम्।
विश्वे विश्वासु दुर्यासु देवा　मित्र धिये वरुण सत्यमस्तु　६४४

अच्छा वोचेय शुशुचानमग्निं　होतारं विश्वभरसं यजिष्ठम्।
शुच्यूधो अतृणन्न गवाम्　अन्धो न पूतं परिषिक्तमंशोः　६४५

विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां　विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम्।
अग्निर्देवानामव आवृणानः　सुमृळीको भवतु जातवेदाः　६४६

॥ ७९ ॥ (ऋ० ४।२।१-२०) त्रिष्टुप्।

यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा　देवो देवेष्वरतिर्निधायि।
होता यजिष्ठो मह्ना शुचध्यै　हव्यैरग्निर्मनुष ईरयध्यै　६४७

इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य जातो जाताँ उभयाँ अन्तरग्ने ।
दूत ईयसे युयुजान ऋष्व ऋजुमुष्कान् वृषणः शुक्रांश्च ६४८

अत्या वृधस्नू रोहिता घृतस्नू ऋतस्य मन्ये मनसा जविष्ठा ।
अन्तरीयसे अरुषा युजानो युष्मांश् च देवान् विश आ च मर्तान् ६४९

अर्यमणं वरुणं मित्रमेषाम् इन्द्राविष्णू मरुतो अश्विनोत ।
स्वश्वो अग्ने सुरथः सुराधा एदु वह सुहविषे जनाय ६५०

गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी यज्ञो नृवत्सखा सदमिदप्रमृष्यः ।
इळावाँ एषो असुर प्रजावान् दीर्घो रयिः पृथुबुध्नः सभावान् ६५१

यस् त इध्मं जभरत् सिष्विदानो मूर्धानं वा ततपते त्वाया ।
भुवस् तस्य स्वतवाँः पायुरग्ने विश्वस्मात् सीमघायत उरुष्य ६५२

यस् ते भरादन्नियते चिदन्नं निशिषन् मन्द्रमतिथिमुदीरत् ।
आ देवयुरिनधते दुरोणे तस्मिन् रयिर्ध्रुवो अस्तु दास्वान् ६५३

यस् त्वा दोषा य उषसि प्रशंसात् प्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान् ।
अश्वो न स्वे दम आ हेम्यावान् तमंहसः पीपरो दाश्वांसम् ६५४

यस् तुभ्यमग्ने अमृताय दाशद् दुवस् त्वे कृणवते यतस्रुक् ।
न स राया शशमानो वि योषत् नैनमंहः परि वरदघायोः ६५५

यस्य त्वमग्ने अध्वरं जुजोषो देवो मर्तस्य सुधितं रराणः ।
प्रीतेदसद्धोत्रा सा यविष्ठ असाम यस्य विधतो वृधासः ६५६

चित्तिमचित्तिं चिनवद् वि विद्वान् पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्तान् ।
राये च नः स्वपत्याय देव दितिं च रास्वादितिमुरुष्य ६५७

कविं शशासुः कवयोऽदब्धा निधारयन्तो दुर्यास्वायोः ।
अतस् त्वं दृश्याँ अग्न एतान् पड्भिः पश्येरद्भुताँ अर्य एवैः ६५८

त्वमग्ने वाघते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते यविष्ठ ।
रत्नं भर शशमानाय घृष्वे पृथु श्चन्द्रमवसे चर्षणिप्राः ६५९

अधा ह यद् वयमग्ने त्वाया पड्भिर्हस्तेभिश् चकृमा तनूभिः ।
रथं न क्रन्तो अपसा भुरिजोर् ऋतं येमुः सुध्य आशुषाणाः ६६०

* पृथु चन्द्रम् अवसे (पदानि)

अधा॑ मा॒तुरु॒षसः॑ स॒प्त विप्रा॒ जाये॑महि प्रथ॒मा वे॒धसो॒ नॄन् ।
दि॒वस्पु॒त्रा अङ्गि॑रसो भवे॒माद्रिं॑ रुजेम ध॒निनं॑ शु॒चन्तः॑ ६६१

अधा॒ यथा॑ नः पि॒तरः॒ परा॑सः प्र॒त्नासो॑ अग्न ऋ॒तमा॑शुषा॒णाः ।
शुचीद॑य॒न् दीधि॑तिमुक्थ॒शासः॒ क्षामा॑ भि॒न्दन्तो॑ अरु॒णीरप॑ व्रन् ६६२

सु॒कर्मा॑णः सु॒रुचो॑ देव॒यन्तो॒ऽयो॒ न दे॒वा जनि॑मा॒ धम॑न्तः ।
शु॒चन्तो॑ अ॒ग्निं व॑वृ॒धन्त॒ इन्द्र॑म् ऊ॒र्वं गव्यं॑ परि॒षद॑न्तो अग्मन् ६६३

आ यू॒थेव॑ क्षु॒मति॑ प॒श्वो अ॑ख्यद् दे॒वानां॒ यज् जनि॒मान्त्यु॑ग्र ।
मर्ता॑नां चिदु॒र्वशी॑रकृप्रन् वृ॒धे चि॑द॒र्य उप॑रस्या॒योः ६६४

अक॑र्म ते॒ स्वप॑सो अभूम ऋ॒तम॑वस्रन्नु॒षसो॑ विभा॒तीः ।
अनू॑नम॒ग्निं पु॑रु॒धा सु॑श्च॒न्द्रं दे॒वस्य॒ मर्मृ॑जत॒श् चारु॒ चक्षुः॑ ६६५

ए॒ता ते॑ अग्न उ॒चथा॑नि वे॒धो॒ऽवो॑चाम क॒वये॒ ता जु॑षस्व ।
उच्छो॑चस्व कृणु॒हि वस्य॑सो नो म॒हो रा॒यः पु॑रुवार॒ प्र य॑न्धि ६६६

॥ ८० ॥ (ऋ० ४।३।२-१६)

अ॒यं योनि॑श् चकृ॒मा यं व॒यं ते॑ जा॒येव॒ पत्य॑ उश॒ती सु॒वासाः॑ ।
अ॒र्वा॒ची॒नः परि॑वीतो॒ नि षी॑द इ॒मा उ॑ ते स्वपाक प्रती॒चीः ६६७

आ॒शृ॒ण्व॒ते अदृ॑पिताय॒ मन्म॑ नृ॒चक्ष॑से सुमृ॒ळीका॑य वेधः ।
दे॒वाय॑ श॒स्तिम॒मृता॑य शं॑स॒ ग्रावे॑व॒ सोता॑ मधु॒षुद् यमी॒ळे ६६८

त्वं चि॑न्नः॒ शम्या॑ अग्ने अ॒स्या ऋ॒तस्य॑ बोध्यृतचित् स्वा॒धीः ।
क॒दा त॑ उ॒क्था स॑ध॒माद्या॑नि क॒दा भ॑वन्ति स॒ख्या गृ॒हे ते॑ ६६९

क॒था ह॒ तद् वरु॑णाय॒ त्वम॑ग्ने क॒था दि॒वे ग॑र्हसे॒ कन्न॒ आगः॑ ।
क॒था मि॒त्राय॑ मी॒ळ्हुषे॑ पृथि॒व्यै ब्रवः॒ कद॑र्य॒म्णे कद् भगा॑य ६७०

कद्धिष्ण्या॑सु वृध॒सानो॑ अग्ने॒ कद् वाता॑य॒ प्रत॑वसे शु॒भंये॑ ।
परि॑ज्मने॒ नास॑त्याय॒ क्षे ब्रवः॒ कद॑ग्ने रु॒द्राय॑ नृ॒घ्ने ६७१

क॒था म॒हे पु॑ष्टिम्भ॒राय॑ पू॒ष्णे कद् रु॒द्राय॒ सुम॑खाय ह॒विर्दे॑ ।
कद् विष्ण॑व उरुगा॒याय॒ रेतो॒ ब्रवः॒ कद॑ग्ने॒ शर॑वे बृह॒त्यै ६७२

कथा शर्धाय मरुतामृताय कथा सूरे बृहते पृच्छयमानः ।
प्रति ब्रवोऽदितये तुराय साधा दिवो जातवेदश् चिकित्वान् ६७३

ऋतेन ऋतं नियतमीळ आ गोर् आमा सचा मधुमत् पक्वमग्ने ।
कृष्णा सती रुशता धासिनैषा जामर्येण पयसा पीपाय ६७४

ऋतेन हि ष्मा वृषभश् चिदक्तः पुमाँ अग्निः पयसा पृष्ठ्येन ।
अस्पन्दमानो अचरद् वयोधा वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः ६७५

ऋतेनाद्रिं व्यसन् भिदन्तः समङ्गिरसो नवन्त गोभिः ।
शुनं नरः परि षदन्नुषासम् आविः स्वरभवज् जाते अग्नौ ६७६

ऋतेन देवीरमृता अमृक्ता अर्णोभिरापो मधुमद्भिरग्ने ।
वाजी न सर्गेषु प्रस्तुभानः प्र सदमित् स्रवितवे दधन्युः ६७७

मा कस्य यक्षं सदमिद्धुरो गा मा वेशस्य प्रमिनतो मापेः ।
मा भ्रातुरग्ने अनृजोर्ऋणं वेर् मा सख्युर्दक्षं रिपोर्भुजेम ६७८

रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख प्रीणानः ।
प्रति ष्फुर वि रुज वीड्वंहो जहि रक्षो महि चिद् वावृधानम् ६७९

एभिर्भव सुमना अग्ने अर्कैर् इमान् त्स्पृश मन्मभिः शूर वाजान् ।
उत ब्रह्माण्यङ्गिरो जुषस्व सं ते शस्तिर्देववाता जरेत ६८०

एता विश्वा विदुषे तुभ्यं वेधो नीथान्यग्ने निण्या वचांसि ।
निवचना कवये काव्यानि अशंसिषं मतिभिर्विप्र उक्थैः ६८१

॥ ८१ ॥ (ऋ० ४ । ६ । १-११)

ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य होतर् अग्ने तिष्ठ देवताता यजीयान् ।
त्वं हि विश्वमभ्यसि मन्म प्र वेधसश् चित् तिरसि मनीषाम् ६८२

अमूरो होता न्यसादि विक्षु अग्निर्मन्द्रो विदथेषु प्रचेताः ।
ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन् मेतेव धूमं स्तभायदुप द्याम् ६८३

यता सुजूर्णी रातिनी घृताची प्रदक्षिणिद् देवतातिमुराणः ।
उदु स्वरुर्नवजा नाक्रः पश्वो अनक्ति सुधितः सुमेकः ६८४

स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्ना   ऊर्ध्वो अध्वर्युर्जुजुषाणो अस्थात् ।
पर्यग्निः पशुपा न होता   त्रिविष्ट्येति प्रदिव उराणः   ६८५

परि त्मना मितद्रुरेति होता   अग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा ।
द्रवन्त्यस्य वाजिनो न शोका   भयन्ते विश्वा भुवना यदभ्राट्   ६८६

भद्रा ते अग्ने स्वनीक संदृग्   घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः ।
न यत् ते शोचिस् तमसा वरन्त   न ध्वस्मानस् तन्वी३ रेप आ धुः   ६८७

न यस्य सातुर्जनितोरवारि   न मातरापितरा नू चिदिष्टौ ।
अधा मित्रो न सुधितः पावको   अग्निर्दीदाय मानुषीषु विक्षु   ६८८

द्विर्यं पञ्च जीजनन् त्संवसानाः   स्वसारो अग्निं मानुषीषु विक्षु ।
उषर्बुधमथर्यो३ न दन्तं   शुक्रं स्वासं परशुं न तिग्मम्   ६८९

तव त्ये अग्ने हरितो घृतस्ना   रोहितास ऋज्वञ्चः स्वञ्चः ।
अरुषासो वृषण ऋजुमुष्का   आ देवतातिमह्वन्त दस्माः   ६९०

ये ह त्ये ते सहमाना अयासस्   त्वेषासो अग्ने अर्चयश् चरन्ति ।
श्येनासो न दुवसनासो अर्थं   तुविष्वणसो मारुतं न शर्धः   ६९१

अकारि ब्रह्म समिधान तुभ्यं   शंसात्युक्थं यजते व्यू धाः ।
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्   नमस्यन्त उशिजः शंसमायोः ।   ६९२

॥ ८२ ॥ (ऋ० ४ । ७ । १-११) त्रिष्टुप्, ६९३ जगती, ६९४-९८ अनुष्टुप् ।

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्   होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः ।
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्   वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे   ६९३

अग्ने कदा त आनुषग्   भुवद् देवस्य चेतनम् ।
अधा हि त्वा जगृभ्रिरे   मर्तासो विक्ष्वीड्यम्   ६९४

ऋतावानं विचेतसं   पश्यन्तो द्यामिव स्तृभिः ।
विश्वेषामध्वराणां   हस्कर्तारं दमेदमे   ६९५

आशुं दूतं विवस्वतो   विश्वा यश् चर्षणीरभि ।
आ जभ्रुः केतुमायवो   भृगवाणं विशेविशे   ६९६

तम॒ग्निं होता॑रमानु॒षक् चि॑कि॒त्वांसं॒ नि षे॑दिरे ।
र॒ण्वं पा॑व॒कशो॑चिषं॒ यजि॑ष्ठं स॒प्त धाम॑भिः ६९७

तं शश्व॑तीषु मा॒तृषु॒ वन॒ आ वी॒तमश्रि॑तम् ।
चि॒त्रं सन्तं॒ गुहा॑ हि॒तं सु॒वेदं॑ कूचिद॒र्थिन॑म् ६९८

स॒सस्य॒ यद् वियु॑ता॒ सस्मि॒न्नूध॑न् ऋ॒तस्य॒ धाम॑न् र॒णय॑न्त दे॒वाः ।
म॒हाँ अ॒ग्निर्नम॑सा रा॒तह॑व्यो॒ वेर॑ध्व॒राय॒ सद॒मिदृ॒तावा॑ ६९९

वेर॑ध्व॒रस्य॑ दू॒त्या॑नि वि॒द्वान् उ॒भे अ॒न्ता रोद॑सी संचि॑कि॒त्वान् ।
दू॒त ई॑यसे प्र॒दिव॑ उरा॒णो वि॒दुष्ट॑रो दि॒व आ॒रोध॑नानि ७००

कृ॒ष्णं त॒ एम॒ रुश॑तः पु॒रो भाश् च॑रि॒ष्ण्व१॒॑र्चिर्वपु॑षा॒मिदेक॑म् ।
यदप्र॑वीता॒ दध॑ते ह॒ गर्भं॑ स॒द्यश् चि॑ज्जा॒तो भव॒सीदु॑ दू॒तः ७०१

स॒द्यो जा॒तस्य॒ दद॑र्शा॒नमोजो॒ यद॑स्य॒ वातो॑ अनु॒वाति॑ शो॒चिः ।
वृ॒णक्ति॑ ति॒ग्मामत॒सेषु॑ जि॒ह्वां स्थि॒रा चि॒दन्ना॑ दयते॒ वि जम्भैः॑ ७०२

तृ॒षु यदन्ना॑ तृ॒षुणा॑ व॒वक्ष॑ तृ॒षुं दू॒तं कृ॑णुते य॒ह्वो अ॒ग्निः ।
वात॑स्य मे॒ळिं स॑चते नि॒जूर्व॑न् आ॒शुं न वा॑जयते हि॒न्वे अर्वा॑ ७०३

॥ ८३ ॥ (ऋ० ४ । ८ । १-८) गायत्री ।

दू॒तं वो॑ वि॒श्ववे॑दसं ह॒व्य॒वाह॒मम॑र्त्यम् । यजि॑ष्ठमृञ्जसे गि॒रा ७०४
स हि वेदा॒ वसु॑धितिं म॒हाँ आ॒रोध॑नं दि॒वः । स दे॒वाँ एह व॑क्षति ७०५
स वे॑द दे॒व आ॒नमं॑ दे॒वाँ ऋ॑ताय॒ते दमे॑ । दाति॑ प्रि॒याणि॑ चि॒द् वसु॑ ७०६
स होता॒ सेदु॑ दू॒त्यं॑ चिकि॒त्वाँ अ॒न्तरी॑यते । वि॒द्वाँ आ॒रोध॑नं दि॒वः ७०७
ते स्या॑म॒ ये अ॒ग्नये॑ ददा॒शुर्ह॒व्यदा॑तिभिः । य ईं॒ पुष्य॑न्त इ॒न्धते॑ ७०८
ते रा॒या ते सु॒वीर्यैः॑ सस॒वांसो॒ वि शृ॑ण्विरे । ये अ॒ग्ना द॑धि॒रे दुवः॑ ७०९
अ॒स्मे रायो॑ दि॒वेदि॑वे सं च॑रन्तु पुरु॒स्पृहः॑ । अ॒स्मे वाजा॑स ईरताम् ७१०
स विप्र॑श् चर्षणी॒नां शव॑सा॒ मानु॑षाणाम् । अति॑ क्षि॒प्रेव॑ विध्यति ७११

॥ ८४ ॥ (ऋ० ४ । ९ । १-८)

अग्ने॑ मृ॒ळ म॒हाँ अ॑सि॒ य ई॒मा दे॑व॒युं जन॑म् । इ॒येथ॑ ब॒र्हिरा॒सद॑म् ७१२
स मानु॑षीषु दू॒ळभो॑ वि॒क्षु प्रा॒वीरम॑र्त्यः । दू॒तो विश्वे॑षां भुवत् ७१३

स सद्म परि णीयते होता मन्द्रो दिविष्टिषु । उत पोता नि षीदति ७१४
उत ग्ना अग्निरध्वर उतो गृहपतिर्दमे । उत ब्रह्मा नि षीदति ७१५
वेषि ह्यध्वरीयताम् उपवक्ता जनानाम् । हव्या च मानुषाणाम् ७१६
वेषीद् वस्य दूत्यं१ यस्य जुजोषो अध्वरम् । हव्यं मर्तस्य वोळ्हवे ७१७
अस्माकं जोष्यध्वरम् अस्माकं यज्ञमङ्गिरः । अस्माकं शृणुधी हवम् ७१८
परि ते दूळभो रथो अस्माँ अश्नोतु विश्वतः । येन रक्षसि दाशुषः ७१९

॥ ८५ ॥ (ऋ० ४ । १० । १-८)
पदपंक्तिः, (७२३, ७२५, ७२६ उष्णिग्वा,) ७२४ महापदपंक्तिः, ७२७ उष्णिक् ।

अग्ने तमद्य अश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् । ऋध्यामा त ओहैः ७२०
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः । रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ ७२१
एभिर्नो अर्कैर् भवा नो अर्वाङ् स्वर्१ण ज्योतिः । अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः ७२२
आभिष्टे अद्य गीर्भिर्गृणन्तो अग्ने दाशेम । प्र ते दिवो न स्तनयन्ति शुष्माः ७२३
तव स्वादिष्ठ अग्ने संदृष्टिर् इदा चिदह्न इदा चिदक्तोः । श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके ७२४
घृतं न पूतं तनूररेपाः शुचि हिरण्यम् । तत् ते रुक्मो न रोचत स्वधावः ७२५
कृतं चिद्धि ष्मा सनेमि, द्वेषो अग्न इनोषि मर्तात् । इत्था यजमानादृतावः ७२६
शिवा नः सख्या सन्तु, भ्रात्रा अग्ने देवेषु युष्मे । सा नो नाभिः सदने सस्मिन्नूधन् ७२७

॥ ८६ ॥ (ऋ० ४ । ११ । १-६) त्रिष्टुप् ।

भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकम् उपाक आ रोचते सूर्यस्य ।
रुशद् दृशे ददृशे नक्तया चिद् अरूक्षितं दृश आ रूपे अन्नम् ७२८

वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां खं वेपसा तुविजात स्तवानः ।
विश्वेभिर्यद् वावनः शुक्र देवैस् तन्नो रास्व सुमहो भूरि मन्म ७२९

त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषास् त्वदुक्था जायन्ते राध्यानि ।
त्वदेति द्रविणं वीरपेशा इत्थाधिये दाशुषे मर्त्याय ७३०

त्वद् वाजी वाजंभरो विहाया अभिष्टिकृज् जायते सत्यशुष्मः ।
त्वद् रयिर्देवजूतो मयोभुस् त्वदाशुर्जूजुवाँ अग्ने अर्वा ७३१

त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो देवं मर्ता अमृत मन्द्रजिह्वम् ।
द्वेषोयुतमा विवासन्ति धीभिर् दमूनसं गृहपतिममूरम् ७३२

आरे अस्मदमतिमारे अंह आरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि ।
दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित् सचसे स्वस्ति ७३३

॥ ८७ ॥ (ऋ० ४ । १२ । १-६)

यस् त्वामग्न इनधते यतस्रुक् त्रिस् ते अन्नं कृणवत् सस्मिन्नहन् ।
स सु द्युम्नैरभ्यस्तु प्रसक्षत् तव क्रत्वा जातवेदश् चिकित्वान् ७३४

इध्मं यस् ते जभरच्छश्रमाणो महो अग्ने अनीकमा सपर्यन् ।
स इधानः प्रति दोषामुषासं पुष्यन् रयिं सचते घ्नन्नमित्रान् ७३५

अग्निरीशे बृहतः क्षत्रियस्य अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।
दधाति रत्नं विधते यविष्ठो व्यानुषङ् मर्त्याय स्वधावान् ७३६

यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा यविष्ठ अचित्तिभिश् चकृमा कच्चिदागः ।
कृधी ष्वऽस्माँ अदितेरनागान् व्येनांसि शिश्रथो विष्वगग्ने ७३७

महश् चिदग्न एनसो अभीकं ऊर्वाद् देवानामुत मर्त्यानाम् ।
मा ते सखायः सदमिद् रिषाम यच्छा तोकाय तनयाय शं योः ७३८

यथा ह त्यद् वसवो गौर्यं चित् पदि षिताममुञ्चता यजत्राः ।
एवो ष्वऽस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः ७३९

॥ ८८ ॥ (ऋ० ४ । १३ । १-५)

प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यद् विभातीनां सुमना रत्नधेयम् ।
यातमश्विना सुकृतो दुरोणम् उत् सूर्यो ज्योतिषा देव एति ७४०

ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् द्रप्सं दविध्वद् गविषो न सत्वा ।
अनु व्रतं वरुणो यन्ति मित्रो यत् सूर्यं दिव्यारोहयन्ति ७४१

यं सीमकृण्वन् तमसे विपृचे ध्रुवक्षेमा अनवस्यन्तो अर्थम् ।
तं सूर्यं हरितः सप्त यह्वीः स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति ७४२

वहिष्ठेभिर्विहरन् यासि तन्तुम् अवव्ययन्नसितं देव वस्म ।
दविध्वतो रश्मयः सूर्यस्य चर्मेवावाधुस् तमो अप्स्वऽन्तः ७४३

अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्ङुत्तानोऽव पद्यते न ।
कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम् ७४४

॥ ८९ ॥ (ऋ० ४ । १४ । १—५)

प्रत्यग्निरुषसो जातवेदा अख्यद् देवो रोचमाना महोभिः ।
आ नासत्योरुगाया रथेन इमं यज्ञमुप नो यातमच्छ ७४५
ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेज् ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वन् ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं वि सूर्यो रश्मिभिश् चेकितानः ७४६
आवहन्त्यरुणीर्ज्योतिषागान् मही चित्रा रश्मिभिश् चेकिताना ।
प्रबोधयन्ती सुविताय देवी उषा ईयते सुयुजा रथेन ७४७
आ वां वहिष्ठा इह ते वहन्तु रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ ।
इमे हि वां मधुपेयाय सोमा अस्मिन् यज्ञे वृषणा मादयेथाम् ७४८
अनायतो० (७४४)

॥ ९० ॥ (ऋ० ४ । १५ । १-६) गायत्री ।

अग्निर्होता नो अध्वरे वाजी सन् परि णीयते । देवो देवेषु यज्ञियः ७४९
परि त्रिविष्ट्यध्वरं यात्यग्नी रथीरिव । आ देवेषु प्रयो दधत् ७५०
परि वाजपतिः कविर् अग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद् रत्नानि दाशुषे ७५१
अयं यः सृञ्जये पुरो दैववाते समिध्यते । द्युमाँ अमित्रदम्भनः ७५२
अस्य घा वीर ईवतो अग्नेरीशीत मर्त्यः । तिग्मजम्भस्य मीळ्हुषः ७५३
तमर्वन्तं न सानसिम् अरुषं न दिवः शिशुम् । मर्मृज्यन्ते दिवेदिवे ७५४

॥ ९१ ॥ (ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-१२)
(७५५-७६६) बुधगविष्ठिरावात्रेयौ । त्रिष्टुप् ।

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ।
यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ ७५५
अबोधि होता यजथाय देवान् ऊर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात् ।
समिद्धस्य रुशदर्शि पाजो महान् देवस् तमसो निरमोचि ७५६
यदीं गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचिभिर्गोभिरग्निः ।
आद् दक्षिणा युज्यते वाजयन्ती उत्तानामूर्ध्वो अधयज् जुहूभिः ७५७

अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति ।
यदीं सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नाम् ७५८

जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्नां हितो हितेष्वरुषो वनेषु ।
दमेदमे सप्त रत्ना दधानो अग्निर्होता नि षसादा यजीयान् ७५९

अग्निर्होता न्यसीदद् यजीयान् उपस्थे मातुः सुरभा उ लोके ।
युवा कविः पुरुनिःष्ठ ऋतावा धर्ता कृष्टीनामुत मध्य इद्धः ७६०

प्र णु त्यं विप्रमध्वरेषु साधुम् अग्निं होतारमीळते नमोभिः ।
आ यस् ततान रोदसी ऋतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनं घृतेन ७६१

मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः ।
सहस्रशृङ्गो वृषभस् तदोजा विश्वाँ अग्ने सहसा प्रास्यन्यान् ७६२

प्र सद्यो अग्ने अत्येष्यन्यान् आविर्यस्मै चारुतमो बभूथ ।
ईळेन्यो वपुष्यो विभावा प्रियो विशामतिथिर्मानुषीणाम् ७६३

तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलिमग्ने अन्तित ओत दूरात् ।
आ भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि बृहत् ते अग्ने महि शर्म भद्रम् ७६४

आद्य रथं भानुमो भानुमन्तम् अग्ने तिष्ठ यजतेभिः समन्तम् ।
विद्वान् पथीनामुर्वन्तरिक्षम् एह देवान् हविरद्याय वक्षि ७६५

अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे ।
गविष्ठिरो नमसा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्ममुरुव्यञ्चमश्रेत् ७६६

॥ ९२ ॥ (ऋ० ५ । २ । १-१२)

(७६७-७७८) कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः, उभौ वा; २, ९ वृशो जानः । त्रिष्टुप् , १२ शक्वरी।

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे ।
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ ७६७

कमेतं त्वं युवते कुमारं पेषी बिभर्षि महिषी जजान ।
पूर्वीर्हि गर्भः शरदो ववर्ध अपश्यं जातं यदसूत माता ७६८

हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात् क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम् ।
ददानो अस्मा अमृतं विपृक्वत् किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुक्थाः ७६९

क्षेत्रादपश्यं सनुतश् चरन्तं सुमद् यूथं न पुरु शोभमानम् ।
न ता अगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्नीरिद् युवतयो भवन्ति ७७०

के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर् न येषां गोपा अरणश् चिदास ।
य ईं जगृभुरव ते सृजन्तु आजाति पश्व उप नश् चिकित्वान् ७७१

वसां राजानं वसतिं जनानाम् अरातयो नि दधुर्मर्त्येषु ।
ब्रह्माण्यत्रेरव तं सृजन्तु निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु ७७२

शुनश्चिच्छेपं निदितं सहस्राद् यूपादमुञ्चो अशमिष्ट हि षः ।
एवास्मदग्ने वि मुमुग्धि पाशान् होतश् चिकित्व इह तू निषद्य ७७३

हृणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम् ७७४

वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निर् आविर्विश्वानि कृणुते महित्वा ।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे ७७५

उत स्वानासो दिवि षन्त्वग्नेस् तिग्मायुधा रक्षसे हन्तवा उ ।
मदे चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः ७७६

एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ।
यदीदग्ने प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीरप एना जयेम ७७७

तुविग्रीवो वृषभो वावृधानो अशत्र्व१र्यः समजाति वेदः ।
इतीममग्निममृता अवोचन् बर्हिष्मते मनवे शर्म यंसद्धविष्मते मनवे शर्म यंसत् ७७८

॥ ९३ ॥ (ऋ० ५ । ३ । १-२, ४-१२)

(७७९-८१०) वसुश्रुत आत्रेयः । ७७९ विराट्, ७८०-७८९ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने वरुणो जायसे यत् त्वं मित्रो भवसि यत् समिद्धः ।
त्वे विश्वे सहसस्पुत्र देवास् त्वमिन्द्रो दाशुषे मर्त्याय ७७९

त्वमर्यमा भवसि यत् कनीनां नाम स्वधावन् गुह्यं बिभर्षि ।
अञ्जन्ति मित्रं सुधितं न गोभिर् यद् दंपती समनसा कृणोषि ७८०

तव श्रिया सुदृशो देव देवाः पुरू दधाना अमृतं सपन्त ।
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर् दशस्यन्त उशिजः शंसमायोः ७८१

न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान् न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः ।
विशश् च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद् देव मर्तान् ७८२

वयमग्ने वनुयाम त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमानाः ।
वयं समर्ये विदथेष्वह्नां वयं राया सहसस्पुत्र मर्तान् ७८३

यो न आगो अभ्येनो भराति अधीदघमघशंसे दधात ।
जही चिकित्वो अभिशस्तिमेताम् अग्ने यो नो मर्चयति द्वयेन ७८४

त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यैः ।
संस्थे यदग्न ईयसे रयीणां देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमानः ७८५

अव स्पृधि पितरं योधि विद्वान् पुत्रो यस् ते सहसः सून ऊहे ।
कदा चिकित्वो अभि चक्षसे नो अग्ने कदाँ ऋतचिद् यातयासे ७८६

भूरि नाम वन्दमानो दधाति पिता वसो यदि तज् जोषयासे ।
कुविद् देवस्य सहसा चकानः सुम्नमग्निर्वनते वावृधानः ७८७

त्वमङ्ग जरितारं यविष्ठ विश्वान्यग्ने दुरिताति पर्षि ।
स्तेना अदृश्रन् रिपवो जनासो अज्ञातकेता वृजिना अभूवन् ७८८

इमे यामासस् त्वद्रिगभूवन् वसवे वा तदिदागो अवाचि ।
नाहायमग्निरभिशस्तये नो न रीषते वावृधानः परा दात् ७८९

॥ ९४ ॥ (ऋ० ५ । ४ । १-११) त्रिष्टुप् ।

त्वामग्ने वसुपतिं वसूनाम् अभि प्र मन्दे अध्वरेषु राजन् ।
त्वया वाजं वाजयन्तो जयेम अभि ष्याम पृत्सुतीर्मर्त्यानाम् ७९०

हव्यवाळग्निरजरः पिता नो विभुर्विभावा सुदृशीको अस्मे ।
सुगार्हपत्याः समिषो दिदीहि अस्मद्र्यक् सं मिमीहि श्रवांसि ७९१

विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम् ।
नि होतारं विश्वविदं दधिध्वे स देवेषु वनते वार्याणि ७९२

जुषस्वाग्न इळया सजोषा यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।
जुषस्व नः समिधं जातवेद आ च देवान् हविरद्याय वक्षि ७९३

जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण   इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान् ।
विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या   शत्रूयतामा भरा भोजनानि ७९४

वधेन दस्युं प्र हि चातयस्व   वयः कृण्वानस् तन्वे३ स्वायै ।
पिपर्षि यत् सहसस्पुत्र देवान्   त्सो अग्ने पाहि नृतम वाजे अस्मान् ७९५

वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम   वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे ।
अस्मे रयिं विश्ववारं समिन्व   अस्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि ७९६

अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व   सहसः सूनो त्रिषधस्थ हव्यम् ।
वयं देवेषु सुकृतः स्याम   शर्मणा नस् त्रिवरूथेन पाहि ७९७

विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः   सिन्धुं न नावा दुरितातिं पर्षि ।
अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानो३   अस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ७९८

यस् त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानो   अमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि ।
जातवेदो यशो अस्मासु धेहि   प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम् ८९९

यस्मै त्वं सुकृते जातवेद   उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम् ।
अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं   गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति ८००

॥ ९५ ॥ (ऋ० ५ । ६ । १-१०) पङ्क्तिः ।

अग्निं तं मन्ये यो वसुर्   अस्तं यं यन्ति धेनवः ।
अस्तमर्वन्त आशवो   अस्तं नित्यासो वाजिन   इषं स्तोतृभ्य आ भर ८०१

सो अग्निर्यो वसुर्गृणे   सं यमायन्ति धेनवः ।
समर्वन्तो रघुद्रुवः   सं सुजातासः सूरय   इषं स्तोतृभ्य आ भर ८०२

अग्निर्हि वाजिनं विशे   ददाति विश्वचर्षणिः ।
अग्नी राये स्वाभुवं   स प्रीतो याति वार्यम्   इषं स्तोतृभ्य आ भर ८०३

आ ते अग्न इधीमहि   द्युमन्तं देवाजरम् ।
यद्ध स्या ते पनीयसी   समिद् दीदयति द्यवि   इषं स्तोतृभ्य आ भर ८०४

आ ते अग्न ऋचा हविः   शुक्रस्य शोचिषस्पते ।
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते   हव्यवाट् तुभ्यं हूयत   इषं स्तोतृभ्य आ भर ८०५

प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यन्त्यानुषग् इषं स्तोतृभ्य आ भर ८०६

तव त्ये अग्ने अर्चयो महि व्राधन्त वाजिनः ।
ये पत्वभिः शफानां व्रजा भुरन्त गोनाम् इषं स्तोतृभ्य आ भर ८०७

नवा नो अग्न आ भर स्तोतृभ्यः सुक्षितीरिषः ।
ते स्याम य आनृचुस् त्वादूतासो दमेदम इषं स्तोतृभ्य आ भर ८०८

उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो दर्वी श्रीणीष आसनि ।
उतो न उत् पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषं स्तोतृभ्य आ भर ८०९

एवाँ अग्निमजुर्यमुर् गीर्भिर्यज्ञेभिरानुषक् ।
दधदस्मे सुवीर्यम् उत त्यदाश्वश्व्यम् इषं स्तोतृभ्य आ भर ८१०

॥ ९६ ॥ (ऋ० ५ । ७ । १-१०) (८११-८२७) इष आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८२० पङ्क्तिः ।

सखायः सं वः सम्यञ्चम् इषं स्तोमं चाग्नये ।
वर्षिष्ठाय क्षितीनाम् ऊर्जो नप्त्रे सहस्वते ८११

कुत्रा चिद् यस्य समृतौ रण्वा नरो नृषदने ।
अर्हन्तश् चिद् यमिन्धते संजनयन्ति जन्तवः ८१२

सं यदिषो वनामहे सं हव्या मानुषाणाम् ।
उत द्युम्नस्य शवस ऋतस्य रश्मिमा ददे ८१३

सः स्मा कृणोति केतुमा नक्तं चिद् दूर आ सते ।
पावको यद् वनस्पतीन् प्र स्मा मिनात्यजरः ८१४

अव स्म यस्य वेषणे स्वेदं पथिषु जुह्वति ।
अभीमह स्वजेन्यं भूमा पृष्ठेव रुरुहुः ८१५

यं मर्त्यः पुरुस्पृहं विदद् विश्वस्य धायसे ।
प्र स्वादनं पितूनाम् अस्ततातिं चिदायवे ८१६

स हि ष्मा धन्वाक्षितं दाता न दात्या पशुः ।
हिरिश्मश्रुः शुचिदन् ऋभुरनिभृष्टतविषिः ८१७

शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत् प्र स्वधितीव रीयते ।
सुषूरसूत माता क्राणा यदानशे भगम् ८१८

आ यस्ते सर्पिरासुते अग्ने शमस्ति धायसे ।
ऐषु द्युम्नमुत श्रव आ चित्तं मर्त्येषु धाः ८१९

इति चिन् मन्युमध्रिजस् त्वादातमा पशुं ददे ।
आदग्ने अपृणतो अत्रिः सासह्याद् दस्यून् इषः सासह्यान् नॄन् ८२०

॥ ९७ ॥ (ऋ० ५ । ८ । १-७) जगती ।

त्वामग्न ऋतायवः समीधिरे प्रत्नं प्रत्नास ऊतये सहस्कृत ।
पुरुश्चन्द्रं यजतं विश्वधायसं दमूनसं गृहपतिं वरेण्यम् ८२१

त्वामग्ने अतिथिं पूर्व्यं विशः शोचिष्केशं गृहपतिं नि षेदिरे ।
बृहत्केतुं पुरुरूपं धनस्पृतं सुशर्माणं स्ववसं जरद्विषम् ८२२

त्वामग्ने मानुषीरीळते विशो होत्राविदं विविचिं रत्नधातमम् ।
गुहा सन्तं सुभग विश्वदर्शतं तुविष्वणसं सुयजं घृतश्रियम् ८२३

त्वामग्ने धर्णसिं विश्वधा वयं गीर्भिर्गृणन्तो नमसोप सेदिम ।
स नो जुषस्व समिधानो अङ्गिरो देवो मर्तस्य यशसा सुदीतिभिः ८२४

त्वमग्ने पुरुरूपो विशेविशे वयो दधासि प्रत्नथा पुरुष्टुत ।
पुरूण्यन्ना सहसा वि राजसि त्विषिः सा ते तित्विषाणस्य नाधृषे ८२५

त्वामग्ने समिधानं यविष्ठ्य देवा दूतं चक्रिरे हव्यवाहनम् ।
उरुज्रयसं घृतयोनिमाहुतं त्वेषं चक्षुर्दधिरे चोदयन्मति ८२६

त्वामग्ने प्रदिव आहुतं घृतैः सुम्नायवः सुषमिधा समीधिरे ।
स वावृधान ओषधीभिरुक्षितो३ अभि ज्रयांसि पार्थिवा वि तिष्ठसे ८२७

॥ ९८ ॥ (ऋ० ५ । ९ । १-७)
(८२८-८४१) गय आत्रेयः । अनुष्टुप् । ८३२; ८३४ पङ्क्तिः ।

त्वामग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईळते ।
मन्ये त्वा जातवेदसं स हव्या वक्ष्यानुषक् ८२८

अग्निर्होता दास्वतः क्षयस्य वृक्तबर्हिषः ।
सं यज्ञासश् चरन्ति यं सं वाजासः श्रवस्यवः ८२९

उत स्म यं शिशुं यथा नवं जनिष्टारणी ।
धर्तारं मानुषीणां विशामग्निं स्वध्वरम् ८३०
उत स्म दुर्गृभीयसे पुत्रो न ह्वार्याणाम् ।
पुरू यो दग्धासि वना अग्ने पशुर्न यवसे ८३१
अध स्म यस्यार्चयः सम्यक् संयन्ति धूमिनः ।
यदीमह त्रितो दिवि उप ध्मातेव धमति शिशीते ध्मातरी यथा ८३२
तवाहमग्न ऊतिभिर् मित्रस्य च प्रशस्तिभिः ।
द्वेषोयुतो न दुरिता तुर्याम मर्त्यानाम् ८३३
तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर ।
स क्षेपयत् स पोषयद् भुवद् वाजस्य सातय उतैधि पृत्सु नो वृधे ८३४

॥ ९९ ॥ (ऋ० ५ । १० । १-७) अनुष्टुप्; ८३८; ८४१ पङ्क्तिः ।

अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो ।
प्र नो राया परीणसा रत्सि वाजाय पन्थाम् ८३५
त्वं नो अग्ने अद्भुत क्रत्वा दक्षस्य मंहना ।
त्वे असुर्य१मारुहत् क्राणा मित्रो न यज्ञियः ८३६
त्वं नो अग्न एषां गयं पुष्टिं च वर्धय ।
ये स्तोमेभिः प्र सूरयो नरो मघान्यानशुः ८३७
ये अग्ने चन्द्र ते गिरः शुम्भन्त्यश्वराधसः ।
शुष्मेभिः शुष्मिणो नरो दिवश् चिद् येषां बृहत् सुकीर्तिर्बोधति त्मना ८३८
तव त्ये अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो यन्ति धृष्णुया ।
परिज्मानो न विद्युतः स्वानो रथो न वाजयुः ८३९
नू नो अग्न ऊतये सबाधसश् च रातये ।
अस्माकासश् च सूरयो विश्वा आशास् तरीषणि ८४०
त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः स्तवान आ भर ।
होतर्विभ्वासहं रयिं स्तोतृभ्यः स्तवसे च न उतैधि पृत्सु नो वृधे ८४१

॥ १०० ॥ (ऋ० ५ । ११ । १-६) (८४२-८६५) सुतंभर आत्रेयः । जगती।

जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविर् अग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद् वि भाति भरतेभ्यः शुचिः ८४२

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितम् अग्निं नरस् त्रिषधस्थे समीधिरे ।
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः ८४३

असंमृष्टो जायसे मात्रोः शुचिर् मन्द्रः कविरुदतिष्ठो विवस्वतः ।
घृतेन त्वावर्धयन्नग्न आहुत धूमस् ते केतुरभवद् दिवि श्रितः ८४४

अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु साधुया अग्निं नरो वि भरन्ते गृहेगृहे ।
अग्निर्दूतो अभवद्धव्यवाहनो अग्निं वृणाना वृणते कविक्रतुम् ८४५

तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं वचस् तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे ।
त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीर् आ पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च ८४६

त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितम् अन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने ।
स जायसे मथ्यमानः सहो महत् त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ८४७

॥ १०१ ॥ (ऋ० ५ । १२ । १-६) त्रिष्टुप्।

प्राग्नये बृहते यज्ञियाय ऋतस्य वृष्णे असुराय मन्म ।
घृतं न यज्ञ आस्येइ सुपूतं गिरं भरे वृषभाय प्रतीचीम् ८४८

ऋतं चिकित्व ऋतमिच् चिकिद्धि ऋतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वीः ।
नाहं यातुं सहसा न द्वयेन ऋतं सपाम्यरुषस्य वृष्णः ८४९

कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन भुवो नवेदा उचथस्य नव्यः ।
वेदा मे देव ऋतुपा ऋतूनां नाहं पतिं सनितुरस्य रायः ८५०

के ते अग्ने रिपवे बन्धनासः के पायवः सनिषन्त द्युमन्तः ।
के धासिमग्ने अनृतस्य पान्ति क आसतो वचसः सन्ति गोपाः ८५१

सखायस् ते विषुणा अग्न एते शिवासः सन्तो अशिवा अभूवन् ।
अधूर्षत स्वयमेते वचोभिर् ऋजूयते वृजिनानि ब्रुवन्तः ८५२

यस् ते अग्ने नमसा यज्ञमीट्ट ऋतं स पात्यरुषस्य वृष्णः ।
तस्य क्षयः पृथुरा साधुरेतु प्रसर्स्राणस्य नहुषस्य शेषः ८५३

॥ १०२ ॥ (ऋ० ५ । १३ । १-६) गायत्री ।

अर्चन्तस् त्वा हवामहे अर्चन्तः समिधीमहि । अग्ने अर्चन्त ऊतये ८५४
अग्नेः स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः । देवस्य द्रविणस्यवः ८५५
अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा । स यक्षद् दैव्यं जनम् ८५६
त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः । त्वया यज्ञं वि तन्वते ८५७
त्वामग्ने वाजसातमं विप्रा वर्धन्ति सुष्टुतम् । स नो रास्व सुवीर्यम् ८५८
अग्ने नेमिरराँ इव देवाँस् त्वं परिभूरसि । आ राधश् चित्रमृञ्जसे ८५९

॥ १०३ ॥ (ऋ० ५ । १४ । १-६)

अग्निं स्तोमेन बोधय समिधानो अमर्त्यम् । हव्या देवेषु नो दधत् ८६०
तमध्वरेष्वीळते देवं मर्ता अमर्त्यम् । यजिष्ठं मानुषे जने ८६१
तं हि शश्वन्त ईळते स्रुचा देवं घृतश्चुता । अग्निं हव्याय वोळ्हवे ८६२
अग्निर्जातो अरोचत घ्नन् दस्यूञ् ज्योतिषा तमः । अविन्दद् गा अपः स्वः ८६३
अग्निमीळेन्यं कविं घृतपृष्ठं सपर्यत । वेतु मे शृणवद्धवम् ८६४
अग्निं घृतेन वावृधुः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् । स्वाधीभिर्वचस्युभिः ८६५

॥ १०४ ॥ (ऋ० ५ । १५ । १-५) (८६६-८७०) धरुण आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

प्र वेधसे कवये वेद्याय गिरं भरे यशसे पूर्व्याय ।
घृतप्रसत्तो असुरः सुशेवो रायो धर्ता धरुणो वस्वो अग्निः ८६६
ऋतेन ऋतं धरुणं धारयन्त यज्ञस्य शाके परमे व्योमन् ।
दिवो धर्मन् धरुणे सेदुषो नॄञ् जातैरजाताँ अभि ये ननक्षुः ८६७
अंहोयुवस् तन्वस् तन्वते वि वयो महद् दुष्टरं पूर्व्याय ।
स संवतो नवजातस् तुतुर्यात् सिंहं न क्रुद्धमभितः परि ष्ठुः ८६८
मातेव यद् भरसे पप्रथानो जनंजनं धायसे चक्षसे च ।
वयोवयो जरसे यद् दधानः परि त्मना विषुरूपो जिगासि ८६९
वाजो नु ते शवसस्पात्वन्तम् उरुं दोघं धरुणं देव रायः ।
पदं न तायुर्गुहा दधानो महो राये चितयन्नत्रिमस्पः ८७०

॥ १०५ ॥ (ऋ० ५ । १६ । १-५) [८७१-८८०] पूरुरात्रेयः। अनुष्टुप्, ८७५ पङ्क्तिः।

बृहद् वयो हि भानवे　ऽर्चा देवायाग्नये ।
यं मित्रं न प्रशस्तिभिर्　मर्तासो दधिरे पुरः　८७१

स हि द्युभिर्जनानां　होता दक्षस्य बाह्वोः ।
वि हव्यमग्निरानुषग्　भगो न वारमृण्वति　८७२

अस्य स्तोमे मघोनः　सख्ये वृद्धशोचिषः ।
विश्वा यस्मिन् तुविष्वणि　समर्ये शुष्ममादधुः　८७३

अधा ह्यग्न एषां　सुवीर्यस्य मंहना ।
तमिद् यह्वं न रोदसी　परि श्रवो बभूवतुः　८७४

नू न एहि वार्यम्　अग्ने गृणान आ भर ।
ये वयं ये च सूरयः　स्वस्ति धामहे सचा　उतैधि पृत्सु नो वृधे　८७५

॥ १०६ ॥ (ऋ० ५ । १७ । १-५) अनुष्टुप्, ८८० पङ्क्तिः।

आ यज्ञैर्देव मर्त्य　इत्था तव्यांसमूतये ।
अग्निं कृते स्वध्वरे　पूरुरीळीतावसे　८७६

अस्य हि स्वयशस्तर　आसा विधर्मन् मन्यसे ।
तं नाकं चित्रशोचिषं　मन्द्रं परो मनीषया　८७७

अस्य वासा उ अर्चिषा　य आयुक्त तुजा गिरा ।
दिवो न यस्य रेतसा　बृहच्छोचन्त्यर्चयः　८७८

अस्य क्रत्वा विचेतसो　दस्मस्य वसु रथ आ ।
अधा विश्वासु हव्यो　ऽग्निर्विक्षु प्र शस्यते　८७९

नू न इद्धि वार्यम्　आसा सचन्त सूरयः ।
ऊर्जो नपादभिष्टये　पाहि शग्धि स्वस्तये　उतैधि पृत्सु नो वृधे　८८०

॥ १०७ ॥ (ऋ० ५ । १८ । १-५)
[८८१-८८५] द्वितो मृक्तवाहा आत्रेयः। अनुष्टुप्, ८८५ पङ्क्तिः ।

प्रातरग्निः पुरुप्रियो　विशः स्तवेतातिथिः ।
विश्वानि यो अमर्त्यो　हव्या मर्तेषु रण्यति　८८१

द्वितार्य मृक्तवाहसे   स्वस्य दक्षस्य मंहना ।
इन्दुं स धत्त आनुषक्   स्तोता चित् ते अमर्त्य   ८८२
तं वो दीर्घायुशोचिषं   गिरा हुवे मघोनाम् ।
अरिष्टो येषां रथो   व्यश्वदावन् नीयते   ८८३
चित्रा वा येषु दीधितिर्   आसन्नुक्था पान्ति ये ।
स्तीर्णं बर्हिः स्वर्णरे   श्रवांसि दधिरे परि   ८८४
ये मे पञ्चाशतं ददुर्   अश्वानां सधस्तुति ।
द्युमदग्ने महि श्रवो   बृहत् कृधि मघोनां   नृवदमृत नृणाम्   ८८५

॥ १०८ ॥ (ऋ० ५ । १९ । १-५)

[८८६—८९०] वव्रिरात्रेयः । ८८६-८८७ गायत्री, ८८८-८८९ अनुष्टुप्, ८९० विराड्रूपा ।

अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते   प्र वव्रेर्वव्रिश् चिकेत । उपस्थे मातुर्वि चष्टे   ८८६
जुहुरे वि चितयन्तो   ऽनिमिषं नृम्णं पान्ति । आ दृह्लां पुरं विविशुः   ८८७
आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो   द्युमद् वर्धन्त कृष्टयः ।
निष्कग्रीवो बृहदुक्थ   एना मध्वा न वाजयुः   ८८८
प्रियं दुग्धं न काम्यम्   अजामि जाम्योः सचा ।
घर्मो न वाजजठरो   ऽदब्धः शश्वतो दभः   ८८९
क्रीळन् नो रश्म आ भुवः   सं भस्मना वायुना वेविदानः ।
ता अस्य सन् धृषजो न तिग्माः   सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः   ८९०

॥ १०९ ॥ (ऋ० ५ । २० । १-४) [८९१-८९४] प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अनुष्टुप्, ८९४ पङ्क्तिः ।

यमग्ने वाजसातम   त्वं चिन् मन्यसे रयिम् ।
तं नो गीर्भिः श्रवाय्यं   देवत्रा पनया युजम्   ८९१
ये अग्ने नेरयन्ति ते   वृद्धा उग्रस्य शवसः ।
अप द्वेषो अप ह्वरो   ऽन्यव्रतस्य सश्चिरे   ८९२
होतारं त्वा वृणीमहे   ऽग्ने दक्षस्य साधनम् ।
यज्ञेषु पूर्व्यं गिरा   प्रयस्वन्तो हवामहे   ८९३
इत्था यथा त ऊतये   सहसावन् दिवेदिवे ।
राय ऋताय सुक्रतो   गोभिः ष्याम सधमादो   वीरैः स्याम सधमादः   ८९४

॥ ११० ॥ (ऋ० ५ । २१ । १-४) [८९५-८९८] सस आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८९८ पङ्क्तिः ।

मनुष्वत् त्वा नि धीमहि मनुष्वत् समिधीमहि । अग्ने मनुष्वदङ्गिरो देवान् देवयते यज ८९५
त्वं हि मानुषे जने ऽग्ने सुप्रीत इध्यसे । स्रुचस् त्वा यन्त्यानुषक् सुजात सर्पिरासुते ८९६
त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत । सपर्यन्तस् त्वा कवे यज्ञेषु देवमीळते ८९७
देवं वो देवयज्यया अग्निमीळीत मर्त्यः ।
समिद्धः शुक्र दीदिहि ऋतस्य योनिमासदः ससस्य योनिमासदः ८९८

॥ १११ ॥ (ऋ० ५ । २२ । १-४) [८९९-९०२] विश्वसामा आत्रेयः । अनुष्टुप्, ९०२ पङ्क्तिः ।

प्र विश्वसामन्नत्रिवद् अर्चा पावकशोचिषे । यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि ८९९
न्य१ग्निं जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् । प्र यज्ञ एत्वानुषग् अद्या देवव्यचस्तमः ९००
चिकित्विन् मनसं त्वा देवं मर्तास ऊतये । वरेण्यस्य तेऽवस इयानासो अमन्महि ९०१
अग्ने चिकिद्ध्य१स्य न इदं वचः सहस्य ।
तं त्वा सुशिप्र दंपते स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रयः ९०२

॥ ११२ ॥ (ऋ० ५ । २३ । १-४) [९०३-९०६] द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अनुष्टुप्, ९०६ पङ्क्तिः ।

अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्य प्रासहा रयिम् । विश्वा यश् चर्षणीरभि आ॒सा वाजेषु सासहत् ९०३
तमग्ने पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर । त्वं हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः ९०४
विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो वृक्तबर्हिषः । होतारं सद्मसु प्रियं व्यन्ति वार्या पुरु ९०५
स हि ष्मा विश्वचर्षणिर् अभिमाति सहो दधे ।
अग्न एषु क्षयेष्वा रेवन् नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक दीदिहि ९०६

॥ ११३ ॥ (ऋ० ५ । २४ । १-४)
[९०७-९१०] बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च क्रमेण गोपायना लौपायना वा । द्विपदा विराट् ।

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः ९०७
वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः ९०८
स नो बोधि श्रुधी हवम् उरुष्या णो अघायतः समस्मात् ९०९
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ९१०

॥ ११४ ॥ (ऋ० ५ । २५ । १-९) [९११-९२७] वसूयव आत्रेयाः । अनुष्टुप् ।

अच्छा वो अग्निमवसे देवं गासि स नो वसुः ।
रासत् पुत्र ऋषूणाम् ऋतावा पर्षति द्विषः ९११

स हि सत्यो यं पूर्वे चिद् देवासश् चिद् यमीधिरे ।
होतारं मन्द्रजिह्वमित् सुदीतिभिर्विभावसुम् ९१२

स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या ।
अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर्वरेण्य ९१३

अग्निर्देवेषु राजति अग्निर्मर्तेष्वाविशन् ।
अग्निर्नो हव्यवाहनो ऽग्निं धीभिः सपर्यत ९१४

अग्निस् तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तमम् ।
अतूर्तं श्रावयत् पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे ९१५

अग्निर्ददाति सत्पतिं सासाह यो युधा नृभिः ।
अग्निरत्यं रघुष्यदं जेतारमपराजितम् ९१६

यद् वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो ।
महिषीव त्वद् रयिस् त्वद् वाजा उदीरते ९१७

तव द्युमन्तो अर्चयो ग्रावेवोच्यते बृहत् ।
उतो ते तन्यतुर्यथा स्वानो अर्त त्मना दिवः ९१८

एवाँ अग्निं वसूयवः सहसानं ववन्दिम ।
स नो विश्वा अति द्विषः पर्षन्नावेव सुक्रतुः ९१९

॥ ११५ ॥ (ऋ० ५ । २६ । १-८) गायत्री ।

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया । आ देवान् वक्षि यक्षि च ९२०
तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम् । देवाँ आ वीतये वह ९२१
वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि । अग्ने बृहन्तमध्वरे ९२२
अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये । होतारं त्वा वृणीमहे ९२३
यजमानाय सुन्वत आग्ने सुवीर्यं वह । देवैरा सत्सि बर्हिषि ९२४
समिधानः सहस्रजिद् अग्ने धर्माणि पुष्यसि । देवानां दूत उक्थ्यः ९२५
न्यग्निं जातवेदसं होत्रवाहं यविष्ठ्यम् । दधाता देवमृत्विजम् ९२६
प्र यज्ञ एत्वानुषग् अद्या देवव्यचस्तमः । स्तृणीत बर्हिरासदे ९२७

॥ ११६ ॥ (ऋ० ५ । २७ । १-५)

[९२८-९३२] त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरुकुत्सः, अश्वमेधश्च भारताः राजानः (अत्रिर्भौम इति केचित्) । त्रिष्टुप्, ९३१-९३२ अनुष्टुप् ।

अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहे मे　गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः ।
त्रैवृष्णो अग्ने दुशभिः सहस्रैर्　वैश्वानर त्र्यरुणश् चिकेत　९२८

यो मे शता च विंशतिं च गोनां　हरी च युक्ता सुधुरा ददाति ।
वैश्वानर सुष्टुतो वावृधानो ऽग्ने यच्छ त्र्यरुणाय शर्म　९२९

एवा ते अग्ने सुमतिं चकानो　नविष्ठाय नवमं त्रसदस्युः ।
यो मे गिरस् तुविजातस्य पूर्वीर्　युक्तेनाभि त्र्यरुणो गृणाति　९३०

यो म इति प्रवोचति　अश्वमेधाय सूरये ।
ददद्दृचा सनिं यते　दददन्मेधामृतायते　९३१

यस्य मा परुषाः शतम्　उद्धर्षयन्त्युक्षणः ।
अश्वमेधस्य दानाः　सोमा इव त्र्याशिरः　९३२

॥ ११७ ॥ (ऋ० ५ । २८ । १—६)

[९३३-९३८] विश्ववाराऽऽत्रेयी । ९३३, ९३५ त्रिष्टुप्, ९३४ जगती, ९३६ अनुष्टुप्, ९३७-९३८ गायत्री ।

समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत्　प्रत्यङ्ङुषसमुर्विया वि भाति ।
एति प्राची विश्ववारा नमोभिर्　देवाँ ईळाना हविषा घृताची　९३३

समिध्यमानो अमृतस्य राजसि　हविष् कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये ।
विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वसि　आतिथ्यमग्ने नि च धत्त इत् पुरः　९३४

अग्ने शर्ध महते सौभगाय　तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु ।
सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व　शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि　९३५

समिद्धस्य प्रमहसो　ऽग्ने वन्दे तव श्रियम् ।
वृषभो द्युम्नवाँ असि　समध्वरेष्विध्यसे　९३६

समिद्धो अग्न आहुत　देवान् यक्षि स्वध्वर । त्वं हि हव्यवाळसि　९३७
आ जुहोता दुवस्यत　अग्निं प्रयत्यध्वरे　। वृणीध्वं हव्यवाहनम्　९३८

॥ ११८ ॥ (ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-१३)

[९३९-१०९०] भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोता अस्या धियो अभवो दस्म होता ।
त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु सहो विश्वस्मै सहसे सहध्यै ९३९

अधा होता न्यसीदो यजीयान् इळस्पद इषयन्नीड्यः सन् ।
तं त्वा नरः प्रथमं देवयन्तो महो राये चितयन्तो अनु ग्मन् ९४०

वृतेव यन्तं बहुभिर्वसव्यैस् त्वे रयिं जागृवांसो अनु ग्मन् ।
रुशन्तमग्निं दर्शतं बृहन्तं वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसम् ९४१

पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन्नमृक्तम् ।
नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ ९४२

त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्यां त्वां राय उभयासो जनानाम् ।
त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम् ९४३

सपर्येण्यः स प्रियो विक्ष्वग्निर् होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् ।
तं त्वा वयं दम आ दीदिवांसम् उप ज्ञुबाधो नमसा सदेम ९४४

तं त्वा वयं सुध्यो नव्यमग्ने सुम्नायव ईमहे देवयन्तः ।
त्वं विशो अनयो दीद्यानो दिवो अग्ने बृहता रोचनेन ९४५

विशां कविं विश्पतिं शश्वतीनां नितोशनं वृषभं चर्षणीनाम् ।
प्रेतीषणिमिषयन्तं पावकं राजन्तमग्निं यजतं रयीणाम् ९४६

सो अग्न ईजे शशमे च मर्तो यस्त आनट् समिधा हव्यदातिम् ।
य आहुतिं परि वेदा नमोभिर् विश्वेत् स वामा दधते त्वोतः ९४७

अस्मा उ ते महि महे विधेम नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः ।
वेदी सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर् आ ते भद्रायां सुमतौ यतेम ९४८

आ यस् ततन्थ रोदसी वि भासा श्रवोभिश्च श्रवस्यस् तरुत्रः ।
बृहद्भिर्वाजैः स्थविरेभिरस्मे रेवद्भिरग्ने वितरं वि भाहि ९४९

नृवद् वसो सदमिद्धेह्यस्मे भूरि तोकाय तनयाय पश्वः ।
पूर्वीरिषो बृहतीरारेअघा अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ९५०

पुरूण्यग्ने पुरुधा त्वाया वसूनि राजन् वसुता ते अश्याम् ।
पुरूणि हि त्वे पुरुवार सन्ति अग्ने वसु विधते राजनि त्वे ९५१

॥ ११९ ॥ (ऋ० ६ । २ । १-११) अनुष्टुप्, ९६२ शक्वरी ।

त्वं हि क्षैतवद् यशो ऽग्ने मित्रो न पत्यसे । त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ९५२
त्वां हि ष्मा चर्षणयो यज्ञेभिर्गीर्भिरीळते । त्वां वाजी यात्यवृको रजस्तूर्विश्वचर्षणिः ९५३
सजोषस् त्वा दिवो नरो यज्ञस्य केतुमिन्धते । यद्ध स्य मानुषो जनः सुम्नायुर्जुह्वे अध्वरे ९५४
ऋधद् यस् ते सुदानवे धिया मर्तः शशमते । ऊती ष बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ९५५
समिधा यस् त आहुतिं निशितिं मर्त्यो नशत् । वयावन्तं स पुष्यति क्षयमग्ने शतायुषम् ९५६
त्वेषस् ते धूम ऋण्वति दिवि षञ्छुक्र आततः । सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ९५७
अधा हि विक्ष्वीड्यो ऽसि प्रियो नो अतिथिः । रण्वः पुरीव जूर्यः सूनुर्न त्रययाय्यः ९५८
क्रत्वा हि द्रोणे अज्यसे ऽग्ने वाजी न कृत्व्यः । परिज्मेव स्वधा गयो ऽत्यो न ह्वार्यः शिशुः ९५९
त्वं त्या चिदच्युता अग्ने पशुर्न यवसे । धामा ह यत् ते अजर वना वृश्चन्ति शिक्वसः ९६०
वेषि ह्यध्वरीयताम् अग्ने होता दमे विशाम् । समृधो विश्पते कृणु जुषस्व हव्यमङ्गिरः ९६१
अच्छा नो मित्रमहो देव देवान् अग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः ।
वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नॄन् द्विषो अंहांसि दुरिता तरेम, ता तरेम, तवावसा तरेम ९६२

॥ १२० ॥ (ऋ० ६ । ३ । १—८) त्रिष्टुप् ।

अग्ने स क्षेषदृतपा ऋतेजा उरु ज्योतिर्नशते देवयुष्टे ।
यं त्वं मित्रेण वरुणः सजोषा देव पासि त्यजसा मर्तमंहः ९६३

ईजे यज्ञेभिः शशमे शमीभिर् ऋधद्वारायाग्नये ददाश ।
एवा चन तं यशसामजुष्टिर् नांहो मर्तं नशते न प्रदृप्तिः ९६४

सूरो न यस्य दृशतिररेपा भीमा यदेति शुचतस् त आ धीः ।
हेषस्वतः शुरुधो नायमक्तोः कुत्रा चिद् रण्वो वसतिर्वनेजाः ९६५

तिग्मं चिदेम महि वर्पो अस्य भसदश्वो न यमसान आसा ।
विजेहमानः परशुर्न जिह्वां द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत् ९६६

स इदस्तेव प्रति धादसिष्यञ् छिशीत तेजोऽयसो न धाराम् ।
चित्रध्रजतिररतिर्यो अक्तोर् वेर्न द्रुषद्वा रघुपत्मजंहाः ९६७

स ईं रेभो न प्रति वस्त उस्राः शा॥५.. पीति मित्रमहाः ।
नक्तं य ईमरुषो यो दिवा नॄन् अमर्त्यो अरुषो यो दिवा नॄन् ९६८
दिवो न यस्य विधतो नवीनोद् वृषा रुक्ष ओषधीषु नूनोत् ।
घृणा न यो ध्रजसा पत्मना यन् ना रोदसी वसुना दं सुपत्नी ९६९
धायोभिर्वा यो युज्येभिरर्कैर् विद्युन्न दविद्योत् स्वेभिः शुष्मैः ।
शर्धो वा यो मरुतां ततक्ष ऋभुर्न त्वेषो रभसानो अद्यौत् ९७०

॥ १२१ ॥ (ऋ० ६ । ४ । १-८)

यथा होतर्मनुषो देवताता यज्ञेभिः सूनो सहसो यजासि ।
एवा नो अद्य समना समानान् उशन्नग्न उशतो यक्षि देवान् ९७१
स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोर् अग्निर्वन्दारु वेद्यश् चनो धात् ।
विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषु उषर्भुद्भूदतिथिर्जातवेदाः ९७२
द्यावो न यस्य पनयन्त्यभ्वं भासांसि वस्ते सूर्यो न शुक्रः ।
वि य इनोत्यजरः पावको ऽश्नस्य चिच्छिश्नथत् पूर्व्याणि ९७३
वद्मा हि सूनो अस्यद्मसद्वा चक्रे अग्निर्जनुषाज्मान्नम् ।
स त्वं न ऊर्जसन ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः ९७४
नितिक्ति यो वारणमन्नमत्ति वायुर्न राष्ट्र्यत्येत्यक्तून् ।
तुर्याम यस् त आदिशामरातीर् अत्यो न ह्रुतः पततः परिह्रुत् ९७५
आ सूर्यो न भानुमद्भिरर्कैर् अग्ने ततन्थ रोदसी वि भासा ।
चित्रो नयत् परि तमांस्यक्तः शोचिषा पत्मन्नौशिजो न दीयन् ९७६
त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैर् ववृमहे महि नः श्रोष्यग्ने ।
इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः ९७७
नू नो अग्नेऽवृकेभिः स्वस्ति वेषि रायः पथिभिः पर्ष्यंहः ।
ता सूरिभ्यो गृणते रासि सुम्नं मदेम शतहिमाः सुवीराः ९७८

॥ १२२ ॥ (ऋ० ६ । ५ । १-७)

हुवे वः सूनुं सहसो युवानम् अद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् ।
य इन्वति द्रविणानि प्रचेता विश्ववाराणि पुरुवारो अध्रुक् ९७९

त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर् दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियासः ।
क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन् त्सं सौभगानि दधिरे पावके ९८०

त्वं विक्षु प्रदिवः सीद आसु क्रत्वा रथीरभवो वार्याणाम् ।
अत इनोषि विधते चिकित्वो व्यानुषग् जातवेदो वसूनि ९८१

यो नः सनुत्यो अभिदासदग्ने यो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात् ।
तमजरेभिर्वृषभिस् तव स्वैस् तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान् ९८२

यस् ते यज्ञेन समिधा य उक्थैर् अर्केभिः सूनो सहसो ददाशत् ।
स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा वि भाति ९८३

स तत् कृधीषितस् तूयमग्ने स्पृधो बाधस्व सहसा सहस्वान् ।
यच्छस्यसे द्युभिरक्तो वचोभिस् तज् जुषस्व जरितुर्घोषि मन्म ९८४

अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयिं रयिवः सुवीरम् ।
अश्याम वाजमभि वाजयन्तो ऽश्याम द्युम्नमजराजरं ते ९८५

॥ १२३ ॥ (ऋ० ६ । ६ । १-७)

प्र नव्यसा सहसः सूनुमच्छा यज्ञेन गातुमव इच्छमानः ।
वृश्चद्वनं कृष्णयामं रुशन्तं वीती होतारं दिव्यं जिगाति ९८६

स श्वितानस् तन्यतू रोचनस्था अजरेभिर्नानदद्भिर्यविष्ठः ।
यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरनुयाति भर्वन् ९८७

वि ते विष्वग् वातजूतासो अग्ने भामासः शुचे शुचयश् चरन्ति ।
तुविम्रक्षासो दिव्या नवग्वा वना वनन्ति धृषता रुजन्तः ९८८

ये ते शुक्रासः शुचयः शुचिष्मः क्षां वपन्ति विषितासो अश्वाः ।
अध भ्रमस् त उर्विया वि भाति यातयमानो अधि सानु पृश्नेः ९८९

अध जिह्वा पापतीति प्र वृष्णो गोषुयुधो नाशनिः सृजाना ।
शूरस्येव प्रसितिः क्षातिरग्नेर् दुर्वर्तुर्भीमो दयते वनानि ९९०

आ भानुना पार्थिवानि ज्रयांसि महस् तोदस्य धृषता ततन्थ ।
स बाधस्वाप भया सहोभिः स्पृधो वनुष्यन् वनुषो नि जूर्व ९९१

स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम् ।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्र चन्द्राभिर्गृणते युवस्व ९९२

॥ १२४ ॥ (ऋ० ६ । १० । १-७) त्रिष्टुप्; ९९९ द्विपदा विराट् ।

पुरो वो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिं प्रयति यज्ञे अग्निमध्वरे दधिध्वम् ।
पुर उक्थेभिः स हि नो विभावा स्वध्वरा करति जातवेदाः ९९३

तमु द्युमः पुर्वणीक होतर् अग्ने अग्निभिर्मनुष इधानः ।
स्तोमं यमस्मै ममतेव शूषं घृतं न शुचि मतयः पवन्ते ९९४

पीपाय स श्रवसा मर्त्येषु यो अग्नये ददाश विप्र उक्थैः ।
चित्राभिस् तमूतिभिश् चित्रशोचिर् व्रजस्य साता गोमतो दधाति ९९५

आ यः पप्रौ जायमान उर्वी दूरेदृशा भासा कृष्णाध्वा ।
अध बहु चित् तम ऊर्म्यायास् तिरः शोचिषा ददृशे पावकः ९९६

नू नश् चित्रं पुरुवाजाभिरूती अग्ने रयिं मघवद्भ्यश् च धेहि ।
ये राधसा श्रवसा चात्यन्यान् त्सुवीर्येभिश् चाभि सन्ति जनान् ९९७

इमं यज्ञं चनो धा अग्न उशन् यं त आसानो जुहुते हविष्मान् ।
भरद्वाजेषु दधिषे सुवृक्तिम् अवीर्वाजस्य गध्यस्य सातौ ९९८

वि द्वेषांसीनुहि वर्धयेळां मदेम शतहिमाः सुवीराः ९९९

॥ १२५ ॥ (ऋ० ६ । ११ । १-६) त्रिष्टुप् ।

यजस्व होतरिषितो यजीयान् अग्ने बाधो मरुतां न प्रयुक्ति ।
आ नो मित्रावरुणा नासत्या द्यावा होत्राय पृथिवी ववृत्याः १०००

त्वं होता मन्द्रतमो नो अध्रुग् अन्तर्देवो विदथा मर्त्येषु ।
पावकया जुह्वा३ वह्निरासा ऽग्ने यजस्व तन्वं१ तव स्वाम् १००१

धन्या चिद्धि त्वे धिषणा वष्टि प्र देवाञ् जन्म गृणते यजध्यै ।
वेपिष्ठो अङ्गिरसां यद्ध विप्रो मधु च्छन्दो भनति रेभ इष्टौ १००२

अदिद्युतत् स्वपाको विभावा ऽग्ने यजस्व रोदसी उरूची ।
आयुं न यं नमसा रातहव्या अञ्जन्ति सुप्रयसं पञ्च जनाः १००३

वृञ्जे ह यन्नमसा बर्हिरग्नौ अयामि स्रुग् घृतवती सुवृक्तिः ।
अम्यक्षि सद्म सदने पृथिव्या अश्रायि यज्ञः सूर्ये न चक्षुः १००४
दशस्या नः पुर्वणीक होतर् देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।
रायः सूनो सहसो वावसाना अति स्रसेम वृजनं नांहः १००५

॥ १२६ ॥ (ऋ० ६ । १२ । १-६)

मध्ये होता दुरोणे बर्हिषो राळ् अग्निस् तोदस्य रोदसी यजध्यै ।
अयं स सूनुः सहस ऋतावा दूरात् सूर्यो न शोचिषा ततान १००६
आ यस्मिन् त्वे स्वपाके यजत्र यक्षद् राजन्त्सर्वतातेव नु द्यौः ।
त्रिषधस्थस् ततरुषो न जंहो हव्या मघानि मानुषा यजध्यै १००७
तेजिष्ठा यस्यारतिर्वनेराट् तोदो अध्वन्न वृधसानो अद्यौत् ।
अद्रोघो न द्रविता चेतति त्मन्न् अमर्त्योऽवर्त्र ओषधीषु १००८
सास्माकेभिरेतरी न शूषैर् अग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः ।
द्र्वन्नो वन्वन् क्रत्वा नार्वा उस्रः पितेव जारयायि यज्ञैः १००९
अध स्मास्य पनयन्ति भासो वृथा यत् तक्षदनुयाति पृथ्वीम् ।
सद्यो यः स्पन्द्रो विषितो धवीयान् ऋणो न तायुरति धन्वा राट् १०१०
स त्वं नो अर्वन्निदाया विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।
वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मदेम शतहिमाः सुवीराः १०११

॥ १२७ ॥ (ऋ० ६ । १३ । १-६)

त्वद् विश्वा सुभग सौभगानि अग्ने वि यन्ति वनिनो न वयाः ।
श्रुष्टी रयिर्वाजो वृत्रतूर्ये दिवो वृष्टिरीड्यो रीतिरपाम् १०१२
त्वं भगो न आ हि रत्नमिषे परिज्मेव क्षयसि दस्मवर्चाः ।
अग्ने मित्रो न बृहत ऋतस्य असि क्षत्ता वामस्य देव भूरेः १०१३
स सत्पतिः शवसा हन्ति वृत्रम् अग्ने विप्रो वि पणेर्भर्ति वाजम् ।
यं त्वं प्रचेत ऋतजात राया सजोषा नप्त्रापां हिनोषि १०१४
यस् ते सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर् यज्ञैर्मर्तो निशितिं वेद्यानट् ।
विश्वं स देव प्रति वारमग्ने धत्ते धान्यं पत्यते वसव्यैः १०१५

ता नृभ्य आ सौश्रवसा सुवीरा अग्ने सूनो सहसः पुष्यसे धाः ।
कृणोषि यच्छवसा भूरि पश्वो वयो वृकायारये जसुरये १०१६
वद्मा सूनो सहसो नो विहाया अग्ने तोकं तनयं वाजि नो दाः ।
विश्वाभिर्गीर्भिरभि पूर्तिमश्यां मदेम शतहिमाः सुवीराः १०१७

॥ १२८ ॥ (ऋ० ६ । १४ । १-६) अनुष्टुप्, ९६२ शक्वरी ।

अग्ना यो मर्त्यो दुवो धियं जुजोष धीतिभिः । भसन्नु ष प्र पूर्व्य इषं वुरीतावसे १०१८
अग्निरिद्धि प्रचेता अग्निर्वेधस्तम ऋषिः । अग्निं होतारमीळते यज्ञेषु मनुषो विशः १०१९
नाना ह्यग्नेऽवसे स्पर्धन्ते रायो अर्यः । तूर्वन्तो दस्युमायवो व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम् १०२०
अग्निरप्सामृतीषहं वीरं ददाति सत्पतिम् । यस्य त्रसन्ति शवसः संचक्षि शत्रवो भिया १०२१
अग्निर्हि विद्मना निदो देवो मर्तमुरुष्यति । सहावा यस्यावृतो रयिर्वाजेष्ववृतः १०२२
अच्छा नो मित्रमहो० (९६२)

॥ १२९ ॥ (ऋ० ६ । १५ । १-१९)

जगती; १०२५, १०३७ शक्वरी; १०२८ अतिशक्वरी; १०३९ अनुष्टुप्; १०४० बृहती;
१०३२-३६, १०३८, १०४१ त्रिष्टुप् ।

इममू षु वो अतिथिमुषर्बुधं विश्वासां विशां पतिमृञ्जसे गिरा ।
वेतीद् दिवो जनुषा कच्चिदा शुचिर् ज्योक् चिदत्ति गर्भो यदच्युतम् १०२३
मित्रं न यं सुधितं भृगवो दधुर् वनस्पतावीड्यमूर्ध्वशोचिषम् ।
स त्वं सुप्रीतो वीतहव्ये अद्भुत प्रशस्तिभिर्महयसे दिवेदिवे १०२४
स त्वं दक्षस्यावृको वृधो भूरर्यः परस्य अन्तरस्य तरुषः ।
रायः सूनो सहसो मर्त्येष्वा छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथः १०२५
द्युतानं वो अतिथिं स्वर्णरम् अग्निं होतारं मनुषः स्वध्वरम् ।
विप्रं न द्युक्षवचसं सुवृक्तिभिर् हव्यवाहमरतिं देवमृञ्जसे १०२६
पावकया यश् चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच उषसो न भानुना ।
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः १०२७
अग्निमग्निं वः समिधा दुवस्यत प्रियंप्रियं वो अतिथिं गृणीषणि ।
उप वो गीर्भिरमृतं विवासत देवो देवेषु वनते हि वार्यं देवो देवेषु वनते हि नो दुवः १०२८

समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम्।
विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुम्नैरीमहे जातवेदसम् १०२९

त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम्।
देवासश्च मर्तासश्च जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे १०३०

विभूषन्नग्न उभयाँ अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे।
यत् ते धीतिं सुमतिमावृणीमहे ऽध स्मा नस् त्रिवरूथः शिवो भव १०३१

तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चम् अविद्वांसो विदुष्टरं सपेम।
स यक्षद् विश्वा वयुनानि विद्वान् प्र हव्यमग्निरमृतेषु वोचत् १०३२

तमग्ने पास्युत तं पिपर्षि यस् त आनट् कवये शूर धीतिम्।
यज्ञस्य वा निशितिं वोदितिं वा तमित् पृणक्षि शवसोत राया १०३३

त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात्।
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री १०३४

अग्निर्होता गृहपतिः स राजा विश्वा वेद जनिमा जातवेदाः।
देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा १०३५

अग्ने यदद्य विशो अध्वरस्य होतः पावकशोचे वेष्ट्वं हि यज्वा।
ऋता यजासि महिना वि यद् भूर् हव्या वह यविष्ठ या ते अद्य १०३६

अभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यो, नि त्वा दधीत रोदसी यजध्यै।
अवा नो मघवन् वाजसातौ, अग्ने विश्वानि दुरिता तरेम,ता तरेम तवावसा तरेम १०३७

अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैर् ऊर्णावन्तं प्रथमः सीद योनिम्।
कुलायिनं घृतवन्तं सवित्रे यज्ञं नय यजमानाय साधु १०३८

इममु त्यमथर्ववद् अग्निं मन्थन्ति वेधसः।
यमङ्कूयन्तमानयन्न् अमूरं श्याव्याभ्यः १०३९

जनिष्वा देववीतये सर्वताता स्वस्तये।
आ देवान् वक्ष्यमृतां ऋतावृधो यज्ञं देवेषु पिस्पृशः १०४०

वयमु त्वा गृहपते जनानाम् अग्ने अकर्म समिधा बृहन्तम्।
अस्थूरि नो गार्हपत्यानि सन्तु तिग्मेन नस् तेजसा सं शिशाधि १०४१

॥ १३० ॥ (ऋ० ६ । १६ । १—१८)

गायत्री; १०४२,१०४७ वर्धमाना; १०६८।१०८८-१०८९ अनुष्टुप्; १०८७ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः	।	देवेभिर्मानुषे जने	१०४२
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः	।	आ देवान् वक्षि यक्षि च	१०४३
वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा	।	अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो	१०४४
त्वामीळे अध द्विता भरतो वाजिभिः शुनम्	।	ईजे यज्ञेषु यज्ञियम्	१०४५
त्वमिमा वार्या पुरु दिवोदासाय सुन्वते	।	भरद्वाजाय दाशुषे	१०४६
त्वं दूतो अमर्त्य आ वहा दैव्यं जनम्	।	शृण्वन् विप्रस्य सुष्टुतिम्	१०४७
त्वामग्ने स्वाध्यो३ मर्तासो देववीतये	।	यज्ञेषु देवमीळते	१०४८
तव प्र यक्षि संदृशमुत क्रतुं सुदानवः	।	विश्वे जुषन्त कामिनः	१०४९
त्वं होता मनुर्हितो वह्निरासा विदुष्टरः	।	अग्ने यक्षि दिवो विशः	१०५०
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये	।	नि होता सत्सि बर्हिषि	१०५१
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि	।	बृहच्छोचा यविष्ठ्य	१०५२
स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि	।	बृहदग्ने सुवीर्यम्	१०५३
त्वामग्ने पुष्करादधि अथर्वा निरमन्थत	।	मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः	१०५४
तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः पुत्र ईधे अथर्वणः	।	वृत्रहणं पुरंदरम्	१०५५
तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम्	।	धनंजयं रणेरणे	१०५६
एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः	।	एभिर्वर्धास इन्दुभिः	१०५७
यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्	।	तत्रा सदः कृणवसे	१०५८
नहि ते पूर्तमक्षिपद् भुवन्नेमानां वसो	।	अथा दुवो वनवसे	१०५९
आग्निरगामि भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः	।	दिवोदासस्य सत्पतिः	१०६०
स हि विश्वाति पार्थिवा रयिं दाशन् महित्वना	।	वन्वन्नवातो अस्तृतः	१०६१
स प्रत्नवन्नवीयसाऽग्ने द्युम्नेन संयता	।	बृहत् ततन्थ भानुना	१०६२
प्र वः सखायो अग्नये स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया	।	अर्च गाय च वेधसे	१०६३
स हि यो मानुषा युगा सीदद्धोता कविक्रतुः	।	दूतश्च हव्यवाहनः	१०६४
ता राजाना शुचिव्रताऽऽदित्यान् मारुतं गणम्	।	वसो यक्षीह रोदसी	१०६५
वस्वी ते अग्ने संदृष्टिरिषयते मर्त्याय	।	ऊर्जो नपादमृतस्य	१०६६
क्रत्वा दा अस्तु श्रेष्ठोऽद्य त्वा वन्वन्त्सुरेक्णाः	।	मर्त आनाश सुवृक्तिम्	१०६७

ते ते अग्ने त्वोता इषयन्तो विश्वमायुः ।
तरन्तो अर्यो अरातीर् वन्वन्तो अर्यो अरातीः १०६८

अग्निस् तिग्मेन शोचिषा यासद् विश्वं न्यत्रिणम् । अग्निर्नो वनते रयिम् १०६९

सुवीरं रयिमा भर जातवेदो विचर्षणे । जहि रक्षांसि सुक्रतो १०७०

त्वं नः पाह्यंहसो जातवेदो अघायतः । रक्षा णो ब्रह्मणस् कवे १०७१

यो नो अग्ने दुरेव आ मर्तो वधाय दाशति । तस्मान्नः पाह्यंहसः १०७२

त्वं तं देव जिह्वया परि बाधस्व दुष्कृतम् । मर्तो यो नो जिघांसति १०७३

भरद्वाजाय सप्रथः शर्म यच्छ सहन्त्य । अग्ने वरेण्यं वसु १०७४

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया । समिद्धः शुक्र आहुतः १०७५

गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे । सीदन्नृतस्य योनिमा १०७६

ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे । अग्ने यद् दीदयद् दिवि १०७७

उप त्वा रण्वसंदृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत । अग्ने ससृज्महे गिरः १०७८

उप च्छायामिव घृणेर् अगन्म शर्म ते वयम् । अग्ने हिरण्यसंदृशः १०७९

य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः । अग्ने पुरो रुरोजिथ १०८०

आ यं हस्ते न खादिनं शिशुं जातं न बिभ्रति । विशामग्निं स्वध्वरं १०८१

प्र देवं देववीतये भरता वसुवित्तमम् । आ स्वे योनौ नि षीदतु १०८२

आ जातं जातवेदसि प्रियं शिशीतातिथिम् । स्योन आ गृहपतिम् १०८३

अग्ने युक्ष्वा हि ये तव अश्वासो देव साधवः । अरं वहन्ति मन्यवे १०८४

अच्छा नो याह्या वह अभि प्रयांसि वीतये । आ देवान् त्सोमपीतये १०८५

उदग्ने भारत द्युमद् अजस्रेण दविद्युतत् । शोचा वि भाह्यजर १०८६

वीती यो देवं मर्तो दुवस्येद् अग्निमीळीताध्वरे हविष्मान् ।
होतारं सत्ययजं रोदस्योर् उत्तानहस्तो नमसा विवासेत् १०८७

आ ते अग्न ऋचा हविर् हृदा तष्टं भरामसि । ते ते भवन्तूक्षण ऋषभासो वशा उत १०८८

अग्निं देवासो अग्रियम् इन्धते वृत्रहन्तमम् । येना वसून्याभृता तृह्ळा रक्षांसि वाजिना १०८९

॥ १३१ ॥ (ऋ० ६।४८।१-१०)

(१०९०-१०९९) शंयुर्बार्हस्पत्यः (तृणपाणिः)। प्रगाथः = १०९०, १०९२ बृहती; १०९१, १०९३ सतोबृहती, १०९४ बृहती, १०९५ महा सतोबृहती, १०९६ महा बृहती, १०९७ महा सतोबृहती, १०९८ बृहती, १०९९ सतोबृहती।

यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् १०९०

ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुर् दाशेम हव्यदातये ।
भुवद् वाजेष्वविता भुवद् वृध उत त्राता तनूनाम् १०९१

वृषा ह्यग्ने अजरो महान् विभास्यर्चिषा ।
अजस्रेण शोचिषा शोशुचच् छुचे सुदीतिभिः सु दीदिहि १०९२

महो देवान् यजसि यक्ष्यानुषक् तव क्रत्वोत दंसना ।
अर्वाचः सीं कृणुह्यग्नेऽवसे रास्व वाजोत वंस्व १०९३

यमापो अद्रयो वना गर्भमृतस्य पिप्रति ।
सहसा यो मथितो जायते नृभिः पृथिव्या अधि सानवि १०९४

आ यः पप्रौ भानुना रोदसी उभे धूमेन धावते दिवि ।
तिरस् तमो ददृश ऊर्म्यास्वा श्यावास्वरुषो वृषा श्यावा अरुषो वृषा १०९५

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक दीदिहि १०९६

विश्वासां गृहपतिर्विशामसि त्वमग्ने मानुषीणाम् ।
शतं पूर्भिर्यविष्ठ पाह्यंहसः समेद्धारं शतं हिमाः स्तोतृभ्यो ये च ददति १०९७

त्वं नश् चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
अस्य रायस् त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः १०९८

पर्षि तोकं तनयं पर्तृभिष्ट्वम् अदब्धैरप्रयुत्वभिः ।
अग्ने हेळांसि दैव्या युयोधि नो ऽदेवानि ह्वरांसि च १०९९

॥ १३२ ॥ (ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-२५)
[११००-१२१३] वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विराट्, १११८-२४ त्रिष्टुप् ।

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर् हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम् ११००
तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन् त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित् ।
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ११०१
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नो ऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ ।
त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ११०२
प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं निः सुवीरासः शोशुचन्त द्युमन्तः ।
यत्रा नरः समासते सुजाताः ११०३
दा नो अग्ने धिया रयिं सुवीरं स्वपत्यं सहस्य प्रशस्तम् ।
न यं यावा तरति यातुमावान् ११०४
उप यमेति युवतिः सुदक्षं दोषा वस्तोर्हविष्मती घृताची ।
उप स्वैनमरमतिर्वसूयुः ११०५
विश्वा अग्नेऽप दहारातीर् येभिस्तपोभिरदहो जरूथम् ।
प्र निस्वरं चातयस्वामीवाम् ११०६
आ यस्ते अग्न इधते अनीकं वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पावक ।
उतो न एभिः स्तवथैरिह स्याः ११०७
वि ये ते अग्ने भेजिरे अनीकं मर्ता नरः पित्र्यासः पुरुत्रा ।
उतो न एभिः सुमना इह स्याः ११०८
इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा विश्वा अदेवीरभि सन्तु मायाः ।
ये मे धियं पनयन्त प्रशस्ताम् ११०९
मा शूने अग्ने नि षदाम नृणां माशेषसोऽवीरता परि त्वा ।
प्रजावतीषु दुर्यासु दुर्य १११०
यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः ।
स्वजन्मना शेषसा वावृधानम् ११११

पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात् पाहि धूर्तेररुषो अघायोः ।
त्वा युजा पृतनायूँरभि ष्याम् ११११२

सेदग्निरग्नीँरत्यस्त्वन्यान् यत्र वाजी तनयो वीळुपाणिः ।
सहस्रपाथा अक्षरा समेति ११११३

सेदग्निर्यो वनुष्यतो निपाति समेद्धारमंहस उरुष्यात् ।
सुजातासः परि चरन्ति वीराः ११११४

अयं सो अग्निराहुतः पुरुत्रा यमीशानः समिदिन्धे हविष्मान् ।
परि यमेत्यध्वरेषु होता ११११५

त्वे अग्न आहवनानि भूरि ईशानास आ जुहुयाम नित्या ।
उभा कृण्वन्तो वहतू मियेधे ११११६

इमो अग्ने वीततमानि हव्या ऽजस्रो वक्षि देवतातिमच्छ ।
प्रति न ईं सुरभीणि व्यन्तु ११११७

मा नो अग्नेऽवीरते परा दा दुर्वाससेऽमतये मा नो अस्यै ।
मा नः क्षुधे मा रक्षस ऋतावो मा नो दमे मा वन आ जुहूर्थाः ११११८

नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः ।
रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११११९

त्वमग्ने सुहवो रण्वसंदृक् सुदीती सूनो सहसो दिदीहि ।
मा त्वे सचा तनये नित्य आ धङ् मा वीरो अस्मन्नर्यो वि दासीत् १११२०

मा नो अग्ने दुर्भृतये सचा एषु देवेद्धेष्वग्निषु प्र वोचः ।
मा ते अस्मान् दुर्मतयो भृमाच्चिद् देवस्य सूनो सहसो नशन्त १११२१

स मर्तो अग्ने स्वनीक रेवान् अमर्त्ये य आजुहोति हव्यम् ।
स देवता वसुवनिं दधाति यं सूरिरर्थी पृच्छमान एति १११२२

महो नो अग्ने सुवितस्य विद्वान् रयिं सूरिभ्य आ वहा बृहन्तम् ।
येन वयं सहसावन् मदेम अविक्षितास आयुषा सुवीराः १११२३

नू मे ब्रह्माण्यग्न० (१११९)

॥ १३३ ॥ (ऋ० ७।३।१-१०) त्रिष्टुप्।

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम्।
यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ११२४
प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद् व्यस्थात्।
आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् अध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ११२५
उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णो ऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः।
अच्छा द्यामरुषो धूम एति सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान् ११२६
वि यस्य ते पृथिव्यां पाजो अश्रेत् तृषु यदन्ना समवृक्त जम्भैः।
सेनेव सृष्टा प्रसितिष्ट एति यवं न दस्म जुह्वा विवेक्षि ११२७
तमिद् दोषा तमुषसि यविष्ठम् अग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः।
निशिशाना अतिथिमस्य योनौ दीदाय शोचिराहुतस्य वृष्णः ११२८
सुसंदृक् ते स्वनीक प्रतीकं वि यद् रुक्मो न रोचस उपाके।
दिवो न ते तन्यतुरेति शुष्मश् चित्रो न सूरः प्रति चक्षि भानुम् ११२९
यथा वः स्वाहाग्नये दाशेम परीळाभिर्घृतवद्भिश् च हव्यैः।
तेभिर्नो अग्ने अमितैर्महोभिः शतं पूर्भिरायसीभिर्नि पाहि ११३०
या वा ते सन्ति दाशुषे अधृष्टा गिरो वा याभिर्नृवतीरुरुष्याः।
ताभिर्नः सूनो सहसो नि पाहि स्मत् सूरीञ् जरितॄञ् जातवेदः ११३१
निर्यत् पूतेव स्वधितिः शुचिर्गात् स्वया कृपा तन्वा३ रोचमानः।
आ यो मात्रोरुशेन्यो जनिष्ट देवयज्याय सुक्रतुः पावकः ११३२
एता नो अग्ने सौभगा दिदीहि अपि क्रतुं सुचेतसं वतेम।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११३३

॥ १३४ ॥ (ऋ० ७।४।१-१०)

प्र वः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम्।
यो दैव्यानि मानुषा जनूंषि अन्तर्विश्वानि विद्मना जिगाति ११३४
स गृत्सो अग्निस् तरुणश् चिदस्तु यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः।
सं यो वना युवते शुचिदन् भूरि चिदन्ना समिदत्ति सद्यः ११३५

अस्य देवस्य संसद्यनीके यं मर्तासः श्येतं जगृभ्रे ।
नि यो गृभं पौरुषेयीमुवोच दुरोकमग्निरायवे शुशोच ११३६

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि ।
स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम ११३७

आ यो योनिं देवकृतं ससाद क्रत्वा ह्यग्निरमृताँ अतारीत् ।
तमोषधीश् च वनिनश् च गर्भं भूमिश् च विश्वधायसं बिभर्ति ११३८

ईशे ह्यग्निरमृतस्य भूरेर् ईशे रायः सुवीर्यस्य दातोः ।
मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः ११३९

परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।
न शेषो अग्ने अन्यजातमस्ति अचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः ११४०

नहि ग्रभायारणः सुशेवो ऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ ।
अधा चिदोकः पुनरित् स एति आ नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः ११४१

त्वमग्ने वनुष्यतो० (१०३४)

एता नो अग्ने० (११३४)

॥ १३५ ॥ (ऋ० ७ । ७ । १-७)

प्र वो देवं चित् सहसानमग्निम् अश्वं न वाजिनं हिषे नमोभिः ।
भवा नो दूतो अध्वरस्य विद्वान् त्मना देवेषु विविदे मितद्रुः ११४२

आ याह्यग्ने पथ्याऽ३ अनु स्वा मन्द्रो देवानां सख्यं जुषाणः ।
आ सानु शुष्मैर्नदयन् पृथिव्या जम्भेभिर्विश्वमुशधग् वनानि ११४३

प्राचीनो यज्ञः सुधितं हि बर्हिः प्रीणीते अग्निरीळितो न होता ।
आ मातरा विश्ववारे हुवानो यतो यविष्ठ जज्ञिषे सुशेवः ११४४

सद्यो अध्वरे रथिरं जनन्त मानुषासो विचेतसो य एषाम् ।
विशामधायि विश्पतिर्दुरोणेऽ३ ऽग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा ११४५

असादि वृतो वह्निराजगन्वान् अग्निर्ब्रह्मा नृषदने विधर्ता ।
द्यौश् च यं पृथिवी वावृधाते आ यं होता यजति विश्ववारम् ११४६

एते द्युम्नेभिर्विश्वमातिरन्त मन्त्रं ये वारं नर्या अतक्षन् ।
प्र ये विशस् तिरन्त श्रोषमाणा आ ये मे अस्य दीधयन्नृतस्य ११४७

नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।
इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११४८

॥ १३६ ॥ (ऋ० ७।८।१-७)

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर् यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
नरो हव्येभिरीळते सबाध आग्निरग्र उषसामशोचि ११४९

अयमु ष्य सुमहाँ अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यह्वो अग्निः ।
वि भा अकः ससृजानः पृथिव्यां कृष्णपविरोषधीभिर्ववक्षे ११५०

कया नो अग्ने वि वसः सुवृक्तिं कामु स्वधामृणवः शस्यमानः ।
कदा भवेम पतयः सुदत्र रायो वन्तारो दुष्टरस्य साधोः ११५१

प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत् सूर्यो न रोचते बृहद्भाः ।
अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ द्युतानो दैव्यो अतिथिः शुशोच ११५२

असन्नित् त्वे आहवनानि भूरि भुवो विश्वेभिः सुमना अनीकैः ।
स्तुतश् चिदग्ने शृण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात ११५३

इदं वचः शतसाः संसहस्रम् उदग्नये जनिषीष्ट द्विबर्हाः ।
शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवाति द्युमदमीवचातनं रक्षोहा ११५४

नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा० (११५०)

॥ १३७ ॥ (ऋ० ७।९।१-६)

अबोधि जार उषसामुपस्थाद् होता मन्द्रः कवितमः पावकः ।
दधाति केतुमुभयस्य जन्तोर् हव्या देवेषु द्रविणं सुकृत्सु ११५५

स सुक्रतुर्यो वि दुरः पणीनां पुनानो अर्कं पुरुभोजसं नः ।
होता मन्द्रो विशां दमूनास् तिरस् तमो ददृशे राम्याणाम् ११५६

अमूरः कविरदितिर्विवस्वान् त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः ।
चित्रभानुरुषसां भात्यग्रे ऽपां गर्भः प्रस्व आ विवेश ११५७

ईळेन्यो वो मनुषो युगेषु समन[illegible] तवेदाः ।
सुसंदृशा भानुना यो विभाति प्रति गावः समिधानं बुधन्त ११५८

अग्ने याहि दूत्यं मा रिषण्यो देवाँ अच्छा ब्रह्मकृता गणेन ।
सरस्वतीं मरुतो अश्विनापो यक्षि देवान् रत्नधेयाय विश्वान् ११५९

त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हन् यक्षि राये पुरंधिम् ।
पुरुणीथा जातवेदो जरस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११६०

॥ १३८ ॥ (ऋ० ७ । १० । १-५) ।

उषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद् दविद्युतत् दीद्यच्छोशुचानः ।
वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः ११६१

स्वर्ण वस्तोरुषसामरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म ।
अग्निर्जन्मानि देव आ वि विद्वान् द्रवद् दूतो देवयावा वनिष्ठः ११६२

अच्छा गिरो मतयो देवयन्तीर् अग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षमाणाः ।
सुसंदृशं सुप्रतीकं स्वञ्चं हव्यवाहमरतिं मानुषाणाम् ११६३

इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः सजोषा रुद्रं रुद्रेभिरा वहा बृहन्तम् ।
आदित्येभिरदितिं विश्वजन्यां बृहस्पतिमृक्वभिर्विश्ववारम् ११६४

मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठम् अग्निं विश ईळते अध्वरेषु ।
स हि क्षपावाँ अभवद् रयीणाम् अतन्द्रो दूतो यजथाय देवान् ११६५

॥ १३९ ॥ (ऋ० ७ । ११ । १-५)

महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता मादयन्ते ।
आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैर् न्यग्ने होता प्रथमः सदेह ११६६

त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सदमिन् मानुषासः ।
यस्य देवैरासदो बर्हिरग्ने ऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति ११६७

त्रिश् चिदक्तोः प्र चिकितुर्वसूनि त्वे अन्तर्दाशुषे मर्त्याय ।
मनुष्वदग्न इह यक्षि देवान् भवा नो दूतो अभिशस्तिपावा ११६८

अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्य अग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य
क्रतुं ह्यस्य वसवो जुषन्त अथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ११६९

आग्ने वह हविरद्याय देवान् इन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम् ।
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११७०

॥ १४० ॥ (ऋ० ७ । १२ । १-३)

अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे ।
चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम् ११७१

स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वान् अग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः ।
स नो रक्षिषद् दुरितादवद्याद् अस्मान् गृणत उत नो मघोनः ११७२

त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११७३

॥ १४१ ॥ (ऋ० ७ । १४ । १-३) त्रिष्टुप्, ११७४ बृहती ।

समिधा जातवेदसे देवाय देवहूतिभिः ।
हविर्भिः शुक्रशोचिषे नमस्विनो वयं दाशेमाग्नये ११७४

वयं ते अग्ने समिधा विधेम वयं दाशेम सुष्टुती यजत्र ।
वयं घृतेनाध्वरस्य होतर् वयं देव हविषा भद्रशोचे ११७५

आ नो देवेभिरुप देवहूतिम् अग्ने याहि वषट्कृतिं जुषाणः ।
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११७६

॥ १४२ ॥ (ऋ० ७ । १५ । १-१५) गायत्री ।

उपसद्याय मीढुषे आस्ये जुहुता हविः । यो नो नेदिष्ठमाप्यम् ११७७
यः पञ्च चर्षणीरभि निषसाद दमेदमे । कविर्गृहपतिर्युवा ११७८
स नो वेदो अमात्यम् अग्नी रक्षतु विश्वतः । उतास्मान् पात्वंहसः ११७९
नवं नु स्तोममग्नये दिवः श्येनाय जीजनम् । वस्वः कुविद् वनाति नः ११८०
स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे रयिर्वीरवतो यथा । अग्रे यज्ञस्य शोचतः ११८१
सेमां वेतु वषट्कृतिम् अग्निर्जुषत नो गिरः । यजिष्ठो हव्यवाहनः ११८२
नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं देव धीमहि । सुवीरमग्न आहुत ११८३
क्षप उस्रश्च दीदिहि स्वग्नयस् त्वया वयम् । सुवीरस् त्वमस्मयुः ११८४
उप त्वा सातये नरो विप्रासो यन्ति धीतिभिः । उपाक्षरा सहस्रिणी ११८५

अग्नी रक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः । शुचिः पावक ईड्यः ११८६
स नो राधांस्या भर ईशानः सहसो यहो । भगश् च दातु वार्यम् ११८७
त्वमग्ने वीरवद् यशो देवश् च सविता भगः । दितिश् च दाति वार्यम् ११८८
अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः । तपिष्ठैरजरो दह ११८९
अधा मही न आयस्य् अनाधृष्टो नृपीतये । पूर्भवा शतभुजिः ११९०
त्वं नः पाह्यंहसो दोषावस्तरघायतः । दिवा नक्तमदाभ्य ११९१

॥ १४३ ॥ (ऋ० ७ । १६ । १-१२) प्रगाथः- (बृहती, सतोबृहती ।)

एना वो अग्निं नमसा ऊर्जो नपातमा हुवे ।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ११९२
स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः ।
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम् ११९३

उदस्य शोचिरस्थाद् आजुह्वानस्य मीळ्हुषः ।
उद्धूमासो अरुषासो दिविस्पृशः समग्निमिन्धते नरः ११९४
तं त्वा दूतं कृण्महे यशस्तमं देवाँ आ वीतये वह ।
विश्वा सूनो सहसो मर्तभोजना रास्व तद् यत् त्वेमहे ११९५

त्वमग्ने गृहपतिस् त्वं होता नो अध्वरे ।
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम् ११९६
कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो त्वं हि रत्नधा असि ।
आ न ऋते शिशीहि विश्वमृत्विजं सुशंसो यश् च दक्षते ११९७

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानाम् ऊर्वान् दयन्त गोनाम् ११९८
येषामिळा घृतहस्ता दुरोण आँ अपि प्राता निषीदति ।
ताँस् त्रायस्व सहस्य द्रुहो निदो यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत् ११९९

स मन्द्रया च जिह्वया वह्निरासा विदुष्टरः ।
अग्ने रयिं मघवद्भ्यो न आ वह हव्यदातिं च सूदय १२००

ये राधांसि ददत्यश्व्या मघा कामेन श्रवसो महः ।
ताँ अंहसः पिपृहि पर्तृभिष्ट्वं शतं पूर्भिर्यविष्ठ्य १२०१

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्यासिचम् ।
उद् वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वम् आदिद् वो देव ओहते १२०२

तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत ।
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यम् अग्निर्जनाय दाशुषे १२०३

॥ १४४ ॥ (ऋ० ७ । १७ । १-७) द्विपदा त्रिष्टुप् ।

अग्ने भव सुषमिधा समिद्ध उत बर्हिरुर्विया वि स्तृणीताम् १२०४
उत द्वार उशतीर्वि श्रयन्ताम् उत देवाँ उशत आ वहेह १२०५
अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान् त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः १२०६
स्वध्वरा करति जातवेदा यक्षद् देवाँ अमृतान् पिप्रयच्च १२०७
वंस्व विश्वा वार्याणि प्रचेतः सत्या भवन्त्वाशिषो नो अद्य १२०८
त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं देवासो अग्न ऊर्ज आ नपातम् १२०९
ते ते देवाय दाशतः स्याम महो नो रत्ना वि दध इयानः १२१०

॥ १४५ ॥ (ऋ० ७ । ५० । २) जगती ।

यद् विजामन् परुषि वन्दनं भुवद् अष्ठीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत् ।
अग्निष्टच्छोचन्नप बाधतामितो मा मां पद्येन रपसा विदत् त्सरुः १२११

॥ १४६ ॥ (ऋ० ७ । १०४ । १०, १४) त्रिष्टुप् ।

यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने यो अश्वानां यो गवां यस् तनूनाम् ।
रिपुः स्तेनः स्तेयकृद् दभ्रमेतु नि ष हीयतां तन्वा३ तना च १२१२

यदि वाहमनृतदेव आस मोघं वा देवाँ अप्यूहे अग्ने ।
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस् ते निर्ऋथं सचन्ताम् १२१३

॥ १४७ ॥ (ऋग्वेदस्य अष्टमं मण्डलम् । सूक्तं ११, मन्त्राः १-१०)

(१२१४—१२२३) वत्सः काण्वः । गायत्री, १२१४ प्रतिष्ठा, १२१५ वर्धमाना, १२२३ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा । त्वं यज्ञेष्वीड्यः १२१४

त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य । अग्ने रथीरध्वराणाम् १२१५
स त्वमस्मदप द्विषो युयोधि जातवेदः । अदेवीरग्ने अरातीः १२१६
अन्ति चित् सन्तमह यज्ञं मर्तस्य रिपोः । नोप वेषि जातवेदः १२१७
मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे । विप्रासो जातवेदसः १२१८
विप्रं विप्रासोऽवसे देवं मर्तास ऊतये । अग्निं गीर्भिर्हवामहे १२१९
आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात् । अग्ने त्वां-कामया गिरा १२२०
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे १२२१
समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे । वाजेषु चित्रराधसम् १२२२

प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश् च सत्सि ।
स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्व अस्मभ्यं च सौभगमा यजस्व १२२३

॥ १४८ ॥ (ऋ० ८ । १९ । १—३३)

(१२२४—१२६९) सोभरिः काण्वः । प्रगाथः= (ककुप्+ सतोबृहती), १२५० द्विपदा विराट् ।

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे । देवत्रा हव्यमोहिरे १२२४

विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषम् अग्निमीळिष्व यन्तुरम् ।
अस्य मेधस्य सोम्यस्य सोभरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम् १२२५

यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् १२२६

ऊर्जो नपातं सुभगं सुदीदितिम् अग्निं श्रेष्ठशोचिषम्
स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपाम् आ सुम्नं यक्षते दिवि १२२७

यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्नये । यो नमसा स्वध्वरः १२२८

तस्येदर्वन्तो रंहयन्त आशवस् तस्य द्युम्नितमं यशः ।
न तमंहो देवकृतं कुतश् चन न मर्त्यकृतं नशत् १२२९

स्वग्नयो वो अग्निभिः स्याम सूनो सहस ऊर्जां पते । सुवीरस् त्वमस्मयुः १२३०

प्रशंसमानो अतिथिर्न मित्रियो ऽग्नी रथो न वेद्यः ।
त्वे क्षेमासो अपि सन्ति साधवस् त्वं राजा रयीणाम् १२३१

सो अद्धा दाश्वध्वरो ऽग्ने मर्तः सुभग स प्रशंस्यः । स धीभिरस्तु सनिता १२३२

यस्य त्वमूर्ध्वो अध्वराय तिष्ठसि क्षयद्वीरः स साधते ।
सो अर्वद्भिः सनिता स विपन्युभिः स शूरैः सनिता कृतम् १२३३

यस्याग्निर्वपुर्गृहे स्तोमं चनो दधीत विश्ववार्यः । हव्या वा वेविषद् विषः १२३४
विप्रस्य वा स्तुवतः सहसो यहो मक्षूतमस्य रातिषु ।
अवोदेवमुपरिमर्त्यं कृधि वसो विविदुषो वचः १२३५

यो अग्निं हव्यदातिभिर् नमोभिर्वा सुदक्षमाविवासति । गिरा वाजिरशोचिषम् १२३६
समिधा यो निशिती दाशददितिं धामभिरस्य मर्त्यः ।
विश्वेत् स धीभिः सुभगो जनाँ अति द्युम्नैरुद्र इव तारिषत् १२३७

तदग्ने द्युम्नमा भर यत् सासहत् सदने कं चिदत्रिणम् । मन्युं जनस्य दूढ्यः १२३८
येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा येन नासत्या भगः ।
वयं तत् ते शवसा गातुवित्तमा इन्द्रत्वोता विधेमहि १२३९

ते घेदग्ने स्वाध्यो३ ये त्वा विप्र निदधिरे नृचक्षसम् । विप्रासो देव सुक्रतुम् १२४०
त इद् वेदिं सुभग त आहुतिं ते सोतुं चक्रिरे दिवि ।
त इद् वाजेभिर्जिग्युर्महद्धनं ये त्वे कामं न्येरिरे १२४१

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः १२४२
भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहः ।
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टिभिः १२४३

ईळे गिरा मनुर्हितं यं देवा दूतमरतिं न्येरिरे । यजिष्ठं हव्यवाहनम् १२४४
तिग्मजम्भाय तरुणाय राजते प्रयो गायस्यग्नये ।
यः पिंशते सूनृताभिः सुवीर्यम् अग्निर्घृतेभिराहुतः १२४५

यदी घृतेभिराहुतो वाशीमग्निर्भरत उच्चाव च । असुर इव निर्णिजम् १२४६
यो हव्यान्यैरयता मनुर्हितो देव आसा सुगन्धिना ।
विवासते वार्याणि स्वध्वरो होता देवो अमर्त्यः १२४७

यदग्ने मर्त्यस् त्वं स्यामहं मित्रमहो अमर्त्यः । सहसः सूनवाहुत १२४८

न त्वा रासीयाभिशस्तये वसो न पापत्वाय सन्त्य ।
न मे स्तोतामतीवा न दुर्हितः स्यादग्ने न पापया १२४९

पितुर्न पुत्रः सुभृतो दुरोण आ देवाँ एतु प्र णो हविः १२५०

तवाहमग्न ऊतिभिर् नेदिष्ठाभिः सचेय जोषमा वसो । सदा देवस्य मर्त्यः १२५१

तव क्रत्वा सनेयं तव रातिभिर् अग्ने तव प्रशस्तिभिः ।
त्वामिदाहुः प्रमतिं वसो मम अग्ने हर्षस्व दातवे १२५२

प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस् तिरते वाजभर्मभिः । यस्य त्वं सख्यमावरः १२५३

तव द्रप्सो नीलवान् वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे ।
त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि १२५४

तमागन्म सोभरयः सहस्रमुष्कं स्वभिष्टिमवसे । सम्राजं त्रासदस्यवम् १२५५

यस्य ते अग्ने अन्ये अग्नय उपक्षितो वया इव ।
विपो न द्युम्ना नि युवे जनानां तव क्षत्राणि वर्धयन् १२५६

॥ १४९ ॥ (ऋ० ८ । १०३ । १-१३)

बृहती; १२६१ विराड्रूपा; १२६३, १२६५, १२६७, १२६९, सतोबृहती;
१२६४, १२६८ ककुप्; १२६६ ह्रसीयसी ।

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनम् अग्निं नक्षन्त नो गिरः १२५७

प्र दैवोदासो अग्निर् देवाँ अच्छा न मज्मना ।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य सानवि १२५८

यस्माद् रेजन्त कृष्टयश् चर्कृत्यानि कृण्वतः ।
सहस्रसां मेधसाताविव त्मना अग्निं धीभिः सपर्यत १२५९

प्र यं राये निनीषसि मर्तो यस् ते वसो दाशत् ।
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम् १२६०

स दृळ्हे चिदभि तृणत्ति वाजम् अर्वता स धत्ते अक्षिति श्रवः ।
त्वे देवत्रा सदा पुरूवसो विश्वा वामानि धीमहि १२६१

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्यग्नये १२६२

अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः ।
उभे तोके तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो मघोनाम् १२६३

प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे ।
उपस्तुतासो अग्नये १२६४

आ वंसते मघवा वीरवद् यशः समिद्धो द्युम्न्याहुतः ।
कुविन्नो अस्य सुमतिर्नवीयसी अच्छा वाजेभिरागमत् १२६५

प्रेष्ठमु प्रियाणां स्तुह्यासावातिथिम् ।
अग्निं रथानां यमम् १२६६

उदिता यो निदिता वेदिता वसु आ यज्ञियो ववर्तति ।
दुष्टरा यस्य प्रवणे नोर्मयो धिया वाजं सिषासतः १२६७

मा नो हृणीतामतिथिर् वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः ।
यः सुहोता स्वध्वरः १२६८

मो ते रिषन्ये अच्छोक्तिभिर्वसो ऽग्ने केभिश् चिदेवैः ।
कीरिश् चिद्धि त्वामीट्टे दूत्याय रातहव्यः स्वध्वरः १२६९

॥ १५० ॥ (ऋ० ८।२३।१-३०)

(१२७०—१२९९) विश्वमना वैयश्वः। उष्णिक्।

ईळिष्वा हि प्रतीव्यं यजस्व जातवेदसम् । चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम् १२७०
दामानं विश्वचर्षणे ऽग्निं विश्वमनो गिरा । उत स्तुषे विष्पर्धसो रथानाम् १२७१
येषामाबाध ऋग्मिय इषः पृक्षश् च निग्रभे । उपविदा वह्निर्विन्दते वसु १२७२
उदस्य शोचिरस्थाद् दीदियुषो व्यजरम् । तपुर्जम्भस्य सुद्युतो गणश्रियः १२७३
उदु तिष्ठ स्वध्वर स्तवानो देव्या कृपा । अभिख्या भासा बृहता शुशुक्वनिः १२७४
अग्ने याहि सुशस्तिभिर् हव्या जुह्वान आनुषक् । यथा दूतो बभूथ हव्यवाहनः १२७५
अग्निं वः पूर्व्यं हुवे होतारं चर्षणीनाम् । तमया वाचा गृणे तमु वः स्तुषे १२७६
यज्ञेभिरद्भुतक्रतुं यं कृपा सूदयन्त इत् । मित्रं न जने सुधितमृतावनि १२७७

ऋतावानमृतायवो यज्ञस्य साधनं गिरा । उपो एनं जुजुषुर्नमसस्पदे १२७८
अच्छा नो अङ्गिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः । होता यो अस्ति विक्ष्वा यशस्तमः १२७९
अग्ने तव त्ये अजर इन्धानासो बृहद् भाः । अश्वा इव वृषणस् तविषीयवः १२८०
स त्वं न ऊर्जां पते रयिं रास्व सुवीर्यम् । प्राव नस् तोके तनये समत्स्वा १२८१
यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशि । विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति १२८२
श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते । नि मायिनस् तपुषा रक्षसो दह १२८३
न तस्य मायया चन रिपुरीशीत मर्त्यः । यो अग्नये ददाश हव्यदातिभिः १२८४
व्यश्वस् त्वा वसुविदम् उक्षण्युरप्रीणादृषिः । महो राये तमु त्वा समिधीमहि १२८५
उशना काव्यस् त्वा नि होतारमसादयत् । आयजिं त्वा मनवे जातवेदसम् १२८६
विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमक्रत । श्रुष्टी देव प्रथमो यज्ञियो भुवः १२८७
इमं घा वीरो अमृतं दूतं कृण्वीत मर्त्यः । पावकं कृष्णवर्तनिं विहायसम् १२८८
तं हुवेम यतस्रुचः सुभासं शुक्रशोचिषम् । विशामग्निमजरं प्रत्नमीड्यम् १२८९
यो अस्मै हव्यदातिभिर् आहुतिं मर्तोऽविधत् । भूरि पोषं स धत्ते वीरवद् यशः १२९०
प्रथमं जातवेदसम् अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् । प्रति स्रुगेति नमसा हविष्मती १२९१
आभिर्विधेमाग्नये ज्येष्ठाभिर्व्यश्ववत् । मंहिष्ठाभिर्मतिभिः शुक्रशोचिषे १२९२
नूनमर्च विहायसे स्तोमेभिः स्थूरयूपवत् । ऋषे वैयश्व दम्यायाग्नये १२९३
अतिथिं मानुषाणां सूनुं वनस्पतीनाम् । विप्रा अग्निमवसे प्रत्नमीळते १२९४
महो विश्वाँ अभि षतोऽभि हव्यानि मानुषा । अग्ने नि षत्सि नमसाधि बर्हिषि १२९५
वंस्वा नो वार्या पुरु वंस्व रायः पुरुस्पृहः । सुवीर्यस्य प्रजावतो यशस्वतः १२९६
त्वं वरो सुषाम्णेऽग्ने जनाय चोदय । सदा वसो रातिं यविष्ठ शश्वते १२९७
त्वं हि सुप्रतूरसि त्वं नो गोमतीरिषः । महो रायः सातिमग्ने अपा वृधि १२९८
अग्ने त्वं यशा असि आ मित्रावरुणा वह । ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा १२९९

॥ १५१ ॥ (ऋ० ८ । ३९ । १-१०) [१३००-१३०९] नाभाकः काण्वः । महापङ्क्तिः ।

अग्निमस्तोष्यृग्मियम् अग्निमीळा यजध्यै ।
अग्निर्देवाँ अनक्तु न उभे हि विदथे कविर् अन्तश्चरति दूत्यं नभन्तामन्यके समे १३००
न्यग्ने नव्यसा वचस् तनूषु शंसमेषाम् ।
न्यराती रराव्णां विश्वा अर्यो अरातीर् इतो युच्छन्त्वामुरो नभन्तामन्यके समे १३०१

अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं घृतं न जुह्व आसनि ।
स देवेषु प्र चिकिद्धि त्वं ह्यसि पूर्व्यः शिवो दूतो विवस्वतो नभन्तामन्यके समे १३०२
तत्तदग्निर्वयो दधे यथायथा कृपण्यति ।
ऊर्जाहुतिर्वसूनां शं च योश्च मयो दधे विश्वस्यै देवहूत्यै नभन्तामन्यके समे १३०३
स चिकेत सहीयसा अग्निश्चित्रेण कर्मणा ।
स होता शश्वतीनां दक्षिणाभिरभीवृत इनोति च प्रतीव्यं१ नभन्तामन्यके समे १३०४
अग्निर्जाता देवानामग्निर्वेद मर्तानामपीच्यम् ।
अग्निः स द्रविणोदा अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते स्वाहुतो नवीयसा नभन्तामन्यके समे १३०५
अग्निर्देवेषु संवसुः स विक्षु यज्ञियास्वा ।
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुष्यति देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके समे १३०६
यो अग्निः सप्तमानुषः श्रितो विश्वेषु सिन्धुषु ।
तमागन्म त्रिपस्त्यं मन्धातुर्दस्युहन्तमम् अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यं नभन्तामन्यके समे १३०७
अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्या क्षेति विदथा कविः ।
स त्रींरेकादशाँ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः परिष्कृतो नभन्तामन्यके समे १३०८
त्वं नो अग्न आयुषु त्वं देवेषु पूर्व्य वस्व एक इरज्यसि ।
त्वामापः परिस्रुतः परि यन्ति स्वसेतवो नभन्तामन्यके समे १३०९

॥ १५२ ॥ (ऋ० ८ । ४३ । १-३३) [१३१०-१३८८] विरूप आङ्गिरसः । गायत्री ।

इमे विप्रस्य वेधसो ऽग्नेरस्तृतयज्वनः । गिरः स्तोमास ईरते १३१०
अस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचर्षणे । अग्ने जनामि सुष्टुतिम् १३११
आरोका इव घेदह तिग्मा अग्ने तव त्विषः । दद्भिर्वनानि बप्सति १३१२
हरयो धूमकेतवो वातजूता उप द्यवि । यतन्ते वृथगग्नयः १३१३
एते त्ये वृथगग्नय इद्धासः समदृक्षत । उषसामिव केतवः १३१४
कृष्णा रजांसि पत्सुतः प्रयाणे जातवेदसः । अग्निर्यद्रोधति क्षमि १३१५
धासिं कृण्वान ओषधीर्बप्सदग्निर्न वायति । पुनर्यन्तरुणीरपि १३१६
जिह्वाभिरह नन्नमदर्चिषा जञ्जणाभवन् । अग्निर्वनेषु रोचते १३१७
अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे । गर्भे सञ्जायसे पुनः १३१८

उदग्ने तव तद् घृताद् अर्ची रोचत आहुतम् । [illegible]ानं जुह्वो३ मुखे १३१९

उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे । स्तोमैर्विधेमाग्नये १३२०

उत त्वा नमसा वयं होतर्वरेण्यक्रतो । अग्ने समिद्भिरीमहे १३२१

उत त्वा भृगुवच्छुचे मनुष्वदग्न आहुत । अङ्गिरस्वद्धवामहे १३२२

त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन्त्सता । सखा सख्या समिध्यसे १३२३

स त्वं विप्राय दाशुषे रयिं देहि सहस्रिणम् । अग्ने वीरवतीमिषम् १३२४

अग्ने भ्रातः सहस्कृत रोहिदश्व शुचिव्रत । इमं स्तोमं जुषस्व मे १३२५

उत त्वाग्ने मम स्तुतो वाश्राय प्रतिहर्यते । गोष्ठं गाव इवाशत १३२६

तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक् । अग्ने कामाय येमिरे १३२७

अग्निं धीभिर्मनीषिणो मेधिरासो विपश्चितः । अद्मसद्याय हिन्विरे १३२८

तं त्वामज्मेषु वाजिनं तन्वाना अग्ने अध्वरम् । वह्निं होतारमीळते १३२९

पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे १३३०

तमीळिष्व य आहुतो ऽग्निर्विभ्राजते घृतैः । इमं नः शृणवद्धवम् १३३१

तं त्वा वयं हवामहे शृण्वन्तं जातवेदसम् । अग्ने घ्नन्तमप द्विषः १३३२

विशां राजानमद्भुतम् अध्यक्षं धर्मणामिमम् । अग्निमीळे स उ श्रवत् १३३३

अग्निं विश्वायुवेपसं मर्यं न वाजिनं हितम् । सप्तिं न वाजयामसि १३३४

घ्नन् मृध्राण्यप द्विषो दहन् रक्षांसि विश्वहा । अग्ने तिग्मेन दीदिहि १३३५

यं त्वा जनास इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम । अग्ने स बोधि मे वचः १३३६

यदग्ने दिविजा असि अप्सुजा वा सहस्कृत । तं त्वा गीर्भिर्हवामहे १३३७

तुभ्यं घेत् ते जना इमे विश्वाः सुक्षितयः पृथक् । धासिं हिन्वन्त्यत्तवे १३३८

ते घेदग्ने स्वाध्यो ऽहा विश्वा नृचक्षसः । तरन्तः स्याम दुर्गहा १३३९

अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं शीरं पावकशोचिषम् । हृद्भिर्मन्द्रेभिरीमहे १३४०

स त्वमग्ने विभावसुः सृजन्त्सूर्यो न रश्मिभिः । शर्धन् तमांसि जिघ्नसे १३४१

तत् ते सहस्व ईमहे दात्रं यन्नोपदस्यति । त्वदग्ने वार्यं वसु १३४२

॥ १५३ ॥ (ऋ० ८ । ४४ । १-३०)

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन १३४३

अग्ने स्तोमं जुषस्व मे वर्धस्वानेन मन्मना । प्रति सूक्तानि हर्य नः १३४४

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ आ सादयादिह १३४५
उत् ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः । अग्ने शुक्रास ईरते १३४६
उप त्वा जुह्वो३ मम घृताचीर्यन्तु हर्यत । अग्ने हव्या जुषस्व नः १३४७
मन्द्रं होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम् । अग्निमीळे स उ श्रवत् १३४८
प्रत्नं होतारमीड्यं जुष्टमग्निं कविक्रतुम् । अध्वराणामभिश्रियम् १३४९
जुषाणो अङ्गिरस्तम इमा हव्यान्यानुषक् । अग्ने यज्ञं नय ऋतुथा १३५०
समिधान उ सन्त्य शुक्रशोच इहा वह । चिकित्वान् दैव्यं जनम् १३५१
विप्रं होतारमद्रुहं धूमकेतुं विभावसुम् । यज्ञानां केतुमीमहे १३५२
अग्ने नि पाहि नस् त्वं प्रति ष्म देव रीषतः । भिन्धि द्वेषः सहस्कृत १३५३
अग्निः प्रत्नेन मन्मना शुम्भानस् तन्वं१ स्वाम् । कविर्विप्रेण वावृधे १३५४
ऊर्जो नपातमा हुवे ऽग्निं पावकशोचिषम् । अस्मिन् यज्ञे स्वध्वरे १३५५
स नो मित्रमहस् त्वम् अग्ने शुक्रेण शोचिषा । देवैरा सत्सि बर्हिषि १३५६
यो अग्निं तन्वो३ दमे देवं मर्तः सपर्यति । तस्मा इद् दीदयद् वसु १३५७
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या अयम् । अपां रेतांसि जिन्वति १३५८
उदग्ने शुचयस् तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते । तव ज्योतींष्यर्चयः १३५९
ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वर्पतिः । स्तोता स्यां तव शर्मणि १३६०
त्वामग्ने मनीषिणस् त्वां हिन्वन्ति चित्तिभिः । त्वां वर्धन्तु नो गिरः १३६१
अदब्धस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतः सदा । अग्नेः सख्यं वृणीमहे १३६२
अग्निः शुचिव्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः । शुची रोचत आहुतः १३६३
उत त्वा धीतयो मम गिरो वर्धन्तु विश्वहा । अग्ने सख्यस्य बोधि नः १३६४
यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम् । स्युष्टे सत्या इहाशिषः १३६५
वसुर्वसुपतिर्हि कम् अस्यग्ने विभावसुः । स्याम ते सुमतावपि १३६६
अग्ने धृतव्रताय ते समुद्रायेव सिन्धवः । गिरो वाश्रास ईरते १३६७
युवानं विश्पतिं कविं विश्वादं पुरुवेपसम् । अग्निं शुम्भामि मन्मभिः १३६८
यज्ञानां रथ्ये वयं तिग्मजम्भाय वीळवे । स्तोमैरिषेमाग्नये १३६९
अयमग्ने त्वे अपि जरिता भूतु सन्त्य । तस्मै पावक मृळय १३७०
धीरो ह्यस्यद्मसद् विप्रो न जागृविः सदा । अग्ने दीदयसि द्यवि १३७१

पुराग्ने दुरितेभ्यः पुरा मृध्रेभ्यः कवे । प्र ण आयुर्वसो तिर १३७२

॥१५४॥ (ऋ० ८।७५।१-१६)

युक्ष्वा हि देवहूतमाँ अश्वाँ अग्ने रथीरिव । नि होता पूर्व्यः सदः १३७३
उत नो देव देवाँ अच्छा वोचो विदुष्टरः । श्रद् विश्वा वार्या कृधि १३७४
त्वं ह यद् यविष्ठ्य सहसः सूनवाहुत । ऋतावा यज्ञियो भुवः १३७५
अयमग्निः सहस्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः । मूर्धा कवी रयीणाम् १३७६
तं नेमिमृभवो यथा नमस्व सहूतिभिः । नेदीयो यज्ञमङ्गिरः १३७७
तस्मै नूनमभिद्यवे वाचा विरूप नित्यया । वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम् १३७८
कमु ष्विदस्य सेनया ऽग्नेरपाकचक्षसः । पणिं गोषु स्तरामहे १३७९
मा नो देवानां विशः प्रस्नातीरिवोस्राः । कृशं न हासुरघ्न्याः १३८०
मा नः समस्य दूढ्यः परिद्वेषसो अंहतिः । ऊर्मिर्न नावमा वधीत् १३८१
नमस् ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः । अमैरमित्रमर्दय १३८२
कुवित् सु नो गविष्टये ऽग्ने संवेषिषो रयिम् । उरुकृदुरु णस् कृधि १३८३
मा नो अस्मिन् महाधने परा वर्ग्भारभृद् यथा । संवर्गं सं रयिं जय १३८४
अन्यमस्मद्भिया इयम् अग्ने सिषक्तु दुच्छुना । वर्धा नो अमवच्छवः १३८५
यस्याजुषन्नमस्विनः शमीमदुर्मखस्य वा । तं घेदग्निर्वृधावति १३८६
परस्या अधि संवतो ऽवराँ अभ्या तर । यत्राहमस्मि ताँ अव १३८७
विद्मा हि ते पुरा वयम् अग्ने पितुर्यथावसः । अधा ते सुम्नमीमहे १३८८

॥१५५॥ (ऋ० ८।६०।१-२०) [१३८९-१४०८] भर्गः प्रागाथः ।
प्रगाथः= (बृहती+सतोबृहती) ।

अग्न आ याह्यग्निभिर् होतारं त्वा वृणीमहे ।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे १३८९
अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश् चरन्त्यध्वरे ।
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहे ऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् १३९०
अग्ने कविर्वेधा असि होता पावक यक्ष्यः ।
मन्द्रो यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यो विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः १३९१

अद्रोघमा वहोशतो यविष्ठ्य देवाँ अजस्र वीतये ।
अभि प्रयांसि सुधिता वसो गहि मन्दस्व धीतिभिर्हितः १३९२
त्वमित् सप्रथा असि अग्ने त्रातर्ऋतस् कविः ।
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः १३९३
शोचा शोचिष्ठ दीदिहि विशे मयो रास्व स्तोत्रे महाँ असि ।
देवानां शर्मन् मम सन्तु सूरयः शत्रूषाहः स्वग्नयः १३९४
यथा चिद् वृद्धमतसम् अग्ने संजूर्वसि क्षमि ।
एवा दह मित्रमहो यो अस्मध्रुग् दुर्मन्मा कश् च वेनति १३९५
मा नो मर्ताय रिपवे रक्षस्विने माघशंसाय रीरधः ।
अस्रेधद्भिस् तरणिभिर्यविष्ठ्य शिवेभिः पाहि पायुभिः १३९६
पाहि नो अग्न एकया पाह्यु१त द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस् तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो १३९७
पाहि विश्वस्माद् रक्षसो अराव्णः प्र स्म वाजेषु नोऽव ।
त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपिं नक्षामहे वृधे १३९८
आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यं ।
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती स्वयशस्तरम् १३९९
येन वंसाम पृतनासु शर्धतस् तरन्तो अर्य आदिशः ।
स त्वं नो वर्ध प्रयसा शचीवसो जिन्वा धियो वसुविदः १४००
शिशानो वृषभो यथा अग्निः शृङ्गे दविध्वत् ।
तिग्मा अस्य हनवो न प्रतिधृषे सुजम्भः सहसो यहुः १४०१
नहि ते अग्ने वृषभ प्रतिधृषे जम्भासो यद् वितिष्ठसे ।
स त्वं नो होतः सुहुतं हविष्कृधि वंस्वा नो वार्या पुरु १४०२
शेषे वनेषु मात्रोः सं त्वा मर्तास इन्धते ।
अतन्द्रो हव्या वहसि हविष्कृत आदिद् देवेषु राजसि १४०३
सप्त होतारस् तमिदीळते त्वा अग्ने सुत्यजमह्रयम् ।
भिनत्स्यद्रिं तपसा वि शोचिषा प्राग्ने तिष्ठ जनाँ अति १४०४

अग्निमग्निं वो अध्रिगुं हुवेम वृक्तबर्हिषः ।
अग्निं हितप्रयसः शश्वतीष्वा होतारं चर्षणीनाम् १४०५

केतेन शर्मन्त्सचते सुषामणि अग्ने तुभ्यं चिकित्वना ।
इषण्यया नः पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये १४०६

अग्ने जरितर्विश्पतिस् तेपानो देव रक्षसः ।
अप्रोषिवान् गृहपतिर्महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः १४०७

मा नो रक्ष आ वेशीदाघृणीवसो मा यातुर्यातुमावताम् ।
परोगव्यूत्यनिरामप क्षुधम् अग्ने सेध रक्षस्विनः १४०८

॥ १५६ ॥ (ऋ० ८।७१।१-१५)

[१४०८—१४२३] सुदीति-पुरुमीळ्हावाङ्गिरसौ, तयोर्वान्यतरः । गायत्री, १४१८-१४२३ प्रगाथः=(बृहती, सतोबृहती) ।

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः । उत द्विषो मर्त्यस्य १४०९
नहि मन्युः पौरुषेय ईशे हि वः प्रियजात । त्वमिदसि क्षपावान् १४१०
स नो विश्वेभिर्देवेभिर् ऊर्जो नपाद् भद्रशोचे । रयिं देहि विश्ववारम् १४११
न तमग्ने अरातयो मर्तं युवन्त रायः । यं त्रायसे दाश्वांसम् १४१२
यं त्वं विप्र मेधसातौ अग्ने हिनोषि धनाय । स तवोती गोषु गन्ता १४१३
त्वं रयिं पुरुवीरम् अग्ने दाशुषे मर्ताय । प्र णो नय वस्यो अच्छ १४१४
उरुष्या णो मा परा दा अघायते जातवेदः । दुराध्ये३ मर्ताय १४१५
अग्ने माकिष्टे देवस्य रातिमदेवो युयोत । त्वमीशिषे वसूनाम् १४१६
स नो वस्व उप मास्य ऊर्जो नपान्माहिनस्य । सखे वसो जरितृभ्यः १४१७

अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम् ।
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरूवसुं पुरुप्रशस्तमूतये १४१८

अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम् ।
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मन्द्रतमो विशि १४१९

अग्निं वो देवयज्यया अग्निं प्रयत्यध्वरे ।
अग्निं धीषु प्रथममग्निमर्वति अग्निं क्षैत्राय साधसे १४२०

अग्निरिषां सख्ये ददातु न ईशे यो वार्याणाम् ।
अग्निं तोके तनये शश्वदीमहे वसुं सन्तं तनूपाम् १४२१

अग्निमीळिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
अग्निं राये पुरुमीळ्ह श्रुतं नरो ऽग्निं सुदीतये छर्दिः १४२२ ×

अग्निं द्वेषो योतवै नो गृणीमसि अग्निं शं योश् च दातवे ।
विश्वासु विक्ष्वविवतेव हव्यो भुवद् वस्तुर्ऋषूणाम् १४२३

॥ १५७ ॥ (ऋ० ८ । ७२ । १-१८) [१४२४-१४४१] हर्यतः प्रागाथः । गायत्री ।

हविष्कृणुध्वमा गमद् अध्वर्युर्वनते पुनः । विद्वाँ अस्य प्रशासनम् १४२४
नि तिग्ममभ्यंशुं सीदद्धोता मनावधि । जुषाणो अस्य सख्यम् १४२५
अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया । गृभ्णन्ति जिह्वया ससम् १४२६
जाम्यतीतपे धनुर् वयोधा अरुहद्वनम् । दृषदं जिह्वयावधीत् १४२७
चरन् वत्सो रुशन्निह निदातारं न विन्दते । वेति स्तोतव अम्ब्यम् १४२८
उतो न्वस्य यन्महद् अश्वावद् योजनं बृहत् । दामा रथस्य ददृशे १४२९
दुहन्ति सप्तैकाम् उप द्वा पञ्च सृजतः । तीर्थे सिन्धोरधि स्वरे १४३०
आ दशभिर्विवस्वत इन्द्रः कोशमचुच्यवीत् । खेदया त्रिवृता दिवः १४३१
परि त्रिधातुरध्वरं जूर्णिरेति नवीयसी । मध्वा होतारो अञ्जते १४३२
सिञ्चन्ति नमसावतम् उच्चाचक्रं परिज्मानम् । नीचीनबारमक्षितम् १४३३
अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु । अवतस्य विसर्जने १४३४
गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा । उभा कर्णा हिरण्यया १४३५
आ सुते सिञ्चत श्रियं रोदस्योरभिश्रियम् । रसा दधीत वृषभम् १४३६
ते जानत स्वमोक्यं सं वत्सासो न मातृभिः । मिथो नसन्त जामिभिः १४३७
उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि । इन्द्रे अग्ना नमः स्वः १४३८
अधुक्षत् पिप्युषीमिषम् ऊर्जं सप्तपदीमरिः । सूर्यस्य सप्त रश्मिभिः १४३९
सोमस्य मित्रावरुणा उदिता सूर आ ददे । तदातुरस्य भेषजम् १४४०
उतो न्वस्य यत् पदं हर्यतस्य निधान्यम् । परि द्यां जिह्वयातनत् १४४१

× अथर्व० २०।१०३।१

॥ १५८ ॥ (ऋ० ८ । ७४ । १-१२)
[१४४२-१४५३] गोपवन आत्रेयः । अनुष्टुम्मुखः प्रगाथः= (अनुष्टुप्+गायत्र्यौ) ।

विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः १४४२
यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम् । प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः १४४३
पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता । हव्यान्यैरयद् दिवि १४४४

आगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् ।
यस्य श्रुतर्वा बृहन् आर्क्षो अनीक एधते १४४५
अमृतं जातवेदसं तिरस् तमांसि दर्शतम् । घृताहवनमीड्यम् १४४६
सबाधो यं जना इमे ऽग्निं हव्येभिरीळते । जुह्वानासो यतस्रुचः १४४७

इयं ते नव्यसी मतिर् अग्ने अधाय्यस्मदा ।
मन्द्र सुजात सुक्रतो ऽमूर दस्मातिथे १४४८
सा ते अग्ने शंतमा चनिष्ठा भवतु प्रिया । तया वर्धस्व सुष्टुतः १४४९
सा द्युम्नैर्द्युम्निनी बृहद् उपोप श्रवसि श्रवः । दधीत वृत्रतूर्ये १४५०

अश्वमिद् गां रथप्रां त्वेषमिन्द्रं न सत्पतिम् ।
यस्य श्रवांसि तूर्वथ पन्यंपन्यं च कृष्टयः १४५१
यं त्वा गोपवनो गिरा चनिष्ठदग्ने अङ्गिरः । स पावक श्रुधी हवम् १४५२
यं त्वा जनास ईळते सबाधो वाजसातये । स बोधि वृत्रतूर्ये १४५३

॥ १५९ ॥ (ऋ० ८ । ८४ । १-९) (१४५४-१४६२) उशना काव्यः । गायत्री ।

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् । अग्निं रथं न वेद्यम् १४५४
कविमिव प्रचेतसं यं देवासो अध द्विता । नि मर्त्येष्वादधुः १४५५
त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुधी गिरः । रक्षा तोकमुत त्मना १४५६
कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम् । वराय देव मन्यवे १४५७
दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कदु वोच इदं नमः १४५८
अधा त्वं हि नस् करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः । वाजद्रविणसो गिरः १४५९
कस्य नूनं परीणसो धियो जिन्वसि दंपते । गोषाता यस्य ते गिरः १४६०
तं मर्जयन्त सुक्रतुं पुरोयावानमाजिषु । स्वेषु क्षयेषु वाजिनम् १४६१
क्षेति क्षेमेभिः साधुभिर् नकिर्यं घ्नन्ति हन्ति यः । अग्ने सुवीर एधते १४६२

॥ १६० ॥ (ऋ० ८ । १०२ । १ २२)

१४६३-१४८४ प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रौ अन्यतरो वा ।

त्वमग्ने बृहद् वयो दधासि देव दाशुषे । कविर्गृहपतिर्युवा १४६३
स न ईळानया सह देवाँ अग्ने दुवस्युवा । चिकिद् विभानवा वह १४६४
त्वया ह स्विद् युजा वयं चोदिष्ठेन यविष्ठ्य । अभि ष्मो वाजसातये १४६५
और्वभृगुवच्छुचिम् अप्नवानवदा हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् १४६६
हुवे वातस्वनं कविं पर्जन्यक्रन्द्यं सहः । अग्निं समुद्रवाससम् १४६७
आ सवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजिं हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् १४६८
अग्निं वो वृधन्तम् अध्वराणां पुरूतमम् । अच्छा नप्त्रे सहस्वते १४६९
अयं यथा न आभुवत् त्वष्टा रूपेव तक्ष्या । अस्य क्रत्वा यशस्वतः १४७०
अयं विश्वा अभि श्रियो ऽग्निर्देवेषु पत्यते । आ वाजैरुप नो गमत् १४७१
विश्वेषामिह स्तुहि होतॄणां यशस्तमम् । अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् १४७२
शीरं पावकशोचिषं ज्येष्ठो यो दमेष्वा । दीदाय दीर्घश्रुत्तमः १४७३
तमर्वन्तं न सानसिं गृणीहि विप्र शुष्मिणम् । मित्रं न यातयज्जनम् १४७४
उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः । वायोरनीके अस्थिरन् १४७५
यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस् तस्थावसंदिनम् । आपश् चिन्नि दधा पदम् १४७६
पदं देवस्य मीळ्हुषो ऽनाधृष्टाभिरूतिभिः । भद्रा सूर्य इवोपदृक् १४७७
अग्ने घृतस्य धीतिभिस् तेपानो देव शोचिषा । आ देवान् वक्षि यक्षि च १४७८
तं त्वाजनन्त मातरः कविं देवासो अङ्गिरः । हव्यवाहममर्त्यम् १४७९
प्रचेतसं त्वा कवे ऽग्ने दूतं वरेण्यम् । हव्यवाहं नि षेदिरे १४८०
नहि मे अस्त्यघ्न्या न स्वधितिर्वनन्वति । अथैतादृग् भरामि ते १४८१
यदग्ने कानि कानि चिद् आ ते दारूणि दध्मसि । ता जुषस्व यविष्ठ्य १४८२
यदत्त्युपजिह्विका यद् वम्रो अतिसर्पति । सर्वं तदस्तु ते घृतम् १४८३
अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः । अग्निमीधे विवस्वभिः १४८४

॥ १६१ ॥ ऋग्वेदस्य मण्डलं १० । सूक्तं १ । मन्त्राः १-७)

[१४८५—१५३३] त्रित आप्त्यः । त्रिष्टुप् ।

अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वो अस्थान् निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषागात् ।
अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्ग आ जातो विश्वा सद्मान्यप्राः १४८५

स जातो गर्भो असि रोदस्योर् अग्ने चारुर्विभृत ओषधीषु ।
चित्रः शिशुः परि तमांस्यक्तून् प्र मातृभ्यो अधि कनिक्रदद् गाः १४८६

विष्णुरित्था परममस्य विद्वाञ् जातो बृहन्नभि पाति तृतीयम् ।
आसा यदस्य पयो अक्रत स्वं सचेतसो अभ्यर्चन्त्यत्र १४८७

अत उ त्वा पितुभृतो जनित्रीर् अन्नावृधं प्रति चरन्त्यन्नैः ।
ता ईं प्रत्येषि पुनरन्यरूपा असि त्वं विक्षु मानुषीषु होता १४८८

होतारं चित्ररथमध्वरस्य यज्ञस्ययज्ञस्य केतुं रुशन्तम् ।
प्रत्यर्धिं देवस्यदेवस्य मह्ना श्रिया त्वग्निमतिथिं जनानाम् १४८९

स तु वस्त्राण्यध पेशनानि वसानो अग्निर्नाभा पृथिव्याः ।
अरुषो जातः पद इळायाः पुरोहितो राजन् यक्षीह देवान् १४९०

आ हि द्यावापृथिवी अग्न उभे सदा पुत्रो न मातरा ततन्थ ।
प्र याह्यच्छोशतो यविष्ठ अथा वह सहस्येह देवान् १४९१

॥ १६२ ॥ (ऋ० १० । २ । १-७)

पिप्रीहि देवाँ उशतो यविष्ठ विद्वाँ ऋतूँर्ऋतुपते यजेह ।
ये दैव्या ऋत्विजस् तेभिरग्ने त्वं होतॄणामस्यायजिष्ठः १४९२

वेषि होत्रमुत पोत्रं जनानां मन्धातासि द्रविणोदा ऋतावा ।
स्वाहा वयं कृणवामा हवींषि देवो देवान् यजत्वग्निरर्हन् १४९३

आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनु प्रवोळ्हुम् ।
अग्निर्विद्वान् त्स यजात् सेदु होता सो अध्वरान् त्स ऋतून् कल्पयाति १४९४

यद् वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।
अग्निष्टद् विश्वमा पृणाति विद्वान् येभिर्देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति १४९५

यत् पाकत्रा मनसा दीनदक्षा न यज्ञस्य मन्वते मर्त्यासः ।
अग्निष्टद्धोता क्रतुविद् विजानन् यजिष्ठो देवाँ ऋतुशो यजाति १४९६

विश्वेषां ह्यध्वराणामनीकं चित्रं केतुं जनिता त्वा जजान ।
स आ यजस्व नृवतीरनु क्षाः स्पार्हा इषः क्षुमतीर्विश्वजन्याः १४९७

यं त्वा द्यावापृथिवी यं त्वापस् त्वष्टा यं त्वा सुजनिमा जजान ।
पन्थामनु प्रविद्वान् पितृयाणं द्युमदग्ने समिधानो वि भाहि १४९८

॥ १६३ ॥ (ऋ० १० । ३ । १-७)

इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि ।
चिकिद् वि भाति भासा बृहता असिक्नीमेति रुशतीमपाजन् १४९९
कृष्णां यदेनीमभि वर्पसा भूज् जनयन् योषां बृहतः पितुर्जाम् ।
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिररतिर्वि भाति १५००
भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् ।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन् रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् १५०१
अस्य यामासो बृहतो न वग्नून् इन्धाना अग्नेः सख्युः शिवस्य ।
ईड्यस्य वृष्णो बृहतः स्वासो भामासो यामन्नक्तवश् चिकित्रे १५०२
स्वना न यस्य भामासः पवन्ते रोचमानस्य बृहतः सुदिवः ।
ज्येष्ठेभिर्यस् तेजिष्ठैः क्रीळुमद्भिर् वर्षिष्ठेभिर्भानुभिर्नक्षति द्याम् १५०३
अस्य शुष्मासो ददृशानपवेर् जेहमानस्य स्वनयन् नियुद्भिः ।
प्रत्नेभिर्यो रुशद्भिर्देवतमो वि रेभद्भिररतिर्भाति विभ्वा १५०४
स आ वक्षि महि न आ च सत्सि दिवस्पृथिव्योररतिर्युवत्योः ।
अग्निः सुतुकः सुतुकेभिरश्वै रभस्वद्भी रभस्वाँ एह गम्याः १५०५

॥ १६४ ॥ (ऋ० १० । ४ । १-७)

प्र ते यक्षि प्र त इयर्मि मन्म भुवो यथा वन्द्यो नो हवेषु ।
धन्वन्निव प्रपा असि त्वमग्न इयक्षवे पूरवे प्रत्न राजन् १५०६
यं त्वा जनासो अभि संचरन्ति गाव उष्णमिव व्रजं यविष्ठ ।
दूतो देवानामसि मर्त्यानाम् अन्तर्महाँश् चरसि रोचनेन १५०७
शिशुं न त्वा जेन्यं वर्धयन्ती माता बिभर्ति सचनस्यमाना ।
धनोरधि प्रवता यासि हर्यञ् जिगीषसे पशुरिवावसृष्टः १५०८
मूरा अमूर न वयं चिकित्वो महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से ।
शये वव्रिश् चरति जिह्वयादन् रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन् १५०९

कृचिज्जायते सनयासु नव्यो वने तस्थौ पलितो धूमकेतुः ।
अस्नातापो वृषभो न प्र वेति सचेतसो यं प्रणयन्त मर्ताः १५१०
तनूत्यजेव तस्करा वनर्गू रशनाभिर्दशभिरभ्यधीताम् ।
इयं ते अग्ने नव्यसी मनीषा युक्ष्वा रथं न शुचयद्भिरङ्गैः १५११
ब्रह्म च ते जातवेदो नमश् च इयं च गीः सदमिद् वर्धनी भूत् ।
रक्षा णो अग्ने तनयानि तोका रक्षोत नस् तन्वो३ अप्रयुच्छन् १५१२

॥ १६५ ॥ (ऋ० १० । ५ । १—७)

एकः समुद्रो धरुणो रयीणां अस्मद्धृदो भूरिजन्मा वि चष्टे ।
सिषक्त्यूधर्निण्योरुपस्थ उत्सस्य मध्ये निहितं पदं वेः १५१३
समानं नीळं वृषणो वसानाः सं जग्मिरे महिषा अर्वतीभिः ।
ऋतस्य पदं कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे पराणि १५१४
ऋतायिनी मायिनी सं दधाते मित्वा शिशुं जज्ञतुर्वर्धयन्ती ।
विश्वस्य नाभिं चरतो ध्रुवस्य कवेश् चित् तन्तुं मनसा वियन्तः १५१५
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातम् इषो वाजाय प्रदिवः सचन्ते ।
अधीवासं रोदसी वावसाने घृतैरन्नैर्वावृधाते मधूनाम् १५१६
सप्त स्वसॄररुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व उज्जभारा दृशे कम् ।
अन्तर्येमे अन्तरिक्षे पुराजा इच्छन् वव्रिमविदत् पूषणस्य १५१७
सप्त मर्यादाः कवयस् ततक्षुस् तासामेकामिदभ्यंहुरो गात् ।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीळे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ १५१८
असच्च सच्च परमे व्योमन् दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थे ।
अग्निर्ह नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्व आयुनि वृषभश् च धेनुः १५१९

॥ १६६ ॥ (ऋ० १० । ६ । १-७)

अयं स यस्य शर्मन्नवोभिर् अग्नेरेधते जरिताभिष्टौ ।
ज्येष्ठेभिर्यो भानुभिर्ऋषूणां पर्येति परिवीतो विभावा १५२०
यो भानुभिर्विभावा विभाति अग्निर्देवेभिर्ऋतावाजस्रः ।
आ यो विवाय सख्या सखिभ्यो ऽपरिह्वृतो अत्यो न सप्तिः १५२१

ईशे यो विश्वस्या देववीतेर् ईशे विश्वायुरुषसो व्युष्टौ ।
आ यस्मिन् मना हवींष्यग्नौ अरिष्टरथः स्कभ्नाति शूषैः १५२२

शूषेभिर्वृधो जुषाणो अर्कैर् देवाँ अच्छा रघुपत्वा जिगाति ।
मन्द्रो होता स जुह्वा३ यजिष्ठः संमिश्लो अग्निरा जिघर्ति देवान् १५२३

तमुस्रामिन्द्रं न रेजमानम् अग्निं गीर्भिर्नमोभिरा कृणुध्वम् ।
आ यं विप्रासो मतिभिर्गृणन्ति जातवेदसं जुह्वं सहानाम् १५२४

सं यस्मिन् विश्वा वसूनि जग्मुर् वाजे नाश्वाः सप्तीवन्त एवैः ।
अस्मे ऊतीरिन्द्रवाततमा अर्वाचीना अग्न आ कृणुष्व १५२५

अधा ह्यग्ने मह्ना निषद्या सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूथ ।
तं ते देवासो अनु केतमायन् अधावर्धन्त प्रथमास ऊमाः १५२६

॥ १६७ ॥ (ऋ० १० । ७ । १-७)

स्वस्ति नो दिवो अग्ने पृथिव्या विश्वायुर्धेहि यजथाय देव ।
सचेमहि तव दस्म प्रकेतैर् उरुष्या ण उरुभिर्देव शंसैः १५२७

इमा अग्ने मतयस् तुभ्यं जाता गोभिरश्वैरभि गृणन्ति राधः ।
यदा ते मर्तो अनु भोगमानड् वसो दधानो मतिभिः सुजात १५२८

अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिम् अग्निं भ्रातरं सदमित् सखायम् ।
अग्नेरनीकं बृहतः सपर्यं दिवि शुक्रं यजतं सूर्यस्य १५२९

सिध्रा अग्ने धियो अस्मे सनुत्रीर् यं त्रायसे दम आ नित्यहोता ।
ऋतावा स रोहिदश्वः पुरुक्षुर् द्युभिरस्मा अहभिर्वाममस्तु १५३०

द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रत्नमृत्विजमध्वरस्य जारम् ।
बाहुभ्यामग्निमायवोऽजनन्त विक्षु होतारं न्यसादयन्त १५३१

स्वयं यजस्व दिवि देव देवान् किं ते पाकः कृणवदप्रचेताः ।
यथायज ऋतुभिर्देव देवान् एवा यजस्व तन्वं सुजात १५३२

भवा नो अग्नेऽवितोत गोपा भवा वयस्कृदुत नो वयोधाः ।
रास्वा च नः सुमहो हव्यदातिं त्रास्वोत नस् तन्वो३ अप्रयुच्छन् १५३३

॥ १६८ ॥ (ऋ० १० । ८ । १-६) [१५३४-१५३९] त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः ।

प्र केतुना बृहता यात्यग्निर् आ रोदसी वृषभो रोरवीति ।
दिवश् चिदन्ताँ उपमाँ उदानळ् अपामुपस्थे महिषो ववर्ध १५३४

मुमोद गर्भो वृषभः ककुद्मान् अस्रेमा वत्सः शिमीवाँ अरावीत् ।
स देवतात्युद्यतानि कृण्वन् स्वेषु क्षयेषु प्रथमो जिगाति १५३५

आ यो मूर्धानं पित्रोररब्ध न्यध्वरे दधिरे सूरो अर्णः ।
अस्य पत्मन्नरुषीरश्वबुध्ना ऋतस्य योनौ तन्वो जुषन्त १५३६

उषउषो हि वसो अग्रमेषि त्वं यमयोरभवो विभावा ।
ऋताय सप्त दधिषे पदानि जनयन् मित्रं तन्वे स्वायै १५३७

भुवश् चक्षुर्मह ऋतस्य गोपा भुवो वरुणो यदृताय वेषि ।
भुवो अपां नपाज्जातवेदो भुवो दूतो यस्य हव्यं जुजोषः १५३८

भुवो यज्ञस्य रजसश् च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः ।
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् १५३९

॥१६९॥ (ऋ० १०।११। १-९) [१५४०-१५५६] हविर्धान आङ्गिः । जगती, १५४६-४८ त्रिष्टुप् ।

वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा दिवः पयांसि यह्वो अदितेरदाभ्यः ।
विश्वं स वेद वरुणो यथा धिया स यज्ञियो यजतु यज्ञियाँ ऋतून् १५४०

रपद् गन्धर्वीरप्या च योषणा नदस्य नादे परि पातु मे मनः ।
इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु नो भ्राता नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति १५४१

सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वती उषा उवास मनवे स्वर्वती ।
यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुम् अग्निं होतारं विदथाय जीजनन् १५४२

अध त्यं द्रप्सं विभ्वं विचक्षणं विराभरदिषितः श्येनो अध्वरे ।
यदी विशो वृणते दस्ममार्या अग्निं होतारमध धीरजायत १५४३

सदासि रण्वो यवसेव पुष्यते होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः ।
विप्रस्य वा यच्छशमान उक्थ्यं वाजं ससवाँ उपयासि भूरिभिः १५४४

उदीरय पितरा जार आ भगम् इयक्षति हर्यतो हृत्त इष्यति ।
विवक्ति वह्निः स्वपस्यते मखस् तविष्यते असुरो वेपते मती १५४५

यस्ते॑ अग्ने सु॒म॒तिं मर्तो॑ अक्ष॒त् सह॑सः सूनो॒ अति॑ स प्र शृ॑ण्वे ।
इषं॒ दधा॑नो॒ वह॑मानो॒ अश्वै॒र् आ स द्यु॒माँ अम॑वान् भूष॒ति द्यू॒न् १५४६

यद॑ग्न ए॒षा समि॑ति॒र्भवा॑ति दे॒वी दे॒वेषु॑ यज॒ता य॑जत्र ।
रत्ना॑ च॒ यद् वि॒भजा॑सि स्वधावो भा॒गं नो॒ अत्र॒ वसु॑मन्तं वीतात् १५४७

श्रु॒धी नो॑ अग्ने॒ सद॑ने स॒धस्थे॑ यु॒क्ष्वा रथ॑म॒मृत॑स्य द्रवि॒त्नुम् ।
आ नो॑ वह॒ रोद॑सी दे॒वपु॑त्रे॒ माकि॑र्दे॒वाना॒मप॑ भूरि॒ह स्याः १५४८

॥ १७० ॥ (ऋ० १० । १२ । १-९) त्रिष्टुप् ।

12 5353

द्यावा॑ ह॒ क्षामा॑ प्रथ॒मे ऋ॒तेन॑ अ॑भिश्रा॒वे भ॑वतः सत्य॒वाचा॑ ।
दे॒वो यन्मर्ता॑न् य॒जथा॑य कृ॒ण्वन् सीद॒द्धोता॑ प्र॒त्यङ् स्वमसुं॒ यन् १५४९

दे॒वो दे॒वान् परि॑भूर्ऋ॒तेन॒ वहा॑ नो ह॒व्यं प्र॑थ॒मश् चि॑कि॒त्वान् ।
धू॒मके॑तुः स॒मिधा॒ भाऋ॑जीको म॒न्द्रो होता॒ नित्यो॑ वा॒चा यजी॑यान् १५५०

स्वावृ॑ग् दे॒वस्या॒मृतं॒ यदी॒ गोर् अतो॑ जा॒तासो॑ धारयन्त उ॒र्वी ।
विश्वे॑ दे॒वा अनु॒ तत् ते॒ यजु॑र्गुर् दु॒हे यदेनी॑ दि॒व्यं घृ॒तं वाः १५५१

अर्चा॑मि वां॒ वर्धा॒याप॑ घृतस्नू॒ द्यावा॑भूमी शृणु॒तं रो॑दसी मे ।
अहा॒ यद् द्यावोऽसु॑नीति॒मय॒न् मध्वा॑ नो॒ अत्र॑ पि॒तरा॑ शिशीताम् १५५२

किं स्वि॑न्नो॒ राजा॑ जगृहे॒ कद॒स्य अति॑ व्र॒तं च॑कृ॒मा को वि वे॑द ।
मि॒त्रश् चि॒द्धि ष्मा॑ जुहुरा॒णो दे॒वाञ् श्लोको॒ न या॒ताम॒पि वाजो॒ अस्ति॑ १५५३

दु॒र्मन्त्वत्रा॒मृत॑स्य॒ नाम॒ सल॑क्ष्मा॒ यद् विषु॑रूपा॒ भवा॑ति ।
य॒मस्य॒ यो म॒नव॑ते सु॒मन्तु अग्ने॒ तमृ॑ष्व पा॒ह्यप्र॑युच्छन् १५५४

यस्मि॑न् दे॒वा वि॒दथे॑ मा॒दय॑न्ते वि॒वस्व॑तः॒ सद॑ने धा॒रय॑न्ते ।
सूर्ये॒ ज्योति॒रद॑धुर्मा॒स्य१क्तून् परि॑ द्योत॒निं च॑रतो॒ अज॑स्रा १५५५

यस्मि॑न् दे॒वा मन्म॑नि सं॒चर॑न्ति अपी॒च्ये३ न व॒यम॑स्य विद्म ।
मि॒त्रो नो॒ अत्रादि॑ति॒रना॑गान्त् स॒वि॒ता दे॒वो वरु॑णाय वोचत् १५५६

श्रु॒धी नो॑ अग्ने॒ सद॑ने स॒धस्थे॑० । (१५४८)

॥ १७१ ॥ (ऋ० १० । १६ । १—१४)

[१५५७-१५७०] दमनो यामायनः । त्रिष्टुप्, १५६७-७० अनुष्टुप् ।

मैनमग्ने वि दहो माभि शोचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।
यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेमेनं प्र हिणुतात् पितृभ्यः १५५७

शृतं यदा करसि जातवेदोऽथेमेनं परि दत्तात् पितृभ्यः ।
यदा गच्छात्यसुनीतिमेताम् अथा देवानां वशनीर्भवाति १५५८

सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा ।
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितम् ओषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः १५५९

अजो भागस् तपसा तं तपस्व तं ते शोचिस् तपतु तं ते अर्चिः ।
यास् ते शिवास् तन्वो जातवेदस् ताभिर्वहैनं सुकृतामु लोकम् १५६०

अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस् त आहुतश् चरति स्वधाभिः ।
आयुर्वसान उप वेतु शेषः सं गच्छतां तन्वा जातवेदः १५६१

यत् ते कृष्णः शकुन आतुतोद पिपीलः सर्प उत वा श्वापदः ।
अग्निष्टद् विश्वादगदं कृणोतु सोमश् च यो ब्राह्मणाँ आविवेश १५६२

अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व पीवसा मेदसा च
नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हृषाणो दधृग् विधक्ष्यन् पर्यङ्खयाते १५६३

इममग्ने चमसं मा वि जिह्वरः प्रियो देवानामुत सोम्यानाम् ।
एष यश् चमसो देवपानस् तस्मिन् देवा अमृता मादयन्ते १५६४

क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।
इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् १५६५

यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश वो गृहम् इमं पश्यन्नितरं जातवेदसम् ।
तं हरामि पितृयज्ञाय देवं स घर्ममिन्वात् परमे सधस्थे १५६६

यो अग्निः क्रव्यवाहनः पितॄन् यक्षदृतावृधः ।
प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश् च पितृभ्य आ १५६७

उशन्तस् त्वा नि धीमहि उशन्तः समिधीमहि ।
उशन्नुशत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे १५६८

यं त्वमग्ने समदहस् तमु निर्वापया पुनः ।
कियाम्ब्वत्र रोहतु पाकदूर्वा व्यल्कशा १५६९

शीतिके शीतिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति ।
मण्डूक्या३ सु सं गम इमं स्व१ग्निं हर्षय १५७०

॥ १७२ ॥ (ऋ० १० । २० । १-१०)

[१५७१-१५८८] विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा वासुकः । गायत्री, १५७१ एकपदा विराट् (एष मन्त्रः शान्त्यर्थः), १५७२ अनुष्टुप्, १५७९ विराट्, १५८० त्रिष्टुप् ।

भद्रं नो अपि वातय मनः १५७१

अग्निमीळे भुजां यविष्ठं शासा मित्रं दुर्धरीतुम् ।
यस्य धर्मन् त्स्व१रेनीः सपर्यन्ति मातुरूधः १५७२

यमासा कृपनीळं भासाकेतुं वर्धयन्ति । भ्राजते श्रेणिदन् १५७३
अर्यो विशां गातुरेति प्र यदानड् दिवो अन्तान् । कविरभ्रं दीद्यानः १५७४
जुषद्धव्या मानुषस्य ऊर्ध्वस् तस्थावृभ्वा यज्ञे । मिन्वन् त्सद्म पुर एति १५७५
स हि क्षेमो हविर्यज्ञः श्रुष्टीदस्य गातुरेति । अग्निं देवा वाशीमन्तम् १५७६
यज्ञासाहं दुव इषे ऽग्निं पूर्वस्य शेवस्य । अद्रेः सूनुमायुमाहुः १५७७
नरो ये के चास्मदा विश्वेत् ते वाम आ स्युः । अग्निं हविषा वर्धन्तः १५७८

कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रध्न ऋज्र उत शोणो यशस्वान् ।
हिरण्यरूपं जनिता जजान १५७९

एवा ते अग्ने विमदो मनीषाम् ऊर्जो नपादमृतेभिः सजोषाः ।
गिर आ वक्षत् सुमतीरियान इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः १५८०

॥ १७३ ॥ (ऋ० १० । २१ । १-८) आस्तारपंक्तिः (८+८+१२+१२) ।

आग्निं न स्ववृक्तिभिर् होतारं त्वा वृणीमहे ।
यज्ञाय स्तीर्णबर्हिषे वि वो मदे शीरं पावकशोचिषं विवक्षसे १५८१

त्वामु ते स्वाभुवः शुम्भन्त्यश्वराधसः ।
वेति त्वामुपसेचनी वि वो मद ऋजीतिरग्न आहुतिर्विवक्षसे १५८२

त्वे धर्माण आसते जुहूभिः सिञ्चतीरिव ।
कृष्णा रूपाण्यर्जुना वि वो मदे विश्वा अधि श्रियो धिषे विवक्षसे १५८३

यमग्ने मन्यसे रयिं सहसावन्नमर्त्य ।
तमा नो वाजसातये वि वो मदे यज्ञेषु चित्रमा भरा विवक्षसे १५८४

अग्निर्जातो अथर्वणा विदद् विश्वानि काव्या ।
भुवद् दूतो विवस्वतो वि वो मदे प्रियो यमस्य काम्यो विवक्षसे १५८५

त्वां यज्ञेष्वीळते ऽग्ने प्रयत्यध्वरे ।
त्वं वसूनि काम्या वि वो मदे विश्वा दधासि दाशुषे विवक्षसे १५८६

त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि षेदिरे ।
घृतप्रतीकं मनुषो वि वो मदे शुक्रं चेतिष्ठमक्षभिर्विवक्षसे १५८७

अग्ने शुक्रेण शोचिषा उरु प्रथयसे बृहत्
अभिक्रन्दन् वृषायसे वि वो मदे गर्भं दधासि जामिषु विवक्षसे १५८८

॥ १७४ ॥ (ऋ० १० । ४५ । १-१२) [१५८९-१६१०] वत्सप्रिर्भालन्दनः । त्रिष्टुप् ।

दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निर् अस्मद् द्वितीयं परि जातवेदाः ।
तृतीयमप्सु नृमणा अजस्रम् इन्धान एनं जरते स्वाधीः १५८९

विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा ।
विद्मा ते नाम परमं गुहा यद् विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ १५९०

समुद्रे त्वा नृमणा अप्स्व१न्तर् नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन् ।
तृतीये त्वा रजसि तस्थिवांसम् अपामुपस्थे महिषा अवर्धन् १५९१

अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद् वीरुधः समञ्जन् ।
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यद् आ रोदसी भानुना भात्यन्तः १५९२

श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः ।
वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा वि भात्यग्र उषसामिधानः १५९३

विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।
वीळुं चिदद्रिमभिनत् परायञ् जना यदग्निमयजन्त पञ्च १५९४

उशिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि ।
इयर्ति धूममरुषं भरिभ्रद् उच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् १५९५

दृशानो रुक्म उर्विया व्यद्यौद् दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः।
अग्निरमृतो अभवद् वयोभिर् यदेनं द्यौर्जनयत् सुरेताः १५९६
यस् ते अद्य कृणवद् भद्रशोचे ऽपूपं देव घृतवन्तमग्ने।
प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छ अभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ १५९७
आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थउक्थ आ भज शस्यमाने।
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्य् उज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः १५९८
त्वामग्ने यजमाना अनु द्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि।
त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः १५९९
अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो वैश्वानर ऋषिभिः सोमगोपाः।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् १६००

॥ १७५ ॥ (ऋ० १० । ४६ । १-१०)

प्र होता जातो महान् नभोविन् नृषद्वा सीददपामुपस्थे।
दधिर्यो धायि स ते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः १६०१
इमं विधन्तो अपां सधस्थे पशुं न नष्टं पदैरनु ग्मन्।
गुहा चतन्तमुशिजो नमोभिर् इच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन् १६०२
इमं त्रितो भूर्यविन्ददिच्छन् वैभूवसो मूर्धन्यघ्न्यायाः।
स शेवृधो जात आ हर्म्येषु नाभिर्युवा भवति रोचनस्य १६०३
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः प्राञ्चं यज्ञं नेतारमध्वराणाम्।
विशामकृण्वन्नरतिं पावकं हव्यवाहं दधतो मानुषेषु १६०४
प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरा अमूरं पुरां दर्माणम्।
नयन्तो गर्भं वनां धियं धुर् हिरिश्मश्रुं नार्वाणं धनर्चम् १६०५
नि पस्त्यासु त्रितः स्तभूयन् परिवीतो योनौ सीददन्तः।
अतः संगृभ्या विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयते नॄन् १६०६
अस्याजरासो दमामरित्रा अर्चद्धूमासो अग्नयः पावकाः।
श्वितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः १६०७

प्र जिह्वया भरते वेपो अग्निः प्र वयुनानि चेतसा पृथिव्याः ।
तमायवः शुचयन्तं पावकं मन्द्रं होतारं दधिरे यजिष्ठम् १६०८

द्यावा यमग्निं पृथिवी जनिष्टाम् आपस् त्वष्टा भृगवो यं सहोभिः ।
ईळेन्यं प्रथमं मातरिश्वा देवास् ततक्षुर्मनवे यजत्रम् १६०९

यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहं पुरुस्पृहो मानुषासो यजत्रम् ।
स यामन्नग्ने स्तुवते वयो धाः प्र देवयन् यशसः सं हि पूर्वीः १६१०

॥ १७६ ॥ (ऋ० १० । ५१ । १, ३, ५, ७, ९,) [१६११-१६२४] देवाः ।

महत् तदुल्बं स्थविरं तदासीद् येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः ।
विश्वा अपश्यद् बहुधा ते अग्ने जातवेदस् तन्वो देव एकः १६११

ऐच्छाम त्वा बहुधा जातवेदः प्रविष्टमग्ने अप्स्वोषधीषु ।
तं त्वा यमो अचिकेच्चित्रभानो दशान्तरुष्यादतिरोचमानम् १६१२

एहि मनुर्देवयुर्यज्ञकामो ऽरंकृत्या तमसि क्षेष्यग्ने ।
सुगान् पथः कृणुहि देवयानान् वह हव्यानि सुमनस्यमानः १६१३

कुर्मस् त आयुरजरं यदग्ने यथा युक्तो जातवेदो न रिष्याः ।
अथा वहासि सुमनस्यमानो भागं देवेभ्यो हविषः सुजात १६१४

तव प्रयाजा अनुयाजाश् च केवल ऊर्जस्वन्तो हविषः सन्तु भागाः ।
तवाग्ने यज्ञो३ऽयमस्तु सर्वस् तुभ्यं नमन्तां प्रदिशश् चतस्रः १६१५

॥ १७७ ॥ (ऋ० १० । ५३ । १-३, ६-११) जगती, १६१६-१८, १६२१ त्रिष्टुप् ।

यमैच्छाम मनसा सो३ ऽयमागाद् यज्ञस्य विद्वान् परुषश् चिकित्वान् ।
स नो यक्षद् देवताता यजीयान् नि हि षत्सदन्तरः पूर्वो अस्मत् १६१६

अराधि होता निषदा यजीयान् अभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यत् ।
यजामहै यज्ञियान् हन्त देवाँ ईळामहा ईड्याँ आज्येन १६१७

साध्वीमकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामविदाम गुह्याम् ।
स आयुरागात् सुरभिर्वसानो भद्रामकर्देवहूतिं नो अद्य १६१८

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् १६१९

अक्षानहो नह्यतनोत सोम्या इष्कृणुध्वं रशना ओत पिंशत ।
अष्टावन्धुरं वहताभितो रथं येन देवासो अनयन्नभि प्रियम् १६२०

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वम् उत् तिष्ठत प्र तरता सखायः ।
अत्रा जहाम ये असन्नशेवाः शिवान् वयमुत् तरेमाभि वाजान् १६२१

त्वष्टा माया वेदपसामपस्तमो बिभ्रत् पात्रा देवपानानि शंतमा ।
शिशीते नूनं परशुं स्वायसं येन वृश्चादेतशो ब्रह्मणस्पतिः १६२२

सतो नूनं कवयः सं शिशीत वाशीभिर्याभिरमृताय तक्षथ ।
विद्वांसः पदा गुह्यानि कर्तन येन देवासो अमृतत्वमानशुः १६२३

गर्भे योषामदधुर्वत्समासनि अपीच्येन मनसोत जिह्वया ।
स विश्वाहा सुमना योग्या अभि सिषासनिर्वनते कार इज्जितिम् १६२४

॥१७८॥ (ऋ० १० । ६९ । १-१२) [१६२५-१६३६] सुमित्रो वाध्र्यश्वः । त्रिष्टुप्, १६२५-२६ जगती ।

भद्रा अग्नेर्वध्र्यश्वस्य संदृशो वामी प्रणीतिः सुरणा उपेतयः ।
यदीं सुमित्रा विशो अग्र इन्धते घृतेनाहुतो जरते दविद्युतत् १६२५

घृतमग्नेर्वध्र्यश्वस्य वर्धनं घृतमन्नं घृतम्वस्य मेदनम् ।
घृतेनाहुत उर्विया वि पप्रथे सूर्य इव रोचते सर्पिरासुतिः १६२६

यत् ते मनुर्यदनीकं सुमित्रः समीधे अग्ने तदिदं नवीयः ।
स रेवच्छोच स गिरो जुषस्व स वाजं दर्षि स इह श्रवो धाः १६२७

यं त्वा पूर्वमीळितो वध्र्यश्वः समीधे अग्ने स इदं जुषस्व ।
स नः स्तिपा उत भवा तनूपा दात्रं रक्षस्व यदिदं ते अस्मे १६२८

भवा द्युम्नी वाध्र्यश्वोत गोपा मा त्वा तारीदभिमातिर्जनानाम् ।
शूर इव धृष्णुश्च्यवनः सुमित्रः प्र नु वोचं वाध्र्यश्वस्य नाम १६२९

समज्र्या पर्वत्या३ वसूनि दासा वृत्राण्यार्या जिगेथ ।
शूर इव धृष्णुश् च्यवनो जनानां त्वमग्ने पृतनायूँरभि ष्याः १६३०

दीर्घतन्तुर्बृहदुक्षायमग्निः सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभ्वा ।
द्युमान् द्युमत्सु नृभिर्मृज्यमानः सुमित्रेषु दीदयो देवयत्सु १६३१

*

त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदो ऽसश्चतेव समना सबर्धुक् ।
त्वं नृभिर्दक्षिणावद्भिरग्ने सुमित्रेभिरिध्यसे देवयद्भिः १६३२
देवाश्चित् ते अमृता जातवेदो महिमानं वाध्र्यश्व प्र वोचन् ।
यत् संपृच्छं मानुषीर्विश आयन् त्वं नृभिरजयस् त्वावृधेभिः १६३३
पितेव पुत्रमबिभरुपस्थे त्वामग्ने वध्र्यश्वः सपर्यन् ।
जुषाणो अस्य समिधं यविष्ठ उत पूर्वां अवनोर्व्राधतश्चित् १६३४
शश्वदग्निर्वध्र्यश्वस्य शत्रून् नृभिर्जिगाय सुतसोमवद्भिः ।
समनं चिददहश्चित्रभानो ऽव व्राधन्तमभिनद् वृधश्चित् १६३५
अयमग्निर्वध्र्यश्वस्य वृत्रहा सनकात् प्रेद्धो नमसोपवाक्यः ।
स नो अजामीँरुत वा विजामीन् अभि तिष्ठ शर्धतो वाध्र्यश्व १६३६

॥ १७९ ॥ (ऋ० १० । ७९ । १-७)

[१६३७—१६५०] अग्निः सौचीको, वैश्वानरो वा, (सप्तिर्वाजंभरो वा)। त्रिष्टुप् ।

अपश्यमस्य महतो महित्वम् अमर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु ।
नाना हनू विभृते सं भरेते असिन्वती बप्सती भूर्यत्तः १६३७
गुहा शिरो निहितमृधगक्षी असिन्वन्नत्ति जिह्वया वनानि ।
अत्राण्यस्मै पड्भिः सं भरन्ति उत्तानहस्ता नमसाधि विक्षु १६३८
प्र मातुः प्रतरं गुह्यमिच्छन् कुमारो न वीरुधः सर्पदुर्वीः ।
ससं न पक्वमविदच्छुचन्तं रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अन्तः १६३९
तद् वामृतं रोदसी प्र ब्रवीमि जायमानो मातरा गर्भो अत्ति ।
नाहं देवस्य मर्त्यश्चिकेत अग्निरङ्ग विचेताः स प्रचेताः १६४०
यो अस्मा अन्नं तृष्वा३दधाति आज्यैर्घृतैर्जुहोति पुष्यति ।
तस्मै सहस्रमक्षभिर्वि चक्षे ऽग्ने विश्वतः प्रत्यङ्ङसि त्वम् १६४१
किं देवेषु त्यज एनश्चकर्थ अग्ने पृच्छामि नु त्वामविद्वान् ।
अक्रीळन् क्रीळन् हरिरत्तवे ऽदन् वि पर्वशश्चकर्त गामिवासिः १६४२
विषूचो अश्वान् युयुजे वनेजा ऋजीतिभी रशनाभिर्गृभीतान् ।
चक्षदे मित्रो वसुभिः सुजातः समानृधे पर्वभिर्वावृधानः १६४३

॥ १८० ॥ (ऋ० १० । ८० । १-७)

अग्निः सप्तिं वाजंभरं ददाति अग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिःष्ठाम् ।
अग्नी रोदसी वि चरत् समञ्जन्न् अग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरंधिम् १६४४

अग्नेरप्नसः समिदस्तु भद्रा ऽग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।
अग्निरेकं चोदयत् समत्सु अग्निर्वृत्राणि दयते पुरूणि १६४५

अग्निर्ह त्यं जरतः कर्णमाव अग्निरद्भ्यो निरदहज्जरूथम् ।
अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदन्तर् अग्निर्नृमेधं प्रजयासृजत् सम् १६४६

अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिं यः सहस्रा सनोति ।
अग्निर्दिवि हव्यमा ततान अग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा १६४७

अग्निमुक्थैर्ऋषयो वि ह्वयन्ते ऽग्निं नरो यामनि बाधितासः ।
अग्निं वयो अन्तरिक्षे पतन्तो ऽग्निः सहस्रा परि याति गोनाम् १६४८

अग्निं विश ईळते मानुषीर्या अग्निं मनुषो नहुषो वि जाताः ।
अग्निर्गान्धर्वीं पथ्यामृतस्य अग्नेर्गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता १६४९

अग्नये ब्रह्म ऋभवस् ततक्षुर् अग्निं महामवोचामा सुवृक्तिम् ।
अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठ अग्ने महि द्रविणमा यजस्व १६५०

॥ १८१ ॥ (ऋ० १० । ९१ । १-१५) [१६५१-१६६५] अरुणो वैतहव्यः । जगती, १६६५ त्रिष्टुप् ।

सं जागृवद्भिर्जरमाण इध्यते दमे दमूना इषयन्निळस्पदे ।
विश्वस्य होता हविषो वरेण्यो विभुर्विभावा सुषखा सखीयते १६५१

स दर्शतश्रीरतिथिर्गृहेगृहे वनेवने शिश्रिये तक्ववीरिव ।
जनंजनं जन्यो नाति मन्यते विश आ क्षेति विश्यो३ विशंविशम् १६५२

सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुर् अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ।
वसुर्वसूनां क्षयसि त्वमेक इद् द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः १६५३

प्रजानन्नग्ने तव योनिमृत्वियम् इळायास्पदे घृतवन्तमासदः ।
आ ते चिकित्र उषसामिवेतयो ऽरेपसः सूर्यस्येव रश्मयः १६५४

तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतश् चित्राश् चिकित्र उषसां न केतवः ।
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे अन्नमास्ये १६५५

तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः ।
तमित् समानं वनिनश्च वीरुधो ऽन्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा १६५६
वातोपधूत इषितो वशाँ अनु तृषु यदन्ना वेविषद् वितिष्ठसे ।
आ ते यतन्ते रथ्यो३ यथा पृथक् शर्धांस्यग्ने अजराणि धक्षतः १६५७
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनम् अग्निं होतारं परिभूतमं मतिम् ।
तमिदर्भे हविष्या समानमित् तमिन्महे वृणते नान्यं त्वत् १६५८
त्वामिदत्र वृणते त्वायवो होतारमग्ने विदथेषु वेधसः ।
यद् देवयन्तो दधति प्रयांसि ते हविष्मन्तो मनवो वृक्तबर्हिषः १६५९
तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः ।
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश्च नो दमे १६६०
यस् तुभ्यमग्ने अमृताय मर्त्यः समिधा दाशदुत वा हविष्कृति ।
तस्य होता भवसि यासि दूत्य१म् उप ब्रूषे यजस्यध्वरीयसि १६६१
इमा अस्मै मतयो वाचो अस्मदाँ ऋचो गिरः सुष्टुतयः समग्मत ।
वसूयवो वसवे जातवेदसे वृद्धासु चिद् वर्धनो यासु चाकनत् १६६२
इमां प्रत्नाय सुष्टुतिं नवीयसीं वोचेयमस्मा उशते शृणोतु नः ।
भूया अन्तरा हृद्यस्य निस्पृशे जायेव पत्य उशती सुवासाः १६६३
यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्षणो वशा मेषा अवसृष्टास आहुताः ।
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदा मतिं जनये चारुमग्नये १६६४
अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्वीव सोमः ।
वाजसनिं रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम् १६६५

॥ १८२ ॥ (ऋ० १० । ११५ । १-९)

[१६६६-१६७४] उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः । जगती, १६७३ त्रिष्टुप्, १६७४ शक्वरी ।

चित्र इच्छिशोस् तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावप्येति धातवे ।
अनूधा यदि जीजनदधा च नु ववक्ष सद्यो महि दूत्यं१ चरन् १६६६
अग्निर्ह नाम धायि दन्नपस्तमः सं यो वना युवते भस्मना दता ।
अभिप्रमुरा जुह्वा स्वध्वर इनो न प्रोथमानो यवसे वृषा १६६७

तं वो विं न द्रुषदं देवमन्धस इन्दुं प्रोथन्तं प्रवपन्तमर्णवम् ।

आसा वह्निं न शोचिषा विरप्शिनं महिव्रतं न सरजन्तमध्वनः १६६८

वि यस्य ते ज्रयसानस्याजर धक्षोर्न वाताः परि सन्त्यच्युताः ।

आ रण्वासो युयुधयो न सत्वनं त्रितं नशन्त प्र शिषन्त इष्टये १६६९

स इदग्निः कण्वतमः कण्वसखा अर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः ।

अग्निः पातु गृणतो अग्निः सूरीन् अग्निर्ददातु तेषामवो नः १६७०

वाजिन्तमाय सह्यसे सुपित्र्य तृषु च्यवानो अनु जातवेदसे ।

अनुद्रे चिद् यो धृषता वरं सते महिन्तमाय धन्वनेदविष्यते १६७१

एवाग्निर्मर्तैः सह सूरिभिर् वसुः ष्टवे सहसः सूनरो नृभिः ।

मित्रासो न ये सुधिता ऋतायवो द्यावो न द्युम्नैरभि सन्ति मानुषान् १६७२

ऊर्जो नपात् सहसावन्निति त्वा उपस्तुतस्य वन्दते वृषा वाक् ।

त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः १६७३

इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य पुत्रा उपस्तुतास ऋषयोऽवोचन् ।

ताँश्च पाहि गृणतश् च सूरीन् वषड्वषळित्यूर्ध्वासो अनक्षन्

नमो नम इत्यूर्ध्वासो अनक्षन् १६७४

॥ १८३ ॥ (ऋ० १० । १२२ । १-८) [१६७५-१६८२] चित्रमहा वासिष्ठः । जगती; १६७५-१६७९ त्रिष्टुप् ।

वसुं न चित्रमहसं गृणीषे वामं शेवमतिथिमद्विषेण्यम् ।

स रासते शुरुधो विश्वधायसो ऽग्निर्होता गृहपतिः सुवीर्यम् १६७५

जुषाणो अग्ने प्रति हर्य मे वचो विश्वानि विद्वान् वयुनानि सुक्रतो ।

घृतनिर्णिग् ब्रह्मणे गातुमेरय तव देवा अजनयन्ननु व्रतम् १६७६

सप्त धामानि परियन्नमर्त्यो दाशद् दाशुषे सुकृते मामहस्व ।

सुवीरेण रयिणाग्ने स्वाभुवा यस् त आनट् समिधा तं जुषस्व १६७७

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं हविष्मन्त ईळते सप्त वाजिनम् ।

शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं पृणन्तं देवं पृणते सुवीर्यम् १६७८

त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः स हूयमानो अमृताय मत्स्व ।

त्वां मर्जयन् मरुतो दाशुषो गृहे त्वां स्तोमेभिर्भृगवो वि रुरुचुः १६७९

इषं दुहन् त्सुदुघां विश्वधायसं यज्ञप्रिये यजमानाय सुक्रतो ।
अग्ने घृतस्नुस् त्रिर्ऋतानि दीद्यद् वर्तिर्यज्ञं परियन् त्सुक्रतूयसे १६८०

त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना अयजन्त मानुषाः ।
त्वां देवा महयाय्याय वावृधुर् आज्यमग्ने निमृजन्तो अध्वरे १६८१

नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त वाजिनं गृणन्तो अग्ने विदथेषु वेधसः ।
रायस्पोषं यजमानेषु धारय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः १६८२

॥ १८४ ॥ (ऋ० १० । १२४ । १) [१६८३] अग्निः । त्रिष्टुप् ।

इमं नो अग्न उप यज्ञमेहि पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् ।
असो हव्यवाळुत नः पुरोगा ज्योगेव दीर्घं तम आशयिष्ठाः १६८३

॥ १८५ ॥ (ऋ० १० । १४० । १-६)

[१६८४-१६८९] अग्निः पावकः । सतोबृहती, १६८४-८६ विष्टारपङ्क्तिः, १६८९ उपरिष्टाज्ज्योतिः ।

अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो ।
बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यं१ दधासि दाशुषे कवे १६८४

पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियर्षि भानुना ।
पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे १६८५

ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर् मन्दस्व धीतिभिर्हितः ।
त्वे इषः सं दधुर्भूरिवर्पसश् चित्रोतयो वामजाताः १६८६

इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिर् अस्मे रायो अमर्त्य ।
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि सानसिं क्रतुम् १६८७

इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः ।
रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसिं रयिम् १६८८

ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतम् अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः ।
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा १६८९

॥ १८६ ॥ (ऋ० १० । १४२ । १—८)

[१६९०—१६९७] १६९०-१६९१ जरिता, १६९२-९३ द्रोणः, १६९४-९५ सारिसृक्कः, १६९६-९७ स्तम्बमित्रः (एते शाङ्गाः)। त्रिष्टुप्, १६९०-९१ जगती, १६९६—९७ अनुष्टुप्।

अयमग्ने जरिता त्वे अभूदपि सहसः सूनो नह्य१न्यदस्त्याप्यम् ।
भद्रं हि शर्म त्रिवरूथमस्ति त आरे हिंसानामप दिद्युमा कृधि १६९०

प्रवत् ते अग्ने जनिमा पितूयतः साचीव विश्वा भुवना न्यृञ्जसे ।
प्र सप्तयः प्र सनिषन्त नो धियः पुरश् चरन्ति पशुपा इव त्मना १६९१

उत वा उ परि वृणक्षि बप्सद् बहोरग्न उलपस्य स्वधावः ।
उत खिल्या उर्वराणां भवन्ति मा ते हेतिं तविषीं चुक्रुधाम १६९२

यदुद्वतो निवतो यासि बप्सत् पृथगेषि प्रगर्धिनीव सेना ।
यदा ते वातो अनुवाति शोचिर् वप्तेव श्मश्रु वपसि प्र भूम १६९३

प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्र एकं नियानं बहवो रथासः ।
बाहू यदग्ने अनुमर्मृजानो न्यङ्ङुत्तानामन्वेषि भूमिम् १६९४

उत् ते शुष्मा जिहतामुत् ते अर्चिर् उत् ते अग्ने शशमानस्य वाजाः ।
उच्छ्वञ्चस्व नि नम वर्धमान आ त्वाद्य विश्वे वसवः सदन्तु १६९५

अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम् ।
अन्यं कृणुष्वेतः पन्थां तेन याहि वशाँ अनु १६९६

आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः ।
ह्रदाश् च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे १६९७

॥ १८७ ॥ (ऋ० १० । १५० । १-५)

[१६९८-१७०२] मृळीको वासिष्ठः । बृहती, १७०१-२ उपरिष्टाज्ज्योतिः, १७०१ जगती वा ।

समिद्धश् चित् समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन ।
आदित्यै रुद्रैर्वसुभिर्न आ गहि मृळीकाय न आ गहि १६९८

इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि ।
मर्तासस् त्वा समिधान हवामहे मृळीकाय हवामहे १६९९

त्वामु जातवेदसं विश्ववारं गृणे धिया ।
अग्ने देवाँ आ वह नः प्रियव्रतान् मृळीकाय प्रियव्रतान् १७००
अग्निर्देवो देवानामभवत् पुरोहितो ऽग्निं मनुष्याइ ऋषयः समीधिरे ।
अग्निं महो धनसातावहं हुवे मृळीकं धनसातये १७०१
अग्निरत्रिं भरद्वाजं गविष्ठिरं प्रावन्नः कण्वं त्रसदस्युमाहवे ।
अग्निं वसिष्ठो हवते पुरोहितो मृळीकाय पुरोहितः १७०२

॥ १८८ ॥ (ऋ० १० । १५६ । १-५) [१७०३-१७०७] केतुराग्नेयः । गायत्री ।

अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु । तेन जेष्म धनंधनम् १७०३
यया गा आकरामहे सेनयाग्ने तवोत्या । तां नो हिन्व मघत्तये १७०४
आग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम् । अङ्धि खं वर्तया पणिम् १७०५
अग्ने नक्षत्रमजरम् आ सूर्यं रोहयो दिवि । दधज् ज्योतिर्जनेभ्यः १७०६
अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत् । बोधा स्तोत्रे वयो दधत् १७०७

॥१८९॥ (ऋ० १०।१७६।२-४) [१७०८-१७१०] सूनुरार्भवः । गायत्री, १७०९-१० अनुष्टुप् ।

प्र देवं देव्या धिया भरता जातवेदसम् । हव्या नो वक्षदानुषक् १७०८
अयमु ष्य प्र देवयुर् होता यज्ञाय नीयते ।
रथो न योरभीवृतो घृणीवाञ् चेतति त्मना १७०९
अयमग्निरुरुष्यति अमृतादिव जन्मनः ।
सहसश् चित् सहीयान् देवो जीवातवे कृतः १७१०

॥ १९० ॥ (ऋ० १० । १८७ । १-५) [१७११—१७१५] वत्स आग्नेयः । गायत्री ।

प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम् । स नः पर्षदति द्विषः १७११
यः परस्याः परावतस् तिरो धन्वातिरोचते । स नः पर्षदति द्विषः १७१२
यो रक्षांसि निजूर्वति वृषा शुक्रेण शोचिषा । स नः पर्षदति द्विषः १७१३
यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पर्षदति द्विषः १७१४
यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत । स नः पर्षदति द्विषः १७१५

॥ १९१ ॥ (ऋ० १ । १९१ । १) [१७१६] संवनन आङ्गिरसः । अनुष्टुप् ।

संसमिद् युवसे वृषन्न् अग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर १७१६

वैश्वानरोऽग्निः।

॥ १९२ ॥ (ऋ० १ । ५९ । १-७) [१७१७-१७२३] नोधा गौतमः । त्रिष्टुप्।

वया इदग्ने अग्नयस् ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते ।
वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव जनाँ उपमिद् ययन्थ १७१७

मूर्धा दिवो नाभिरग्निः पृथिव्या अथाभवदरती रोदस्योः ।
तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय १७१८

आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि ।
या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषेष्वसि तस्य राजा १७१९

बृहती इव सूनवे रोदसी गिरो होता मनुष्यो३ न दक्षः ।
स्वर्वते सत्यशुष्माय पूर्वीर् वैश्वानराय नृतमाय यह्वीः १७२०

दिवश् चित् ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्र रिरिचे महित्वम् ।
राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश् चकर्थ १७२१

प्र नू महित्वं वृषभस्य वोचं यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते ।
वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वाँ अधूनोत् काष्ठा अव शम्बरं भेत् १७२२

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर् भरद्वाजेषु यजतो विभावा ।
शातवनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान् १७२३

॥ १९३ ॥ (ऋ० १ । ९८ । १-३) [१७२४-१७२६] कुत्स आङ्गिरसः ।

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिश्रीः ।
इतो जातो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण १७२४

पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वा ओषधीरा विवेश ।
वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् १७२५

वैश्वानर तव तत् सत्यमस्तु अस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः १७२६

॥ १९४ ॥ (ऋ० ३।२।१-१५) [१७२७-१७४१] विश्वामित्रो गाथिनः । जगती ।

वैश्वानराय धिषणामृतावृधे   घृतं न पूतमग्नये जनामसि ।
द्विता होतारं मनुषश् च वाघतो   धिया रथं न कुलिशः समृण्वति   १७२७

स रोचयज् जनुषा रोदसी उभे   स मात्रोरभवत् पुत्र ईड्यः ।
हव्यवाळग्निरजरश् चनोहितो   दूळभो विशामतिथिर्विभावसुः   १७२८

क्रत्वा दक्षस्य तरुषो विधर्मणि   देवासो अग्निं जनयन्त चित्तिभिः ।
रुरुचानं भानुना ज्योतिषा महाम्   अत्यं न वाजं सनिष्यन्नुप ब्रुवे   १७२९

आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो वरेण्यं   वृणीमहे अह्रयं वाजमृग्मियम् ।
रातिं भृगूणामुशिजं कविक्रतुम्   अग्निं राजन्तं दिव्येन शोचिषा   १७३०

अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना   वाजश्रवसमिह वृक्तबर्हिषः ।
यतस्रुचः सुरुचं विश्वदेव्यं   रुद्रं यज्ञानां साधदिष्टिमपसाम्   १७३१

पावकशोचे तव हि क्षयं परि   होतर्यज्ञेषु वृक्तबर्हिषो नरः ।
अग्ने दुव इच्छमानास आप्यम्   उपासते द्रविणं धेहि तेभ्यः   १७३२

आ रोदसी अपृणदा स्वर्महज्   जातं यदेनमपसो अधारयन् ।
सो अध्वराय परि णीयते कविर्   अत्यो न वाजसातये चनोहितः   १७३३

नमस्यत हव्यदातिं स्वध्वरं   दुवस्यत दम्यं जातवेदसम् ।
रथीर्ऋतस्य बृहतो विचर्षणिर्   अग्निर्देवानामभवत् पुरोहितः   १७३४

तिस्रो यह्वस्य समिधः परिज्मनो   ऽग्नेरपुनन्नुशिजो अमृत्यवः ।
तासामेकामदधुर्मर्त्ये भुजमु   लोकमु द्वे उप जामिमीयतुः   १७३५

विशां कविं विश्पतिं मानुषीरिषः   सं सीमकृण्वन् त्स्वधितिं न तेजसे ।
स उद्वतो निवतो याति वेविषत्   स गर्भमेषु भुवनेषु दीधरत्   १७३६

स जिन्वते जठरेषु प्रजज्ञिवान्   वृषा चित्रेषु नानदन्न सिंहः ।
वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो   वसु रत्ना दयमानो वि दाशुषे   १७३७

वैश्वानरः प्रत्नथा नाकमारुहद्   दिवस्पृष्ठं भन्दमानः सुमन्मभिः ।
स पूर्ववज् जनयञ् जन्तवे धनं   समानमज्मं पर्येति जागृविः   १७३८

ऋतावानं यज्ञियं विप्रमुक्थ्य१म् आ यं दधे मातरिश्वा दिवि क्षयम् ।
तं चित्रयामं हरिकेशमीमहे सुदीतिमग्निं सुविताय नव्यसे १७३९
शुचिं न यामन्निषिरं स्वर्दृशं केतुं दिवो रोचनस्थामुषर्बुधम् ।
अग्निं मूर्धानं दिवो अप्रतिष्कुतं तमीमहे नमसा वाजिनं बृहत् १७४०
मन्द्रं होतारं शुचिमद्वयाविनं दमूनसमुक्थ्यं विश्वचर्षणिम् ।
रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुर्हितं सदमिद् राय ईमहे १७४१

॥ १९५ ॥ (ऋ० ३ । ३ । १-११)

वैश्वानराय पृथुपाजसे विपो रत्ना विधन्त धरुणेषु गातवे ।
अग्निर्हि देवाँ अमृतो दुवस्यति अथा धर्माणि सनता न दूदुषत् १७४२
अन्तर्दूतो रोदसी दस्म ईयते होता निषत्तो मनुषः पुरोहितः ।
क्षयं बृहन्तं परि भूषति द्युभिर् देवेभिरग्निरिषितो धियावसुः १७४३
केतुं यज्ञानां विदथस्य साधनं विप्रासो अग्निं महयन्त चित्तिभिः ।
अपांसि यस्मिन्नधि संदधुर्गिरस् तस्मिन् त्सुम्नानि यजमान आ चके १७४४
पिता यज्ञानामसुरो विपश्चितां विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम् ।
आ विवेश रोदसी भूरिवर्पसा पुरुप्रियो भन्दते धामभिः कविः १७४५
चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं हरिव्रतं वैश्वानरमप्सुषदं स्वर्विदम् ।
विगाहं तूर्णिं तविषीभिरावृतं भूर्णिं देवास इह सुश्रियं दधुः १७४६
अग्निर्देवेभिर्मनुषश् च जन्तुभिस् तन्वानो यज्ञं पुरुपेशसं धिया ।
रथीरन्तरीयते साधदिष्टिभिर् जीरो दमूना अभिशस्तिचातनः १७४७
अग्ने जरस्व स्वपत्य आयुनि ऊर्जा पिन्वस्व समिषो दिदीहि नः ।
वयांसि जिन्व बृहतश् च जागृव उशिग् देवानामसि सुक्रतुर्विपाम् १७४८
विश्पतिं यह्वमतिथिं नरः सदा यन्तारं धीनामुशिजं च वाघताम् ।
अध्वराणां चेतनं जातवेदसं प्र शंसन्ति नमसा जूतिभिर्वृधे १७४९
विभावा देवः सुरणः परि क्षितीर् अग्निर्बभूव शवसा सुमद्रथः ।
तस्य व्रतानि भूरिपोषिणो वयम् उप भूषेम दम आ सुवृक्तिभिः १७५०
वैश्वानर तव धामान्या चके येभिः स्वर्विदभवो विचक्षण ।
जात आपृणो भुवनानि रोदसी अग्ने ता विश्वा परिभूरसि त्मना १७५१

वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो बृहद् अरिणादेकः स्वपस्यया कविः ।
उभा पितरा महयन्नजायत अग्निर्द्यावापृथिवी भूरिरेतसा १७५२

॥ १९६ ॥ (ऋ० ३ । २६ । १-३; ७-८) जगती; [१७५६-१७५७] त्रिष्टुप् ।

वैश्वानरं मनसाग्निं निचाय्या हविष्मन्तो अनुषत्यं स्वर्विदम् ।
सुदानुं देवं रथिरं वसूयवो गीर्भी रण्वं कुशिकासो हवामहे १७५३

तं शुभ्रमग्निमवसे हवामहे वैश्वानरं मातरिश्वानमुक्थ्यम् ।
बृहस्पतिं मनुषो देवतातये विप्रं श्रोतारमतिथिं रघुष्यदम् १७५४

अश्वो न क्रन्दञ् जनिभिः समिध्यते वैश्वानरः कुशिकेभिर्युगेयुगे ।
स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्व्यं दधातु रत्नममृतेषु जागृविः १७५५

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ।
अर्कस् त्रिधातू रजसो विमानो ऽजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम १७५६

त्रिभिः पवित्रैरपुपोद्ध्यर्कं हृदा मतिं ज्योतिरनु प्रजानन् ।
वर्षिष्ठं रत्नमकृत स्वधाभिर् आदिद् द्यावापृथिवी पर्यपश्यत् १७५७

॥ १९७ ॥ (ऋ० ४ । ५ । १—१५) [१७५८-१७७२] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

वैश्वानराय मीळ्हुषे सजोषाः कथा दाशेमाग्नये बृहद् भाः ।
अनूनेन बृहता वक्षथेन उप स्तभायदुपमिन्न रोधः १७५८

मा निन्दत य इमां मह्यं रातिं देवो ददौ मर्त्याय स्वधावान् ।
पाकाय गृत्सो अमृतो विचेता वैश्वानरो नृतमो यह्वो अग्निः १७५९

साम द्विबर्हा महि तिग्मभृष्टिः सहस्ररेता वृषभस् तुविष्मान् ।
पदं न गोरपगूळ्हं विविद्वान् अग्निर्मह्यं प्रेदु वोचन्मनीषाम् १७६०

प्र ताँ अग्निर्बभसत् तिग्मजम्भस् तपिष्ठेन शोचिषा यः सुराधाः ।
प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि १७६१

अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः ।
पापासः सन्तो अनृता असत्या इदं पदमजनता गभीरम् १७६२

इदं मे अग्ने कियते पावक अमिनते गुरुं भारं न मन्म ।
बृहद् दधाथ धृषता गभीरं यह्वं पृष्ठं प्रयसा सप्तधातु १७६३

तमिन्न्वे॒३॑व स॑म॒ना स॑मा॒नम् अ॒भि क्रत्वा॑ पुन॒ती धी॒तिर॑श्याः ।
स॒सस्य॒ चर्म॒न्नधि॒ चारु॒ पृश्ने॑र् अग्रे॑ रु॒प आरु॑पितं॒ जबा॑रु १७६४

प्र॒वाच्यं॒ वच॑सः॒ किं मे॑ अ॒स्य गुहा॑ हि॒तमुप॑ नि॒णिग् व॑दन्ति ।
यदु॒स्रिया॑णा॒मप॒ वारि॑व॒ व्रन् पाति॑ प्रि॒यं रु॒पो अग्रं॑ प॒दं वेः १७६५

इ॒दमु॒ त्यन्महि॑ म॒हामनी॑कं॒ यदु॒स्रिया॒ सच॑त पू॒र्व्यं गौः ।
ऋ॒तस्य॑ प॒दे अधि॒ दीद्या॑नं॒ गुहा॑ रघु॒ष्यद् र॑घु॒यद् वि॑वेद १७६६

अध॑ द्युता॒नः पि॒त्रोः सचा॒सा ऽम॑नुत॒ गुह्यं॒ चारु॒ पृश्नेः॑ ।
मा॒तुष् प॒दे प॑र॒मे अन्ति॒ षद् गोर् वृष्णः॑ शो॒चिषः॒ प्रय॑तस्य जि॒ह्वा १७६७

ऋ॒तं वो॑चे॒ नम॑सा पृ॒च्छ्यमा॑न॒स् तवा॒शसा॑ जातवेदो॒ यदी॒दम् ।
त्वम॒स्य क्ष॑यसि॒ यद्ध॒ विश्वं॑ दि॒वि यदु॒ द्रवि॑णं॒ यत् पृ॑थि॒व्याम् १७६८

किं नो॑ अ॒स्य द्रवि॑णं॒ कद्ध॒ रत्नं॒ वि नो॑ वोचो जातवेदश् चिकि॒त्वान् ।
गुहाध्व॑नः पर॒मं यन्नो॑ अ॒स्य रेकु॑ प॒दं न नि॑दा॒ना अग॑न्म १७६९

का म॒र्यादा॑ व॒युना॒ कद्ध॑ वा॒मम् अच्छा॑ गमेम र॒घवो॒ न वाज॑म् ।
क॒दा नो॑ दे॒वीर॒मृत॑स्य॒ पत्नीः॒ सूरो॒ वर्णे॑न ततनन्नु॒षासः॑ १७७०

अ॒नि॒रेण॒ वच॑सा फ॒ल्ग्वेन प्र॒तीत्ये॑न कृ॒धुना॑तृ॒पासः॑ ।
अधा॒ ते अ॑ग्ने कि॒मि॒हा व॑दन्ति अना॒यु॒धास॒ आस॑ता सचन्ताम् १७७१

अ॒स्य श्रि॒ये स॑मिधा॒नस्य॒ वृष्णो॒ वसो॒रनी॑कं॒ दम॒ आ रु॑रोच ।
रुश॒द् वसा॑नः सु॒दृशी॑करूपः क्षि॒तिर्न रा॒या पु॑रु॒वारो॑ अद्यौत् १७७२

॥ १९८ ॥ (ऋ० ६ । ७ । १-७)

[१७७३-१७९३] भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप्, १७७८—१७७९ जगती ।

मू॒र्धानं॑ दि॒वो अ॑र॒तिं पृ॑थि॒व्या वै॑श्वान॒रमृ॒त आ जा॒तम॒ग्निम् ।
क॒विं स॒म्राज॒मति॑थिं॒ जना॑नाम् आ॒सन्ना पात्रं॑ जनयन्त दे॒वाः १७७३

नाभिं॑ य॒ज्ञानां॒ सद॑नं रयी॒णां म॒हामा॑हा॒वम॒भि सं न॑वन्त ।
वै॒श्वा॒न॒रं र॒थ्य॑मध्व॒राणां॑ य॒ज्ञस्य॑ के॒तुं ज॑नयन्त दे॒वाः १७७४

त्वद् विप्रो॑ जायते वा॒ज्य॑ग्ने॒ त्वद् वी॒रासो॑ अभिमाति॒षाहः॑ ।
वैश्वा॑नर॒ त्वम॒स्मासु॑ धेहि॒ वसू॑नि राजन् त्स्पृह॒याय्या॑णि १७७५

त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते ।
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् वैश्वानर यत् पित्रोरदीदेः १७७६

वैश्वानर तव तानि व्रतानि महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।
यज् जायमानः पित्रोरुपस्थे ऽविन्दः केतुं वयुनेष्वह्नाम् १७७७

वैश्वानरस्य विमितानि चक्षसा सानूनि दिवो अमृतस्य केतुना ।
तस्येदु विश्वा भुवनाधि मूर्धनि वया इव रुरुहुः सप्त विस्रुहः १७७८

वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर् वैश्वानरो वि दिवो रोचना कविः ।
परि यो विश्वा भुवनानि पप्रथे ऽदब्धो गोपा अमृतस्य रक्षिता १७७९

॥ १९९ ॥ (ऋ० ६ । ८ । १-७) जगती, १७८६ त्रिष्टुप् ।

पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू सहः प्र नु वोचं विदथा जातवेदसः ।
वैश्वानराय मतिर्नव्यसी शुचिः सोम इव पवते चारुरग्नये १७८०

स जायमानः परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत ।
व्यन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुर् वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत् १७८१

व्यस्तभ्नाद् रोदसी मित्रो अद्भुतो ऽन्तर्वावदकृणोज् ज्योतिषा तमः ।
वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयद् वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्ण्यम् १७८२

अपामुपस्थे महिषा अगृभ्णत विशो राजानमुप तस्थुर्ऋग्मियम् ।
आ दूतो अग्निमभरद् विवस्वतो वैश्वानरं मातरिश्वा परावतः १७८३

युगेयुगे विदथ्यं गृणद्भ्यो ऽग्ने रयिं यशसं धेहि नव्यसीम् ।
पव्येव राजन्नघशंसमजर नीचा नि वृश्च वनिनं न तेजसा १७८४

अस्माकमग्ने मघवत्सु धारया ऽनामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम् ।
वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः १७८५

अदब्धेभिस् तव गोपाभिरिष्टे ऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरीन् ।
रक्षा च नो ददुषां शर्धो अग्ने वैश्वानर प्र च तारीः स्तवानः १७८६

॥ २०० ॥ (६ । ९ । १-७) त्रिष्टुप् ।

अहश् च कृष्णमहरर्जुनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः ।
वैश्वानरो जायमानो न राजा ऽवातिरज् ज्योतिषाग्निस् तमांसि १७८७

नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं न यं वयन्ति समरेऽतमानाः ।
कस्य स्वित् पुत्र इह वक्त्वानि परो वदात्यवरेण पित्रा १७८८

स इत् तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति ।
य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश् चरन् परो अन्येन पश्यन् १७८९

अयं होता प्रथमः पश्यतेमम् इदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु ।
अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तो ऽमर्त्यस् तन्वा३ वर्धमानः १७९०

ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृशये कं मनो जविष्ठं पतयत्स्वन्तः ।
विश्वे देवाः समनसः सकेता एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु १७९१

वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर् वीदं ज्योतिर्हृदय आहितं यत् ।
वि मे मनश् चरति दूरआधीः किं स्विद् वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये १७९२

विश्वे देवा अनमस्यन् भियानास् त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम् ।
वैश्वानरोऽवतूतये नो ऽमर्त्योऽवतूतये नः १७९३

॥ २०१ ॥ (ऋ० ७ । ५ । १-९) [१७९४-१८१२] वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

प्राग्नये तवसे भरध्वं गिरं दिवो अरतये पृथिव्याः ।
यो विश्वेषाममृतानामुपस्थे वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः १७९४

पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
स मानुषीरभि विशो वि भाति वैश्वानरो वावृधानो वरेण १७९५

त्वद् भिया विश आयन्नसिक्नीर् असमना जहतीर्भोजनानि ।
वैश्वानर पूरवे शोशुचानः पुरो यदग्ने दरयन्नदीदेः १७९६

तव त्रिधातु पृथिवी उत द्यौर् वैश्वानर व्रतमग्ने सचन्त ।
त्वं भासा रोदसी आ ततन्थ अजस्रेण शोचिषा शोशुचानः १७९७

त्वामग्ने हरितो वावशाना गिरः सचन्ते धुनयो घृताचीः ।
पतिं कृष्टीनां रथ्यं रयीणां वैश्वानरमुषसां केतुमह्नाम् १७९८

त्वे असुर्य१ं वसवो न्यृण्वन् क्रतुं हि ते मित्रमहो जुषन्त ।
त्वं दस्यूँरोकसो अग्न आज उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय १७९९

स जायमानः परमे व्योमन् वायुर्न पाथः परि पासि सद्यः ।
त्वं भुवना जनयन्नभि क्रन्न् अपत्याय जातवेदो दशस्यन् १८००
ताममे अस्मे इषमेरयस्व वैश्वानर द्युमतीं जातवेदः ।
यया राधः पिन्वसि विश्ववार पृथु श्रवो दाशुषे मर्त्याय १८०१
तं नो अग्ने मघवद्भ्यः पुरुक्षुं रयिं नि वाजं श्रुत्यं युवस्व ।
वैश्वानर महि नः शर्म यच्छ रुद्रेभिरग्ने वसुभिः सजोषाः १८०२

॥ २०२ ॥ (ऋ० ७ । ६ । १-७)

प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्तिं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य ।
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्मि १८०३
कविं केतुं धासिं भानुमद्रेर् हिन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः ।
पुरंदरस्य गीर्भिरा विवासे ऽग्नेर्व्रतानि पूर्व्या महानि १८०४
न्यक्रतून् ग्रथिनो मृध्रवाचः पणींरश्रद्धाँ अवृधाँ अयज्ञान् ।
प्रप्र तान् दस्यूँरग्निर्विवाय पूर्वश् चकारापराँ अयज्यून् १८०५
यो अपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचीश् चकार नृतमः शचीभिः ।
तमीशानं वस्वो अग्निं गृणीषे ऽनानतं दमयन्तं पृतन्यून् १८०६
यो देह्यो३ अनमयद् वधस्नैर् यो अर्यपत्नीरुषसश् चकार ।
स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर् विशश् चक्रे बलिहृतः सहोभिः १८०७
यस्य शर्मन्नुप विश्वे जनास एवैस् तस्थुः सुमतिं भिक्षमाणाः ।
वैश्वानरो वरमा रोदस्योर् आग्निः ससाद पित्रोरुपस्थम् १८०८
आ देवो ददे बुध्न्या३ वसूनि वैश्वानर उदिता सूर्यस्य ।
आ समुद्रादवरादा परस्माद् आग्निर्ददे दिव आ पृथिव्याः १८०९

॥ २०३ ॥ (ऋ० ७ । १३ । १-३)

प्राग्नये विश्वशुचे धियंधे ऽसुरघ्ने मन्म धीतिं भरध्वम् ।
भरे हविर्न बर्हिषि प्रीणानो वैश्वानराय यतये मतीनाम् १८१०
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान आ रोदसी अपृणा जायमानः ।
त्वं देवाँ अभिशस्तेरमुञ्चो वैश्वानर जातवेदो महित्वा १८११

जातो यदग्ने भुवना व्यख्यः पशून् न गोपा इर्यः परिज्मा ।
वैश्वानर ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः १८१२

३ रक्षोहाऽग्निः ।

॥ २०४ ॥ (ऋ० ४ । ४ । १-१५) [१८१३-१८२७] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ इभेन ।
तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानो ऽस्तासि विध्य रक्षसस् तपिष्ठैः १८१३
तव भ्रमास आशुया पतन्ति अनु स्पृश धृषता शोशुचानः ।
तपूंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गान् असंदितो वि सृज विष्वगुल्काः १८१४
प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः ।
यो नो दूरे अघशंसो यो अन्ति अग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत् १८१५
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ ओषतात् तिग्महेते ।
यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् १८१६
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मद् आविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून् १८१७
स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत् ।
विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्यर्यो वि दुरो अभि द्यौत् १८१८
सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर् यस् त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः ।
पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासदिष्टिः १८१९
अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक् सं ते वावाता जरतामियं गीः ।
स्वश्वास् त्वा सुरथा मर्जयेम अस्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून् १८२०
इह त्वा भूर्या चरेदुप त्मन् दोषावस्तर्दीदिवांसमनु द्यून् ।
क्रीळन्तस् त्वा सुमनसः सपेम अभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम् १८२१
यस् त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन ।
तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस् त आतिथ्यमानुषग् जुजोषत् १८२२

महो रुजामि बन्धुता वचोभिस् तन्मा पितुर्गोतमादन्वियाय ।
त्वं नो अस्य वचसश् चिकिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः १८२३

अस्वप्नजस् तरणयः सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः ।
ते पायवः सध्र्यञ्चो निषद्य अग्ने तव नः पान्त्वमूर १८२४

ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन् ।
ररक्ष तान् त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद् रिपवो नाह देभुः १८२५

त्वया वयं सधन्य१स् त्वोतास् तव प्रणीत्यश्याम वाजान् ।
उभा शंसा सूदय सत्यताते ऽनुष्ठुया कृणुह्यह्रयाण १८२६

अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रति स्तोमं शस्यमानं गृभाय ।
दहाशसो रक्षसः पाह्य१स्मान् द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात् १८२७

॥ २०५ ॥ (ऋ० १० । ८७ । १-२५)

[१८२८—१८५२] पायुर्भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, १८४९-५२ अनुष्टुप् ।

रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठमुप यामि शर्म ।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् १८२८

अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानान् उप स्पृश जातवेदः समिद्धः ।
आ जिह्वया मूरदेवान् रभस्व क्रव्यादो वृक्त्व्यपि धत्स्वासन् १८२९

उभोभयाविन्नुप धेहि दंष्ट्रा हिंस्रः शिशानोऽवरं परं च ।
उतान्तरिक्षे परि याहि राजञ् जम्भैः सं धेह्यभि यातुधानान् १८३०

यज्ञैरिषूः संनममानो अग्ने वाचा शल्याँ अशनिभिर्दिहानः ।
ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान् प्रतीचो बाहून् प्रति भङ्ध्येषाम् १८३१

अग्ने त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंस्राशनिर्हरसा हन्त्वेनम् ।
प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात् क्रविष्णुर्वि चिनोतु वृक्णम् १८३२

यत्रेदानीं पश्यसि जातवेदस् तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम् ।
यद् वान्तरिक्षे पथिभिः पतन्तं तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः १८३३

उतालब्धं स्पृणुहि जातवेद आलेभानादृष्टिभिर्यातुधानात् ।
अग्ने पूर्वो नि जहि शोशुचान आमादः क्ष्विङ्कास् तमदन्त्वेनीः १८३४

इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने यो यातुधानो य इदं कृणोति ।
तमा रभस्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम् १८३५

तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः ।
हिंस्रं रक्षांस्यभि शोशुचानं मा त्वा दभन् यातुधाना नृचक्षः १८३६

नृचक्षा रक्षः परि पश्य विक्षु तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा ।
तस्याग्ने पृष्टीर्हरसा शृणीहि त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च १८३७

त्रिर्यातुधानः प्रसितिं त एतु ऋतं यो अग्ने अनृतेन हन्ति ।
तमर्चिषा स्फूर्जयञ् जातवेदः समक्षमेनं गृणते नि वृङ्धि १८३८

तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे शफारुजं येन पश्यसि यातुधानम् ।
अथर्ववज् ज्योतिषा दैव्येन सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष १८३९

यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद् वाचस् तृष्टं जनयन्त रेभाः ।
मन्योर्मनसः शरव्या जायते या तया विध्य हृदये यातुधानान् १८४०

परा शृणीहि तपसा यातुधानान् पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि ।
परार्चिषा मूरदेवाञ् छृणीहि परासुतृपो अभि शोशुचानः १८४१

पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु प्रत्यगेनं शपथा यन्तु तृष्टाः ।
वाचास्तेनं शरव ऋच्छन्तु मर्मन् विश्वस्यैतु प्रसितिं यातुधानः १८४२

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः ।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च १८४३

संवत्सरीणं पय उस्रियायास् तस्य माशीद् यातुधानो नृचक्षः ।
पीयूषमग्ने यतमस् तितृप्सात् तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मन् १८४४

विषं गवां यातुधानाः पिबन्तु आ वृश्च्यन्तामदितये दुरेवाः ।
परैनान् देवः सविता ददातु परा भागमोषधीनां जयन्ताम् १८४५

सनादग्ने मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।
अनु दह सहमूरान् क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः १८४६

त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तात् त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात् ।
प्रति ते ते अजरासस् तपिष्ठा अघशंसं शोशुचतो दहन्तु १८४७

पश्चात् पुरस्तादधरादुदक्तात् कविः काव्येन परि पाहि राजन् ।
सखे सखायमजरो जरिम्णे ऽग्ने मर्ताँ अमर्त्यस् त्वं नः १८४८

परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि ।
धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावताम् १८४९*

विषेण भङ्गुरावतः प्रति ष्म रक्षसो दह ।
अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिर्ऋष्टिभिः १८५०

प्रत्यग्ने मिथुना दह यातुधाना किमीदिना ।
सं त्वा शिशामि जागृहि अदब्धं विप्र मन्मभिः १८५१

प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति ।
यातुधानस्य रक्षसो बलं वि रुज वीर्यम् १८५२

॥ २०६ ॥ (ऋ० १० । ११८ । १—९) [१८५३-१८६१] उरुक्षय आमहीयवः । गायत्री ।

अग्ने हंसि न्यत्रिणं दीद्यन् मर्त्येष्वा । स्वे क्षये शुचिव्रत १८५३
उत् तिष्ठसि स्वाहुतो घृतानि प्रति मोदसे । यत् त्वा स्रुचः समस्थिरन् १८५४
स आहुतो वि रोचते ऽग्निरीळेन्यो गिरा । स्रुचा प्रतीकमज्यते १८५५
घृतेनाग्निः समज्यते मधुप्रतीक आहुतः । रोचमानो विभावसुः १८५६
जरमाणः समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन । तं त्वा हवन्त मर्त्याः १८५७
तं मर्ता अमर्त्यं घृतेनाग्निं सपर्यत । अदाभ्यं गृहपतिम् १८५८
अदाभ्येन शोचिषा ऽग्ने रक्षस् त्वं दह । गोपा ऋतस्य दीदिहि १८५९
स त्वमग्ने प्रतीकेन प्रत्योष यातुधान्यः । उरुक्षयेषु दीद्यत् १८६०
तं त्वा गीर्भिरुरुक्षया हव्यवाहं समीधिरे । यजिष्ठं मानुषे जने १८६१

४ जातवेदा अग्निः ।

॥२०७॥ (ऋ० १ । ९९ । १) [१८६२] कश्यपो मारीचः । त्रिष्टुप् ।

जातवेदसे सुनवाम सोमम् अरातीयतो नि दहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः १८६२

---

* अथर्व ७ । ७१ (७४) ॥ १ ॥ (ऋषिः— अथर्वा) पाठभेदः— 'भंगुरावतः' ।

॥ २०८ ॥ (ऋ० १० । १८८ । १-३) [१८६३-१८६५] श्येन आग्नेयः । गायत्री ।

प्र नूनं जातवेदसम् अश्वं हिनोत वाजिनम् । इदं नो बर्हिरासदे १८६३
अस्य प्र जातवेदसो विप्रवीरस्य मीळ्हुषः । महीमियर्मि सुष्टुतिम् १८६४
या रुचो जातवेदसो देवत्रा हव्यवाहनीः । ताभिर्नो यज्ञमिन्वतु १८६५

॥ २०९ ॥ (अथर्ववेदे कां० ७ । ८४ (८९) । १) [१८६६] भृगुः । जगती ।

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो विराडग्ने क्षत्रभृद् दीदिहीह ।
विश्वा अमीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिरद्य परि पाहि नो गयम् १८६६

५ घर्मोऽग्निः ।

॥ २१० ॥ (ऋ० १ । ११२ । १ द्वितीयः पादः) [१८६७] कुत्स आंगिरसः ।

अग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये । १८६७

६ औपसोऽग्निः ।

॥ २११ ॥ (ऋ० १ । ९५ । १-११) [१८६८-१८७८] कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुप धापयेते ।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः १८६८
दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त गर्भम् अतन्द्रासो युवतयो विभृत्रम् ।
तिग्मानीकं स्वयशसं जनेषु विरोचमानं परि षीं नयन्ति १८६९
त्रीणि जाना परि भूषन्त्यस्य समुद्र एकं दिव्येकमप्सु ।
पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानाम् ऋतून् प्रशासद् वि दधावनुष्ठु १८७०
क इमं वो निण्यमा चिकेत वत्सो मातॄर्जनयत स्वधाभिः ।
बह्वीनां गर्भो अपसामुपस्थात् महान् कविर्निश्चरति स्वधावान् १८७१
आविष्ट्यो वर्धते चारुरासु जिह्मानामूर्ध्वः स्वयशा उपस्थे ।
उभे त्वष्टुर्बिभ्यतुर्जायमानात् प्रतीची सिंहं प्रति जोषयेते १८७२

उभे भद्रे जोषयेते न मेने गावो न वाश्रा उप तस्थुरेवैः ।
स दक्षाणां दक्षपतिर्बभूव अञ्जन्ति यं दक्षिणतो हविर्भिः १८७३

उद् यंयमीति सवितेव बाहू उभे सिचौ यतते भीम ऋञ्जन् ।
उच्छुक्रमत्कमजते सिमस्मात् नवा मातृभ्यो वसना जहाति १८७४

त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत् संपृञ्चानः सदने गोभिरद्भिः ।
कविर्बुध्नं परि मर्मृज्यते धीः सा देवताता समितिर्बभूव १८७५

उरु ते ज्रयः पर्येति बुध्नं विरोचमानं महिषस्य धाम ।
विश्वेभिरग्ने स्वयशोभिरिद्धो ऽदब्धेभिः पायुभिः पाह्यस्मान् १८७६

धन्वन् स्रोतः कृणुते गातुमूर्मिं शुक्रैरूर्मिभिरभि नक्षति क्षाम् ।
विश्वा सनानि जठरेषु धत्ते ऽन्तर्नवासु चरति प्रसूषु १८७७

एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत् पावक श्रवसे वि भाहि ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः १८७८

७ द्रविणोदा अग्निः ।

॥ २१२ ॥ (ऋ० १ । ९६ । १-९) [१८७९—१८८७] कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

स प्रत्नथा सहसा जायमानः सद्यः काव्यानि बळधत्त विश्वा ।
आपश् च मित्रं धिषणा च साधन् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम् १८७९

स पूर्वया निविदा कव्यतायोर् इमाः प्रजा अजनयन् मनूनाम् ।
विवस्वता चक्षसा द्यामपश् च देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम् १८८०

तमीळत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृञ्जसानम् ।
ऊर्जः पुत्रं भरतं सृप्रदानुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम् १८८१

स मातरिश्वा पुरुवारपुष्टिर् विदद् गातुं तनयाय स्वर्वित् ।
विशां गोपा जनिता रोदस्योर् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम् १८८२

नक्तोषासा वर्णमामेम्याने धापयेते शिशुमेकं समीची ।
द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्वि भाति देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम् १८८३

रायो बुध्नः संगमनो वसूनां यज्ञस्य केतुर्मन्मसाधनो वेः ।
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम् १८८४
नू च पुरा च सदनं रयीणां जातस्य च जायमानस्य च क्षाम् ।
सतश् च गोपां भवतश् च भूरेर् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम् १८८५
द्रविणोदा द्रविणसस् तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्र यंसत् ।
द्रविणोदा वीरवतीमिषं नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः १८८६
एवा नो अग्ने समिधा वृधानो० । (१८७८)

७ शुचिरग्निः ।

॥ २१३ ॥ (ऋ० १ । ९७ । १-८) (१८८७-१८९४) कुत्स आङ्गिरसः । गायत्री ।

अप नः शोशुचदघम् अग्ने शुशुग्ध्या रयिम् ।
अप नः शोशुचदघम् १८८७
सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे ।
अप नः शोशुचदघम् १८८८
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां प्रास्माकासश् च सूरयः ।
अप नः शोशुचदघम् १८८९
प्र यत् ते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम् ।
अप नः शोशुचदघम् १८९०
प्र यदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः ।
अप नः शोशुचदघम् १८९१
त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि ।
अप नः शोशुचदघम् १८९२
द्विषो नो विश्वतोमुख अति नावेव पारय ।
अप नः शोशुचदघम् १८९३
स नः सिन्धुमिव नावया अति पर्षा स्वस्तये ।
अप नः शोशुचदघम् १८९४

८ अग्निरापो गावश्च ।

अग्निः सूर्यो वा आपो वा गावो वा घृतस्तुतिर्वा ।

॥ २१४ ॥ (ऋ० ४।५८। १-११) [१८९५-१९०५] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, १९०५ जगती ।

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारद् उपांशुना सममृतत्वमानट् ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः १८९५

वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्य अस्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः ।
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद् गौर एतत् १८९६

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश १८९७

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ।
इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः १८९८

एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्रात् शतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ।
घृतस्य धारा अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् १८९९

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।
एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः १९००

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः १९०१

अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम् ।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः १९०२

कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभि चाकशीमि ।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत् पवन्ते १९०३

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिम् अस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते १९०४*

धामन् ते विश्वं भुवनमधि श्रितम् अन्तः समुद्रे हृद्य१न्तरायुषि ।
अपामनीके समिथे य आभृतस् तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् १९०५

---

* अथर्व० ७।८२ (८७)।१, पाठभेदौ- अभ्यर्चत । मधुमत् पवन्ताम् ।

९ आप्रीसूक्तानि ।

॥ २१५ ॥ (ऋ० १ । १३ । १-१२)

१९०६-१७ मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं= [क्रमेण-१ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ नराशंसः, ४ इळः, ५ बर्हिः, ६ देवीः द्वारः, ७ उषासानक्ता, ८ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ९ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, १० त्वष्टा, ११ वनस्पतिः, १२ स्वाहाकृतयः] । गायत्री ।

सुसमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते । होतः पावक यक्षि च १९०६
मधुमन्तं तनूनपाद् यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुहि वीतये १९०७
नराशंसमिह प्रियम् अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतम् १९०८
अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईळित आ वह । असि होता मनुर्हितः १९०९
स्तृणीत बर्हिरानुषग् घृतपृष्ठं मनीषिणः । यत्रामृतस्य चक्षणम् १९१०
वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्चतः । अद्या नूनं च यष्टवे १९११
नक्तोषासा सुपेशसा अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । इदं नो बर्हिरासदे १९१२
ता सुजिह्वा उप ह्वये होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमम् १९१३
इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः । बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः १९१४
इह त्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुप ह्वये । अस्माकमस्तु केवलः १९१५
अव सृजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः । प्र दातुरस्तु चेतनम् १९१६
स्वाहा यज्ञं कृणोतन इन्द्राय यज्वनो गृहे । तत्र देवाँ उप ह्वये १९१७

॥ २१६ ॥ (ऋ० १ । १४२ । १-१३)

१९१८-३० दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं= [क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ नराशंसः, ४ इळः ५ बर्हिः, ६ देवीः द्वारः, ७ उषासानक्ता, ८ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ९ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळा-भारत्यः, १० त्वष्टा, ११ वनस्पतिः, १२ स्वाहाकृतयः, १३ इन्द्रः] । अनुष्टुप् ।

समिद्धो अग्न आ वह देवाँ अद्य यतस्रुचे । तन्तुं तनुष्व पूर्व्यं सुतसोमाय दाशुषे १९१८
घृतवन्तमुप मासि मधुमन्तं तनूनपात् । यज्ञं विप्रस्य मावतः शशमानस्य दाशुषः १९१९
शुचिः पावको अद्भुतो मध्वा यज्ञं मिमिक्षति । नराशंसस्त्रिरा दिवो देवो देवेषु यज्ञियः १९२०
ईळितो अग्न आ वह इन्द्रं चित्रमिह प्रियम् । इयं हि त्वा मतिर्मम अच्छा सुजिह्व वच्यते १९२१
स्तृणानासो यतस्रुचो बर्हिर्यज्ञे स्वध्वरे । वृञ्जे देवव्यचस्तमम् इन्द्राय शर्म सप्रथः १९२२
वि श्रयन्तामृतावृधः प्रयै देवेभ्यो महीः । पावकासः पुरुस्पृहो द्वारो देवीरसश्चतः १९२३

*

आ मन्दमाने उषाके नक्तोषासा सुपेशसा । यह्वी ऋतस्य मातरा सीदतां बर्हिरा सुमत् १९२४
मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमं सिध्रमद्य दिविस्पृशम् १९२५
शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती । इळा सरस्वती मही बर्हिः सीदन्तु यज्ञियाः १९२६
तन्नस् तुरीपमद्भुतं पुरु वारं पुरु त्मना । त्वष्टा पोषाय वि ष्यतु राये नाभा नो अस्मयुः १९२७
अवसृजन्नुप त्मना देवान् यक्षि वनस्पते । अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः १९२८
पूषण्वते मरुत्वते विश्वदेवाय वायवे । स्वाहा गायत्रवेपसे हव्यमिन्द्राय कर्तन १९२९
स्वाहाकृतान्या गहि उप हव्यानि वीतये । इन्द्रा गहि श्रुधी हवं त्वां हवन्ते अध्वरे १९३०

॥ २१७ ॥ (ऋ० १ । १८८ । १-११)

१९३१-४१ अगस्त्यो मैत्रावरुणः । आप्रीसूक्तं= (क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । गायत्री ।

समिद्धो अद्य राजसि देवो देवैः सहस्रजित् । दूतो हव्या कविर्वह १९३१
तनूनपादृतं यते मध्वा यज्ञः समज्यते । दधत् सहस्रिणीरिषः १९३२
आजुह्वानो न ईड्यो देवाँ आ वक्षि यज्ञियान् । अग्ने सहस्रसा असि १९३३
प्राचीनं बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन् । यत्रादित्या विराजथ १९३४
विराट् सम्राड् विभ्वीः प्रभ्वीर् बह्वीश् च भूयसीश् च याः । दुरो घृतान्यक्षरन् १९३५
सुरुक्मे हि सुपेशसा अधि श्रिया विराजतः । । उषासावेह सीदताम् १९३६
प्रथमा हि सुवाचसा होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमम् १९३७
भारतीळे सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे । ता नश् चोदयत श्रिये १९३८
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः पशून् विश्वान् त्समानजे । तेषां नः स्फातिमा यज १९३९
उप त्मन्या वनस्पते पाथो देवेभ्यः सृज । अग्निर्हव्यानि सिष्वदत् १९४०
पुरोगा अग्निर्देवानां गायत्रेण समज्यते । स्वाहाकृतीषु रोचते १९४१

॥ २१८ ॥ (ऋ० २ । ३ । १-११)

१९४२-५२ गृत्समदः शौनकः । आप्रीसूक्तं= [क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः]। त्रिष्टुप्; १९४८ जगती ।

समिद्धो अग्निर्निहितः पृथिव्यां प्रत्यङ् विश्वानि भुवनान्यस्थात् ।
होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो देवान् यजत्वग्निरर्हन् १९४२

नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन् तिस्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः ।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन् मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान् १९४३

ईळितो अग्ने मनसा नो अर्हन् देवान् यक्षि मानुषात् पूर्वो अद्य ।
स आ वह मरुतां शर्धो अच्युतम् इन्द्रं नरो बर्हिषदं यजध्वम् १९४४

देव बर्हिर्वर्धमानं सुवीरं स्तीर्णं राये सुभरं वेद्यस्याम् ।
घृतेनाक्तं वसवः सीदतेदं विश्वे देवा आदित्या यज्ञियासः १९४५

वि श्रयन्तामुर्विया हूयमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा नमोभिः ।
व्यचस्वतीर्वि प्रथन्तामजुर्या वर्णं पुनाना यशसं सुवीरम् १९४६

साध्वपांसि सनता न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते ।
तन्तुं ततं संवयन्ती समीची यज्ञस्य पेशः सुदुघे पयस्वती १९४७

दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर ऋजु यक्षतः समृचा वपुष्टरा ।
देवान् यजन्तावृतुथा समञ्जतो नाभा पृथिव्या अधि सानुषु त्रिषु १९४८

सरस्वती साधयन्ती धियं न इळा देवी भारती विश्वतूर्तिः ।
तिस्रो देवीः स्वधया बर्हिरेदम् अच्छिद्रं पान्तु शरणं निषद्य १९४९

पिशङ्गरूपः सुभरो वयोधाः श्रुष्टी वीरो जायते देवकामः ।
प्रजां त्वष्टा वि ष्यतु नाभिमस्मे अथा देवानामप्येतु पाथः १९५०

वनस्पतिरवसृजन्नुप स्थाद् अग्निर्हविः सूदयाति प्र धीभिः ।
त्रिधा समक्तं नयतु प्रजानन् देवेभ्यो दैव्यः शमितोप हव्यम् १९५१

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर् घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम ।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् १९५२

॥ २१९ ॥ (ऋ० ३।४।१-११)

१९५३-६३ विश्वामित्रो गाथिनः। आप्रीसूक्तं= [क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः]। त्रिष्टुप्।

समित् समित् सुमना बोध्यस्मे शुचाशुचा सुमतिं रासि वस्वः ।
आ देव देवान् यजथाय वक्षि सखा सखीन् त्सुमना यक्ष्यग्ने १९५३

यं देवासस् त्रिरहन्नायजन्ते दिवेदिवे वरुणो मित्रो अग्निः ।
सेमं यज्ञं मधुमन्तं कृधी नस् तनूनपाद्घृतयोनिं विधन्तम् १९५४

प्र दीधितिर्विश्ववारा जिगाति होतारमिळः प्रथमं यजध्यै ।
अच्छा नमोभिर्वृषभं वन्दध्यै स देवान् यक्षदिषितो यजीयान् १९५५

ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे अकारि ऊर्ध्वा शोचींषि प्रस्थिता रजांसि ।
दिवो वा नाभा न्यसादि होता स्तृणीमहि देवव्यचा वि बर्हिः १९५६

सप्त होत्राणि मनसा वृणाना इन्वन्तो विश्वं प्रति यन्नृतेन ।
नृपेशसो विदथेषु प्र जाता अभीमं यज्ञं वि चरन्त पूर्वीः १९५७

आ भन्दमाने उषसा उपाके उत स्मयेते तन्वा विरूपे ।
यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषद् इन्द्रो मरुत्वाँ उत वा महोभिः १९५८

दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति ।
ऋतं शंसन्त ऋतमित् त आहुर् अनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः १९५९

आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः ।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक् तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु १९६०

तन्नस् तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व ।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः १९६१

वनस्पतेऽव सृजोप देवान् अग्निर्हविः शमिता सूदयाति ।
सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद १९६२

आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङ् इन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः ।
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् १९६३

॥ २२० ॥ (ऋ० ५ । ५ । १-११)

१९६४-७३ वसुश्रुत आत्रेयः । आप्रीसूक्तं= (क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीर्द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळा-भारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । गायत्री ।

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे १९६४
नराशंसः सुषूदति इमं यज्ञमदाभ्यः । कविर्हि मधुहस्त्यः १९६५

इळितो अग्न आ वह　इन्द्रं चित्रमिह प्रियम् । सुखै रथेभिरूतये　१९६६
ऊर्णम्रदा वि प्रथस्व　अभ्य१र्का अनूषत । भवा नः शुभ्र सातये　१९६७
देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं　सुप्रायणा न ऊतये । प्रप्र यज्ञं पृणीतन　१९६८
सुप्रतीके वयोवृधा　यह्वी ऋतस्य मातरा । दोषामुषासमीमहे　१९६९
वातस्य पत्मन्नीळिता　दैव्या होतारा मनुषः। इमं नो यज्ञमा गतम्　१९७०
इळा सरस्वती मही० । (१९१४)
शिवस् त्वष्टरिहा गहि　विभुः पोष उत त्मना । यज्ञेयज्ञे न उदव　१९७१
यत्र वेत्थ वनस्पते　देवानां गुह्या नामानि । तत्र हव्यानि गामय　१९७२
स्वाहाग्नये वरुणाय　स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः । स्वाहा देवेभ्यो हविः　१९७३

॥ २२१ ॥ (ऋ० ७ । २ । १-११)

१९७४-८० वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आप्रीसूक्तं- (क्रमेण १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः,३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा. १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । त्रिष्टुप् ।

जुषस्व नः समिधमग्ने अद्य　शोचा बृहद् यजतं धूममृण्वन् ।
उप स्पृश दिव्यं सानु स्तूपैः　सं रश्मिभिस् ततनः सूर्यस्य　१९७४
नराशंसस्य महिमानमेषाम्　उप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः ।
ये सुक्रतवः शुचयो धियंधाः　स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या　१९७५
ईळेन्यं वो असुरं सुदक्षम्　अन्तर्दूतं रोदसी सत्यवाचम् ।
मनुष्वदग्निं मनुना समिद्धं　समध्वराय सदमिन्महेम　१९७६
सपर्यवो भरमाणा अभिज्ञु　प्र वृञ्जते नमसा बर्हिरग्नौ ।
आजुह्वाना घृतपृष्ठं पृषद्वद्　अध्वर्यवो हविषा मर्जयध्वम्　१९७७
स्वाध्यो३ वि दुरो देवयन्तो　ऽशिश्रयू रथयुर्देवताता ।
पूर्वी शिशुं न मातरा रिहाणे　समग्रुवो न समनेष्वञ्जन्　१९७८
उत योषणे दिव्ये मही न　उषासानक्ता सुदुघेव धेनुः ।
बर्हिषदा पुरुहूते मघोनी　आ यज्ञिये सुविताय श्रयेताम्　१९७९
विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु कारू　मन्ये वां जातवेदसा यजध्यै ।
ऊर्ध्वं नो अध्वरं कृतं हवेषु　ता देवेषु वनथो वार्याणि　१९८०

आ भार॑ती भार॑तीभिः स॒जोषा॰। (१९६०)
तन्न॑स् तु॒रीप॒मध॑ पोषयि॒त्नु॰ । (१९६१)
वन॑स्पतेऽव॑ सृ॒जोप॑ दे॒वान्॰ । (१९६२)
आ या॑ह्यग्ने समि॒धा॒नो अ॒र्वाङ्॰ । (१९६३)

॥ २२२ ॥ (ऋ० ९ । ५ । १-११)

१९८१-९१ असितः काश्यपो देवलो वा । आप्रीसूक्तं=(क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळाः, ४ बर्हिः, ५ देवीर्द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पति, ११ स्वाहाकृतयः । गायत्री,) १९०४-९७ अनुष्टुप् ।

समि॑द्धो वि॒श्वत॒स्पतिः॒ पव॑मानो॒ वि रा॑जति । प्री॒णन् वृषा॒ कनि॑क्रदत् १९८१
तनू॒नपा॒त् पव॑मानः॒ शृङ्गे॒ शिशा॑नो अर्षति । अ॒न्तरि॑क्षेण॒ रार॑जत् १९८२
ई॒ळेन्यः॒ पव॑मानो र॒यिर्वि रा॑जति द्यु॒मान् । मधो॒र्धारा॑भि॒रोज॑सा १९८३
ब॒र्हिः प्रा॒चीन॒मोज॑सा॒ पव॑मानः स्तृ॒णन् हरिः॑ । दे॒वेषु॑ दे॒व ई॑यते १९८४
उदा॒तैर्जि॑हते बृ॒हद् द्वारो॑ दे॒वीर्हि॑र॒ण्ययीः॑ । पव॑माने॒न सुष्टु॑ताः १९८५
सु॒शि॒ल्पे बृ॑ह॒ती म॒ही पव॑मानो वृषण्यति । न॒क्तो॒षासा॒ न द॑र्श॒ते १९८६
उ॒भा दे॒वा नृ॒चक्ष॑सा॒ होता॑रा॒ दैव्या॑ हुवे । पव॑मान॒ इन्द्रो॒ वृषा॑ १९८७
भार॑ती॒ पव॑मानस्य॒ सर॑स्व॒तीळा॑ म॒ही । इ॒मं नो॑ य॒ज्ञमा ग॑मन् ति॒स्रो दे॒वीः सु॒पेश॑सः १९८८
त्वष्टा॑रमग्र॒जां गो॒पां पु॑रो॒यावा॑नमा हु॑वे । इन्दु॒रिन्द्रो॒ वृषा॒ हरिः॒ पव॑मानः प्र॒जाप॑तिः १९८९
वन॒स्पतिं॑ पवमान॒ मध्वा॒ सम॑ङ्ग्धि॒ धार॑या । स॒हस्र॑वल्शं॒ हरि॑तं॒ भ्राज॑मानं हिर॒ण्यय॑म् १९९०
विश्वे॑ दे॒वाः स्वाहा॑कृ॒तिं पव॑मान॒स्या ग॑त । वा॒यु॒र्बृ॒ह॒स्पतिः॒ सूर्यो॒ ऽग्निरिन्द्रः॑ स॒जोष॑सः १९९१

॥ २२३ ॥ (ऋ० १० । ७० । १-११)

१९९२-२००२ सुमित्रो वाध्र्यश्वः । आप्रीसूक्तं= (क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । त्रिष्टुप् ।

इ॒मां मे॑ अग्ने स॒मिधं॑ जुषस्व इ॒ळस्प॒दे प्रति॑ हर्या घृ॒ताची॑म् ।
वर्ष्म॑न् पृथि॒व्याः सु॑दिन॒त्वे अह्ना॑म् ऊ॒र्ध्वो भ॑व सुक्रतो देवय॒ज्या १९९२
आ दे॒वाना॑मग्र॒यावे॒ह या॑तु नरा॒शंसो॑ वि॒श्वरू॑पेभि॒रश्वैः॑ ।
ऋ॒तस्य॑ प॒था नम॑सा मि॒येधो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वत॑मः सुषूदत् १९९३

शश्वत्तममीळते दूत्याय　हविष्मन्तो मनुष्यासो अग्निम् ।
बर्हिष्ठैरश्वैः सुवृता रथेन　आ देवान् वक्षि नि षदेह होता　१९९४

वि प्रथतां देवजुष्टं तिरश्चा　दीर्घं द्राघ्मा सुरभि भूत्वस्मे ।
अहेळता मनसा देव बर्हिर्　इन्द्रज्येष्ठाँ उशतो यक्षि देवान्　१९९५

दिवो वा सानु स्पृशता वरीयः　पृथिव्या वा मात्रया वि श्रयध्वम् ।
उशतीर्द्वारो महिना महद्भिर्　देवं रथं रथयुर्धारयध्वम्　१९९६

देवी दिवो दुहितरा सुशिल्पे　उषासानक्ता सदतां नि योनौ ।
आ वां देवास उशती उशन्त　उरौ सीदन्तु सुभगे उपस्थे　१९९७

ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदग्निः समिद्धः　प्रिया धामान्यदितेरुपस्थे ।
पुरोहितावृत्विजा यज्ञे अस्मिन्　विदुष्टरा द्रविणमा यजेथाम्　१९९८

तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं वरीय　आ सीदत चकृमा वः स्योनम् ।
मनुष्वद् यज्ञं सुधिता हवींषि　इळा देवी घृतपदी जुषन्त　१९९९

देव त्वष्टर्यद्ध चारुत्वमानड्　यदङ्गिरसामभवः सचाभूः ।
स देवानां पाथ उप प्र विद्वान्　उशन् यक्षि द्रविणोदः सुरत्नः　२०००

वनस्पते रशनया नियूया　देवानां पाथ उप वक्षि विद्वान् ।
स्वदाति देवः कृणवद्धवींषि　अवतां द्यावापृथिवी हवं मे　२००१

आग्ने वह वरुणमिष्टये न　इन्द्रं दिवो मरुतो अन्तरिक्षात् ।
सीदन्तु बर्हिर्विश्व आ यजत्राः　स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्　२००२

॥ २२४ ॥ (ऋ० १० । ११० । १-११)

११ जमदग्निर्भार्गवः, रामो वा जामदग्न्यः। आप्रीसूक्तं=(क्रमेण-१ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः)। त्रिष्टुप्। (अथर्व० ५ । १२ । १-११ [अथर्ववेदे अंगिरा ऋषिः ।] काठक सं० १६ । २०; मैत्रायणी सं० ४।१३ । ३; तै० ब्रा० ३।६।३)

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे　देवो देवान् यजसि जातवेदः ।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्　त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः　२००३

तनूनपात् पथ ऋतस्य यानान्　मध्वा समञ्जन् त्स्वदया सुजिह्व ।
मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन्　देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः　२००४

आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्च आ याह्यग्ने वसुभिः सजोषाः ।
त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान् यक्षीषितो यजीयान् २००५

प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम् ।
व्युप्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम् २००६

व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः ।
देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः २००७

आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने २००८

दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै ।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता २००९

आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विळा मनुष्वदिह चेतयन्ती ।
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु २०१०

य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंशद्भुवनानि विश्वा ।
तमद्य होतरिषितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान् २०११

उपावसृज त्मन्या समञ्जन् देवानां पाथ ऋतुथा हवींषि ।
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन २०१२

सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञम् अग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः ।
अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः २०१३

॥ २२५ ॥ (वा० यजुर्वेद २० । ३६-४६; तैत्ति० सं० २।६।८; काठकसं० ३८।६; मैत्रायणीसं० ३।११।१।)

समिद्ध इन्द्र उषसामनीके पुरोरुचा पूर्वकृद् वावृधानः ।
त्रिभिर्देवैस् त्रिंशता वज्रबाहुर् जघान वृत्रं वि दुरो ववार २०१४

नराशंसः प्रति शूरो मिमानस् तनूनपात् प्रति यज्ञस्य धाम ।
गोभिर्वपावान् मधुना समञ्जन् हिरण्यैश् चन्द्री यजति प्रचेताः २०१५

मैत्रायणी-पाठभेदाः- २०१४ (१ समिद्धा) (२००४-५ मध्ये ' नराशंसस्य० ' इति मन्त्रोऽप्ये वा० यजुर्वेदे अ० २९-२५-३६ द्रष्टव्यः)

काठकपाठभेदाः- २०१५ (१ यजतु)

इडितो देवैर्हरिवाँ २ अभिष्टिर् आजुह्वानो हविषा शर्धमानः ।
पुरन्दरो गोत्रभिद् वज्रबाहुर् आ यातु यज्ञमुप नो जुषाणः २०१६
जुषाणो बर्हिर्हरिवान् न इन्द्रः प्राचीनꣳ सीदत् प्रदिशा पृथिव्याः ।
उरुप्रथाः प्रथमानꣳ स्योनम् आदित्यैरक्तं वसुभिः सजोषाः २०१७
इन्द्रं दुरः कवष्यो धावमाना वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः ।
द्वारो देवीरभितो वि श्रयन्ताꣳ सुवीरा वीरं प्रथमाना महोभिः २०१८
उषासानक्ता बृहती बृहन्तं पयस्वती सुदुघे शूरमिन्द्रम् ।
तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे २०१९
दैव्या मिमाना मनुषः पुरुत्रा होताराविन्द्रं प्रथमा सुवाचा ।
मूर्धन् यज्ञस्य मधुना दधाना प्राचीनं ज्योतिर्हविषा वृधातः २०२०
तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमाना इन्द्रं जुषाणा जनयो न पत्नीः ।
अच्छिन्नं तन्तुं पयसा सरस्वती इडा देवी भारती विश्वतूर्तिः २०२१
त्वष्टा दधच् छुष्ममिन्द्राय वृष्णे ऽपाकोऽचिष्टुर्यशसे पुरूणि ।
वृषा यजन् वृषणं भूरिरेता मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान् २०२२
वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस् त्मन्या समञ्जञ् छमिता न देवः ।
इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन २०२३
स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर इन्द्रो वृषायमाणो वृषभस् तुराषाट् ।
घृतप्रुषा मनसा मोदमानाः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् २०२४

॥ २२६ ॥ (वा० यजुर्वेद २० । ५५-६६; मैत्रा० सं० ३।११।३; काठक सं० ३८।८; तैत्ति० ब्रा० २।६।१२)

समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो घर्मो विराट् सुतः ।
दुहे धेनुः सरस्वती सोमꣳ शुक्रमिहेन्द्रियम् २०२५

मै० पाठ०- २०१६ (१ गोत्रभृद्); २०१७ (१ ना; २ सीदात्) २०१८ (१ यन्ति); २०१९(१ पेशस्वती तन्तुना); २०२० (१ मनसा ; २ होतारा इन्द्रं) २०२१ (१ वृषणं); २०२२ (१ दधदिन्द्राय शुष्ममपाको) २०२३ (१स्वदातु); २०२४ (१ हव्यमुन्दन्स्वाहाकृतं जुषतां हव्यमिन्द्रः)

काठ० पाठ०- २०१९ (१ पेशस्वती तन्तुना), २०२० (१ मनसा ; २ होतारा इन्द्रं) २०२१ (१ वृषणं), २०२२ (१ दधदिन्द्राय शुष्ममपाको) २०२४ (१ हव्यमुन्दन्मूर्धन्यज्ञस्य जुषतां स्वाहा)

*

तनूपा भिषजा सुते ऽश्विनोभा सरस्वती ।
मध्वा रजांꣳसीन्द्रियम् इन्द्राय पथिभिर्वहान् २०२६

इन्द्रायेन्दुꣳ सरस्वती नराशꣳसेन नग्नहुम् ।
अधातामश्विना मधु भेषजं भिषजा सुते २०२७

आजुह्वाना सरस्वती इन्द्रायेन्द्रियाणि वीर्यम् ।
इडाभिरश्विनाविषꣳ समूर्जꣳ सꣳ रयिं दधुः २०२८

अश्विना नमुचेः सुतꣳ सोमꣳ शुक्रं परिस्रुता ।
सरस्वती तमा भरद् बर्हिषेन्द्राय पातवे २०२९

कवष्यो न व्यचस्वतीर् अश्विभ्यां न दुरो दिशः ।
इन्द्रो न रोदसी उभे दुहे कामान्त्सरस्वती २०३०

उषासानक्तमश्विना दिवेन्द्रꣳ सायमिन्द्रियैः ।
सञ्जानाने सुपेशसा समञ्जाते सरस्वत्या २०३१

पातं नो अश्विना दिवा पाहि नक्तꣳ सरस्वति ।
दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्रꣳ सचा सुते २०३२

तिस्रस् त्रेधा सरस्वती अश्विना भारतीडा ।
तीव्रं परिस्रुता सोमम् इन्द्राय सुषुवुर्मदम् २०३३

अश्विना भेषजं मधु भेषजं नः सरस्वती ।
इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियꣳ रूपꣳ रूपमधुः सुते २०३४

ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः शशमानः परिस्रुता ।
कीलालमश्विभ्यां मधु दुहे धेनुः सरस्वती २०३५

गोभिर्न सोममश्विना मासरेण परिस्रुता ।
समधातꣳ सरस्वत्या स्वाहेन्द्रे सुतं मधु २०३६

मैत्रा० पाठ०- २०२६ (१ पथिभिर्वह); २०२८ (१ ०श्विना इषं); २०३३ (१ ०न्द्रायासुषुवु०);
२०३६ (१ समधातां)

काठ० पाठ०- २०२८ (१ ०श्विना इषं); २०३० (१ दुघे); २०३३ (१ ०न्द्रायासुषुवु०)
२०३४, (१ द्वितीयऽर्धः, तथा क्रमांकः २०३५ नोपलभ्यते); २०३६ (१ समधाता)

॥ २२७ ॥ (वा० यजुर्वेद २१ । १२-२२; मैत्रा० सं० ३।११।११; काठक सं० ३८।१०; तै० ब्रा० २।६।१८)

समिद्धो अग्निः समिधा सुसमिद्धो वरेण्यः ।
गायत्री छन्द इन्द्रियं त्र्यविर्गौर्वयो दधुः २०३७

तनूनपाच् छुचिव्रतस् तनूपाश् च सरस्वती ।
उष्णिहा छन्द इन्द्रियं दित्यवाड् गौर्वयो दधुः २०३८

इडाभिरग्निरीड्यः सोमो देवो अमर्त्यः ।
अनुष्टुप् छन्द इन्द्रियं पञ्चाविर्गौर्वयो दधुः २०३९

सुबर्हिरग्निः पूषण्वान् स्तीर्णबर्हिरमर्त्यः ।
बृहती छन्द इन्द्रियं त्रिवत्सो गौर्वयो दधुः २०४०

दुरो देवीर्दिशो महीर् ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।
पङ्क्तिश् छन्द इहेन्द्रियं तुर्यवाड् गौर्वयो दधुः २०४१

उषे यह्वी सुपेशसा विश्वे देवा अमर्त्याः ।
त्रिष्टुप् छन्द इहेन्द्रियं पष्ठवाड् गौर्वयो दधुः २०४२

दैव्या होतारा भिषजा इन्द्रेण सयुजा युजा ।
जगती छन्द इन्द्रियम् अनड्वान् गौर्वयो दधुः २०४३

तिस्र इडा सरस्वती भारती मरुतो विशः ।
विराट् छन्द इहेन्द्रियं धेनुर्गौर्न वयो दधुः २०४४

त्वष्टा तुरीपो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना ।
द्विपदा छन्द इन्द्रियम् उक्षा गौर्न वयो दधुः २०४५

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।
ककुप् छन्द इहेन्द्रियं वशा वेहद्वयो दधुः २०४६

स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं करत् ।
अतिच्छन्दा इन्द्रियं बृहद् ऋषभो गौर्वयो दधुः २०४७

मैत्रा० पाठ०-- २०३७ (१ त्रियवि०); २०३८ (१ अयं प्रथमोऽर्धो न दृश्यते; २ उष्णिक्); २०४१ (१ इन्द्रियं); २०४४ (१ तिस्रो देवीरिडा मही; २ इन्द्रियं); २०४६ (१ ऋषभो गौर्वयो); २०४७ (१ बृहद्वशा वेहद्वयो)

काठ० पाठ०— २०३७ (१ त्रियवि०); २०४१ (२ इदेन्द्रियं); २०४७ (१ अतिच्छन्द; २ बृहदृषभो)

॥ २२८ ॥ (वा० यजुर्वेद २१ । २९—४०; मैत्रायणी सं० ४ . . . . .० ब्रा० २ । ६ । ११)

होता यक्षत् समिधाग्निमिडस्पदेऽश्विनेन्द्रꣳ सरस्वतीमजो धूम्रो न गोधूमैः कुवलैर्भेषजं मधु शष्पैर्न तेज इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०४८

होता यक्षत् तनूनपात् सरस्वतीमविर्मेषो न भेषजं पथा मधुमता भरन्नश्विनेन्द्राय वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्मभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०४९

होता यक्षन्नराशꣳसं न नग्नहुं पतिꣳ सुरया भेषजं मेषः सरस्वती भिषग् रथो न चन्द्रयश्विनोर्वपा इन्द्रस्य वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्मभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५०

होता यक्षदिडेडित आजुह्वानः सरस्वतीमिन्द्रं बलेन वर्धयन्नृषभेण गवेन्द्रियमश्विनेन्द्राय भेषजं यवैः कर्कन्धुभिर्मधु लाजैर्न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५१

होता यक्षद् बर्हिरूर्णम्रदा भिषङ् नासत्या भिषजाश्विनाश्वा शिशुमती भिषग् धेनुः सरस्वती भिषग् दुह इन्द्राय भेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५२

होता यक्षद् दुरो दिशः कवष्यो न व्यचस्वतीरश्विभ्यां न दुरो दिश इन्द्रो न रोदसी दुघे दुहे धेनुः सरस्वत्यश्विनेन्द्राय भेषजꣳ शुक्रं न ज्योतिरिन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५३

होता यक्षत् सुपेशसोषे नक्तं दिवाश्विना समञ्जाते सरस्वत्या त्विषिमिन्द्रे न भेषजꣳ श्येनो न रजसा हृदा श्रिया न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५४

मैत्रा० पाठ० - २०४९ (१ मधुमदाभरन्न०; २ वेत्वाज्यस्य); २०५० (१ सुराया; २ वेत्वाज्यस्य); २०५२ (१ भिषगिन्द्राय दुह इन्द्रियं); २०५३ (१ दिशा; २ 'अश्विनेन्द्राय भेषजं' इति न दृश्यते) २०५४ (१ संजानाने सुपेशसा समञ्जाते; २ त्विषिमिन्द्रेण; ३ हृदा पयः; ४ वीतामाज्यस्य)

होता यक्षद् दैव्या होतारा भिषजाश्विने—न्द्रं न जागृवि दिवा नक्तं न भेषजैः शूषंꣳ सरस्वती भिषक् सीसेन दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५५

होता यक्षत् तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपसो रूपमिन्द्रे हिरण्ययं—माश्विनेडा न भारती वाचा सरस्वती महं इन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५६

होता यक्षत् सुरेतसमृषभं नर्यापसं त्वष्टारमिन्द्रमश्विना भिषजं न सरस्वती—मोजो न जूतिरिन्द्रियं वृको न रभसो भिषग् यशः सुरया भेषजंꣳ श्रिया न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५७

होता यक्षद् वनस्पतिंꣳ शमितारꣳ शतक्रतुं भीमं न मन्युꣳ राजानं व्याघ्रं नमसा-श्विना भामꣳ सरस्वती भिषगिन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५८

होता यक्षदग्निꣳ स्वाहाज्यस्य स्तोकानाꣳ स्वाहा मेदसां पृथक् स्वाहा छागम-श्विभ्याꣳ स्वाहा मेषꣳ सरस्वत्यै स्वाहं ऋषभमिन्द्राय सिꣳहाय सहस इन्द्रियꣳ स्वाहाग्निं न भेषजꣳ स्वाहा सोममिन्द्रियं स्वाहेन्द्रꣳ सुत्रामाणꣳ सवितारं वरुणं भिषजां पतिꣳ स्वाहा वनस्पतिं प्रियं पाथो न भेषजꣳ स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणो अग्निर्भेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०५९

॥ २२८ ॥ (वा० यजुर्वेद २७ । ११—२२; काठक सं० १८ । १७; मैत्रा० सं० २ । १२ । ६)

ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति ऊर्ध्वा शुक्रा शोचीꣳष्यग्नेः ।
द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः २०६०
तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः । पथो अनक्तु मध्वा घृतेन २०६१
मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराशꣳसो अग्ने । सुकृद्देवः सविता विश्ववारः २०६२

मैत्रा० पाठ०— २०५५ (१ वीतामाज्यस्य); २०५६ (१ रूपमिन्द्रो ; २ महा); २०५७ (१ यक्षत्त्वष्टारं रूपकृतं सुपेशसं वृषभं; २ सुराया; ३ वेत्वाज्यस्य); २०५८ (१ वेत्वाज्यस्य); २०५९ (१ स्वाहा; २ भेषजैः; ३ ०मिन्द्रियैः) [पंक्तिपदच्छेदपद्धतिः क्वचिद्भिन्ना;] २०६० (१ देवेभ्यो देवयानान्) २०६२ (१ नक्षति; २ अग्निः;)

काठ० पाठ०-- [पंक्तिच्छेदपद्धतिर्भिन्ना] २०६१ (१ घृतेन......प्रीणानः इत्येव एका पंक्तिः) २०६२ (१नक्षति)

अच्छायमेति शवसा घृतेनेडानो वह्निर्नमसा ।
अग्निं स्रुचो अध्वरेषु प्रयत्सु २०६३
स यक्षदस्य महिमानमग्नेः स ईं मन्द्रा सुप्रयसः ।
वसुश्चेतिष्ठो वसुधातमश्च २०६४
द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः ।
उरुव्यचसो धाम्ना पत्यमानाः २०६५
ते अस्य योषणे दिव्ये न योना उषासानक्ता ।
इमं यज्ञमवतामध्वरं नः २०६६
दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नो ऽग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम् ।
कृणुतं नः स्विष्टिम् २०६७
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु इडा सरस्वती भारती ।
मही गृणाना २०६८
तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु त्वष्टा सुवीर्यम् ।
रायस्पोषं वि ष्यतु नाभिमस्मे २०६९
वनस्पतेऽव सृजा रराणस्त्मना देवेषु ।
अग्निर्हव्यं शमिता सूदयाति २०७०
अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद इन्द्राय हव्यम् ।
विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् २०७१

॥ २३० ॥ (अथर्व० कां० ५।२७)

१—१२ ब्रह्मा । अग्निः। १ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप्; २ द्विपदा साम्नी भुरिगनुष्टुप्; ३ द्विपदार्ची बृहती; ४ द्विपदा साम्नी भुरिग्बृहती; ५ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप्; ६ द्विपदा विराण्नाम गायत्री; ७ द्विपदा साम्नी बृहती; ८ संस्तारपङ्क्तिः; ९ षट्पदानुष्टुब्गर्भा पराति-जगती; १०—१२ पुरउष्णिक (२-७ एकावसाना)।

उर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति ऊर्ध्वा शुक्रा शोचींष्यग्नेः ।
द्युमत्तमा सुप्रतीकः ससूनुस् तनूनपादसुरो भूरिपाणिः २०७२

मैत्रा० पाठ०- २०६४ (१ स ई मन्द्रा सुप्रयसा स्तरीमन् । बर्हिषो मित्रमहाः) २०६५ (१ विश्वा); २०६७ (१ होतारा ऊर्ध्वमिमध्वरं; २ स्विष्टम्); २०६८ (१ स्योनम्; २ मही शब्दः नास्ति) २०६९ (१ त्वष्टः) २०७० (१ विष्य; २ देवेभ्यः) २०७१ (१ जातवेदा; २ देवेभ्यः)

काठ० पाठ० - २०६३ (१ अच्छायं यन्ति; २ घृताचीः ईडाना वर्हिः; २०६४ (१ स्तनी मन्द्रस्सुप्रयक्षुः); २०६६ (१ दिव्यो न योनिरुषासानक्तामेः); २०६७ (१ होतारोर्ध्वमिमध्वरं; २ स्विष्टम्) २०६८ (१ महीर्गृणानाः); २०६९ (१ त्वष्टः पोषाय विष्य नाभिमस्मे) २०७० (१ सृज; ३ हविः)

देवो देवेषु देवः पथो अनक्ति मध्वा घृतेन । २०७३
मध्वा यज्ञं नक्षति प्रैणानो नराशंसो अग्निः सुकृद् देवः सविता विश्ववारः २०७४
अच्छायमेति शवसा घृता चिदीडानो वह्निर्नमसा २०७५
अग्निः स्रुचो अध्वरेषु प्रयक्षु स यक्षदस्य महिमानमग्नेः २०७६
तरी मन्द्रासु प्रयक्षु वसवश्चातिष्ठन् वसुधातरश्च २०७७
द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं रक्षन्ति विश्वहा २०७८
उरुव्यचसाऽग्नेर्धाम्ना पत्यमाने ।
आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्तेमं यज्ञमवतामध्वरं नः २०७९
दैवा होतार ऊर्ध्वम् अध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वया अभि गृणत गृणता नः स्विष्टये ।
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तामिडा सरस्वती मही भारती गृणाना २०८०
तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु । देव त्वष्टा रायस्पोषं वि ष्य नाभिमस्य २०८१
वनस्पतेऽव सृजा रराणः । त्मना देवेभ्यो अग्निर् हव्यं शमिता स्वदयतु २०८२
अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदः । इन्द्राय यज्ञं विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् २०८३

॥ २३१ ॥ (वा० यजुर्वेदे २८ । १-११)

होता यक्षत् समिधेन्द्रमिडस्पदे नाभा पृथिव्या अधि ।
दिवो वर्ष्मन् त्समिध्यत ओजिष्ठश्चर्षणीसहां वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०८४
होता यक्षत् तनूनपातमूतिभिर्जेतारमपराजितम् ।
इन्द्रं देवꣳ स्वर्विदं पथिभिर्मधुमत्तमैर्नराशꣳसेन तेजसा वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०८५
होता यक्षदिडाभिरिन्द्रमीडितमाजुह्वानममर्त्यम् ।
देवो देवैः सवीर्यो वज्रहस्तः पुरन्दरो वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०८६
होता यक्षद् बर्हिषीन्द्रं निषद्वरं वृषभं नर्यापसम् ।
वसुभी रुद्रैरादित्यैः सयुग्भिर्बर्हिरासदद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०८७
होता यक्षदोजो न वीर्यꣳ सहो द्वार इन्द्रमवर्धयन् ।
सुप्रायणा अस्मिन् यज्ञे वि श्रयन्तामृतावृधो द्वार इन्द्राय मीढुषे व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०८८
होता यक्षदुषे इन्द्रस्य धेनू सुदुघे मातरा मही ।
सवातरौ न तेजसा वत्समिन्द्रमवर्धतां वीतामाज्यस्य होतर्यज २०८९

होता यक्षद् दैव्या होतारा भिषजा सखाया हविषेन्द्रं भिषज्यतः ।
कवी देवौ प्रचेतसाविन्द्राय धत्त इन्द्रियं वीतामाज्यस्य होतर्यज २०९०
होता यक्षत् तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपस इडा सरस्वती भारती महीः ।
इन्द्रपत्नीर्हविष्मतीर्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०९१
होता यक्षत् त्वष्टारमिन्द्रं देवं भिषजंꣳ सुयजं घृतश्रियम् ।
पुरुरूपꣳ सुरेतसं मघोनमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९२
होता यक्षद् वनस्पतिꣳ शमितारꣳ शतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम् ।
मध्वा समञ्जन् पथिभिः सुगेभिः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९३
होता यक्षदिन्द्रꣳ स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा
स्तोकानाꣳ स्वाहा स्वाहाकृतीनाꣳ स्वाहा हव्यसूक्तीनाम् ।
स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणा इन्द्र आज्यस्य व्यन्तु होतर्यज २०९४

॥ २२२ ॥ (वा० यजुर्वेद २८ । २४-३४)

होता यक्षत् समिधानं महद् यशः सुसमिद्धं वरेण्यमग्निमिन्द्रं वयोधसम् ।
गायत्रीं छन्द इन्द्रियं त्र्यविं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९५
होता यक्षत् तनूनपातमुद्भिदं यं गर्भमदितिर्दधे शुचिमिन्द्रं वयोधसम् ।
उष्णिहं छन्द इन्द्रियं दित्यवाहं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९६
होता यक्षदीडेन्यमीडितं वृत्रहन्तममिडाभिरीड्यꣳ सहः सोममिन्द्रं वयोधसम् ।
अनुष्टुभं छन्द इन्द्रियं पञ्चाविं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९७
होता यक्षत् सुबर्हिषं पूषण्वन्तममर्त्यꣳ सीदन्तं बर्हिषि प्रियेऽमृतेन्द्रं वयोधसम् ।
बृहतीं छन्द इन्द्रियं त्रिवत्सं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९८
होता यक्षद् व्यचस्वतीः सुप्रायणा ऋतावृधो द्वारो देवीर्हिरण्ययीर्ब्रह्माणमिन्द्रं वयोधसम् ।
पङ्क्तिं छन्द इहेन्द्रियं तुर्यवाहं गां वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०९९
होता यक्षत् सुपेशसा सुशिल्पे बृहती उभे नक्तोषासा न दर्शते विश्वमिन्द्रं वयोधसम् ।
त्रिष्टुभं छन्द इहेन्द्रियं पष्ठवाहं गां वयो दधद् वीतामाज्यस्य होतर्यज २१००
होता यक्षत् प्रचेतसा देवानामुत्तमं यशो होतारा दैव्या कवी सयुजेन्द्रं वयोधसम् ।
जगतीं छन्द इन्द्रियमनड्वाहं गां वयो दधद् वीतामाज्यस्य होतर्यज २१०१

होता यक्षत् पेशस्वतीस्तिस्रो देवीर्हिरण्ययीर्भारतीर्बृहतीर्महीः पतिमिन्द्रं वयोधसम् ।
विराजं छन्द इहेन्द्रियं धेनुं गां न वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २१०२
होता यक्षत् सुरेतसं त्वष्टारं पुष्टिवर्धनं रूपाणि बिभ्रतं पृथक् पुष्टिमिन्द्रं वयोधसम् ।
द्विपदं छन्द इन्द्रियमुक्षाणं गां न वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१०३
होता यक्षद् वनस्पतिꣳ शमितारꣳ शतक्रतुꣳ हिरण्यपर्णमुक्थिनꣳ
रशनां बिभ्रतं वशिं भगमिन्द्रं वयोधसम् ।
ककुभं छन्द इहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१०४
होता यक्षत् स्वाहाकृतीरग्निं गृहपतिं पृथग् वरुणं भेषजं कविं क्षत्रमिन्द्रं वयोधसम् ।
अतिच्छन्दसं छन्द इन्द्रियं बृहदृषभं गां वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २१०५

॥ २३३ ॥ (वा० यजुर्वेद २९ । १-११ काठक० सं० ५।६।२; मैत्रा० सं० ३ । १६ । २; तै० ब्रा० ५।१।११)

समिद्धो अञ्जन्कृदरं मतीनां घृतमग्ने मधुमत् पिन्वमानः ।
वाजी वहन् वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम् २१०६
घृतेनाञ्जन् त्सं पथो देवयानान् प्रजानन् वाज्यप्येतु देवान् ।
अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्ताꣳ स्वधामस्मै यजमानाय धेहि २१०७
ईड्यश्चासि वन्द्यश्च वाजिन्नाशुश्चासि मेध्यश्च सप्ते ।
अग्निष्ट्वा देवैर्वसुभिः सजोषाः प्रीतं वह्निं वहतु जातवेदाः २१०८
स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।
देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु २१०९
एता उ वः सुभगा विश्वरूपा वि पक्षोभिः श्रयमाणा उदातैः ।
ऋष्वाः सतीः कवषः शुम्भमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा भवन्तु २११०
अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि संविदाने ।
उषासा वाꣳ सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्य योनाविह सादयामि २१११

मैत्रा० पाठ०— २१०७ (१ तनूनपात्सं; २ स्वधां देवैर्); २१०८ (१ मेध्यश्चासि); २१०९ (१ देवेभिरक्तम०)
२११० (१ विश्ववारा); २१११ (४ योना इह)

काठ० पाठ०— २१०९ (१ देवेभिरक्तम०); २११० (१ विश्ववारा; २ कवगः; ३ सुप्रयाणा) २१११ (१ योना इह)

प्रथमा वांꣳ सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा ।
अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता २११२

आदित्यैर्नो भारती वष्टु यज्ञꣳ सरस्वती सह रुद्रैर्न आवीत् ।
इडोपहूता वसुभिः सजोषा यज्ञं नो देवीरमृतेषु धत्त २११३

त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरर्वा जायत आशुरश्वः ।
त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्तारमिह यक्षि होतः २११४

अश्वो घृतेन त्मन्या समक्त उप देवाँ २ ऋतुशः पाथ एतु ।
वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत् २११५

प्रजापतेस्तपसा वावृधानः सद्यो जातो दधिषे यज्ञमग्ने ।
स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा याहि साध्या हविरदन्तु देवाः २११६

॥ २३४ ॥ (वा० यजुर्वेद २९।२५-३६; काठकसं० १६।२०, मैत्रा० सं० ४।१३।३; तैत्ति० ब्रा० २।६।१२)

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः ।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः २११७

तनूनपात् पथ ऋतस्य यानान् मध्वा समञ्जन् त्स्वदया सुजिह्व ।
मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन् देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः २११८

नराशꣳसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः ।
ये सुक्रतवः शुचयो धियंधाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या २११९

आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्चा याह्यग्ने वसुभिः सजोषाः ।
त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान् यक्षीषितो यजीयान् २१२०

प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम् ।
व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम् २१२१

व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः ।
देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः २१२२

मैत्रा० पाठ०-- २११३ (१ स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु) २११४ (१ त्वष्टेमा विश्वा भुवना) २११५ (१ समक्ता; २ देवं); २११९ (१ स्वदन्तु); २१२० (१ आजुह्वाना)

काठ० पाठ०-- २११६ (१ गमिषे; २ सहव्या); २११९ अयं मन्त्रो नास्ति ।

आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियंꣳ शुक्रपिशं दधाने २१२३

दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै ।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता २१२४

आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती ।
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदꣳ स्योनꣳ सरस्वती स्वपसः सदन्तु २१२५

य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिꣳशद् भुवनानि विश्वा ।
तमद्य होतरिषितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान् २१२६

उपावसृज त्मन्या समञ्जन् देवानां पाथ ऋतुथा हवीꣳषि ।
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन २१२७

सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः ।
अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतꣳ हविरदन्तु देवाः २१२८

॥ २३'१ ॥ (ऋग्वेदीय-परिशिष्ट-प्रैषाध्याये १-१३ । मैत्रा० सं० ४ । १३ । २; २०० । १; काठक सं० १५ । १३; तै० ब्रा० ३ । ६ । २ । १)

होता यक्षदग्निं समिधा सुषमिधा समिद्धं नाभा पृथिव्याः संगथे वामस्य ।
वर्ष्मन् दिव इळस्पदे वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१२९

होता यक्षत् तनूनपातमदितेर्गर्भे भुवनस्य गोपाम् ।
मध्वाद्य देवो देवेभ्यो देवयानान् पथो अनक्तु वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३०

होता यक्षन्नराशंसं नृशंस्तं नॄँः प्रणेत्रं ।
गोभिर्वपावान् त्स्याद् वीरैः शक्तीवान् रथैः प्रथमयावा हिरण्यैश्चन्द्री वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३१

होता यक्षदग्निमीळ ईळितो देवो देवाँ आवक्षद्दूतो हव्यवाळमूरः ।
उपेमं यज्ञमुपेमो देवो देवहूतिमवतु वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३२

मैत्रा० पाठ०- २१२८ मंत्रः नोपलभ्यते; २१३१; (१ नृशस्तं; नृ २ प्रणेत्रं); २१३२ (१ दग्निमिड; २ देवं आ च वक्षद्, ३ ०मूरा),

काठ० पाठ०- २१२९ (१ समिधं); २१३१ अयं मन्त्रः नोपलभ्यते, २१३२ (४ देवहूतिं वेत्वा०);

होता यक्षद् बर्हिः सुष्टरीमोर्णम्रदा अस्मिन् यज्ञे वि च प्र च प्रथताँ स्वासस्थं देवेभ्यः ॥
एमेनदद्य वसवो रुद्रा आदित्याः सदन्तु प्रियमिंद्रस्यास्तु वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३३

होता यक्षद् दुर ऋष्वाः कवष्यो कोषधावनीरुद्राताभिर्जिहतां विपक्षोभिः श्रयतां ।
सुप्रायणा अस्मिन् यज्ञे विश्रयन्तामृतावृधो व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २१३४

होता यक्षदुषासानक्ता बृहती सुपेशसा नॄँःपतिभ्यो योनिं कृण्वाने ।
संस्मयमाने इन्द्रेण देवैरेदं बर्हिः सीदतां वीतामाज्यस्य होतर्यज २१३५

होता यक्षद् दैव्या होतारा मन्द्रा पोतारा कवी प्रचेतसा ।
स्विष्टमद्यान्यः करदिषा स्वभिगूर्तमन्य ऊर्जा सतवसेमं यज्ञं दिवि
देवेषु धत्तां वीतामाज्यस्य होतर्यज २१३६

होता यक्षत् तिस्रो देवीरपसामपस्तमा अच्छिद्रमद्येदमपस्तन्वतां ।
देवेभ्यो देवीर्देवमपो व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २१३७

होता यक्षत् त्वष्टारमचिष्टमपाकं रेतोधां विश्रवसं यशोधां ।
पुरुरूपमकामकर्शनं सुपोषः पोषैः स्यात् सुवीरो वीरैर्वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३८

होता यक्षद् वनस्पतिमुपावस्रक्षद्धियो जोष्टारं शशमं नरः ।
स्वदान् स्वधितिर्ऋतुथाद्य देवो देवेभ्यो हव्यंवाड् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३९

अजैदग्निरसनद्वाजं नि देवो देवेभ्यो हव्यवाट् प्रांजोभिर्हिन्वानो धेनाभिः ।
कल्पमानो यज्ञस्यायुः प्रतिरन्नुपप्रेष्य होतर्हव्या देवेभ्यः २१४०

होता यक्षदग्निं स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा स्तोकानां स्वाहा
स्वाहाकृतीनां स्वाहा हव्यसूक्तीनाम् ॥
स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणा अग्न आज्यस्य व्यन्तु होतर्यज २१४१

मैत्रा० पाठ०- २१३३ (१ देवेभ्या; स्वदन्तु); २१३४ (१ श्रयंतां); २१३५ (नॄँःपतिभ्यो);
२१३९ (१ स्वदात्, २ हव्यावाड्); २१४०–२१४२ मन्त्राः नोपलभ्यन्ते ।

काठ० पाठ०- २१३४(१ श्रयंतां); २१३६ (१ करत्स्वभि०, २ ०मन्यस्स्वतसेमं); २१३८ (१ ०मचिष्टुमपाकं)
२१३९ (१ स्वदात्), २१४० अयं मंत्रो नोपलभ्यते ।

अथर्ववेदेऽग्निमन्त्राः ।

(अथर्ववेदे कां०१, सू० ९, मं० ३-४ अथर्वा । त्रिष्टुप् ।)

येनेन्द्राय समभरः पयां-स्युत्तमेन ब्रह्मणा जातवेदः ।
तेन त्वमग्न इह वर्धयेमं सजातानां श्रैष्ठ्य आ धेह्येनम् २१४२
ऐषां यज्ञमुत वर्चो ददेऽहं रायस्पोषमुत चित्तान्यग्ने ।
सपत्ना अस्मदधरे भव-न्तूत्तमं नाकमधि रोहयेमम् २१४३

(अथर्व० २ । १९ । १-४ । विराड्विषमा गायत्री, २१४८ भुरिग्विषमा ।)

अग्ने यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽ३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४४
अग्ने यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽ३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४५
अग्ने यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽ३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः । २१४६
अग्ने यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽ३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४७
अग्ने यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽ३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४८

(अथर्व० २।२९।१—२। २१४९ अनुष्टुप्, २१५० त्रिष्टुप्।)

पार्थिवस्य रस देवा भगस्य तन्वो३ बले ।
आयुष्यमस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः २१४९
आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेह्यस्मै ।
रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम् २१५०

(अथर्व० २ । ३४ । ३ । त्रिष्टुप्)

ये बध्यमानमनु दीध्याना अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च ।
अग्निष्टानग्रे प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः २१५१

(अथर्व० कां० ३ । १ । १-३, ५-६। २१५२ त्रिष्टुप्, २१५३ विराड्गर्भा भुरिक्, २१५४ अनुष्टुप्, २१५६ विराट्पुर उष्णिक् ।)

अग्निर्नः शत्रून् प्रत्येतु विद्वान् प्रतिदहन्नभिशस्तिमरातिम् ।
स सेनां मोहयतु परेषां निर्हस्तांश्च कृणवज्जातवेदाः २१५२

यूयमुग्रा मरुत ईदृशे स्था—भि प्रेत मृणत सहध्वम् ।
अमीमृणन् वसवो नाथिता इमे अग्निर्ह्येषां दूतः प्रत्येतु विद्वान् २१५३

अमित्रसेनां मघवन्न् अस्मान् छत्रूयतीमभि ।
युवं तानिन्द्र वृत्रहन्न् अग्निश्च दहतं प्रति २१५४

इन्द्रः सेनां मोहयतु मरुतो घ्नन्त्वोजसा ।
चक्षूंष्यग्निरा दत्तां पुनरेतु पराजिता २१५५

(अथर्व० ३ । २ । १—३ । २१५६ त्रिष्टुप् ; २१५७-५८ अनुष्टुप् ।)

अग्निर्नो दूतः प्रत्येतु विद्वान् प्रतिदहन्नभिशस्तिमरातिम् ।
स चित्तानि मोहयतु परेषां निर्हस्तांश्च कृणवज्जातवेदाः २१५६

अयमग्निरमूमुहद् यानि चित्तानि वो हृदि ।
वि वो धमत्वोकसः प्र वो धमतु सर्वतः २१५७

इन्द्र चित्तानि मोहय—न्नर्वाङाकूत्या चर ।
अग्नेर्वातस्य ध्राज्या तान् विषूचो वि नाशय २१५८

(अथर्व० ३ । ३ । १ । त्रिष्टुप्)

अचिक्रदत् स्वपा इह भुवदग्ने व्यचस्व रोदसी उरूची ।
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस आमुं नय नमसा रातहव्यम् २१५९

(अथर्व० ३।४।३)

अच्छ त्वा यन्तु हविनः सजाता अग्निर्दूतो अजिरः सं चरातै ।
जायाः पुत्राः सुमनसो भवन्तु बहुं बलिं प्रति पश्यासा उग्रः २१६०

(अथर्व० ३ । २७ । १ । पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः ।)

प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः २१६१

(अथर्व० ४ । ४ । ६ । भुरिक् ।)

अद्याग्ने अद्य सवित—रद्य देवि सरस्वति ।
अद्यास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः २१६२

(अथर्व० ५।८।१-३। अनुष्टुप्. २१६४ त्र्यवसाना षट्पदा जगती।)

वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्य आज्यं वह ।
अग्ने ताँ इह मादय सर्व आ यन्तु मे हवम् २१६३

इन्द्रा याहि मे हवम् इदं करिष्यामि तच्छृणु ।
इम ऐन्द्रा अतिसरा आकूतिं सं नमन्तु मे ।
तेभिः शकेम वीर्यं जातवेदस्तनूवशिन् २१६४

यदुमावमुतो देवा अदेवः संश्चिकीर्षति ।
मा तस्याग्निर्हव्यं वाक्षीद्धवं देवा अस्य मोप गुर्ममैव हवमेतन २१६५

(अथर्व ५।२४।२। चतुष्पदातिशक्करी।)

अग्निर्वनस्पतीनाम् अधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा २१६६

(अथर्व० ५।२८।१-१४। त्रिष्टुप्, २१७२ पञ्चपदातिशक्करी २१७३, ७५, ७६, ७८
ककुम्मत्यनुष्टुप्. २१७९ पुरउष्णिक्।)

नव प्राणान् नवभिः सं मिमीते दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।
हरिते त्रीणि रजते त्रीणि अयसि त्रीणि तपसाविष्ठितानि २१६७

अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो द्यौरन्तरिक्षं प्रदिशो दिशश्च ।
आर्तवा ऋतुभिः संविदाना अनेन मा त्रिवृता पारयन्तु २१६८

त्रयः पोषास्त्रिवृति श्रयन्ताम् अनक्तु पूषा पयसा घृतेन ।
अन्नस्य भूमा पुरुषस्य भूमा भूमा पशूनां त इह श्रयन्ताम् २१६९

इममादित्या वसुना समुक्षते—ममग्ने वर्धय वावृधानः ।
इममिन्द्र सं सृज वीर्येणा—स्मिन् त्रिवृच्छ्रयतां पोषयिष्णु २१७०

भूमिष्ट्वा पातु हरितेन विश्वभृ—दग्निः पिपर्त्वयसा सजोषाः ।
वीरुद्भिष्टे अर्जुनं संविदानं दक्षं दधातु सुमनस्यमानम् २१७१

त्रेधा जातं जन्मनेदं हिरण्य—मग्नेरेकं प्रियतमं बभूव सोमस्यैकं हिंसितस्य परापतत् ।
अपामेकं वेधसां रेत आहुस् तत् ते हिरण्यं त्रिवृदस्त्वायुषे २१७२

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
त्रेधामृतस्य चक्षणं त्रीण्यायूंषि तेऽकरम् २१७३

त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदायन्न् एकाक्षरमभिसंभूय शक्राः ।
प्रत्यौहन् मृत्युममृतेन साकम् अन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा २१७४

दिवस्त्वा पातु हरितं मध्यात् त्वा पात्वर्जुनम् ।
भूम्या अयस्मयं पातु प्रागाद् देवपुरा अयम् २१७५

इमास्तिस्रो देवपुरा—स्तास्त्वा रक्षन्तु सर्वतः ।
तास्त्वं बिभ्रद्वर्च—स्व्युत्तरो द्विषतां भव २१७६

पुरं देवानाममृतं हिरण्यं य आबेधे प्रथमो देवो अग्रे ।
तस्मै नमो दश प्राचीः कृणो—म्यनु मन्यतां त्रिवृदाबधे मे २१७७

आ त्वा चृतत्वर्यमा पूषा बृहस्पतिः ।
अहर्जातस्य यन्नाम तेन त्वाति चृतामसि २१७८

ऋतुभिष्ट्वार्तवै—रायुषे वर्चसे त्वा ।
संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृण्मसि २१७९

घृतादुल्लुप्तं मधुना समक्तं भूमिदृंहमच्युतं पारयिष्णु ।
भिन्दत् सपत्नानधरांश्च कृण्वदा मा रोह महते सौभगाय २१८०

(अथर्व० ६ । ३६ । १-३ । गायत्री ।)

ऋतावानं वैश्वानरम् ऋतस्य ज्योतिषस्पतिम् । अजस्रं घर्ममीमहे २१८१
स विश्वा प्रति चाक्लृप ऋतूंरुत्सृजते वशी । यज्ञस्य वय उत्तिरन् २१८२
अग्निः परेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य । सम्राडेको वि राजति २१८३

(अथर्व०६ । ११० । २-३ । त्रिष्टुप् ।)

ज्येष्ठघ्न्यां जातो विचृतोर्यमस्य मूलबर्हणात् परि पाह्येनम् ।
अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वाय शतशारदाय २१८४

व्याघ्रेऽह्न्यजनिष्ट वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः ।
स मा वधीत् पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीज्जनित्रीम् २१८५

(अथर्व० ६ । १११ । १-४ । अनुष्टुप्, २१८६ परानुष्टुप् त्रिष्टुप् ।)

इमं मे अग्ने पुरुषं मुमुग्ध्य—यं यो बुद्धः सुयतो लालपीति ।
अतोऽधि ते कृणवद् भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति २१८६
अग्निष्टे नि शमयतु यदि ते मन उद्युतम् । कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्मदितोऽससि २१८७
देवैनसादुन्मदितम् उन्मत्तं रक्षसस्परि । कृणोमि विद्वान् भेषजं यदानुन्मदितोऽसति २१८८
पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भगः । पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽससि २१८९

(अथर्व० ६ । ११२ । १-३ । त्रिष्टुप् ।)

मा ज्येष्ठं वधीदयमग्न एषां मूलबर्हणात् परि पाह्येनम् ।
स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे २१९०
उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन् ।
स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् पितापुत्रौ मातरं मुञ्च सर्वान् २१९१
येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धो ऽङ्गेअङ्ग आर्पित उत्सितश्च ।
वि ते मुच्यन्तां विमुचो हि सन्ति भ्रूणघ्नि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व २१९२

(अथर्व० ७ । ३४ (३५) । १ ॥ जगती ।)

अग्ने जातान् प्र णुदा मे सपत्नान् प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्व ।
अधस्पदं कृणुष्व ये पृतन्यवो ऽनागसस्ते वयमदितये स्याम २१९३

(अथर्व० ७ । ३५ [३६] १-३ ॥ त्रिष्टुप्, २१९४ अनुष्टुप् ।)

प्रान्यान् त्सपत्नान् त्सहसा सहस्व प्रत्यजातान् जातवेदो नुदस्व ।
इदं राष्ट्रं पिपृहि सौभगाय विश्व एनमनु मदन्तु देवाः २१९४
इमा यास्ते शतं हिराः सहस्रं धमनीरुत ।
तासां ते सर्वासामह—मश्मना बिलमप्यधाम् २१९५
परं योनेरवरं ते कृणोमि मा त्वा प्रजाभि भून्मोत सूनुः ।
अस्वं१ त्वाप्रजसं कृणोम्य—श्मानं ते अपिधानं कृणोमि २१९६

(अथर्व० ७ । ७४ [७८] । ४ ॥ अनुष्टुप् ।)

व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह ।
तं त्वा वयं जातवेदः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे २१९७

(अथर्व० ७ । ७८ (८३) १-२॥ २१९८ परोष्णिक्. २१९९ त्रिष्टुप् ।)

वि ते मुञ्चामि रशनां वि योक्त्रं वि नियोजनम् । इहैव त्वमजस्र एध्यग्ने २१९८

अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्ने युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन ।
दीदिह्य१स्मभ्यं द्रविणेह भद्रं प्रेमं वोचो हविर्दां देवतासु २१९९

(अथर्व० ७ । १०६ [१११] । १ । बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ।)

यदस्मृति चकृम किं चिदग्न उपारिम चरणे जातवेदः ।
ततः पाहि त्वं नः प्रचेतः शुभे सखिभ्यो अमृतत्वमस्तु नः २२००

(अथर्व० ७ । ११५ [१२०] १-४ ॥ अनुष्टुप्, २२०२-३ त्रिष्टुप् ।)

प्र पतेतः पापि लक्ष्मि नश्येतः प्रामुतः पत । अयस्मयेनाङ्केन द्विषते त्वा सजामसि २२०१

या मा लक्ष्मीः पतयालूरजुष्टा–भिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम् ।
अन्यत्रास्मत् सवितस्तामितो धा हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः २२०२

एकशतं लक्ष्म्यो३ मर्त्यस्य साकं तन्वा जनुषोऽधि जाताः ।
तासां पापिष्ठा निरितः प्र हिण्मः शिवा अस्मभ्यं जातवेदो नि यच्छ २२०३

एता एना व्याकरं खिले गा विष्ठिता इव ।
रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम् २२०४

(अथर्व० १९ । ३ । १-४ ॥ त्रिष्टुप्, २२०६ भुरिक् ।)

दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद् वनस्पतिभ्यो अध्योषधीभ्यः ।
यत्रयत्र विभृतो जातवेदा–स्तत स्तुतो जुषमाणो न एहि २२०५

यस्ते अप्सु महिमा यो वनेषु य ओषधीषु पशुष्वप्स्व१न्तः ।
अग्ने सर्वास्तन्व१ः सं रभस्व ताभिर्न एहि द्रविणोदा अजस्रः २२०६

यस्ते देवेषु महिमा स्वर्गो या ते तनूः पितृष्वाविवेश ।
पुष्टिर्या ते मनुष्येषु पप्रथे ऽग्ने तया रयिमस्मासु धेहि २२०७

श्रुत्कर्णाय कवये वेद्याय वचोभिर्वाकैरुप यामि रातिम् ।
यतो भयमभयं तन्नो अस्त्व–व देवानां यज हेडो अग्ने २२०८

अथर्व० १९ । ४ । १-४ ॥ त्रिष्टुप्, २२०९ पञ्चपदा विराडतिजगती, २२१० जगती ।

यामाहुतिं प्रथमामथर्वा या जाता या हव्यमकृणोज्जातवेदाः ।
तां त एतां प्रथमो जोहवीमि ताभिष्टुप्तो वहतु हव्यमग्नि–रग्नये स्वाहा २२०९

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु ।
यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम् २२१०

आकूत्या नो बृहस्पत आकूत्या न उपा गहि ।
अथो भगस्य नो धेहि अथो नः सुहवो भव २२११

बृहस्पतिर्म आकूतिमाङ्गिरसः प्रति जानातु वाचमेताम् ।
यस्य देवा देवताः संबभूवुः स सुप्रणीताः कामो अन्वेत्वस्मान् २२१२

(अथर्व० १९ । ३७ । १-४॥ २२१३ त्रिष्टुप्; २२१४ आस्तारपंक्तिः; २२१५ त्रिपदा महाबृहती; २२१६ पुरोष्णिक् ।)

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन् भर्गो यशः सह ओजो वयो बलम् ।
त्रयस्त्रिंशद् यानि च वीर्याणि तान्यग्निः प्र ददातु मे २२१३

वर्च आ धेहि मे तन्वां सह ओजो वयो बलम् ।
इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्याय प्रति गृह्णामि शतशारदाय २२१४

ऊर्जे त्वा बलाय त्वौजसे सहसे त्वा ।
अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय पर्यूहामि शतशारदाय २२१५

ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो माद्भ्यः संवत्सरेभ्यः ।
धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे २२१६

(अथर्व० ४ । १४ । १-९ । भृगुः । त्रिष्टुप्; २२१८, २२२० अनुष्टुप्; २२१९ प्रस्तारपङ्क्तिः; २२२३, २२२५ जगती; २२२४ पञ्चपदातिशक्वरी ।)

अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात् सो अपश्यज्जनितारमग्रे ।
तेन देवा देवतामग्र आयन् तेन रोहान् रुरुहुर्मेध्यासः २२१७

क्रमध्वमग्निना नाकमुख्यान् हस्तेषु बिभ्रतः ।
दिवस्पृष्ठं स्वर्गत्वा मिश्रा देवेभिराध्वम् २२१८

पृष्ठात् पृथिव्या अहमन्तरिक्षम् आरुहमन्तरिक्षाद् दिवमारुहम् ।
दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वर्ज्योतिरगामहम् २२१९

स्वर्यन्तो नापेक्षन्त आ द्यां रोहन्ति रोदसी ।
यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसो वितेनिरे २२२०

अग्ने प्रेहि प्रथमो देवतानां चक्षुर्देवानामुत मानुषाणाम् ।
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति २२२१

अजमनज्मि पयसा घृतेन दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तम् ।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम् २२२२

पञ्चौदनं पञ्चभिरङ्गुलिभिर्दर्व्योद्धर पञ्चधैतमोदनम् ।
प्राच्यां दिशि शिरो अजस्य धेहि दक्षिणायां दिशि दक्षिणं धेहि पार्श्वम् २२२३

प्रतीच्यां दिशि भसदमस्य धेहि उत्तरस्यां दिश्युत्तरं धेहि पार्श्वम् ।
ऊर्ध्वायां दिश्यजस्यानूकं धेहि दिशि ध्रुवायां धेहि पाजस्यम् अन्तरिक्षे मध्यतो मध्यमस्य २२२४

शृतमजं शृतया प्रोर्णुहि त्वचा सर्वैरङ्गैः संभृतं विश्वरूपम् ।
स उत्तिष्ठेतो अभि नाकमुत्तमं पद्भिश्चतुर्भिः प्रति तिष्ठ दिक्षु २२२५

(अथर्व० ७ । ८४ । १ । जगती ।)

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो विराडग्ने क्षत्रभृद् दीदिहीह ।
विश्वा अमीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिरद्य परि पाहि नो गयम् २२२६

(अथर्व० ७ । १०८ [११३] । १-२ ॥ २२२७ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप्; २२२८ त्रिष्टुप् ।)

यो नस्तायद् दिप्सति यो न आविः स्वो विद्वानरणो वा नो अग्ने ।
प्रतीच्येत्वरणी दत्वती तान् मैषामग्ने वास्तु भून्मो अपत्यम् २२२७

यो नः सुप्ताञ्जाग्रतो वाभिदासात् तिष्ठतो वा चरतो जातवेदः ।
वैश्वानरेण सयुजा सजोषास् तान् प्रतीचो निर्दह जातवेदः २२२८

(अथर्व० कां १२ । २ । १-१३; ३३-५५ ॥ त्रिष्टुप्; २२३०, २२३३, २२३८-४५, २२४७-४९, २२५१-५४, २२५६, २२६४, २२६७ अनुष्टुप् (२२४२ ककुम्मती पराबृहती, २२४४ निचृत्, २२५३ पुरस्तात्ककुम्मती); २२३१ आस्तारपङ्क्तिः; २२३४ भुरिगार्षी पङ्क्तिः २२५८ जगती; २२६१-६२ भुरिग्; २२३५ अनुष्टुब्गर्भा विपरीतपादलक्ष्मा पङ्क्तिः; २२५० पुरस्ताद्बृहती; २२५५ त्रिप० एकाव० भुरिगार्ची गायत्री; २२५७ एकाव० द्विप० आर्ची बृहती; २२५९ एका० द्विप० साम्नी त्रिष्टुप्; २२६० पञ्चपदा बार्हतवैराजगर्भा जगती; २२६३ उपरिष्टाद्विराड् बृहती; २२६५ पुरस्ताद्विराड् बृहती; २२६८ बृहतीगर्भा ।)

नडमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि ।
यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकमधराङ् परेहि २२२९

अघशंसदुःशंसाभ्यां करेणानुकरेण च । यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरजामसि २२३०

निरितो मृत्युं निर्ऋतिं निरराँतिमजामसि ।
यो नो द्वेष्टि तमंद्ध्यग्ने अक्रव्याद्यमु द्विष्मस्तमु ते प्र सुवामसि २२३१

यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः ।
तं माषाज्यं कृत्वा प्र हिंणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुषदोऽप्यग्नीन् २२३२

यत्त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते । सुकल्पमग्ने तत् त्वया पुनस्त्वोद्दीपयामसि २२३३

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसंवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्ने ।
पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद् दीर्घायुत्वाय शतशारदाय २२३४

यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश० (ऋ० १० । १६ । १०) (१५६६)
क्रव्यादमग्निं प्र हिंणोमि दूरं० (१० । १६ । ९) (१५६६)

क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान् दृंहन्तं वज्रेण मृत्युम् ।
नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान् पितृणां लोकेऽपि भागो अस्तु २२३५

क्रव्यादमग्निं शशमानमुक्थ्यं१ प्र हिंणोमि पथिभिः पितृयाणैः ।
मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधि पितृषु जागृहि त्वम् २२३६

समिन्धते संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।
जहाति रिप्रमत्येनं एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति २२३७

देवो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्ठान्यारुहत् ।
मुच्यमानो निरेणसो ऽमोगस्माँ अशस्त्याः २२३८

अस्मिन् वयं संकसुके अग्नौ रिप्राणि मृज्महे ।
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयूंषि तारिषत् २२३९

संकसुको विकसुको निर्ऋथो यश्च निस्वरः । ते ते यक्ष्मं सवेदसो दूराद् दूरमनीनशन् २२४०
यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु । क्रव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः २२४१

अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा ।
निः क्रव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवितयोपनः २२४२

यस्मिन् देवा अमृजत यस्मिन् मनुष्या उत । तस्मिन् घृतस्तावो मृष्ट्वा त्वमग्ने दिवं रुह २२४३
समिद्धो अग्न आहुत स नो माभ्यपक्रमीः । अत्रैव दीदिहि द्यवि ज्योक् च सूर्यं दृशे २२४४
सीसे मृड्ढ्वं नडे मृड्ढ्वम् अग्नौ संकसुके च यत् । अथो अव्यां रामायां शीर्षक्तिमुपबर्हणे २२४५

यो नो अग्निः पितरो हृत्स्व१न्तराविवेशामृतो मर्त्येषु ।
मय्यहं तं परि गृह्णामि देवं मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं तम् २२४६
अपावृत्य गार्हपत्यात् क्रव्यादा प्रेत दक्षिणा । प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम् २२४७
द्विभागधनमादाय प्र क्षिणात्यवर्त्या । अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः क्रव्यादनिराहितः २२४८
यत् कृषते यद् वनुते यच्च वस्नेन विन्दते । सर्वं मर्त्यस्य तन्नास्ति क्रव्याच्चेदनिराहितः २२४९
अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनेन हविरत्तवे । छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद् यं क्रव्यादनुवर्तते २२५०
मुहुर्गृध्यैः प्र वदत्यार्तिं मर्त्यो नीत्य । क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादनुविद्वान्वितावति २२५१
ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः ।
ब्रह्मैव विद्वानेष्यो३ यः क्रव्यादं निरादधत् २२५२
यद् रिप्रं शमलं चकृम यच्च दुष्कृतम् । आपो मा तस्माच्छुम्भन्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत् २२५३
ता अधरादुदीचीराववृत्रन् प्रजानतीः पथिभिर्देवयानैः ।
पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवाश्चरन्ति सरितः पुराणीः २२५४
अग्ने अक्रव्यान्निः क्रव्यादं नुदा देवयजनं वह २२५५
इमं क्रव्यादा विवेशायं क्रव्यादमन्वगात् । व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापरम् २२५६
अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणाम् अग्निर्गार्हपत्य उभयानन्तरा श्रितः २२५७
जीवानामायुः प्र तिर त्वमग्ने पितृणां लोकमपि गच्छतु ये मृताः ।
सुगार्हपत्यो वितपन्नरातिम् उषामुषां श्रेयसीं धेह्यस्मै २२५८
सर्वानग्ने सहमानः सपत्नानैषामूर्जं रयिमस्मासु धेहि २२५९
इममिन्द्रं वह्निं पप्रिमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात् ।
तेनाप हत शरुमापतन्तं तेन रुद्रस्य परि पातास्ताम् २२६०
अनड्वाहं प्लवमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात् ।
आ रोहत सवितुर्नावमेतां षड्भिरुर्वीभिरमतिं तरेम २२६१
अहोरात्रे अन्वेषि बिभ्रत् क्षेम्यस्तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरः ।
अनातुरान् त्सुमनसस्तल्प बिभ्रज् ज्योगेव नः पुरुषगन्धिरेधि २२६२
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते पापं जीवन्ति सर्वदा । क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादश्व इवानुवपते नडम् २२६३
येऽश्रद्धा धनकाम्यात् क्रव्यादा समासते । ते वा अन्येषां कुम्भीं पर्यादधति सर्वदा २२६४

प्रेवं पिपतिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः । क्रव्याद्यानग्निरन्तिका॒दनुविद्वान्वितावति २२६५

अविः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं क्रव्यादपि चन्द्रं त आहुः ।
माषाः पिष्टा भागधेयं ते हव्य॒मरण्यान्या गह्वरं सचस्व २२६६

इषीकां जरतीमिष्ट्वा तिल्पिञ्जं दण्डनं नडम् ।
तमिन्द्र इध्मं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ २२६७

प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान् पन्थां वि ह्याविवेश ।
परामीषामसून्दिदेश दीर्घेणायुषा समिमान् त्सृजामि २२६८

(अथर्व० १९ । ५५ । १-६ ।। त्रिष्टुप्; २२७० आस्तारपंक्तिः;२२७३ त्र्यवसाना पंचपदा पुरस्ताज्ज्योतिष्मती।)

रात्रिंरात्रिमप्रयातं भरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमस्मै ।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम २२६९

या ते वसोर्वात इषुः सा त एषा तया नो मृड ।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम २२७०

सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता ।
वसोर्वसोर्वसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम २२७१

प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता ।
वसोर्वसोर्वसुदान एधी॒न्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम २२७२

अपश्चा दग्धान्नस्य भूयासम् । अन्नादायान्नपतये रुद्राय नमो अग्नये ।
सभ्यः सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः २२७३

त्वामिन्द्रा पुरुहूत विश्वमायुर्व्यश्नवत् ।
अहरहर्बलिमित् ते हरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमग्ने २२७४

(अथर्व० कां०१. सू० २५, मं० १-४ । भृग्वङ्गिराः । २२७५ त्रिष्टुप् २२७६-७७ विराड्गर्भा, २२७८ पुरोऽनुष्टुप् ।)

यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि ।
तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् २२७५

यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः शकल्येषि यदि वा ते जनित्रम् ।
ह्रूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् २२७६

यदि शोको यदि वाभिशोको यदि वा राज्ञो वरुणस्यासि पुत्रः ।
हूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् २२७७
नमः शीताय तक्मने नमो रूराय शोचिषे कृणोमि ।
यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने २२७८

(अथर्व० २ । ३५ । १ ॥ अङ्गिराः । त्रिष्टुप् ।)

ये भक्षयन्तो न वसून्यानृधु र्यानग्नयो अन्वतप्यन्त धिष्ण्याः ।
या तेषामवया दुरिष्टिः स्विष्टिं नस्तां कृणवद् विश्वकर्मा २२७९

(अथर्व० ४ । ३९ । १, २, ९, १० ॥ अङ्गिराः । २२८० त्रिपदा महाबृहती, २२८१ संस्तारपङ्क्तिः; । २२८२-८३ त्रिष्टुप् ।)

पृथिव्यामग्नये समनमन्त्स आर्ध्नोत् ।
यथा पृथिव्यामग्नये समनम न्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु २२८०
पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः । सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा २२८१
अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ ।
नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् २२८२
हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
सप्तास्यानि तव जातवेद स्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् २२८३

(अथर्व० १ । ७ । १-७ ॥ चातनः । अनुष्टुप्, २२८८ त्रिष्टुप् ।)

स्तुवानमग्न आ वह यातुधानं किमीदिनम् । त्वं हि देव वन्दितो हन्ता दस्योर्बभूविथ २२८४
आज्यस्य परमेष्ठिन् जातवेदस्तनूवशिन् । अग्ने तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय २२८५
वि लपन्तु यातुधाना अत्त्रिणो ये किमीदिनः । अथेदमग्ने नो हवि रिन्द्रश्च प्रति हर्यतम् २२८६
अग्निः पूर्व आ रभतां प्रेन्द्रो नुदतु बाहुमान् । ब्रवीतु सर्वो यातुमान् अयमस्मीत्येत्य २२८७
पश्याम ते वीर्यं जातवेदः प्र णो ब्रूहि यातुधानान्नृचक्षः ।
त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उपेदम् २२८८
आ रभस्व जातवेदो ऽस्माकार्थाय जज्ञिषे । दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय २२८९
त्वमग्ने यातुधानान् उपबद्धाँ इहा वह । अथैषामिन्द्रो वज्रेणा अपि शीर्षाणि वृश्चतु २२९०

(अथर्व० १ । ८ । ३-४ ॥ २२९१ अनुष्टुप्, २२९२ बार्हतगर्भा त्रिष्टुप् ।

यातुधानस्य सोमप जहि प्रजां नयस्व च । नि स्तुवानस्य पातय परमक्ष्युतावरम् २२९१

यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुहा सतामत्रिणां जातवेदः ।
तांस्त्वं ब्रह्मणा वावृधानो जह्येषां शततर्हमग्ने २२९२

(अथर्व० १ । २८ । १-२ । अनुष्टुप् ।)

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामीवचातनः । दहन्नप द्वयाविनो यातुधानान् किमीदिनः २२९३
प्रति दह यातुधानान् प्रति देव किमीदिनः । प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः २२९४

(अथर्व० ४ । ३६ । १-१० ॥ अनुष्टुप्, २३०३ भुरिक् ।)

तान् त्सत्यौजाः प्र दह—त्वग्निर्वैश्वानरो वृषा । यो नो दुरस्याद्दिप्साच्चाथो यो नो अरातियात् २२९५
यो नो दिप्सददिप्सतो दिप्सतो यश्च दिप्सति । वैश्वानरस्य दंष्ट्रयो—रग्नेरपि दधामि तम् २२९६
य आगरे मृगयन्ते प्रतिक्रोशेऽमावास्ये। क्रव्यादो अन्यान् दिप्सतः सर्वांस्तान् त्सहसा सहे २२९७
सहे पिशाचान् त्सह—सैषां द्रविणं ददे । सर्वान् दुरस्यतो हन्मि सं म आकूतिर्ऋध्यताम् २२९८
ये देवास्तेन हासन्ते सूर्येण मिमते जवम् । नदीषु पर्वतेषु ये सं तैः पशुभिर्विदे २२९९

तपनो अस्मि पिशाचानां व्याघ्रो गोमतामिव ।
श्वानः सिंहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दन्ते न्यञ्चनम् २३००

न पिशाचैः सं शक्नोमि न स्तेनैर्न वनर्गुभिः । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमहं ग्राममाविशे २३०१
यं ग्राममाविशत इदमुग्रं सहो मम । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति न पापमुप जानते २३०२
ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिनं मशका इव । तानहं मन्ये दुर्हितान् जने अल्पशयूनिव २३०३
अभि तं निर्ऋतिर्धत्ताम् अश्वमिवाश्वाभिधान्या । मल्वो यो मह्यं क्रुध्यति स उ पाशान्न मुच्यते २३०४

(अथर्व० ५ । २९ । १-१५ । त्रिष्टुप्; २३०७ त्रिपदा विराण्नाम गायत्री; २३०९ पुरोऽतिजगती विराड्जगती
२३१५-१८ अनुष्टुप् (२३१५ भुरिक्; २३१७ चतुष्पदा पराबृहती ककुम्मती ।)

पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदो ऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम् ।
त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्वं पुरुषं सनेम २३०५

तथा तदग्ने कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः ।
यो नो दिदेव यतमो जघास यथा सो अस्य परिधिष्पताति २३०६

यथा सो अस्य परिधिष्पताति तथा तदग्ने कृणु जातवेदः ।
विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः २३०७

❀

अक्ष्यौ३ नि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि तृन्द्धि प्र दतो मृणीहि ।
पिशाचो अस्य यतमो जघास अग्ने यविष्ठ प्रति तं शृणीहि २३०८
यदस्य हृतं विहृतं यत् पराभृतम् आत्मनो जग्धं यतमत् पिशाचैः ।
तदग्ने विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे मांसमसुमेरयामः २३०९
आमे सुपक्वे शबले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने ददम्भ ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३ऽयमस्तु २३१०
क्षीरे मा मन्थे यतमो ददम्भा—कृष्टपच्ये अशने धान्ये३ यः ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३ऽयमस्तु २३११
अपां मा पाने यतमो ददम्भ क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३ऽयमस्तु २३१२
दिवा मा नक्तं यतमो ददम्भ क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३ऽयमस्तु २३१३
क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः ।
तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु च्छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः २३१४

सनादग्ने मृणसि यातुधानान्० (ऋ० १० । ८७ । १९) (१८४६)

समाहर जातवेदो यद्धृतं यत् पराभृतम् । गात्राण्यस्य वर्धन्ताम् अंशुरिवा प्यायतामयम् २३१५
सोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम् । अग्ने विरप्शिनं मेध्यम् अयक्ष्मं कृणु जीवतु २३१६
एतास्ते अग्ने समिधः पिशाचजम्भनीः । तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः २३१७
तार्ष्टाघीरग्ने समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषा । जहातु क्रव्याद् रूपं यो अस्य मांसं जिहीर्षति २३१८

(अथर्व० २ । ६ । १-५ ॥ शौनकः । त्रिष्टुप् २३२२ चतुष्पदार्षी पङ्क्तिः, २३२३ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।)

समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या ।
सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि प्रदिशश्चतस्रः २३१९
सं चेध्यस्वाग्ने प्र च वर्धयेमम् उच्चै तिष्ठ महते सौभगाय ।
मा ते रिषन्नुपसत्तारो अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये २३२०
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवा नः ।
सपत्नहाग्ने अभिमातिजिद् भव स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् २३२१

क्षत्रेणाग्ने स्वेन सं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधा यतस्व।
सजातानां मध्यमेष्ठा राज्ञाम् अग्ने विहव्यो दीदिहीह २३२२
अति निहो अति स्रिधो ऽत्यचित्तीरति द्विषः।
विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वमथास्मभ्यं सहवीरं रयिं दाः २३२३

(अथर्व० ६।१०८।४। अनुष्टुप्।)

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः। तया मामद्य मेधया ऽग्ने मेधाविनं कृणु २३२४

(अथर्व० ७।८२(८७)।१-६॥ त्रिष्टुप्, २३२५ ककुम्मती बृहती, २३२६ जगती।)

मय्यग्रे अग्निं गृह्णामि सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन।
मयि प्रजां मय्यायुर्दधामि स्वाहा मय्यग्निम् २३२५
इहैवाग्ने अधि धारया रयिं मा त्वा नि क्रन् पूर्वचित्ता निकारिणः।
क्षत्रेणाग्ने सुयममस्तु तुभ्यम् उपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः २३२६
अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन् वहानि प्रथमो जातवेदाः।
अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीन् अनु द्यावापृथिवी आ विवेश २३२७
प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यत् प्रत्यहानि प्रथमो जातवेदाः।
प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन् प्रति द्यावापृथिवी आ ततान २३२८
घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।
घृतं ते देवीर्नप्त्य आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने २३२९

(अथर्व० ४।२३।१-७। मृगारः। त्रिष्टुप्, २३३१ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती, २३३३ अनुष्टुप्, २३३५ प्रस्तारपङ्क्तिः।)

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते।
विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः २३३०
यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन्।
एवा देवेभ्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः २३३१
यामन् यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन् कर्मन्नाभगम्।
अग्निमीडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः २३३२
सुजातं जातवेदसम् अग्निं वैश्वानरं विभुम्।
हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः २३३३

येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः ।
येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः २३३४

येन देवा अमृतमन्वविन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन् ।
येन देवाः स्वराभरन् त्स नो मुञ्चत्वंहसः २३३५

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्जातं जनितव्यं च केवलम् ।
स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः २३३६

(अथर्व० ६ । ४९ १-२ ॥ गार्ग्यः । २३३७ अनुष्टुप्, २३३८ जगती ।)

नहि ते अग्ने तन्वः क्रूरमानंश मर्त्यः ।
कपिर्बभस्ति तेजनं स्वं जरायु गौरिव २३३७

मेष इव वै सं च वि चोर्वच्यसे यदुत्तरद्रावुपरश्च खादतः ।
शीर्ष्णा शिरोऽप्ससाप्सो अर्दयन्न् अंशून् बभस्ति हरितेभिरासभिः २३३८

(अथर्व० २ । ३६ । १, ३ । पतिवेदनः । २३३९ त्रिष्टुप्, २३४० भुरिक् ।)

आ नो अग्ने सुमतिं संभलो गमे—दिमां कुमारीं सह नो भगेन ।
जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गु—रोषं पत्या सौभगमस्त्वस्यै २३३९

इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।
सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु २३४०

(अथर्व० २० । २ । २। गृत्समदो मेधातिथिर्वा । विराड् गायत्री ।)

अग्निराग्नीध्रात् सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु २३४१

(अथर्व० ४ । ४० । १ । शुक्रः । त्रिष्टुप् ।)

ये पुरस्ताज्जुह्वति जातवेदः प्राच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
अग्निमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि २३४२

(अथर्व० ३ । ३१ । १, ६ । ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।)

वि देवा जरसावृतन् वि त्वमग्ने अरात्या । व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा २३४३

अग्निः प्राणान् त्सं दधाति चन्द्रः प्राणेन संहितः ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा २३४४

(अथर्व० ५ । २६ । १ । द्विपदार्षी उष्णिक् ।)

यजूंषि यज्ञे समिधः स्वाहा ऽग्निः प्रविद्वानिह वो युनक्तु २३४५

(अथर्व० ६ । ७१ । १–३ । जगती, २३४८ त्रिष्टुप् ।

यदन्नमद्मि बहुधा विरूपं हिरण्यमश्वमुत गामजामविम् ।
यदेव किं च प्रतिजग्रहाहम् अग्निष्टद्धोता सुहुतं कृणोतु २३४६

यन्मा हुतमहुतमाजगाम दत्तं पितृभिरनुमतं मनुष्यैः ।
यस्मान्मे मन उदिव रारजीत्य ग्निष्टद्धोता सुहुतं कृणोतु २३४७

यदन्नमद्म्यनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नुत संगृणामि ।
वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मह्यं मधुमदस्त्वन्नम् २३४८

(अथर्व० १९ । ६५ । १ । जगती ।)

हरिः सुपर्णो दिवमारुहोऽर्चिषा ये त्वा दिप्सन्ति दिवमुत्पतन्तम् ।
अव तां जहि हरसा जातवेदो ऽबिभ्यदुग्रोऽर्चिषा दिवमा रोह सूर्य २३४९

(अथर्व० १९ । ६६ । १ । अति जगती ।)

अयोजाला असुरा मायिनो ऽयस्मयैः पाशैरङ्किनो ये चरन्ति ।
तांस्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रऋष्टिः सपत्नान् प्रमृणन् पाहि वज्रः २३५०

(अथर्व० १९ । ६४ । १–४ ॥ अनुष्टुप् ।)

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे । स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु २३५१
इध्मेन त्वा जातवेदः समिधा वर्धयामसि। तथा त्वमस्मान् वर्धय प्रजया च धनेन च२३५२
यदग्ने यानि कानि चि दा ते दारूणि दध्मसि। सर्वं तदस्तु मे शिवं तज्जुषस्व यविष्ठ्य २३५३
एतास्ते अग्ने समिध स्त्वमिद्धः समिद्भव । आयुरस्मासु धेह्य मृतत्वमाचार्याय २३५४

(अथर्व० ३ । २१ । १—१० । वसिष्ठः । त्रिष्टुप्, २३५५ पुरोनुष्टुप्; २३५६–५७, २३६२ भुरिक्; २३५९ जगती, २३६० उपरिष्टाद्विराड्बृहती; २३६१ विराड्गर्भा, २३६३ निचृदनुष्टुप्; २३६४ अनुष्टुप् ।)

ये अग्नयो अप्स्व१न्तर्ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु ।
य आविवेशोषधीर्यो वनस्पतीं स्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५५

यः सोमे अन्तर्यो गोष्वन्तर्य आविष्टो वयःसु यो मृगेषु ।
य आविवेश द्विपदो यश्चतुष्पद स्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५६

य इन्द्रेण सरथं याति देवो वैश्वानर उत विश्वद[illegible] ।
यं जोहवीमि पृतनासु सासहिं तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५७

यो देवो विश्वाद्यमु काममाहु— र्यं दातारं प्रतिगृह्णन्तमाहुः ।
यो धीरः शक्रः परिभूरदाभ्यस् तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५८

यं त्वा होतारं मनसाभि संविदुस् त्रयोदश भौवनाः पञ्च मानवाः ।
वर्चोधसे यशसे सूनृतावते तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५९

उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।
वैश्वानरज्येष्ठेभ्यस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३६०

दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं ये विद्युतमनुसंचरन्ति ।
ये दिक्ष्व१न्तर्ये वाते अन्तस् तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३६१

हिरण्यपाणिं सवितारमिन्द्रं बृहस्पतिं वरुणं मित्रमग्निम् ।
विश्वान् देवानङ्गिरसो हवामह इमं क्रव्यादं शमयन्त्वग्निम् २३६२

शान्तो अग्निः क्रव्याच् छान्तः पुरुषरेषणः ।
अथो यो विश्वदाव्य१स् तं क्रव्यादमशीशमम् २३६३

ये पर्वताः सोमपृष्ठा आप उत्तानशीवरीः ।
वातः पर्जन्य आदग्निस् ते क्रव्यादमशीशमन् २३६४

(अथर्व० ७। १०९ (११४)। १–७। बादरायणिः। अनुष्टुप्, २३६५ विराड् पुरस्ताद्बृहती, २३६६-६७, २३६९-७० त्रिष्टुप्)

इदमुग्राय बभ्रवे नमो यो अक्षेषु तनूवशी ।
घृतेन कलिं शिक्षामि स नो मृडातीदृशे २३६५

घृतमप्सराभ्यो वह त्वमग्ने पांसूनक्षेभ्यः सिकता अपश्च ।
यथाभागं हव्यदातिं जुषाणा मदन्ति देवा उभयानि हव्या २३६६

अप्सरसः सधमादं मदन्ति हविर्धानमन्तरा सूर्यं च ।
ता मे हस्तौ सं सृजन्तु घृतेन सपत्नं मे कितवं रन्धयन्तु २३६७

आदिनवं प्रतिदीव्ने घृतेनास्माँ अभि क्षर ।
वृक्षमिवाशन्या जहि यो अस्मान् प्रतिदीव्यति २३६८

यो नो द्युवे धनमिदं चकार यो अक्षाणां ग्लहनं शेषणं च ।
स नो देवो हविरिदं जुषाणो गन्धर्वेभिः सधमादं मदेम २३६९

संवसव इति वो नामधेयम् उग्रंपश्या राष्ट्रभृतो ह्य१क्षाः ।
तेभ्यो व इन्दवो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम् २३७०

देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदूषिम । अक्षान् यद् बभ्रूनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे २३७१

(अथर्व० ६ । ४७ । १ । अङ्गिराः प्रचेताः । त्रिष्टुप् ।)

अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद् विश्वशंभूः ।
स नः पावको द्रविणे दधातु आयुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम २३७२

(अथर्व० ७ । ६२ (६४) । १ । मरीचिः काश्यपः । जगती ।)

अयमग्निः सत्पतिर्वृद्धवृष्णो रथीव पत्तीनजयत् पुरोहितः ।
नाभा पृथिव्यां निहितो दविद्युतद् अधस्पदं कृणुतां ये पृतन्यवः २३७३

(अथर्व० ७ । ६३ (६५) । १ । जातवेदाः । जगती ।)

पृतनाजितं सहमानमग्निमुक्थैर् हवामहे परमात् सधस्थात् ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद् देवोऽति दुरितान्यग्निः । २३७४

(अथर्व० ६ । ३५ । १-३ । कौशिकः । गायत्री ।)

वैश्वानरो न ऊतय आ प्र यातु परावतः । अग्निर्नः सुष्टुतीरुप २३७५
वैश्वानरो न आगमद् इमं यज्ञं सजूरुप । अग्निरुक्थेष्वंहसु २३७६
वैश्वानरोऽङ्गिरसां स्तोममुक्थं च चाक्लृपत् । ऐषु द्युम्नं स्वर्यमत् २३७७

(अथर्व० ६ । ११७ । १-३ । त्रिष्टुप् ।)

अपमित्यमप्रतीत्तं यदस्मि यमस्य येन बलिना चरामि ।
इदं तदग्ने अनृणो भवामि त्वं पाशान् विचृतं वेत्थ सर्वान् २३७८

इहैव सन्तः प्रति दद्म एनज् जीवा जीवेभ्यो नि हराम एनत् ।
अपमित्य धान्यं१ यज्जघसाहम् इदं तदग्ने अनृणो भवामि २३७९

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम ।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम २३८०

(अथर्व० ६। ११८। १-३। त्रिष्टुप्)

यद्धस्ताभ्यां चकृम किल्बिषाणि अक्षाणां गत्नुमुपलिप्समानाः ।
उग्रंपश्ये उग्रजितौ तदद्य अप्सरसावनु दत्तामृणं नः २३८१
उग्रंपश्ये राष्ट्रभृत् किल्बिषाणि यदक्षवृत्तमनु दत्तं न एतत् ।
ऋणान्नो नर्णमेर्त्समानो यमस्य लोके अधिरज्जुरायत् । २३८२
यस्मा ऋणं यस्य जायामुपैमि यं याचमानो अभ्यैमि देवाः ।
ते वाचं वादिषुर्मोत्तरां मद्देवपत्नी अप्सरसावधीतम् २३८३

(अथर्व० ६। ११९। १-३। त्रिष्टुप्।)

यददीव्यन्नृणमहं कृणोमि अदास्यन्नग्न उत संगृणामि ।
वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् २३८४
वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्यृणं संगरो देवतासु ।
स एतान् पाशान् विचृतं वेद सर्वान् अथ पक्केन सह सं भवेम २३८५
वैश्वानरः पविता मा पुनातु यत् संगरमभिधावाम्याशाम् ।
अनाजानन् मनसा याचमानो यत् तत्रैनो अप तत् सुवामि २३८६

(अथर्व० ६। १२१। १, २, ४। २३८७, २३३८, त्रिष्टुप्, २३८९, २३९० अनुष्टुप्।)

विषाणा पाशान् वि ष्याध्यस्मद् य उत्तमा अधमा वारुणा ये ।
दुष्वप्न्यं दुरितं नि ष्वास्मद् अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् २३८७
यद् दारुणि बध्यसे यच्च रज्ज्वां यद् भूम्यां बध्यसे यच्च वाचा ।
अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निर् उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् २३८८
वि जिहीष्व लोकं कृणु बन्धान्मुञ्चासि बद्धकम् ।
योन्या इव प्रच्युतो गर्भः पथः सर्वाँ अनु क्षिय २३८९

(अथर्व० ६। ७६। १-४ कबन्धः। अनुष्टुप्, २३९२ ककुम्मती।)

य एनं परिषीदन्ति समादधति चक्षसे । संप्रेद्धो अग्निर्जिह्वाभिर् उदेतु हृदयादधि २३९०
अग्नेः सांतपनस्याहं आयुषे पदमा रभे । अद्धातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यतः २३९१
यो अस्य समिधं वेद क्षत्रियेण समाहिताम् । नाभिह्वारे पदं नि दधाति स मृत्यवे २३९२

नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो न सन्नाँ अव गच्छति। अग्नेर्यः क्षत्रियो विद्वान् नाम गृह्णात्यायुषे २३९३

(अथर्व० ६। ७७। १-३। अनुष्टुप्।)

अस्थाद् द्यौरस्थात् पृथिवि अस्थाद् विश्वमिदं जगत।
आस्थाने पर्वता अस्थु स्थाम्न्यश्वाँ अतिष्ठिपम् २३९४
य उदानट् परायणं य उदानण्न्यायनम्। आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे २३९५
जातवेदो नि वर्तय शतं ते सन्त्वावृतः। सहस्रं त उपावृतस् ताभिर्नः पुनरा कृधि २३९६

अग्निसहचारी देवगणः

१२ वैश्वानरोऽग्निः सूर्यश्च।

(ऋ० १०। ८८। १-१९) मूर्धन्वानाङ्गिरसो, वामदेव्यो वा। सौर्य-वैश्वानरोऽग्निः। त्रिष्टुप्।)

हविष्पान्तमजरं स्वर्विदि दिविस्पृश्याहुतं जुष्टमग्नौ।
तस्य भर्मणे भुवनाय देवा धर्मणे कं स्वधया पप्रथन्त २३९७
गीर्णं भुवनं तमसापगूळ्हम् आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ।
तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापो ऽरणयन्नोषधीः सख्ये अस्य २३९८
देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभिर् अग्निं स्तोषाण्यजरं बृहन्तम्।
यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमाम् आततान रोदसी अन्तरिक्षम् २३९९
यो होतासीत् प्रथमो देवजुष्टो यं समाञ्जन्नाज्येना वृणानाः।
स पतत्रीत्वरं स्था जगद् यत् श्वात्रमग्निरकृणोज्जातवेदाः २४००
यज्जातवेदो भुवनस्य मूर्धन् अतिष्ठो अग्ने सह रोचनेन।
तं त्वाहेम मतिभिर्गीर्भिरुक्थैः स यज्ञियो अभवो रोदसिप्राः २४०१
मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्निस् ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन्।
मायाम् तु यज्ञियानामेताम् अपो यत् तूर्णिश्चरति प्रजानन् २४०२
दृशेन्यो यो महिना समिद्धो ऽरोचत दिवियोनिर्विभावा।
तस्मिन्नग्नौ सूक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुहवुस्तनूपाः २४०३

*

सूक्तवाकं प्रथममादिदग्निम् आदिद्धविरजनयन्त ०　।
स एषां यज्ञो अभवत् तनूपास् तं द्यौर्वेद तं पृथिवी तमापः　२४०४

यं देवासोऽजनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा ।
सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमाम् ऋजूयमानो अतपन्महित्वा　२४०५

स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्निम् अजीजनञ्छक्तिभी रोदसिप्राम् ।
तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः　२४०६

यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम् ।
यदा चरिष्णू मिथुनावभूताम् आदित् प्रापश्यन् भुवनानि विश्वा　२४०७

विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन् ।
आ यस्ततानोषसो विभातीर् अपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन्　२४०८

वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो ऽग्निं देवा अजनयन्नजुर्यम् ।
नक्षत्रं प्रत्नममिनच्चरिष्णु यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम्　२४०९

वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः ।
यो महिम्ना परिबभूवोर्वी उतावस्तादुत देवः परस्तात्　२४१०

द्वे स्रुती अशृणवं पितॄणाम् अहं देवानामुत मर्त्यानाम् ।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत् समेति यदन्तरा पितरं मातरं च　२४११

द्वे समीची बिभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम् ।
स प्रत्यङ् विश्वा भुवनानि तस्थौ अप्रयुच्छन् तरणिर्भ्राजमानः　२४१२

यत्रा वदेते अवरः परश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद ।
आ शेकुरित् सधमादं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत्　२४१३

कत्यग्नयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्यु स्विदापः ।
नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विद्मने कम्　२४१४

यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपर्ण्यो३ वसते मातरिश्वः ।
तावद् दधात्युप यज्ञमायन् ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन्　२४१५

१३ रक्षोहाऽग्निः ।

(ऋ० १० । १६२ । १-६ । रक्षोहा= (गर्भस्य दोषनिवारकः) (अत्रानुसंधेया मन्त्राः १८१३-१८६१) रक्षोहा ब्राह्मः । अनुष्टुप् ।)

ब्रह्म॑णाग्निः सं॑विदा॒नो र॑क्षो॒हा बा॑धतामि॒तः ।
अमी॑वा॒ यस्ते॒ गर्भं॑ दु॒र्णामा॒ योनि॑मा॒शये॑ २४१६

यस्ते॒ गर्भ॒ममी॑वा दु॒र्णामा॒ योनि॑मा॒शये॑ ।
अ॒ग्निष्टं ब्रह्म॑णा स॒ह निष्क्र॒व्याद॑मनीनशत् २४१७

यस्ते॒ हन्ति॑ प॒तय॑न्तं निष॒त्स्नुं यः स॑रीसृ॒पम् ।
जा॒तं यस्ते॒ जिघां॑सति॒ तमि॒तो ना॑शयामसि २४१८

यस्त॑ ऊ॒रू वि॒हर॑ति अन्त॒रा दम्प॑ती॒ शये॑ ।
योनिं॒ यो अ॒न्तरा॒रेळ्हि॒ तमि॒तो ना॑शयामसि २४१९

यस्त्वा॒ भ्राता॒ पति॑र्भू॒त्वा जा॒रो भू॒त्वा नि॒पद्य॑ते ।
प्र॒जां यस्ते॒ जिघां॑सति॒ तमि॒तो ना॑शयामसि २४२०

यस्त्वा॒ स्वप्ने॑न॒ तम॑सा मोह॒यि॒त्वा नि॒पद्य॑ते ।
प्र॒जां यस्ते॒ जिघां॑सति॒ तमि॒तो ना॑शयामसि २४२१

१४ अपां-न-पादग्निः ।

(ऋ० २ । ३५ । १-१५ । गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।)

उपे॑मसृक्षि वाज॒युर्व॑च॒स्यां चनो॑ दधीत ना॒द्यो गिरो॑ मे ।
अ॒पां नपा॑दाशु॒हेमा॑ कु॒वित् स सु॒पेश॑सस्करति॒ जोषि॑ष॒द्धि २४२२

इ॒मं स्व॑स्मै हृ॒द आ सुत॑ष्टं मन्त्रं॑ वोचेम कु॒विद॑स्य॒ वेद॑त् ।
अ॒पां नपा॑दसु॒र्य॑स्य म॒ह्ना विश्वा॑न्य॒र्यो भुव॑ना जजान २४२३

सम॒न्या यन्त्युप॑ यन्त्य॒न्याः स॑मा॒नमू॒र्वं न॒द्यः॑ पृणन्ति ।
तमू॒ शुचिं॒ शुच॑यो दीदि॒वांस॑म् अ॒पां नपा॑तं॒ परि॑ तस्थु॒रापः॑ २४२४

तमस्मे॑रा युव॒तयो॒ युवा॑नं मर्मृ॒ज्यमा॑ना॒ः परि॑ य॒न्त्यापः॑ ।
स शु॒क्रेभि॒ः शिक्व॑भी रे॒वद॒स्मे दी॒दाया॑नि॒ध्मो घृ॒तनि॑र्णिग॒प्सु २४२५

अस्मै तिस्रो अव्यथ्याय नारीर् देवाय देवीर्दिधिषन्त्यन्नम् ।
कृता इवोप हि प्रसर्स्रे अप्सु स पीयूषं धयति पूर्वसूनाम् २४२६

अश्वस्यात्र जनिमास्य च स्वर् द्रुहो रिषः संपृचः पाहि सूरीन् ।
आमासु पूर्षु परो अप्रमृष्यं नारातयो वि नशन्नानृतानि २४२७

स्व आ दमे सुदुघा यस्य धेनुः स्वधां पीपाय सुभ्वन्नमत्ति ।
सो अपां नपादूर्जयन्नप्स्वन्तर् वसुदेयाय विधते वि भाति २४२८

यो अप्स्वा शुचिना दैव्येन ऋतावाजस्र उर्विया विभाति ।
वया इदन्या भुवनान्यस्य प्र जायन्ते वीरुधश्च प्रजाभिः २४२९

अपां नपादा ह्यस्थादुपस्थं जिह्मानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः ।
तस्य ज्येष्ठं महिमानं वहन्तीर् हिरण्यवर्णाः परि यन्ति यह्वीः २४३०

हिरण्यरूपः स हिरण्यसंदृग् अपां नपात्सेदु हिरण्यवर्णः ।
हिरण्ययात् परि योनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै २४३१

तदस्यानीकमुत चारु नाम अपीच्यं वर्धते नप्तुरपाम् ।
यमिन्धते युवतयः समित्था हिरण्यवर्णं घृतमन्नमस्य २४३२

अस्मै बहूनामवमाय सख्ये यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः ।
सं सानु मार्ज्मि दिधिषामि बिल्मैर् दधाम्यन्नैः परि वन्द ऋग्भिः २४३३

स ईं वृषाजनयत् तासु गर्भं स ईं शिशुर्धयति तं रिहन्ति ।
सो अपां नपादनभिम्लातवर्णो ऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष २४३४

अस्मिन् पदे परमे तस्थिवांसम् अध्वस्मभिर्विश्वहा दीदिवांसम् ।
आपो नप्त्रे घृतमन्नं वहन्तीः स्वयमत्कैः परि दीयन्ति यह्वीः २४३५

अयांसमग्ने सुक्षितिं जनाय अयांसमु मघवद्भ्यः सुवृक्तिम् ।
विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः २४३६

१५ अग्नीन्द्रादयः ।

(ऋ० ७ । ४१ । १ । वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नीन्द्रमित्रावरुणाश्विभगपूषब्रह्मणस्पतिसोमरुद्राः । जगती ।)

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम २४३७

१६ अग्निर्मरुतश्च ।

(ऋ० १ । १९ । १-९ । मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।)

प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे । मरुद्भिरग्न आ गहि २४३८
नहि देवो न मर्त्यो महस्तव क्रतुं परः । मरुद्भिरग्न आ गहि २४३९
ये महो रजसो विदुर् विश्वे देवासो अद्रुहः । मरुद्भिरग्न आ गहि २४४०
ये उग्रा अर्कमानृचुर् अनाधृष्टास ओजसा । मरुद्भिरग्न आ गहि २४४१
ये शुभ्रा घोरवर्पसः सुक्षत्रासो रिशादसः । मरुद्भिरग्न आ गहि २४४२
ये नाकस्याधि रोचने दिवि देवास आसते । मरुद्भिरग्न आ गहि २४४३
य ईङ्खयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमर्णवम् । मरुद्भिरग्न आ गहि २४४४
आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस् तिरः समुद्रमोजसा । मरुद्भिरग्न आ गहि २४४५
अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सोम्यं मधु । मरुद्भिरग्न आ गहि २४४६

(ऋ० ८ । १०३ । १४ । सोभरिः काण्वः । अनुष्टुप् ।)

आग्ने याहि मरुत्सखा रुद्रेभिः सोमपीतये ।
सोभर्या उप सुष्टुतिं मादयस्व स्वर्णरे २४४७

१७ अग्निमित्रावरुणादयः ।

(ऋ० १ । ३५ । १ । हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अग्निर्मित्रावरुणौ रात्रिः सविता च । जगती ।)

ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे ।
ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमूतये २४४८

१८ अग्निर्वरुणश्च ।

(ऋ० ४ । १ । २-५ । वामदेवो गोतमः । त्रिष्टुप्, २४४९ अति जगती, २४५० धृतिः ।)

स भ्रातरं वरुणमग्न आ ववृत्स्व देवाँ अच्छा सुमती यज्ञवनसं ज्येष्ठं यज्ञवनसम् ।
ऋतावानमादित्यं चर्षणीधृतं राजानं चर्षणीधृतम् २४४९
सखे सखायमभ्या ववृत्स्वाशुं न चक्रं रथ्येव रंह्यास्मभ्यं दस्म रंह्या ।
अग्ने मृळीकं वरुणे सचा विदो मरुत्सु विश्वभानुषु ।
तोकाय तुजे शुशुचान शं कृध्यस्मभ्यं दस्म शं कृधि २४५०

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळो॰
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् २४५१
स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि २४५२

१९ अग्नाविष्णू ।

(अथर्व कां० ७ । २९ (३०) । १-२ । मेधातिथिः । त्रिष्टुप् ।)

अग्नाविष्णू महि तद्वां महित्वं पाथो घृतस्य गुह्यस्य नाम ।
दमेदमे सप्त रत्ना दधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमा चरण्यात् २४५३
अग्नाविष्णू महि धाम प्रियं वां वीथो घृतस्य गुह्या जुषाणौ ।
दमेदमे सुष्टुत्या वावृधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमुच्चरण्यात् २४५४

२० अग्निसूर्यौ ।

(ऋ० ८ । ५६ । (८) ५ । वालखिल्यसूक्तम् । पृषध्रः काण्वः । पंक्तिः ।)

अचेत्यग्निश्चिकितुर् हव्यवाट् स सुमद्रथः ।
अग्निः शुक्रेण शोचिषा बृहत्सूरो अरोचत दिवि सूर्यो अरोचत २४५५

२१ (केशिनः)—अग्निः सूर्यो वायुश्च ।

(ऋ० १ । १६४ । ४४ दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।)

त्रयः केशिन ऋतुथा वि चक्षते संवत्सरे वपत एक एषाम् ।
विश्वमेको अभि चष्टे शचीभिर् ध्राजिरेकस्य ददृशे न रूपम् २४५६

२२ अग्निसूर्यानिलाः ।

(ऋ० ८ । १८ । ९ इरिम्बिठिः काण्वः । उष्णिक् ।)

शमग्निरग्निभिः करच् छं नस्तपतु सूर्यः । शं वातो वातु अरपा अप स्रिधः २४५७

अग्निसूर्यवायवः ।

(ऋ० १० । १३६ । १-७ ॥ २४५८ जूतिः, २४५९ वातजूतिः, २४६० विप्रजूतिः, २४६१ वृषाणकः, २४६२ करिक्रतः २४६ एतशः, २४६४ ऋष्यश्रृङ्गः (एते वातरशना मुनयः) । (केशिनः=) अग्नि-सूर्य-वायवः । नुष्टुप्)

केश्यग्निं केशी विषं केशी बिभर्ति रोदसी ।
केशी विश्वं स्वर्दृशे केशीदं ज्योतिरुच्यते २४५८

मुनयो वातरशनाः पिशङ्गा वसते मला ।
वातस्यानु ध्राजिं यन्ति यद् देवासो अविक्षत २४५९

उन्मदिता मौनेयेन वाताँ आ तस्थिमा वयम् ।
शरीरेदस्माकं यूयं मर्तासो अभि पश्यथ २४६०

अन्तरिक्षेण पतति विश्वा रूपावचाकशत् ।
मुनिर्देवस्यदेवस्य सौकृत्याय सखा हितः २४६१

वातस्याश्वो वायोः सखा अथो देवेषितो मुनिः ।
उभौ समुद्रावा क्षेति यश्च पूर्व उतापरः २४६२

अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणे चरन् ।
केशी केतस्य विद्वान् त्सखा स्वादुर्मदिन्तमः २४६३

वायुरस्मा उपामन्थत् पिनष्टि स्मा कुनन्नमा ।
केशी विषस्य पात्रेण यद् रुद्रेणापिबत् सह २४६४

अग्नीषोमौ ।

(ऋ० १ । ९३ । १-१२ । गोतमो राहूगणः । २४६५-२४६७ अनुष्टुप्; २४६८-२४७१, २४७६ त्रिष्टुप्; २४७२ जगती ।त्रिष्टुब्वा; २४७३-२४७५ गायत्री ।)

अग्नीषोमाविमं सु मे शृणुतं वृषणा हवम् । प्रति सूक्तानि हर्यतं भवतं दाशुषे मयः २४६५
अग्नीषोमा यो अद्य वाम् इदं वचः सपर्यति । तस्मै धत्तं सुवीर्यं गवां पोषं स्वश्व्यम् २४६६
अग्नीषोमा य आहुतिं यो वां दाशाद्धविष्कृतिम् । स प्रजया सुवीर्यं विश्वमायुर्व्यश्नवत् २४६७

अग्नीषोमा चेति तद् वीर्यं वां यदमुष्णीतमवसं पणिं गाः ।
अवातिरतं बृसयस्य शेषोऽविन्दतं ज्योतिरेकं बहुभ्यः २४६८

युवमेतानि दिवि रोचनानि अग्निश्च सोम सक्रतू अधत्तम् ।
युवं सिन्धूँरभिशस्तेरवद्याद् अग्नीषोमावमुञ्चतं गृभीतान् २४६९
आन्यं दिवो मातरिश्वा जभार अमथ्नादन्यं परि श्येनो अद्रेः ।
अग्नीषोमा ब्रह्मणा वावृधाना उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकम् २४७०
अग्नीषोमा हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यतं वृषणा जुषेथाम् ।
सुशर्माणा स्ववसा हि भूतम् अथा धत्तं यजमानाय शं योः २४७१
यो अग्नीषोमा हविषा सपर्याद् देवद्रीचा मनसा यो घृतेन ।
तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् २४७२
अग्नीषोमा सवेदसा सहूती वनतं गिरः । सं देवत्रा बभूवथुः २४७३
अग्नीषोमावनेन वां यो वां घृतेन दाशति । तस्मै दीदयतं बृहत् २४७४
अग्नीषोमाविमानि नो युवं हव्या जुजोषतम् । आ यातमुप नः सचा २४७५
अग्नीषोमा पिपृतमर्वतो न आ प्यायन्तामुस्रिया हव्यसूदः ।
अस्मे बलानि मघवत्सु धत्तं कृणुतं नो अध्वरं श्रुष्टिमन्तम् २४७६

(अथर्व० ६ । ५४ । १-३ । ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।)

इदं तद् युज उत्तरम् इन्द्रं शुम्भाम्यष्टये । अस्य क्षत्रं श्रियं महीं वृष्टिरिव वर्धया तृणम् २४७७
अस्मै क्षत्रमग्नीषोमौ अस्मै धारयतं रयिम् । इमं राष्ट्रस्याभीवर्गे कृणुतं युज उत्तरम् २४७८
सबन्धुश्चासबन्धुश्च यो अस्माँ अभिदासति । सर्वं तं रन्धयासि मे यजमानाय सुन्वते २४७९

(अथर्व० ६ । ५८ । ३ । अथर्वा (यशस्कामः) । अग्निः, इन्द्रः, सोमः । अनुष्टुप् ।)

यशा इन्द्रो यशा अग्निर् यशाः सोमो अजायत ।
यशा विश्वस्य भूतस्य अहमस्मि यशस्तमः २४८०

(अथर्व० ६ । ९३ । ३ । शन्तातिः । अग्निषोमौ वरुणः मरुतः वातपर्जन्यौ । त्रिष्टुप् ।)

त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः ।
अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम २४८१

(अथर्व० ७ । ११४ (११९) । १-२ ॥ भार्गवः । अग्नीषोमौ । अनुष्टुप् ।)

आ ते ददे वक्षणाभ्य आ तेऽहं हृदयाद् ददे ।
आ ते मुखस्य संकाशात् सर्वं ते वर्च आ ददे २४८२
प्रेतो यन्तु व्याध्यः प्रानुध्याः प्रो अशस्तयः ।
अग्नी रक्षस्विनीर्हन्तु सोमो हन्तु दुरस्यतीः २४८३

अग्निदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[२] १।१।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । अग्निः)
स देवाँ एह वक्षति ।
(७०५) ४।८।२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
स देवाँ एह वक्षति ।
[४] १।१।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । अग्निः)
विश्वतः परिभूरसि ।
(१८९२) १।९७।६ (कुत्स आंगिरसः । अग्निः)
विश्वतः परिभूरसि ।
[५] १।१।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । अग्निः)
देवो देवेभिरागमत् ।
(५११) ३।१०।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
अग्निर्देवेभिरागमत् ।
[८] १।१।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । अग्निः)
राजन्तमध्वराणां ।
(३८) १।२७।१ (शुनः शेप आजीगर्तिः । अग्निः)
सम्राजन्तमध्वराणाम् ।
(१०३) १।४५।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
राजन्तमध्वराणाम् ।
८।८।१८ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
राजन्तमध्वराणाम् ।
[१०] १।१२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
अग्निं दूतं वृणीमहे ।
(७०) १।३६।३ प्र त्वा दूतं वृणीमहे ।
(८८) १।४४।३ अद्या दूतं वृणीमहे ।
[१०] १।१२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।
(७०) १।३६।३ (कण्वो घौरः । अग्निः)
प्र त्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
(९१) १।४४।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
होतारं विश्ववेदसम् ।
(११२६) ८।१९।३ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।

[१२] १।१२।३ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
अग्ने देवाँ इहा वह ।
(१९) १।१२।१० (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
अग्ने देवाँ इहा वह ।
(२२) १।१५।४ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
अग्ने देवाँ इहा वह ।
[१३] १।१२।४ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
यदग्ने यासि दूत्यम् । देवैरा सत्सि बर्हिषि ।
(२२१) १।७४।७ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
यदग्ने यासि दूत्यम् ।
(९२४) ५।२६।५ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
देवैरा सत्सि बर्हिषि ।
(१३५६) ८।४४।१४ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
देवैरा सत्सि बर्हिषि ।
[१५] १।१२।६ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
कविर्गृहपतिर्युवा ।
(११७८) ७।१५।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
कविर्गृहपतिर्युवा ।
(१४६३) ८।१०२।१ (प्रयोगो भार्गवः — । अग्निः)
कविर्गृहपतिर्युवा ।
[१६] १।१२।७ कविमग्निमुप स्तुहि ।
१।१३६।६ इन्द्रमग्निमुप स्तुहि ।
[१६] १।१२।७ सत्यधर्माणमध्वरे ।
५।५१।२ सत्यधर्माणो अध्वरम् ।
[१८] १।१२।९ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
तस्मै पावक मृळय ।
(१३७०) ८।४४।२८ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
तस्मै पावक मृळय ।
[१९] १।१२।१० (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
स नः पावक दीदिवः ।
(५१६) ३।१०।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
स नः पावक दीदिहि ।
[१९] १।१२।१०; (१२) १।१२।३; (२२) १।१५।४
अग्ने देवाँ इहा वह ।

[२०] १ । १२ । ११ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
स नः स्तवान आ भर ।
...रयिं वीरवतीमिषम् ।
८ । २४ । ३ (विश्वमना वैयश्वः । इन्द्रः)
स नः स्तवान आ भर रयिं ।
९ । ४० । ५ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
स नः पुनान आ भर रयिं स्तोत्रे सुवीर्यम् ।
९ । ६१ । ६ अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम् ।
[२१] १ । १२ । १२ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।
...इमं स्तोमं जुषस्व नः ।
(१३५६) ८।४४।१४ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।
(१५८८) १० । २१ । ८ (विमद ऐन्द्रः । अग्निः)
अग्ने शुक्रेण शोचिषोरू ।
(१३२५) ८।४३।१६ (विरूप आङ्गिरस । अग्निः)
इमं स्तोमं जुषस्व मे ।
[२२] १ । १५ । ४; (१२) १ । १२ । ३; (१९) १ । १२ । १०
अग्ने देवाँ इहा वह ।
[२८] १ । २६ । १; १ । १४ । ११, **सेमं नो अध्वरं यज ।**
[३१] १ । २६ । ४ (शुनः शेप आजीगर्तिः । अग्निः)
वरुणो मित्रो अर्यमा । सीदन्तु मनुषो यथा ।
१ । ४१ । १ (कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।
४ । ५५ । १० (वामदेवो गौतमः । विश्वेदेवाः)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।
५ । ६७ । ३ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।
८ । १८ । ३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।
८ । २८ । २ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।
८ । ८३ । २ (कुसीदी काण्वः । विश्वेदेवाः)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।
९ । ६४ । २९ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
सीदन्तो वनुषो यथा ।
[३२] १ । २६ । ५ (शुनः शेप आजीगर्तिः । अग्निः)
इमा उ षु श्रुधी गिरः ।

(१०४) १ । ४५ । ५ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
इमा उ षु श्रुधी गिरः ।
(४३३) २ । ६ । १ (सोमाहुतिर्भार्गवः । अग्निः)
इमा उ षु श्रुधी गिरः ।
[३७] १ । २६ । १० (शुनः शेप आजीगर्तिः । अग्निः)
इमं यज्ञमिदं वचः ।
१ । ९१ । १० (गोतमो राहूगणः । सोमः)
इमं यज्ञमिदं वचो । जुजुषाण उपागहि ।
(१६९९) १० । १५० । २ (मृळीको वासिष्ठः । अग्निः)
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि ।
[३८] १ । २७ । १ (शुनः शेप आजीगर्तिः । अग्निः)
सम्राजन्तमध्वराणाम् ।
(८) १।१।८; (१०३) १ । ४५ । ४ **राजन्तमध्वराणां ।**
८ । ८ । १८ **राजन्तावध्वराणां ।**
[५७] १ । ३१ । ८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अग्निः)
यशसं कारुं कृणुहि स्तवानः ।
देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।
९ । ६९ । १० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।
१० । ६७ । १२ (अयास्य आङ्गिरसः । बृहस्पतिः)
देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।
[७०] १ । ३६ । ३ **प्र त्वा दूतं वृणीमहे;**
(१०) १ । १२ । १ **अग्निं दूतं वृणीमहे ।**
(८८) १ । ४४ । ३ **अद्या दूतं वृणीमहे ।**
[७०] १।३६।३; (१०) १ । १२ । १; (९२) १ । ४४ । ७
होतारं विश्ववेदसं ।
[७१] १ । ३६ । ४ **देवासस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
१ । ४० । ५ **यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
७ । ६६ । १२ **यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
७।८२।१०; ८३।१० **अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
८ । १९ । १६ **येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
८ । २६ । ११ **सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
१० । ३६ । १ **द्यावा क्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
१० । ६५ । १ **अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
१० । ६५ । ९ **इन्द्रवायू वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
१० । ९२ । ६ **तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
[७२] १ । ३६ । ५ (कण्वो घौरः । अग्निः)
अग्ने दूता विशामसि ।
(९४) १ । ४४ । ९ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
अग्ने दूतो विशामसि ।

[७४] १ । ३६ । ७ (कण्वो घौरः । अग्निः)
तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
८ । ६९ । १७ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
[७५] १ । ३६ । ८ (कण्वो घौरः । अग्निः)
उरु क्षयाय चक्रिरे ।
७ । ६० । ११ (वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु ।
[७७] १ । ३६ । १० (कण्वो घौरः । अग्निः)
यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन ।
(९०) १ । ४४ । ५ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
यजिष्ठं हव्यवाहन ।
(११८२) ७ । १५ । ६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
यजिष्ठो हव्यवाहनः ।
(१२४४) ८ । १९ । २१ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
यजिष्ठं हव्यवाहनम् ।
[७९] १ । ३६ । १२ स नो मृळ महाँ असि ।
(७१२) ४ । ९ । १ अग्ने मृळ महाँ असि ।
१ । ३६ । १४ (कण्वो घौरः । यूपः)
कृधी न ऊर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे ।
१ । १७२ । ३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । मरुतः)
ऊर्ध्वान्नः कर्त जीवसे ।
[८०] १ । ३६ । १५ (कण्वो घौरः । अग्निः)
पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः ।
(१११२) ७ । १ । १३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेररुषो अघायोः
[८७] १ । ४४ । २ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
अग्ने रथीरध्वराणाम् ।
(१२१५) ८ । ११ । २ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
अग्ने रथीरध्वराणाम् ।
[८७] १ । ४४ । २; १ । ९ । ८; ८ । ६५ । ९
अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ।
[८८] १ । ४४ । ३ अद्या दूतं वृणीमहे ।
(१०) १ । १२ । १ अग्निं दूतं वृणीमहे ।
(७०) १ । ३६ । ३ प्र त्वा दूतं वृणीमहे ।
[९०] १ । ४४ । ५; (७७) १ । ३६ । १०
यजिष्ठं हव्यवाहन । ७ । १५ । ६ यजिष्ठो
हव्यवाहनः । ८ । १९ । २१ यजिष्ठं हव्यवाहनं ।
[९२] १ । ४४ । ७; (१०) १ । १२ । १;
(७०) १।३६। ३ होतारं विश्ववेदसं ।

[९४] १ । ४४ । ९; (७२) १ । ३६ । ५
अग्ने दूतो विशामसि ।
[९६] १ । ४४ । ११ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
नि त्वा यज्ञस्य साधनम् ।
(५३८) ३ । २७ । २ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
गिरा यज्ञस्य साधनम् ।
८ । ६ । ३ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् ।
(१२७८) ८ । २३ । ९ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
यज्ञस्य साधनं गिरा ।
[९९] १ । ४४ । १४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
अश्विभ्यामुषसा सजूः ।
७ । ६६ । १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः)
अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
१० । ६५ । ७ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वेदेवाः)
दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
५ । ५१ । ८ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वेदेवाः)
अश्विभ्यामुषसा सजूः ।
[१०३] १ । ४५ । ४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
प्रियमेधा अहूषत ।
८।८।१८ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
प्रियमेधा अहूषत ।
८।८७।३ द्युम्नीको वा वासिष्ठः । अश्विनौ)
[१०३] १,४५,४; (८) १,१,८ राजन्तमध्वराणाम् ।
८,८,१८ राजन्तावध्वराणाम् ।
(३८) १,२७,१ सम्राजन्तमध्वराणाम् ।
[१०३] १,४५,४ अग्निं शुक्रेण शोचिषा ।
(११) १,१२,१२ अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।
[१०४] १,४५,५; (३२) १,२६,५, २,६,१
इमा उ षु श्रुधी गिरः ।
[१०५] १,४५,६ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
अग्ने हव्याय वोळ्हवे ।
(५६१) ३,२९,४ (विश्वामित्रो गाथिनः अग्निः)
अग्ने हव्याय वोळ्हवे ।
[१०६] १ । ४५ । ७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं ।
(१६८९) १०,१४०,६ (अग्निः पावकः । अग्निः)
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा ।

[१०७] १,४५,८, अग्ने मर्ताय दाशुषे १,८४,७;९,९८,४
वसु मर्ताय दाशुषे । ८,१,२२ देवो मर्ताय दाशुषे ।

[१११] १,५८,२ (नोधा गौतमः । अग्निः)
दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदत् ।
९,८६,९ (अकृष्टा माषाः । पवमानः सोमः)

[११३] १,५८,४ (नोधा गौतमः । अग्निः)
कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर ।
(७०१) ४,७,९ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाः ।

(११६) १ । ५८ । ७ (नोधा गौतमः । अग्निः)
यं वाघतो वृणते अध्वरेषु ।
सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।
१०, ३०, ४ (कवष ऐलूषः । आपः अपांनपात् वा)
यं विप्रास ईळते अध्वरेषु ।
३,५४,३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वेदेवाः)
सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।

[११७] १,५८,८ अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य
४,२,२ इह त्वं सूनो०-६,५०,९ उत त्वं सूनो०-।

[११८]१,५८,९;(१२३) १,६०,५; १,६१,१६,१,६२,१३,
१,६४, १५; ८,८०, १०; ९, ९३, ५ प्रातर्मक्षू
धियावसुर्जगम्यात् ।

[१२२] १,६०,४ (नोधा गौतमः । अग्निः)
अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम् ।
(१९५) १,७२,१ (पराशरः शाक्यः अग्निः)

[१४३] * १ । ६६ । ९, १० (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
एनोन्नवन्त गावः स्व १ र्दृशीके ।
(१७३) १, ६९, ९, १० (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
नवन्त विश्वे स्व १ र्दृशीके ।

[१६२] १, ६८, ९, १०, पितुर्न पुत्राः क्रतुं जुषन्त ।
९, ९७, ३०, पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यता न ।

[१७०] १, ६९, ७ नाकिष्ट एता व्रता मिनन्ति ।
१०, १०, ५ नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि ।

[१७३] १, ६९, ९, १० ; * (१४३) १, ६६, ९, १०

[१७८] १,७०, ५, ६, (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
स हि क्षपावाँ अग्नी रयीणां ।
(११६५) ७, १०, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणाम् ।

[१८८] १,७१,४ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
मथीद्यदीं विभृतो मातरिश्वा ।
(३४८) १, १४८, १ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
मथीद्यदीं विष्टो मातरिश्वा ।

[१९३] १,७१,९ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
राजानामित्रावरुणा सुपाणी ।
३, ५६, ७ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वेदेवाः)

[१९४] १, ७१, १० (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन् ।
७, १८, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
एवाव द्युभिरभि०— ।

[१९५] १, ७२, १ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
हस्ते दधानो नर्या पुरूणि ।
७, ४५, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सविता)

[१९५] १,७२,१; (१२२) १,६०,४ अग्निर्भुवद्रयिपती
रयीणां ।

[१९७] १,७२,३ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
नामानि चिद्दधिरे यज्ञियानि ।
(९४२) ६,१,४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

[१९८] १,७२,४ अग्निं पदे परमे तस्थिवांसम् ।
२,३५,१४ अस्मिन् पदे०— ।

[१९९] १,७२,५ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः ।
४,२४,३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत त्राम ।

[२०३] १,७२,९ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम् ।
३,३१,९ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्रः)

[२०६] १,७३,२ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
देवो न यः सविता सत्यमन्मा ।
९,९७,४८ (कुत्स आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[२०७] १,७३,३ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
देवो न यः पृथिवीं विश्वधाया उपक्षेति
हितमित्रो न राजा ।
पुरः सदः शर्मसदो न वीरा ।
३, ५५, २१ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापति
र्वाच्यो वा । विश्वेदेवाः)
इमां च नः पृथिवीं विश्वधाया उप क्षेति०— ।

[२१२] १,७३,८ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
आपप्रिवान्रोदसी अन्तरिक्षम् ।

१०,१३९,२ (विश्वावसुर्देवगन्धर्वः । सविता)
[२१४] १,७३,१० (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
एता ते अग्न उचथानि वेधो जुष्टानि सन्तु।
(६६६) ४,२,२० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
एता ते अग्न उचथानि वेधोऽवोचाम कवये **ता जुषस्व।**
उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो **रायः** पुरुवार प्र यन्धि।
[२१७] १,७४,३ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
अग्निर्वृत्रहाजनि।
धनंजयो रणेरणे।
(१०५६) ६,१६,१५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
दस्युहन्तमम्।
धनंजयं रणेरणे।
[२२१] १,७४,७;(१३) १,१२,४ **यदग्ने यासि दूत्यम्।**
[२२७] १,७५,४ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
सखा सखिभ्य ईड्यः।
९,६६,१ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
[२३२] १,७६,४ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र।
(१४९३) १०,२,२ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
— पोत्रं जनानां।
[२३४] १, ७७, १ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा होता यजिष्ठ।
(६४७) ४, २, १ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
—० ऋतावा ...। होता यजिष्ठो।
[२३७] १, ७७, ४ **वाजप्रसूता इषयन्त मन्म।**
७, ८७, ३ **प्रचेतसो य इषयन्त मन्म।**
[२३९] १, ७८, १ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे।
द्युम्नैरभि प्र णोनुमः।
४,३२,९ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
अभि त्वा गोतमा गिरानूषत।
(१०७०) ६, १६, २९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
आ भर जातवेदो विचर्षणे।
(१०७७) ६, १६, ३६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
आ भर जातवेदो विचर्षणे।
(१३११) ८, ४३, २ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
जातवेदो विचर्षणे।
[२३९ - २४३] १, ७८, १-५ **द्युम्नैरभि प्र णोनुमः।**
[२४६] १, ७९, ३ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा।

८, २७, १७ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः)
—वरुणः सरातयो।
१०, ९३, ४ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वेदेवाः)
[२४७] १, ७९, ४ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
ईशानः सहसो यहो।
(११८७) ७, १५, ११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
[२४८] १,७९,५ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
अग्निरीळेन्यो गिरा।
(१८५५) १०,११८,३(उरुक्षय आमहीयवः। रक्षोहाऽग्निः)
[२५१] १,७९,८ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
सत्रासाहं वरेण्यम्।
३,३४,८ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
—वरेण्यं सहोदां।
[२५२] १,७९,९ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
रयिं विश्वायुपोषसम्।
६,५९,९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
[२५५] १, ७९, १२ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
अग्नी रक्षांसि सेधति।
(११८६) ७, १५, १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
[२५६-२६९] १, ९४, १-१४ **अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।**
[२५८] १, ९४, ३ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः)
त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम्।
(३८१) २,१,१३ (गृत्समदः शौनको भार्गवः (आङ्गिरसः शौनहोत्रो) । अग्निः)
[२६८] १, ९४, १३ **शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमे।**
५, ६५, ५ **स्याम सप्रथस्तमे।**
[२७१] १, ९४, १६; (१८७८) ९५, ११; (१८७८) ९६, ९; (१७२६) ९८, ३; १००, १९; १०२, ११; १०३, ८; १०५, १९; १०६, ७; १०७, ३; १०८, १३; १०९, ८; ११०, ९; १११, ५; ११२, २५; ११३, २०; ११४, ११; ११५, ६; ९, ९७,५८; **तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः।**
[१८७२] (औषसोऽग्निः प्रकरणं) । ऋ. १।९५।१-११
१, ९५, ५ **जिह्मानामूर्ध्वः स्वयशा उपस्थे।**
१, ३५, ९ **जिह्मानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः।**
[१८७५] १,९५,८ (कुत्स आङ्गिरसः। अग्निः औषसोऽग्निर्वा)
त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्... गोभिरद्भिः।... धीः।

९ ७१,८ (ऋषभो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य......सुष्टुती...गोअग्रया।
(ऋ१, ९६, १—९ द्रविणोदाः अग्निः प्रकरण ।)
[१८७८] १,९५,११; १,९६,९ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः)
एवा नो अग्ने समिधा वृधानो
रेवत्पावक श्रवसे वि भाहि ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः
सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।
[१८७९-१८८६] १, ९६, १-७ देवा अग्निं
धारयन्द्रविणोदाम् ।
[१८८४] १,९६,६ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः
द्रविणोदा अग्निर्वा)
रायो बुध्नः संगमनो वसूनां ।
१०,१३९,३ विश्वावसुर्देव गन्धर्वः । सविता)
[१८८६] १।९६ । ८ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य ।
१,१५,७ द्रविणोदा द्रविणसो ।
[१८७८] १, ९६, ९ (१८७८) १, ९५, ११
(शुचिरग्निः प्रकरणं ऋ. १, ९७, १-८)
(१८८७-१८९४) १,९७, १, १-८,
अप नः शोशुचदघम् ।
[१८८९] १, ९७, ३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।
(८४०) ५, १०, ६ अस्माकासश्च सूरयो ।
[१८९२] १, ९७, ६ ; (४) १, १, ४
विश्वतः परिभूरसि ।
[१७२५] १, ९८, २ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः,
वैश्वानरोऽग्निर्वा)
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां...।...स नो दिवा
स रिषः पातु नक्तम् ।
(१७९५) ७, ५, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
पृष्टो दिवि धाय्यग्निःपृथिव्यां ।
(१८१८) १०, ८७, १ (पायुर्भारद्वाजः । रक्षोहाग्निः)
स नो दिवा ।
(जातवेदा अग्निः प्रकरणं)
[१८६२] १, ९९, १ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा ।
(३६२) १, १८९, २, १०, ५६, ७
स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
[२७२] १, १२७, १ वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं ।
(१४१९) ८, ७१, ११ अग्निं सूनुं०-
[२७३] १,१२७,२ (परुच्छेपो दैवोदासिः। अग्निः) हुवेम...
विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः । ...होतारं चर्षणीनाम् ।

१०, ३ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः
(१२७६) ८, २३, ७ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
अग्निं वः ... हुवे होतारं चर्षणीनाम् ।
(१४०५) ८, ६०, १७ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
अग्निमग्निं वो... हुवेम... । ...होतारं चर्षणीनाम् ।
[२७९] १, १२७; ८ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
अतिथिं मानुषाणां ।
(१२९४) ८. २३, २५ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
[२८०] १, १२७, ९ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युम्निन्तम उत क्रतुः ।
१, १७५, ५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
[२८१] १, १२७, १० (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
विश्वासु क्षासु जोगुवे ।
५, ६४, २ (अर्चनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
[२८४] १, १२८, २ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
ऋतस्य पथा नमसा हविष्मता ।
(१९९३) १०, ७०, २ (सुमित्रो वाध्र्यश्वः ।
आप्रीसूक्तं=नराशंसः)
ऋतस्य ... नमसा मियेधो ।
१०, ३१, २ (कवष ऐलूषः । विश्वे देवाः)
पथा नमसा विवासेत् ।
[२८८] १,१२८,६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
...अरतिः... ।
... देवत्रा हव्यमोहिषे ।
... अग्निर्द्वारा व्यृण्वति ।
(१२२४) ८,१९,१ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
अरतिं० देवत्रा हव्यमोहिरे ।
(१३०५) ८,३९,६ (नाभाकः काण्वः । अग्निः)
अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते ।
[२९०] १,१२८,८ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
अग्निं होतारमीळते वसुधितिं प्रियं चेतिष्ठमरतिं
न्येरिरे
(७६१) ५,१,७ (बुधगविष्ठिरावात्रेयौ । अग्निः)
अग्निं होतारमीळते नमोभिः ।
(१०१९) ६,१४,२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
अग्निं होतारमीळते
(११९१) ७,१६,१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । प्रगाथः)
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं ।

[३०१] १,१४०,१० (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिहि ।
(१७८५) ६,८,६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । वैश्वानरोऽग्निः)
—धारयानामि ।
[३१३] १,१४१,९ **अराम्न नेमिः परिभूरजायथाः ।**
१,३२,१५— **परि ता बभूव ।**
[३१९] १,१४३,२ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
स जायमानः परमे व्योमन्याविरग्निः ।
(१७८१) ६,८,२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । वैश्वानरोऽग्निः)
—व्योमनि व्रतान्यग्निः ।
(१८००) ७,५,७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
—व्योमन ।
ऋतपत्याय जातवेदो… ।
[३२५] १, १४३, ८ **अदब्धेभिरदृपितेभिरिष्टेऽनिमिषद्भिः परि पाहि नो जाः ।**
(१७८६) ६, ८, ७ **अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टेऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरीन् ।**
[३२९] १, १४४, ४ **समाने योना मिथुना समोकसा ।**
१, १५९, ४ **जामी सयोनी—।**
[३३०] १, १४४, ५ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
देवं मर्तास ऊतये हवामहे ।
(५००) ३, ९, १ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
देवं मर्तास ऊतये ।
(९०१) ५, २२, ३ (विश्वसामा आत्रेयः । अग्निः)
— ऊतये ।
(१२१९) ८, ११, ६ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
—ऊतये । अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
[३३२] १, १४४, ७ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
मन्द्र स्वधाव ऋतजात सुक्रतो ।
रण्वः संदृष्टौ पितुमाँइव क्षयः ।
(१४४८) ८, ७४, ७ (गोपवन आत्रेयः । अग्निः)
मन्द्र सुजात सुक्रतो ।
१०, ६४, ११ (गयः प्लातः । विश्वेदेवाः)
— क्षयो ।
[३४०] १, १४६, ३ **समानं वत्समभि संचरन्ती ।**
३, ३३, ३; १०, १७, ११ **समानं योनिमनु संचरन्ती (१०, १७, ११, संचरन्तम्) ।**
[३४३] १, १४७, १ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
ऋतस्य सामन्रणयन्त देवाः ।

(६९९) ४, ७, ७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
—धामन्रणयन्त— ।
[३४५] १, १४७, ३ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
(१८२५) ४, ४, १३ (वामदेवो गौतमः । रक्षोहाऽग्निः)
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन् । — ररक्ष तान्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः ।
[३४८] १,१४८,१ **मथीद्यदीं विष्टो मातरिश्वा ।**
(१८८) १,७१,४ **— विभृतो-।**
[३५१] १,१४८,४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् ।
(११२५) ७,३,२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
[३५३] १,१४९,१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
महः स राय एषते पतिर्दन् ।
१०,९३,६ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वेदेवाः)
—एषते ।
[३६१] १,१८९,१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । अग्निः)
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
(४७५) ३,५,६(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
—देवो— ।
[३६२] १,१८९,२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । अग्निः)
स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
१०,५६,७ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । विश्वेदेवाः)
[२४३८-४६] १, १९, १-९ **मरुद्भिरग्न आ गहि ।**
[२४४०] १, १९, ३ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निर्मरुतश्च)
विश्वे देवासो अद्रुहः ।
९, १०२, ५ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
[२४४६] १, १९, ९ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निर्मरुतश्च)
अभि त्वा पूर्वपीतये ।
८, ३, ७ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
[२४६६] १, ९३, २ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)
गवां पोषं स्वश्व्यम् ।
९, ६५, १७ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
[२४६७] १, ९३, ३ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)
विश्वमायुर्व्यश्नवत् ।
८, ३१, ८ (मनुर्वैवस्वतः । दम्पती)
विश्वमायुर्व्यश्नुतः ।
१०, ८५, ४२ (सूर्या सावित्री ऋषिका । सूर्या सावित्री)
विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।

[२४६८] १, ९३, ४ अग्नीषोमा चेति तद्वाय...

३, १२, ९ तद्वां चेति प्र वीर्यम् ।

[२४७०] १, ९३, ६ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)

यज्ञाय चक्रथुरु लोकम् ।

...ावरुणिः । इन्द्राविष्णू)

[१०- ...मो राहूगणः । अग्नीषोमौ)

विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।

७, ८२, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[३७०] २,१,२ (गृत्समदः शौनको भार्गवः [आङ्गिरसः शौनहोत्रः] । अग्निः)

(१६६०) १०,९१,१० (अरुणो वैतहव्यः । अग्निः)

तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः ।

तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश्च नो दमे ।

[३८१] २,१,१३ (२५८) १,९४,३

त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।

[३८४] २,१,१६ (गृत्समदः शौनको भार्गवः [आङ्गिरसः शौनहोत्रः] । अग्निः)=

(३८४) २,२,१३; (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)

ये स्तोतृभ्यो गो अग्रामश्वपेशसमग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः ।

अस्माञ्च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ।

(३८४) २,१,१६; २,१३; ११,२१; १३,१३; १४,१२; १५,१०; १६,९; १७,९; १८,९; २०,९; २३,१९; २४,१६ २७,१७; २८,११; २९,७; ३३,१५; ३५,१५; ३९,८; ४०,६; ४२,३; ९,८६,४८, बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ।

[३८६] २,२,२ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)

अभि त्वा नक्तीरुषसो ववाशिरेऽग्ने वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।

८,८८,१ (नोधा गोतमः । इन्द्रः)

अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।

[३८८] २,२,४ पाथो न पायुं जनसी उभे अनु ।

९,७०,३ अदाभ्यासो जनुषी उभे अनु ।

[३९२] २,२,८ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)

होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो ।

(१५४४) १०,११,५ (हविर्धान आङ्गिः । अग्निः)

होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः ।

[४१७] २, ४, २ (सोमाहुतिर्भार्गवः । अग्निः)

इमं विधन्तो अपां सधस्थे द्वितादधुर्भृगवो विक्ष्वा३योः ।

(१६०२) १०, ४६, २ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)

—सधस्थे ।

इच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन् ।

[४२८] २, ५, ४ (सोमाहुतिर्भार्गवः । अग्निः)

वया इवानु रोहते ।

८, १३, ६ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

—जुषन्त यत् ।

[४३२] २, ५, ८ (सोमाहुतिर्भार्गवः । अग्निः)

अयमग्ने त्वे अपि ।

(१३७०) ८, ४४, २८ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)

[४३३] २, ६, १; (३२) १, २६, ५; (१०४) १, ४५, ५

इमा उ षु श्रुधी गिरः ।

[४३७] २, ६, ५ (सोमाहुतिर्भार्गवः । अग्निः)

स नो वृष्टिं दिवस्परि ।

९, ६५, २४ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)

ते नो — ।

[४४३] २, ७, ३ अति गाहेमहि द्विषः ।

(५३९) ३, २७, ३ अति द्वेषांसि तरेम ।

[४४४] २, ७, ४ (सोमाहुतिर्भार्गवः । अग्निः)

शुचिः पावक वन्द्यो ।

(११८६) ७, १५, १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)

—ईड्यः ।

[४०१] २, ८, ५ अग्निमुक्थानि वावृधुः ।

८, ६, ३५; ८, ९५, ६ इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ।

[४०१] २, ८, ५ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)

विश्वा अधि श्रियो दधे ।

(१५८३) १०, २१, ३ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुकः । अग्निः)

—श्रियो धिषे विवक्षसे ।

१०, १२७, १ (कुशिकः सौभरः रात्रिर्वा भारद्वाजी । रात्रिः)
—श्रियो ऽधित ।
[४०२] २, ८, ६ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)
अरिष्यन्तः सचेमह्यभि ष्याम पृतन्यतः ।
८, २५, ११ (विश्वमना वैयश्वः । विश्वेदेवाः)
अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ।

९, ३५, ३ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
अभि ष्याम पृतन्यतः ।
(९२०) ५, २६, १; (१०७३) ६, १६, २;
(१४७८) ८, १०२, १६.
आ देवान्वक्षि यक्षि च
२, ३६, ४, (गृत्समदः शौनकः । अग्निः शुचिश्च)
आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि च ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[४५१] ३,१,५, क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः ।
३,३१,१६ मध्वः पुनानः — ।
[४५९] ३.१,१३; १,१६४,५२
अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां ।
[४६१] ३,१,१५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ।
३,५४,१ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वेदेवाः) शृणोतु नो — ।
[४६५] ३,१,१९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान्
महीभिरूतिभिः सरण्यन् ।
३,३१,१८ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्रः)
४,३२,१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि ।
महान्महीभिरूतिभिः ।
[४६६] ३,१,२० (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा जन्मञ्जन्मन्
निहितो जातवेदाः ।
३, ३०, २ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा ।
(४६६) ३, १, २१; (४६७) ३, १, २० जन्मञ्जन्मन्
निहितो जातवेदाः ।
[४६७] ३, १, २१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ।
३, ५९, ४ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
६, ४७, १३ (गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः)
१०, १३१, ७ (सुकीर्तिः काक्षीवतः । इन्द्रः)
१०, १४, ६ (यमो वैवस्वतः । अङ्गिरःपित्रथर्वभृगुसोमाः लिङ्गोक्तदेवताः पितरो वा)
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि—
[४६८] ३, १, २२ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
अग्ने महि द्रविणमा यजस्व ।
(१६५०) १०, ८०, ७ (अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा सप्तिर्वाजंभरो वा । अग्निः)
[४६९] ३, १, २३ = ३,५,११ = ३.६,११ = ३,७,११ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)= ३,१५,७ (उत्कीलः कात्यः । अग्निः)= ३,२२,५ (गाथी कौशिकः । अग्निः) = ३,२३,५ (देवश्रवा देववातश्च भारतौ । अग्निः)
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे।
[४७३] ३,५,४, मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो ।
(७७९) ५, ३, १ त्वं मित्रो भवसि यत्समिद्धः ।
[४७३] ३,५,४, (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
मित्रो होता वरुणो जातवेदाः ।
१०,८३,२ (मन्युस्तापसः । मन्युः)
मन्युर्होता— ।
[४७४] ३,५,५, (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः ।
(१७६५) ४,५,८, (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)
—रुपो—
[४७५] ३,५,६ विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान् ।
(६३१) १, १८९, १ —देव— ।
[४६९] ३,५,११=३, १, २३=३, ६, ११ = ३, ७, ११
३, १५, ७=३, २२, ५ = ३ २३, ५
[४८१] ३, ६, २ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
आ रोदसी अपृणा जायमान

४ १८, ५ (अदितिः ऋषिका । वामदेवः)

आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।

(१८११) ७, १३, २ (वसिष्ठो म[illegible]

वैश्वानरोऽग्निः)

—जायमानः ।

(१५९४) १०, ४५, ६ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)

—अपृणाज्जायमानः ।

[४८४] ३, ६, ५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

त्वं दूतो अभवो जायमानः ।

[४८५] ३, ६, ६, (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ।

(९९३) ६, १०, १ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

—करति जातवेदाः ।

(१२०६) ७, १७, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)

(१२०७) ७, १७, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)

—करति जातवेदाः ।

[४८८] ३, ६, ९ ; (१९५२) २, ३, ११ **अनुष्वधमा वह मादयस्व ।**

[४९१] ३, ६, ११; ३, १, २३; ३, ५, ११;
३, ६, ११; ३, ७, ११;
३, १५, ७; ३, २२, ५; ३, २३, ५;

[४९७] ३, ७, ८; (१९५९) ३, ४, ७

[५००] ३, ९, १ ; (९०१) ५, २२, ३; ८, ११, ६

देवं मर्तास ऊतये ।

(३३०) १, १४४, ५ **— ऊतये हवामहे ।**

[५००] ३, ९, १ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

अपां नपातं सुभगं सुदीदितिं ।

(१२२७) ८, १९, ४ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)

ऊर्जो —।

[५००] ३, ९, १; १, ४०, ४ **सुप्रतूर्तिमनेहसम् ।**

[५०५] ३, ९, ६ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

तं त्वा मर्ता अगृभ्णत **देवेभ्यो हव्यवाहन ।**

(१८५७) १०, ११८, ५ (उरुक्षय आमहीयवः ।

रक्षोहाऽग्निः)

देवेभ्यो हव्यवाहन । तं त्वा हवन्त मर्त्याः ।

१०, ११९, १३ (लब ऐन्द्रः । आत्मा [इन्द्रः])

देवेभ्यो हव्यवाहनः ।

(१९९८) १०, १५०, १ (मृळीको वासिष्ठः । अग्निः)

देवेभ्यो हव्यवाहन ।

[५०७] ३, ९, ८ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

शीरं पावकशोचिषम् ।

[illegible] । अग्निः)

[illegible] भार्गवः, पावकोऽ

[illegible] – यविष्ठो सहसः

पुत्रोऽन्यतरो वा । अग्निः)

(१५८१) १०, २१, १ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा,

वसुकृद्वा वासुक्रः । अग्निः)

—पावकशोचिषं विवक्षसे ।

[५०८] ३, ९, ९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

१०, ५२, ६ (अग्निः सौचीकः । विश्वेदेवाः)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं
त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
औक्षन्घृतैरस्तृणन्बर्हिरस्मा
आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥

[५०९] ३, १०, १ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं चर्षणीनाम् ।

(१३६१) ८, ४४, १९ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)

—मनीषिणः ।

१०, १३४, १ (मान्धाता यौवनाश्वः । इन्द्रः)

महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् ।

[५१०] ३, १०, २ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने ।

गोपा ऋतस्य दीदिहि स्वे दमे ।

(१५८७) १०, २१, ७ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा,

वसुकृद्वा वासुक्रः । अग्निः)

त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि षेदिरे ।

(१८५९) १०, ११८, ७ (उरुक्षय आमहीयवः ।

रक्षोहाऽग्निः)

अदाभ्येन शोचिषाग्ने रक्षस्त्वं दह । गोपा ऋतस्य दीदिहि ।

[५१०] ३, १०, २ **अग्ने होतारमीळते ।** (१०१९) ६, १४, २; **अग्निं होतारमीळते** (२९०) १, १२८, ८

[५११] ३, १०, ३ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

ददाशति समिधा जातवेदसे ।

(११७४) ७, १४, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)

समिधा जातवेदसे ... ।

नमस्विनो वयं दाशेमाग्नये ।

[५१२] ३, १०, ४ **अग्निर्देवेभिरागमत् ।**

(५) १, १, ५ **देवो— ।**

[५१६] ३, १०, ८ स नः पावक दीदिहि
(१९) १, १२, १० —दीदिवः ।

[५१७] ३, १०, ९ तं त्वा विप्रा विपन्यवो जागृवांसः
समिन्धते । १, २२, २१ (विष्णुर्देवता)
तद्विप्रासो विपन्यवो — ।

[५१६] ३, १०, ८ द्युमदस्मे सुवीर्यम् ।
(५८०) ३, १३, ७ द्युमदग्ने— ।

[५१७] ३, १०, ९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम् ।
(७०४, ४, ८, १ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
हव्यवाहममर्त्यम् ।
(१४७९) ८, १०२, १७ (प्रयोगो भार्गवः पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रावन्यतरो वा । अग्निः)
हव्यवाहममर्त्यम् ।

[५२०] ३, ११, ३ केतुर्यज्ञस्य पूर्व्यः ।
९, २, १० आत्मा— ।

[५२१] ३, ११, ४ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
वह्निं देवा अकृण्वत ।
(१२०३) ७, १६, १२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । प्रगाथः)

[५२३] ३, ११, ६ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
अग्निस्तुविश्रवस्तमः ।
(९१५) ५, २५, ५ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
—स्तमं ।

[५२५] ३, ११, ८ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
मर्त्यभिः । विप्रासो जातवेदसः ।
(१११८) ८, ११, ५ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
मनामहे— ।

[५७५] ३,१३,२; १,१३४,२ दक्षं सचन्त ऊतयः ।

[५८०] ३,१३,७ द्युमदग्ने सुवीर्यं ।
(५१६) ३,१०,८ द्युमदस्मे— ।

[५८५] ३,१४,५ (ऋषभो वैश्वामित्रः । अग्निः)
उत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।
(१०८७) ६,१६, ४६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
उत्तानहस्तो नमसा विवासेत् ।
(१६३८) १०,७९,२ (अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा सप्तिर्वाजंभरो वा । अग्निः)
उत्तानहस्ता नमसाधि विक्षु ।

[५९२] ३,१५,५ अच्छिद्रा शर्म जरितःपुरूणि ।
२,२५,५ —दधिरे— ।
(४६९) ३,१५,७=३,१,२३=३,५,११=
३,६,११=३,७,११=३,२२,५=३,२३,५

[५९५] ३,१६,२ (उत्कीलः कात्यः । अग्निः)
इमं नरो मरुतः सश्चता वृधं ।
७,१८,२५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सुदासः पैजवनः)
—मरुतः सश्चतानु ।

[५९९] ३,१६,६ तुविद्युम्न यशस्वता ।
१,९, ६ —यशस्वतः ।

[६०१] ३,१७,२ यथा दिवो जातवेदश्चिकित्वान् ।
(६७३) ४,३,८ साधा दिवो— ।

[६०३] ३,१७,४; २,४०,१ अकृण्वन्नमृतस्य देवा
नाभिम् ।

[६०४] ३,१७,५ (कतो वैश्वामित्रः । अग्निः)
यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्द्विता च सत्ता
स्वधया च शंभुः ।
(७८२) ५,३,५ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो
अस्ति स्वधावः ।

[६१०] ३,१९,१ (गाथी कौशिकः । अग्निः)
स नो यक्षद्देवताता यजीयान् ।
(१६१६) १०,५३,१ (देवा अग्निः सौचीकः । अग्निः)

[६११] ३,१९,२ (गाथी कौशिकः । अग्निः)
सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम् ।
प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः ।
(६८४) ४,६,३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
यता सुजूर्णी रातिनी घृताची … ।

[६१८] ३, २१, १ (६२१) ३।२१।४ स्तोकानाम्
(३, २१, ४ स्तोकासो)
अग्ने मेदसो घृतस्य ।

[६१९] ३, २१, २ (गाथी कौशिकः । अग्निः)
श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ।
१०, २४, २ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा वासुक्रः । इन्द्रः)
…वार्यं विवक्षसे ।

[४६९] ३, २२, ५ (गाथी कौशिकः । अग्निः)
३, १, २३ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
३, ५, ११ = ३, ६, ११ = ३, ७, ११=

३, १५, ७ (उत्कीलः कात्यः । अग्निः)
३, २३, ५ (देवश्रवा देववातश्च भारतौ । अग्निः)
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः ...... साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो.........त्वस्मे ॥
[५२७] ३, २४, १; ३, ८, ३ **वर्चो धा यज्ञवाहसे ।**
[५२९] ३, २४, ३ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
अग्ने द्युम्नेन जागृवे **सहसः सूनवाहुत ।**
एदं बर्हिः सदो मम ।
(१२४८) ८, १९, २५ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
यदग्ने......... ।
सहसः सूनवाहुत ।
(१३७१) ८, ७५, ३ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
सहसः सूनवाहुत ।
८, १७, १ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)
एदं बर्हिः सदो मम ।
[५३८] ३, २७, २ **गिरा यज्ञस्य साधनम् ।**
(९६) १, ४४, ११ **नि त्वा — ।**
८, ६, ३ **स्तोमैर्यज्ञस्य— ।**
(१२७८) ८, २३, ९ **यज्ञस्य साधनं गिरा ।**
[५३९] ३, २७,३ **अति द्वेषांसि तरेम ।**
(४४३) २, ७, ३ **अति गाहेमहि द्विषः ।**

[५४०] .. **.. पावक ईड्यः ।**
(११८६) ७, १५ १०, **शुचिः— ।**
[५४१] ३, २७, ५ **पृथुपाजा अमर्त्यो ।**
(१७३७) ३, २, ११ **वैश्वानरः— ।**
[५४३] ३, २७, ७ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
होता देवो अमर्त्यः ।
(१२४७) ८ ,१९, २४ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
[५४९] ३, २७,१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
तिरस्तमांसि दर्शतः ।
(१४४६) ८, ७४, ५ (गोपवन आत्रेयः । अग्निः)
...दर्शतम् ।
[५५२] ३, २८, १ (५५७) ३, २८, ६
पुरोळाशं जातवेदः ।
[५६१] ३, २९, ४ **नाभा पृथिव्या अधि ।**
(१९४८) २, ३, ७ **—अधि सानुषु त्रिषु ।**
[५६१] ३, २९, ४; (१०५) १, ४५, ६ **अग्ने हव्याय वोळ्हवे ।**
(८६१) ५, १४, ३ **अग्निं हव्याय— ।**
[५७३] ३, २९, १६ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
प्रजानन्विद्वाँ उप याहि सोमम् ।
३, ३५, ४ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[२४५०] ४, १, ३, (वामदेवो गौतमः । अग्निः, **अग्नी वरुणौ**)
अग्ने मृळीकं **वरुणे** सचा विदो **मरुत्सु विश्वभानुषु ।**
८, २७, ३ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः)
प्र स् न एत्वध्वरो**ऽग्ना** देवेषु पूर्व्यः ।
आदित्येषु प्र **वरुणे** धृतव्रते **मरुत्सु विश्वभानुषु ।**
[६३७] ४, १, ११ **महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।**
४, १७, १४ **त्वचो बुध्ने--- ।**
[६३९] ४, १, १३ **अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तः ।**
५, ३१, ३ **प्राचोदयत्सुदुघा— ।**
[६४१,] ४, १, १५ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
ह्कहं नरो **वचसा** दैव्येन **व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः ।**
४, १६, ६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
वचोभिर्व्रजं--- ।

(१५९९) १०; ४५, ११ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
व्रजं — ।
[६४३] ४, १, १७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।
६, ५१, २ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
७, ६०, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
[६४६] ४, १, २० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
सुमृळीको भवतु जातवेदाः ।
६, ४७, १२ (गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः)
१०, १३१, ६ (सुकीर्तिः काक्षीवतः । इन्द्रः)
... विश्ववेदाः ।
[६४७] ४, २, १; (२३४) १, ७७, १
यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा ।
[६४८] ४, २, २ **इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य ।**

(११७) १, ५८, ८ अच्छिद्रा सूनो ।
६, ५०, ९ उत त्वं सूनो—।
[६६४] ४, २, १८ आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्यद्देवानां यज्जनिमान्त्युग्र ।
७, ६०, ३ सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ।
८, २५, ७ अधि या बृहतो दिवो ३ भि यूथेव पश्यतः ।
[६६६] ४, २, २०; (११४) १, ७३, १० एता ते अग्न उचथानि वेधो ।
[६६६] ४, २, २० उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नः ।
८, ४८, ६ प्र चक्षय कृणुहि— ।
[६६७] ४, ३, २; १, १२४, ७; १०, ७१, ४, (१६६३) १०, ९१, १३ जायेव पत्य उशती सुवासाः ।
[६७३] ४, ३, ८ साधा दिवो जातवेदश्चिकित्वान् ।
(६०१) ३, १७, २ यथा दिवो— ।
[६७५] ४, ३, १० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः ।
६, ६६, १ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । मरुतः)
सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः ।
[६७६] ४, ३, ११ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।
(२३९८) १०, ८८, २ मूर्धन्वानाङ्गिरसो वामदेव्यो वा । सूर्य-वैश्वानरौ)
[६८३] ४, ६, २ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन् ।
(७४१) ४ १३, २ (वामदेवो गौतमः । अग्निः [लिंगोक्तदेवता इति एके])
—सविता देवो अश्रेद् ।
(७४६) ४, १४, २ (वामदेवो गौतमः । अग्निः [लिङ्गोक्तदेवता इति एके])
ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेज् ।
७,७२,४, (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
—सविता देवो अश्रेद् ।
[६८४] ४,६,३ यता सुजूर्णी रातिनी घृताची ।
६,६३,४ प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची ।
[६८४] ४,६,३; (६११) ३, १९, २ प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः ।
[६८५] ४,६,४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्ना ।
६,५२,१७ (ऋजिश्वा भरद्वाजः । विश्वेदेवाः)
—अग्नौ ।

[६८६] ४,६,५ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
अग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा ।
(११४५) ७,७,४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
[६९२] ४,६,११ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्नमस्यन्त उशिजः शंसमायोः ।
(७८१) ५,३,४ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
—नि षेदुर्दशस्यन्त उशिजः— ।
[६९३] ४,७,१ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः ।
(१३९१) ८,६०,३ (भर्गः प्रगाथः । अग्निः)
मन्द्रो —ड्यो ।
[६९६] ४,७,४; १,८६,५; (९०३) ५,२३,१ विश्वा यश्चर्षणीरभि ।
[७००] ४,७,८ विदुष्टरो दिव आरोधनानि ।
(७०७) ४,८,४ विद्वाँ आरोधनं दिवः ।
[७०१] ४,७,९ कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाः ।
(११३) १,५८,४— रुशदूर्मे अजर ।
[७०२] ४, ७, १० यदस्य वातो अनुवाति शोचिः ।
(३५१) १, १४८, ४; (११२५) ७, ३, २ आदस्य वातो अनु वाति शोचिः ।
(१६९३) १०, १४२, ४ यदा ते वातो अनुवाति शोचिः ।
[७०४] ४, ८, १; (१४७९) ८, १०२, १७ हव्यवाहममर्त्यम् । ३, १०, ९ —मर्त्यं सहोवृधम् ।
[७०५] ४, ८, २; (२) १, १, २ स देवाँ एह वक्षति ।
[७०७] ४, ८, ४ विद्वाँ आरोधनं दिवः ।
(७००) ४, ७, ८ विदुष्टरो दिवं आरोधनानि ।
[७०९] ४, ८, ६, (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
ससवांसो वि शृण्विरे ।
८, ५४, ६ (मातरिश्वा काण्वः । इन्द्रः)
[७१२] ४, ९, १ अग्ने मृळ महाँ असि ।
(७९) १, ३६, १२ स नो मृळ...... ।
[७१६] ४, ९, ५ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
वेषि ह्यध्वरीयताम् ।
हव्या...... ।
(९११) ६, २, १० (भारद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
वेषि— ।
...... हव्यम्— ।
[७२४] ४, १०, ५ श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके ।

(११२९) ७. ३, ६ वि यद्रुक्मो न रोचस उपाके।
[७३२] ४, ११, ५ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
त्वामग्ने ... ।
... ... दमूनसं गृहपतिममूरम्।
(८२१) ५, ८, १ (इष आत्रेयः । अग्निः)
त्वामग्ने— ।
...... वरेण्यम्— ।
[७३६] ४, १२,३ अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।
७, ६०, ११ वाजस्य सातौ ...... ।
[७३६] ४, १२, ३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
दधाति रत्नं विधते यविष्ठो ।
(१२०३) ७, १६, १२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
—विधते सुवीर्यम् ।
[७३९] ४, १२, ६ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
१०,१२६,८ (कुल्मलबर्हिषः शैलूषिः अंहोमुग्वा वामदेव्यः । विश्वेदेवाः)
यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः ।
एवो ष्व १ स्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः ।
[७४०] ४, १३, १ यातमश्विना सुकृतो दुरोणम् ।
१, ११७, २ (अश्विनौ)
[७४१] ४, १३, २; ७, ७२, ४ उर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेत् । (६८३) ४, ६, २ —सवितेवाश्रेत् । (७४६) ४, १४ २ ऊर्ध्वं केतुं— ।
[७४४] ४, १३, ५=४, १४, ५ (वामदेवो गौतमः । अग्निः (लिङ्गोक्तदेवता इति एके)
अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्ङुत्तानोऽव पद्यते न ।
कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम् ।
[७४६] ४, १४, २ ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेत् ।
(७४१) ४, १३, २

[७४६] ४, १४, २ ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वन् ।
१, ९२, ४ — कृण्वती ।
[७४६] ४, १४, २; १, ११५, १ आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं ।
[७४७] ४, १४, ३; उषा ईयते सुयुजा रथेन ।
१, ११३, १४ ओषा याति— ।
[७४८] ४, १४, ४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ ।
४, ४५, २ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
--उषसो व्युष्टिषु ।
[७४८] ४, १४, ४ अस्मिन्यज्ञे वृषणा मादयेथाम् ।
१, १८४, २ अस्मे उ षु वृषणा मादयेथाम् ।
[७४४] ४, १४,५; ४, १३, ५

[७५१] ४, १५, ३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
दधद्रत्नानि दाशुषे ।
९, ३, ६ (शुनःशेप आजीगर्तिः स देवरातः कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
[७५४] ४, १५, ६ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
तमर्वन्तं न सानसिम् ।
(१४७४)८,१०२,१२(प्रयोगो भार्गवः,पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रावन्यतरो वा । अग्निः)
४, १५, ७, ९ (मं.७, देवता-सोमकः साहदेव्यः; कुमारः साहदेव्यः । मं. ९, अश्विनौ)
४,१५,८ कुमारात्साहदेव्यात् ।
[१८९७] ४, ५८, ३ (वामदेवो गौतमः। अग्निः सूर्यो वा आपो वा गावो वा घृतस्तुतिर्वा)
महो देवो मर्त्याँ आ विवेश
८, ४८, १२ अमर्त्यो— ।
[१९०४] ४, ५८, १० अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिम् ।
९, ६२, ३ (पवमानः सोमः) ।

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[७५९] ५, १, ५ (बुधगविष्ठिरावात्रेयौ । अग्निः)
दमेदमे सप्त रत्ना दधानो ।
६, ७४, १ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सोमारुद्रौ)
—दधाना ।

[७५९, ७६०] ५, १, ५-६ अग्निर्होता नि षसादा (६ न्यसीदत्) यजीयान् ।
(९४०) ६, १, २ अधा होता न्यसीदो यजीयान् ।
(९४४) ६, १, ६ होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् ।

१०, ५२, २ अहं होता न्यसीदं यजीयान् ।
[७६१] ५, १, ७ अग्निं होतारमीळते नमोभिः ।
(२९०) १, १२८, ८ अग्निं होतारमीळते वसुधितिं । (१०१९) ६, १४, २ अग्निं होतारमीळते ।
[७६२] ५, १, ८ सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजाः ।
७, ५५, ७ — वृषभः ।
[७६५] ५, १, ११ एह देवान्हविरद्याय वक्षि ।
(७९३) ५, ४, ४ आ च देवान्हवि ... ।
[७७४] ५, २, ८ (कुमार आत्रेयः वृशो वा जानः उभौ वा, २, ९ वृशो जानः । अग्निः)
प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष
तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम् ।
१०, ३२, ६ (कवष ऐलूषः । इन्द्रः)
[७७७] ५, २, ११; ५,२९, १५ रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ।
१, १३०, ६ — स्वपा अतक्षिपुः ।
[७७९] ५, ३, १ त्वं मित्रो भवसि यत्समिद्धः ।
(४७३) ३, ५, ४ मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो ।
[७८१] ५, ३, ४, (६९२) ४, ६, ११ होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्दशस्यन्त (४, ६, ११ नमस्यन्त) उशिजः शंसमायोः ।
[७८५] ५, ३, ८ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यैः ।
(१६८१) १०, १२२, ७ (चित्रमहा वासिष्ठः । अग्निः)
त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना अजयन्त मानुषाः ।
[७९१] ५, ४, २ हव्यवाळग्निरजरः पिता नः ।
(१७२८) ३, २, २ हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितः ।
[७९१] ५, ४, २; ३, ५४, २२; ६, १९, ३
अस्मद्र्यक्सं मिमीहि श्रवांसि ।
[७९२] ५, ४, ३ विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां ।
(१७३६) ३, २, १०— मानुषीरिषः ।
(९४६) ६, १, ८ — शश्वतीनां ।
[७९३] ५, ४, ४ यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।
१, १२३, १२ यतमाना— ।
[७९३] ५, ४, ४ आ च देवान्हविरद्याय वक्षि ।
(७६५) ५, १, ११ एह देवान्ह— ।

[७९६] ५, ४, ७ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे ।
(११७५) ७, १४, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
वयं ते अग्ने समिधा विधेम ।
वयं देव हविषा भद्रशोचे ।
[७९७] ५, ४, ८ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व ।
६, ५२, १२ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
इमं नो अग्ने अध्वरं ।
७, ४२, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वेदेवाः)
इमं नो अग्ने — ।
[७९८] ५, ४, ९ अस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ।;
७, ३२, ११ (इन्द्रः)
[८०१-१०] ५, ६, १ - १०; ९, २०, ४
इषं स्तोतृभ्य आ भर ।
८, ७७, ८ तेन स्तोतृभ्य आ भर ।
८, ९३, १९ कया स्तोतृभ्य— ।
[८०५] ५, ६, ५ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
आ ते अग्न ऋचा हविः ।
(१०८८) ६,१६,४७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
— हविर् ।
[८०६] ५,६,६; १,८१,९ विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
१०,१३३, २ विश्वं पुष्यसि— ।
[८१०] ५, ६,१० (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
दधदस्मे सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यम् ।
८,६,२४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
उत त्यदाश्वश्व्यम् ।
८,३१,१८ (मनुर्वैवस्वतः । दम्पत्याशिषः)
असदत्र सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यम् ।
[८११] ५,७,१ ऊर्जो नप्त्रे सहस्वते ।
(१४६९) ८, १०२, ७ अच्छा नप्त्रे— ।
[८२१] ५,८,१ दमूनसं गृहपतिं वरेण्यम् ।
(७३२) ४, ११, ५— गृहपतिममूरम् ।
[८३०] ५,९,३ (गय आत्रेयः । अग्निः)
... यं शिशुं यथा ... जनिष्टारणी ।
विशामग्निं स्वध्वरम् ।
(१०८१) ६, १६, ४० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
शिशुं जातं न बिभ्रति ।
विशामग्निं स्वध्वरं ।

[८३१] ५,९,४ (गय आत्रेयः । अग्निः)
वनाग्ने पशुर्न यवसे ।
(९६०) ६, २, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
अग्ने पशुर्न यवसे ।
... वना वृश्चन्ति शिक्वसः ।
[८३४] ५,९,७ (गय आत्रेयः । अग्निः)
तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर ।
(९०४) ५,२३,२ (द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्निः)
तमग्ने पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर ।
[८३४] ५,९,७; (८४१)५,१०,७; (८७५) ५,१६,५;
(८८०) ५, १७, ५, उतैधि पृत्सु नो वृधे ।
६,४६,३ भवा समत्सु ... ।
[८३५] ५,१०,१ प्र नो राया परीणसा । १,१२९,९
[८३६] ५, १०, २ क्रत्वा दक्षस्य मंहना ।
(८८२) ५, १८, २ स्वस्य दक्षस्य मंहना ।
[८४०] ५, १०, ६ अस्माकासश्च सूरयः ।
(१८८९) १, ९७, ३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।
[८४०] ५,१०,६; ४,३७,७ विश्वा आशास्तरीषणि ।
[८४१] ५, १०, ७ स्तुतः स्तवान आ भर ।
(२०) १,१२,११ स नः स्तवान आ भर ।
[८४३] ५,११,२ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं ।
(१६७८) १०,१२२,४ (चित्रमहा वासिष्ठः । अग्निः)
—पुरोहितं ।
शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं ।
[८४३] ५,११,२ इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि ।
(१९६३) ३,४,११— सरथं तुरेभिः ।
१०,१५,१०— सरथं दधानाः ।
[८४६] ५, ११, ५ आ पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च ।
१०,१२०,९ हिन्वन्ति च शवसा ।
[८४९] ५,१२,२ (८५३) ५,१२,६ ऋतं स पात्यरुषस्य ।
(८४९) ५, १२, २ सपाम्यरुषस्य वृष्णः ।
[८५५] ५, १३, २ सिध्रमद्य दिविस्पृशः ।
(१९२५) १, १४२, ८; २, ४१, २० दिविस्पृशम् ।
[८५८] ५, १३, ५ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
त्वामग्ने वाजसातमं ।
स नो रास्व सुवीर्यम् ।
८, ९८, १२ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
त्वां शुष्मिन्पुरुहूत वाजयन्तं ।
स नो रास्व सुवीर्यम् ।

...)
तम्...... ।
यजिष्ठं मानुषे जने ।
(१८६१) १०, ११८, ९ (उरुक्षय आमहीयवः ।
रक्षोहाऽग्निः) तं ...... ।
[८६२] ५, १४, ३ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
तं हि शश्वन्त ईळते ।
७, ९४, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
ता हि शश्वन्त इळते ।
[८६२] ५, १४, ३; (५६१) ३. २९, ४
[८६५] ५, १४, ६ स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् ।
१, ९, ३ (इन्द्रः) स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ।
[८६९] ५, १५, ४ (धरुण आङ्गिरसः । अग्निः)
दधानः परि त्मना विषुरूपो जिगासि ।
७, ८४, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
दधाना परि त्मना विषुरूपा जिगाति ।
[८७१] ५, १६, १ मर्तासो दधिरे पुरः ।
१, १३१, १; ८, १२, २२ देवासो ... ।
८, १२, २५ देवास्त्वा ... ।
[८७७] ५, १७, २ (पुरुरात्रेयः । अग्निः)
अस्य हि स्वयशस्तर ।
५, ८२, २ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
— स्वयशस्तरं ।
[८७७] ५, १७, २ मन्द्रं परो मनीषया ।
(१४२६) ८, ७२, ३ रुद्रं ... ।
[८८२] ५,१८,२ स्वस्य दक्षस्य मंहना ।
(८३६) ५, १०, २ क्रत्वा दक्षस्य— ।
[८९३] ५, २०, ३ (प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अग्निः)
होतारं त्वा वृणीमहे ।
प्रयस्वन्तो हवामहे ।
(९१३) ५, २६, ४ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
होतारं त्वा वृणीमहे ।
(१३८९) ८, ६०, १ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
होतारं— ।
(१५८१) १०, २१, १ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा,
वसुकृद्वा वासुक्रः । अग्निः)
होतारं— ।
७, ९४, ६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
प्रयस्वन्तो— ।

८,६५,६ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
प्रयस्वन्तो— ।
[८९७] ५,२१,३ (सस आत्रेयः । अग्निः)
त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत ।
(९०५) ५,२३,३ (द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्निः)
विश्वे हि त्वा सजोषसो ।
(१२८७) ८,२३,१८ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
विश्वे हि त्वा सजोषसो— ।
[८९७] ५,२१,३; १।१५।७;
(१०४८) ६,१६,७ यज्ञेषु देवमीळते ।
[८९८] ५,२१,४ देवं वो देवयज्यया।
(१४२०) ८,७१,१२ अग्निं वो— ।
[८९८] ५, २१, ४ ऋतस्य योनिमासदः । ३,६२,१३
९,८,३; ९,६४,२२ ऋतस्य योनिमासदम्।
[८९९] ५.२२,१ (विश्वसामा आत्रेयः । अग्निः)
होता मन्द्रतमो विशि ।
(१४१९) ८, ७१, ११ (सुदीति- पुरुमीळ्हावाङ्गिरसौ तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
[९००] ५,२२,२ (विश्वसामा आत्रेयः । अग्निः)
न्यग्निं जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् ।
प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः ।
(९२६) ५,२६,७ (९२७) ८ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
न्यग्निं जातवेदसं ।
दधाता देवमृत्विजम् ।
प्र यज्ञ— ।
[९०१] ५,२२,३; (५००) ३,९,१;
(१२१९) ८,११,६ देवं मर्तास ऊतये ।
(३३०) १,१४४,५ — ऊतये हवामहे ।
[९०२] ५,२२,४ स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रयः
५, ३९, ५ गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः ।
[९०४] ५, २३, २; (८३४) ५, ९, ७
[९०५] ५, २३, ३; (८९७) ५, २१, ३
[९०५] ५, २३, ३; ५, ३५, ५; ८, ५, १७, ६, ३७
जनासो वृक्तबर्हिषः ।
३, ५९, ९ जनाय वृक्तबर्हिषे ।
[९०६] ५, २३, ४ (द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्निः)
रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि ।
(१०९६) ६, ४८, ७ (शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणिः । अग्निः)

[९१४] ५, २५, ४ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
अग्निं धीभिः सपर्यत ।
(१२५९) ८, १०३, ३ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
[९१५] ५, २५, ५; (५२३) ३, ११, ६
[९१६] ५, २५, ६; १, ११, २ जेतारमपराजितम् ।
[९१८] ५, २५, ८ ग्रावेवोच्यते बृहत् ।
१०, ६४, १५; १००।८ ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहत् ।
[९१९] ५, २५, ९ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
स नो विश्वा अति द्विषः ।
६, ६१, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सरस्वती)
सा नो— ।
[९२०] ५, २६, १ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
मन्द्रया देव जिह्वया ।
आ देवान्वक्षि यक्षि च ।
(१०४३) ६, १६, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः ।
आ देवान्वक्षि यक्षि च।
(१४७८) ८, १०२, १६ (प्रयोगो भार्गवः , पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपति—यविष्ठौ सहसः पुत्रौ ऽन्यतरो वा । अग्निः) आ देवान्वक्षि यक्षि च ।
[९२१] ५, २६, २ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
तं त्वा घृतस्नवीमहे ।
देवाँ आ वीतये वह ।
(११९५) ७, १६, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
तं त्वा दूतं कृण्महे यशस्तमं देवाँ आ वीतये वह । ...... तत्वस्त्वेमहे ।
[९२३] ५, २६, ४ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये ।
५, ५१, १ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वेदेवाः)
अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैरूमेभिरा गहि ।
देवेभिर्हव्यदातये ।
[९२३] ५, २६, ४; (८९३) ५, २०, ३;
(१३८९) ८, ६०, १
(१५८१) १०, ९१, १ होतारं त्वा वृणीमहे ।
[९२४] ५, २६, ५ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
यजमानाय सुन्वते ।
८, १४, ३ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
—सुन्वते ।

८, १०, १७ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)
१०, १७५, ४ (ऊर्ध्वग्रावा आर्बुदिः सर्पः । ग्रावाणः)
[९२४] ५, २६, ५; (१३) १, १२, ४; (१३५६)
८, ४४, १४ देवैरा सत्सि बर्हिषि ।
(९२६) ५, २६, ७ (९२७) ८; (९००) ५, २२, २
५, २६, ९; १, ३९, ५ देवासः सर्वया विशा ।

[९२८] ५, २७, १ त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैः ।
८, १, ३३ आसंगो अग्ने — ।
[९३८] ५, २८, ६ (विश्ववारात्रेयी । अग्निः)
अग्निं प्रयत्यध्वरे ।
(१५८६) १०,२१,६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।
(१४२०) ८, ७१, १२ (सुदीति-पुरुमीळ्हावाङ्गिरसौ, तयोर्वान्यतरः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[९४०] ६,१,२ (७५९) ५,१,५
[९४२] ६,१,४: (१९७) १,७२,३ नामानि चिद्दधिरे यज्ञियानि ।
[९४४] ६,१,६ (९४०) ६,१,२
[९४६] ६,१;८ (७९२) ५,४,३
[९४७] ६,१,९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
यस्त आनट् समिधा हव्यदातिम् ।
(१६७७) १०,१२२,३ (चित्रमहा वासिष्ठः । अग्निः)
—समिधा तं जुषस्व ।
[९४८] ६,१,१० नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः ।
७,६३,५ नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः ।
[९४८] ६,१,१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
वेदी सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर् ।
(१०१५) ६,१३,४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
यस्ते सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर्यज्ञैर्मर्तो निशितिं वेद्यानट् ।
[९४९] ६,१,११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
आ यस्ततन्थ रोदसी वि भासा ।
(९७६) ६,४,६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
अग्ने ततन्थ— ।
[९५०] ६, १, १२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
पूर्वीरिषो बृहतीरारे अघा
अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ।
९, ८७, ९ (उशना काव्यः । पवमानः सोमः)
पूर्वीरिषो बृहतीर्जीरदानो ।
६, ७४, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सोमारुद्रौ)
अस्मे भद्रा— ।
[९६०] ६, २, ९; (८३१) ५, ९, ४ अग्ने पशुर्न यवसे ।
[९६१] ६, २, १०; (७१६) ४,९,५ वेषि ह्यध्वरीयताम् ।

[९६२] ६, २, ११= ६, १४, ६, (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः
सुमतिं रोदस्योः । वीहि स्वस्ति सुक्षितिं
दिवो नॄन्द्विषो अंहांसि दुरिता तरेम
ता तरेम तवावसा तरेम ।
(१०३७) ६, १५, १५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यो, वीतहव्य आङ्गिरसो वा । अग्निः)
दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ।
[९७३] ६, ४, ३; २, २०, ५
अश्नस्य चिच्छिश्नथत्पूर्व्याणि ।
[९७६] ६, ४, ६; (९४९) ६, १, ११
[९७८] ६, ४, ८; (९९९) १०, ७, (१०११) १२, ६;
(१०१७) १३, ६; १७, १५; २४, १०,
मदेम शतहिमाः सुवीराः ।
[९७९] ६ ५, १ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
अद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् ।
६, २२, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
— मतिभिः शविष्ठम् ।
[९८३] ६, ५, ५ यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैः ।
४, ४, ७ यस्त्वा नित्येन हविषा य— ।
[९९२] ६, ६, ७ चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं ।
४, ४४, ६ नू नो रयिं— ।
[१७७७] ६, ७, ५ महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।
५, ८५, ६, महीं देवस्य नकिरा— ।
[१७७९] ६, ७, ७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर् ।
१, १६०, ४ वि यो ममे रजसी सुक्रतूयया ।
[१७७९] ६, ७, ७ वैश्वानरो वि दिवो रोचना कविः ।
९, ८५, ९ अरूरुचद्वि दिवो— ।

[९९३] ६, १०, १; (४८५) ३, ६, ६,
[९९९] ६, १०, ६ अवीर्वाजस्य गध्यस्य सातौ।
६, २६, २ महो वाजस्य—।
[१००४] ६, ११, ५ वृञ्जे ह यन्नमसा बर्हिरग्नौ।
७, २, ४ प्र वृञ्जते नमसा—।
[१००५] ६, ११, ६ देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः।
(१०११) ६, १२, ६ विश्वेभिरग्ने —।
[१००९] ६, १२, ४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। अग्निः)
अग्निः छवे दम आ जातवेदाः।
(११७२) ७, १२, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
[१०११] ६, १२, ६; (१००५) ६, ११, ६
[१०१५] ६, १३, ४; (९४८) ६, १, १०
[१०१९] ६, १४, २ (७६१) ५, १, ७

[९६२] ६, १४, ६ =, ६, २, ११; (१०३७) ६, १५, १५
ता तरेम तवावसा तरेम।
[१०२५] ६, १५, ३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, वीतहव्य आङ्गिरसो वा। अग्निः)
अर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः।
छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथः।
(१६७०) १०, ११५, ५ (उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः। अग्निः) अर्यः ... तरुषः।
(१०७४) ६, १६, ३३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। अग्निः)
भरद्वाजाय सप्रथः शर्म यच्छ।
[१०२८] ६,१५,६,६ देवो देवेषु वनते हि वार्यं
(६ ... नो दुवः)।
[१०२९] ६,१५,७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यो, वीतहव्य आङ्गिरसो वा। अग्निः)
विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुम्नैरीमहे जातवेदसम्।
(१३५१) ८,४४,१० (विरूप आङ्गिरसः। अग्निः)
विप्रं होतारमद्रुहं।
यज्ञानां केतुमीमहे।
[१०३४] ६,१५,१२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यो, वीतहव्य आङ्गिरसो वा। अग्निः)
(१०३४) ७,४,९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात्।
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री।

[१०३७] ६,१५,१५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः वीतहव्य आङ्गिरसो वा। अग्निः)
(१६१७) १०,५३,२ देवाः अग्निः सौचीकः। अग्निः)
— हि ख्यत्।

[१०४३] ६,१६,२ (९२०) ५,२६,१
[१०४६] ६, १६, ५ दिवोदासाय सुन्वते।
४, ३०, २० — दाशुषे।
६, ३१, ४ — सुन्वते सुतके।
[१०४८] ६, १६, ७, त्वामग्ने स्वाध्यो।
(१२४०) ८, १९, १७; (१३३९) ४३, ३०
ते घेदग्ने स्वाध्यो।
[१०४८] ६, १६, ७; (८९७) ५, २१, ३
[१०५०] ६, १६, ९; १, १४, ११ तं होता मनुर्हितः।
[१०५०] ६, १६, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। अग्निः)
वह्निरासा विदुष्टरः।
(१२००) ७, १६, ९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
[१०५१] ६, १६, १० अग्न आ याहि वीतये।
५, ५१, ५ वायवा याहि वीतये।
[१०५६] ६, १६, १५ (२१७) १, ७४, ३
[१०६१] ६, १६, २० स हि विश्वाति पार्थिवा।
६, ४५, २० स हि विश्वानि पार्थिवाँ।
[१०६३] ६, १६, २२; ५, ५२, ४ स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया।
[१०६५] ६, १६, २४; १, १४, ३ आदित्यान्मारुतं गणम्।
[१०६९] ६, १६, २८, अग्निस्तिग्मेन शोचिषा।
(२१) १, १२, १२ अग्ने शुक्रेण —।
[१०७०] ६, १६, २९; (२३९) १, ७८, १
(१०७७) ६, १६, ३६;
(१३११) ८, ४३, २ जातवेदो विचर्षणे।
[१०७०] ६, १६, २९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। अग्निः)
जहि रक्षांसि सुक्रतो।
९, ६३, २८ (निध्रुविः काश्यपः। पवमानः सोमः)
[१०७१] ६, १६, ३० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। अग्निः)
त्वं नः पाह्यंहसो जातवेदो अघायतः।
(११९१) ७, १५, १५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
— हसो दोषावस्तरघायतः।
[१०७४] ६, १६, ३३; (१०२५) ६, १५, ३

[१०७६] ६, १६, ३५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
सीदन्नृतस्य योनिमा ।
९, ३२, ४ (श्यावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः)
९, ६४, ११ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
[१०७७] ६, १६, ३६; (१०७०) ६, १६, २९
[१०८१] ६, १६, ४०; (८३०) ५, ९, ३
[१०८५] ६, १६, ४४ **अभि प्रयांसि वीतये ।**
१, १३५, ४ ... ... **सुधितानि वीतये ।**
[१०८५] ६, १६, ४४; १, १४, ६ **आ देवान्त्सोमपीतये ।**
[१०८७] ६, १४, ४६ ; ४, ३, १ **होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।**
[१०८७] ६, १६, ४६; (५८५) ३, १४, ५
[१०८८] ६, १६, ४७; (८०५) ५, ६, ५
[१०९०] ६, ४८, १ **प्रप्र वयममृतं जातवेदसं ।**
(१४४६) ८, ७४, ५ **अमृतं जातवेदसं ।**

[१०९२] ६, ४८, ३ (शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणिः । अग्निः)
महा**न्विभास्य**र्चिषा ।
अजस्रेण शोचिषा शोशुचच्छुचे ।
(१७९७) ७, ५,४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
त्वं **भासा** रोदसी आ ततन्था**जस्रेण शोचिषा शोशुचानः ।**
[१०९५] ६, ४८, ६ (शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणिः । अग्निः)
तिरस्तमो ददृश ऊर्म्यास्वा ।
(११५६) ७, ९, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
—ददृशे राम्याणाम् ।
[१०९७] ६, ४८, ८ (शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणिः । अग्निः)
शतं पूर्भिर्यविष्ठ पाह्यंहसः शतं हिमाः स्तोतृभ्यो ये च **ददति ।**
(१२०१) ७, १६, १० वसिष्ठोमैत्रावरुणिः । अग्निः)
ये राधांसि **ददत्य**श्व्या ।
तां **अंहसः** पिपृहि पर्तृभिष्ट्वं **शतं पूर्भिर्यविष्ठ्य ।**

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[१११२] ७, १, १३; (८०) १, ३६, १५
[१११०.] ७, १, २०= ७, १, २५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः ।
रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
[१११९] ७,१,२०,२५;(११३३)३, १०; (११४८)७,७,७; ७,८,७(११६०)९, ६;(११७०) ११, ५; (११७३) १२, ३; १३, ३; (११७६) १४, ३; १९, ११; २०, १०; २१, १०; २२, ९; २३, ६; २४, ६; २५, ६; २६, ५; २७, ५; २८, ५; २९, ५; ३०, ५; ३४, २५; ३५, १५; ३६, ९; ३७, ८; ३९, ७; ४०, ६; ४१, ७; ४२, ६; ४३, ५; ४५, ४; ४६, ४; ४७, ४; ४८, ४; ५१, ३; ५३, ३; ५४, ४; ५६, २५; ५७, ५; ५८, ६; ६०, १२; ६१, ७; ६२, ६; ६३, ६; ६४, ५; ६५, ५; ६७, १०; ६८, ९;६९,८; ७०,७; ७१, ६; ७२, ५; ७३,५; ७५, ८;७६,७;७७, ६; ७८, ५; ७९, ५; ८०, ३; ८४, ५; ८५, ५; ८६, ८; ८७, ७; ८८, ७; ९०, ७; ९१, ७; ९२,५; ९३, ८; ९५, ६; ९७, १०; ९८, ७; ९९, ७; १००, ७; १०१, ६; ९, ९०, ६; ९७, ३, ६; १०, ६५, १५; ६६, १५; १२२, ८, **यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।**

[११२५] ७,३,२; १,१४८, ४ **आदस्य वातो अनु वाति शोचिः ।**
[११२९] ७, ३, ६; ४, १०, ५;
[११३३] ७, ३, १०;= ७, ४, १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम ।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
७, ६०, ६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तस् ।
[११३५] ७, ४, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिदस्तु ।
सं यो वना युवते शुचिदन् ।
(१६६७) १०,११५, २ (उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः । अग्निः)
अग्निर्ह नाम धायि दन्नपस्तमः **सं यो वना युवते भस्मना दता ।**

[११३७] ७, ४, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि।
(१५९५) १०, ४५, ७ (वत्सप्रिर्भालन्दनः। अग्निः)
[११४०] ७, ४, ७; ४, ४१, १० **नित्यस्य रायः पतयः स्याम।**
७, ४, ९ = (१०३४) ६, १५, १२
७, ४, १० = (११३३) ७, ३, १०
७, ४, १० = ७, ३, १०
[११४५] ७, ७, ४; (६८६) ४, ६, ५
[११४८] ७, ७, ७; ७, ८, ७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम्।
इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
[११५४] ७, ८, ६; २, ३८, ११
शं यत्स्तोतृभ्य आपये भवाति।
(११४८) ७, ८, ७ = ७, ७, ७
[११५६] ७, ९, २ (१०९५) ६, ४८, ६
[११६५] ७, १०, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठमग्निं विश ईळते अध्वरेषु।
(१६०४) १०, ४६, ४ (वत्सप्रिर्भालन्दनः। अग्निः)
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः प्राञ्चं यज्ञं नेतार**मध्वराणाम्।** विशाम् ...।
[११६५] ७, १०, ५ **स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणाम्।**
(२७८) १, ७०, ५ — **क्षपावाँ अग्नी रयीणां।**
(११६६) ७, ११, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो।
१०, १०४, ६ (अष्टको वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
दाश्वाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतः।
[११६७] ७, ११, २ **त्वामीळते अजिरं** दूत्याय **हविष्मन्तः सदमिन्मानुषासः।**
(१९९४) १०, ७०, ३ **शश्वत्तममीळते** दूत्याय **हविष्मन्तो** मनुष्यासो **अग्निम्।**
[११६९] ७, ११, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
अथा देवा दधिरे हव्यवाहम्।
१०, ५२, ३ (अग्निः सौचिकः। विश्वे देवाः)
[११७२] ७, १२, २; (१००९) ६, १२, ४
[११७४] ७, १४, १; (५११) ३, १०, ३

[११७५] ७, १४, २ **वयं ते अग्ने समिधा विधेम।**
(१८२७) ४, ४, १५ **अया ते—।**
(७९६) ५, ४, ७ **वयं त अग्न उक्थैर्विधेम।**
[११७६] ७, १४, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम।
(१२०६) ७, १७, ७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
त ते देवाय दाशतः स्याम।
[११७८] ७, १५, २; ९, १०१, ९ **यः पञ्च चर्षणीरभि।**
५, ८६, २ **या पञ्च—।**
[११७८] ७, १५, २ (१५) १, १२, ६
[११८२] ७, १५, ६ (७७) १, ३६, १०
[११८४] ७, १५, ८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
स्वग्नयस्त्वया वयम्। **सुवीरस्त्वमस्मयुः।**
(१२३०) ८, १९, ७ (सोभरिः काण्वः। अग्निः)
स्वग्नयो ......।
सुवीरस्त्वमस्मयुः।
[११८६] ७, १५, १०; (२५५) १, ७९, १२
अग्नी रक्षांसि सेधति।
[११८६] ७, १५, १०; (४४४) २, ७, ४
[११८७] ७, १५, ११; (२४७) १, ७९, ४
ईशानः सहसो यहो।
[११८९] ७, १५, १३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
अग्ने रक्षा णो अंहसः **प्रति ष्म देव रीषतः।**
(१३५३) ८, ४४, ११ (विरूप आङ्गिरसः। अग्निः)
अग्ने नि पाहि नस्त्वं प्रति ष्म देव रीषतः
[११९१] ७, १५, १५; (१०७१) ६, १६, ३०
[११९२] ७, १६, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
ऊर्जो नपातमा हुवे।
(१३५५) ८, ४४, १३ (विरूप आङ्गिरसः। अग्निः)
[११९२] ७, १६, १; (१८२) १, १२८, ८
[११९४] ७, १६, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
उदस्य शोचिरस्थाद्।
(१२७३) ८, २३, ४ (विश्वमना वैयश्वः। अग्निः)
[११९५] ७, १६, ४; (९२३) ५, २६, २
[११९७] ७, १६, ६; १, १५, ३ **त्वं हि रत्नधा असि।**
[१२००] ७, १६, ९; (१०५०) ६, १६, ९
[१२०१] ७, १६, १०; (१०९५) ६, ४८, ८
[१२०२] ७, १६, ११ **पूर्णां विवष्ट्यासिचम्।**
२, ३७, १ **अध्वर्यवः स पूर्णां वष्ट्यासिचम्।**
[१२०३] ७, १६, ११; (५११) ३, ११, ४

[१२०३] ७, १६, १२; (७३६) ४, ११, ३
[१२०६] ७, १७, ३; (४८५) ३, ६, ६
[१२०७] [illegible]
[१२१०] ७, १७, [illegible] ७, १४, ३

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[१२१४] ८, ११, १ त्वं यज्ञेष्वीड्यः ।
(१५८६) १०, २१, ६ त्वां यज्ञेष्वीळते ।
[१२१५] ८, ११, २; (८७) १, ४४, २
[१२१८] ८, ११, ५; (५२५) ३, ११, ८
[१२१९] ८, ११, ६; (५००) ३, ९, १
[१२१९] ८. ११, ६ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
१०, १४१, ३ (अग्निस्तापसः । विश्वे देवाः)
[१२२१] ८, ११, ८ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
(१३३०) ८, ४३, २१ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः ।
समत्सु त्वा हवामहे ।
[१२२२] ८, ११, ९ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
वाजयन्तो हवामहे ।
८, ५३ (वालखिल्य ५), २ (मेध्यः काण्वः । इन्द्रः)
(१२२४) ८, १९, १; (२८८) १, १२८, ६
[१२२६] ८, १९, ३; (१०) १, १२, १
[१२२७] ८, १९, ४ **ऊर्जो नपातं सुभगं सुदीदिति-**
मग्निं श्रेष्ठशोचिषम् । (१३५५) ८, ४४, १३
ऊर्जो नपातमा हुवेऽग्निं पावकशोचिषम् ।
[१२२९] ८, १९, ६ **न तमंहो देवकृतं कुतश्चन ।**
२, २३, ५ **न तमंहो न दुरितं कुतश्चन ।**
१०, १२६, १ **न तमंहो न दुरितं ।**
[१२३०] ८, १९, ७ (११८४) ७, १५, ८
[१२३१] ८, १९, ८ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
अतिथिर्न मित्रियोऽग्नी रथो न वेद्यः ।
(१४५४) ८, ८४, १ (उशना काव्यः । अग्निः)
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् ।
अग्निं रथं न वेद्यम् ।
[१२३२] ८, १९, ९; ४, ३७, ६ **स धीभिरस्तु सनिता ।**
[१२३९] ८, १९, १६; (७१) १, ३६, ४
[१२४०] ८, १९, १७ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
ते घेदग्ने स्वाध्यो ये त्वा विप्र निदधिरे **नृचक्षसम् ।**
(१३३९) ८, ४३, ३० (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
ते घेदग्ने स्वाध्योऽहा विश्वा **नृचक्षसः ।**

[१२४३] ८, १९, २०; १, २६, २ **भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये ।**
[१२४४] ८, १९, २१; (७७) १, ३६, १०
[१२४७] ८, १९, २४; (५४३) ३, २७, ७
[१२४८] ८, १९, २५; (५२९) ३, २४, ३
[१२५५] ८, १९, ३२ **सम्राजं त्रासदस्यवम् ।**
१०, ३३, ४ **राजानं त्रासदस्यवम् ।**
[१२५८] ८, १९, ३५ **स्यामेदृतस्य रथ्यः ।**
७, ६६, १२, ८, ८३, ३ **यूयमृतस्य — ।**
[१२७३] ८, २३, ४; (११९४) ७, १६, ३
[१२७६] ८, २३, ७; (२७३) १, १२७, २
[१२७८] ८, २३, ९; (९६) १, ४४, ११
[१२८१] ८, २३, १२ **रयिं रास्व सुवीर्यम् ।**
(८५८) ५, १३, ५; ८, ९८, १२
स नो रास्व सुवीर्यम् ।
९, ४३, ६ **सोम रास्व सुवीर्यम् ।**
[१२८७] ८, २३, १८; (८९७) ५, २१, ३
[१२९१] ८, २३, २२ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् । प्रति स्रुगेति ।
(१३०७) ८, ३९, ८ (नाभाकः काण्वः । अग्निः)
अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ।
(१३९०) ८, ६०, २ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
स्रुवश्चरन्त्यध्वरे । अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ।
(१४७१) ८, १०२, १० (प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपति- यविष्ठौ सहसः पुत्रावन्यतरो वा । अग्निः)
अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ।
[१२९२] ८, २३, २३ **आभिर्विधेमाग्नये ।**
८, ४३, ११ **स्तोमैर्विधेमाग्नये ।**
[१२९४] ८, २३, २५; १, १२७, ८
[१२९६] ८, २३, २७ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
वंस्वा नो वार्या पुरु ।
(१४०१) ८, ६०, १४, (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
[१२९८] ८, २३, २९ **त्वं नो गोमतीरिषः ।**

५, ७९, ८; ८, ५, ९; ९, ६१, ४ उत नो— ।
[१२९९] ८, २३, ३० (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ।
८, २५, १ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ।
[१३००] ८, ३९, १-१०; ८,४०,१-११; ४१, १-१०;
४२,४-६ नभन्तामन्यके समे ।
[१३०५] ८, ३९, ६; (२८८) १, १२८, ६
[१३०७] ८, ३९, ८; (१२९१) ८, २३, २२
[१३१०] ८, ४३, १; ८, ३, १५ गिरः स्तोमास ईरते ।
[१३११] ८, ४३, २ (२३९) १, ७८, १
[१३२०] ८, ४३, ११ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।
स्तोमैर्विधेमाग्नये ।
(१६६४) १०, ९१, १४ (अरुणो वैतहव्यः । अग्निः)
यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्षणो वशा ।
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे ।
(१३६९) ८, ४४, २७ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
स्तोमैरिषेमाग्नये ।
[१३२४] ८, ४३, १५ अग्ने वीरवतीमिषम् ।
(२०) १, १२, ११; ९, ६१, ६ रयिं — ।
[१३२५] ८, ४३, १६; इमं स्तोमं जुषस्व मे ।
(२१) १, १२, १२ इमं स्तोमं जुषस्व नः ।

[१३२७] ८, ४३, १८ विश्वाः सुक्षितयः पृथक् ।
(१३३८) ८, ४३, २९
[१३२९] ८, ४३, २० वह्निं होतारमीळते ।
(१०१९) ६, १४, २ अग्निं होतारमीळते ।
(५१०) ३, १०, २ अग्ने— ।
[१३३०] ८, ४३, २१= (१२२१) ८, ११, ८
[१३३१] ८, ४३, २२ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
इमं नः शृणवद्धवम् ।
१०, २६, ९ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः । पूषा)
[१३३२] ८, ४३, २३ ; ४, ३२, १३= ८, ६५, ७
तं त्वा वयं हवामहे ।
[१३३३] ८, ४३, २४ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
अग्निमीळे स उ श्रवत् ।
(१३४८) ८, ४४, ६ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
[१३३९] ८, ४३, ३०; (१२४०) ८, १९, १७

[१३४०] ८, ४३, ३१; (५०७) ३, ९, ८
[१३४१] ८, ४३, ३२ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
शर्धन्तमांसि जिघ्नसे ।
९, १००, ८ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
[१३४८] ८, ४४ ६; (१३३३) ८, ४३, २४
[१३५१] ८, ४४, ९; ६, ५२, १२
चिकित्वान्दैव्यं जनम् ।
[१३५२] ८, ४४, १० (१०१९) ६, १५, ७
[१३५३] ८, ४४, ११ (११८९) ७, १५, १३
[१३५५] ८, ४४, १३ (११९२) ७, १६, १
[१३५६] ८, ४४, १४ (२१) १, १२, १२
[१३६१] ८, ४४, १९ (५०९) ३, १०, १
[१३६७] ८, ४४, २५; ८, ६, ४ समुद्रायेव सिन्धवः ।
[१३६९] ८, ४४, २७ (१३२०) ८, ४३, ११
[१३७०] ८, ४४, २८; २, ५, ८
[१३७०] ८, ४४, २८; १, १०, ९ तस्मै पावक मृळय ।
८, ४५, १ (त्रिशोकः काण्वः । अग्नीन्द्रौ)
स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।
(१९१०) १, १३, ५ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं=बर्हिः)
स्तृणीत बर्हिरानुषग् ।
८, ४५, १, १-३ येषामिन्द्रो युवा सखा ।
[२४५५] ८,५६ (वाल ८)। ५; (पृषध्रः काण्वः । अग्नीसूर्यौ)
(२१) १, १२, १२
[१३८९] ८, ६०, १; ५, २०, ३
[१३९०] ८, ६०, २; ८, २३, २२
[१३९१] ८, ६०, ३; ४, ७, १
[१३९१] ८, ६०, ३; १, १२७, २
[१३९२] ८, ६०, ४ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
मन्दस्व धीतिभिर्हितः ।
(१६८६) १०, १४०, ३ (अग्निः पावकः । अग्निः)
[१३९६] ८,६०,८ मा नो मर्ताय रिपवे रक्षस्विने ।
८,२२,१४ — रिपवे वाजिनीवसू ।
[१३९८] ८,६०,१० पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अराव्णः ।
१,३६,१५
[१४००] ८,६०,१२ येन वंसाम पृतनासु शर्धतः ।
६,१९,८ — पृतनासु शत्रून् ।
[१४०२] ८,६०,१४; ८,२३,२७
[१४०५] ८,६०,१७; १,१२७,२
[१४०६] ८,६०,१८; इषण्यया नः पुरुरूपमा भर

वाज ...

८,१,४ उप क्रमस्व पुरुरूपमा—

[१४०७] ८,६०,१९ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
तपानो देव रक्षसः ।
(१४७८) ८,१०२,१६ (प्रयोगो भार्गवः पावकोऽग्नि र्बार्हस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रावन्यतरो वा। अग्निः) तपानो देव शोचिषा ।

[१४१४] ८,७१,६ प्र णो नय वस्यो अच्छ ।
६,४७,७ प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।
(१५९७) १०,४५,९ प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।

[१४१६] ८,७१,८ त्वमीशिषे वसूनाम् ।
१,१७०,५ त्वमीशिषे वसुपते वसूनाम् ।

[१४१७] ८,७१,९; १,३०,१० सखे वसो जरितृभ्यः ।
३,५१,६ —जरितृभ्यो वयो धाः ।

[१४१८] ८,७१,१० पुरुप्रशस्तमूतये ।
८,१२,१४ पुरुप्रशस्तमूतय ऋतस्य यत् ।

[१४२०] ८,७१,१२ (८९८) ५,२१,४

[१४२१] ८,७१,१२ (९३८) ५,२८,६
(१५८६) १०,२१,६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।

[१४२२] ८,७१,१३ ईशे यो वार्याणाम् ।
१,५,२; २४,३ ईशानं वार्याणाम् ।
१०,९,५ ईशानं वार्याणाम् ।

[१४२६] ८,७२,३; (८७७) ५,१७,२

[१४३८] ८,७२,१५ उप स्रक्केषु बप्सतः ।
७,५५,२ — बप्सतो नि षु स्वप ।

[१४३९] ८,७२,१६ अधुक्षत्पिप्युषीमिषम् । ८,७,३

[१४४६] ८,७४,५ (१०९०) ६,४८,१

[१४४६] ८,७४,५; (५४९) ३,२७,१३

[१४४८] ८,७४,७; (३३२) १,१४४,७

[१४५३] ८,७४,१२; ७,९४,५ सबाधो वाजसातये ।
८,७४,१४ वक्षन्वयो न तुग्र्यम् ।
८,३,२३ अस्तं वयो— ।

[१३७५] ८,७५,३; (५२९) ३,२४,३

[१३८४] ८,७५,१२ मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा ।
६,५९,७ — परा वक्तं गविष्टिषु ।

...द्युम्नमीमहे ।

[१४५..., ...व (स्तुप) ।
...,८६,३ —अतिथिं गृणीषे ।

[१४५४] ८,८४,१; (१०३१) ८,१९,८

[१४५६] ८,८४,३ रक्षा तोकमुत त्मना ।
१,४१,६ विश्वं तोकमुत त्मना ।

[१४६१] ८,८४,८; ५,३५,७ पुरोयावानमाजिषु ।

[१४६३] ८,१०२,१; (१५) १,१२,६

[१४६५] ८,१०२,३; ८,२१,११ त्वया ह स्विद्युजा वयं ।

[१४६६-६८] ८,१०२, ४-६ अग्निं समुद्रवाससम् ।

[१४६९] ८,१०२,७; ५,७,१

[१४७१] ८,१०२,९ (प्रयोगो भार्गवः पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रौऽन्यतरो वा । अग्निः)
अग्निर्देवेषु पत्यते ।
आ वाजैरुप नो गमत् ।
९,४५,४ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
इन्दुर्देवेषु पत्यते ।

[१४७२] ८,१०२,१०; (१२९१) ८,२३,२२

[१४७३] ८,१०२,११; (५०७) ३,९,८

[१४७४] ८,१०२,१२; (७५४) ४,१५,६,

[१४७८] ८,१०२,१६; (१४०७) ८,६०,१९

[१४७८] ८,१०२,१६; (९२०) ५,२६,१

[१४७९] ८,१०२,१७; (७०४) ४,८,१

[१४८०] ८,१०२,१८ अग्ने दूतं वरेण्यम् ।
(१०) १,१२,१ अग्निं दूतं वृणीमहे ।

[१२५९] ८,१०३,३; (९१४) ५,२५,४

[१२६१] ८,१०३,५; १,४०,४ स धत्ते अक्षिति श्रवः ।
९,६६,७ दधानो अक्षिति श्रवः ।

[१२६१] ८,१०३,५; ५,८२,६; ८,२२,१८
विश्वा वामानि धीमहि ।

[१२६३] ८,१०३,७ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
पर्षि राधो मघोनाम् ।
९,१,३ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

ऋग्वेदस्य दशमं मंडलम् ।

[१४९३] १०,२,२; (२३२) १,७६,४

[१४९३] १०,२,२ देवो देवान्यजत्वग्निरर्हन् ।

(१९४२) २,३,१

[१४९५] १०,२,४ यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि ।

८.४८,९ यत्ते वयं — ।
[१५०७] १०,४,२ अन्तर्महाँश्चरासि रोचनेन ।
३,५५,९ अन्तर्महांश्चरति रोचनेन ।
[१५१२] १०,४,७ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
रक्षा णो अग्ने तनयानि तोका रक्षोत
नस्तन्वो ३ अप्रयुच्छन्।
(१५३३) १०,७,७ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
भवा नो अग्नेऽ वितोत गोपा।
त्राखोत नस्तन्वो ३ अप्रयुच्छन्।
[१५१४] १०,५,२ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
ऋतस्य पदं कवयो नि पान्ति ।
१०,१७७,२ (पतङ्गः प्राजापत्यः । मायाभेदः)
ऋतस्य पदे कवयो- - ।
[१५२६] १०,६,७ सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूथ ।
८,९६,२१ —हव्यो बभूव ।
[१५२६] १०,६,७, तं ते देवासो अनु केतमायन् ।
४,२६,२ मम देवासो— ।
[१५२८] १०,७,१; १,१६३,७
यदा ते मर्तो अनु भोगमानत् ।
[१५३१] १०,७,५ विश्रु होतारं न्यसादयन्त। ३,९,९
[१५३३] १०,७,७: (१५१२) १०,४,७
[१५३४] १०,८,१; ६.७३,१
आ रोदसी वृषभो रोरवीति।
[१५३४] १०,८,१ अपामुपस्थे महिषः ववर्ध ।
(१५९१) १०,४५,३
अपामुपस्थे महिषा अवर्धन् ।
१०,९,५ ईशाना वार्याणाम्।
१,५,२; २४,३ ईशानं वार्याणाम् ।
(१४२१) ८,७१,१३ ईशे यो वार्याणाम्।
१०.९६,६= १,२३,२०
१०,९,७= १,२३,२१
१०,९,७= १,१३,२१; १०,५७,४ ज्योक्च
सूर्यं दृशे। १०,९,८= १,२३,२२
१० ९,९=१,२३,२३
[१५४४] १०,११,५ (३९२) २,२,८
[१५४७] १०,११,८ देवी देवेषु यजता यजत्र ।
४,५६,२ देवी देवेभिर्यजते यजत्रैः ।
७,७५,७ देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः।
[१५४८] १०,११,९= १०,१२,९ (हविर्धान आङ्गिः । अग्निः)
श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा
रथममृतस्य द्रवित्नुम्।
आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामप
भूरिह स्याः ।
[१५५४] १०.१२,६; १०,१०,२
सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति ।
[१५४८] १०,१२,९=१०,११,९
[१५६४] १०,१६,८ तस्मिन्देवा अमृता मादयन्ते ।
(१९६३) ३,४.११=७,२,११ स्वाहा देवा —।
[१५७१] १०,२०,१ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा
वासुक्रः । अग्निः)
भद्रं नो अपि वातय मनः ।
१०,२५,१ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा
वासुक्रः। सोमः)
—वातय मनो ।
[१५८०] १०,२०,१० (विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा
वासुक्रः । अग्निः)
एवा ...... ।
...... इयान इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः ।
१०,९९,१२ (वम्रो वैखानसः । इन्द्रः)
एवा ... ।
स इयानः करति स्वस्तिमस्मा इषमूर्जं सुक्षितिं
विश्वमाभाः ।
[१५८१] १०,२१,१ (८९३) ५,२०,३
[१५८२] १०,२१,२ (५०७) ३,९,८
[१५८३] १०,२१,३ (४०१) २,८,५
[१५८५] १०,२१,६ (१२१४) ८,११,१
[१५८६] १०,२१,६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।
(९३८) ५,२८,६;
(१४२०) ८,७१,१२ अग्निं प्रयत्यध्वरे ।
[१५८७] १०,२१,७ (५१०) ३,१०,२
[१५८८] १०,२१,८ (२१) १,१२,१२
[१५९०] १०,४५,२ विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा ।
(१६४७) १०,८०,४ अग्नेर्धामानि ... ।
[१५९०] १०,४५,२ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं
यत आजगन्थ ।
१०,८४,५ (मन्युस्तापसः । मन्युः)
प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि
विद्मा तमुत्सं यत आबभूथ ।
[१५९१] १०,४५,३ (१५३४) १०,८,१

[१५९४] १०,४५,६ (४८४) ३,६,५
[१५९५] १०,४५,७ (११३७) ७,४,४
[१५९७] १९,४५,९ (१४१४) ८,७१,६
[१५९८] १०,४५,१०; ५,३७,५
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवति ।
[१५९९] १०,४५,११ (६४१) ४,१,१५
[१६००] १०,४५,१२; ९,६८,१० अद्वेषे द्यावापृथिवी
हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ।
[१६०२] १०,४६,२ (४१७) २,४,२
[१६०४] १०,४६,४ (११६५) ७,१०,५
[१६१०] १०,४६,१० यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहम् ।
७,११,४
[१६१६] १०,५३,१ (६१०) ३,१९,१
[१६१७] १०,५३,२ (१०३७) ६,१५,१५
देवाः देवता १०,५३,५: ७,३५,१४
गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
१०,५३,५; ७,१०४,२३ पृथिवी नः पार्थिवा-
त्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ।
[१६२३] १०,५३,१० येन देवासो अमृतत्वमानशुः ।
१०,६३,४ बृहद्देवासो— ।
[१६३१] १०,६९,७ सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभ्वा ।
१,१००,१२ सहस्रचेताः शतनीथ ऋभ्वा ।
[१६३८] १०,७९,२ (५८५) ३,१४,५
[१६४५] १०,८०,२ अग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।
३,६१,७ वृषा मही — ।
[१६४७] १०,८०,४; (१५९०) १०,४५,२
[१६५०] १०,८०,७ (४६८) ३,१,२२
[१६५४] १०,९१,४ अरेपसः सूर्यस्येव रश्मयः ।
५,५५,३ विरोकिणः सूर्यस्येव — ।
[१६६०] १०,९१,१० (३७०) २,१,२
[१६६३] १०,९१,१३ (६६७) ४,३,२
[१६६४] १०,९१,१४ (८०५) ५,६,५
[१६६४] १०,९१,१४ (१३२०) ८,४३,११
[१६६७] १०,११५,२ (११३५) ७,४,२
[१६७०] १०,११५,५ (१०२५) ६,१५,३
[१६७३] १०,११५,८; १,५३,११ त्वां स्तोषाम त्वया
सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
[१६७७] १०,१२२,३ (९४७) ६,१,९
[१६७८] १०,१२२,४ (८४३) ५,११,२
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं ।

[१६८१] १०,१२२,७ (७८५) ५,३,८
[१६८५] १०,१४०,२ पृणक्षि रोदसी उभे ।
८,६४,४ ओभे पृणासि रोदसी ।
[१६८६] १०,१४०,३ (१३९१) ८,६०,४
[१६८९] १०,१४०,६ (१७३१) ३,२,५
अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना ।
[१६८९] १०, १४०, ६ (१०६) १, ४५, ७
[१६९८] १०, १५०, १ (५०५) ३, ९, ६
[१६९९] १०, १५०, २ (३७) १, २६, १०
[१७०१] १०, १५०, ४ अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरो-
हितः । (१७३४) ३, २, ८ अग्निर्देवानामभव
त्पुरोहितः । (२०१३) १०, ११०, ११
अग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।
[१७०५] १०, १५६, ३ पृथुं गोमन्तमश्विनम् ।
८, ६, ९; ९, ६२, १२; ६३, १२
रयिं गोमन्तमश्विनम् ।
[१७०६] १०, १५६, ४; ८, ८९, ७; ९, १०७, ७ आ
सूर्यं रोहयो दिवि । १, ७, ३ — रोहयद्दिवि ।
[१७११] १०, १८७, १ वृषभाय क्षितीनाम् ।
७, ९८, १ जुहोतन— ।
[१७११-१५] १०, १८७, १-५ स नः पर्षदति द्विषः ।
[१७१३] १०, १८७, ३ वृषा शुक्रेण शोचिषा ।
(२१) १, १२, १२ अग्निः शुक्रेण— ।
[१७१६] १०, १९१, १ अग्ने विश्वान्यर्य आ ।
९,६१,११ पना — ।
[१७१६] १०, १९१, १ स नो वसून्या भर ।
८, ९३, २९ स नो विश्वान्या भर ।
[१७१९] १,५९,३ (नोधा गौतमः । अग्निर्वैश्वानरः)
या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।
१,९१,४ (गोतमो राहूगणः । सोमः)
[१७१९] १,५९,५ राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां ।
३,३४,२ इन्द्र क्षितीनामसि — ।
[१७२१] १,५९,५ (नोधा गौतमः । अग्निर्वैश्वानरः)
युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ।
७,९८,३ (वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
[१७२५] १,९८,२ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः वैश्वानरोऽग्निर्वा)
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां ।
(१७९५) ७,५,२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
वैश्वानरोऽग्निः)
पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां ।

(१८१८) १०,८७,१ (पायुर्भारद्वाजः । रक्षोहाऽग्निः)
स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ।
[१७२८] ३,२,२ (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितो ।
(७९१) ५,४,२ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
हव्यवाळग्निरजरः पिता नो ।
[१७३१] ३, २, ५ (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना ।
(१६८९) १०, १४०, ६ (अग्निः पावकः । अग्निः)
[१७३४] ३, २, ८ (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
अग्निर्देवानामभवत्पुरोहितः ।
(२०१३) १०, ११०, ११ (जमदग्निर्भार्गवः रामो वा जामदग्न्यः) आप्रीसूक्तं= (स्वाहाकृतयः)
अग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।
(१७०१) १०, १५०, ४ (मृळीको वासिष्ठः । अग्निः)
अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरोहितो ।
[१७३६] ३, २, १० (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
विशां कविं विश्पतिं मानुषीरिषः ।
(७९२) ५, ४, ३ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
—मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम् ।
(९४६) ६, १, ८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
—विश्पतिं शश्वतीनां ।
प्रेतीशणिमिषयन्तं पावकं ।
[१७३७] ३,२,११ (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो ।
(५४१) ३,२७,५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
पृथुपाजा अमर्त्यो ।
[१७५५] ३,२६,३ स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्व्यं ।
८,१२,३३ सुवीर्यं स्वश्व्यं ।
[१७६०] ४,५,३ सहस्ररेता वृषभस्तुविष्मान् ।
२,१९,१२ यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मान् ।
[१७६१] ४,५,४ (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)
प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि ।
१०,८९,८ (रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जना मिनन्ति मित्रम् ।
[१७६५]४,५,८ पाति प्रियं रुपो अग्रं पदं वेः ।
(४७४) ३,५,५ पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः ।
[१७७७] ६,७,५ महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।

५,८५,६ महीं देवस्य नकिरा दधर्ष ।
[१७७९] ६,७,७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुः ।
१,१६०,४ वि यो ममे रजसी सुक्रतूयया ।
[१७७९] ६,७,७ वैश्वानरो वि दिवो रोचना कविः ।
९,८५,९ अरू रुचद्वि दिवो रोचना कविः ।
[१७८१] ६,८,२; (३१९) १,१४३,२ स जायमानः परमे व्योमनि । (१८००) ७,५,७—व्योमन् ।
[१७८१] ६,८,२ व्यन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुः ।
(१७७९) ६,७,७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुः ।
[१७८५] ६,८,६ अस्माकमग्ने मघवत्सु धारय ।
(३०१) १,१४०,१०—मघवत्सु दीदिहि ।
[१७८६] ६,८,७ अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टेऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरीन् ।
(३२५) १,१४३,८ अदब्धेभिरदृपितेभिरिष्टे ऽनिमिषद्भिः परि पाहि नो जाः ।
[१७९५] ७,५,२ पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां ।
(१७२५) १,९८,१ पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां ।
[१७९५] ७,५,२ नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
६,४४,२१ वृषा सिन्धूनां — ।
[१७९७] ७,५,४ अजस्रेण शोचिषा शोशुचानः ।
(१०९२) ६,४८,३—शोशुचच्छुचे ।
[१७९९] ७,५,६ उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय ।
१,११७,२१ उरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय ।
[१८००] ७,५,७ स जायमानः परमे व्योमन् ।
(३१९) १,१४३,२; (१७८१) ६,८,२—व्योमनि ।
[१८०६] ७,६,४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः) शचीभिः ।
अनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ।
१०,७४,५, (गौरिवीतिः शाक्त्यः । इन्द्रः)
शचीव इन्द्रमवसे कृणुध्वमनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ।
[१८११] ७,१३,२ (४८१) ३,६,२
आ रोदसी अपृणा जायमानः ।
४,१८,५ (१५९४) १०,४५,६
आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।
[१८१७] ४,४,५ (वामदेवो गौतमः । रक्षोहाऽग्निः)
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून् ।
१०,११६,५ (अग्नियुतः स्थौरोऽग्नियूपो वा स्थौरः । इन्द्रः)
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् ।

प्रतीत्या शत्रून्विगदेषु वृश्च ।

[१८१९] ४,४,७ यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः ।

(९८३) ६,५,५ यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैः ।

[१८२५] ४,४,१३ = (३४५) १,१४७,३

[१८२७] ४,४,१५ (वामदेवो गौतमः । रक्षोहाऽग्निः)

अया ते अग्ने समिधा विधेम ।

(११७५) ७,१४,२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)

वयं ते अग्ने— ।

[१८२८] १०,८७,१; (१७२५) १,९८,२

स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ।

[१८३१, १८४०] १०,८७,४; १३

ताभि-(१३ तया)- विध्य हृदये यातुधानान् ।

[१८४८] १०,८७,२१ पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात् ।

७,१०४,१९ प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तात् ।

[१८५०] १०,८७,२३ अग्ने तिग्मेन शोचिषा ।

अग्निस्तिग्मेन— । (२१) १,१२,१२

[१८५५] १०,११८,३ ; (२४८) १,७९,५

अग्निरीळेन्यो गिरा ।

[१८५७] १०,११८,५; (५०५) ३,९,६;

(१६९८) १०,१५०,१ देवेभ्यो हव्यवाहन ।

१०,११९,१३ देवेभ्यो हव्यवाहनः ।

[१८५९] १०,११८,७ गोपा ऋतस्य दीदिहि ।

(५१०) ३,१०,२ दीदिहि स्वे दमे ।

[१८६१] १०,११८,९; (८६१) ५,१४,२

यजिष्ठं मानुषे जने ।

(देवता- १-२३ अश्विनौ) १,११२,१-२३

ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ।

[१८६२] १०,१८८,१ अश्वं हिनोत वाजिनम् ।

९,६२,१८ हरिं हिनोत वाजिनम् ।

[१८६३] १०,१८८,१; (१९२४) १,१३,७; ८,६५,६

इदं नो बर्हिरासदे ।

[१८७२] १,९५,५ जिह्मानामूर्ध्वः स्वयशा उपस्थे ।

२,३५,९ जिह्मानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः ।

[१८७५] १,९५,८ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः, औषसोऽग्निर्वा)

त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्संपृञ्चानः सदने

गोभिरद्भिः ।

... ... धीः ... ।

९,७१,८ (ऋषभो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत्समना

सधति स्रिधः ।

सं सुष्टुती नसते सं गो अग्रया ।

[१८७८] १,९५,११=१,९६,९ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः, औषसोऽग्निर्वा)

एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पावक श्रवसे वि भाहि ।

तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।

[१८७९-८५] १,९६,१-७

देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ।

[१८८४] १,९६,६ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः द्रविणोदा अग्निर्वा)

रायो बुध्नः संगमनो वसूनां ।

१०,१३९,३ (विश्वावसुर्देवगन्धर्वः । सविता)

[१८८६] १,९६,८ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य ।

१,१५,७ द्रविणोदा द्रविणसो ।

[१८८७] १,९६,९=१,९५,११

[१८८७-९४] १,९७,१,१-८ अप नः शोशुचदघम् ।

[१८८९] १,९७,३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।

(८४०) ५,१०,६ अस्माकासश्च सूरयो ।

[१८९२] १,९७,६; (४) १,१,४ विश्वतः परिभूरसि ।

[१८९७] ४,५८,३ महो देवो मर्त्याँ आ विवेश ।

८,४८,१२ अमर्त्यो मर्त्याँ आविवेश ।

[१९०४] ४,५८,१० अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिम् ।

९,६२,३

[१९०७] १,१३,२ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं=तनूनपात्) मधुमन्तं तनूनपाद् ।

(१९१९) १,१४२,२ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं=तनूनपात्)

[१९०७] १,१३,२ अद्या कृणुहि वीतये ।

६,५३,१० नृवत्कृणुहि वीतये ।

[१९०८; १२] १,१३,३; ७ अस्मिन्यज्ञ उप ह्वये ।

[१९०९] १,१३,४ असि होता मनुर्हितः ।

१,१४,११ त्वं होता मनुर्हितो ।

८,३४,८ आ त्वा होता मनुर्हितो ।

[१९१०] १,१३,५ (मेधातिथि : काण्वः । आप्रीसूक्तं=बर्हिः)

स्तृणीत बर्हिरानुषग् ।

३,४१,२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

तिस्तिरे बर्हिरानुषक् ।

८,४५,१ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः, १ अग्नीन्द्रौ)

स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।

[१९११] १,१३,६ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं= देवीः द्वारः)
वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्चतः।
(१९२३) १,१४२,६ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं=देवीः द्वारः)
वि श्रयन्तामृतावृधः।
द्वारो देवीरसश्चतः।

[१९१२] १,१३,७ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं= उषासानक्ता)
नक्तोषासा सुपेशसा।
इदं नो बर्हिरासदे।
(१९२४) १,१४२,७ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं = उषासानक्ता)
नक्तोषासा सुपेशसा।
८,६५,६ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
इदं नो बर्हिरासदे।
(१८६३) १०,१८८,१ (श्येन आग्नेयः। जातवेदा अग्निः)
इदं नो बर्हिरासदे।

[१९१३] १, १३, ८ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
ता सुजिह्वा उप ह्वये होतारा दैव्या कवी।
यज्ञं नो यक्षतामिमम्।
(१९२५) १,१४२,८ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं=दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी होतारा दैव्या कवी।
यज्ञं नो यक्षतामिमं।
(१९३७) १,१८८,७ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
सुवाचसा होतारा दैव्या कवी।
यज्ञं नो यक्षतामिमम्।

[१९१४] १, १३, ९ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं= तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः)
(१९७१) ५,५,८ (वसुश्रुत आत्रेयः । आप्रीसूक्तं:—)
इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः।

[१९१५] १,१३,१०; १,७,१० अस्माकमस्तु केवलः।

[१९१८] १, १४२, १ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं= इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा)
तन्तुं तनुष्व पूर्व्यं।
८,१३,१४ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
—पूर्व्यं यथा विदे।

[१९१९] १, १४२, २; (१९०७) १, १३, २
मधुमन्तं तनूनपाद्।

[१९१९] १,१४२,२ यज्ञं विप्रस्य मावतः।
१, १७, २ हवं विप्रस्य मावतः।

[१९२०] १,१४२,३ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं= नराशंसः)
शुचिः पावको अद्भुतो।
८,१३,१९ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः।
९,२४,६ (असितः काश्यपो देवलो वा। पवमानः सोमः)
शुचिः पावको अद्भुतः।
९,२४,७ (असितः काश्यपो देवलो वा। पवमानः सोमः)
शुचिः पावक उच्यते।

[१९२१] १,१४२,४ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं=इळः)
ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रमिह प्रियम्।
(१९६६) ५,५,३ (वसुश्रुत आत्रेयः। आप्रीसूक्तं-इळः)

[१९२३] १,१४२,६; (१९११) १,१३,६

[१९२४] १, १४२, ७ (दीर्घतमा औचथ्यः आप्रीसूक्तं= उषासानक्ता)
यह्वी ऋतस्य मातरा सीदतां बर्हिरा सुमत्।
(१९६९) ५,५,६ (वसुश्रुत आत्रेयः। आप्रीसूक्तं= उषासानक्ता) यह्वी — ।
९,३३,५ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
यह्वीर्ऋतस्य मातरः।
९,१०२,७ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
यह्वी ऋतस्य मातरा।
१०,५९,८ (बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः। द्यावापृथिव्यौ) यह्वी ऋतस्य मातरा।
८,८७,४ (कृष्ण आङ्गिरसो, द्युम्नीको वा वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
अश्विना बर्हिः सीदतं सुमत्।

[१९२५] १,१४२,८ (१९१३) १,१३,८

[१९२५] १,१४२,८ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
सिध्रमद्य दिविस्पृशम्।
२,४१,२० (गृत्समदः शौनकः । द्यावापृथिवी हविर्धाने वा)
(८५५) ५,१३,२ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
सिध्रमद्य दिविस्पृशः।

[१९२८] १,१४२,११; १,१०५,१४
अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः ।
(१९४०) १,१८८,१० अग्निर्हव्यानि सिष्वदत् ।

[१९३४] १,१८८,४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । आप्रीसूक्तं=बर्हिः)
प्राचीनं बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन् ।
(१९८४) ९,५,४ (असितः काश्यपो देवलो वा । आप्रीसूक्तं=बर्हिः)
बर्हिः प्राचीनमोजसा पवमानः स्तृणन्हरिः ।

[१९३७] १,१८८,७ ; (१९१३) १,१३,८

[१९४०] १,१८८,१० (१९२८) १,१४२,११

[१९४२] २,३,१ (गृत्समदः शौनकः । आप्रीसूक्तं= इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा)
देवो देवान्यजत्वग्निर्हन् ।
(१४९३) १०,२,२ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)

[१९४८] २,३,७ (गृत्समदः शौनकः । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर ।
नाभा पृथिव्या अधि सानुषु त्रिषु ।
(१९५९) ३,४,७ (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
(४९७) ३,७,८ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे ।
१०,६६,१३ (वसुकर्णो वासुक्रः । विश्वे देवाः)
—प्रथमा पुरोहित ।
(२००१) १०,११०,७ (जमदग्निर्भार्गवः रामो वा जामदग्न्यः । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
— प्रथमा सुवाचा ।
(५६१) ३,२९,४ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
नाभा पृथिव्या अधि ।

[१९५०] २,३,९ अथा देवानामप्येतु पाथः ।
३,८,९; ७,४७,३ देवा (७,४७,३ देवैर्)
देवानामपि यन्ति पाथः ।

[१९५२] २, ३, ११ (गृत्समदः शौनकः । आप्रीसूक्तं= स्वाहाकृतयः)
अनुष्वधमा वह मादयस्व ।
(४८८) ३,६,९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

[१९५८] ३,४,६ यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषत् ।
१,४३,३ यथा नो मित्रो वरुणो ।

[१९५९] ३,४,७ (४९७) ३,७,८ (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसूक्तं = दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति । ऋतं शंसन्त ऋतमित्त आहुरनुव्रतं व्रतपा दीध्यानाः ॥

[१९५९] ३,४,७; (१९४८) २,३,७

[१९६०] ३, ४, ८ (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसूक्तं= ७,२,८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आप्रीसूक्तं= तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः)
आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः । सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक्तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥

[१९६१] ३,४,९ (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसूक्तं=त्वष्टा)
७,२,९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आप्रीसूक्तं=त्वष्टा)
तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व । यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥

[१९६२] ३,४,१० (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसूक्तं= वनस्पतिः)
७,२,१० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आप्रीसूक्तं= वनस्पतिः)
वनस्पतेऽव सृजोप देवानग्निर्हविः शमिता सूदयाति । सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद ॥

[१९६३] ३,४,११ (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसूक्तं= ७।२।११ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आप्रीसूक्तं= स्वाहाकृतयः)
आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः ।
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ।
(८४३) ५,११,२ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि ।
१०,१५,१० (शङ्खो यामायनः । पितरः)
इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः ।
(२००२) १०,७०,११ (सुमित्रो वाध्र्यश्वः । आप्रीसूक्तं=स्वाहाकृतयः ।
स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ।

[१९६६] ५,५,३ ; (१९२१) १,१४२,४

[१९६९] ५,५,६ ; (१९२४) १,१४२,७

देवत--संहितान्तर्गत-

अग्निमन्त्राणां उपमासूची।

अंशुः इव ५,२९,११; १३१५ अयं... आप्यायनाम्।
अंहः न ६,२,४; ९५५ स मर्तः ...द्विषः तरति।
अंहः न ६,११,६; १००५ वावसानाः वयं... वृजनं।
अप्रुवः न ७,२,५; १९७८ समनेषु[अग्निं शिशुं]...समञ्जन्।
अघ्न्या कृशं न ८,७५,८; १३८० देवाः... नः मा हासुः।
अंगिरस्वत् १,३१,१७; ६६ [अग्ने]...सद्ने अच्छ आ याहि।
अंगिरस्वत् ८,४३,१३; ८२२ शुचे, त्वा... हवामहे।
अजः न १,६७,५; १४८ अग्निः...क्षां पृथिवीं च दाधार।
अतसं यथा [त्वं] ८,६०,७; १३९५ क्षमि वृक्षं...संजूर्वसि।
अतसं शुष्कं न ४,४,४; १८१६ समिधान, यः नः।
अतिथिः न १,७३,१; २०५ स्योनशीः[अग्निः]...प्रीणानः।
अतिथिः (न) ६,२,७; ९५८ प्रियः... असि।
अतिथिः न ८,१९,८; १२३१ अग्निः...मित्रियः प्रशंसमानः।
अत्यः न १,५८,२; १११ प्रुषितस्य [अग्नेः] पृष्ठं... रोचते।
अत्यः रथ्यः वारान् दोधवीति न २,४,४; ४१९
अत्यः न ६,२,८; ९५९ अग्ने, शिशुः [त्वं]... ह्वार्यः।
अत्यः न ६,४,५; ९७५... त्वं हुतः पततः परिहुत्।
अत्यः न १०,६,२; १५११... अपरिह्वृतः सस्निः।
अत्यः न ३,२,७; १७३३ सः [अग्निः] ... अध्वराय परि।
अत्यम् न ७,३,५; ११२८ यविष्ठं तं अग्निं नरः...मर्जयन्त।
अत्यम् न ३,२,३; १७२९ महाँ अग्निं ...वाजं सनिष्यन्।
अत्रिवत् ५,७,८; ८१८ यस्मै (अग्नये)...परीयते।
अथर्यः न ४,६,८; ६८९ यं अग्निं द्विः पञ्च स्वसारः ...।
अथर्ववत् ६,१५,१७; १३०९ वेधसः ... इमं उ स्यत्।
अथर्ववत् १०,८७,१२; १३८९ दैव्येन ज्योतिषा सत्यं।
अद्रोघः न ६,१२,३; १००८ ओषधीषु द्रविता अवर्त्रः।
अध्वराः इव ३,६,१०; ४८९ ऋतजातस्य सुमेके ऋतावरी।
अप्नवानवत् ८,१०२,४; १४६६ समुद्रवाससं अग्निं...आहुवे।
अमतिः न १,७३,२; २०६ पुरुप्रशस्तः (अग्निः)... सत्यः।
अमृतात् इव १०,१७६,४; १७९०अयम् अग्निः...जन्मनः।
अयः न ४,२,१७; ६६३ सुकर्माणः देवाः जनिम...धमंत।
अयसः धारां न ६,३,५; ९६७ सः[अग्निः]असिष्यत् तेजः...
अर्वन्तम् न ४,१५,६;७५४ सानसिं तम् दिवेदिवे...।
अर्वन्तं न ८,१०२,१२, १४७४सानसिं शुष्मिणं...गृणीहि।

अर्वाणम् हिरिश्मश्रुं न १०,४६,५; १६०१ ...भिगं धुः।
अवशयून् जनं इव [अथर्व] ८४,३६,९; २३०३ ये
अवनीः मही: सिन्धुं इव ५,११,५; ८४६ अग्ने, त्वां गिरः...।
अविता विश्वासु विक्षु इव ८,७१,१५; १४२३ ऋपूणां वस्तुः।
अशनिः यथा दिव्या १,१४३,५; ३२२ यः (अग्निः)वराय।
अशनिः गोपुयुधः सृजाना न ६,६,५; ९९०
अशन्या वृक्षम् इव(अथ०) ७,१०९,४; २३६८ यः अस्मान्।
अश्वः गविष्टिषु क्रन्दत् १,३६,८; ७५ अग्ने त्वं कण्वे ...।
अश्वः न ३,२७,१४; ५५० वृषाः...देववाहनः अग्निः।
अश्वः न ३,२९,६; ५६३ वनेषु वाजी अरुषः आ...विरोचते।
अश्वः न ४,२,८; ६५४ दाश्वांसं तं स्वे दमे हेस्यावान् त्वं...।
अश्वः न ६,३,४; ९६६ (अग्निः) आसा ... यमसानः।
अश्वः न यवसे अविष्यन् प्रोथत् ७,३,२; ११२५ ...महः।
अश्वः क्रन्दन् जनिभिः न ३,२६,३; १७५५ युगे युगे।
अश्वासः न ररहाणाः रथ्यः १,१४८,३; ३५० यं [अग्निम्]।
अश्वाः (इव) विपितासः ६,६,४; ९८९ प्र सू नयन्त।
अश्वाः इव ८,२३,११; १२८० तव इन्धानासः भाः।
अश्वाः एवैः ससीवन्तः वाजेन १०,६,६, १५२५ यसिान्।
अश्वं वाजिनं न ७,७,१; १४४२ सहमानं देवं अग्निं ...।
अश्वं रथ्यं न ८,१०३,७; १२६३ सुदानवः देवयवः।
अश्वावत् ८,७२,६, १४२९ अस्य महत् बृहत् योजनं।
अश्वाः जातं शिशुं न ३,१,४; ४५० सप्त यह्वीः सुभगं।
अश्वः इव (अथर्व०)१२,२,५०; २२६३...अग्निः अन्तिकात्।
अश्वं अश्वाभिधान्या इव (अथ०) ४,३६,१०; २३०४
अश्वाय इव (अथर्व०) १९,५५,१; २२६९ अस्मै नागं।
अश्वाय इव (अथर्व०) १९,५५,६; २२७४ अस्मै घासम्।
अश्वमिद् ८,७४,१०; १४५१ गां रथप्रां [अग्निं] तूर्वय।
असश्चता इव १०,६९,८, १६३२ समना सबर्दुक् त्वे।
असिः गां इव १०,७९,६; १६४२ अक्रोळन् क्रीळन् हरिः।
असुरः इव ८,१९,२३; १२४६ अग्निः निर्णिजं उत् च।
अस्ता इव १,७०,११; १८४ [अग्निः] शूरः।
अस्ता इव ६,३,५; ९६७ [स्वकीयां ज्वालाम्]...असिष्यन्।
अस्तुः दिद्युत् न १,६६,७, १४० त्वेषप्रतीका।
अस्तुः अशनां शर्या न १,१४८,४; ३५१ अस्य शोचिः...।

आत्मा इव १,७३,२; २०६ अग्निः ...शेवः।
आपः इव प्रवताः ३,५,८; ४७७ ... शुम्भमानाः प्रस्वः।
आपिः (यथा) आपये यजति १,२६,३; ३० तथा त्वमपि।
आयुं न ६,११,४; १००३ यं सुप्रयसं पञ्च जनाः...भजंते।
आरोकाः इव ८,४३,३; १३१२ अग्ने तव तिग्माः त्विषः।
आशुम् न १,६०,५; १२३ वाजंभरं त्वां (अग्निम्) .. ।
आशुम् न ४,७,११; ७०३ अर्वां (अग्निः) [त्वरारश्मिम्]।
आशुम् इव आजिषु सप्तिं १०,१५६,१; १७०३ नः धियः।
इन्द्रं न ६,४,७; ९७७ शवसा...त्वा नृतमाः देवताः।
इन्द्रं न ८,७४,१०; १४५१ सत्पतिम्, (हे) कृष्टयः।
इन्द्रं न १०,६,५; १५२४ रेजमानं अग्निं... गीर्भिः।
इन्द्रस्य इव ७,६,१; १८०३ वन्दमानः [अहम्]...तवसः।
इषिराय भोज्या न १,१२८,५; २८७ अस्य अग्नेः।
उग्रः शवसा न १,१२७,११; २८२ अग्ने शवसा।
उग्रः इव ६,१६,३९; १०८० शर्यहा [अग्निः अस्ति]।
उक्षः इव ८,१९,१४; १२३७ सः सुभगः जनान् सुम्नैः।
उपमित रोधः न ४,५,१; ७५१८ अनूनेन बृहता वक्षथेन।
उरुज्यन्नं इव दिविरुक्मं ५,१,१२; ६६६ गविष्ठिरः...अश्रेत्।
भानुना उपसः न ६,१५,५; १०२७ यः [अग्निः] रुरुचे।
उपसाम् इव १०,९१,४; १६५४ चिकित्र ते इनयः...संति।
उपसां केतवः इव ८,४३,५; १३१४ एते ते अग्नयः।
उपसां केतवः न १०,९१,५; १६५५ चिकित्र तव केतवः।
उपः जारः न १,६९,१; १६४ शुकः [अग्निः]... [भवति]।
उपः जारः न १,६९,९; १७२ ...विभावा संज्ञानरूपः।
उपः जार न ७,१०,१; ११६१ पृथु पाजः अश्रेत्।
उस्रः पिता इव ६,१२,४; १००९ द्रवस्रः यज्ञैः जारयाग्नि।
उस्राः इव प्रस्नातीः ८,७५,८; १३८०देवाः...नः मा हासुः।
ऊधः मातुः [प्रतियथा वत्साः उपजीवन्ति] १०,२०,२;
　　१५७२ [तद्वत्] यस्य धर्मन् स्वर् एनीः सपर्यन्ति।
ऊधः न गोनां १,६९,३; १६६ अग्निः ...पितूनां स्वाद्म।
ऊर्मी सिन्धोः उपाके आ १,२७,६; ४३चित्रभानो विभक्तासि।
ऊर्मयः सिन्धोः प्रस्वनितासः इव १,४४,१२; ९७ अग्नेः।
ऊर्मिः नावं न ८,७५,९; १३८१ समस्य, दृळ्यः परिद्वेषसः।
ऊर्मयः प्रवणे न ८,१०३,११; १२६७ धिया वाजं सिषासतः।
ऋभुः न ६,३,८; ९७० स्वपः रणसानः [अग्निः] ...अद्यौत्।
ऋषिः न १,६६,४; १३७ [अग्निः] स्तुभ्वा [अस्ति।]
एकाम् इव ३,७,४; ४९३ दिद्युतः अग्निः रोदसी...वि।
एतारी न ६,१२,४; १००९ अस्माकेभिः शूरैः अग्निः...स्तवे।
ओकः न १,६६,३; १३६ [अग्निः] रण्वः।
औशिजः त्मन् न दीयन् ६,४,६; ९७६ चित्रः शोचिषा।
कन्या इव अग्निं अञ्जानाः वहतुं ४,५८,९; १९०३ वहतुं।

कविम् इव ८,८४,१; १४५५ ..प्रचेतसं यं देवासः मर्त्येषु।
कुमारः न १०,७९,३; १६३९ मातुः प्रतरं गुह्यं इच्छन्।
क्रतुः न १,६६,५; १३८ [अस्ति] नित्यः।
क्रतुम् न ४,१०,१; ७२०तम् ते (त्वा) ओहैः स्तोमैः ऋध्याम।
क्रतुः न १,६७,१; १४५ ... [अग्निः] भद्रः।
क्षामा इव विश्वा भुवनानि ६,५,२; ९८० यस्मिन् पावके।
क्षितिः पृथ्वी न १,६५,५; १२८ [विस्तीर्णा भूमिः इव।]
क्षितिः राया न ४,५,१५; १७७२ सुदशीकरूपः पुरुवारः।
क्षेमः न १,६७,१; १४५ [अग्निः] साधुः।
क्षोदः न १,६५,५; १२८ शंभु (यथा उदकं सुखं करोति)।
क्षोदः न १,६५,६; १२९ [अग्निः] सिन्धुः स्यन्दनशीलं।
क्षोदः सिन्धु न १,६६,१०; १४३ [अग्निः] नीचीः ऐनोत्।
स्वादिनम् न ६,१६,४०; १०८१ यं स्वध्वरं अग्निम्...।
गर्भः इव गर्भिणीषु सुधितः ३,२९,२; ५२९ जातवेदाः।
गर्भः इव योन्याः प्रच्युतः अथ० ६,१२१,४; १३८९ सर्वान्।
गविषः द्रप्सं दविध्वत् ४,१३,२; ७४१ यत् रश्मयः।
गिरिः न १,६५,५; १२८ भुज्म (सर्वेषां भोजयिता।)
गुहा इव ३,१,१४; ४६०... स्वे सदसि तृक्षं अग्निः नवः।
गावः अस्तं न १,६६,९; १४२ ...तं वः (त्वा) इन्द्रं अग्निं।
गावः वाश्राय प्रतिहर्यते ८,४३,१७; १३१६ अग्ने, ममस्तुतः।
गावः उष्णं न जम् इव १०,४,२; १५०७ यविष्ठ, त्वां जनासः।
गावः वाश्राः न (वा०) ९५,६; १८७३ उभे मेने... एवैः।
गाः खिले विष्ठिताः इव (अथ०)७,११५,४; २२०४ एताः।
गौः स्वं जरायुम् इव (अथ०) ६,४९,१; २३३७ कपिः।
गावः श्यावीं उच्छन्तीं अरुषीं न १,७१,१; १८५ सनीळाः।
गोः पदम् न ४,५,३; १७६० अग्निः...अपगूळ्हं मनीषां।
गोपाः पशून् न ७,१३,३; १८११ इर्यः परिज्मा, अग्ने।
गौर्यं यथा ह त्यत् पदि षितां ४,१२,६; ७३९ एवो।
ग्रावा सोता इव ४,३,३; ६६८ (तस्मै) देवाय शंसत।
ग्रावा इव ५,२५,८; ९१८ बृहत् [स्वम्]...उच्यते।
घनाः इव १,३६,१६; ८१ तपुर्जम्भ, अराव्णः विष्वक्...।
घर्मः न ५,१९,४; ८८९ [अग्निः] वाजजठरः अदब्धः।
घृतं न अघ्न्यायाः तप्तं शुचि४,१,६; ६३१ देवस्य मंहना।
घृतं पूतं न ४,१०,६; ७२५ स्वयावः, ते तनूः...ओपाः।
घृतं न अस्ये [प्रहुतं] यज्ञे सुपूतं ५,१२,१; ८४८ वृषभाय।
घृतं शुचि न ६,१०,२; ९९४ मतयः ..यं शूषं सोमं अस्मै।
आसनि कं घृतं न ८,३९,३; १३०१ अग्ने, तुभ्यं...मन्मानि।
घृतं स्रुचि इव १०,९१,१५; १६६५ अग्ने ते आस्ये...।
घृतं पूतं न ३,२,१; १७२७ ऋतावृधे वैश्वानराय...।
चक्षणिः वस्तोः न ६,४,२; ९७२ सः अग्निः...विभावा।
चन्द्रम् सुरुचं इव २,२,४; ४८८ [देवाः] अग्निं...स्वहारे।

चर्म इव ४,१३,४; ७४३ सूर्यस्य रश्मयः अप्सु अनाः ... ।
चर्मणी इव ६,८,३; १७८१ वैश्वानरः...धिषणे अवर्तयत् ।
चित्रः यामन् अश्विनोः न ३,२९,६; ५६३ वनेषु वाजी ।
छाया इव १,७३,८; २११ त्वं अग्निः विश्वं भुवनं... ।
छायाम् इव ६,११,३८; १०७९ अग्ने, घृणेः ते शर्म वयं ।
जनयः नित्यं पतिं न १,७१,१; १८५ उशतीः सनीळाः ।
जनयः शुम्भमानाः १०,११०,५; १००७ व्यचस्वतीः ।
'' '' (वा०य०) २९,३०, २११२ ''
जनयः न पतिरिपः ४,५,५; १७६२ दुरेवाः पापासः सन्तः ।
जनयः सुपत्नीः (यथा) वा०य० २०,४०; २०१८ इन्द्रं दुरः ।
जनयः पत्नीः न वा०य० २० ४३; २०२१ इन्द्रं जुषाणाः ।
जन्म तनयं न ३,१५,२; ५८९ अग्ने, मे स्तोमं...नित्यं ।
जाया योनौ इव १,६६,५; १३८ [अग्निहोत्रादिगृहे ।]
जाया पत्ये उशती सुवासाः ४,३,२; ६६७ अयं ते योनिः ।
जाया पत्ये उशती सुवासाः १०,९१,१३; १६६३ [अहम् ।]
जारः आ १०,११,६; १५४५ ... भगं पितरा उदीरय ।
जूर्णिः इव पुरि ६,२,७; ९५८ [अग्ने] त्वं...रण्वः ।
तक्वीः इव १०,९१,२; १६५२ वने वने शिश्रिये ।
तक्वा न १,६६,२; १३५ [अग्निः] भूर्णिः ।
ततरुषः न ६,१२,२, १००७ जंहः [त्रिषधःस्थः ।]
तन्यतुः यथा ५,२५,८; ९१८ दिवः ते स्वानः...आर्त ।
दिवः तन्यतुः न ७,३,६; ११२९ ते शुष्मः एति ।
तरणिः इव १,१२८,६, २८८ अरतिः अग्निः दक्षिणे हस्ते ।
तस्कराः तनू त्यजा इव १०,४,६; १५११ वनर्गू दशभिः ।
ताळिन् इव १,९४,७; २६२ दूरे चित् सन्...अति रोचसे ।
तातृषाणः न २,४,६; ४२१ यः अग्निः...वना आभाति ।
तायुं पश्वा (सहवर्तमानं) न १,६५,१; १२४ धीराः सजोषाः ।
तायुः गुहा पदं दधानः न ५,१५,५; ८७० महः राये अत्रिं ।
तायुः ऋणः न ६,१२,५, १०१० यः रुयः स्यन्द्रः त्रिषितः ।
तोदः अध्वन् न ६,१२,३; १००८ वृधसानः वनेराट् अग्नि ।
तोदस्य शरणे महस्य आ १,१५०,१; ३५८ अग्ने, तव हित्वत् ।
त्वष्टा रूपा इव ८,१०२,८; १४७० अयं [अग्निः] नः .... ।
यथा अग्नये इळाभिः ७,३,७; ११३० अग्ने, नः तेभिः ।
दिद्युत् अस्तुः त्वेषप्रतीका न १,६६,७; १४० [अग्नि] ।
दिवः ज्योतिः न १,६९,१; [अग्निः] समीची पप्रा ।
दिवः शिशुं न ४,१५,६; ७१४ अरुषं तं दिवे दिवे ।
दिवः न ४,१०,४; ७२७ अग्ने ते शुष्माः...प्रस्तनयन्ति ।
दिवः न ५,१७,३; ८७८ यस्य [अग्नेः] रेतसा त्र्यासं ।
दिवः न ६,३,७; ९६९ विधतः यस्य [अग्नेः]... ।
दुग्धम् न ५,१९,४; ८८९ जाम्योः रुचा [अग्निः]...शृणोतु ।
दूतः जन्यः मित्रः इव २,६,७; ४३९ करे अग्ने, उभया ।
देवः न १,७३,३; २०७ [अग्निः]... विश्वधाय्यः ।
द्याम् इव परिज्मानं १,१२७,२; २७३ चर्षणीनां होतारं ।
द्यौः स्तृभिः न १,२,५; ६८९ [अग्निः]...रोदसी ।
द्यौः नभोभिः स्मयमानः २,४,६; ४२१ ...कृष्णाध्वा तपुः ।
द्याम् इव स्तृभिः ४,७,३; ६९५ विश्वेषां अध्वराणां ।
द्यौः न १,६५,३; १२६ ...भूम अभूत् ।
द्यावः न १०,११५,७; १६७२ [ऋतायवः] शुष्मैः संति ।
द्यौः स्तनयन् इव १०,४५,४; १५९२ अग्निः अक्रन्दत् ।
द्रविः न ६,३,४; ९६६ [अग्निः] भक्षत्...दारु द्रावयति ।
द्वेषो युतः न ५,९,६; ८३३ ...मर्त्यानां दुरिता तुर्याम ।
धनुः इव (अथर्व०) ४,४,६; २१६२ ... पसः आ तनय ।
धन्वासाहा न १,१२७,३; २७४ निःषहमाणः (अग्निः) ।
धायोभिः वा ६,३,८; ९७० यः [अग्निः]... युज्येभिः ।
धाराः उदन्याः इव २,७,३; ४४३ वयं विश्वा द्विषः... ।
धासिम् इव १,१४०,१; २९२ सुद्युते अग्नये योनिम्... ।
धीरः स्तेन इव १,१४५,२; ३३४ [अग्निः]...मनसा ।
धेनवः स्वसरेषु वत्सं न २,२,२; ३८६ [अग्ने] त्वा ।
धेनुः दुहाना (इव) २,२,९; ३९३ [अग्ने त्वदीया] धीः ।
धेनोः मंहना इव ४,१,६; ६३२ देवस्य मंहना स्पार्हा ।
धेनुम् इव ५,१,१; ७५५ आयतीं उषासं प्रति जनानां ।
धेनुः सुदुघा इव ७,१,६; ११७९ उपासा नक्ता सुधिताय ।
ध्माता इव ५,९,५; ८३२ यत् [अग्निः] ईम् उपधमति ।
ध्मातरी यथा ५,९,५; ८३२ .. (स्वयमेव स्वात्मानं ।
नभः रूपं न १,७१,४०; १९४ (त्वं) कविः सन्...अभि ।
नभन्यः अर्वा १,१४९,३; ३५५ ... अग्निः अत्यः कविः ।
नराम् न १,१४९,२; ३५४ यः रोदस्योः ...वृषा ।
नारी इव अनवद्या पतिजुष्टा १,७३,३; २०७ अग्निः भवति ।
नेमिः अरान् न १,१४१,९; ३१३ अग्ने यत् भीम् क्रतुना ।
नेमिः चक्रम् इव २,५,३; ४२७ अग्निः...विश्वानि काव्या ।
नेमिः अरान् इव ५,१३,६; ८५९ अग्ने त्वं देवान्... ।
नेमिं ऋभवः यथा ८,७५,५; १३७७ अंगिरः सष्टुतिभिः ।
नावा सिन्धुम् न ५,४,९; ७९८ जातवेदः नः विश्वानि ।
नावा इव ५,२५,९; ९१९ अग्निः नः विश्वाः द्विषः... ।
नावा इव सिन्धुं १,९९,१; १८६२ अग्निः नः विश्वा ।
नावा इव १,९७,७; १८९३ विश्वतोमुख, नः द्विषः ... ।
नावया सिन्धुम् इव १,९७,८; १८९४ सः नः सः नः स्वस्तये ।
पयः न धेनुः १,६६,२; १३५ (पयः इव प्रीणयिता) ।
पाशुः न क्रुद्धतरः १,१२७,३; २७४ दीद्यानः अग्निः... ।
पाशुं न ४,६,८; ६८९ तिग्मं स्वासं दन्तं अग्निम् ।
पाशुः न ६,३,४; ९६६ [अग्निः]...जिह्वां विजेहमानः ।
परिज्मा इव ६,२,८; ९५९ अग्ने [त्वं] ..[सर्वगामः] ।

परिज्मा इव ६,१३,२; १०१३ दस्मवर्चाः क्षयसि ।
पथ्या इव ६,८,५; १७८४ राजन्, अजर,... तेजसा ।
पशुः न शिश्वा १,६५,१०; १३३ अग्निः शिश्वा अभूत् ।
पशुः न २,४,७, ४२२ अग्निः ... स्वयुः अगोपाः एति ।
पशुः न दाता ५,७,७; ८१७ सहिदम आक्षितं धन्व...।
पशुः न यवसे ५,५,४; ८३१ अग्ने (त्वं) वना... पुरू ।
पशुः न यवसे ६,२,९०; ९६० अग्ने, त्वं त्याचित् ।
पशुः इव अवसृष्टः १०,४,३; १५०८ [देवान्] जिगीषसे ।
पशुं नष्टं पदैः न १०,४६,२; १६०२ धीराः अपां सधःस्थे ।
पशुपाः इव १,४४,६; ३३१ अग्ने, त्वं दिव्यस्य पार्थिवस्य ।
पशुपाः इव ४,६,४; ६८५ अग्निः त्रिविष्टि ... परि एति ।
पशुपाः इव १०,१४२,२; १६९१ नः धियः ... स्मना ।
पशुषे न १,१२७,१०; २८१ उपर्बुधे अग्नये वः स्तोमः..।
पाथः न २,२,४; ३८८ पायुं पृश्न्याः पतरं अक्षभिः ।
पितुमान् इव १,१४४,७; ३३२ अग्ने, त्वं संदृशो रण्वः, ।
पिता सूनवे इव १,१,९; ९ अग्ने, नः ... सूपायनः ।
पिता सूनवे इव १,२६,३; ३० अग्ने (पितृस्थानीयः ।)
पितुः न जिव्रेः १,७७,१०; १८३ [अग्ने] त्वा नरः पुरुत्रा ।
पितुः न १,१२७,८; २७९ यस्य आसया अमी विश्वे ।
पिता इव २,१०,१; ४०९ जोहूत्रः प्रथमः अग्निः यत् ।
पितुः यथा ८,७५,२६; १३८८ अग्ने, ते अवसः वयं पुरा ।
पिता पुत्रम् इव १०,६९,१०; १६३४ सपर्यन् वाध्र्यश्वः...।
पितरा इव ३,१८,१; ६०५ अग्ने, त्वं उपेतां सुमनाः ।
पित्रोः (इव) ७,६,६; १८०८ रोदस्योः उपस्थं वैश्वानरः ।
पुत्राः पितुः न १,६८,९; १६२ ये अस्य (अग्नेः) शासं ।
पुत्रः न १,६९,५; १६८ जातः अग्निः ... दुरोणे रण्वः ।
पुत्रः मातरा न १०,१,७; १४९१ अग्ने, (त्वं) याता ।
पुत्रः पितुः न ८,१९,२७; १२५० सुधनः [अग्निः] नः ।
पुष्टिः रण्वा न १,६५,५; १२८ (अग्निः सर्वेषां ।)
पुष्टिः स्वस्य इव २,४,४; ४१९ अस्य पुष्टिः रण्वा ।
पूः न मही आयसी शतभुजिः ७,१५,१४; ११९० अग्ने ।
पूर्ववत् ३,२,१२, १७६८ सः ... जन्तवे धनं जनयन् ।
पृष्ठानीना वृजिना च इव ४,२,११; ६५७ विद्वान् [अग्निः।]
प्रपा धन्वन् इव १०,४,१; १५०६ हे अग्ने [त्वं]...असि ।
प्रयाः मरुतां इव ३,२९,१५; ५७२ ब्रह्माणः प्रथमजाः संति ।
प्रयुक्तिः मरुतां न ६,११,१; १००० अग्ने...[अस्मच्छत्रून्।]
प्रसितिः शूरस्य इव ६,६,५; ९९० अग्नेः क्षातिः... असि ।
प्रसितिं पृथ्वीं न ४,४,१; १८१३ ... पाजः कृणुष्व ।
प्राणः आयुः न १,६६,१; १३४ (प्रश्वसन् वायुरिव अग्निः।)
बन्धुरा इव ३,१४,३; ५८३ ते उपासः...दुरोणे तस्थतुः ।
बृहती इव १,५९,४; १७२० रोदसी सूनवे [अभूताम्।]

भगः इव १,१४४,३; ३१८ हव्यः सारथिः (सन्) ।
भगः ऋतुपाः इव ३,२०,४; ६१७ दैवीनां क्षितीनां...नेता
भगः न ५,१६,२; ८७२ अग्निः ...वारं वि ऋण्वति ।
भगम् इव १,१४१,६; ३१० होतारं अग्निं पपृचानासः ।
भगं दक्षं न १,१४१,११; ३१५ अग्ने, अस्मे...पर्णसि ।
भगं न १,१४१,१०; ३१४ हे महिरत्न, नव्यं त्वा वयं ।
भगस्य भुजिम् इव ८,१०२,६; १४६८ भुजिं समुद्रवाससं ।
भद्रे न १,९५,६; १८७३ [एनं अग्निं] उभे भद्रे मेने ... ।
भारं गुरुं न ४,५,६; १७६३ अग्ने, क्रियते... [त्वदीयं कर्म]
भारभृत् यथा ८,७५,१२; १३८४[तथा] अस्मिन् महाधने ।
भीमः न १,१४०,६; २९७ दुर्गृभिः...भृङ्गा दविधाव ।
भ्राजेन्यं भूम पृष्ठा इव ५,७,५; ८१५ ईम् [अग्निं] घृतस्य ।
भूमा विश्वं इव ८,३९,७; १३०६ सः मुदा पुरु काव्या..।
भृगुवत् ८,४३,१३; १३२२ शुचे त्वा...हवामहे ।
भृगुवत् और्वं ८,१०२,४; १४६६ समुद्रवाससं अग्निं...हुवे ।
भोजया मरुतां न १,१२८,५; १८७ अस्य अग्नेः तविषीषु ।
भ्राता इव स्वस्रां १,६५,७; १३० (अग्निः हितकारी अस्ति)।
मधोः पात्रा न ८,१०३,६; १२६२ अस्मै अग्नये...प्रयंति ।
मध्वा न ५,१९,३; ८८८ जन्तवः कृष्टयः ... एना ।
मनः न १,७१,९; १९३ यः एकः सूरः अध्वनः ... एति ।
मनुवत् २,१०,६; ४१४ [वधम्] ... वदेम ।
मनुषः यथा (सीदन्ति) १,२६,४; ३१ तथा वरुणः, मित्रः ।
मनुषः यथा यज्ञेभिः ६,४,१; ९७१ एवा नः अद्य समना ।
मनुष्वत् १,३१,१७; ६६ अंगिरः, सदने अच्छ आयाहि ।
मनुष्वत् २,५,२; ४२६ पोता अष्टमं दैव्यं विश्वं ... इन्वति ।
मनुष्वत् ३,१७,२; ६०१ अध इमं यज्ञं प्रतिर ।
मनुष्वत् ५,२१,१; ८९५ अग्ने, त्वा निधीमहि ।
मनुष्वत् ५,२१,१, ८३५ अग्ने, त्वा समिधीमहि ।
मनुष्वत् ५,२१,१; ८९५ अंगिरः अग्ने, देवयते ... देवान् ।
मनुष्वत् ७,२,३; १९७६ मनुना समिद्धं अग्निं महेम ।
मनुष्वत् ७,११,३; ११६८ अग्ने, देवान् इह यक्षि ।
मनुष्वत् ८,४३,१३, १३२२ शुचे, त्वा हवामहे ।
मनुष्वत् ८,४३,२७; १३३६ त्वां जनासः इन्धते ।
मनुष्वत् १०,७०,८; १९९९ यज्ञं इळा देवी घृतपदी जुषन्त ।
मनुष्वत् १०,११०,८; २०१० चेतयन्ती इह इळा ।
मनुष्यः न १,५९,४; १७२० दक्षः होता वैश्वानराय प्रायुंक्त ।
ममता इव ६,१०,२; ९९४ मतयः ... यं शूपं स्तोमं पवंते ।
मर्मृजेन्यः उशिग्भिः न १,१८९,७; ३६७ अग्ने अक्रः त्वं ।
मर्यं वाजिनं न ८,४३,२५; १३३४ विश्वायुवेपसं हितं ।
माता इव ५,१५,४; ८६९ पप्रथानः [त्वं] जनंजनं... भरसे ।
मित्रम् व शेवम् १,५८,६; १६५ जनेभ्यः सुहवं वरेण्यं दधुः

मित्रः न १,७७,३; २३६ स: [अग्निः] रथी: ... अभूत ।
मित्रम् इव १,१४३,७; ३२४ समिधानः अग्निं ऋंजते ।
मित्रम न २,२,३; ३८७ देवाः शुक्रशोचिषं ... क्षिरतेषु ।
मित्रः इव २,४,१; ४१६ य: जातवेदाः देवः ... भूत ।
मित्रं न (क्षेष्वन्तः) २,४,३; ४१८ देवासः क्षेष्यन्तः ।
मित्रः न ४,६,७; ६८८ ...सुधितः पावकः अग्निः दीदाय।
मित्रम् न ५,३,२; ७८० ... सुधितं गोभिः अञ्जन्ति ।
मित्रम् न ५,१६,१; ८७१ मर्तासः [अग्निं]...प्रशस्तिभिः।
मित्रः न ६,२,१; ९५२ अग्ने, त्वं . .क्षैतवत् यशः पत्यसे।
मित्रं न ६,१५,२; १०२४ भृगवः सुधितं यं ... दधुः ।
मित्रं न ८,२३,८; १२७७ ऋतावनि जने... सुधितम् ।
मित्रं न ८,७४,२; १४४३ सर्पिरासुतिं जनासः ... शंसंति ।
मित्रम् इव ८,८४,१; १४५४ प्रियं व: श्रेष्ठं अतिथिं स्तुषे ।
मित्रम् इव १०,७,५; १५३१ प्रयोगं अग्निं आयवः।
मित्रम् न २,२,३; ३८७ देवाः शुक्रशोचिषं क्षितिषु ।
मित्रः इव २,४,१; ४१६ य: देवः जातवेदाः...दिधिषाय्यः।
मित्रः न ५,१०,२; ८३६ यज्ञियः त्वं ... क्राणा [भव]।
मित्रः न ६,२,१; ९५१ अग्ने, त्वं ... क्षैतवत् यशः ।
मित्रः न ६,१३,२; १०१३ बृहतः ऋतस्य, क्षत्ता असि ।
मित्रं प्रियं न ६,४८,१; १०९० अमृतं जातवेदसं वयं ...।
मित्रं न ८,१०२,१२; १४७४ यातयज्जनं शुष्मिणं...गृणीहि।
मित्रः यथा, वरुणः, इन्द्रः ३,४,६; १९५८ तथा उषासानक्ते
मित्रासः न १०,११५,७; १६७२ सुधिताः ऋतायवः।
मृगाः क्षिपणः ईषमाणाः इव ४,५८,६; १९०० एते घृतस्य।
मेता इव ४,६,२; ६८३ [अग्निः]... भूमं द्याम् उप ।
मेषः इव (अथ०) ६,४९,२; २३३८ यत् उत्तरद्रौ उपरः च ।
यथा ऋतुभिः देवान् देव, १०,७,६; १५३२ एवं, आ यज।
यज्ञं प्रजानन् यथा अथ. ४,२३,२; २३३१ एवा देवेभ्यः नः।
ययातिवत् १,३१,१७; ६६ अंगिरः, सदने अच्छ आ याहि।
यवः न पक्वः १,६६,३; १३६ पक्वः यवः इव उपभोग योग्यः।
यवः वृष्टिः इव २,५,६; ४३० तासां(जुह्वादीनाम्) आगतौ।
यवं न ७,३,४; ११२७ दस्म, [त्वं]... जुह्वा विवेक्षि ।
यवसा पुष्यते इव १०,११,५; १५४४ त्वं सदा रण्वः असि।
यह्वम् न ५,१६,४; ८७४ रोदसी श्रवः तमित् ... परि ।
याता इव १,७०,११; १८४ भीमः अग्निरपि दृष्टमात्रेण ।
यामन् तूर्वन् न ६,१५,५; १०२७ एतशस्य रणे ... यः ।
युयुधयः न १०,११५,४; १६६९ रण्वासः ऋत्विजः सन्ति।
युवत्योः [न] १०,३,७; १५०५ दिवस्पृथिव्योः...अरतिः।
युवतयः युवानं अस्मेराः २,३५,४; २४२५ मर्मृज्यमानाः।
यूथा इव क्षुमति पश्वः ४,२,१८; ६६४ देवानां यत् ।
यूथम् न ५,२,४; ७७०अहं सुमत् पुरु शोभमानं क्षेत्रात् ।
योधः शत्रून् न १,१४३,५; ३२२ अग्निः वनानि ऋञ्जते।
योषणः अभ्रातरः न ४,५,५; १७६२ दुरेवाः पापासः ।
योषाः समना इव ४,६८,८; १९०२ कल्याण्यः स्मयमानासः।
रघवः वाजम् न ४,५,१३; १७७० का मर्यादा, वयुना ।
रथः न १,५८,३; ११२ देवः विक्षु... आयुषु ऋञ्जमानः।
रथः न १,६६,६; १३९ रुक्मी [अग्निः]।
रथः शिक्वभिः कृतः न १,१४१,८; ३१२ यातः (सन्) ।
रथः न ३,१५,५; ५९२ अग्ने, हरिः त्वं नः वाजं ... ।
रथः न स्वानः ५,१०,५; ८३९ अग्ने, धृष्णुया भ्राजन्तः ।
रथः न ८,१९,८; ११३१ [अग्नि] वेधः ।
रथम् इव १,९४,१; २५६ जातवेदसे मनीषया इमं स्तोमं।
रथम् इव २,२,३; ३८७ देवाः तं वेधं अग्निम् ...न्येरिरे ।
रथम् न क्रन्तः ४,२,१४; ६६० सुध्यः आशुषाणाः ।
रथम् न ५,२,११; ७७७ तुविजात, विप्रः अहं ते एतं ।
रथम् न ८,८४,१; ११५४ वेधं अग्निं स्तुषे ।
रथम् न १०,४,६; १५११ शुचयद्भिः अङ्गैः... युंक्ष्व ।
कुलिशः रथं न ३,२,१; १७२७ द्विता होतारं मनुषः।
रथम् न ३,२,१५; १७४१ मन्द्रं विश्वचर्षणिं चित्रं....ईमहे ।
रथासः एकं नियानं वहन्तः १०,१४२,५; १६९४ ददृश्रे।
रथः न १०,१७६,२; १७०९ यः अभीवृतः।
रथीः इव ४,१५,२; ७५० अग्निः अध्वरं... परि याति ।
रथीः इव ८,७५,१; १३७३ अग्ने:...देवहूतमान् युंक्ष्व ।
रथ्यः यथा १०,९१,७; १६५७ अग्ने, यक्षतः ते अजराणि।
रथी पतीन् इव अथर्व० ७,६२,१; २३७३ अग्निः अजयत्।
रथ्या इव २,४,६; ४२१ [अग्निः] ...स्वानीत् ।
रयिः न १,६६,१; १३४ [अग्निः] चित्रः ।
रयिः पितृवित्तः इव १,७३,१; २०५ यः [अग्निः] वयोधाः ।
रयिः न देवतातये १,१२७,९; २८० अग्ने, शुष्मिन्तमः ।
रयिः इव १,१२८,१; २८३ अग्निः ध्रवस्यते...[भवति ।]
रयिः यथा वीरवतः ७,१५,५; ११८१ [तथा] यस्य श्रियः ।
रयिं चारुं न १,५८,६; ११५ [अग्ने] भृगवः त्वा आदधुः।
रयिम् इव १,६०,१; ११९ प्रशस्तं [अग्निं] मातरिश्वा भरत।
रयिं न १,१४१,११; ३१५ अस्मे स्वर्थं दमूनसं...पपृचासि।
रश्मयः ध्रुवासः सूर्ये न १,५९,३; १७१९ वैश्वानरे अग्ना ।
रश्मीन् यमति इव १,१४१,११; ३१५ सः उभे जन्मनी ।
रश्मीन् सारथिः वोळ्हुः १,१४४,३; ३३८ हव्यः सारथिः।
राजा इभ्यान् न १,६५,७; १३० [अग्निः] वनानि...अत्ति।
राजा अजुर्यम् इव १,६७,१; १४४ मित्रः [अग्निः]... ।
राजा हितमित्रः न १,७३,३; २०७ [यः अग्निः]...उपेक्षति।
राजा इव ६,४,४; ९७४ अवृके क्षेष्यन्तः जेः ।
राजा न ६,९,१; १५८७ जायमानः अग्निः...ज्योतिषा ।

राजा अमवान् इथेन इव ४,४,१; १८१३ [अग्ने, त्वं याहि।]
राजानम् विशः इव ६,८,४; १७८३ ... [स्तोतारः।]
रुक्मः न ४,१०,५; ७२४ अग्ने, स्वादिष्ठा तव संदृष्टिः।
रुक्मः न ४,१०,६; ७२५ स्वधावः, ते शुचि हिरण्यः रोचन्ते।
रुक्मः न ७,३,६; ११२० स्वनीक, यत्...उपाके।
रेभः न ६,३,६; ९६८ सः [अग्निः]...उस्राः प्रति वस्ते।
रेभः (ऋपूणां अग्रे) न १,१२७,१०; २८१ ऋपूणां [मध्ये।]
वन्दना वृक्षम् इव (अथ०) ७,११५,२; २२०२ या पतयालूः।
वंसगः (पूर्व माह्वान्) न १,५८,५; ११४ तपुर्जम्भः वाति।
वंसगः तिग्मशृङ्गः न ६,१६,३९; १०८० अग्ने, त्वं...।
वत्सः [इव] ८,७२,५; १४२८ चरन् कृशन् इह निदातारं।
वत्सासः मातृभिः न ८,७२,१४; १४३७ जामिभिः नसन्ता।
वना इव १,१२७,३; २७४ यस्य [अग्नेः] समृतौ वीळु।
वना इव १,१२७,४; २७५ यः [अग्निः] पुरूणि...गाहते।
वनिनः वयाः न ६,१३,१; १०१२ अग्ने, त्वत् त्रिधा।
वनिनं न ६,८,५; १७८४ अजर, अघशंसं नीचा... वृश्च।
वनेराट् [न] ६,१२,३; १००८ यस्य [अग्नेः] अरतिः।
वप्ता इव १०,१४२,४; १६९३ यदा वातः ते शोचिः।
वयाः इव २,५,४; ४२८ अस्य [अग्नेः] ध्रुवा व्रता विद्वान्।
वयाम् प्र उज्जिहानाः इव ५,१,१; ७५५ अस्य यह्वाः।
वयाः (उपक्षितः) इव ८,१९,३३; १२५६ अग्ने, अन्ये।
वयाः इव ६,७,६; १७७८ मम विस्रुहः...वैश्वानरस्य।
वरुणाः इव २,३,६; १९४७ उपासानक्ता...रणिते ततं।
वरुणः यथा १०,११,१; १५४० सः [अग्निः] पिया वेद।
वरुणः न १,१४३,४; ३२१ यः एकः वस्वः [अग्निः]...।
वर्म स्यूतं इव १,३१,१५; ६४ अग्ने, त्वं नरं पासि।
वर्म युग्मु इव १,१४१,१०; ३०१ [त्वं] परिजर्भुराणः भव।
वसुम् न १०,१२२,१; १६७५ चित्रमहसं [अग्निम्] गृणीषे।
वस्रेग इव १,१४०,१; २९२ योनिं [योनिस्थानं]...।
वाह्नम् न १०,११५,३; १६६८ आसा... [हविः] वहतां।
वाजयन् इव २,८,१; ३९७ यशसामस्य मीळ्हुषः अग्नेः।
वाजयुः न ५,१०,५; ८३९ अग्ने धृष्णुया भ्राजन्तः यन्ति।
वाजी न १,६६,४; १३७ [अग्निः] प्रीतः [अस्ति]।
वाजी न प्रीतः १,६९,५; १६८ [अग्निः] विशः...वितारीत्।
वाजी न सर्गेषु प्रस्तुभानः ४,३,१२; ६७७ अग्ने, मधुमद्भिः।
वाजिनः न ४,६,५; ६८६ अस्य [अग्नेः] शोकाः... द्रवंति।
वाजी सन् (इव) ४,१५,१; ७४९ होता अग्निः नः अध्वरे।
वाजी न ६,२,८; ९५९ अग्ने, [त्वं] ... कृत्व्यः।
वाजी अत्यः न ४,५८,७; १९०१ घृतस्य धाराः...भवति।
वातः इव १,७९,१; २४४ हिरण्यकेशः अहिः धुनिः ...।
वानाः न १०,११५,४; १६६९ पशोः अत्युताः [पनायाः]।
वायुः न ६,४,५; ९७५ राष्ट्री...अक्तून् अत्येति।
वायुं न ६,४,७; ९७७ शवसा...त्वा नृतमाः पृणंति।
वायुः पाथः न ७,५,७; १८०० परमे व्योमन् जायमानः।
वार् न २,४,६; ४११ यः अग्निः ... पथा [गच्छति]।
वार् इव ४,५,८; १७६८ उस्त्रियाणां यत् ...अप व्रन्।
वेः न ६,३,५; ९६७ अग्निः...रघुपत्मजंहाः द्रुषद्वा।
विं न १०,११५,३; १६६८ द्रुषदं देवम् अग्निम्।
विदे यथा [ददति] १,१२७,४; २७५अस्मै दळ्हा चित् द्रुः।
विद्युतः न ३,१,१४; ४६०शुक्राः बृहन्तः भानवः सचंत।
विद्युतः परिज्मानः न ५,१०,५; ८३९ अग्ने, धृष्णुया।
विद्युत् न ६,३,८; ९७० यः [अग्निः] स्वेभिः शुष्मैः ...।
विद्युतः वर्ष्यस्य इव १०,९१,५; १६५५ चिकित्र, श्रियः संति।
विपः न ८,१९,३३; १२५६ तव क्षत्राणि वर्धयन्।
विप्रं (जातवेदसं) न १,१२७,१; २७२ होतारं अग्निं...मन्ये।
विप्रं न ६,१५,४; १०२६ द्युक्षवचसं हव्यवाहं ... ऋंजसे।
विप्रः न ८,४४,२९; १३७१ अग्ने, ...सदा जागृविः असि।
विश्पतिः रेवान् इव १,२७,१२; ४९ सः अग्निः शृणोतु।
विश्पतिः जेन्यः न १,१२८,७; २८९ अग्निः यज्ञेषु।
विश्वः विशाम् न १,७०,४; १७७ अमृतः अग्निः ...।
वीराः शर्मसदः न १,७३,३; २०७ [यस्य अग्नेः] पुरः वर्तंते।
वृजनं न ६,११,६; १००५ वावसानाः [वयं] ... स्नसेम।
वृषभस्य इव १,९४,१०; २६५ अग्ने, ते रवः अस्ति ...।
वृषभः शृंगे शिशानः यथा ८,६०,१३; १४०१ [तथा] अग्निः।
वृषभः न १०,४,५; १५१० अस्नाता...अपः प्र वेति।
वृषा इव १,१४०,६; २९७ अग्निः (नमन्)...रोरुवत्।
वृषा इनः प्रोथमानः यवसे न १०,११५,२; १६६७ अभि।
वेधसे न ३,१०,५; ५१३ त्रिपां ज्योतींषि विभ्रते...भरत।
व्याघ्रः गोमतां इव (अथ०) ४,३६,६; २३०० [अहम्]।
शमिता न देवः [वा० य०] २०,४५; २०२३ वनस्पतिः।
शर्धः मारुतं न १,१२७,६; २७७ [अग्निः] तुविष्वणिः।
शर्धः मारुतं न ४,६,१०; ६९१ ते त्वेषाराः अर्चयः ...।
शर्म सूनवे वीळु न १,१२७,५; २७६ अस्य आयुः अभूत्।
शर्यहा इव ६,१६,३९; १०८० त्वम् उग्रः [असि]।
शर्यहा उग्र इव (वा) त्वं शत्रूणां पुरः रुरोजिथ।
शासुः चिकितुषः न १,७३,१; २०५ यः [अग्निः]।
शिवाभिः स्मयमानाः १,७९,२; २४५ [अद्भिः विद्युद्भिः]।
शिशुं नवं यथा ५,९,३; ८३० यम् अग्निं...अरणी जनिष्ट।
शिशुं जातं न ६,१६,४०; १०८१ अग्निम्...हस्ते आ।
शिशुं न १०,४,३; १५०८ माता जेन्यं त्वा...वर्धयन्ती।
शिशुं न ६,७,४: १७७६ जायमानं त्वा...विश्वे देवाः नवंते।
शिशुं मातरा न ७,२,५; १९७८ पूर्वी रिहाणे ...समनेषु।

शूरः इव १०,६९,५; १६२९ धृष्णुः च्यवनः अग्निः।
शूरः इव १०,६९.६; १६३० धृष्णुः च्यवनः जनानाम्।
शूरस्य त्वेषयात् वयः इव १,१४१,८; ३१२ त्वेषयात् अग्नेः।
शूरस्य प्रसितिः इव ६,६,५; ९९० अग्नेः क्षातिः...दुर्वतुः।
शुरुधः हेषस्वतः न ६,३,३, ९६५ अयं वनेजाः अक्तोः।
शेवः जने न १,६९ ४; १६७ अग्निः...मध्ये आहूर्यः।
श्येनाय दिवः ७,१५,४; ११८० अग्नये नवं स्तोमम्।
श्येनासः न ४,६,१०, ६९१ त्वेषासः ते अर्चयः...गच्छंति।
श्रुष्टीवानः न १,१२७,९; २८० अजरः ते ...परिचरन्ति।
श्वेतः न १,६६,६; १३९ यत् अभ्राट् तदा...(श्वेतः आदित्यः।
संवयन्ती ततं तन्तुं पेशसा वा०य० २०,४१; २०१९ देवानां।
संसद् पितुमती इव ४,१.८; ७३४ अग्निः सदा रण्वः।
सखा सख्ये यथा १,२६,३; ३० तथा अग्ने मह्यं अभीष्टं देहि।
सखा सख्ये इव ३,१८,१; ६०५ अग्ने उपेतो नः ... भव।
सचा सन् सहीयसे राज्ञे १,७१,४; १८८ भृगवाणः ईम्।
सत्याः यशस्वतीः अपस्युवः १,७९,१; २४४ उषसः नवेदाः।
सस्निम् न ३,२२,१; ६२३ जातवेदः सहस्रिणं अत्यम्...।
सस्निं न ८,४३,२५; १३३४ सुवेपसं अग्नि...वाजयामसि।
सस्यः इव १०,१४२,२; १६९१ नः धियः... सनिषंत।
सद्म इव १,६७,१०; १५३ धीराः [अग्निं]...संमाय चक्रुः।
समनम् पृथिव्यां अग्नये (अथ०)४,३९,४; २२८० एवं मह्यं।
समिधा जातवेदः इध्मेन अथ० १९,३४,२; २३५२ तथा त्वं।
सरजन्तम् न १०,११५,३; १६६८ अध्वनः [राजयन्तम्]।
सरितः धेनाः व ४,५८,६; १९०० घृतस्य धाराः...स्रवंति।
सवातरौ तेजसा (वा० य०) २८,६; २०८९ सुदुघे मही।
सविता देवः न १,७३,२; २०६ [यः अग्निः]... सत्य०।
सविता इव ४,६,२, ६८३ [अग्निः] भानुं.. ऊर्ध्वं।
सवितुः यथा सवम् ८,१०२,६; १४६८ अग्निं आहुवे।
सविता बाहू इव १,९५,७; १८७४ औषसः अग्निः...।
ससं पक्वं न १०,७९,३; १६३९ शुचन्तं रिपः उपस्थे अविदन्।
सस्वांसम् इव ३,९,५;५०४ इत्था त्मना तिरोहितं अग्निं।
साची इव १०,१४२,२; १६९१...अग्ने, त्वं विश्वा न्यृंजसे।
साधुः न १,७०,११; १८४ [अग्निः] ...गृध्नुः।
सारथिः वोळ्हुः रश्मीन् १,१४४,३; ३१८ हव्यः सारथिः।
सिंहम् इव ३,९,४; ५०३ अद्रुहः निचिरासः स्रिधः।
सिंहं क्रुद्धं न [मृगाः] ५,१५,३; ८६८ शत्रवः मां परिष्ठुः।
सिंहं न नानदत् ३,२,११, १७३७ प्रजज्ञिवान् वृषासः जिन्वते
सिंह श्वानः (अथ०) ४,३६,६; २३०० ते [पिशाचः]।
सिस्रतीः इव १०,२१,३; १५८३ धर्माणः जुहूभिः...।
सिन्धवः नीचीः न १,७२,१०; २०४ अग्नेः सृष्टाः क्षरंति।
सिन्धवः समुद्राय इव ८,४४,२५; १३६७ अग्ने गिरः ईरते।
सिन्धोः इव ४,५८,७; १९०१ ..प्राध्वने शूघनासः।
सिन्धवः (भात्वक्षसः) १,१४३,३; ३२० भात्वक्षसः।
सूनुः न नित्यः १,६६,१; १३४ (ध्रुवः पुत्रः इव प्रियकारी।)
सूनुः न ६,२,७; ९५८ [अग्ने, त्वं]...त्रययाय्यः।
सूरः न १,६६,१; १३४ [अग्निः] संदृक्।
सूरः मिहं न १,१४३,१३; ३१७ अमीचवमं च अग्नि...।
सूरः न १,१४९,३; ३५५ अयं अग्निः रुक्मान् शताग्मा।
सूरः न ६,२,६; ९५७ पावक, त्वं द्युता...रोचसे।
सूरः न ६,३,३; ९६५ यस्य दशतिः... अरेपाः।
सूरः न ७,३,६; ११२९ ...चित्रः भानुं प्रति चक्षि।
सूर्यः न ६,४,३; ९७३ शुक्रः...भासांसि वस्ते।
सूर्यः भानुमद्भिः अर्कैः न ६,४,६; ९७६ अग्ने, त्वं भासा।
सूर्यः न ६,१२,१; १००६ सः अयं सहसः सूनुः...ततान्।
सूर्यः न ७,८,४; ११५२ बृहद्भाः अग्निः...विरोचते।
सूर्यः सृजन् न ८,४३,३२; १३४१ अग्ने त्वं...रश्मिभिः।
सूर्यः इव ८,१०२,१५; १४७७ अस्य [अग्नेः] उपदृक्।
सूर्यः इव १०,६९,२; १६२६ सर्पिरासुतिः...रोचते।
सूर्यस्य इव १०,९१,४; १६५४ चिकित्र ते रश्मयः...।
सूर्ये चक्षूंषि इव ५,१,४; ७५८ देवयतां मनांसि अग्निं।
सूर्ये चक्षुः न ६,११,५; १००४ यज्ञः अश्रायि।
सूर्यस्य दिवि शुक्रं यजतमिव १०,७,३; १५२९ बृहतः।
सृष्टा सेना इव १,६६,७; १४० [अग्निः] भयं दधाति।
सृष्टा सेना इव १,१४३,५; ३२२ यः अग्निः वराय न।
सृष्टा सेना इव ७,३,४, ११२७ ते [अग्नेः] प्रसितिः एति।
सेना प्रगर्धिनी इव १०,१४२,४; १६९३ पृथक् एषि।
सोमाः इव ५,२७,५; ९३२ वप्सन् यासि।
सोमाः न १०,४६,७; १६०७ वायवः अग्नयः।
सोम चमि इव १०,९१,१५; १६६५ अग्ने ते आस्यं।
सोमः इव ६,८,१; १७८ वैश्वानराय अग्नये नव्यसी पवते।
सोमः न १,६५,१०; १३३ अग्निः..वेधाः।
सोमस्य अंशुः इव (अथ०) ५,२९,१२; २३१६ अयं।
स्थूणा उपमित् इव १,५९,१; १७१७ अग्ने त्वं उपमित्।
सप्त यह्वीः स्रवतः समुद्रं न १,७१,७; १९१ विश्वाः पृक्षाः।
स्वधितिः इव ५,७,८; ८१८ शुचिः ष्म यस्मै [अग्नये]।
स्वधितिः पूता इव ७,३,९; ११३२ शुचिः [अग्निः]निरगात्
स्वधितिं न ३,२,१०; १७३६ इषः मानुषीः विशां अकृण्वन्
स्वनः मरुतां इव १,१४३,५; ३२२ यः [अग्निः] वराय।
स्वनाः न १०,३,५; १५०३ यस्य भामासः... पवन्ते।
स्वर चित्रं विभावं न १,१४८,१; ३४८ यं मनुष्यासु विक्षु।
स्वर् न २,२,७; ३९१ अग्ने, द्यावापृथिवी...ब्रह्मणा कृधि।
स्वर् न २,२,८; ३९२ सः [अग्निः] राम्याः उषसः दीदेत्।

स्वर् न २,२,१०; ३९४ अस्माकं पञ्च कृष्टिषु अधि।
स्वर् भानुना न २,८,४; ४०० चित्रः अग्निः... विभाति।
स्वर् न ४,१०,३; ७२२ ज्योतिः।
स्वर् न ७,१०,२; ११६२ उपसां [अग्ने] वस्तो...अरोचि।
स्वरुः न ४,६,३; ६८४ नवजाः स्वरुः ... उदु अक्तः।
हंसः न सीदन् १,६५,९; १३२ [अग्निः] अप्सु श्वसिति।
हनवः न ८,६०,१३; १४०१ अस्य [ज्वालाः] तिग्माः।
हस्तिनं मशकाः इव ४,३६,९; अथ० २३०३ ये लपिताः।
हव्यं यथा वहसि ४,२३,१; अथ० २३३१ एव जातवेदः।
होता इव १,७३,१; २०५ प्रीणानः [अग्निः] विधतः रुभ।
ह्वारः अनाकृतः वकः १,१४१,७; ३११ यद् [अयं अग्निः।]
ह्वार्याणां पुत्रः न ५,९,४; ८३१ ...[अग्ने त्वं दुर्गभीयसे।]

दैवत-संहितान्तर्गत-अग्निमंत्राणां सूची।

अंहोयुवस्तन्वस्तन्वते ८६८
अकर्म ते स्वपसो अभूम ६६५
अकारि ब्रह्म समिधान ६९२
अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव १५९१
अक्रो न बभ्रिः समिथे ४५८
अक्षानहो नह्यतनोत १६२०
अक्ष्यौ३ नि विध्य २३०८
अगन्म महा नमसा यविष्ठं ११७१
अग्न आ याहि वीतये १०५१
अग्न आ याह्यग्निभिः १३८९
अग्न इन्द्रश्च दाशुषो दुरोणे ५३५
अग्न इळा समिध्यसे ५२८
अग्न ओजिष्ठमा भर ८३५
अग्नये ब्रह्म ऋभवः १६५०
अग्ना यो मर्त्यो दुवो १०१८
अग्नावग्निश्चरति २२८२
अग्नाविष्णू महि तद्वां २४५३
अग्नाविष्णू महि धाम २४५४
अग्निं घर्मं सुरुचं १८६७
अग्निं घृतेन वावृधुः ८६५
अग्निं च हव्यवाहनम् ४१५
अग्निं तं मन्ये यो वसुः ८०१
अग्निं दूतं पुरो दधे १३४५
अग्निं दूतं वृणीमहे १०
अग्निं देवासो अग्रियम् १०८९
अग्निं देवासो मानुषीषु ४१८
अग्निं द्वेषो योतवै १४२३
अग्निं धीभिर्मनीषिणो १३२८
अग्निं नरो दीधितिभिः ११००
अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं १३४०
अग्निं मन्ये पितरमग्निम् १५२९
अग्निं यन्तुरमप्तुरम् ५४७
अग्निं वः पूर्व्यं हुवे १२७६
अग्निं वर्धन्तु नो गिरो ५१४
अग्निं विश ईळते १६४९
अग्निं विश्वा अभि पृक्षः १९१
अग्निं विश्वायुवेपसं १३३४
अग्निं वो देवमग्निभिः ११२४
अग्निं वो देवयज्यया १४२०
अग्निं वो वृधन्तम् १४६९
अग्निं सुदीतिं सुदृशं ६०३
अग्निं सुम्नाय दधिरे १७३१
अग्निं सूनुं सनश्रुतं ५२१
अग्निं सूनुं सहसो १४१९
अग्निं स्तोमेन बोधय ८६०
अग्निं हिन्वन्तु नो धियः १७०३
अग्निं होतारं प्र वृणे मियेधे ६१०
अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं २७१
अग्निं होतारमीळते वसुधितिं २९०
अग्निः परेषु धामसु २१८३
अग्निः पूर्वं आ रभतां २१८७
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिः २
अग्निः प्रत्नेन मन्मना १३५४
अग्निः प्राणान्सं दधाति २३४४
अग्निः प्रातःसवने २३७१
अग्निः शुचिव्रततमः १३६३
अग्निः सनोति वीर्याणि ५३३
अग्निः सप्तिं वाजंभरं १६४४
अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा २१६८
अग्निः स्रुचो अध्वरेषु २०७६
अग्निनाग्निः समिध्यते १५
अग्निना तुर्वशं यदुं ८३
अग्निना रयिमश्नवत् ३
अग्निमग्निं वः समिधा १०२८
अग्निमग्निं वो अध्रिगुं १४०५
अग्निमग्निं हवीमभिः ११
अग्निमच्छा देवयतां ७५८
अग्निमस्तोष्यृग्मियम् १३००
अग्निमिन्धानो मनसा १४८४
अग्निमीळिष्वावसे १४२२
अग्निमीळेन्यं कविं ८६४
अग्निमीळे पुरोहितं १
अग्निमीळे भुजां १५७१
अग्निमुक्थैर्ऋषयो १६४८
अग्निरत्रिं भरद्वाजं १७०१
अग्निरप्सामृतीषहं १०११
अग्निरस्मि जन्मना १७५६
अग्निराग्नीध्रात् सुष्टुभः २३४१
अग्निरिद्धि प्रचेता १०१९
अग्निरिषां सख्ये १४११
अग्निरीशे बृहतः क्षत्रियस्य ७३६
अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्य ११६९
अग्निर्जातो अथर्वणा १५८५
अग्निर्जातो अरोचत ८६३
अग्निर्जाता देवानामग्निः १३०५
अग्निर्जुषत नो गिरो ८५६
अग्निर्ददाति सत्पतिं ९१६
अग्निर्दाद् द्रविणं १६४७
अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च १७४७
अग्निर्देवेषु राजति ९१४
अग्निर्देवेषु संवसुः १३०६
अग्निर्देवो देवानाम् १७०१
अग्निर्द्यावापृथिवी विश्वजन्ये ५३४
अग्निर्धिया स चेतति ५२०
अग्निर्नः शत्रून् प्रत्येतु २१५२
अग्निर्नेता भग इव ६१७
अग्निर्नो दूतः प्रत्येतु २१५६
अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु ८४५
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् १३५८
अग्निर्वनस्पतीनाम् २१६६
अग्निर्वव्ने सुवीर्यम् ८२
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् १०७५
अग्निर्हे रथं जरतः १६४६
अग्निर्हे नाम धायि १६६७

अग्निर्हि वाजिनं विशे ८०३
अग्निर्हि विद्मना निदो १०२२
अग्निर्होता कविक्रतुः ५
अग्निर्होता गृहपतिः १०३५
अग्निर्होता दास्वतः ८२९
अग्निर्होता नो अध्वरे ७४९
अग्निर्होता न्यसीदद् ७६०
अग्निर्होता पुरोहितो ५१८
अग्निष्टे नि शमयतु २१८७
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा १०६९
अग्निस्तुविश्रवस्तमं ९१५
अग्निस्त्रीणि त्रिधातूनि १३०८
अग्नी रक्षांसि सेधति ११८६
अग्नीषोमा चेति तद् २४६८
अग्नीषोमा पिपृतम् २४७६
अग्नीषोमा य आहुतिं २४६७
अग्नीषोमा यो अद्य २४६६
अग्नीषोमावनेन वां २४७४
अग्नीषोमाविमं सु मे २४६५
अग्नीषोमाविमानि नो २४७५
अग्नीषोमा सवेदसा २४७३
अग्नीषोमा हविषः २४७१
अग्नेः सांतपनस्याहं २३९१
अग्नेः स्तोमं मनामहे ८५५
अग्ने अक्रव्यान्निः २२५५
अग्ने अपां समिध्यसे ५३६
अग्ने कदा त आनुषग् ६९४
अग्ने कविर्वेधा असि १३९१
अग्ने केतुर्विशामसि १७०७
अग्ने घृतस्य धीतिभिः १४७८
अग्ने चिकिद्ध्य१स्य न ९०२
अग्ने जरस्व स्वपत्य १७४८
अग्ने जरितर्विश्पतिः १४०७
अग्ने जातान् प्र णुदा २१९३
अग्ने जुषस्व नो हविः ५५२
अग्ने जुषस्व प्रति हर्य ३३२
अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः ७२०
अग्ने तव त्ये अजर ११८०
अग्ने तव श्रवो वयो १६८४
अग्ने तृतीये सवने हि ५५६
अग्ने त्री ते वाजिना त्री ६१५

अग्ने त्वं नो अन्तम उत ९०७
अग्ने त्वं पारया नव्यो ३६२
अग्ने त्वं यशा असि १२९९
अग्ने त्वचं यातुधानस्य १८३२
अग्ने त्वमस्मद् युयोध्य ३६३
अग्ने दा दाशुषे रयिं ५३१
अग्ने दिवः सूनुरसि ५३२
अग्ने दिवो अर्णमच्छा ६२५
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो १२
अग्ने देवाँ इहा वह सादया २०
अग्ने द्युम्नेन जागृवे ५२९
अग्ने धृतव्रताय ते १३६७
अग्ने नक्षत्रमजरम् १७०६
अग्ने नय सुपथा राये ३६१
अग्ने नि पाहि नस्त्वं १३५२
अग्ने नेमिरराँ इव ८५९
अग्ने पत्नीरिहा वह २४
अग्ने पावक रोचिषा ९२०
अग्ने पूर्वा अनूषसो ९५
अग्ने प्रेहि प्रथमो २२२१
अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वो १४८५
अग्ने भव सुषमिधा १२०४
अग्ने भूरीणि तव जातवेदो ६६६
अग्ने भ्रातः सहस्कृत १३२५
अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं १३०२
अग्ने माकिष्टे देवस्य १३६६
अग्ने मृळ महाँ असि ७६२
अग्ने यं यज्ञमध्वरं ४
अग्ने यजस्व हविषा ४०६
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे ५१५
अग्ने यत् ते तपस्तेन २१४४
अग्ने यत् ते तेजस्तेजः २१४८
अग्ने यत् ते दिवि वर्चः ६२४
अग्ने यत् तेऽर्चिस्तेनं २१४६
अग्ने यत् ते शोचिस्तेन २१४७
अग्ने यत् ते हरस्तेन २१४५
अग्ने यदद्य विशो १०३६
अग्ने याहि दूत्यं१मा ११५९
अग्ने याहि सुशस्तिभिः १२७५

अग्ने युक्ष्वा हि ये तव १०८४
अग्ने रक्षाणो अंहसः ११८२
अग्नेरमृतः ऽमिद्रस्तु १६४५
अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य ४०२
अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य २३३०
अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां ६७
अग्नेर्वर्म परि गोभिः २५६३
अग्ने वाजस्य गोमत २८७
अग्ने विवस्वदुषसः ८६
अग्ने विश्वानि वार्या ५२६
अग्ने विश्वेभिः स्वनीक १०३८
अग्ने विश्वेभिरग्निभिः ५३०
अग्ने विश्वेभिरा गहि ९२३
अग्ने वीहि पुरोळाशम् ५१४
अग्ने वीहि हविषा यक्षि १२०६
अग्ने वृधान आहुतिं ५५७
अग्ने शकेम ते वयं ५३९
अग्ने शर्ध महते सौभगाय ९३५
अग्ने शुक्रेण शोचिषा उरु १५८८
अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वाभिः २१
अग्ने स क्षेषदृतपा ९६३
अग्ने समिधमाहार्षं २३५१
अग्ने सहन्तमा भर ९०३
अग्ने सहस्व पृतना ५२७
अग्ने सुखतमे रथे १९०९
अग्ने स्तोमं जुषस्व १३४४
अग्ने स्वाहा० (इन्द्राय यज्ञं०) २०८३
अग्ने स्वाहा० (इन्द्राय हव्यं०) २०७१
अग्ने हंसि न्यत्रिणं १८५३
अघशंसदुःशंसाभ्यां २२३०
अचिक्रदत् स्वपा इह २१५९
अचेत्यग्निश्चिकितुः २४५५
अच्छ त्वा यन्तु हविनः २१६०
अच्छा गिरो मतयो ११६३
अच्छा नः शीरशोचिषं १४१८
अच्छा नो अङ्गिरस्तमं १२७९
अच्छा नो मित्रमहो ९६२
अच्छा नो याह्या वह १०८५
अच्छायमेति शवसा घृता २०७५

अच्छायमेति शवसा घृतेन २०६३
अच्छा वो अग्निमवसे ९११
अच्छा वोचेय शुशुचानम् ६४५
अच्छा हि त्वा सहसः १३९०
अच्छिद्रा शर्म जरितः ५९२
अच्छिद्रा सूनो सहसो ११७
अजमनज्मि पयसा २२२२
अजीजनन्नमृतं मर्त्यासो ५७०
अजैदग्निरसनद्वाजं २१४०
अजो न क्षां दाधार १४८
अजो भागस्तपसा १५६०
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट २२१७
अत उ त्वा पितुभृतो १४८८
अति तृष्टं ववक्षिथ ५०२
अतिथिं मानुषाणां १२९४
अति निहो अति स्रिधो २३२३
अत्या वृधस्नू रोहिता ६४०
अत्यो नाज्मन्त्सर्गप्रतक्तः १२९
अत्रिमनु स्वराज्यम् ४०१
अथा ते अङ्गिरस्तम २२५
अथा न उभयेषाम् ३६
अदब्धस्य स्वधावतो १३६२
अदब्धेभिस्तव गोपाभिः १७८६
अदर्शि गातुवित्तमो १२५७
अदाभ्यः पुरएता ५२२
अदाभ्येन शोचिषा १८५९
अदिद्युतत्स्वपाको विभावा १००३
अद्याग्ने अद्य सवितरद्य २१६२
अद्या दूतं वृणीमहे ८८
अद्रोघमा वहोशतो १३९२
अद्रौ चिदस्मा अन्तर्दुरोणे ११७७
अध जिह्वा पापतीति ९९०
अध त्यं द्रप्सं विभ्वं १५४३
अध द्युतानः पित्रोः १७६७
अध स्म यस्यार्चयः ८३२
अध स्मास्य पनयन्ति १०१०
अध स्वनादुत बिभ्युः २६६
अधा त्वं हि नस्करो १४५९
अधा मही न आयसि ११९०
अधा मातुरुषसः सप्त ६६१

अधा यथा नः पितरः ६६२
अधाय्यग्निर्मानुषीषु ४७२
अधा ह यद्वयमग्ने ६६०
अधा हि विक्ष्वीड्यो ९५८
अधा होता न्यसीदो ९४०
अधा ह्यग्न एषां ८७४
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य ७२१
अधा ह्यग्ने मह्ना १५२६
अधि श्रियं नि दधुश्चारुम् २०४
अधीवासं परि मातू ३००
अधुक्षत् पिप्युषीमिषम् १४३९
अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त ४९६
अनड्वाहं प्लवमन्वारभध्वं २२६१
अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहे ९१८
अनाधृष्यो जातवेदा १८६६; २२२६
अनायतो अनिबद्धः ७४४
अनिरेण वचसा १७७१
अनूना आस्मिन्ननूनाः २३८०
अन्तरा मित्रावरुणा २१११
अन्तरिक्षेण पतति २४६१
अन्तरिच्छन्ति तं जने १४२६
अन्तर्दूतो रोदसी दस्म १७४३
अन्तर्धिर्देवानां २२५७
अन्तर्ह्यग्न ईयसे ४३९
अन्ति चित् सन्तमह १११७
अन्यमस्मद्भिया इयम् १३८५
अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो २२४२
अन्वग्निरुषसामग्रम् २३२७
अप नः शोशुचदघम् १८८७
अपमित्यमप्रतीत्तं २३७८
अपश्चा दग्धान्नस्य २२७३
अपश्यमस्य महतो १६३७
अपामिदं न्ययनं १६९६
अपामुपस्थे महिषा १७८३
अपावृत्य गार्हपत्यात् २२४७
अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां ४५९
अपां नपादा ह्यस्थाद् २४३०
अपां मा पाने यतमो २३१२
अप्रयुच्छन्नप्रयुच्छद्भिरग्ने ३२५
अप्सरसः सधमादं २३६७
अप्सरसां गन्धर्वाणां २४६३

अप्स्वग्ने सधिष्टव १३१८
अबोधि जार उषसाम् ११५५
अबोधि होता यजथाय ७५६
अबोध्यग्निः समिधा ७५५
अभि तं निर्ऋतिर्धत्ताम् २३०४
अभि त्वा गोतमा गिरा २३९
अभि त्वा नक्तीरुषसो ३८६
अभि त्वा पूर्वपीतये २४४६
अभि द्विजन्मा त्रिवृदन्नम् २९३
अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि ३५६
अभि प्रयांसि वाहसा ५२४
अभि प्रयांसि सुधितानि १०३७
अभि प्रवन्त समनेव १९०२
अभी नो अग्न उक्थमिज् ३०४
अभीमृतस्य दोहना अनूषत ३२७
अभ्यर्षत सुष्टुतिं १९०४
अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते ८८६
अभ्यारमिदद्रयो १४३४
अभ्रातरो न योषणो १७६१
अमन्थिष्टां भारता रेवदग्निं ६२८
अमित्रसेनां मघवन् २१५४
अमित्रायुधो मरुतामिव ५७२
अमूरः कविरदितिर्विवस्वान् ११५७
अमूरो होता न्यसादि ६८३
अमृतं जातवेदसं १४४६
अयं कविरकविषु ११३७
अयं जायत मनुषो २८३
अयं ते योनिर्ऋत्वियो ५६७
अयं मित्रस्य वरुणस्य २६७
अयं यः सृञ्जये पुरो ७५२
अयं यथा न आभुवत् १४७०
अयं योनिश्चकृमा यं ६६७
अयं विश्वा अभि श्रियो १४७१
अयं स यस्य शर्मन् १५२०
अयं स होता यो द्विजन्मा ३५७
अयं सो अग्निराहुतः १११५
अयं सो अग्निर्यस्मिन्त्सोमं ६२३
अयं होता प्रथमः १७९०
अयज्ञियो हतवर्चा २२५०
अयमग्निः सत्पतिः २३७३

अयमग्निः सहस्रिणो १३७६
अयमग्निः सुवीर्यस्य ५९४
अयमग्निरमूमुहद् ११५७
अयमग्निरुरुष्यति १७१०
अयमग्निर्वध्र्यश्वस्य १६३६
अयमग्ने जरिता त्वे १६९०
अयमग्ने त्वे अपि १३७०
अयमिह प्रथमो धायि ६९३
अयमु ष्य प्र देवयुः १७०९
अयमु ष्य सुमहाँ अवेदि ११५०
अयांसमग्ने सुक्षितिं २४३६
अया ते अग्ने विधेम ४३४
अया ते अग्ने समिधा १८२७
अयामि ते नमउक्तिं ५८२
अयोजाला असुरा २३५०
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा १८२९
अरण्योर्निहितो जातवेदा ५५९
अराधि होता निषदा १६१७
अराधि होता स्व१र्निषत्तः १८१
अर्चन्तस्त्वा हवामहे ८५४
अर्चामि ते सुमतिं १८२०
अर्चामि वां वर्धायापो १५५२
अर्यमणं वरुणं मित्रम् ६५०
अर्यो विशां गातुरेति १५७४
अर्वद्भिरग्ने अर्वतो नृभिः २१३
अर्वाञ्चं दैव्यं जनम् १०९
अवर्धयन्त्सुभगं सप्त यह्वीः ४५०
अवसृजन्नुप त्मना १९२८
अव सृज पुनरग्ने १५६१
अव सृजा वनस्पते १९१६
अव स्पृधि पितरं योधि ७८६
अव स्म यस्य वेषणे ८१५
अवा नो अग्न ऊतिभिः २५०
अविः कृष्णा भागधेयं २२६६
अवोचाम कवये मेध्याय ७६६
अवोचाम निवचनान्यस्मिन् ३६८
अवोचाम रहूगणा २४३
अश्मन्वती रीयते १६२१
अश्याम तं काममग्ने ९८५

अश्वं न गीर्भी रथ्यं ११६३
अश्वं न त्वा वारवन्तं ३८
अश्वमिद् गां रथप्रां १४५१
अश्वस्यात्र जनिमास्य २४२७
अश्विना नमुचेः सुतं २०२९
अश्विना भेषजं मधु २०३४
अश्वो घृतेन त्मन्या २११५
अश्वो न क्रन्दञ्जनिभिः १७५५
अषाळ्हो अग्ने वृषभो ५९१
असंमृष्टो जायसे मात्रोः ८४४
असच्च सच्च परमे १५१९
असन्नित् त्वे आहवनानि ११५३
असादि वृतो वह्निराज ११४६
अस्ताव्यग्निः शिमीवद्भिः ३१७
अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो १६००
अस्तीदमधिमन्थनम् ५५८
अस्माद् द्यौरस्थात् २३९४
अस्मा उ ते महि महे ९४८
अस्माकं जोष्यध्वरम् ७१८
अस्माकमग्ने अध्वरं ७९७
अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिहि ३०१
अस्माकमग्ने मघवत्सु धारय १७८५
अस्माकमत्र पितरो ६३९
अस्मिन् पदे परमे २४३५
अस्मिन् वयं संकसुके २२३९
अस्मे रयिं न स्वर्थं ३१५
अस्मे रायो दिवेदिवे ७१०
अस्मे वत्सं परि षन्तं १९६
अस्मे क्षत्रमग्नीषोमौ २४७८
अस्मे क्षत्राणि धारयन्तं २१९९
अस्मै तिस्रो अव्यथ्याय २४२६
अस्मै ते प्रतिहर्यते १३११
अस्मै बहूनामवमाय २४३३
अस्य क्रत्वा विचेतसो ८७९
अस्य घा वीर ईवतो ७५३
अस्य त्वेषा अजरा ३२०
अस्य देवस्य संसद्यनीके ११३६
अस्य प्र जातवेदसो १८६४
अस्य यामासो बृहतो १५०२

अस्य रण्वा स्वस्येव ४१९
अस्य वामा उ अर्चिषा ८७८
अस्य शासुरुभयासः १२०
अस्य शुष्मासो ददृशानपवेः १५०४
अस्य श्रिये समिधानस्य १७७२
अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य ६३२
अस्य स्तोमे मघोनः ८७३
अस्य हि स्वयशस्तर ८७७
अस्याजरासो दमामरित्राः १६०७
अस्वप्नजस्तरणयः १८२४
अहश्च कृष्णमहः १७८७
अहाव्यग्ने हविरास्ये १६६५
अहोरात्रे अन्वेषि २२६२
आकूतिं देवीं सुभगां २२१०
आकूत्या नो बृहस्पत २२११
आगन्म वृत्रहन्तमं १४४५
आ ग्ना अग्न इहावसे २५
आग्निं न स्ववृक्तिभिः १५८१
आग्निरगामि भारतो १०६०
आग्ने याहि मरुत्सखा २४४७
आग्ने वह वरुणमिष्टये २००२
आग्ने वह हविरद्याय ११७०
आग्ने स्थूरं रयिं भर १७०५
आ च वहासि ताँ इह २२०
आ जातं जातवेदसि १०८३
आ जुहोता दुवस्यत ९३८
आ जुहोता स्वध्वरं ५०७
आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्च २००५; २१२०
आजुह्वाना सरस्वती २०२८
आजुह्वानो न ईड्यो १९३३
आज्यस्य परमेष्ठिन् २२८५
आ तं भज सौश्रवसे १५९८
आ ते अग्न इधीमहि ८०४
आ ते अग्न० (शुक्रस्य०) ८०५
आ ते अग्न० (हृदा०) १०८८
आ ते ददे वक्षणाभ्य २४८२
आ ते वत्सो मनो यमत् १२२०
आ ते सुपर्णा अमिनन्तँ २४५
आ त्वा चृतन्त्वर्यमा २१७८
आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः १०७

आ दशभिर्विवस्वत	१४३१
आदस्य ते ध्वसयन्तो	२९६
आदित् ते विश्वे क्रतुं जुषन्त	१५६
आदित्पश्चा बुबुधाना	६४४
आदिग्यैनां भारती	२११३
आदिद्धोतारं वृणते	३१०
आदिमवं प्रतिदीमि	२३६८
आदिन्मातॄराविशद्यास्वा	३०९
आ देवानामग्रयावेह	१९९३
आ देवानामपि	१४९४
आ देवानामभवः	४६३
आ देवो ददे बुध्न्या३	१८०९
आ देव्यानि व्रता चिकित्वान्	१७५
आद्य रथं भानुमो	७६५
आ नो अग्ने रयिं भर	९५१
आ नो अग्ने वयोवृधं	१३९९
आ नो अग्ने सुचेतुना	९५२
आ नो अग्ने सुमतिं	२३३९
आ नो गहि सख्येभिः	४६५
आ नो देवभिरुप	१६७६
आ नो बर्ही रिशादसा	३१
आ नो भज परमेष्वा	४२
आ नो यज्ञं भारती २०१०;	२१२५
आन्यं दिवो मातरिश्वा	२४७०
आ मन्दमाने उपाके	१९२४
आ मन्दमाने उपसा	१९५८
आ भानुना पार्थिवानि	९९१
आ भारती भारतीभिः	१९६०
आभिर्विधेमाग्नये	१२९२
आभिष्टे अद्य गीर्भिः	७२३
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो	१७३०
आमे सुपक्वे शबले	२३१०
आ यं हस्ते न खादिनं	१०८१
आ यः पप्रौ जायमान	९९६
आ यः पप्रौ भानुना	१०९५
आ यः पुरं नार्मिणीम्	३५५
आ यः स्वर्ण भानुना	४००
आ यज्ञैर्देव मर्त्य	८७६
आ यद्रिषे नृपतिं तेज	१९२
आ यन्ते न पराव्णे	१६९७
आ यन्मे अभ्वं वनदः	४२०
आ यस्ततन्थ रोदसी	९४९
आ यस्ते अग्न इधते	११०७
आ यस्ते सर्पिरासुते	८१९
आ यस्मिन् त्वे स्वपाके	१००७
आ यस्मिन्त्सप्त रश्मयः	४२६
आ याह्यग्ने पथ्या३अनु	११४३
आ याह्यग्ने समिधानो	१९६३
आयुरस्मै धेहि जातवेदः	२१५०
आ यूथेव क्षुमति पश्वो	६६४
आ ये तन्वन्ति रश्मिभिः	२४४५
आ ये विश्वा स्वपत्यानि	२०३
आ योनिमग्निर्घृतवन्तम्	४७६
आ यो मूर्धानं पित्रोः	१५३६
आ यो योनिं देवकृतं	११३८
आ यो वना तातृषाणो	४२१
आ रभस्व जातवेदो	२२८९
आरे अस्मदमतिमारे	७३३
आरोका इव घेदह	१३१२
आ रोदसी अपृणदा	१७३३
आ रोदसी अपृणा	४८१
आ रोदसी बृहती	१९८
आ वंसते मघवा वीरवद्	१२६५
आवहन्त्यरुणीर्ज्योतिषा	७४७
आ वां वहिष्ठा इह ते	७४८
आ विश्वतः प्रत्यञ्चं	४१३
आविष्ट्यो वर्धते चारुरासु	१८७२
आशुं दूतं विवस्वतो	६९६
आशृण्वते अदृपिताय	६६८
आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो	८८८
आ सत्यं सवितुर्यथा	१४६८
आ सीमरोहत्सुयमा	४९२
आ सुते सिञ्चत श्रियं	१४३६
आ सुष्वयन्ती यजते २००८;	२१२३
आ सूर्यं न रश्मयो	१७१९
आ सूर्यो न भानुमद्	९७६
आ स्वमद्म युवमानो	१११
आ हि द्यावापृथिवी	१४९१
आ हि ष्मा सूनवे पिता	३७
आ होता मन्द्रो विदथा	५८१
इच्छन्त रेतो मिथस्तनूषु	१६१
इडाभिरग्निरीड्यः	१०३९
इति चिन्मन्युमध्रिजः	८१०
इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य	१६७४
इत्था यथा त ऊतये	८९४
इदं तदुज उत्तरम्	२४७७
इदं मे अग्ने कियते	१७६३
इदं वचः शतसाः	११५४
इदं वर्चो अग्निना	२११३
इदमग्ने सुधितं दुर्धिताद्	३०१
इदमुग्राय बभ्रवे	२३६५
इदमु त्यन्महि महाम्	१७६६
इध्मं यस्ते जभरच्छश्रमाणो	७३५
इध्मेन त्वा जातवेदः	२३५२
इध्मेनाग्न इच्छमानो	६०७
इनो राजन्नरतिः समिद्धो	१४९९
इन्द्रं दुरः कवष्यो	२०१८
इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः	११६४
इन्द्रः सेनां मोहयतु	२१५५
इन्द्र चित्तानि मोहयन्	२१५८
इन्द्रा याहि मे हवम्	२१६४
इन्द्रायेन्दुं सरस्वती	२०२७
इन्धे राजा समर्यो नमोभिः	११४९
इमं क्रव्यादा विवेशा	२२५६
इमं धा वीरो अमृतं	१२८८
इमं त्रितो भूर्यविन्दद्	१६०३
इमं नरो मरुतः सश्चता	५९५
इमं नो अग्न उप	१६८३
इमं नो यज्ञममृतेषु	६१८
इमं मे अग्ने पुरुषं	२१८६
इमं यज्ञं चनो धा अग्न	९९८
इमं यज्ञं सहसावन्त्वं	४६८
इमं यज्ञमिदं वचो	१६९९
इमं विधन्तो... द्विताद्धधुः	४१७
इमं विधन्तो...पशुं	१६०१
इमं स्तोममर्हते	२५६
इमं स्वस्मै हृद आ	२४२३
इममग्ने चमसं मा	२५६४
इममादित्या वसुना	२१७०

इमामिन्द्रं वह्निं २२६०
इममु त्वमथर्ववद् १०३९
इममू षु त्वमस्माकं ४१
इममू षु वो अतिथिम् १०१३
इमां प्रत्नाय सुष्टुतिं १६६३
इमां मे अग्ने...इमां ४३३
इमां मे अग्ने...जुषस्व १९९१
इमा अग्ने मतयः १५२८
इमा अस्मै मतयो १६६२
इमामग्ने शरणिं मीमृषो ६५
इमा यास्ते शतं हिराः २१९५
इमास्तिस्रो देवपुरा २१७६
इमे नरो वृत्रहत्येषु ११०९
इमे यामासस्त्वद्रिग् ७८९
इमे विप्रस्य वेधसो १३१०
इमो अग्ने वीततमानि १११७
इयं ते नव्यसी मतिः १४४८
इयमग्ने नारी पतिं २३४०
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व १६८७
इषं दुहन्त्सुदुघां १६८०
इषीकां जरतीमिष्ट्वा २२६७
इष्कर्तारमध्वरस्य १६८८
इह त्वं सूनो सहसो ६४८
इह त्वष्टारमग्रियं १९१५
इह त्वा भूर्या चरेदुप १८२१
इह प्र ब्रूहि यतमः १८३५
इहैव सन्तः प्रति दद्म २३७९
इहैवाग्ने अधि धारया २३२६
इळामग्ने पुरुदंसं ४६९
इळायास्त्वा पदे वयं ५६१
इळा सरस्वती मही १९१४
ईजे यज्ञेभिः शशमे ९६४
ईडितो देवैर्हरिवाँ२ २०१६
ईड्यश्चासि वन्द्यश्च २१०८
ईयिवांसमति स्रिधः ५०३
ईशिषे वार्यस्य हि १३६०
ईशे यो विश्वस्या १५२२
ईशे ह्य१ग्निरमृतस्य ११३९
ईळानायावस्यवे ४३८
ईळितो अग्न० (। इयं हि०) १९११

ईळितो अग्न० (सुखै रथेभिः०) १९६६
ईळितो अग्ने मनसा १९४४
ईळिष्वा हि प्रतीव्यं १२७०
ईळे अग्निं विपश्चितं ५३८
ईळे गिरा मनुर्हितं १२४४
ईळे च त्वा यजमानो ४६१
ईळेन्यं वो असुरं १९७६
ईळेन्यः पवमानो १९८३
ईळेन्यो नमस्यः ५४९
ईळेन्यो वो मनुषो ११५८
उक्षान्नाय० (। वैश्वानरज्येष्ठेभ्यः) २३६०
उक्षान्नाय० (। स्तोमैर्विधेम०) १३२०
उक्षा महाँ अभि ववक्ष ३३९
उग्रंपश्ये राष्ट्रभृत् २३८२
उच्छोचिषा सहसस्पुत्र ६०८
उत ग्ना अग्निरध्वर ७१५
उत त्वाग्ने मम स्तुतो १२२६
उत त्वा धीतयो मम १३६४
उत त्वा नमसा वयं १३२१
उत त्वा भृगुवच्छुचे १३२२
उत द्युमत्सुवीर्यं २२३
उत द्वार उशतीर्वि १२०५
उत नः सुद्योत्मा जीराश्वो ३१६
उत नो देव देवाँ १३७४
उत नो ब्रह्मन्नविष ५७९
उत ब्रुवन्तु जन्तवः २१७
उत योषणे दिव्ये १९७९
उत वा उ परि वृणक्षि १६९२
उत वा यः सहस्य प्रविद्वान् ३४७
उत स्म दुर्गृभीयसे ८३१
उत स्म यं शिशुं यथा ८३०
उत स्वानासो दिवि ७७६
उतालब्धं स्पृणुहि १८३४
उतो न्वस्य यत् पदं १४४१
उतो न्वस्य यन्महद् १४२२
उतो पितृभ्यां प्रविदानु ४९५
उत्तानायामजनयन् ४११
उत्तानायामव भरा ५६०
उत्तिष्ठसि स्वाहुतो १८५४

उत्ते बृहन्तो अर्चयः १३४६
उत्ते शुष्मा जिहताम् १६९५
उदग्ने तव तद् घृताद् १३१९
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या १८१६
उदग्ने भारत द्युमद् १०८६
उदग्ने शुचयस्तव १३५९
उदस्तम्भीत्समिधा ४७९
उदस्य शोचिरस्थाद् (आजुह्वा०) २१९४
उदस्य शोचिरस्थाद् (दीदियुषो.) १९७२
उदात्तैर्जिहते बृहद् १९८५
उदिता यो निदिता १२६७
उदीरय पितरा जार १५४५
उदु तिष्ठ स्वध्वर १२७४
उदु ष्टुतः समिधा यह्वो ४७८
उद्यंयमीति सवितेव १८७४
उद्यस्य ते नवजातस्य ११२६
उन्मदिता मौनेयेन २४६०
उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न २१९१
उपक्षेतारस्तव सुप्रणीते ४६२
उप च्छायामिव घृणेः १०७९
उप त्मन्या वनस्पते १९४०
उप त्वाग्ने दिवेदिवे ७
उप त्वा जामयो गिरो १४७५
उप त्वा जुह्वो३ मम १३४७
उप त्वा रण्वसंदृशं १०७८
उप त्वा सातये नरो ११८५
उप प्र जिन्वन्नुशतीः १८५
उपप्रयन्तो अध्वरं २१५
उप प्रागाद् देवो २२९३
उप यमेति युवतिः ११०५
उपसद्याय मीळ्हुष ११७७
उपस्थायं चरति यत् ३३६
उप स्रक्वेषु बप्सतः १४३८
उपावसृज त्मन्या २०१२; २१२७
उपेमसृक्षि वाजयुः २४२२
उभयं ते न क्षीयते ४०७
उभयासो जातवेदः स्याम ३२६
उभा देवा नृचक्षसा १९८७
उभे भद्रे जोषयेते १८७३
उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो ८०९

उभोभयाविन्नुप धेहि १८३०
उरु ते ज्रयः पर्येति १८७६
उरुव्यचसाऽग्नेर्धाम्ना २०७९
उरुष्या णो मा परा दा १४१५
उरौ महाँ अनिबाधे ४५७
उरौ वा ये अन्तरिक्षे ४८७
उशना काव्यस्त्वा ११८६
उशन्तस्त्वा नि धीमहि १५६८
उशिक् पावको अरतिः १५९५
उशिक् पावको वसुः १२२
उषउषो हि वसो १५३७
उषासानक्तमश्विना २०३१
उषासानक्ता बृहती २०१९
उषे यह्वी सुपेशसा २०४२
उषो न जारः पृथु ११६१
उषो न जारो विभावोस्रः १७२
ऊर्जे त्वा बलाय २२१५
ऊर्जो नपाज्जातवेदः १६८६
ऊर्जो नपातं स हिनायम् १०९१
ऊर्जो नपातं सुभगं १२२७
ऊर्जो नपातमध्वरे ५३८
ऊर्जो नपातमा हुवे १३५५
ऊर्जो नपान्सहस्वावन् १६७३
ऊर्जश्रृताः वि प्रथस्व १९६७
ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य ६८२
ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो ७४६
ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो ७४१
ऊर्ध्वा अस्य समिधो २०६०; २०७२
ऊर्ध्वायां दिश्य१जस्य २२२४
ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदग्निः १०९८
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या १८१७
ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे १९५६
ऋतं चिकित्व ऋतमित् ८४९
ऋतं वोचे नमसा १७६८
ऋतस्य देवा अनु व्रता १२६
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिः १५८
ऋतस्य वा केशिना ४८५
ऋतस्य हि धेनवो २१०
ऋतस्य हि वर्तनयः १५१६
ऋतायिनी मायिनी १५१५
ऋतावानं महिषं १६८९
ऋतावानं यज्ञियं १७३९
ऋतावानं विचेतसं ६९५
ऋतावानं वैश्वानरम् ११८१
ऋतावानमृतायवो १२७८
ऋतावा यस्य रोदसी ५७५
ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः २०३५
ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे २१७९
ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो २२१६
ऋतेन ऋतं धरुणं ८६७
ऋतेन ऋतं नियतमीळ ६७४
ऋतेन देवीरमृता ६७७
ऋतेन हि ष्मा वृषभः ६७५
ऋतेनाद्रिं व्यसन् भिदन्तः ६७६
ऋधद्यस्ते सुदानवे ९५५
ऋभुश्चक्र ईड्यं चारु ४७५
ऋषिर्न स्तुभ्वा विक्षु १३७
एकः समुद्रो धरुणो १५१३
एकशतं लक्ष्म्यो३ २२०३
एतं ते स्तोमं तुविजात ७७७
एता अर्षन्ति हृद्यात् १८९९
एता उ वः सुभगा २११०
एना एना व्याकरं २२०४
एता चिकित्वो भूमा नि १७९
एता ते अग्न० (।शकेम रायः०)२१४
एता ते अग्न० (।उच्छोचस्व०)६६६
एता ते अग्ने जनिमा ४६६
एता नो अग्ने सौभगा ११३३
एता विश्वा विदुषे ६८१
एतास्ते अग्ने समिधः पिशाच २२१७
एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः २३५४
एति प्र होता व्रतमस्य ३२६
एते त्ये वृथगग्नय १३१४
एते द्युम्नेभिर्विश्वमातिः ११४७
एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व ६७
एना वो अग्निं नमसा ११९२
एभिर्नो अर्कैर्भवा नो ७२२
एभिर्भव सुमना अग्ने ६८०
एवाँ अग्निं वसूयवः ९१९
एवाँ अग्निमजुर्यमुः ८१०
एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा २३८
एवाग्निर्मर्तैः सह १६७२
एवा ते अग्ने विमदो १५८०
एवा ते अग्ने सुमतिं ९३०
एवा नो अग्ने अमृतेषु ३९३
एवा नो अग्ने समिधा १८७८
एवेन सद्यः पर्येति पार्थिवं १८५
एहि मनुर्देवयुर्यज्ञकामो १६१३
एह्यग्न इह होता २३०
एह्यू षु ब्रवाणि ते १०५७
ऐच्छाम त्वा बहुधा १६१२
ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् ४८८
ऐषां यज्ञमुत वर्चो २१४३
ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद ६२२
ओ षू णो अग्ने शृणुहि २९१
और्वभृगुवच्छुचिम् १४६६
क इमं वो निण्यमा १८७१
कत्यग्नयः कति सूर्यासः २४१४
कथा ते अग्ने शुचयन्त ३४३
कथा दाशेमाग्नये २३४
कथा महे पुष्टिंभराय ६७२
कथा शर्धाय मरुता० ६७३
कथा ह तद्वरुणाय ६७०
कद्धिष्ण्यासु वृधसानो ६७१
कन्या इव वहतुमेतवा १९०३
कमु ष्विदस्य सेनया १३७९
कमेतं त्वं युवते ७६८
कया ते अग्ने अङ्गिर १४५७
कया नो अग्न ऋतय० ८५०
कया नो अग्ने वि वसः ११५१
कवष्यो न व्यचस्वतीः २०३०
कविं शशासुः कवयो ६५८
कविं केतुं धासिं १८०४
कविमग्निमुप स्तुहि १६
कविमिव प्रचेतसं १४५५
कस्ते जामिर्जनानाम् २२६

कस्य नूनं परीणसो	१४६०
का त उपेतिर्मनसो	२२९
का मर्यादा वयुना	१७७०
कायमानो वना त्वं	५०१
किं देवेषु त्यज एनः	१६४२
किं नो अस्य द्रविणं	१७६९
किं स्विन्नो राजा जगृह्ने	१५५३
कुत्रा चिद्यस्य समृतौ	८१२
कुमारं माता युवतिः	७६७
कुर्मस्त आयुरजरं	१६१४
कुवित्सु नो गविष्टये	१३८३
कुविन्नो अग्निरुच०	३२३
कूचिज्जायते सनयासु	१५१०
कृतं चिद्धि ष्मा सनेमि	७२६
कृधि रत्नं यजमानाय	११९७
कृधि रत्नं सुसनितः	६०९
कृणुष्व पाजः प्रसितिं	१८१३
कृणोत धूमं वृषणं	५६६
कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो	१५७९
कृष्णं त एम रुशतः	७०१
कृष्णप्रुतौ वेविजे	२९४
कृष्णां यदेनीमभि	१५००
कृष्णा रजांसि पत्सुतः	१३१५
केतुं यज्ञानां विदथस्य	१७४४
के ते अग्ने रिपवे	८५१
केतेन शर्मन्त्सचते	१४०६
के मे मर्यकं वि	७७१
केश्य१ग्निं केशी विषं	२४५८
क्रत्वा दक्षस्य तरुषो	१७२९
क्रत्वा दा अस्तु श्रेष्ठो	१०६७
क्रत्वा यदस्य तविषीषु	२८७
क्रत्वा हि द्रोणे अज्यसे	९५९
क्रमध्वमग्निना नाकम्	२२१८
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि	१५६५
क्रव्यादमग्निं शशमानम्	२२३६
क्रव्यादमग्निमिषितो	२२३५
क्रव्यादमग्ने रुधिरं	२३१४
क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः	११२
क्रीळन् नो रश्म आ	८९७
क्षत्रेणाग्ने स्वेन	२३२२
क्षप उस्रश्च दीदिहि	११८४
क्षपो राजन्नुत त्मना	२४९
क्षीरे मा मन्थे यतमो	२३११
क्षेति क्षेमेभिः साधुभिः	१४६२
क्षेत्रादपश्यं सनुतः	७७०
क्षेमो न साधुः क्रतुर्न	१४५
गर्भे मातुः पितुष्पिता	१०७६
गर्भं योषामदधुः	१६२४
गर्भो यो अपां गर्भो	१७६
गार्हपत्येन सन्त्य	२३
गाव उपावतावतं	१४३५
गीर्णं भुवनं तमसा	२३९८
गुहा शिरो निहितम्	१६३८
गोभिर्न सोममश्विना	२०३६
गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी	६५१
गोषु प्रशस्तिं वनेषु	१८२
ग्राह्या गृहाः सं	२२५२
घनेव विष्वग्वि जहि	८१
घृतं ते अग्ने दिव्ये सृज्यन्ते	२३२९
घृतं न पूतं तनू०	७२५
घृतप्रतीकं व ऋतस्य	३२४
घृतमग्नेर्वध्र्यश्वस्य	१६२६
घृतमप्सराभ्यो वह	२३६६
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य	१९५२
घृतवन्तः पावक ते	६१९
घृतवन्तमुप मासि	१९१९
घृतादुल्लुप्तं मधुना	२१८०
घृताहवन दीदिवः	१४
घृताहवन सन्त्य	१०४
घृतेनाग्निः समज्यते	१८५६
घृतेनाक्तन्त्सं पथां	२१०७
घ्नन्तो वृत्रमतरन्	७५
घ्नन्मृध्राण्यप द्विषो	१३३५
चक्रिर्यो विश्वा भुवना०	५९७
चत्वारि शृङ्गा त्रयो	१८९७
चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं	१७४६
चरन्वत्सो रुशन्निह	१४२८
चिकित्विन्मनसं त्वा	९०१
चित्तिमचित्तिं चिनवद्	६५७
चित्तिरपां दमे विश्वायुः	१५२
चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य	१६६३
चित्रा वा येषु दीधितिः	८८४
चित्रो यदभ्राट् छ्वेतो	१३९
जनस्य गोपा अजनिष्ट	८४२
जनासो अग्निं दधिरे	६९
जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे	७५९
जनिष्वा देववीतये	१०४०
जने न शेव आहूर्यः	१६७
जन्मञ्जन्मन्निहितो	४६७
जरमाणः समिध्यसे	१८५७
जराबोध तद्विविड्ढि	४७
जातवेदसे सुनवाम	१८६२
जातवेदो नि वर्तय	२३९६
जातो अग्नी रोचते	५६४
जातो यदग्ने भुवना	१८१२
जानन्ति वृष्णो अरुषस्य	४९४
जामिः सिन्धूनां भ्रातेव	१३०
जिघर्म्यग्निं हविषा	४१२
जाम्यतीतपे धनुः	१४२७
जिह्वाभिरह नन्नमद्	१३१७
जीवानामायुः प्र तिर	२२१८
जुषद्धव्या मानुषस्य	१५७५
जुषस्व नः समिधमग्ने	१९७४
जुषस्व सप्रथस्तमं	२२४
जुषस्वाग्न इळया	७९३
जुषाणो अग्ने प्रति हर्य	१६७६
जुषाणो अङ्गिरस्तम	१३५०
जुषाणो बर्हिर्हरिवान्	२०१७
जुष्टो दमूना अतिथिः	७९४
जुष्टो हि दूतो असि	८७
जुहुरे वि चितयन्तो	८८७
जोहूत्रो अग्निः प्रथमः	४०९
ज्रेया भागं सहसानो	४१४
ज्येष्ठघ्न्यां जातो विचृतोः	२१८४
तं यज्ञसाधमपि	२८४
तं वश्चराथा वयं	१४२
तं वो दीर्घायुशोचिषं	८८३

❀

तं वो विं न द्रुषदं १६६८
तं शश्वतीषु मातृषु ६९८
तं शुभ्रमग्निमवसे १७५४
तं सबाधो यतस्रुच ५४२
तं सुप्रतीकं सुदृशं १०३२
तं हि शश्वन्त ईळते ८६२
तं हुवेम यतस्रुचः ११८९
तं होतारमध्वरस्य १२०३
त इद् वेदिं सुभग १२४१
तक्का न भूर्णिर्वना १३५
तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो १२२४
तं घेमित्था नमस्विनः ७४
तत्तदग्निर्वयो दधे १३०३
तत्तु ते दंसो यद० १७१
तत्ते भद्रं यत् २६९
तत्ते सहस्व ईमहे १३४२
तथा तदग्ने कृणु २३०६
तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि १८३९
तदग्ने द्युम्नमा भर १२३८
तदस्यानीकमुत चारु २४३२
तद्भद्रं तव दंसना ५०६
तद्वामृतं रोदसी प्र १६४०
तनूत्यजेव तस्करा १५११
तनूनपाच्छुचिव्रतः २०३८
तनूनपात् पथ ऋतस्य २००४; २११८
तनूनपात् पवमानः १९८२
तनूनपादसुरो विश्ववेदा २०६१
तनूनपादुच्यते ५६८
तनूनपादृतं यते १९३२
तनूपा भिषजा सुते २०२६
तन्तुं तन्वन् रजसो १६१९
तं त्वा गीर्भिरुरुक्षया १८६१
तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं ४३५
तं त्वा घृतस्नवीमहे ९११
तं त्वाजनन्त मातरः १४७९
तं त्वा दूतं कृण्महे ११९५
तं त्वा नरो दम आ २०८
तं त्वामज्मेषु वाजिनं १३२९
तं त्वा मर्ता अगृभ्णत ५०५
तं त्वा वयं पतिमग्ने ११३
तं त्वा वयं सुध्यो ९४५
तं त्वा वयं हवामहे १३३१
तं त्वा विप्रा विपन्यवो ५१७
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः ९१०
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो १०५१
तं देवा बुध्न रजसः ३८७
तं नव्यसी हृद आ १११
तन्नस्तुरीपमद्भुतं० (देव त्वष्टा०) २०८१
तन्नस्तुरीपमद्भुतं० (। रायस्पोषं) २०६९
तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरु वारं १९२७
तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु १९६१
तं नेमिमृभवो यथा १३७७
तं नो अग्ने अभी नरो ८३४
तं नो अग्ने मघवद्भ्यः १८०१
तपनो अस्मि पिशाचानां २३००
तपुर्जम्भो वन आ ११४
तपो ष्वग्ने अन्तराँ ६०६
तमग्निमस्ते वसवो ११०१
तमग्ने पास्युत तं १०३३
तमग्ने पृतनाषहं ९०४
तमग्रुवः केशिनीः २९९
तमध्वरेष्वीळते देवं ८६१
तमर्वन्तं न सानसिं ७५४; १४७४
तमस्मेरा युवतयो २४२५
तमस्य पृक्षमुपरासु २७६
तमागन्म सोभरयः १२५५
तमित्पृच्छन्ति न सिमो ३३४
तमित्सुहव्यमङ्गिरः २१९
तमिद्गच्छन्ति जुह्व० ३३५
तमिद्दोषा तमुषसि ११२८
तमिन्न्वे३व समना १७६४
तमीं हिन्वन्ति धीतयो ३३०
तमीं होतारमानुषक् ६९७
तमीळत प्रथमं यज्ञसाधं १८८१
तमीळिष्व य आहुतो १३३१
तमुक्षमाणं रजसि ३८८
तमु त्वा गोतमो गिरा २४०
तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः १०५५
तमु त्वा पाथ्यो वृषा १०५६
तमु त्वा वाजसातमं २४१
तमु त्वा वृत्रहन्तमं २४२
तमु द्युमः पुर्वणीक ९९४
तमुस्रामिन्द्रं न रेजमानम् १५२४
तमोषधीर्दधिरे गर्भम् १६५६
तं पृच्छता स जगामा ३३३
तं मर्जयन्त सुक्रतुं १४६१
तं मर्ता अमर्त्यं घृतेन १८५८
तरी मन्द्रासु प्रयक्षु २०७७
तव क्रत्वा सनेयं १२५२
तव त्ये अग्ने अर्चयो ८०७, ८३९
तव त्ये अग्ने हरितो ६९०
तव त्रिधातु पृथिवी १७९७
तव द्युमन्तो अर्चयो ९१८
तव द्रप्सो नीलवान् १२५४
तव प्र यक्षि संदृशम् १०४९
तव प्रयाजा अनुयाजाः १६१५
तव भ्रमास आशुया १८१४
तव श्रिया सुदृशो ७८१
तव श्रियो वर्ष्यस्येव १६५५
तव स्वादिष्ठ अग्ने ७२४
तवाग्ने होत्रं तव ३७०; १६६०
तवाहमग्न ऊतिभिः ८३३; १२५१
तस्मै नूनमभिद्यवे १३७८
तस्येद्वर्वन्तो रंहयन्त १२२९
ता अधरादुदीची २२५४
ता अस्य वर्णमायुवो ४२९
ताँ उशतो वि बोधय १३
ता नृभ्य आ सौश्रवसा १०१६
तान्त्सत्यौजाः प्र दह २२९५
तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व १८०१
ता राजाना शुचिव्रता १०६५
तार्ष्टाघीरग्ने समिधः २३१८
ता सुजिह्वा उप ह्वये १९१३
तिग्मं चिदेम महि ९६६
तिग्मजम्भाय तरुणाय १२४५
तिस्र इडा सरस्वती २०४४
तिस्रस्त्रेधा सरस्वती २०३३

तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं वरीय १९९९
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदꣳ सदन्तु २०६८
तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमाना २०२१
तिस्रो यदग्ने शरदः १९७
तिस्रो यह्वस्य समिधः १७३५
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष १८३६
तुभ्यं श्चोतन्त्यध्रिगो ६२१
तुभ्यं स्तोका घृतश्चुतो ६२०
तुभ्यं घेत् ते जना इमे १३३८
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम १३२७
तुभ्यं दक्ष कविक्रतो ५८७
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो ७६४
तुभ्येदमग्ने मधु० ८४६
तुविग्रीवो वृषभो ७७८
तृषु यदन्ना तृषुणा ७०३
ते अस्य योषणे दिव्ये २०६६
ते गव्यता मनसा ६४१
ते घेदग्ने स्वाध्यो३ ये त्वा १२४०
ते घेदग्ने स्वाध्योऽहा १३३९
ते जानत स्वमोक्यं१ सं १४३७
तेजिष्ठा यस्यारतिः १००८
ते ते अग्ने त्वोता १०६८
ते ते देवाय दाशतः १२१०
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते २२६३
ते मन्वत प्रथमं ६४२
ते मर्मृजत ददवांसो ६४०
ते राया ते सुवीर्यैः ७०९
ते स्याम ये अग्नये ७०८
त्मना वहन्तो दुरो १७३
त्रयः केशिन ऋतुथा २४५६
त्रयः पोषास्त्रिवृति २१६९
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता २१७४
त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो २४८१
त्रिः सप्त यद्गुह्यानि २००
त्रिधा हितं पणिभिः १८९८
त्रिभिः पवित्रैरपुपोद्ध्य१र्कं १७५७
त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिं ३३८
त्रिरस्य ता परमा ६३३
त्रियातुधानः प्रसितिं १८३८
त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुः ११६८
त्रीणि जाना परि भूषन्त्यस्य १८७०
त्रीणि शता त्री सहस्रा० ५०८
त्रीण्यायूंषि तव जात० ६०२
त्रेधा जातं जन्मनेदं २१७२
त्र्यायुषं जमदग्नेः २१७१
त्वं यविष्ठ दाशुषो १४१६
त्वं रयिं पुरुवीरम् १४१४
त्वं वरुण उत मित्रो ११७३
त्वं वरो सुषाम्णे १२९७
त्वं विक्षु प्रदिवः सीद ९८१
त्वं ह यद्यविष्ठ १२७५
त्वं हि क्षैतवद्यशो ९५२
त्वं हि मानुषे जने ८९६
त्वं हि विश्वतोमुख १८९२
त्वं हि सुप्रतूरसि १२९८
त्वं होता मनुर्हितो १०५०
त्वं होता मन्द्रतमो १००१
त्वं ह्यग्ने अग्निना १३२३
त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य राजसि ३३१
त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोता ९३९
त्वं चित्रः शम्या अग्ने ६६९
त्वं जामिर्जनानाम् २२७
त्वदग्ने काव्या त्वन्म० ७३०
त्वद्धि पुत्र सहसो ५८६
त्वद्भिया विश आयन् १७९६
त्वद्वाजी वाजंभरो ७३१
त्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने १७७१
त्वद्विश्वा सुभग सौभगानि १०१२
त्वं तं देव जिह्वया १०७३
त्वं तमग्ने अमृतत्व ५६
त्वं ताँ अग्न उभयान् ३६७
त्वं तान्त्सं च प्रति चासि ३८३
त्वं त्या चिदच्युता ९६०
त्वं दूतो अमर्त्य आ १०४७
त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः १६७९
त्वं दूतस्त्वमु नः ४०४
त्वं नः पाह्यंहसो १०७१; ११९१
त्वं नश्चित्र ऊत्या १०९८
त्वं नृचक्षा वृषभानु ५९०
त्वं नो अग्न आयुषु १३०९
त्वं नो अग्न एषां गयं ८३७
त्वं नो अग्ने अङ्गिरः ८४१
त्वं नो अग्ने अद्भुत ८३६
त्वं नो अग्ने अधरात् १८८७
त्वं नो अग्ने तव देव ६१
त्वं नो अग्ने पित्रोः ५८
त्वं नो अग्ने महोभिः १४०९
त्वं नो अग्ने वरुणस्य २४११
त्वं नो अग्ने सनये ५७
त्वं नो असि भारत ४४५
त्वं नो अस्या उषसो ५८९
त्वमग्न इन्द्रो वृषभः ३७१
त्वमग्न उरुशंसाय ६३
त्वमग्न ऋभुराके ३७८
त्वमग्ने अदितिर्देव ३७९
त्वमग्ने गृहपतिः ११९६
त्वमग्ने त्वष्टा विधते ३७३
त्वमग्ने द्युभिस्त्वमा० ३६९
त्वमग्ने द्रविणोदा ३७५
त्वमग्ने पुरुरूपो ८२५
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः ५१
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ५०
त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन ५२
त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं ५९
त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं ६४
त्वमग्ने बृहद्वयो १४६३
त्वमग्ने मनवे द्याम० ५३
त्वमग्ने यज्ञानां होता १०४२
त्वमग्ने यज्यवे पायु० ६१
त्वमग्ने यातुधानान् २२९०
त्वमग्ने राजा वरुणो ३७२
त्वमग्ने रुद्रो असुरो ३७४
त्वमग्ने वनुष्यतो १०३४
त्वमग्ने वरुणो जायसे ७७९
त्वमग्ने वसूँरिह १००
त्वमग्ने वाघते सुप्र० ६५९
त्वमग्ने वीरवद्यशो ११८८

त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं ५५
त्वमग्ने वृषभः पुष्टि० ५४
त्वमग्ने व्रतपा असि १२१४
त्वमग्ने शशमानाय ३१४
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान १८११
त्वमग्ने सप्रथा असि ८५७
त्वमग्ने सहसा सहन्तमः २८०
त्वमग्ने सुभृत उत्तमं ३८०
त्वमग्ने सुहव रण्व० ११२०
त्वमङ्ग जरितारं ६८८
त्वमध्वर्युरुत होतासि २६१
त्वमर्यमा भवसि यत् ७८०
त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु १२१५
त्वमित् सप्रथा असि १३९३
त्वमिन्द्रा पुरुहूत २२७४
त्वमिमा वार्या पुरु १०४६
त्वं भगो न आ हि १०१३
त्वया यथा गृत्समदासो ४२४
त्वया वयं सधन्य१स्त्वोताः १८२६
त्वया ह स्विद्युजा १४६५
त्वया ह्यग्ने वरुणो ३१३
त्वष्टा तुरीपो अद्भुत २०४५
त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय २०२२
त्वष्टा माया वेदपसाम १६२२
त्वष्टारमग्रजां गोपां १९८९
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः १९३९
त्वष्टा वीरं देवकामं २११४
त्वां यज्ञेष्वीळतेऽग्ने १५८६
त्वां यज्ञेष्वृत्विजं ५१०; १५८७
त्वां वर्धन्ति क्षितयः ९४३
त्वां विश्वे अमृत जायमानं १७७६
त्वां विश्वे सजोषसो ८९७
त्वां हि मन्द्रतम० ९७७
त्वां हि ष्मा चर्षणयो ९५३
त्वां ह्यग्ने सदमित् ६३१
त्वां चित्रश्रवस्तम ६०५
त्वां दूतमग्ने अमृतं १०३०
त्वामग्न आदित्यासः ३८१
त्वामग्न ऋतायवः ८२१
त्वामग्ने अङ्गिरसो ८४७
त्वामग्ने अतिथिं पूर्व्यं ८२२
त्वामग्ने दम आ विश्पतिं ३७६
त्वामग्ने धर्णसिं विश्वधा ८२४
त्वामग्ने पितरमिष्टिभिः ३७७
त्वामग्ने पुष्करादधि १०५४
त्वामग्ने प्रथमं देव० ७३२
त्वामग्ने प्रथममायुम् ६०
त्वामग्ने प्रदिव आहुतं ८२७
त्वामग्ने मनीषिणः ५०९
त्वामग्ने मनीषिणस्त्वां १३६१
त्वामग्ने मानुषीरीळते ८२३
त्वामग्ने यजमाना अनु १५९९
त्वामग्ने वसुपतिं ७९०
त्वामग्ने वाजसातमं ८५८
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा २३२१
त्वामग्ने हरितो वावशाना १७९८
त्वामग्ने हविष्मन्तो ८२८
त्वामग्ने समिधानं ८२६
त्वामग्ने समिधानो ११६०
त्वामग्ने स्वाध्यो३ मर्तासो १०४८
त्वामस्या व्युषि देव ७८५
त्वामिदत्र वृणते १६५९
त्वामिदस्या उषसो १६८१
त्वामीळते अजिरं ११६७
त्वामीळे अध द्विता १०४५
त्वामु जातवेदसं १७००
त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं १२०९
त्वामु ते स्वाभुवः १५८२
त्वे अग्न आहवनानि ११९६
त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो ३८२
त्वे अग्ने सुमतिं २११
त्वे अग्ने स्वाहुत ११९८
त्वे असुर्य१ं वसवो १७९९
त्वे इदग्ने सुभगे ७३
त्वे धर्माण आसते १५८३
त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदो १६३२
त्वे वसूनि पुर्वणीक ९८०
त्वेषं रूपं कृणुत १८७५
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति ९५७
त्वेषासो अग्नेरमवन्तो ८५
त्वोजो वाज्यह्रयोऽभि २२१
दृदानमिन्न ददभन्त ३४९
दधन्नृतं धनयन्नस्य १८७
दधन्वे वा यदीमनु ४२७
दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा ११५
दश क्षिपः पूर्व्यं सीम० ६२९
दशस्या नः पुर्वणीक १००५
दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त १८६९
दाधार क्षेममोको १३६
दा नो अग्ने धिया ११०४
दा नो अग्ने बृहतो ३९१
दामानं विश्वचर्षणे १२७१
दाशेम कस्य मनसा १४५८
दिदृक्षेण्यः परि ३४२
दिवक्षसो धेनवो ४९१
दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं २३६१
दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो १७२१
दिवश्चिदा ते रुचयन्त ४८६
दिवस्त्वा पातु हरितं २१७५
दिवस्परि प्रथमं जज्ञे १५८९
दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद् २२०५
दिवा मा नक्तं यतमो २३१३
दिवो न यस्य विधतो ९६९
दिवो वा सानु स्पृशता १९९६
दीदिवांसमपूर्व्यं ५७८
दीर्घतन्तुर्बृहदुक्षायमग्निः १६३१
दुरोकशोचिः क्रतुर्न १३८
दुरो देवीर्दिशो महीः २०४१
दुर्मन्त्वत्रामृतस्य १५५४
दुहन्ति सप्तैकाम् १४३०
दूतं वो विश्ववेदसं ७०४
दृशानो रुक्म उर्विया १५९६
दृशेन्यो यो महिना २४०३
दृळ्हा चिदस्मा अनु ९७५
देवं वो देवयज्यया ८९८
देव त्वष्टर्यद्ध चारुत्वम् २०००
देव बर्हिर्वर्धमानं सुवीरं १९४५
देवान् यन्नाथितो हुवे २३७१

देवाश्चित्ते अमृता १६३३
देवासस्त्वा वरुणो ७१
देवी दिवो दुहितरा १९९७
देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं १९६८
देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभिः २३९९
देवैनसादुन्मदितम् २१८८
देवो अग्निः संकसुको २२३८
देवो देवानामसि २६८
देवो देवान् परिभूर्ऋतेन १५५०
देवो देवेषु देवः पथो २०७३
देवो न यः पृथिवीं २०७
देवो न यः सविता २०६
देवो वो द्रविणोदाः १२०२
दैवा होतार ऊर्ध्वम् २०८०
दैव्या मिमाना मनुषः २०२०
दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं २०६७
दैव्या होतारा प्रथमा० ४९७; १९५९
दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर १९४८
दैव्या हो०प्र० सुवाचा २००९; २११४
दैव्या होतारा भिषजा २०४३
द्यावा यमग्निं पृथिवी १६०९
द्यावा ह क्षामा प्रथमे १५४९
द्यावो न यस्य पनय० ९७३
द्युतानं वो अतिथिं १०२६
द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं १५३१
द्यौश्च त्वा पृथिवी ४८२
द्रवतां त उपसा ५८३
द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य १८८६
द्रवन्नः सर्पिरासुतिः ४४६
द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं २०७८
द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता २०६५
द्विता यदीं कीस्तासो २७८
द्विताय मृक्तवाहसे ८८२
द्विभागधनमादाय २२४८
द्विर्यं पञ्च जीजनन् ६८९
द्विषो नो विश्वतोमुख १८९३
द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे १८६८
द्वे समीची बिभृतः २४१२
द्वे स्रुती अशृणवं २४११
धन्या चिद्धि त्वे १००२
धन्वन्त्स्रोतः कृणुते १८७७
धामन् ते विश्वं भुवनमधि १९०५
धायोभिर्वा यो युज्येभिः ९७०
धासिं कृण्वान ओषधीः १३१६
धिया चक्रे वरेण्यो ५४१
धीरासः पदं कवयो ३४१
धीरो ह्यस्यद्मसद्विप्रो १३७१
ध्रुवं ज्योतिर्निहितं १७९१
नकिरस्य सहन्त्य ४५
नकिष्ट एता व्रता १७०
नक्तोषासा वर्णमामेम्याने १८८३
नक्तोषासा सुपेशसा १९१२
नदमा रोह न ते अत्र २२२१
न तमग्ने अरातयो १४१२
न तस्य मायया चन १२८४
न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने ७८२
न त्वा रासीयाभिशस्तये १२४०
न पिशाचैः सं शक्नोमि २३०१
नमः शीताय तक्मने २२७८
नमस्ते अग्न ओजसे १३८२
नमस्यत हव्यदातिं १७३४
न यं रिपवो न ३५२
न यस्य सातुर्जनितो ६८८
न योरुपब्दिरश्व्यः २२१
न यो वराय मरुता० ३२२
नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन् १९४३
नराशंसः प्रति शूरो २०१५
नराशंसः सुषूदति १९६५
नराशंसमिह प्रियम् १९०८
नराशंसस्य महिमानं १९७५; २११९
नरो यं के चास्मदा १५७८
नवं नु स्तोममग्नये ११८०
नव प्राणान् नवभिः २१६७
नवा नो अग्न आ भर ८०८
नहि ग्रभायारणः ११४१
नहि ते अग्ने तन्वः २३३७
नहि ते अग्ने वृषभ १४०२
नहि देवो न मर्त्यो २४३९
नहि ते पूर्तमक्षिपद् १०५९
नहि मन्युः पौरुषेय १४१०
नहि मे अस्त्यघ्न्या १४८१
नाना ह्याग्नेऽवसे स्पर्धन्ते १०२०
नाभिं यज्ञानां सदनं १७७४
नाहं तन्तुं न वि जानामि १७८८
नि काव्या वेधसः १९५
नितिक्ति यो वारण ९७५
नित्ये चिन्नु यं सदने ३५०
नि तिग्ममभ्यं१शुं १४२५
नि त्वा दधे वर आ ६३०
नि त्वा दधे वरेण्यं ५४६
नि त्वा नक्ष्य विश्पते ११८३
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ८४
नि त्वा यज्ञस्य साधनम् ९६
नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त १६८२
नि त्वा होतारमृत्विजं १०६
नि दुरोणे अमृतो ४६४
नि नो होतार वरेण्यः २९
नि पस्त्यासु त्रितः १६०६
निरितो मृत्युं निर्ऋतिं २२३१
निर्मथितः सुधित ६२७
निर्यत् पूतेव स्वधितिः ११३२
निर्यदीं बुध्नान् महिषस्य ३०७
नि होता होतृषदने ४०३
नू च पुरा न सदनं १८८५
नू चित्सहोजा अमृतो ११०
नू ते पूर्वस्यावसो ४२३
नू त्वामग्न ईमहे ११४८
नू न इद्धि वार्यम् ८८०
नू न एहि वार्यम् ८७५
नूनमर्च विहायसे १२९३
नू नश्चित्रं पुरुवाजा० ९९७
नू नो अग्न ऊतये ८४०
नू नो अग्नेऽवृकेभिः ९७८
नू नो रास्व सहस्रवत् ५८०
नू मे ब्रह्माण्यग्न ११११
नृचक्षा रक्षः परि पश्य १८३७
नृवद्वसो सदमिद्धे० ९५०

नेशत्तमो दुधितं ६४३
नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो २३९३
न्यक्रतून् ग्रथिनो मृध्रवाचः १८०५
न्यग्निं जातवेदसं ९००; ९२६
न्यराती रराव्णां विश्वा १३०१

पञ्चौदनं पञ्चभिः २२२३
पतिर्ह्यध्वराणाम् ९४
पदं देवस्य नमसा ९४२
पदं देवस्य मीळ्हुषो १४७७
पन्यांसं जातवेदसं १४४४
परं योनेरवरं ते २१९६
परस्या अधि संवतो १३८७
पराद्य देवा वृजिनं १८४२
परा शृणीहि तपसा १८४१
परि ते दूळभो रथो ७१९
परि त्रिधातुरध्वरं १४३२
परि त्रिविष्ट्यध्वरं ७५०
परि त्मना मितद्रुरेति ६८६
परि त्वाग्ने पुरं वयं १८४९
परि प्रजातः क्रत्वा १६५
परि यदेषामेको १५५
परि वाजपतिः कविः ७५१
परि विश्वानि सुधिता ५२५
परिषद्यं ह्यरणस्य ११४०
पर्षि तोकं तनयं १०९९
पश्चात् पुरस्तादधरादुदक्तात् १८४८
पश्वा न तायुं गुहा १२४
पश्याम ते वीर्यं २२८८
पातं नो अश्विना दिवा २०३२
पाति प्रियं रिपो अग्रं ४७४
पार्थिवस्य रसे देवा २१४९
पावकया यश्चितयन्त्या १०२७
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा १६८५
पावकशोचे तव हि १७३२
पाहि गीर्भिस्तिसृभिः १३९८
पाहि नो अग्न एकया १३९७
पाहि नो अग्ने पायुभिः ३६४
पाहि नो अग्ने रक्षसः ८०; ११११
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो १३९८
पिता यज्ञानामसुरो १७४५
पितुर्न पुत्रः सुभृतो १२५०
पितुर्न पुत्राः क्रतुं १६२
पितुश्च गर्भं जनितुः ४५६
पितुश्चिदूधर्जनुषा ४५५
पितेव पुत्रमभिभरुपस्थे १६३४
पिप्रीहि देवाँ उशतो १४९२
पिशङ्गरूपः सुभरो १९५०
पीपाय स श्रवसा ९९५
पुत्रो न जातो रण्वो १६८
पुनस्त्वादित्या रुद्रा २२३४
पुनस्त्वा दुरप्सरसः २१८९
पुरं देवानाममृतं २१७७
पुरस्ताद् युक्तो वह २३०५
पुराग्ने दुरितेभ्यः १३७२
पुरीष्यासो अग्नयः ६२६
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि १२२१; १३३०
पुरु त्वा दाश्वान्वोचे ३५८
पुरूणि दस्मो नि ३५१
पुरूण्यग्ने पुरुधा ९५१
पुरोगा अग्निर्देवानां १९४१
पुरो वो मन्द्रं दिव्यं ९९३
पुरोळा अग्ने पचतः ५५३
पुष्टिर्न रण्वा क्षितिर्न १२८
पूर्वो देवा भवन्तु २६३
पूर्व्यं होतरस्य नो ३२
पूषण्वते मरुत्वते १९२९
पृक्षप्रयजो द्रविणः ४९९
पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य १७८०
पृक्षो वपुः पितुमान् ३०६
पृतनाजितं सहमानम् २३७४
पृथिवी धेनुस्तस्या २२८१
पृथिव्यामग्नये समनमन्त्स २२८०
पृथुपाजा अमर्त्यो ५४१
पृष्टो दिवि धाय्यग्निः १७९५
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः १७२५
पृष्ठात् पृथिव्या अहम् २२१९
प्र कारवो मनना ४८०
प्र केतुना बृहता १५३४
प्रचेतसं त्वा कवे १४८०
प्रजानन्नग्ने तव १६५४
प्रजापतेस्तपसा वावृधानः २११६
प्रजावता वचसा २३२
प्र जिह्वया भरते वेपो १६०८
प्र णु त्यं विप्रमध्वरेषु ७६१
प्र तव्यसीं नव्यसीं ३१८
प्र ताँ अग्निर्बभसत् १७६१
प्रति त्यं चारुमध्वरं २४३८
प्रति दह यातुधानान् २२९४
प्रति स्पशो वि सृज १८१५
प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो ११०३
प्र ते अग्ने हविष्मती ६११
प्र ते यक्षि प्र त इयर्मि १५०६
प्रत्नं होतारमीड्यं १३४९
प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु १२२३
प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानो ४७०
प्रत्यग्निरुषसामग्रम् ७४०; २३२८
प्रत्यग्निरुषसो जात० ७४५
प्रत्यग्ने मिथुना दह १८५१
प्रत्यग्ने हरसा हरः १८५२
प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा २१६८
प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्र १६९४
प्र त्वा दूतं वृणीमहे ७०
प्रथमं जातवेदसम् १२९१
प्रथमा वाँ सरथिना २११२
प्रथमा हि सुवाचसा १९३७
प्र दीधितिर्विश्ववारा १९५५
प्र देवं देववीतये १०८२
प्र देवं देव्या धिया १७०८
प्र दैवोदासो अग्निः ११५८
प्र नव्यसा सहसः ९८६
प्र नूनं जातवेदसम् १८६३
प्र नू महित्वं वृषभस्य १७१२
प्र पतेतः पापि लक्ष्मि २२०१
प्र पीपाय वृषभ ५९३
प्र पूतास्तिग्मशोचिषे २५३
प्र प्रायमग्निर्भरतस्य ११५२
प्र भूर्जयन्तं महां १६०५

प्र मंहिष्ठाय गायत १२६४
प्र मातुः प्रतरं गुह्यम् १६३९
प्र यं राये निनीषसि १२६०
प्र य आरुः शिति० ४९०
प्र यज्ञ एत्वानुषग् ९२७
प्र यत् ते अग्ने सूरयो १८९०
प्र यत् पितुः परमा० ३०८
प्र यदग्ने सहस्वतो १८९१
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां १८८९
प्र वः शुक्राय भानवे ११३४
प्र वः सखायो अग्नये १०६३
प्रवत् ते अग्ने जनिमा १६९१
प्रवाच्यं वचसः किं मे १७६५
प्र विश्वसामन्नत्रिवद् ८९९
प्र वेधसे कवये ८६६
प्र वो देवं चित्सहसा ११४२
प्र वो देवायाग्नये ५७४
प्र वो महे सहसा २८१
प्र वो यह्वं पुरूणां ६८
प्रशंसमानो अतिथिर्न १२३१
प्र शर्ध आर्त प्रथमं ६३८
प्र सद्यो अग्ने अत्येषि ७६३
प्र सप्तहोता सनका ५७१
प्र सम्राजो असुरस्य १८०३
प्र सु विश्वान् रक्षसो २३१
प्र सो अग्ने तवोतिभिः १२५३
प्र होता जातो महान् १६०१
प्र होत्रे पूर्व्यं वचो ५१३
प्राग्नये तवसे भरध्वं १७९४
प्राग्नये बृहते यज्ञियाय ८४८
प्राग्नये वाचमीरय १७११
प्राग्नये विश्वशुचे १८१०
प्राची दिगग्निरधिपतिः २१६१
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा २००६; २१२१
प्राचीनं बर्हिरोजसा १९३४
प्राचीनो यज्ञः सुधितं ११४४
प्राञ्चं यज्ञं चकृम ४४८
प्रातः प्रातर्गृहपतिर्नो २२७२
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं १४३७
प्रातरग्निः पुरुप्रियो ८८१
प्रातर्यावाणः सहस्कृत १०८
प्रान्यान्त्सपत्नान् २१९४
प्रियं दुग्धं न काम्यम् ८८९
प्रियमेधवदत्रि० १०२
प्रिया पदानि पश्वो १४९
प्रियो नो अस्तु विश्पतिः ३४
प्रेतो यन्तु व्याध्यः २४८३
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि ११०२
प्रेद्वग्निर्वावृधे स्तोमेभिः ४७१
प्रेव पिपतिषति २२६५
प्रेष्ठं वो अतिथिं १४५४
प्रेष्ठमु प्रियाणां १२६६
प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु ८०६
प्रोथदश्वो न यवसे ११२५
बभ्राणः सूनो सहसो ४५४
बर्हिः प्राचीनमोजसा १९८४
बळित्था तद्वपुषे ३०५
बृहती इव सूनवे १७२०
बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः १०९६
बृहद्वयो हि भानवे ८७१
बृहन्त इद्भानवो ४६०
बृहस्पतिर्म आकूतिम् २११२
बोधा मे अस्य वचसो ३४४
ब्रह्म च ते जातवेदो १५१२
ब्रह्मणाग्निः संविदानो २४१६
ब्रह्म प्रजावदा भर १०७७
भजन्त विश्वे देवत्वं १५७
भद्रं ते अग्ने सहसि० ७२८
भद्रं नो अपि वातय १५७१
भद्रं मनः कृणुष्व १२४३
भद्रा अग्नेर्वध्र्यश्वस्य १६२५
भद्रा ते अग्ने स्वनीक ६८७
भद्रो नो अग्निराहुतो १२४२
भद्रो भद्रया सचमान १५०१
भरद्वाजाय सप्रथः १०७४
भरामेध्मं कृणवामा २५९
भवा द्युम्नी वाध्र्यश्वोत १६२९
भवा नो अग्नेऽवितोत १५३३
भवा नो अग्ने सुमना ६०५
भवा वरूथं गृणते ११८
भारती पवमानस्य १९८८
भारतीळे सरस्वति १९३८
भुवश्चक्षुर्मह ऋतस्य १५३८
भुवो यज्ञस्य रजसश्च १५३९
भूमिष्ट्वा पातु हरितेन २१७१
भूरि नाम वन्दमानो ७८७
भूरीणि हि त्वे दधिरे ६१३
भूषन् न योऽधि २९७
मथीद्यदीं विभृतो १८८
मथीद्यदीं विष्टो ३४८
मधुमन्तं तनूनपाद् १९०७
मध्ये होता दुरोणे १००६
मध्वा यज्ञं नक्षति २०७४
मध्वा यज्ञं नक्षसे २०६२
मनुष्वत्त्वा नि धीमहि ८९५
मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्व० ६६
मनो न योऽध्वनः १९३
मन्थता नरः कविः ५६२
मन्द्रं होतारं शुचिमद् १७४१
मन्द्रं होतारमुशिजो ११६५; १६०४
मन्द्रं होतारमृत्विजं १३४८
मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी १९२५
मन्द्रो होता गृहपतिः ७२
मयो दधे मेधिरः ४४९
मय्यग्रे अग्निं गृह्णामि २३२५
मर्ता अमर्त्यस्य ते १२१८
महः स राय एषते ३५३
महत् तदुल्बं स्थविरं १६११
महश्चिदग्न एनसो ७३८
महाँ अस्यध्वरस्य ११६६
महान्त्सधस्थे ध्रुव ४८३
महिकेरव ऊतये १०३
महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्ती ४९३
महे यत्पित्र ईं १८९
महो देवान्यजसि १०९३
महो नो अग्ने सुवितस्य ११२३
महो रुजामि बन्धुता १८२३
महो विश्वाँ अभि १२९५

मा कस्य यक्षं ६७८
मा ज्येष्ठं वधीदयमग्न २१९०
मातेव यद्भरसे ८६९
माध्यंदिने सवने ५५५
मा नः समस्य दूढ्य १ः १३८१
मा निन्दत य इमां १७५९
मा नो अग्ने दुर्भृतये ११२१
मा नो अग्नेऽमतये ५९८
मा नो अग्नेऽव सृजो ३६५
मा नो अग्नेऽवीरते ११९८
मा नो अग्ने सख्या १९४
मा नो अरातिरीशत ४४२
मा नो अस्मिन् महाधने १३८४
मा नो देवानां विशः १३८०
मा नो मर्ताय रिपवे १३९६
मा नो रक्ष आ वेशीद् १४०८
मा नो हृणीतामतिथिः १२६८
मार्जाल्यो मृज्यते स्वे ७६२
मा शूने अग्ने नि षदाम १११०
मित्रं न यं सुधितं १०२४
मित्रश्च तुभ्यं वरुणः ५८४
मित्रो अग्निर्भवति ४७३
मुनयो वातरशनाः २४५९
मुमुक्ष्वो३ मनवे २९५
मुमोद गर्भो वृषभः १५३५
मुहुर्गृध्यैः प्र वदन्त्यार्ति २२५१
मूरा अमूर न वयं १५०९
मूर्धा दिवो नाभिरग्निः १७१८
मूर्धानं दिवो अरतिं १७७३
मूर्धा भुवो भवति २४०२
मेधाकारं विदथस्य १६५८
मेष इव वै सं च २३३८
मैनमग्ने वि दहो माभि १५५७
मो ते रिषन्ये अच्छोक्तिभिः १२६९
य आगरे मृगयन्ते २२९७
य इन्द्रेण सरथं याति २३५७
य इमे द्यावापृथिवी २०११; २१२६
य ईं चिकेत गुहा १५०
य उग्र इव शर्यहा १०८०
य उद्नानट् परायणं २३९५
य उ श्रियो दमेष्वा ३९९
य एनं परिषीदन्ति २३९०
यं सीमकृण्वन् ७४२
यः पञ्च चर्षणीरभि ११७८
यः परस्याः परावतः १७१२
यः पौरुषेयेण क्रविषा १८४३
यः समिधा य आहुती १२२८
यः सुनीथो ददाशुषे ३९८
यः सोमे अन्तर्यो २३५६
यः स्नीहितीषु पूर्व्यः २१६
यं ग्राममाविशत २३०२
यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा ७३७
यच्चिद्धि शश्वता तना ३३
यजमानाय सुन्वत ९२४
यजस्व होतरिषितो १०००
यजा नो मित्रावरुणा २२८
यजिष्ठं त्वा यजमाना २७३
यजिष्ठं त्वा ववृमहे १२२६
यजूंषि यज्ञे समिधः २३४५
यज्जातवेदो भुवनस्य २४०१
यज्ञस्य केतुं प्रथमं ८४३; १६७८
यज्ञानां रथ्ये वयं १३६९
यज्ञायज्ञा वो अग्नये १०९०
यज्ञासाहं दुव इषे १५७७
यज्ञेन वर्धत जात० ३८५
यज्ञेभिरद्भुतक्रतुं १२७७
यज्ञैरिषूः सन्नममानो १८३१
यं जनासो हविष्मन्तो १४४३
यता सुजूर्णी रातिनी ६४८
यत्कृपते यद्वनुते २२४९
यत्ते कृष्णः शकुन १५६२
यत्ते मनुर्यदनीकं १६२७
यत्पाकत्रा मनसा १४९६
यत्र क्व च ते मनो १०५८
यत्र वेत्थ वनस्पते १९७२
यत्रा वदेते अवरः २४१३
यत्रेदानीं पश्यसि १८३३
यत्रैषामग्ने जनिमानि २२९२
यत्त्वा क्रुद्धा प्रचक्रुः २२३३
यत्त्वा होतारमनजन् ६१४
यथा चिद् वृद्धमतसम् १३९५
यथायजो होत्रमग्ने ६०१
यथा वः स्वाहाग्नये ११३०
यथा विद्वाँ अरं करद् ४३२
यथा विप्रस्य मनुषो २३३
यथा सो अस्य परिधिः २३०७
यथा ह त्यद्वसवो ७३९
यथा हव्यं वहसि २३३१
यथा होतर्मनुषो ९७१
यदग्न एषा समितिः १५४७
यदग्निरापो अदहत् २२७५
यदग्ने अद्य मिथुना १८४०
यदग्ने कानि कानि १४८२
यदग्ने दिविजा असि १३३७
यदग्ने मर्त्यस्त्वं १२४८
यदग्ने यानि कानि २३५३
यदग्ने स्यामहं त्वं १३६५
यदङ्ग दाशुषे त्वं ६
यदत्त्युपजिह्विका यद् १४८३
यदद्दीध्यन्नृणमहं १३८४
यदद्य त्वा प्रयति ५७३
यदन्नमत्ति बहुधा २३४६
यदन्नमद्म्यनृतेन देवा २३४८
यदयुक्था अरुषा २६५
यदसावमुतो देवा २१६५
यदस्मृति चकृम किं २२००
यदस्य हृतं विहृतं २३०९
यदि वाहमनृतदेव १२१३
यदि शोको यदि २२७७
यदीं गणस्य रशना० ७५७
यदी घृतेभिराहुतो १२४६
यदी मन्थन्ति बाहुभिः ५६३
यदी मातुरुप स्वसा ४३०
यदीमृतस्य पयसा २४६
यदुद्वतो निवतो यासि १६९३
यदेदेनमदधुः २४०७
यद् दारुणि बध्यसे २३८८

यद्देवानां मित्रमहः ९७
यद्धस्ताभ्यां चकृम २३८१
यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा २२३२
यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः २२७६
यद् रिप्रं शमलं चकृम २२५३
यद्वा उ विश्पतिः शितः १२८२
यद्वातजूतो वना १३१
यद्वाहिष्ठं तदग्नये ९१७
यद् विजामन्परुषि १२२१
यद् वो वयं प्रमिनाम १४९५
यं त्वं विप्र मेधसातौ १२१३
यं त्वमग्ने समदहः १५६१
यं त्वा गोपवनो गिरा १४५२
यं त्वा जनास इन्धते १३३६
यं त्वा जनास ईळते १४५३
यं त्वा जनासो अभि १५०७
यं त्वा देवा दधिरे १६१०
यं त्वा देवासो मनवे ७७
यं त्वा द्यावापृथिवी १४९८
यं त्वा पूर्वमीळितो १६२८
यं त्वा होतारं मनसाभि २३५९
यं देवासस्त्रिरहन् १९५४
यं देवासोऽजनयन्त २४०५
यन्मा हुतमहुतम् २३४७
यमग्निं मेध्यातिथिः ७८
यमग्ने पृत्सु मर्त्यम् ४४
यमग्ने मन्यसे रयिं १५८४
यमग्ने वाजसातम ८९१
यमश्वी नित्यमुपयाति ११११
यमापो अद्रयो वना १०९४
यमासा कृपनीळं १५७३
यमीं द्वा सवयसा ३२९
यमेरिरे भृगवो ३२१
यमैच्छाम मनसा १६१६
यमो ह जातो यमो १४१
यं मर्त्यः पुरुस्पृहं ८१६
यया गा आकरामहे १७०४
यशा इन्द्रो यशा अग्निः २४८०
यस्त इध्मं जभरत् ६५२
यस्त ऊरू विहरति २४१९
यस्तुभ्यं दाशाद्यो १५९
यस्तुभ्यमग्ने अमृताय ६५५; १६६१
यस्ते अग्ने नमसा ८९३
यस्ते अग्ने सुमतिं १५४६
यस्ते अद्य कृणवद् १५९७
यस्ते अप्सु महिमा २२०६
यस्ते गर्भममीवा २४१७
यस्ते देवेषु महिमा २२०७
यस्ते भराद्न्नियते ३५१
यस्ते यज्ञेन समिधा २८३
यस्ते सूनो सहसो १०१५
यस्ते हन्ति पतयन्तं २४१८
यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने ६०४
यस्त्वा दोषा य उषसि ६५४
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा २४२०
यस्त्वामग्न इनधते ७३४
यस्त्वामग्ने हविष्पतिः १७
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा २४२१
यस्त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो १८२२
यस्त्वा हृदा कीरिणा ७९९
यस्मा ऋणं यस्य जायाम् २३८३
यस्माद् रेजन्त कृष्टयः १२५९
यस्मिन् देवा अमृजत २२४३
यस्मिन् देवा मन्मनि १५५६
यस्मिन् देवा विदथे १५५५
यस्मिन्नश्वास ऋषभास १६६४
यस्मै त्वं सुकृते ८००
यस्मै त्वं सुद्रविणो २७०
यस्मै त्वमायजसे २५७
यस्य ते अग्ने अन्ये १२५६
यस्य त्रिधात्ववृतं १४७६
यस्य त्वमग्ने अध्वरं ६५६
यस्य त्वमूर्ध्वो अध्वराय १२३३
यस्य दूतो असि क्षये २१८
यस्य मा परुषाः शतम् ९३२
यस्य शर्मन्नुप विश्वे १८०८
यस्याग्निर्वपुर्गृहे १२३४
यस्याजुषन्नमस्विनः १३८६
यस्येदं प्रदिशि यद् २३[illegible]
या नृपानस्य सोमप २२९१
या ते वसो वात इषुः २२७०
यान् राये मर्तान्त्सुषूदो २१[illegible]
यामन् यामन्नुपयुक्तं २३६२
या मा लक्ष्मीः पतयालूः २२७२
यामाहुतिं प्रथमामथर्वा २२०९
यामृषयो भूतकृतो २३२४
या रुचो जातवेदसो १८६५
यावन्मात्रमुषसो २४१५
या वा ते सन्ति दाशुषे ११३१
युक्ष्वा हि देवहूतमाँ १३७३
युगेयुगे विदथ्यं १७८४
युयूषतः सवयसा ३२८
युवमेतानि दिवि २४६९
युवानं विश्पतिं कविं १३६८
यूयमुग्रा मरुत ईदृशे २१५३
ये अग्नयो अप्स्वन्तर्ये २३५१
ये अग्ने चन्द्र ते गिरः ८३८
ये अग्ने नेरयन्ति ८०२
ये उग्र अर्कमानृचुः २४४१
ये ते शुक्रासः शुचयः ९८९
ये देवास्तेन हासन्ते २२९९
येन ऋषयो बलम् २३३४
येन चष्टे वरुणो मित्रो १२३९
येन देवा अमृतम् २३३५
येन वंसाम पृतनासु १४००
ये नाकस्याधि रोचने २४४३
येनेन्द्राय समभरः २१४२
ये पर्वताः सोमपृष्ठा २३६४
ये पायवो मामतेयं ३४५; १८२५
ये पुरस्ताज्जुह्वति २३४२
ये बध्यमानमनु दीध्याना २१५१
ये भक्षयन्तो न वसूनि २२७९
येभिः पाशैः परिवित्तो २१९२
ये महो रजसो विदुः २४४०
ये मा क्रोधयन्ति लपिता २३०३
ये मे पञ्चाशतं ददुः ८८५
ये राधांसि ददत्यश्व्या १२०१

❀

ये शुभ्रा घोरवर्पसः १४४१
येऽश्रद्धा धनकाम्यात् २२६४
येपामाबाध ऋग्मिय १२७२
येपामिळा घृतहस्ता ११९९
ये स्तोतृभ्यो गोअग्रा० ३८४
ये ह त्ये ते सहमाना ६९१
यो अग्निं तन्वो३ दमे १३५७
यो अग्निं देववीतये १८
यो अग्निं हव्यदातिभिः १२३६
यो अग्निः क्रव्यवाहनः १५६७
यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश १५६६
यो अग्निः सप्तमानुषः १३०७
यो अग्नीपोमा हविषा २४७२
यो अध्वरेषु शंतम २३५
यो अपाचीने तमसि १८०६
यो अप्स्वा शुचिना दैव्येन २४२९
यो अस्मा अन्नं तृष्वा३ १६४१
यो अस्मै हव्यादातिभिः १२९०
यो अस्य पारे रजसः १७१५
यो अस्य समिधं वेद २३९२
यो देवो विश्वाद्यमु २३५८
यो देह्यो३ अनमयद् १८०७
यो न आगो अभ्येनो ७८४
यो नः सनुत्यो अभि ९८२
यो नः सुप्तञ्जाग्रतो २२२८
यो नस्तायद् दिप्सति २२२७
यो नो अग्निः पितरो २२४६
यो नो अग्ने अररिवाँ ३४६
यो नो अग्ने दुरेव १०७२
यो नो अग्नेऽभिदासति २५४
यो नो अश्वेषु वीरेषु २२४१
यो नो दिप्सददिप्सतो २२९६
यो नो धुवे धनमिदं २३६९
यो नो रसं दिप्सति १२१२
यो भानुभिर्विभावा १५२१
यो म इति प्रवोचति ९३१
यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा ६४७
यो मे शता च विंशतिं ९२९
यो रक्षांसि निजूर्वति १७१३
यो विश्वतः सुप्रतीकः २६२
यो विश्वा दयते वसु १९६२
यो विश्वाभि विपश्यति १७१४
यो हव्यान्यैरयता १२४७
यो होतासीत् प्रथमो २४००
रक्षा णो अग्ने तव ६७९
रक्षोहणं वाजिनमा १८१८
रथाय नावमुत नो ३०३
रथो न यातः शिक्वभिः ३१२
रपद्गन्धर्वीरप्या च १५४१
रयिर्न चित्रा सूरो १३४
रयिर्न यः पितृवित्तो २०५
राजन्तमध्वराणां ८
रात्रिंरात्रिमप्रयातं २२६९
रायस्पूर्धि स्वधावोऽस्ति ७९
रायो बुध्नः संगमनो १८८४
वृस्व विश्वा वार्याणि १२०८
वंस्वा नो वार्या पुरु १२९६
वम्रा सूनो सहसो १०१७
वम्रा हि सूनो अस्य० ९७४
वधेन दस्युं प्र हि ७९५
वधैर्दुःशंसाँ अप दूढ्यो २६४
वनस्पतिं पवमान १९९०
वनस्पतिरवसृजन् १९५१
वनस्पतिरवसृष्टो २०२३
वनस्पते रशनया नियूया २००१
वनस्पतेऽव सृजोप १९६१
वनस्पतेऽव सृजा २०७०; २०८२
वनेम पूर्वीरर्यो १७४
वनेषु जायुर्मर्तेषु १४४
वर्हिं यशसं विदथस्य ११९
वयं ते अग्न उक्थैः ७९६
वयं ते अग्ने समिधा ११७५
वयं ते अद्य ररिमा ५८५
वयं नाम प्र ब्रवामा १८९६
वयमग्ने अर्वता ३९४
वयमग्ने वनुयाम ७८३
वयमु त्वा गृहपते १०४१
वया इदग्ने अग्नयस्ते १७१७
वर्च आ धेहि मे तन्वा३ २२१४
वर्धन्तीमापः पन्वा १२७
वर्धान्यं पूर्वीः क्षपो १८०
वव्राजा सीमनदतीः ४५१
वशां राजानं वसतिं ७७१
वसिष्वा हि मियेध्य १८
वसुं न चित्रमहसं १६७५
वसुरग्निर्वसुश्रवा ९०८
वसुर्वसुपतिर्हि कम् १३६६
वस्वी ते अग्ने संदृशिः १०६६
वह्निभिर्विहरन् ७४३
वाजयन्निव नू रथान् ३९७
वाजिन्तमाय सह्यसे १६७१
वाजी वाजेषु धीयते ५४४
वाजो नु ते शवस० ८७०
वातस्य पत्मन्नीळिता १९७०
वातस्याश्वो वायोः सखा २४६२
वातोपधूत इषितो १६५७
वायुरस्मा उपामन्थत् २४६४
वि घ त्वावाँ ऋतजात ३६६
वि जिहीष्व लोकं कृणु २३८९
वि ज्योतिषा बृहता ७७५
वि ते मुञ्चामि रशनां २११८
वि ते विष्वग्वातजूतासो ९८८
वि त्वा नरः पुरुत्रा १८३
विदन्तीमत्र नरो १४७
वि देवा जरसावृतन् २३४३
विश्वा ते अग्ने त्रेधा १५९०
विश्वा हि ते पुरा वयम् १३८८
विद्वाँ अग्ने वयुनानि २०१
वि द्वेषांसीनुहि ९९९
विधेम ते परमे ४०५
वि पाजसा पृथुना ५८८
वि पृक्षो अग्ने मघवानो २०९
विप्रं विप्रासोऽवसे १२१९
विप्रं होतारमद्रुहं १३५१
वि प्रथतां देवजुष्टं १९९५
विप्रस्य वा स्तुवतः १२३५
विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु १९८०
विभक्तासि चित्रभानो ४३
विभावा देवः सुरणः १७५०

विभूतरातिं विप्र १२२५
विभूषन्नग्न उभयाँ १०३१
वि मे कर्णा पतयतो १६९२
वि यदस्थाद्यजतो ३११
वि यस्य ते ज्रयसानस्य १६६९
वि यस्य ते पृथिव्यां ११२७
वि ये चृतन्ति ऋता १५१
वि ये ते अग्ने भेजिरे ११०८
वि यो रजांस्यमिमीत १७७९
वि यो वीरुत्सु रोधन् १५२
विराट् सम्राड् विभ्वीः १९३५
वि राय और्णोद्दुरः १६३
वि लपन्तु यातुधाना २२८६
वि वातजूतो अतसेषु ११३
विशां कविं विश्पतिं ७९२; ९४६; १७३६
विशां गोपा अस्य २६०
विशां राजानमद्भुतम् १३३३
विशो यदह्वे नृभिः १६९
विशोविशो वो अतिथिं १४४२
विश्पतिं यह्वमतिथिं १७४९
वि श्रयन्तामुर्विया १९४६
वि श्रयन्तामृतावृधः १९२३
वि श्रयन्तामृतावृधो १९११
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय २४०८
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य १५९४
विश्वा अग्नेऽप दहारातीः ११०६
विश्वा उत त्वया वयं ४४३
विश्वानि नो दुर्गहा ७९८
विश्वासां गृहपतिः १०९७
विश्वासां त्वा विशां २७९
विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं १९९१
विश्वे देवा अनमस्यन् १७९३
विश्वेभिरग्ने अग्निभिः ३७
विश्वेषां ह्यध्वराणाम् १४९७
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां ६४६
विश्वेषामिह स्तुहि १४७२
विश्वे हि त्वा सजोषसो ९०५; १२८७
विश्वो विहाया अरतिः २८८
विषं गवां यातुधानाः १८४५
विषाणा पाशान् वि २३८७
वि षाह्यग्ने गृणते ७२९
विषूचो अश्वान् युयुजे १६४३
विषेण भङ्गुरावतः १८५०
विष्णुरित्था परममस्य १४८७
वीतिहोत्रं त्वा कवे ९२२
वीती यो देवं मर्तो १०८७
वीळु चिद् दृळ्हा पितरो १८६
वृक्षे ह यज्ञमसः १००४
वृतेव यन्तं बहुभिः ९४१
वृषणं त्वा वयं वृषन् ५५१
वृषायन्ते महे अत्याय ४९८
वृषा वृष्णे दुदुहे १५४०
वृषा ह्यग्ने अजरो १०९२
वृषो अग्निः समिध्यते ५५०
वेत्था हि वेधो अध्वनः १०४४
वेदिषदे प्रियधामाय २९२
वेधा अदृप्तो अग्निः १६६
वेरध्वरस्य दूत्यानि ७००
वेषि होत्रमुत पोत्रं १४९३
वेषि ह्यध्वरीयताम् ७१६; ९६१
वेषीद्वस्य दूत्यं ७१७
वैकङ्कतेनेध्मेन ११६३
वैश्वानरं कवयो २४०९
वैश्वानरं मनसाग्निं १७५३
वैश्वानरं विश्वहा २४१०
वैश्वानरः पविता मा २३८६
वैश्वानरः प्रत्नथा नाकम् १७३८
वैश्वानर तव तत् १७२६
वैश्वानर तव तानि १७७७
वैश्वानर तव धामान्या १७५१
वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो १७५२
वैश्वानरस्य विमितानि १७७८
वैश्वानरस्य सुमतौ १७२४
वैश्वानराय धिषणाम् १७२७
वैश्वानराय पृथुपाजसे १७४२
वैश्वानराय प्रति २३८५
वैश्वानराय मीळ्हुषे १७५८
वैश्वानरोऽङ्गिरसां २३७७
वैश्वानरो न आगमद् २३७६
वैश्वानरो न ऊतय २३७५
वैश्वानरो महिम्ना १७२३
व्यचस्वतीरुर्विया २००७, २१२२
व्यनिनस्य धनिनः ३५९
व्यश्वस्त्वा वसुविदम् ११८५
व्यस्तभ्नाद् रोदसी मित्रो १७८२
व्याघ्रेऽह्वन्नजनिष्ट वीरो २१८५
व्रता ते अग्ने महतो ४८४
व्रतेन त्वं व्रतपते ११९७
शकेम त्वा समिधं २५८
शग्धि वाजस्य सुभग ५९९
शमग्निरग्निभिः करच्छं २४५७
शमिता नो वनस्पतिः २०४६
शश्वत्तममीळते दूत्याय १९९४
शश्वदग्निर्वध्र्यश्वस्य १६३५
शान्तो अग्निः क्रव्याच्छान्तः २३६३
शिवस्त्वष्टरिहा गहि १९७१
शिवा नः सख्या सन्तु ७२७
शिशानो वृषभो यथा १४०१
शिशुं न त्वा जेन्यं १५०८
शीतिके शीतिकावति १५७०
शीरं पावकशोचिषं १४७३
शुक्रः शुशुक्वाँ उषो १६४
शुक्रेभिरङ्गै रज ४५१
शुचिं न यामन्निषिरं १७४०
शुचिः पावक वन्द्यो ४४४
शुचिः पावको अद्भुतो १९२०
शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत् ८१८
शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा १९२६
शुनश्चिच्छेपं निदितं ७७३
शूषेभिर्वृधो जुषाणो १५२३
शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः ९९
शृतं यदा करसि १५५८
शृतमजं शृतया २२२५
शेषे वनेषु मात्रोः सं १४०३
शोचा शोचिष्ठ दीदिहि १३९४
श्रीणन्नुप स्थाद्दिवं १५४

श्रीणामुदारो धरुणो	१५९३
श्रुत्कर्णाय कवये	२२०८
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः	९८
श्रुधी नो अग्ने सदने	१५४८
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे	१०१
श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे	१२८३
श्र्या अग्निश्चित्रभानुः	४१०
श्रेष्ठं यविष्ठ भारत	४४१
श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं	८९
श्वसित्यप्सु हंसो न	१३२
सं यदिषो वनामहे	८१३
सं यस्मिन्विश्वा वसूनि	१५२५
संवत्सरीणं पय	१८४४
संवसथ इति वो	२३७०
संसमिद्युवसे वृषन्	१७१६
सं सीदस्व महाँ असि	७६
स आ वक्षि महि न आ	१५०५
स आहुतो वि रोचते	१८५५
स इत्तन्तुं स वि जानाति	१७८९
स इदग्निः कण्वतमः	१६७०
स इदस्तेव प्रति	९६७
स इधान उषसो	३९२
स इधानो वसुष्कवि	२४८
स ईं मृगो अप्यो वनर्गुः	३३७
स ईं रेभो न प्रति	९६८
स ईं वृषाजनयत्	२४३४
स केतुरध्वराणाम्	५१२
सखायः सं वः सम्यञ्चम्	८११
सखायस्ते विषुणा	८५२
सखायस्त्वा ववृमहे	५००
सखे सखायमभ्या	२४५०
स गृत्सो अग्निस्तरुणः	११३५
स घा नः सूनुः	३९
स घा यस्ते ददाशति	५११
संकसुको विकसुको	२२४०
स चन्द्रो विप्र मर्त्यो	३६०
स चिकेत सहीयसा	१३०४
स चित्र चित्रं चितयन्त०	९९२
स चेतयन्मनुषो	६३५
स जातो गर्भो असि	१४८६
स जायत प्रथमः	६३७
स जायमानः परमे	३१९; १७८१
स जायमानः परमे व्योमन्	१८००
स जिन्वते जठरेषु	१७३७
सजोषस्त्वा दिवो नरो	९५४
सजोषा धीराः पदैरनु	१२५
सं चेध्यस्वाग्ने प्र	२३२०
सं जागृवद्भिर्जरमाण	१६५१
संजानाना उप सीद	१९९
स तत्कृधीषित०	९८४
स तु वस्त्राण्यध पेशनानि	१४९०
स तू नो अग्निर्नयतु	६३६
स ते जानाति सुमतिं	१८१८
स तेजीयसा मनसा	६१२
सतो नूनं कवयः सं	१६२३
स त्वं दक्षस्यावृको	१०२५
स त्वं न ऊर्जां पते	१२८१
स त्वं नो अग्नेऽवमो	२४५२
स त्वं नो अर्वन्निदाया	१०११
स त्वं नो रायः शिशीहि	५९६
स त्वं विप्राय दाशुषे	१३२४
स त्वमग्ने प्रतीकेन	१८६०
स त्वमग्ने विभावसुः	१३४१
स त्वमग्ने सौभग०	२७१
स त्वमस्मदप द्विषो	१२१६
स दर्शत श्रीरतिथिः	१६५२
सदासि रण्वो यवसेव	१५४४
स दूतो विश्वेदभि	६३४
स दृळ्हे चिदभि तृणत्ति	१२६१
सद्यो अध्वरे रथिरं	११८५
सद्यो जात ओषधीभिः	४७७
सद्यो जातस्य ददृशान०	७०२
सद्यो जातो व्यमिमीत	२०१३;२१२८
स न ईळानया सह	१४६४
स नः पावक दीदिवो	१९
स नः पावक दीदिहि	५१६
स नः पितेव सूनवे	९
स नः पृथु श्रवाय्यम्	१०५३
स नः शर्माणि वीतये	५७७
स नः सिन्धुमिव नावया	१८९४
स नः स्तवान आ भर	१०
सनादग्ने मृणसि	१८४६
स नो दूराच्चासाच्च	४०
स नो धीती वरिष्ठया	९१३
स नो नृणां नृतमो	२३७
स नो नेदिष्ठं ददृशान	२८१
स नो बोधि श्रुधी हवम्	९०९
स नो बोधि सहस्य	३९५
स नो मन्द्राभिरध्वरे	१०४३
स नो महाँ अनिमानो	४८
स नो मित्रमहस्त्वम्	१३५६
स नो राधांस्या भर	११८७
स नो रेवत्समिधानः	३९०
स नो वस्व उप मासि	१४१७
स नो विभावा चक्षणिः	९७२
स नो विश्वेभिर्देवेभिः	१४११
स नो वृष्टिं दिवस्परि	४३७
स नो वेदो अमात्यम्	११७१
सपर्यवो भरमाणा	१९७७
सपर्येण्यः स प्रियो	९४४
स पूर्वया निविदा	१८८०
सप्त धामानि परियन्	१६७७
सप्त मर्यादाः कवयः	१५१८
सप्त स्वसॄररुषीः	१५१७
सप्त होतारस्तमिदीळते	१४०४
सप्त होत्राणि मनसा	१९५७
स प्रत्नथा सहसा	१८७९
स प्रत्नवन्नवीयसा	१०६२
सबन्धुश्चासबन्धुश्च	२४७९
सबाधो यं जना इमे३	१४४७
स बोधि सूरिर्मघवा	४३६
स भ्रातरं वरुणमग्न	२४४९
समज्या पर्वत्या३ वसूनि	१६३०
समस्त्वग्निमवसे	१२२२
स मन्द्रया च जिह्वया	१२००
समन्या यन्त्युप यन्ति	२४२४
स मर्तो अग्ने स्वनीक	११२२

स मह्ना विश्वा दुरितानि ११७२
स मातरिश्वा पुरुवार १८८२
समानं नीळं वृषणो १५१४
समानं वत्समभि ३४०
स मानुषीषु दूळभो ७१३
स मानुषे वृजने २८९
समास्त्वाग्न ऋतवो २३१९
समाहर जातवेदो २३१५
समित्समित्सुमना १९५३
समिद्ध इन्द्र उषसाम् २०१४
समिद्धमग्निं समिधा १०२९
समिद्धश्चित् समिध्यसे १६९८
समिद्धस्य प्रमहसो ९३६
समिद्धो अग्न आ वह १९१८
समिद्धो अग्न आहुत ९३७; २२४४
समिद्धो अग्निः समिधा २०३७
समिद्धो अग्निरश्विना २०२५
समिद्धो अग्निर्दिवि ९३३
समिद्धो अग्निर्निहितः १९४२
समिद्धो अञ्जन्कृदरं ११०६
समिद्धो अद्य मनुषो २००३; २११७
समिद्धो अद्य राजसि १९३१
समिद्धो विश्वतस्पतिः १९८१
समिधाग्निं दुवस्यत १३४३
समिधा जातवेदसे ११७४
समिधान उ सन्त्य १३५१
समिधानः सहस्रजिद् ९२५
समिधा यस्य आहुतिं ९५६
समिधा यो निशिती १२३७
समिध्यमानः प्रथमानु ६००
समिध्यमानो अध्वरे ५४०
समिध्यमानो अमृतस्य ९३४
समिन्धते संकसुकं २२३७
समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ १८९५
समुद्रे त्वा नृमणा १५९१
सं माग्ने वर्चसा सृज २६
सम्यक् स्रवन्ति सरितो १९००
स यक्षदस्य महिमानम् २०६४
स यन्ता विप्र एषां ५७६
स योजते अरुषा ११९३
स यो वृषा नरां न ३५४
सरस्वती साधयन्ती १९४९
स रेवाँ इव विश्पतिः ४९
स रोचयज्जनुषा १७२८
सर्वानग्ने सहमानः २२५१
स वाजं विश्वचर्षणिः ४६
सवितारमुषसमश्विना ९३
स विद्वाँ आ च पिप्रयो ४४०
स विप्रश्चर्षणीनां ७११
स विश्वा प्रति चाक्लृप २१८२
स वेद देव आनमं ७०६
स व्यस्थादभि ४२२
स श्वितानस्तन्यतू ९८७
स संस्तिरो विष्टिरः २९८
स सत्पतिः शवसा १०१४
स सद्म परि णीयते ७१४
ससस्य यद्वियुता ६९९
स सुक्रतुः पुरोहितो २८६
स सुक्रतुर्यो वि दुरः ११५६
ससृवांसमिव त्मना ५०४
सः स्मा कृणोति केतुमा ८१४
स हव्यवाळमर्त्य ५१९
सहस्राक्षो विचर्षणिः २५५
स हि क्रतुः स मर्यः २३६
सहि क्षपावाँ अग्नी १७८
स हि क्षेमो हविर्यज्ञः १५७६
स हि द्युभिर्जनानां ८७२
स हि पुरू चिदोजसा २७४
स हि यो मानुषा युगा १०६४
स हि विश्वाति पार्थिवा १०६१
स हि वेदा वसुधितिं ७०५
स हि शर्धो न मारुतं २७७
स हि ष्मा धन्वाक्षितं ८१७
स हि ष्मा विश्वचर्षणिः ९०६
स हि सत्यो यं पूर्वे ९१२
सहे पिशाचान्त्सहसा २२९८
स होता यस्य रोदसी ४८९
स होता विश्वं परि ३८९
स होता सेदु दूत्यं ७०७
साकं हि शुचिना शुचिः ४१८
सा ते अग्ने शन्तमा १४४९
सा द्युम्नैर्द्युम्निनी बृहद् १४५०
साधुर्न गृध्नुरस्तेव १८४
सान्वर्पांसि सनता न १९४७
साध्वीमकर्देववीतिं १६१८
साम द्विबर्हा महि १७६०
सायंसायं गृहपतिर्नो २२७१
सास्माकेभिरेतरी १००९
साह्वान्विश्वा अभियुजः ५२३
सिञ्चन्ति नमसावतम् १४३३
सिध्रा अग्ने धियो अस्मे १५३०
सिन्धुर्न क्षोदः प्र १४३
सिन्धोरिव प्राध्वने १९०१
सीद होतः स्व उ लोके ५६५
सीसे मृड्ढ्वं नडे मृड्ढ्वम् २२४५
सुकर्माणः सुरुचो ६६३
सुक्षेत्रिया सुगातुया १८८८
सुजातं जातवेदसं २३३३
सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि १६५३
सुनिर्मथा निर्मथितः ५६१
सुप्रतीके वयोवृधा १९६१
सुबर्हिरग्निः पूषण्वान् २०४०
सुरुक्मे हि सुपेशसा १९३६
सुवीरं रयिमा भर १०७०
सुशंसो बोधि गृणते ९१
सुशिल्पे बृहती मही १९८६
सुसंदृक् ते स्वनीक ११२१
सुसमिद्धाय शोचिषे १९६४
सुसमिद्धो न आ वह १९०६
सूक्तवाकं प्रथमम् २४०४
सूरो न यस्य दृशति० ९६५
सूर्यं चक्षुर्गच्छतु १५५१
सेदग्निरग्नींरत्य० ११२३
सेदग्निर्यो वनुष्यतो ११४
सेदग्ने अस्तु सुभगः १८१९
सेनेव सृष्टामं दधाति १४०
सेमां वेतु वषट्कृतिम् ११८१

सेनानीकेन सुविदत्रो ४०८
सो अग्न ईजे शशमे ९४७
सो अग्निर्यो वसुर्गृणे ८०२
सो अद्धा दाश्वध्वरो १२३२
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती १५४२
सोमस्य मा तवसं ४४७
सोमस्य मित्रावरुणा १४४०
सोमस्येव जातवेदो २३१६
सोमो न वेधा ऋत० १३३
स्तविष्यामि त्वामहं ९०
स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा २१०९
स्तीर्णा अस्य संहतो ४५३
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने ६८५
स्तुवानमग्न आ वह ११८४
स्तृणानासो यतस्रुचो १९२२
स्तृणीत बर्हिरानुषग् १९१०
स्तोकानामिन्दुं प्रति २०२४
स्तोमेन हि दिवि देवासो २४०६
स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे ११८१
स्व आ दमे सुदुघा २४१८
स्व आ यस्तुभ्यं दम १९०
स्वः स्वाय धायसे ४३१
स्वग्नयो वो अग्निभिः ११३०
स्वग्नयो हि वार्यं ३५
स्वध्वरा करति जातवेदा १२०७
स्वना न यस्य भामासः १५०३
स्वयं यजस्व दिवि देव १५३२
स्वर्णं वस्तोरुषसा ११६२
स्वर्यन्तो नापेक्षन्त आ २२२०
स्वस्ति नो दिवो अग्ने १५२७
स्वाध्यो दिव आ सप्त २०२
स्वाध्यो३ वि दुरो देवयन्तो १९७८

स्वावृग् देवस्यामृतं १५५१
स्वाहाकृतान्या गहि १९३०
स्वाहाग्नये वरुणाय १९७३
स्वाहा यज्ञं कृणोतन १९१७
स्वाहा यज्ञं वरुणः २०४७
हरयो धूमकेतवो १३१३
हरिः सुपर्णो दिवम् २३४९
हविष्कृणुध्वमा गमद् १४२४
हविष्पान्तमजरं २३९७
हव्यवाळग्निरजरः ७९१
हस्ते दधानो नृम्णा १४६
हिरण्यकेशो रजसो २४४
हिरण्यदन्तं शुचिवर्णं० ७६९
हिरण्यपाणिं सवितारं २३६२
हिरण्यरूपः स हिरण्य २४३१
हुवे वः सुद्योत्मानं ४१६
हुवे वः सूनुं सहसो ९७९
हुवे वातस्वनं कविं १४६७
हूणीयमानो अप हि ७७४
हृदा पूतं मनसा २२८३
होताजनिष्ट चेतनः ४२५
होता देवो अमर्त्यः ५४३
होता निषत्तो मनोः १६०
होता यक्षत् तनूनपातम् २०८५; २०९६; २१३०
होता यक्षत् तनूनपात् २०४९
होता यक्षत् तिस्रो देवीः २०५६; २१३७
होता यक्षत् तिस्रो (। इन्द्रपत्नीः) २०९१
होता यक्षत् पेशस्वतीः २१०२
होता यक्षत् प्रचेतसा २१०१
होता यक्षत् त्वष्टारमचिष्टम् २१३८
होता यक्षत् त्वष्टारमिन्द्रं २०९२

होता यक्षत् समिधाग्निम् २०४८
होता यक्षत् समिधानं २०९५
होता यक्षत् समिधेन्द्रम् २०८४
होता यक्षत् सुपेशसा २१००
होता यक्षत् सुपेशसोषे २०५४
होता यक्षत् सुबर्हिषं २०९८
होता यक्षत् सुरेतसं २१०३; २०५७
होता यक्षत् स्वाहाकृतीः २१०५
होता यक्षदग्निं समिधा २१२९
होता यक्षदग्निं स्वाहा २०५९; २१४१
होता यक्षदग्निमीळ २१३२
होता यक्षदिडाभिरिन्द्रम् २०८६
होता यक्षदिडेडित २०५१
होता यक्षदिन्द्रं स्वाहा २०९४
होता यक्षदीडेन्यम् २०९७
होता यक्षदुषासानक्ता २१३५
होता यक्षदुषे इन्द्रस्य २०८९
होता यक्षदोजो न वीर्यं २०८८
होता यक्षद् दुर ऋष्वाः २१३४
होता यक्षद् दुरो दिशः २०५३
होता यक्षद् दै० २०५५; २०९०; २१३६
होता यक्षद् बर्हिः २१३३
होता यक्षद् बर्हिरूर्णम्रदा २०५२
होता यक्षद् बर्हिषीन्द्रं २०८७
होता यक्षद् वन. २०५८; २०९३; २१०४
होता यक्षद् वनस्पतिम् २१३९
होतारं त्वा वृणीमहे ८९३
होतारं विश्ववेदसं ९१
होतारं सप्त जुह्वो ११६
होता यक्षद् व्यचस्वतीः २०९९
होता यक्षन्नराशंसं २०५०; २१३१
होतारं चित्ररथम् १४८९
ह्वयाम्यग्निं प्रथमं २४४८

अग्न आयूंषि पवस २४८४
अग्निर्ऋषिः पवमानः २४८५
अग्ने पवस्व स्वपा २४८६

उभाभ्यां देव सवितः २४८९
त्रिभिष्ट्वं देव सवितः २४९०
पुनन्तु मां देवजनाः २४९१

यत्ते पवित्रमर्चिवदग्ने २४८८
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने २४८७

सोमसूक्तेषु पठिताः, सोममन्त्रसंग्रहे मुद्रिताश्च

अग्निमन्त्राः ।

(ऋ० ९।६६।१९-२१)

(शतं वैखानसाः । अग्निः पवमानः । गायत्री ।)

अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ २४८४

अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तमीमहे महागयम् ॥ २४८५

अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।
दधद् रयिं मयि पोषम् ॥ २४८६

(ऋ० ९।६७।२३-२७)

(पवित्र आङ्गिरसो वा वासिष्ठो वा उभौ वा । पवमानोऽग्निः । गायत्री, २४९१ अनुष्टुप् ।)

यत् ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनीहि नः ॥ २४८७

यत् ते पवित्रमर्चिवदग्ने तेन पुनीहि नः ।
ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥ २४८८

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ।
मां पुनीहि विश्वतः ॥ २४८९

त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः ।
अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ॥ २४९०

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मा ॥ २४९१

दैवत-संहितान्तर्गत-अग्निदेवतायाः

गुणबोधक-पदानां सूची।

अंशः त्वम् २,१,४; ३७२
अक्तः द्युभिः ६,४,६; ९७६। ६,५,६; ९८४
अक्तः १,१८९,७; ४६७
अक्षभिः शतं चक्षाणः १,१२८,३;२८१
अक्षितः ८,७२,१०; १४३३
अगृभीतशोचिः ८,२३,१; १२७०
अग्नयः [बहुवचनम्] १,१२७,५; २७६
अग्नयः अग्निभ्यः वरम् ७,१,४; ११०३
अग्निः...सामान्येन सर्वत्र निर्देशः।
अग्निः अन्यान् अग्नीन् अति अस्ति ७,१,१४; ११११३
अग्निः अग्निभिः सजोषा ७,३,१;११२४
अग्निः ह नाम धायि दन् अपस्तमः, यः भस्मना दता वना सं युवते १०,११५,२; १६६७
अग्नौ प्रविष्टः चरति अथर्व ४,३९, ९; २२८२
अगदः अयम् अथर्व०५,२९, ६--९; २३१०--२३१३
अग्रजः [त्वष्टा] ९,५,९; १९८९
अग्रयात्रा देवानाम् १०,७०,२;१९९३
अग्नियः ४,१६,४८; १०८९। १,१३, १०; १९१५
अङ्कूयन् ६,१५,१७; १०३९
अङ्गिराः १,३१,१७; ६६। १,७४,५; २११९। ४,३,१५; ६८०। ४,९,७; ७१८। ५,८,४; ८२४। ५,१०,७; ८४१। ५,११,६; ८४७। ५,२१,१; ८९५। ६,२,१०; ९६१। ६,१६,११; १०५१।८,६०,२;१३९०।८,७४,११; १४५२। ८, ८४, ४; १४५७। ८,१०२,१७; १४७९
अङ्गिरसः [देवताविशेषः] अथर्व० ३,२१,८; २३६२
अङ्गिरा ऋपिः १,३१,१; ५०
अङ्गिरा ऋपिः प्रथमः १,३१,१; ५०
अङ्गिरसां ज्येष्ठः १,१२७,२; २७३
अङ्गिरस्तमः १,३१,२; ५१। १,७५,२; २२५। ८, २३, १०; १२७९। ८,४३,१८;१३२७। ८,४४,८;१३५०
अच्छिद्रोतिः १,१४५,३; ३३५
अजः अथर्व० ४,१४,६; २२२१
अजरः १,५८,२; १११। १,५८,४; ११३।१,१२७,९;२८०।१,१४४,४; ३२९। १,१४६,२; ३३९। ५,४,२; ७९१। ५,६,४; ८०४। ५,७,४; ८१४। ६,२,९; ९६०। ६,४,३; ९७३। ६,५,७; ९८५। ६,१५,५; १०२७। ६,१६,४५; १०८६। ६,४८,३; १०९२। ७,१५,१३; ११८९। ८,२३,११; १२८०। ८,२३,२०; १२८९। १०,११५,४; १५६९। १०, ४६, ७; १६०७। ३,२६,२; १७२८। ६,८,५; १७८४। १०,८७,२१; १८४८। १०,८८,३; २३९९
अजरः जूर्यत्सु वनेषु ३,२३,१; ६२७
अजराः १,१२७,५; २७६
अजस्रः १०,६,२; १५२१। अथर्व० ७,७८,१; २१९८। १९,३,२;२२०६
अजिरः ७,११,२; ११६७। अथर्व० ३,४,३; २१६०
अजिरशोचिः ८,१९,१३; १२३६
अजुर्यः १,६७,१; १४४। २,८,२; ३९८। ३,७,४; ४९३। १०,८८,१३; २४०९
अजुर्याः [देवीर्द्वारः] २,३,५; १९४६
अज्ञन् मतीनां कृद्दरम् वा० य० २९,१; २१०६
अज्ञानः सप्त होतृभिः ३,१०,४; ५११
अतन्द्रः १,७२,७; २०१। ८,६०,१५; १४०३
अतन्द्रः दूतः ७,१०,५; ११६५
अतिथिः १,४४,४; ८९। १,५८,६; ११५। १,१२८,४; २८६। २,२,८; ३९२। २,४,१; ४१६। ५,१,८; ७६२।५,४,५;७९४।५,८,२;८२२।

६,४,२; ९७२ । ६,१५,१; १०२३ । ६,१५,४; १०, १०-२६ । ६,१५,६; १०२८ । ६, १६, ४२; १०८३ । ८,१०३,१०; १२६६ । ८,१०३,१२; १२६८ । ८, ४४, १; १३४३ । ८,७४,१; १४४२ । ८,७४,७; १४४८ । ८, ८४, १; १४५४ । १०, ९१, २; १६५२ । १०, १२२, १; १६७५ । ३,३,८; १७४९ । ३,२६,२; १७५४
अतिथि: प्रिय:- ६,२,७; ९५८
अतिथि: शिव:- ७,९,३; ११५७
अतिथि: जनानाम्- १०,१,५; १४८९ । ६,७,१; १७७३
अतिथि: मानुषाणाम्-१,१२७,८; २७९ ४,१,२०; ६१६ । ८,२३,१५; १२९४
अतिथि:, विशाम्- ३,२६,२; १७२८
अत्य: ३,७,९; ४९८
अत्रि: २,८,५; ४०१ ।
अथर्युः ७,१,१; ११००
अदब्ध: १,७६,२; २३० । १,१२८,१; २८३ । २,९,६; ४०८ । ५,१९,४; ८८९ । ८, ४४, २०; १३६२ । ६,७,७; १७७९ । ४,४,३; १८१५ । १०,८७,२४; १८५१
अदब्धव्रतप्रमति: २,९,१; ४०३
अदाभ्य: १,३१,१०; ५९ । ३,११,५; ५२२ । ७, १५, १५; ११९१ । १०,११,१; १५४० । १०, ११८, ६; १८५८ । ९,५,२; १९६५ । अथर्व० ३,२१,४; २३५८
अदिति: १,९४,१५; २७० । २,१,११; ३७९ । ७,९,३; ११५७ । ८,१९,१४; १२३७ । १०,११,१; १५४१
अदिति: विश्वेषां यज्ञियानाम्- ४,१,२०; ६४६
अदिते: गर्भ: ऋ. प्रैष० २; २१३०
अदृपित: ४,३,३; ६६८
अदृप्त: १,६९,३; १६६
अद्भुत: २,७,६; ४४६ । ५,१०,२; ८३६; ५,२३,२; ९०४ । ६,१५,२; १०२४ । ८,४३,२४; १३३३ । ६,८,३; १७८२ । १,१४२,३; १९२० ।
अद्भुतक्रतु: ८,२३,८; १२७८
अस्यमसद्मा ६,४,४; ९७४
अद्रुह्-अध्रुक् ३, २२, ४; ६२६ । ६,५,१; ९७९ । ६,११,२; १००१ । ६, १५, ७; १०२९ । ८, ४४, १०; १३५२
अद्रुह: [मरुत:] १,१९,३; २४४० ।
अद्रे: सूनु: १०,२०,७; १५७७
अद्रोघवाक् ३,५,१; ५७९
अद्वयन् (यन्तम् द्वि०) ३, २९, ५; ५६२
अद्वयाविन्-वी ३,२,१५; १७४१
अद्विषेण्य: १०,१२२,१; १६७५
अधिप: अथर्व० ६,११९,१; २३८४
अधिपति:। अथर्व० ३,२७,१; २१६१
अधिपति: वनस्पतीनाम् । अथर्व० ५,२४,२; २१६६
अध्यक्ष: धर्मणाम्-८,४३,२४; १३३३
अध्रिगु: ३,२१,४; ६२१ । ५,१०,१; ८३५ । ८,६०,१७; १४०५ ।
अध्वरश्री: १,४४,३; ८८
अध्वरस्य हृष्कर्ता १०,१४०,५; १६८८
अध्वरस्य जार: १०,७,५; १५३१
अध्वरस्य प्रणेता ३,२३,१; ६२७
अध्वरस्य राजा ४,३,१; [रुद्र:] (साम.) १,१,७,७
अध्वराणां अनीक: १०,२,६; १४९७
अध्वराणां केतु: ३,१०,४; ५१२
अध्वराणां गोपा १,१,८; ८
अध्वराणां चेतन: ३,३,८; १७४९
" पति: १,४४,९; ९४
" रथी: १,४४,२; ८७
" रथ्यम् ६,७,२; १७७४
" सम्राट् १,२७,१; ३८
" हस्कर्ता ४,७,३; ६९५
अध्वरीयसि २,१,२; ३७०
अध्वर्युः २,५,६; ४३० । ३,५,३; ४७३
अध्वर्युः त्वम् १,९४,६; २६१
अनड्वान् अथर्व० १२,२,४८; २२६१
अनभिम्लातवर्ण: २,३५,१३; २४३४
अनवद्य: १,३१,९; ५८
अनाधृष्ट: ७,१५,१४; ११९०
अनाधृष्टास: [मरुत:] १, १९, ४; २४४१
अनाधृष्य: अथर्व० ७,८४,१; १८६६
अनानत: ७,६,४; १८०६
अनिध्म: शुक्रेभि: शिक्वभि: दीदाय २,३५,४; २४२५
अनिमान: १,२७,११; ४८
अनिभृष्टतविषि: ५,७,७; ८१७
अनिवृत: ३,२९,६; ५६३
अनीकम् उत चारु २,३५,११; २४३२
अनुमाद्य: कृष्टीनाम् ७,६,१; १८०३
अनुपत्य: [मत्य:] ३,२६,१; १७५३
अनून: १,४६,१; ३३८ । २,१०,६; ४१४ । ४,२,१; ६५५ ।
अनूनवर्चा: १०,१४६,२; १६८५
अनेहा: ३,९,१; ५००
अन्तम: न: भव ५,२४,१; ९०७
अन्तम: स्तोतृभ्य: भव ३,१०,८; ५१६
अन्तर: १०,५३,१; १६१६
अन्तर्धि: देवानाम् अथर्व० १२,२,४४ २२५७
अन्ति चित् सन् ८,११,४; १२१७
अन्नम् अस्य घृतम् २,३५,११; २४३२
अन्नपति: अथर्व० १९,५५,५; २२७३
अन्नाद्य: अथर्व० १९,५५,५; २२७३
अन्नावृध् (धम् द्वि) १०,१,४; १४८८
आम्रियत ४,२,७; ६५३
अपराजित: वा० य० २८,२; २०८५
अपरीवृत: शिरिणायां चिदक्तुना- २,१०,३; ४११
अपस्तम: १०,११५,२; १६६७
अपाम् उपस्थे सीदत् १०, ४६, १; १६०१
" गर्भ: १, ७०, ३; १७६ । ३,१,१२-१३; ४५८-५९ । ३,५,३; ४७२

अपाम् गर्भ प्र० आ विवेश ७,९,३; ११५७

" नपात् १,१४३,१; ३१८। १०,८,५: १५३८

अपां नपात् [देवता] २,३५,१-१५; २४११-३६

अपां सधःस्थे-स्थः १०,४६,२; १६०२

अपाकः ६,१२,४; १००३। ६,१२,२; १००७

अपाकचक्षाः ८,७५,७; १३७९

अपाद् ४,१,११; ६३७

अपूर्व्यः ३,१३,५; ५७८

अप्तुरः ३,२७,११; ५४७

अप्य: १,१४५,५; ३३७

अप्रतिष्कुतः ३,२,१४; १७४०

अप्रमृष्यः २,३५,६; २४२७

अप्रयुच्छन् १,१४३,८; ३२५। ३,५,६; ४७५। १०,८८,१६; २४१२। अथर्व० २,६,३; २३२१

अप्रायुः दिवातरान् १,१२७,५; २७६

अप्रोषिवान् ८,६०,१९; १४०७

अप्सरसौ (सः)। अथर्व० ६,११८,१; २३८१

अप्सुजाः ८,४३,२८; १३३७

अप्सु श्रितः ३,९,४; ५०३

अप्सुषद् ३,३,४; १७४६। अथर्व० १२,२,४; २२३२

अभिद्युः ८,७५,६; १३७८

अभिमातिः जनानां १०,६९,५; १६२९

अभिमाति जित् अथ० २,६,३; २३२१

अभिशस्तिचातनः ३,३,६; १७४७

अभिशस्तिपा अथर्व० ४,३९,९; २२८२

अभिशस्तिपावा ७,११,३; ११६८

अभिशस्तिपावा यज्ञानाम् १, ७६, ३; २३१

अभिशोकः अथर्व० १,२५,३; २२७७

अभिश्रीः १,९८,१; १७२४

" अध्वराणाम् ८,४४,७; १३४९

अभिश्वसन् एति १,१४०,५; २९६

अभिष्टिः [इंद्रः] वा० य० २०,३८; २०१६

अमर्त्यः १,४४,१; ८६। १.४४,११; ९६। १,५८,३; ११२। १,७०,४; १७७। ३,१०,९; ५१७। ३,११,२; ५१९। ३,२४,२; ५२८। ३,२७,५-७; ५४१-४३। ४,१,१; ६३१। ४,८,१; ७०४। ५,१४,१-२; ८६०-६१। ५,१८,१-२; ८८१-८२। ६,३,६; ९३८। ६,१२,३; १००८। ६,१६,६; १०४७। ७,१,२३; ११२२। ७,१५,१०; ११८६। ८,११,५; १२१८। ८,१९,३; १२२६। ८,१९,२४; १२४७। ८,१०२,१७; १४७९। १०,२१,४; १५८४। १०,७९,१; १६३७। १०,१२२,३; १६७७। १०,१४०,४; १६८७। ३,२,११; १७३७। ६,९,४-७; १७९०-९३। १०,८७,२१; १८४८। १०,११८,६; १८५८। वा०य० २१,१५; २०४०। २८,३; २०८६। २८,१७; २०९८। अथर्व० ७,८४,१; १८६६

अमित्रदम्भनः ४,१५,४; ७५२

अमीवचातनः १,१२,७; १६। अथर्व० १,२८,१; २२९३

अमूरः १,१४१,१२; ३१६। ३,२५,३; ५३४। ३,१९,१; ६१०। ४,६,२; ६८३। ४,११,५; ७३२। ६,१५,१७; १०३९। ७,९,३; ११५७। ८,७४,७; १४४८। १०,४,४; १५०९। १०,४६,५; १६०५। ४,४,१२; १८२४। ऋ० प्रैप ४; २१३२

अमृक्तः ३,११,६; ५२३

अमृतः १,२६,९; ३६। १,४४,५; ९०। १,५८,१; ११०। १,६८,४; १५७। १,७७,१; २३४। २,१०,१-२; ४०९-१०। ३,१,१८; ४६४। ३,२९,५; ५६२। ३,२९,१३; ५७०। ३,१४,७; ५८७। ३,२०,२; ६१६। ४,२,१; ६४७। ४,२,९; ६५५। ४,३,३; ६६८। ४,११,५; ७३२। ५,१८,५; ८८५। ६,४,२; ९७२। ६,५,५; ९८३। ६,१५,६; १०२८। ६,१५,८; १०३०। ६,४८,१; १०९०। ७,४,४; ११३७। ७,१६,१; ११९२। ८,२३,१९; १२८८। ८,७१,११; १४१९। ८,७४,५; १४४६। १०,४५,७; १५९५। १०,९१,११; १६६१। ३,३,१; १७४२। ४,५,२; १७५९। ६,७,४; १७७६। १,१३,५; १९१०। १०,७०,११; २००१। अथर्व० १२,२,३३; २२४६

अमृतः वयोभिः १०,४५,८; १५९६

अमृतं म आसन् (आस्ये) ३,२६,७; १७५६

अमृतस्य केतुः ६,७,६; १७७८

" नाभिः ३,१७,४; ६०३

" रक्षिता ६,७,७; १७७९। ६,९,३; १७८९

अमृतानां प्रथमः १,२४,२; २७

अमृतानि सत्रा चक्राः त्रिश्वा १,७२,१; १९५

अमे देवान् धात् १,६७,३; १४६

अयोदंष्ट्रः १०,८७,२; १८२९

अरम् विश्वस्मै १,६६,५; १३८

अरंकृत्य १०,५१,५; १६१३

अरतिः १,१२८,६; २८८। ३,१७,४; ६२३। ४,१,१; ६३१। ४,२,१; ६४७। ७,१६,१; ११९२। ६,१५,४; १०२६। ८,१९,१; १२२४। ८,१९,२१; १२४४। १०,२,१; १४९९। १०,३,६; १५०४। १०,४५,७; १५९५। १०,४६,४; १६०४

अरतिः अक्तोः ६,३,५; ९६७

" दिवः इव २,२,२, ३८६।

" दिवस्पृथिव्योः २,२,३; ३८७। १०,३,७; १५०५। २,५,१; १७९४

" रोदस्यो... १,५९,२; १७१८

अरतिः विश्वेषां वसूनां १०,५८,७; ११६
अरपाः [वायुदेवता] ८,१८,९; २४५७
अरित्राः दमाम् १०,४६,७; १६०७
अरुषः ३,७,५; ४९४ । ६,२९,६; ५६३। ४,१५,६; ७५४। ५,१२,६; ८५३ । ६,३,६; ९६८। ६,४८,६; १०९५। १०,१,६; १४९०। ६,८,१; १७८०
अरुषः कृष्णासु ३,१५,३; ५९०
" वनेषु ५,१,५; ७५१
अरुषं भरिभ्रत् १०,४५,७; १५९५
अरुषस्तूपः ३,२९,३; ५६०
अर्कः त्रिधातुः ३,२६,७; १७५६
अर्चत्रूमासः १०,४६,७; १६०७
अर्चिः अथर्व० १,२५,२; २२७६
अर्चिषा असौ अस्यवै ५,१७,३; ८७८
अर्णवः ३,२२,२; ६२४। १०,११५,३; १६६८
अर्थं हि अस्य तरणिः ३,११,३; ५२०
अर्धि मह्ना देवस्यदेवस्य १०,१,५; १४८९
अर्यः ४,१,७; ६३३। ४,२,१२; ६५८। ७,८,१; ११४९ । १०,११५,५; १६७२ । १०,१९१,१; १७१६। ४,४,६; १८१८। २,३५,२; २४२३
अर्यः मनीषा १,७०,१; १७४
अर्यः विशाम् १०,२०,४; १५७४
अर्यमा ५,३,२; ७८०
अर्यमा त्वम् २,१,४, ३७२
अर्यमा त्वया सुदानुः १,१४१,९; ३१३
अर्वन् अर्वा ६,१२,६; १०११
अर्वतीः तमिद् गच्छन्ति १,१४५,३; १३५
अर्हन् १,९४,१; २५६ । १०,२,२; १४९३। २,३,१; १९४२
अवनः ८,७२,१०-१२; १४३३-३५।
अवमः, बह्वनाम् २,३५,१२; २४३३
अवर्ध्रः ६,१२,३; १००८
अवसि पुत्रो मातरा विचरन् उप-
दै० [अग्निः] ३१
१०,१४०,२; १६८५
अवातः ६,१६,२०; १०६१
अविः (अङ्गिरामाद्याम्) अथ० १२,२,१९; २२४५
अविता ३,१९,५; ६१४। १०,७,७; १५३३
" ग्रामेषु १,४४,१०; ९५
" यज्ञस्य प्र- ३,२१,३; ६२०
अविद्यत् अनुद्रे भपता धन्वना इत्- १०,११५,६, १६७१
अवृकः ६,१५,३; १०२५
अव्यथ्यः २,३५,५; २४२६
अशीर्षः ४,१,११; ६३७
अश्रितः ४,७,६; ६९८
अश्वः १०,१८८,१; १८६३
अश्वदावन् -वा ५,१८,३; ८८३
अश्विन् —श्वी ७,१,१२; ११११
अश्विना [देवता] ७,४१,१; २४३७
असन्दितः ४,४,२; १८१४
असितः अथ० ३,२७,१; २१६१
असिन्वन् जिह्वया वनानि अत्ति १०,७९,२; १६३८
असुं यन्, स्वम्- १०, १२, १; १५४९
असुरः ४,२,५; ६५१। ५,१२,१; ८४८। ५,१५,१; ८६६। ७,६,१; १८०३। ७,२,३; १९७६; अथर्व० ५,२७,१; २०७२। वा०य०२७,१२; २०६१
असुरहन् -हा ७,१३,१; १८१०
" विपश्चिताम्- ३,३,४; १७४५
अस्ता ४,४,१; १८१३
अस्तृतः ६,१६,२०; १०६१
अस्तृतयज्वा ८,४३,१; १३१०
अस्नाता १०,४,५, १५१०
अस्मयुः ६,४८,२; १०९१। ७,१५,८; ११८४ । ८, १९, ८; १२३१ । १,१४२,१०; १९२७
अस्निधः १,१३,९; १९१४। ५,५,८
अस्रेमा १०,८,२; १५३५
अस्रेमाणः ३,२९,१३; ५७०
अहिः १,७९,१; २४४
अहिंस्यमानः १,१४१,५; ३०९
अहोरात्रे विभ्रत् अथ० १२,२,४९; २२६२
अह्रयः ८,६०,१६; १४०४
अह्रयाणः ४,४,१४; १८२६
आकूतिः [देवता] अथ० १९,४,२-४; २२१०-२२१२
आघृणीवसुः ८,६०,२०; १४०८
आजुह्वानः ७, १६, ३; ११९४। १०, ११०, ३; २०१०। वा० य० २८,३; २०८६। २९,२८; २१२०
" [इन्द्रः] वा०य० २०,३८; २०१६
आततान यः भानुना पृथिवीम्, द्याम् रोदसी, अन्तरिक्षम् - १०, ८८, ३; २३९९
आतनिः २,१,१०; ३७८
आदित्यः [वरुणः] ४,१,२; २४४९
आदित्याः [देवता] अथ० ३,२७,१; २१६१
आदेवः मर्त्येषु - ४,१,१; ६३१
आध्रः २,१,९; ३७७
आध्रस्य चित् पिता १,३१,१४; ६३
आनवः ८,७४,४; १४४५
आपः [देवता] ४, ५८, १-११; १८९५-१९०५
आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् १,७३,८; २१२
आपिः, नेदिष्ठः १,३१,१६; ६५। ८,६०,१०; १३९८
आपृच्छ्यः १,६०,२; १२०
आप्यम्, नेदिष्ठम् ७,१५,१; ११७७
आयावः ८,२३,३; १२७२
आयजिः ८,२३,१७; १२८६
आयजिष्ठः २,९,६; ४०८। १०,२,१; १४९२

आयने कतिधाचित्
शयुः १,३१,२; ५१
आयुः १०, २०, ७; १५७७ । १०,४५,८; १५९६
आयुधाभिमानः ५,२,३; ७६९
आयो युवानः ४,१,११; ६३७
आविष्ट्यः, आसुआसु १,९५,५;१८७२
आपृणानः, अपः देवानाम् ४,१,२०; ६४६
आशवः उपयुज्यन्ते अस्य १,१४०,४; २९५
आशुः ४,७,४, ६९६
आशुहेमः २,३५,१; २४२२
आश्रण्वन् ४,३,३; ६६८
आसन् ६,७,१; १७७३
आसते देवासः अधिनाकस्य रोचने दिवि [मरुतः] १,१९,६; २४४३
आसुरः ३,२९,११; ५६८
आस्यं चक्रिरे, त्वां आदित्यासः २,१,१३; ३८१
आहावः, महाम् ६,७,२; १७७४
आहुतः २,८,२; ३९८ । ३,२४,३; ५२९ । ५,११,३; ८४४ । ५,२८,५; ९३७ । ६, १६, ३४, १०७५ । ८,१९,२५; १२४८ । ८,४३, १३; १३२२ । ८, ७५, ३; १३७५ । १०,११८,३; १८५५ । १०,११८,४; १८५६ । १,१६,३; १८८१ । अथ० १२,२,१८; २२४४
आहुतः घृतेभिः २,७,४; ४४४
आस्यानि सप्त तव अथ० ४,३९,१०; २२८३

इडः [देवता] वा०य० २०,३८,५८; २०१६,२०२८। २१,१४,३२;२०३९; २०५१। २७,१४; २०६३। २८,३,२६; २०८६,२०९७। २९,२८; २११०
ऋ० प्रैष ४, २१३१ अथर्व०५,२७,४; २०७५
इडा (इळा) [देवता] अथ० ५,२७,९; २०८०
इद्धः १,६६,९; १४१
इधानः १,७९,५; २४८
इधानः अग्निभिः विश्वेभिः ६,१०,२; ९९४ । ६,१२,६; १०११
इधानः देवेभिः ६,११,६; १००५
इध्मः [अग्निदेवता] १,१३,१; १९०६। १,१४२,१; १९१८ । १,१८८,१ १९३१ । २,३,१; १९४२ । ३,४,१; १९५३ । ५,५,१; १९६४ । ७,२,१; १९७४ । ९,५,१; १९८१ । १०,७०,१; १९९२ । १०,११०,१; २००३ । वा० य० २८,१; २०८४ । अथ० ५,१२,१; २००३
इनः १०,३,१; १४९९
इनस्य इनः २,१,३; ३७१
इन्दवः अथ० ७,१०९,६; २३७०
इन्दुः अन्धस्य १०,११५,३; १६६८
इन्दुः ९,५,९;१९८९
इन्द्रः ९,५,७,९; ९८७,९८९; अथ० १२,२,७; २२६०; वा० य० २०,३६, ४०-४६; २०१४; २०१८-२०२४ । २८,१-७,९-११; २०८४-९० । २०९२-९४ । २८,२४-३४; २०९५-२१०६। अथ०१९,५५,६; २२७४ । १,७,३; ४-७,२२८६,२२८७-२२९०
इन्द्रः [देवता] १,१४२,१२-१३; १९२९-३० । ७,४१,१; १४३७ । अथ० ५,२९,१०; २३१४। वा० य० २०,५६-६६; २०२६--२०३६ । अथ० १,७,३; २२०६ । ३,२१,८; २३६१
इन्द्रः दाशुषे मर्त्याय ५,३,१; ७७९
इन्द्रः त्वम् २,१,३; ३७१
इन्धानः १,१४३,७; ३२४
इरज्यन् जन्तुभिः १०,१४०,४; १६८७
इर्यः ७,१३,३; १८११
इळः [अग्निदेवता]१,१३,४; १९०९ । १, १४२, ४; १९२१। १, १८८, ३; १९३३ । २,३,३; १९४४ । ३,४,३, १९५५ । ५,५,३; १९६६ । ७,२,३, १९७६ । ९,५,३; १९८३ । १०,७०,३; १९९४ । १०,११०,३; २००५। अथ० ५,१२,३; २००५
इळस्पदे इषयन् १०,९१,१; १६५१
इळस्पदे न्यसीदः ६,१,२; ९४०
इळा [देवता] पश्य ' देव्यः तिस्रः ' १,१४२,९; १९२६
इळा त्वं शतं हिमा २,१,११; ३७९
इळायास्पुत्रः ३,२९,३; ५६०
इषःसहस्त्रिणीःदधत् १,१८८,२;१९३२
इषयन् ६,१,२,८; ९४०,९४६
इषितः १०,११०,३; २०१० । ३,४,३; १९५५
इषितः वा० य० २९,२८,३४ २११०,२११६
इषितः देवेभिः ३,३,२; १७४३
इषिरः, यज्ञे ३,२,१४; १७४०
इष्टयः तस्मिन् सन्ति१,१४५,१; ३३३
इष्टिः १,१४३,८; ३२५ । ६,८,७; १७८६
ईंखयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमर्णवम्- [मरुतः] १,१९,७; २४४४
ईडानः अथ० ५,२,७; २०७५
ईडितः वा० य० २८,२६; २०९७
ईडितः, देवैः [इन्द्रः] वा० य० २०,३८; २०१६ । २८,३; २०८०
ईडेन्यः वा० य० २८,२६; २०९७
ईड्यः १,१,२; २ । १,१२,३; १२ । १,७५,४; २२७ । २,१,४; ३७२ । ३,५,६,९; ४७५, ४७८ । ३,९,८; ५०७ । ३,१७,४; ५४० । ३,२९,७; ५६४ । ३,१७,४; ६०३ । ४,७,२; ६९४ । ६,१,२; ९४० । ६,१३,१; १०१२ । ६,१५,१८; १०२४,१०३० । ७,१५,१०; ११८६ । ८,११,१; १२१४ । ८,४४,७; १३४९ ।

८,७४,५; १४४६ । १०,३,४; १५०२ । ३,२६,२, १७२८ । १,१८८,३; १९३३ । १०,११०,२; २०१० । वा० य० २१,१४; २०३१। २८, २६; २०९७ । २९, २८; २१२० ।
ईड्यः अध्वरेषु – ४,७,१; ६९३ ५,२२,१; ८९१। ८,११,१०; १२२३। ८,६०,३; १३९१
ईड्यः दिवेदिवे ३,२९,२; ५५९
ईड्यः विक्षु-- ६,२,७; ९५८
ईळितः १,१३९,७; २९१ । १,१३,४; १९०९ । १,१४२,४; १९२१ । ५,५,३; १९६६ । ऋ० प्रैष ४, ११३२ ।
ईळेन्यः १,७९,५; २४८। ३,२७,१३; ५४९ । ५,१४,५; ८९४ । ७,९,४; ११५८ । १०,४६,९; १६०९। ७,२,३; १९७७ । १०, ११८, ३; १८५५ । ९,५,३; १९८३ ।
ईवान् ४,१५,५;७५३। ४,४,६;१८१८
ईशानः ७,१५,११; ११८७। ७,६,४; १८०६
ईशिषे वार्यस्य दात्रस्य- ८,४४,१८; १३६०
ईशे क्षत्रियस्य बृहतः-- ४,१२,३; ७३६
ईशे देववीतेः विश्वस्य-- १०,६,३; १५२२
ईशे वाजस्य रायश्च, परमस्य ४,१२,३; ७३६
ईशे सुवीर्यस्य सौभगस्य रायः स्वपत्यस्य गोमतः, वृत्रहथानाम्- ३,१६,१; ५९४
उक्थी वा० य० २८,३३; २१०४
उक्थ्यः १,७९,१२, २५५ । ३,१०,६ ५१४ । ३,२,१३; १७३९ । ३,२,१५; १७४१ । ३,२६,२, १७५४ । अथ० ११,२,१०; २२३६
उक्थ्यः देवानाम्-- ५,२६,६; ९२५
उक्षत्-न् १,१२२,४; १६७८
उक्षमाणः २,२,४; ३८८
उक्षाः १,१४६,२; ३३९ । ३,७,६; ४९५
उक्षान्नः ८,४३,११; १३२०; अथ० ३,२१,६; २३६०
उक्षितः १,३६,१९; ८४
उक्षिते [उषासानक्ते] २,३,६; १९४७
उग्रः १,१२७,११; २८२ । ४,२,१८; ६६४ अथ० १९,६५,१; २३४९ ७,१०९, (११४)१; २३६५
उग्राः [मरुतः] १,१९,४; २४४१
उग्रजित् अथ० ६,११८,१; २३८१
उग्रंपश्यः अथ० ७,१०९,६; २३७० । ६,११८,१,२; २३८१-८२
उत्पतन् , दिवम्- अथ० १९,६५,१; २३४९
उद्भिद् वा० य० १८,२५; २०९६
उपमातिः ८,६०,११; १३९९
उपवक्ता ४,९,५; ७१६
उपसद्यः ७,१५,१; ११७७
उपस्थसत् १०,१५६,५; १७०७
उपाके [उषासानक्ते] ६,१४२,७; १९२४ । ३,४,६; १९५८
उभयाविन्-वी १०,८७,३; १८३१
उराणः ४,६,३-४; ६८४-८५ ४,७,८; ७००
उरुकृत् ८,७५,११; १३८३
उरुगायः ३,६,४; ४८३
उरुज्रयाः ५,८,६; ८२६
उरुप्रथाः [इन्द्रः] वा० य० २०,३९ २०१७
उर्विया २,३५,८; २४२९
उशन् २,३६,४ । २,३७,६ । १०,१६,१२; १५६८ । १०,९१,१३; १६६३ । १०,७०,९; २००५
उशन् समानान्-- ६,४,१; ९७१
उशती १०,७०,५-६; २००१-२
उशिक् १,६०,४; १२२ । ३,११,२; ५१९ । ३,२७,१०; ५४६ । १०,४५,७; १५९५ । ३,२६,४; १७३० । ३,३,७-८; १७४८-१७४९
उषर्बुधः १,१२७,१०; २८१। ४,६,८; ७८९। ६,१५,१; १०२३। ३,२,१४; १७४०
उषर्भुत् १,६५,९; १३२ । ६,४,२; ९७२
उषसः चेकितानः ३,५,१; ४७०
उषसः महान् १,९४,५; २६०
उषसां अग्रे आ अशोचि ७,८,१; ११४९
उषसां अग्रे भाति ७,९,३; ११५७
उषसां इधानः १०,४५,५; १५९३
उषसां जारः ७,९,१; ११५५
उषासानक्ता [देवते] १, १३, ७; १९१२ । १, १४२, ७; १९२४ । १,१८८,६; १९३६ । २,३,६; १९४७। ३,४,६; १९५८। ५,५,६; १९६९ । ७,२,६; १९७९ । ९,५,६; १९८६ । १०,७०,६; १९९७ । १०,११०,६; २००८ । अथ० ५,२७,८; २०७९ । ५,१२,६; २००८
उषासानक्ते [देवते] वा०य० २०,४१; २०१९ । २०, ६२; २०३१ । २१, १७, ३५; २०४२, २०५४ । २७,१७; २०६६। २८,६,२९; २०८०, २१००। २९,६,३१; २११२,२१२३ । ऋ० प्रैष ७; २१३५
ऊर्जः पुत्रः १,९६,३; १८८१
ऊर्जयन् २,३५,७; २४२८
ऊर्जसनः ६,४,४; ९७४
ऊर्जो नपात् १,५८,८; ११७। २,६,२; ४३४। ३,२७,१२; ५४८। ५,१७,५; ८८०। ६,६,२५; १०६६। ६,४८,२; १०९१। ७,१६,१; ११९२। ७,१७,६; १२०९ । ८, १९, ४; १२७७ ।

८,४४,१३; १३५५। ८,६०,१; १३९०। ८,७१,३,९; १४११,१४१७। ८,८४,४; १४५७। १०,२०,१०; १५८०। १०,११५,८; १६७३। १०,१४०,३; १६८६
ऊर्जांपतिः १,२६,१; २८। ८,१९,७; १२३०। ८,२३,१२; १२८१। ८,६,९; १३९७
ऊर्जाहुतिः ८,३९,४; १३०३
ऊर्ध्वः १०,७०,१; १९९७
ऊर्ध्वः जिह्वसाम्- २,३५,९; २४३०
ऊर्ध्व शोचिः ६,१५,२; १०२४
ऊर्णम्रदाः [बर्हिः] ५,५,४; १९६७
ऋग्मियः ८,२३,३; १२७२। ८,३९,१; १३००। ६,८,४; १७८३
ऋजूयमानः पृथिवीम् उत द्याम् १०,८८,९; २४०५
ऋञ्जन् १,९५,७; १८७४
ऋञ्जगानः १,९६,३; १८८१
ऋतः १,६५,३; १२६। १,६८,४; १५७। १,६९,५; १५८। ५,१५,२; ८६७। ८,६०,५; १३९३ १०,११०,११; २०१८
ऋतम् ३,७,८; ४९७। ४,२,१४; ६६०। ७,७,६; ११४६
ऋतस्य गोपाः १०,११८,७; १८५९
ऋतस्य चक्षुः १०,८,५; १५३८
ऋतस्य दीदिविः १,१,८; ८
ऋतस्य धारा १,६७,७; १५०
ऋतस्य पतिः अथ० ६,३६,१; २१८१
ऋतस्य पदम् १०,५,२; १५१४
ऋतस्य माता [उषासानक्ते] १,१४२,७; १९२४। ५,५,६; १९६९
ऋतस्य योना गर्भे सुजातः १,६५,४; १२७
ऋतस्य वृषा ५,१२,१; ८४८
ऋते आजातः ६,७०,१; १७७३
ऋतचित् १,१४५,५; ३३७। ४,३,४; ६६९। ५,३,९; ७८६
ऋतजातः १,३६,१९; ८४। १,१४४,७; ३३२। १,१८९,६; ३६६। ३,६,१०; ४८९। ३,२०,२१; ६१५। ६,१३,३; १०१४
ऋतप्रजातः १,६५,१०; १३३
ऋतप्रवीतः १,७०,७; १८०
ऋतावान्-वा १,७७,१; २,५; २३४-३५,२३८। ३,२०,४; ६१७। ४,२,१; ६४७। ४,६,५; ६८६। ४,७,३,७; ६९५,६९९। ४,१०,७; ७२६। ५,१,६; ७६०। ५,२५,१; ९११। ६,१२,१; १००६। ६,१५,१३; १०३५। ७,१,१९ ११११। ७,३,१; ११२४। ७,७,४; ११४५। ८,१०३,८; १३६४। ८,१३,१९; १२७८। ८,७५,३; १३७५। १०,२,२; १४९३। १०,६,२; १५२१। १०,१४०,६; १६८९। ३,२,१३; १७३९। २,३५,८; २४२९
ऋतावान्--वा अथ० ६,३६,१;२१८१
ऋतावान् [वरुणः] ४,१,२;२४४९
ऋतावृध ३, २, १; १७२७। १,१४२,६; १९२३
ऋतुपतिः १०,२,१; १४९२
ऋतुपाः ३,२०,४; ६१७
ऋतुपाः ऋतूनाम् ५,१२,३; ८५०
ऋत्विक् १,१,१; १। १,४४,११; ९६। १,४५,७; १०६। २,५,७; ४३१। ३,१०,२; ५१०। ५,२२,२; ९००। ५,२६,७; ९२६। ८,४४,६; १३४८। १०,७,५; १५३१। १०,२१,७; १५८७
ऋत्वियः ३,२९,१०; ५६७
ऋत्वियम् तव २,१,२; ३७०
ऋधद्वारः ६,३,२; ९६४
ऋन्धन् १०,११०,२; २००९
ऋभुः ३,५,६; ४७५। ५,७,७; ८१७
ऋभ्वा १०,२०,५; १५७५। १०,६९,७; १६३१
ऋषभः वा० य० ११,३८; २०५७
ऋषिः ३,२१,३; ६२०। ६,१४,२; १०१९। ऋ० ९,६६,२०; साम० २,७,१,११
ऋषिकृत् १,३१,१६; ६५
ऋषीणां पुत्रः अथ० ४,३९,९; २२८२
ऋषूणां पुत्रः ५,२५,१; ९११
ऋष्वः १,१४६,२; ३३९। ३,५,७; ४७६। ४,२,२; ६४८
एकः १०,१,५; १५१३। १०,९१,३; १६५३। ६,९,५; १७९१। अथ० ६,३६,३; २१८३
एम अस्य तिग्मं चित् ६,३,४; ९६६
एम ते कृष्णम् १,५८,४; ११३। ४,७,९; ७०१।
एरयामः त्वम् शरीरे मांसं असुम्- अथर्व० ५,२९,५; २३०९
ओजसा विरुक्मता पुरुचित् दीधानः १,१२७,३; २७४
ओजसा स्थिरा अन्नानि निरिणाति १,१२७,४; २७५
ओजायमानः तन्वश्च शुम्भते १,१४०,६; २९७
ओजिष्ठः चर्षणीसहाम् वा० य० १८,१; २०८४
ओषधीः विश्वा आविवेश १,९८,१; १७२५
ओषधीभिः उक्षितः ५,८,७; ८२७
ओषधीनां गर्भः ३,१,१३; ४५९
ओषधीषु विभृतः १०,१,२; १४८६
औपसः अग्निः [देवता] १,९५,(१-११); १८६८-७८
ककुत् ८,४४,१६; १३५८
ककुद्मान् १०,८,२; १५३५
कण्वतमः १०,११५,५; १६७०
कण्वसखा १०,११५,५; १६७०
कनिक्रदत् १,१२८,३; २८५। ९,५,१; १९८६

कम् ८,४४,२४; १३६६
कपिः अथ० ६,४९,१; २३३७
कविः १, ११, ६-७; १५-१६ । १,३१,२; ५१। १,७६,५; २३३ । १,७९,५; २४८। १,१२८,८, २९०। २,१,१३; ३८१ । २,६,७; ४३९ । ३, २८,४; ५५५ । ३, २९, ५,११; ५६२,५६९ । ३, १९, १; ६१०। ३,२३,१; ६२७ । ४,२,१२; ६५८। ४,२,२०; ६६६। ४,३,१६; ६८१। ४, १५, ३; ७५१ । ५,१,६,१२; ७६०,७६६। ५,४,३; ७९२। ५,११,३ ८४४। ५,१४,५; ८६४। ५,१५,१; ८६६। ५,२१,३; ८९७। ५,२६,३; ९२२ । ६,१,८; ९४६ । ६,१५,७; १०२९। ६,१५,११; १०३३। ७,४,४; ११३७। ७,९,३; ११५७। ७,१५,२; ११७८। ८,३९,१,९; १३००,१३०८। ८,४४,१२,२१; २६,३०; १३५४, १३६३, १३६८,१३७२ । ८,७५,४; १३७६। ८, ६०, ३, ५; १३९१, १३९३ । ८,१०२,१,५; १७-१८; १४६३-१४६७, १४७९-८० । १०, २०, ४; १५७४ । १०,१४,१; १६८४। ३,२,७,१०; १७३३,१७३६। ३, ३, ४; १७४४ । ६, ७, १, ७; १७७३,१७७९। ७,६,२; १८०४। १०,८७,२१; १८४८। १,९५,४,८; १८७१, १८७५ । १, १३, २, ८; १९०७, १९१३ । १, १४२, ८; १९२५ । १, १८८, १; १९३१। १०, ११०, १, २००८। ५, ५, २, १९६५। १०,८८,१४; २४१०।
कविः वा० य० २८, ३४; २१०५। २९,२५; २११७। अथ० १९,३,४; २२०८
कविः काव्यस्य १०,९१,३; १६५३।
कविक्रतुः १,१,२; २ । ३,२७,१२; ५४८। ३,१४,७; ५८७। ५,११,४; ८४५ । ६, १६, १३; १०६४ । ८,४४,७; १३४९। ३,२,४; १७३०
कवितमः ३,१४,१; ५८१। ७,९,१; ११५५
कविप्रशस्तः ५,१,८; ७६२
कविशस्तः ३,११,४; ६२१। ३,२९,७; ५६४
कवीनां पदवीः ३,५,१; ४७०
कामः अथ० ३,२१,४; २३५८
कामः भूतस्य भव्यस्य अथ० ६,३६,३ २२८३
काम्यः यमस्य १०,२१,५; १५८५
कारू [दैव्यौ होतारौ] १०,११०,७; २००९। ७,२,७; १८१०
कीलालपे (चतु०) १०,९१,१४; १६६४
कृचिद्‌र्थी ४,७,६; ६९८
क्रव्यः ३,२,८; ९५९
कृपनीळ १०,२०,३; १५७३
कृष्ण-अध्वा २,४,६; ४२१। ६,१०,४; ९९६
कृष्णजंहस् (हाः) १,१४१,७; ३११
कृष्णपविः ७,८,२; ११५०
कृष्णयामः ६,६,१; ९८६
कृष्णवर्तनिः अथ० ८, २३, १९; १२८८। अथ० १,२८,२; २२९४
कृष्टीनां पतिः ७,५,५; १७९८
केतुः ४,७,४; ६९६। ७,६,२; १८०४
केतुः दैव्यः १,२७,१२; ४९
केतुः अध्वराणाम् ३,१०,४; ५१२
केतुः अमृतस्य ६,७,६; १७७८
केतुः उषसाम् अह्नाम् ७,५,५; १८९८
केतुः यज्ञस्य १, १२७, ६; २७७ । ५,११,२; ८४२। ६ ७,९; १७७४
केतुः यज्ञानाम् ३,३,३; १७४४
केतुः विदथस्य १,६०,१; ११९
केतुः विश्वस्य १०,४५,६; १५९४
केतुना बृहता प्रयाति १०,८,१; १५३४
केवलः १,१३,१०; १९१५
केशिनः [देवता] १,१६४,४४; २४५६
क्रतुः १,६७,२; १४५। १,७७,३; २३६। ६,९,५; १७९१
क्रतुः एकः ६,९,५; १७९१
क्रतुः देवानाम् ३,११,६; ५२३
क्रतुः द्युम्नितमः ते १,१२७,९; २८०
क्रतुविद् १०,२,५; १४९६
क्त्वा चेतिष्ठः विशाम् १,६५,९; १३१
क्रव्यवाहनः १०,१६,११; १५६७
क्रव्याद् अथर्व० १२, २, ३४-३९; २२४७-५२
क्रव्यादः-न् १०,१६,९,१०; १५६५-६६ अथ० १२,२,९ १०; २२३५-३६ । ३, २१, ८-९; २३६२-६३ ।
क्राणा १,५८,३; ११२। ५,७,८; ८१८
क्षत्रः वा० य० २८,३४; २१०५
क्षत्रभृत् अथ० ७,८४,१; १८६६
क्षत्राणि धारयन् अथ० ७,७८,२; २१९९
क्षपावान् १,७०,५; १७८। ७,१०,५; ११६५ । ८,११,२; १४१०
क्षयः दिवि ३,२,१३; १७३९
क्षयत् ३,२५,३; ५३४
क्षयत् महः राधसः १०, १४०, ५; १६८८
क्षेमः १०,२०,६; १५७६
क्षेम्यः अथ० १२,२,४९; २२६२
क्षोदः १,६५,६; १२९
क्षाम् जातस्य च जायमानस्य च १,९६,७; १८८५
गणश्रीः ८,२३,४; १२७३
गर्भः ६,१५,१; १०२३ । १०,८,२; १५३५ । १०,४६,५; १६०५
गर्भः अदितेः ऋ० प्रैष २; २१३०
गर्भः अपसां बह्वीनाम् १, ९५, ४; १८७१
गर्भः अपाम् १,७०,३; १७६
गर्भः चरथाम् १,७०,३; १७६
गर्भः भुवनस्य १०,४५,१; १५९४
गर्भः वनानाम् १,७०,३; १७६
गर्भः स्थाताम् १,७०,३; १७६
गातुः १०,२०,४; १५७४
गातुवित्तमः ८,१०३,१; १२५७

गायत्रवेपस्-पाः [इन्द्रः] १,१४२,१२; १९२०

गार्हपत्यः अथर्व० १२, २, ३४, ४४; २२४७, २२५७। ६,१२१,२; २३८८

गावः [देवता] ४, ५८, (१-११); १८९५-१९०५

गिर्वणाः (णस्) २,६,२; ४३५

गुहमानः ४,१,११; ६३७

गुहा चतन् १,६५,१; १२४। १०,४६,२; १६०२

गुहा चरन् ३,१,९; ४५५

गुहा निषीदन् १, ६७, ३; १४६

गुहा भवन् १,६७,७; १५०

गुहा सन् १,१४१,३; ३०७। ३,५,१०; ४७९। ५,८,३; ८२३

गुहा हितः ४,७,६; ६९८। ५,११,६; ८४७

गृहसः ३,१, २; ४४८। ३, १९, १; ६१०। ७,४,२; ११३५। ८,५,२; १७१९

गृध्नुः १,७०,११; १८४

गृहपतिः १,१२,६; १५। १,३६,५; ७२। १,६०,४; १२२। २,१,२; ३७०। ४,९,४; ७१५। ४,११,५; ७२२। ५,८,१-२; ८२१-२२। ६, १५, १३, १९; १०३५, १०४१। ६,१६,४२; १०८३। ७,१,१; ११००। ७,१५,२; ११७८। ७,१६,५; ११९६। ८,६०,१९; १४०७। ८, १०२, १; १४६३। १०, १२२, १; १६७५। १०,११८,६; १८५८। वा० य० २८,३४; २१०५; अथ०१९,५५,३-४; २१७१-७२

गृहपतिः मानुषाम् विश्वासां विशाम् ६,४८,८; १०९७

गोत्रभिद् [इन्द्रः] वा० य० २०,३८; २०१६

गोपाः २,९,६; ४०८। ३, १५, २; ५८९। १०,७,७; १५३३। १०,८,५; १५३८। १०,६९,५; १६२९। ६,७,७; १७७९। ९,५,९; १९८९

गोपाः अध्वराणाम् १,१,८; ८

गोपाः ऋतस्य १०,११८,७; १८५९

गोपाः जनस्य ५,११,१; ८४२

गोपाः भुवनस्य ऋ० प्रैष २; ११३०

गोपाः विशाम् १,९६,४; १८८१

गोपाः सतश्च भवतश्च भूरेः १,९६,७; १८८७

गौः गावः [देवता] 'गावः' (पश्य)।

ग्राः उत अध्वरे ४,९,४; ७१५

घर्मः [देवता] १,११२,१; १८६७

घर्मः अजस्रः ३,२६,७; १७५६

अथ० ६,३६,१; २१८१

घृणिः ६,१६,३८; १०७९

घृणीवान् १०,१७६,३; १७०९

घृतम् [देवता] ४, ५८, (१-११); १८९५-१९०५

घृतम् अस्य अन्नम् १०,६९,२; १६२६

घृतम् (अस्य) चक्षुः ३,२६,७; १७५६

घृतम् (अस्य) मेदनम् १०, ६९, २; १६२६

घृतम् (अस्य) वर्धनम् १०, ६९, २; १६२६

घृतकेशः ८,६०,२; १३९०

घृतनिर्णिक् ३,२७,५; ५४१। ३,१७,१; ६००। १०, १२२, २; १६७६। २,३५,४; २४२५

घृतपदी [सरस्वती] १०,७०,८; २००४

घृतपृष्ठः ५,४,३; ७९२। ५,१४,५; ८६४। १०,१२२,४; १६७८

घृतपृष्ठम् [बर्हिः] ७,२,४; १९७७

घृतप्रतीकः १, १४३, ७; ३२४। ३,१,१८; ४६४। ५,११,१; ८४२। १०,२१,७; १५८७

घृतप्रसत्तः ५,११,१; ८४२

घृतयोनिः ५,८,६; ८२६

घृतश्रीः १,१२८,४; २८६। ५,८,३; ८२३। वा०य० २८,९; २०९०

घृतस्नुः ५,२६,२; ९११। १०,१२२,५; १६८०

घृतान्नः ७,३,१; ११२४

घृताहवनः १,१२,५; १४। १,४५,५; १०४। ८,७४,५; १४४६

घृताहुतः अथ० ४,२३,३; २३३१

घृष्विः ४,२,१३ ६५९

घोरः ४,६,६; ६८७

घोरवर्पसः [मरुतः] १,१९,५; २४४१

घ्नन् द्विषः अप ८,४३,२३; १३३१

चकानः। ५,३,१०; ७८७

चकानः ऋतस्य संदृशः- ३,५,२;४७१

चक्राणः विश्वा अमृतानि सत्रा- १,१७२,१; १९५

चक्रिः ३,१६,४; ५९७

चक्षणिः ६,४,२; ९७२

चक्षुः देवानां उत मानुषाणाम्- अथ० ४,१४,५; २२११

चतुरक्षः १,३१,१३; ६२

चनोहितः ३,११,२; ५१९। ३,२६,१-७; १७२८-१७३३

चन्द्रः ५,१०,४; ८३८। ६,६,७; ९९२। ३,३,५; १७४६। [देवता] अथ० ३,३१,६; २३४४

चन्द्ररथः १,१४१,१२; ३१३। ३,३,५; १७४६

चन्द्री वा० य० २०,३७; २०१५

चरथां गर्भः १,७०,३; १७६

चरिष्णु धूमः ८,२३,१; १२७०

चर्षणिप्राः ४,२,१३; ६५९

चर्षणीधृत्--तः [वरुणः] ४,१,२; २४४९

चर्षणीनां सम्राट् ३,१०,१; ५०९

चष्टे अभि एकः विश्वं शचीभिः- [सूर्य देवता] १,१६४,४४; २४५६

चारुः १,९४,१३; २६८। १०,१,१; १४८६। १०,२१,७; १५८७। १,९५,५; १८७२। साम० १,१,७,३

चारुतमः ५,१,९; ७६३
चारुप्रतीकः २,८,२; ३९८
चिकित् १०,३,१; १४९९
चिकितानः ३,१८,२; ६०६
चिकितुः ८,५६,५; १४५५
चिकित्रः १०,९१,४-५; १६५४-५५
चिकित्वान् १,६८,६; १५९ । १,७१,७; १९१ । १,७७,५; २३८ । १,१४५,१; ३३३ । २,६,८; ४४० । ३,७,३,९; ४९१,४९८ । ३,२५,१; ५३२ । ३,२९,८; ५६५ । ३,२९,१६; ५७३ । ३,१७,२; ६०१ । ३,१७,५; ६०४ । ४,३,८; ६७३ । ४,७,५; ६९७ । ४,८,४; ७०७ । ५,२,५,७ ७७१,७७३ । ५,३,७; ७८४ । ५,१२,२; ८४९ । ५,२२,३; ९०१ । ६,५,३; ९८१ । ८,४४,९; १३५१ । १०,४,४; १५०९ । १०,१२,२; १५५० । ४,५,१२; १७६९ । १०,११०,१; २००८ । वा० य० २९,२५; २११७
चिकित्वान् परुषः— १,५३,१; १६१६
चित्तस्य माता [आकूति देवता] अथ० १९,४,२; २२१०
चित्तिः १,६७,१०; १५३
चित्रः १,९४, ५; २६० । २,८,४; ४०० । ३,७,९; ४९८ । ४,७,६; ६९८ । ६,४,६; ९७६ । ६,६,७; ९९२ । ६,४८,९; १०९८ । ७,३,६; ११२९ । १०,१,२; १४८६ । १०,२,६; १४९७ । ३,२,१५; १७४१ ।
चित्रः वनेषु ४,७,१; ७९३
चित्रक्षत्रः ६,६,७; ९९२
चित्रध्रजतिः ६,३,५; ९६७
चित्रभानुः १,२७,६; ४३ । २,१०,२; ४१० । ५,२६,२; ९११ । ७,९,३; ११५७ । ७, १२, १; ११७१ । ८, ४४, ६; १३४८ । १०, ५१, ३; १६१२ । १०,६९,११; १६३५
चित्रमहस्-हाः १०,१२२,१; १६७५ ।
चित्ररथः १०,१,५, १४८९
चित्रराधस्-धाः ८,११,९, १२२२
चित्रयामः ३,२,१३, १७३९
चित्रशोचिः ५,१७,२; ८७७ । ६,१०,३: ९९५ । ८,१९,२: १२२५
चित्रश्रवस्तमः १,१,५; ५ । १,४५,६: १०५
चित्रा १.६६,१; १३४
चेकितानः ३,२९,७; ५७२
चेतनः २,५,१: ४२५
चेतनः अध्वराणाम् ३.३,८: १७५९
चेतिष्ठः १,६५,९; १२० । ७,१६,१; ११९२ । १०,२१,५; १५८७ ।
वा० य० २७,१५; २०६४
चेत्यः ६,१,५; ९४३
चोदः १,१४३,६; ३२३
चोदिष्ठः ८,१०२,३; १४६५
च्यवनः १०,६९,५-६; १६२९-३०
जज्ञाणाभवन् अर्चिषा ८,४३,८; १३१७
जनयन् भुवना ७,५,७; १८००
जनयोपनः अथ० १२,२,१५; २२४१
जनानां वसतिः ५,२,६; ७७२
जनिता रोदस्योः १,९६,४; १८८२
जनिता वसूनाम् १,७६,४; २३२
जनित्वम् (अग्निः एव) १,६६,८; १४१
जन्यः १०,९१,२; १६५२
जनिमा अग्न अश्वस्य स्वर् च २,३५,६; २४२७
जयन् १०, ४६,५; १६०५
जरद्विट् ५,८,२; ८२२
जरमाणः १०,११८,५; १८५७
जरमाणः जागृवद्भिः १०, ९१, १; १६५१
जरयन् अरिम् २,८,२; ३९८
जराबोधः १,२७,१०; ४७
जरिता ३,१५,५; ५९२ । ८,६०,१९; १४०७
जर्भुराणः तन्वा २,१०,५; ४१३
जर्हृषाणः १०,१६,७: १५६३
जविष्ठः मनः -(नः) ६,९,५; १०९१
जागृविः १,३१,९; ५८ । ३,२४,१; ५२९ । ५,११,१; ८४० । ६,१५,८; १०३० । २,२,१२; १७३८ । ३,३,७; १७४८ । ३,२६,३; १७५५
जातः १,६६,८; १४१ । १८,१,२-३; १४८६-८७ । १०, ४६, १, ३; १६०१, १६०३
जातः अथर्वणा १०,२१,५; १५८५
जातः पृथिव्या नाभौ इळायाः पदे १०,१,६; १४९०
जातः शीर्षतः १०,८८,१६; २४१२
जातः सद्यः वा० य० २९,११,३६; २११६, २१२८
जातवेदाः १,४४,१; ८६ । १,४४,४; ८९ । १,४५,३; १०२ । १,७७,५; २३८ । १,७८,१; २३९ । १,७९,४; २४७ । १,९४,१; २५६ । १,१२७,१ २७२ । २,२,१; ३८५ । २,२,१२; ३९६ । ३,१,२०; ४६६ । ३,१,२१; ४६७ । ३,५,४; ४७३ । ३,६,६; ४८५ । ३,१०,३; ५११ । ३,११,४; ५२१ । ३,२८,१,४,६; ५५२,५५५, ५५७ । ३,२९,२; ५५९ । ३,२९,४; ५६१ । ३, १५, ४; ५९१ । ३,१७,२-४; ६०१-३ । ३, ११, ८; ५२५ । ३,२५,५; ५३६ । ३,२०,३; ६१६ । ३,२१,१; ६१८ । ३,२२,१; ६२३ । ३,२३,१; ६२७ । ४,१,२०; ६४६ । ४, ३, ८; ६७३ । ४,१२,१; ७३४ । ४,१४,१; ७४५ । ५,४,४,९-११; ७९३, ७९८-८०० । ५,९,१; ८२८ । ५,२२,२; ९०० । ५,२६,७; ९२६ । ६,४,२; ९७२ । ६,५,३; ९८५ । ६,१०,१; ९९३ । ६,१२,४; १००९ । ६,१५,७; १०२९ । ६, १५, १३; १०३५ । ६, १६, २९; १०७० । ६, १६, ३०; १०७१ ।

६, १६, ३६; १०७७। ६, ४८, १; १०९०। ७,३,८; ११३१। ७,९,४,६; ११५८,११६० । ७,१४,१; ११७४। ७,१७,३-४; १२०६-७। ७,१०४,१४; १२१३। ८,११,३-५; १२१६-१८। ८,२३,१,१७,२२; १२७०, १२८६, १२९१। ८,४३,२,२३; १३११,१३३२ ८, ७१, ७, ११; १४१५, १४१९। ८, ७४, ३, ५; १४४४, १४४६। १०, ४, ७; १६१२ । १०, ६, ५; १५२४ । १०, ८, ५; १५३८। १०,१६,१; १५५७। १०,१६,२,४, ५, ९, १०; १५५८, १५६०-६१, १५६५-६६। १०,४५,१; १५९०। १०,५१,१-२; १६११-१२। १०,५१,७; १६१४। १०,६९,८-९; १६३२-३३, १०,९१,१२; १६६२। १०,११५,६; १६७१। १०, १४०, ३; १६८६। १०,१५०,३; १७००। १०,१७६,२; १७०८। १,५९,५; १७२१। ३,३,८; १७४९ । ३, २६, ७; १७५६ । ४,५,११-१२; १७६८-६९। ६,८,१; १७८०। ७, ५, ७-८; १८००-१। ७,१३,२; १८११। १०,८७,२,५-७, ११; १८२९, १८३२-३४, १८३८; १,९९,१; १८६२। ४,५८,८; १९०२। ५,५, १; १९६४। १०, ११०, १; २००३

जातवेदाः--वा० य० २७,२२; २०७१। २९,१; २१०६। २९,३; २१०८। २९,२५; २११७। अथ० ७,८४,१; १८६६। ५, २७, १२; २०८३। १,९,३; २१४२। २,२९,२; २१५०। ५,८,२; २१६४। ७,३४,१; २१९३। ७,३५,१; २१९४। ७,७४,४; २१९७। ७,१०६,१; २२००। १९,३,१; २२०५। १९, ४, १; २२०९। ७,१०८,२,२ २२२८; ३, १, १; २२५२। ४,३९,१०,१०; २२८३। १०,८८, ४-५; २४००-१। १, ७, २, ५-६; २२८५,२२८८-८९। १,८,४; २२९१। ५,२९,१-३,१०; २३०५-७,२३१४। ५, २९, १२-१४; २३१५--१७। ७,८२,४-५; २३२७-२८। ४,२३,१,४; २३३१,२३३३। ४,४०,१; २३४२। १९,६५,१; २३४९। १९, ६६, १; २३५०। १९,६४,१-२; २३५१-५२। ६,७७,३; २३९६

जातवेदाः [अग्निदेवता] १,९९,१; १८६२। १०,८८,१-३; १८६३-६५। अथर्व० ७, ८४, १; १८६६। अथ० ७, ६३, १; २३७४। ६,७७,१-३; २३९४-९६

जातवेदाः जन्मना- ३,२६,७; १७५६

जानन् १,१४०,७; २९८

जामिः जनानाम्-- १,७५,४; २२७

जामिः सिन्धूनाम्- १,६५,७; १३०

जायमानः सहसा-- १,९६,१; १८७९

जायुः वनेषु-- १,६७,१; १४४

जारः १,६९,१; १६४। १,६९,९; १७२। ७,९,१; ११५५। ७,१०,१; ११६१

जारः कनीनाम्-- १,६६,८; १४१

जिन्वन्ति अग्नयः दिवम्- १,१६४,५१। (वामनसूक्त)

जिह्वांचक्रिरे त्वां शुचयः-- २,१,१३; ३८१

जीवपीतसर्गः १,१४९,२; ३५४

जीवितयोपनः अथ० १२,२,१६; २२४२

जीरः १,४४,११; ९३। ३,३,६; १७४७

जीराश्वः १,१४१,१२; ३१६। २,४,२; ४१७

जुगुर्वणिः १,१४२,८; १९२५

जुजुर्वान् यः मुहुः आयुवाभूत् २,४,५; ४२९

जुजुषाणः १०,१५०,२; १६९९

जुषत्-न् भानुषस्य हव्या १०,२०,५; १५७५

जुषमाणः अथ० १९,३,१; २२०५

जुषाणः १०,१२२,२; १६७६

जुषाणः अर्कैः, १०,६,४; १५२३

जुषाणः उप [इन्द्रः] वा०य० २०,३८; २०१६

जुषाणः बर्हिः [इन्द्रः] वा०य० २०,३९; २०१७

जुषाणः हव्यानि ८,४४,८; १३५०

जुषाणौ घृतस्य गुह्या [अग्नाविष्णू] अथ. ८,२९,२; २४५४

जुष्टः ५,४,५; ७९४। ५,१३,४; ८५७। ८,४४,७; १३४९

जुष्टः दाशुषे जनाय १,४४,४; ८९

जुह्वः तामिद् गच्छन्ति १,१४५,३; ३३५

जुह्वः सदानाम् १०,६,५; १५२४

जुह्वास्यः १,१२,६; १५

जूर्णिः ८,७२,९; १४३२

जेता वा०य० २८,२; २०८५

जेता जनानाम् १,६६,३; १३६

जेन्यः १,७१,४; १८८। १,१२८,७; २८९। १,१४०,२; २९३। १,१४६,५; ३४२ । १०,४,३; १५०८

जेन्यः जनिष्ट अह्नां अग्रे ५,१,५; ७५९

जेहमानः १०,३,६; १५०४

जोष्टा धियः वा० य० २८,१०; २०९३

जोहूत्रः २,१०,१; ४०९

ज्येष्ठः ८,७४,४; १४४५। ८,१०२,११; १४७३। [वरुणः] ४,१,२; २४४९

ज्योतिः ४,१०,३; ७२२

ज्योतिः अमृतम् ६,९,४; १७९०

ज्योतिः ध्रुवम् ६,९,५; १७९१

ज्योतिषः पतिः ऋतस्य अथ० ६,३६,१; २१८१

ज्योतिषा बृहता भाति ५,२,९; ७७५

ज्योतींषि बिभ्रत्, विपाम् ३,१०,५; ५१३

ज्रयसानः १०,११५,४; १६६९

तक्मन् अथर्व० १९, २५, १-४; २२७५-७८

ततुरिः १,१४५,३; ३३५

ततृषाणः ६,१५,५; १०२७

तनूनपात् ३,२९,११; ५६८। १,१३,२; १९०७ । १, १४२, २; १९१९ । ९,५,२; १९८७
तनूनपात् उच्यते गर्भः ३,२९,११;५६८
तनूनपात् [देवतामन्त्राः] १, १३, २; १९०७ । १, १४२, २; १९१९ । १,१८८,२; १९३२। ३,४,२; १९५४। ९, ५, २; १९८२ । १०, ११०, २; २००४ । वा०य० २०,३७; २०१५ । २०,५६; २०२६। २१,१३; २०३८। २१,३०; २०४९। २७,१२; २०६१। २८,२; २०८५ । २८,२५; २०९६। २९,२; २१०७। २९,२६; २११८
ऋ० प्रैष २; २१३०
अथर्व०५,२७,१; २०७२। ५,१२,२; २००४
तनूपाः८,७१,१३; १४२१। १०,४६,१; १६०१ । १०, ६९, ४; १६२८ । १०,८८,८; २४०४
तनूरुच्-क् २,१,९; ३७७
तनू वाशिन्-शी अथ०१,७,२; २२८५। ७,१०९, (११४),१; २३६५
तन्तुं तन्वन् १०,५३,६; १६१९
तन्यतुः ६,६,२; ९८७
तन्वन्ति आ ये रश्मिभिः तिरः समुद्रम् ओजसा-[मरुतः] १,१९,८; २४४५
तपस्वान् ६,५,४; ९८२
तपिष्ठः ६,५,४; ९८२
तपुर्जम्भः १,५८,५; ११४। ८,१२३,४; १२७३
तपुर्मूर्धा ७,३,१; ११२४
तमसि तस्थिवान् ६,९,७; १७९३
तपोहन्-हा १,१४०,१; २९२
तरणिः ३,२९,१३; ५७० । ६,१,५; ९४३ । १०,८८,१६; २५१२
तरुत्रः ६,१,११; ९४९
तरुणः ७,४,२; ११३५। ८,१९,२२; १२४५
तरुषः परस्य अवरस्य अर्यः ६,१५,३; १०२५ । १०,११५,५; १६७०
दै० [अग्निः] ३२
तळित् इव अतिरोचते दूरेचित् सन् १,९४,७; २६२
तवस् (से-चतुर्थी) ३, १, २, १३; ४४८,४५९। ७,५,१; १७९४। ७,६,१; १८०३
तविषीभिः आवृतः ३,३,५; १७४६
तव्यांसः ५,१७,१; ८७६
तस्थिवान् तमसि ६,९,७; १७९३
तस्थिवान् परमेपदे १,७२,४; १९८। २,३५,१४; २४३५
तातृषाणः यः वना आभाति २,४,६; ४२१
तिग्मः ४,६,८; ६८२ । ८,७२,२; १४२५
तिग्मजम्भः १,७९,६; २४९। ४,१५,५; ७५३। ८,१९,२२; १२४५। ८,४४,२७; १३६१ । ४,५,४; १७६१
तिग्मशोचिः १,७९,१०; २५३
तिग्म हेतिः ४,४,४; १८१६
तिग्मानीकः १,९५,२; १८६९
तुम्रः अथ० १९,४,१; २२०९
तुराषाट् [इन्द्रः] वा० य० २०,४६; २०२४
तुर्वणिः १,१२८,३; २८५
तुविजातः ४,११,२; ७२९ । ५,२,११; ७७७। ५,२७,३; ९३०
तुविद्युम्नः ३,१६,३,६; ५९६,५९९
तुविश्रवस्तमः ३,११,६; ५२३
तुविष्मान् ४,५,३; १७६०
तुविष्वणस्-णाः ५,८,३; ८९३
तुविष्वणिः १,५८,४; ११३।१,१२७,६; २७७
तूर्णिः ३,३,५; १७४६
तूर्णितमः ४,४,३; १८१५
तूर्णी ३,११,५; ५२२
तृतीयकः अथ० १,२५,४; २२७८
तृपुच्युतः १,१४०,३; २९४
तेपानः घृतस्य धीतिभिः ८,१०२,१६; १४७८
तेपानः रक्षसः ८,६०,१९; १४०७
त्रययाय्यः ६,२,७; ९५८
त्राता १,४४,५; ९०। ५,२४,१; ९०७। ६,१,५; ९४३ । ८,६०,५; १३९३
त्रासदस्यवः ८,१९,३२; १२५५
त्रितः १०,४६,६; १६०६
त्रिधातुः ८,७२,९; १४३२
त्रिधातुः अर्कः ३,२६,७; १७१६
त्रिपस्त्यः ८,३९,८; १३०७
त्रिमूर्धा १,१४६,१; ३३८
त्रिवरूथः ६,१५,९; १०३१
त्रिषधस्थः ५,४,८; ७९७ । ६,१२,२; १००७ । ६,८,७; १७८६
त्रेधा अकृण्वन् देवासः भुवे कं तम् ऊ १०,८८,१०; २४०६
त्वष्टा त्वम् २,१,५; ३७३
त्वष्टा [देवता] १,१३,१०; १९१५ । १,१४२,१०; १९२७। १,१८८,९; १९३९ । २,३,९; १९५०। ३,४,९; १९६१ । ५,५,९; १९७१। ७,२,९; १९६१। ९,५,९; १९८९। १०,७०,९; २००० । १०, ११०, ९; २०११। वा०य० २०,४४,६५; २०२२,२०३४। २१, २०, ३८; २०४५, २०५७ । २७,२०; २०६९। २८,९,३२; २०९२, २१०३ । २९,९,३४; २११४,२१२६। अथ० ५,२७,१०; २०८१ । ऋ० प्रैष० १०; २१३८। अथ० ५,१२,९; २०११
त्वाष्ट्रः ३,७,४; ४९३
त्वे विश्वेदेवाः ५,३,१; ७७९
त्वेषः १,६६,६; १३९ । १,७०,११; १८४ । २,९,१; ४०३ । ३,२२,२; ६२४ । ८,७४,१०; १४५१
त्वेषः (षष्ठी वि०) ६,२,६; ९५७
दक्षः ३, १४, ७; ५८७ । १, ५९, ४; १७२०
दक्षस्-क्षाः [दक्षसे] ६,४८,२; १०९०
दक्षस्य साधनम् ५,२०,३; ८९३
दक्षपतिः दक्षाणाम् १, ९१, ६; १८७९

दक्षाय्यः २, ४, ३; ४१८। ७, १, २; ११०१
दक्षुष् १,१४१,७; ३११
दत् (न्) अदन् ४,६,८; ६८९
दत् (द्) १०,११५,२; १६६७
ददृशानः नेदिष्ठम् १,१२७,११; २८२
ददृशान पविः १०,१,६; १५०४
दधानः नर्या पुरूणि हस्ते १, ७२, १; १९५
दधानः वयो वयो जरसे ५, १५, ४; ८६९
दधानौ सप्त रत्ना दमे दमे [अग्नाविष्णू] अथ० ७,२९(३०),१; २४५३
दधिः १०,४६,१; १६०१
दध्रक्-ग् १०,१६,७; १५६३
दमयन् पृतन्यून् ७,६,४; १८०६
दमाम् अरित्राः १०,४६,७; १६०७
दमूनाः (नम्) १, ६०, ४; १२२। १,६८,१०; १६३। १, १४१, १०; ३०१। ३,१,११; ४५७। ३,१,१७; ४६३। ३,५,४: ४७३। ४,११,५; ७३२। ५,१,८; ७६२। ५, ४, ५; ७९४। ५,८,१; ८२१। ७, ९, २; ११५३। १०, ४६, ६; १६०६। १०, ९१, १; १६५१। ३, २, २५; १७४१। ३,३,६; १७४७। ४,४,११; १८२३
दम्पतिः १,१२७,८; २७९। ५,२२,४; ९०२। ८,८४,७; १४६०
दम्यः ८,२३,२४; १२९३
दयमानः वि वसुरत्नानि दाशुषे ३,२,११; १७३७
दर्मा (र्मन्) पुराम् १०,४६,५; १६०५
दर्शत्-न् १,१४४,७; २३२। ३,२७,१३; ५४९। ६,१,३; ९४१। ८,७१,१०; १४१८। ३,२,१५; १७४१
दर्शत् तिरः तमांसि ८,७४,५; १४४६
दर्शनश्रीः १०,९१,२; १६५२
दविद्युतत् ७, १०, १; ११६१। ६,१६,४५; १०८६। अथ० ७,६२(६४), १; २३७३
दविद्युतत् घृतेन आहुतः १०,६९,१; १६२५
दशस्यन् अपत्याय ७,५,७; १८००
दशान्तरुष्यात् अतिरोचमानः १०,५१,३; १६११
दस्मः १,७७,३; २३६। २, १, ४; ३७२। २,९,५; ४०७। ३, १, ७; ४५३। ५,१७,४; ८७९। ६,१,१; ९३९। ८, १०३, ७; १२६३। ८, ७४, ७; १४४८। १०, ७, १; १५२७। १०,११,४; १५४३। ३,३,२; १७४३ [वरुणः] ४,१,३; २४५०
दस्मवर्चाः ६,१३,२; १०१३
दस्युहन्तमः ६,१६,१५; १०५६
दस्युहन्तमः मान्धातुः ८, ३९, ८; १३०७
दाता ३, १३, ३; ५७६। अथ० ३,२१,४; २३५८
दाता वाजस्य गोमतः ५,२३,२; ९०४
दाता सौमनसस्य अथ० १९,५५,३-४; २२७१-७२
दामा (मन्) रथानाम् ८,२३,२; १२७१
दारुः ७,६,१; १८०३
दाशुस्-शूः (षः-षष्ठी) ७, ३, ८; ११३१
दास्वत् १,१२७,१; २७२
दिदक्षेण्यः, परिकाष्ठासु १,१४६,५; ३४२
दिदृक्षेयः ३,१,१२; ४५८
दिद्युतानः ३,७,४; ४९३
दिधिषाय्यः १,७३,२; २०६। २,४,१; ४१६
दिव् द्यौः (दिवः-षष्ठी) १,७३,७; २११। ६,२,४; ९५५
दिवः केतुः ३,२,१४; १७४०
दिवः चित् पूर्वः १,६०,२; १२०
दिवः दुहितरौ [उषासानक्ते] १०,७०,६; २००२
दिवः पायुः (दिवस्पायुः) ८,६०,१९; १४०७
दिवः मूर्धा ८,४४,१६; १३५८। ३,२,१४; १७४०
दिवः सूनुः ३,२५,१; ५३२
दिविजाः ८,४३,२८; १३३७
दिवियोनिः १०,८८,७; २४०३
दिविस्पृक्-शृ १०,८८,१; २३९७
दिव्यः ६,६,१; ९८६। ६,१०,१; ९९३। अथ० ४,१४,६; २०२२
दिशन्ता प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा [दैव्यौ होतारौ] १०,११०,७; २००९
दिदानः शल्यान् १०,८७,४; १८३१
दीदियुस्-युः ८,२३,४; १२७३
दीदिवान् १,१२,५; १४। १,१२,१०; १९। २,९,१; ४०३। ३,१३,५; ५७८। ३,२७,१२; ५४८। ५,२४,४; ९१०। ६,१,६; ९४४। ७,१,८, ११०७। ८,४४,४; १३४६। ८,६०,५; १३९३। ४,४,९; १८२१। २,३५,३; २४२४
दीदिवान् विश्वहा- ६,१,३; ९४१। १०,८८,१४; २४१०। २,३५,१४; २४३५। साम० १,६,१३,१
दीदिविः ऋतस्य- १,१,८; ८
दीद्यत्-न् १,१४३,७; ३२४। ३,२७,१५; ५५१। ७,१०,१; ११६१। १०,११८,१-८; १८५३-६०
दीद्यत्, त्रिः ऋतानि-१,१२२,५; १६८०
दीद्यानः १,१२७,३; २७४। ३,५,७; ४७६। १०,२०,४; १५७४। ४,५,९; १७६६
दीर्घतन्तुः १०,६९,७; १६३१
दीर्घश्रुत्तमः ८,१०२,११; १४७३
दीर्घायु शोचिः ५,१८,३; ८८३
दुरोकशोचिः १,६६,५; १३८
दुरोगभुः ८,६०,१९; १४०७
दुर्धरीतुः १०,२०,२; १५७२
दुर्यः ७,१,११; १११०
दुर्वर्तुः ६,६,५; ९९०
दुष्टरः ३,२४,१; ५२७

दुहन् सुदुघां विश्वधायसं इषम् १०,१२२,६; १६८०

दूतः १,१२,१; १० । १,१२,८; १७। १,३६,३; ७०। १,४४,२; ८७। १,४४,११; ९६। १,५८,१; ११०। १,६०,१; ११९। १,७२,७; २०१। २,९,२; ४०४। २,६,६; ४३८। ३,५,२; ४७१। ३,६,५; ४८४ ।३,९,८; ५०७। ३,११,२; ५१९। ३,१७,४; ६०३। ४,१,८; ६३४। ४,७,८; ७००। ४,८,१; ७०४ । ५,८,६; ८२६। ५,११,४, ८४५। ५,१२,३, ८५०। ५,२१,३, ८९७। ५,२६,६, ९२५। ६,१५,८; १०३०। ६,१६,२३, १०६४। ७,७,१, ११४२। ७,११,३; ११६८। ८,१९,२१; १२४४। ८,२३,६, १८-१९; १२७५,१२८७-८८। ८,३९,९; १३०८। ८, ४४, ३, ३०; १३४५, १३६२। ८,१०२,१८; १४८०। १०,८,५; १५३८। १०, १२२, ५; १६७९। ३,३,२; १७४३। १,१८८,१; १९३१। ७,२,३; १९७७। १०,११०,१; २००८। वा० य० २९,२५; २११७। ऋ० प्रैष ४,२१३२। अथर्व० ३,२,१; २१५६। ३,४,३; २१६०। १,७,६; २२८९

दूतः देवानां मर्त्यानां च- ६,१५,९; १०३१। १०,४,२; १५०७

दूतः देवानां विश्वेषाम्- ४,९,२; ७१३

दूतः विवस्वतः- ४,७,४; ६९६। ८,३९,३; १३०२। १०,२१,५; १५८५

दूतः विशाम्-१,३६,५; ७२। १,४४,९; ९४

दूतः विश्वस्य ७,६,१; ११९१

दूतः मित्र्यः २,६,७; ४३९

दूरेदृश् ७,१,१; ११००

दूरेभाः १,६५,१०; १३३

दूरेसन् इह भमवः ३,९,२; ५०१

दूळभः ४,९,१; ७१३। ३,१६,२; १७०८

दृंहन् जनान् वज्रेण मृत्युम् अथ० १२,२,९; २२३५

दृशतिः यस्य अरेपाः ...६,३,३; ९६५

दृशानः १०,४५,८; १५९६

दृशानः रभसम् २,१०,४; ४१६

दृशीकः १,६६,१०; १४३

दृशेन्यः महिना १०,८८,७; १८०३

देवः १,१,१; १। १,१,५; ५। १,१२,७; १६ । १,२४,२; २७। १,४४,१२; ९६। १,७४,९; २०२ । १,९४,७,१६; २६२,२७१। १,१२७,१; २७८। १,१२८,२-३; २८४-८५। १,१८५,१; ३३२। १,१८९,३; ३६०। १,१८९,६; ३६३। २,१,४,७;३७२;३७५। २,२,६; ३९७। २,४,१; ४१६। ३,५,६; ४७५। ३,६,६; ४८५। ३,७,९; ४९८। ३,९,१; ५००। ३,९,८; ५०७। ३,२७,३; ५३९। ३,२७,७; ५४३। ३,१३,१; ५७४। ३,१४,७; ५८७। ३,१५,६; ५९३। ३,१९,४; ६१३। ३,२०,३; ६१६। ४,१,१,६,९; ६३१,६३२,६३५। ४,२,१, १९; ६४७-६५। ४,३,३; ६६८। ४,७,२; ६९४। ४,८,३; ७०६। ४,११,५; ७३२। ४,११,६; ७३३। ४,१३,१; ७४०। ४,१४,१; ७४५। ४,१५,१; ७४९। ५,१,२; ७५६। ५,२,११; ७७७। ५,३,४,५,८; ७८१,७८२,७८५। ५,६,४; ८०४। ५,८,४; ८२४। ५,९,१; ८२८। ५,१४,१; ८६१। ५,१५,५; ८७०। ५,१६,१; ८७१। ५,१७,१; ८७६। ५,२१,४; ८९८। ५,२२,२; ९००। ५,२२,३; ९०१। ५,२५,१; ९११। ५,२६,१,७; ९२०,९२६। ६,२,११; ९६२। ६,३,१; ९६३। ६,११,२; १००१। ६,१३,२,४; १०१३,१०१५। ६,१५,४; १०२६। ६, १६, ३, ७; १०४४, १०४८। ६, १६, १२, ३२, ४१, ४३; १०५३, १०७३,१०८२,१०८४। ६,१६,४६; १०८७। ६,४८,७; १०९६। ७,१, २०,२५; ११२९ ७,३,१; ११२४। ७, १४, १-३; ११७४-११७६। ७, १५, ७, १३; ११८३, ११८९। ७,१६,११;१२०२। ७,१७,७; १२१०। ८,११,१,२; १२१४,१२१९। ८,१९, १, ३, १७, १९, २४, २८, १२२४, १२२६, १२४०, १२४७, १२५१। ८,२३,१८;१२८७। ८,३९,७; १३०६। ८,४४,११,१५; १३५३-५७। ८,७५,२; १३७४। ८,६०,१०; १४०७। ८,७,१८; १४१६। ८,१०२,१५; १४७७। ८,१०२,१६;१४७८। १०,२,२;१४९३। १०,७,१,६;१५२७-३२। १०,१२,१,३ १५४९,१५५१। १०,१६,९; १६६५। १०,११५,३; १६६८। १०,१२२,४; १६७८। १०,१५०,४; १७०१। १०, १७६,२;१७०८। १०,१७६,४; १७१० ३,३,९; १७१०। ३,२६,१; १७१३। ४,५,२; १७१९। ७,६,३; १८०९।

देवः १,१३,११; १९१६। १,१४२,३; १९२०। १,१४२,११;१९२८। १,१८८, १; १९३१। २,३,१; १९४२। ३,४,१,९; १७५३-६१। ७,२,९, १९६१। ९,५,४,७; १९८४,१९८७। १०,७०,४,६,१०; २०००,२,६। १०,११०,१; २००८। १,११०,१०; २०१७। १०,८८,१४; २४१०। २,३५,५; २४२६। वा० य० २७,१२-१३; २०६१-६२। २९.२५, ३४; २११७,२१२६। ऋ० प्रैष४,२१३२ अथर्व० ५,२७,२; २०७३। ५,२८,२-३ २०८५-८६। १२,२,१२,३३; २२३८, २२४६। २,३४,३; २२५१। ४,३९,१०; २२८३। १,७,१; २२८४। १,२८,१,२; २२९३-९४। ३,२१,३-४; २३५७-५८। साम० १,१,१,१०

देवः प्रथमः अथ० ५,२८,११; २१७७

देवः महः मर्त्यान् आविवेश ४,५८,३; १८९७

❀

देवासः [मरुतः] १,१९,६: २४४३
देवकामः (त्वष्टा) २,३,९; १९५०
देवतमः १०,३,६; १५०४। १०,७०,१; १९९८
देवतातिं उराणः ३,१९,२; ६११
देवयावा दूतः ७,१०,२; ११६२
देवयुः १०,१७६,३; १७०९
देववाहनः ३,२७,१४; ५५०
देववीतमः १,३६,९; ७६
देवहूतमः ३,१३,६; ५१९
देवानां केतुः ३,१,१७; ४६३
देवानां दूतः ६,१५,९; १०३१
देवानां देवः १,३१,१;५०। १,६८,२; १५५। १,९४,१३; २६८। वा० य० २०,४१; २०१९ इन्द्रः
देवानां पिता १,६९,२; १६५
देवानां पुत्रः १,६९,२; १६५
देवावीः ३,२९,८; ५६५
देवेषु जागृविः १,३१,९; ५८
देवेषु देवः वा० य० २७,१२;२०६१। अथ० ५,२७,२; २०७३
देव्यः १,१४०,७; २९८
देव्यः तिस्रः सरस्वती इळा भारत्यः मह्यः वा १,१३,९; ११९४। १,१४२,९;१९२६।१,१८८,८;१९३८। २,३,८; १९४९। ३,४,८; १९६०। ५,५,८; १९९४। ७,२,८; १९८१। ९,५,८; १९८८।१०,७०,८; १९९९। १०,११०,८;२०१०। वा०य० २०,४३, ६४; २०२१,२०३३। २१,१९,३७; २०४४,२०५६।२७,१९; २०६८। २८,८;२०९१।२८,३१;२१०२।२९,८; २११३। २९,३३; २१२५। ऋ० प्रैष ९,२१३७। अथ० ५,२७,९; २०८०। ५,१२,८; २००९
दैव्यः १,२७,१२; ४०
दैव्यः अतिथिः ७,८,४; ११५२
दैव्यः केतुः १,२७,१२; ४९
दैवोदासः ८,१०३,२; ११५८
द्यां परिज्मान इव १,१२७,२; २७३
द्युक्षः २,२,१; ३८५
द्युक्षवचाः ६,१५,४; १०२६
द्युतानः ६,१५,४; १०२६। ७,८,४; ११५२। ४,५,१०; १७६७
द्युभिः हितः १०,७,५; १५३१
द्युमः (संज्ञी०) ६,१०,२; ९९४
द्युमान् २,९,६;४०८।४,१५,४;७५२। ५,६,४; ८०४। ५,२६,३; ९२२। ७,१,४; ११०३।७,१५,७; ११८३। १०,२,७; १४९८। ९,५,३; १९८३
द्युमान् द्युमासु १०,६९,७; १६३१
द्युम्नवान् ५,२८,४; ९३६
द्युम्नी १,३६,८; ७५। ८,१०३,९; १२६५। १०,६९,५; १६२९
द्रविणः अथ० ७,७८,२; २१९९
द्रविणम्-णाः ३,७,१०; ४९९
द्रविणस्युः २,६,३;४३५। ६,१६,३४; १०७५
द्रविणोदा अग्निः [देवता]१,९६,१-९; १८७९-१८८७
द्रविणोदा २,१,७; ३७५। २,६,३; ४३५। ७,१६,११; १२०२।८,३९,६; १३०५। १०,२,२;१४९३।१०,७०,९; २००५। अथ० १९,३,३; २२०६
द्रुपद् १०,११५,३; १६६८
द्रुहन्तरः १,१२७,३; २७४
द्र्वन्नः ६,१२,४: १००९। २,७,६; ४४६
द्वारः देवीः [देवता] १,१३,६; १९११। १,१४२,६;१९२३।१,१८८,५;१९३५। २,३,५; १९४६। ३,४,५; १९५७। ५,५,५; १९६८। ७,२,५: १९७८। ९,५,५; १९८४।१०,७०,५; १९९६। १०,११०,५:२००७। वा०य०२०,४७; २०१८। २०,६१; २०३०। २१,१६; २०४१। २१,३४; २०५३। २७,१६; २०६५। २८,५; २०८८। २८,२८; २०९९। २९,५; २११०। २९,३०; २१२२। ऋ० प्रैष ५, २१३४। अथ० ५,२७,७; २०७८। ५,१२,५; २००७
द्विजन्मा १,६०,१; ११९। १,१४०,२; २९३। १,१४९,४-५; ३५६-३५७
द्विबर्हाः ४,५,३; १७६०
द्विमाता १,३१,२; ५१
द्वेषोयुतः ४,११,५; ७३२
धक्षुः १०,११५,४; १६६९
धनञ्जयः १,७४,३;२१७।६,१६,१५, १०५६
धनर्चः १०,४९,५; १६०५
धनस्पृत् १,३६,१०; ७७। ५,८,२; ८२२
धरुणः ५,१५,१-२; ८६६-६७
धर्णसिः ५,८,४; ८२४
धर्णिः १,१२७,७; २७८
धर्ता ५,१,६; ७६०
धर्ता मानुषीणां विशाम् ५,९,३; ८३०
धर्ता रायः ५,१५,१; ८६६
धर्मः ३,१७,१; ६००
धवीयान् सद्यः ६,१२,५; १०१०
धामनि उरुज्रयः विरोचमानम् १,९५,९; १८७६
धामभिः (युक्तः) सप्त ४,७,५; ६९५
धासिः ३,७,१; ४९०। ७,६,२; १८०४
धितावान् ३,२७,२; ५३८
धियंधिः ७,१३,१; १८१०
धियं साधयन्ती [सरस्वती] ९,३,८; १९४९
धियावसुः १,५८,९; ११८। १,६०,५; १२३। ३,२८,१;५५२।३,३,२;१७४३
धीः १,९५,८; १८७५
धीनां यन्ता ३,३,८; १७४९
धीरः १,९४,६; २६१। ८,४४,२९; १३७१। अथ० ३,२१,४; २३५८
धुनिः १,७९,१; २४४
धूमः ३,२९,९; ५६६
धूमः ते केतुः दिवि श्रितः ५,११,३; ८४४
धूमं ऋण्वन् ७,२,१; १९७५
धूमकेतुः १,२७,११; ४८। १,४४,३;

…८। ८,४४,१०; १३५२। १०,४,५;
…५१०। १०,११,१; १५५०
…र्षद् १,१४३,७;३२४।२,२,१; ३८५
…तव्रतः ८,६४,२५; १३६७
…षद्वर्णः १०,८७,१२, १८४९
…ष्णुः ६, १६, ११; १०६३।
१०,१६,७; १५६३। १०,६९,५-६,
१६२९-३०। अथ० ५,२९,१०; २३१४
…जीमान् १,७९,१; २४४
…ाजिः एकस्य ददृशे [वायुदेवता]
१,१६४,४४; २४५६
…ुवः ६,१५,७;१०२९।६,९,४; १७९०
…ध्वंसयन् १,१४०,३ २९४
नक्षति द्याम् अभि शुक्रैः ऊर्मिभिः
१,९५,१०; १८७७
नक्ष्यः ७,१५,७; ११८३
नडे अथ० १२,२,१९; २२४५
नप्ता अध्वराणाम् ८,१०२,७; १४६९
नमत् जिह्वाभिः ८,४३,८; १३१७
नभोविद् १०,४६,१; १६०१
नमसा उपवाक्यः १०,६९,१२; १६३९
नमसा रातहव्यः ४,७,७; ६९९
नमो युजानः १,६५,१; १२४
नमो वहन् १,६५,१; १२४
नमस्यः १,७२,५;१९९।२,१,३;३७१।
२,१,१०; ३७८। ३,५,२; ४७१
३,२७,१३; ५४९
नराशंसः [अग्निदेवता] १,१३,३;
१९०८।१,१४१,३; १९२०।२,३,३;
१९४४।५,५,२; १९६५।७,२,२,
१९७५।१०,७०,२; १९९३। वा०य०
२०,३७; २०१५।२०,५७; २०२७।
२१,३१; २०५०।२७,१३; २०६२।
२८,२; २०८५।२९,३; २१०८।
२९,२७; २११९। ऋ० प्रैष ३,२१३१।
अथ० ५,२७,३; २०७४
नराशंसः भवति यद् विजायते आसुरः
३,२९,११, ५६८
नर्यापसः [त्वष्टा] वा० य० २१,३८।
२०५७। २८,४; २०८६
नर्या पुरूणि हस्ते दधानः १,७२,१,
१९५
नवः सदा ३,११,५, ५१२
नवजातः ५,१५,३; ८६८
नव्यः १,१४१,१०; ३१४।१,१८९,२;
३६२। ६,१,७;९४५।१०,४,५;१५१०
नव्यः सनात् ८,११,१०; १२२३
नाकः ५,१७,२; ८७७
नाथः २,३५.१, २४१२
नानदत् एति १,१४०.२ १९६
नानदत् चित्रेषु ३,२,११; १७३७
नाभिः पृथिव्याः १,५९,२; १७१८
नाभिः यज्ञानाम् ६,७,२; १७७४
नाभिः रोचनस्य १०,४६,३; १६०३
नाभिः विश्वस्य चरतः ध्रुवस्य१०,५,३;
१५१५
नाम अस्य चारु २,३५,११; २४३२
निण्वः १,९५,४; १८७१
नितोशतः ६,१,८; ९४६
नित्यः १,६६,१,५; १३४,१३८।
३,२५,५; ५३६। ५,१,७; ७,६१।
१०,१२,२; १५५०
नित्यहोता १०,७,४; १५३०
निध्रुविः मर्त्येषु ७,३,१; ११२४
निर्ऋथः अथ० १२,२,१४; २२४०
निर्मथितः ३,२३,१; ६२७
निवेशनी जगतः [रात्रिः] १,३५,१;
२४४८
निषत्तः १,५८,३; ११२। ३,३,२;
१७४३। ६,९,४; १७९०
निषत्तः सन्मध्ये १,६९,४; १६७
निषद्वरः वा० य० २८,४; २०८७
निष्पद्मानः यमते नायते १,१२७,३;
२७४
निःस्वरः अथ० १२,२,१४; २२४०
नीलपृष्ठः ३,७,३; ४९२
नू च पुरा च १,९६,७; १८८५
नृचक्षाः ३,१५,३, ५९०। ३,२२,२;
६२४। ४,३,३; ६६८। ८,१९,१७;
१२४०। १०, ८७, ८-१०, १७;
१८३५-३७,१८४४।९,५,७; १९९१।
अथ० १,७,५; २२८८
नृतमः १,७७,४; २३७। ३,१,१२,
४५८। ५,४,६; ७९५। ६,१९,४;
१७२०। ४,५,२; १७५९। ६,५,४;
१८०६
नृपतिः २,१,७; ३७५
नृपेशसः [देवीः द्वारः] ३,४,५; १९५७
नृमणा १०,४५,१; १५८९
नृम्णा विश्वानि हस्ते दधानः १,६७,३;
१४६
नृशस्तः मैत्रा० ४,१३,१; २१३१
नृशस्तः ऋ० प्रैष ३,२१३१
नृषद् १०,४६,१; १६०१
नॄः प्रणेत्रः ऋ० प्रैष ३, २१३१
नॄःप्रणेत्र मैत्रा० ४,१३,१; २१३१
नेता अध्वराणाम् १०,४६,४; १६०४
नेता इपाम् ३,२३,२; ६२८
नेता क्षितीनां दैवीनाम् ३,२०,४; ६१७
नेता चर्षणीनाम् ३,६,५; ४८४
नेता यज्ञस्य २,५,२; ४२६। ३,१५,४;
५९१
नेता यशस्य रजसश्च १०,५,६, १५१९
नेता सिन्धूनाम् ७,५,२, १७९५
नेष्टा २,५,५; ४२९
नेष्ट्रम् तव २,१,२; ३७०
पचति सः विश्वरूपाः ओषधीः १०,८८,
१०; २४०६
पक्षः १,६६,३; १३६
पतिः वा० य० २८,३१; २१०१
पतिः ३,७,३; ४९२
पतिः जनीनाम् १,६६,८; १४१
पतिः पृथिव्याः ८,४४,१६; १३५८
पतिः शतिनः सहस्रिणः वाजस्य
८,७१,४; १३७६

पद्यास्त्वे एव निदिताः त्रिः सप्त गुह्यानि १,७२,६; २००
पदे तस्थिवान् परमे १,७२,४; १९८
पनिष्ठः ३,१,१३; ४५९
पन्यांसः ८,७४,३; १४४४
पप्रथानः ५,१५,४; ८६९
पप्रिः अथ० १२,२,४७; २२६१
पयसः-स् अथ० ४,१४,६; २२२२
पयस्वत्-स्वान् १,२३,२३
पयस्वतो [उषासानक्ते] २,३,६;१९४७
परः आमासु पूर्षु २,३५,६; २४२७
परमेष्ठी अथ० १,७,२; २२८५
परस्पाः २,९,२,६; ४०४,४०८
परिज्मा ६,२,८; ९५९ । ९,७२,१०; १४३३ । ३,२६,९;१७३५ । ७,१३,३; १८१२
परिधिः मनुष्याणाम् अथ०१२,२,४४; २२५७
परिभूः अथ० ३,२१,४; २३५८
परिभूः देवान् १०,१२,२; १५५०
परिभूः विश्वाता त्मना ३,३,१०;१७५१
परिभूतमः १०,९१,८; १६५८
परियन् वर्तिर्यशम् १०,१२२,५;१६८०
परिवीतः १०,४६,६; १६०६
परिष्कृतः ८,३९,९; १३०८
पर्जन्य क्रन्धः ८,१०२,५; १४६७
पर्येति पार्थिवं एवेन सद्यः १,१२८,३; २८५
पर्वतानां मित्रः ३,५,४; ४७३
पलितः १०,४,५; १५१०
पवमानः ९,५,१-११; १९८१-९१ ९,६६,२० । साम० २,७,१,१२
पविता अथ० ६,११९,३; २३८६। ९,६६,२०;। साम० २,७,१,१२
पाजः अस्य रुशत् ३,२९,३; ५६०
पाञ्चजन्यः अथ० ४,२३,१; २३३०
पात्रः ६,७,१; १७७७
पाद्धाः अस्य त्रयः ४,५८,३; १८९७
पायुः ६,१५,८; १०३० । ४,४,३; १८१५

पावकः १,१२,१०; १९ । १,६०,४; १२१ । २,७,४; ४४४ । ३,५,७; ४७६ । ३,१०,८; ५१६ । ३,२७,४; ५४० । ३,१७,१; ६०० । ३,२१,२; ६११ । ४,६,७; ६८८ । ५,४,३,७; ७९२, ७९६ । ५, ७, ४; ८१४ । ५,२३,४; ९०६ । ५,२६,१; ९२० । ६, १, ८; ९४६ । ६, २, ६; ९६८ । ६,४,३; ९७३ । ६,५,२; ९८० । ६,६,२; ९८७ । ६,१५,७; १०२९ । ६,४८,७; १०९६ । ७,३,१; ११२४ । ७,३,९; ११३२ । ७,९,१; ११५५ । ७,१५,१०; ११८६ । ८,२३,१९; १२८८ । ८,४४,२८;१३७० । ८,६०,३, ११; १३९१,१३९९ । ८,७४,११; १४५२ । १०,४५,७; १५९५ । १०,४६,४,७-८;१६०४,१६०७,१६०८। ४,५,६; १७६३ । १,९५,११;१८७८ । १,९६,९; १८८७ । १,१३,१; १९०६। १,१४२,३,६;१९२०,१९२३। २,३,१; १९४२ । अथ० ६,४७,१; २३७२
पावक वर्चाः १०,१४०,२; १६८५
पावक शोचिः ३,९,८;५०७।३,११,७; ५२४ । ४,७,५; ६२७ । ५,२२,१; ८९९ । ६,१५,१४;१०३६।८,४३,३१; १३४० । ८,४४,१३; १३५५ । ८, १०२,११;१४७३।१०,२१,१; १५८१। ३,२६,६; १७३२
पिता १,३१,१०; ५९ । १,३१,१६; ६५ । २,१,९; ३७७ । २,५,१;४२५। ३,२७,९; ५४५ । ५,४,२; ७९१
पिता आध्रस्य चित् १,३१,४; ६३
पिता यज्ञानाम् ३,३,४; १७४५
पिता माता मनुषाणां सदमित् ६,१,५; ९४३
पितुमान् १,१४१,२; ३०६
पितुष्पिता ६,१६,३५; १०७६
पितूयन् १०,१४२,२; १६९१
पिन्वमानः मधुमत् घृतम् वा० य०

२९,१;२१०६
पिशङ्गरूपः [त्वष्टा] २,३,९, १९५०
पुनानः क्रतुम् ३,१,५; ४५१
पुमान् ४,३,१०; ६७५
पुरः १०,८७,२२; १८४९
पुर एता १,७६,२; २३०
पुर एता विशाम् ३,११,५; ५२२
पुरन्दरः ६,१६,१४; १०५५ ।७,६,२ १८०४
पुरन्दरः [इन्द्रः] वा० य० २०,३८ २०१६ । २८,३; २०८६
पुराजाः १०,५,५; १५१७
पुरीष्याः [व्यासः बहु०] ३,२२,४; ६२६
पुरुक्षुः १,६८,१०; १६३ । ३,२५,२; ५३३
पुरुचेतनः ६,१६,१९; १०६०
पुरुतमः ६,६,२; ९८७
पुरुधप्रतीकः ३,७,३; ४९२
पुरुनिःष्ठः ५,१,६; ७६०
पुरुपेशासु गर्भः भुवत् २,१०,३; ४११
पुरुप्रशस्तः १,७३,२; २०६ । ८,१०३,१२; १२६८ । ८,७०,१०; १४१८
पुरुप्रियः १,१२,२; ११ । १,४४,३ ८८ । १,४५,६; १०५ । ५,१८,१; ८८१ । ८,४३,३१; १३४०।८,७४,१; १४४२ । ३,३,४; १७४५
पुरुप्रैषः १,१४५,३ ३३५
पुरुरूपः ५,८२,५;८२२,८२५। वा०य० २८,९; २०९२
पुरुवारः २,२,२; ३८६ । ४,२,२०; ६६६ । ६,१,३; ९५१।६,५,१;९७९। ६,१५,७; १०२९ । ४,५,१५; १७७२;
पुरुवारपुष्टिः १,९६,४; १८८२
पुरुवेपसम् (द्वि०) ८,४४,२६; १३६८
पुरुशोभनः ५,२,४, ७७०
पुरुश्चन्द्रः १,२७,११; ४८ । ३,२५,३; ५३४ । ५,८,१; ८११

पुरुषरेषणः अथ० ३,२१,९; १३६३
पुरुह्रुतः १,१४१,६; ३१० । १,८,५; ८१५
पुरुस्पृहः ५,७,६; ८१६ । १,१४२,६; १९२३
पुरुहूतः १,४४,७; ९२ । अथ० १९,५५,६; २२७४
पुरुहूते [नक्तोषासा] ७,२,६; १९७९
पुरू (रु) चरन् १,१४४,४; ३२१
पुरूतमः ८,१०२,७; १४६९
पुरुवसुः २,१,५; ३७३ । ८,१०२,१; १२६१ । ८,७०,१०; १४१८
पुरोगाः १०,१२४,१;१६८३ । १,१८८, ११; १९४१ । १०,११०,११;२०१३ । वा० य० २९,११,३६; २११६,२११८
पुरोयावा (वन्) ८,८४,८; १४६१ । ९,५,९; १९८९
पुरोहितः १,१,१; १।१,४४,१०;९५ । १,४४,१२; ९७ । १,५८,३; ११२ । १,९४,६; २६१ । १,१२८,४; २८६। ३,११,१; ५१८ । ५,११,२; ८४३ । १०,१,६;१४९०।१०,१२२,४;१६७८। १०,१५०,४; १७०१ । १०,१५०,५; १७०२ । ३,२,८; १७३४ । ३,३,२; १७४३।९,६६,२०।अथ०७,६२(६४),१। २३७३ । साम० १,१,५,४; २,७, १,१२
पुर्वणीकः ६,१०,२; ९९४ । ६,५,२; ९८० । ६,११,६; १००५ ।
पुष्टिः वा० य० १८,३२; २१०३
पुष्टिवर्धनः १,३१,५; ५४
पुष्टिवर्धनः [इन्द्राग्नी] वा०य०२१,२०; २०४५
पूतदक्षः ३,१,३; ४४९
पूर्वः ७,६,३; १८०५ । १०,८७,७; १८२४
पूर्वः अस्मत् १०,५३,१; १६१६
पूर्वकृत् [इन्द्रः] वा०य०२०,३६;२०१४
पूर्व्यः १,२६,५; ३२।१,७४,२;११६ । २,२,९;३९३।३,११,३;५२०।३,१४,३; ५८३ । ३,२३,३;६२९।५,८,२;८२२। ५,१५,१,३;८६६,८६८।५,२,३;८९३। ८,१९,२; १२२५ । ८,२३,७,२२, १२७६, १२९१ । ८, ३९, ३, १०; १३०२,१३०९।८,७१,१; १३६३
पूर्व्यः यज्ञेषु ८,३९ ८; १३०७ । ८,६०,२; १३९० । ८,१०२,१०; १४७२
पूष [illegible] अथ० ६,११२,३; [illegible] [देवता] ऋ० ७,४१,१; [illegible]
पूषा त्वम् २,१,६; ३७८
पूषण्वान् वा० य० २[illegible]; २०४० । [illegible],२७; २०६८
पूषण्वान् [इन्द्रः] १,१४२,१२;१९२९
पूः शतभुजिः मदों न आयसी भव ७,१५,१४; ११९०
पृक्षः १,१४१,२; ३०६।६,८,१;१७८०
पृच्छन्ति तम् इत् १,१४५,२; ३३४
पृणन् १०,१२२,४; १६७८
पृतनाजित् अथ० ७,६३ (६५),१; २३७४
पृतनाषाट् ३,२९,९; ५६६
पृथिव्याः तनः ३,२५,१; ५३२
पृथुः २,१०,४; ४१२
पृथुपाजाः ३,५,१; ४७० । ३,२,७,५; ५४१ । ३,२,११; १७३७ । ३,३,१; १७४२
पृथुप्रगामा १,२७,२; ३९
पृषद्वत् [बर्हिः] ७,२,४; १९७८
पृष्टबन्धुः ३,२०,३; ६१६
पृष्टः दिवि पृथिव्याम् विश्वा १,९८,२; १७२५
पोता १,९४,६;२६१। २,५,२, ४२६। ७,१६,५; ११९६ । ४,९,३; ६१४
पौत्रम् तव २,१,२; ३७०
प्रकेतः १,९४,५; २६०
प्रकेतः अध्वरस्य महान् ७,११,१; ११६६
प्रचेताः १,४४,११; ९६ । २,१०,३; ४११ । ३,२५,१; ५३१ । ३,२९,५; ५६१ । ४,१,११; ६३१ । ४,६,२; ६८३ । ६,५,१; ९७९ । ६,१३,३; १०१४ । ६,१४,२; १०१९ । ७,४,४; ११३७।७,१६,५,१२; ११,३६,१२०३। ७,१७,५; १२०९।८,१०२,१८;१४८०। १०,७९,४; १६४० । १०,१४०,५; १६८८। १०,८७,८;१८३५। १०,११०, ३; २००३।वा०य०२९,२५;२११७। अथर्व० ७,१०६,१; २२००। ४,२३,१; २३२० । [वरुण देवता]
प्रचेतसौ [देवते] 'होतारौ दैव्यौ' पश्य
प्रचोदयन् विदथानि ३,२७,७; ५४३
प्रचोदयन्ता विदथेषु [दैव्यौ होतारौ] १०,११०,७; २०१४
प्रजानन् ३,२९,१६; ५७३ । ४,१,१०; ६३६ । १०,१६,९; १५६५ । १०, ८८,६; २४०२ । अथ० ४,२३,१; २३३१
प्रजानन् [वनस्पतिः] २,३,१०;१९५१
प्रजानन् तत्र ऋत्वियं योनिः १०,९१,४; १६५४
प्रजानन् देवयानान् पथः वा० य० २९,२; २१०७
प्रजापतिः ९,५,९; १९८९
प्रणेताः वस्य आ २,९,२; ४०४
प्रतरणः अथ० १२,२,४९; २२६२ । ऋ० २,१,१२, ३८०
प्रतिक्षियन् विश्वा भुवनानि २,१०,४; ४१२
प्रतिगृह्णन् अथ० ३,२१,४; २३५८
प्रतिदहन् अभिशस्तिं अरातिम् अथ० ३,१,१; २२५२ । ३,२,१; २२५६
प्रतिमिमानः [इन्द्रः] वा०य०२०,३७ २०१५
प्रतिहर्यन् (त्) ८,४३,२; १३११
प्रतिव्यः ८,२३,१; १२७०
प्रत्नः ३,९,८; ५०७ । ५,८,१, ८२१। ८,११,१०;१२२३।८,२३,१०;१२८९। ८,२३,२५;१२९४। ८,४४,७; १३४९

१०,४,१; १५०६ । १०,७,५; १५३१। १०,९१,११; १६६३
प्रत्नः होता १,७,६; ४४६
प्रत्यङ् विश्वतः १,१४४,७;३३१।२,१०,५; ४१३ । १०,७९,५; १६४१
प्रत्यङ् तस्थौ सः विश्वा भुवनानि १०,८८,१६; २४१२
प्रथमः १,३१,१;५१।२,१०,१;४०९ । ३,२९,५; ५६१ । ४,१,११; ६३७ । ४,७,१;६९३।४,११,५;७३२ । ५,११,२; ८४३।६,१,१; ९३९।६,१५,१६; १०३८ । ८,२३,२२; ११९१ । १०,१२,२; १५५० । १०,४६,९; १६०९ । १०,१२२,४; १६७८। १०,१२२,५; १६७९।१,१६,३; १८८१। १,१८८,७; १९३७ । ३,४,३; १९५५। अथ० ७,८२,(८७),४-५;२३२७-२८। ४,२३,१; २३३०
प्रथमः अंगिरस्तमः १,३१,२; ५१
प्रथमः अंगिरा ऋषिः १,३१,१; ५०
प्रथमः अमृतानाम् १,२४,२; २७
प्रथमः देवः अथ०५,२८,११; २१७७
प्रथमः देवतानाम् अथ० ४,१४,५; २२२१
प्रथमः मात रिविश्वने विवस्वते आविः भव १,३१,३; ५२
प्रथमः होता ७,११,१;११६६। ३,४७; १९५९
प्रथमजाः ऋतस्य १०,५,७; १५१९
प्रदिवः ४,६,४; ६८५ । ४,७,८;७००। ५,८,७; ८२७। ६,५,३;९८१।२,३,१, १९४२
प्रभुः ८,४३,११; १३३०
प्रभुः रूपाणि १,१८८,९; १९३९
प्रभुः विश्वा विशः अनु ८,११,८;१२२१
प्रमतिः १,३१,१०,१४,१६; ५९,६३, ६५ । ८,१९,२९; १२५१
प्रमहाः (हस्) ५,२८,४; ९३६
प्रमृणन् सपत्नान् अथ० १९,६६,१; २३५०
प्रयज्युः ३,६,२; ४८१
प्रयतः ४,५,१०; १७६५
प्रयन्ता वसूनाम् १,७६,४; २३२
प्रवपन् १०,११५,३; १६६८
प्रविद्वान् अथ० ५,२६,१; २३४५
प्रविशिवान् विशः विशः अथ० ४,२३,१; २३३०
प्रशंस्यः २,२,३; ३८७
प्रशस्तः १,३६,९; ७६ । ७,१,१;११००
प्रशस्तः विक्षु १,६६,४; १३७
प्रशस्यः विदथेषु ८,११,२; १२१५
प्रशासन् ऋतून् १,९५,३; १८७०
प्रशास्ता १,९४,६; २६१ । २,५,४; ४२८
प्रशास्त्रम् तव २,१,२; ३७०
प्रशिषः तस्मिन् सन्ति १,१४५,१; ३३३
प्रसूषु नवासु अन्तः चरति १,९५;१०; १८७७
प्राञ्च् कृ १०,४६,४; १६०४
प्राचा जिह्वः १,१४०,३; २९४
प्राचीनम् ९,५,४; १९८९
प्राचीः ४,१,२; ७१३
प्रियः १,२६,७; ३४ । १,१२८,७-८; २८९,२९० । १,१४३,१; ३१८ । ३,२३,२; ६२९ । ५,२३,३; ९०५ । ६,१,६; ९४४ । ६,१६,४२; १०८३। ६,४८,१; १०९०। ७,१६,१;११९१। १,१३,३; १९०८ ।
प्रियः चमस्य १०,२१,५; १५८५
प्रियः देवानाम् साम० १,१,७,३
प्रियः विशाम् ५,१,९; ७६३
प्रिय जातः ८,७१,२; १४१०
प्रिय धामा (मः) १,१४०,१; २९२
प्रियम्प्रियम् (द्वितीया) ६,१५,६; १०२८
प्रीणन् ९,५,१; १९८६
प्रीणानः १,७३,१; २०५ । वा० य० २७,१३; २०६२
प्रीतः १,६६,४;१३७ । १,६९,५; १६८
प्रेतीषणिः चर्षणीनाम् ६,१,८; ९४६
प्रेद्धः सनकात् १०,६९,११, १६३६
प्रेष्ठः ८,८४,१, १४५४ । १०,१५६,५; १७०७
प्रेष्ठः प्रियाणाम् ८,१०३,१०; १४६६
प्रैणानः अथ० ५,२,७; २०७४
प्रोथन् (त) १०,११५,२; १६६८
प्लवः अथ० १२,२२,४८; २२६१
ब्रूद्धः त्रिधा ४,५८,३; १८९७
बप्सत्-न् १०,१४२,२; १६९२
बप्सन्, उपस्थेषु ८,७२,१५; १४३८
बभ्रिः ३,१,१२; ४५८
बभ्रुः अथ० ७, १०९, १, ७; २३६५,२३७१
बर्हिः [देवता] १,१३,५; १९१० । १,१४२,५;१९२२।१,१८८,४;१९३४। २,३,४; १९४५ । ३,४,४; १९५६ । ५,५,४; १९६७ । ७,२,४; १९७७ । ९,५,४; १९८४। १०,७०,४; १९९५। १०,११०,४; २०१६ । वा० य० २०, ३९, ५९; २०१७, २०२९ । २१,१५,३३;२०४०,२०५२। २७,१५, २०६४। २८,४; २०८७ । २८,२७; २०९८। २९,४,२९; २१०९,२१२१ । ऋ०ग्रैष ५, २१३३ । अथ०५,१२,४; २००६ । ५,२७,९; २०८०
बर्हिषः राट् ६,१२,१; १००६
बहुलः २,१,११; ३८०
बाहुमान् [इन्द्रः]अथ०१,७,४;२१८७
बृहन् [त] १,४५,८; १०७ । २,१,११; ३८० । ३,२७,१५;५५१। ३,१५,१; ५८८ । ५,१२,१; ८४८ । ५,२६,३; ९१२ । ६,१,३; ९४१। ६,२,४;९५५। ८,१०३,८;१४६४ ।१०,१,१; १४८५। १०,१,३;१४८७। १०,३,४-५;१५०२-३।१०,७,३,१५२९।३,२,१४;१७४०। ४,५,१; १७५८। १०,७०,७; २००३।

१० ८८,३; २३९९। अथ०१९,६४,१, २३५१ । [इन्द्रः] वा० य० २०,४१; २०१९ । अथ० ४,१४,६; २२२२
बृहत् तिरश्चा वयसा २,१०,४; ४१२
बृहता ज्योतिषा भाति ५,२,९; ७७५
बृहतीः [देवीः द्वारः] १०,११०,५; २००७
बृहत्केतुः ५,८,२; ८२२
बृहत्सूरः ८,५६,५; २४५१
बृहदर्चाः ५,२५,७; ९१७
बृहदुक्षा १०,६९,७; १६३१
बृहद्भाः १,४५,८;१०७।७,८,४;११५२
बृहद्भानुः १,२७,१२;४९। १,३६,१५; ८० । १०,१४,१; १६८४
बृहस्पतिः ३,२६,२; १७५४
बृहस्पतिः [देवता] अथ० १९,४,४; २२१२। २,२९,१; २१४९। ३,२१,८; २३६१
ब्रध्नः ३,७,५; ४९४
ब्रह्मन्– ह्मा २,१,२; ३७० । २,१,३, ३७१ । ४,९,४; ७१५।७,७,५;११४६। ४,४,६; १८१८ ।वा०य० २८,२८; २०९९
ब्रह्मणस्कविः ६,१६,३०; १०७१
ब्रह्मणस्पतिः २,१,३; ३७१
" [देवता] ७,४१,१; २४३७। अथ० ४,४,६; २१६१
भगः त्वम् २,१,७; ३७५ । ६,१३,२: १०१३ । वा० य० २८,३३; २१०४ । [देवता] ऋ० ७,४१,१; २४३७
भद्रः १,६७,२;१४५। १०,३,३;१५०१
भद्रम् ४,१०,१; ७२०
भद्रशोचिः ५,४,७, ७९६ । ७,१४,२; ११७५ । ८,७१,३;१४११।१०,४५,९; १५१७
भन्दमानः सुमन्मभिः ३,२,२ ; १७३८
भन्दमाने [उषासानक्ते] १,१४२,७; १९२४ । ३,४,६; १९५८
भरतम्-त्-तः (द्वि०)१,९६,३, १८८१

भरतस्य अग्निः ७,८,४; ११५२
भरद्वाजे समिधानः ६,४८,७; १०९६
भर्वन् पुरूणि पृथूनि ६,६,२; ९८७
भाः १,४५,८; १०७।४,५,१;१७५८
भाऋजीकः १,४४,३; ८८। ३,१,१२, १४; ४५८,४६०
भाऋजीकः समिधा१०,१५,२: १५१०
भाजयुः २,१,४; ३७२
भाति बृहता ज्योतिषा ५,२,९; ७७५
भानुः ३,२२,२, ६२४। ५,१६,१; ८७१ । ७,४,१; ११३४
मानवः अस्य वपाः अजगः १,१४१,३; ३२०
भारती [देवता । पर. 'तिस्रः देव्यः' १,१४२,९; १९२६ । अथ० ५,२७,९; २०८०
भारती २,७,१; ४४१। २,७,५; ४४५। ६,१३,१९,४५; १०६०,१०८६
भारती त्वम् २,१,११; ३७९
भासाकेतुः १०,२०,३; १५७३
भिषज्-क् वा०य० २८,९; २०९१ । अथ० ५,२९,१; २३०५
भीमः १,७०,११; १८४ । ६,६,५; ९९० । १,९५,७; १८७४
भीमः [वनस्पतिः] वा० य०२१,३९; २०५८
भुज्म १,६५,५; १२८
भुरण्युः १,६८,१; १५४ । १०,४६,७; १६०७
भुवनस्य गर्भः १०,४५,६; १५१४
भूमा देवानाम् २,४,२; ४१७
भूरिः १०,४६,३; १६०३
भूरिजन्मा १०,५,१; १५१३
भूरिपाणिः अथ० ५,२७,१; २०७२
भूर्जयन् १०,४६,५; १६०५
भूर्णिः १,६६,२;१३१।३,३,५; १७४६
भूषन् ३,२५,२; ५३३
भेषजस्य कर्ता अथ०५,२९,१; २३०५
भृगवान् ४,७,४; ६९६
भ्रमिः १,३१,१६; ६५

भेषजः वा०य० २८,३४; २१०५
भोजनः विश्वस्य १,४४,५; ९०
भ्राजमानः ९,५,१०; २२९५ । १०,८८, १६; २४१२
भ्राता ८,४३,१६; १३२५
" [वरुणः] ४,१,२; २४३३
मंहिष्ठः ८,१०३,८; १२३४
मघवत्-वा १, ५८, ९; ११८ । १, १२७, ११; २८२ । १, १४६, ५; ३४२ । २,२,४; ४३३ । ५,१६,३; ८७३। ६,१५,१५: १०३७। ८,१०३,९; १२३५ । वा० य० २८,९; २०९१
मघोनी [उषासानक्ते] ७,२,६; १९७९
मतिः १,९१,८; १६५८
मदः ते शुष्मिनतमः १,१२७,९; २८०
मधुजिह्वः १,४४,६; ९१ । १,६०,३; १२१ । १,१३,३; १९०८
मधुपृच्-क् २,१०,६; ४१४
मधुपर्चीकः १०,११८,४; १६५६
मधुवचाः ४,६,५; ६८५ । ७, ७, ४; ११४५
मधु हस्त्यः ५,५,२; १९६५
मनीषिणां प्रार्पणः १०,४५,५; १५१३
मनुर्हितः ८, १९, २१, २४; १२४४, १२४७ । ३,२,१५; १७४६। १,१३,४; १९०९
मनोता प्रथमः २,९,४; ४०६। ६,१,१; ९३९
मन्द्रः १, २६, ७; ३४ । १, ३६, ५; ७२ । १,१४१,१२; ३१६। १,१४४,७; ३३२ । ३,१,१७; ४६३ । ३,१०,७; ५१५ । ३,१४,१; ५८१ । ४,६,२,५; ६८३,६८६। ४,९,३; ७१४। ५,११,२; ८४४ । ५,१७,२; ८७७ । ६,१,१६; ९४४ । ६,१०,१; ९९३ । ७,७,२,४; ११४३, ११४५ । ७,८,२; ११५० । ७,९,१-२; ११५५-५६ । ७,१०,५; ११६५ । ८, १०३, ६; १२३२ । ८, ४३, ३१; १३४० । ८, ४४, ६;

१३४८। ८,६०,३; १३९१। ८,७४,७; १४४८। १०,६,४; १५१३। १०,११,२; १५५०। १०,४६, ४, ८; १६०४, १६०८। ३,२६,४; १७३०। ३,२,१५; १७४१
मन्द्रजिह्वः ४,११,५; ७३२। ५,२५,२; ९१२। १,१४२,८; १२२५
मन्द्रतरः ३,७,९; ४९८
मन्द्रतमः ५,२२,१; ८९१। ६,११,२; ११०१। ६ ४,७; ९७७। ८,७०,११; १४११
मन्धाता १०,२,२; १४९३
मन्मनि (सप्तमी) १० १२,८; १५५६
मन्मसाधनः-चे: १,९६,६; १८८४
मन्युः १०,८७,१३; १८४०। वा०य० ११,३९; २०५८
मयोभूः [तिस्रः देव्यः] १, १३, ९; १९१४। ५,५,८; १९१४
मरुतः [देवता] १,१९,१-९; २४३८-२४४६। ८,१०३,१४; २४४७
मरुत्वान् [इन्द्रः] १,१४२,१२; १९२९
मरुत्सखा: ८,१०३,१४; २४४७
मर्मृजेन्यः २,१०,१; ४०९
मर्गः १,७७,३; २३६
मर्यश्रीः २,१०,५; ४१३
महत्-हान् १,२७,११; ४८। १,३६,९; ७६। १,३६,१२; ७२। १, ९४, ५; २६०। १,१४६,२; ३३९। ३,१,११-१९; ४५७-६५। ३,६,४; ४८३। ४,७,७; ७९९। ४, ८, २; ७०५। ४, ९, १; ७१२। ५,१,२; ७५६। ६, ४८, ३; १०९२। ८, ६०, ६, १९; १३९४, १४०७। १०,४,२; १५०७। १०,४६,५, १६०५। १०, ७९, १; १६३७। ३,२६,३; १७२९। १,९५,४; १८७१
महयन् द्यावापृथिवी भूरिरेतसा- ३,३,११; १७५२
महयमानः सधस्थानि ३,२५,५; ५३६
महत्-महे (चतुर्थी) १,१२७,१०; २८१। १,१४६,५; ३४२। १,१४९,१; ३५३। ६,१,१०; ९४८। ७,१७,७; १११०
महाम् अनीकम् ४,५,९; १७६६
महाम् आहावम् ६,७,२; १७७४
महागयः ९,६६,२०; साम. २,७,१,१२
महि ३,७,४; ४९३। ४,५,९; १७६६
महिन्तमः १०,११५,६; १६७१
महिम्ना यः उर्वी परिबभूव १०,८८,१४; २४१०
महिरत्नः १,१४१,१०; ३१४
महिव्रतः अस्य ६,३,४; ९६६
महिव्रतः १,४५,३; १०२। १०,११५,३; १६६८
महिषः १०, १४०, ६; १६८९। १,९५,९; १८७६
मही [देवता] पश्य ' देव्यः तिस्रः '।
महीः [देवीः द्वारः] १,१४२,६; १९२३
मही [उषासानक्ते] ७,२,६; १९७९। ९,५,६; १९८६
महा विश्वानि भुवना जजान २,३५,२; २४२३
मातरिश्वा ३,२६,२; १७५४। १ ९६,४; १८८२
मातरिश्वा यत् अमिमीत मातरि ३,२९, ११; ५६८
मातरिश्वने प्रथमः १,३१,३; ५२
माता मानुषाणां सदमित् ६,१,५; ९४३
मातृषु शश्वतीषु वने आसन् ४,७,६; ६९८
मानुषः १,४४,१०; ९५
मानुषाणां अरतिः ७,१०,३; ११६३
मार्जाल्यः ५,१,८; ७६२
मितद्रुः ४,६,५; ६८६।७,७,१; ११४२
मित्रः [देवता] अथ० ३,२१,८; २३६२
मित्रः ३,५,३,९; ४७२,४७८। ५,३,१; ७७९। ५,९,६; ८३३। ७,९,३; ११५७। १०,७९,७; १६४३। ६,८,३; १७८१। १०,८७,१; १८२८
मित्रः अद्भुतः १,९४,१३; २६८। ६,८,३; १७८१
मित्रः त्वम् ७,१२,३; ११७३
मित्रः त्वं दस्मः ईड्यः २,१,४; ३७२
मित्रः त्वया शाशद्रे १,१४१,९; ३१३
मित्रः प्रियः १,७५,४; २२७
मित्रः मर्तेषु १,६७,१; १४४
मित्रः शासा १०,२०,१; १५७२
मित्रः समिद्धः भवति ३,५,४; ४७३
मित्रमहः १,४४,१२; ९७। ८,१९,२५; १२४८। ८,४४,१४; १३५६। १०, ११०,१; २००३। वा० य० २९,२५; २११७
मित्रमहस्-हाः १,५८,८; ११७। २, १,५; ३७३। ६,२,११; ९६२। ६, ३,६; ९६८। ६,१४,६; ९६१। ८, ६०,७; १३९५। ७,५,६; १७९९। ४,४,१५; १८२७
मित्रावरुणौ [देवता] १,३५,१; २४४८। ७,४१,१; २४३७
मित्रियः ८,१९,८; १२३१
मिमाना यज्ञम् [दैव्यौ होतारौ] १०,११०,७; २०१४
मियेधः १०,७०,२; १९९३
मियेध्यः १,२६,१; २८। १,३६,९ ७६। १,४४,५; ९०
मीढ्वान् १,२७,२;३९। २,८,१;३९७। ३,१६,३; ५९६। ४,१५,५; ७५३। ७,१५,१;११७७। ७,१६,३;११९४। ८,१०२,१५; १४७७। ४,५,१;१७५८। १०,१८८,२;१८६४। वा०य०२८,५; २०८८
मुच्यमानः निरेणसः अथ० ११,२,११; २२३८
मुहुर्गीः १,११८,३; २८५
मूर्धा दिवः ६,७,१; १७७३। १,५९,२; १७१८
मूर्धन् भुवनस्य अतिष्ठाः १०,८८,५; २४०१
मूर्धा भुवः अग्निः नक्तं भवति १०,८८,६; २४०१

मूर्धा रयीणाम् ८,७५,४; १३७६
मृगः स ईम् १,१४५,५; ३३७
मृज्यमानः नृभिः १०,६९,७; १६३१
मृष्यते न प्रथमं ना परं वचः१,१४५,१; ३३४
मृळयत्तमः १,९४,१४; २६९
मेधाकारः १०,९१,८; १६५८
मेधिरः १,३१,२; ५१ । १,१२७,७; १७८ । ३,१,३; ४४९।३,११,४;६२१। १,१४१,११; १९१८
मेध्यः ५,१,१२; ७६६
यक्ष्यः ८,६०,३; १३९१
यजत्-न् ५,८,१, ८२१
यजन् यज्ञैः वा०य० २९,२७; २१११
यजन्तौ [दैव्यौ होतारौ] देवान् २,३,७; १९४८
यजतः४,१,१; ६३११ ७,२,२; १९७५
यजतः रयीणाम् ६,१,८; ९४६
यजत्रः१,७६,४; २३२। १,१८९,३,७; ३६३-३६७। ३,१४,२;५८२। ३,२२,२; ६२४ । ६,११,७; १००७। ७,१४,२; ११७५ । १०, ११, ८; १५४७ । १०,४६,९-१०; १६०९-१०
यजिष्ठः १,३६,१०; ७७। १,४४,५; ९० । १,५८,७; ११६ । १,७७,१; २३४। १,१२८,१; २८३। १,१४९,४; ३५६ । २,६,६; ४३८ । ३,१०,७; ५१५ । ३,१३,१; ५७४ । ४,१,४; ४,१.१९; ६०५ । ४,२,१; ६४७ । ४,७, १, ५; ६९३-६९७ । ४,८,१; ७०४ । ५,१४,२; ८६१ । ७,१५,६; ११८२।८,१९,३,२१; १२२६,१२४४। ८,६०,१,३; १३८९,१३९१।१०,२,५; १४९६। १०,६,४; १५२३। १०,४६,८; १६०८। १०,११८,९; १८६१
यजिष्ठः देवानां उत मर्त्यानाम् ६,१५,१३; १०३५
यजीयान् २,९,४; ४०६ । ३,१९,१; ६१० । ४, ६, १-२; ६८२-८३ । ५,१,५-६; ७५९-६०। ५,३,५;७८२। ६,१,२,६; ९४०,९४४ । १०,१२,२; १५५०। १०,४३,१-२; १६१६-१७। ३,४,३; १९५५।वा०य० २९,२८,३४; २१२०,२१२६
यज्ञः ७,१६,२; ११९३ । १०,४६,३; १६०४ । १०, ५३, ३; १६१८ । १,१८८, २; १९३२। १०, ८८, ८; २४०४
यज्ञः सः १०,७,३; १५७३
यज्ञं तन्वानः ३,३,६; १७४५
यज्ञं मिमाना [दैव्यौ होतारौ] १०,११०,७; २०१४
यज्ञं विशिक्षुः २,१,१०; ३७८
यज्ञस्य केतुः३,११,३; ५२० । ३,२९,५; ५६२ । ५,११,२; ८४३ । ६, २, ३; ९५४ । १०, १२२, ४; १६७८ । ६,७,२; १७७४ । १,९६,६; १८८४
यज्ञस्यय यज्ञस्य केतुः १०,१,६; १४८९
यज्ञस्य साधनः ८,२३,९; १२७८
यज्ञानां केतुः ८, ४४, १०; १३५२ । ३,३,३; १७४४
यज्ञानां नाभिः ६,७,२; १७७४
यज्ञानां पिता ३,३,४; १७४५
यज्ञनीः १,१५,१२; २३
यज्ञवन्युः ४,१,९; ६३५
यज्ञवृध् अथ० ४,२३,३; २३३२
यज्ञसाधः १,१२८,२; २८४। १,९६,३; १८८१
यज्ञसाधनः १, १४५, ३; ३३५ । ३,२७,२,८; ५३८,५४४
यज्ञासाहः यज्ञसाहः १०,२,७; १५७७
यज्ञियः ३,१,२१; ४६७ । ४,१५,१; ७४९ । ५,१२,१; ८४८ । ६, १६, ४; १०४५ । ८, १०३, ११; १३६७ । ८,३९,७; १३०६ ।८,७५,३; १३७५। १०, २१, १; १५४० । ३, २, १३; १७३९ । १,१४२,३; १९२०
यज्ञियः प्रथमः ८,२३,१८; १२८७
यज्ञिये [उषासानक्ते] ७,२,६; १९७९
यज्वन्-ज्वा ३,१४,१; ५८१। ६,१५, १४; १०३६
यत् (यन्) वृतेव बहुभिः वसव्यैः ६,१,३; ९४१
यतमः यतमानः सूर्यस्य रश्मिभिः ५,४,४; ७९३
यतिः मतीनाम् ७,१३,२; १८२०
यन्ता १०,९६,१; १६०१
यन्ता धीनाम् ३,३,८; १७४०
यन्ता यज्ञानाम् ३,१२,३; ५७६
यन्तुरः ३,२७,११; ५४७। ८,१९,२; १२२५
यमः १,६६,८; १४१
यमः रथानाम् ८,१०३,१०; १३६६
यमति जन्मनी उभेयः १,१४१,११; ३१५
यविष्ठः १,२२,१०; २५ । १,२६,२; २९ । १,४४,४; ८९ । १, १४१, ४, १०; ३०८,३१४। १,१४७,२; ३४४। १,१८९,४; ३६४ । २,६,६; ४३८ । २,७,१; ४४१ । ३,१५,३; ५९० । ३,१९,४; ६१३ । ४, २, १०, १३; ६५६,६५९ । ४,२,३-४; ७३६-३७। ५,१,१०; ७६४ । ५,३,११; ७८८ । ६,५,१; ९७९ । ६, ६, २; ९८७ । ६,१५,१४; १०३६। ६,४८,८; १०९७। ७,१,३; ११०२ । ७,३,५; ११२८ । ७,४,२; ११३५। ७,७,३; ११४४। ७,१०,५; ११६५। ७,१२,१; ११७१। ८, २३, २८; १२९८ । ८, ८४, ३; १४५६। १०,१,७; १४९१ । १०,२,१; १४९२ । १०, ४, २; १५०७ । १०,४५,९; १५९७ । १०, ६९, १०; १६३४ । १०, ८०, ७; १६५० । ४, ४, ६, ११; १८१८, १८२३ । १०,८७,८; १८३५। अथ० ५,२९,४; २३०८
यविष्ठः सुजाम् १०,२०,२; १५७२
यविष्ठ्य १,३६,६, १५; ७३,८० । १, ४४, ६; ९१ । ३,१,६; ५८५ ।

३,२८,२; ५५३ । ५, ८, ६; ८२६ । ५,२६,७; ९२६ । ६,१६,११; १०५२ । ६, ४८, ७; १०९६ । ७, १६, १०; ११०१ । ८, ७५, ३; १३७५ । ८, ६०, ४, ८; १३९२, १३९६ । ८, १०२, ३, २०; १४६५, १४८२ । अथ० १९,६४,३; २३५३

यशस्-शाः १,६०,१; ११९ । ८,२३,३०; १२९९ । अथ० ३,२१,५; २३५९ । [इन्द्रः] वा० य० २०,४४; २०२२

यशस्तमः २,८,१; ३९७ । ७,१६,४; ११९५

यशस्तमः, अध्वरां होतॄणाम् ८,१०२,१०; १४७२

यह्वः १, ३६, १; ६८ । ३, १, १२; ४५८ । ३,५,९; ४७४, ४७८ । ३,२८,४; ५५५ । ४,७,११; ७०३ । ७,८,२; ११५० । १०,११,१; १५४० । ३,२६,९; १७३५ । ३,३,८; १७४९ । ४,५,२; १७५२ । ७,६,५; १८०७ । १०, ११०, ३; २००५ । वा० य० २९,२८; २१६०

यह्वी [उषासानक्त] १, १४२, ७; १९२४ । ५,५,६; १९६९

यातयज्जनः ८,१०२,१२; १४७४

यातुमान् अथ० १,७,४; २२८७

युक्तः अथ० ५,२९,१; २३०५

युजानः नमः १,६१,१; १२४

युवा १,१२,६; १५ । १,१४४,४; ३२९ । ३,२३,१; ६२७ । ४,१,१२; ६३८ । ५,१,६; ७६० । ६,५,१; ९७९ । ७,१५,२; ११७८ । ८,४४,२६; १३६८ । ८,१०२,१; १४६३ । १०,४६,३; १६०३

युवा आ भूत् मुहुः जुजुर्वाः २,४,५; ४२०

योषणे दिव्ये [उषासानक्त] ७,२,६; १९७९ । १०,११०,६; २००८

रंसुजिह्वः ४,१,८; ६३४

रक्षिता अमृतस्य ६,७,७; १७७९

रक्षोहा [अग्निदेवता] ४,४,(१-१५); १८१३-१८२७ । १०,८७,(१-२५); १८२८-५२ । १०,११८,(१-९); १८५३-६१ । १०,१६२,(१-६); २४१६-२४२१

रक्षोहा अथ० १,२८,१; २२९३ । ४,२३,३; २३३२

रघुपत्वन्-त्वा १०,६,४; १५२३

रघुयत्--न् ४,५,९; १७६६

रघुद्य (स्य) द् ३,२६,२; १७५४

रघुपद् गुहा ४,५,९; १७६६

रजः आततन्वान् शुक्रेभिः अङ्गैः ३,१,५; ४५१

रजसा विमानः ३,२६,७; १७५६

रण्वः १,६५,५; १२८ । १,६६,३; १३६ । १,१४४,७; ३३२ । २,४,६; ४२१ । ४,७,५; ६९७ । ६,२,७; ९५८ । ३,२६,१; १७५३

रण्वः कुत्राचिद् ६,३,३; ९६५

रण्वः दुरोणे १,६९,४-५; १६७-६८

रण्वः सदा ४,१,८; ६३४

रण्व संदृश् ६,१६,३७; १०७८ । ७,१,२१; ११२०

रत्नधा ७,१६,६; ११९७

रत्नधातमः १,१,१; १ । ५,८,३; ८२३

रत्ना दधानः दमेदमे अक्ष ५,१,५; ७५९

रथः ३,११,५; ५२२

रथप्रा ८,७४,१०; १४५१

रथयुः १०,७,५; २००१

रथिरः ७,७,४; ११४५ । ३,२६,१; १७५३

रथीः ३,२,८; १७३४ । ३,३,६; १७४७

रथीः अध्वराणाम् १,४४,२; ८७ । ८,११,२; १२१५

रथीः ऋतोः ४,१०,२; ७२१

रथीः यज्ञानाम् ८,४४,२७; १३६९

" वार्याणाम् ६,५,३; ९८१

रथ्यः ६,७,२; १७७४

रभस्वान् १०,३,७; १५०५

रयिः ९,५,३; १९८३

रयिः इव श्रवस्यते १,१२८,१; २८३

रयिः त्वम् २,१,१२; ३८०

रयिः महिषी त्वत् उदीरते ५,२५,७; ९१७

रयीणां दाशत् १,७०,५; १७८

" धरुणः १,७३,४; २०८ । १०,५,१; १५१३ । १०,४५,५; १५९३

रयीणाम् पतिः १,६०,५; १२३ । १,६८,७; १६० । ३,७,३; ४९२ । ८,७५,४; १३७६

रयीणाम् रथ्यः ७,५,५; १७९८

रयीणाम् रयिपतिः १,७२,१; १९५ । २,९,४; ४०६ ।

रयीणाम् रयिवित् ३,७,३; ४९२

रयीणाम् राजा ८,१९,८; १२३१

रयीणाम् सदनम्(नृ च पुरा च) ६,७,२; १७७४ । (१,९६,७; १८८५)

रयिपतिः १,६०,४; १२२

रयिवान् ६,५,७; ९८५

रयिवित् २,१,३; ३७१

रयिवित् रयीणाम् ३,७,३; ४९२

रराणः ३,१,२२; ४६८ । ४,२,१०; ६५६ । ४,१,५; २४५२

रराणः [त्वष्टा] ३,४,९; १९६१ । ७,२,९; १९६१

रराणः वसु [सविता] अथ० ७,११५,२; २२०२

रवः वृषभस्य इव ते १,९४,१०; २६५

रशनां बिभ्रत् वा० य० २८,३३; २१०४

राजत् (न्) राजन्तम् (द्वि०) १,१,८; ८ । १,४५,४; १०३ । ६,१,८,१३; ९४६,९५१ । ८,१९,२२; १२४५ । १०,१,६; १४९० । १०,३,१; १४९९ । १०,४,१; १५०६ । ३,२६,४; १७३० । ६,७,३; १७७५ । ६,८,५; १७८४ । १०,८७,२१; १८४८ । [वनस्पतिः] वा० य० २१,३९; २०५८

राजसि त्वं दिव्यस्य १,१४४,६; ३३१

राजन् (राजा) २,१,८;३७६।६,१२,२; १००७ । ६,१५,१३; १०३५।७,८.१; ११४९।१०,१२,५;१५५३।१०,४५,५; १५९३ । १०,८७,३; १८३०
राजन् अध्वरस्य ४,३,१; साम०१,१,७,७
राजा [वरुणः] ४,१,२; २४४९
राजा [सोमः] अथ०२,३६,३; २३४०
राजा कृष्टीनां मानुषीणाम् १,५९,५; १७२१
राजा पर्वतेषु ओषधीषु मानुषीषु वा १,५९,३; १७१९
राजा भुवनानाम् १,९८,१; १७२४
राजा मर्त्यानाम् ३,१,१८; ४६४
राट् (राळ्) बर्हिषः ६,१२,१;१००६
रातहव्यः नमसा४,७,७; ६९९
रातिः वामस्य १०,१४०,५; १६८८
रात्री [देवता] १,३५,१; २४४८
राध्याश्चिदन्धः अति पश्यसि १,९४,७; २६२
रायः ईशिषे २,१,१०; ३७८
रायः पतिः १,१४९,१; ३५३
रायः बुध्नः १,९६,६; १८८४
राष्ट्रभृत् अथ० ७,१०९(११४), ७; २३७० । ६,११८,२; २३८२
रिप्रवाहः १०,१६,९; १५३५
रिशादस् (दाः) १,७७,४; २३७
रिशादसः [मरुतः] १,१९,५; २४४२
रीतिः अपाम् ६,१३,१; १०१२
रुक्मः १०,४५,८; १५१६ । १,९६,५; १८८३
रुक्मी १,६६,६; १३९
रुक्षः ६,३,७; ९६९
रुचानः दुर्मर्षम् १०,४५,८; १५९६
रुचानः सुरुचा ३,१५,६; ५९३
रुद्रः ८,७२,३; १४२६ । ३,२,५; १७३१ । ४,३,१; साम० १,१,७,७; अथ० १९,५५,५; २२७३
रुद्रः [देवता] ७,४१,१; २४३७
रुद्रः त्वं असुरः महः दिवः २,१,६;३७४
रुरुक्वान् १,१४९,३; ३५५
रुरुचानः भानुना ज्योतिषा ३,२६,३; १७२९
रुशत् (न्) ४,७,९; ७०१ । ६,१,३; ९४१ । ६,६,१; ९८६ । ८,७२,५; १४२८ । १०,१,५; १४८९
रुशद् वसानः ४,५,१५; १७७२
रुशदूर्मिः १,५८.४; ११३
रूपं त्वेषं कृणुते १,९५,८; १८७५
रूपं न ददृशे एकस्य [वायु देवता] १,१६४,४४; २४५६
रूपाणि बिभ्रत् पृथक् वा०य०२८,३२; २१०३
रूपे (सप्तमी) ४,११,१; ७२८
रूरः अथ० १,२५,४; २१७८
रेजमानः १०,६,५; १५२४
रेतः दधत् १,१२८,३; २८५
रेभत् ८,४४,२०; १३६२
रेरिहत् क्षामा १०,४५,४; १५९२
रेवत् ३,२३,२; ६२८
रोचनस्थः (स्याम्) ६, ६, २; ९८७ । ३,२,१४; १७४०
रोचनानां उत्तमः ३,५,१०; ४७९
रोचमानः ७,२,९; ११३२ । १०,३,५; १५०३ । १०,११८,४; १८५६
रोदसी अधीवासः वावसाने १०,५,४; १५१६
रोदसी आ अपृणाः जायमानः ३,६,२; ४८१
रोदस्योः जनिता १,९६,४; १८८२
रोदस्योः राज्यम् ७,६,२; १८०४
रोरुचानः ४,१,७; ७३३
रोहिदश्वः ४,१,८; ६३४ । ८,४३,१६; १३२५
रौद्रः १०,३,१; १४९९
वज्रः [देवता] अथ०१९,६६,१; २३५०
वज्रबाहुः [इन्द्रः] वा०य०२०,३६,३८; २०१४,२०१६
वज्रहस्तः वा०य० २८,३; २०८६
वत्सः १,७२,२; १९६ । १०,८,२; १५३५
वत्सः चरन् ८,७२,५; १४९८
वत्सः पृथिवी धेनुः तस्याः अथ० ४,३९,२; २२८१
वद्मा ६,४,४; ९७४ । ६, १३, ६; १०१७
वध्र्यश्वः १०,६९,१; १६२५
वनर्गुः १,१४५,५; ३३७
वनर्षद् १०,४६,७, १६०७
वनस्पतिः[देवता]१,१३,११; १९१६ । १,१४२,११; १९२८ । १,१८८,१०; १९४० । २,३,१०; १९५१ । ३,४,१०, १९६२।५,५,१०; १९७२।७,२,१०; १९६२ । ९, ५, १०; १९९० । १०,७०,१०; २००१। १०,११०,१०; २०१२ । वा० य० २०, ४५, ६६; २०२३, २०३५ । २१, २१, ३९; २०४६,२०५८। २७, २१; २०७० । २८, १०, ३३; २०९३, २१०४ । २९,१०,३५; २११५,२१२७। ऋ०प्रैष ११; २१३९ । अथ० ५,२७,११; २०८२ । ५,१२,१०; २०१२
वनस्पतीनां अधिपतिः अथ० ५,२४,२; २१६६
वनस्पतीनां सूनुः ८,२३,२५; १२९४
वनाम् (द्वि०) १०,४६,५; १६०५
वना कायमानः ३,९,२; ५०१
वनानां गर्भः १,७०,३; १७६
वनिता मघम् ३,१३,३; ५७६
वनिष्टः ७,१०,२; ११६२
वनेजाः ६,३,३; ९६५ । १०,७९,७; १६४३ ।
वनेवने शिश्रियाणः ५,११,६; ८४७
वन्यः १, ३१, १२; ६१ । २, ७, ४; ४४४। १०,४,१;१५०६। १०,११०,३; २००५
वन्द्यः विश्वासु धीषु १,७९,७; २५०

वन्यः वा०य० २९,२८; २११०
वन्वन् महित्वना ६,१२,४; १००९। ६,१६,१०; १०६१
वपते संवत्सरे एकः १, १६४, ४४; २४५६
वपावान् ६,१,३; ९४१
वपावान् [इन्द्रः] वा० य० २०, ३७; २०१५
वपुः १,१४१,२; २९३
वपुष्टरा (रौ) [दैव्यौ होतारौ] २,३,७; १९४८
वपुष्यः ४,१,८,१२, ६३४, ६३८। ५,१,९; ७६३
वयः त्वं उत्तमम् २,१,१२; ३८०
वयः कृण्वानः स्वापै तन्वे ५, ४, ६; ७९५
वयस्कृत् १०,७,७; १५३२
वयुनम् ३,३,४; १७४५
वयुनानि विद्वान् १,७२,७; २०१
वयुना व्यब्रवीत् मर्त्येभ्यः १,१४५,१; ३३७
वयोधाः १,७३,१, २०५। ८,७२,४; १४२७। १०,७,७; १५३३। वा०य० २८,२४-३४; २०९५-२१०५
वयोधाः [त्वष्टा] २,३,९; १९५०
वयोवृधा[उपासानक्ते]५,५,६; १९६९
वरुणः [देवता] ४,१,२,५; २४४९, २४५२। १,३५,१; २४४८। ७,४१,१; २४३७ अथ० ३,२१,८; २३६२
वरुणः २,१,४; ३७२। ३,५,४;४७३। ५,३,१; ७७९। १०,२२,८; १५५६ वा०य० २८,३४; २१०५
वरुणः त्वम् ७,१३,३; १८१२
वरुणः धृतव्रतः त्वया १,१४१,९; ३१३
वरुणस्य पुत्रः अथ० १,२५,३; २२७७
वरूथ्यः ५,२४,१; ९०७
वरेण्यः १,२६,२-३,७; २९-३०,३४। १,५८,६; ११५। १,६०,४; १२२। २,७,६;४४६। ३,२७,९-१०;५४५-४६। ५,८,१; ८२१। ५, १३, ४; ८५७। ५,२२,३; ९०१। ५,२५.३; ९१३। ८,१०२,१८; १४८०। १०,९१,१; १६५१। १०, १२२, ५; १६७९। वा०य० २१,१२; २०३७। २८,२४; २०९५
वरेण्यः होता १,२६,२; २९
वरेण्य क्रतुः ८.४३,१२; १३२१
वर्चोधाः अथ० ३,२१,५; २३५६
वर्तनिः ३,७,२, ४९१
वर्धनः १०,९१,१२; १६६२
वर्धनः आर्यस्य ८,१०३,१; १२५७
वर्धमानः तन्वा ६,९,४; १७९०
वर्धमानः स्वे दमे १,१,८, ८
वर्पः अस्य महि भसत् ६,३,४; ९६६
वर्षिष्ठः ५,७,१; ८११
वशान्नः ८,४३,११; १३२०; अथर्व० ३,२१,६; २३६०
वशिः वा०य० २८,३३; २१०४
वशी अथ० ६,३६,२; २१८२
वषट् कृतिं जुषाणः ७,१४,३; ११७६
वसतिः ६,३,३; ९६५
वसत्रः अथ० ५,२७,६; २०७७
वसव्यैः यन् बहुभिः ६,१,३; ९४१
वसानः रुशत् ४,५,१५; १७७२
वसानः वस्त्राणि पेशनानि १०,१,६; १४९०
वसानः विद्युतम् २,३५,९, २४३०
वसिष्ठः २,९,१;४०३।७,१,८;११०७। अथ० ६,११९,१; २३८४
वसुः १,३१,३; ५२। १,४४,३; ८८। १,४५,९, १०८। १,६०,४; १२२। १,७९,५; २४८। १,१२७,१; २७२। १,१२८,६; २८८। १,१४३,६;३२३। २,७,१; ४४१। ३,१५,३; ५९०। ३,१८,२; ६०६। ३,२१,५; ६२२। ४,१२,६; ७३९। ५,३,११; ७८९। ५,६,१-२; ८०१-२।५,२४,२; ९०८। ५,२५,१; ९११। ६,१,१२, ९५०। ६,२,१; ९५२। ६,१६,२४, १०६५। ६,४८,९, १०९८। ८,१९,११,२६, २८-२९; १२३५,१२४९,१२५१-५२। ८, १०३, ४, १२-१३, १२६०, १२६८-६९। ८,२३,२८; १२९७। ८, ४४, २४, ३०; १३६६, १३७२। ८, ६०, ४; १३९२। ८,७९,९,१३, १४१७,१४२१। १०,७,२; १५२८। १०,८,४; १५३७।१०,४५,५; १५९३। १०,९१,१२;१६६२।४,५,१५;१७७२। वा० य० २७,१५; २०६४। अथ० १९,१५,२; २२७०
वसुः नेमानाम् ६,१६,१९; १०५९
वसुदानः अथ० १९,५५,३; २२७१
वसुदावन्-वा २,६,४; ४३६ २,६,४, ४३६
वसुधातमः वा० य० २७,१५; २०६४
वसुधातरः अथ० ५,२७.६; २०७७
वसुधितिः १,१२८,८; २९०
वसुपतिः २,१,११; ३७९। २,६,४; ४३६। ८,४४,२४; १३९६
वसुविद् ८,२३,१६; १२८५; साम० १,६,१३,१
वसुवित्तमः१,४५,७; १०६।६,१६,४१; १०८२
वसुश्रवाः ५,२४,२; ९०८
वसुभिः इध्यमानः ५,३,८; ७८५
वसूनां अरतिः विश्वेषाम् १,५८,७; ११६
वसूनां ईशानः ७,७,७; ११४८
वसूनां ईशे १,१२७,७; २७८। ८,१, ८; १४१६
वसूनां वसुः १,९४,१३; २६८। १०,९१.३; १६५३
वसूनां वसुपतिः ५,४,१; ७९०
वसूनां संगमनः १,९६,६; १८८४
वसाम् राजा ५,२,६; ७७२
वस्यः १,१४१.११; ३१६
वस्यः आ प्रणेता २,९,२; ४०४

वस्त्राणि वसानः पेशनानि १०,१,६; १४९०
वस्वः १,१४३,४; ३२१ । ५,१५,१; ८६६
वहन् नमः १,६५,१; १२४
वह्निः १,६०,१; ११९ । १,१२८,४; १८६ । ३,११,४; ५२१ । ७,७,५; ११४६ । ७,७,१२; १२०३ ।८,४३, १०; १३२९ । १०,११,६; १५४५ । अथ० ५,२,७; २०७५ । १२,२,४७; २२६०
वह्निः आसा ६,११,२,१००१; ६,१६, ९, १०५० । ७,१६,९; १२०० । १०,११५,३; १६६८
वह्नितमः ४,१,४; २४५१
वाजः त्वम् २,१,१२; ३८०
वाजस्य ईशानः १,७९,४; २४६
वाजस्य पतिः १,१४५,१; ३३३
वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि १,३६,१२;७९
वाजपतिः ४,१५,३; ७५१
वाजश्रवस्-वाः ३,२६,५; १७३१
वाजसातमः १,७८,३; २४१ । ५,१३, ५; ८५८ । ५,२०,१; ८९१
वाजाः त्वद् उदीरते ५,२५,७;९१७
वाजिनं वहन् वा०य०२९,१; २२०६
वाजिन्तमः १०,११५,६; १६७१
वाजी २,१०,१, ४०९ । ३,२७,३,८; ५३९,५४४ । ३,२९,७, ५६४ । ५,१,४; ७, ७५८,७६१ । ८,४३,२०,२५; १३२९,१३३४ । ८,८४,८; १४६१ । १०, १२२, ४, ८; १६७८,१६८२ । ३,२,१४;१७४० । १०,८७,१; १८२८ । १०,१८८,१; १८६३ । वा० य० २९,१-२; २२०६-७
वाजी [इन्द्रः] अथ० ५,२९,१०;२३१४
वाजी त्वां याति ६,२,२; ९५३
वाजी वाजेषु धीयते ३,२७,८; ५४४
वातः [वायु देवता] ८,१८,९;२४५७
वातचोदितः १, ५८, ५; ११४ । १,१४१,७; ३११
वातजूतः १,५८,४; ११३ । १,६५,८; १३१
वातस्वनः ८,१०२,५; १४६७
वातस्य सर्गः अभवत् सरीमणि ३,२९, ११; ५६८
वातोपधूतः १०,९१,७; १६५७
वाह्यश्वः १०, ६९, १२, ९; १६३६, १६३३
वामः १०,१२२,१; १६७५
वायुः १०,४६,७; १६०७
वायुः [देवता] १०,१४२,१२; १९२९ । १,१६४,४४; २४५६
वार्याणाम् ईशे ८,७१,१३; १४२१
वावशानः १०,५,५; १५१७
वावृधानः ५,२,१२; ७७८ । ५,३,१०, १२; ७८७,७८९ । ५,८,७; ८२७ । ५,२७,२; ९२९ । ७,५,२; १७९५ । अथ० ५,२८,४; २२७०
वावृधानः पर्वभिः १०,७१,७; १६४३
वावृधानः पुरोरुचा [इन्द्रः] वा० य० २०,३६; २०१४
वावृधानः प्रजापतेः तपसा वा० य० २९,११; २२१६
वावृधानः ब्रह्मणा अथ० १,८,४; २२९२
वावृधानः वरेण ७,५,२; १७९५
वावृधानौ दमेदमे सुष्टुत्या [अग्नाविष्णू] अथ० ७,२९(३०),२; २४५४
वाशीमान् १०,२०,६; १५७६
विः ३,५,६; ४७५
विकसुकः अथ० १२,२,१४; २२४०
विगाहः ३,३,५; १७४६
विचक्षणः ३,३,१०; १७५१
विचर्षणिः १,३१,६; ५५ । १,७८,१; २३९ । १,७९,१२; २५५ । ६,२,१; ९५२ । ६,१६,२९,३६; १०७०,१०७७ । ८,४३,२; १३११ । ३,२६,८; १७३४
विचेताः २, १०, १-२; ४०९-१० । ४,७,३; ६९५ । ५, १७, ४; ८७९ । १०,७९,४; १६४० । ४,५,२; १७५९
विजावन् १,६९,३; १६६ । १०,२,५; १४३६
वितपन् अरातिम् अथ० १२,२,४५; २२५८
विदथस्य प्रसाधनः १०,९१,८; १६५८
विदथस्य साधनम् ३,३,३; १७४४
विदानः २,९,१; ४०३
विदिद्युतानः ६,१६,३५; १०७६
विदुष्टरः ४,७,८; ७०० । ६,१५,१०; १०३२ । ६,१६,९; १०५० । ७,१६,९; १२०० । ८, ७५, २; १३७४ । १०,७०,७; २००३
विदुष्टरौ [दैव्यौ होतारौ] २, ३, ७; १९४८
विद्मना जिगाति अन्तः विश्वानि जनूंषि ७,४,१; ११३४
विद्युद्रथः ३,१४,१; ५८१
विद्वान् १,१४५,५; ३३७ । २,६,७; ४३९ । ३,२५,२; ५३१ । ३,२९,१६; ५७३ । ३,१४,२; ५८२ । ३,१७,३; ६०२ । ४,२,११; ६५७ । ४,३,१६; ६८१ । ४,७,८; ७०० । ५,१,११; ७६५ । ५,४,५; ७९४ । ७,१,२४; ११२३ । ७,७,१; ११४२ । १०,१,३; १४८७ । १०,२,१,३; १४९२,१४९४ । १०,१,४; १४९५ । १०,५,५; १५१७ । १०,७०,९-१०; २०००-१ । ४,१,४; २४९१ । अथ० ५,२९,५; २३०९ । ३,१,१; २१५२ । ३,२,१; २१५६
विद्वान् अन्तः अध्वनः देवयानान् १,७२,७; २०१
विद्वान् आरोधनं दिवः ४,८,४; ७०७
विद्वान् आर्त्विज्या विश्वा १,९४,६;२६१
विद्वान् काव्यानि विश्वा ३,१,१७-१८; ४६३-६४ । १०,९१,५; १५८५
विद्वान् देवानां जन्म मर्तान् च १,७०,६; १७९
विद्वान् जन्मानि ७,१०,२; ११६२

विद्वान् पितृयाणं पन्थाम् अनु प्र १०,२,७; १४९८
विद्वान् यज्ञस्य १०,५३,१: १६१६
विद्वान् वयुनानि १,७२,७; २०१
विद्वान् विश्वा वयुनानि १,१८९,१; ३६१ । ३,५,६; ४७५ । ६,१५,१०; १०३२ । १०, १२२, २; १६७६ । अथ० ४,३९,१०; २२८३
विधर्ता २,१,३;३७१। ७.७,५;११४३
विपश्चित् ३,२७,२; ५३८ ।
विपाश्चितां असुरः ३,३ ४; १७४५
विपां ज्योतींषि बिभ्रत् ३,१०,५; ५१३
विपोधाः १०,४५,५; १६०५
विप्रः १, १२७, १-२; २७२-७३ । १,१५०,३; ३६० । ३,५,१,३; ४७०, ४७२। ३,२७,८; ५४४। ३,२९,७; ५६४ । ३,१३,३; ५७६ । ३,१४,५; ५८५ । ४,३,१६; ६८१ । ४,८,८; ७११ । ५,१,७; ७६१। ६,१३,३; १०१४। ६,१५,४,७; १०२६, १०२९। ८,११,६;१२१९। ८,१९,१७;१२४०। ८,३९,९; १३०८।८,४३,१; १३१०। ८,४३,१४; १३२३। ८,४४,१०,२१; १३५२,१३६३ । ८,७१,५; १४१३ । ३,२,१३; १७३९। ३,२६,२; १७५४। १०,८७,२२,२४; १८४९,१८५१
विप्रवीरः १०,१८८,२; १८६४
विभाति अप्सु अन्तः २,३५,७-८; २४२८-२९
विभाति सुसंदृशा भानुना ७, ९, ४; ११५८
विभानुः ८,१०२,२; १४६४
विभावसुः १,४४,१०;९५।५,२५,२,७; ९१२,९१७ । ८,४३,३२; १३४१ । ८,४४,६,१०,२४; १३४८, १३५२, १३६६ । १०, १४०, १: १६८४ । ३, २६, २; १७२८ । १०, ११८, ४; १८५६
विभावा १,५८,९; ११८। १,६६,२; १३५।१,६९,९; १७२। १,१४८,४; ३५१ । ४, १, ८, १२; ६३४,६३८ । ५,१,९; ७६३। ५,४,२;७९१। ६,४,२; ९७२ । ६,१०,१; ९९३ । ६,११,४; १००३। १०,६,१-२; १५२०-२१। १०, ८, ४; १५३७ । १०, ९१, १; १६५१। १,५९,७; १७२३। ३,३,९; १७५०। १०,८८,५; २४०३
विभूतरातिः ८,१९,२; १२२५
विभूषन् उभयान् ६,१५,९; १०३१
विभ्वः विशेविशे ४,७,१; ६९३
विभ्वा १०,३,६; १५०४
विमानः रजसः ३,२६,७; १७५६
विमानम् ३,३,४; १७४५
विमृष्टः १०,८८,१६; २४१२
विरप्शी शोचिषा १०,११५,३; १६६८
विराट् अथ० ७,८४,१; १८६६
विरूपः ३,१,१३, ४५९
विरूपे [उषासानक्ते] ३,४,६; १९५८
विरोचमानः १,९५,२; १८६९
विवस्वान् ७, ९, ३; ११५७। साम० १,१,१,१०
विविचिः ५,८,३; ८२३
विविद्वान् ४,५,३; १७६०
विशां ईड्यः ८,२३,२०; १२९९
विशां केतुः १०,१५६,५; १७०७
विशां गोपाः १, ९४, ५; २६० । १,९६,४: १८८२
विशां पतिः विश्वासाम् १, १२७, ८; २७९ । ६,१५,१; १०२३
विशां प्रियः ५,१,९; ७६३
विशांराजा २,२,८;३९२।८,४३,२४; १३३३
विशः राजा ६,८,४; १७८३
विशां विश्पतिः ३,१३,५; ५७८
विश्पतिः १,१२,२; ११ । १,२६,७; ३४ । १,२७,१२; ४९ । १, ६०, २; १२० । १,१२८,७; २८९ । २,१,८; ३७६ । ५,६,५; ८७६ । ६, १, ८; ९४६ । ६,२,१०; ९६१ । ६,१५,८; १०३० । ७,४,७; ११४० । ७,१५,७; ११८३ । ७,७,४;११४५ । ८,१०३,७; १२६३। ८,२३,१३-१४; १२८२-८३। ८, ४४, २६; १३६८ । ८, ६०, १९; १४०७ । ३,३,८; १७४९
विश्पतिः मानुषीणां विशाम् ५,४,३; ७१२ । ३,२,१०; १७३६
विश्पतिः शश्वतीनां विशाम् ६,१,८; ९४६
विश्वः १०,९१,२; १६५२
विश्वः १,१२८,६; २८८। १०,८७,१५; १८४२ । वा०य० २८,२९; २१००
विश्वकर्मा अथ० २,३४,३; २१५१ । २,३५,१; २२७९
विश्वकर्मा [देवता] अथ० २, ३५, १; २२७९
विश्वकृत् अथ० ६,४७,१; २३७२
विश्वकृष्टिः १,५९,७; १७२३
विश्वचर्षणिः १,२७,९; ४६ । ५,६,३; ८०३ । ५,१४,६; ८६५ । ५,२३,४; ९०६ । ३,२,१५; १७४१
विश्वतः प(स्प)तिः ९,५,१; १९८१
विश्वतः परिभूः १,९७,६; १८९२
विश्वतः पृ(स्पृ)थुः २,१,१२; ३८०
विश्वतः प्रत्यञ्च्-ङ् ७,१२,१; ११७१
विश्वतः मानवः यन्ति १,९७,५; १८९१
विश्वतः (तो) मुखः १, ९७, ६-७; १८९२-९३
विश्वतूर्तिः २,३,८; १९४९
विश्वदर्शतः १, ४४, १०; ९५ । १,१४६,५; ३४२ । ५,८,३; ८२३ । १०,१४०,६; १६८९
विश्वदाव्यः अथ० ३, २१, ३, ९; २३५७,२३६३
विश्वदेवः १,१४२,१२; १९२९
विश्वदेव्यः १,१४८,१;३४८। ३,२६,५; १७३१
विश्वधायाः १,७३,३: २०७। ५,८,१; ८२१। ७,४,५; ११३८
विश्वभरस्-राः ४,१,१९; ६४५

विश्वमानवः [मरुतः] ४,१०,३; २४५०
विश्वभृत् अथ०.५,२८.५; २१७१
विश्वमिन्वः ३,२०,३; ६१६
विश्वमिन्वाः [देवीर्द्वारः] १०,११,५; २००७
विश्वरूपः १,१३,१०; १९१५
विश्ववारः ३,१७,१; ६०० । ७,७,५; ११४६ । ७, १६, ५; ११९६ । १०, १५०, ३; १७०० । ७, ५, ८; १८०१ । वा०य० २७,१३; २०६२ । अथ० ५,२,७; २०७४
विश्ववार्यः ८,११,११; १२३४
विश्वविद् ३,२९ ७; ५६४ । ३,१९.१; ६१० । ५,४,३; ७९२ । १०,९१,३; १६५३
विश्ववेदाः १,१२,१; १० । १,३६,३; ७० । १,४४,७; ९२ । १, १२८, ८; २९० । १ १४३,४; ३२१ । १,१४७,३; ३४५ । ३,२५,१; ५३२ । ३,२०,४; ६१७ । ४,८,१; ७०४ । ४,४,१३; १८२५ । वा०य० २७,१२; २०६१
विश्वशंभूः अथ० ६,४७,१; २३७२
विश्वशुच्-क् ७,१३,१; १८१०
विश्वश्रुष्टिः १,१२८,१; २८३
विश्वस्य केतुः १०,४५,६; १५९४
विश्वस्य नाभिः चरतः ध्रुवस्य १०,५,३; १५१५
विश्वादः ८,४४,२६; १३६८
विश्वाप्सुः १,१४८,१; ३४८
विश्वायुः १,२७,३; ४० । १,६७,६,१०; १४९,१५३ । १,६८.५; १५८ । १.७३,४; २०८ । १,१२८,८; २९० । ६,४,२; ९७२ । १०,६,३; १५२२
विश्वायु वेपसम् (द्विती०) ८,४३,२५; १३३४
विश्वेदेवाः [देवता] अथ० ३,२१.८; २३६२
विश्वेदेवाः त्वे ५.३.१; ७७९
विश्वेदेवासः [मरुतः] १,१९,३,२४४०
विषितः ६,१२,५; १०१०
विषुणः ४.६,६; ६८७
विषुरूपः रमना परिजिगासि ५,१५,४; ८६९
विष्णुः १०,१,३; १४८७
विष्णुः [देवता] अथर्व० ७,२९(३०), १-२; २४५३-५४
विष्णुः त्वम् उरुगायः २,१ ३; ३७१
विहव्यः अथ० २,६.४; २३२३
विहायाः १,१२८.६;२८८ । ६,१३.६; १०१७ । ८,२३,१९,२४; १२८८, १२९३
वीः उचथस्य क्रविन् १ १३,६; ३२३
वीतः ४,७,६; ६२८
वीतिहोत्रः ३,२४,२; ५२८ । ५,२६,३; ९२२
वीरः ८,२३,१४; १२८३
वीरः [त्वष्टा] २,३.९; १९५०
वीरपेशाः १०,८०,४; १६४७
वीरुधां गर्भः २,१,१४; ३८२
वीळुः ८,४४.२७; १३६९
वीळु जम्भः ३,२९.१३; ५७०
वृत्रहन्तमः १,७८,४; २४२ । ६,१६, ४८; १०८९ । ८,७४ ४; १४४५ वा० य० २८,२६; २०९७
वृत्रहा २,१,११;३७९ । ३.२०,४;६१७ । ६,१६,१४,१९; १०५५,१०६० । १०, ६९,१२; १६३६ । १,५९,६; १७२२
वृद्धवृष्णः अथ०७,६२(६४),१; २०७३
वृद्धशोचिः ५.१६,३; ८७३
वृधः भूः दक्षस्य ६,१५.३; १०२५
वृधः शूषेभिः १०,६,४; १५२३
वृधत्-न् ८,१०२,७; १४६९
वृधानः समिधा ३.१८,६; ५५७ । १,९५-९६,११,९; १८७८
वृधसानः धिष्ण्यासु ४,३,६; ६७१
वृश्चद्वनः ६,६.१; ९८६
वृषः ३,२७,१४; ५५०
वृषणः ३,२९,३,९; ५६०,५६६
वृषन्-षा १,३६,८; ७५ । १,१२७,२; २७३ । १,१४०,२; २९३ । ३,१,८; ४५४ । ३,७,२,९,९; ४९१,४९४, ४९८ । ३,२७,१३,१५; ५४९,५५१ । ५,१,१२; ७६६ । ५,११,६; ८५३ । ६.१,१; ९३१ । ६, ३ ,७; ९३९ । ६.६.५; ९९० । ६.४८ ३ ६; १०९२, १०९५ । ७,३,३.५; ११२६,११२८ । ७,१०,१; ११६१ । ८.७५,६; १३७८ । १०.३.४; १५०२ । १०,११,१; १५४० । १० १८७,३; १७१३ । १०.१९१,१; १७१६ । ३,२,११; १७३७ । ४.५;१०, १५; १७६७,१७७२ । ६.८,१; १७८० । ९.५.१,७ ९; १९८१,१९८७,१९८९ । २,३५.१३; २४३४ । वा०य०२०,४४; २०२२ । अथ० ४,३६,१; २२९५ । साम० १,१.१०,३
वृषन्-षा [इन्द्र] वा०य० २०,४०, ४४; २०१८,२०२२
वृषभः १.३१,५; ५४ । १,१२८,३; २८५ । १.१४०,१०; ३०१ । २,१.३; ३७१ । २,९,२; ४०४ । ३.६,५;४८४ । ३,१५,३,४,६; ५९०,५९१,५९३ । ४,३,१०; ६७५ । ५.१,८.१२; ७६२, ७६६ । ५,२,१२; ७७८ । ५ २८,४; ९३६ । ६,१.८; ९४६ । ८.६०.१४; १४०२ । १०,८.१-२; १५३४-३५ । १,५९,६; १७२२ । ४,५,३; १७६० । २,३,११; १९५२ । २,४,३; १९५५ । वा०२८,४; २०८७
वृषभः [इन्द्रः] वा०य०२०,४६;२०२४
वृषभः क्षितीनाम् १०,१८७.१; १७११
वृषभः रोरवीति १०,८,१; १५३४ । ४,५८.३; १८९७
वृषभः स्त्रियानाम् ७,५,२, १७९५
वृषायमाणः [इन्द्रः] वा०य०२०,४६; २०२४
वेः मन्मसाधनः १,९६.६; १८८४
वेतसः ४,५८,५, १८९९

वेत्थ हि अध्वनः पथः ६ १६,३;१०४४
वेद सः १,१४५,१, ३२३
वेद जनिमानि देवानाम् ३,४,१०; ७,२,१०; १९६२
वेद जाता देवानाम् ८.३९,६; १३०५
वेद विश्वा जनिमा ६,१५ १३; १०३५
वेद मर्तानां अपीच्यम् ८.३९,६; १३०५
वेदिता ८,१०३,११; १२६७
वेदिषत् १,१४०,१ २९२
वेधः ५,१५,१; ८६६ । ६,४,२;९७२। अथ० १९ ३,४; २२०८
वेधस्-धाः १,६५,१०;१३३।१,६९,३; १६६। १,७३,१०; २१४। १,१२८,४; २८६। ३,१०,५; ५१३। ३.१४,१; ५८१। ४.२,२०; ६६६। ४,३,१६; ६८१। ५,१५.१; ८६६।६,१६,३,२२, १०४४,१०६३।८,४३,१.११;१३१०, १३२०। ८,६०,३; १३९१। १०,९१. १४; १६६४। अथ०३,२१,६; २३६०
वेधस्तमः १,७५,२; २२५। ६,१४,२; १०१९
वेनः ४,५८,४; १८९८
वैश्वानरः [अग्निः देवता] सूक्तानि १,५९, (१–७),१७१७-२३। १.९८, (१-३) १७२४-२६। ३,२,(१-१५); १७२७-४१।३ ३,(१-११)१७४२-५२। ३ २६, (१ ३, ७-८ ; १७५३-५७। ४.५, (१-१५); १७५८-७२। ६,७, (१-७); १७७३-७९। ६,८,(१-७); १७८०-८६। ६,९,(१-७);१७८७ ९३। ७,५, (१-९); १७९४-१८०२। ७,६,(१-७); १८०३-९। ७,१३,(१-३); १८१०-१२।
वैश्वानरः ५,२७,१-२; ९२८-२९। १०, ४५,१२; १६००। १०,८८ १२-१४; २३०८-१० । अथ० ६, ३६, १; २२८१। ७, १०८,२; २२२८। ४, ३३,१-२; २२९५-९६। ४,२३,४, २३७३। ६,७१,३; २३४८। ३,२१, ३; २३५७। ६,४७,१; २३७२ । ६,३५,१,२,३; २३७५-७६-७७। ६,११९,१,२,३; २३८४-८५-८६।
वैश्वानर ज्येष्ठः अथ० ३,२१,६; २३६०।
व्यध्वा १,१४१.७; ३११।
व्यचस्वतीः [देवीर्द्वारः] २,३,५; १९४६। १०,११०५; २००७।
व्याघ्रः [वनस्पतिः] वा० २१,३९; २०५८।
व्रजनम् कृष्णम् ते ७,३,२; ११२५।
व्रतपतिः अथ० ७,७४,४; २१९७।
व्रतपाः १,३१,१०; ५९। ८,११,१; १२१४। ६,८,२; १७८१।
व्रता विश्वा ध्रुवा ते संगतानि १,३६, ५; ७२।
व्रतेन समक्तः अथ ७,७४,४; २१९७।

शंसः ४,६,११; ६९२
शक्रः अथ० ३,२१,४; २३५८
शचीवस्-वान् ३ २१,४; ६२१
शचीवसुः ८,६०,१२; १४००
शतक्रतुः [वनस्पतिः] वा० य० २१,३९; २०५८। २८,१०, २०९३ २८,३३; २१०४
शतनीथः १०,६९,७; १६३१
शतात्मा १, १४९,३; ३५५
शन्तमः १,१२८,७; २८९।
शन्तमः अध्वरेषु १,७७,२; २३५
शम् ७,६ २; १८०४।
शमिता २,३,१०; १९५१। ३,४,१०; १९६२। ७,२,१०;१९६२। १०,११०, १०; २०१२। वा० य० २७,२१; २०७०
शमिता [वनस्पतिः] वा० य २१, ३९; २०५८। २८,१०; २०९३। २८.३३; २१०४। अथ० ५,७,११; २०८२
शम्भुः १,६५,५; १२८। ३,१७,५; ५०४
शयिष्ठाः आ ज्योक् एव दीर्वं तमः १०,१२४,१; १६८३
शयुः कतिधा चिद् आयवे १,३१,२;५१।
शर्धः त्वम् २,१,५; ३७३
शर्धमानः [इन्द्रः] वा० य० २०,३८; २०१६
शर्मद्दा ६,१६ ३९; १०८०
शवसस्पतिः १.१४५,१; ३३३। ५,६,९; ८०९
शवसा सूनुः १ २७,२; ३९
शविष्ठः १,१२७,११; २८१
शशमानः १०,१४२.६; १६९५ अथ० १२,२,१०; २३३६
शशमानः विप्रस्य उक्थ्यम् १०,११,५; १५९४
शशली (शकली) अथ० १,२५,२; २२७६
शश्वतः ५,१९.४; ८८९
शश्वत्तमः १०,७०,३; १९९४
शास् (शासुः षष्ठी) १,६०,२; १२०
शिक्रम् ६,२,९; ९६०
शितः ८,२३,१३; १२८२
शितिपृष्ठः ३,७.१; ४९०
शिमीवान् १०,८.२; १५३५
शिवः १,३१,१; ५०। ५,१,८; ७६२। ५,२४,१; ९०७। ८,३९,३; १३०२। १०,३,४; १५०२
शिवः [त्वष्टा] ५,५,९; १९७१
शिवः दोषा ४,११,६; ७३३
शिशानः १०,८७,१,३,६; १८२८, १८३०,१८३१
शिशानः शृंगे ९.५,२; १९८२
शिशुः १०,१,२; १४८६
शिश्वा १,६५,१०; १३३
शीतः अथ० १,२५.४; २२७८
शीरः ३,९.८; ५०७। ८ ४३,३; १३४०। ८,१,२,११; १४७३। १०, २१.१; १५८१
शीरशो चिस्-चिः ८, ७१, १०, १४; १४१८,१४२२
शीर्षे द्वे अस्य ४,५८,३; १८९७

शुक्रः १,६९,१; १६४ । १,१२७,२; २७३ । ४,१,७; ६३३ । ४,६,८; ६८९ । ४,११,२; ७२९ । ५,२१,४; ८९८ । ६,१६,३४; १०७५ । ६,४८, ७; १०९६ । ७,१,८; ११०७ । ७,४,१; ११३४ । ८,६०,३; १३९१ । १०,२१, ७; १५८७ । १०,१८७,५; १७१५ । १,९५,१; १८६८ ।
शुक्रवर्चाः १०,१४०,१; १६८५ ।
शुक्रशोचिः २,१,३; ३८७ । ७,१४, १; ११७४ । ७,१५,१०; ११८६ । ८,१०३,८; १२६४ । ८,२३,२०,२३; १२८९,१२९२ । ८,४४,९; १३५१
शुचत्-न् ६,३,३; ९६५
शुचयत्-न् १०,४६,८; १६०८
शुचिः १,३१,१७; ६६ । १,६६,२; १३५ । १,१२७,७; २७८ । १,१४१, ४-५; ३०८-९ । २,१,१; ३६९ । २, १,१४; ३८२ । २,५,४; ४२८ । २,७, ४; ४४४ । ३,५,७; ४७६ । ४,१,७; ७३३ । ५,१,३; ७५७ । ५,४,३; ७९१ । ५,७,८; ८१८ । ५,११,१,३; ८४१,८४४ । ६,६,३; ९८८ । ६,१५, १,७; १०२३,१०२९ । ७,१०,१; ११६१ । ७,१५,१०; ११८६ । ८,४३, १३; १३२२ । ८,४४,२१; १३६३ । ८,१०२,४; १४६६ । ३,२,१४-१५; १७४०-४१ । १,१४२,३; १९२० । २,३५,३; २४२४; वा० य० २८,२५; २०९६
शुचिः [तिस्रः देव्यः] १,१४२,९; १९२६
शुचिः [अग्निदेवता] १,९७,(१-८); १८८७-१८९४
शुचिजन्मा १,१४१,७; ३११
शुचिजिह्वः २,९,१; ४०३
शुचिदत्-न् ५,७,७; ८१७ । ७,४,२; ११३५
शुचिप्रतीकः १,१४३,६; ३२३
शुचिवर्णः ५,२,३; ७६९
शुचिव्रतः ८,४३,१६; १३२५ । १० ११८,१; १८५३ । वा० य० ११,१३; २०३८
शुचिव्रततमः ८,४४,२१; १३६३
शुचिष्मः (सं०) ६,६,४; ९८९
शुभ्रः ३,२६,२; १७५४
शुभ्रः [बर्हिः] ५,५,४; १९६७
शुभ्राः [मरुतः] १,१९,५; २४४२
शुम्भानः स्वांतन्वम् ८,४४,१२; १३५४
शुशुक्वनिः ८,२३,५; १२७४
शुशुक्वान् १,६९,१; १६४
शुशुचानः ४,१,१९; ६४५ । ४,१,३; २४५०
शुष्मिणस्पतिः १,१४५,१; ३३३
शुष्मिन्तमः १,१२७,९; २८०
शुष्मिन्-ष्मी ८,१०२,१२; १४७४
शूरः १,७०,११; १८४ । ४,३,१५; ६८० । ६,१५,११; १०३३
शृङ्गा: अस्य चत्वारि-४,५८ ३; १८९७ ।
शृण्वन् ८,४३,२३; १३३२ । १०, १२२,४; १६७८
शृण्वन् आरे अस्मे च १,७४,१; २१५
शेवः १,५८ ६; ११५ । १,६९,४; १६७ । १,७३,२; २०६ । १०,१२९, १; १६७५
शेवृधः १०,४६ ३; १६०३
शोकः अथ० १,२५,३; २२७७
शोचिः ५,५,१; १९६४
शोचिः परिवसानः ३,१,५; ४५१
शोचींषि ऊर्ध्वा शुक्रा द्युमत्तमा अथ० ५,२,७; २०७२
शोचिष्केशः १,४५,६; १०५ । १, १२७,२; २७३ । ३,१७,४; ५४० । ३,१४,१; ५८१ । ३,२७,१; ६०० । ५,८,२; ८२२
शोचिष्पतिः ५,६,५; ८०५
शोचिषा अरोचत शुक्रेण ८,५६,५; २४५५
शोचिष्ठः ५,२४,४; ९१० । ८ ६०,६; १३९४
शोचिष्मान् २,४,७; ४२२
शोभमानः पुरु ५,२,४; ७७०
शोशुचत् १०,८७,२०; १८४७
शोशुचत् अजस्रेण शोचिषा ६,४८,३; १०९२
शोशुचानः ७,१०,१; ११६१ । ७,५,३; ११९६ । ७,१३,२; १८११ । ४,४,२; १८१४ । १०,८७,७; १८३४ । १०, ८७,९,१४; १८३६,१८४१ । ४,१,४; २४५१
शोशुचानः पाजसा पृथुना ३,१५,१; ५८८
शोशुचानः अजस्रेण शोचिषा ७,५ ४; १७९७
श्येतः १,७१,४; १८८
श्रवस्यः २,१०,१; ४०९
श्रवस्यः श्रवोभिः ६,१,११; ९४९
श्रियः यस्य स्पार्हाः दृशे ४,५५,५; ११८१
श्रियं दधाने शुक्रपिशम् [उषासानक्ते] १०,११०,६; २००८
श्रियं वसानः २,१०,१; ४०९
श्रीणां उदारः १०,४५,५; १५९३
श्रुत्कर्णः १,४४,१३; ९८ । १,४५,७; १०६ । १०,१४०,६; १६८९ । अथ० १९ ३,४; २२०८
श्रुष्टिः १,६७,१; १४४
श्रेष्ठा [त्वष्टा] २,३,९; १९५०
श्रुष्टीवान् ३,२७,२; ५३८
श्रणिदन् १०,२०,३; १५७३
श्रेष्ठः १,४४,४; ८९ । ३,२२,३; ६२० । १०,१४६ ५; १७०७
श्रेष्ठशोचिष्-चिः ८,१९,४; १२२७
श्रोता ३,२६,२; १७५४
श्रुष्टीवान् १,१४०,१०; ३०१
श्वात्रः (०आपः-बहु०) १०,४६, ७; १६०७

श्वितान: ६,६,२; ९८७
श्वितीचि:- चय: (बहु०) १०,४६,७; १६०७
श्वेत: ३ ,१,४; ४५० । ५,१ ४; ७५८
श्वैत्रेय: ५,१९,३; ५८८
स: ५,१३ ४; ९०६
संयत: २,२,२; ३८६
संवयन्ती ततं तन्तुम् [उषासानक्ते] २,३,६; १९४६
संवसव: [देवता] अथ० ७, १०९ (११४), ६; २३७०
संविदान: ब्रह्मणा १०,१६२,१;२४१६
संविदान: विश्वेभि: देवै: सह अथ० ५,२९,२; २३०६
संविद्वान् अथ०१,२५,१,२,३;२२७५-७६-७७
सकृत् वा० य० २७,१३; २०६२
सखा १,३१,१;५० । २,१,९; ३७७। ८,४३,१४; १३२३।८,७१,९;१४१७। १०.३,४; १५०२।१०,८७,२१;१८४८। ३,४,१; १९५३
सखा सखिभ्य: १,७५,४; २२७
सख्यं जुषाण: देवानाम् ७,७,२; ११४३
संकसुक:अथ. १२,२,११,१४.१९,४०; २२३७,२२४०,२२४५,२२५३
सचन्त: देवेभि: १,१२७,११; २८२
सचाभू: अङ्गिरसाम् १०,७०,९;२००५
सजोषस: अभय: ३ २२,४; ६२६
सञ्चिकित्वान् ४,७,८; ७००
संज्ञातरूप: १.६९,९: १७२
सत्-न्८,४३,१४:१३२३।८,७१,१३; १४२१ । १०,११५,६; १६७१
सत्पति: २,१,४; ३७२ । ६ १६,१९; १०६० । ८,७४,१०; १४५१ । अथ० ७, ६२ (६४), १; २३७३ । साम० १,२,१,९
सत्य: १,१,५:५। १,१४५,५; ३७७। ३,१४,१; ५८१ । ५,७३,२; ९०२ । ५,२५,२; ९१२
सत्यतर: १,७६,५; २३३। ३,४,१०; १९६२। ७,२.१०; १९६२
सत्यताति: ४.४,१४; १८१६
सत्यधर्मा १,१२,७; १६
सत्यमन्मा १,७३,२; २०६
सत्ययज: ६, १६. ४६; १०८७। ४,३,१; साम० १,१.७,७
सत्यवाक् ७,२.३; १९७७
सत्यशुष्म: १,५९,४; १७२०
सत्यौजा: अथ० ४.३६,१; २२९५
सत्वन:-नम् १०,११५,४; १६६९
सद: दधान: उपरेषु परेषु सानुषु १,१२८,३; २८५
सदानव: ३,११,५; ५२२
सदृक् ८.११,८; १२२१। ८.४३,२१; १३३०
सद्यो अर्थ: १,६०,१; ११९
सद्यो जात: १०.११०,११; २०१३
वा० य० २९,११; २११६
सनकात् ३,२९,१४; ५७१
सनश्रुत: ३,११.४; ५२१
सनानि जठरेषु धन्ते विश्वा १,९५,१०; १८७७
सनुत: चरन् ५,२,४; ७७०
सनूज: १,१५,१२; २३। १,३६,२; ६९ । १, ४५, ५, ९; १०४,१०८। ३, २०, ४; ६१७। ३,२१,३; ६२०। ८,१९, २९; १२४९। ८,४४,९,२८; १३५१, १३७०
संदृक् १,६६,१; १३४
संदृक् विश्वत: सुप्रतीक: १, ६४, ७; २६२
संदृक् भद्रा चारु च ते ४,६,६: ६८७
संदृष्टि: वस्वी ते ६,१६,२५; १०६६
संनममान: इषू: १०,८७;४; १८३१
सपत्नहा अथ० २,६,३; २३२१
सपर्येण्य: ६.१,६; ९४४
सप्त आस्यानि तव अथ० ४,३९,१०; २२८३
सप्त धामानि परियन् १०, १२२, ३; १६७७
सप्तमानुष: ८,३९,८; १३०७
सप्तरश्मि: १,१४६,१; ३३८
सप्तहोता ३,२९,१४; ५०१
सप्ति: वा० य० २९,२; २१०७
सप्रथ: ६,१५,३; १०२५
सप्रथस्--था: ५,१३,४;८५७;८,६०,५; १३९३
सप्रथस्तम:१,४५,७;१०६ । १०,१४०, ६; १६८९
सभ्य: अथ० १९,५५,६; २२७४
समक्त: व्रतेन अथ० ७,७४,४; २१९७
समञ्जन् ऋतस्य यानान् पथ: १०,११, २; २००४ । वा० य० २९,२६;२११८
समञ्जन् मधुना [इन्द्र:] वा० य० २०, ३७; २०१५
समञ्जन् वीरुध: १०,४५,४; १५९२
समनगा ७,९,४; ११५८
समान: ४,५ ७; १७६४
समित् समित् ३,४,१; १९५२
समिद्ध: [देवता] 'इध्म:' पश्य.वा०य० २०, ३६, ५५; २०१४, २०२५ । २१, १२, २९; २०३७, २०४८ । २७, ११; २०६० । २८. १, २४; २०८४,२०९५। २९,१,२५; २१०६, २११७। ऋ० प्रैष १.२१२९। अथ० ५,२७,१; २०७२ । ५,१२,१; २००३
समिद्ध: ३,९,३; ४०१.३,५,१;४७० । ३,९,७;५०६ । ५,२८.१.४-५; ९३३, ९३६-३७ । ६, १६, ३४; १०७५ । १०,३,१:१४९९। १०,१५,१;१६९८। १०,८७,१-२;१८२८-२९। १०,७०,७; १९९८। ७,२,३; १९७६। १०.८८,७; २४०३। अथर्व० ७,७४ ४; २१९७। १२,२,११, १८; २२३७,२२४४
समिद्ध: [इन्द्र:] वा० य०२०,३६; २०१४
समिद्ध: समिधा ६,१५,७; १०१९

समिधानः १,१४३,२; ३१९। २,२,१, ६; ३८५,३९०। ४,६,११; ६९२। ५, ८,४,६;८२४.८२६। ६,४८,७;१०९६। ७,९,४; ११५८। ८.४४,९;१३५१। ८,६०,५; १३९३। १०,२,७;१४९८। १०,१५०,९;१६९९।४,५,१५:१७७२। ४,४,४; १८१६। ३,४,११; १९६३। ७,२,११; १९६३। वा० य० २८,२४; २०९५। साम० १,६,१३,१

समिधः अस्य ऊर्ध्वा अथ० ५,२,७; २०७२

समिध्यमानः अध्वरे ३,२७,४; ५४०

समिध्यमानः अनु प्रथमा ३,१७,१; ६००

समीची [उषासानक्ते] २,३,६; १९४४

समुद्रः ४,५८,१; १८९५। १०,५, १; १५१३

समुद्रथः ३,३,९; १७५०

सम्पृचानः सदने आभिः गोभिः १,९५, ८; १८७५

सम्प्रेद्धः अथ० ६,७६,१; २३९०

सम्मिश्लः १०,६,४; १५२३

सम्राज्-ट् ८,१९,३२; १२५५। ७, ६,१; १८०३। अथ० ६,३६,३; २१८३

सम्राजत्-न् अध्वराणाम् १,२७,१;३८

सरजत्-न् अध्वनः १०,११५,३; १६६८

सरण्यन् ३,१,१९; ४६५

सरस्वती [देवता] पश्य 'देव्यः तिस्रः' अथ० ४,४,६; २१६२

सरस्वती त्वम् २,१,११; ३७९

सर्पिरासुतिः २,७,६; ४४६। ५,७, ९; ८१९। ५,२१,२; ८९६। १०, ६९,२; १६२६

सविता [देवता] ४,१३,२; ७४१। १,३५,१; २४४८। वा०य० २७,१३, २०६१। अथ० ५,२७,३; २०७४। २,२९,२; २१५०। ७,११५,२;२२०२। ३,२१,८; २३६२। ४,४,६; २१६२

सविता त्वं देवः रत्नधा २,१,७; ३७५

सवीर्यः वा० य० २८,३; २०८६

सवेदाः अथ० १२,२,१४; २२४०

ससः ३,५,६; ४७५

ससवान् वाजम् १०,११,५; १५४४

समृनुः अथ० ५.२७,१; २०७२

सस्निः ३,१५,५; ५९२

सहः [इन्द्रः] वा०य० २१,४०;२०७३। २८,३६; २०९७

सहः १,३६,१८; ८३ ८,१०२,५; १४६७

सहन्तमः १,१२७,९; २८०

सहन्त्यः १,२७,८; ४१। ६,१६,३३; १०७४। ८,११,२; १२६५

सहमानः अथ० १२,२,४६; २२५९। ७,६३(६५),१; २३७३

सहसस्पुत्रः २,७,६; ४४६। ३,१४, १,४,६; ५८१,५८४,५८६। ३,१६.५; ५९८। ३,१८ ४; ६०८। ५,३,१,६; ६७९,७८३। ५,४,६; ७९५। ५,११, ६; ८४७

सहसः सूनरः १०,११५,७; १६७२

सहसःसूनुः१,५८.८;११७। १,१२७,१; २७२। १,१४३,१; ३१८। ३.१.८; ४५४। ३,११,४; ५२१। ३,२४,३; ५२९। ३ २५,५; ५३६। ३,२८,३,५; ५५४,५५६। ४,२,२;६४८। ४,११,६: ७३३। ५,३,९; ७८६। ५ ४,८; ७९७। ६,१,१०; ९४८। ६,४,१; ९७१। ६.५,१; ९७९। ६, ५, ५; ९८३। ६,६,१; ९८६। ६,११,६; १००५। ६,१२.१; १००६। ६, १३, ४-५; १०१५-१६। ६, १३, ६; १०१७। ६,१५,३; १०२५। ७, १, २१-२२; ११२०-२१। ७, ३, ८; ११३१। ७,७,७;७,८,७; ११४८। ७,१६,४; ११९५। ८.१९.७,२५;१२३०,१२४८। ८,७५,३; १३७५। ८,६०,२; १३९०। ८, ७१, ११; १४१९। १०, ११, ७; १५४६। १०, ४५, ५; १५९३। १०,१४२ १; १६९०

सहसानः १,१८९,८;३६८। २,१०,६; ४१४। ५,२५,९; ९१९। ७, ७, १; ११४१

सहसावान् १, १८९, ५; ३६५। ३,१,२२; ४६८। ५,२०.४; ८९४। ६, ४, ९; १०३४। ६, १५, १२; १०३४। ७,१,२४; ११२३। ७,४,६; ११३९। १०, २१, ४; १५८४। १०,११५,८; १६७३

सहसिन्-सी ४,११,१; ७२८

सहसा यहुः १, २६, १०; ३७। १,७४,५; २१९। १,७९,४; २४७। ७, १५, ११; ११८७। ८, १९, १२; १२३५। ८, ६०, १३; १४०१। ८,८४,५; १४५८

सहसो युवा १,१४१,१०; ३१४

सहस्कृतः १,४५,९; १०८। ३,२७,१०; ५४६। ५,८,१; ८२१। ६,१६,३७; १०७८। ८, ४३, १६, २८; १३२५, १३३७। ८.४४,११; १३५३

सहस्यः १,१४७,५; ३४७। २,२,११; ३९५। ५,२२,४; ९०२। ७,१,५; ११०४। ७,१६.८; ११९९। १०,१,७; १४९१। १०,८७.२२; १८४९

सहस्रऋष्टिः [वज्रः] अथ० १९,६६,१; २३५०

सहस्रजित् ५,२६,६;९२५। १,१८८,१; १९३१

सहस्रतरीः १० ६९,७; १६३१

सहस्रमुष्कः ८,१९,३२; १२५५

सहस्रम्भरः २,९,१; ४०३

सहस्ररेताः ४,५,३; १७६०

सहस्रवल्शः [वनस्पतिः] ९,५,१०; १९९०

सहस्रशृंग: ५,१,८; ७६२
सहस्रसा: १,१८८.३; १९३३
सहस्रसातम: ३,१३,६; ५७९
सहस्राक्ष: १,७९,१२; २५५
सहस्वान् १,१२७,१०;२८११,१८९, ४; ३६४। ३,१४.२,४; ५८२.५८४। ५,७,१; ८११। ६,५,६; ९८४।७.४,४; ११३७।८,४३,३३;१३४२।८,१०२,७; १४६९। १,९७,५; १८९१
सहावान् ६,१४,५; १०२२
सहीयान् सहसश्चित् १०,१७६,४; १७१०
सहोजा: १,५८,१; ११०
सहोवृध: १,३६,२; ६९ । ३,१०,९; ५१७
सह्यस्-ह्या: १०,११५,६, १६७१
साधदिष्टि: अपसां यज्ञानाम् ३,२६,५; १७३१
साधनम् यज्ञस्य १,४४,११; ९६
साधु: १,६७,२; १४५।१,७७,३;२३६
साधु: अध्वरेषु ५,१,७; ७६१
साधुया ५,११,४; ८४५
सानसि: ४,१५,६; ७१४ । ८,१०२, १२; १४७४
सान्तपन: [अग्निदेवता] अथ० ६, ७६,(१-४); २३९०-२३९३
साम्राज्याय प्रतरं दधान: १,१४१,१३; ३१७
सासहि: ३,१६,४; ५९७
सासहि: पृतनासु अथ० ३,२१,३; २३५७
साह्वान् विश्वा अभियुज: ३,११,६; ५२३
सिंह: १,९५.५; १८७२
सिंह: [इन्द्र:] वा० य० २१,४०; २०५९
सिन्धूनां जामि: १,६५.७; १३०
सिन्धूनां नेता ७,५,२; १७९५
सिन्धूनां मित्र: ३,५,४; ४७३
सिन्धुषु श्रित: विश्वेषु ८,३९,८; १३०७
सिष्णु: ८,१९,३१; १२५४
सीदन्-न् अपां उपस्थे १०,४६,१; १६०१
सीदन् पस्त्यासु योनौ अन्त: १०,४६, ६; १६०६
सीदन् प्राचीनम् [इन्द्र:] वा० य० २०,३९; २०१७
सीदन् प्रिये अमृते बर्हिषि वा० य० २८,२७; २०९८
सुकृत् अथ० ५,२७,३; २०७४
सुकृत्तर: १,३१,४; ५३
सुक्रतु: १,१२८,४; २८६ । १,१४१, ११; ३१५ । १,१४४,७; ३३२ । ३,१,२२; ४६८ । ५,११,२; ८४२। ५,२०,४,८९४ । ५,२५,९; ९१९ । ६.१६,३,२९; १०४४,१०७०। ७,३, ९; ११३२ । ७,९,२; ११५६ । ७, १६.६; ११९७ । ८,१९,१७;१२४०। ८.७४,७; १४५८। ८.८४,८; १४६१। १०, १२२, २, ६; १६७६, १६८० । ३,३,७; १७४८ । ६,७,७; १७७९। ६,८,२; १७८१ । ४,४,११; १८२३ । १०.७०,१; १९९२
सुक्रतु: क्रतुना १०,९१,३; १६५३
सुक्रतु: यज्ञस्य ८.१९,३; १२२६
सुक्षत्रास: [मरुत:] १,१९,५; २४४२
सुक्षिति: २,३५,१५; २४३६
सुगार्हपत्य: अथ० १२,२,४५; २२५८
सुजम्भ: ८,६०,१३; १४०१
सुजात: २,१,१५; ३८३ । २,६,१; ४३४ । ३,२३.३; ६२९। ५,२१,२; ८९६ । ७.८,५; ११५३। ८,१०३,१; १२५७ । ८, ७४, ७; १४४८ । १०, ५, ४; १५१६ । १०,७२,६; १५२८,१५३२। १०.५१,७; १६१४ । अथ० ४,२३,४; २३३३
सुजात: ऋतस्य योना गर्भे १,६५,४; १२७
सुजात: तन्वा ३.१५,२; ५८९
सुजात: वसुभि: १०,७९,७ । १६४३
सुजिह्व: १,१०,८; १९१३ । १,१४२, ४; १९२१ । १०,११०,२; २००४ वा० य० २९,२६; २११८
सुतुक: १०,३,७; १५०५
सुत्यज: ८ ६०.१६; १४०४
सुदंसस् २,२,३; ३८७। (३,९,१; ५००)
सुदक्ष: २,९,१; ४०३ । ३,२३ ,२; ६२८ । ५,११,१; ८४१ । ७,१,६, ११०५ । ८,१९,१३; १२३६ । ७,२, ३; १९७६
सुदक्ष: दक्षै: १०,९१,३; १६५३
सुदत्र: ७,८,३, ११५१
सुदर्शतर: नक्तं य: दिवातरात् १,१२७,५; २७६
सुदानु: ३.२९,७; ५६४ । ६,२,४; ९५५ । ६.१६,८; १०४९ । ३,२६, १; १७५३
सुदिव्-सुद्यौ: १०,३,५; १५०३
सुदीति: ३,२७.१०; ५४६ । ३,१७ ४; ६०२ । ३,२.१३, १७३९
सुदीदिति: ३,९,१; ५०० । ८,१९, ४; १२२७
सुदुघे [उषासानक्ते] २,३,६; १९४७
सुदृश्-क् ३,१७,४; ६०३ । ६,१५, १०; १०३२
सुदृशीक: ५,४,२; ७९१
सुदृशीकरूप: ४.५,१५; १७७२
सुदेव: १,७४,५; २१९
सुद्युत् १,१४०.१; २९२ । १,१४३, ३; ३२० । ८,२३,४; १२७३
सुद्योत्मा १.१४१,१२; ३१६ । २,४, १; ४१६
सुद्रविण: १,९४,१५; २७०

सुधितः ३,२३,१; ६२७ । ४,६,७; ६८८ । ८,२३,८; १२७७

सुधितः वनस्पतौ ६,१५,२; १०२४

सुनाथः २,८,२; ३९८

सुपर्णः अथ० ४,१४,६; २२२२ । १९,६५,१; २३४९

सुपिप्यः १०,११५,६; १६७१

सुपेशसः १,१४२,७; १९२४ । १, १८८,६; १९३६ । ९,५,८; १९८८

सुप्रणीतिः १,७३,१; २०५ । ४,२, १३; ६५९

सुप्रतिचक्षुः ७,१,२; ११०१

सुप्रतीकः १,१४३,३; ३२० । ३,२७, ५; ५९२ । ६,१५,१०; १०३२ । ७,१०,३; ११६३ । वा० य० २७, ११; २०६० । अथ० ५,२७,१; २०७२

सुप्तूः ८,२३,२९; १२९८

सुप्रतूर्तिः ३,९,१; ५००

सुप्रथाः २,२,१; ३८५ । २,४,१; ४१६ । ६,१,४; १००३ । वा० य० २७,१५; २०६४

सुप्रायणाः [देवीर्द्वारः] ९, ३, ५; १९४६ । ५,५,५; १९६८ । १०,११०, ५; २००७

सुप्राव्यः १,६०,१; ११९

सुप्रीतः ६,१५,२; १०२४ । ८,२३, १३; १२८२

सुबन्धुः ३,१,३; ४४७

सुबर्हिः १,७४,५; २१९ । वा० य० २१,१५; २०४० । २८,२७; २०९८

सुब्रह्मा ७,१६,२; ११९३

सुभगः १,३६,६; ७३ । ३,१,४; ४५० । ३,१६,६; ५९९ । ४,१.६; ६३२ । ५,८,२३; ८२३ । ६,१३,१; १०१२ । ८,१९,४,९,१८-१९; १२२७,१२३२, १२४१-४२ । अथ० १९,४,२; २२१०

भगे [उषासानक्ते] १०,७०,६; १९९७

सुभरः [त्वष्टा] ९,३,९; १९५०

सुभास् (भाः) भासः ८,२३,२०; १२८९

सुमखः ४,३,१४; ६७९

सुमतीः इयानः १०,२०,१०; १५८०

सुमद्रथः ८,५६,५; २४५५

सुमनस्-नाः ३,९,३; ५०२ ; ४, १०,३; ७२२ । ४ १३,१ ७३० । ५,१,२, ७५६ । ७,१,१; ११०८ । ७,८,५; ११५३ । ३,४,१; १९५३ । अथ० ७,७४,४, २१९७

सुमनस्यमानः १०,५ ,७; १५१३-१४

सुमहत्-हान् ७,८,२; ११५०

सुमहस् हाः ४,११,२ ७२९ । १०, ७,७; १५३३

सुमृळीकः ४,१,२०; ६४६ । ४,३,३; ६९८

सुमेधाः ३,१५,५; ५९२ । १०,४५, ७; १५९५ । २,३,१; १९४२

सुयजः ५,८,३; ८२३ । वा० य० २८,९; २०९२

सुयज्ञः ३,१७,१; ६००

सुरणः ३,२९,१४; ५७१ । ३,३,९; १७५०

सुरत्नः १०,७० ९; २००५

सुरथः ४,२,४; ६५०

सुराधाः ४,२,४; ६५० । ४,५,४; १७६१

सुरुक्मे [उषासानक्ते] १,१८८,६; १९३६ । १०,११०,६; २००८

सुरुच्-क् १,११२,१; १८६७ । ३,२६, ५; १७३१

सुरेताः [त्वष्टा] वा० य० २१,३८; २०५७ । २८,९; २०९२ । २८,३२; २१०३

सुवर्चाः १,९५,१; १८६८

सुवाचसा [दैव्यौ होतारौ] १,१८८,७; १९३७

सुवाचा [दैव्यौ होतारौ] १०,११०,७; २००९

सुविदत्रः २,९,१ ४०८

सुवीरः १.३१,१०; ५९ । ३,२९,९; ५६६ । ७.१,४; ११०३ । ७,१५,७; ११८३ । ८,१९,७; १२३० । अथ० १२,२,४९; २२६२

सुवृक्तिः २,४,१; ४१६ । ६,१०,१; ९९३

सुवेदः ४,४,६; ६९८

सुशंसः गृणते १,४४,६; ९१

सुशमी ७,१६,२; ११९३

सुशर्मा ३,१५,१; ५८८ । ५,८,२; ८२२

सुशिप्रः ५,२२,४; ९०२

सुशिल्पे [उपासानक्ते] ९,५,६; १९८६ । १०,७०,६; १९९७

सुशिश्विः पन्था १,६५,४; १२७

सुशेवः १.२७,२; ३९ । २,१,९; ३७७ । ३,२९,५; ५६२ । ५,१५,१; ८६६ । ७ ७,३; ११४४ । १०,४५, १२; १६००

सुशोकः १,७०,१; १७४

सुश्चन्द्रः १,७४,६; २२० । ४.२,१९; ६६५ । ५.६,५,९; ८०५,८०९ ।

सुश्रीः ३,३,५; १७४६

सुषखः १०,९१,१; १६५१

सुषुमान् १०,३,१; १४९९

सुष्टुतः ५,१३,५; ८५८ । ५,२७,२, ९२९ । ८,७४ ८; १४४९

सुष्वयन्ती [उपासानक्ते] १०,११०, ६; २०१३

सुसंसद् ७ ९,३; ११५७

सुसनिता ३,१८,५; ६०९

सुसंदृश् १,१४३,३, ३२० । ७,३,६; ११२९ । ७,१०,३; ११६१

सुसमिद्धः १,१३,१; १९०६ । ५,५, १; १९६४ । वा० य० २१,१२, २०३७ । २८,२४; २०९५

सुहवः ३,१५,१; ५८८। ७,१,२१; ११२०। ४,१.५: २४५२
सुहवः जनेभ्यः १,५८,६; ११५
सुहव्य: १,७४.५, २१९
सुहोता ८,१०३,१२; १२६८
सूनुः ६,४,४; ९७४। वा० य० २७, ११, २०६०
सूनृतावान् १, ५९, ७; १७२३। अथ० ३,२१,५; २३५९
सूः-सूरः (षष्ठी) १०,८,३; १५३६
सूरः [सूर्यः] ८,५६,५, २४५५
सूरिः २,६,४, ४३६
सूर्यः ३,१४,४;१८४। अथ० १२,२,१८; २२४४। ४,३६,५; २२९२
सूर्यः [देवता] ४,५८,(१-११); १८९५-१९०५।१०,८८, (१--१९); २३९७-२४१५। ८,१८,९; २४१७। अथ० २,२९,१; २१४९।१९,६५,१, २३४९। ऋ०८,५६,५; २४५५। १,१६४,४४; २४५६
सूर्यः आदितेयः १०.८८,११; २४०७
सूर्यः जायते प्रातः उद्यन् १०, ८८, ६; २४०२
सूर्यः देवः ४,१३,१; ७४०
सृप्रदानुः १,९६,३; १८८१
सोमः वा०य०१८,२६;२०९७ [देवता] ७,४१,१; २४३७। [देवता] अथ० २.३६,३; २३४०
सोमः अथ० ५,२९,१०; २३१४
सोमगोपाः १०,४५,५,१२; १५९३, १६००
सोमपा अथ० १,८.३; २२९१
सोमपृष्ठः ८,४३,११; १३२०। १०, ९१.१४; १६६४। अथ० ३,२१,६; २३६०
सौभगानि विश्वा त्वत् यन्ति६,१३,१; १०१२
स्कम्भः आयोः १०,५,६; १५१८
स्तनयन् एति १,१४०,५; २९६
स्तभूयन् १०,४६,६; १६०६
स्तभूयमानः ३,७,४; ४९३
स्तवमानः १,१४७,५, ३४७
स्तवानः ५,१०,७; ८४१। ६,८,७; १७८६
स्तिपाः १०,६९,४; १६२८
स्तियानां वृषभः ७,५,२; १७९५
स्तीर्ण बर्हिः वा० य० २१,१५ २०४०
स्तुतः (ष्टुतः) ३,५,९;४७८।५,१०, ७, ८४१
स्तुभ्वा १,६६,४; १३७
स्थातां गर्भः १,७०,३; १७६
स्यन्द्रः ६,१२,५; १०१०
स्पार्हः ४,१,१२; ६३८
स्पृहयद्वर्णः २,१०,५; ४१३
स्वङ्गः १०,१,१; १४८५
स्वञ्चः ६,१५,१०; १०३२। ७,१०, ३; ११६३
स्वतवान् ४,२,६; ६५२
स्वधावान् १,१४४,७; ३३२। १,१४७, २; ३४४। ३,२०,३; ६१६। ४,१०,६; ७२५। ४.१२,३; ७३६। ५,३,२,५; ७८०,७८२; ८, ४४, २०; १३६२। १०,११८; १५४७। १०, १४२, ३; १६९२। ४,५,२; १७५९। १,९५,१,४; १८६८; १८७१
स्वध्वरः १,१२७,१: २७२। २,२,८; ३९२। ३,९,८;५०७।५.९,३;८३०। ६,१५.४; १०२६।६,१६ ४०; १०८१। ७,१६,१; ११९२। ८,१९,२४;१२४७। ८,१०३,१२;१२६८।८,२३,५; १२७४। १०,११५,२;१६६७।३,२६,८; १७३४
स्वनीकः २,१,८; ३७६। ४,६ ६;६८७। ६.१५,१६,१०३८। ७,१,२३;११२२। ७,३,६; ११२९
स्वपसः [तिस्रः देव्यः] १०,११०,८; २०१५
स्वभिष्टिः ८.१९,३२; १२५५
स्वयशाः १,९५,२,५, १८६९,१८७२
स्वराट् १,३६,७; ७४
स्वराज्यः २,८,५; ४०१
स्वर्चिः २,३,२; १२४३
स्वर्णरः ६,१५,४; १०२६।८,१९,१; १२२४
स्वर्दृक्-श् ५,२६,२; ९२१। ३,२,१४; १७४०
स्वर्पतिः ८,४४,१८; १३६०
स्वर्वान् १,५९.४; १७२०
स्वर्वित् ३,३,५,१०; १७४६,१७५१। ३,२६,१; १७५३।१,९६,४; १८८२। १०,८८,१; २३९७। वा० य०१८,२; २०८५
स्ववसः ५,८,२; ८२२
स्वश्वः ४,२,४; ६५०
स्वाद्म (द् म) न् १,६९,३; १६६
स्वाधीः १,६७.२; १४५। १,७०,४; १७७। ४,३,४; ६६९
स्वासः (षष्ठी) ४,६,८;६८९। १०,३,४; १५०२
स्वाहाकृतयः [देवता] १, १३, १२; १९१७। १, १४२, १२; १९२९। १,१८८,११; १९४१। २, ३, ११; १९५२। ३,४,११; १९६३। ५.५,११; १९७३। ७,२,११; १९८३। ९,५,११; १९९१। १०, ७०, ११; २००२। १०, ११०, ११; २०१३। वा० य० २०, ४६, ६६; २०२४, २०३६। २१,२२,४०;२०४७,२०५९। २७,२२; २०७१। २८,११,३४; २०९४,२१०५। २९,११,३६; २११६,२१२८। ऋ० प्रैष १३; २१४१। अथ० ५, १२, ११; २०१३। ५,२७,१२; २०८३
हन्ता दस्योः अथ० १,७,१; २१८४
हन्ता भंगुरावताम् १०,८७,२२;१८४९
हरिः ७,१०,१; ११६१। १०,७९,६; १६४२। १,९५,१; १८६८। ९,५ ४,९; १९८४,१९८९। अथ० १९,६५,१; २३४९
हरिकेशः ३,२,१३; १७३९
हरितः [वनस्पतिः] ९,५,१०; १९९०

हरितस्य देवः अथ० १, २५, २-३; २२७६-७७
हरिवान् [इन्द्रः] वा०य० २०,३८-३९, २०१६-१७
हरिव्रतः ३,३,५; १७४६
हर्यतः-त (संबो०) ८,४४,५; १३४७
हर्यमाणः ३,६,४; ४८३
हर्षत् १,१२७,६; २७७। १०,४,३; १५०८
हविः सः १०,२०,६; १५७६
हविः अस्मि नाम ३,२६,७; १७५६
हविर्वाट् १,७२,७; २०१
हविष्कृत्-त-तम् (द्वि०) १, १३, ३; १९०८
हव्यः जज्ञानः सद्यः बभूथ १०,६,७; १५२६
हव्यदातिः ३,२,८; १७३४
हव्यवाट् १,१२,२; ११। १,१२,६; १५। १,६७,२; १४५। १,१२८,८; २९०। ३,५,१०; ४७९। ३,१०,९; ५१७। ३,११,२; ५१९। ३,२९,७; ५६४। ३, १७, ४; ६०३। ४,८,१; ७०४। ५,४,२; ७९१। ५, ६, ५; ८०५। ५,२८,५; ९३७। ६,१५,४,८; १०२६,१०३०। ७,१०,३; ११६३। ७,१७,६; १२०९। ८,४४,३; १३४५। ८, १०२, १७-१८; १४७९-८०। १०, ४६, ४, १०; १६०४,१६१०। १०,१२४, १; १६८३। ३, २६, २; १७२८। १०, ११८, ९; १८६१। ८,५६,५; २४५५। अथ० ४,२३,४; २३३३। ऋ०प्रैष४,२१३२।१२,२१४०; २१; १२४४। ८,२३,६; १२७५। १०,१५०,१; १६९८। १०,११८,५; १८५७
हव्यवाट् यज्ञस्य ३,२७,५; ५४१
हव्यवाहनः १,३६,१०; ७७। १,४४, २,५; ८७,९०। २,४१,१९; ४१५। ३,९,६; ५०५। ५,८,६; ८२६। ५,११,४; ८४५। ५,२५,४; ९१४। ५,२८,६; ९३८। ६,१६,२३; १०६४। ७,१५,६; ११८२। ८,१९; २१; १२४४। ८,२३,६; १२७५। १०,१५०,१; १६९८। १०,११८,५; १८५७
हव्या जुह्वानः १,७५,१; २२४
हस्तासः अस्य सप्त ४,५८,३; १८९७
हिंस्रः १०,८७,३,८; १८३०,१८३५
हितः १,१२८,७; २८९। ३,२८,३; ५५४। ५,१,५; ७५९
हितः देवेभिः मानुषे जने ६,१६,१; १०४२
हिन्वानः प्र अज्मभिः वनाभिः ऋ० प्रैष १२, २१४८
हिरण्यकेशः १,७९,१; २४४
हिरण्यदन्तः ५,२,३; ७६९
हिरण्यपर्णः वा० य० २८,३३; २१०४
हिरण्यपाणिः अथ० ३,२१,८; २३६२
हिरण्ययः ४,५८,५; १८९९। ९,५, १०; १९९०
हिरण्यरथः ४,१,८; ६३४
हिरण्यरूपः २,३५,१०; २४३१। ४,१,३; साम० १,१,७,७;
हिरण्यवर्णः २, ३५, १०-११; २४३१-३२
हिरण्यसंदृश्-क् ६,१६,३८; १०७९। २,३५,१०; २४३१
हिरण्यहस्तः अथ० ७,११५,२; २२०२
हिरिशिप्रः २,२,५; ३८९
हिरिश्मश्रुः ५,७,७; १८१७। १०, ४६,५; १६०५
हूयमानः १०,१२२,५; १६७९
हृदः जायमानः १,६०,३; १२१
हृदिस्पृश्-क् ४,१०,१; ७२०
हृषीवत् १,१२७,६; २७७
होता १,१,१; १। १,१,५; ५। १,१२,१,३; १०,१२। १,२६,२,५, ७; २९,३२,३४। १,३६,३,५; ७०,७२। १,४४,७,११; ९२,९६। १,४५,७; १०६। १,५८,१,३,६-७; ११०,११२, ११५-१६। १,६०,२,४; १२०,१२२। १,६७,२; १४५। १,६८,७; १६०। १,७०,८; १८१। १,७६,२,५; २३०, २३३। १,७७,१-२; २३४-३५। १, ७९,१२; २५५। १,१२७,१; २७२। १,१२८,१; २८३। १,१२८,८; २९०। १, १४१, ६, १२; ३१०, ३१६। १,१४३,१; ३१८। १,१४८,१; ३४८। १,१४९,४-५; ३५६-५७। २,२,१, ५; ३८५,३८९। २,९,१; ४०३। २,५,१; ४२५। २,६,६; ४३८। २,७,६; ४४६। ३,१,२२; ४६८। ३,५,४; ४७३। ३,६,३,१०; ४८२, ४८९। ३,७,९; ४९८। ३,९,९; ५०८। ३,१०,२,५,७; ५१०,५१३,५१५। ३,११,१; ५१८। ३,१३,५; ५७८। ३,१४,१; ५८१। ३,१९,५; ६१४। ३,२१,१; ६१८। ३,२९,८; ५६५। ३,२९,१६; ५७३। ३,१९,१; ६१०। ४,१,८,१९; ६३४,६४५। ४,२,१; ६४७। ४,६,१,४,५,११; ६८२,६८५-८६,९१। ४,७,१,५; ६९३,६९७। ४,८,४; ७०७। ४,९,३; ७१४। ४,१५,१; ७४९। ५,१,२,५,६,७; ७५६,७५९-६०-६१। ५,२,७; ७७३। ५,४,३; ७९२। ५,९,२; ८२९। ५,१०,७; ८४१। ५,११,२; ८४३। ५,१३,४; ८५७। ५,१६,२; ८७२। ५,२०,३; ८९३। ५,२२,१; ८९९। ५,२३,३; ९०५। ५,२५,२; ९१२। ५, २६, ४; ९२३। ६,१,१-२,६; ९३९-४०,९४४। ६,२,१०; ९६१। ६,४,१; ९७१। ६,६,१; ९८६। ६,१०,२; ९९४। ६,११,१-२,६; १०००-१,१००५; ६,१२,१;१००६। ६,१४,२; १०१९। ६,१५,४,७,१३; १०२६,१०२९,१०३५। ६, १६, ९, १०, २३, ४६; १०५०-५१,१०६४, १०८७। ७,८,२; ११५०। ७,९,१; ११५५। ७,१०,५; ११६५। ७,१६,५, १२; ११९६,१२०३। ८,११,१०; १२२३। ८,१९,३,२४; १२२६,१२४७।

८,१०३,६; १२६१। ८,२३,१७; १२८६ । ८, ४३, १२; १३२२। ८,४३,२०; १३२९। ८,४४,६-७, १०; १३४८-४९,१३५२ । ८,७५, १; १३७३। ८,६०,१,३; १३८९, १३९११ ८,६०,१४; १४०२। ८,७१, ११; १४१९। १०, १, ५; १४८९। १०,२,३,५;१४९४,१४९६। १०,६,४; १५२३। १०,११,३-४; १५४२-४३। १०,१२,१-२: १५४९-५० । १०, ९१,१; १५८१। १०,४६,१,४,८; १६०१,१६०४,१६०८। १०,५३,२; १६१७। १०,९१,८-९,११;१६५८-५९,१६६१।१०,१२२,१;१६७५।१०, १७६,३; १७०९। १०,५९,४; १७२०। ३,२६,१,६;१७२७,१७३२।३,२,१५; १७४१। ४,४,११: १८२३। १,१३, १,४,८। १९०६,१९०९,१९१३। १, १४२,८; १९२५। २,३,१; १९४२। ३,४,३-४; १९५५-५६। १०,७०,३; १९९९। १०,११०,३,११; २०१०, २०१८। ४,३,१; अथ० ६,७१,१-२; २३४६-४७। ३, ११, ५; २३५९।

साम० १,१,७,७;

होता अध्वरस्य ६,१५,१४; १०३६

होता चर्षणीनाम् १,२७,२; २७३। ८,२३,७; १२७६। ८,६०,१७;१४०५

होता देवानाम् वा० य० २९,२८, २११०

होता पूर्वः ५,३,५; ७८२

होता पूर्व्यः १,९४,६;२६१। ८,७५,१; १३७३

होता प्रथमः ७,११,१; ११६६। ६,९,४; १७९०

होता प्रथमः देवजुष्टः १०,८८,४; २४००

होता मनुर्हितः ६,१६,९; १०५०

होता यज्ञानां विश्वेषाम् ६,१६,१; १०४२

होता यशस्तमः विक्षु ८,२३,१०; १२७९

होता रोदस्योः ६,१६,४६; १०८७

होता विक्षु मानुषीषु १०,१,४;१४४८; १०,७,५; १५३१

होता शश्वतीनाम् ८,३९,५; १३०४

होता सनात् ८,११,१०; १११३

होता हविषः विश्वस्य १०,९१,१; १६५१

होतारौ दैव्यौ १,१३,८; १९१३। १,१४२,८। १९२५। १,१८८,७; १९३७। २,३,७; १९४८

" (प्रचेतसौ) [देवता] ३,४,७; १९५९। ५,५,७; १९७०। ७,२,७; १९८०। ९,५,७;१९८७। १०,७०,७; १९९८। १०, ११०, ७; २००९। वा०य० २०,४२,६३; २०२०,२०३२। २१,१८,३६; २०४३,२०५५। २७, १८; २०६७। २८,७,३०; २०९०, २१०१। २९,७,३२: २११२,२१२४। ऋ० प्रैष ८; २१३६। अथ० ५,१२, ७; २००९। ५,२७,९; २०८०

होत्रम् तव २,१,२; ३७१

होत्रवाहः ५,२६,७; ९२६

होत्राविद् ५,८,३; ८२३

हृत्तु: अथ० १,२५,२-३; २२७६-७७।

दैवत-संहिता

(२)

इन्द्र-देवता

संपादक
भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)

संवत १९९८, शक १८६३, सन १९४१

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवळेकर, B. A.
स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध, (जि० सातारा)

इन्द्रदेवता का परिचय।

मेघस्थानीय विद्युत्।

अब इन्द्रदेवता के स्वरूप का परिचय करनेका यत्न करना है। इन्द्रदेवता कौन है, कहां रहता है, क्या करता है, हमसे उनका संबंध क्या है, उसकी सहायता हमें किस तरह मिल सकती है? इसका विचार करना है। इन्द्रदेवता 'मेघस्थानीय विद्युत्' है, ऐसा कई कहते हैं। इन्द्रका अर्थ Thunderbolt [मेघस्थानीय विद्युत्] है, ऐसा इनका कहना है। इन्द्रदेवताके अनंतविधत्व रूप में मेघस्थानीय विद्युत् यह एक रूप है, इसमें सन्देह नहीं है। पर युरोपीयन लोग सर्वथा मेघस्थानीय विद्युत् ही 'इन्द्र' है, ऐसा जब कहने लगते हैं, तब हम कहते हैं कि, वेदका संपूर्ण इन्द्रदेवता का वर्णन 'मेघस्थानीय विद्युत्' पर घट नहीं सकता। इसका विचार करना हो, तो 'इन्द्रिय' शब्दका प्रथम विचार कीजिये।

इन्द्रिय = इन्द्रकी शक्ति।

'इन्द्रिय' शब्द इन्द्र शब्दसे ही बनता है। 'इन्द्र+इ+य' ये तीन विभाग इन्द्रपदमें हैं, इन्द्र [इ] की [य] शक्ति, यह इसका अर्थ है। इन्द्रिय 'इन्द्रकी शक्ति' है। भगवान् पाणिनी महामुनि 'इन्द्रिय' शब्दका निर्वचन ऐसा करते हैं—

> इन्द्रियं इन्द्रलिङ्गं इन्द्रदृष्टं इन्द्रसृष्टं इन्द्रजुष्टं इन्द्रदत्तं इति वा। [अष्टा० ५।२।९३]
>
> इन्द्र आत्मा, तस्य लिङ्गं, करणेन कर्तुः अनुमानात्। इन्द्रेण दुर्जयमिन्द्रियम्। [भट्टोजी०]
>
> इन्द्रेण दृष्टं ज्ञातं 'मम चक्षुः, मम श्रोत्रं' इत्यादिक्रमेण सृष्टं, अदृष्टद्वारा जुष्टं, प्रीणितं सेवितं वा। दत्तं यथायथं विषयेभ्यः॥
>
> [कौमुदी तत्त्वबोधिनी टीका]

'इन्द्र आत्माका नाम है। इस आत्माका ज्ञान इससे होता है, इन्द्रने यह अपना साधन है, ऐसा जाना है, इन्द्रने अपनी साधना के लिये इसको निर्माण किया, इन्द्रने इसका सेवन किया, इन्द्रने यह विषयोंके प्रति भेजा है, वह इन्द्रिय है।'

यहां भगवान् पाणिनी मुनि अपने व्याकरण में "इन्द्र की शक्ति" इस अर्थमें इन्द्रिय शब्द सिद्ध करते हैं। यह इन्द्रिय शब्द वेदमें है। अर्थात् इन्द्रकी शक्ति अर्थमें यह इन्द्रिय शब्द है और वह वेदमें है। केवल मेघस्थानीय विद्युत् ही अर्थ लेनेसे इस पाणिनी महामुनिके बताये अर्थकी सिद्धि नहीं हो सकती।

हम भी अपने आंख, नाक, कान आदि साधनोंको 'इन्द्रिय' ही कहते हैं। ये ज्ञानके साधन और कर्मके साधन इन्द्रिय ही हैं, अर्थात् ये इन्द्रके साधन हैं, ये इन्द्रकी शक्तियाँ हैं। अर्थात् इन्द्र इनके पीछे है, इन्द्रसे इनमें शक्ति आ रही है, इनसे इन्द्रका ज्ञान हो रहा है। यह विवरण देखनेसे मेघस्थानीय विद्युत्ही केवल इन्द्र नहीं है, यह बात सिद्ध हो जाती है। वेदमें कहा है—

> आदित् ह नेम इन्द्रियं यजन्ते। [ऋ० ४।२४।५]

"[नेमे] अन्य लोग [आत् इत्] उस समय [इन्द्रियं] इन्द्रियोंको बल देनेवाले इन्द्रका [यजन्ते] यजन करते हैं।" इस मन्त्रमें 'इन्द्रिय' शब्दही इन्द्रका वाचक आया है, क्योंकि इन्द्रमें जो शक्ति है, वह इन्द्रकी है, इन्द्रही इन्द्रिय-रूप बना है और मानवी देहोंमें कार्य कर रहा है।

देहधारी जीवके पास सब इन्द्रियां हैं, वह सबकी सब इन्द्रकी शक्तियां हैं, अर्थात् इन्द्रियोंके पीछे इन्द्र छिपकर रहा है, अपनी शक्तिको इन्द्रियोंद्वारा प्रकट कर रहा है। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि, जीवात्मा इन्द्र है और इन्द्रियां उसकी शक्तियां हैं।

इन्द्रके इन्द्रिय

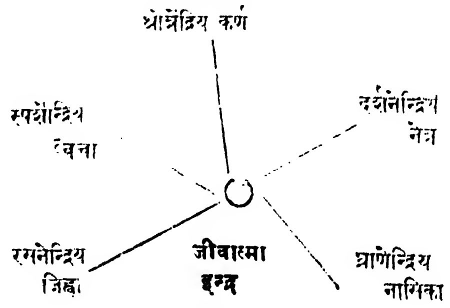

इन्द्रके ये इन्द्रिय हैं । इससे स्पष्ट हो जाता है, कि यह इन्द्र निःसन्देह आत्मा है, जो अन्दर रहता है और अपनि शक्तियोंको बाहर इन्द्रियस्थानोंमें भेजकर विविध कार्य करता है ।

हमारे इन्द्रियभी बाह्य देवताओंपर अवलम्बित हैं। जैसा नेत्र सूर्यपर, जिह्वा जलपर, नासिका पृथ्वीपर, त्वचा वायुपर और कर्ण आकाशपर अवलम्बित है। बाह्य देवताओंसेही ये इन्द्रियगोलक बने हैं। इसका वर्णन ऐतरेय उपनिषद्में इस तरह किया है—

आदित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणी प्राविशत् ।
दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन् ।
वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत् ॥ [ऐतरेय]

'सूर्य आंख बन कर नेत्रस्थानमें प्रविष्ट हुआ, दिशा (आकाश) कान बन कर श्रवणेन्द्रियके स्थानमें प्रविष्ट हुई, वायु प्राण बन कर नासिकाके स्थानमें प्रविष्ट हुआ ।' इसी तरह अन्यान्य देवताएं अन्यान्य इंद्रियस्थानोंमें प्रविष्ट हुई हैं।

विश्वसृष्टि

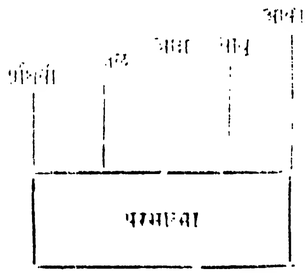

व्यक्तिसृष्टि

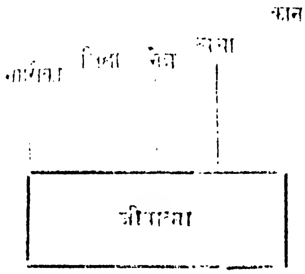

इससे स्पष्ट हो जाता है, जो देवता इस विशाल जगत् में परमात्मदेहमें हैं, वे ही सूक्ष्म अंशरूपसे इस जीवके देहमें इंद्रियों रूपमें प्रकट हुई हैं । इस तरह विचार करनेपर यह बात प्रकट होगी कि, जैसा इंद्रियोंके पीछे जीवात्माके रूपमें 'इंद्र'है, उसी तरह विश्वव्यापक शक्तियों के पीछे परमात्मारूप में भी इन्द्रही है । अर्थात् एकही इन्द्रके जीवात्मा और परमात्मा ये रूप क्रमशः शरीरमें और विश्वमें हैं । यहांतक हमने इन्द्र का स्वरूप सामान्यतः मेघस्थानीय विद्युत् से पृथक् है, यह देख लिया । अब इसका विचार अधिक करनेके लिये सबसे प्रथम हम निरुक्त-कार श्री यास्काचार्यजीका निर्वचन देखते हैं—

निरुक्तकी व्युत्पत्ति ।

इन्द्र इरां दृणातीति वा, इरां ददातीति वा, इरां दधातीति वा, इरां दारयत इति वा, इरां धारयत इति वा, इन्दवे द्रवतीति वा, इन्दौ रमत इति वा, इन्धे भूतानीति वा, 'तद्यदेनं प्राणैः समैन्धंस्तदिन्द्रस्येन्द्रत्वं' इति विज्ञायते, इदं करणादित्याग्रयणः, इदं दर्शनादित्यौपमन्यवः, इन्दतेर्वैश्वर्यकर्मणः, इन्दञ्छत्रूणां दारयिता वा द्रावयिता वा, आदरयिता च यज्वनाम् ।

(निरुक्त० १०।१।९)

इसमें निम्नलिखित प्रकार की निरुक्तियां दीं हैं। क्रमशः ये अब देखिये—

(१) इरां दृणाति= जो अन्नको, जलको, बीजको फोडता है,
(२) इरां ददाति= जो अन्न वा जलको देता है,
(३) इरां दधाति=जो अन्न वा जलका धारण करता है,
(४) इरां दारयते=जो अन्न वा जलका विदारण करता है,
(५) इरां धारयते= जो अन्न वा जलका धारण करता है,
(६) इन्दवे द्रवति= जो इन्दु-चन्द्रमा के लिये द्रवरूप होता है, रस निष्पन्न करता है,
(७) इन्दौ रमते= जो जल या रसमें रमता है,
(८) इन्धे भूतानि= जो भूतोंको प्रकाशित करता है, उजाला करता है, तेजस्वी करता है,
(९) प्राणैः समैन्धन्= प्राणोंसे जिसका दीपन होता है, प्राणोंसे जो प्रकाशित होता है,
(१०) इदं करोति= इस जगत् को जो निर्माण करता है,
(११) इदं पश्यति= इस विश्व को जो देखता है,
(१२) इन्दतीति इन्द्रः =परम ऐश्वर्यसे जो संपन्न होता है,

(१३) इंद्रन् शत्रूणां दारयिता= शत्रुओं को विदारण करनेवाला,

(१४) इंद्रन् शत्रूणां द्रावयिता= शत्रुओंको जो भगा देता है,

(१५) यज्वनां आदरयिता=याजकोंका आदर करनेवाला.

ये निर्वचन श्री यास्काचार्य के दिये हैं। इस प्रत्येक निर्वचन की सत्यता की परीक्षा करना हो, तो इन अर्थोंके दर्शक मन्त्र वेदोंमें ढूंढने चाहिये। जिस अर्थके वेदमन्त्र मिलेंगे, वह अर्थ वेदप्रमाणयुक्त है, अतः आदरणीय है, और जो वेदमें नहीं दीखेगा, वह लेनेयोग्य नहीं, ऐसा समझना योग्य है। अन्तिम तीनों अर्थ वेदके प्रमाणोंसे परिपुष्ट हैं, इसके प्रमाण हम आगे देंगे। क्रमांक १-१२ तकके अर्थ अध्यात्म में पाठक देख सकते हैं, इस विषयमें पाणिनी मुनि का सूत्र पूर्वस्थलमें दिया है और उसका विवरण किया है और इसी तरह की ऐतरेयोपनिषद् की व्युत्पत्ति आगे हम देंगे। अध्यात्मपक्ष के मन्त्र भी पर्याप्त मिलेंगे। अन्य व्युत्पत्तियोंके लिये वेदमें मन्त्र देखने चाहिये। यह एक बडा खोज करनेका विषय है। इसका निर्देश यहां इसलिये किया है कि, इससे पाठकोंके मनमें इस बातका प्रकाश हो जाय कि, निरुक्तकार आदिकोंके अर्थ उस समय ही लेने चाहिये, जिस समय उस अर्थ को दर्शानेवाले मंत्र मिल जायँ। अस्तु! हम अब ब्राह्मणों और उपनिषदों में दिये हुए 'इन्द्र' पद के निर्वचन देखते हैं। सबसे प्रथम ऐतरेय उपनिषदमें एक उत्तम निर्वचन दिया है,वह देखिये-

उपनिषदोंमें इन्द्रका अर्थ।

तस्मादिदन्द्रो नाम इदंद्रो ह वै नाम तमिदन्द्रं
सन्तं इन्द्र इत्याचक्षते परोक्षेण परोक्षप्रिया इव
हि देवाः ॥ [ऐ० उ० ४।३।१४]

'इसका नाम 'इदं-द्र' था। इस 'इदं-द्र' को ही 'इंद्र' परोक्षवृत्तिसे कहने लगे।' 'इदं-द्र' का अर्थ है,(इदं) इस शरीरमें (द्र) सुराख करनेवाला। इस शरीरमें सुराख करके वहां इंद्रियों को निर्माण करनेवाला। इस आत्माने इस शरीरमें अनेक सुराख किये और उनसे अपने विविध कार्य करने लगा। इन सुराखोंका नाम ही इंद्रियाँ है। इस विषय में पहिले दी हुई 'इंद्रिय' शब्दकी व्युत्पत्ति देखिये। इस सम्बन्धमें 'इरां दृणाति' यह यास्कीय निरुक्ति देखने योग्य है। इस तरह ऐतरेय उपनिषद् की यह व्युत्पत्ति इन्द्रका स्वरूप 'आत्मा' निश्चित करती है। अब और देखिये-

एष ब्रह्मा, एष इन्द्रः एष प्रजापतिः,
एते सर्वे देवाः। [ऐ० उ० ५।३]

'यही ब्रह्मा है, यही इन्द्र है, यही प्रजापति है, यही सब देव हैं।' अर्थात् इन्द्र नामसे अथवा 'इदं-द्र' नामसे यहां वर्णन किया है, वही सब देवतारूप है अथवा उसीके रूप सब देवता हैं।

ततः प्राणोऽजायत, स इन्द्रः स एषोऽसपत्नोऽद्वितीयः। [बृ० उ० १।५।१२]

'उससे प्राण हुआ, वही इन्द्र है और वही शत्रुरहित तथा अद्वितीय है।' यहां प्राणकोही इन्द्र कहा है। तथा-

एतं इन्धं सन्तं इन्द्र इत्याचक्षते। [बृ०उ०४।२।२]

'इस इन्ध अर्थात् प्रदीप्त करनेवालेकोही इन्द्र कहते हैं।' निरुक्तकारने यह व्युत्पत्ति दी है। 'इन्धे भूतानि' [निरु०] जो भूतोंको प्रकाशित करता है। निम्नलिखित वर्णनमें इन्द्रको परमात्मासे छोटा बताया है—

भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्च। [तै०उ०२।८।१]

इस परमात्माके भयसे अग्नि और इन्द्र डरते हुए धीमे धीमे प्रकाशते हैं।' तथा—

शतं देवानां आनन्दाः स एक इन्द्रस्यानन्दः।
शतं इन्द्रस्यानन्दाः स एको बृहस्पतेरानन्दः॥
[तै० उ०२।८।१]

'देवोंके सौ आनन्दोंके बराबर इन्द्रका एक आनन्द है। इन्द्रके सौ आनंदोंके बराबर बृहस्पतिका एक आनन्द है।'

एष खलु आत्मा...इन्द्रः। [मै०उ०६।८]
असौ वा आदित्य इन्द्रः [मै०उ०६।२३]
चाक्षुष इन्द्रोऽयम् [मै०उ०७।११]
इन्द्रस्त्वं प्राण तेजसा रुद्रोऽसि परिरक्षिता।
त्वमन्तरिक्षे चरसि सूर्यस्त्वं ज्योतिषां पतिः॥
[प्रश्न० २।९]

स ब्रह्मा, स शिवः, स हरिः, सेन्द्रः, सोऽक्षरः,
परमः स्वराट्। [नृ०पू०ता०उ०१।४]

'यह आत्मा निःसंदेह इन्द्र है। यह सूर्य इन्द्र है। चक्षु में जो तेज है, वह इन्द्र है। प्राण ही इन्द्र है, वही तेजसे रक्षण करता है, अन्तरिक्षमें यही संचार करता है,

सूर्यभी यही है। वही ब्रह्मा, शिव, हरि, इन्द्र, अक्षर और परम स्वराट् है।' अर्थात् प्राण ही इन्द्र है और वही सब देवताओंका रूप धारण करता है।

मस्तकमें इन्द्रशक्ति।

अपने शरीर मस्तकमें एक स्तन जैसा अवयव है, इसका वर्णन तै० उपनिषद् में निम्नलिखित प्रकार आया है—

अन्तरेण तालुके य एष स्तन इव अवलंबते सा इंद्रयोनिः। [तै०उ० १।६।१]

'तालुके अन्दर [मस्तकके बीचमें] एक स्तन जैसा अवयव है, वह इन्द्रशक्तिको उत्पन्न करनेवाला है।' अपने शरीर में इन्द्रशक्ति का संचार यहांसे होता है। इस को 'पीनियल ग्लण्ड' [इन्द्रग्रंथी] कहते हैं। योगसाधन करते हुए इस पर ध्यान करनेसे यह ग्रन्थी उत्तेजित होती हैं, जिससे अनेक लाभ होते हैं। इस विषयमें 'इंद्र-शक्तिका विकास' नामक पुस्तक अवश्य देखिये।

इन्द्रके विषयमें ब्राह्मणग्रंथोंमें निम्नलिखित वचन मिलते हैं। वे अब देखिये--

ब्राह्मणग्रन्थोंमें इन्द्रका अर्थ।

(१) इंधो वै नाम एष योऽयं दक्षिणेऽक्षन् पुरुषः तं वा एतं इंधं संतं इंद्र इत्याचक्षते। [श०ब्रा० १४।६।११।२]

(२) अस्मिन् वा इदमिंद्रियं प्रत्यस्थादिति तदिंद्रस्य इंद्रत्वम्। [तै०ब्रा० स२।१०।४]

(३) इंद्रस्य इंद्रियेणाभिषिञ्चामि। [ऐ०ब्रा० ८।७]

(४) इंद्र [एवैनं] इंद्रियेण[अवति] [तै०ब्रा० १।७।६।६]

(५) दधातु इंद्र इंद्रियम्। [तां०ब्रा० १।३।५]

(६) मयि इंद्र इंद्रियं दधातु। [श०ब्रा० १।८।१।४२]

(७) इंद्र इति ह्येतं आचक्षते य एषः [सूर्यः] तपति। [श०ब्रा० ४।६।७।११]

(८) एष वै शुक्रो य एष तपति एष उ एवेन्द्रः। [श०ब्रा० ४।५।५।७;४।५।९।४]

(९) स यः स इंद्र एष एव स य एष तपति। [जै०ब्रा० उ० १।२८।२;१३२।५]

(१०) यः स इंद्रोऽसौ स आदित्यः। [श०ब्रा० ८।५।३।२]

(११) अथ यत्रैतत्प्रदीप्तो भवति। उच्चैर्धूमः परमया जूत्या बल्बलीति तर्हि हैष [अग्निः] भवतींद्रः। [श०ब्रा० २।३।२।११]

(१२) इंद्रो वाग् इत्यु वाऽआहुः [श०ब्रा० १।४।५।४]

(१३) तस्मादाहुरिन्द्रो वागिति [श०ब्रा० ११।१।६।१८]

(१४) अथ य इंद्रः सा वाक्। [जै०ब्रा० उ० १।३३।२]

(१५) वाग्वा इंद्रः। [कौ०ब्रा० २।७;१३।५]

(१६) वागिन्द्रः। [श०ब्रा० ८।७।२।६]

(१७) यो वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः [श० ब्रा० ४।१।३।१९]

(१८) योऽयं चक्षुषि पुरुष एष इन्द्रः। [जै०ब्रा० उ० १।४३।१०]

(१९) ततः प्राणोऽजायत स इन्द्रः। [श०ब्रा० १४।४।३।१९]

(२०) प्राण एवेंद्रः। [श०ब्रा० १२।९।१।१४]
प्राण इन्द्रः। [श०ब्रा० ६।१।२।२८]

(२१) हृदयमेवेंद्रः। [श०ब्रा० १२।९।१।१५]

(२२) यन्मनः स इंद्रः। [गो०ब्रा० उ० ४।११]

(२३) मन एवेंद्रः। [श०ब्रा० १२।९।१।१३]

(२४) इंद्रो वै यजमानः। [श०ब्रा० २।१।२।११; ३।३।३।१०;४।५।४।८;५।१।३।४;८।५।३।८]

(२५) क्षयेन वा एष इंद्रो भवति यश्च क्षत्रियो यदु च यजमानः। [श०ब्रा० ५।३।५।२७]

(२६) ऐंद्रो वै राजन्यः। [तै०ब्रा० ३।८।२३।२]

(२७) इंद्रः क्षत्रम्। [श०ब्रा० १०।४।१।५;कौ०ब्रा० १२।८; श०ब्रा० २।५।२।२७:२।५।४।८;३।९।१।१६;४।३।३।६]

(२८) यदशनिरिंद्रः। [कौ०ब्रा० ६।९]

(२९) स्तनयित्नुरेवेंद्रः। [श०ब्रा० ११।६।३।९]

(३०) इन्द्रो ब्रह्मेति। [कौ०ब्रा० ६।१४]

(३१) प्रजापतिर्वा स इन्द्रः। [श०ब्रा० २।३।१।७]

(३२) देवलोको वा इन्द्रः। [कौ०ब्रा० १६।८]

(३३) इन्द्रो बलं बलपतिः। [श०ब्रा० ११।४।३।१२; तै० ब्रा० २।५।७।४]

(३४) वीर्यं वा इन्द्रः। [तां.ब्रा. ९।७।५,८।गो०ब्रा० उ० ६।७]

(३५) इन्द्रियं वीर्यं इन्द्रः [श०ब्रा० २।५।४।८;३।९।१।१५; ५।४।३।१८]

(३६) शिस्नमिन्द्रः। [श०ब्रा० १२।९।१।१६]

(३७) रेत इन्द्रः। [श०ब्रा० १२।९।१।१७]

(३८) अर्जुनो ह वै नाम इन्द्रः। [श०ब्रा० २।१।२।११; ५।४।३।७]

(३९) इन्द्रो ह्याहवनीयः। [श०ब्रा० २।६।१।३८; २।३।२।२]

(४०) इन्द्र एव यदुद्गाता। [जै०ब्रा०उ० १।२२।२]

(४१) इन्द्रः खलु वै श्रेष्ठो देवतानाम्। [तै०ब्रा० २।३।२।३]

(४२) इन्द्रः सर्वा देवता, इन्द्रश्रेष्ठा देवाः। [श०ब्रा० ३।४।२।२; १।६।३।२२]

(४३) ततो वा इन्द्रो देवानामधिपतिरभवत्। [तै०ब्रा० २।२।१०।३]

(४४) इन्द्रो वै देवानामोजिष्ठो बलिष्ठः सहिष्ठः सत्तमः, पारयिष्णुतमः। [ऐ०ब्रा० ७।१६; ८।१२]

(४५) इन्द्रो वै देवानां ओजिष्ठो बलिष्ठः। [कौ०ब्रा० ३।१४; गो०ब्रा०उ० १।३]

(४६) इन्द्र ओजसां पते। [तै०ब्रा० २।११।४।२]

(४७) इन्द्राय अंहोमुचे। [तै०ब्रा० १।७।३।५]

(४८) इन्द्राय सुत्राम्णे। [तै०ब्रा० १।७।३।६]

(४९) ओकः सारी हैवैषामिन्द्रो भवति। [गो०ब्रा० ६।४; ५।१५; ऐ०ब्रा० ६।१७, २२]

(५०) इन्द्रो यज्ञस्यात्मा, इन्द्रो देवता। [श०ब्रा० ९।५।१।३३]

(५१) ऋक्सामे वा इंद्रस्य हरी। [ऐ० ब्रा० २।२४; तै० ब्रा० १।६।३।९]

(५२) इंद्रस्य हरी बृहद्रथंतरे। [तां० ब्रा० ९।३।८]

(५३) सेना इंद्रस्य पत्नी। [गो० ब्रा० २।९]

(५४) ऐंद्राः पशवः। [ऐ० ब्रा० ६।२५]

(५५) एतद्वा इंद्रस्य रूपं यदृषभः। [श०ब्रा० २।५।३।१८]

(५६) इंद्रो वा अश्वः। [कौ० ब्रा० १५।४]

(५७) ऐंद्रो वै माध्यंदिनः। [गो० ब्रा०उ० १।२३; ६।९। कौ० ब्रा० ५।५; २२।७; ऐ० ब्रा० ६।३०]

(५८) इंद्रो ज्योतिर्ज्योतिरिंद्र इति। [कौ०ब्रा० १४।१]

(५९) यत् शुक्लं तदैन्द्रम्। [श० ब्रा० १२।९।१।१२]

इतने ब्राह्मणग्रन्थोंके वचनों में 'इंद्र' के जो अर्थ दिये हैं, वे ये हैं– [१] दक्षिण नेत्रमें जो पुरुष है, वह इन्द्र है, [२] इंद्रियकी शक्तिसे इन्द्र का बोध होता है, [३] इन्द्र इंद्रियसे रक्षा करता है, [४] सूर्य ही इन्द्र है, [५] अग्नि जो बलसे जलता है, जिसका धूम ऊपर जाता है वह इंद्र है, [६] वाणी ही इन्द्र है, [७] वायुही इन्द्र है, प्राण इंद्र है, [८] हृदय, मन ये इन्द्र हैं, [९] यजमान इन्द्र है, [१०] क्षत्रिय, राजन्य इन्द्र है, [११] क्षात्र तेज इन्द्र है, [१२] मेघस्थानीय विद्युत् इन्द्र है, [१३] ब्रह्मा इन्द्र है, [१४] प्रजापति, देवलोक, ये इन्द्र हैं, [१५] बल और बलवान् दोनों इन्द्र हैं, [१६] वीर्य इन्द्र है, [१७] शिस्न और रेत इन्द्रिय है, [१८] अर्जुन इन्द्र है (इन्द्र पुत्र होनेसे), [१९] आहवनीय अग्नि इन्द्र है, [२०] उद्गाता इन्द्र है, [२१] देवोंमें श्रेष्ठ देव इन्द्र है, सब देवताही इन्द्र हैं, देवोंका राजा इन्द्र है। [२२] जो देवोंमें बलिष्ठ, ओजिष्ठ, सहिष्ठ और संकटोंसे पार ले जानेवाला है, वह इन्द्र है, [२३] पापसे छुडानेवाला, रक्षा करनेवाला इन्द्र है, [२४] घर बनानेवाला इन्द्र है, [२५] यज्ञ का आत्मा, यज्ञ का देवता इन्द्र है, [२६] बैल इन्द्र का रूप है, अश्व इंद्र है, [२७] ज्योति इन्द्र है, जो श्वेत तेज है, वह इन्द्र है, [२८] ऋचा व साम, बृहत् और रथन्तर ये इन्द्रके घोडे हैं। [२९] सेना इन्द्रकी पत्नी है।

इन इन्द्रके अर्थों या स्वरूपों को देखनेसे केवल मेघस्थानीय विद्युत्ही इन्द्र है, ऐसा कहना योग्य नहीं हो सकता।

शरीरमें इंद्र= आंखकी पुतली, इंद्रिय, हृदय, मन, प्राण, आत्मा, वाणी, बल, ओज, सह, गौरवर्ण, शिस्न, रेत ये शरीरमें इन्द्रके रूप हैं।

मानवोंमें इंद्र= यजमान, ब्रह्मा, उद्गाता, राजा, क्षत्रिय, वीर, बलिष्ठ, ओजिष्ठ, सहिष्ठ, दुःखोंके पार ले जानेवाला, वक्ता, घर बनानेवाला इन्द्र है।

देवोंमें इन्द्र= सब देवता, देवोंका राजा, सूर्य, आदित्य, अग्नि, तेज, विद्युत, मेघस्थानीय बिजुली इन्द्र है।

पशुओंमें इन्द्र= बैल और अश्व ये पशुओंमें इन्द्र हैं।

इस तरह इन्द्रके रूप विविध स्थानोंमें है। 'इंद्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते' [ऋ० ६।४७।१८] इन्द्र अपनी शक्तियोंसे नाना रूप धारण करता है, यह इस तरह उनके नाना रूप हैं। सब विश्वही उसका रूप है और विश्वान्तर्गत हरएक रूप इन्द्रकाही रूप है।

इस तरह इन्द्र की महिमा देखनेयोग्य है। अब वेदमें जो नाम इंद्रके लिये आये हैं, उनका विचार करते हैं–

वेदमें इन्द्रके विशेषण।

परमेश्वर का ही नाम 'इन्द्र' है, ऐसा स्पष्ट दर्शानेवाले कई पद वेदके मंत्रोंमें हैं देखिये--[अनूनः] किसी स्थानपर न्यून नहीं, सब स्थानोंमें एक जैसा भरा है, सर्व व्यापक [दिवि-क्षाः द्युक्षः] द्युलोकमें, आकाशमें रहनेवाला [स्वर्पति] द्युलोक अथवा आकाशका स्वामी, [विश्वतस्पृथुः] विश्वके चारों ओर भरपूर विश्वसे भी अधिक व्यापक, [अन्तरिक्षप्राः] अन्तरिक्षमें, बीचके अवकाशमें परिपूर्ण होकर रहनेवाला, [विभुः] व्यापक, विश्वव्यापक, [विश्वभूः] विश्वमें भरपूर, विश्वभरमें रहनेवाला, [दिविस्पृश] आकाशमें व्यापक ये शब्द इन्द्रदेव विश्वभरमें परिपूर्ण-तया व्यापक है, यह भाव बताते हैं कि सर्वव्यापक परमेश्वर ही इन्द्र है, यह बात इन शब्दोंसे सिद्ध होती है।

[विश्वकर्मा] सब विश्वकी रचना करनेवाला, विश्वरूप कर्म करनेवाला [लोककृत्] सब सूर्यादि लोकोंका निर्माण करनेवाला [विश्वमनाः] विश्व जितना जिसका व्यापक मन है, [विश्ववेदाः] विश्वको यथावत् जाननेवाला ये पदभी इंद्र परमात्माही है, ऐसा बताते हैं। ये पद वेदमंत्रों में इन्द्रके गुण बताते हैं। विश्वकी रचना करनेवाला और विश्वको जाननेवाला इन्द्र निःसंदेह परमेश्वर है।

[विश्वरूपः] विश्व ही जिसका रूप है, विश्वमें जो जो वस्तु है, वह सब इन्द्रकाही रूप है। इन्द्रही नाना रूप धारण कर विश्वमें रहता है। भगवद्गीता का ११वाँ अध्याय इसी 'विश्वरूपदर्शन' नामका है। यही भाव दर्शाने-वाला इन्द्रवाचक यह शब्द वेदमंत्रमें है। [विश्व-देवः] सब देव जिसके अंश हैं। विश्वरूपी परमेश्वरकाही यह वर्णन है। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, आदि सब देवताएं जिसके शरीरके अंग-प्रत्यंग हैं। परमात्मा ही इन्द्र है, यह आशय इन्द्रवाचक इन शब्दोंसे व्यक्त होता है।

(ईशानकृत्) स्वामियोंको बनानेवाला अर्थात् राजा-ओंका भी जो राजा है, प्रभुका भी प्रभु, [बृहस्पतिः] इस बडे विश्व का एकमात्र पालन करनेवाला, [वास्तोष्पति] सब वस्तुओंका पालक, [ज्येष्ठ राजः] सब राजाओंमें जो सबसे श्रेष्ठ राजा है, [ज्येष्ठतमः] श्रेष्ठोंमें जो श्रेष्ठ है, [देवतमः] सब देवोंमें जो श्रेष्ठ देव है, [द्युमत्तमः] प्रकाशवानोंमें जो सबसे अधिक प्रकाशमान है, [पितृतमः] पिताओंकाभी जो पिता है, [शिवतमः, शंतमः, शंभूः] कल्याण करनेवालोंमें जो सबसे अधिक कल्याण करनेवाला है, [असमः] जिसके समान कोई नहीं है, ये सब इन्द्र-वाचक पद परमेश्वरका ही बोध कराते हैं।

[स्वरोचिः] उसका अपना निज तेज है, किसी दूसरेके तेजसे वह तेजस्वी नहीं बना, अपने तेजसेही वह सदा प्रकाशता रहता है, [बृहद्भानुः] उसका तेज बडा भारी है, उससे बडा किसीका भी तेज नहीं है, [चित्रभानुः] उस का तेज चित्रविचित्र है। वह स्वयं ज्योति है। ये शब्द परमेश्वरका स्वयं तेजस्वी होना बताते हैं। इन्द्रके लिये ये शब्द प्रयुक्त हुए हैं। अपने तेजसे सब विश्वको सुंदर रूप देता है, यह भाव [सुरूपकृत्नु] पदसे व्यक्त होता है।

यह [अमर्त्य] अमर है, [अजरः] अजर है। [अजुरः, अजुर्यः, अजुर्यत्] क्षीण होनेवाला नहीं है, सबका [पूर्वजाः] पूर्वज है, सबका आदि है, सब धर्मोंका निर्माण-कर्ता [धर्मकृत्] है, [विधर्ता] सबका आधार है, ये पद इन्द्रके लिये प्रयुक्त हुए हैं और ये स्पष्टताके साथ ईश्वरके वाचक प्रतीत होते हैं। [अनपच्युत्] इसको स्वस्थानसे कोई हिला नहीं सकता, यह अपने स्थानमें सदा रहता है।

[विश्वचर्षणिः] सर्व मनुष्यसमाजही परमेश्वरका रूप है, जनता--जनार्दन ही उसको कहते हैं, [पाञ्चजन्यः] पञ्च जन अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद ये पांच प्रकारके लोग उसका स्वरूप है, [विश्वानरः] सब मानवजातिही ईश्वरका स्वरूप है। 'ब्राह्मण इस ईश्वरकी सिर है, क्षत्रिय इसके बाहु है, वैश्य इसका उदर है और शूद्र इसके पांव हैं। [ऋ० १०।९०।१२] इस वेदोक्त वर्णन के अनुसार ये पद निःसन्देह परमात्मवाचक हैं।

ये पद किस मन्त्रमें प्रयुक्त हुए हैं, यह पाठक इन सूचियों में देख सकते हैं और इनके मन्त्रभी देख सकते हैं। पर ये सब शब्द इन्द्रवाचक हैं और ये सब शब्द परमात्माके ही वाचक हैं। अर्थात् 'इंद्र' परमात्माही है। इस वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि, जो इन्द्र को केवल मेघ-स्थानीय विद्युत् ही मानते हैं, वे इन्द्रके इस परमेश्वरीय भाव को नहीं जान सकते।

एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति।
अग्निं यमं मातरिश्वानं आहुः॥ [ऋ० १।१६४।४६]

"एकही सत् है, जिसका वर्णन विद्वान् लोक अनेक प्रकार से करते हैं, उसको अग्नि, यम, मातरिश्वा, वायु, इन्द्र, मित्र, वरुण आदि कहते हैं।" इस तरह उस 'एकं सत्' को इन्द्रपद से वर्णन किया। अतः इन्द्र आत्मा है अथवा 'एकं-सत्' ही है। अब इस विषयके कुछ मन्त्र यहां देखते हैं-

सबका एक राजा।

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृंगिणो वज्रबाहुः। सेदु राजा क्षयति चर्षणीनां अरान्न नेमिः परि ता बभूव ॥

(७२९ ऋ० १-३२-१५)

इंद्र (यातः अवसितस्य राजा) जंगम और स्थावर पदार्थमात्र का राजा है, वही (वज्रबाहुः) वज्र के समान जिसके बाहु हैं, ऐसा इन्द्र (शमस्य च शृंगिणः) शान्त और सींगवालों का अर्थात् शान्त और क्रूरों का भी राजा है। वही (चर्षणीनां राजा) सब प्रजाजनों का राजा है। जिस तरह (अरान् नेमिः) अरों को चक्र की लोहपट्टि घेरती है, उस तरह (ताः परि बभूव) इन सब को वही घेरता है।

सब का एकमात्र प्रभु है, वह सब को घेरता है, वह सब के चारों ओर है। सर्वव्यापक है। सब स्थावर-जंगम का एकमात्र प्रभु है। तथा और देखिए-

य एकश्चर्षणीनां वसूनां इरज्यति।
इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ (३६ ऋ० १-७-९)

"इन्द्र ही पञ्चजनों का, और सब प्रजाजनों का तथा (वसूनां) सब धनों का एकमात्र स्वामी है।"

स्थावरजंगम का एक ही प्रभु है। इस विश्व के अनेक ईश्वर नहीं हैं, यही सब का एकमात्र एक ही प्रभु है। मनुष्यों, पशुओं और सब अन्य वस्तुओं का अधिष्ठाता यही है। इसकी आज्ञा का कोई उल्लंघन कर नहीं सकता। यह द्युलोक से भी बडा है। इस विषय में आगे का मंत्र देखिए-

द्युलोक से बडा।

दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मह्ना पृथिवी चन प्रति। भीमस्तुविष्मान् चर्षणिभ्य आतपः शिशीते वज्रं तेजसे न वंसगः॥

(७९७ ऋ० १-५५-१)

द्युलोक से भी (अस्य वरिमा) इस इन्द्र का महिमा बहुत बडा है। पृथ्वी से भी बहुत बडा है। वह इन्द्र (भीमः) भयंकर (तुविष्मान्) बलवान् और (चर्षणिभ्यः आतपः) लोगों के लिये प्रकाश देनेवाला है। (वंसगः) बैल जैसा वह वीर (तेजसे वज्रं शिशीते) तीक्ष्ण करने के लिये शूर के वज्र को तेज करता है।

आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्बधे रोचना दिवि।
न त्वावाँ इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यते
अति विश्वं ववक्षिथ ॥ (२२० ऋ० १-८१-५)

इन्द्र ने (पार्थिवं रजः पप्रौ) पृथ्वी और अन्तरिक्ष को व्यापा है, उसने (दिवि रोचना बद्बधे) द्युलोक में तेजस्वी तारागण रखे हैं। तेरे समान दूसरा कोई नहीं है, न कोई है और न होगा। (विश्वं अति ववक्षिथ) तू विश्व से बडा है।

नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः।
जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि ॥

(६५ ऋ० १-१०-८)

हे इन्द्र ! (उभे रोदसी) द्युलोक और पृथिवी ये दोनों (त्वा न इन्वतः) तुझ को अपने अन्दर समा नहीं सकते। तू (ऋघायमाणं) शत्रुओं का नाश करनेवाला है। (स्वर्वतीः अपः जेषः) तेजस्वी उदकों का जय करके वह उदक और (गाः) गौवें (अस्मभ्यं सं धूनुहि) हम सब के लिये दो।

इन्द्र पृथ्वी और द्युलोक से भी बढकर है। सर्वत्र व्याप कर रहनेवाला वह है और वह इससे भी अधिक व्यापक है, अर्थात् वह जहां नहीं, ऐसा स्थान नहीं है।

त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः। चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम् ॥

(७७१ ऋ० १-५२-१२)

(त्वं अस्य रजसः व्योमनः पारे) तूने इस अन्तरिक्ष और आकाश के परे रहकर (भूमिं चकृषे) भूमि का निर्माण किया। (स्वभूत्योजा धृषन्मनः) तू अपने सामर्थ्य से युक्त और शत्रुका धर्षण करनेवाला है, अतः हमारी (अवसे) रक्षा करने के लिये यह सब (ओजसः प्रतिमानं) अपने बल के योग्य कर्म करता है। तू (स्वः दिवं अपः परिभूः एषि) द्युलोक, अन्तरिक्ष और अपोलोक को घेर कर रहता है।

त्रिलोक इंद्र से विभक्त नहीं।

न यं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रिणम। अमादिदस्य तित्विषे समोजसः॥
(३११ ऋ० ८-१२-२४)

(यं वज्रिणं) जिस इंद्र को (रोदसी) द्युलोक और पृथ्वी तथा (अन्तरिक्षाणि) अन्तरिक्ष (न विविक्तः) अपने से पृथक् कर नहीं सकते। उस इंद्र के (ओजसः) बल से सब कुछ (तित्विषे) प्रकाशित होता है।

कुछ भी दूर नहीं है।

न ते दूरे परमा चिद् रजांसि आ तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम्। स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ॥
(१२३९ ऋ० ३-३८-२)

(परमा रजांसि) दूर रजोलोक भी तेरे लिये (न ते दूरे) दूर नहीं हैं, हे (हरिवः) अश्वयुक्त इन्द्र! (हरिभ्यां) अपने दोनों घोडों के साथ (आ प्रयाहि) आओ, (स्थिराय वृष्णे) तुज जैसे स्थिर बलवान् वीर के लिये ये सवन किये हैं और अग्नि प्रज्वलित करके (ग्रावाणः युक्ताः) रस निकालने के लिये ग्रावों को लगा दिया है।

द्युलोक का उत्पादक इन्द्र।

जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो। यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः समप्सुजित् मरुत्वां इन्द्र सत्पते॥ (१७७२ ऋ० ८-३६-४)

इन्द्र, द्युलोक और पृथ्वीका उत्पन्न करनेवाला है। तू सोमका पान कर, आनंद प्राप्त कर। सब देव जो भाग तेरे लिए निश्चित करते हैं, वह यह है। सब (पृतनाः) सैन्य का पराभव करनेवाला तू है और (अप्सु जित्) जलमें अथवा अन्तरिक्षमें विजय करनेवाला भी तू ही है।

पृथ्वी और जल का उत्पादक।

स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः पुरंदरो दासीरैरयद् वि। अजनयन् मनवे क्षां अपश्च सत्रा शंसं यजमानस्य तूतोत्॥ (१२१४ ऋ० २-२०-७)

"वह वृत्र का नाश करनेवाला और (पुरन्दरः) शत्रु के नगरों का भेदन करनेवाला इन्द्र (कृष्णयोनीः दासीः) काले दासों अर्थात् शत्रुओं को (वि ऐरयत्) भगा देता है। उसने मनुष्योंके लिए (क्षां अपः च) पृथ्वी और जल उत्पन्न किया। वह इन्द्र यज्ञ करनेवालों की प्रशंसा की वृद्धि करे।

'कृष्णयोनी' शब्द का अर्थ कृष्ण कृत्य करनेवाले दुष्ट शत्रु है। ऐसे शत्रुओं को इन्द्र भगा देता है।

आकाश खडा करनेवाला।

अवंशे द्यामस्तभायद् बृहन्तं आ रोदसी अपृणदन्तरिक्षम्। स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ सद्मेव प्राचो वि मिमाय मानैः वज्रेण खान्यतृणत् नदीनाम्। वृथासृजत् पथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार (११६३-६४ ऋ० २।१५।२-३)

(अवंशे) आधाररहित आकाश में (बृहन्तं द्यां अस्तभायत्) बडे आकाश को स्थिर किया और (रोदसी) पृथ्वी और आकाश को तथा (अन्तरिक्षं) अन्तरिक्ष को (आ अपृणत्) भर दिया। उसने पृथ्वी का धारण किया और बढाया।

(मानैः) नाप लेकर (प्राचः सद्म इव) जैसा मकान बनाते हैं, वैसा (नदीनां खानि अतृणत्) वज्रसे नदियोंके मार्ग बना दिये (दीर्घयाथैः पथिभिः) दीर्घ मार्गों से जानेवाली नदियां उसने सहजी उत्पन्न की हैं।

विश्वकी रचना करनेका यह अपूर्व वर्णन है। सब लोकलोकांतर निराधार अन्तराल में रखे हैं, यह प्रभु का अद्भुत सामर्थ्य है। और देखिए-

नक्षत्र स्थिर किये।

इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दृंहितानि च। स्थिराणि न पराणुदे॥ (१६२ ऋ० ८-१४-९)

इन्द्रने आकाशमें तेजस्वी तारागण स्थिर और सुदृढ किए। उन स्थिरोंको कोई (न पराणुदे) हिला नहीं सकता।

नक्षत्र स्थिर हैं, यह यहां कहा है। नक्षत्रों को स्थिर करनेवाला यही इन्द्र है। अतः इसकी शक्ति अगाध है, सब उसके सामने कांपते हैं-

स्थावर, जंगम कांपते हैं।

अभिष्टने ते अद्रिवो यत् स्था जगच्च रेजते।
त्वष्टा चित् तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भिया
अर्चन् अनु स्वराज्यम् ॥ (९१३ ऋ० १·८०·१४)

हे (अद्रिवः) इन्द्र! (ते अभिष्टने) तेरे गर्जन से जो स्थावर, जंगम है, वह सब (रेजते) कांपने लगता है, (तव मन्यवे) तेरा क्रोध होनेपर त्वष्टा भी (भिया वेविज्यते) डर से कांपता है। ऐसा तेरा प्रभाव है. अतः स्वराज्य की अर्चना कर।

तव त्विषो जनिमन् रेजत द्यौ रेजद् भूमिर्भियसा स्वस्य मन्योः। ऋघायन्त सुभ्वः पर्वतास आर्दन् धन्वानि सरयन्त आपः ॥२॥
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौरिन्द्रस्य कर्ता स्वपस्तमो भूत्। य ईं जजान स्वर्यं सुवज्रं अनपच्युतं सदसो न भूम ॥४॥ य एक इच्च्यावयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः।
सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः ॥५॥ (१४८९, ९१-९२ ऋ. ४।१७। २,४,५।)

(तव त्विषः जनिमन्) तेरे जन्मके समय तेरे तेजसे (द्यौः रेजत) द्युलोक कांपने लगा, (भूमिः रेजत्) भूमी भी कांपने लगी, (स्वस्य मन्योः भियसा) तेरे क्रोध के भयसे ये भयभीत हुए, (पर्वतासः सुभ्वः ऋघायन्तः) उत्तम पर्वत फट गए, (धन्वानि आर्दन्) शुष्क देश गीले हुए, और (आपः सरयन्त) जल बहने लगा।

(ते जनिता द्यौ सुवीरः अमन्यत्) तेरा जनक पिता द्युलोग उत्तम पुत्र से युक्त अपने आपको मानने लगा, (इन्द्रस्य कर्ता) वह इंद्र का प्रकट करनेवाला था और वह (सु-अपः-तमः) बडे कर्मों का कर्ता हुआ। उसने (सुवज्रं) उत्तम वज्रधारी (अनपच्युतं) न गिरनेवाले (स्वर्यं) तेजस्वी इन्द्र को उत्पन्न किया।

वह एक ही वीर (भूमा च्यावयति) बडे शत्रुको हटाता है, वही स्तुत्य इन्द्र (कृष्टीनां राजा) प्रजाओंका एकमात्र राजा है। वह इन्द्र उपासक को धन देता है, इसलिये सब संसार (विश्वे एनं सत्यं अनुमदन्ति) इस सच्चे वीर का अनुमोदन करता है।

सब का वश करनेवाला इंद्र।

अर्चा शक्राय शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभि ष्टुहि। यो धृष्णुना शवसा रोदसी उभे वृषा वृषत्वा वृषभो न्यृञ्जते ॥
(७८७ ऋ. १।५४।२)

उस शक्तिमान् और बुद्धिमान् इंद्र की स्तुति करो कि, जो अपने (धृष्णुना शवसा) धर्षणशील बल से दोनों द्यावापृथिवी को अपने वश में करता है। जैसा (वृषभः) वीर्यशाली वीर अपने सामर्थ्य से स्त्री को वश करता है।

सब विश्व जिस के सामने कांपता है, भयभीत होता है, जिस की मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर सकता। अतः इंद्र सब को वश करनेवाला है।

इंद्र का असीम सामर्थ्य।

असमं क्षत्रमसमा मनीषा प्र सोमपा अपसा सन्तु नेमे। ये त इंद्र ददुषो वर्धयन्ति महि क्षत्रं स्थविरं वृष्ण्यं च ॥ (७९३ ऋ. १।५४।८)

(अ-समं क्षत्रं) इंद्र का क्षात्र तेज असीम है, उस की (मनीषा असमा) बुद्धि भी असीम है। (नेमे) ये याजक (अपसा प्र सन्तु) अपने कर्म से उत्कर्ष को प्राप्त हों। क्योंकि जो लोक तेरी बधाई करते हैं, वे (महि स्थविरं वृष्ण्यं क्षत्रं) बडा विशाल, पौरुषयुक्त क्षात्र तेज प्राप्त करते हैं।

इतना असीम सामर्थ्य है, इसीलिये सब पर उस का प्रभुत्व चल रहा है, सब को वश में वह रखता है। उस पर कोई हुकूमत नहीं कर सकता, पर सब पर उसी की हुकूमत चलती है। देखिये–

सत्यमित् तन्न त्वावाँ अन्यो अस्तीन्द्र देवो न मर्त्यो ज्यायान्। अहन्नहिं परिशयानमर्णोऽवासृजो अपो अच्छा समुद्रम् ॥ (१९७१ ऋ. ६।३०।४)

हे इंद्र! यह सत्य है कि, तेरे जैसा न कोई देव है और (न मर्त्यः) न मानव है। तेरे से (ज्यायान्) बडा तो कोई नहीं है। (अर्णः परिशयानं अहिं अहन्) जल का प्रतिबंध करनेवाले शत्रु का वध कर के तूने (अपः समुद्रं अवासृजः) जल खुला किया, जो समुद्र तक बहता रहा।

हरएक वस्तुमात्र में प्रभु का सामर्थ्य दीखता है। क्या जल में, क्या वनस्पति में, क्या अन्य पदार्थों में, उस का

सामर्थ्य विश्वभर में ओतप्रोत भरा है। अतः सब पर उस का प्रभुत्व स्थिर है और उस की आज्ञा का कोई उलंघन नहीं कर सकता, इस विषय में देखिये—

तेरे मार्ग का अतिक्रमण सूर्य नहीं करता।

दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा दिवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः। सं यदानळध्वन आदिदश्वैर्विमोचनं कृणुते तत् त्वस्य ॥ (१२४९ ऋ. ३।३०।१२)

(प्रदिष्टाः दिशः) निश्चित किये दिशाओं को जो कि, (हर्यश्व-प्रसूताः) इंद्रने निश्चित किये हैं. (सूर्यः न मिनाति) सूर्य नहीं छोडता। (अश्वैः यद् अध्वनः आनट्) घोडा से जब वह मार्गपर से चला जाता है, तब [विमोचनं कृणुते] विमोचन करता है। यह इसी का कार्य है।

इस तरह अनेक मन्त्र पाठक इन सूक्तों में परमेश्वर के वाचन देख सकते हैं, तथा पूर्वस्थान में जो विशेषण के शब्द ईश्वरवाचक करके बताये हैं, उन पदों का भाव पाठक इन मंत्रों में देख सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं कि, इंद्रदेवता के मंत्रों में ईश्वरविषयक वर्णन का अच्छा स्थान है।

मैं इन्द्र हूं = इन्द्रका साक्षात्कार।

प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति। नेन्द्रोऽस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभि ष्टवाम ॥३॥ अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना। ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्ति आदर्दिरो भुवना दर्दरीमि ॥४॥ (९९३-९९४ ऋ० ८।१००।३-४)

यदि इन्द्र (सत्यं अस्ति) सचमुच है, तब तो उस की (स्तोमं भरत) स्तुति करो, पर नेमने (आह) कहा कि (न इन्द्रः अस्ति) इन्द्र नहीं है, (क ईं ददर्श) किसने उसे देखा ? और हम (कं अभि स्तवामः) किसकी स्तुति करें ?

इन्द्रने उत्तर दिया- हे (जरितः) स्तोता ! (अयं अस्मि) यह मैं हूं (इह मा पश्य) यहां मुझे देख। (मन्हा विश्वा जातानि अभि अस्मि) अपने महत्त्व से सब वस्तुओं पर मैं ही प्रभाव करता हूं ! अतः (ऋतस्य प्रदिशः) सत्य को बतानेवाले (मा वर्धयन्ति) मुझे ही बढाते हैं। (आ दर्दिरः) क्रुद्ध होने पर मैं [भुवना दर्दरीमि] सब भुवनों का नाश करता हूं।

भक्त को इन्द्र प्रत्यक्ष दर्शन देता है, यह बात यहां दर्शायी है। ईश्वरसाक्षात्कार होता है। ईश्वर साक्षात् होकर ' मैं हूं ' ऐसा कहता है। जिसका भाग्य हो, उस को यह दर्शन होगा।

इस तरह ईश्वरवर्णनपरक मंत्रों का नमूना देखने के बाद हम वीरत्वविषयक वर्णन का नमूना देखना चाहते हैं। ऊपर के स्थान में जहां ब्राह्मणग्रंथों के वचन दिये हैं, वहां ' राजा, क्षत्रिय, वीर, शूर ' आदि का वाचक (इन्द्र) पद आया है। इंद्र के इस भाव का अब विचार करना है—

क्षत्रिय वीर इन्द्र।

अब हम क्षत्रिय पराक्रमी वीर इन्द्र का विचार करते हैं। इन्द्रदेवता के जो मन्त्र वेद में हैं, उन में उसके पराक्रम के मंत्र ही बहुत हैं। अर्थात् क्षत्र भाव इन्द्र में विशेष प्रकट है। शत्रु का हनन यह भाव इसमें मुख्य है। इस भाव के वाचक शब्द इन्द्र के नामों में ये हैं—

(असुरहा) असुरों का नाश करनेवाला, (अहिहा) अहि नामक शत्रु का वध करनेवाला, (दस्युहा) शत्रुओंका नाश करनेवाला, (वृत्रहा, वृत्रहन्ता) वृत्र का वध करनेवाला, (अघहन्ता) सब प्रकार से वैरियों का नाश करनेवाला, (विहन्ता) विशेष रीति से दुष्टों का वध करनेवाला, (सत्राहा) मित्रदल को इकट्ठा कर के शत्रु का नाश करनेवाला, (महावधः) बडी कत्तल करनेवाला, ये इन्द्र के वाचक शब्द शत्रुवध करने का उस का स्वभाव बताते हैं।

शत्रु का हमला होने पर उसको सहकर अपने स्थान में सुस्थिर रहने का भाव निम्नलिखित शब्दोंद्वारा व्यक्त होता है- (अभिमातिषाह्, अभिमातिहा) शत्रु को सहना, (चर्षणीसहः) शत्रुसेना के आक्रमण को सहनेवाला (जनं सहः, नृषहः) जनताकी चढाईको सहनेवाला, (प्रसहः) विशेष प्रकारकी चढाई को सहनेवाला, (पृतनाषाह्) शत्रु की सेना के हमले को सहनेवाला, (तुराषाह्) त्वरा के साथ शत्रु के हमले को सहनेवाला,

(विश्वाषाट्) सब प्रकारके शत्रु को सहनेवाला, (सत्राषाट्) मिलकर अनेक शत्रु हमला करते हुए आ गये, तो उसको सहनेवाला, (प्राशुषाट्) अति शीघ्रता के साथ शत्रु के हमले को सहने की तैयारी करनेवाला, इन्द्र है। शत्रु को सहने का अर्थ अपनी वीरता से, अपने बल से, अपनी शक्ति से शत्रु के हमले को सहना है। शत्रु का हमला होने पर अपना स्थान न छोडना, अपने स्थान पर रहते हुए शत्रु को पराजय देकर भगा देने का नाम है, शत्रु को सहना। स्वयं शत्रु को सहना और स्वयं शत्रु को असह्य होना, यह द्विविध वैदिक युद्ध-कौशल्य है।

इस तरह शत्रु को असह्य बनने के लिये उत्तम वीर बनना आवश्यक है। यह भाव इन्द्रवाचक निम्नलिखित शब्दों में देखना उचित है- (सुवीरः) उत्तम वीर होना, (महावीरः, प्रवीरः, एकवीरः) सब से बडा वीर होना, बलवान् और वीर्यवान् होना, अजिंक्य वीर होना, (अभिवीरः, पुरुवीरः) सब प्रकार का वीरत्व अपने पास रखना, अपनी सेना में सब वीर ऐसे रखने कि, जो उक्त प्रकार वीर्य दिखा सकें, (वीरतरः वीरतमः) वीरों में उत्तम वीर बनना, (अभिभूतरः) शत्रुका पराभव करना, विशेष प्रवीण बनना, (अवोजित्) रक्षणशक्ति के साथ शत्रु को जीतना (संसृष्टजित्, सत्राजित्, सजित्वानः) सब शत्रुओं को जीतनेवाला, विजय प्राप्त करने की शक्ति से युक्त, ये इन्द्रवाचक शब्द बताते हैं कि, इन्द्र किस तरह के वीर का नाम है।

(अपराजितः) कभी जो पराभूत नहीं होता, (धनंजयः) युद्ध में शत्रु के धन को जीतनेवाला, युद्ध में विजयी, (पूर्भित्, पूर्भित्तमः) शत्रु के नगरों और कीलों का नाश करनेवाला, (पुरंदरः) शत्रु के नगरों का भेदन करके अन्दर प्रवेश करनेवाला, (अभि भूः) सब प्रकार से शत्रु का पराभव करनेवाला (अभीरुः, विभीषणः) जिस को स्वयं कभी भय नहीं होता, पर जो शत्रु को भयंकर मालूम होता है, (वीरयुः) जो वीरों को अपने पास रखता है, वीरों को वीरोचित कार्यों में जो लगाता रहता है, (आजिकृत् रणकृत्) जो युद्ध करने में परम कुशल है, (आजितुरः) जो युद्ध में त्वरा से अपने कर्म करता है, अतः जो (आजिपतिः) युद्ध का स्वामी कहलाता है, ये इन्द्र के शब्द इन्द्र का रणकौशल्य बता रहे हैं।

(वाजिनीवसुः) सेना ही जिसका धन है, सेना को ही जो अपना धन मानता है, (महाव्रातः) बडे सेनासमुदायों को जो युद्धों में चलाता है, बडी से बडी सेना का संचालन करने में जो कभी प्रमाद नहीं करता, (सेना नीः) जो बडी कुशलता से सेना को चलाता है, (बलविज्ञायः, सबलः) बल के लिये, चतुरंगबल के लिये जिसकी सर्वत्र प्रसिद्धि है, (सत्यशुष्मा) जिसका बल सत्य है, अर्थात् सदा विजय पाने में निश्चित सामर्थ्य से जो युक्त है, जो (पुरोहितः, पुरःस्थाता, पुरएता) अपनी सेना के अग्रभाग में रहता है, तथा शत्रु के ऊपर हमला करने में जो सदा आगे बढता है।

(रथयुः, रथितमः) रथयुद्ध में जो प्रवीण है, जिसके पास बहुत रथ हैं, रथसेना के संचालन में जो प्रवीण है, (उरुक्रमः) शत्रुपर जो बडे आक्रमण करता है, (वृषरथः, सुखरथः) बैलोंके रथ और सुख देनेवाले रथ जिसके पास हैं, (रथेष्ठाः) रथपर जो रहता है, (बन्धुरेष्ठाः) रथमें विशेष स्थानपर जो बैठता है। ये शब्द इन्द्र का रथयुद्ध-कौशल बतानेवाले हैं।

(शवसः सूनुः, सहसः सूनुः) बलका पुत्र ये शब्द इसके असीम बलके सूचक हैं। (महाहस्ती) इस से उस के बडे हाथ, बडे बलवाले हाथ हैं, अथवा उस के पास बडे हाथी हैं, यह भाव व्यक्त होता है। (उग्रधन्वा) बडे प्रखर मनुष्य को बर्तनेवाला, (इषुहस्तः) हाथ में बाण लेनेवाला, (वज्रहस्तः, वज्रभृत्,) हाथ में वज्र लेनेवाला, वज्र का धारण करनेवाला, (वज्रबाहु, सुबाहुः, उग्रबाहुः, सुपाणिः) उत्तम बाहु, वज्र जैसे कठोर बाहु, बलवान् बाहु और हाथों से युक्त इंद्र है, (तिग्मायुधः) जिस के शस्त्र अति तीक्ष्ण हैं।

इस की शक्ति के विषय में निम्नलिखित शब्द देखिये- (अभिभूत्योजाः) शत्रु का पराभव करनेवाला जिस का सामर्थ्य है, (अमितौजाः) जिस के बल की सीमा नहीं है, (असमात्योजाः धृष्णु- ओजाः) जिस का सामर्थ्य शत्रु का धर्षण करने में प्रकट होता है, (स्वधृत्योजाः, स्वौजाः, विश्वौजाः) सब प्रकार का सामर्थ्य जिस के

पास सदा तैयार रहता है। (बाहु-ओजाः) जिस का बाहुबल बहुत ही बडा है। (सहस्वान्, तवीयान्) जिस का बल बडा है। ये शब्द इंद्र का बल बता रहे हैं। (पुरुवर्पा) शब्द उस का शरीर विशाल है, यह भाव बताता है। यह भी उस के बडे सामर्थ्य का सूचक है।

(हरिष्ठाः) इन्द्र घोडेपर सवार होता है, (पर्वतेष्ठाः) पर्वतपर अथवा पर्वत के कीले में रहकर शत्रु से लडता है, वह ऐसा युद्ध करता है कि इस का युद्धकौशल देखकर शत्रु भी इसकी प्रशंसा करते हैं, यह भाव (अरि-ष्टुतः) इस शब्दसे व्यक्त होता है।

(पुरुमायः) वह शत्रुके साथ लडनेमें कपट भी करता है, (वामनीतिः) वह शत्रु के साथ (सुनीतिः, सुनीथः) अच्छी नीति भी बरतता है और बुरी भी। (शतनीथः, सहस्रनीथः) सैंकडों और सहस्रों प्रकार की युक्तियां उस के पास रहती हैं, इसलिए वह (अच्युत्, अनपच्युत्) अपने स्थानसे च्युत नहीं होता, (दुश्च्यवनः) उसको अपने स्थानसे भ्रष्ट करना अशक्य है, पर वह ऐसा है कि, वह दूसरे बडे बडे शत्रुओंको (अच्युतच्युत्) उनके स्थानों से हटा देता है, जो अपने स्थानोंपर स्थिर हुए शत्रु हैं, उनको परास्त करके हटा देता है, (अदब्धा, अदाभ्यः) वह शत्रुओंसे कभी न डरनेवाला है, कभी न दबनेवाला और कभी दबाया न जानेवाला है। (सचेताः, प्रचेताः, विचेताः, सहस्रचेताः) वह अनन्त प्रकार की कुशल बुद्धियोंसे युक्त है, इसलिए अपने बल को शत्रुके नाश करने में उत्तम रीतिसे लगाता है और विजय प्राप्त करता है।

इंद्र (प्रमतिः) विशेष बुद्धिमान् है, (विप्रतमः, कवितमः) विशेष ज्ञानी, (सुवेदाः, सुविद्वान्) उत्तम ज्ञानी है, (सुमनाः) उत्तम मनवाला है, (अजात-शत्रुः, अशत्रुः) स्वयं किसी की शत्रुता नहीं करता, (विश्वतो-धीः) उस की बुद्धि चारों ओर पहुंचनेवाली है, सब ओर वह खुली आंखों से देखता है, अतएव किसी शत्रु के द्वारा (अनाधृष्यः, अधृष्यः) उस का पराभव या धर्षण नहीं होता, अतः (अप्रतिधृष्टशवाः) उसको सदा विजयी बलवाला कहा गया जाता है।

इंद्र [एकराट्, संराट्, स्वराट्] उत्तम राजा है, ऐसा कहते हैं, (नृपाता) मानवों की रक्षा वह उत्तम रीति से करता है। उसको (उर्वरापतिः) भूमि का सच्चा पालन करनेहारा कहते हैं। (गणपतिः) सब गणों का पालन करता है। एक एक कार्य करनेवालों के संघों को गण कहते हैं। इन गणों का उत्तम रीति से पालन इंद्र करता है, क्योंकि (कारुधायाः) कारीगरों का पोषण करने का कार्य वह करता है। कारीगरों के पोषण से राष्ट्र में सुस्थिति रहती है। (नृपतिः, विशस्पतिः, विश्पतिः) मानवों की पालना वह करता है, (मित्रपतिः सत्पतिः) सज्जनों का पालन करता है, मित्रजनों का, मित्रदलों का पालन करता है, (रयिपतिः, रायस्पतिः, वसुपतिः) वह धन का पालन और संग्रह करता है। यह इंद्र (गोपाः, शुचिपाः, व्रतपाः, चर्षणिप्राः, संवननः) अर्थात् सब प्रजाओं का, पशुओं का, प्रजा के सब कर्मों का रक्षण करता है, इस से उस के राष्ट्र का उदय होता है। (प्राविता) इसीलिये उसको सच्चा रक्षक कहते हैं और यह रक्षण वह (शवसस्पतिः) सब के बल का रक्षण करता हुआ करता है। यही उस की बुद्धिमत्ता है।

इंद्र का पशुपालनरूप कर्तव्य बतानेवाले शब्द ये हैं- (संभृताश्वः) उत्तम अश्वों को पास रखनेवाला, (स्वश्वः) उत्तम घोडे जिस के पास हैं, (हर्यश्वः) शीघ्रगामी घोडे जिस के पास हैं, अथवा हरिद्वर्ण घोडे जिस के पास हैं, (स्वश्वयुः) उत्तम घोडे जिस के रथ को जोडे जाते हैं, (अश्वपतिः) जो घोडों की पालना उत्तम करता है, (गवां पतिः, गोपतिः) गोपालन करता है, (गव्युः, भूरिगुः) जिस के पास बहुत गौवें रहती हैं, (शाचिगुः, अध्रिगुः) जो उत्तम गौवों से युक्त है। ये शब्द इंद्र के पशुपालन का भाव बता रहे हैं।

प्रजाजनों के लिये उस की रक्षा कैसी मिलती है, यह बात निम्नलिखित इंद्रवाचक शब्दों से ज्ञात होती है, (अक्षितोतिः) जिस का संरक्षण का सामर्थ्य कभी कम नहीं होता, (उर्वी-ऊतिः) जिस की रक्षण करने की शक्ति बडी भारी है, (शतमूतिः, सहस्रोतिः) सैंकडों और हजारों साधनों से जो प्रजा की रक्षा करता है, (भद्रकृत्) वह सब का कल्याण करता है।

उसकी शक्ति [अपारः] अपार है, पर वह सुगमता से

शत्रु के (सुपारः) पार होता है।

इस तरह इन्द्र के वाचक, गुणबोधक अनेक शब्द हैं, जो वेदमंत्रों में प्रयुक्त हुए हैं और इन्द्र के गुण, कर्म, स्वभाव बताते हैं। इन्द्र राजा, वीर, शूर, बली, विजयी है और उसका शासन प्रजा का कल्याण करनेवाला है, इत्यादि भाव इन शब्दों से स्पष्ट प्रतीत होते हैं।

यदि पाठक इन्द्र के वर्णन के सब पदों का इस तरह अभ्यास करेंगे, तो इन्द्र का स्वरूप सहजी से ज्ञात हो सकता है। और इन्द्र के मन्त्रोंद्वारा शौर्यवीर्यादि गुणों का संवर्धन करने का जो कार्य वेद को अभीष्ट है वह भी पाठकोंके अन्तःकरणमें प्रकट हो सकता है।

जो इन्द्र के पराक्रम इन शब्दोंद्वारा प्रकट हुए हैं, उनका वर्णन पाठक अब मन्त्रोंद्वारा देखें। अब हम ऐसे मन्त्र देते हैं, जिनसें पूर्वोक्त स्थान में जो इन्द्र के गुण शब्दोंद्वारा प्रकट हुए हैं, वे ही मंत्रों के वर्णनों से प्रकट होंगे।

आर्य के लिये प्रकाश दो।

धिष्वा शवः शूर येन वृत्रमवाभिनद् दानुमौर्णवाभम्। अपावृणोर्ज्योतिरार्याय नि सव्यतः सादि दस्युरिन्द्र ॥ सनेम ये त ऊतिभिस्तरन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून्। अस्मभ्यं तत् त्वाष्ट्रं विश्वरूपमरन्धयः साख्यस्य त्रिताय ॥ (१११८-१९ ऋ० २-११-१८।१९)

हे शूर इन्द्र! (शवः धिष्व) तू बल धारण कर (येन वृत्रं दानुं अवाभिनत्) जिससे शत्रु का नाश हो जाय। (आर्याय ज्योतिः अपावृणोः) आर्य के लिये प्रकाश की ज्योति बताओ। (सव्यतः दस्युः नि सादि) सीधी ओर शत्रु को दबा दो।

(ये ते ऊतिभिः तरन्तः) जो तेरी रक्षाओं से शत्रु के पार हो जाते हैं। (आर्येण विश्वा स्पृधः दस्यून्) आर्य के द्वारा स्पर्धा करनेवाले दस्युओं का नाश करता है। (अस्मभ्यं) हम सब के लिये उस विश्वरूपी त्वष्टृपुत्र का नाश कर। शत्रु का पूर्णता से नाश कर।

यहां (आर्याय ज्योतिः अपावृणोः) आर्यों के लिये प्रकाश कर, ऐसा स्पष्ट कहा है। आर्यों का मार्ग विश्वभरमें खुला रहे, किसी स्थान पर आर्यों को रोकटोक या प्रतिबंध न हो, यही यहां तात्पर्य है। आर्य सर्वत्र विजयी होते हुए अपनी और विश्व की उन्नति करते जांय, यही यहां तात्पर्य है।

धार्मिकों का हितकर्ता।

अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रताना भूभिरिन्द्रः श्नथयन्ननाभुवः। वृद्धस्य चिद्वर्धतो द्यामिनक्षतः स्तवानो वम्रो वि जघान संदिहः ॥ (७५३ ऋ० १।५१।९)

(अनुव्रताय) धर्मव्रत का पालन करनेवालोंका हित करनेके लिए (अपव्रतान् रन्धयन्) व्रतहीनोंका नाश करता हुआ इन्द्र (आ-भूभिः) उपासकों के साथ रहकर (अनाभुवः श्नथयन्) अभक्तों का नाश करता है। (वृद्धस्य चित् वर्धतः) इन्द्र प्रथम से ही बढा है, पर वह और भी बढता भी है और (द्यां इनक्षतः) द्युलोक तक पहुंचता है। ऐसे इन्द्र की (स्तवानः) स्तुति करनेवाला (वम्रः संदिहः विजघान) संदेह दूर करता है, अर्थात् इन्द्र का महत्त्व जानता है।

यहां (अनुव्रत) और (अपव्रत) ये दो शब्द बडे बोधप्रद हैं। धर्मानुकूल चलनेवाले अनुव्रत कहलाते हैं और अधर्म में प्रवृत्ति होना अपव्रत्तियोंका लक्षण है। इन्द्र का यहां कर्तव्य है कि वह अधार्मिकों का नाश करे और धार्मिक सत्यव्रतियों की उन्नति करने में सहायक हो।

'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।'
(गीता ४।८)

यह वचन इस मन्त्रके साथ देखनेसे बडा बोध मिलता है।

पंचजनों का रक्षक।

विश्वेदनु रोधना अस्य पौंस्यं ददुरस्मै दधिरे कृत्नवे धनम्। षळस्तभ्ना विष्टिरः पञ्च संदृशः परि परो अभवः सास्युक्थ्यः (११४६ ऋ. २।१३।१०)

सबने इसके बल की वृद्धि की है। इसके पराक्रम के लिए सबने धन दिया है। पृथ्वी के (षट् विस्थिरः अस्तभ्नाः) छः भाग स्थिर किए हैं। (पञ्च संदृशः) पंच जनों का विजय करनेवाला तू ही है, अतः तू (उक्थ्यः असि) प्रशंसनीय हो। तथा-

आ यस्मिन् हस्ते नर्या मिमिक्षुरा रथे हिरण्यये रथेष्ठाः। आ रश्मयो गभस्त्योः स्थूरयोराध्वन्नश्वासो वृषणो युजानाः ॥ (११६३ ऋ० ६।२९।२)

(यस्मिन् हस्ते) जिस इन्द्र के जिस हाथ में (नर्या मिमिक्षुः) मनुष्यों के हितके लिए ही सब धन है और जो सुवर्ण के रथमें बैठकर सब को धन देता है, जिसके (स्थूरयोः) स्थूल हाथ में रथके लगाम है, जो अपने रथको घोडे जोतता है और जो घोडे सरल मार्ग से चलते हैं। वह इन्द्र है। तथा–

एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु। तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठं दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम् ॥
(१७१५ ऋ० ५।३२।११)

इंद्र ही एक (सत्पतिं) सब का उत्तम पालनकर्ता है और (पाञ्चजन्यं) पञ्चजनों का हित करनेवाला है, तू हि (जनेषु) लोगों में यशस्वी है, ऐसा मैं (शृणोमि) सुनता हूं। उपासक लोग दिनरात तेरा ही स्वीकार करें। तथा–

लोकहितार्थ युद्ध।

स इन्महानि समिथानि मज्मना कृणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः। अधा चन श्रद् दधाति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम् ॥
(८०१ ऋ. १।५५।५)

(सः युध्मः) वह इंद्र बडा योद्धा है, वह (जनेभ्यः) जनों के हित के लिये (ओजसा महानि समिथानि कृणोति) अपने सामर्थ्य से बडे युद्ध करता है। अतः सब लोग (वधं वज्रं निघनिघ्नते) शत्रु पर मारक शस्त्र का प्रहार करनेवाले (त्विषीमते इन्द्राय) तेजस्वी इंद्र के विषय में (श्रद् दधति) श्रद्धा रखते हैं।

सब जनता के हित करने के लिये युद्ध किया जावे, यह सूचना यहां मिलती है। जनता के हित करने के लिये क्या करना चाहिये, इस का वर्णन अगले मन्त्र में पाठक करें–

दस्युको दण्ड और आर्योंकी उन्नति करो।

वि जानीहि आर्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रंधया शासदव्रतान्। शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन।
(७५२ ऋ० १-५१-८)

हे इन्द्र! (आर्यान् विजानीहि) आर्य कौन हैं, यह तू जान, और (ये च दस्यवः) जो दस्यु या शत्रु हैं, उनको भी तू जान। (बर्हिष्मते) यज्ञकर्ता के हित के लिये (अव्रतान् शासत्) व्रतहीन शत्रुओं को दण्ड देकर (रन्धय) नष्टभ्रष्ट कर। (शाकी भव) समर्थ होकर रह (यजमानस्य चोदिता) यजमान को प्रेरणा दे। (सध-मादेषु) साथ साथ मिलजुल कर जहां सत्कर्म किये जाते हैं, ऐसे यज्ञों में (ते ता विश्वा इत्) तेरे वे सब सत्कर्म प्रशंसा-योग्य होते हैं।

शत्रु को दण्ड देना और सज्जनों की उन्नति करना ही राजा का कर्तव्य इस मंत्र से प्रकट होता है। प्रजा के रक्षण करने के लिये क्षत्रिय को सदैव तत्पर रहना चाहिये, यह सूचना अगला मंत्र देता है—

रक्षण के लिये खडा रहो।

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो। सं अन्येषु ब्रवावहै ॥ (७०४ ऋ० १-३०-६)

हे शतक्रतो! (अस्मिन् वाजे) इस युद्ध में (नः ऊतये) हमारा रक्षण करने के लिये (ऊर्ध्वः तिष्ठ) युद्धमें सुसज्ज होकर खडा रह। (अन्येषु सं ब्रवामहै) अन्य प्रसंगों में हम मिलकर बात करेंगे कि, वहां क्या करना चाहिये।

आ घा गमद् यदि श्रवत् सहस्रिणीभिरूतिभिः। वाजेभिरुप नो हवम्। (७०६ ऋ० १।३०।८)

(यदि श्रवत्) यदि इन्द्रने हमारी पुकार सुनी, तो वह (सहस्रिणीभिः ऊतिभिः वाजेभिः) सहस्रों सामर्थ्यों और बलों के साथ (नः हवं) हमारी पुकार के स्थान के प्रति (आगमत्) अवश्य दौडते हुए आ जायगा।

यहां (वाजे ऊर्ध्वः तिष्ठ) युद्ध में उठकर खडा रह, ऐसा कहा है। राष्ट्र में क्षत्रियों को प्रजारक्षणार्थ ऐसा ही खडा रहना चाहिये। दुष्टों का नाश करने के विषय में वेद का आदेश स्पष्ट है—

दुष्टों का नाश कर।

उद् वृह रक्षः सहमूलं इंद्र वृश्चा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि। आ कीवतः सललूकं चकर्थ ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिमस्य ॥ (१२५४ ऋ० ३।३०।१७)

हे इन्द्र! (रक्षः) राक्षसों को जडके साथ (उद् वृह) उखाड दो, (मध्यं वृश्च) उनका मध्य काट दो और (अग्रं

प्रति शृणीहि) उनका अन्तभाग काट दो। (कीवतः सलल्कूं आचकर्थ) दुष्टोंको दूर कर और ज्ञान का द्वेष करनेवाले दुष्टपर तपा शस्त्र (अस्य) फेंक।

यह मन्त्र दुष्टोंको उखाड देनेके लिये विशेष स्पष्टतापूर्वक उपदेश देता है। वृत्र शत्रु का नाम है। इन्द्रसे वृत्र का वैर प्रसिद्ध है। इस वृत्र का वध इंद्रने किया है। इस वर्णनके सैंकडों मंत्र वेदमें हैं। उनमेंसे कुछ देखिये –

वृत्रवध।

अयोद्धेव दुर्मद आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधं ऋजीषम्। नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुजानाः पिपिष इंद्रशत्रुः॥ अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रं अधिसानौ जघान। वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रो अशयद् व्यस्तः॥ [७२०-२१; ऋ० १।३२।६-७]

[अ-योद्धा इव] अब मेरे साथ युद्ध करनेयोग्य कोई नहीं रहा, ऐसा माननेवाला वह [दुर्मदः] दुष्टबुद्धि शत्रु [महावीरं] बडे शूर, [तुविबाधं] बहुतोंका पराभव करनेवाले [ऋजीषं] अदम्य इन्द्रको [आजुह्वे] अपने सम्मुख आह्वान करने लगा। परन्तु वह [इन्द्रशत्रु] इन्द्र का शत्रु [वधानां समृतिं न अतारीत्] इन्द्रके शस्त्रके घावों को सहन न कर सका। अन्तमें [रुजानाः सं पिपिषे] छिन्नभिन्न होकर चूर्ण हुआ।

पश्चात् उस [अ पाद-हस्तः] पांव और हाथसे विहीन [अ-पृतन्यत्] सेनारहित वृत्रने [इन्द्रं वज्रं अधिसानौ जघान] इंद्रपर उसकी गर्दनमें शस्त्र मारा, पर [वध्रिः वृष्णो प्रतिमानं बुभूषन्] नपूंसक का सामना जैसा वीर्यवान्से होता है, वैसी उसकी अवस्था हुई और [पुरुत्रा व्यस्तः] अनेक स्थानोंमें फेंका जाकर [अशयत्] गिर पडा।

तथा और देखिये—

वज्रको नचाया।

त्वं गोत्रं अङ्गिरोभ्योऽवृणोरपोतात्रये शतदुरेषु गातुवित्। ससेन चिद् विमदायावहो वसु आजावद्रिं वावसानस्य नर्तयन्॥ [७४७; ऋ० १।५१।३]

हे इन्द्र! तूने अंगिरोंके लिये [गोत्रं अप अवृणोः] गौंके स्थान को खुला कर दिया, अत्रि के लिये [शतदुरेषु गातुवित्] सौ द्वारोंवाले स्थानसे गमनका मार्ग बताया, विमद के लिये [ससेन वसु अवहः] धान्यके द्वारा धन दिया और वावसान के लिये [अद्रिं नर्तयन्] अपने वज्र को नचाया, अर्थात् वज्र से शत्रुको मारा। तथा –

युवं तमिंद्रा पर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तंतमिद्धतं वज्रेण तंतमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्। अस्माकं शत्रून् परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः॥ [१०३३; ऋ० १।१३२।६]

[पुरोयुधा] आगे होकर युद्ध करनेवाले तुम [यः नः पृतन्यात्] जो हमपर सैन्यसे चढाई करे, उसका वध करो, उसका [वज्रेण तं हतं] वज्रसे वध करो। [दूरे चत्ताय] दूर रहनेवाले पर भी जो वज्र हमला करता है वह गहन स्थान में आ जा सकता है। [अस्माकं शत्रून्] हमारे शत्रुओंको [विश्वतः परि] चारों ओरसे घेरो और [विश्वतः दर्मा दर्षीष्ट] चारों ओरसे विदारण करो।

सेना लकर हमपर हमला करनेवाला तथा अन्य प्रकार से सतानेवाला ये सब शत्रु ही हैं और शत्रु को दूर करना ही इन्द्र का कर्तव्य है। क्योंकि शत्रु वध्यही है—

शत्रु वध्य हैं।

इंद्र दृह्य यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः। दुर्मायवो दुरेवा मर्त्यासो निषङ्गिणो रिपवो हन्त्वासः [१२५२; ऋ० ३।३०।१५]

हे इन्द्र! [दृह्य] प्रबल बन। [याम-कोशा अभूवन्] कोशोंको प्रतिबंध हो रहा है। [यज्ञाय गृणते सखिभ्यः] यज्ञकर्म, उपासना और मित्रोंको [शिक्ष] शिक्षा दे। [दुः-मायवः] दुष्ट, कपटी, [दुः-एवाः] दुश्चरित्र, [निषङ्गिणः मर्त्यासः रिपवः] तर्कस लिये शत्रुरूप मानव हैं, वे [हन्त्वासः] हनन करनेयोग्य है।

शस्त्रास्त्र लिये शत्रु हमारे चारों ओर खडे हैं, उनका वध होनेके विना मानवों को सुख प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिये शत्रुको दूर करना योग्य है—

स्वर्जेषे भर आप्रस्य वक्मन्युषर्बुधः स्वस्मिन्नञ्जसि क्राणस्य स्वस्मिन्नञ्जसि। अहन्निंद्रो यथा विदे शीर्ष्णाशीर्ष्णोपवाच्यः। अस्मत्रा ते सध्र्यक् संतु रातयो भद्रा भद्रस्य रातयः॥

[१०२९; ऋ० १।१३२।२]

[स्वर्षे] सुख देनेवाले युद्धमें [उपर्बुधः] प्रातःकालमें जाग्रत होनेवाले वीर! आक्रमण करनेवाले शत्रुको तू पराजित करता है। और उसका वध करता है। [त रातयः अस्मत्रा सध्र्यक्] तेरे दान हमारे पास इकट्ठे हों, तेरे दान कल्याणकारक हों।

शत्रुको परास्त करके विजय संपादन करना आवश्यक है इस विषयमें देखिये—

युद्धोंमें विजयी।

तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयाम शतक्रतो।
धनानामिन्द्र सातये। [१२; ऋ० १।४।९]

धनोंकी हमें प्राप्ति होनेके लिये, हे सैंकडों कर्म करनेवाले इन्द्र! [वाजेषु] युद्धोंमें [त्वा वाजिनं वाजयामः]युद्धोंमें लडनेवाले तुझ वीर को बढाते हैं, [बलिष्ठ करते हैं, युद्धमें भेजते हैं।]

सैंकडों पराक्रम करनेवाले वीरको शतक्रतु कहते हैं। युद्धोंमें अपने नेता वीरका बल बढानेयोग्य कर्म उसके अनुयायियोंको करने चाहियें। कभी ऐसा कर्म करना नहीं चाहिये, जिससे अपने नेताकी शक्ति कम या क्षीण हो। तथा—

शश्वदिन्द्रः पोप्रुथद्भिर्जिगाय नानदद्भिः शाश्वसद्भिः धनानि। स नो हिरण्यरथं दंसनावान् स नः सनिता सनये स नोऽदात्॥
[५१८; ऋ० १।३०।१६]

इन्द्रने [पोप्रुथद्भिः] स्फुरण जिनमें दीखता है,[नानदद्भिः] जो हिनहिनाते हैं, [शाश्वसद्भिः] जिनका जोरसे श्वासोच्छ्वास हो रहा है, ऐसे घोडोंके साथ [धनानि जिगाय] धन देनेवाले युद्धोंमें विजय प्राप्त किया। उसने [नः हिरण्यरथं दंसनावान्] हमें सुवर्णका रथ दिया, और उसने हमें [सनये अदात्] दान कर दिया।

इन्द्र युद्धोंमें हिनहिनानेवाले घोडोंके साथ जाता है और विजय प्राप्त करता है। तथा—

कपटी शत्रुका नाश।

गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु अपीवृतं मायिनं क्षियन्तम्। उतो अपो द्यां तस्तभ्वांसं अहन्नहिं शूर वीर्येण॥ [११०५; ऋ० २।११।५]

[गुहा हितं] गुहामें रहनेवाले, [गुह्यं] गुप्त [अप्सु गूळ्हं] पानीमें गुप्त रहनेवाले [अपीवृतं मायिनं] कपटी शत्रुको [क्षियन्तं] अपने कीलेमें रखनेवाले [द्यां अपः तस्तभ्वांसं] जलोंको बंद करनेवाले [अहिं] शत्रुको अपने [वीर्येण अहन्] पराक्रमसे नष्ट कर दिया है।

शत्रु जलको प्रतिबंधमें रखता है,क्योंकि जल न मिलनेसे सैनिक हैरान होते हैं और शीघ्र वश होते हैं। आजभी युद्धमें यही हम देखते हैं। जल जिसके पास है,वह जिसके पास जल नहीं है उसको, अपने काबू करता है। वही हम इन्द्र और वृत्रके युद्धमें देखते हैं। वृत्र प्रथम जलपर कबजा करता है, इस कारण इन्द्रके अनुयायी हैराण होते हैं, पश्चात् इन्द्र शत्रुका वध करके जलके स्रोत खुले करता है, तब जनता आनंदित होती है। इन्द्र-वृत्रके युद्धमें यह वर्णन स्थानस्थानपर है—

जल सुप्राप्य करना।

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन् निरुद्धा आपः पणिनेव गावः। अपां बिलं अपिहितं यदासीत् वृत्रं जघन्वाँ अप तद्ववार। [७२५; ऋ० १।३२।११]

[दास-पत्नीः अहिगोपाः आपः अतिष्ठन्] दास शत्रुने अपने आधीन किये जल [निरुद्धाः] रोके हुए थे, जैसे [पणिना इव गावः] बनिया गौवोंको रोकता है। इन जलोंका द्वार [अपिहितं आसीत्]ढंका हुआ था। पर इन्द्रने [वृत्रं जघन्वान्]वृत्रको मारा और [तत् अप ववार] वह द्वार खोल दिया।

शत्रुने जलको अपने अधीन किया था, उस शत्रुको परास्त करके जल सबको मिलनेयोग्य खुला कर दिया। यह युद्धनीति है। युद्ध्यमान एक पक्ष दूसरेका जल बंद करता है, जिससे उसके सैनिक जलके विना तडपने लगते हैं। फिर वह इस शत्रुको परास्त करता और जलको सुप्राप्य बनाता है। इसी तरह अन्न, वस्त्र, तथा स्थानके विषयमें जानना योग्य है।

जेता नृभिः इंद्रः पृत्सु शूरः श्रोता हवं नाधमानस्य कारोः। प्रभर्ता रथं दाशुष उपाक उद्यंता गिरो यदि च त्मना भूत्॥ [१०९८; ऋ० १।१७८।३]

[शूरः इन्द्रः] शूर इन्द्र [नृभिः] अपने वीरोंके साथ [पृत्सु] युद्धोंमें [जेता] विजय करता है। [नाधमानस्य कारोः

ह वं श्रोता] नाथ होनेकी इच्छा करनेवाले कारीगरका कहना सुनता है। [दाशुषः रथं उपाके प्रभर्ता] दाताके रथ को वित्तके पास पहुंचाता है । [यदि मना भूत] यदि उसमें इच्छा हुई, तो वह [गिरः उद्यन्ता] वाणियों को भी प्रेरणा करता है।

वीर अपने अनुयायियोंको युद्धमें जानेकी प्रेरणा करता है। इसकी प्रेरणासे प्रेरित हुए वीर युद्ध करते और नीजयी होते हैं।

शत्रुको जंजिरोंसे बांधकर कारागारमें रखना।

स तुर्वणिर्महाँ अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः। येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्र आभृषु रामयन्नि दामनि॥ [८० ; ऋ० १।५६।३]

[सः] इन्द्र[तुर्-वनिः] त्वरासे कार्य करता है, इसलिये [महान्] बडा है। उसका [तुजा शवः अरेणु] हिंसक बल निर्मल है, स्वच्छ है, वह [पौंस्ये] पौरुष दिखानेके युद्धमें [गिरेः भृष्टिः न भ्राजते] पर्वतके शिखरके समान चमकता है। [मदे] आनन्दमें [दुध्रः] रहता हुआ वह इन्द्र [मायिनं शुष्णं] कपटी शोषक शत्रुको [आयसः आभृषु दामनि] लोहेके कारागृहमें जंजिरोंसे [नि रामयन्] रख देता है।

शत्रु जब पकडा जाता है, तब उसको प्रतिबंधमें रखना योग्य ही है—

फौलादका तीक्ष्ण वज्र।

त्वं दिवो बृहतः सानु कोपयोऽव त्मना धृषता शंबरं भिनत्। यन्मायिनो व्रन्दिनो मन्दिना धृषञ् शितां गभस्तिमशनिं पृतन्यसि। [८१ ; ऋ० १।५४।४]

[मन्दिना धृषत्] आनन्ददायक सोमसे उत्साहयुक्त बना हुआ [शितां गभस्तिं अशनिं] तीक्ष्ण वज्रको हाथमें लेकर [मायिनः पृतन्यसि] कपटी शत्रुसे जिस समय तू युद्ध करता है, उस समय [बृहतः दिवः सानु कोपयः] बडे द्युलोक के शिखरको तू हिला देता है और शंबर राक्षस को अपने बलसे [अव भिनत्] छिन्न भिन्न करता है।

शत्रुके शस्त्रास्त्रोंकी अपेक्षा अपने शस्त्र अधिक प्रखर रहने चाहिये। तब निःसंदेह विजय होता है। इन्द्रका मुख्य शस्त्र वज्र है। यह फौलाद का अति तीक्ष्ण शस्त्र है। इन्द्रके पास अन्य भी अस्त्र बहुत होते हैं। शत्रुसे ये शस्त्रास्त्र अच्छे होते हैं, इसलिये इन्द्र विजयी होता है—

जघन्वाँ उ हरिभिः संभृतक्रतो इन्द्र वृत्रं मनुषे गातुयन्नपः। अयच्छथा बाह्वोर्वज्रमायसमधारयो दिव्या सूर्यं दृशे॥ [८२ ; ऋ० १।५२।८]

हे [संभृतक्रतो इंद्र] संपूर्ण बलोंसे युक्त इन्द्र! [मनुषे अपः गातुयन्] मानवोंकी ओर जलके प्रवाह भेजनेके लिये [हरिभिः वृत्र जघन्वान्] घोडोंके साथ जाकर तूने वृत्रको मार डाला, उस समय तूने [आयसं वज्रं अधारयः] फौलादका वज्र धारण किया था और [दिवि दृशे सूर्यं] आकाशमें सर्वत्र प्रकाश होनेके लिये सूर्यको स्थापन किया था।

इन्द्र कपटी शत्रुओंसे कपट करता है, सीधे शत्रुओंसे सीधा बर्ताव करता है। कपटी शत्रुओंके कपटजालमें कभी फंसता नहीं। यह यहाँ विशेष रीतिसे देखना चाहिये।

कपट करनेवालोंसे कपट।

त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अधि शुप्तावजुह्वत। त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहत्येष्वाविथ॥

[८३ ; ऋ० १।५१।५]

हे इन्द्र! जो [स्वधाभिः शुप्तौ अधि अजुह्वत] जो अपने ही मुखमें अन्नोंका हवन करते हैं, अर्थात् जो स्वयं भोग भोगते हैं, उन [मायिनः] कपटियोंको तूने [मायाभिः अप अधमः] कपटोंसेही नीचे गिराया, [त्वं नृमणः पिप्रोः पुरः प्रारुजः] तूने धनेच्छु पिप्रु नामक शत्रुके नगरोंको तोड दिया, और तूने [ऋजिश्वानं] ऋजिश्वाको [दस्युहत्येषु प्राविथ] शत्रुओंका वध करनेके समयमें बचाया।

[मायाभिः मायिनः अप अधमः] कपटोंसे कपटी शत्रुओंको दबाना योग्य है। सर्वत्र यही न्याय है, जो वेदने बताया है। शत्रुके नगर, कीले, देश आदि जलाना, तोडना नष्ट करना, यह भी एक युद्ध की नीति ही है, देखिये—

शत्रुओंके नगर फोड डाले।

अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून् वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत्। सं वज्रेणासृजद्वृत्रमिन्द्रः प्र स्वां मतिमतिरच्छाशदानः। [८४ ; ऋ० १।३३।१३]

[अस्य सिध्मः शत्रून् अभि अजिगात्] इस इन्द्रका यशस्वी वज्र शत्रुपर जा गिरा, इसने [तिग्मेन पुरः विभेत्] तीक्ष्ण शस्त्रसे नगरोंको तोड डाला। इंद्रने [वृत्रं वज्रेण सं असृजत्] वृत्रपर वज्र फेंक दिया और [शाशदानः स्वां

मतिं अतिरत्] प्रशंसित हुआ, वह इन्द्र अपनी बुद्धिके अनुसार विजयको प्राप्त कर सकता है।

त्वं करञ्जमुत पर्णयं वधीस्तेजिष्ठयातिथिग्वस्य वर्तनी। त्वं शता वंगृदस्याभिनत् पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्विना॥ [७८२; ऋ० १।५३।८]

अतिथिग्व राजाके तेजस्वी चक्रसे तू करंज और पर्णय शत्रुओंका वध किया व ऋजिश्वाने घेर हुए [शता पुरः अभिनत्] शत्रुके सौ कीलों अथवा नगरोंको तोड दिया।

आ यद्धरी इंद्र विव्रता वेरा ते वज्रं जरिता बाह्वोर्धात्। येनाविहर्यतक्रतो अमित्रान् पुर इष्णासि पुरुहूत पूर्वीः॥ [८८६; ऋ० १।६३।२]

[यत्] जब हे इन्द्र ! तेरे [हरी] घोडे [विव्रता वेः] इधर, उधर भटकते थे, उनको तूने [आ] पास लाकर रथको जोड दिया, तब [ते बाह्वोः वज्रं] तेरे बाहुमें वज्र [जरिता आधात्] स्तोताने रख दिया। हे [अ-वि-हर्यत-क्रतो] हे अजिक्य वीर ! हे [पुरुहूत] बहुतों द्वारा प्रशंसित ! तू [अमित्रान् पूर्वीः पुरः] शत्रुओंको और उनके बहुतसे नगरोंको [इष्णासि] नाश करनेकी इच्छा करता है।

शत्रुके सैंकडों कीलोंका नाश।

अध्वर्यवो यः शतं शंबरस्य पुरो बिभेदाश्मनेव पूर्वीः। यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रं अपावपद् भरता सोममस्मै॥ [११५५; ऋ० २।१४।६]

जिसने शंबरके [शतं पुरः बिभेद] सौ कीले तोड दिये, [शतं सहस्रं अपावपत्] जिसने लाखों सैनिकोंका नाश किया, उस इन्द्रको सोम अर्पण करो।

न्याविध्यदिलीबिशस्य दृळहा वि शृङ्गिणं अभिनच्छुष्णमिंद्रः। यावत्तरो मघवन् यावदोजो वज्रेण शत्रुं अवधीः पृतन्युम्॥ [७८१; ऋ० १।३३।१२]

[इलीबिशस्य दृळहा न्याविध्यत] शत्रुके सुदृढ कीलोंको तोड दिया। [शृंगिणं शुष्णं वि अभिनत्] सींगवाले शुष्ण को छिन्नभिन्न किया। हे इन्द्र ! त्वरासे और बलसे तूने [पृतन्यं शत्रुं वज्रेण अवधीः] युद्धकी इच्छा करनेवाले शत्रुका वज्रसे वध किया।

प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरंदरः। याभिः काण्वस्योप बर्हिरासदं यासद् वज्री भिनत्पुरः॥ [९४; ऋ० ८।१।८]

उसके लिये गायत्र सामका गायन करो, जो [पुरंदरः] शत्रुके नगरोंको तोडनेवाला सबको पूज्य है, जो कण्वके यज्ञमें जाता है और जो वज्रधारी [पुरः भिनत्] शत्रुके कीले तोडता है।

शत्रुके कीले अथवा नगर जलाकर, तोड कर जो शत्रुका नाश करता है वह वीर इन्द्र है। कण्व नाम ज्ञानी का है।

पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत। इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः॥ [७३; ऋ० १।११।४]

इन्द्र [पुरां भिन्दुः] शत्रुके कीलोंका या नगरोंका भेदन करनेवाला, [युवा कविः] तरुण कवि, [अमित ओजाः] अत्यंत बलवान् [वज्री] वज्रादि शस्त्र धारण करनेवाला, [विश्वस्य कर्मणो धर्ता] सब कर्मोंका धारण करनेवाला अर्थात् सब कर्मोंको निभानेवाला होनेके कारण [पुरुष्टुतः] अनेकों द्वारा प्रशंसित [अजायत] हुआ है।

इस तरह के शूरत्व के कारण वह सर्वत्र प्रसिद्ध है।

वि दृळहानि चिदद्रिवो जनानां शचीपते। वृह माया अनानतः॥ [२०६८; ऋ० ६।४५।९]

हे वज्रधारी शचीपते इन्द्र ! शत्रुके [दृळहानि] सदृढ कीले भी [विवृह] तोड दो।

बनावटी कीलोंका नाश।

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्ष्मया वृधान ओजसा विनाशयन्। ज्योतींषि कृण्वन्नवृकानि यज्यवेऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत॥ [८०२; ऋ० १।५५।६]

[सः श्रवस्युः] वह कीर्तिकी इच्छा करनेवाला इन्द्र [ओजसा वृधानः] अपने पराक्रमसे बढनेवाला [क्ष्मया कृत्रिमा सदनानि] शत्रुके भूमिके साथ रहनेवाले बनावटी कीलोंका [विनाशयन्] नाश करता है। [यज्यवे] याजकके हित के लिये [अवृकाणि ज्योतींषि कृण्वन्] तेजोंको खुला करनेवाला वह [सुक्रतुः] उत्तम कर्म करनेवाला इन्द्र [अपः सर्तवै अव सृजत] जलोंको प्रवाह बननेके लिये उत्पन्न करता है।

बनावटी कीले वे होते हैं [कृत्रिमा सदना] कि जो सेना अपनी रक्षार्थ थोडेसे परिश्रमसे तैयार करती है। ये भी इन्द्र तोडता है और शत्रुको परास्त करता है।

बीस राजोंसे युद्ध।

त्वमेतान् जनराज्ञो द्विर्दशाऽबंधुना सुश्रवसोपजग्मुषः। षष्टिं सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक्॥ [७८३; ऋ० १।५३।९]

[अबन्धुना] सहायता के विना [सुश्रवसा] सुश्रव अर्थात् कीर्तिमान् राजाने जिन [द्विः दश जनराज्ञः] बीस जनराजोंके ऊपर हमला किया था, उनके६००९९रथोंसे युक्त दुर्धर्ष सेनाको अपने चक्रसे तूने [नि वृणक्] नष्ट कर दिया॥

सेनामें६००९९रथों के लिये छः लाख सैनिक आवश्यक हैं। इतनी बडी सेनाके साथ यह युद्ध हुआ, ऐसा वर्णन यहां है। यह वर्णन काल्पनिक या रूपकभी माना जाय, तो भी बडी सेनाका संचालन यहां दीखता है, यह विचार के योग्य है।

इन्द्रके रथके घोडे।

आ द्वाभ्यां हरिभ्यां इंद्र याहि आ चतुर्भिरा षड्भिर्हूयमानः। आष्टाभिर्दशभिः सोमपेयमयं सुतः सुमख मा मृधस्कः ॥ ४ ॥ आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वाङा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः। आपञ्चाशता सुरथेभिरिंद्रा ऽऽ षष्ट्या सप्तत्या सोमपेयम् ॥ ५ ॥ आशीत्या नवत्या याह्यर्वाङा शतेन हरिभिरुह्यमानः। अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोम इंद्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ॥ ६ ॥

[११९३-९५; ऋ०२।१८।४-६]

हे इन्द्र! दो, चार, छः, आठ, दस, बीस, तीस, चालीस, पचास, साठ, सत्तर, अस्सी, नब्बे, अथवा सौ घोडों को जोते हुए रथमें बैठकर यहां आ और इस सोमका ग्रहण करो।

इन्द्रके घोडोंका यह वर्णन है। इस समय राष्ट्रपतिका जलूस पचास या साठ घोडोंके रथमें बिठलाकर निकालनेका वर्णन देखते हैं। इससे १०० घोडोंके रथमें इन्द्रका जलूस निकालना, विजयी वीरका जलूस ऐसा बडा निकालना संभव तो हो सकता है। इसमें कोई अयुक्ति प्रतीत नहीं होती।

शिरस्त्राण धारण करनेवाला इन्द्र।

इंद्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रतस्तुविकूर्मिर्ऋघावान्। यदुग्रो धा वाधितो मर्त्येषु क्व त्या ते वृषभ वीर्याणि॥ त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युतानि एको वृत्रा चरसि जिघ्नमानः। तव द्यावापृथिवी पर्वतासोऽनु व्रताय निमितेव तस्थुः ॥

[१२४०-४१; ऋ०३।३०।३-४]

हे [वृषभ] बलवान् इन्द्र! तू [सु-शिप्रः] उत्तम शिरस्त्राण धारण किया हुआ, [मघ-वा] धनवान् [तरुत्रः] त्वरासे संरक्षण करनेवाला, [महाव्रतः] महासेनाको चलानेवाला, [तुवि-कूर्मिः] महापराक्रमी, [ऋघावान्] समृद्धिवान् और [उग्रः] बडा पराक्रमी है। तू [मर्त्येषु बाधितः] मानवोंमें जो पराक्रम किये, वे तेरे पराक्रम [क्व] कहां हुए हैं?

तू [एकः] अकेलाही [अच्युतानि च्यावयन्] स्थिरों को हिलानेवाला है, तू [वृत्रा जिघ्नमानः] शत्रुओंका वध करता है। तेरे [अनुव्रताय] अनुकूल कार्य करनेके लिये द्युलोक, भूलोक और सब पर्वत [निमिता इव तस्थुः] स्थिर जैसे रहे हैं।

बडा पादत्राण।

अभिव्लग्या चिदद्रिवः शीर्षा यातुमतीनाम्। छिन्धि वटूरिणा पदा महावटूरिणा पदा ॥२॥ अवासां मघवञ्जहि शर्धो यातुमतीनाम्। वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ॥३॥

[१०३५-३६; ऋ० १।१३३]

हे [अद्रिवः] वज्रधारी! [अभिव्लग्या] ढूंढ ढूंढकर [यातुमतीनां शीर्षा] दुष्टोंके सिर [वटूरिणा पदा छिन्धि] पादत्राणयुक्त पावसे तोड, बडे पादत्राणयुक्त पावसे तोड, दुष्टोंको [अव जहि] बडे स्मशानमें नष्ट कर।

शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य।

ह्रदं न हि त्वा न्यृषन्त्यूर्मयो ब्रह्माणींद्र तव यानि वर्धना। त्वष्टा चित्ते युज्यं वावृधे शवः ततक्ष वज्रं अभिभूत्योजसम् ॥ [७३६; ऋ० १।५२।७]

जिस तरह [ऊर्मयः ह्रदं] जलप्रवाह जलाशय को भर देते हैं, उस तरह [ब्रह्माणि तव वर्धना] ये स्तोत्र तेरी बधाई को भर देते हैं, वर्णन करते हैं। त्वष्टाने [युज्यं शवः] तेरे योग्य बल [वावृधे] बढाया और [अभिभूति-ओजसं वज्रं ततक्ष] शत्रुका पराभव करनेकी शक्तिके साथ तेरे लिये वज्रभी बनाया।

इन्द्रके अन्तरिक्षस्थ शत्रु।

त्वमेतान् रुदतो जक्षतश्च अयोधयो रजस इंद्र पारे। अवादहो दिव आ दस्युमुच्चा प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः ॥७॥ चक्राणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुंभमानाः। न हिन्वानासस्तितिरुस्त इंद्रं परि स्पशो अदधात् सूर्येण ॥ ८ ॥ [७३६-३७; ऋ०१।३३।७-८]

हे इन्द्र! तूने इन [रुदतः जक्षतः च] रोनेवाले और भोग भोगनेवाले शत्रुओंको (अयोधयः रजसः पारे) युद्ध करके अन्तरिक्षके पार भगा दिया। (दस्युं अदहः) तूने शत्रुको जला दिया और [दिवः अव] द्युलोकसे उसको नीचे गिरा दिया। तथा [शंसं आवः] याजकोंकी स्तुतियोंको उच्च स्थानमें स्थिर किया है।

सोनेके आभूषणोंसे सुशोभित हुए वे शत्रु [पृथिव्याः परीणहं चक्राणासः] पृथ्वीके परिघमें भ्रमण करते थे, वेभी (स्पृशः) शत्रुके दूत [इन्द्रं हिन्वानासः न तितिरुः] इन्द्रको परीजित न कर सके। पर [सूर्येण परि अदधात्] उसने ही शत्रुओंको सूर्यप्रकाशसे आच्छादित किया।

यह युद्ध निःसंन्देह पृथ्वीके ऊपरका नहीं है। यह आकाशमें होनेवाला युद्ध है अथवा यह रूपक भी होगा।

शत्रुका वध और सत्यप्रचार।

प्र सू त इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु
शत्रून्। जहि प्रतीचो अनूचः पराचो विश्वं
सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु ॥ [१२४३; ऋ० ३।३०।६]

हे इन्द्र! [ते] तेरा रथ दो घोडोंके द्वारा शीघ्र यहां आवे [ते वज्रः] तेरा वज्र [शत्रून् प्रमृणन प्र एतु] शत्रुओं का वध करता हुआ चले। [प्रतीचः] हमला करनेवाले शत्रुओंको, [अनूचः] दोनों ओरसे आनेवाले शत्रुओं को, तथा [पराचः] भागनेवाले शत्रुओंको तू नष्ट कर, [विश्वं सत्यं कृणुहि] विश्वमें सत्यका प्रचार कर और वह सर्वत्र [विष्टं अस्तु] प्रविष्ट हो कर रहे।

आगे बढ।

प्रेहि अभिहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते।
इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपो
अर्चन्ननु स्वराज्यम ॥ [१०२; ऋ० १।८०।३]

हे इन्द्र [प्रेहि] शत्रुपर चढाई कर, [अभिहि] शत्रुका नाश कर, [धृष्णुहि] शत्रुको परास्त कर। [ते वज्रः न नियंसते] तेरे वज्रका प्रतिकार कोई कर नहीं सकता। हे इन्द्र! [ते शवः नृम्णं] तेरा बल विजयकारी है, अतः [वृत्रं हनः] शत्रुका नाश कर, [अपः जय] जलोंको प्राप्त कर, [स्वराज्यं अर्चन् अनु] स्वराज्यकी अर्चना करते हुए यह सब कर।

नव्वे नदियाँ।

वि ते वज्रासो अस्थिरन् नवतिं नाव्या३ अनु।
महत् त इन्द्र वीर्यं बाह्वोस्ते बलं हितं अर्चन्
अनु स्वराज्यम् ॥ [१०७; ऋ० १।८०।८]

हे इन्द्र! [ते वज्रासः] तेरे वज्र [नवतिं नाव्या अनु] नौकाएं जिनमें चलती हैं, ऐसे नव्वे नदियोंके पास [वि अस्थिरन्] पहुंचे हैं। तेरा पराक्रम बहुत बडा है, तेरे बाहुओंमें बहुत बल है, स्वराज्यकी अर्चना करते हुए यह सब कर।

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः।
तमिन्महत्स्वाजिषूतेमर्भे हवामहे स वाजेषु
प्र नोऽविषत् ॥ [११६; ऋ० १।८१।१]

[वृत्रहा इन्द्रः] शत्रुनाशक इन्द्र [मदाय शवसे] आनन्द और बल बढानेके लिये [नृभिः वावृधे] मनुष्योंने बढाया है, मनुष्योंने उसकी बधाई की है। [तं महत्सु आजिषु] उसको हम बडे संग्रामोंमें तथा [अर्भे हवामहे] भयानक युद्धमें बुलाते हैं। वह हमें [वाजेषु अविषत्] युद्धोंमें बचावे।

युद्धके समय इन्द्र की सहायता मांगी जाती है। क्योंकि इन्द्रही वीर्य बढाता है।

असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि पराददिः।
असि दभ्रस्य चिद्वृधो यजमानाय शिक्षसि
सुन्वते भूरि ते वसु ॥ [११७; ऋ० १।८१।२]

हे वीर! तू [सेन्यः असि] सेना अपने पास रखनेवाला वीर है। शत्रुओंका [भूरि पराददिः] परास्त करनेवाला है, [दभ्रस्य वृधः] छोटेको तू बढानेवाला है, तू यजमान को ज्ञान सिखाता है [ते भूरि वसु सुन्वते] तेरा बहुत धन यज्ञ करनेवाले के लिये ही है।

अरोरवीद् वृष्णो अस्य वज्रोऽमानुषं यन्मानुषो
निजूर्वात्। नि मायिनो दानवस्य माया अपा-
दयत् पपिवान्त्सुतस्य ॥ [११२०; ऋ० २।११।१०]

[मानुषः] मनुष्यका हित करनेवाले इन्द्रने जब [अमानुषं] अमानुष शत्रुका वध किया, तब इसका वज्र [अरोरवीत्] गर्जना करने लगा। सोम रस पीनेवाले इन्द्रने [मायिनः दानवस्य मायाः निः अपादयत्] कपटी शत्रुके सब कपटोंका नाश किया।

न क्षोणीभ्यां परिभ्वे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्वतैरिन्द्र ते रथः। न ते वज्रमन्वश्नोति कश्चन यदाशुभिः पतसि योजना पुरु॥ [११४; ऋ० २।१६।३]

[त इंद्रियं] तेरा सामर्थ्य द्यावापृथिवी [न परिभ्वे] कम नहीं कर सकते, समुद्रों और पर्वतोंसे तेरे रथको प्रतिबंध नहीं होता, तेरे वज्रको कोई पराभूत नहीं कर सकता, ऐसा तू अपने सत्वर चलानेवाले घोडोंसे बहुत योजन तक [पतसि] दूर जाता है।

अधाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद् यदस्याग्रे ब्रह्मणा शुष्ममैरयः। रथेष्ठेन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीरयः सिस्रते सध्र्यक् पृथक्॥ [११५; ऋ० २।१७।३]

हे इन्द्र! तू प्रथम बडा पराक्रम करने लगा, उस समय ज्ञानके साथ बडा बल तूने प्रकट किया। रथमें बैठे इन्द्रने [विच्युताः] अपने स्थानसे भ्रष्ट किये शत्रु [सध्र्यक्] इकट्ठे मिलकर तथा [पृथक्] अलग अलग रहकर भी [प्रसिस्रते] भागते रहते हैं।

विश्वजिते धनजिते स्वर्जिते सत्राजिते नृजित उर्वराजिते। अश्वजिते गोजिते अब्जिते भरेन्द्राय सोमं यजताय हर्यतम् ॥ १ ॥ अभिभुवेऽभिभंगाय वन्वतेऽषाळ्हाय सहमानाय वेधसे। तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे नम इन्द्राय वोचत ॥२॥ [११७-१८; ऋ० २।२१]

[विश्वजिते] विश्वविजयी, [धनजिते] धनको जीतनेवाले, [स्वर्जिते] तेजस्विता प्राप्त करनेवाले, [सत्राजिते] साथ साथ जीतनेवाले, [नृजिते] मानवी शत्रुको जीतनेवाले, [उर्वराजिते] उपजाऊ भूमिको जीतनेवाले, [अश्वजिते] घोडोंको जीतनेवाले, [गोजिते] गौओंको जीतनेवाले, [अब्जिते] जलको जीतनेवाले, [अभिभुवे] सामनेसे शत्रुका पराभव करनेवाले, [अभिभंगाय] शत्रुका नाश करनेवाले [अषाळ्हाय] जिसका प्रताप शत्रुको सहन नहीं होता, [सहमानाय] पर शत्रुका हमला सहन करनेवाले, [वेधसे] शत्रुका वेध करनेवाले, अग्नि जैसे तेजस्वी, [दुष्टरीतवे] जिसका पार करना अशक्य है, ऐसे [सत्रासाहे] मिलकर हमला करनेपर भी जो अपने स्थानपर स्थिर रहता है, ऐसे इन्द्रका स्तोत्र हम गाते हैं।

यहां इकट्ठे इन्द्रके बहुतसे कर्म बताये हैं, ये देखनेयोग्य हैं-

सर्व कर्मोंमें अग्रसर।

त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य धर्मणामिरज्यसि। प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः॥ [१२०; ऋ० १।५५।३]

हे इन्द्र! [महः नृम्णस्य] बडे धनका और [धर्मणां इरज्यसि] धर्मोंका अधिपति है। तू अपने पराक्रमसे देवताओंमें परिचित होता है, क्योंकि तू [विश्वस्मै कर्मणे] सब कर्मोंमें [उग्रः पुरोहितः] प्रचंड अग्रगामी वीर है।

पुरोहित का अर्थ यहां नेता है, जो काम करने के लिये आगे होता है।

बलशाली धन।

अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम्। यस्मिन् विश्वानि पौंस्या॥ [१२; ऋ० १।५।९]

[यस्मिन् विश्वानि पौंस्या] जिसमें सब प्रकारके बल हैं, ऐसी शक्ति इन्द्र हमें देवे, क्योंकि [इन्द्रः अ-क्षित-ऊतिः] इन्द्रके रक्षण करनेके सामर्थ्य अनंत हैं।

हमें धन चाहिये, पर वह ऐसा चाहिये कि, जिसके साथ हमारे पास सब प्रकारके सामर्थ्य भी प्राप्त हों। ऐसा धन हमें नहीं चाहिये कि, जो हमें कमजोर बनावे।

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर॥ [३८; ऋ० १।८।१]

हे इन्द्र! [स-जित्वानं] सदा जयशाली, [सदा-सहं] सदा शत्रुका नाश करनेमें समर्थ और [वर्षिष्ठं] सदा बढनेवाला और कभी न घटनेवाला ऐसा [सानसिं रयिं] सुख देनेवाला धन [ऊतये आभर] हमारी रक्षाके लिये हमारे पास भर कर ले आ।

हमें धन ऐसा चाहिये कि, जिससे हमारा सदा जय होता रहे, शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य हमारे पास रहे, हमारे महत्कार्योंमें जितना धन हमें आवश्यक हो, उतना सदा मिलता रहे, धनके अभावके कारण हमारे पुरुषार्थ रुके न रहें, तथा हमारी रक्षा होती रहे। अर्थात् हमें ऐसा धन नहीं चाहिये, जिस धनमें फंस कर हमारा पराभव होता रहे, जिससे हम शत्रुका नाश करनेमें असमर्थ हो जांय, जो आवश्यक कर्तव्योंके लिये न्यून हो जांय और जिससे हम अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ सिद्ध हो जांय।

हमें धन मिले ।

सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत् । विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥ अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम् । इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥ [१४-१५; ऋ० १।९।७-८]

हे इन्द्र ! हमें ऐसा धन मिले, जिसके साथ [गोमत्] बहुत गौवें हों, [वाजवत] बहुत घोडे अर्थात् वाहन हों, [अ-क्षितं] जो नाश न होनेवाला हो, जो [विश्व--आयुः] सब प्रकारसे आयुष्य बढानेवाला हो, [पृथु-- बृहत् श्रवः] जो विपुल तथा श्रेष्ठ प्रकारके यशसे युक्त हो । हे इन्द्र ! हमें [सहस्र--सातमं] सहस्रों प्रकारका [बृहत् द्युम्नं श्रवः] विपुल और तेजस्वी धन हो । [ताः रथिनीः इषः] तथा अन्न ऐसा हो कि, जो अनेक गाडियोंमें भरकर लाया जा सके।

हमारे घरमें गौवें, घोडे, वाहन, गाडियां, रथ, धन भरपूर हों, किसी तरह न्यूनता न रहे । अन्नभी बहुत हमें प्राप्त हो । हमसे इस धनका उत्तम उपयोग हो, जिससे हमारा यश चारों दिशाओंमें फैले । इस तरहका धन हमें चाहिये ।

इन्द्रकी गुह्य मन्त्रणा ।

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् ।
मा नो अति ख्यः ॥ [६; ऋ० १।४।३]

' तेरी गुह्य सुमतियां हमें मालूम हों, हमारे शत्रु उनको न जान सकें । '

' अन्तम सुमति ' वह है, जो राज्यशासन करनेवाले वीरोंके पास ही रहती है । गुह्य सलाह या मसलत, गुप्त मन्त्रणा इन्द्रके पास रहती है, क्योंकि यह इन्द्र सब विश्वका साम्राज्य चलाता है । हम उसके अनुयायी हैं, इसलिये वह मंत्रणा हमें ही मालूम हों, पर शत्रुओं को उनका पता न लगे ।

घुटने जोडकर प्रार्थना ।

स वह्निभिः ऋक्वभिः गोषु शश्वन् मितज्ञुभिः
पुरुकृत्वा जिगाय । पुरः पुरोहा सखिभिः
सखीयन् दृळ्हा रुरोज कविभिः कविः सन् ।
[२०१६; ऋ० ६।३२।३]

[सः] उस इन्द्रने [मितज्ञुभिः] घुटने जोडकर प्रार्थना करनेवालोंके लिये [पुरुकृत्वा जिगाय] वारंवार विजय किया । उस इन्द्रने अनेक मित्रोंके साथ शत्रुके [दृळ्हा पुरः] सुदृढ नगर तोड दिये ।

इन्द्र और माताका संवाद ।

जज्ञानो नु शतक्रतुः वि पृच्छादिति मातरम् ।
क उग्राः के ह शृण्विरे ॥१॥
आदीं शवस्यब्रवीत् और्णवाभं अहीशुवम् ।
ते पुत्र सन्तु निष्टुरः ॥२॥
समित् तान् वृत्रहाखिदत् खे अराँ इव खेदया ।
प्रवृद्धो दस्युहाभवत् ॥३॥ [६४०-४२; ऋ० ८।७७]

इन्द्र उत्पन्न होते ही अपनी मातासे पूछने लगा कि, कौन शूर हैं और कौन प्रसिद्ध वीर हैं ? वह माता उससे बोली कि और्णवाभ और अहीशुव ये वीर हैं । हे पुत्र ! इन का निःपात करना उचित है । इन्द्रने उनको खींच लिया और नाश किया, इससे वह बडा हुआ ।

माता अपने पुत्रको वीरताकी शिक्षा कैसी देवे, यह इन मन्त्रोंमें है । माताएं इस का मनन करें । बचपनसे इस तरह माताएं बोध देती रहेंगीं, तो पुत्र वीर ही बनेंगे, इस में संदेह नहीं है ।

अन्तिम निवेदन ।

इन्द्रदेवता के विषयमें इतना मनन यहां पर्याप्त है । इन्द्र आत्मा अथवा परमात्मा है, यह प्रथम बताया है और उत्तर विभागमें इन्द्र क्षत्रिय शूर वीर है, यह भाव बताया है । इन्द्रकी अन्यान्य विभूतियाँ मन्त्रोंका मनन करनेके बाद पाठक स्वयं जान सकते हैं ।

इस स्थानपर जो इन्द्रवाचक पद दिये हैं, वे किस मन्त्रमें कहां है, यह पाठक इन सूचियोंसे जान सकते हैं । तथा इन सूचियोंका उपयोग करनेपर पाठकोंको इसी तरह अन्यान्य शब्द मिल सकते हैं कि, जिनसे इन्द्र का ठीक ठीक स्वरूप जाना जा सकता है ।

अग्निकी अपेक्षा इन्द्रकी सूचियां अधिक हैं । तथा इसमें उत्तरपदसूची भी विशेष उपयोगी है ।

धन्यवाद ।

इन्द्रकी विशेषण, उपमा, तथा अन्य सूचियां बनानेका बडे परिश्रमका कार्य श्री पं० अनंत दिनकर रास्ते, पूना-निवासीने किया है । इसलिये वे धन्यवाद के लिये योग्य हैं । अग्निकी सूचियां भी इन्हींकी बनायी हैं ।

अन्तमें पाठकोंसे प्रार्थना यही है कि, वे इस दैवत-संहिता से जितना अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं, उतना प्राप्त करें और वेदके सत्य सिद्धान्त के पास पहुंचनेका आनन्द प्राप्त करें ।

औंध, जि० सातारा — संपादक
माघ वद्य सं० १९९८ — श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

इन्द्रदेवता का परिचय ।

भूमिका की विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ
१ मेघस्थानीय विद्युत् ।	३
२ इन्द्रिय-इन्द्रकी शक्ति ।	,,
३ इन्द्र के इन्द्रिय ।	,,
४ विश्वसृष्टि ।	४
५ व्यक्तिसृष्टि ।	,,
६ निरुक्तकी व्युत्पत्ति ।	,,
७ उपनिषदोंमें इन्द्रका अर्थ ।	५
८ मस्तकमें इन्द्रशक्ति ।	६
९ ब्राह्मणग्रन्थोंमें इन्द्रका अर्थ ।	,,
१० वेदमें इन्द्रके विशेषण ।	८
११ सबका एक राजा ।	९
१२ द्युलोक से बडा ।	,,
१३ त्रिलोक इन्द्र से विभक्त नहीं ।	१०
१४ कुछ भी दूर नहीं है ।	,,
१५ द्युलोक का उत्पादक इन्द्र ।	,,
१६ पृथ्वी और जल का उत्पादक ।	,,
१७ आकाश खडा करनेवाला ।	,,
१८ नक्षत्र स्थिर किये ।	,,
१९ स्थावर, जंगम कांपते हैं ।	११
२० सब का वश करनेवाला इंद्र ।	,,
२१ इंद्र का असीम सामर्थ्य ।	,,
२२ तेरे मार्गका अतिक्रमण सूर्य नहीं करता ।	१२
२३ मै इन्द्र हूं= इन्द्र का साक्षात्कार ।	,,
२४ क्षत्रिय वीर इन्द्र ।	,,
२५ आर्य के लिये प्रकाश दो ।	१५
२६ धार्मिकों का हितकर्ता ।	,,
२७ पञ्चजनों का रक्षक ।	,,
२८ लोकहितार्थ युद्ध ।	१६
२९ दस्युको दण्ड और आर्योंकी उन्नति करो ।	,,
३० रक्षण के लिये खडा रहो ।	,,
३१ दुष्टों का नाश कर ।	,,
३२ वृत्रवध ।	१७
३३ वज्र को नचाया ।	,,
३४ शत्रु वध्य हैं ।	,,
३५ युद्धों में विजयी ।	१८
३६ कपटी शत्रु का नाश ।	,,
३७ जल सुप्राप्य करना ।	,,
३८ शत्रुको जंजिरोंसे बांधकर कारागार में रखना ।	१९
३९ फौलादका तीक्ष्ण वज्र ।	,,
४० कपट करनेवालोंसे कपट ।	,,
४१ शत्रुओंके नगर फोड डाले ।	,,
४२ शत्रुके सैकडों कीलों का नाश ।	२०
४३ बनावटी कीलोंका नाश ।	,,
४४ वीर राजों से युद्ध ।	,,
४५ इन्द्रके रथके घोडे ।	२१
४६ शिरस्त्राण धारण करनेवाला इंद्र ।	,,
४७ बडा पादत्राण ।	,,
४८ शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य ।	,,
४९ इन्द्रके अन्तरिक्षस्थ शत्रु ।	,,
५० शत्रुका वध और सत्यप्रचार ।	२२
५१ आगे बढ ।	,,
५२ नव्वे नदियाँ ।	,,
५३ सर्व कर्मोंमें अग्रेसर ।	२३
५४ बलशाली धन ।	,,
५५ हमें धन मिले ।	२४
५६ इन्द्रकी गुह्य मन्त्रणा ।	,,
५७ घुटने जोडकर प्रार्थना ।	,,
५८ इन्द्र और माताका संवाद ।	,,
५९ अन्तिम निवेदन ।	,,
६० धन्यवाद ।	,,

इन्द्रदेवताकी सूचियाँ ।

१ पुनरुक्त-मन्त्रसूची ।	पृ० २२०-२६१
प्रथम मण्डल ।	२२०-२२८
द्वितीय ,,	२२८-२२९
तृतीय ,,	२२९-२३२
चतुर्थ ,,	२३२-२३४
पञ्चम ,,	२३५-२३६
षष्ठ ,,	२३६-२३९
सप्तम ,,	२३९-२४०
अष्टम ,,	२४०-२५१
दशम ,,	२५१-२६१
२ उपमासूची ।	२६२-२६९
३ मन्त्राणां अकारानुक्रमसूची ।	२७०-२९७
४ (विशेषण) गुणबोधकपदसूची ।	२९८-३३७
५ गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तर-पदसूची ।	३३८-३४८

इन्द्रमन्त्राणां ऋषिसूची।

(१) इन्द्रः।

ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठं
मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	१-६९	१
जेता माधुच्छन्दसः	७०-७७	४
मेधातिथिः काण्वः	७८-८६	,,
प्रगाथो (घौरः) काण्वः	८७-८८	५
मेधातिथि--मेध्यातिथी काण्वौ	८९--११५	७
मेधातिथिःकाण्वः आङ्गिरसःप्रियमेधश्च	११६--२००	,,
देवातिथिः काण्वः	२०१-४२	१३
वत्स काण्वः	२४३--८७	१४
पर्वतः काण्वः	२८८-३२०	१५
नारदः काण्वः	३२१--४३	१७
गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ	३४४--८१	१८
इरिम्बिठिः काण्वः	३८२--४०८	१९
सोभरिः काण्वः	४०९--२४	२०
नीपातिथिः काण्वः	४२५-३९	२१
सहस्रं वसुरोचिषोऽङ्गिरसः	४४०-४२	,,
त्रिशोकः काण्वः	४४३--८४	२२
प्रस्कण्वः काण्वः	४८५--९४	२३
पुष्टिगुः काण्वः	४९५-५०४	२४
श्रुष्टिगुः काण्वः	५०५--१४	२५
आयुः काण्वः	५१५--२४	,,
मेध्यः काण्वः	५२५--३२	२६
मातरिश्वा काण्वः	५३३--३८	२७
कृशः काण्वः	५३९--४३	,,
पृषध्रः काण्वः	५४४--४७	,,
भर्गः प्रागाथः	५४८--६५	२८
प्रगाथो घौरः काण्वः	५६६-७७	२९
प्रगाथः काण्वः	५७८--६१२	३०
कलिः प्रागाथः	६१३--२७	३१
कुरुसुतिः काण्वः	६२८--६०	३२
एकद्यूर्नौधसः ६६१--६९; कुसीदी काण्वः ६७०--८७		३४
आजीगर्तिः शुनःशेपः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः	६८८--७१४	३५
हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	७१५--४४	३६
सव्य आङ्गिरसः	७४५--८१६	३८
कुत्स आङ्गिरसः	८१७-५५	४४

ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठं
नोधा गौतमः	८५६--९९	४६
गोतमो राहूगणः	९००-५६	५०
वार्षागिराः ऋज्राश्वाम्बरीष-सहदेव-भयमान-सुराधसः	९५७--७५	५४
रेभः काश्यपः	९७६--९०	५५
नेमो भार्गवः	९९१-९३; ९९६-९९	५६
इन्द्रः	९९४-९५	,,
परुच्छेपो दैवोदासिः	१०००-१०४१	५७
अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	१०४२-११००	६१
गृत्समदो भार्गवः शौनकः	११०१-१२३७	६५
गाथिनो विश्वामित्रः	१२३८-१३५६	७५
कुशिक ऐषीरथिः	१३५७-१४६६	७७
वामदेवो गौतमः	१४६७-१६६६	९०
गौरिवीतिः शाक्त्यः	१६६७-८१	१०३
बभ्रुरात्रेयः	१६८२-९२	१०४
अवस्युरात्रेयः १६९३-१७०४; गातुरात्रेयः १७०५-१६		१०५
प्राजापत्यः संवरणः	१७१७-३५	१०६
प्रभूवसुराङ्गिरसः १७३६-४९; भौमोऽत्रिः १७५०-६८		१०८
श्यावाश्व आत्रेयः	१७६९-८२	११०
आत्रेयी अपाला	१७८३-८९	१११
विश्वमना वैयश्वः	१७९०-१८१६	,,
वशोऽश्व्यः	१८१७-४०	११२
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	१८४१-२००५	११४
सुहोत्रो भारद्वाजः	२००६-१५	११५
शुनहोत्रो भारद्वाजः	२०१६-२५	११६
नरो भारद्वाजः	२०२६-३५	११७
शंयुर्बार्हस्पत्यः	२०३६--२१०३	११८
गर्गो भारद्वाजः	२१०४--१८	१३२
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	२११९--२२९०	१३३
प्रियमेध आङ्गिरसः	२२९१--२३२०	१४५
पुरुहन्मा आङ्गिरसः	२३२१--३५	१४६
तिरश्चीराङ्गिरसः	२३३६--६३	१४७
द्युतानो वा मारुतः	२३४५--६३	१४८
नृमेध आङ्गिरसः	२३६४--८३	१४९
नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ	२३८४--९६	१५०

श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः	२३९७--२४२९	१५१
सुकक्ष आङ्गिरसः	२४३०--६२	१५३
त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः	२४६३--६५	१५४
ऐन्द्रो विमदः प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद्वा	२४६६--९०	,,
ऐन्द्रो वसुक्रः	२४९१--२५२९	१५६
कवष ऐलूषः	२५३०--४०	१५९
सुप्कवानिन्द्रः	२५४१--४५	१६०
कृष्णः आंगिरसः	२५४६--[illegible]	
वैकुण्ठ इन्द्रः	२५७९--२६०९	१६१
बृहदुक्थो वामदेव्यः	२६१०--२१	१६५
बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः	२६२२	१६६
गौरिवीतिः शाक्त्यः	२६२३--६६	
इन्द्रः, ऐन्द्रो वृषाकपिः, इन्द्राणी	२६६७--९९	,,
रेणुर्वैश्वामित्रः	२६९२--९९	१६९
वम्रो वैखानसः	२७००--९९	१७०
ऐन्द्रोऽप्रतिरथः	२७०२--२७०८	१७१
अष्टको वैश्वामित्रः	२७०९--१३	१७२
कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा	२७१४--२३	,,
वैरूपोऽष्टादंष्ट्रः	२७२५--३४	१७३
वैरूपो नभःप्रभेदनः	२७३५--४४	१७४
वैरूपः शतप्रभेदनः	२७४५--५४	,,
स्यौरोऽग्नियुतः स्यौरोऽग्नियूपो वा	२७५५--६३	१७५
आथर्वणो बृहद्दिवः	२७६४--७२	१७६
सुकीर्तिः काक्षीवतः	२७७३--७७	१७७
सुदाः पैजवनः	२७७८--८४	,,
मान्धाता यौवनाश्वः,गोधा ऋषिका	२७८५--९१	१७८
अङ्ग औरवः	२७९२--९७	,,
तार्क्ष्यः सुपर्णः, यामायन ऊर्ध्वकृशनो वा	२७९८--२८०३	१७९
सुवेदाः शैरीषिः	२८०४--८	,,
पृथुर्वैन्यः २८०९--१३; शासो भारद्वाजः	२८१४--१८	१८०
देवजामय इन्द्रमातरः	२८१९--२३	,,
पूरणो वैश्वामित्रः	२८२४--२८	१८१
विश्वामित्र-जमदग्नी २८२९--३१; इटो भार्गवः	२८३२--३५	,,
शिबिरौशीनरः, काशिराजः प्रतर्दनः, रौहिदश्वो वसुमनाः	२८३६--३८	,,
जय ऐन्द्रः २८३९--४१; सप्तगुराङ्गिरसः	२८४२--४९	१८२
ऐन्द्रो लवः	२८५०--६२	,,
भृगुराथर्वणः २८६३--६६; मृगारः	२८६७--७३	१८३
कण्वः २८७४--८६; जाटिकायनः	२८८७--८९	१८४

अथर्वा	२८९०--९५; २९०२--४;	१८५
,,	२९१५--१६	१८६
कबन्धः २८९६--९८; मगः	२८९९--२९०१	१८५
भृग्वङ्गिराः	२९०५,२९१३	१८६
अङ्गिराः ([illegible]वधकामः)	२९०६--११	,,
भृगुः २९१२, [illegible] आङ्गिरसः	२९१४	,,
[illegible] मेधातिथिर्वा	२९१७	,,
[illegible]	२९१८--७४	१८७
[illegible]	२९७५--७८	१९१
,, २९९१--[illegible],	२९९३--९६	,,
[illegible]	२९७९	,,
[illegible] [illegible]सोऽभीपाद उदलो वा	२९८०	,,
त्रसदस्युः	२९८३--८९	१९२
बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च क्रमेण गौपायना लौपायना वा	२९९०	,,
[illegible] ऐलूषः	२९९१	,,
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	२९९२	,,

इन्द्रसहचारी देवगणः।

(१) इन्द्राग्नी।

मेधातिथिः काण्वः	३००१--७	१९३
कुत्स आङ्गिरसः	३००८--२८	१९४
परुच्छेपो दैवोदासिः	३०२९	१९५
गाथिनो विश्वामित्रः	३०३०--३८	,,
त्रैवृष्णस्त्र्यरुणः, पौरुकुत्स्यस्त्रसदस्युः, भारतोऽश्वमेधश्च राजानः (अत्रिर्भौम इति केचित्)	३०३९	१९६
भौमोऽत्रिः	३०४०--४५	,,
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३०४६--७०	,,
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३०७१--९०	१९७
श्यावाश्व आत्रेयः	३०९१--३१००	१९८
नाभाकः काण्वः	३१०१--१२	१९९
प्राजापत्यो यक्ष्मनाशनः, राजयक्ष्मघ्नं वा	३११३--१७	२००
विवस्वानृषिः	३११८--१९	,,
अथर्वा	३१२०--२७	,,
प्रशोचनः ३१२८--३०; भृगुः	३१३१--३३	२०१

(२) इन्द्रावरुणौ।

मेधातिथिः काण्वः	३१३४--४२	,,
गाथिनो विश्वामित्रः	३१४३--४५	२०१

वामदेवो गौतमः	३१४६--५६	२०२
त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः	३१५७--६०	२०३
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३१६१--७१	,,
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३१७२--३२०१	२०४
सुपर्णः काण्वः	३२०२--८	२०६
विवस्वानृषिः	३२०९	२०७

(३) इन्द्रवायू।

मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	३२१०--१२	,,
मेधातिथिः काण्वः	३२१३--१४	,,
परुच्छेपो दैवोदासिः	३२१५--१९	,,
गृत्समदः शौनकः	३२२०	२०८
वामदेवो गौतमः	३२२१--२९	,,
स्वस्त्यात्रेयः	३२३०--३२	,,
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३२३३--४२	,,
विवस्वानृषिः	३२४३	२०९
वसिष्ठः	३२४४	,,

(४) इन्द्र--मरुतश्च।

मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	३२४५--४६	,,

(५) मरुत्वानिन्द्रः।

मेधातिथिः काण्वः	३२४७--४९	२१०
इन्द्रः	३२५०--५१, ३२५३, ३२५५,	,,
	३२५७, ३२५९--६१	,,
मरुतः	३२५२, ३२५४, ३२५६, ३२५९	,,
अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	३२६२--६८	,,

(६) इन्द्रामरुतौ।

तिरश्चीराङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः	३२६९	२११

(७) इन्द्रासोमौ।

गृत्समदः शौनकः	३२७०	,,
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३२७१--७५	,,
रेणुर्वैश्वामित्रः	३२७६	२१२
अग्निः	३२७७	,,
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः (चातनः)	३२७८--३३०२	,,

(८) इन्द्राविष्णू।

दीर्घतमा औचथ्यः	३३०३--५	२१४
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३३०६--१३	,,
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३१४--१६	२१५

(९) इन्द्राबृहस्पती।

वामदेवो गौतमः	३३१७--२४	,,
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३२५	२१६
तिरश्चीराङ्गिरसो द्युतानो वा मारुतः	३३२६	,,

(१०) देव-भूमि-बृहस्पतीन्द्राः।

गर्गो भारद्वाजः	३३२७	,,
अङ्गिराः	३३२८--२९	,,

(११) इन्द्रापूषणौ।

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३३३०--३५	,,
अथर्वा	३३३६	,,

(१२) ऋणञ्चयेन्द्रौ।

बभ्रुरात्रेयः	३३३७--४०	२१७

(१३) इन्द्र--ऋभवश्च।

विश्वामित्रो गाथिनः	३३४१--४३	,,

(१४) इन्द्रोषसौ।

वामदेवो गौतमः	३३४५--४७	,,

(१५) इन्द्राश्वौ।

वामदेवो गौतमः	३३४८--४९	,,

(१६) इन्द्रस्त्वष्टा।

गृत्समदः शौनकः	३३५०--५१	२१८

(१७) इन्द्रो गावश्च।

भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	३३५२--५३	,,

(१८) इन्द्राकुत्सौ।

अवस्युरात्रेयः	३३५४	,,

(१९) इन्द्रद्यावापृथिव्यः।

बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः	३३५५	,,

(२०) इन्द्रापर्वतौ।

गाथिनो विश्वामित्रः	३३५६	,,

(२१) इन्द्रः सोमो ब्रह्मणस्पतिर्दक्षिणा च।

मेधातिथिः काण्वः	३३५७--५८	,,

(२२) इन्द्राब्रह्मणस्पती।

गृत्समदः शौनकः	३३५९	२१९
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३६०--६१	,,

(२३) दुन्दुभीन्द्रौ।

गर्गो भारद्वाजः	३३६२	,,

(२४) इन्द्रसूर्यादयः।

ब्रह्मा	३३६३	,,

दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् देवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

२ इन्द्रदेवता ।

(१-६९) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।३।४-६)

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः । अण्वीभिस्तना पूतासः ४
इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः । उप ब्रह्माणि वाघतः ५
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः । सुते दधिष्व नश्चनः ६

॥ २ ॥ (ऋ० १।४।१-१०)

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे । जुहूमसि द्यविद्यवि १
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब । गोदा इद् रेवतो मदः २
अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् । मा नो अति ख्य आ गहि ३
परेहि विग्रमस्तृत-मिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम् । यस्ते सखिभ्य आ वरम् ४
उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत । दधाना इन्द्र इद् दुवः ५
उत नः सुभगाँ अरि-र्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः । स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ६
एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम् । पतयन् मन्दयत्सखम् ७
अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः । प्रावो वाजेषु वाजिनम् ८
तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो । धनानामिन्द्र सातये ९
यो रायोऽवनिर्महान् त्सुपारः सुन्वतः सखा । तस्मा इन्द्राय गायत १०

॥ ३ ॥ (ऋ० १।५।१-१०)

आ त्वेता नि षीदते—न्द्रमभि प्र गायत । सखायः स्तोमवाहसः १
पुरूतमं पुरूणा—मीशानं वार्याणाम् । इन्द्रं सोमे सचा सुते २
स घा नो योग आ भुवत् स राये स पुरंध्याम् । गमद्वाजेभिरा स नः ३
यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः । तस्मा इन्द्राय गायत ४
सुतपाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये । सोमासो दध्याशिरः ५
त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः । इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो ६
आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः । शं ते सन्तु प्रचेतसे ७
त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्था शतक्रतो । त्वां वर्धन्तु नो गिरः ८
अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम् । यस्मिन् विश्वानि पौंस्या ९
मा नो मर्ता अभि द्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः । ईशानो यवया वधम् १०

॥ ४ ॥ (ऋ० १।६।१-३, १०)

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि १
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा २
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ३
इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि । इन्द्रं महो वा रजसः १०

॥ ५ ॥ (ऋ० १।७।१-१०)

इन्द्रमिद्गाथिनो बृह—दिन्द्रमर्केभिरर्किणः । इन्द्रं वाणीरनूषत १
इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा । इन्द्रो वज्री हिरण्ययः २
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि । वि गोभिरद्रिमैरयत् ३
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च । उग्र उग्राभिरूतिभिः ४
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे । युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ५
स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि । अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ६
तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः । न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ७
वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा । ईशानो अप्रतिष्कुतः ८
य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति । इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ९
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः । अस्माकमस्तु केवलः १०

॥ ६ ॥ (ऋ० १।८।१-१०)

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् । वर्षिष्ठमूतये भर १
नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै । त्वोतासो न्यर्वता २
इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि । जयेम सं युधि स्पृधः ३
वयं शूरेभिरस्तृभि-रिन्द्र त्वया युजा वयम् । सासह्याम पृतन्यतः ४
महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे । द्यौर्न प्रथिना शवः ५
समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ । विप्रासो वा धियायवः ६
यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते । उर्वीरापो न काकुदः ७
एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही । पक्वा शाखा न दाशुषे ८
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते । सद्यश्चित् सन्ति दाशुषे ९
एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या। इन्द्राय सोमपीतये १०

॥ ७ ॥ (ऋ० १।९।१-१०)

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । महाँ अभिष्टिरोजसा १
एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने । चक्रिं विश्वानि चक्रये २
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे । सचैषु सवनेष्वा ३
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत । अजोषा वृषभं पतिम् ४
सं चोदय चित्रमर्वाग् राध इन्द्र वरेण्यम् । असदित् ते विभु प्रभु ५
अस्मान्त्सु तत्र चोदये-न्द्र राये रभस्वतः । तुविद्युम्न यशस्वतः ६
सं गोमदिन्द्र वाजव-दस्मे पृथु श्रवो बृहत् । विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ७
अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम् । इन्द्र ता रथिनीरिषः ८
वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् । होम गन्तारमूतये ९
सुतेसुते न्योकसे बृहद् बृहत एदरिः । इन्द्राय शूषमर्चति १०

॥ ८ ॥ (ऋ० १।१०।१-१२) अनुष्टुप्।

गायन्ति त्वा गायत्रिणो ऽर्चन्त्यर्कमर्किणः । ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद् वंशमिव येमिरे १
यत् सानोः सानुमारुहद् भूर्यस्पष्ट कर्त्वम् । तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति २
युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा । अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर ३
एहि स्तोमाँ अभि स्वरा ऽभि गृणीह्या रुव। ब्रह्म च नो वसो सचे-न्द्र यज्ञं च वर्धय ४

उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिष्षिधे । शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत् सख्येषु च ५
तमित् सखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये । स शक्र उत नः शकदिन्द्रो वसु दयमानः ६
सुविवृतं सुनिरजमिन्द्र त्वादातमिद्यशः । गवामप व्रजं वृधि कृणुष्व राधो अद्रिवः ७
नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः । जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि ८ ६५
आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवं नू चिद्दधिष्व मे गिरः । इन्द्र स्तोममिमं मम कृष्वा युजश्चिदन्तरम् ९
विद्मा हि त्वा वृषन्तमं वाजेषु हवनश्रुतम् । वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं सहस्रसातमाम् १०
आ तू न इन्द्र कौशिक मन्दसानः सुतं पिब । नव्यमायुः प्र सू तिर कृधी सहस्रसामृषिम् ११
परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः १२ ६९

॥ ९ ॥ (ऋ० १।११।१-८)

(७०-७७) जेता माधुच्छन्दसः । अनुष्टुप् ।

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् त्समुद्रव्यचसं गिरः । रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् १ ७०
सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते । त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम् २
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः । यदी वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ३
पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत । इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ४
त्वं वलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम् । त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः ५
तवाहं शूर रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन् । उपातिष्ठन्त गिर्वणो विदुष्टे तस्य कारवः ६ ७५
मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः । विदुष्टे तस्य मेधिरास्तेषां श्रवांस्युत्तिर ७
इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनूषत । सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ८ ७७

॥ १० ॥ (१।१६।१-९)

(७८-२३९) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

आ त्वा वहन्तु हरयो वृषणं सोमपीतये । इन्द्र त्वा सूरचक्षसः १
इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः । इन्द्रं सुखतमे रथे २
इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । इन्द्रं सोमस्य पीतये ३ ८०
उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः । सुते हि त्वा हवामहे ४
सेमं नः स्तोममा गह्युपेदं सवनं सुतम् । गौरो न तृषितः पिब ५
इमे सोमास इन्दवः सुतासो अधि बर्हिषि । ताँ इन्द्र सहसे पिब ६
अयं ते स्तोमो अग्रियो हृदिस्पृगस्तु शंतमः । अथा सोमं सुतं पिब ७

विश्वमित् सर्वनं सुत-मिन्द्रो मदाय गच्छति । वृत्रहा सोमपीतये ८ ८५
सेमं नः काममा पृण गोभिरश्वैः शतक्रतो । स्तवाम त्वा स्वाध्यः ९

॥ ११ ॥ (ऋ० ८।१।१-२९)

[प्रगाथो (घौरः) काण्वः; ३-२९ मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ ।] १-४ प्रगाथः=
(विषमा बृहती, समा सतोबृहती), ५-२९ बृहती ।

मा चिदुन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत १
अवक्रक्षिणं वृषभं यथाजुरं गां न चर्षणीसहम् ।
विद्वेषणं संवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् २
यच्चिद्धि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये ।
अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु ते ऽहा विश्वा च वर्धनम् ३
वि तर्तूर्यन्ते मघवन् विपश्चितो ऽर्यो विपो जनानाम् ।
उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ४ ९०
महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम् ।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ ५
वस्याँ इन्द्रासि मे पितु-रुत भ्रातुरभुञ्जतः ।
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ६
क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः ।
अलर्षि युध्म खजकृत् पुरंदर प्र गायत्रा अगासिषुः ७
प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरंदरः ।
याभिः काण्वस्योप बर्हिरासदं यासद् वज्री भिनत् पुरः ८
ये ते सन्ति दशग्विनः शतिनो ये सहस्रिणः ।
अश्वासो ये ते वृषणो रघुद्रुव-स्तेभिर्नस्तूयमा गहि ९ ९५
आ त्व१द्य सबर्दुघां हुवे गायत्रवेपसम् ।
इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिष-मुरुधारामरंकृतम् १०
यत् तुदत् सूर एतशं वङ्कू वातस्य पर्णिना ।
वहत् कुत्समार्जुनेयं शतक्रतुः त्सरद् गन्धर्वमस्तृतम् ११

य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः ।
संधाता संधिं मघवा पुरूवसु—रिष्कर्ता विह्रुतं पुनः १२
मा भूम निष्ट्या इवे—न्द्र त्वदरणा इव ।
वनानि न प्रजहितान्यद्रिवो दुरोषासो अमन्महि १३
अमन्महीदनाशवो ऽनुग्रासश्च वृत्रहन् ।
सकृत् सु ते महता शूर राधसा ऽनु स्तोमं मुदीमहि १४ १००

यदि स्तोमं मम श्रव—दस्माकमिन्द्रमिन्दवः ।
तिरः पवित्रं ससृवांस आशवो मन्दन्तु तुग्र्यावृधः १५
आ त्वा१द्य सधस्तुतिं वावातुः सख्युरा गहि ।
उपस्तुतिर्मघोनां प्र त्वाव—त्वधा ते वश्मि सुष्टुतिम् १६
सोता हि सोममद्रिभि—रेमेनमप्सु धावत ।
गव्या वस्त्रेव वासयन्त इन्नरो निर्धुक्षन् वक्षणाभ्यः १७
अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि ।
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा ऽऽ जाता सुक्रतो पृण १८
इन्द्राय सु मदिन्तमं सोमं सोता वरेण्यम् ।
शक्र एणं पीपयद् विश्वया धिया हिन्वानं न वाजयुम् १९ १०५

मा त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं गिरा ।
भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् २०
मदेनेषितं मद—मुग्रमुग्रेण शवसा ।
विश्वेषां तरुतारं मदच्युतं मदे हि ष्मा ददाति नः २१
शेवारे वार्या पुरु देवो मर्ताय दाशुषे ।
स सुन्वते च स्तुवते च रासते विश्वगूर्तो अरिष्टुतः २२
एन्द्र याहि मत्स्व चित्रेण देव राधसा ।
सरो न प्रास्युदरं सपीतिभि—रा सोमेभिरुरु स्फिरम् २३
आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये २४ ११०

आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशेप्या ।
शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये २५

पिबा त्व१स्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपा इव ।
परिष्कृतस्य रसिन इयमासुति—श्चारुर्मदाय पत्यते २६

य एको अस्ति दंसना महाँ उग्रो अभि व्रतैः ।
गमत् स शिप्री न स योषदा गम—द्धवं न परि वर्जति २७

त्वं पुरं चरिष्ण्वं वधैः शुष्णस्य सं पिणक् ।
त्वं भा अनु चरो अध द्विता यदिन्द्र हव्यो भुवः २८

मम त्वा सूर उदिते मम मध्यन्दिने दिवः ।
मम प्रपित्वे अपिशर्वरे वस—वा स्तोमासो अवृत्सत २९ ११९

॥ १२ ॥ (ऋ० ८।२।१-४०)

[मेधातिथिः काण्वः, (आङ्गिरसः प्रियमेधश्च)] । गायत्री, २८ अनुष्टुप् ।

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् । अनाभयिन् ररिमा ते १
नृभिर्धूतः सुतो अश्नै—रव्यो वारैः परिपूतः । अश्वो न निक्तो नदीषु २
तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः । इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे ३
इन्द्र इत् सोमपा एक इन्द्रः सुतपा विश्वायुः । अन्तर्देवान् मर्त्यांश्च ४
न यं शुक्रो न दुराशी—र्न तृप्रा उरुव्यचसम् । अपस्पृण्वते सुहार्दम् ५ १२०
गोभिर्यदीमन्ये अस्मन् मृगं न व्रा मृगयन्ते । अभित्सरन्ति धेनुभिः ६
त्रय इन्द्रस्य सोमाः सुतासः सन्तु देवस्य । स्वे क्षये सुतपाव्नः ७
त्रयः कोशासः श्चोतन्ति तिस्रश्चम्व१ः सुपूर्णाः । समाने अधि भार्मन् ८
शुचिरसि पुरुनिःष्ठाः क्षीरैर्मध्यत आशीर्तः । दध्ना मन्दिष्ठः शूरस्य ९
इमे त इन्द्र सोमा—स्तीव्रा अस्मे सुतासः । शुक्रा आशिरं याचन्ते १० १२५
ताँ आशिरं पुरोळाश—मिन्द्रेमं सोमं श्रीणीहि । रेवन्तं हि त्वा शृणोमि ११
हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम् । ऊधर्न नग्ना जरन्ते १२
रेवाँ इद् रेवतः स्तोता स्यात् त्वावतो मघोनः । प्रेदु हरिवः श्रुतस्य १३
उक्थं चन शस्यमान—मगोररिरा चिकेत । न गायत्रं गीयमानम् १४
मा न इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः । शिक्षा शचीवः शचीभिः १५ १३०

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते १६

न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ । तवेदु स्तोमं चिकेत १७

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति । यन्ति प्रमादमतन्द्राः १८

ओ षु प्र याहि वाजेभि—र्मा हृणीथा अभ्यस्मान् । महाँ इव युवजानिः १९

मो ष्वद्य दुर्हणावान् त्सायं करदारे अस्मत् । अश्रीर इव जामाता २० १३५

विद्मा ह्यस्य वीरस्य भूरिदावरीं सुमतिम् । त्रिषु जातस्य मनांसि २१

आ तू षिञ्च कण्वमन्तं न घा विद्म शवसानात् । यशस्तरं शतमूतेः २२

ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय सोमं वीराय शक्राय । भरा पिबन्नर्याय २३

यो वेदिष्ठो अव्यथि—ष्वश्वावन्तं जरितृभ्यः । वाजं स्तोतृभ्यो गोमन्तम् २४

पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय । सोमं वीराय शूराय २५ १४०

पाता वृत्रहा सुत—मा घा गमन्नारे अस्मत् । नि यमते शतमूतिः २६

एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम् । गीर्भिः श्रुतं गिर्वणसम् २७

स्वादवः सोमा आ याहि श्रीताः सोमा आ याहि ।
शिप्रिन्नृषीवः शचीवो नायमच्छा सधमादम् २८

स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति महे राधसे नृम्णाय । इन्द्र कारिणं वृधन्तः २९

गिरश्च यास्ते गिर्वाह उक्था च तुभ्यं तानि । सत्रा दधिरे शवांसि ३० १४५

एवेदेष तुविकूर्मि—र्वाजाँ एको वज्रहस्तः । सनादमृक्तो दयते ३१

हन्ता वृत्रं दक्षिणेने—न्द्रः पुरू पुरुहूतः । महान् महीभिः शचीभिः ३२

यस्मिन् विश्वाश्चर्षणय उत च्यौत्ना ज्रयांसि च । अनु घेन्मन्दी मघोनः ३३

एष एतानि चकारे—न्द्रो विश्वा योऽति शृण्वे । वाजदावा मघोनाम् ३४

प्रभर्ता रथं गव्यन्त—मपाकाच्चिद् यमवति । इनो वसु स हि वोळ्हा ३५ १५०

सनिता विप्रो अर्वद्भि—र्हन्ता वृत्रं नृभिः शूरः । सत्योऽविता विधन्तम् ३६

यजध्वैनं प्रियमेधा इन्द्रं सत्राचा मनसा । यो भूत् सोमैः सत्यमद्वा ३७

गाथश्रवसं सत्पतिं श्रवस्कामं पुरुत्मानम् । कण्वासो गात वाजिनम् ३८

य ऋते चिद् गास्पदेभ्यो दात् सखा नृभ्यः शचीवान् । ये अस्मिन् काममश्रियन् ३९

इत्था धीवन्तमद्रिवः काण्वं मेध्यातिथिम् । मेषो भूतोऽभि यन्नयः ४० १५५

॥ १३ ॥ (ऋ० ८।३।१-२४)

[मेध्यातिथिः काण्वः]। प्रगाथः=(विषमा बृहती, समा सतोबृहती), २१ अनुष्टुप्, २२-२३ गायत्री, २४ बृहती।

पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः ।
आपिर्नो बोधि सधमाद्यो वृधे३ ऽस्माँ अवन्तु ते धियः १
भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा नः स्तरभिमातये ।
अस्माञ्चित्राभिरवतादभिष्टिभि रा नः सुम्नेषु यामय २
इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितो ऽभि स्तोमैरनूषत ३
अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ४
इन्द्रमिद् देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ५ १६०
इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत् ।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे सुवानास इन्दवः ६
अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ७
अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि ।
अद्या तमस्य महिमानमायवो ऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ८
तत् त्वा यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये ।
येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ ९
येना समुद्रमसृजो महीरप स्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः ।
सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे १० १६५
शग्धी न इन्द्र यत् त्वा रयिं यामि सुवीर्यम् ।
शग्धि वाजाय प्रथमं सिषासते शग्धि स्तोमाय पूर्व्य ११
शग्धी नो अस्य यद्ध पौरमाविथ धिय इन्द्र सिषासतः ।
शग्धि यथा रुशमं श्यावकं कृप मिन्द्र प्रावः स्वर्णरम् १२
कन्नव्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः ।
नही न्वस्य महिमानमिन्द्रियं स्वर्गृणन्त आनशुः १३
कदु स्तुवन्त ऋतयन्त देवत ऋषिः को विप्र ओहते ।
कदा हवं मघवन्निन्द्र सुन्वतः कदु स्तुवत आ गमः १४

उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते ।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव १५ १७०
कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद्धीतमानशुः ।
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् १६
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः ।
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि १७
इमे हि ते कारवो वावशुर्धिया विप्रासो मेधसातये ।
स त्वं नो मघवन्निन्द्र गिर्वणो वेनो न शृणुधी हवम् १८
निरिन्द्र बृहतीभ्यो वृत्रं धनुभ्यो अस्फुरः ।
निरर्बुदस्य मृगयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा आजः १९
निरग्नयो रुरुचुर्निरु सूर्यो निः सोम इन्द्रियो रसः ।
निरन्तरिक्षादधमो महामहिं कृपे तदिन्द्र पौंस्यम् । २० १७५
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः पाकस्थामा कौरयाणः ।
विश्वेषां त्मना शोभिष्ठमुपेव दिवि धावमानम् २१
रोहितं मे पाकस्थामा सुधुरं कक्ष्यप्राम् ।
अदाद्रायो विबोधनम् २२
यस्मा अन्ये दश प्रति धुरं वहन्ति वह्नयः ।
अस्तं वयो न तुग्र्यम् २३
आत्मा पितुस्तनूर्वास ओजोदा अभ्यञ्जनम् ।
तुरीयमिद्रोहितस्य पाकस्थामानं भोजं दातारमब्रवम् २४

॥ १४ ॥ (ऋ० ८।३२।१-३०)

[मेधातिथिः काण्वः] । गायत्री ।

प्र कृतान्यृजीषिणः कण्वा इन्द्रस्य गाथया । मदे सोमस्य वोचत १ १८०
यः सृबिन्दमनर्शनिं पिप्रुं दासमहीशुवम् । वधीदुग्रो रिणन्नपः २
न्यर्बुदस्य विष्टपं वर्ष्माणं बृहतस्तिर । कृपे तदिन्द्र पौंस्यम् ३
प्रति श्रुताय वो धृषत् तूर्णाशं न गिरेरधि । हुवे सुशिप्रमूतये ४
स गोरश्वस्य वि व्रजं मन्दानः सोम्येभ्यः । पुरं न शूर दर्षसि ५
यदि मे रारणः सुत उक्थे वा दधसे चनः । आरादुप स्वधा गहि ६ १८५
वयं घा ते अपि ष्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः ७

उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम् । मघवन् भूरि ते वसु ८
उत नो गोमतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः । इळाभिः सं रभेमहि ९
बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधु कृण्वन्तमवसे १०
यः संस्थे चिच्छतक्रतु रादीं कृणोति वृत्रहा । जरितृभ्यः पुरूवसुः ११
स नः शक्रश्चिदा शकद् दानवाँ अन्तराभरः । इन्द्रो विश्वाभिरूतिभिः १२
यो रायोऽवनिर्महान् त्सुपारः सुन्वतः सखा । तमिन्द्रमभि गायत १३
आयन्तारं महि स्थिरं पृतनासु श्रवोजितम् । भूरेरीशानमोजसा १४
नकिरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतानाम् । नकिर्वक्ता न दादिति १५
न नूनं ब्रह्मणामृणं प्राशूनामस्ति सुन्वताम् । न सोमो अप्रता पपे १६
पन्य इदुप गायत पन्य उक्थानि शंसत । ब्रह्मा कृणोत पन्य इत् १७
पन्य आ दर्दिरच्छता सहस्रा वाज्यवृतः । इन्द्रो यो यज्वनो वृधः १८
वि षू चर स्वधा अनु कृष्टीनामन्वाहुवः । इन्द्र पिब सुतानाम् १९
पिब स्वधैनवाना मुत यस्तुग्र्ये सचा । उतायमिन्द्र यस्तव २०
अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपारणे । इमं रातं सुतं पिब २१
इहि तिस्रः परावत इहि पञ्च जनाँ अति । धेना इन्द्रावचाकशत् २२
सूर्यो रश्मिं यथा सृजा ऽऽ त्वा यच्छन्तु मे गिरः । निम्नमापो न सध्र्यक् २३
अध्वर्यवा तु हि षिञ्च सोमं वीराय शिप्रिणे । भरा सुतस्य पीतये २४
य उद्नः फलिगं भिन न्यक् सिन्धूँरवासृजत् । यो गोषु पक्वं धारयत् २५
अहन् वृत्रमृचीषम और्णवाभमहीशुवम् । हिमेनाविध्यदर्बुदम् २६
प्र व उग्राय निष्टुरे ऽषाळ्हाय प्रसक्षिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत २७
यो विश्वान्यभि व्रता सोमस्य मदे अन्धसः । इन्द्रो देवेषु चेतति २८
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळ्हामभि प्रयो हितम् २९
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी । सोमपेयाय वक्षतः ३०

॥ १५ ॥ (ऋ० ८।३३।१-१९)

[मेध्यातिथिः काण्वः] । बृहती, १६-१८ गायत्री, १९ अनुष्टुप् ।

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते १
स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः २

कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद् वाजं दर्षि सहस्रिणम् ।
पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ३
पाहि गायान्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे ।
यः संमिश्लो हर्योर्यः सुते सचा वज्री रथो हिरण्ययः ४
यः सुषव्यः सुदक्षिण इनो यः सुक्रतुर्गृणे ।
य आकरः सहस्रा यः शतामघ इन्द्रो यः पूर्भिदारितः ५
यो धृषितो योऽवृतो यो अस्ति श्मश्रुषु श्रितः ।
विभूतद्युम्नश्च्यवनः पुरुष्टुतः क्रत्वा गौरिव शाकिनः ६ ११५
क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः ७
दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाँश्चरस्योजसा ८
य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः ।
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत् ९
सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽवृतः
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः १०
वृषणस्ते अभीशवो वृषा कशा हिरण्ययी ।
वृषा रथो मघवन् वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो ११ १२०
वृषा सोता सुनोतु ते वृषन्नृजीपिन्ना भर ।
वृषा दधन्वे वृषणं नदीष्वा तुभ्यं स्थातर्हरीणाम् १२
एन्द्र याहि पीतये मधु शविष्ठ सोम्यम् ।
नायमच्छा मघवा शृणवद् गिरो ब्रह्मोक्था च सुक्रतुः १३
वहन्तु त्वा रथेष्ठा—मा हरयो रथयुजः ।
तिरश्चिदर्यं सवनानि वृत्रह—न्नन्येषां या शतक्रतो १४
अस्माकमद्यान्तमं स्तोमं धिष्व महामह ।
अस्माकं ते सवना सन्तु शंतमा मदाय द्युक्ष सोमपाः १५
नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य रण्यति । यो अस्मान् वीर आनयत् १६ १२५
इन्द्रश्चिद् घा तदब्रवीत् स्त्रिया अशास्यं मनः । उतो अह क्रतुं रघुम् १७
सप्ती चिद् घा मदच्युता मिथुना वहतो रथम् । एवेद् धूर्वृष्ण उत्तरा १८

अधः पश्यस्व मोपरि संतरां पादकौ हर ।
मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ १९

॥ १६ ॥ (ऋ० ८।४।१-१४)

[देवातिथिः काण्वः] । प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवे ऽसि प्रशर्ध तुर्वशे १
यद् वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।
कण्वासस्त्वा ब्रह्मभिः स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि २ १३०
यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ३
मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते ।
आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद् दधिषे सहः ४
प्र चक्रे सहसा सहो बभञ्ज मन्युमोजसा ।
विश्वे त इन्द्र पृतनायवो यहो नि वृक्षा इव येमिरे ५
सहस्रेणेव सचते यवीयुधा यस्त आनळुपस्तुतिम् ।
पुत्रं प्रावर्गं कृणुते सुवीर्ये दाश्नोति नमउक्तिभिः ६
मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव ।
महत् ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ७ १३५
सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति ।
मध्वा संपृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब ८
अश्वी रथी सुरूप इद् गोमाँ इदिन्द्र ते सखा ।
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रो याति सभामुप ९
ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा गहि पिबा सोमं वशाँ अनु ।
निमेघमानो मघवन् दिवेदिव ओजिष्ठं दधिषे सहः १०
अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।
उप नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ११
स्वयं चित् स मन्यते दाशुरिर्जनो यत्रा सोमस्य तृम्पसि ।
इदं ते अन्नं युज्यं समुक्षितं तस्येहि प्र द्रवा पिब १२ १४०

रथेष्ठायाध्वर्यवः सोममिन्द्राय सोतन ।
अधि ब्रध्नस्याद्रयो वि चक्षते सुन्वन्तो दाश्वध्वरम् १३
उप ब्रध्नं वावाता वृषणा हरी इन्द्रमपसु वक्षतः ।
अर्वाञ्चं त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप १४

॥ १७ ॥ (ऋ० ८।६।१-४५)

[वत्सः काण्वः] । गायत्री ।

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव । स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे १
प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद् भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा २
कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् । जामि ब्रुवत आयुधम् ३
समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायेव सिन्धवः ४
ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत् । इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ५
वि चिद् वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा । शिरो बिभेद वृष्णिना ६
इमा अभि प्र णोनुमो विपामग्रेषु धीतयः । अग्नेः शोचिर्न दिद्युतः ७
गुहा सतीरुप त्मना प्र यच्छोचन्त धीतयः । कण्वा ऋतस्य धारया ८
प्र तमिन्द्र नशीमहि रयिं गोमन्तमश्विनम् । प्र ब्रह्म पूर्वचित्तये ९
अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ । अहं सूर्य इवाजनि १०
अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुष्ममिद् दधे ११
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद् वर्धस्व सुष्टुतः १२
यदस्य मन्युरध्वनीद् वि वृत्रं पर्वशो रुजन् । अपः समुद्रमैरयत् १३
नि शुष्ण इन्द्र धर्णसिं वज्रं जघन्थ दस्यवि । वृषा ह्युग्र शृण्विषे १४
न द्याव इन्द्रमोजसा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । न विव्यचन्त भूमयः १५
यस्त इन्द्र महीरपः स्तभूयमान आशयत् । नि तं पद्यासु शिश्नथः १६
य इमे रोदसी मही समीची समजग्रभीत् । तमोभिरिन्द्र तं गुहः १७
य इन्द्र यतयस्त्वा भृगवो ये च तुष्टुवुः । ममेदुग्र श्रुधी हवम् १८
इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम् । एनामृतस्य पिप्युषीः १९
या इन्द्र प्रस्वस्त्वाऽऽसा गर्भमचक्रिरन् । परि धर्मेव सूर्यम् २०
त्वामिच्छवसस्पते कण्वा उक्थेन वावृधुः । त्वां सुतास इन्दवः २१
तवेदिन्द्र प्रणीतिषूत प्रशस्तिरद्रिवः । यज्ञो वितन्तसाय्यः २२
आ न इन्द्र महीमिषं पुरं न दर्षि गोमतीम् । उत प्रजां सुवीर्यम् २३

उत त्यदाश्वश्व्यं यदिन्द्र नाहुषीष्वा । अग्रे विक्षु प्रदीदयत् २४
अभि व्रजं न तत्निषे सूर उपाकचक्षसम् । यदिन्द्र मृळयासि नः २५
यदङ्ग तविषीयस इन्द्र प्रराजसि क्षितीः । महाँ अपार ओजसा २६
तं त्वा हविष्मतीर्विश उप ब्रुवत ऊतये । उरुज्रयसमिन्दुभिः २७
उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम् । धिया विप्रो अजायत २८ १७०
अतः समुद्रमुद्वतश्चिकित्वाँ अव पश्यति । यतो विपान एजति २९
आदित् प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम् । परो यदिध्यते दिवा ३०
कण्वास इन्द्र ते मतिं विश्वे वर्धन्ति पौंस्यम् । उतो शविष्ठ वृष्ण्यम् ३१
इमां म इन्द्र सुष्टुतिं जुषस्व प्र सु मामव । उत प्र वर्धया मतिम् ३२
उत ब्रह्मण्या वयं तुभ्यं प्रवृद्ध वज्रिवः । विप्रा अतक्ष्म जीवसे ३३ १७५
अभि कण्वा अनूषताऽऽपो न प्रवता यतीः । इन्द्रं वनन्वती मतिः ३४
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः समुद्रमिव सिन्धवः । अनुत्तमन्युमजरम् ३५
आ नो याहि परावतो हरिभ्यां हर्यताभ्याम् । इममिन्द्र सुतं पिब ३६
त्वामिद् वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः । हवन्ते वाजसातये ३७
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं न वर्त्येतशम् । अनु सुवानास इन्दवः ३८ १८०
मन्दस्वा सु स्वर्णर उतेन्द्र शर्यणावति । मत्स्वा विवस्वतो मती ३९
वावृधान उप द्यवि वृषा वज्र्यरोरवीत् । वृत्रहा सोमपातमः ४०
ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा । इन्द्र चोष्कूयसे वसु ४१
अस्माकं त्वा सुताँ उप वीतपृष्ठा अभि प्रयः । शतं वहन्तु हरयः ४२
इमां सु पूर्व्यां धियं मधोर्घृतस्य पिप्युषीम् । कण्वा उक्थेन वावृधुः ४३ १८५
इन्द्रमिद् विमहीनां मेधे वृणीत मर्त्यः । इन्द्रं सनिष्युरूतये ४४
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी । सोमपेयाय वक्षतः ४५

॥ १८ ॥ (ऋ० ८।१२।१-३३)

[पर्वतः काण्वः]। उष्णिक्, ३३ शंकुमती (पिंगलमतेन)।

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति । येना हंसि न्यत्रिणं तमीमहे १
येना दशग्वमध्रिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम् । येना समुद्रमाविथा तमीमहे २
येन सिन्धुं महीरपो रथाँ इव प्रचोदयः । पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ३ १९०
इमं स्तोममभिष्टये घृतं न पूतमद्रिवः । येना नु सद्य ओजसा ववक्षिथ ४
इमं जुषस्व गिर्वणः समुद्र इव पिन्वते । इन्द्र विश्वाभिरूतिभिर्ववक्षिथ ५

यो नो देवः परावतः सखित्वनाय मामहे । दिवो न वृष्टिं प्रथयन् ववक्षिथ ६
ववक्षुरस्य केतव उत वज्रो गभस्त्योः । यत् सूर्यो न रोदसी अवर्धयत् ७
यदि प्रवृद्ध सत्पते सहस्रं महिषाँ अघः । आदित् त इन्द्रियं महि प्र वावृधे ८ २९५
इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभि-र्न्यर्शसानमोषति । अग्निर्वनेव सासहिः प्र वावृधे ९
इयं त ऋत्वियावती धीतिरेति नवीयसी । सपर्यन्ती पुरुप्रिया मिमीत इत् १०
गर्भो यज्ञस्य देवयुः क्रतुं पुनीत आनुषक् । स्तोमैरिन्द्रस्य वावृधे मिमीत इत् ११
सनिर्मित्रस्य पप्रथ इन्द्रः सोमस्य पीतये । प्राची वाशीव सुन्वते मिमीत इत् १२
यं विप्रा उक्थवाहसो ऽभिप्रमन्दुरायवः । घृतं न पिप्य आसन्यृतस्य यत् १३ ३००
उत स्वराजे अदितिः स्तोममिन्द्राय जीजनत् । पुरुप्रशस्तमूतय ऋतस्य यत् १४
अभि वह्नय ऊतये ऽनूषत प्रशस्तये । न देव विव्रता हरी ऋतस्य यत् १५
यत् सोममिन्द्र विष्णवि यद् वा घ त्रित आप्त्ये । यद् वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः १६
यद् वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे । अस्माकमित् सुते रणा समिन्दुभिः १७
यद् वासि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते । उक्थे वा यस्य रण्यसि समिन्दुभिः १८ ३०५
देवंदेवं वोऽवस इन्द्रमिन्द्रं गृणीषणि । अधा यज्ञाय तुर्वणे व्यानशुः १९
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमेभिः सोमपातमम् । होत्राभिरिन्द्रं वावृधुर्व्यानशुः २०
महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः । विश्वा वसूनि दाशुषे व्यानशुः २१
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो दधिरे पुरः । इन्द्रं वाणीरनूषता समोजसे २२
महान्तं महिना वयं स्तोमेभिर्हवनश्रुतम् । अर्कैरभि प्र णोनुमः समोजसे २३ ३१०
न यं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । अमादिदस्य तित्विषे समोजसः २४
यदिन्द्र पृतनाज्ये देवास्त्वा दधिरे पुरः । आदित् ते हर्यता हरी ववक्षतुः २५
यदा वृत्रं नदीवृतं शवसा वज्रिन्नवधीः । आदित् ते हर्यता हरी ववक्षतुः २६
यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे । आदित् ते हर्यता हरी ववक्षतुः २७
यदा ते हर्यता हरी वावृधाते दिवेदिवे । आदित् ते विश्वा भुवनानि येमिरे २८ ३१५
यदा ते मारुतीर्विश-स्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे । आदित् ते विश्वा भुवनानि येमिरे २९
यदा सूर्यममुं दिवि शुक्रं ज्योतिरधारयः । आदित् ते विश्वा भुवनानि येमिरे ३०
इमां त इन्द्र सुष्टुतिं विप्र इयर्ति धीतिभिः । जामिं पदेव पिप्रतीं प्राध्वरे ३१
यदस्य धामनि प्रिये समीचीनासो अस्वरन् । नाभा यज्ञस्य दोहना प्राध्वरे ३२
सुवीर्यं स्वश्व्यं सुगव्यमिन्द्र दद्धि नः । होतेव पूर्वचित्तये प्राध्वरे ३३ ३१०

॥ १९ ॥ (ऋ० ८।१३।१-३३)

[नारदः काण्वः]। उष्णिक्।

इन्द्रः सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीत उक्थ्यम् । विदे वृधस्य दक्षसो महान् हि षः १
स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः । सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित् २
तमह्वे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम् । भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे ३
इयं त इन्द्र गिर्वणो रातिः क्षरति सुन्वतः । मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ४
नूनं तदिन्द्र दद्धि नो यत् त्वा सुन्वन्त ईमहे । रयिं नश्चित्रमा भरा स्वर्विदम् ५
स्तोता यत् ते विचर्षणि—रतिप्रशर्धयद् गिरः । वया इवानु रोहते जुषन्त यत् ६
प्रत्नवज्जनया गिरः शृणुधी जरितुर्हवम् । मदेमदे ववक्षिथा सुकृत्वने ७
क्रीळन्त्यस्य सूनृता आपो न प्रवता यतीः । अया धिया य उच्यते पतिर्दिवः ८
उतो पतिर्य उच्यते कृष्टीनामेक इद् वशी । नमोवृधैरवस्युभिः सुते रण ९
स्तुहि श्रुतं विपश्चितं हरी यस्य प्रसक्षिणा । गन्तारा दाशुषो गृहं नमस्विनः १०
तूतुजानो महेमते ऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः । आ याहि यज्ञमाशुभिः शमिद्धि ते ११
इन्द्र शविष्ठ सत्पते रयिं गृणत्सु धारय । श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम् १२
हवे त्वा सूर उदिते हवे मध्यंदिने दिवः । जुषाण इन्द्र सप्तिभिर्न आ गहि १३
आ तू गहि प्र तु द्रव मत्स्वा सुतस्य गोमतः । तन्तुं तनुष्व पूर्व्यं यथा विदे १४
यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् । यद् वा समुद्रे अन्धसोऽवितेदसि १५
इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर इन्द्रं सुतास इन्दवः । इन्द्रे हविष्मतीर्विशो अराणिषुः १६
तमिद् विप्रा अवस्यवः प्रवत्वतीभिरूतिभिः । इन्द्रं क्षोणीरवर्धयन् वया इव १७
त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत । तमिद् वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम् १८
स्तोता यत् ते अनुव्रत उक्थान्यृतुथा दधे । शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः १९
तदिद् रुद्रस्य चेतति यह्वं प्रत्नेषु धामसु । मनो यत्रा वि तद् दधुर्विचेतसः २०
यदि मे सख्यमावर इमस्य पाह्यन्धसः । येन विश्वा अति द्विषो अतारिम २१
कदा त इन्द्र गिर्वणः स्तोता भवाति शंतमः । कदा नो गव्ये अश्व्ये वसौ दधः २२
उत ते सुष्टुता हरी वृषणा वहतो रथम् । अजुर्यस्य मदिन्तमं यमीमहे २३
तमीमहे पुरुष्टुतं यह्वं प्रत्नाभिरूतिभिः । नि बर्हिषि प्रिये सदद्ध द्विता २४
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत ऋषिष्टुताभिरूतिभिः । धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च नः २५
इन्द्र त्वमवितेदसी—त्था स्तुवतो अद्रिवः । ऋतादियर्मि ते धियं मनोयुजम् २६
इह त्या सधमाद्या युजानः सोमपीतये । हरी इन्द्र प्रतद्वसू अभि स्वर २७

अभि स्वरन्तु ये तव रुद्रासः सक्षत श्रियम् । उतो मरुत्वतीर्विशो अभि प्रयः २८
इमा अस्य प्रतूर्तयः पदं जुषन्त यद् दिवि । नाभा यज्ञस्य सं दधुर्यथा विदे २९
अयं दीर्घाय चक्षसे प्राचि प्रयत्यध्वरे । मिमीते यज्ञमानुषग्विचक्ष्य ३० ३५०
वृषायमिन्द्र ते रथ उतो ते वृषणा हरी । वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः ३१
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः । वृषा यज्ञो यमिन्वसि वृषा हवः ३२
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः । वावन्थ हि प्रतिष्टुतिं वृषा हवः ३३

॥ २० ॥ (ऋ० ८।१४।१-१५)

[गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ]। गायत्री।

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोषखा स्यात् १
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे । यदहं गोपतिः स्याम् २ ३५५
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते । गामश्वं पिप्युषी दुहे ३
न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः । यद् दित्ससि स्तुतो मघम् ४
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत् । चक्राण ओपशं दिवि ५
वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ६
व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना । इन्द्रो यदभिनद् वलम् ७ ३६०
उद् गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सतीः । अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ८
इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दृंहितानि च । स्थिराणि न पराणुदे ९
अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते । वि ते मदा अराजिषुः १०
त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः । स्तोतॄणामुत भद्रकृत् ११
इन्द्रमित् केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः । उप यज्ञं सुराधसम् १२ ३६५
अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः । विश्वा यदजयः स्पृधः १३
मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः । अव दस्यूँरधूनुथाः १४
असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः । सोमपा उत्तरो भवन् १५

॥ २१ ॥ (ऋ० ८।१५।१-१३)

[गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ]। उष्णिक्।

तम्वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत १
यस्य द्विबर्हसो बृहत् सहो दाधार रोदसी । गिरीँरज्राँ अपः स्वर्वृषत्वना २ ३७०
स राजसि पुरुष्टुतँ एको वृत्राणि जिघ्नसे । इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे ३
तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम् । उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ४

येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ । मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ५
तदद्या चित् त उक्थिनो ऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा । वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ६
तव त्यदिन्द्रियं बृहत् तव शुष्ममुत क्रतुम् । वज्रं शिशाति धिषणा वरेण्यम् ७ ३७५
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः । त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे ८
त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः । त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् ९
त्वं वृषा जनानां मंहिष्ठ इन्द्र जज्ञिषे । सत्रा विश्वा स्वपत्यानि दधिषे १०
सत्रा त्वं पुरुष्टुतँ एको वृत्राणि तोशसे । नान्य इन्द्रात् करणं भूय इन्वति ११
यदिन्द्र मन्मशस्त्वा नाना हवन्त ऊतये । अस्माकेभिर्नृभिरत्रा स्वर्जय १२ ३८०
अरं क्षयाय नो महे विश्वा रूपाण्याविशन् । इन्द्रं जैत्राय हर्षया शचीपतिम् १३

॥ २२ ॥ (ऋ० ८।१६।१-१२)

[इरिम्बिठिः काण्वः] । गायत्री ।

प्र सम्राजं चर्षणीना—मिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः । नरं नृषाहं मंहिष्ठम् १
यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या । अपामवो न समुद्रे २
तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृत्नुम् । महो वाजिनं सनिभ्यः ३
यस्यानूना गभीरा मदा उरवस्तरुत्राः । हर्षुमन्तः शूरसातौ ४ ३८५
तमिद् धनेषु हितेष्व—धिवाकाय हवन्ते । येषामिन्द्रस्ते जयन्ति ५
तमिच्च्यौत्नैरार्यन्ति तं कृतेभिश्चर्षणयः । एष इन्द्रो वरिवस्कृत् ६
इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषि—रिन्द्रः पुरू पुरुहूतः । महान् महीभिः शचीभिः ७
स स्तोम्यः स हव्यः सत्यः सत्वा तुविकूर्मिः । एकश्चित् सन्नभिभूतिः ८
तमर्केभिस्तं सामभि—स्तं गायत्रैश्चर्षणयः । इन्द्रं वर्धन्ति क्षितयः ९ ३९०
प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु । सासह्वांसं युधामित्रान् १०
स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः । इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ११
स त्वं न इन्द्र वाजेभि—र्दशस्या च गातुया च । अच्छा च नः सुम्नं नेषि १२

॥ २३ ॥ (ऋ० ८।१७।१-१५)

[इरिम्बिठिः काण्वः] । [१४ वास्तोष्पतिर्वा] । गायत्री, प्रगाथः= (१४ बृहती, १५ सतोबृहती) ।

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् । एदं बर्हिः सदो मम १
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु २ ३९५
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ३
आ नो याहि सुतावतो ऽस्माकं सुष्टुतीरुप । पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः ४

आ ते सिञ्चामि कुक्ष्यो—रनु गात्रा वि धावतु । गृभाय जिह्वया मधु ५
स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान् तन्वे३ तव । सोमः शमस्तु ते हृदे ६
अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः । प्र सोम इन्द्र सर्पतु ७ ४००
तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ८
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा । वृत्राणि वृत्रहञ्जहि ९
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि । यजमानाय सुन्वते १०
अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि । एहीमस्य द्रवा पिब ११
शाचिगो शाचिपूजना—ऽयं रणाय ते सुतः । आखण्डल प्र हूयसे १२ ४०५
यस्ते शृङ्गवृषो नपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः । न्यस्मिन् दध्र आ मनः १३
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणा—ऽसत्रं सोम्यानाम् ।
द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीना—मिन्द्रो मुनीनां सखा १४
पृदाकुसानुर्यजतो गवेषण एकः सन्नभि भूयसः ।
भूर्णिमश्वं नयत् तुजा पुरो गृभे—न्द्रं सोमस्य पीतये १५

॥ २४ ॥ (ऋ० ८।२१।१-१६)

[सोभरिः काण्वः] । प्रगाथः- (विषमा ककुप्, समा सतोबृहती) ।

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः । वाजे चित्रं हवामहे १
उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवो—ग्रश्चक्राम यो धृषत् ।
त्वामिद्ध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् २ ४१०
आ याहीम इन्दवो ऽश्वपते गोपत उर्वरापते । सोमं सोमपते पिब ३
वयं हि त्वा बन्धुमन्तमबन्धवो विप्रास इन्द्र येमिम ।
या ते धामानि वृषभ तेभिरा गहि विश्वेभिः सोमपीतये ४
सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे । अभि त्वामिन्द्र नोनुमः ५
अच्छा च त्वैना नमसा वदामसि किं मुहुश्चिद् वि दीधयः ।
सन्ति कामासो हरिवो ददिष्ट्वं स्मो वयं सन्ति नो धियः ६
नूत्ना इदिन्द्र ते वय—मूती अभूम नहि नू ते अद्रिवः । विद्मा पुरा परीणसः ७ ४१५
विद्मा सखित्वमुत शूर भोज्य१—मा ते ता वज्रिन्नीमहे ।
उतो समस्मिन्ना शिशीहि नो वसो वाजे सुशिप्र गोमति ८
यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु वः स्तुषे । सखाय इन्द्रमूतये ९
हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् १०

त्वया ह स्विद् युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि । संस्थे जनस्य गोमतः ११
जयेम कारे पुरुहूत कारिणो ऽभि तिष्ठेम दूढ्यः ।
नृभिर्वृत्रं हन्याम शूशुयाम चा ऽवेरिन्द्र प्र णो धियः १२ ४२०
अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि । युधेदापित्वमिच्छसे १३
नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः ।
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित् पितेव हूयसे १४
मा ते अमाजुरो यथा मूरास इन्द्र सख्ये त्वावतः । नि षदाम सचा सुते १५
मा ते गोदत्र निरराम राधस इन्द्र मा ते गृहामहि ।
दृळ्हा चिदर्यः प्र मृशाभ्या भर न ते दामान आदभे १६

॥ २५ ॥ (ऋ० ८।३४।१-१८)

[नीपातिथिः काण्वः, १६-१८ सहस्रं वसुरोचिषोऽङ्गिरसः] । अनुष्टुप्, १६-१८ गायत्री ।

एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो १ ४२५
आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण यच्छतु । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो २
अत्रा वि नेमिरेषामुरां न धूनुते वृकः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ३
आ त्वा कण्वा इहावसे हवन्ते वाजसातये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ४
दधामि ते सुतानां वृष्णे न पूर्वपाय्यम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ५
स्मत्पुरन्धिर्न आ गहि विश्वतोधीर्न ऊतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ६ (४३०)
आ नो याहि महेमते सहस्रोते शतामघ । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ७
आ त्वा होता मनुर्हितो देवत्रा वक्षदीड्यः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ८
आ त्वा मदच्युता हरी श्येनं पक्षेव वक्षतः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ९
आ याह्यर्य आ परि स्वाहा सोमस्य पीतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो १०
आ नो याह्युपश्रुत्युक्थेषु रणया इह । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ११ (४३५)
सरूपैरा सु नो गहि संभृतैः संभृताश्वः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो १२
आ याहि पर्वतेभ्यः समुद्रस्याधि विष्टपः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो १३
आ नो गव्यान्यश्व्या सहस्रा शूर दर्दृहि । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो १४
आ नः सहस्रशो भरा ऽयुतानि शतानि च । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो १५
आ यदिन्द्रश्च दद्वहे सहस्रं वसुरोचिषः । ओजिष्ठमश्व्यं पशुम् १६ (४४०)
य ऋज्रा वातरंहसो ऽरुषासो रघुष्यदः । भ्राजन्ते सूर्या इव १७
पारावतस्य रातिषु द्रवच्चक्रेष्वाशुषु । तिष्ठं वनस्य मध्य आ १८

॥ २६ ॥ (ऋ० ८।४५।१-४२)

[त्रिशोकः काण्वः] । [१ अग्नीन्द्रौ] । गायत्री ।

आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् । येषामिन्द्रो युवा सखा १
बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः । येषामिन्द्रो युवा सखा २
अयुद्ध इद् युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः । येषामिन्द्रो युवा सखा ३ ४४५
आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छद् वि मातरम् । क उग्राः के ह शृण्विरे ४
प्रति त्वा शवसी वदद् गिरावप्सो न योधिषत् । यस्ते शत्रुत्वमाचके ५
उत त्वं मघवञ्छृणु यस्ते वष्टि ववक्षि तत् । यद् वीळयासि वीळु तत् ६
यदाजिं यात्याजिकृ-दिन्द्रः स्वश्वयुरुप । रथीतमो रथीनाम् ७
वि षु विश्वा अभियुजो वज्रिन् विष्वग्यथा वृह । भवा नः सुश्रवस्तमः ८ ४५०
अस्माकं सु रथं पुर इन्द्रः कृणोतु सातये । न यं धूर्वन्ति धूर्तयः ९
वृज्याम ते परि द्विषो ऽरं ते शक्र दावने । गमेमेदिन्द्र गोमतः १०
शनैश्चिद् यन्तो अद्रिवो ऽश्वावन्तः शतग्विनः । विवक्षणा अनेहसः ११
ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे सहस्रा सूनृता शता । जरितृभ्यो विमंहते १२
विद्मा हि त्वा धनंजय-मिन्द्र दृळ्हा चिदारुजम् । आदारिणं यथा गयम् १३ ४५५
ककुहं चित् त्वा कवे मन्दन्तु धृष्णविन्दवः । आ त्वा पणिं यदीमहे १४
यस्ते रेवाँ अदाशुरिः प्रममर्ष मघत्तये । तस्य नो वेद आ भर १५
इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः । पुष्टावन्तो यथा पशुम् १६
उत त्वाबधिरं वयं श्रुत्कर्णं सन्तमूतये । दूरादिह हवामहे १७
यच्छुश्रूया इमं हवं दुर्मर्षं चक्रिया उत । भवेरापिर्नो अन्तमः १८ ४६०
यच्चिद्धि ते अपि व्यथि-र्जगन्वांसो अमन्महि । गोदा इदिन्द्र बोधि नः १९
आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भा शवसस्पते । उश्मसि त्वा सधस्थ आ २०
स्तोत्रमिन्द्राय गायत पुरुनृम्णाय सत्वने । नकिर्यं वृण्वते युधि २१
अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये । तृम्पा व्यश्नुही मदम् २२
मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् । माकीं ब्रह्मद्विषो वनः २३ ४६५
इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे । सरो गौरो यथा पिब २४
या वृत्रहा परावति सना नवा च चुच्युवे । ता संसत्सु प्र वोचत २५
अपिबत् कद्रुवः सुत-मिन्द्रः सहस्रबाह्वे । अत्रादेदिष्ट पौंस्यम् २६
सत्यं तत् तुर्वशे यदौ विदानो अह्नवाय्यम् । व्यानट् तुर्वणे शमि २७

तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः । समानमु प्र शंसिषम् २८ ४७०
ऋभुक्षणं न वर्तव उक्थेषु तुग्र्यावृधम् । इन्द्रं सोमे सचा सुते २९
यः कृन्तदिद् वि योन्यं त्रिशोकाय गिरिं पृथुम् । गोभ्यो गातुं निरेतवे ३०
यद् दधिषे मनस्यसि मन्दानः प्रेदियक्षसि । मा तत् करिन्द्र मृळय ३१
दभ्रं चिद्धि त्वावतः कृतं शृण्वे अधि क्षमि । जिगात्विन्द्र ते मनः ३२
तवेदु ताः सुकीर्तयो ऽसन्नुत प्रशस्तयः । यदिन्द्र मृळयासि नः ३३ ४७५
मा न एकस्मिन्नागसि मा द्वयोरुत त्रिषु । वधीर्मा शूर भूरिषु ३४
बिभया हि त्वावत उग्रादभिप्रभङ्गिणः । दस्मादहमृतीषहः ३५
मा सख्युः शूनमा विदे मा पुत्रस्य प्रभूवसो । आवृत्वद् भूतु ते मनः ३६
को नु मर्या अमिथितः सखा सखायमब्रवीत् । जहा को अस्मदीषते ३७
एवारे वृषभा सुते ऽसिन्वन् भूर्यावयः । श्वघ्नीव निवता चरन् ३८ ४८०
आ त एता वचोयुजा हरी गृभ्णे सुमद्रथा । यदीं ब्रह्मभ्य इद्ददः ३९
भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः । वसु स्पार्हं तदा भर ४०
यद्वीळाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम् । वसु स्पार्हं तदा भर ४१
यस्य ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति । वसु स्पार्हं तदा भर ४२

॥ २७ ॥ (ऋ० ८।४९।१-१०)

[प्रस्कण्वः काण्वः]। प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती)।

अभि प्र वः सुराधस—मिन्द्रमर्च यथा विदे ।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति १ ४८५
शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे ।
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः २
आ त्वा सुतास इन्दवो मदा य इन्द्र गिर्वणः ।
आपो न वज्रिन्नन्वोक्यं सरः पृणन्ति शूर राधसे ३
अनेहसं प्रतरणं विवक्षणं मध्वः स्वादिष्ठमीं पिब ।
आ यथा मन्दसानः किरासि नः प्र क्षुद्रेव त्मना धृषत् ४
आ नः स्तोममुप द्रव—द्धियानो अश्वो न सोतृभिः ।
यं ते स्वधावन्त्स्वदयन्ति धेनव इन्द्र कण्वेषु रातयः ५
उग्रं न वीरं नमसोप सेदिम विभूतिमक्षितावसुम् ।
उद्रीव वज्रिन्नवतो न सिञ्चते क्षरन्तीन्द्र धीतयः ६ ४९०

यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे यद्वा पृथिव्यामधि ।
अतो नो यज्ञमाशुभिर्महेमत उग्र उग्रेभिरा गहि ७
अजिरासो हरयो ये त आशवो वाता इव प्रसक्षिणः ।
येभिरपत्यं मनुषः परीयसे येभिर्विश्वं स्वर्दृशे ८
एतावतस्त ईमह इन्द्र सुम्नस्य गोमतः ।
यथा प्रावो मघवन् मेध्यातिथिं यथा नीपातिथिं धने ९
यथा कण्वे मघवन् त्रसदस्यवि यथा पक्थे दशव्रजे ।
यथा गोशर्ये असनोर्ऋजिश्वनी-न्द्र गोमद्धिरण्यवत् १०

॥ २८ ॥ (ऋ० ८।५०।१-१०)

[पुष्टिगुः काण्वः] । प्रगाथः- (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

प्र सु श्रुतं सुराधस-मर्चा शक्रमभिष्टये ।
यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव मंहते १ ४९५
शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः ।
गिरिर्न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते यदीं सुता अमन्दिषुः २
यदीं सुतास इन्दवो ऽभि प्रियममन्दिषुः ।
आपो न धायि सवनं म आ वसो दुघा इवोप दाशुषे ३
अनेहसं वो हवमानमूतये मध्वः क्षरन्ति धीतयः ।
आ त्वा वसो हवमानास इन्दव उप स्तोत्रेषु दधिरे ४
आ नः सोमे स्वध्वर इयानो अत्यो न तोशते ।
यं ते स्वदावन्त्स्वदन्ति गूर्तयः पौरे छन्दयसे हवम् ५
प्र वीरमुग्रं विविचिं धनस्पृतं विभूतिं राधसो महः ।
उद्रीव वज्रिन्नवतो वसुत्वना सदा पीपेथ दाशुषे ६ ५००
यद्ध नूनं परावति यद् वा पृथिव्यां दिवि ।
युजान इन्द्र हरिभिर्महेमत ऋष्व ऋष्वेभिरा गहि ७
रथिरासो हरयो ये ते अस्रिध ओजो वातस्य पिप्रति ।
येभिर्नि दस्युं मनुषो निघोषयो येभिः स्वः परीयसे ८
एतावतस्ते वसो विद्याम शूर नव्यसः ।
यथा प्राव एतशं कृत्व्ये धने यथा वशं दशव्रजे ९
यथा कण्वे मघवन् मेधे अध्वरे दीर्घनीथे दमूनसि ।
यथा गोशर्ये असिषासो अद्रिवो मयि गोत्रं हरिश्रियम् १०

॥ २९ ॥ (ऋ० ८।५१।१-१०)

(५०५-५१४) श्रुष्टिगुः काण्वः। प्रगाथः- (विषमा बृहती; समा सतोबृहती)।

यथा मनौ सांवरणौ सोममिन्द्रापिबः सुतम्।
नीपातिथौ मघवन् मेध्यातिथौ पुष्टिगौ श्रुष्टिगौ सचा ॥ १ ॥ ५०५
पार्षद्वाणः प्रस्कण्वं समसादय-च्छयानं जिव्रिमुद्धितम्।
सहस्राण्यसिषासद् गवामृषि-स्त्वोतो दस्यवे वृकः ॥ २ ॥
य उक्थेभिर्न विन्धते चिकिद्य ऋषिचोदनः।
इन्द्रं तमच्छा वद नव्यस्या मत्य-रिष्यन्तं न भोजसे ॥ ३ ॥
यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानृचु-स्त्रिधातुमुत्तमे पदे।
स त्विमा विश्वा भुवनानि चिक्रद-दादिज्जनिष्ट पौंस्यम् ॥ ४ ॥
यो नो दाता वसूना-मिन्द्रं तं हूमहे वयम्।
विद्मा ह्यस्य सुमतिं नवीयसीं गमेम गोमति व्रजे ॥ ५ ॥
यस्मै त्वं वसो दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्नुते।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ॥ ६ ॥ ५१०
कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥ ७ ॥
प्र यो ननक्षे अभ्योजसा क्रिविं वधैः शुष्णं निघोषयन्।
यदेदस्तम्भीत् प्रथयन्नमूं दिव-मादिज्जनिष्ट पार्थिवः ॥ ८ ॥
यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः।
तिरश्चिदर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत् सो अज्यते रयिः ॥ ९ ॥
तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः।
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवो ऽस्मे सुवानास इन्दवः ॥ १० ॥

॥ ३० ॥ (ऋ० ८।५२।१-१०)

(५१५-५२४) आयुः काण्वः। प्रगाथः- (विषमा बृहती, समा सतोबृहती)।

यथा मनौ विवस्वति सोमं शक्रापिबः सुतम्।
यथा त्रिते छन्द इन्द्र जुजोषस्या-यौ मादयसे सचा ॥ १ ॥ ५१५
पृषध्रे मेध्ये मातरिश्वनी-न्द्र सुवाने अमन्दथाः।
यथा सोमं दशशिप्रे दशोण्ये स्यूमरश्मावृजूनसि ॥ २ ॥
य उक्था केवला दधे यः सोमं धृषितापिबत्।
यस्मै विष्णुस्त्रीणि पदा विचक्रम उप मित्रस्य धर्मभिः ॥ ३ ॥

यस्य त्वमिन्द्र स्तोमेषु चाकनो वाजे वाजिञ्छतक्रतो ।
तं त्वा वयं सुदुघामिव गोदुहो जुहूमसि श्रवस्यवः ४
यो नो दाता स नः पिता महाँ उग्र ईशानकृत् ।
अयामन्नुग्रो मघवा पुरूवसु—र्गोरश्वस्य प्र दातु नः ५
यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति ।
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ६ ५२०
कदा चन प्र युच्छस्यु—भे नि पासि जन्मनी ।
तुरीयादित्य हवनं त इन्द्रिय—मा तस्थावमृतं दिवि ७
यस्मै त्वं मघवन्निन्द्र गिर्वणः शिक्षो शिक्षसि दाशुषे ।
अस्माकं गिर उत सुष्टुतिं वसो कण्ववच्छृणुधी हवम् ८
अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत ९
समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम् ।
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः १०

॥ ३१ ॥ (ऋ० ८।५३।१-८)

(५२५-५३२) मेध्यः काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

उपमं त्वा मघोनां ज्येष्ठं च वृषभाणाम् ।
पुर्भित्तमं मघवन्निन्द्र गोविद—मीशानं राय ईमहे १ ५२५
य आयुं कुत्समतिथिग्वमर्दयो वावृधानो दिवेदिवे ।
तं त्वा वयं हर्यश्वं शतक्रतुं वाजयन्तो हवामहे २
आ नो विश्वेषां रसं मध्वः सिञ्चन्त्वद्रयः ।
ये परावति सुन्विरे जनेष्वा ये अर्वावतीन्दवः ३
विश्वा द्वेषांसि जहि चाव चा कृधि विश्वे सन्वन्त्वा वसु ।
शीष्टेषु चित् ते मदिरासो अंशवो यत्रा सोमस्य तृम्पसि ४
इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः ।
आ शंतम शंतमाभिरभिष्टिभि—रा स्वापे स्वापिभिः ५
आजितुरं सत्पतिं विश्वचर्षणिं कृधि प्रजास्वाभगम् ।
प्र सू तिरा शचीभिर्ये त उक्थिनः क्रतुं पुनत आनुषक् ६ ५३०
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ते स्याम भरेषु ते ।
यं होत्राभिरुत देवहूतिभिः ससवांसो मनामहे ७

अहं हि ते हरिवो ब्रह्म वाजयु-राजिं यामि सदोतिभिः ।
त्वामिदेव तममे समश्वयु-र्गव्युरग्रे मथीनाम् ८

॥ ३२ ॥ (ऋ० ८।५४।१-६)

(५३३-५३८) मातरिश्वा काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

एतत् त इन्द्र वीर्यं गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ।
ते स्तोभन्त ऊर्जमावन् घृतश्चुतं पौरासो नक्षन् धीतिभिः १
नक्षन्त इन्द्रमवसे सुकृत्यया येषां सुतेषु मन्दसे ।
यथा संवर्ते अमदो यथा कृश एवास्मे इन्द्र मत्स्व २
यदिन्द्र राधो अस्ति ते माघोनं मघवत्तम ।
तेन नो बोधि सधमाद्यो वृधे भगो दानाय वृत्रहन् ५ ५३५
आजिपते नृपते त्वमिद्धि नो वाज आ वक्षि सुक्रतो ।
वीती होत्राभिरुत देववीतिभिः ससवांसो वि शृण्विरे ६
सन्ति ह्य१र्य आशिष इन्द्र आयुर्जनानाम् ।
अस्मान् नक्षस्व मघवन्नुपावसे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ७
वयं त इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम त्वमस्माकं शतक्रतो ।
महि स्थूरं शशयं राधो अह्रयं प्रस्कण्वाय नि तोशय ८

॥ ३३ ॥ (ऋ० ८।५५।१-५)

(५३९-५४३) कृशः काण्वः । [प्रस्कण्वश्च] । गायत्री, ३, ५ अनुष्टुप् ।

भूरीदिन्द्रस्य वीर्य१ं व्यख्यमभ्यायति । राधस्ते दस्यवे वृक १
शतं श्वेतास उक्षणो दिवि तारो न रोचन्ते । मह्ना दिवं न तस्तभुः २ ५४०
शतं वेणूञ्छतं शुनः शतं चर्माणि म्लातानि ।
शतं मे बल्बजस्तुका अरुषीणां चतुःशतम् ३
सुदेवाः स्थ काण्वायना वयोवयो विचरन्तः । अश्वासो न चङ्क्रमत ४
आदित् साप्तस्य चर्किर-न्नानूनस्य महि श्रवः ।
श्यावीरतिध्वसन् पथ-श्चक्षुषा चन संनशे ५

॥ ३४ ॥ (ऋ० ८।५६।१-४)

(५४४-५४७) पृषध्रः काण्वः । गायत्री ।

प्रति ते दस्यवे वृक राधो अदर्श्यह्रयम् । द्यौर्न प्रथिना शवः १
दश मह्यं पौतक्रतः सहस्रा दस्यवे वृकः । नित्याद्रायो अमंहत २ ५४५
शतं मे गर्दभानां शतमूर्णावतीनाम् । शतं दासाँ अति स्रजः ३

तन्नो अपि प्राणीयत पूतक्रतायै व्यक्ता । अश्वानामिन्न यूथ्याम् ४
॥ ३५ ॥ (ऋ० ८।६१।१-१८)

(५४८-५६५) भर्गः प्रागाथः । प्रगाथः- (विषमा बृहती, समा सतोबृहती); १७ शंकुमती ।

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् १
तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः ।
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः २
आ वृषस्व पुरूवसो सुतस्येन्द्रान्धसः ।
विद्मा हि त्वा हरिवः पृत्सु सासहि—मधृष्टं चिद् दधृष्वणिम् ३ ५५०
अप्रामिसत्य मघवन् तथेदस—दिन्द्र क्रत्वा यथा वशः ।
सनेम वाजं तव शिप्रिन्नवसा मक्षू चिद्यन्तो अद्रिवः ४
शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविद—मनु शूर चरामसि ५
पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवाम—स्युत्सो देव हिरण्ययः ।
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत् त्वे यद्यद्यामि तदा भर ६
त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ७
त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे ।
आ पुरंदरं चकृम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे ८ ५५५
अविप्रो वा यदविध—द्विप्रो वेन्द्र ते वचः ।
स प्र ममन्दत् त्वाया शतक्रतो प्राचामन्यो अहंसन ९
उग्रबाहुर्म्रक्षकृत्वा पुरंदरो यदि मे शृणवद्धवम् ।
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे १०
न पापासो मनामहे नारायासो न जल्हवः ।
यदिन्न्विन्द्रं वृषणं सचा सुते सखायं कृणवामहै ११
उग्रं युयुज्म पृतनासु सासहि—मृणकातिमदाभ्यम् ।
वेदा भृमं चित् सनिता रथीतमो वाजिनं यमिदू नशत् १२
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभि—र्वि द्विषो वि मृधो जहि १३ ५६०

त्वं हि राधस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधतः ।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे १४
इन्द्रः स्पळुत वृत्रहा परस्पा नो वरेण्यः ।
स नो रक्षिषच्चरमं स मध्यमं स पश्चात् पातु नः पुरः १५
त्वं नः पश्चादधरादुत्तरात् पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः ।
आरे अस्मत् कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः १६
अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः ।
विश्वा च नो जरितॄन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः १७
प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः संमिश्लो वीर्याय कम् ।
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः १८ ५६५

॥ ३६ ॥ (ऋ० ८।६१।१-१८)

(५६६-५७७) प्रगाथो घौरः काण्वः । पङ्क्तिः, ७-९ बृहती ।

प्रो अस्मा उपस्तुतिं भरता यज्जुजोषति ।
उक्थैरिन्द्रस्य माहिनं वयो वर्धन्ति सोमिनो भद्रा इन्द्रस्य रातयः १
अयुजो असमो नृभिरेकः कृष्टीरयास्यः ।
पूर्वीरति प्र वावृधे विश्वा जातान्योजसा भद्रा इन्द्रस्य रातयः २
अहितेन चिदर्वता जीरदानुः सिषासति ।
प्रवाच्यमिन्द्र तत् तव वीर्याणि करिष्यतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ३
आ याहि कृणवाम त इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।
येभिः शविष्ठ चाकनो भद्रमिह श्रवस्यते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ४
धृषतश्चिद् धृषन्मनः कृणोषीन्द्र यत् त्वम् ।
तीव्रैः सोमैः सपर्यतो नमोभिः प्रतिभूषतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ५ ५७०
अव चष्ट ऋचीषमोऽवताँ इव मानुषः ।
जुष्ट्वी दक्षस्य सोमिनः सखायं कृणुते युजं भद्रा इन्द्रस्य रातयः ६
विश्वे त इन्द्र वीर्यं देवा अनु क्रतुं ददुः ।
भुवो विश्वस्य गोपतिः पुरुष्टुत भद्रा इन्द्रस्य रातयः ७
गृणे तदिन्द्र ते शव उपमं देवतातये ।
यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ८
समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा ।
विदे तदिन्द्रश्चेतनमध श्रुतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ९

उज्जातमिन्द्र ते शव उत त्वामुत तव क्रतुम् ।
भूरिगो भूरि वावृधु र्मघवन् तव शर्मणि भद्रा इन्द्रस्य रातयः १० ५७५
अहं च त्वं च वृत्रहन् त्सं युज्याव सनिभ्य आ ।
अरातीवा चिदद्रिवो ऽनु नौ शूर मंसते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ११
सत्यमिद् वा उ तं वय मिन्द्रं स्तवाम नानृतम् ।
महाँ असुन्वतो वधो भूरि ज्योतींषि सुन्वतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः १२

॥ ३७ ॥ (ऋ० ८।६३।१-११)

(५७८-६११) प्रगाथः काण्वः । गायत्री; १, ४-५, ७ अनुष्टुप् ।

स पूर्व्यो महानां वेनः क्रतुभिरानजे । यस्य द्वारा मनुष्पिता देवेषु धिय आनजे १
दिवो मानं नोत्सदन् त्सोमपृष्ठासो अद्रयः । उक्था ब्रह्म च शंस्या २
स विद्वाँ अङ्गिरोभ्य इन्द्रो गा अवृणोदप । स्तुषे तदस्य पौंस्यम् ३ ५८०
स प्रत्नथा कविवृध इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः । शिवो अर्कस्य होम न्यस्मत्रा गन्त्ववसे ४
आदू नु ते अनु क्रतुं स्वाहा वरस्य यज्यवः । श्वात्रमर्का अनूषते न्द्र गोत्रस्य दावने ५
इन्द्रे विश्वानि वीर्या कृतानि कर्त्वानि च । यमर्का अध्वरं विदुः ६
यत् पाञ्चजन्यया विशे न्द्रे घोषा असृक्षत । अस्तृणाद्बर्हणा विपो ऽर्यो मानस्य स क्षयः ७
इयमु ते अनुष्टुति श्चकृषे तानि पौंस्या । प्रावश्चक्रस्य वर्तनिम् ८ ५८५
अस्य वृष्णो व्योदन उरु क्रमिष्ट जीवसे । यवं न पश्व आ ददे ९
तद्दधाना अवस्यवो युष्माभिर्दक्षपितरः । स्याम मरुत्वतो वृधे १०
बळृत्वियाय धाम्न ऋक्वभिः शूर नोनुमः । जेषमिन्द्र त्वया युजा ११

॥ ३८ ॥ (ऋ० ८।६४।१-१२) गायत्री ।

उत त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि १
पदा पणीँरराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति २ ५९०
त्वमीशिषे सुताना मिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम् ३
एहि प्रेहि क्षयो दि व्या३घोषञ्चर्षणीनाम् । ओभे पृणासि रोदसी ४
त्वं चित् पर्वतं गिरिं शतवन्तं सहस्रिणम् । वि स्तोतृभ्यो रुरोजिथ ५
वयमु त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे । अस्माकं काममा पृण ६
क्व१ स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः । ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ७ ५९५
कस्य स्वित् सवनं वृषा जुजुष्वाँ अव गच्छति । इन्द्रं क उ स्विदा चके ८

कं ते दाना असक्षत वृत्रहन् कं सुवीर्या । उक्थे क उ स्विदन्तमः ९
अयं ते मानुषे जने सोमः पूरुषु सूयते । तस्येहि प्र द्रवा पिब १०
अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः । आर्जीकीये मदिन्तमः ११
तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये । एहीमिन्द्र द्रवा पिब १२ ६००

॥ ३९ ॥ (ऋ० ८।६५।१-१२)

यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः । आ याहि तूयमाशुभिः १
यद्वा प्रस्रवणे दिवो मादयासे स्वर्णरे । यद्वा समुद्रे अन्धसः २
आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं हुवे गामिव भोजसे । इन्द्र सोमस्य पीतये ३
आ त इन्द्र महिमानं हरयो देव ते महः । रथे वहन्तु बिभ्रतः ४
इन्द्र गृणीष उ स्तुषे महाँ उग्र ईशानकृत । एहि नः सुतं पिब ५ ६०५
सुतावन्तस्त्वा वयं प्रयस्वन्तो हवामहे । इदं नो बर्हिरासदे ६
यच्चिद्धि शश्वतामसी—न्द्र साधारणस्त्वम् । तं त्वा वयं हवामहे ७
इदं ते सोम्यं मध्व—धुक्षन्नद्रिभिर्नरः । जुषाण इन्द्र तत् पिब ८
विश्वाँ अर्यो विपश्चितो ऽति ख्यस्तूयमा गहि । अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ९
दाता मे पृषतीनां राजा हिरण्यवीनाम् । मा देवा मघवा रिषत् १० ६१०
सहस्रे पृषतीना—मधि श्चन्द्रं बृहत् पृथु । शुक्रं हिरण्यमा ददे ११
नपातो दुर्गहस्य मे सहस्रेण सुराधसः । श्रवो देवेष्वक्रत १२

॥ ४० ॥ (ऋ० ८।६६।१-१५)

(६१३-६१७) कलिः प्रागाथः । प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती), १५ अनुष्टुप् ।

तरोभिर्वो विदद्वसु—मिन्द्रं सबाध ऊतये ।
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् १
न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदे सुशिप्रमन्धसः ।
य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम् २
यः शक्रो मृक्षो अश्व्यो यो वा कीजो हिरण्ययः ।
स ऊर्वस्य रेजयत्यपावृति—मिन्द्रो गव्यस्य वृत्रहा ३ ६१५
निखातं चिद्यः पुरुसंभृतं वसू—दिद्वपति दाशुषे ।
वज्री सुशिप्रो हर्यश्व इत् कर—दिन्द्रः क्रत्वा यथा वशत् ४
यद् वावन्थ पुरुष्टुत पुरा चिच्छूर नृणाम् ।
वयं तत् त इन्द्र सं भरामसि यज्ञमुक्थं तुरं वचः ५

सचा सोमेषु पुरुहूत वज्रिवो मदाय द्युक्ष सोमपाः ।
त्वमिद्धि ब्रह्मकृते काम्यं वसु देष्ठः सुन्वते भुवः ६
वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् ।
तस्मा उ अद्य समना सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ७
वृकश्चिदस्य वारण उरामथि रा वयुनेषु भूषति ।
सेमं नः स्तोमं जुजुषाण आ गही न्द्र प्र चित्रया धिया ८ ६१०
कदू न्व१स्याकृत मिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् ।
केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा ९
कदू महीरधृष्टा अस्य तविषीः कदु वृत्रघ्नो अस्तृतम् ।
इन्द्रो विश्वान् बेकनाटाँ अहर्दृश उत क्रत्वा पणीँरभि १०
वयं घा ते अपूर्व्ये न्द्र ब्रह्माणि वृत्रहन् ।
पुरूतमासः पुरुहूत वज्रिवो भृतिं न प्र भरामसि ११
पूर्वीश्चिद्धि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो हवन्त इन्द्रोतयः ।
तिरश्चिदर्यः सवना वसो गहि शविष्ठ श्रुधि मे हवम् - १२
वयं घा ते त्वे इ द्विन्द्र विप्रा अपि ष्मसि ।
नहि त्वदन्यः पुरुहूत कश्चन मघवन्नस्ति मर्डिता १३ ६१५
त्वं नो अस्या अमतेरुत क्षुधोऽभिशस्तेरव स्पृधि ।
त्वं न ऊती तव चित्रया धिया शिक्षा शचिष्ठ गातुवित् १४
सोम इद्वः सुतो अस्तु कलयो मा बिभीतन ।
अपेदेष ध्वस्मायति स्वयं घैषो अपायति १५

॥ ४१ ॥ (ऋ० ८।७६।१-१२)

(६१८-६६०) कुरुसुतिः काण्वः । गायत्री ।

इमं नु मायिनं हुव इन्द्रमीशानमोजसा । मरुत्वन्तं न वृञ्जसे १
अयमिन्द्रो मरुत्सखा वि वृत्रस्याभिनच्छिरः । वज्रेण शतपर्वणा २
वावृधानो मरुत्सखे न्द्रो वि वृत्रमैरयत् । सृजन्त्समुद्रिया अपः ३ ६२०
अयं ह येन वा इदं स्वर्मरुत्वता जितम् । इन्द्रेण सोमपीतये ४
मरुत्वन्तमृजीषिण मोजस्वन्तं विरप्शिनम् । इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे ५
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये ६
मरुत्वाँ इन्द्र मीढ्वः पिबा सोमं शतक्रतो । अस्मिन् यज्ञे पुरुष्टुत ७

तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते　सुताः सोमासो अद्रिवः　। हृदा हूयन्त उक्थिनः　८　६३५
पिबेदिन्द्र मरुत्सखा　सुतं सोमं दिविष्टिषु　। वज्रं शिशान ओजसा　९
उत्तिष्ठन्नोजसा सह　पीत्वी शिप्रे अवेपयः　। सोममिन्द्र चमू सुतम्　१०
अनु त्वा रोदसी उभे　क्रक्षमाणमकृपेताम्　। इन्द्र यद् दस्युहाभवः　११
वाचमष्टापदीमहं　नवस्रक्तिमृतस्पृशम्　। इन्द्रात परि तन्वं ममे　१२

॥ ४२ ॥ (ऋ० ८।७७।१-११)
[गायत्री, १०-११ प्रगाथः = (बृहती, सतोबृहती)]

जज्ञानो नु शतक्रतु—र्वि पृच्छदिति मातरम्　। क उग्राः के ह शृण्विरे　१　६४०
आदीं शवस्यब्रवी—दौर्णवाभमहीशुवम्　। ते पुत्र सन्तु निष्टुरः　२
समित् तान् वृत्रहाखिदत्　खे अराँ इव खेदया　। प्रवृद्धो दस्युहाभवत्　३
एकया प्रतिधापिबत्　साकं सरांसि त्रिंशतम्　। इन्द्रः सोमस्य काणुका　४
अभि गन्धर्वमतृण—दबुध्नेषु रजःस्वा　। इन्द्रो ब्रह्मभ्य इद् वृधे　५
निराविध्यद् गिरिभ्य आ　धारयत् पक्वमोदनम्　। इन्द्रो बुन्दं स्वाततम्　६　६४५
शतब्रध्न इषुस्तव　सहस्रपर्ण एक इत्　। यमिन्द्र चकृषे युजम्　७
तेन स्तोतृभ्य आ भर　नृभ्यो नारिभ्यो अत्तवे　। सद्यो जात ऋभुष्ठिर　८
एता च्यौत्नानि ते कृता　वर्षिष्ठानि परीणसा　। हृदा वीड्वधारयः　९
विश्वेत् ता विष्णुराभर—दुरुक्रमस्त्वेषितः ।
शतं महिषान् क्षीरपाकमोदनं　वराहमिन्द्र एमुषम्　१०
तुविक्षं ते सुकृतं सूमयं धनुः　साधुर्बुन्दो हिरण्ययः ।
उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृत　ऋदूपे चिदृदूवृधा　११　६५०

॥ ४३ ॥ (ऋ० ८।७८।१-१०)
[गायत्री, १० बृहती ।]

पुरोळाशं नो अन्धस　इन्द्र सहस्रमा भर　। शता च शूर गोनाम्　१
आ नो भर व्यञ्जनं　गामश्वमभ्यञ्जनम्　। सचा मना हिरण्यया　२
उत नः कर्णशोभना　पुरूणि धृष्णवा भर　। त्वं हि शृण्विषे वसो　३
नकीं वृधीक इन्द्र ते　न सुषा न सुदा उत　। नान्यस्त्वच्छूर वाघतः　४
नकीमिन्द्रो निकर्तवे　न शक्रः परिशक्तवे　। विश्वं शृणोति पश्यति　५　६५५
स मन्युं मर्त्यानाम—दब्धो नि चिकीषते　। पुरा निदश्चिकीषते　६
क्रत्व इत् पूर्णमुदरं　तुरस्यास्ति विधतः　। वृत्रघ्नः सोमपाव्नः　७

त्वं वसूनि संगता विश्वा च सोम सौभगा । सुदात्वपरिह्वृता ८
त्वामिद्यवयुर्मम कामो गव्युर्हिरण्ययुः । त्वामश्वयुरेषते ९
तवेदिन्द्राहमाशसा हस्ते दात्रं चना ददे ।
त्रिनस्य वा मघवन्त्संभृतस्य वा पूर्धि यवस्य काशिना १० ६६०

॥ ४४ ॥ (ऋ० ८।८०।१-९)

(६६१-६६९) एकद्यूर्नौधसः । गायत्री ।

नह्य१न्यं बळाकरं मर्डितारं शतक्रतो । त्वं न इन्द्र मृळय १
यो नः शश्वत् पुराविथा ऽमृध्रो वाजसातये । स त्वं न इन्द्र मृळय २
किमङ्ग रध्रचोदनः सुन्वानस्यावितेदसि । कुवित् स्विन्द्र णः शकः ३
इन्द्र प्र णो रथमव पश्चाच्चित् सन्तमद्रिवः । पुरस्तादेनं मे कृधि ४
हन्तो नु किमाससे प्रथमं नो रथं कृधि । उपमं वाजयु श्रवः ५ ६६५
अवा नो वाजयुं रथं सुकरं ते किमित् परि । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृधि ६
इन्द्र दृह्यस्व पूरसि भद्रा त एति निष्कृतम् । इयं धीर्ऋत्वियावती ७
मा सीमवद्य आ भागु र्वी काष्ठा हितं धनम् । अपावृक्ता अरत्नयः ८
तुरीयं नाम यज्ञियं यदा करस्तदुश्मसि । आदित् पतिर्न ओहसे ९

॥ ४५ ॥ (ऋ० ८।८१।१-९)

(६७०-६७८) कुसीदी काण्वः ।

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय । महाहस्ती दक्षिणेन १ ६७०
विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम् । तुविमात्रमवोभिः २
नहि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम् । भीमं न गां वारयन्ते ३
एतो न्विन्द्रं स्तवामे शानं वस्वः स्वराजम् । न राधसा मर्धिषन्नः ४
प्र स्तोषदुप गासिष च्छ्रवत् साम गीयमानम् । अभि राधसा जुगुरत ५
आ नो भर दक्षिणेना ऽभि सव्येन प्र मृश । इन्द्र मा नो वसोर्निर्भाक् ६ ६७५
उप क्रमस्वा भर धृषता धृष्णो जनानाम् । अदाशूष्टरस्य वेदः ७
इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः । अस्माभिः सु तं सनुहि ८
सद्योजुवस्ते वाजा अस्मभ्यं विश्वश्चन्द्राः । वशैश्च मक्षू जरन्ते ९

॥ ४६ ॥ (ऋ० ८।८२।१-९)

आ प्र द्रव परावतो ऽर्वावतश्च वृत्रहन् । मध्वः प्रति प्रभर्मणि १
तीव्राः सोमास आ गहि सुतासो मादयिष्णवः । पिबा दधृग्यथोचिषे २ ६८०

इषा मन्दस्वादु ते ऽरं वराय मन्यवे । भुवत् त इन्द्र शं हृदे ३
आ त्वशत्रवा गहि न्युक्थानि च हूयसे । उपमे रोचने दिवः ४
तुभ्यायमद्रिभिः सुतो गोभिः श्रीतो मदाय कम् । प्र सोम इन्द्र हूयते ५
इन्द्र श्रुधि सु मे हव मस्मे सुतस्य गोमतः । वि पीतिं तृप्तिमश्नुहि ६
य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः । पिबेदस्य त्वमीशिषे ७ ६८५
यो अप्सु चन्द्रमा इव सोमश्चमूषु ददृशे । पिबेदस्य त्वमीशिषे ८
यं ते श्येनः पदाभरत् तिरो रजांस्यस्पृतम् । पिबेदस्य त्वमीशिषे ९

॥ ४७ ॥ (ऋ० १।२८।१-४)

(६८८-७१४) आजीगर्तिः शुनःशेपः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । अनुष्टुप् ।

यत्र ग्रावा पृथुबुध्न ऊर्ध्वो भवति सोतवे । उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जल्गुलः १
यत्र द्वाविव जघना धिषवण्या कृता । उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जल्गुलः २
यत्र नार्यपच्यव मुपच्यवं च शिक्षते । उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जल्गुलः ३ ६९०
यत्र मन्थां विबध्नते रश्मीन् यमितवा इव । उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जल्गुलः ४

॥ ४८ ॥ (ऋ० १।२९।१-७) पंक्तिः ।

यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ता इव स्मसि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ १
शिप्रिन् वाजानां पते शचीवस्तव दंसना ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ २
नि ष्वापया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ३
ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ४ ६९५
समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पापयामुया ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ५
पताति कुण्डृणाच्या दूरं वातो वनादधि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ६
सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया कृकदाश्वम् ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ७

॥ ४९ ॥ (ऋ० १।३०।१-१६)

१-१०, १२-१५ गायत्री, ११ पादनिचृद्गायत्री, १६ त्रिष्टुप् ।

आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् । मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः १
शतं वा यः शुचीनां सहस्रं वा समाशिराम् । एदु निम्नं न रीयते २ ७००
सं यन्मदाय शुष्मिण एना ह्यस्योदरे । समुद्रो न व्यचो दधे ३
अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम् । वचस्तच्चिन्न ओहसे ४
स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते । विभूतिरस्तु सूनृता ५
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये ऽस्मिन् वाजे शतक्रतो । समन्येषु ब्रवावहै ६
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ६ ७०५
आ घा गमद्यदि श्रवत् सहस्रिणीभिरूतिभिः । वाजेभिरुप नो हवम् ८
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् । यं ते पूर्वं पिता हुवे ९
तं त्वा वयं विश्ववारा—ऽऽ शास्महे पुरुहूत । सखे वसो जरितृभ्यः १०
अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सोमपाव्नाम् । सखे वज्रिन्त्सखीनाम् ११
तथा तदस्तु सोमपाः सखे वज्रिन् तथा कृणु । यथा त उश्मसीष्टये १२ ७१०
रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम १३
आ घ त्वावान् त्मनाप्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः । ऋणोरक्षं न चक्र्योः १४
आ यद् दुवः शतक्रत—वा कामं जरितॄणाम् । ऋणोरक्षं न शचीभिः १५
शश्वदिन्द्रः पोप्रुथद्भिर्जिगाय नानदद्भिः शाश्वसद्भिर्धनानि ।
स नो हिरण्यरथं दंसनावान् त्स नः सनिता सनये स नोऽदात् १६ ७१४

॥ ५० ॥ (ऋ० १।३२।१-१५)

(७१५-७४४) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम् १ ७१५
अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष ।
वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः २
वृषायमाणोऽवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत् सुतस्य ।
आ सायकं मघवादत्त वज्र—महन्नेनं प्रथमजामहीनाम् ३
यदिन्द्राहन् प्रथमजामहीना—मान्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः ।
आत् सूर्यं जनयन् द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से ४

अहन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंस—मिन्द्रो वज्रेण महता वधेन ।
स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्णा—ऽहिः शयत उपपृक् पृथिव्याः ५
अयोद्धेव दुर्मद आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम् ।
नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रुः ६ ७२०
अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्र—मास्य वज्रमधि सानौ जघान ।
वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रो अशयद्व्यस्तः ७
नदं न भिन्नममुया शयानं मनो रुहाणा अति यन्त्यापः ।
याश्चिद्वृत्रो महिना पर्यतिष्ठत् तासामहिः पत्सुतःशीर्बभूव ८
नीचावया अभवद्वृत्रपुत्रे—न्द्रो अस्या अव वधर्जभार ।
उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद् दानुः शये सहवत्सा न धेनुः ९
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम् ।
वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम आशयदिन्द्रशत्रुः १०
दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन् निरुद्धा आपः पणिनेव गावः ।
अपां बिलमपिहितं यदासीद् वृत्रं जघन्वाँ अप तद्ववार ११ ७२५
अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्त्वा प्रत्यहन्देव एकः ।
अजयो गा अजयः शूर सोम—मवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून् १२
नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद्ध्रादुनिं च ।
इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्चो—तापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये १३
अहेर्यातारं कमपश्य इन्द्र हृदि यत्ते जघ्नुषो भीरगच्छत् ।
नव च यन्नवतिं च स्रवन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि १४
इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः ।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीना—मरान्न नेमिः परि ता बभूव १५

॥ ५१ ॥ (ऋ० १।३२।१-१५)

एतायामोप गव्यन्त इन्द्र—मस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति ।
अनामृणः कुविदादस्य रायो गवां केतं परमावर्जते नः १ ७३०
उपेदहं धनदामप्रतीतं जुष्टां न श्येनो वसतिं पतामि ।
इन्द्रं नमस्यन्नुपमेभिरर्कै—र्यः स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन् २
नि सर्वसेन इषुधींरसक्त समर्यो गा अजति यस्य वष्टि ।
चोष्कूयमाण इन्द्र भूरि वामं मा पणिर्भूरस्मदधि प्रवृद्ध ३

वधीर्हि दस्युं धनिनं घनेनँ एकश्चरन्नुपशाकेभिरिन्द्र ।
धनोरधि विषुणक् ते व्यायन्नयज्वानः सनकाः प्रेतिमीयुः ४
परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्राऽयज्वानो यज्वभिः स्पर्धमानाः ।
प्र यद् दिवो हरिवः स्थातरुग्र निरव्रताँ अधमो रोदस्योः ५
अयुयुत्सन्ननवद्यस्य सेनामयातयन्त क्षितयो नवग्वाः ।
वृषायुधो न वध्रयो निरष्टाः प्रवद्भिरिन्द्राच्चितयन्त आयन् ६ ७३५
त्वमेतान् रुदतो जक्षतश्चायोधयो रजस इन्द्र पारे ।
अवादहो दिव आ दस्युमुच्चा प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः ७
चक्राणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुम्भमानाः ।
न हिन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्रं परि स्पशो अदधात् सूर्येण ८
परि यदिन्द्र रोदसी उभे अबुभोजीर्महिना विश्वतः सीम् ।
अमन्यमानाँ अभि मन्यमानैर्निर्ब्रह्मभिरधमो दस्युमिन्द्र ९
न ये दिवः पृथिव्या अन्तमापुर्न मायाभिर्धनदां पर्यभूवन् ।
युजं वज्रं वृषभश्चक्र इन्द्रो निर्ज्योतिषा तमसो गा अदुक्षत् १०
अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्याऽवर्धत मध्य आ नाव्यानाम् ।
सध्रीचीनेन मनसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नभि द्यून् ११ ७४०
न्याविध्यदिलीबिशस्य दृळ्हा वि शृङ्गिणमभिनच्छुष्णमिन्द्रः ।
यावत्तरो मघवन् यावदोजो वज्रेण शत्रुमवधीः पृतन्युम् १२
अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून् वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत ।
सं वज्रेणासृजद् वृत्रमिन्द्रः प्र स्वां मतिमतिरच्छाशदानः १३
आवः कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन् प्रावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् ।
शफच्युतो रेणुर्नक्षत द्यामुच्छ्वैत्रेयो नृषाह्याय तस्थौ १४
आवः शमं वृषभं तुग्र्यासु क्षेत्रजेषे मघवञ्छ्वित्र्यं गाम् ।
ज्योक् चिदत्र तस्थिवांसो अक्रञ्छत्रूयतामधरा वेदनाकः १५

॥५२॥ (ऋ० १।५३।१-१५)

(७४५-८१३) सव्य आङ्गिरसः । जगती, १४-१५ त्रिष्टुप् ।

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषा भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत १ ७४५
अभीमवन्वन्त्स्वभिष्टिमूतयोऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।
इन्द्रं दक्षास ऋभवो मदच्युतं शतक्रतुं जवनी सूनृतारुहत् २

त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपो–तात्रये शतदुरेषु गातुवित् ।
ससेन चिद् विमदायावहो वस्वा–जावद्रिं वावसानस्य नर्तयन् ३
त्वमपामपिधानावृणोरपा–ऽधारयः पर्वते दानुमद् वसु ।
वृत्रं यदिन्द्र शवसावधीरहि–मादित् सूर्यं दिव्यारोहयो दृशे । ४
त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अधि शुप्तावजुह्वत ।
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहत्येष्वाविथ ५
त्वं कुत्सं शुष्णहत्येष्वाविथा–ऽरन्धयोऽतिथिग्वाय शम्बरम् ।
महान्तं चिदर्बुदं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहत्याय जज्ञिषे ६ ७५०
त्वे विश्वा तविषी सध्र्यग्घिता तव राधः सोमपीथाय हर्षते
तव वज्रश्चिकिते बाह्वोर्हितो वृश्चा शत्रोरव विश्वानि वृष्ण्या ७
वि जानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् ।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत् ता ते सधमादेषु चाकन ८
अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रता–नाभूभिरिन्द्रः श्नथयन्ननाभुवः ।
वृद्धस्य चिद् वर्धतो द्यामिनक्षतः स्तवानो वम्रो वि जघान संदिहः ९
तक्षद् यत् त उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्मना बाधते शवः ।
आ त्वा वातस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहन्नभि श्रवः १०
मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रो वङ्कू वङ्कुतराधि तिष्ठति ।
उग्रो ययिं निरपः स्रोतसासृजद् वि शुष्णस्य दृंहिता ऐरयत् पुरः ११ ७५५
आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे ।
इन्द्र यथा सुतसोमेषु चाकनो ऽनर्वाणं श्लोकमा रोहसे दिवि १२
अददा अर्भां महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते ।
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेत् ता ते सवनेषु प्रवाच्या १३
इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पज्रेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः ।
अश्वयुर्गव्यू रथयुर्वसूयु–रिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता १४
इदं नमो वृषभाय स्वराजे सत्यशुष्माय तवसेऽवाचि ।
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीराः स्मत् सूरिभिस्तव शर्मन्त्स्याम १५

॥५३॥ (ऋ० १।५१।१-१५) जगती; १३; १५ त्रिष्टुप् ।

त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभ्वः साकमीरते ।
अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथ–मेन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः १ ७६०

स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्रमूतिस्तविषीषु वावृधे ।
इन्द्रो यद् वृत्रमवधीन्नदीवृत—मुब्जन्नर्णांसि जर्हृषाणो अन्धसा २
स हि द्वरो द्वरिषु वव्र ऊधनि चन्द्रबुध्नो मदवृद्धो मनीषिभिः ।
इन्द्रं तमह्वे स्वपस्यया धिया मंहिष्ठरातिं स हि पप्रिरन्धसः ३
आ यं पृणन्ति दिवि सद्मबर्हिषः समुद्रं न सुभ्व१ः स्वा अभिष्टयः ।
तं वृत्रहत्ये अनु तस्थुरूतयः शुष्मा इन्द्रमवाता अह्रुतप्सवः ४
अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो रघ्वीरिव प्रवणे सस्रुरूतयः ।
इन्द्रो यद् वज्री धृषमाणो अन्धसा भिनद् वलस्य परिधीँरिव त्रितः ५
परीं घृणा चरति तित्विषे शवो ऽपो वृत्वी रजसो बुध्नमाशयत् ।
वृत्रस्य यत् प्रवणे दुर्गृभिश्वनो निजघन्थ हन्वोरिन्द्र तन्यतुम् ६ ७६५

हृदं न हि त्वा न्यृषन्त्यूर्मयो ब्रह्माणीन्द्र तव यानि वर्धना ।
त्वष्टा चित् ते युज्यं वावृधे शव—स्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम् ७
जघन्वाँ उ हरिभिः संभृतक्रत—विन्द्र वृत्रं मनुषे गातुयन्नपः ।
अयच्छथा बाह्वोर्वज्रमायस—मधारयो दिव्या सूर्यं दृशे ८
बृहत् स्वश्चन्द्रममवद् यदुक्थ्य१—मकृण्वत भियसा रोहणं दिवः ।
यन्मानुषप्रधना इन्द्रमूतयः स्वर्नृषाचो मरुतोऽमदन्ननु ९
द्यौश्चिदस्यामवाँ अहेः स्वना—दयोयवीद् भियसा वज्र इन्द्र ते ।
वृत्रस्य यद् बद्बधानस्य रोदसी मदे सुतस्य शवसाभिनच्छिरः १०
यदिन्न्विन्द्र पृथिवी दशभुजि—रहानि विश्वा ततनन्त कृष्टयः ।
अत्राह ते मघवन् विश्रुतं सहो द्यामनु शवसा बर्हणा भुवत् ११ ७७०

त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः ।
चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसो ऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम् १२
त्वं भुवः प्रतिमानं पृथिव्या ऋष्ववीरस्य बृहतः पतिर्भूः ।
विश्वमाप्रा अन्तरिक्षं महित्वा सत्यमद्धा नकिरन्यस्त्वावान् १३
न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः ।
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक् १४
आर्चन्नत्र मरुतः सस्मिन्नाजौ विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा ।
वृत्रस्य यद् भृष्टिमता वधेन नि त्वमिन्द्र प्रत्यानं जघन्थ १५

॥५४॥ (ऋ० १।५३।१-११) जगती. १०-११ त्रिष्टुप्।

न्यू३षु वाचं प्र महे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः ।
नू चिद्धि रत्नं ससतामिवाविदु—न्न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते १ ७७५
दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र गोरसि दुरो यवस्य वसुन इनस्पतिः ।
शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः सखा सखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि २
शचीव इन्द्र पुरुकृद् द्युमत्तम तवेदिदमभितश्चेकिते वसु ।
अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः ३
एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभि—र्निरुन्धानो अमतिं गोभिरश्विना ।
इन्द्रेण दस्युं दरयन्त इन्दुभि—र्युतद्वेषसः समिषा रभेमहि ४
समिन्द्र राया समिषा रभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः ।
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि ५
ते त्वा मदा अमदन् तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते ।
यत् कारवे दश वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः ६ ७८०
युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा ।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम् ७
त्वं करञ्जमुत पर्णयं वधी—स्तेजिष्ठयातिथिग्वस्य वर्तनी ।
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत् पुरो ऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना ८
त्वमेताञ्जनराज्ञो द्विर्दशा—ऽबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः ।
षष्टिं सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ९
त्वमाविथ सुश्रवसं तवोतिभि—स्तव त्रामभिरिन्द्र तूर्वयाणम् ।
त्वमस्मै कुत्समतिथिग्वमायुं महे राज्ञे यूने अरन्धनायः १०
य उदृचीन्द्र देवगोपाः सखायस्ते शिवतमा असाम ।
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ११ ७८५

॥५५॥ (ऋ० १।५४।१-११) जगती; ६, ८-९, ११ त्रिष्टुप्।

मा नो अस्मिन् मघवन् पृत्स्वंहसि नहि ते अन्तः शवसः परीणशे ।
अक्रन्दयो नद्यो३ रोरुवद् वना कथा न क्षोणीर्भियसा समारत १
अर्चा शक्राय शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभि ष्टुहि ।
यो धृष्णुना शवसा रोदसी उभे वृषा वृषत्वा वृषभो न्यृञ्जते २

अर्चा दिवे बृहते शूष्यं१ वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषतो धृषन्मनः ।
बृहच्छ्रवा असुरो बर्हणा कृतः पुरो हरिभ्यां वृषभो रथो हि षः ३
त्वं दिवो बृहतः सानु कोपयो ऽव त्मना धृषता शम्बरं भिनत् ।
यन्मायिनो व्रन्दिनो मन्दिना धृष च्छितां गभस्तिमशनिं पृतन्यसि ४
नि यद् वृणक्षि श्वसनस्य मूर्धनि शुष्णस्य चिद् व्रन्दिनो रोरुवद् वना ।
प्राचीनेन मनसा बर्हणावता यदद्या चित् कृणवः कस्त्वा परि ५ ७९०
त्वमाविथ नर्यं तुर्वशं यदुं त्वं तुर्वीतिं वय्यं शतक्रतो ।
त्वं रथमेतशं कृत्व्ये धने त्वं पुरो नवतिं दम्भयो नव ६
स घा राजा सत्पतिः शूशुवज्जनो रातहव्यः प्रति यः शासमिन्वति ।
उक्था वा यो अभिगृणाति राधसा दानुरस्मा उपरा पिन्वते दिवः ७
असमं क्षत्रमसमा मनीषा प्र सोमपा अपसा सन्तु नेमे ।
ये त इन्द्र ददुषो वर्धयन्ति महि क्षत्रं स्थविरं वृष्ण्यं च ८
तुभ्येदेते बहुला अद्रिदुग्धा श्चमूषदश्चमसा इन्द्रपानाः ।
व्यश्नुहि तर्पया काममेषा मथा मनो वसुदेयाय कृष्व ९
अपामतिष्ठद्धरुणह्वरं तमो ऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषु पर्वतः ।
अभीमिन्द्रो नद्यो वव्रिणा हिता विश्वा अनुष्ठाः प्रवणेषु जिघ्नते १० ७९५
स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मे महि क्षत्रं जनाषाळिन्द्र तव्यम् ।
रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन् राये च नः स्वपत्या इषे धाः ११

॥५६॥ (ऋ० १।५५।१-८) जगती ।

दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मह्ना पृथिवी चन प्रति ।
भीमस्तुविष्माञ्चर्षणिभ्य आतपः शिशीते वज्रं तेजसे न वंसगः १
सो अर्णवो न नद्यः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विश्रिता वरीमभिः ।
इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते सनात् स युध्म ओजसा पनस्यते २
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य धर्मणामिरज्यसि ।
प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः ३
स इद् वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम् ।
वृषा छन्दुर्भवति हर्यतो वृषा क्षेमेण धेनां मघवा यदिन्वति ४ ८००
स इन्महानि समिथानि मज्मना कृणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः ।
अधा चन श्रद् दधति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम् ५

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्ष्मया वृधान ओजसा विनाशयन् ।
ज्योतींषि कृण्वन्नवृकाणि यज्यवे ऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत ६
वृनाय मनः सोमपावन्नस्तु ते ऽर्वाञ्चा हरी वन्दनश्रुदा कृधि ।
यमिष्ठासः सारथयो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभ्नुवन्ति भूर्णयः ७
अप्रक्षितं वसु बिभर्षि हस्तयो—रषाळ्हं सहस्तन्वि श्रुतो दधे ।
आवृतासोऽवतासो न कर्तृभि—स्तनूषु ते क्रतव इन्द्र भूरयः ८

॥ ५७ ॥ (ऋ० १।५५।१-८)

एष प्र पूर्वीरव तस्य चम्रिषो ऽत्यो न योषामुदयंस्त भुर्वणिः ।
दक्षं महे पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वसम् १ ८०५
तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।
पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा २
स तुर्वणिर्महाँ अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः ।
येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि ३
देवी यदि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः ।
यो धृष्णुना शवसा बाधते तम इयर्ति रेणुं बृहदर्हरिष्वणिः ४
वि यत् तिरो धरुणमच्युतं रजो ऽतिष्ठिपो दिव आतासु बर्हणा ।
स्वर्मीळ्हे यन्मद इन्द्र हर्ष्याहन् वृत्रं निरपामौब्जो अर्णवम् ५
त्वं दिवो धरुणं धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र सदनेषु माहिनः ।
त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाष्यारुजः ६ ८१०

॥ ५८ ॥ (ऋ० १।५६।१-६)

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे ।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् १
अध ते विश्वमनु हासदिष्टय आपो निम्नेव सवना हविष्मतः ।
यत् पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः श्नथिता हिरण्ययः २
अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे ।
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ३
इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत् क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद् वचः ४
भूरि त इन्द्र वीर्यं१ तव स्मस्य—स्य स्तोतुर्मघवन् काममा पृण ।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे ५ ८१५

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन् पर्वशश्चकर्तिथ ।
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ६

॥ ५९ ॥ (ऋ० १।१०१।८-११)

(८४७-८५५) कुत्स आङ्गिरसः । (१ गर्भस्रावीण्युपनिषद्) । जगती, ८-११ त्रिष्टुप् ।

प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना ।
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे १
यो व्यंसं जाहृषाणेन मन्युना यः शम्बरं यो अहन् पिप्रुमव्रतम् ।
इन्द्रो यः शुष्णमशुषं न्यावृणङ् मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे २
यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यं महद् यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः ।
यस्येन्द्रस्य सिन्धवः सश्चति व्रतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ३
यो अश्वानां यो गवां गोपतिर्वशी य आरितः कर्मणिकर्मणि स्थिरः ।
वीळोश्चिदिन्द्रो यो असुन्वतो वधो मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ४ ८५०
यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्पति—र्यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत् ।
इन्द्रो यो दस्यूँरधराँ अवातिरन् मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ५
यः शूरेभिर्हव्यो यश्च भीरुभि—र्यो धावद्भिर्हूयते यश्च जिग्युभिः ।
इन्द्रं यं विश्वा भुवनाभि संदधु—र्मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ६
रुद्राणामेति प्रदिशा विचक्षणो रुद्रेभिर्योषा तनुते पृथु ज्रयः ।
इन्द्रं मनीषा अभ्यर्चति श्रुतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ७
यद् वा मरुत्वः परमे सधस्थे यद् वावमे वृजने मादयासे ।
अत आ याह्यध्वरं नो अच्छा त्वाया हविश्चकृमा सत्यराधः ८
त्वायेन्द्र सोमं सुषुमा सुदक्ष त्वाया हविश्चकृमा ब्रह्मवाहः ।
अधा नियुत्वः सगणो मरुद्भि—रस्मिन् यज्ञे बर्हिषि मादयस्व ९ ८५५
मादयस्व हरिभिर्ये त इन्द्र वि ष्यस्व शिप्रे वि सृजस्व धेने ।
आ त्वा सुशिप्र हरयो वहन्तू—शन् हव्यानि प्रति नो जुषस्व १०
मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य गोपा वयमिन्द्रेण सनुयाम वाजम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ११

॥ ६० ॥ (ऋ० १।१०१।१-११) १-१० जगती; ११ त्रिष्टुप् ।

इमां ते धियं प्र भरे महो मही—मस्य स्तोत्रे धिषणा यत् त आनजे ।
तमुत्सवे च प्रसवे च सासहि—मिन्द्रं देवासः शवसामदन्ननु १

अस्य श्रवो नद्यः सप्त बिभ्रति द्यावाक्षामा पृथिवी दर्शतं वपुः।
अस्मे सूर्याचन्द्रमसाभिचक्षे श्रद्धे कमिन्द्र चरतो वितर्तुरम् २
तं स्मा रथं मघवन् प्राव सातये जैत्रं यं ते अनुमदाम संगमे।
आजा न इन्द्र मनसा पुरुष्टुत त्वायद्भ्यो मघवञ्छर्म यच्छ नः ३ ८३०
वयं जयेम त्वया युजा वृत--मस्माकमंशमुदवा भरेभरे।
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन् वृष्ण्या रुज ४
नाना हि त्वा हवमाना जना इमे धनानां धर्तरवसा विपन्यवः।
अस्माकं स्मा रथमा तिष्ठ सातये जैत्रं हीन्द्र निभृतं मनस्तव ५
गोजिता बाहू अमितक्रतुः सिमः कर्मन्कर्मञ्छतमूतिः खजंकरः।
अकल्प इन्द्रः प्रतिमानमोजसा--ऽथा जना वि ह्वयन्ते सिषासवः ६
उत ते शतान्मघवन्नुच्च भूयस उत सहस्राद् रिरिचे कृष्टिषु श्रवः।
अमात्रं त्वा धिषणा तित्विषे म--ह्यधा वृत्राणि जिघ्नसे पुरंदर ७
त्रिविष्टिधातु प्रतिमानमोजस--स्तिस्रो भूमीर्नृपते त्रीणि रोचना।
अतीदं विश्वं भुवनं ववक्षिथा--ऽशत्रुरिन्द्र जनुषा सनादसि ८ ८३५
त्वां देवेषु प्रथमं हवामहे त्वं बभूथ पृतनासु सासहिः।
सेमं नः कारुमुपमन्युमुद्भिद--मिन्द्रः कृणोतु प्रसवे रथं पुरः ९
त्वं जिगेथ न धना रुरोधिथा--ऽर्भेष्वाजा मघवन् महत्सु च।
त्वामुग्रमवसे सं शिशीम--स्यथा न इन्द्र हवनेषु चोदय १०
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अ--स्त्वपरिह्वृताः सनुयाम वाजम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता--मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ११

॥ ३१ ॥ (ऋ० १।१०३।१-८) त्रिष्टुप्।

तत् त इन्द्रियं परमं पराचै--रधारयन्त कवयः पुरेदम्।
क्षमेदमन्यद् दिव्य१न्यदस्य समी पृच्यते समनेव केतुः १
स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च वज्रेण हत्वा निरपः ससर्ज।
अहन्नहिमभिनद्रौहिणं व्यहन् व्यंसं मघवा शचीभिः २ ८४०
स जातूभर्मा श्रद्दधान ओजः पुरो विभिन्दन्नचरद् वि दासीः।
विद्वान् वज्रिन् दस्यवे हेतिमस्या--ऽऽर्यं सहो वर्धया द्युम्नमिन्द्र ३
तदूचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्यं मघवा नाम बिभ्रत्।
उपप्रयन् दस्युहत्याय वज्री यद्ध सूनुः श्रवसे नाम दधे ४

तदस्येदं पश्यता भूरि पुष्टं श्रदिन्द्रस्य धत्तन वीर्याय ।
स गा अविन्दत् सो अविन्ददश्वान् त्स ओषधीः सो अपः स वनानि ५
भूरिकर्मणे वृषभाय वृष्णे सत्यशुष्माय सुनवाम सोमम् ।
य आदृत्या परिपन्थीव शूरो ऽयज्वनो विभजन्नेति वेदः ६
तदिन्द्र प्रेव वीर्यं चकर्थ यत् ससन्तं वज्रेणाबोधयोऽहिम् ।
अनु त्वा पत्नीर्हृषितं वयश्च विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा ७ ८४९
शुष्णं पिप्रुं कुयवं वृत्रमिन्द्र यदावधीर्वि पुरः शम्बरस्य ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ८

॥ ६१ ॥ (ऋ० १।१०४।१-९)

योनिष्ट इन्द्र निषदे अकारि तमा नि षीद स्वानो नार्वा ।
विमुच्या वयोऽवसायाश्वान् दोषा वस्तोर्वहीयसः प्रपित्वे १
ओ त्ये नर इन्द्रमूतये गु र्नू चित् तान्त्सद्यो अध्वनो जगम्यात् ।
देवासो मन्युं दासस्य श्चम्नन् ते न आ वक्षन्त्सुविताय वर्णम् २
अव त्मना भरते केतवेदा अव त्मना भरते फेनमुदन् ।
क्षीरेण स्नातः कुयवस्य योषे हते ते स्यातां प्रवणे शिफायाः ३
युयोप नाभिरुपरस्यायोः प्र पूर्वाभिस्तिरते राष्टि शूरः ।
अञ्जसी कुलिशी वीरपत्नी पयो हिन्वाना उदभिर्भरन्ते ४ ८५०
प्रति यत् स्या नीथादर्शि दस्यो रोको नाच्छा सदनं जानती गात् ।
अध स्मा नो मघवञ्चर्कृतादि न्मा नो मघेव निष्षपी परा दाः ५
स त्वं न इन्द्र सूर्ये सो अप्स्व नागास्त्व आ भज जीवशंसे ।
मान्तरां भुजमा रीरिषो नः श्रद्धितं ते महत इन्द्रियाय ६
अधा मन्ये श्रत् ते अस्मा अधायि वृषा चोदस्व महते धनाय ।
मा नो अकृते पुरुहूत योना विन्द्र क्षुध्यद्भ्यो वय आसुतिं दाः ७
मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा नः प्रिया भोजनानि प्र मोषीः ।
आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भे न्मा नः पात्रा भेत् सहजानुषाणि ८
अर्वाङेहि सोमकामं त्वाहु रयं सुतस्तस्य पिबा मदाय ।
उरुव्यचा जठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि हूयमानः ९ ८५१

॥ ६२ ॥ (ऋ० १।६१।१-१६)

[८५२-८९९] नोधा गौतमः ।

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय ।
ऋचीषमायाध्रिगव ओह मिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा १

अस्मा इदु प्रयं इव प्र यंसि भराम्याङ्गूषं बाधे सुवृक्ति ।
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त २
अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षां भराम्याङ्गूषमास्येन ।
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै ३
अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय ।
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्ती—न्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय ४
अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्ये—न्द्रायार्कं जुह्वा समञ्जे ।
वीरं दानौकसं वन्दध्यै पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम् ५ ८६०
अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद् वज्रं स्वपस्तमं स्वर्यं रणाय ।
वृत्रस्य चिद् विदद् येन मर्म तुजन्नीशानस्तुजता कियेधाः ६
अस्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवाञ्चार्वन्ना ।
मुषायद् विष्णुः पचतं सहीयान् विध्यद् वराहं तिरो अद्रिमस्ता ७
अस्मा इदु ग्नाश्चिद् देवपत्नी—रिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः ।
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः ८
अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् ।
स्वराळिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिरमत्रो ववक्षे रणाय ९
अस्येदेव शवसा शुषन्तं वि वृश्चद् वज्रेण वृत्रमिन्द्रः ।
गा न व्राणा अवनीरमुञ्च—दभि श्रवो दावने सचेताः १० ८६५
अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद् वज्रेण सीमयच्छत् ।
ईशानकृद् दाशुषे दशस्यन् तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः ११
अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः कियेधाः ।
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चे—ष्यन्नर्णांस्यपां चरध्यै १२
अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः ।
युधे यदिष्णान आयुधा—न्यृघायमाणो निरिणाति शत्रून् १३
अस्येदु भिया गिरयश्च दृळ्हा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते ।
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं सद्यो भुवद् वीर्याय नोधाः १४
अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषा—मेको यद् वव्ने भूरेरीशानः ।
प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्व्ये सुष्विमावदिन्द्रः १५ ८७०

एवा ते हारियोजना सुवृक्ती—न्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन् ।
ऐषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् १६

॥ ६४ ॥ (ऋ० १।६२।१-१३)

प्र मन्महे शवसानाय शूष—माङ्गूषं गिर्वणसे अङ्गिरस्वत् ।
सुवृक्तिभिः स्तुवत ऋग्मियाया—ऽर्चामार्कं नरे विश्रुताय १
प्र वो महे महि नमो भरध्व—माङ्गूष्यं शवसानाय साम ।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन् २
इन्द्रस्याङ्गिरसां चेष्टौ विदत् सरमा तनयाय धासिम् ।
बृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद् गाः समुस्रियाभिर्वावशन्त नरः ३
स सुष्टुभा स स्तुभा सप्त विप्रैः स्वरेणाद्रिं स्वर्यो३ नवग्वैः ।
सरण्युभिः फलिगमिन्द्र शक्र वलं रवेण दरयो दशग्वैः ४ ८७५
गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्म वि व—रुषसा सूर्येण गोभिरन्धः ।
वि भूम्या अप्रथय इन्द्र सानु दिवो रज उपरमस्तभायः ५
तदु प्रयक्षतममस्य कर्म दस्मस्य चारुतममस्ति दंसः ।
उपह्वरे यदुपरा अपिन्वन् मध्वर्णसो नद्य१श्चतस्रः ६
द्विता वि वव्रे सनजा सनीळे अयास्यः स्तवमानेभिरर्कैः ।
भगो न मेने परमे व्योम—न्नधारयद् रोदसी सुदंसाः ७
सनाद् दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती स्वेभिरेवैः ।
कृष्णेभिरक्तोषा रुशद्भि—र्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या ८
सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः सूनुर्दाधार शवसा सुदंसाः ।
आमासु चिद् दधिषे पक्वमन्तः पयः कृष्णासु रुशद् रोहिणीषु ९ ८८०
सनात् सनीळा अवनीरवाता व्रता रक्षन्ते अमृताः सहोभिः ।
पुरु सहस्रा जनयो न पत्नी—र्दुवस्यन्ति स्वसारो अह्रयाणम् १०
सनायुवो नमसा नव्यो अर्कै—र्वसूयवो मतयो दस्म दद्रुः
पतिं न पत्नीरुशतीरुशन्तं स्पृशन्ति त्वा शवसावन् मनीषाः ११
सनादेव तव रायो गभस्तौ न क्षीयन्ते नोप दस्यन्ति दस्म ।
द्युमाँ असि क्रतुमाँ इन्द्र धीरः शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः १२
सनायते गोतम इन्द्र नव्य—मतक्षद् ब्रह्म हरियोजनाय ।
सुनीथाय नः शवसान नोधाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् १३

॥ ६५ ॥ (ऋ० १।६३।१-९)

त्वं महाँ इन्द्र यो ह शुष्मै- र्द्यावा जज्ञानः पृथिवी अमे धाः ।
यद्ध ते विश्वा गिरयश्चिदभ्वा भिया दृळ्हासः किरणा नैजन् १ ८८५
आ यद्धरी इन्द्र विव्रता वे- रा ते वज्रं जरिता बाह्वोर्धात् ।
येनाविहर्यतक्रतो अमित्रान् पुर इष्णासि पुरुहूत पूर्वीः २
त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेतान् त्वमृभुक्षा नर्यस्त्वं षाट् ।
त्वं शुष्णं वृजने पृक्ष आणौ यूने कुत्साय द्युमते सचाहन् ३
त्वं ह त्यदिन्द्र चोदीः सखा वृत्रं यद् वज्रिन् वृषकर्मन्नुभ्नाः ।
यद्ध शूर वृषमणः पराचै- र्वि दस्यूँर्योनावकृतो वृथाषाट् ४
त्वं ह त्यदिन्द्रारिषण्यन् दृळ्हस्य चिन्मर्तानामजुष्टौ ।
व्यस्मदा काष्ठा अर्वते व- र्घनेव वज्रिञ्छ्नथिह्यमित्रान् ५
त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ स्वर्मीळ्हे नर आजा हवन्ते ।
तव स्वधाव इयमा समर्य ऊतिर्वाजेष्वतसाय्या भूत् ६ ८९०
त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त युध्यन् पुरो वज्रिन् पुरुकुत्साय दर्दः ।
बर्हिर्न यत् सुदासे वृथा व- र्गंहो राजन् वरिवः पूरवे कः ७
त्वं त्यां न इन्द्र देव चित्रा- मिषमापो न पीपयः परिज्मन् ।
यया शूर प्रत्यस्मभ्यं यंसि त्मनमूर्जं न विश्वध क्षरध्यै ८
अकारि त इन्द्र गोतमेभि- र्ब्रह्माण्योक्ता नमसा हरिभ्याम् ।
सुपेशसं वाजमा भरा नः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ९

॥ ६६ ॥ (ऋ० ८।८८।१-६)

[प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती)।]

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे १
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे २ ८९५
न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीळवः ।
यद् दित्ससि स्तुवते मावते वसु नकिष्टदा मिनाति ते ३
योद्धासि क्रत्वा शवसोत दंसना विश्वा जाताभि मज्मना ।
आ त्वायमर्क ऊतये ववर्तति यं गोतमा अजीजनन् ४

प्र हि रिरिक्ष ओजसा दिवो अन्तेभ्यस्परि
न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिव मनु स्वधां ववक्षिथ ५
नकिः परिष्टिर्मघवन् मघस्य ते यद् दाशुषे दशस्यसि ।
अस्माकं बोध्युचथस्य चोदिता मंहिष्ठो वाजसातये ६

॥ २७ ॥ (ऋ० १।८०।१-१६)

[९००-९१६] गोतमो राहूगणः । (अथर्वा, मनुः, दध्यङ् च) । पंक्तिः ।

इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम् ।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहि मर्चन्ननु स्वराज्यम् १ ९००
स त्वामदद् वृषा मदः सोमः श्येनाभृतः सुतः ।
येना वृत्रं निरद्भ्यो जघन्थ वज्रिन्नोजसा ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् २
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते ।
इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ३
निरिन्द्र भूम्या अधि वृत्रं जघन्थ निर्दिवः ।
सृजा मरुत्वतीरव जीवधन्या इमा अपो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ४
इन्द्रो वृत्रस्य दोधतः सानुं वज्रेण हीळितः ।
अभिक्रम्याव जिघ्नते ऽपः सर्माय चोदय न्नर्चन्ननु स्वराज्यम् ५
अधि सानौ नि जिघ्नते वज्रेण शतपर्वणा ।
मन्दान इन्द्रो अन्धसः सखिभ्यो गातुमिच्छ त्यर्चन्ननु स्वराज्यम् ६ ९०५
इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवो ऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम् ।
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं माययावधी रर्चन्ननु स्वराज्यम् ७
वि ते वज्रासो अस्थिर न्नवतिं नाव्या३ अनु ।
महत त इन्द्र वीर्यं बाह्वोस्ते बलं हित मर्चन्ननु स्वराज्यम् ८
सहस्रं साकमर्चत परि ष्टोभत विंशतिः ।
शतैनमन्वनोनवु रिन्द्राय ब्रह्मोद्यत मर्चन्ननु स्वराज्यम् ९
इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं निरहन्त्सहसा सहः ।
महत् तदस्य पौंस्यं वृत्रं जघन्वाँ असृज दर्चन्ननु स्वराज्यम् १०
इमे चित तव मन्यवे वेपेते भियसा मही ।
यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वाँ अवधी रर्चन्ननु स्वराज्यम् ११ ९१०

न वेपसा न तन्यते—न्द्रं वृत्रो वि बीभयत् ।
अभ्येनं वज्र आयसः सहस्रभृष्टिरायता—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १२
यद् वृत्रं तव चाशनिं वज्रेण समयोधयः ।
अहिमिन्द्र जिघांसतो दिवि ते बद्बधे शवो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १३
अभिष्टने ते अद्रिवो यत् स्था जगच्च रेजते ।
त्वष्टा चित् तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भिया—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १४
नहि नु यादधीमसी—न्द्रं को वीर्या परः ।
तस्मिन्नृम्णमुत क्रतुं देवा ओजांसि सं दधु—रर्चन्ननु स्वराज्यम् १५
यामथर्वा मनुष्पिता दध्यङ् धियमत्नत ।
तस्मिन् ब्रह्माणि पूर्वथे—न्द्रं उक्था समग्मता—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १६ ९१५

॥ ६८ ॥ (ऋ० १।८१।१-९)

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।
तमिन्महत्स्वाजिषू—तेमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् १
असि हि वीर सेन्यो ऽसि भूरि परादुदिः ।
असि दभ्रस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु २
यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धना ।
युक्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधो ऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ३
क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ वावृधे शवः ।
श्रिय ऋष्व उपाकयो—र्नि शिप्री हरिवान् दधे हस्तयोर्वज्रमायसम् ४
आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्बधे रोचना दिवि ।
न त्वावाँ इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यते ऽति विश्वं ववक्षिथ ५ ९२०
यो अर्यो मर्तभोजनं पराददाति दाशुषे ।
इन्द्रो अस्मभ्यं शिक्षतु वि भजा भूरि ते वसु भक्षीय तव राधसः ६
मदेमदे हि नो ददि—र्यूथा गवामृजुक्रतुः ।
सं गृभाय पुरू शतो—भयाहस्त्या वसु शिशीहि राय आ भर ७
मादयस्व सुते सचा शवसे शूर राधसे ।
विद्मा हि त्वा पुरूवसु—मुप कामान्त्ससृज्महे ऽथा नोऽविता भव ८
एते त इन्द्र जन्तवो विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
अन्तर्हि ख्यो जनाना—मर्यो वेदो अदाशुषां तेषां नो वेद आ भर ९

*

॥ ६९ ॥ (ऋ० १।८२।१-६) पंक्तिः; ६ जगती ।

उपो षु शृणुही गिरो मघवन् मातथा इव ।
यदा नः सूनृतावतः कर आदर्थयास इद् योजा न्विन्द्र ते हरी १ ११५
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी २
सुसंदृशं त्वा वयं मघवन् वन्दिषीमहि ।
प्र नूनं पूर्णवन्धुरः स्तुतो याहि वशाँ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी ३
स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम् ।
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी ४
युक्तस्ते अस्तु दक्षिण उत सव्यः शतक्रतो ।
तेन जायामुप प्रियां मन्दानो याह्यन्धसो योजा न्विन्द्र ते हरी ५
युनज्मि ते ब्रह्मणा केशिना हरी उप प्र याहि दधिषे गभस्त्योः
उत् त्वा सुतासो रभसा अमन्दिषुः पूषण्वान् वज्रिन्त्समु पत्न्यामदः ६ १२०

॥ ७० ॥ (ऋ० १।८३।१-६) जगती ।

अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः ।
तमित् पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः १
आपो न देवीरुप यन्ति होत्रियमवः पश्यन्ति विततं यथा रजः ।
प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वरा इव २
अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं१ वचो यतस्रुचा मिथुना या सपर्यतः ।
असंयत्तो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते ३
आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वय इद्धाग्नयः शम्या ये सुकृत्यया ।
सर्वं पणेः समविन्दन्त भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः ४
यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि ।
आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे ५ १२५
बर्हिर्वा यत् स्वपत्याय वृज्यतेऽर्को वा श्लोकमाघोषते दिवि ।
ग्रावा यत्र वदति कारुरुक्थ्य१स्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति ६

॥ ७१ ॥ (ऋ० १।८४।१-२०)

[१-६ अनुष्टुप्; ७-९ उष्णिक्; १०-१२ पंक्तिः; १३-१५ गायत्री; १६-१८ त्रिष्टुप्;
(प्रगाथः= १९ बृहती; २० सतोबृहती ।)]

असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि । आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः १

इन्द्रमिद्धरी वहतो ऽप्रतिधृष्टशवसम्। ऋषीणां च स्तुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम् २
आ तिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी। अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ३
इमामिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्। शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ४ ९४०
इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन। सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः ५
नकिष्ट्वद् रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे। नकिष्ट्वानु मज्मना नकिः स्वश्व आनशे ६
य एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे। ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ७
कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत्। कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग ८
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति। उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ९ ९४५

स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् १०
ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम् ११
ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः।
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् १२
इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव १३
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्। तद् विदच्छर्यणावति १४ ९५०

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे १५
को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।
आसन्निषून् हृत्स्वसो मयोभून् य एषां भृत्यामृणधत् स जीवात् १६
क ईषते तुज्यते को बिभाय को मंसते सन्तमिन्द्रं को अन्ति।
कस्तोकाय क इभायोत राये ऽधि ब्रवत् तन्वे३ को जनाय १७
को अग्निमीट्टे हविषा घृतेन स्रुचा यजाता ऋतुभिर्ध्रुवेभिः।
कस्मै देवा आ वहानाशु होम को मंसते वीतिहोत्रः सुदेवः १८
त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः १९ ९५५

मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसो ऽस्मान् कदा चना दभन्।
विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ २०

॥७२॥ (ऋ० १।१००।१-१९)

(९५७-९७५) वार्षागिराः ऋज्राश्वाऽम्बरीष-सहदेव-भयमान-सुराधसः। त्रिष्टुप्।

स यो वृषा वृष्ण्येभिः समोका महो दिवः पृथिव्याश्च सम्राट् ।
सतीनसत्वा हव्यो भरेषु मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १
यस्यानाप्तः सूर्यस्येव यामो भरेभरे वृत्रहा शुष्मो अस्ति ।
वृषन्तमः सखिभिः स्वेभिरेवै–र्मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती २
दिवो न यस्य रेतसो दुघानाः पन्थासो यन्ति शवसापरीताः
तरद्द्वेषाः सासहिः पौंस्येभि–र्मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ३
सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो भूद् वृषा वृषभिः सखिभिः सखा सन् ।
ऋग्मिभिर्ऋग्मी गातुभिर्ज्येष्ठो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ४ ९६०
स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋभ्वा नृषाह्ये सासह्वाँ अमित्रान् ।
सनीळेभिः श्रवस्यानि तूर्वन् मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ५
स मन्युमीः समदनस्य कर्ता ऽस्माकेभिर्नृभिः सूर्यं सनत् ।
अस्मिन्नहन्त्सत्पतिः पुरुहूतो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ६
तमूतयो रणयञ्छूरसातौ तं क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम् ।
स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ७
तमप्सन्त शवस उत्सवेषु नरो नरमवसे तं धनाय ।
सो अन्धे चित् तमसि ज्योतिर्विदन् मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ८
स सव्येन यमति व्राधतश्चित् स दक्षिणे संगृभीता कृतानि ।
स कीरिणा चित् सनिता धनानि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ९ ९६५
स ग्रामेभिः सनिता स रथेभि–र्विदे विश्वाभिः कृष्टिभिर्न्वद्य ।
स पौंस्येभिरभिभूरशस्ती–र्मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १०
स जामिभिर्यत् समजाति मीळ्हे ऽजामिभिर्वा पुरुहूत एवैः ।
अपां तोकस्य तनयस्य जेषे मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ११
स वज्रभृद् दस्युहा भीम उग्रः सहस्रचेताः शतनीथ ऋभ्वा ।
चम्रीषो न शवसा पाञ्चजन्यो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १२
तस्य वज्रः क्रन्दति स्मत् स्वर्षा दिवो न त्वेषो रवथः शिमीवान् ।
तं सचन्ते सनयस्तं धनानि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १३

यस्याजस्रं शवसा मानमुक्थं परिभुजद् रोदसी विश्वतः सीम् ।
स पारिषत् क्रतुभिर्मन्दसानो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १४ ९७०
न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्चन शवसो अन्तमापुः ।
स प्ररिक्वा त्वक्षसा क्ष्मो दिवश्च मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १५
रोहिच्छ्यावा सुमदंशुर्ललामी–र्द्युक्षा राय ऋज्राश्वस्य ।
वृषण्वन्तं बिभ्रती धूर्षु रथं मन्द्रा चिकेत नाहुषीषु विक्षु १६
एतत् त्यत् त इन्द्र वृष्ण उक्थं वार्षागिरा अभि गृणन्ति राधः ।
ऋज्राश्वः प्रष्टिभिरम्बरीषः सहदेवो भयमानः सुराधाः १७
दस्यूञ्छिम्यूँश्च पुरुहूत एवै–र्हत्वा पृथिव्यां शर्वा नि बर्हीत् ।
सनत् क्षेत्रं सखिभिः श्वित्न्येभिः सनत् सूर्यं सनदपः सुवज्रः १८
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अ–स्त्वपरिह्वृताः सनुयाम वाजम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता–मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः १९ ९७१

॥ ७३ ॥ (ऋ० ८।९७।१-१५)

(९७६-९९०) रेभः काश्यपः। बृहती, १०, १३ अतिजगती, ११-१२ उपरिष्टाद्बृहती,
१४ त्रिष्टुप्, १५ जगती ।

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः १
यमिन्द्र दधिषे त्व–मश्वं गां भागमव्ययम् ।
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन् तं धेहि मा पणौ २
य इन्द्र सस्त्यव्रतो ऽनुष्वापमदेवयुः ।
स्वैः ष एवैर्मुमुरत् पोष्यं रयिं सनुतर्धेहि तं ततः ३
यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति ४
यद्वासि रोचने दिवः समुद्रस्याधि विष्टपि ।
यत् पार्थिवे सदने वृत्रहन्तम यदन्तरिक्ष आ गहि ५ ९८०
स नः सोमेषु सोमपाः सुतेषु शवसस्पते ।
मादयस्व राधसा सूनृतावते–न्द्र राया परीणसा ६
मा न इन्द्र परा वृणग् भवा नः सधमाद्यः ।
त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परा वृणक् ७

अस्मे इन्द्र सचा सुते नि षदा पीतये मधु ।
कृधी जरित्रे मघवन्नवो मह—दस्मे इन्द्र सचा सुते ८
न त्वा देवास आशत न मर्त्यासो अद्रिवः ।
विश्वा जातानि शवसाभिभूरसि न त्वा देवास आशत ९
विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजू—स्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।
क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिमुतो—ग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम् १० ९८५
समीं रेभासो अस्वर—न्निन्द्रं सोमस्य पीतये ।
स्वर्पतिं यदीं वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ११
नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरा ।
सुदीतयो वो अद्रुहो ऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः १२
तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं शवांसि ।
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद् राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री १३
त्वं पुर इन्द्र चिकिदेना व्योजसा शविष्ठ शक्र नाशयध्यै ।
त्वद् विश्वानि भुवनानि वज्रिन् द्यावा रेजेते पृथिवी च भीषा १४
तन्म ऋतमिन्द्र शूर चित्र पात्व—पो न वज्रिन् दुरिताति पर्षि भूरि ।
कदा न इन्द्र राय आ दशस्ये—र्विश्वप्स्न्यस्य स्पृहयाय्यस्य राजन् १५ ९९०

॥ ७४ ॥ (ऋ० ८।१००।१-९)

(९९१-९९९) नेमो भार्गवः, ४-५ इन्द्रः, ९ वज्रो वा । त्रिष्टुप्, ६ जगती, ७,९ अनुष्टुप् ।

अयं त एमि तन्वा पुरस्ताद् विश्वे देवा अभि मा यन्ति पश्चात् ।
यदा मह्यं दीधरो भागमिन्द्रा—ऽऽदिन्मया कृणवो वीर्याणि १
दधामि ते मधुनो भक्षमग्रे हितस्ते भागः सुतो अस्तु सोमः ।
असश्च त्वं दक्षिणतः सखा मे ऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि २
प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति ।
नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभि ष्टवाम ३
अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना ।
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्या—दर्दिरो भुवना दर्दरीमि ४
आ यन्मा वेना अरुहन्नृतस्यँ एकमासीनं हर्यतस्य पृष्ठे ।
मनश्चिन्मे हृद आ प्रत्यवोच—दचिक्रदञ्छिशुमन्तः सखायः ५ ९९५

विश्वेत् ता ते सवनेषु प्रवाच्या या चकर्थ मघवन्निन्द्र सुन्वते ।
पारावतं यत् पुरुसंभृतं व-स्वपावृणोः शरभाय ऋषिबन्धवे ६
प्र नूनं धावता पृथङ् नेह यो वो अवावरीत् ।
नि षीं वृत्रस्य मर्मणि वज्रमिन्द्रो अपीपतत् ७
समुद्रे अन्तः शयत उद्ना वज्रो अभीवृतः ।
भरन्त्यस्मै संयतः पुरःप्रस्रवणा बलिम् ९
सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व द्यौर्देहि लोकं वज्राय विष्कभे ।
हनाव वृत्रं रिणचाव सिन्धू-निन्द्रस्य यन्तु प्रसवे विसृष्टाः १२ ९९९

॥ ७५ ॥ (ऋ० १।१२९।१-११)

(१०००-१०४१) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः; ८-९ अतिशक्वर्यौ; ११ अष्टिः ।

यं त्वं रथमिन्द्र मेधसातये ऽपाका सन्तमिषिर प्रणयसि प्रानवद्य नयसि ।
सद्यश्चित् तमभिष्टये करो वशश्च वाजिनम् ।
सास्माकमनवद्य तूतुजान वेधसा-मिमां वाचं न वेधसाम् १ १०००
स श्रुधि यः स्मा पृतनासु कासु चिद् दक्षाय्य इन्द्र भरहूतये नृभि-रसि प्रतूर्तये नृभिः ।
यः शूरैः स्वः सनिता यो विप्रैर्वाजं तरुता ।
तमीशानास इरधन्त वाजिनं पृक्षमत्यं न वाजिनम् २
दस्मो हि ष्मा वृषणं पिन्वसि त्वचं कं चिद् यावीरररुं शूर मर्त्यं परिवृणक्षि मर्त्यम् ।
इन्द्रोत तुभ्यं तद् दिवे तद् रुद्राय स्वयशसे ।
मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृळीकाय सप्रथः ३
अस्माकं व इन्द्रमुश्मसीष्टये सखायं विश्वायुं प्रासहं युजं वाजेषु प्रासहं युजम् ।
अस्माकं ब्रह्मोतये ऽवा पृत्सुषु कासु चित् ।
नहि त्वा शत्रुः स्तरते स्तृणोषि यं विश्वं शत्रुं स्तृणोषि यम् ४
नि षू नमातिमतिं कयस्य चित् तेजिष्ठाभिररणिभिर्नोतिभि-रुग्राभिरुग्रोतिभिः ।
नेषि णो यथा पुरा ऽनेनाः शूर मन्यसे ।
विश्वानि पूरोरप पर्षि वह्नि-रासा वह्निर्नो अच्छ ५
प्र तद् वोचेयं भव्यायेन्दवे हव्यो न य इषवान् मन्म रेजति रक्षोहा मन्म रेजति ।
स्वयं सो अस्मदा निदो वधैरजेत दुर्मतिम् ।
अव स्रवेदघशंसोऽवतर-मव क्षुद्रमिव स्रवेत् ६ १००५

वनेम तद्धोत्रया चितन्त्या वनेम रयिं रयिवः सुवीर्यं रण्वं सन्तं सुवीर्यम् ।
दुर्मन्मानं सुमन्तुभि–रेमिषा पृचीमहि ।
आ सत्याभिरिन्द्रं द्युम्नहूतिभि–र्यजत्रं द्युम्नहूतिभिः ७
प्रप्रा वो अस्मे स्वयशोभिरूती परिवर्ग इन्द्रो दुर्मतीनां दरीमन् दुर्मतीनाम् ।
स्वयं सा रिषयध्यै या न उपेषे अत्रैः ।
हतेमसन्न वक्षति क्षिप्ता जूर्णिर्न वक्षति ८
त्वं न इन्द्र राया परीणसा याहि पथाँ अनेहसा पुरो याह्यरक्षसा ।
सचस्व नः पराक आ सचस्वास्तमीक आ ।
पाहि नो दूरादारादभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ९
त्वं न इन्द्र राया तरूषसो–ग्रं चित् त्वा महिमा सक्षदवसे महे मित्रं नावसे ।
ओजिष्ठ त्रातरविता रथं कं चिदमर्त्य ।
अन्यमस्मद् रिरिषेः कं चिदद्रिवो रिरिक्षन्तं चिदद्रिवः १०
पाहि न इन्द्र सुष्टुत स्रिधो ऽवयाता सदमिद् दुर्मतीनां देवः सन् दुर्मतीनाम् ।
हन्ता पापस्य रक्षस–स्त्राता विप्रस्य मावतः ।
अधा हि त्वा जनिता जीजनद् वसो रक्षोहणं त्वा जीजनद् वसो ११ १०१०

॥ ७६ ॥ (ऋ० १।१३०।१-१०) अत्यष्टिः; १० त्रिष्टुप् ।

एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव सत्पति–रस्तं राजेव सत्पतिः ।
हवामहे त्वा वयं प्रयस्वन्तः सुते सचा ।
पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये १
पिबा सोममिन्द्र सुवानमद्रिभिः कोशेन सिक्तमवतं न वंसग–स्तातृषाणो न वंसगः ।
मदाय हर्यताय ते तुविष्टमाय धायसे ।
आ त्वा यच्छन्तु हरितो न सूर्य–महा विश्वेव सूर्यम् २
अविन्दद् दिवो निहितं गुहा निधिं वेर्न गर्भं परिवीतमश्मन्–य्यनन्ते अन्तरश्मनि ।
व्रजं वज्री गवामिव सिषासन्नङ्गिरस्तमः ।
अपावृणोदिष इन्द्रः परीवृता द्वार इषः परीवृताः ३
दादृहाणो वज्रमिन्द्रो गभस्त्योः क्षद्मेव तिग्ममसनाय सं श्यद्–हिहत्याय सं श्यत् ।
संविव्यान ओजसा शवोभिरिन्द्र मज्मना ।
तष्टेव वृक्षं वनिनो नि वृश्चसि परश्वेव नि वृश्चसि ४

त्वं वृथा नद्य इन्द्र सर्तवे ऽच्छा समुद्रमसृजो रथाँ इव वाजयतो रथाँ इव ।
इत ऊतीरयुञ्जत समानमर्थमक्षितम् ।
धेनूरिव मनवे विश्वदोहसो जनाय विश्वदोहसः ५ १०१५
इमां ते वाचं वसूयन्त आयवो रथं न धीरः स्वपा अतक्षिषुः सुम्नाय त्वामतक्षिषुः ।
शुम्भन्तो जेन्यं यथा वाजेषु विप्र वाजिनम् ।
अत्यमिव शवसे सातये धना विश्वा धनानि सातये ६
भिनत् पुरो नवतिमिन्द्र पूरवे दिवोदासाय महि दाशुषे नृतो वज्रेण दाशुषे नृतो ।
अतिथिग्वाय शम्बरं गिरेरुग्रो अवाभरत् ।
महो धनानि दयमान ओजसा विश्वा धनान्योजसा ७
इन्द्रः समत्सु यजमानमार्यं प्रावद् विश्वेषु शतमूतिराजिषु स्वर्मीळ्हेष्वाजिषु ।
मनवे शासदव्रतान् त्वचं कृष्णामरन्धयत् ।
दक्षन्न विश्वं ततृषाणमोषति न्यर्शसानमोषति ८
सूरश्चक्रं प्र वृहज्जात ओजसा प्रपित्वे वाचमरुणो मुषायती—शान आ मुषायति ।
उशना यत् परावतो ऽजगन्नूतये कवे ।
सुम्नानि विश्वा मनुषेव तुर्वणि—रहा विश्वेव तुर्वणिः ९
स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्नुक्थैः पुरां दर्तः पायुभिः पाहि शग्मैः ।
दिवोदासेभिरिन्द्र स्तवानो वावृधीथा अहोभिरिव द्यौः १० १०२०

॥ ७७ ॥ (ऋ० १।१३१।१-७) अत्यष्टिः ।

इन्द्राय हि द्यौरसुरो अनम्नते—न्द्राय मही पृथिवी वरीमभि—र्द्युम्नसाता वरीमभिः ।
इन्द्रं विश्वे सजोषसो देवासो दधिरे पुरः ।
इन्द्राय विश्वा सवनानि मानुषा रातानि सन्तु मानुषा १
विश्वेषु हि त्वा सवनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक् स्वः सनिष्यवः पृथक् ।
तं त्वा नावं न पर्षणिं शूषस्य धुरि धीमहि ।
इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयवः स्तोमेभिरिन्द्रमायवः २
वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः सक्षन्त इन्द्र निःसृजः ।
यद् गव्यन्ता द्वा जना स्व१र्यन्ता समूहसि ।
आविष्करिक्रद् वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ३
विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र शारदीरवातिरः सासहानो अवातिरः ।
शासस्तमिन्द्र मर्त्य—मयज्युं शवसस्पते ।
महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः ४

आदित् ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन् मदेषु वृषन्नुशिजो यदाविथ सखीयतो यदाविथ ।
चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे ।
ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत ५ १०२५
उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्य१र्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः स्वर्षाता हवीमभिः ।
यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिञ्चिकेतसि ।
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः ६
त्वं तमिन्द्र वावृधानो अस्मयु-रमित्रयन्तं तुविजात मर्त्यं वज्रेण शूर मर्त्यम् ।
जहि यो नो अघायति शृणुष्व सुश्रवस्तमः ।
रिष्टं न यामन्नप भूतु दुर्मति-र्विश्वाप भूतु दुर्मतिः ७

॥ ७८ ॥ (ऋ० १।१३२।१-६) [६ (अर्धर्चस्य) इन्द्रापर्वतौ]।

त्वया वयं मघवन् पूर्व्ये धन इन्द्रत्वोताः सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतः ।
नेदिष्ठे अस्मिन्नह-न्यधि वोचा नु सुन्वते ।
अस्मिन् यज्ञे वि चयेमा भरे कृतं वाजयन्तो भरे कृतम् १
स्वर्जेषे भर आप्रस्य वक्म-न्युषर्बुधः स्वस्मिन्नञ्जसि क्राणस्य स्वस्मिन्नञ्जसि ।
अहन्निन्द्रो यथा विदे शीर्ष्णाशीर्ष्णोपवाच्यः ।
अस्मत्रा ते सध्र्यक् सन्तु रातयो भद्रा भद्रस्य रातयः २
तत् तु प्रयः प्रत्नथा ते शुशुक्वनं यस्मिन् यज्ञे वारमकृण्वत क्षय-मृतस्य वारसि क्षयम् ।
वि तद् वोचेरध द्विता-ऽन्तः पश्यन्ति रश्मिभिः ।
स घा विदे अन्विन्द्रो गवेषणो बन्धुक्षिद्भ्यो गवेषणः ३ १०३०
नू इत्था ते पूर्वथा च प्रवाच्यं यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रज-मिन्द्र शिक्षन्नप व्रजम् ।
ऐभ्यः समान्या दिशा ऽस्मभ्यं जेषि योत्सि च ।
सुन्वद्भ्यो रन्धया कं चिदव्रतं हृणायन्तं चिदव्रतम् ४
सं यज्जनान् क्रतुभिः शूर ईक्षयद् धने हिते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र यक्षन्त श्रवस्यवः ।
तस्मा आयुः प्रजावदिद् बाधे अर्चन्त्योजसा ।
इन्द्र ओक्यं दिधिषन्त धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ५
युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तंतमिद्धतं वज्रेण तंतमिद्धतम् ।
दूरे चत्ताय च्छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ।
अस्माकं शत्रून् परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः ६

॥ ७९ ॥ (ऋ० १।१३३।१-७) १ त्रिष्टुप्, २-४ अनुष्टुप्, ५ गायत्री, ६ धृतिः, ७ अष्टिः ।

उभे पुनामि रोदसी ऋतेन द्रुहो दहामि सं महीरनिन्द्राः ।
अभिव्लग्य यत्र हता अमित्रा वैलस्थानं परि तृळ्हा अशेरन् १
अभिव्लग्या चिदद्रिवः शीर्षा यातुमतीनाम् । छिन्धि वटूरिणा पदा महावटूरिणा पदा २ १०३५
अवासां मघवञ्जहि शर्धो यातुमतीनाम् । वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ३
यासां तिस्रः पञ्चाशतोऽभिव्लङ्गैरपावपः । तत् सु ते मनायति तकत् सु ते मनायति ४
पिशङ्गभृष्टिमम्भृणं पिशाचिमिन्द्र सं मृण । सर्वं रक्षो नि बर्हय ५
अवर्मह इन्द्र दादृहि श्रुधी नः शुशोच हि द्यौः क्षा न भीषाँ अद्रिवो घृणान्न भीषाँ अद्रिवः ।
शुष्मिन्तमो हि शुष्मिभि- र्वधैरुग्रेभिरीयसे ।
अपूरुषघ्नो अप्रतीत शूर सत्वभि- स्त्रिसप्तैः शूर सत्वभिः ६
वनोति हि सुन्वन् क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो देवानामव द्विषः ।
सुन्वान इत् सिषासति सहस्रा वाज्यवृतः ।
सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् ७ १०४०

॥ ८० ॥ (ऋ० १।१३९।६) अत्यष्टिः ।

वृषन्निन्द्र वृषपाणास इन्दव इमे सुता अद्रिषुतास उद्भिद- स्तुभ्यं सुतास उद्भिदः ।
ते त्वा मन्दन्तु दावने महे चित्राय राधसे ।
गीर्भिर्गिर्वाहः स्तवमान आ गहि सुमृळीको न आ गहि ६ १०४१

॥ ८१ ॥ (ऋ० १।१६७।१) (१०४२-११००) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

सहस्रं त इन्द्रोतयो नः सहस्रमिषो हरिवो गूर्ततमाः ।
सहस्रं रायो मादयध्यै सहस्रिण उप नो यन्तु वाजाः १

॥ ८२ ॥ (ऋ० १।१६९।१-८) त्रिष्टुप्, २ चतुष्पदा विराट् ।

महश्चित् त्वमिन्द्र यत एतान् महश्चिदसि त्यजसो वरूता ।
स नो वेधो मरुतां चिकित्वान् त्सुम्ना वनुष्व तव हि प्रेष्ठा १
अयुज्रन्त इन्द्र विश्वकृष्टी- र्विदानासो निष्षिधो मर्त्यत्रा ।
मरुतां पृत्सुतिर्हासमाना स्वर्मीळ्हस्य प्रधनस्य सातौ २
अम्यक् सा त इन्द्र ऋष्टिरस्मे सनेम्यभ्वं मरुतो जुनन्ति ।
अग्निश्चिद्धि ष्मातसे शुशुक्वा- नापो न द्वीपं दधति प्रयांसि ३ १०४५
त्वं तू न इन्द्र तं रयिं दा ओजिष्ठया दक्षिणयेव रातिम् ।
स्तुतश्च यास्ते चकनन्त वायोः स्तनं न मध्वः पीपयन्त वाजैः ४

त्वे राय इन्द्र तोशतमाः प्रणेतारः कस्य चिदृतायोः ।
ते षु णो मरुतो मृळयन्तु ये स्मा पुरा गातूयन्तीव देवाः ५
प्रति प्र याहीन्द्र मीळ्हुषो नॄन् महः पार्थिवे सदने यतस्व ।
अध यदेषां पृथुबुध्नास एता स्तीर्थे नार्यः पौंस्यानि तस्थुः ६
प्रति घोराणामेतानामयासां मरुतां शृण्व आयतामुपब्दिः ।
ये मर्त्यं पृतनायन्तमूमै ऋणावानं न पतयन्त सर्गैः ७
त्वं मानेभ्य इन्द्र विश्वजन्या रदा मरुद्भिः शुरुधो गोअग्राः ।
स्तवानेभिः स्तवसे देव देवै र्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ८ १०५०

॥८३॥ (ऋ० १।१७०।१-५)

[इन्द्रः; (४ अगस्त्यो वा); २, ५ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः]। १ बृहती, २-४ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप्।

न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद् वेद यदद्भुतम् ।
अन्यस्य चित्तमभि संचरेण्य मुताधीतं वि नश्यति १
किं न इन्द्र जिघांससि भ्रातरो मरुतस्तव । तेभिः कल्पस्व साधुया मा नः समरणे वधीः २
किं नो भ्रातरगस्त्य सखा सन्नति मन्यसे । विद्मा हि ते यथा मनो ऽस्मभ्यमिन्न दित्ससि ३
अरं कृण्वन्तु वेदिं समग्निमिन्धतां पुरः । तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै ४
त्वमीशिषे वसुपते वसूनां त्वं मित्राणां मित्रपते धेष्ठः ।
इन्द्र त्वं मरुद्भिः सं वदस्वा ऽध प्राशान ऋतुथा हवींषि ५ १०५५

॥८४॥ (ऋ० १।१७३।१-१३) त्रिष्टुप्, ४ विराट्स्थाना विषमपदा वा।

गायत् साम नभन्यं१ यथा वे रर्चाम तद् वावृधानं स्वर्वत् ।
गावो धेनवो बर्हिष्यदब्धा आ यत् सद्मानं दिव्यं विवासान् १
अर्चद् वृषा वृषभिः स्वेदुहव्यै र्मृगो नाश्नो अति यज्जुगुर्यात् ।
प्र मन्दयुर्मनां गूर्त होता भरते मर्यो मिथुना यजत्रः २
नक्षद्धोता परि सद्म मिता यन् भरद् गर्भमा शरदः पृथिव्याः ।
क्रन्ददश्वो नयमानो रुवद् गौ रन्तर्दूतो न रोदसी चरद् वाक् ३
ता कर्माषतरास्मै प्र च्यौत्नानि देवयन्तो भरन्ते ।
जुजोषदिन्द्रो दस्मवर्चा नासत्येव सुग्म्यो रथेष्ठाः ४
तमु ष्टुहीन्द्रं यो ह सत्वा यः शूरो मघवा यो रथेष्ठाः ।
प्रतीचश्चिद् योधीयान् वृषण्वान् ववव्रुषश्चित् तमसो विहन्ता ५ १०६०
प्र यदित्था महिना नृभ्यो अ स्त्यरं रोदसी कक्ष्ये३ नास्मै ।
सं विव्य इन्द्रो वृजनं न भूमा भर्ति स्वधावाँ ओपशमिव द्याम् ६

समत्सु त्वा शूर सतामुराणं प्रपथिन्तमं परितंसयध्यै ।
सजोषस इन्द्रं मदे क्षोणीः सूरिं चिद् ये अनुमदन्ति वाजैः ७
एवा हि ते शं सवना समुद्र आपो यत् त आसु मदन्ति देवीः ।
विश्वा ते अनु जोष्या भूद् गौः सूरींश्चिद् यदि धिषा वेषि जनान् ८
असाम यथा सुषखाय एन स्वभिष्टयो नरां न शंसैः ।
असद् यथा न इन्द्रो वन्दनेष्ठा—स्तुरो न कर्म नयमान उक्था ९
विष्पर्धसो नरां न शंसै—रस्माकासदिन्द्रो वज्रहस्तः ।
मित्रायुवो न पूर्पतिं सुशिष्टौ मध्यायुव उप शिक्षन्ति यज्ञैः १० १०६५
यज्ञो हि ष्मेन्द्रं कश्चिदृन्ध—ञ्जुहुराणश्चिन्मनसा परियन् ।
तीर्थे नाच्छा तातृषाणमोको दीर्घो न सिध्रमा कृणोत्यध्वा ११
मो षू ण इन्द्रात्र पृत्सु देवै—रस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः ।
महश्चिद् यस्य मीळ्हुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः १२
एष स्तोम इन्द्र तुभ्यमस्मे एतेन गातुं हरिवो विदो नः
आ नो ववृत्याः सुविताय देव विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् १३

॥ ८५ ॥ (ऋ० १।१७४।१-१०) त्रिष्टुप् ।

त्वं राजेन्द्र ये च देवा रक्षा नॄन् पाह्यसुर त्वमस्मान् ।
त्वं सत्पतिर्मघवा नस्तरुत्र—स्त्वं सत्यो वसवानः सहोदाः १
दनो विश इन्द्र मृध्रवाचः सप्त यत् पुरः शर्म शारदीर्दर्त् ।
ऋणोरपो अनवद्यार्णा यूने वृत्रं पुरुकुत्साय रन्धीः २ १०७०
अजा वृत इन्द्र शूरपत्नी—र्द्यां च येभिः पुरुहूत नूनम् ।
रक्षो अग्निमशुषं तूर्वयाणं सिंहो न दमे अपांसि वस्तोः ३
शेषन् नु त इन्द्र सस्मिन् योनौ प्रशस्तये पवीरवस्य मह्ना ।
सृजदर्णांस्यव यद् युधा गा—स्तिष्ठद्धरी धृषता मृष्ट वाजान् ४
वह कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन् त्स्यूमन्यू ऋज्रा वातस्याश्वा ।
प्र सूरश्चक्रं वृहतादभीके ऽभि स्पृधो यासिषद् वज्रबाहुः ५
जघन्वाँ इन्द्र मित्रेरू—ञ्चोदप्रवृद्धो हरिवो अदाशून् ।
प्र ये पश्यन्नर्यमणं सचायो—स्त्वया शूर्ता वहमाना अपत्यम् ६
रपत् कविरिन्द्रार्कसातौ क्षां दासायोपबर्हणीं कः ।
करत् तिस्रो मघवा दानुचित्रा नि दुर्योणे कुयवाचं मृधि श्रेत् ७ १०७५

सना ता त इन्द्र नव्या आगुः सहो नभोऽविरणाय पूर्वीः
भिनत् पुरो न भिदो अदेवी- र्ननमो वधरदेवस्य पीयोः ८
त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमती- र्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।
प्र यत् समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति ९
त्वमस्माकमिन्द्र विश्वध स्या अवृकतमो नरां नृपाता ।
स नो विश्वासां स्पृधां सहोदा विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् १०

॥ ८६ ॥ (ऋ० १।१७५।१-६) १ स्कन्धोग्रीवी बृहती; २-५ अनुष्टुप्, ६ त्रिष्टुप् ।

मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः । वृषा ते वृष्ण इन्दु- र्वाजी सहस्रसातमः १
आ नस्ते गन्तु मत्सरो वृषा मदो वरेण्यः । सहावाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाळमर्त्यः २ १०८०
त्वं हि शूरः सनिता चोदयो मनुषो रथम् । सहावान् दस्युमव्रत- मोषः पात्रं न शोचिषा ३
मुषाय सूर्यं कवे चक्रमीशान ओजसा । वह शुष्णाय वधं कुत्सं वातस्याश्वैः ४
शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युम्निन्तम उत क्रतुः । वृत्रघ्ना वरिवोविदा मंसीष्ठा अश्वसातमः ५
यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मय इवापो न तृष्यते बभूथ ।
तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६

॥ ८७ ॥ (ऋ० १।१७६।१-६) अनुष्टुप्; ६ त्रिष्टुप् ।

मत्सि नो वस्यइष्टय इन्द्रमिन्दो वृषा विश । ऋघायमाण इन्वसि शत्रुमन्ति न विन्दसि १ १०८५
तस्मिन्ना वेशया गिरो य एकश्चर्षणीनाम् । अनु स्वधा यमुप्यते यवं न चर्कृषद् वृषा २
यस्य विश्वानि हस्तयोः पञ्च क्षितीनां वसु । स्पाशयस्व यो अस्मध्रुग् दिव्येवाशनिर्जहि ३
असुन्वन्तं समं जहि दूणाशं यो न ते मयः । अस्मभ्यमस्य वेदनं दद्धि सूरिश्चिदोहते ४
आवो यस्य द्विबर्हसो ऽर्केषु सानुषगसत् । आजाविन्द्रस्येन्दो प्रावो वाजेषु वाजिनम् ५
यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मय इवापो न तृष्यते बभूथ ।
तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६ १०९०

॥ ८८ ॥ (ऋ० १।१७७।१-६) त्रिष्टुप् ।

आ चर्षणिप्रा वृषभो जनानां राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः ।
स्तुतः श्रवस्यन्नवसोप मद्रिग् युक्त्वा हरी वृषणा याह्यर्वाङ् १
ये ते वृषणो वृषभास इन्द्र ब्रह्मयुजो वृषरथासो अत्याः ।
ताँ आ तिष्ठ तेभिरा याह्यर्वाङ् हवामहे त्वा सुत इन्द्र सोमे २
आ तिष्ठ रथं वृषणं वृषा ते सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि ।
युक्त्वा वृषभ्यां वृषभ क्षितीनां हरिभ्यां याहि प्रवतोप मद्रिक् ३

अयं यज्ञो देवया अयं मियेध इमा ब्रह्माण्ययमिन्द्र सोमः ।
स्तीर्णं बर्हिरा तु शक्र प्र याहि पिबा निषद्य वि मुचा हरी इह ४
ओ सुष्टुत इन्द्र याह्यर्वा ङुप ब्रह्माणि मान्यस्य कारोः ।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ५ १०९५

॥ ८९ ॥ (ऋ० १।१७८।१-५)

यद्ध स्या त इन्द्र श्रुष्टिरस्ति यया बभूथ जरितृभ्य ऊती ।
मा नः कामं महयन्तमा धग् विश्वा ते अश्यां पर्याप आयोः १
न घा राजेन्द्र आ दभन्नो या नु स्वसारा कृणवन्त योनौ ।
आपश्चिदस्मै सुतुका अवेषन् गमन्न इन्द्रः सख्या वयश्च २
जेता नृभिरिन्द्रः पृत्सु शूरः श्रोता हवं नाधमानस्य कारोः ।
प्रभर्ता रथं दाशुष उपाक उद्यन्ता गिरो यदि च त्मना भूत् ३
एवा नृभिरिन्द्रः सुश्रवस्या प्रखादः पृक्षो अभि मित्रिणो भूत् ।
समर्य इषः स्तवते विवाचि सत्राकरो यजमानस्य शंसः ४
त्वया वयं मघवन्निन्द्र शत्रू नभि ष्याम महतो मन्यमानान् ।
त्वं त्राता त्वमु नो वृधे भू र्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ५ ११००

॥ ९० ॥ (ऋ० २।११।१-२१)

(११०१-११२७) गृत्समद (आंगिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः। विराट्स्थाना; २१ त्रिष्टुप्।

श्रुधी हवमिन्द्र मा रिषण्यः स्याम ते दावने वसूनाम् ।
इमा हि त्वामूर्जो वर्धयन्ति वसूयवः सिन्धवो न क्षरन्तः १
सृजो महीरिन्द्र या अपिन्वः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः ।
अमर्त्यं चिद् दासं मन्यमान मवाभिनदुक्थैर्वावृधानः २
उक्थेष्विन्नु शूर येषु चाकन् त्स्तोमेष्विन्द्र रुद्रियेषु च ।
तुभ्येदेता यासु मन्दसानः प्र वायवे सिस्रते न शुभ्राः ३
शुभ्रं नु ते शुष्मं वर्धयन्तः शुभ्रं वज्रं बाह्वोर्दधानाः ।
शुभ्रस्त्वमिन्द्र वावृधानो अस्मे दासीर्विशः सूर्येण सह्याः ४
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्स्व पीवृतं मायिनं क्षियन्तम् ।
उतो अपो द्यां तस्तभ्वांस महन्नहिं शूर वीर्येण ५ ११०५
स्तवा नु त इन्द्र पूर्व्या महा न्युत स्तवाम नूतना कृतानि ।
स्तवा वज्रं बाह्वोरुशन्तं स्तवा हरी सूर्यस्य केतू ६

हरी नु त इन्द्र वाजयन्ता घृतश्चुतं स्वारमस्वार्ष्टाम् ।
वि समना भूमिरप्रथिष्टाऽरंस्त पर्वतश्चित् सरिष्यन् ७
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन् त्सं मातृभिर्वावशानो अक्रान् ।
दूरे पारे वाणीं वर्धयन्त इन्द्रेषितां धमनिं पप्रथन् नि ८
इन्द्रो महां सिन्धुमाशयानं मायाविनं वृत्रमस्फुरन्निः ।
अरेजेतां रोदसी भियाने कनिक्रदतो वृष्णो अस्य वज्रात् ९
अरोरवीद् वृष्णो अस्य वज्रोऽमानुषं यन्मानुषो निजूर्वात् ।
नि मायिनो दानवस्य माया अपादयत् पपिवान्त्सुतस्य १० १११०

पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दिनः सुतासः ।
पृणन्तस्ते कुक्षी वर्धयन्त्वित्था सुतः पौर इन्द्रमाव ११
त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा धियं वनेम ऋतया सपन्तः ।
अवस्यवो धीमहि प्रशस्तिं सद्यस्ते रायो दावने स्याम १२
स्याम ते त इन्द्र ये त ऊती अवस्यव ऊर्जं वर्धयन्तः ।
शुष्मिन्तमं यं चाकनाम देवाऽस्मे रयिं रासि वीरवन्तम् १३
रासि क्षयं रासि मित्रमस्मे रासि शर्ध इन्द्र मारुतं नः ।
सजोषसो ये च मन्दसानाः प्र वायवः पान्त्यग्रणीतिम् १४
व्यन्त्विन्नु येषु मन्दसानस्तृपत् सोमं पाहि द्रह्यदिन्द्र ।
अस्मान्त्सु पृत्स्वा तरुत्राऽवर्धयो द्यां बृहद्भिरर्कैः १५ १११५

बृहन्त इन्नु ये ते तरुत्रोक्थेभिर्वा सुम्नमाविवासान् ।
स्तृणानासो बर्हिः पस्त्यावत् त्वोता इदिन्द्र वाजमग्मन् १६
उग्रेष्विन्नु शूर मन्दसानस्त्रिकद्रुकेषु पाहि सोममिन्द्र ।
प्रदोधुवच्छ्मश्रुषु प्रीणानो याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिम् १७
धिष्वा शवः शूर येन वृत्रमवाभिनद् दानुमौर्णवाभम् ।
अपावृणोर्ज्योतिरार्याय नि सव्यतः सादि दस्युरिन्द्र १८
सनेम ये त ऊतिभिस्तरन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून् ।
अस्मभ्यं तत् त्वाष्ट्रं विश्वरूपमरन्धयः साख्यस्य त्रिताय १९
अस्य सुवानस्य मन्दिनस्त्रितस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्तः ।
अवर्तयत् सूर्यो न चक्रं भिनद् वलमिन्द्रो अङ्गिरस्वान् २० ११२०

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः २१

॥ ९१ ॥ (ऋ० २।१२।१-१५) त्रिष्टुप् ।

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत् ।
यस्य शुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः १
यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात् ।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः २
यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपधा वलस्य ।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक् समत्सु स जनास इन्द्रः ३
येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः ।
श्वघ्नीव यो जिगीवाँ लक्षमाद — दर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः ४ ११२५
यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोर — मुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः ५
यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः ।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः ६
यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ७
यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः ।
समानं चिद् रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः ८
यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः ९ ११३०
यः शश्वतो मह्येनो दधाना — नमन्यमानाञ्छर्वा जघान ।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः १०
यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत् ।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः ११
यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मा — नवासृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून् ।
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहु — र्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः १२
द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहु — र्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः १३

यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती ।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः १४ ११३५
यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद् वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः ।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम १५

॥ ९१ ॥ (ऋ० २।१३।१-१३) जगती; १३ त्रिष्टुप् ।

ऋतुर्जनित्री तस्या अपस्परि मक्षू जात आविशद् यासु वर्धते ।
तदाहना अभवत् पिप्युषी पयो ऽशोः पीयूषं प्रथमं तदुक्थ्यम् १
सध्रीमा यन्ति परि बिभ्रतीः पयो विश्वप्स्न्याय प्र भरन्त भोजनम् ।
समानो अध्वा प्रवतामनुष्यदे यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः २
अन्वेको वदति यद् ददाति तद् रूपा मिनन्तदपा एक ईयते ।
विश्वा एकस्य विनुदस्तितिक्षते यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ३
प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त आसते रयिमिव पृष्ठं प्रभवन्तमायते ।
असिन्वन् दंष्ट्रैः पितुरत्ति भोजनं यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ४ ११४०
अधाकृणोः पृथिवीं संदृशे दिवे यो धौतीनामहिहन्नारिणक् पथः ।
तं त्वा स्तोमेभिरुदभिर्न वाजिनं देवं देवा अजनन्त्सास्युक्थ्यः ५
यो भोजनं च दयसे च वर्धन मार्द्रादा शुष्कं मधुमद् दुदोहिथ ।
स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति विश्वस्यैक ईशिषे सास्युक्थ्यः ६
यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणा ऽधि दाने व्यवनीरधारयः ।
यश्चासमा अजनो दिद्युतो दिव उरुरूर्वाँ अभितः सास्युक्थ्यः ७
यो नार्मरं सहवसुं निहन्तवे पृक्षाय च दासवेशाय चावहः ।
ऊर्जयन्त्या अपरिविष्टमास्य मुतैवाद्य पुरुकृत् सास्युक्थ्यः ८
शतं वा यस्य दश साकमाद्य एकस्य श्रुष्टौ यद्ध चोदमाविथ ।
अरज्जौ दस्यून्त्समुनब्दभीतये सुप्राव्यो अभवः सास्युक्थ्यः ९ ११४५
विश्वेदनु रोधना अस्य पौंस्यं ददुरस्मै दधिरे कृत्नवे धनम् ।
षळस्तभ्ना विष्टिरः पञ्च संदृशः परि परो अभवः सास्युक्थ्यः १०
सुप्रवाचनं तव वीर वीर्यं यदेकेन क्रतुना विन्दसे वसु ।
जातूष्ठिरस्य प्र वयः सहस्वतो या चकर्थ सेन्द्र विश्वास्युक्थ्यः ११

अरमयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वय्याय च स्रुतिम् ।
नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थ्यः १२
अस्मभ्यं तद् वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १३

॥ ९३ ॥ (ऋ० २।१४।१-१२) त्रिष्टुप् ।

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोम- मामत्रेभिः सिञ्चता मद्यमन्धः ।
कामी हि वीरः सदमस्य पीतिं जुहोत वृष्णे तदिदेष वष्टि १ ११५०
अध्वर्यवो यो अपो वव्रिवांसं वृत्रं जघानाशन्येव वृक्षम् ।
तस्मा एतं भरत तद्वशायँ एष इन्द्रो अर्हति पीतिमस्य २
अध्वर्यवो यो दृभीकं जघान यो गा उदाजदप हि वलं वः ।
तस्मा एतमन्तरिक्षे न वात- मिन्द्रं सोमैरोर्णुत जूर्न वस्त्रैः ३
अध्वर्यवो य उरणं जघान नव चख्वांसं नवतिं च बाहून् ।
यो अर्बुदमव नीचा बबाधे तमिन्द्रं सोमस्य भृथे हिनोत ४
अध्वर्यवो यः स्वश्नं जघान यः शुष्णमशुषं यो व्यंसम् ।
यः पिप्रुं नमुचिं यो रुधिक्रां तस्मा इन्द्रायान्धसो जुहोत ५
अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य पुरो बिभेदाश्मनेव पूर्वीः ।
यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्र- मपावपद् भरता सोममस्मै ६ ११५५
अध्वर्यवो यः शतमा सहस्रं भूम्या उपस्थेऽवपज्जघन्वान् ।
कुत्सस्यायोरतिथिग्वस्य वीरान् न्यावृणग् भरता सोममस्मै ७
अध्वर्यवो यन्नरः कामयाध्वे श्रुष्टी वहन्तो नशथा तदिन्द्रे ।
गभस्तिपूतं भरत श्रुतायेन्द्राय सोमं यज्यवो जुहोत ८
अध्वर्यवः कर्तना श्रुष्टिमस्मै वने निपूतं वन उन्नयध्वम् ।
जुषाणो हस्त्यमभि वावशे व इन्द्राय सोमं मदिरं जुहोत ९
अध्वर्यवः पयसोधर्यथा गोः सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।
वेदाहमस्य निभृतं म एतद् दित्सन्तं भूयो यजतश्चिकेत १०
अध्वर्यवो यो दिव्यस्य वस्वो यः पार्थिवस्य क्षम्यस्य राजा ।
तमूर्दरं न पृणता यवेने- न्द्रं सोमेभिस्तदपो वो अस्तु ११ ११६०
अस्मभ्यं तद् वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १२

॥ ९४ ॥ (ऋ० २।१५।१-१०)

प्र घा न्वस्य महतो महानि सत्या सत्यस्य करणानि वोचम् ।
त्रिकद्रुकेष्वपिबत् सुतस्या—ऽस्य मदे अहिमिन्द्रो जघान १
अवंशे द्यामस्तभायद् बृहन्त—मा रोदसी अपृणदन्तरिक्षम् ।
स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार २
सद्मेव प्राचो वि मिमाय मानै—र्वज्रेण खान्यतृणन्नदीनाम् ।
वृथासृजत् पथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ३
स प्रवोळ्हॄन् परिगत्या दभीते—र्विश्वमधागायुधमिद्धे अग्नौ ।
सं गोभिरश्वैरसृजद् रथेभिः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ४ ११६५
स ईं महीं धुनिमेतोररम्णात् सो अस्नातॄनपारयत् स्वस्ति ।
त उत्स्नाय रयिमभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ५
सोदञ्चं सिन्धुमरिणान्महित्वा वज्रेणान उषसः सं पिपेष ।
अजवसो जविनीभिर्विवृश्चन् त्सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ६
स विद्वाँ अपगोहं कनीना—माविर्भवन्नुदतिष्ठत् परावृक् ।
प्रति श्रोणः स्थाद् व्य१नगचष्ट सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ७
भिनद् वलमङ्गिरोभिर्गृणानो वि पर्वतस्य दृंहितान्यैरत् ।
रिणग्रोधांसि कृत्रिमाण्येषां सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ८
स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं धुनिं च जघन्थ दस्युं प्र दभीतिमावः
रम्भी चिदत्र विविदे हिरण्यं सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ९ ११७०
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १०

॥ ९५ ॥ (ऋ० २।१६।१-९) जगती; ९ त्रिष्टुप् ।

प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय सुष्टुति—मग्नाविव समिधाने हविर्भरे ।
इन्द्रमजुर्यं जरयन्तमुक्षितं सनाद् युवानमवसे हवामहे १
यस्मादिन्द्राद् बृहतः किं चनेमृते विश्वान्यस्मिन्त्संभृताधि वीर्या ।
जठरे सोमं तन्वी३ सहो महो हस्ते वज्रं भरति शीर्षणि क्रतुम् २
न क्षोणीभ्यां परिभ्वे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्वतैरिन्द्र ते रथः ।
न ते वज्रमन्वश्नोति कश्चन यदाशुभिः पतसि योजना पुरु ३

विश्वे ह्यस्मै यजताय धृष्णवे क्रतुं भरन्ति वृषभाय सश्चते ।
वृषा यजस्व हविषा विदुष्टरः पिबेन्द्र सोमं वृषभेण भानुना ४ ११७५
वृष्णः कोशः पवते मध्व ऊर्मि–र्वृषभान्नाय वृषभाय पातवे ।
वृषणाध्वर्यू वृषभासो अद्रयो वृषणं सोमं वृषभाय सुष्वति ५
वृषा ते वज्र उत ते वृषा रथो वृषणा हरी वृषभाण्यायुधा ।
वृष्णो मदस्य वृषभ त्वमीशिष इन्द्र सोमस्य वृषभस्य तृष्णुहि ६
प्र ते नावं न समने वचस्युवं ब्रह्मणा यामि सवनेषु दाधृषिः ।
कुविन्नो अस्य वचसो निबोधिष–दिन्द्रमुत्सं न वसुनः सिचामहे ७
पुरा संबाधादभ्या ववृत्स्व नो धेनुर्न वत्सं यवसस्य पिप्युषी ।
सकृत्सु ते सुमतिभिः शतक्रतो सं पत्नीभिर्न वृषणो नसीमहि ८
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९ ११८०

॥ ९६ ॥ (ऋ० २।१७।१-९) जगती; ८-९ त्रिष्टुप् ।

तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वदर्चत शुष्मा यदस्य प्रत्नथोदीरते ।
विश्वा यद् गोत्रा सहसा परीवृता मदे सोमस्य दृंहितान्यैरयत् १
स भूतु यो ह प्रथमाय धायस ओजो मिमानो महिमानमातिरत् ।
शूरो यो युत्सु तन्वं परिव्यत शीर्षणि द्यां महिना प्रत्यमुञ्चत २
अधाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद् यदस्याग्रे ब्रह्मणा शुष्ममैरयः ।
रथेष्ठेन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीरयः सिस्रते सध्र्यक् पृथक् ३
अधा यो विश्वा भुवनाभि मज्मने–शानकृत् प्रवया अभ्यवर्धत ।
आद् रोदसी ज्योतिषा वह्निरातनोत् सीव्यन् तमांसि दुधिता समव्ययत् ४
स प्राचीनान् पर्वतान् दृंहदोजसा ऽधराचीनमकृणोदपामपः ।
अधारयत् पृथिवीं विश्वधायस–मस्तभ्नान्मायया द्यामवस्रसः ५ ११८५
सास्मा अरं बाहुभ्यां यं पिताकृणोद् विश्वस्मादा जनुषो वेदसस्परि ।
येना पृथिव्यां नि क्रिविं शयध्यै वज्रेण हत्व्यवृणक् तुविष्वणिः ६
अमाजूरिव पित्रोः सचा सती समानादा सदसस्त्वामिये भगम् ।
कृधि प्रकेतमुप मास्या भर दद्धि भागं तन्वो३ येन मामहः ७

भोजं त्वामिन्द्र वयं हुवेम ददिष्ट्वमिन्द्रापांसि वाजान् ।
अविड्ढीन्द्र चित्रया न ऊती कृधि वृषन्निन्द्र वस्यसो नः ८
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९

॥ ९७ ॥ (ऋ० २।१८।१-९) त्रिष्टुप् ।

प्राता रथो नवो योजि सस्नि श्चतुर्युगस्त्रिकशः सप्तरश्मिः ।
दशारित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंह्यो भूत् १ ११९०
सास्मा अरं प्रथमं स द्वितीय मुतो तृतीयं मनुषः स होता ।
अन्यस्या गर्भमन्य ऊं जनन्त सो अन्येभिः सचते जेन्यो वृषा २
हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योज मायै सूक्तेन वचसा नवेन ।
मो षु त्वामत्र बहवो हि विप्रा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ३
आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र या ह्या चतुर्भिरा षड्भिर्हूयमानः ।
आष्टाभिर्दशभिः सोमपेय मयं सुतः सुमख मा मृधस्कः ४
आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वा ङा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः ।
आ पञ्चाशता सुरथेभिरिन्द्रा ऽऽ षष्ट्या सप्तत्या सोमपेयम् ५
आशीत्या नवत्या याह्यर्वा ङा शतेन हरिभिरुह्यमानः ।
अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोम इन्द्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ६ ११९५
मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छा विश्वा हरी धुरि धिष्वा रथस्य ।
पुरुत्रा हि विहव्यो बभूथा ऽस्मिञ्छूर सवने मादयस्व ७
न म इन्द्रेण सख्यं वि योष दस्मभ्यमस्य दक्षिणा दुहीत ।
उप ज्येष्ठे वरूथे गभस्तौ प्रायेप्राये जिगीवांसः स्याम ८
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९

॥ ९८ ॥ (ऋ० २।१९।१-९)

अपाय्यस्यान्धसो मदाय मनीषिणः सुवानस्य प्रयसः ।
यस्मिन्निन्द्रः प्रदिवि वावृधान ओको दधे ब्रह्मण्यन्तश्च नरः १
अस्य मन्दानो मध्वो वज्रहस्तो ऽहिमिन्द्रो अर्णोवृतं वि वृश्चत् ।
प्र यद् वयो न स्वसराण्यच्छा प्रयांसि च नदीनां चक्रमन्त २ ११००

स माहिन इन्द्रो अर्णो अपां प्रैरयदहिहाच्छा समुद्रम्।
अजनयत् सूर्यं विदद् गा अक्तुनाह्नां वयुनानि साधत् ३
सो अप्रतीनि मनवे पुरूणी-न्द्रो दाशद् दाशुषे हन्ति वृत्रम्।
सद्यो यो नृभ्यो अतसाय्यो भूत् पस्पृधानेभ्यः सूर्यस्य सातौ ४
स सुन्वत इन्द्रः सूर्यमा-ऽऽ देवो रिणङ्मर्त्याय स्तवान्।
आ यद् रयिं गुहदवद्यमस्मै भरदंशं नैतशो दशस्यन् ५
स रन्धयत् सदिवः सारथये शुष्णमशुषं कुयवं कुत्साय।
दिवोदासाय नवतिं च नवे-न्द्रः पुरो व्यैरच्छम्बरस्य ६
एवा त इन्द्रोचथमहेम श्रवस्या न त्मना वाजयन्तः।
अश्याम तत् साप्तमाशुषाणा ननमो वधरदेवस्य पीयोः ७ ११०५
एवा ते गृत्समदाः शूर मन्मा-ऽवस्यवो न वयुनानि तक्षुः।
ब्रह्मण्यन्त इन्द्र ते नवीय इषमूर्जं सुक्षितिं सुम्नमश्युः ८
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९

॥ ९९ ॥ (ऋ० २।२०।१-९) त्रिष्टुप्; ३ विराड्रूपा।

वयं ते वय इन्द्र विद्धि षु णः प्र भरामहे वाजयुर्न रथम्।
विपन्यवो दीध्यतो मनीषा सुम्नमियक्षन्तस्त्वावतो नॄन् १
त्वं न इन्द्र त्वाभिरूती त्वायतो अभिष्टिपासि जनान्।
त्वमिनो दाशुषो वरूते-त्थाधीरभि यो नक्षति त्वा २
स नो युवेन्द्रो जोहूत्रः सखा शिवो नरामस्तु पाता।
यः शंसन्तं यः शशमानमूती पचन्तं च स्तुवन्तं च प्रणेषत् ३ १११०
तमु स्तुष इन्द्रं तं गृणीषे यस्मिन् पुरा वावृधुः शाशदुश्च।
स वस्वः कामं पीपरदियानो ब्रह्मण्यतो नूतनस्यायोः ४
सो अङ्गिरसामुचथा जुजुष्वान् ब्रह्मा तूतोदिन्द्रो गातुमिष्णन्।
मुष्णन्नुषसः सूर्येण स्तवा-नश्नस्य चिच्छिश्नथत् पूर्व्याणि ५
स ह श्रुत इन्द्रो नाम देव ऊर्ध्वो भुवन्मनुषे दस्मतमः।
अव प्रियमर्शसानस्य साह्वा-ञ्छिरो भरद् दासस्य स्वधावान् ६
स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः पुरंदरो दासीरैरयद् वि।
अजनयन् मनवे क्षामपश्च सत्रा शंसं यजमानस्य तूतोत् ७

तस्मै तवस्य१मनु दायि सत्रे—न्द्राय देवेभिरर्णसातौ ।
प्रति यदस्य वज्रं बाह्वोर्धु—र्हत्वी दस्यून् पुर आयसीर्नि तारीत् ८ १२१५
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९

॥ १०० ॥ (ऋ० २।२१।१-६) जगती; ६ त्रिष्टुप् ।

विश्वजिते धनजिते स्वर्जिते सत्राजिते नृजित उर्वराजिते ।
अश्वजिते गोजिते अब्जिते भरे—न्द्राय सोमं यजताय हर्यतम् १
अभिभुवेऽभिभङ्गाय वन्वते ऽषाळ्हाय सहमानाय वेधसे ।
तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे नम इन्द्राय वोचत २
सत्रासाहो जनभक्षो जनंसह—श्च्यवनो युध्मो अनु जोषमुक्षितः ।
वृतंचयः सहुरिर्विक्ष्वारित इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या ३
अनानुदो वृषभो दोधतो वधो गम्भीर ऋष्वो असमष्टकाव्यः ।
रध्रचोदः श्नथनो वीळितस्पृथु—रिन्द्रः सुयज्ञ उषसः स्वर्जनत् ४ १२२०
यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रिरे धियो हिन्वाना उशिजो मनीषिणः ।
अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत ५
इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ६

॥ १०१ ॥ (ऋ० २।२२।१-४) १ अष्टिः, २-३ अतिशक्वरी, ४ अष्टिः अतिशक्वरी वा ।

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्म—स्तृपत् सोममपिबद् विष्णुना सुतं यथावशत् ।
स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्चद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः १
अध त्विषीमाँ अभ्योजसा क्रिविं युधाभव—दा रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे ।
अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत सैनं सश्चद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः २
साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः ।
दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु सैनं सश्चद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ३ १२२५
तव त्यन्नर्यं नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।
यद् देवस्य शवसा प्रारिणा असुं रिणन्नपः ।
भुवद् विश्वमभ्यादेवमोजसा विदादूर्जं शतक्रतुर्विदादिषम् ४

॥ १०२ ॥ (ऋ० २।३०।१-५; ७-८; १०) [८ पूर्वाऽर्धर्चस्य सरस्वती] । त्रिष्टुप् ।

ऋतं देवाय कृण्वते सवित्र इन्द्रायाहिघ्ने न रमन्त आपः ।
अहरहर्यात्यक्तुरपां कियात्या प्रथमः सर्ग आसाम् १

यो वृत्राय सिनमत्राभरिष्यत् प्र तं जनित्री विदुष उवाच ।
पथो रदन्तीरनु जोषमस्मै दिवेदिवे धुनयो यन्त्यर्थम् २
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षे ऽधा वृत्राय प्र वधं जभार ।
मिहं वसान उप हीमदुद्रोत् तिग्मायुधो अजयच्छत्रुमिन्द्रः ३
बृहस्पते तपुषाश्नेव विध्य वृकद्वरसो असुरस्य वीरान् ।
यथा जघन्थ धृषता पुरा चि— देवा जहि शत्रुमस्माकमिन्द्र ४ १२३०
अव क्षिप दिवो अश्मानमुच्चा येन शत्रुं मन्दसानो निजूर्वाः ।
तोकस्य सातौ तनयस्य भूरे— रस्माँ अर्धं कृणुतादिन्द्र गोनाम् ५
न मा तमन्न श्रमन्नोत तन्द्र— न्न वोचाम मा सुनोतेति सोमम् ।
यो मे पृणाद् यो ददद् यो निबोधाद् यो मा सुन्वन्तमुप गोभिरायत ७
सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून् ।
त्यं चिच्छर्धन्तं तविषीयमाण— मिन्द्रो हन्ति वृषभं शण्डिकानाम् ८
अस्माकेभिः सत्वभिः शूर शूरै— र्वीर्या कृधि यानि ते कर्त्वानि ।
ज्योगभूवन्ननुधूपितासो हत्वी तेषामा भरा नो वसूनि १०

॥ १०३ ॥ (ऋ० २।४१।१०-१२) गायत्री ।

इन्द्रो अङ्ग महद् भय— मभी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः १० १२३५
इन्द्रश्च मृळयाति नो न नः पश्चादघं नशत् । भद्रं भवाति नः पुरः ११
इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत् । जेता शत्रून् विचर्षणिः १२ १२३७

॥ १०४ ॥ (ऋ० ३।३०।१-२२) (१२३८-१४६६) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि ।
तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनाना— मिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः १
न ते दूरे परमा चिद् रजां— स्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम् ।
स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ २
इन्द्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रातस्तुविकूर्मिर्ऋघावान् ।
यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु क्व१ त्या ते वृषभ वीर्याणि ३ १२४०
त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युता— न्येको वृत्रा चरसि जिघ्नमानः ।
तव द्यावापृथिवी पर्वतासो ऽनु व्रताय निमितेव तस्थुः ४
उताभये पुरुहूत श्रवोभि— रेको दृळ्हमवदो वृत्रहा सन् ।
इमे चिदिन्द्र रोदसी अपारे यत् संगृभ्णा मघवन् काशिरित् ते ५

प्र सू तं इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु शत्रून् ।
जहि प्रतीचो अनूचः पराचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु ६
यस्मै धायुरदधा मर्त्याया ऽभक्तं चिद् भजते गेह्यं१ सः ।
भद्रा तं इन्द्र सुमतिर्घृताची सहस्रदाना पुरुहूत रातिः ७
सहदानुं पुरुहूत क्षियन्त महस्तमिन्द्र सं पिणक् कुणारुम् ।
अभि वृत्रं वर्धमानं पियारु मपादमिन्द्र तवसा जघन्थ ८ ११४५
नि सामनामिषिरामिन्द्र भूमिं महीमपारां सदने ससत्थ ।
अस्तभ्नाद् द्यां वृषभो अन्तरिक्ष मर्षन्त्वापस्त्वयेह प्रसूताः ९
अलातृणो वल इन्द्र व्रजो गोः पुरा हन्तोर्भयमानो व्यार ।
सुगान् पथो अकृणोन्निरजे गाः प्रावन् वाणीः पुरुहूतं धमन्तीः १०
एको द्वे वसुमती समीची इन्द्र आ पप्रौ पृथिवीमुत द्याम् ।
उतान्तरिक्षादभि नः समीक इषो रथीः सयुजः शूर वाजान् ११
दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा दिवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः ।
सं यदानळध्वन आदिदश्वै र्विमोचनं कृणुते तत् त्वस्य १२
दिदृक्षन्त उषसो यामन्नक्तो र्विवस्वत्या महि चित्रमनीकम् ।
विश्वे जानन्ति महिना यदागा दिन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि १३ ११५०
महि ज्योतिर्निहितं वक्षणा स्वामा पक्वं चरति बिभ्रती गौः ।
विश्वं स्वाद्म संभृतमुस्रियायां यत् सीमिन्द्रो अदधाद् भोजनाय १४
इन्द्र दृह्य यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः ।
दुर्मायवो दुरेवा मर्त्यासो निषङ्गिणो रिपवो हन्त्वासः १५
सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रै र्जही न्येष्वशनिं तपिष्ठाम् ।
वृश्चेमधस्ताद् वि रुजा सहस्व जहि रक्षो मघवन् रन्धयस्व १६
उद् वृह रक्षः सहमूलमिन्द्र वृश्चा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि ।
आ कीवतः सललूकं चकर्थ ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिमस्य १७
स्वस्तये वाजिभिश्च प्रणेतः सं यन्महीरिष आसत्सि पूर्वीः ।
रायो वन्तारो बृहतः स्यामा ऽस्मे अस्तु भग इन्द्र प्रजावान् १८ ११५५
आ नो भर भगमिन्द्र द्युमन्तं नि ते देष्णस्य धीमहि प्ररेके ।
ऊर्व इव पप्रथे कामो अस्मे तमा पृण वसुपते वसूनाम् १९
इमं कामं मन्दया गोभिरश्वै श्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च ।
स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् २०

आ नो गोत्रा दर्द्दहि गोपते गाः   समस्मभ्यं सनयो यन्तु वाजाः ।
दिवक्षा असि वृषभ सत्यशुष्मो   ऽस्मभ्यं सु मघवन् बोधि गोदाः   २१
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र- मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु   घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्   २२

॥ १०५ ॥ (ऋ० ३।३१।१-२२) कुशिक ऐषीरथिः, गाथिनो विश्वामित्रो वा ।

शासद् वह्निर्दुहितुर्नप्त्यं गाद्   विद्वाँ ऋतस्य दीधितिं सपर्यन् ।
पिता यत्र दुहितुः सेकमृञ्जन्   त्सं शग्म्येन मनसा दधन्वे   १   १२६०
न जामये तान्वो रिक्थमारैक्   चकार गर्भं सनितुर्निधानम् ।
यदी मातरो जनयन्त वह्नि- मन्यः कर्ता सुकृतोरन्य ऋन्धन्   २
अग्निर्जज्ञे जुह्वा३ रेजमानो   महस्पुत्राँ अरुषस्य प्रयक्षे ।
महान् गर्भो मह्या जातमेषां   मही प्रवृद्धर्यश्वस्य यज्ञैः   ३
अभि जैत्रीरसचन्त स्पृधानं   महि ज्योतिस्तमसो निरजानन् ।
तं जानतीः प्रत्युदायन्नुषासः   पतिर्गवामभवदेक इन्द्रः   ४
वीळौ सतीरभि धीरा अतृन्दन्   प्राचाहिन्वन् मनसा सप्त विप्राः ।
विश्वामविन्दन् पथ्यामृतस्य   प्रजानन्नित्ता नमसा विवेश   ५
विदद् यदी सरमा रुग्णमद्रे- र्महि पाथः पूर्व्यं सध्र्यक्कः ।
अग्रं नयत् सुपद्यक्षराणा- मच्छा रवं प्रथमा जानती गात्   ६   १२६५
अगच्छदु विप्रतमः सखीय- न्नसूदयत् सुकृते गर्भमद्रिः ।
ससान मर्यो युवभिर्मखस्य- न्नथाभवदङ्गिराः सद्यो अर्चन्   ७
सतःसतः प्रतिमानं पुरोभू- र्विश्वा वेद जनिमा हन्ति शुष्णम् ।
प्र णो दिवः पदवीर्गव्युरर्चन्   त्सखा सखीँरमुञ्चन्निरवद्यात्   ८
नि गव्यता मनसा सेदुरर्कैः   कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम्
इदं चिन्नु सदनं भूर्येषां   येन मासाँ असिषासन्नृतेन   ९
संपश्यमाना अमदन्नभि स्वं   पयः प्रत्नस्य रेतसो दुघानाः ।
वि रोदसी अतपद् घोष एषां   जाते निःष्ठामदधुर्गोषु वीरान्   १०
स जातेभिर्वृत्रहा सेदु हव्यै- रुदुस्रिया असृजदिन्द्रो अर्कैः ।
उरूच्यस्मै घृतवद् भरन्ती   मधु स्वाद्म दुदुहे जेन्या गौः   ११   १२७०
पित्रे चिच्चक्रुः सदनं समस्मै   महि त्विषीमत् सुकृतो वि हि ख्यन् ।
विष्कभ्नन्तः स्कम्भनेना जनित्री   आसीना ऊर्ध्वं रभसं वि मिन्वन्   १२

मही यदि धिषणा शिश्नथे धात् सद्योवृधं विभ्वं रोदस्योः ।
गिरो यस्मिन्ननवद्याः समीची-र्विश्वा इन्द्राय तविषीरनुत्ताः १३
मह्या ते सख्यं वश्मि शक्ती-रा वृत्रघ्ने नियुतो यन्ति पूर्वीः ।
महि स्तोत्रमव आगन्म सूरे-रस्माकं सु मघवन् बोधि गोपाः १४
महि क्षेत्रं पुरु श्चन्द्रं विविद्वा-नादित् सखिभ्यश्चरथं समैरत् ।
इन्द्रो नृभिरजनद् दीद्यानः साकं सूर्यमुषसं गातुमग्निम् १५
अपश्चिदेष विभ्वो३ दमूनाः प्र सध्रीचीरसृजद् विश्वश्चन्द्राः ।
मध्वः पुनानाः कविभिः पवित्रै-र्द्युभिर्हिन्वन्त्यक्तुभिर्धनुत्रीः १६ ११७५
अनु कृष्णे वसुधिती जिहाते उभे सूर्यस्य मंहना यजत्रे ।
परि यत् ते महिमानं वृजध्यै सखाय इन्द्र काम्या ऋजिप्याः १७
पतिर्भव वृत्रहन्त्सूनृतानां गिरां विश्वायुर्वृषभो वयोधाः ।
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभि-र्महान् महीभिरूतिभिः सरण्यन् १८
तमङ्गिरस्वन्नमसा सपर्यन् नव्यं कृणोमि सन्यसे पुराजाम् ।
द्रुहो वि याहि बहुला अदेवीः स्वश्च नो मघवन्त्सातये धाः १९
मिहः पावकाः प्रतता अभूवन् त्स्वस्ति नः पिपृहि पारमासाम् ।
इन्द्र त्वं रथिरः पाहि नो रिषो मक्षूमक्षू कृणुहि गोजितो नः २०
अदेदिष्ट वृत्रहा गोपतिर्गा अन्तः कृष्णाँ अरुषैर्धामभिर्गात् ।
प्र सूनृता दिशमान ऋतेन दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः २१ ११८०
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र-मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् २२

॥ १०६ ॥ (ऋ० ३।३२।१-१७)

इन्द्र सोमं सोमपते पिबेमं माध्यंदिनं सवनं चारु यत् ते ।
प्रप्रुथ्या शिप्रे मघवन्नृजीषिन् विमुच्या हरी इह मादयस्व १
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र शुक्रं पिबा सोमं ररिमा ते मदाय ।
ब्रह्मकृता मारुतेना गणेन सजोषा रुद्रैस्तृपदा वृषस्व २
ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्ध-न्नर्चन्त इन्द्र मरुतस्त ओजः ।
माध्यंदिने सवने वज्रहस्त पिबा रुद्रेभिः सगणः सुशिप्र ३
त इन्न्वस्य मधुमद् विविप्र इन्द्रस्य शर्धो मरुतो य आसन् ।
येभिर्वृत्रस्येषितो विवेदा-ऽमर्मणो मन्यमानस्य मर्म ४ ११८५

मनुष्वदिन्द्र सवनं जुषाणः　पिबा सोमं शश्वते वीर्याय ।
स आ ववृत्स्व हर्यश्व यज्ञैः　सरण्युभिरपो अर्णा सिसर्षि　५
त्वमपो यद्ध वृत्रं जघन्वाँ　अत्याँ इव प्रासृजः सर्तवाजौ ।
शयानमिन्द्र चरता वधेन　वव्रिवांसं परि देवीरदेवम्　६
यजाम इन्नमसा वृद्धमिन्द्रं　बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।
यस्य प्रिये ममतुर्यज्ञियस्य　न रोदसी महिमानं ममाते　७
इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि　व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे ।
दाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां　जजान सूर्यमुषसं सुदंसाः　८
अद्रोघ सत्यं तव तन्महित्वं　सद्यो यज्जातो अपिबो ह सोमम् ।
न द्याव इन्द्र तवसस्त ओजो　नाहा न मासाः शरदो वरन्त　९　११९०
त्वं सद्यो अपिबो जात इन्द्र　मदाय सोमं परमे व्योमन् ।
यद्ध द्यावापृथिवी आविवेशी—रथाभवः पूर्व्यः कारुधायाः　१०
अहन्नहिं परिशयानमर्णं　ओजायमानं तुविजात तव्यान् ।
न ते महित्वमनु भूदध द्यौ—र्यदन्यया स्फिग्याऽऽ क्षामवस्थाः　११
यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो भू—दुत प्रियः सुतसोमो मियेधः ।
यज्ञेन यज्ञमव यज्ञियः सन्　यज्ञस्ते वज्रमहिहत्य आवत्　१२
यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे अर्वा—गैनं सुम्नाय नव्यसे ववृत्याम् ।
यः स्तोमेभिर्वावृधे पूर्व्येभि—र्यो मध्यमेभिरुत नूतनेभिः　१३
विवेष यन्मा धिषणा जजान　स्तवै पुरा पार्यादिन्द्रमह्नः ।
अंहसो यत्र पीपरद् यथा नो　नावेव यान्तमुभये हवन्ते　१४　११९५
आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा　सेक्तेव कोशं सिसिचे पिबध्यै ।
समु प्रिया आववृत्रन् मदाय　प्रदक्षिणिदभि सोमास इन्द्रम्　१५
न त्वा गभीरः पुरुहूत सिन्धु—र्नाद्रयः परि षन्तो वरन्त ।
इत्था सखिभ्य इषितो यदिन्द्रा—ऽऽदृळ्हं चिदरुजो गव्यमूर्वम्　१६
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु　घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्　१७

॥ १०७ ॥ (ऋ० ३।३३।६-७)

इन्द्रो अस्माँ अरदद् वज्रबाहु—रपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम् ।
देवोऽनयत् सविता सुपाणि—स्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः　६

प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं१ तदिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत् ।
वि वज्रेण परिषदो जघाना ऽऽयन्नापोऽयनमिच्छमानाः ७ १३००

॥ १०८ ॥ (ऋ० ३।३४।१-११)

इन्द्रः पूर्भिदातिरद् दासमर्कै र्विददू वसुर्दयमानो वि शत्रून् ।
ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद् रोदसी उभे १
मखस्य ते तविषस्य प्र जूति मियर्मि वाचममृताय भूषन् ।
इन्द्र क्षितीनामसि मानुषीणां विशां दैवीनामुत पूर्वयावा २
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद् वर्पणीतिः ।
अहन् व्यंसमुशधग्वने ष्वाविर्धेना अकृणोद् राम्याणाम् ३
इन्द्रः स्वर्षा जनयन्नहानि जिगायोशिग्भिः पृतना अभिष्टिः ।
प्रारोचयन्मनवे केतुमह्ना मविन्दज्ज्योतिर्बृहते रणाय ४
इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद् दधानो नर्या पुरूणि ।
अचेतयद् धिय इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम् ५ १३०५
महो महानि पनयन्त्यस्ये न्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ।
वृजनेन वृजिनान्त्सं पिपेष मायाभिर्दस्यूँरभिभूत्योजाः ६
युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिप्राः ।
विवस्वतः सदने अस्य तानि विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति ७
सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ससवांसं स्वरपश्च देवीः ।
ससान यः पृथिवीं द्यामुतेमा मिन्द्रं मदन्त्यनु धीरणासः ८
ससानात्याँ उत सूर्यं ससाने न्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम् ।
हिरण्ययमुत भोगं ससान हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्णमावत् ९
इन्द्र ओषधीरसनोदहानि वनस्पतीँरसनोदन्तरिक्षम् ।
बिभेद वलं नुनुदे विवाचो ऽथाभवद् दमिताभिक्रतूनाम् १० १३१०
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ११

॥ १०९ ॥ (ऋ० ३।३५।१-११)

तिष्ठा हरी रथ आ युज्यमाना याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ ।
पिबास्यन्धो अभिसृष्टो अस्मे इन्द्र स्वाहा ररिमा ते मदाय १
उपाजिरा पुरुहूताय सप्ती हरी रथस्य धूर्ष्वा युनज्मि ।
द्रवद् यथा संभृतं विश्वतश्चि दुपेमं यज्ञमा वहात इन्द्रम् २

उपो नयस्व वृषणा तपुष्पो- तेमव त्वं वृषभ स्वधावः ।
ग्रसेतामश्वा वि मुचेह शोणा दिवेदिवे सदृशीरद्धि धानाः । ३
ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू ।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वाँ उप याहि सोमम् ४ १३१५
मा ते हरी वृषणा वीतपृष्ठा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।
अत्यायाहि शश्वतो वयं ते ऽरं सुतेभिः कृणवाम सोमैः ५
तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् शश्वत्तमं सुमना अस्य पाहि ।
अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्या दधिष्वेमं जठर इन्दुमिन्द्र ६
स्तीर्णं ते बर्हिः सुत इन्द्र सोमः कृता धाना अत्तवे ते हरिभ्याम् ।
तदोकसे पुरुशाकाय वृष्णे मरुत्वते तुभ्यं राता हवींषि ७
इमं नरः पर्वतास्तुभ्यमापः समिन्द्र गोभिर्मधुमन्तमक्रन् ।
तस्यागत्या सुमना ऋष्व पाहि प्रजानन् विद्वान् पथ्या३ अनु स्वाः ८
याँ आभजो मरुत इन्द्र सोमे ये त्वामवर्धन्नभवन् गणस्ते ।
तेभिरेतं सजोषा वावशानो३ ऽग्नेः पिब जिह्वया सोममिन्द्र ९ १३२०
इन्द्र पिब स्वधया चित् सुतस्या- ऽग्नेर्वा पाहि जिह्वया यजत्र ।
अध्वर्योर्वा प्रयतं शक्र हस्ता- द्धोतुर्वा यज्ञं हविषो जुषस्व १०
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र- मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ११

॥ ११० ॥ (ऋ० ३।३६।१-११) [१० घोर आङ्गिरसः ।]

इमामू षु प्रभृतिं सातये धाः शश्वच्छश्वदूतिभिर्यादमानः ।
सुतेसुते वावृधे वर्धनेभि- र्यः कर्मभिर्महद्भिः सुश्रुतो भूत् १
इन्द्राय सोमाः प्रदिवो विदाना ऋभुर्येभिर्वृषपर्वा विहायाः ।
प्रयम्यमानान् प्रति षू गृभाये- न्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्णः २
पिबा वर्धस्व तव घा सुतास इन्द्र सोमासः प्रथमा उतेमे ।
यथापिबः पूर्व्याँ इन्द्र सोमाँ एवा पाहि पन्यो अद्या नवीयान् ३ १३२५
महाँ अमत्रो वृजने विरप्श्यु१- ग्रं शवः पत्यते धृष्ण्वोजः ।
नाह विव्याच पृथिवी चनैनं यत् सोमासो हर्यश्वममन्दन् ४
महाँ उग्रो वावृधे वीर्याय समाचक्रे वृषभः काव्येन ।
इन्द्रो भगो वाजदा अस्य गावः प्र जायन्ते दक्षिणा अस्य पूर्वीः ५

प्र यत् सिन्धवः प्रसवं यथाय—न्नापः समुद्रं रथ्येव जग्मुः ।
अतश्चिदिन्द्रः सदसो वरीयान् यदीं सोमः पृणति दुग्धो अंशुः ६
समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तः ।
अंशुं दुहन्ति हस्तिनो भरित्रै—र्मध्वः पुनन्ति धारया पवित्रैः ७
ह्रदा इव कुक्षयः सोमधानाः समी विव्याच सवना पुरूणि ।
अन्ना यदिन्द्रः प्रथमा व्याश वृत्रं जघन्वाँ अवृणीत सोमम् ८ १३३०
आ तू भर माकिरेतत् परि ष्ठाद् विद्मा हि त्वा वसुपतिं वसूनाम् ।
इन्द्र यत् ते माहिनं दत्रम—स्त्यस्मभ्यं तद्धर्यश्व प्र यन्धि ९
अस्मे प्र यन्धि मघवन्नृजीषि—न्निन्द्र रायो विश्ववारस्य भूरेः ।
अस्मे शतं शरदो जीवसे धा अस्मे वीराञ्छश्वत इन्द्र शिप्रिन् १०
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ११

॥ १११ ॥ (ऋ० ३।३७।१-११) गायत्री, ११ अनुष्टुप् ।

वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च । इन्द्र त्वा वर्तयामसि १
अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो । इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः २ १३३५
नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे । इन्द्राभिमातिषाह्ये ३
पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि । इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ४
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे । भरेषु वाजसातये ५
वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो । इन्द्र वृत्राय हन्तवे ६
द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च । इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु ७ १३४०
शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् । इन्द्र सोमं शतक्रतो ८
इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आ वृणे ९
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् । उत् ते शुष्मं तिरामसि १०
अर्वावतो न आ ग—ह्यथो शक्र परावतः ।
उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि ११

॥ ११२ ॥ (ऋ० ३।३८।१-१०)

[प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा; तावुभावपि वा गाथिनो विश्वामित्रो वा ।] त्रिष्टुप् ।
अभि तष्टेव दीधया मनीषा—मत्यो न वाजी सुधुरो जिहानः ।
अभि प्रियाणि मर्मृशत् पराणि कवीँरिच्छामि संदृशे सुमेधाः १ १३४५

इनोत पृच्छ जनिमा कवीनां मनोधृतः सुकृतस्तक्षत द्याम् ।
इमा उ ते प्रण्यो३ वर्धमाना मनोवाता अध नु धर्मणि ग्मन् २
नि षीमिदत्र गुह्या दधाना उत क्षत्राय रोदसी समञ्जन् ।
सं मात्राभिर्ममिरे येमुरुर्वी अन्तर्मही समृते धायसे धुः ३
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूष ञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः ।
महत् तद् वृष्णो असुरस्य नामा ऽऽ विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ ४
असूत पूर्वो वृषभो ज्यायाँ निमा अस्य शुरुधः सन्ति पूर्वीः ।
दिवो नपाता विदथस्य धीभिः क्षत्रं राजाना प्रदिवो दधाथे ५
त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि ।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान् व्रते गन्धर्वाँ अपि वायुकेशान् ६ १३५०
तदिन्न्वस्य वृषभस्य धेनो रा नामभिर्ममिरे सक्म्यं गोः ।
अन्यदन्यदसुर्यं१ वसाना नि मायिनो ममिरे रूपमस्मिन् ७
तदिन्न्वस्य सवितुर्नकिर्मे हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत् ।
आ सुष्टुती रोदसी विश्वमिन्वे अपीव योषा जनिमानि वव्रे ८
युवं प्रत्नस्य साधथो महो यद् दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम् ।
गोपाजिह्वस्य तस्थुषो विरूपा विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि ९
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् १०

॥ ११३ ॥ (ऋ० ३।३९।१-९)

इन्द्रं मतिर्हृद आ वच्यमाना ऽच्छा पतिं स्तोमतष्टा जिगाति ।
या जागृविर्विदथे शस्यमाने न्द्र यत् ते जायते विद्धि तस्य १ १३५५
दिवश्चिदा पूर्व्या जायमाना वि जागृविर्विदथे शस्यमाना ।
भद्रा वस्त्राण्यर्जुना वसाना सेयमस्मे सनजा पित्र्या धीः २
यमा चिदत्र यमसूरसूत जिह्वाया अग्रं पतदा ह्यस्थात् ।
वपूंषि जाता मिथुना सचेते तमोहना तपुषो बुध्न एता ३
नकिरेषां निन्दिता मर्त्येषु ये अस्माकं पितरो गोषु योधाः ।
इन्द्र एषां दृंहिता माहिनावा नुद् गोत्राणि ससृजे दंसनावान् ४
सखा ह यत्र सखिभिर्नवग्वै रभिज्ञ्वा सत्वभिर्गा अनुग्मन् ।
सत्यं तदिन्द्रो दशभिर्दशग्वैः सूर्यं विवेद तमसि क्षियन्तम् ५

इन्द्रो मधु संभृतमुस्रियायां पद्वद् विवेद शफवन्नमे गोः ।
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु हस्ते दधे दक्षिणे दक्षिणावान् ६ १३६०
ज्योतिर्वृणीत तमसो विजान न्नारे स्याम दुरितादभीके ।
इमा गिरः सोमपाः सोमवृद्ध जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः ७
ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु ष्या दारे स्याम दुरितस्य भूरेः ।
भूरि चिद्धि तुजतो मर्त्यस्य सुपारासो वसवो बर्हणावत् ८
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ९

॥ ११४ ॥ (ऋ० ३।४०।१-९) गायत्री ।

इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे । स पाहि मध्वो अन्धसः १
इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत । पिबा वृषस्व तातृपिम् २ १३६५
इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः । तिर स्तवान विश्पते ३
इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते । क्षयं चन्द्रास इन्दवः ४
दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम् । तव द्युक्षास इन्दवः ५
गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे । इन्द्र त्वादातमिद् यशः ६
अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता । पीत्वी सोमस्य वावृधे ७ १३७०
अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन् । इमा जुषस्व नो गिरः ८
यदन्तरा परावत मर्वावतं च हूयसे । इन्द्रेह तत आ गहि ९

॥ ११५ ॥ (ऋ० ३।४१।१-९)

आ तू न इन्द्र मद्र्य ग्घुवानः सोमपीतये । हरिभ्यां याह्यद्रिवः १
सत्तो होता न ऋत्विय स्तिस्तिरे बर्हिरानुषक् । अयुञ्जन् प्रातरद्रयः २
इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद । वीहि शूर पुरोळाशम् ३ १३७५
रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन् । उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः ४
मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम् । इन्द्रं वत्सं न मातरः ५
स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे । न स्तोतारं निदे करः ६
वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे । उत त्वमस्मयुर्वसो ७
मारे अस्मद् वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ् याहि । इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह ८ १३८०
अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना । घृतस्नू बर्हिरासदे ९

॥ ११६ ॥ (ऋ० ३।४२।१-९)

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम् । हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः १

तमिन्द्र मदमा गहि बर्हिःष्ठां ग्रावभिः सुतम् । कुविन्न्वस्य तृप्णवः २
इन्द्रमित्था गिरो ममाऽच्छागुरिषिता इतः । आवृते सोमपीतये ३
इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे । उक्थेभिः कुविदागमत् ४ १३८५
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान् दधिष्व शतक्रतो । जठरे वाजिनीवसो ५
विद्मा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधृषं कवे । अधा ते सुम्नमीमहे ६
इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब । आगत्या वृषभिः सुतम् ७
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये३ सोमं चोदामि पीतये । एष रारन्तु ते हृदि ८
त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे । कुशिकासो अवस्यवः ९ १३९०

॥ ११७ ॥ (ऋ० ३।४३।१-८) त्रिष्टुप् ।

आ याह्यर्वाङुप वन्धुरेष्ठास्तवेदनु प्रदिवः सोमपेयम् ।
प्रिया सखाया वि मुचोप बर्हिस्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते १
आ याहि पूर्वीरति चर्षणीराँ अर्य आशिष उप नो हरिभ्याम् ।
इमा हि त्वा मतयः स्तोमतष्टा इन्द्र हवन्ते सख्यं जुषाणाः २
आ नो यज्ञं नमोवृधं सजोषा इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूयम् ।
अहं हि त्वा मतिभिर्जोहवीमि घृतप्रयाः सधमादे मधूनाम् ३
आ च त्वामेता वृषणा वहातो हरी सखाया सुधुरा स्वङ्गा ।
धानावदिन्द्रः सवनं जुषाणः सखा सख्युः शृणवद् वन्दनानि ४
कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद् राजानं मघवन्नृजीषिन् ।
कुविन्म ऋषिं पपिवांसं सुतस्य कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः ५ १३९५
आ त्वा बृहन्तो हरयो युजाना अर्वागिन्द्र सधमादो वहन्तु ।
प्र ये द्विता दिव ऋञ्जन्त्याताः सुसंमृष्टासो वृषभस्य मूराः ६
इन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्ण आ यं ते श्येन उशते जभार ।
यस्य मदे च्यावयसि प्र कृष्टीर्यस्य मदे अप गोत्रा ववर्थ ७
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ८

॥ ११८ ॥ (ऋ० ३।४४।१-५) बृहती ।

अयं ते अस्तु हर्यतः सोम आ हरिभिः सुतः ।
जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ गह्या तिष्ठ हरितं रथम् १
हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्यं हर्यन्नरोचयः ।
विद्वांश्चिकित्वान् हर्यश्व वर्धस इन्द्र विश्वा अभि श्रियः २ १४००

द्यामिन्द्रो हरिधायसं पृथिवीं हरिवर्पसम् ।
अधारयद्धरितोर्भूरि भोजनं ययोरन्तर्हरिश्चरत् १
जज्ञानो हरितो वृषा विश्वमा भाति रोचनम् ।
हर्यश्वो हरितं धत्त आयुध–मा वज्रं बाह्वोर्हरिम् ४
इन्द्रो हर्यन्तमर्जुनं वज्रं शुक्रैरभीवृतम् ।
अपावृणोद्धरिभिरद्रिभिः सुत–मुद्‌ गा हरिभिराजत ५

॥ ११९ ॥ (ऋ० ३।४५।१-५)

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभि–र्याहि मयूररोमभिः ।
मा त्वा के चिन्नि यमन्विं न पाशिनो ऽति धन्वेव ताँ इहि १
वृत्रखादो वलंरुजः पुरां दर्मो अपामजः ।
स्थाता रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृळ्हा चिदारुजः २ १४०५
गम्भीराँ उदधीँरिव क्रतुं पुष्यसि गा इव ।
प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा ह्रदं कुल्या इवाशत ३
आ नस्तुजं रयिं भरा–ऽशं न प्रतिजानते ।
वृक्षं पक्वं फलमङ्कीव धूनुही–न्द्र संपारणं वसु ४
स्वयुरिन्द्र स्वराळसि स्मद्दिष्टिः स्वयशस्तरः ।
स वावृधान ओजसा पुरुष्टुत भवा नः सुश्रवस्तमः ५

॥ १२० ॥ (ऋ० ३।४६।१-५) त्रिष्टुप् ।

युध्मस्य ते वृषभस्य स्वराज उग्रस्य यूनः स्थविरस्य घृष्वेः ।
अजूर्यतो वज्रिणो वीर्याऽणी–न्द्र श्रुतस्य महतो महानि १
महाँ असि महिष वृष्ण्येभि–र्धनस्पृदुग्र सहमानो अन्यान् ।
एको विश्वस्य भुवनस्य राजा स योधया च क्षयया च जनान् २ १४१०
प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो अप्रतीतः ।
प्र मज्मना दिव इन्द्रः पृथिव्याः प्रोरोर्महो अन्तरिक्षादृजीषी ३
उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं विश्वव्यचसमवतं मतीनाम् ।
इन्द्रं सोमासः प्रदिवि सुतासः समुद्रं न स्रवत आ विशन्ति ४
यं सोममिन्द्र पृथिवीद्यावा गर्भं न माता बिभृतस्त्वाया ।
तं ते हिन्वन्ति तमु ते मृजन्त्य–ध्वर्यवो वृषभ पातवा उ ५

॥ १११ ॥ (ऋ० ३।४७।१-५)

मुरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणाय   पिबा सोममनुष्वधं मदाय ।
आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मिं   त्वं राजासि प्रदिवः सुतानाम् १
सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः   सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।
जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वा—ऽथाभयं कृणुहि विश्वतो नः २ १४१५
उत ऋतुभिर्ऋतुपाः पाहि सोम—मिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः ।
याँ आभजो मरुतो ये त्वा   ऽन्वहन् वृत्रमदधुस्तुभ्यमोजः ३
ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन्   ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ ।
ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः   पिबेन्द्र सोमं सगणो मरुद्भिः ४
मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान—मकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् ।
विश्वासाहमवसे नूतनायो—ग्रं सहोदामिह तं हुवेम ५

॥ ११२ ॥ (ऋ० ३।४८।१-५)

सद्यो ह जातो वृषभः कनीनः   प्रभर्तुमावदन्धसः सुतस्य ।
साधोः पिब प्रतिकामं यथा ते   रसाशिरः प्रथमं सोम्यस्य १
यज्जायथास्तदहरस्य कामे—ऽंशोः पीयूषमपिबो गिरिष्ठाम् ।
तं ते माता परि योषा जनित्री   महः पितुर्दम आसिञ्चदग्रे २ १४२०
उपस्थाय मातरमन्नमैट्ट   तिग्ममपश्यदभि सोममूधः ।
प्रयावयन्नचरद् गृत्सो अन्यान्   महानि चक्रे पुरुधप्रतीकः ३
उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजा   यथावशं तन्वं चक्र एषः ।
त्वष्टारमिन्द्रो जनुषाभिभूया—ऽऽमुष्या सोममपिबच्चमूषु ४
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु   घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५

॥ ११३ ॥ (ऋ० ३।४९।१-५)

शंसा महामिन्द्रं यस्मिन् विश्वा   आ कृष्टयः सोमपाः काममव्यन् ।
यं सुक्रतुं धिषणे विभ्वतष्टं   घनं वृत्राणां जनयन्त देवाः १
यं नु नकिः पृतनासु स्वराजं   द्विता तरति नृतमं हरिष्ठाम् ।
इनतमः सत्वभिर्यो ह शूषैः   पृथुज्रया अमिनादायुर्दस्योः २ १४२५
सहावा पृत्सु तरणिर्नार्वा   व्यानशी रोदसी मेहनावान् ।
भगो न कारे हव्यो मतीनां   पितेव चारुः सुहवो वयोधाः ३

धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वो रथो न वायुर्वसुभिर्नियुत्वान् ।
क्षपां वस्ता जनिता सूर्यस्य विभक्ता भागं धिषणेव वाजम् ४
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५
॥ १२४ ॥ (ऋ० ३।५०।१-५)

इन्द्रः स्वाहा पिबतु यस्य सोम आगत्या तुम्रो वृषभो मरुत्वान् ।
ओरुव्यचाः पृणतामेभिरन्नै—रास्य हविस्तन्वः कामसृध्याः १
आ ते सपर्यू जवसे युनज्मि ययोरनु प्रदिवः श्रुष्टिमावः ।
इह त्वा धेयुर्हरयः सुशिप्र पिबा त्वस्य सुषुतस्य चारोः २ १४३०
गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे सुपार—मिन्द्रं ज्यैष्ठ्याय धायसे गृणानाः ।
मन्दानः सोमं पपिवाँ ऋजीषिन् त्समस्मभ्यं पुरुधा गा इषण्य ३
इमं कामं मन्दया गोभिरश्वै—श्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च ।
स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् ४
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५
॥ १२५ ॥ (ऋ० ३।५१।१-१२) त्रिष्टुप्, १-३ जगती, १०-१२ गायत्री।

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्य—मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत ।
वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभि—रमर्त्यं जरमाणं दिवेदिवे १
शतक्रतुमर्णवं शाकिनं नरं गिरो म इन्द्रमुप यन्ति विश्वतः ।
वाजसनिं पूर्भिदं तूर्णिमप्तुरं धामसाचमभिषाचं स्वर्विदम् २ १४३५
आकरे वसोर्जरिता पनस्यते ऽनेहसः स्तुभ इन्द्रो दुवस्यति ।
विवस्वतः सदन आ हि पिप्रिये सत्रासाहमभिमातिहनं स्तुहि ३
नृणामु त्वा नृतमं गीर्भिरुक्थै—रभि प्र वीरमर्चता सबाधः ।
सं सहसे पुरुमायो जिहीते नमो अस्य प्रदिव एक ईशे ४
पूर्वीरस्य निष्षिधो मर्त्येषु पुरू वसूनि पृथिवी बिभर्ति ।
इन्द्राय द्याव ओषधीरुतापो रयिं रक्षन्ति जीरयो वनानि ५
तुभ्यं ब्रह्माणि गिर इन्द्र तुभ्यं सत्रा दधिरे हरिवो जुषस्व ।
बोध्यापिरवसो नूतनस्य सखे वसो जरितृभ्यो वयो धाः ६
इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबः सुतस्य ।
तव प्रणीती तव शूर शर्म—न्ना विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः ७ १४४०

स वावशान इह पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः सुतं नः ।
जातं यत् त्वा परि देवा अभूषन् महे भराय पुरुहूत विश्वे ८
अप्तूर्ये मरुत आपिरेषो ऽमन्दन्निन्द्रमनु दातिवाराः ।
तेभिः साकं पिबतु वृत्रखादः सुतं सोमं दाशुषः स्वे सधस्थे ९
इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते । पिबा त्व१स्य गिर्वणः १०
यस्ते अनु स्वधामसत् सुते नि यच्छ तन्वम् । स त्वा ममत्तु सोम्यम् ११
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः । प्र बाहू शूर राधसे १२ १४४५

॥ ११६ ॥ (ऋ० ३।५२।१-८) त्रिष्टुप्, १-४ गायत्री, ६ जगती ।

धानावन्तं करम्भिण मपूपवन्तमुक्थिनम् । इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः १
पुरोळाशं पचत्यं जुषस्वेन्द्रा गुरस्व च । तुभ्यं हव्यानि सिस्रते २
पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः । वधूयुरिव योषणाम् ३
पुरोळाशं सनश्रुत प्रातःसावे जुषस्व नः । इन्द्र क्रतुर्हि ते बृहन् ४
माध्यंदिनस्य सवनस्य धानाः पुरोळाशमिन्द्र कृष्वेह चारुम् ।
प्र यत् स्तोता जरिता तूर्ण्यर्थो वृषायमाण उप गीर्भिरीट्टे ५ १४५०
तृतीये धानाः सवने पुरुष्टुत पुरोळाशमाहुतं मामहस्व नः ।
ऋभुमन्तं वाजवन्तं त्वा कवे प्रयस्वन्त उप शिक्षेम धीतिभिः ६
पूषण्वते ते चकृमा करम्भं हरिवते हर्यश्वाय धानाः ।
अपूपमद्धि सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ७
प्रति धाना भरत तूयमस्मै पुरोळाशं वीरतमाय नृणाम् ।
दिवेदिवे सदृशीरिन्द्र तुभ्यं वर्धन्तु त्वा सोमपेयाय धृष्णो ८

॥ ११७ ॥ (ऋ० ३।५३।१-१४) त्रिष्टुप्; १० जगती, ११ अनुष्टुप्, १३ गायत्री ।

तिष्ठा सु कं मघवन् मा परा गाः सोमस्य नु त्वा सुषुतस्य यक्षि ।
पितुर्न पुत्रः सिचमा रभे त इन्द्र स्वादिष्ठया गिरा शचीवः २
शंसावाध्वर्यो प्रति मे गृणीही न्द्राय वाहः कृणवाव जुष्टम् ।
एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदा ऽथा च भूदुक्थमिन्द्राय शस्तम् ३ १४५५
जायेदस्तं मघवन्त्सेदु योनि स्तदित् त्वा युक्ता हरयो वहन्तु ।
यदा कदा च सुनवाम सोम मग्निष्ट्वा दूतो धन्वात्यच्छ ४
परा याहि मघवन्ना च याही न्द्र भ्रातरुभयत्रा ते अर्थम् ।
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो रासभस्य ५

अपाः सोममस्तमिन्द्र प्र याहि कल्याणीर्जाया सुरणं गृहे ते।
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत् ६
इमे भोजा अङ्गिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ७
रूपंरूपं मघवा बोभवीति मायाः कृण्वानस्तन्वं परि स्वाम्।
त्रिर्यद् दिवः परि मुहूर्तमागात् स्वैर्मन्त्रैरनृतुपा ऋतावा ८ १४६०
महाँ ऋषिर्देवजा देवजूतो ऽस्तभ्नात् सिन्धुमर्णवं नृचक्षाः।
विश्वामित्रो यदवहत् सुदास—मप्रियायत कुशिकेभिरिन्द्रः ९
हंसा इव कृणुथ श्लोकमद्रिभि—र्मदन्तो गीर्भिरध्वरे सुते सचा।
देवेभिर्विप्रा ऋषयो नृचक्षसो वि पिबध्वं कुशिकाः सोम्यं मधु १०
उप प्रेत कुशिकाश्चेतयध्व—मश्वं राये प्र मुञ्चता सुदासः।
राजा वृत्रं जङ्घनत् प्रागपागुद—गथा यजाते वर आ पृथिव्याः ११
य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम्।
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम् १२
विश्वामित्रा अरासत ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे। करदिन्नः सुराधसः १३ १४६५
किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो नाशिरं दुह्रे न तपन्ति घर्मम्।
आ नो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन् रन्धया नः १४ १४६६

॥ ११८ ॥ (ऋ० ४।१६।१-२१) (१४६७-१४८७) वामदेवो गौतमः। त्रिष्टुप्।

आ सत्यो यातु मघवाँ ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरय उप नः।
तस्मा इदन्धः सुषुमा सुदक्ष—मिहाभिपित्वं करते गृणानः १
अव स्य शूराध्वनो नान्ते ऽस्मिन् नो अद्य सवने मन्दध्यै।
शंसात्युक्थमुशनेव वेधा—श्चिकितुषे असुर्याय मन्म २
कविर्न निण्यं विदथानि साधन् वृषा यत् सेकं विपिपानो अर्चात्।
दिव इत्था जीजनत् सप्त कारू—नह्ना चिच्चक्रुर्वयुना गृणन्तः ३
स्वर्यद् वेदि सुदृशीकमर्कै—र्महि ज्योती रुरुचुर्यद्ध वस्तोः।
अन्धा तमांसि दुधिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टौ ४ १४७०
ववक्ष इन्द्रो अमितमृजी—ष्युभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा।
अतश्चिदस्य महिमा वि रे—च्यभि यो विश्वा भुवना बभूव ५

विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वा-नपो रिरेच सखिभिर्निकामैः ।
अश्मानं चिद् ये बिभिदुर्वचोभि-र्व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः ६
अपो वृत्रं वव्रिवांसं पराहन् प्रावत् ते वज्रं पृथिवी सचेताः ।
प्रार्णांसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवञ्छवसा शूर धृष्णो ७
अपो यदद्रिं पुरुहूत दर्द-राविर्भुवत् सरमा पूर्व्यं ते ।
स नो नेता वाजमा दर्षि भूरिं गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः ८
अच्छा कविं नृमणो गा अभिष्टौ स्वर्षाता मघवन्नाधमानम् ।
ऊतिभिस्तमिषणो द्युम्नहूतौ नि मायावानब्रह्मा दस्युरर्त ९ १४७९
आ दस्युघ्ना मनसा याह्यस्तं भुवत् ते कुत्सः सख्ये निकामः ।
स्वे योनौ नि षदतं सरूपा वि वां चिकित्सदृतचिद्ध नारी १०
यासि कुत्सेन सरथमवस्यु-स्तोदो वातस्य हर्योरीशानः ।
ऋज्रा वाजं न गध्यं युयूषन् कविर्यदहन् पार्याय भूषात् ११
कुत्साय शुष्णमशुषं नि बर्हीः प्रपित्वे अह्नः कुयवं सहस्रा ।
सद्यो दस्यून् प्र मृण कुत्स्येन प्र सूरश्चक्रं वृहतादभीके १२
त्वं पिप्रुं मृगयं शूशुवांस-मृजिश्वने वैदथिनाय रन्धीः ।
पञ्चाशत् कृष्णा नि वपः सहस्रा ऽत्कं न पुरो जरिमा वि दर्दः १३
सूर उपाके तन्वं१ दधानो वि यत् ते चेत्यमृतस्य वर्पः ।
मृगो न हस्ती तविषीमुषाणः सिंहो न भीम आयुधानि बिभ्रत् १४ १४८०
इन्द्रं कामा वसूयन्तो अग्मन् त्स्वर्मीळ्हे न सवने चकानाः ।
श्रवस्यवः शशमानास उक्थै-रोको न रण्वा सुदृशीव पुष्टिः १५
तमिद् व इन्द्रं सुहवं हुवेम यस्ता चकार नर्या पुरूणि ।
यो मावते जरित्रे गध्यं चि-न्मक्षू वाजं भरति स्पार्हराधाः १६
तिग्मा यदन्तरशनिः पताति कस्मिंश्चिच्छूर मुहुके जनानाम् ।
घोरा यदर्य समृतिर्भवा-त्यध स्मा नस्तन्वो बोधि गोपाः १७
भुवोऽविता वामदेवस्य धीनां भुवः सखावृको वाजसातौ ।
त्वामनु प्रमतिमा जगन्मो-रुशंसो जरित्रे विश्वध स्याः १८
एभिर्नृभिरिन्द्र त्वायुभिष्ट्वा मघवद्भिर्मघवन् विश्व आजौ ।
द्यावो न द्युम्नैरभि सन्तो अर्यः क्षपो मदेम शरदश्च पूर्वीः १९ १४८१

एवेदिन्द्राय वृषभाय वृष्णे ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् ।
नू चिद् यथा नः सख्या वियोष॒दसन्न उग्रोऽविता तनूपाः २०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो॒३ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः २१

॥ १२९ ॥ (ऋ० ४।१७।१-२१) त्रिष्टुप्, १५ एकपदा विराट् ।

त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं ह क्षा अनु क्षत्रं मंहना मन्यत द्यौः ।
त्वं वृत्रं शवसा जघन्वान् त्सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानान् १
तव त्विषो जनिमन् रेजत द्यौ रेजद् भूमिर्भियसा स्वस्य मन्योः ।
ऋघायन्त सुभ्व१ः पर्वतास आर्दन् धन्वानि सरयन्त आपः २
भिनद् गिरिं शवसा वज्रमिष्ण॒माविष्कृण्वानः सहसान ओजः ।
वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः सरन्नापो जवसा हतवृष्णीः ३ १४९०
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौ॒रिन्द्रस्य कर्ता स्वपस्तमो भूत् ।
य ईं जजान स्वर्यं सुवज्र॒मनपच्युतं सदसो न भूम ४
य एक इच्च्यावयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः
सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः ५
सत्रा सोमा अभवन्नस्य विश्वे सत्रा मदासो बृहतो मदिष्ठाः
सत्राभवो वसुपतिर्वसूनां दत्रे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः ६
त्वमध प्रथमं जायमानो ऽमे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः ।
त्वं प्रति प्रवत आशयान॒महिं वज्रेण मघवन् वि वृश्चः ७
सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम् ।
हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः ८ १४९५
अयं वृतश्चातयते समीची॒र्य आजिषु मघवा शृण्व एकः ।
अयं वाजं भरति यं सनोत्य॒स्य प्रियासः सख्ये स्याम ९
अयं शृण्वे अध जयन्नुत घ्न॒न्नयमुत प्र कृणुते युधा गाः ।
यदा सत्यं कृणुते मन्युमिन्द्रो विश्वं दृळ्हं भयत एजदस्मात् १०
समिन्द्रो गा अजयत् सं हिरण्या समश्विया मघवा यो ह पूर्वीः ।
एभिर्नृभिर्नृतमो अस्य शाकै रायो विभक्ता संभरश्च वस्वः ११
कियत् स्विदिन्द्रो अध्येति मातुः कियत् पितुर्जनितुर्यो जजान ।
यो अस्य शुष्मं मुहुकैरियर्ति वातो न जूतः स्तनयद्भिरभ्रैः १२

क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोती–यर्ति रेणुं मघवा समोहम्।
विभञ्जनुरशनिमाँ इव द्यौ–रुत स्तोतारं मघवा वसौ धात् १३ १५००
अयं चक्रमिषणत् सूर्यस्य न्येतशं रीरमत् ससृमाणम्।
आ कृष्ण ईं जुहुराणो जिघर्ति त्वचो बुध्ने रजसो अस्य योनौ १४
असिक्न्यां यजमानो न होता १५
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः।
जनीयन्तो जनिदामक्षितोति–मा च्यावयामोऽवते न कोशम् १६
त्राता नो बोधि ददृशान आपि–रभिख्याता मर्डिता सोम्यानाम्।
सखा पिता पितृतमः पितृणां कर्तेमु लोकमुशते वयोधाः १७
सखीयतामविता बोधि सखा गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः।
वयं ह्या ते चकृमा सबाध आभिः शमीभिर्महयन्त इन्द्र १८ १५०५
स्तुत इन्द्रो मघवा यद्ध वृत्रा भूरीण्येको अप्रतीनि हन्ति।
अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्म–न्नकिर्देवा वारयन्ते न मर्ताः १९
एवा न इन्द्रो मघवा विरप्शी करत् सत्या चर्षणीधृदनर्वा।
त्वं राजा जनुषां धेह्यस्मे अधि श्रवो माहिनं यज्जरित्रे २०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः २१

॥ १३० ॥ (ऋ० ४।१८।१-१३)

[१३ वामदेवो गौतमः, १ इन्द्रः, ४ (उत्तरार्धर्चस्य), ७ अदितिः]।

[१ वामदेवः, २-४ (पूर्वार्धर्चस्य), ४ (उत्तरार्धर्चस्य), ७ वामदेवः] । त्रिष्टुप्।

अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो देवा उदजायन्त विश्वे।
अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरममुया पत्तवे कः १
नाहमतो निरया दुर्गहैतत् तिरश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि।
बहूनि मे अकृता कर्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै २ १५१०
परायतीं मातरमन्वचष्ट न नानु गान्यनु नू गमानि।
त्वष्टुर्गृहे अपिबत् सोममिन्द्रः शतधन्यं चम्वोः सुतस्य ३
किं स ऋधक् कृणवद् यं सहस्रं मासो जभार शरदश्च पूर्वीः।
नही न्वस्य प्रतिमानम–स्त्यन्तर्जातेषूत ये जनित्वाः ४

अवद्यमिव मन्यमाना गुहाकरिन्द्रं माता वीर्येणा न्यृष्टम् ।
अथोदस्थात् स्वयमत्कं वसान आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ५
एता अर्षन्त्यललाभवन्तीर्ऋतावरीरिव संक्रोशमानाः ।
एता वि पृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति ६
किमु ष्विदस्मै निविदो भनन्तेन्द्रस्यावद्यं दिधिषन्त आपः ।
ममैतान् पुत्रो महता वधेन वृत्रं जघन्वाँ असृजद् वि सिन्धून् ७ १५१५
ममच्चन त्वा युवतिः परास ममच्चन त्वा कुषवा जगार ।
ममच्चिदापः शिशवे ममृड्युर्ममच्चिदिन्द्रः सहसोदतिष्ठत् ८
ममच्चन ते मघवन् व्यंसो निविविध्वाँ अप हनू जघान ।
अधा निविद्ध उत्तरो बभूवाञ्छिरो दासस्य सं पिणग्वधेन ९
गृष्टिः ससूव स्थविरं तवागामनाधृष्यं वृषभं तुम्रमिन्द्रम् ।
अरीळ्हं वत्सं चरथाय माता स्वयं गातुं तन्व इच्छमानम् १०
उत माता महिषमन्ववेनदमी त्वा जहति पुत्र देवाः ।
अथाब्रवीद् वृत्रमिन्द्रो हनिष्यन् त्सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ११
कस्ते मातरं विधवामचक्रच्छयुं कस्त्वामजिघांसच्चरन्तम् ।
कस्ते देवो अधि मार्डीक आसीद् यत् प्राक्षिणाः पितरं पादगृह्य १२ १५२०
अवर्त्या शुन आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम् ।
अपश्यं जायाममहीयमानामधा मे श्येनो मध्वा जभार १३

॥ १३१ ॥ (ऋ० ४।१९।१-११)

एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र विश्वे देवासः सुहवास ऊमाः ।
महामुभे रोदसी वृद्धमृष्वं निरेकमिद् वृणते वृत्रहत्ये १
अवासृजन्त जिव्रयो न देवा भुवः सम्राळिन्द्र सत्ययोनिः ।
अहन्नहिं परिशयानमर्णः प्र वर्तनीररदो विश्वधेनाः २
अतृप्णुवन्तं वियतमबुध्यमबुध्यमानं सुषुपाणमिन्द्र ।
सप्त प्रति प्रवत आशयानमहिं वज्रेण वि रिणा अपर्वन् ३
अक्षोदयच्छवसा क्षाम बुध्नं वार्ण वातस्तविषीभिरिन्द्रः ।
दृळ्हान्यौभ्नादुशमान ओजोऽवाभिनत् ककुभः पर्वतानाम् ४ १५२५
अभि प्र दद्रुर्जनयो न गर्भं रथा इव प्र ययुः साकमद्रयः ।
अतर्पयो विसृत उब्ज ऊर्मीन् त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून् ५

त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम् ।
अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणाँ अकृणोरिन्द्र सिन्धून् ६
प्राग्रुवो नभन्वो३ न वक्वा ध्वस्रा अपिन्वद् युवतीर्ऋतज्ञाः ।
धन्वान्यज्राँ अपृणक् तृषाणाँ अधोगिन्द्रः स्तर्यो३ दंसुपत्नीः ७
पूर्वीरुषसः शरदश्च गूर्ता वृत्रं जघन्वाँ असृजद् वि सिन्धून् ।
परिष्ठिता अतृणद् बद्बधानाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या ८
वम्रीभिः पुत्रमग्रुवो अदानं निवेशनाद्धरिव आ जभर्थ ।
व्य१न्धो अख्यदहिमाददानो निर्भूदुखच्छित् समरन्त पर्व ९ १५३०
प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्रा—ऽऽविद्वाँ आह विदुषे करांसि ।
यथायथा वृष्ण्यानि स्वगूर्ता ऽपांसि राजन् नर्याविवेषीः १०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ११

॥ १३२ ॥ (ऋ० ४।२०।१-११)

आ न इन्द्रो दूरादा न आसा—दभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः ।
ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः संगे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून् १
आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छा—ऽर्वाचीनोऽवसे राधसे च ।
तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शी—मं यज्ञमनु नो वाजसातौ २
इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र पुरो दधत् सनिष्यसि क्रतुं नः ।
श्वघ्नीव वज्रिन्त्सनये धनानां त्वया वयमर्य आजिं जयेम ३ १५३५
उशन्नु षु णः सुमना उपाके सोमस्य नु सुषुतस्य स्वधावः ।
पा इन्द्र प्रतिभृतस्य मध्वः समन्धसा ममदः पृष्ठ्येन ४
वि यो ररप्श ऋषिभिर्नवेभि—र्वृक्षो न पक्वः सृण्यो न जेता ।
मर्यो न योषामभि मन्यमानो ऽच्छा विवक्मि पुरुहूतमिन्द्रम् ५
गिरिर्न यः स्वतवाँ ऋष्व इन्द्रः सनादेव सहसे जात उग्रः ।
आदर्ता वज्रं स्थविरं न भीम उद्नेव कोशं वसुना न्यृष्टम् ६
न यस्य वर्ता जनुषा न्वस्ति न राधस आमरीता मघस्य ।
उद्वावृषाणस्तविषीव उग्रा—ऽस्मभ्यं दद्धि पुरुहूत रायः ७
ईक्षे रायः क्षयस्य चर्षणीना—मुत व्रजमपवर्तासि गोनाम् ।
शिक्षानरः समिथेषु प्रहावान् वस्वो राशिमभिनेतासि भूरिम् ८ १५४०

कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठो यया कृणोति मुहु का चिदृष्वः ।
पुरु दाशुषे विचयिष्ठो अंहो ऽथा दधाति द्रविणं जरित्रे ९
मा नो मर्धीरा भरा दद्धि तन्नः प्र दाशुषे दातवे भूरि यत् ते ।
नव्ये देष्णे शस्ते अस्मिन् त उक्थे प्र ब्रवाम वयमिन्द्र स्तुवन्तः १०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ११

॥ १३३ ॥ (ऋ० ४।२१।१-११)

आ यात्विन्द्रोऽवस उप न इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः ।
वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वी—र्द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुष्यात् १
तस्येदिह स्तवथ वृष्ण्यानि तुविद्युम्नस्य तुविराधसो नॄन् ।
यस्य क्रतुर्विदथ्यो३ न सम्राट् साह्वान् तरुत्रो अभ्यस्ति कृष्टीः २ १५४५
आ यात्विन्द्रो दिव आ पृथिव्या मक्षू समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
स्वर्णरादवसे नो मरुत्वान् परावतो वा सदनादृतस्य ३
स्थूरस्य रायो बृहतो य ईशे तमु ष्टवाम विदथेष्विन्द्रम् ।
यो वायुना जयति गोमतीषु प्र धृष्णुया नयति वस्यो अच्छ ४
उप यो नमो नमसि स्तभाय—न्नियर्ति वाचं जनयन् यजध्यै ।
ऋञ्जसानः पुरुवार उक्थै—रेन्द्रं कृण्वीत सदनेषु होता ५
धिषा यदि धिषण्यन्तः सरण्यान् त्सदन्तो अद्रिमौशिजस्य गोहे ।
आ दुरोषाः पास्त्यस्य होता यो नो महान्त्संवरणेषु वह्निः ६
सत्रा यदीं भार्वरस्य वृष्णः सिषक्ति शुष्मः स्तुवते भराय ।
गुहा यदीमौशिजस्य गोहे प्र यद् धिये प्रायसे मदाय ७ १५५०
वि यद् वरांसि पर्वतस्य वृण्वे पयोभिर्जिन्वे अपां जवांसि ।
विदद् गौरस्य गवयस्य गोहे यदी वाजाय सुध्यो३ वहन्ति ८
भद्रा ते हस्ता सुकृतोत पाणी प्रयन्तारा स्तुवते राध इन्द्र ।
का ते निषत्तिः किमु नो ममत्सि किं नोदुदु हर्षसे दातवा उ ९
एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्रा—ड्ढन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः ।
पुरुष्टुत क्रत्वा नः शग्धि रायो भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य १०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ११

॥ १३४ ॥ (ऋ० ४।२२।१-११)

यन्न इन्द्रो जुजुषे यच्च वष्टि तन्नो महान् करति शुष्म्या चित् ।
ब्रह्म स्तोमं मघवा सोममुक्था यो अश्मानं शवसा बिभ्रदेति १ १५५५
वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिमस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान् ।
श्रिये परुष्णीमुषमाण ऊर्णां यस्याः पर्वाणि सख्याय विव्ये २
यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः
दधानो वज्रं बाह्वोरुशन्तं द्याममेन रेजयत् प्र भूम ३
विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वी र्द्यौर्ऋष्वाज्जनिमन् रेजत क्षाः ।
आ मातरा भरति शुष्म्या गो र्नृवत् परिज्मन् नोनुवन्त वाताः ४
ता तू त इन्द्र महतो महानि विश्वेष्वित् सवनेषु प्रवाच्या ।
यच्छूर धृष्णो धृषता दधृष्वा नाहिं वज्रेण शवसाविवेषीः ५
ता तू ते सत्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः सिस्रते वृष्ण ऊध्नः ।
अधा ह त्वद् वृषमणो भियानाः प्र सिन्धवो जवसा चक्रमन्त ६ १५६०
अत्राह ते हरिवस्ता उ देवी रवोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वसारः ।
यत् सीमनु प्र मुचो बद्बधाना दीर्घामनु प्रसितिं स्यन्दयध्यै ७
पिपीळे अंशुर्मद्यो न सिन्धु रा त्वा शमी शशमानस्य शक्तिः ।
अस्मद्र्यक् शुशुचानस्य यम्या आशुर्न रश्मिं तुव्योजसं गोः ८
अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि ।
अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य ९
अस्माकमित् सु शृणुहि त्वमिन्द्रा ऽस्मभ्यं चित्राँ उप माहि वाजान् ।
अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरंधी रस्माकं सु मघवन् बोधि गोदाः १०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ११ १५६५

॥ १३५ ॥ (ऋ० ४।२३।१-११) ८-१० ऋतं वा ।

कथा महामवृधत् कस्य होतु र्यज्ञं जुषाणो अभि सोममूधः ।
पिबन्नुशानो जुषमाणो अन्धो ववक्ष ऋष्वः शुचते धनाय १
को अस्य वीरः सधमादमाप समानंश सुमतिभिः को अस्य ।
कदस्य चित्रं चिकिते कदूती वृधे भुवच्छशमानस्य यज्योः २

कथा शृणोति हूयमानमिन्द्रः कथा शृण्वन्नवसामस्य वेद ।
का अस्य पूर्वीरुपमातयो ह कथैनमाहुः पपुरिं जरित्रे ३
कथा सबाधः शशमानो अस्य नशदभि द्रविणं दीध्यानः ।
देवो भुवन्नवेदा म ऋतानां नमो जगृभ्वाँ अभि यज्जुजोषत् ४
कथा कदस्या उषसो व्युष्टौ देवो मर्तस्य सख्यं जुजोष ।
कथा कदस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन् कामं सुयुजं ततस्रे ५ १५७०
किमादमत्रं सख्यं सखिभ्यः कदा नु ते भ्रात्रं प्र ब्रवाम ।
श्रिये सुदृशो वपुरस्य सर्गाः स्वर्णं चित्रतममिष आ गोः ६
द्रुहं जिघांसन् ध्वरसमनिन्द्रां तेतिक्ते तिग्मा तुजसे अनीका ।
ऋणा चिद् यत्र ऋणया न उग्रो दूरे अज्ञाता उषसो बबाधे ७
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति ।
ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः ८
ऋतस्य दृळ्हा धरुणानि सन्ति पुरूणि चन्द्रा वपुषे वपूंषि ।
ऋतेन दीर्घमिषणन्त पृक्ष ऋतेन गाव ऋतमा विवेशुः ९
ऋतं येमान ऋतमिद् वनोत्यृतस्य शुष्मस्तुरया उ गव्युः ।
ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ऋताय धेनू परमे दुहाते १० १५७१
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ११

॥ २३६ ॥ (४।२४।१-११) त्रिष्टुप्, १० अनुष्टुप् ।

का सुष्टुतिः शवसः सूनुमिन्द्रमर्वाचीनं राधस आ ववर्तत् ।
ददिर्हि वीरो गृणते वसूनि स गोपतिर्निष्षिधां नो जनासः १
स वृत्रहत्ये हव्यः स ईड्यः स सुष्टुत इन्द्रः सत्यराधाः ।
स यामन्ना मघवा मर्त्याय ब्रह्मण्यते सुष्वये वरिवो धात् २
तमिन्नरो वि ह्वयन्ते समीके रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत त्राम् ।
मिथो यत् त्यागमुभयासो अग्मन् नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ ३
क्रतूयन्ति क्षितयो योग उग्राऽऽशुषाणासो मिथो अर्णसातौ ।
सं यद् विशोऽववृत्रन्त युध्मा आदिन्नेम इन्द्रयन्ते अभीके ४ १५८०
आदिद्ध नेम इन्द्रियं यजन्त आदित् पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात् ।
आदित् सोमो वि पपृच्यादसुष्वीनादिज्जुजोष वृषभं यजध्यै ५

कृणोत्यस्मै वरिवो य इत्थे—न्द्राय सोममुशते सुनोति ।
सध्रीचीनेन मनसाविवेनन् तमित् सखायं कृणुते समत्सु ६
य इन्द्राय सुनवत् सोममद्य पचात् पक्तीरुत भृज्जाति धानाः ।
प्रति मनायोरुचथानि हर्यन् तस्मिन् दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्रः ७
यदा समर्यं व्यचेदृघावा दीर्घं यदाजिमभ्यख्यदर्यः ।
अचिक्रदद् वृषणं पत्न्यच्छा दुरोण आ निशितं सोमसुद्भिः ८
भूयसा वस्नमचरत् कनीयो ऽविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन् ।
स भूयसा कनीयो नारिरेचीद् दीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम् ९ १५८५
क इमं दशभिर्ममे—न्द्रं क्रीणाति धेनुभिः ।
यदा वृत्राणि जङ्घन—दथैनं मे पुनर्ददत् १०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ११

॥ १३७ ॥ (ऋ० ४।२५।१-८) त्रिष्टुप् ।

को अद्य नर्यो देवकाम उशन्निन्द्रस्य सख्यं जुजोष ।
को वा महेऽवसे पार्याय समिद्धे अग्नौ सुतसोम ईट्टे १
को नानाम वचसा सोम्याय मनायुर्वा भवति वस्त उस्राः ।
क इन्द्रस्य युज्यं कः सखित्वं को भ्रात्रं वष्टि कवये क ऊती २
को देवानामवो अद्या वृणीते क आदित्याँ अदितिं ज्योतिरीट्टे ।
कस्याश्विनाविन्द्रो अग्निः सुतस्यां—ऽशोः पिबन्ति मनसाविवेनम् ३ १५९०
तस्मा अग्निर्भारतः शर्म यंस—ज्ज्योक् पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम् ।
य इन्द्राय सुनवामेत्याह नरे नर्याय नृतमाय नृणाम् ४
न तं जिनन्ति बहवो न दभ्रा उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत् ।
प्रियः सुकृत् प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी ५
सुप्राव्यः प्राशुषाळेष वीरः सुष्वेः पक्तिं कृणुते केवलेन्द्रः ।
नासुष्वेरापिर्न सखा न जामि—र्दुष्प्राव्योऽवहन्तेदवाचः ६
न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रो ऽसुन्वता सुतपाः सं गृणीते ।
आस्य वेदः खिदति हन्ति नग्नं वि सुष्वये पक्तये केवलो भूत् ७
इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽवसितास इन्द्रम् ।
इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते ८ १५९५

॥ १३८ ॥ (ऋ० ४।२६।१-३) [१-३ इन्द्रो वा] । [१-३ आत्मा वा] ।

अहं मनुरभवं सूर्यश्चाऽहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मि विप्रः ।
अहं कुत्समार्जुनेयं न्यृञ्जेऽहं कविरुशना पश्यता मा ॥ १
अहं भूमिमददामार्यायाऽहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय ।
अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनु केतमायन् ॥ २
अहं पुरो मन्दसानो व्यैरं नव साकं नवतीः शम्बरस्य ।
शततमं वेश्यं सर्वताता दिवोदासमतिथिग्वं यदावम् ॥ ३

॥ १३९ ॥ (ऋ० ४।२८।१-५) [इन्द्रासोमौ वा ।]

त्वा युजा तव तत् सोम सख्य इन्द्रो अपो मनवे सस्रुतस्कः ।
अहन्नहिमरिणात् सप्त सिन्धूनपावृणोदपिहितेव खानि ॥ १
त्वा युजा नि खिदत् सूर्यस्येन्द्रश्चक्रं सहसा सद्य इन्दो ।
अधि ष्णुना बृहता वर्तमानं महो द्रुहो अप विश्वायु धायि ॥ २ १६००
अहन्निन्द्रो अदहदग्निरिन्दो पुरा दस्यून् मध्यंदिनादभीके ।
दुर्गे दुरोणे क्रत्वा न यातां पुरू सहस्रा शर्वा नि बर्हीत् ॥ ३
विश्वस्मात् सीमधमाँ इन्द्र दस्यून् विशो दासीरकृणोरप्रशस्ताः ।
अबाधेथाममृणतं नि शत्रूनविन्देथामपचितिं वधत्रैः ॥ ४
एवा सत्यं मघवाना युवं तदिन्द्रश्च सोमोर्वमश्व्यं गोः ।
आदर्दृतमपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश्चित् ततृदाना ॥ ५

॥ १४० ॥ (ऋ० ४।२९।१-५)

आ नः स्तुत उप वाजेभिरूती इन्द्र याहि हरिभिर्मन्दसानः ।
तिरश्चिदर्यः सवना पुरूण्याङ्गूषेभिर्गृणानः सत्यराधाः ॥ १
आ हि ष्मा याति नर्यश्चिकित्वान् हूयमानः सोतृभिरुप यज्ञम् ।
स्वश्वो यो अभीरुर्मन्यमानः सुष्वाणेभिर्मदति सं ह वीरैः ॥ २ १६०५
श्रावयेदस्य कर्णा वाजयध्यै जुष्टामनु प्र दिशं मन्दयध्यै ।
उद्वावृषाणो राधसे तुविष्मान् करन्न इन्द्रः सुतीर्थाभयं च ॥ ३
अच्छा यो गन्ता नाधमानमूती इत्था विप्रं हवमानं गृणन्तम् ।
उप त्मनि दधानो धुर्याशून्त्सहस्राणि शतानि वज्रबाहुः ॥ ४
त्वोतासो मघवन्निन्द्र विप्रा वयं ते स्याम सूरयो गृणन्तः ।
भेजानासो बृहद्दिवस्य राय आकाय्यस्य दावने पुरुक्षोः ॥ ५

॥ १४१ ॥ (ऋ० ४।३०।१-८; १२-२४) गायत्री; ८, २४ अनुष्टुप्।

नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन् । नकिरेवा यथा त्वम् १
सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः । सत्रा महाँ असि श्रुतः २ १६१०
विश्वे चनेदना त्वा देवास इन्द्र युयुधुः । यदहा नक्तमातिरः ३
यत्रोत बाधितेभ्यश्चक्रं कुत्साय युध्यते । मुषाय इन्द्र सूर्यम ४
यत्र देवाँ ऋघायतो विश्वाँ अयुध्य एक इत् । त्वमिन्द्र वनूँरहन् ५
यत्रोत मर्त्याय कमरिणा इन्द्र सूर्यम् । प्रावः शचीभिरेतशम् ६
किमादुतासि वृत्रहन् मघवन् मन्युमत्तमः । अत्राह दानुमातिरः ७ १६१५
एतद् घेदुत वीर्यमिन्द्र चकर्थ पौंस्यम । स्त्रियं यद् दुर्हणायुवं वधीर्दुहितरं दिवः ८
उत सिन्धुं विबाल्यं वितस्थानामधि क्षमि । परि ष्ठा इन्द्र मायया १२
उत शुष्णस्य धृष्णुया प्र मृक्षो अभि वेदनम् । पुरो यदस्य संपिणक् १३
उत दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि । अवाहन्निन्द्र शम्बरम् १४
उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि शतावधीः । अधि पञ्च प्रधीँरिव १५ १६२०
उत त्यं पुत्रमग्रुवः परावृक्तं शतक्रतुः । उक्थेष्विन्द्र आभजत् १६
उत त्या तुर्वशायदू अस्नातारा शचीपतिः । इन्द्रो विद्वाँ अपारयत् १७
उत त्या सद्य आर्या सरयोरिन्द्र पारतः । अर्णाचित्ररथावधीः १८
अनु द्वा जहिता नयोऽन्धं श्रोणं च वृत्रहन् । न तत् ते सुम्नमष्टवे १९
शतमश्मन्मयीनां पुरामिन्द्रो व्यास्यत् । दिवोदासाय दाशुषे २० १६२५
अस्वापयद् दभीतये सहस्रा त्रिंशतं हथैः । दासानामिन्द्रो मायया २१
स घेदुतासि वृत्रहन् त्समान इन्द्र गोपतिः । यस्ता विश्वानि चिच्युषे २२
उत नूनं यदिन्द्रियं करिष्या इन्द्र पौंस्यम् । अद्या नकिष्टदा मिनत् २३
वामंवामं त आदुरे देवो ददात्वर्यमा । वामं पूषा वामं भगो वामं देवः करूळती २४

॥ १४२ ॥ (४।३१।१-१५) गायत्री, ३ पादनिचृत्।

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता १ १६३०
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः । दृळ्हा चिदारुजे वसु २
अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम् । शतं भवास्यूतिभिः ३
अभी न आ ववृत्स्व चक्रं न वृत्तमर्वतः । नियुद्भिश्चर्षणीनाम ४
प्रवता हि क्रतूनामा हा पदेव गच्छसि । अभक्षि सूर्ये सचा ५
सं यत् त इन्द्र मन्यवः सं चक्राणि दधन्विरे । अध त्वे अध सूर्ये ६ १६३५

उत स्मा हि त्वामाहुरि—न्मघवानं शचीपते । दातारमविदीधयुम् ७
उत स्मा सद्य इत् परि शशमानाय सुन्वते । पुरू चिन्मंहसे वसु ८
नहि ष्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरः । न च्यौत्नानि करिष्यतः ९
अस्माँ अवन्तु ते शत—मस्मान्त्सहस्रमूतयः । अस्मान् विश्वा अभिष्टयः १०
अस्माँ इहा वृणीष्व सख्याय स्वस्तये । महो राये दिवित्मते ११ १६४०
अस्माँ अविड्ढि विश्वहे—न्द्र राया परीणसा । अस्मान् विश्वाभिरूतिभिः १२
अस्मभ्यं ताँ अपा वृधि व्रजाँ अस्तेव गोमतः । नवाभिरिन्द्रोतिभिः १३
अस्माकं धृष्णुया रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः । गव्युरश्वयुरीयते १४
अस्माकमुत्तमं कृधि श्रवो देवेषु सूर्य । वर्षिष्ठं द्यामिवोपरि १५

॥ १४३ ॥ (ऋ० ४।३२।१-२२) गायत्री ।

आ तू न इन्द्र वृत्रह—न्नस्माकमर्धमा गहि । महान् महीभिरूतिभिः १ १६४५
भृमिश्चिद् घासि तूतुजि—रा चित्र चित्रिणीष्वा । चित्रं कृणोष्यूतये २
दभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं हंसि व्राधन्तमोजसा । सखिभिर्ये त्वे सचा ३
वयमिन्द्र त्वे सचा वयं त्वाभि नोनुमः । अस्माँअस्माँ इदुदव ४
स नश्चित्राभिरद्रिवो ऽनवद्याभिरूतिभिः । अनाधृष्टाभिरा गहि ५
भूयामो षु त्वावतः सखाय इन्द्र गोमतः । युजो वाजाय घृष्वये ६ १६५०
त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र वाजस्य गोमतः । स नो यन्धि महीमिषम् ७
न त्वा वरन्ते अन्यथा यद् दित्ससि स्तुतो मघम् । स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ८
अभि त्वा गोतमा गिरा ऽनूषत प्र दावने । इन्द्र वाजाय घृष्वये ९
प्र ते वोचाम वीर्या३ या मन्दसान आरुजः । पुरो दासीरभीत्य १०
ता ते गृणन्ति वेधसो यानि चकर्थ पौंस्या । सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ११ १६५५
अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोमवाहसः । ऐषु धा वीरवद् यशः १२
यच्चिद्धि शश्वतामसी—न्द्र साधारणस्त्वम् । तं त्वा वयं हवामहे १३
अर्वाचीनो वसो भवा—ऽस्मे सु मत्स्वान्धसः । सोमानामिन्द्र सोमपाः १४
अस्माकं त्वा मतीना—मा स्तोम इन्द्र यच्छतु । अर्वागा वर्तया हरी १५
पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः । वधूयुरिव योषणाम् १६ १६६०
सहस्रं व्यतीनां युक्तानामिन्द्रमीमहे । शतं सोमस्य खार्यः १७
सहस्रा ते शता वयं गवामा च्यावयामसि । अस्मत्रा राध एतु ते १८
दश ते कलशानां हिरण्यानामधीमहि । भूरिदा असि वृत्रहन् १९

भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर । भूरि घेदिन्द्र दित्ससि २०
भूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन् । आ नो भजस्व राधसि २१ १६६५
प्र ते बभ्रू विचक्षण शंसामि गोषणो नपात् । माभ्यां गा अनु शिश्रथः २२ १६६६

॥ १४४ ॥ (ऋ० १०।२९।१-१५)

(१६६७-१६८१) गौरिवीतिः शाक्त्यः । [९ (प्रथमपादस्य) उशना वा] । त्रिष्टुप् ।

त्र्यर्यमा मनुषो देवताता त्री रोचना दिव्या धारयन्त ।
अर्चन्ति त्वा मरुतः पूतदक्षा—स्त्वमेषामृषिरिन्द्रासि धीरः १
अनु यदीं मरुतो मन्दसान—मार्चन्निन्द्रं पपिवांसं सुतस्य ।
आदत्त वज्रमभि यदहिं ह—न्नपो यह्वीरसृजत् सर्तवा उ २
उत ब्रह्माणो मरुतो मे अस्ये—न्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः ।
तद्धि हव्यं मनुषे गा अविन्द—दहन्नहिं पपिवाँ इन्द्रो अस्य ३
आद् रोदसी वितरं वि ष्कभायत् संविव्यानश्चिद् भियसे मृगं कः ।
जिगर्तिमिन्द्रो अपजर्गुराणः प्रति श्वसन्तमव दानवं हन् ४ १६७०
अध क्रत्वा मघवन् तुभ्यं देवा अनु विश्वे अददुः सोमपेयम् ।
यत् सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीरुपरा एतशे कः ५
नव यदस्य नवतिं च भोगान् त्साकं वज्रेण मघवा विवृश्चत् ।
अर्चन्तीन्द्रं मरुतः सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसा बाधत द्याम् ६
सखा सख्ये अपचत् तूयमग्नि—रस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि ।
त्री साकमिन्द्रो मनुषः सरांसि सुतं पिबद् वृत्रहत्याय सोमम् ७
त्री यच्छता महिषाणामघो मा—स्त्री सरांसि मघवा सोम्यापाः ।
कारं न विश्वे अह्वन्त देवा भरमिन्द्राय यदहिं जघान ८
उशना यत् सहस्यैरयातं गृहमिन्द्र जूजुवानेभिरश्वैः ।
वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कुत्सेन देवैरवनोर्ह शुष्णम् ९ १६७५
प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य कुत्सायान्यद् वरिवो यातवेऽकः ।
अनासो दस्यूँरमृणो वधेन नि दुर्योण आवृणङ् मृध्रवाचः १०
स्तोमासस्त्वा गौरिवीतेरवर्ध—न्नरन्धयो वैदथिनाय पिप्रुम् ।
आ त्वामृजिश्वा सख्याय चक्रे पचन् पक्तीरपिबः सोममस्य ११
नवग्वासः सुतसोमास इन्द्रं दशग्वासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
गव्यं चिदूर्वमपिधानवन्तं तं चिन्नरः शशमाना अप व्रन् १२

कथो नु ते परि चराणि विद्वान् वीर्या मघवन् या चकर्थ ।
या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ प्रेदु ता ते विदथेषु ब्रवाम १३
एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्य- परीतो जनुषा वीर्येण ।
या चिन्नु वज्रिन् कृणवो दधृष्वान् न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः १४ १६८०
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म ।
वस्त्रेव भद्रा सुकृता वसूयू रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् १५ १६८१

॥ १४५ ॥ (ऋ० ५।३०।१-११) (१६८२-१६९२) बभ्रुरात्रेयः ।

क्वस्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं सुखरथमीयमानं हरिभ्याम् ।
यो राया वज्री सुतसोममिच्छन् तदोको गन्ता पुरुहूत ऊती १
अवाचचक्षं पदमस्य सस्व- रुग्रं निधातुरन्वायमिच्छन् ।
अपृच्छमन्याँ उत ते म आहु- रिन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम २
प्र नु वयं सुते या ते कृतानी- न्द्र ब्रवाम यानि नो जुजोषः ।
वेददविद्वाञ्छृणवच्च विद्वान् वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः ३
स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूयसश्चित् ।
अश्मानं चिच्छवसा दिद्युतो वि विदो गवामूर्वमुस्रियाणाम् ४ १६८५
परो यत् त्वं परम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत् ।
अतश्चिदिन्द्रादभयन्त देवा विश्वा अपो अजयद् दासपत्नीः ५
तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा अर्चन्त्यर्कं सुन्वन्त्यन्धः ।
अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः ६
वि षू मृधो जनुषा दानमिन्व- न्नहन् गवा मघवन्त्संचकानः ।
अत्रा दासस्य नमुचेः शिरो य- दवर्तयो मनवे गातुमिच्छन् ७
युजं हि मामकृथा आदिदिन्द्र शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।
अश्मानं चित् स्वर्यं वर्तमानं प्र चक्रियेव रोदसी मरुद्भ्यः ८
स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे किं मा करन्नबला अस्य सेनाः ।
अन्तर्ह्यख्यदुभे अस्य धेने अथोप प्रैद् युधये दस्युमिन्द्रः ९ १६९०
समत्र गावोऽभितोऽनवन्ते- हेह वत्सैर्वियुता यदासन् ।
सं ता इन्द्रो असृजदस्य शाकै- र्यदीं सोमासः सुषुता अमन्दन् १०
यदीं सोमा बभ्रुधूता अमन्द- न्नरोरवीद् वृषभः सादनेषु ।
पुरंदरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य पुनर्गवामददादुस्रियाणाम् ११ १६९२

॥१४६॥ (५।३१।१-८; १०-१३) (१६९३-१७०४) अवस्युरात्रेयः, (८ तृतीयपादस्य कुत्सो वा, चतुर्थपादस्य उशना वा)।

इन्द्रो रथाय प्रवतं कृणोति यमध्यस्थान्मघवा वाजयन्तम् ।
यूथेव पश्वो व्युनोति गोपा अरिष्टो याति प्रथमः सिषासन् १
आ प्र द्रव हरिवो मा वि वेनः पिशङ्गराते अभि नः सचस्व ।
नहि त्वदिन्द्र वस्यो अन्यदस्त्य—मेनाँश्चिज्जनिवतश्चकर्थ २
उद्यत् सहः सहस आजनिष्ट देदिष्ट इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा ।
प्राचोदयत् सुदुघा वव्रे अन्त—र्वि ज्योतिषा संववृत्वत् तमोऽवः ३ १६९५
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षन् त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ।
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कै—रवर्धयन्नहये हन्तवा उ ४
वृष्णे यत् ते वृषणो अर्कमर्चा—निन्द्र ग्रावाणो अदितिः सजोषाः ।
अनश्वासो ये पवयोऽरथा इन्द्रेषिता अभ्यवर्तन्त दस्यून् ५
प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन् या चकर्थ ।
शक्तीवो यद् विभरा रोदसी उभे जयन्नपो मनवे दानुचित्राः ६
तदिन्नु ते करणं दस्म विप्रा—ऽहिं यद् घ्नन्नोजो अत्रामिमीथाः ।
शुष्णस्य चित् परि माया अगृभ्णाः प्रपित्वं यन्नप दस्यूँरसेधः ७
त्वमपो यदवे तुर्वशाया—ऽरमयः सुदुघाः पार इन्द्र ।
उग्रमयातमवहो ह कुत्सं सं ह यद् वामुशनारन्त देवाः ८ १७००
वातस्य युक्तान्त्सुयुजश्चिदश्वान् कविश्चिदेषो अजगन्नवस्युः ।
विश्वे ते अत्र मरुतः सखाय इन्द्र ब्रह्माणि तविषीमवर्धन् १०
सूरश्चिद् रथं परितक्म्यायां पूर्वं करदुपरं जूजुवांसम् ।
भरच्चक्रमेतशः सं रिणाति पुरो दधत् सनिष्यति क्रतुं नः ११
आयं जना अभिचक्षे जगामे—न्द्रः सखायं सुतसोममिच्छन् ।
वदन् ग्रावाव वेदिं भ्रियाते यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति १२
ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मर्ता अमृत मो ते अंह आरन् ।
वावन्धि यज्यूँरुत तेषु धेह्यो—जो जनेषु येषु ते स्याम १३ १७०४

॥१४७॥ (ऋ० ५।३२।१-१२) (१७०५-१७१६) गातुरात्रेयः।

अदर्दरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्बधानाँ अरम्णाः ।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद् वः सृजो वि धारा अव दानवं हन् १ १७०५

त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्बधानाँ अरंह ऊधः पर्वतस्य वज्रिन् ।
अहिं चिदुग्र प्रयुतं शयानं जघन्वाँ इन्द्र तविषीमधत्थाः २
त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य वधर्जघान तविषीभिरिन्द्रः ।
य एक इदप्रतिर्मन्यमान आदस्मादन्यो अजनिष्ट तव्यान् ३
त्यं चिदेषां स्वधया मदन्तं मिहो नपातं सुवृधं तमोगाम् ।
वृषप्रभर्मा दानवस्य भामं वज्रेण वज्री नि जघान शुष्णम् ४
त्यं चिदस्य क्रतुभिर्निषत्तम—मर्मणो विददिदस्य मर्म ।
यदीं सुक्षत्र प्रभृता मदस्य युयुत्सन्तं तमसि हर्म्ये धाः ५
त्यं चिदित्था कत्पयं शयान—मसूर्ये तमसि वावृधानम् ।
तं चिन्मन्दानो वृषभः सुतस्यो—च्चैरिन्द्रो अपगूर्या जघान ६ १७१०
उद् यदिन्द्रो महते दानवाय वधर्यमिष्ट सहो अप्रतीतम् ।
यदीं वज्रस्य प्रभृतौ ददाभ विश्वस्य जन्तोरधमं चकार ७
त्यं चिदर्णं मधुपं शयान—मसिन्वं वव्रं मह्याददुग्रः ।
अपादमत्रं महता वधेन नि दुर्योण आवृणङ् मृध्रवाचम् ८
को अस्य शुष्मं तविषीं वरात एको धना भरते अप्रतीतः ।
इमे चिदस्य ज्रयसो नु देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा जिहाते ९
न्यस्मै देवी स्वधितिर्जिहीत इन्द्राय गातुरुशतीव येमे ।
सं यदोजो युवते विश्वमाभि—रनु स्वधाव्ने क्षितयो नमन्त १०
एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु ।
तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठं दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम् ११ १७१५
एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि ।
किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो ये त्वाया निदधुः काममिन्द्र १२ १७१६

॥ १४८ ॥ (ऋ० ५।३३।१-१०) (१७१७-१७३५) प्राजापत्यः संवरणः ।

महिं महे तवसे दीध्ये नॄ—निन्द्रायेत्था तवसे अतव्यान् ।
यो अस्मै सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जने समर्यश्चिकेत १
स त्वं न इन्द्र धियसानो अर्कै—र्हरीणां वृषन् योक्त्रमश्रेः ।
या इत्था मघवन्ननु जोषं वक्षो अभि प्रार्यः सक्षि जनान् २
न ते त इन्द्राभ्यस्मदृष्वा—ऽयुक्तासो अब्रह्मता यदसन् ।
तिष्ठा रथमधि तं वज्रहस्ता—ऽऽ रश्मिं देव यमसे स्वश्वः ३

पुरू यत् त इन्द्र सन्त्युक्था गवे चकर्थोर्वरासु युध्यन् ।
ततक्षे सूर्याय चिदोकसि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित् ४ १७२०
वयं ते त इन्द्र ये च नरः शर्धो जज्ञाना याताश्च रथाः ।
आस्मार्ञ्जगम्यादहिशुष्म सत्वा भगो न हव्यः प्रभृथेषु चारुः ५
पपृक्षेण्यमिन्द्र त्वे ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः ।
स न एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्यः स्तुषे तुविमघस्य दानम् ६
एवा न इन्द्रोतिभिरव पाहि गृणतः शूर कारून् ।
उत त्वचं ददतो वाजसातौ पिप्रीहि मध्वः सुषुतस्य चारोः ७
उत त्ये मा पौरुकुत्स्यस्य सूरेस्त्रसदस्योर्हिरणिनो रराणाः ।
वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य गैरिक्षितस्य क्रतुभिर्नु सश्चे ८
उत त्ये मा मारुताश्वस्य शोणाः क्रत्वामघासो विदथस्य रातौ ।
सहस्रा मे च्यवतानो ददान आनूकमर्यो वपुषे नार्चत् ९ १७२५
उत त्ये मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः ।
मह्ना रायः संवरणस्य ऋषेर्व्रजं न गावः प्रयता अपि ग्मन् १०

॥१४९॥ (ऋ० ५।३४।१-९) जगती, ९ त्रिष्टुप् ।

अजातशत्रुमजरा स्वर्वत्यनु स्वधामिता दस्ममीयते ।
सुनोतन पचत ब्रह्मवाहसे पुरुष्टुताय प्रतरं दधातन १
आ यः सोमेन जठरमपिप्रतामन्दत मघवा मध्वो अन्धसः ।
यदीं मृगाय हन्तवे महावधः सहस्रभृष्टिमुशना वधं यमत् २
यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अह ।
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः ३
यस्यावधीत् पितरं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईषते ।
वेतीद्वस्य प्रयता यतंकरो न किल्बिषादीषते वस्व आकरः ४ १७३०
न पञ्चभिर्दशभिर्वष्ट्यारभं नासुन्वता सचते पुष्यता चन ।
जिनाति वेदमुया हन्ति वा धुनिरा देवयुं भजति गोमति व्रजे ५
वित्वक्षणः समृतौ चक्रमासजोऽसुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः ।
इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणो यथावशं नयति दासमार्यः ६
समीं पणेरजति भोजनं मुषे वि दाशुषे भजति सूनरं वसु ।
दुर्गे चन ध्रियते विश्व आ पुरु जनो यो अस्य तविषीमचुक्रुधत् ७

सं यज्जनौ सुधनौ विश्वशर्धसा―ववेदिन्द्रो मघवा गोषु शुभ्रिषु ।
युजं ह्य१न्यमकृत प्रवेप―न्युदीं गव्यं सृजते सत्वभिर्धुनिः ८
सहस्रसामाग्निवेशिं गृणीषे शत्रिमग्न उपमां केतुमर्यः ।
तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन् क्षत्रममवत् त्वेषमस्तु ९ १७३५

॥ १५० ॥ (५।३५।१-८) (१७३६-१७४९) प्रभूवसुराङ्गिरसः । अनुष्टुप्, ८ पङ्क्तिः ।

यस्ते साधिष्ठोऽवस इन्द्र क्रतुष्टमा भर । अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्निं वाजेषु दुष्टरम् १
यदिन्द्र ते चतस्रो यच्छूर सन्ति तिस्रः । यद् वा पञ्च क्षितीना―मवस्तत् सु न आ भर २
आ तेऽवो वरेण्यं वृषन्तमस्य हूमहे । वृषजूतिर्हि जज्ञिष आभूभिरिन्द्र तुर्वणिः ३
वृषा ह्यसि राधसे जज्ञिषे वृष्णि ते शवः। स्वक्षत्रं ते धृषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम् ४
त्वं तमिन्द्र मर्त्य―ममित्रयन्तमद्रिवः । सर्वरथा शतक्रतो नि याहि शवसस्पते ५ १७४०
त्वामिद् वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः । उग्रं पूर्वीषु पूर्व्यं हवन्ते वाजसातये ६
अस्माकमिन्द्र दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु । सयावानं धनेधने वाजयन्तमवा रथम् ७
अस्माकमिन्द्रेहि नो रथमवा पुरंध्या ।
वयं शविष्ठ वार्यं दिवि श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे ८

॥ १५१ ॥ (ऋ० ५।३६।१-६) त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

स आ गमदिन्द्रो यो वसूनां चिकेतद् दातुं दामनो रयीणाम् ।
धन्वचरो न वंसगस्तृषाण―श्चकमानः पिबतु दुग्धमंशुम् १
आ ते हनू हरिवः शूर शिप्रे रुहत् सोमो न पर्वतस्य पृष्ठे ।
अनु त्वा राजन्नर्वतो न हिन्वन् गीर्भिर्मदेम पुरुहूत विश्वे २ १७४५
चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते मनो भिया मे अमतेरिदद्रिवः ।
रथादधि त्वा जरिता सदावृध कुविन्नु स्तोषन्मघवन् पुरूवसुः ३
एष ग्रावेव जरिता त इन्द्रे―यर्ति वाचं बृहदाशुषाणः ।
प्र सव्येन मघवन् यंसि रायः प्र दक्षिणिद्धरिवो मा वि वेनः ४
वृषा त्वा वृषणं वर्धतु द्यौ―र्वृषा वृषभ्यां वहसे हरिभ्याम् ।
स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषा वज्रिन् भरे धाः ५
यो रोहितौ वाजिनौ वाजिनीवान् त्रिभिः शतैः सचमानावदिष्ट ।
यूने समस्मै क्षितयो नमन्तां श्रुतरथाय मरुतो दुवोया ६ १७४९

॥ १५२ ॥ (ऋ० ५।३७।१-५) (१७५०-१७६८) भौमोऽत्रिः । त्रिष्टुप् ।

सं भानुना यतते सूर्यस्या―ऽऽजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चाः ।
तस्मा अमृध्रा उषसो व्युच्छान् य इन्द्राय सुनवामेत्याह १ १७५०

समिद्धाग्निर्वनवत् स्तीर्णबर्हि-र्युक्तग्रावा सुतसोमो जराते ।
ग्रावाणो यस्येषिरं वदन्त्य-यदध्वर्युर्हविषाव सिन्धुम् २
वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ईं वहाते महिषीमिषिराम् ।
आस्य श्रवस्याद् रथ आ च घोषात् पुरू सहस्रा परि वर्तयाते ३
न स राजा व्यथते यस्मिन्निन्द्र-स्तीव्रं सोमं पिबति गोसखायम् ।
आ सत्वनैरजति हन्ति वृत्रं क्षेति क्षितीः सुभगो नाम पुष्यन् ४
पुष्यात् क्षेमे अभि योगे भवा-त्युभे वृतौ संयती सं जयाति ।
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति य इन्द्राय सुतसोमो ददाशत् ५

॥ १५३ ॥ (ऋ० ५।३८।१-५) अनुष्टुप् ।

उरोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो । अधा नो विश्वचर्षणे द्युम्ना सुक्षत्र मंहय १ १७५५
यदीमिन्द्र श्रवाय्य-मिषं शविष्ठ दधिषे । पप्रथे दीर्घश्रुत्तमं हिरण्यवर्ण दुष्टरम् २
शुष्मासो ये ते अद्रिवो मेहना केतसापः । उभा देवावभिष्टये दिवश्च ग्मश्च राजथः ३
उतो नो अस्य कस्य चिद् दक्षस्य तव वृत्रहन् । अस्मभ्यं नृम्णमा भरा-ऽस्मभ्यं नृमणस्यसे ४
नू त आभिरभिष्टिभि-स्तव शर्मञ्छतक्रतो । इन्द्र स्याम सुगोपाः शूर स्याम सुगोपाः ५

॥ १५४ ॥ (ऋ० ५।३९।१-५) अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

यदिन्द्र चित्र मेहना ऽस्ति त्वादातमद्रिवः । राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर १ १७६०
यन्मन्यसे वरेण्य-मिन्द्र द्युक्षं तदा भर । विद्याम तस्य ते वय-मकूपारस्य दावने २
यत् ते दित्सु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् । तेन दृळ्हा चिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये ३
मंहिष्ठं वो मघोनां राजानं चर्षणीनाम् । इन्द्रमुप प्रशस्तये पूर्वीभिर्जुजुषे गिरः ४
अस्मा इत् काव्यं वच उक्थमिन्द्राय शंस्यम् ।
तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः ५

॥ १५५ ॥ (ऋ० ५।४०।१-४) उष्णिक्; ४ त्रिष्टुप् ।

आ याह्यद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम १ १७६५
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम २
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम ३
ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाट्-छुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा ।
युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ् माध्यंदिने सवने मत्सदिन्द्रः ४ १७६८

॥ १५६ ॥ (ऋ० ८।३६।१-७)
(१७६९-१७८१) श्यावाश्व आत्रेयः । शक्वरी, ७ महापङ्क्तिः ।

अवितासि सुन्वतो वृक्तबर्हिषः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते १
प्राव स्तोतारं मघवन्नव त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते २ १७७०
ऊर्जा देवाँ अवस्योजसा त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ३
जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ४
जनिताश्वानां जनिता गवामसि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ५
अत्रीणां स्तोममद्रिवो महस्कृधि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ६
श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा शृणु यथाशृणोरत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्य इन्द्र ब्रह्माणि वर्धयन् ७ १७७५

॥ १५७ ॥ (ऋ० ८।३७।१-७) महापङ्क्तिः, १ अतिजगती ।

प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ प्र सुन्वतः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यंदिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः १
सेहान उग्र पृतना अभि द्रुहः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यंदिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः २
एकराळस्य भुवनस्य राजसि शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यंदिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ३
सस्थावाना यवयसि त्वमेक इच्छचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यंदिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ४
क्षेमस्य च प्रयुजश्च त्वमीशिषे शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यंदिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ५ १७८०
क्षत्राय त्वमवसि न त्वमाविथ शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यंदिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ६

श्यावाश्वस्य रेभत—स्तथा शृणु यथाशृणो—रत्रेः कर्माणि कृण्वतः।
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्य इन्द्र क्षत्राणि वर्धयन् ७ १७८२

॥ १५८ ॥ (ऋ० ८।९१।१-७)

(१७८३-१७८९) आत्रेयी अपाला। अनुष्टुप्, १-२ पङ्क्तिः।

कन्या३ वारवायती सोममपि स्रुताविदत्।
अस्तं भरन्त्यब्रवी—दिन्द्राय सुनवै त्वा शक्राय सुनवै त्वा १
असौ य एषि वीरको गृहंगृहं विचाकशत्।
इमं जम्भसुतं पिब धानावन्तं करम्भिण—मपूपवन्तमुक्थिनम् २
आ चन त्वा चिकित्सामो ऽधि चन त्वा नेमसि।
शनैरिव शनकैरिवे—न्द्रायेन्दो परि स्रव ३ १७८५
कुविच्छकत् कुवित् करत् कुविन्नो वस्यसस्करत्।
कुवित् पतिद्विषो यती—रिन्द्रेण संगमामहै ४
इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र वि रोहय।
शिरस्ततस्योर्वरा—मादिदं म उपोदरे ५
असौ च या न उर्वरा—दिमां तन्वं१ मम
अथो ततस्य यच्छिरः सर्वा ता रोमशा कृधि ६
खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो।
अपालामिन्द्र त्रिष्पू—त्व्यकृणोः सूर्यत्वचम् ७ १७८९

॥ १५९ ॥ (ऋ० ८।२४।१-२७)

(१७९०-१८१६) विश्वमना वैयश्वः। उष्णिक्।

सखाय आ शिषामहि ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे १ १७९०
शवसा ह्यसि श्रुतो वृत्रहत्येन वृत्रहा । मघैर्मघोनो अति शूर दाशसि २
स नः स्तवान आ भर रयिं चित्रश्रवस्तमम् । निरेके चिद् यो हरिवो वसुर्ददिः ३
आ निरेकमुत प्रिय—मिन्द्र दर्षि जनानाम् । धृषता धृष्णो स्तवमान आ भर ४
न ते सव्यं न दक्षिणं हस्तं वरन्त आमुरः । न परिबाधो हरिवो गविष्टिषु ५
आ त्वा गोभिरिव व्रजं गीर्भिर्ऋणोम्यद्रिवः । आ स्मा कामं जरितुरा मनः पृण ६ १७९५
विश्वानि विश्वमनसो धिया नो वृत्रहन्तम । उग्र प्रणेतरधि षू वसो गहि ७
वयं ते अस्य वृत्रहन् विद्याम शूर नव्यसः । वसोः स्पार्हस्य पुरुहूत राधसः ८
इन्द्र यथा ह्यस्ति ते ऽपरीतं नृतो शवः । अमृक्ता रातिः पुरुहूत दाशुषे ९

आ वृषस्व महामह महे नृतम राधसे । दृळ्हश्चिद् दृह्य मघवन् मघत्तये १०
नू अन्यत्रा चिदद्रिव—स्त्वन्नो जग्मुराशसः । मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिः ११ १८००
नह्यङ्ग नृतो त्व—दन्यं विन्दामि राधसे । राये द्युम्नाय शवसे च गिर्वणः १२
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु । प्र राधसा चोदयाते महित्वना १३
उपो हरीणां पतिं दक्षं पृञ्चन्तमब्रवम् । नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्व्यस्य १४
नह्यङ्ग पुरा चन जज्ञे वीरतरस्त्वत् । नकी राया नैवथा न भन्दना १५
एदु मध्वो मदिन्तरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः । एवा हि वीरः स्तवते सदावृधः १६ १८०५
इन्द्र स्थातर्हरीणां नकिष्टे पूर्व्यस्तुतिम् । उदानंश शवसा न भन्दना १७
तं वो वाजानां पति—महूमहि श्रवस्यवः । अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् १८
एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम् । कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् १९
अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः । घृतात् स्वादीयो मधुनश्च वोचत २०
यस्यामितानि वीर्या३ न राधः पर्येतवे । ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दक्षिणा २१ १८१०
स्तुहीन्द्रं व्यश्ववद—नूर्मिं वाजिनं यमम् । अर्यो गयं मंहमानं वि दाशुषे २२
एवा नूनमुप स्तुहि वैयश्व दशमं नवम् । सुविद्वांसं चर्कृत्यं चरणीनाम् २३
वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् । अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव २४
तदिन्द्राव आ भर येना दंसिष्ठ कृत्वने । द्विता कुत्साय शिश्नथो नि चोदय २५
तमु त्वा नूनमीमहे नव्यं दंसिष्ठ सन्यसे । स त्वं नो विश्वा अभिमातीः सक्षणिः २६ १८१५
य ऋक्षादंहसो मुचद् यो वार्यात् सप्त सिन्धुषु । वधर्दासस्य तुविनृम्ण नीनमः २७ १८१६

॥ १६० ॥ (ऋ० ८।४६।१-२०; २९-३१;३३)

(१८१७-१८४०) वशोऽश्व्यः । गायत्री, १ पादनिचृत्; ५ ककुप्, ७ बृहती, ८ अनुष्टुप्, ९ सतोबृहती, ११-१२ विपरीतोत्तरः प्रगाथः=(बृहती, विपरीता), १३ द्विपदा जगती, १४ बृहती पिपीलिकमध्या, १५ ककुम्न्यंकुशिरा, १६ विराट्, १७ जगती, १८ उपरिष्टाद् बृहती, १९ बृहती, २० विषमपदा बृहती; ३० द्विपदा विराट्, ३१ उष्णिक् ।

त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः । स्मसि स्थातर्हरीणाम् १
त्वां हि सत्यमद्रिवो विद्म दातारमिषाम् । विद्म दातारं रयीणाम् २
आ यस्य ते महिमानं शतमूते शतक्रतो । गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ३
सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा । मित्रः पान्त्यद्रुहः ४ १८२०
दधानो गोमदश्ववत् सुवीर्यमादित्यजूत एधते । सदा राया पुरुस्पृहा ५
तमिन्द्रं दानमीमहे शवसानमभीर्वम् । ईशानं राय ईमहे ६

तस्मिन् हि सन्त्यूतयो विश्वा अभीरवः सचा।
तमा वहन्तु सप्तयः पुरूवसुं मदाय हरयः सुतम् ७
यस्ते मदो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः।
य आददिः स्व१र्नृभि-र्यः पृतनासु दुष्टरः ८
यो दुष्टरो विश्ववार श्रवाय्यो वाजेष्वस्ति तरुता।
स नः शविष्ठ सवना वसो गहि गमेम गोमति व्रजे ९ १८२५
गव्यो षु णो यथा पुरा ऽश्वयोत रथया। वरिवस्य महामह १०
नहि ते शूर राधसो ऽन्तं विन्दामि सत्रा।
दशस्या नो मघवन्नू चिदद्रिवो धियो वाजेभिराविथ ११
य ऋष्वः श्रावयत्सखा विश्वेत् स वेद जनिमा पुरुष्टुतः।
तं विश्वे मानुषा युगे-न्द्रं हवन्ते तविषं यतस्रुचः १२
स नो वाजेष्वविता पुरूवसुः पुरःस्थाता मघवा वृत्रहा भुवत् १३
अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम्।
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा १४ १८३०
ददी रेक्णस्तन्वे ददिर्वसु ददिर्वाजेषु पुरुहूत वाजिनम्। नूनमथ १५
विश्वेषामिरज्यन्तं वसूनां सासह्वांसं चिदस्य वर्पसः। कृपयतो नूनमत्यथ १६
महः सु वो अरमिषे स्तवामहे मीळ्हुषे अरंगमाय जग्मये।
यज्ञेभिर्गीर्भिर्विश्वमनुषां मरुता-मियक्षसि गाये त्वा नमसा गिरा १७
ये पातयन्ते अज्मभि-र्गिरीणां स्नुभिरेषाम्।
यज्ञं महिष्वणीनां सुम्नं तुविष्वणीनां प्राध्वरे १८
प्रभङ्गं दुर्मतीना-मिन्द्र शविष्ठा भर।
रयिमस्मभ्यं युज्यं चोदयन्मते ज्येष्ठं चोदयन्मते १९ १८३५
सनितः सुसनितरुग्र चित्र चेतिष्ठ सूनृत।
प्रासहा सम्राट् सहुरिं सहन्तं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् २०
अध प्रियमिषिराय षष्टिं सहस्रासनम्। अश्वानामिन्न वृष्णाम् २९
गावो न यूथमुप यन्ति वध्रय उप मा यन्ति वध्रयः ३०
अध यच्चारथे गणे शतमुष्ट्राँ अचिक्रदत्। अध श्वित्नेषु विंशतिं शता ३१
अध स्या योषणा मही प्रतीची वशमश्व्यम्। अधिरुक्मा वि नीयते ३३ १८४०

॥ १६१ ॥ (ऋ० ६।१७।१-१५)

(१८४१-२००५) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप्; १५ द्विपदा त्रिष्टुप् ।

पिबा सोममभि यमुग्र तर्द ऊर्वं गव्यं महि गृणान इन्द्र ।
वि यो धृष्णो वधिषो वज्रहस्त विश्वा वृत्रममित्रिया शवोभिः १
स ईं पाहि य ऋजीषी तरुत्रो यः शिप्रवान् वृषभो यो मतीनाम् ।
यो गोत्रभिद् वज्रभृद् यो हरिष्ठाः स इन्द्र चित्राँ अभि तृन्धि वाजान् २
एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः ।
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूँरभि गा इन्द्र तृन्धि ३
ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम् ।
महामनूनं तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हृषन्त प्रसाहम् ४
येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानोऽवासयोऽप दृळ्हानि दर्द्रत् ।
महामद्रिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदसस्परि स्वात् ५ १८४५
तव क्रत्वा तव तद् दंसनाभिरामासु पक्वं शच्या नि दीधः ।
और्णोर्दुर उस्रियाभ्यो वि दृळ्होदूर्वाद् गा असृजो अङ्गिरस्वान् ६
पप्राथ क्षां महि दंसो व्युर्वीमुप द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः ।
अधारयो रोदसी देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यह्वी ऋतस्य ७
अध त्वा विश्वे पुर इन्द्र देवा एकं तवसं दधिरे भराय ।
अदेवो यदभ्यौहिष्ट देवान् त्स्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्र ८
अध द्यौश्चित् ते अप सा नु वज्राद् द्वितानमद् भियसा स्वस्य मन्योः ।
अहिं यदिन्द्रो अभ्योहसानं नि चिद् विश्वायुः शयथे जघान ९
अध त्वष्टा ते मह उग्र वज्रं सहस्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम् ।
निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृजीषिन् १० १८५०
वर्धान् यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषाँ इन्द्र तुभ्यम् ।
पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन् वृत्रहणं मदिरमंशुमस्मै ११
आ क्षोदो महि वृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम् ।
तासामनु प्रवत इन्द्र पन्थां प्रार्दयो नीचीरपसः समुद्रम् १२
एवा ता विश्वा चकृवांसमिन्द्रं महामुग्रमजुर्यं सहोदाम् ।
सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्रमा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात् १३
स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमत इन्द्र विप्रान् ।
भरद्वाजे नृवत इन्द्र सूरीन् दिवि च स्मैधि पार्ये न इन्द्र १४

अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः १५ १८५५

॥ १६२ ॥ (ऋ० ६।१८।१-१५)

तमु ष्टुहि यो अभिभूत्योजा वन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रः ।
अषाळ्हमुग्रं सहमानमाभि- र्गीर्भिर्वर्ध वृषभं चर्षणीनाम् १
स युध्मः सत्वा खजकृत् समद्वा तुविम्रक्षो नदनुमाँ ऋजीषी ।
बृहद्रेणुश्च्यवनो मानुषीणा- मेकः कृष्टीनामभवत् सहावा २
त्वं ह नु त्यददमायो दस्यूँ- रेकः कृष्टीरवनोरार्याय ।
अस्ति स्विन्नु वीर्यं१ तत् त इन्द्र न स्विदस्ति तदृतुथा वि वोचः ३
सदिद्धि ते तुविजातस्य मन्ये सहः सहिष्ठ तुरतस्तुरस्य ।
उग्रमुग्रस्य तवसस्तवीयो ऽरध्रस्य रध्रतुरो बभूव ४
तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु युष्मे इत्था वदद्भिर्वलमङ्गिरोभिः ।
हन्नच्युतच्युद् दस्मेषयन्त- मृणोः पुरो वि दुरो अस्य विश्वाः ५ १८६०
स हि धीभिर्हव्यो अस्त्युग्र ईशानकृन्महति वृत्रतूर्ये ।
स तोकसाता तनये स वज्री वितन्तसाय्यो अभवत् समत्सु ६
स मज्मना जनिम मानुषाणा- ममर्त्येन नाम्नाति प्र सर्स्रे ।
स द्युम्नेन स शवसोत राया स वीर्येण नृतमः समोकाः ७
स यो न मुहे न मिथू जनो भूत् सुमन्तुनामा चुमुरिं धुनिं च ।
वृणक् पिप्रुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां च्यौत्नाय शयथाय नू चित् ८
उदावता त्वक्षसा पन्यसा च वृत्रहत्याय रथमिन्द्र तिष्ठ ।
धिष्व वज्रं हस्त आ दक्षिणत्रा ऽभि प्र मन्द पुरुदत्र मायाः ९
अग्निर्न शुष्कं वनमिन्द्र हेती रक्षो नि धक्ष्यशनिर्न भीमा ।
गम्भीरय ऋष्वया यो रुरोजा- ऽध्वानयद् दुरिता दम्भयच्च १० १८६५
आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र राया तुविद्युम्न तुविवाजेभिरर्वाक् ।
याहि सूनो सहसो यस्य नू चि- ददेव ईशे पुरुहूत योतोः ११
प्र तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य घृष्वे- र्दिवो ररप्शे महिमा पृथिव्याः ।
नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति न प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सह्योः १२
प्र तत् ते अद्या करणं कृतं भूत् कुत्सं यदायुमतिथिग्वमस्मै ।
पुरू सहस्रा नि शिशा अभि क्षा- मुत् तूर्वयाणं धृषता निनेथ १३

अनु त्वाहिघ्ने अध देव देवा मदन् विश्वे कवितमं कवीनाम्।
करो यत्र वरिवो बाधिताय दिवे जनाय तन्वे गृणानः १४
अनु द्यावापृथिवी तत् त ओजोऽमर्त्या जिहत इन्द्र देवाः
कृष्वा कृत्नो अकृतं यत् ते अस्त्युक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञैः १५ १८७०

॥ १३३ ॥ (ऋ० ६।१९।१-१३)

महाँ इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्रा उत द्विबर्हा अमिनः सहोभिः।
अस्मद्र्यग्वावृधे वीर्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् १
इन्द्रमेव धिषणा सातये धाद् बृहन्तमृष्वमजरं युवानम्।
अषाळ्हेन शवसा शूशुवांसं सद्यश्चिद् यो वावृधे असामि २
पृथू करस्ना बहुला गभस्ती अस्मद्र्यक् सं मिमीहि श्रवांसि।
यूथेव पश्वः पशुपा दमूना अस्माँ इन्द्राभ्या ववृत्स्वाजौ ३
तं व इन्द्रं चतिनमस्य शाकैरिह नूनं वाजयन्तो हुवेम।
यथा चित् पूर्वे जरितार आसुरनेद्या अनवद्या अरिष्टाः ४
धृतव्रतो धनदाः सोमवृद्धः स हि वामस्य वसुनः पुरुक्षुः।
सं जग्मिरे पथ्या रायो अस्मिन् त्समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः ५ १८७५
शविष्ठं न आ भर शूर शव ओजिष्ठमोजो अभिभूत उग्रम्।
विश्वा द्युम्ना वृष्ण्या मानुषाणामस्मभ्यं दा हरिवो मादयध्यै ६
यस्ते मदः पृतनाषाळमृध्र इन्द्र तं न आ भर शूशुवांसम्।
येन तोकस्य तनयस्य सातौ मंसीमहि जिगीवांसस्त्वोताः ७
आ नो भर वृषणं शुष्ममिन्द्र धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम्।
येन वंसाम पृतनासु शत्रून् तवोतिभिरुत जामीँरजामीन् ८
आ ते शुष्मो वृषभ एतु पश्चादोत्तरादधरादा पुरस्तात्।
आ विश्वतो अभि समेत्वर्वाङिन्द्र द्युम्नं स्वर्वद्धेह्यस्मे ९
नृवत् त इन्द्र नृतमाभिरूती वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः।
ईक्षे हि वस्व उभयस्य राजन् धा रत्नं महि स्थूरं बृहन्तम् १० १८८०
मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम्।
विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम ११
जनं वज्रिन् महि चिन्मन्यमानमेभ्यो नृभ्यो रन्धया येष्वस्मि।
अधा हि त्वा पृथिव्यां शूरसातौ हवामहे तनये गोष्वप्सु १२

वयं त एभिः पुरुहूत सख्यैः शत्रोःशत्रोरुत्तर इत् स्याम ।
घ्नन्तो वृत्राण्युभयानि शूर राया मदेम बृहता त्वोताः १३

॥ १६४ ॥ (ऋ० ६।२०।१-१३) त्रिष्टुप्, ७ विराट् ।

द्यौर्न य इन्द्राभि भूमार्यस्तस्थौ रयिः शवसा पृत्सु जनान् ।
तं नः सहस्रभरमुर्वरासां दद्धि सूनो सहसो वृत्रतुरम् १
दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र सत्रा ऽसुर्यं देवेभिर्धायि विश्वम् ।
अहिं यद् वृत्रमपो वव्रिवांसं हन्नृजीषिन् विष्णुना सचानः २ १८८५
तूर्वन्नोजीयान् तवसस्तवीयान् कृतब्रह्मेन्द्रो वृद्धमहाः ।
राजाभवन्मधुनः सोम्यस्य विश्वासां यत् पुरां दर्त्नुमावत् ३
शतैरपद्रन् पणय इन्द्रात्र दशोणये कवयेऽर्कसातौ ।
वधैः शुष्णस्याशुषस्य मायाः पित्वो नारिरेचीत् किं चन प्र ४
महो द्रुहो अप विश्वायु धायि वज्रस्य यत् पतने पादि शुष्णः ।
उरु ष सरथं सारथये करिन्द्रः कुत्साय सूर्यस्य सातौ ५
प्र श्येनो न मदिरमंशुमस्मै शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।
प्रावन्नमीं साप्यं ससन्तं पृणग्राया समिषा सं स्वस्ति ६
वि पिप्रोरहिमायस्य दृळ्हाः पुरो वज्रिञ्छवसा न दर्दः ।
सुदामन् तद् रेक्णो अप्रमृष्यमृजिश्वने दात्रं दाशुषे दाः ७ १८९०
स वेतसुं दशमायं दशोणिं तूतुजिमिन्द्रः स्वभिष्टिसुम्नः ।
आ तुग्रं शश्वदिभं द्योतनाय मातुर्न सीमुप सृजा इयध्यै ८
स ईं स्पृधो वनते अप्रतीतो बिभ्रद् वज्रं वृत्रहणं गभस्तौ ।
तिष्ठद्धरी अध्यस्तेव गर्ते वचोयुजा वहत इन्द्रमृष्वम् ९
सनेम तेऽवसा नव्य इन्द्र प्र पूरवः स्तवन्त एना यज्ञैः
सप्त यत् पुरः शर्म शारदीर्दर्द्धन् दासीः पुरुकुत्साय शिक्षन् १०
त्वं वृध इन्द्र पूर्व्यो भूर्वरिवस्यन्नुशने काव्याय ।
परा नववास्त्वमनुदेयं महे पित्रे ददाथ स्वं नपातम् ११
त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।
प्र यत् समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति १२ १८९५
तव ह त्यदिन्द्र विश्वमाजौ सस्तो धुनीचुमुरी या ह सिष्वप् ।
दीदयदित् तुभ्यं सोमेभिः सुन्वन् दभीतिरिध्मभृतिः पक्थ्यर्कैः १३

॥ १६५ ॥ (ऋ० ६।२१।१-८,१०,११)

इमा उ त्वा पुरुतमस्य कारो—र्हव्यं वीर हव्या हवन्ते ।
धियो रथेष्ठामजरं नवीयो रयिर्विभूतिरीयते वचस्या १
तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानो गिर्वाहसं गीर्भिर्यज्ञवृद्धम् ।
यस्य दिवमति मह्ना पृथिव्याः पुरुमायस्य रिरिचे महित्वम् २
स इत् तमोऽवयुनं ततन्वत् सूर्येण वयुनवच्चकार ।
कदा ते मर्ता अमृतस्य धामे—यक्षन्तो न मिनन्ति स्वधावः ३
यस्ता चकार स कुह स्विदिन्द्रः कमा जनं चरति कासु विक्षु ।
कस्ते यज्ञो मनसे शं वराय को अर्क इन्द्र कतमः स होता ४ १९००
इदा हि ते वेविषतः पुराजाः प्रत्नास आसुः पुरुकृत् सखायः ।
ये मध्यमास उत नूतनास उतावमस्य पुरुहूत बोधि ५
तं पृच्छन्तोऽवरासः पराणि प्रत्ना त इन्द्र श्रुत्यानु येमुः ।
अर्चामसि वीर ब्रह्मवाहो यादेव विद्म तात् त्वा महान्तम् ६
अभि त्वा पाजो रक्षसो वि तस्थे महि जज्ञानमभि तत् सु तिष्ठ ।
तव प्रत्नेन युज्येन सख्या वज्रेण धृष्णो अप ता नुदस्व ७
स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य ब्रह्मण्यतो वीर कारुधायः ।
त्वं ह्यापिः प्रदिवि पितॄणां शश्वद् बभूथ सुहव एष्टौ ८
इम उ त्वा पुरुशाक प्रयज्यो जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
श्रुधी हवमा हुवतो हुवानो न त्वावाँ अन्यो अमृत त्वदस्ति १० १९०५
स नो बोधि पुरएता सुगेषू—त दुर्गेषु पथिकृद् विदानः ।
ये अश्रमास उरवो वहिष्ठा—स्तेभिर्न इन्द्राभि वक्षि वाजम् १२

॥ १६६ ॥ (६।२२।१-११)

य एक इद्धव्यश्चर्षणीना—मिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः ।
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान् त्सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान् १
तमु नः पूर्वे पितरो नवग्वाः सप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः ।
नक्षद्दाभं ततुरिं पर्वतेष्ठा—मद्रोघवाचं मतिभिः शविष्ठम् २
तमीमह इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः ।
यो अस्कृधोयुरजरः स्वर्वान् तमा भर हरिवो मादयध्यै ३

तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चि–ज्जरितार आनशुः सुम्नमिन्द्र ।
कस्ते भागः किं वयो दुध्र खिद्वः पुरुहूत पुरूवसोऽसुरघ्नः ४ १९१०
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठा–मिन्द्रं वेपी वक्वरी यस्य नू गीः ।
तुविग्राभं तुविकूर्मिं रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ ५
अया ह त्यं मायया वावृधानं मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन ।
अच्युता चिद् वीळिता स्वोजो रुजो वि दृळ्हा धृषता विरप्शिन् ६
तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत् परितंसयध्यै ।
स नो वक्षदनिमानः सुवह्मे–न्द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि ७
आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽन्तरिक्षा ।
तपा वृषन् विश्वतः शोचिषा तान् ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्च ८
भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंदृक् ।
धिष्व वज्रं दक्षिण इंद्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः ९ १९१५
आ संयतमिंद्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम्
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन् सुतुका नाहुषाणि १०
स नो नियुद्भिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यो ।
न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मद्र्यद्रिक् ११

॥ १६७ ॥ (ऋ० ६.२२.१-१०)

सुत इत् त्वं निमिश्ल इन्द्र सोमे स्तोमे ब्रह्मणि शस्यमान उक्थे ।
यद् वा युक्ताभ्यां मघवन् हरिभ्यां बिभ्रद् वज्रं बाह्वोरिन्द्र यासि १
यद् वा दिवि पार्ये सुष्विमिन्द्र वृत्रहत्येऽवसि शूरसातौ ।
यद् वा दक्षस्य बिभ्युषो अबिभ्य–दरन्धयः शर्धत इन्द्र दस्यून् २
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं प्रणेनीरुग्रो जरितारमूती ।
कर्ता वीराय सुष्वय उ लोकं दाता वसु स्तुवते कीरये चित् ३ १९२०
गन्तेयान्ति सवना हरिभ्यां बभ्रिर्वज्रं पपिः सोमं ददिर्गाः ।
कर्ता वीरं नर्यं सर्ववीरं श्रोता हवं गृणतः स्तोमवाहाः ४
अस्मै वयं यद् वावान तद् विविष्म इन्द्राय यो नः प्रदिवो अपस्कः ।
सुते सोमे स्तुमसि शंसदुक्थे–न्द्राय ब्रह्म वर्धनं यथासत् ५
ब्रह्माणि हि चकृषे वर्धनानि तावत् त इन्द्र मतिभिर्विविष्मः ।
सुते सोमे सुतपाः शंतमानि रान्द्र्या क्रियास्म वक्षणानि यज्ञैः ६

स नो बोधि पुरोळाशं रराणः पिबा तु सोमं गोऋजीकमिन्द्र ।
एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदो—रुं कृधि त्वायत उ लोकम् ७
स मन्दस्वा ह्यनु जोषमुग्र प्र त्वा यज्ञास इमे अश्नुवन्तु ।
प्रेमे हवासः पुरुहूतमस्मे आ त्वेयं धीरवस इन्द्र यम्याः ८ १९२५
तं वः सखायः सं यथा सुतेषु सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।
कुवित् तस्मा असति नो भराय न सुष्विमिन्द्रोऽवसे मृधाति ९
एवेदिन्द्रः सुते अस्तावि सोमे भरद्वाजेषु क्षयदिन्मघोनः ।
असद् यथा जरित्र उत सूरि—रिंद्रो रायो विश्ववारस्य दाता १०

॥ १६८ ॥ (ऋ० ६।२४।१-१०)

वृषा मद इंद्रे श्लोक उक्था सचा सोमेषु सुतपा ऋजीषी ।
अर्चत्र्यो मघवा नृभ्य उक्थै—र्द्युक्षो राजा गिरामक्षितोतिः १
ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः श्रोता हवं गृणत उर्व्यूतिः ।
वसुः शंसो नरां कारुधाया वाजी स्तुतो विदथे दाति वाजम् २
अक्षो न चक्र्योः शूर बृहन् प्र ते मह्ना रिरिचे रोदस्योः ।
वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वया व्यूतयो रुरुहुरिंद्र पूर्वीः ३ १९३०
शचीवतस्ते पुरुशाक शाका गवामिव स्रुतयः संचरणीः ।
वत्सानां न तंतयस्त इंद्र दामन्वन्तो अदामानः सुदामन् ४
अन्यदद्य कर्वरमन्यदु श्वो ऽसच्च सन्मुहुराचक्रिरिंद्रः ।
मित्रो नो अत्र वरुणश्च पूषा ऽर्यो वशस्य पर्येतास्ति ५
वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठा—दुक्थेभिरिंद्रानयंत यज्ञैः ।
तं त्वाभिः सुष्टुतिभिर्वाजयंत आजिं न जग्मुर्गिर्वाहो अश्वाः ६
न यं जरंति शरदो न मासा न द्याव इंद्रमवकर्शयंति ।
वृद्धस्य चिद् वर्धतामस्य तनूः स्तोमेभिरुक्थैश्च शस्यमाना ७
न वीळवे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युजूताय स्तवान् ।
अज्रा इंद्रस्य गिरयश्चिदृष्वा गम्भीरे चिद् भवति गाधमस्मै ८ १९३५
गम्भीरेण न उरुणामत्रिन् प्रेषो यन्धि सुतपावन् वाजान् ।
स्था ऊ षु ऊर्ध्व ऊती अरिषण्य—न्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम् ९
सचस्व नायमवसे अभीक इतो वा तमिन्द्र पाहि रिषः ।
अमा चैनमरण्ये पाहि रिषो मदेम शतहिमाः सुवीराः १०

॥ १६९ ॥ (ऋ० ६।२५।१-९)

या त ऊतिरवमा या परमा　या मध्यमेन्द्र शुष्मिन्नस्ति ।
ताभिरू षु वृत्रहत्येऽवीर्न　एभिश्च वाजैर्महान् न उग्र　१
आभिः स्पृधो मिथतीररिषण्य — न्नमित्रस्य व्यथया मन्युमिन्द्र ।
आभिर्विश्वा अभियुजो विषूची — रार्याय विशोऽव तारीर्दासीः　२
इन्द्र जामय उत येऽजामयो　ऽर्वाचीनासो वनुषो युयुज्रे ।
त्वमेषां विथुरा शवांसि　जहि वृष्ण्यानि कृणुही पराचः　३　१९४०
शूरो वा शूरं वनते शरीरै — स्तनूरुचा तरुषि यत् कृण्वैते ।
तोके वा गोषु तनये यदप्सु　वि क्रन्दसी उर्वरासु ब्रवैते　४
नहि त्वा शूरो न तुरो न धृष्णु — र्न त्वा योधो मन्यमानो युयोध ।
इन्द्र नकिष्ट्वा प्रत्यस्त्येषां　विश्वा जातान्यभ्यसि तानि　५
स पत्यत उभयोर्नृम्णमयो — र्यदी वेधसः समिथे हवन्ते ।
वृत्रे वा महो नृवति क्षये वा　व्यचस्वन्ता यदि वितन्तसैते　६
अध स्मा ते चर्षणयो यदेजा — निन्द्र त्रातोत भवा वरूता ।
अस्माकासो ये नृतमासो अर्य　इन्द्र सूरयो दधिरे पुरो नः　७
अनु ते दायि मह इन्द्रियाय　सत्रा ते विश्वमनु वृत्रहत्ये ।
अनु क्षत्रमनु सहो यजत्रे — न्द्र देवेभिरनु ते नृषह्ये　८　१९४१
एवा नः स्पृधः समजा समत्स्विन्द्र — रारन्धि मिथतीरदेवीः ।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो　भरद्वाजा उत त इन्द्र नूनम्　९

॥ १७० ॥ (ऋ० ६।२६।१-८)

श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि त्वा　महो वाजस्य सातौ वावृषाणाः
सं यद् विशोऽयन्त शूरसाता　उग्रं नोऽवः पार्ये अहन् दाः　१
त्वां वाजी हवते वाजिनेयो　महो वाजस्य गध्यस्य सातौ ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं तरुत्रं　त्वां चष्टे मुष्टिहा गोषु युध्यन्　२
त्वं कविं चोदयोऽर्कसातौ　त्वं कुत्साय शुष्णं दाशुषे वर्क् ।
त्वं शिरो अमर्मणः पराह — न्नतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्　३
त्वं रथं प्र भरो योधमृष्व — मावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् ।
त्वं तुग्रं वेतसवे सचाहन्　त्वं तुजिं गृणन्तमिन्द्र तूतोः　४　१९५०

त्वं तदुक्थमिन्द्र बर्हणा कः प्र यच्छता सहस्रा शूर दर्षि ।
अव गिरेर्दासं शम्बरं हन् प्रावो दिवोदासं चित्राभिरूती ५
त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः सोमै-र्दभीतये चुमुरिमिन्द्र सिष्वप् ।
त्वं रजिं पिठीनसे दशस्यन् षष्टिं सहस्रा शच्या सचाहन् ६
अहं चन तत् सूरिभिरानश्यां तव ज्याय इन्द्र सुम्नमोजः ।
त्वया यत् स्तवन्ते सधवीर वीरा-स्त्रिवरूथेन नहुषा शविष्ठ ७
वयं ते अस्यामिन्द्र द्युम्नहूतौ सखायः स्याम महिन प्रेष्ठाः ।
प्रातर्दनिः क्षत्रश्रीरस्तु श्रेष्ठो घने वृत्राणां सनये धनानाम् ८

॥ १७१ ॥ (ऋ० ६।२७।१-७)

किमस्य मदे किम्वस्य पीता-विन्द्रः किमस्य सख्ये चकार ।
रणा वा ये निषदि किं ते अस्य पुरा विविद्रे किमु नूतनासः १ १९५५
सदस्य मदे सद्वस्य पीता-विन्द्रः सदस्य सख्ये चकार ।
रणा वा ये निषदि सत् ते अस्य पुरा विविद्रे सदु नूतनासः २
नहि नु ते महिमनः समस्य न मघवन् मघवत्त्वस्य विद्म ।
न राधसोराधसो नूतनस्ये-न्द्र नकिर्ददृश इन्द्रियं ते ३
एतत् त्यत् त इन्द्रियमचेति येनावधीर्वरशिखस्य शेषः ।
वज्रस्य यत् ते निहतस्य शुष्मात् स्वनाच्चिदिन्द्र परमो ददार ४
वधीदिन्द्रो वरशिखस्य शेषो ऽभ्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन् ।
वृचीवतो यद्धरियूपीयायां हन् पूर्वे अर्धे भियसापरो दर्त् ५
त्रिंशच्छतं वर्मिण इन्द्र साकं यव्यावत्यां पुरुहूत श्रवस्या ।
वृचीवन्तः शरवे पत्यमानाः पात्रा भिन्दाना न्यर्थान्यायन् ६ १९६०
यस्य गावावरुषा सूयवस्यू अन्तरू षु चरतो रेरिहाणा ।
स सृञ्जयाय तुर्वशं परादाद् वृचीवतो दैववाताय शिक्षन् ७

॥ १७२ ॥ (ऋ० ६।२९।१-६)

इन्द्रं वो नरः सख्याय सेपु-र्महो यन्तः सुमतये चकानाः ।
महो हि दाता वज्रहस्तो अस्ति महामु रण्वमवसे यजध्वम् १
आ यस्मिन् हस्ते नर्या मिमिक्षु-रा रथे हिरण्यये रथेष्ठाः ।
आ रश्मयो गभस्त्योः स्थूरयो-राध्वन्नश्वासो वृषणो युजानाः २

श्रिये ते पादा दुव आ मिमिक्षु--र्धृष्णुर्वज्री शवसा दक्षिणावान् ।
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्व१र्ण नृतविषिरो बभूथ ३
स सोम आमिश्लतमः सुतो भूद् यस्मिन् पक्तिः पच्यते सन्ति धानाः ।
इन्द्रं नरः स्तुवन्तो ब्रह्मकारा उक्था शंसन्तो देववाततमाः ४ १९६५
न ते अन्तः शवसो धाय्यस्य वि तु बाबधे रोदसी महित्वा ।
आ ता सूरिः पृणति तूतुजानो यूथेवाप्सु समीजमान ऊती ५
एवेदिन्द्रः सुहव ऋष्वो अस्तू--ती अनूती हिरिशिप्रः सत्वा ।
एवा हि जातो असमात्योजाः पुरू च वृत्रा हनति नि दस्यून् ६

॥ १७३ ॥ (ऋ० ६।३०।१-५)

भूय इद् वावृधे वीर्याँय एको अजुर्यो दयते वसूनि ।
प्र रिरिचे दिव इन्द्रः पृथिव्या अर्धमिदस्य प्रति रोदसी उभे १
अधा मन्ये बृहदसुर्यमस्य यानि दाधार नकिरा मिनाति ।
दिवेदिवे सूर्यो दर्शतो भूद् वि सद्मान्युर्विया सुक्रतुर्धात् २
अद्या चिन्नू चित् तदपो नदीनां यदाभ्यो अरदो गातुमिन्द्र ।
नि पर्वता अद्मसदो न सेदु--स्त्वया दृळ्हानि सुक्रतो रजांसि ३ १९७०
सत्यमित् तन्न त्वावाँ अन्यो अस्ती--न्द्र देवो न मर्त्यो ज्यायान् ।
अहन्नहिं परिशयानमर्णो ऽवासृजो अपो अच्छा समुद्रम् ४
त्वमपो वि दुरो विषूची--रिन्द्र दृळ्हमरुजः पर्वतस्य ।
राजाभवो जगतश्चर्षणीनां साकं सूर्यं जनयन् द्यामुषासम् ५

॥ १७४ ॥ (ऋ० ६।३७।१-५)

अर्वाग्रथं विश्ववारं त उग्रे--न्द्र युक्तासो हरयो वहन्तु ।
कीरिश्चिद्धि त्वा हवते स्वर्वा--नृधीमहि सधमादस्ते अद्य १
प्रो द्रोणे हरयः कर्माग्मन् पुनानास ऋज्यन्तो अभूवन् ।
इन्द्रो नो अस्य पूर्व्यः पपीयाद् द्युक्षो मदस्य सोम्यस्य राजा २
आसस्राणासः शवसानमच्छे--न्द्रं सुचक्रे रथ्यासो अश्वाः ।
अभि श्रव ऋज्यन्तो वहेयु--र्नू चिन्नु वायोरमृतं वि दस्येत् ३ १९७५
वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियर्ती--न्द्रो मघोनां तुविकूर्मितमः ।
यया वज्रिवः परियास्यंहो मघा च धृष्णो दयसे वि सूरीन् ४
इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य दाते--न्द्रो गीर्भिर्वर्धतां वृद्धमहाः ।
इन्द्रो वृत्रं हनिष्ठो अस्तु सत्वा ऽऽ ता सूरिः पृणति तूतुजानः ५

॥ १७५ ॥ (ऋ० ६।३८।१-५)

अपादित उदु नश्चित्रतमो महीं भर्षद् द्युमतीमिन्द्रहूतिम् ।
पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य याम—ञ्जनस्य रातिं वनते सुदानुः १
दूराच्चिदा वसतो अस्य कर्णा घोषादिन्द्रस्य तन्यति ब्रुवाणः ।
एयमेनं देवहूतिर्ववृत्या—न्मद्र्य१गिन्द्रमियमृच्यमाना २
तं वो धिया परमया पुराजा—मजरमिन्द्रमभ्यनूष्यर्कैः ।
ब्रह्मा च गिरो दधिरे समस्मिन् महाँश्च स्तोमो अधि वर्धदिन्द्रे ३ १९८०
वर्धाद् यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद् ब्रह्म गिर उक्था च मन्म ।
वर्धाहैनमुषसो यामन्नक्तो—र्वर्धान् मासाः शरदो द्याव इन्द्रम् ४
एवा जज्ञानं सहसे असामि वावृधानं राधसे च श्रुताय ।
महामुग्रमवसे विप्र नून—मा विवासेम वृत्रतूर्येषु ५

॥ १७६ ॥ (ऋ० ६।३९।१-५)

मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य वह्ने—र्विप्रमन्मनो वचनस्य मध्वः ।
अपा नस्तस्य सचनस्य देवे—षो युवस्व गृणते गोअग्राः १
अयमुशानः पर्यद्रिमुस्रा ऋतधीतिभिर्ऋतयुग्युजानः ।
रुजदरुग्णं वि वलस्य सानुं पणीँर्वचोभिरभि योधदिन्द्रः २
अयं द्योतयदद्युतो व्य१क्तून् दोषा वस्तोः शरद इन्दुरिन्द्र ।
इमं केतुमदधुर्नू चिदह्नां शुचिजन्मन उषसश्चकार ३ १९८५
अयं रोचयदरुचो रुचानो३ ऽयं वासयद् व्यृ१तेन पूर्वीः ।
अयमीयत ऋतयुग्भिरश्वैः स्वर्विदा नाभिना चर्षणिप्राः ४
नू गृणानो गृणते प्रत्न राज—न्निषः पिन्व वसुदेयाय पूर्वीः ।
अप ओषधीरविषा वनानि गा अर्वतो नॄनृचसे रिरीहि ५

॥ १७७ ॥ (ऋ० ६।४०।१-५)

इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो मदाया—ऽव स्य हरी वि मुचा सखाया ।
उत प्र गाय गण आ निषद्या—ऽथा यज्ञाय गृणते वयो धाः १
अस्य पिब यस्य जज्ञान इन्द्र मदाय क्रत्वे अपिबो विरप्शिन् ।
तमु ते गावो नर आपो अद्रि—रिन्दुं समह्यन् पीतये समस्मै २
समिद्धे अग्नौ सुत इन्द्र सोम आ त्वा वहन्तु हरयो वहिष्ठाः ।
त्वायता मनसा जोहवीमी—न्द्रा याहि सुविताय महे नः ३ १९९०

आ याहि शश्वदुशता ययाथेन्द्र महा मनसा सोमपेयम् ।
उप ब्रह्माणि शृणव इमा नो ऽथा ते यज्ञस्तन्वे३ वयो धात् ४
यदिन्द्र दिवि पार्ये यदृधग् यद् वा स्वे सदने यत्र वासि ।
अतो नो यज्ञमवसे नियुत्वान् त्सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः ५

॥ १७८ ॥ (ऋ० ६।४१।१-५)

अहेळमान उप याहि यज्ञं तुभ्यं पवन्त इन्दवः सुतासः ।
गावो न वज्रिन्त्स्वमोको अच्छेन्द्रा गहि प्रथमो यज्ञियानाम् १
या ते काकुत् सुकृता या वरिष्ठा यया शश्वत् पिबसि मध्व ऊर्मिम् ।
तया पाहि प्र ते अध्वर्युरस्थात् सं ते वज्रो वर्ततामिन्द्र गव्युः २
एष द्रप्सो वृषभो विश्वरूप इन्द्राय वृष्णे समकारि सोमः
एतं पिब हरिवः स्थातरुग्र यस्येशिषे प्रदिवि यस्ते अन्नम् ३ १९९५
सुतः सोमो असुतादिन्द्र वस्यानयं श्रेयाञ्चिकितुषे रणाय ।
एतं तितिर्व उप याहि यज्ञं तेन विश्वास्तविषीरा पृणस्व ४
ह्वयामसि त्वेन्द्र याह्यर्वाङरं ते सोमस्तन्वे भवाति ।
शतक्रतो मादयस्वा सुतेषु प्रास्माँ अव पृतनासु प्र विक्षु ५

॥ १७९ ॥ (ऋ० ६।४२।१-४) अनुष्टुप्, ४ बृहती ।

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर । अरंगमाय जग्मये ऽपश्चाद्दघ्वने नरे १
एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः सोमपातमम् । अमत्रेभिर्ऋजीषिणमिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः २
यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ । वेदा विश्वस्य मेधिरो धृषत् तंतमिदेषते ३ २०००
अस्माअस्मा इदन्धसो ऽध्वर्यो प्र भरा सुतं । कुवित् समस्य जेन्यस्य शर्धतो ऽभिशस्तेरवस्परत् ४

॥ १८० ॥ (ऋ० ६।४३।१-४) उष्णिक् ।

यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब १
यस्य तीव्रसुतं मदं मध्यमन्तं च रक्षसे । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब २
यस्य गा अन्तरश्मनो मदे दृळ्हा अवासृजः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ३
यस्य मन्दानो अन्धसो माघोनं दधिषे शवः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ४ २००५

॥ १८१ ॥ (ऋ० ६।३१।१-५)

(२००६-२०१५) सुहोत्रो भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, ४ शक्वरी ।

अभूरेको रयिपते रयीणामा हस्तयोरधिथा इन्द्र कृष्टीः ।
वि तोके अप्सु तनये च सूरे ऽवोचन्त चर्षणयो विवाचः १

त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि विश्वा ऽच्युता चिच्च्यावयन्ते रजांसि ।
द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वं दृळ्हं भयते अज्मन्ना ते २
त्वं कुत्सेनाभि शुष्णमिन्द्रा—ऽशुषं युध्य कुयवं गविष्टौ ।
दश प्रपित्वे अध सूर्यस्य मुषायश्चक्रमविवे रपांसि ३
त्वं शतान्यव शम्बरस्य पुरो जघन्थाप्रतीनि दस्योः ।
अशिक्षो यत्र शच्या शचीवो दिवोदासाय सुन्वते सुतक्रे भरद्वाजाय गृणते वसूनि ४
स सत्यसत्वन् महते रणाय रथमा तिष्ठ तुविनृम्ण भीमम् ।
याहि प्रपथिन्नवसोप मद्रिक् प्र च श्रुत श्रावय चर्षणिभ्यः ५ १०१०

॥ १८२ ॥ (ऋ० ६।३२।१-५)

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय ।
विरप्शिने वज्रिणे शंतमानि वचांस्यासा स्थविराय तक्षम् १
स मातरा सूर्येणा कवीना—मवासयद् रुजदद्रिं गृणानः ।
स्वाधीभिर्ऋक्वभिर्वावशान उदुस्रियाणामसृजन्निदानम् २
स वह्निभिर्ऋक्वभिर्गोषु शश्वन् मितज्ञुभिः पुरुकृत्वा जिगाय ।
पुरः पुरोहा सखिभिः सखीयन् दृळ्हा रुरोज कविभिः कविः सन् ३
स नीव्याभिर्जरितारमच्छा महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः ।
पुरुवीराभिर्वृषभ क्षितीना—मा गिर्वणः सुविताय प्र याहि ४
स सर्गेण शवसा तक्तो अत्यै—रप इन्द्रो दक्षिणतस्तुराषाट् ।
इत्था सृजाना अनपावृदर्थं दिवेदिवे विविषुरप्रमृष्यम् ५ १०१५

॥ १८३ ॥ (ऋ० ६।३३।१-५)
(१०१६-१०२५) शुनहोत्रो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

य ओजिष्ठ इन्द्र तं सु नो दा मदो वृषन्त्स्वभिष्टिर्दास्वान् ।
सौवश्व्यं यो वनवत् स्वश्वो वृत्रा समत्सु सासहदमित्रान् १
त्वां हीऽ३न्द्रावसे विवाचो हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ ।
त्वं विप्रेभिर्वि पणीँरशाय—स्त्वोत इत् सनिता वाजमर्वा २
त्वं ताँ इन्द्रोभयाँ अमित्रान् दासा वृत्राण्यार्या च शूर ।
वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कै—रा पृत्सु दर्षि नृणां नृतम ३
स त्वं न इन्द्राकवाभिरूती सखा विश्वायुरविता वृधे भूः ।
स्वर्षाता यद्ध्वयामसि त्वा युध्यन्तो नेमधिता पृत्सु शूर ४

नूनं न इन्द्रापराय च स्या भवा मृळीक उत नो अभिष्टौ ।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन् दिवि ष्याम पार्ये गोषतमाः ५ २०२०

॥ १८४ ॥ (ऋ० ६।३४।१-५)

सं च त्वे जग्मुर्गिर इन्द्र पूर्वी र्वि च त्वद् यन्ति विभ्वो मनीषाः ।
पुरा नूनं च स्तुतय ऋषीणां पस्पृध्र इन्द्रे अध्युक्थार्का १
पुरुहूतो यः पुरुगूर्त ऋभ्वाँ एकः पुरुप्रशस्तो अस्ति यज्ञैः ।
रथो न महे शवसे युजानो ऽस्माभिरिन्द्रो अनुमाद्यो भूत् २
न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणी रिन्द्रं नक्षन्तीदभि वर्धयन्तीः ।
यदि स्तोतारः शतं यत् सहस्रं गृणन्ति गिर्वणसं शं तदस्मै ३
अस्मा एतद् दिव्य१र्चेव मासा मिमिक्ष इन्द्रे न्ययामि सोमः ।
जनं न धन्वन्नभि सं यदापः सत्रा वावृधुर्हवनानि यज्ञैः ४
अस्मा एतन्मह्याङ्गूषमस्मा इन्द्राय स्तोत्रं मतिभिरवाचि ।
असद् यथा महति वृत्रतूर्य इन्द्रो विश्वायुरविता वृधश्च ५ २०२५

॥ १८५ ॥ (ऋ० ६।३५।१-५)

(२०२६-२०३५) नरो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

कदा भुवन् रथक्षयाणि ब्रह्म कदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यं दाः ।
कदा स्तोमं वासयोऽस्य राया कदा धियः करसि वाजरत्नाः १
कर्हि स्वित् तदिन्द्र यन्नृभिर्नॄन् वीरैर्वीरान् नीळयासे जयाजीन् ।
त्रिधातु गा अधि जयासि गोष्वि न्द्र द्युम्नं स्वर्वद् धेह्यस्मे २
कर्हि स्वित् तदिन्द्र यज्जरित्रे विश्वप्सु ब्रह्म कृणवः शविष्ठ ।
कदा धियो न नियुतो युवासे कदा गोमघा हवनानि गच्छाः ३
स गोमघा जरित्रे अश्वश्चन्द्रा वाजश्रवसो अधि धेहि पृक्षः ।
पीपिहीषः सुदुघामिन्द्र धेनुं भरद्वाजेषु सुरुचो रुरुच्याः ४
तमा नूनं वृजनमन्यथा चि च्छूरो यच्छक्र वि दुरो गृणीषे ।
मा निररं शुक्रदुघस्य धेनो राङ्गिरसान् ब्रह्मणा विप्र जिन्व ५ २०३०

॥ १८६ ॥ (ऋ० ६।३६।१-५)

सत्रा मदासस्तव विश्वजन्याः सत्रा रायोऽध ये पार्थिवासः ।
सत्रा वाजानामभवो विभक्ता यद् देवेषु धारयथा असुर्यम् १

अनु प्र येजे जन ओजो अस्य सत्रा दधिरे अनु वीर्याय ।
स्यूमगृभे दुधयेऽर्वते च क्रतुं वृञ्जन्त्यपि वृत्रहत्ये २
तं सध्रीचीरूतयो वृष्ण्यानि पौंस्यानि नियुतः सश्चुरिन्द्रम् ।
समुद्रं न सिन्धव उक्थशुष्मा उरुव्यचसं गिर आ विशन्ति ३
स रायस्खामुप सृजा गृणानः पुरुश्चन्द्रस्य त्वमिन्द्र वस्वः ।
पतिर्बभूथासमो जनाना—मेको विश्वस्य भुवनस्य राजा ४
स तु श्रुधि श्रुत्या यो दुवोयु—र्द्यौर्न भूमाभि रायो अर्यः ।
असो यथा नः शवसा चकानो युगेयुगे वयसा चेकितानः ५ २०३५

॥ १८७ ॥ (ऋ० ६।४४।१-२४)

(२०३६-२१०३) शंयुर्बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप्, १-६ अनुष्टुप्, ७-९ (८ वा) विराट् ।

यो रयिवो रयिंतमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः । सोमः सुतः स इंद्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः १
यः शग्मस्तुविशग्म ते रायो दामा मतीनाम् । सोमः सुतः स इंद्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः २
येन वृद्धो न शवसा तुरो न स्वाभिरूतिभिः । सोमः सुतः स इंद्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः ३
त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम् । इंद्रं विश्वासाहं नरं मंहिष्ठं विश्वचर्षणिम् ४
यं वर्धयंतीद् गिरः पतिं तुरस्य राधसः । तमिन्न्वस्य रोदसी देवी शुष्मं सपर्यतः ५ २०४०
तद् व उक्थस्य बर्हणे—न्द्रायोपस्तृणीषणि ।
विपो न यस्योतयो वि यद् रोहंति सक्षितः ६
अविदद् दक्षं मित्रो नवीयान् पपानो देवेभ्यो वस्यो अचैत् ।
ससवान्स्तौलाभिर्धौतरीभि—रुरुष्या पायुरभवत् सखिभ्यः ७
ऋतस्य पथि वेधा अपायि श्रिये मनांसि देवासो अक्रन् ।
दधानो नाम महो वचोभि—र्वपुर्दृशये वेन्यो व्यावः ८
द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे सेधा जनानां पूर्वीरराती: ।
वर्षीयो वयः कृणुहि शचीभि—र्धनस्य सातावस्माँ अविड्ढि ९
इंद्र तुभ्यमिन्मघवन्नभूम वयं दात्रे हरिवो मा वि वेनः ।
नकिरापिर्ददृशे मर्त्यत्रा किमङ्ग रध्रचोदनं त्वाहुः १० २०४५
मा जस्वने वृषभ नो ररीथा मा ते रेवतः सख्ये रिषाम ।
पूर्वीष्ट इंद्र निष्षिधो जनेषु जह्यसुष्वीन् प्र वृहापृणतः ११
उदभ्राणीव स्तनयन्नियर्ती—न्द्रो राधांस्यश्व्यानि गव्या ।
त्वमसि प्रदिवः कारुधाया मा त्वादामान आ दभन् मघोनः १२

अध्वर्यो वीर प्र महे सुताना—मिन्द्राय भर स ह्यस्य राजा ।
यः पूर्व्याभिरुत नूतनाभि—र्गीर्भिर्वावृधे गृणतामृषीणाम् १३
अस्य मदे पुरु वर्पांसि विद्वा—निन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान ।
तमु प्र होषि मधुमन्तमस्मै सोमं वीराय शिप्रिणे पिबध्यै १४
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं हन्ता वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।
गन्ता यज्ञं परावतश्चिदच्छा वसुर्धीनामविता कारुधायाः १५ २०५०

इदं त्यत् पात्रमिन्द्रपान—मिन्द्रस्य प्रियममृतमपायि ।
मत्सद् यथा सौमनसाय देवं व्यस्मद् द्वेषो युयवद् व्यंहः १६
एना मन्दानो जहि शूर शत्रू—ञ्जामिमजामिं मघवन्नमित्रान् ।
अभिषेणाँ अभ्याऽदेदिशानान् पराच इन्द्र प्र मृणा जही च १७
आसु ष्मा णो मघवन्निन्द्र पृ—त्स्वस्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः ।
अपां तोकस्य तनयस्य जेष इन्द्र सूरीन् कृणुहि स्मा नो अर्धम् १८
आ त्वा हरयो वृषणो युजाना वृषरथासो वृषरश्मयोऽत्याः ।
अस्मत्राञ्चो वृषणो वज्रवाहो वृष्णे मदाय सुयुजो वहन्तु १९
आ ते वृषन् वृषणो द्रोणमस्थु—र्घृतप्रुषो नोर्मयो मदन्तः ।
इन्द्र प्र तुभ्यं वृषभिः सुतानां वृष्णे भरन्ति वृषभाय सोमम् २० २०५५

वृषासि दिवो वृषभः पृथिव्या वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
वृष्णे त इन्दुर्वृषभ पीपाय स्वादू रसो मधुपेयो वराय २१
अयं देवः सहसा जायमान इन्द्रेण युजा पणिमस्तभायत् ।
अयं स्वस्य पितुरायुधानी—न्दुरमुष्णादशिवस्य मायाः २२
अयमकृणोदुषसः सुपत्नी—रयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः ।
अयं त्रिधातु दिवि रोचनेषु त्रितेषु विन्ददमृतं निगूळ्हम् २३
अयं द्यावापृथिवी वि ष्कभाय—दयं रथमयुनक् सप्तरश्मिम् ।
अयं गोषु शच्या पक्वमन्तः सोमो दाधार दशयन्त्रमुत्सम् २४

॥ १८८ ॥ (ऋ० ६।४५।१-३०) गायत्री, २९ अतिनिचृत् ।

य आनयत् परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् । इन्द्रः स नो युवा सखा १ २०६०
अविप्रे चिद् वयो दध—दनाशुना चिदर्वता । इन्द्रो जेता हितं धनम् २

महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः । नास्य क्षीयन्त ऊतयः ३

सखायो ब्रह्मवाहसे ऽर्चत प्र च गायत । स हि नः प्रमतिर्मही ४

त्वमेकस्य वृत्रहन्नविता द्वयोरसि । उतेदृशे यथा वयम् ५

नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः । नृभिः सुवीर उच्यसे ६

ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गीर्भिः सखायमृग्मियम् । गां न दोहसे हुवे ७

यस्य विश्वानि हस्तयोरूचुर्वसूनि नि द्विता । वीरस्य पृतनाषहः ८

वि दृळ्हानि चिदद्रिवो जनानां शचीपते । वृह माया अनानत ९

तमु त्वा सत्य सोमपा इन्द्र वाजानां पते । अहूमहि श्रवस्यवः १०

तमु त्वा यः पुरासिथ यो वा नूनं हिते धने । हव्यः स श्रुधी हवम् ११

धीभिरर्वद्भिरर्वतो वाजाँ इन्द्र श्रवाय्यान् । त्वया जेष्म हितं धनम् १२

अभूरु वीर गिर्वणो महाँ इन्द्र धने हिते । भरे वितन्तसाय्यः १३

या त ऊतिरमित्रहन् मक्षूजवस्तमासति । तया नो हिनुही रथम् १४

स रथेन रथीतमो ऽस्माकेनाभियुग्वना । जेषि जिष्णो हितं धनम् १५

य एक इत् तमु ष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः । पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः १६

यो गृणतामिदासिथाऽऽपिरूती शिवः सखा । स त्वं न इन्द्र मृळय १७

धिष्व वज्रं गभस्त्यो रक्षोहत्याय वज्रिवः । सासहीष्ठा अभि स्पृधः १८

प्रत्नं रयीणां युजं सखायं कीरिचोदनम् । ब्रह्मवाहस्तमं हुवे १९

स हि विश्वानि पार्थिवाँ एको वसूनि पत्यते । गिर्वणस्तमो अध्रिगुः २०

स नो नियुद्भिरा पृण कामं वाजेभिरश्विभिः । गोमद्भिर्गोपते धृषत् २१

तद् वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । शं यद् गवे न शाकिने २२

न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः । यत् सीमुप श्रवद् गिरः २३

कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत् । शचीभिरप नो वरत् २४

इमा उ त्वा शतक्रतो ऽभि प्र णोनुवुर्गिरः । इन्द्र वत्सं न मातरः २५

दूणाशं सख्यं तव गौरसि वीर गव्यते । अश्वो अश्वायते भव २६

स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे । न स्तोतारं निदे करः २७

इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः । वत्सं गावो न धेनवः २८

पुरूतमं पुरूणां स्तोतॄणां विवाचि । वाजेभिर्वाजयताम् २९

अस्माकमिन्द्र भूतु ते स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । अस्मान् राये महे हिनु ३०

॥ १८९ ॥ (ऋ० ६।४६।१-१४) प्रगाथः (= विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

त्वामिद्धि हवामहे सा॒ता वाज॑स्य का॒रवः॑ ।
त्वां वृ॒त्रेष्वि॑न्द्र॒ सत्प॑तिं॒ नर॒स्त्वां काष्ठा॒स्वर्व॑तः १ २०९०
स त्वं न॑श्चित्र वज्रहस्त धृष्णु॒या म॒हः स्त॑वा॒नो अ॑द्रिवः ।
गामश्वं॑ र॒थ्य॑मिन्द्र॒ सं कि॑र स॒त्रा वाजं॒ न जि॒ग्युषे॑ २
यः स॑त्रा॒हा विच॑र्षणि॒रिन्द्रं॒ तं हू॑महे व॒यम् ।
सह॑स्रमुष्क॒ तुवि॑नृम्ण॒ सत्प॑ते॒ भवा॑ स॒मत्सु॑ नो वृ॒धे ३
बाध॑से॒ जना॑न् वृष॒भेव॑ म॒न्युना॒ घृषौ॑ मी॒ळ्ह ऋ॑चीषम ।
अ॒स्माकं॑ बोध्यवि॒ता म॑हाध॒ने त॒नूष्व॒प्सु सूर्ये॑ ४
इन्द्र॒ ज्येष्ठं॑ न॒ आ भ॑र॒ँ ओजि॑ष्ठं॒ पपु॑रि॒ श्रवः॑ ।
येने॒मे चि॑त्र वज्रहस्त॒ रोद॑सी॒ ओभे सु॑शिप्र॒ प्राः ५
त्वामु॒ग्रमव॑से चर्षणी॒सहं॒ राज॑न् दे॒वेषु॑ हूमहे ।
विश्वा॒ सु नो॑ विथु॒रा पि॑ब्द॒ना व॑सो॒ ऽमित्रा॑न्त्सु॒षहा॑न् कृधि ६ २०९५
यदि॑न्द्र॒ नाहु॑षी॒ष्वाँ ओजो॑ नृ॒म्णं च॑ कृ॒ष्टिषु॑ ।
यद् वा॒ पञ्च॑ क्षिती॒नां द्यु॒म्नमा भ॑र स॒त्रा विश्वा॑नि॒ पौंस्या॑ ७
यद् वा॑ तृ॒क्षौ म॑घवन् द्रु॒ह्यावा॒ जने॒ यत् पू॒रौ कच्च॒ वृष्ण्य॑म् ।
अ॒स्मभ्यं॒ तद् रि॑रीहि॒ सं नृ॒पाह्ये॒ ऽमित्रा॑न् पृ॒त्सु तु॒र्वणे॑ ८
इन्द्र॑ त्रि॒धातु॑ शर॒णं त्रि॒वरू॑थं स्वस्ति॒मत् ।
छ॒र्दिर्य॑च्छ म॒घव॑द्भ्यश्च॒ मह्यं॑ च या॒वया॑ दि॒द्युमे॑भ्यः ९
ये ग॑व्य॒ता मन॑सा॒ शत्रु॑माद॒भु र॑भिप्र॒घ्नन्ति॑ धृष्णु॒या ।
अध॑ स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वण॒स्तनू॒पा अन्त॑मो भव १०
अध॑ स्मा नो वृ॒धे भ॒वेन्द्र॑ ना॒यम॑वा यु॒धि ।
यद॒न्तरि॑क्षे प॒तय॑न्ति प॒र्णिनो॑ दि॒द्यव॑स्ति॒ग्ममू॑र्धानः ११ २१००
यत्र॒ शूरा॑सस्त॒न्वो॑ वितन्व॒ते प्रि॒या शर्म॑ पि॒तॄ॑णाम् ।
अध॑ स्मा यच्छ त॒न्वे॒३॒ तने॑ च छ॒र्दिर॒चित्तं॑ या॒वय॒ द्वेषः॑ १२
यदि॑न्द्र॒ सर्गे॒ अर्व॑त॒श्चो॒दया॑से महाध॒ने ।
अ॒स॒म॒ने अध्व॑नि वृजि॒ने प॒थि श्ये॒नाँ इ॑व श्रवस्य॒तः ।
सिन्धू॑ँरिव प्रव॒ण आ॑शु॒या य॒तो यदि॒ क्रोश॒मनु॒ ष्वणि॑ । १३
आ ये वयो॒ न वर्वृ॑तत्यामि॑षि गृभी॒ता बा॒ह्वोर्गवि॑ १४ २१०३

❀

॥ १९० ॥ (ऋ० ६।४७।६-१९; २१) (११०४-१११८) गर्गो भारद्वाजः । त्रिष्टुप्; १९ बृहती ।

धृषत् पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् ।
माध्यंदिने सवन आ वृषस्व रयिस्थानो रयिमस्मासु धेहि ६
इन्द्र प्र णः पुरएतेव पश्य प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।
भवा सुपारो अतिपारयो नो भवा सुनीतिरुत वामनीतिः ७ ११०५
उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान् त्स्वर्वज्ज्योतिरभयं स्वस्ति ।
ऋष्वा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता ८
वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धा वहिष्ठयोः शतावन्नश्वयोरा ।
इषमा वक्षीषां वर्षिष्ठां मा नस्तारीन्मघवन् रायो अर्यः ९
इन्द्र मृळ मह्यं जीवातुमिच्छ चोदय धियमयसो न धाराम् ।
यत् किं चाहं त्वायुरिदं वदामि तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम् १०
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ११
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः ।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम १२ १११०
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्याऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ।
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु १३
अव त्वे इन्द्र प्रवतो नोर्मिर्गिरो ब्रह्माणि नियुतो धवन्ते ।
उरू न राधः सवना पुरूण्यपो गा वज्रिन् युवसे समिन्दून् १४
क ईं स्तवत् कः पृणात् को यजाते यदुग्रमिन्मघवा विश्वहावेत् ।
पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः १५
शृण्वे वीर उग्रमुग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमानः ।
एधमानद्विळुभयस्य राजा चोष्कूयते विश इन्द्रो मनुष्यान् १६
परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति वितर्तुराणो अपरेभिरेति ।
अनानुभूतीरवधून्वानः पूर्वीरिन्द्रः शरदस्तर्तरीति १७ १११५
रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय ।
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश १८
युजानो हरिता रथे भूरि त्वष्टेह राजति ।
को विश्वाहा द्विषतः पक्ष आसत उतासीनेषु सूरिषु १९

दिवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं कृष्णा असेधदप सद्मनो जाः ।
अहन् दासा वृषभो वस्नयन्तो–दव्रजे वर्चिनं शम्बरं च २१ २११८

॥१९१॥ (ऋ० ७।१८।१-२१) (२११९-२१९२) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

त्वे ह यत् पितरश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन् ।
त्वे गावः सुदुघास्त्वे ह्यश्वा–स्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः १
राजेव हि जनिभिः क्षेष्येवा–ऽव द्युभिरभि विदुष्कविः सन् ।
पिशा गिरो मघवन् गोभिरश्वै–स्त्वायतः शिशीहि राये अस्मान् २ २१२०
इमा उ त्वा पस्पृधानासो अत्र मन्द्रा गिरो देवयन्तीरुप स्थुः ।
अर्वाची ते पथ्या राय एतु स्याम ते सुमताविन्द्र शर्मन् ३
धेनुं न त्वा सूयवसे दुदुक्ष–न्नुप ब्रह्माणि ससृजे वसिष्ठः ।
त्वामिन्मे गोपतिं विश्व आहा ऽऽ न इन्द्रः सुमतिं गन्त्वच्छ ४
अर्णांसि चित् पप्रथाना सुदास इन्द्रो गाधान्यकृणोत् सुपारा ।
शर्धन्तं शिम्युमुचथस्य नव्यः शापं सिन्धूनामकृणोदशस्तीः ५
पुरोळा इत् तुर्वशो यक्षुरासीद् राये मत्स्यासो निशिता अपीव ।
श्रुष्टिं चक्रुर्भृगवो द्रुह्यवश्च सखा सखायमतरद् विषूचोः ६
आ पक्थासो भलानसो भनन्ता ऽलिनासो विषाणिनः शिवासः ।
आ योऽनयत् सधमा आर्यस्य गव्या तृत्सुभ्यो अजगन् युधा नॄन् ७ २१२५
दुराध्यो३ अदितिं स्रेवयन्तो ऽचेतसो वि जगृभ्रे परुष्णीम् ।
मह्नाविव्यक् पृथिवीं पत्यमानः पशुष्कविरशयच्चायमानः ८
ईयुरर्थं न न्यर्थं परुष्णी–माशुश्चनेदभिपित्वं जगाम ।
सुदास इन्द्रः सुतुकाँ अमित्रा–नरन्धयन्मानुषे वध्रिवाचः ९
ईयुर्गावो न यवसादगोपा यथाकृतमभि मित्रं चितासः ।
पृश्निगावः पृश्निनिप्रेषितासः श्रुष्टिं चक्रुर्नियुतो रन्तयश्च १०
एकं च यो विंशतिं च श्रवस्या वैकर्णयोर्जनान् राजा न्यस्तः ।
दस्मो न सद्मन् नि शिशाति बर्हिः शूरः सर्गमकृणोदिन्द्र एषाम् ११
अध श्रुतं कवषं वृद्धमप्स्व–नु द्रुह्युं नि वृणग्वज्रबाहुः ।
वृणाना अत्र सख्याय सख्यं त्वायन्तो ये अमदन्ननु त्वा १२ २१३०
वि सद्यो विश्वा दृंहितान्येषा–मिन्द्रः पुरः सहसा सप्त दर्दः ।
व्यानवस्य तृत्सवे गयं भाग् जेष्म पूरुं विदथे मृध्रवाचम् १३

नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च षष्टिः शता सुषुपुः षट् सहस्रा ।
षष्टिर्वीरासो अधि षड् दुवोयु विश्वेदिन्द्रस्य वीर्या कृतानि १४
इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अधवन्त नीचीः ।
दुर्मित्रासः प्रकलविन्मिमाना जहुर्विश्वानि भोजना सुदासे १५
अर्धं वीरस्य शृतपामनिन्द्रं परा शर्धन्तं नुनुदे अभि क्षाम् ।
इन्द्रो मन्युं मन्युम्यो मिमाय भेजे पथो वर्तनिं पत्यमानः १६
आध्रेण चित् तद्वेकं चकार सिंह्यं चित् पेत्वेना जघान ।
अव स्रक्तीर्वेश्यावृश्चदिन्द्रः प्रायच्छद् विश्वा भोजना सुदासे १७ ११३५
शश्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टे भेदस्य चिच्छर्धतो विन्द रन्धिम् ।
मर्ताँ एनः स्तुवतो यः कृणोति तिग्मं तस्मिन् नि जहि वज्रमिन्द्र १८
आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च प्रात्र भेदं सर्वताता मुषायत् ।
अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च बलिं शीर्षाणि जभ्रुरश्व्यानि १९
न त इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वा उषसो न नूत्नाः ।
देवकं चिन्मान्यमानं जघन्थाऽव त्मना बृहतः शम्बरं भेत् २०
प्र ये गृहादममदुस्त्वाया पराशरः शतयातुर्वसिष्ठः ।
न ते भोजस्य सख्यं मृषन्ताऽधा सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छान् २१

॥ १९१ ॥ (ऋ० ७।१९।१-११)

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः ।
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः १ ११४०
त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये ।
दासं यच्छुष्णं कुयवं न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन् २
त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः सुदासम् ।
प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम् ३
त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि ।
त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चाऽस्वापयो दभीतये सुहन्तु ४
तव च्यौत्नानि वज्रहस्त तानि नव यत् पुरो नवतिं च सद्यः ।
निवेशने शततमाविवेषीरहंश्च वृत्रं नमुचिमुताहन् ५
सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे ।
वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम् ६ ११४५

मा ते अस्यां सहसावन् परिष्टा—वघाय भूम हरिवः परादै ।
त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरूथैः—स्तव प्रियासः सूरिषु स्याम ७
प्रियास इत् ते मघवन्नभिष्टौ   नरो मदेम शरणे सखायः ।
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशी—ह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ८
सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ   नरः शंसन्त्युक्थशास उक्था ।
ये ते हवेभिर्वि पणीँरदाश—न्नस्मान् वृणीष्व युज्याय तस्मै ९
एते स्तोमा नरां नृतम तुभ्य—मस्मद्र्यञ्चो ददतो मघानि ।
तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः   सखा च शूरोऽविता च नृणाम् १०
नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती   ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व ।
उप नो वाजान् मिमीह्युप स्तीन्   यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११ २१५०

॥ १९३ ॥ (ऋ० ७।२०।१-१०)

उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधावा—ञ्चक्रिरपो नर्यो यत् करिष्यन् ।
जग्मिर्युवा नृषदनमवोभि—स्त्राता न इन्द्र एनसो महश्चित् १
हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः   प्रावीन्नु वीरो जरितारमूती ।
कर्ता सुदासे अह वा उ लोकं   दाता वसु मुहुरा दाशुषे भूत् २
युध्मो अनर्वा खजकृत् समद्वा   शूरः सत्राषाड् जनुषेमषाळ्हः ।
व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा   अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान ३
उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा   ऽऽ पप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः ।
नि वज्रमिन्द्रो हरिवान् मिमिक्षन्   त्समन्धसा मदेषु वा उवोच ४
वृषा जजान वृषणं रणाय   तमु चिन्नारी नर्यं ससूव ।
प्र यः सेनानीरध नृभ्यो अस्ती—नः सत्वा गवेषणः स धृष्णुः ५ २१५५
नू चित् स भ्रेषते जनो न रेषन्   मनो यो अस्य घोरमाविवासात् ।
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि   क्षयत् स राय ऋतपा ऋतेजाः ६
यदिन्द्र पूर्वो अपराय शिक्ष—न्नयज्ज्यायान् कनीयसो देष्णम् ।
अमृत इत् पर्यासीत दूर—मा चित्र चित्र्यं भरा रयिं नः ७
यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाश—दसन्निरेके अद्रिवः सखा ते ।
वयं ते अस्यां सुमतौ चनिष्ठाः   स्याम वरूथे अघ्नतो नृपीतौ ८
एष स्तोमो अचिक्रदद् वृषा त   उत स्तामुर्मघवन्नक्रपिष्ट ।
रायस्कामो जरितारं त आगन्   त्वमङ्ग शक्र वस्व आ शको नः ९

स नं इन्द्र त्वयंताया इषे धा—स्त्मनां च ये मघवांनो जुनन्ति ।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्ति—र्यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः १० ११६०

॥ १९४ ॥ (ऋ० ७।२१।१-१०)

असांवि देवं गोऋंजीकमन्धो न्यंस्मिन्निन्द्रों जनुषेमुवोच ।
बोधांमसि त्वा हर्यश्व यज्ञै—र्बोधां नः स्तोममन्धंसो मदेषु १
प्र यंन्ति यज्ञं विपयंन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुध्रवाचः ।
न्यु भ्रियन्ते यशसों गृभादा दूरउंपब्दो वृषणो नृषाचः २
त्वमिन्द्र स्रवितवा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः ।
त्वद् वांवक्रे रथ्यो३ न धेना रेजन्ते विश्वां कृत्रिमांणि भीषा ३
भीमो विवेषायुधेभिरेषा—मपांसि विश्वा नर्याणि विद्वान् ।
इंद्रः पुरो जर्हृषाणो वि दूंधोत् वि वज्रहस्तो महिना जंघान ४
न यातवं इंद्र जूजुवुर्नो न वंदना शविष्ठ वेद्याभिः ।
स शर्धदर्यो विषुंणस्य जंतो—र्मा शिश्नदेवा अपिं गुर्ऋतं नः ५ ११६५
अभि क्रत्वेंद्र भूरध ज्मन् न ते विव्यङ् महिमानं रजांसि ।
स्वेना हि वृत्रं शवंसा जघंथ न शत्रुरंतं विविदद् युधा ते ६
देवाश्चित् ते असुर्याय पूर्वे ऽनु क्षत्राय ममिरे सहांसि ।
इंद्रो मघानि दयते विषह्ये—द्रं वाजस्य जोहुवंत सातौ ७
कीरिश्चिद्धि त्वामवंसे जुहावे—शांनमिंद्र सौभंगस्य भूरेः ।
अवो बभूथ शतमूते अस्मे अंभिक्षत्तुस्त्वावंतो वरूता ८
सखांयस्त इंद्र विश्वहं स्याम नमोवृधासो महिना तरुत्र ।
वन्वन्तु स्मा तेऽवंसा समीके३ ऽभीतिमर्यो वनुषां शवांसि ९
स नं इंद्र त्वयंताया इषे धा—स्त्मनां च ये मघवांनो जुनन्ति ।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्ति—र्यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः १० ११७०

॥ १९५ ॥ (ऋ० ७।२२।१-९) विराट्, ९ त्रिष्टुप् ।

पिबा सोममिंद्र मंदतु त्वा यं ते सुषावं हर्यश्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यां सुयंतो नार्वा १
यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि । स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु २
बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् । इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ३
श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रे—र्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम् । कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा ४
न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान् । सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ५ ११७५

भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित् । मारे अस्मन्मघवञ्ज्योक् कः ६
तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि । त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ७
नू चिन्नु ते मन्यमानस्य दस्मो-दश्नुवन्ति महिमानमुग्र । न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ८
ये च पूर्व ऋषयो ये च नूत्ना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः ।
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ९

॥ १९६ ॥ (ऋ० ७।२३।१-६)

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्ये-न्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ ।
आ यो विश्वानि शवसा ततानो-पश्रोता म ईवतो वचांसि १ २१८०
अयामि घोष इन्द्र देवजामि-रिरज्यन्त यच्छुरुधो विवाचि ।
नहि स्वमायुश्चिकिते जनेषु तानीदंहांस्यति पर्ष्यस्मान् २
युजे रथं गवेषणं हरिभ्या-मुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः ।
वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वे-न्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ३
आपश्चित् पिप्युः स्तर्यो३ न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्त इन्द्र ।
याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान् ४
ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे ।
एको देवत्रा दयसे हि मर्ता-नस्मिञ्छूर सवने मादयस्व ५
एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
स नः स्तुतो वीरवद् धातु गोमद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६ २१८५

॥ १९७ ॥ (ऋ० ७।२४।१-६)

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि ।
असो यथा नोऽविता वृधे च ददो वसूनि ममदश्च सोमैः १
गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हाः सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि ।
विसृष्टधेना भरते सुवृक्ति-रियमिन्द्रं जोहुवती मनीषा २
आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषि-न्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि ।
वहन्तु त्वा हरयो मद्र्यञ्च-माङ्गूषमच्छा तवसं मदाय ३
आ नो विश्वाभिरूतिभिः सजोषा ब्रह्म जुषाणो हर्यश्व याहि ।
वरीवृजत् स्थविरेभिः सुशिप्रा-ऽस्मे दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्र ४
एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरी३वात्यो न वाजयन्नधायि ।
इन्द्र त्वायमर्क ईट्टे वसूनां दिवीव द्यामधि नः श्रोमतं धाः ५ २१९०

एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम ।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥ १९८ ॥ (ऋ० ७।२५।१-६)

आ ते मह इन्द्रोत्युग्र समन्यवो यत् समरन्त सेनाः ।
पताति दिद्युन्नर्यस्य बाह्वो–र्मा ते मनो विष्वद्र्यग्वि चारीत् १
नि दुर्ग इन्द्र श्नथिह्यमित्रा–नभि ये नो मर्तासो अमन्ति ।
आरे तं शंसं कृणुहि निनित्सो–रा नो भर संभरणं वसूनाम् २
शतं ते शिप्रिन्नूतयः सुदासे सहस्रं शंसा उत रातिरस्तु ।
जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्या–ऽस्मे द्युम्नमधि रत्नं च धेहि ३
त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे अस्मि त्वावतोऽवितुः शूर रातौ ।
विश्वेदहानि तविषीव उग्रँ ओकः कृणुष्व हरिवो न मर्धीः ४ ११९५
कुत्सा एते हर्यश्वाय शूष–मिन्द्रे सहो देवजूतमियानाः ।
सत्रा कृधि सुहना शूर वृत्रा वयं तरुत्राः सनुयाम वाजम् ५
एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम ।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥ १९९ ॥ (ऋ० ७।२६।१-५)

न सोम इन्द्रमसुतो ममाद नाब्रह्माणो मघवानं सुतासः ।
तस्मा उक्थं जनये यज्जुजोष–न्नृवन्नवीयः शृणवद् यथा नः १
उक्थउक्थे सोम इन्द्रं ममाद नीथेनीथे मघवानं सुतासः ।
यदीं सबाधः पितरं न पुत्राः समानदक्षा अवसे हवन्ते २
चकार ता कृणवन्नूनमन्या यानि ब्रुवन्ति वेधसः सुतेषु ।
जनीरिव पतिरेकः समानो नि मामृजे पुर इन्द्रः सु सर्वाः ३ ११००
एवा तमाहुरुत शृण्व इन्द्र एको विभक्ता तरणिर्मघानाम् ।
मिथस्तुर ऊतयो यस्य पूर्वी–रस्मे भद्राणि सश्चत प्रियाणि ४
एवा वसिष्ठ इन्द्रमूतये नॄन् कृष्टीनां वृषभं सुते गृणाति ।
सहस्रिण उप नो माहि वाजान् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०० ॥ (ऋ० ७।२७।१-५)

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत् पार्या युनजते धियस्ताः ।
शूरो नृषाता शवसश्चकान आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः १

य इन्द्र शुष्मो मघवन् ते अस्ति शिक्षा सखिभ्यः पुरुहूत नृभ्यः ।
त्वं हि दृळ्हा मघवन् विचेता अपा वृधि परिवृतं न राधः २
इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीना मधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति ।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद् राध उपस्तुतश्चिदर्वाक् ३ २२०५
नू चिन्न इन्द्रो मघवा सहूती दानो वाजं नि यमते न ऊती ।
अनूना यस्य दक्षिणा पीपाय वामं नृभ्यो अभिवीता सखिभ्यः ४
नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी न आ ते मनो ववृत्याम मघाय ।
गोमदश्वावद् रथवद् व्यन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०१ ॥ (ऋ० ७।२८।१-५)

ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि विद्वा नर्वाञ्चस्ते हरयः सन्तु युक्ताः ।
विश्वे चिद्धि त्वा विहवन्त मर्ता अस्माकमिच्छृणुहि विश्वमिन्व १
हवं त इन्द्र महिमा व्यानड् ब्रह्म यत् पासि शवसिन्नृषीणाम् ।
आ यद् वज्रं दधिषे हस्त उग्र घोरः सन् क्रत्वा जनिष्ठा अषाळ्हः २
तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान् त्सं यन्नॄन् न रोदसी निनेथ ।
महे क्षत्राय शवसे हि जज्ञे ऽतूतुजिं चित् तूतुजिरशिश्नत् ३ २२१०
एभिर्न इन्द्राहभिर्दशस्य दुर्मित्रासो हि क्षितयः पवन्ते ।
प्रति यच्चष्टे अनृतमनेना अव द्विता वरुणो मायी नः सात् ४
वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०२ ॥ (ऋ० ७।२९।१-५)

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्व आ तु प्र याहि हरिवस्तदोकाः ।
पिबा त्वस्य सुषुतस्य चारो र्ददो मघानि मघवन्नियानः १
ब्रह्मन् वीर ब्रह्मकृतिं जुषाणो ऽर्वाचीनो हरिभिर्याहि तूयम् ।
अस्मिन्नू षु सवने मादयस्वो प ब्रह्माणि शृणव इमा नः २
का ते अस्त्यरंकृतिः सूक्तैः कदा नूनं ते मघवन् दाशेम ।
विश्वा मतीरा ततने त्वाया ऽधा म इन्द्र शृणवो हवेमा ३ २२१५
उतो घा ते पुरुष्या३ इदासन् येषां पूर्वेषामशृणोर्ऋषीणाम् ।
अधाहं त्वा मघवञ्जोहवीमि त्वं न इन्द्रासि प्रमतिः पितेव ४
वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०३ ॥ (ऋ० ७।३०।१-५)

आ नो देव शवसा याहि शुष्मिन् भवा वृध इन्द्र रायो अस्य ।
महे नृम्णाय नृपते सुवज्र महि क्षत्राय पौंस्याय शूर १
हवन्त उ त्वा हव्यं विवाचि तनूषु शूराः सूर्यस्य सातौ ।
त्वं विश्वेषु सेन्यो जनेषु त्वं वृत्राणि रन्धया सुहन्तु २
अहा यदिन्द्र सुदिना व्युच्छान् दधो यत् केतुमुपमं समत्सु ।
न्य१ग्निः सीदुदसुरो न होता हुवानो अत्र सुभगाय देवान् ३ ११२०
वयं ते त इन्द्र ये च देव स्तवन्त शूर ददतो मघानि ।
यच्छा सूरिभ्य उपमं वरूथं स्वाभुवो जरणामश्नवन्त ४
वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०४ ॥ (ऋ० ७।३१।१-१२) गायत्री, १०-१२ विराट् ।

प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत । सखायः सोमपाव्ने १
शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः । चकृमा सत्यराधसे २
त्वं न इन्द्र वाजयु — स्त्वं गव्युः शतक्रतो । त्वं हिरण्ययुर्वसो ३ ११२५
वयमिन्द्र त्वायवो ऽभि प्र णोनुमो वृषन् । विद्धी त्व१स्य नो वसो ४
मा नो निदे च वक्तवे ऽर्यो रन्धीररावणे । त्वे अपि क्रतुर्मम ५
त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन् । त्वया प्रति ब्रुवे युजा ६
महाँ उतासि यस्य ते ऽनु स्वधावरी सहः । मम्नाते इन्द्र रोदसी ७
तं त्वा मरुत्वती परि भुवद् वाणी सयावरी । नक्षमाणा सह द्युभिः ८ ११३०
ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवो भुवन् दस्ममुप द्यवि । सं ते नमन्त कृष्टयः ९
प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् । विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः १०
उरुव्यचसे महिने सुवृक्ति — मिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः । तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः ११
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै । हर्यश्वाय बर्हया समापीन् १२

॥ २०५ ॥ (ऋ० ७।३२।१-२७) २६ पूर्वार्धर्चस्य शाक्तिर्वासिष्ठो वा (शाट्यायने ब्राह्मणे), २६-२७ शाक्तिर्वासिष्ठो वा (ताण्डके ब्राह्मणे) । प्रगाथः- (बृहती, सतोबृहती), ३ द्विपदा विराट् ।

मो षु त्वा वाघतश्चना — ऽऽरे अस्मन्नि रीरमन् ।
आरात्ताच्चित् सधमादं न आ गही — ह वा सन्नुप श्रुधि १ ११३५
इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते ।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः २

रायस्कामो वज्रहस्तं सुदक्षिणं पुत्रो न पितरं हुवे ३
इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ४
श्रवच्छ्रुत्कर्ण ईयते वसूनां नू चिन्नो मर्धिषद् गिरः ।
सद्यश्चिद् यः सहस्राणि शता दद् न्नकिर्दित्सन्तमा मिनत् ५
स वीरो अप्रतिष्कुत इन्द्रेण शूशुवे नृभिः ।
यस्ते गभीरा सवनानि वृत्रहन् त्सुनोत्या च धावति ६ ११४०
भवा वरूथं मघवन् मघोनां यत् समजासि शर्धतः ।
वि त्वाहतस्य वेदनं भजेम ह्या दूणाशो भरा गयम् ७
सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित् पृणन्नित् पृणते मयः ८
मा स्रेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्वं राय आतुजे ।
तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवत्नवे ९
नकिः सुदासो रथं पर्यास न रीरमत् ।
इन्द्रो यस्याविता यस्य मरुतो गमत् स गोमति व्रजे १०
गमद् वाजं वाजयन्निन्द्र मर्त्यो यस्य त्वमविता भुवः ।
अस्माकं बोध्यविता रथाना मस्माकं शूर नृणाम् ११ ११४५
उदिन्न्वस्य रिच्यते ऽशो धनं न जिग्युषः ।
य इन्द्रो हरिवान् न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि १२
मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा ।
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत् १३
कस्तमिन्द्र त्वावसु मा मर्त्यो दधर्षति ।
श्रद्धा इत् ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति १४
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु ।
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभि र्विश्वा तरेम दुरिता १५
तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि नकिष्ट्वा गोषु वृण्वते १६ ११५०
त्वं विश्वस्य धनदा असि श्रुतो य ईं भवन्त्याजयः ।
तवायं विश्वः पुरुहूत पार्थिवो ऽवस्युर्नाम भिक्षते १७

यदिन्द्र यावतस्त्व--मेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद् दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय १८
शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे ।
नहि त्वदन्यन्मघवन् न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन १९
तरणिरित् सिषासति वाजं पुरंध्या युजा ।
आ व इंद्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्र्वम् २०
न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु न स्रेधन्तं रयिर्नशत् ।
सुशक्तिरिन्मघवन् तुभ्यं मावते देष्णं यत् पार्ये दिवि २१ ११५५
अभि त्वा शूर नोनुमो ऽदुग्धा इव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृश--मीशानमिन्द्र तस्थुषः २२
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे २३
अभी षतस्तदा भरे--न्द्र ज्यायः कनीयसः ।
पुरूवसुर्हि मघवन्त्सनादसि भरेभरे च हव्यः २४
परा णुदस्व मघवन्नमित्रान् त्सुवेदा नो वसू कृधि ।
अस्माकं बोध्यविता महाधने भवा वृधः सखीनाम् २५
इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि २६ ११६०
मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो३ माशिवासो अव क्रमुः ।
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपो ऽति शूर तरामसि २७

॥ १०६ ॥ (ऋ० ७।३३।१-९) १-९ वसिष्ठपुत्राः इन्द्रो वा । त्रिष्टुप् ।

श्वित्यञ्चो मा दक्षिणतस्कपर्दा धियंजिन्वासो अभि हि प्रमन्दुः ।
उत्तिष्ठन् वोचे परि बर्हिषो नॄन् न मे दूरादवितवे वसिष्ठाः १
दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन तिरो वैशन्तमति पान्तमुग्रम् ।
पाशद्युम्नस्य वायतस्य सोमात् सुतादिन्द्रोऽवृणीता वसिष्ठान् २
एवेन्नु कं सिन्धुमेभिस्ततारे--वेन्नु कं भेदमेभिर्जघान ।
एवेन्नु कं दाशराज्ञे सुदासं प्रावदिन्द्रो ब्रह्मणा वो वसिष्ठाः ३
जुष्टी नरो ब्रह्मणा वः पितॄणा--मक्षमव्ययं न किला रिषाथ ।
यच्छक्वरीषु बृहता रवेणे--न्द्रे शुष्ममदधाता वसिष्ठाः ४ ११६५

उद् द्यामिवेत् तृष्णजो नाथितासो ऽदीधयुर्दाशराज्ञे वृतासः ।
वसिष्ठस्य स्तुवत इन्द्रो अश्रो-दुरुं तृत्सुभ्यो अकृणोदु लोकम् ५
दण्डा इवेद् गोअजनास आसन् परिच्छिन्ना भरता अर्भकासः ।
अभवच्च पुरएता वसिष्ठ आदित् तृत्सूनां विशो अप्रथन्त ६
त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेत-स्तिस्रः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः ।
त्रयो घर्मास उषसं सचन्ते सर्वाँ इत् ताँ अनु विदुर्वसिष्ठाः ७
सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां समुद्रस्येव महिमा गभीरः ।
वातस्येव प्रजवो नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः ८
त इन्निण्यं हृदयस्य प्रकेतैः सहस्रवल्शमभि सं चरन्ति ।
यमेन ततं परिधिं वयन्तो ऽप्सरस उप सेदुर्वसिष्ठाः ९ २२७०

॥ १०७ ॥ (ऋ० ७।५५।२-८) (प्रस्वापिनी उपनिषद्)। १-४ उपरिष्टाद्बृहती, ५-८ अनुष्टुप् ।

यदर्जुन सारमेय दतः पिशङ्ग यच्छसे ।
वीव भ्राजन्त ऋष्टय उप स्रक्वेषु बप्सतो नि षु स्वप २
स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनःसर ।
स्तोतॄनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान् दुच्छुनायसे नि षु स्वप ३
त्वं सूकरस्य दर्दृहि तव दर्दर्तु सूकरः ।
स्तोतॄनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान् दुच्छुनायसे नि षु स्वप ४
सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः ।
ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः ५
य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः ।
तेषां सं हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा ६ २२७५
सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत् ।
तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि ७
प्रोष्ठेशया वह्येशया नारीर्यास्तल्पशीवरीः ।
स्त्रियो याः पुण्यगन्धा-स्ताः सर्वाः स्वापयामसि ८

॥ १०८ ॥ (ऋ० ७।९७।१) त्रिष्टुप् ।

यज्ञे दिवो नृषदने पृथिव्या नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
इन्द्राय यत्र सवनानि सुन्वे गमन्मदाय प्रथमं वयश्च १

॥ १०९ ॥ (ऋ० ७।९८।१-६)

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।
गौराद् वेदीयाँ अवपानमिन्द्रो विश्वाहेद् याति सुतसोममिच्छन् १

यद् दधिषे प्रदिवि चार्वन्नं दिवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि ।
उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान् पाहि सोमान् २ ११८०

जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच ।
एन्द्र पप्राथोर्व१न्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ३

यद् योधया महतो मन्यमानान् त्साक्षाम तान् बाहुभिः शाशदानान् ।
यद् वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम ४

प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार ।
यदेददेवीरसहिष्ट माया अथाभवत् केवलः सोमो अस्य ५

तवेदं विश्वमभितः पशव्यं१ यत् पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य ।
गवामसि गोपतिरेक इंद्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः ६

॥ ११० ॥ (ऋ० ७।१०४।८, १६, १९-२२) । त्रिष्टुप्; २१ जगती ।

यो मा पाकेन मनसा चरन्तमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः ।
आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इंद्र वक्ता ८ ११८५

यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह ।
इंद्रस्तं हंतु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट १६

प्र वर्तय दिवो अश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशाधि ।
प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तादभि जहि रक्षसः पर्वतेन १९

एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इंद्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम् ।
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदशनिं यातुमद्भ्यः २०

इंद्रो यातूनामभवत् पराशरो हविर्मथीनामभ्या३विवासताम् ।
अभीदु शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्त्सत एति रक्षसः २१

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र २२ ११९०

॥ १११ ॥ (ऋ० ८।६८।१-१३)

(२२९१-२३१०) प्रियमेध आङ्गिरसः। गायत्री; अनुष्टुम्मुखः प्रगाथः= (अनुष्टुप्+गायत्र्यौ); १, ४, ७, १० अनुष्टुप्।

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि। तुविकूर्मिमृतीषह॒मिन्द्र शविष्ठ सत्पते १
तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते। आ पप्राथ महित्वना २
यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः। हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ३
विश्वानरस्य वस्पति॒मनानतस्य शवसः। एवैश्च चर्षणीना॒मूती हुवे रथानाम् ४
अभिष्टये सदावृधं स्वर्मीळ्हेषु यं नरः। नाना हवन्त ऊतये ५ २२९५
परोमात्रमृचीषम॒मिन्द्रमुग्रं सुराधसम्। ईशानं चिद्वसूनाम् ६
तंतमिद्राधसे मह इन्द्रं चोदामि पीतये। यः पूर्व्यामनुष्टुति॒मीशे कृष्टीनां नृतुः ७
न यस्य ते शवसान सख्यमानंश मर्त्यः। नकिः शवांसि ते नशत् ८
त्वोतासस्त्वा युजाऽप्सु सूर्ये महद्धनम्। जयेम पृत्सु वज्रिवः ९
तं त्वा यज्ञेभिरीमहे तं गीर्भिर्गिर्वणस्तम।
इन्द्र यथा चिदाविथ वाजेषु पुरुमाय्यम् १० २३००
यस्य ते स्वादु सख्यं स्वाद्वी प्रणीतिरद्रिवः। यज्ञो वितन्तसाय्यः ११
उरु णस्तन्वे३ तन उरु क्षयाय नस्कृधि। उरु णो यन्धि जीवसे १२
उरुं नृभ्य उरुं गव उरुं रथाय पन्थाम्। देववीतिं मनामहे १३

॥ ११२ ॥ (ऋ० ८।६९।१-१०, [११ पूर्वार्धः], १३-१८)

अनुष्टुप्, २ उष्णिक्, ४-६ गायत्री, १६ पङ्क्तिः, १७-१८ बृहती।

प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं मन्दद्वीरायेन्दवे। धिया वो मेधसातये पुरंध्या विवासति १
नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम्। पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि २ २३०५
ता अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः।
जन्मन् देवानां विश॒स्त्रिष्वा रोचने दिवः ३
अभि प्र गोपतिं गिरे॒न्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ४
आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे ५
इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत् सीमुपह्वरे विदत् ६
उद्यद्ब्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि।
मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ७ २३१०
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत ८

अव॑ स्वराति गर्ग॑रो गोधा परि॑ सनिष्वणत् ।
पिङ्गा परि॑ चनिष्कद॒दिन्द्रा॑य ब्रह्मोद्य॑तम् ९
आ यत् पत॑न्त्येन्य॑: सुदुघा अन॑पस्फुर॑: । अपस्फुर॑ं गृभायत सोम॒मिन्द्रा॑य पात॑वे १०
अपादिन्द्रो अपा॑दग्नि॒र्विश्वे॑ देवा अ॑मत्सत । (पूर्वार्धः) ११
यो व्यती॑ँरफाणयत् सुयु॑क्ताँ उप॑ दाशुषे॑ । तक्वो नेता तदिद्वपु॑रुपमा यो अमु॑च्यत १२ २३१५
अतीदु॑ शक्र ओ॑हत इन्द्रो विश्वा अति द्विष॑: ।
भिनत् कनीन॑ ओद॒नं पच्यमा॑नं परो गिरा १४
अर्भको न कु॑मारको ऽधि॑ तिष्ठन् नव॑ं रथ॑म् । स पक्षन्महि॒षं मृगं पित्रे मात्रे वि॑भुक्रतु॑म् १५
आ तू सु॑शिप्र दंपते रथ॑ं तिष्ठा हिरण्यय॑म् ।
अध॑ द्युक्षं स॑चेवहि सहस्र॑पादमरु॒षं स्व॑स्तिगाम॑नेहस॑म् १६
तं घे॑मित्था न॑मस्विन उप॑ स्वराज॑मासते ।
अर्थं॑ चिदस्य सुधि॑तं यदे॑तव आवर्तय॑न्ति दावने॑ १७
अनु॑ प्रत्नस्यौक॑स: प्रियमे॑धास एषाम् ।
पूर्वामनु॒ प्रय॑तिं वृक्तब॑र्हिषो हितप्र॑यस आशत १८ २३२०

॥ २१३ ॥ (ऋ० ८।७०।१-१५)

(२३२१-२३३५) पुरुहन्मा आङ्गिरसः । बृहती; १-६ प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती),
११ शंकुमती, १३ उष्णिक्, १४ अनुष्टुप्, १५ पुरउष्णिक् ।

यो राजा॑ चर्षणीनां याता रथे॑भिरध्रि॑गु: ।
विश्वा॑सां तरुता पृत॑नानां ज्येष्ठो यो वृ॑त्रहा गृणे १
इन्द्र॑ं तं शु॑म्भ पुरुहन्मन्नव॑से यस्य॑ द्विता वि॑धर्तरि॑ ।
हस्ता॑य वज्र: प्रति॑ धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्य॑: २
नकिष्टं कर्म॑णा नश॒द्यश्च॒कार॑ सदावृ॑धम् ।
इन्द्र॑ं न यज्ञैर्विश्वगू॑र्तमृभ्व॑स॒मधृ॑ष्टं धृष्ण्वोज॑सम् ३
अषाळ्हमुग्रं पृत॑नासु सासहिं यस्मि॑न् महीरु॑रुज्रय॑: ।
सं धे॑नवो जाय॑माने अनोनवु॒र्द्याव॑: क्षामो॑ अनोनवु: ४
यद्द्याव॑ इन्द्र ते शतं शतं भूमी॑रुत स्युः ।
न त्वा॑ वज्रिन्त्सहस्र॑ं सूर्या अनु॑ न जातम॑ष्ट रोद॑सी ५ २३२५
आ प॑प्राथ महिना वृष्ण्या॑ वृषन् विश्वा॑ शविष्ठ शव॑सा ।
अस्माँ अ॑व मघवन् गोम॑ति व्रजे वज्रि॑ञ्चित्राभि॑रूतिभि॑: ६

न सीमदेव आप—दिषं दीर्घायो मर्त्यः ।
एतग्वा चिद्य एतशा युयोजते हरी इन्द्रो युयोजते ७
तं वो महो महाय्य—मिन्द्रं दानाय सक्षणिम् ।
यो गाधेषु य आरणेषु हव्यो वाजेष्वस्ति हव्यः ८
उदू षु णो वसो महे मृशस्व शूर राधसे ।
उदू षु मह्यै मघवन् मघत्तय उदिन्द्र श्रवसे महे ९
त्वं न इन्द्र ऋतयु—स्त्वानिदो नि तृम्पसि ।
मध्ये वसिष्व तुविनृम्णोर्वो—र्नि दासं शिश्नथो हथैः १० २३३०
अन्यव्रतममानुष—मयज्वानमदेवयुम् ।
अव स्वः सखा दुधुवीत पर्वतः सुघ्नाय दस्युं पर्वतः ११
त्वं न इन्द्रासां हस्ते शविष्ठ दावने । धानानां न सं गृभायास्मयु—र्द्विः सं गृभायास्मयुः १२
सखायः क्रतुमिच्छत कथा राधाम शरस्य । उपस्तुतिं भोजः सूरिर्यो अह्रयः १३
भूरिभिः समह ऋषिभि—र्बर्हिष्मद्भिः स्तविष्यसे ।
यदित्थमेकमेकमि—च्छर वत्सान् पराददः १४
कर्णगृह्या मघवा शौरदेव्यो वत्सं नस्त्रिभ्य आनयत् । अजां सूरिर्न धातवे १५ २३३५

॥ २१४ ॥ (ऋ० ८।९५।१-९) (२३३६-२३६५) तिरश्चीराङ्गिरसः। अनुष्टुप्।

आ त्वा गिरो रथीरिवा—ऽस्थुः सुतेषु गिर्वणः ।
अभि त्वा समनूषते—न्द्र वत्सं न मातरः १
आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः सुतास इन्द्र गिर्वणः ।
पिबा त्व१स्यान्धस इन्द्र विश्वासु ते हितम् २
पिबा सोमं मदाय क—मिन्द्र श्येनाभृतं सुतम् ।
त्वं हि शश्वतीनां पती राजा विशामसि ३
श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ४
इन्द्र यस्ते नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत् ।
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम् ५ २३४०
तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ।
पुरूण्यस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे ६

*

एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना ।
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान् ममत्तु ७
इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः ।
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्यः ८
इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे ।
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषासति ९

॥ २१५ ॥ (ऋ० ८।९६।१-१३, १६-२१)

[द्युतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप्, ४ विराट्, ११ पुरस्ताज्ज्योतिः ।]

अस्मा उषास आतिरन्त याम—मिन्द्राय नक्तमूर्म्याः सुवाचः ।
अस्मा आपो मातरः सप्त तस्थु—र्नृभ्यस्तराय सिन्धवः सुपाराः १ १३४५
अतिविद्धा विथुरेणा चिदस्त्रा त्रिः सप्त सानु संहिता गिरीणाम् ।
न तद्देवो न मर्त्यस्तुतुर्या—द्यानि प्रवृद्धो वृषभश्चकार २
इन्द्रस्य वज्र आयसो निमिश्ल इन्द्रस्य बाह्वोर्भूयिष्ठमोजः ।
शीर्षन्निन्द्रस्य क्रतवो निरेक आसन्नेषन्त श्रुत्या उपाके ३
मन्ये त्वा यज्ञियं यज्ञियानां मन्ये त्वा च्यवनमच्युतानाम् ।
मन्ये त्वा सत्वनामिन्द्र केतुं मन्ये त्वा वृषभं चर्षणीनाम् ४
आ यद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र धत्से मदच्युतमहये हन्तवा उ ।
प्र पर्वता अनवन्त प्र गावः प्र ब्रह्माणो अभिनक्षन्त इन्द्रम् ५
तमु ष्टवाम य इमा जजान विश्वा जातान्यवराण्यस्मात् ।
इन्द्रेण मित्रं दिधिषेम गीर्भि—रुपो नमोभिर्वृषभं विशेम ६ १३५०
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः ।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्व—थेमा विश्वाः पृतना जयासि ७
त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो वावृधाना उस्रा इव राशयो यज्ञियासः ।
उप त्वेमः कृधि नो भागधेयं शुष्मं त एना हविषा विधेम ८
तिग्ममायुधं मरुतामनीकं कस्त इन्द्र प्रति वज्रं दधर्ष ।
अनायुधासो असुरा अदेवा—श्चक्रेण ताँ अप वप ऋजीषिन् ९
मह उग्राय तवसे सुवृक्तिं प्रेरय शिवतमाय पश्वः ।
गिर्वाहसे गिर इंद्राय पूर्वी—र्धेहि तन्वे कुविदङ्ग वेदत् १०

उक्थवाहसे विभ्वे मनीषां द्रुणा न पारमीरया नदीनाम् ।
नि स्पृश धिया तन्वि श्रुतस्य जुष्टतरस्य कुविदङ्ग वेदत् ११ २३५५
तद्विविड्ढि यत् त इंद्रो जुजोषत् स्तुहि सुष्टुतिं नमसा विवास ।
उप भूष जरितर्मा रुवण्यः श्रावया वाचं कुविदङ्ग वेदत् १२
अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठ–दियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः ।
आवत् तमिन्द्रः शच्या धमन्त–मप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त १३
त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानो ऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र ।
गूळ्हे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः १६
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन् धृषितो जघन्थ ।
त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रै–स्त्वं गा इंद्र शच्येदविन्दः १७
त्वं ह त्यद्वृषभ चर्षणीनां घनो वृत्राणां तविषो बभूथ ।
त्वं सिन्धूँरसृजस्तस्तभानान् त्वमपो अजयो दासपत्नीः १८ २३६०
स सुक्रतू रणिता यः सुतेष्व–नुत्तमन्युर्यो अहेव रेवान् ।
य एक इन्नर्यपांसि कर्ता स वृत्रहा प्रतीदन्यमाहुः १९
स वृत्रहेन्द्रश्चर्षणीधृत् तं सुष्टुत्या हव्यं हुवेम ।
स प्राविता मघवा नोऽधिवक्ता स वाजस्य श्रवस्यस्य दाता २०
स वृत्रहेन्द्र ऋभुक्षाः सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव ।
कृण्वन्नपांसि नर्या पुरूणि सोमो न पीतो हव्यः सखिभ्यः २१ २३६३

॥ २१६ ॥ (ऋ० ८.९८।१-१२)

(२३६४-२३७५) नृमेध आङ्गिरसः। उष्णिक्; ७, १०-११ ककुप्; ९, १२ पुरउष्णिक्।

इंद्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् । धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे १
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः । विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि २ २३६५
विभ्राजञ्ज्योतिषा स्व१–रगच्छो रोचनं दिवः । देवास्त इंद्र सख्याय येमिरे ३
एन्द्र नो गधि प्रियः सत्राजिदगोह्यः । गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः ४
अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी । इंद्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ५
त्वं हि शश्वतीना–मिंद्र दर्ता पुरामसि । हंता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः ६
अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा कामान् महः ससृज्महे । उदेव यन्त उदभिः ७ २३७०
वार्ण त्वा यव्याभि–र्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि । वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे ८

युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयो—रौ रथ उरुयुगे । इन्द्रवाहा वचोयुजा ९
त्वं न इन्द्रा भरँ ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे । आ वीरं पृतनाषहम् १०
त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधा ते सुम्नमीमहे ११
त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्त—मुप ब्रुवे शतक्रतो । स नो रास्व सुवीर्यम् १२ १३७५

॥ २१७ ॥ (ऋ० ८।९९।१-८) प्रगाथः=(विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

त्वामिदा ह्यो नरो ऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।
स इन्द्र स्तोमवाहसामिह श्रुध्यु—प स्वसरमा गहि १
मत्स्वा सुशिप्र हरिवस्तदीमहे त्वे आ भूषन्ति वेधसः ।
तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्या सुतेष्विन्द्र गिर्वणः २
श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम ३
अनर्शरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।
सो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन् ४
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्व—भि विश्वा असि स्पृधः ।
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ५ १३८०
अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ६
इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।
आशुं जेतारं हेतारं रथीतम—मतूर्तं तुग्र्यावृधम् ७
इष्कर्तारमनिष्कृतं सहस्कृतं शतमूतिं शतक्रतुम् ।
समानमिन्द्रमवसे हवामहे वसवानं वसूजुवम् ८ १३८३

॥ २१८ ॥ (ऋ० ८।८९।१-७)

(१३८४-१३९६) नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ । १-४ प्रगाथः=(विषमा बृहती, समा सतोबृहती), ५-६ अनुष्टुप्, ७ बृहती ।

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहंतमम् ।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि १
अपाधमदभिशस्तीरशस्तिहा ऽथेन्द्रो द्युम्न्याभवत् ।
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे बृहद्भानो मरुद्गण २ १३८५

प्र व इंद्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत ।
वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतु—र्वज्रेण शतपर्वणा ३
अभि प्र भर धृषता धृषन्मनः श्रवश्चित् ते असद्बृहत् ।
अर्षन्त्वापो जवसा वि मातरो हनो वृत्रं जया स्वः ४
यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय ।
तत् पृथिवीमप्रथय—स्तदस्तभ्ना उत द्याम् ५
तत् ते यज्ञो अजायत तदर्क उत हस्कृतिः ।
तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम् ६
आमासु पक्वमैरय आ सूर्यं रोहयो दिवि ।
घर्मं न सामन् तपता सुवृक्तिभि—र्जुष्टं गिर्वणसे बृहत् ७ २३९०

॥ २१९ ॥ (ऋ० ८।९०।१-६) प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

आ नो विश्वासु हव्य इंद्रः समत्सु भूषतु ।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः १
त्वं दाता प्रथमो राधसाम—स्यसि सत्य ईशानकृत् ।
तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः २
ब्रह्मा त इंद्र गिर्वणः क्रियन्ते अनतिद्भुता ।
इमा जुषस्व हर्यश्व योजने—न्द्र या ते अमन्महि ३
त्वं हि सत्यो मघवन्ननानतो वृत्रा भूरि न्यृञ्जसे ।
स त्वं शविष्ठ वज्रहस्त दाशुषे ऽर्वाञ्चं रयिमा कृधि ४
त्वमिन्द्र यशा अस्यृ—जीषी शवसस्पते ।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इद—नुत्ता चर्षणीधृता ५ २३९५
तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे ।
महीव कृत्तिः शरणा त इंद्र प्र ते सुम्ना नो अश्नवन् ६ २३९६

॥ २२० ॥ (८।९२।१-३३)

(२३९७-२४२९) श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

पान्तमा वो अंधस इंद्रमभि प्र गायत । विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् १
पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्यं१ सनश्रुतम् । इंद्र इति ब्रवीतन २
इंद्र इन्नो महानां दाता वाजानां नृतुः । महाँ अभिज्ञ्वा यमत् ३
अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः । इंदोरिन्द्रो यवाशिरः ४ २४००

तम्वभि प्राचंते—न्द्रं सोमस्य पीतये । तदिद्ध्यस्य वर्धनम् ५
अस्य पीत्वा मदानां देवो देवस्यौजसा । विश्वाभि भुवना भुवत् ६
त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम् । आ च्यावयस्यूतये ७
युध्मं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम् । नरमवार्यक्रतुम् ८
शिक्षा ण इंद्र राय आ पुरु विद्वाँ ऋचीषम । अवा नः पार्ये धने ९ १४०५
अतश्चिदिन्द्र ण उपा ऽऽयाहि शतवाजया । इषा सहस्रवाजया १०
अयाम धीवतो धियो ऽर्वद्भिः शक्र गोदरे । जयेम पृत्सु वज्रिवः ११
वयमु त्वा शतक्रतो गावो न यवसेष्वा । उक्थेषु रणयामसि १२
विश्वा हि मर्त्यत्वना ऽनुकामा शतक्रतो । अगन्म वज्रिन्नाशसः १३
त्वे सु पुत्र शवसो ऽवृत्रन् कामकातयः । न त्वामिन्द्राति रिच्यते १४ १४१०
स नो वृषन्त्सनिष्ठया सं घोरया द्रवित्न्वा । धियाविड्ढि पुरंध्या १५
यस्ते नूनं शतक्रत—विन्द्र द्युम्नितमो मदः । तेन नूनं मदे मदेः १६
यस्ते चित्रश्रवस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः । य ओजोदातमो मदः १७
विद्मा हि यस्ते अद्रिव—स्त्वादत्तः सत्य सोमपाः। विश्वासु दस्म कृष्टिषु १८
इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः । अर्कमर्चन्तु कारवः १९ १४१५
यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः। इन्द्रं सुते हवामहे २०
त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत । तमिद्वर्धन्तु नो गिरः २१
आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिंधवः । न त्वामिन्द्राति रिच्यते २२
विव्यक्थ महिना वृषन् भक्षं सोमस्य जागृवे । य इन्द्र जठरेषु ते २३
अरं त इंद्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन् । अरं धामभ्य इंदवः २४ १४२०
अरमश्वाय गायति श्रुतकक्षो अरं गवे । अरमिन्द्रस्य धाम्ने २५
अरं हि ष्मा सुतेषु णः सोमेष्विंद्र भूषसि । अरं ते शक्र दावने २६
पराकात्ताच्चिदद्रिव—स्त्वां नक्षन्त नो गिरः । अरं गमाम ते वयम् २७
एवा ह्यसि वीरयु—रेवा शूर उत स्थिरः । एवा ते राध्यं मनः २८
एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः । अधा चिदिंद्र मे सचा २९ १४२५
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयु—र्भुवो वाजानां पते । मत्स्वा सुतस्य गोमतः ३०
मा न इंद्राभ्या३दिशः सूरो अक्तुष्वा यमन् । त्वा युजा वनेम तत् ३१
त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः । त्वमस्माकं तव स्मसि ३२
त्वामिद्धि त्वायवो ऽनुनोनुवतश्चरान् । सखाय इन्द्र कारवः ३३ १४२९

॥२२१॥ (ऋ०८।९३।१-३३)

(२४३०-२४६२) सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् । अस्तारमेषि सूर्य १ २४३०
नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा । अहिं च वृत्रहावधीत् २
स न इन्द्रः शिवः सखा ऽश्वावद्गोमद्यवमत् । उरुधारेव दोहते ३
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ४
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे । उतो तत् सत्यमित् तव ५
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । सर्वांस्ताँ इन्द्र गच्छसि ६ २४३५
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत् ७
इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः । द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ८
गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः । ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः ९
दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि गृणान इन्द्र गिर्वणः । त्वं च मघवन् वशः १०
यस्य ते नू चिदादिशं न मिनन्ति स्वराज्यम् । न देवो नाध्रिगुर्जनः ११ २४४०
अधा ते अप्रतिष्कुतं देवी शुष्मं सपर्यतः । उभे सुशिप्र रोदसी १२
त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च । परुष्णीषु रुशत् पयः १३
वि यदहेरध त्विषो विश्वे देवासो अक्रमुः । विदन्मृगस्य ताँ अमः १४
आदु मे निवरो भुवद् वृत्रहादिष्ट पौंस्यम् । अजातशत्रुरस्तृतः १५
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम् । आ शुषे राधसे महे १६ २४४५
अया धिया च गव्यया पुरुणामन् पुरुष्टुत । यत् सोमेसोम आभवः १७
बोधिन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः । शृणोतु शक्र आशिषम् १८
कया त्वं न ऊत्या ऽभि प्र मन्दसे वृषन् । कया स्तोतृभ्य आ भर १९
कस्य वृषा सुते सचा नियुत्वान् वृषभो रणत् । वृत्रहा सोमपीतये २०
अभी षु णस्त्वं रयिं मन्दसानः सहस्रिणम् । प्रयन्ता बोधि दाशुषे २१ २४५०
पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये । अपां जग्मिर्निचुम्पुणः २२
इष्टा होत्रा असृक्षते न्द्रं वृधासो अध्वरे । अच्छावभृथमोजसा २३
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळ्हामभि प्रयो हितम् २४
तुभ्यं सोमाः सुता इमे स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो । स्तोतृभ्य इन्द्रमा वह २५
आ ते दक्षं वि रोचना दधद्रत्ना वि दाशुषे । स्तोतृभ्य इन्द्रमर्चत २६ २४५५
आ ते दधामीन्द्रियमुक्था विश्वा शतक्रतो । स्तोतृभ्य इन्द्र मृळय २७

भद्रंभद्रं न आ भरे–षमूर्जं शतक्रतो । यदिन्द्र मृळयासि नः २८
स नो विश्वान्या भर सुवितानि शतक्रतो । यदिन्द्र मृळयासि नः २९
त्वामिद् वृत्रहन्तम सुतावन्तो हवामहे । यदिन्द्र मृळयासि नः ३०
उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते । उप नो हरिभिः सुतम् ३१ २४६०
द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः । उप नो हरिभिः सुतम् ३२
त्वं हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि । उप नो हरिभिः सुतम् ३३ २४६२

॥ २२२ ॥ (ऋ० १०।८।७-९)

(२४६३-२४६५) त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः । त्रिष्टुप् ।

अस्य त्रितः क्रतुना वव्रे अन्त–रिच्छन् धीतिं पितुरेवैः परस्य ।
सचस्यमानः पित्रोरुपस्थे जामि ब्रुवाण आयुधानि वेति ७
स पित्र्याण्यायुधानि विद्वा–निन्द्रेषित आप्त्यो अभ्ययुध्यत् ।
त्रिशीर्षाणं सप्तरश्मिं जघन्वान् त्वाष्ट्रस्य चिन्निः ससृजे त्रितो गाः ८
भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्तमोजो ऽवाभिनत् सत्पतिर्मन्यमानम् ।
त्वाष्ट्रस्य चिद् विश्वरूपस्य गोना–माचक्राणस्त्रीणि शीर्षा परा वर्क् ९ २४६५

॥ २२३ ॥ (ऋ० १०।२२।१-१५)

(२४६६-२४९०) ऐन्द्रो विमदः प्राजापत्यो वा, वासुक्रो वसुकृद्वा । पुरस्ताद्बृहती;
५, ७, ९ अनुष्टुभः १५ त्रिष्टुप् ।

कुह श्रुत इन्द्रः कस्मिन्नद्य जने मित्रो न श्रूयते ।
ऋषीणां वा यः क्षये गुहा वा चर्कृषे गिरा १
इह श्रुत इन्द्रो अस्मे अद्य स्तवे वज्र्यृचीषमः ।
मित्रो न यो जनेष्वा यशश्चक्रे असाम्या २
महो यस्पतिः शवसो असाम्या महो नृम्णस्य तूतुजिः ।
भर्ता वज्रस्य धृष्णोः पिता पुत्रमिव प्रियम् ३
युजानो अश्वा वातस्य धुनी देवो देवस्य वज्रिवः ।
स्यन्ता पथा विरुक्मता सृजानः स्तोष्यध्वनः ४
त्वं त्या चिद् वातस्याश्वागा ऋज्रा त्मना वहध्यै ।
ययोर्देवो न मर्त्यो यन्ता नकिर्विदाय्यः ५ २४७०
अध ग्मन्तोशना पृच्छते वां कदर्था न आ गृहम् ।
आ जग्मथुः पराकाद् दिवश्च ग्मश्च मर्त्यम् ६

आ न इन्द्र पृक्षसे ऽस्माकं ब्रह्मोद्यतम् ।
तत् त्वा याचामहेऽवः शुष्णं यद्धन्नमानुषम् ७
अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तु--रन्यव्रतो अमानुषः ।
त्वं तस्यामित्रहन् वधर्दासस्य दम्भय ८
त्वं न इन्द्र शूर शूरै--रुत त्वोतासो बर्हणा ।
पुरुत्रा ते वि पूर्तयो नवन्त क्षोणयो यथा ९
त्वं तान् वृत्रहत्ये चोदयो नॄन् कार्पाणे शूर वज्रिवः ।
गुहा यदी कवीनां विशां नक्षत्रशवसाम् १० २४७५
मक्षू ता त इन्द्र दानाप्नस आक्षाणे शूर वज्रिवः ।
यद्ध शुष्णस्य दम्भयो जातं विश्वं सयावभिः ११
माकुध्र्यगिन्द्र शूर वस्वी--रस्मे भूवन्नभिष्टयः ।
वयंवयं त आसां सुम्ने स्याम वज्रिवः १२
अस्मे ता त इन्द्र सन्तु सत्या ऽहिंसन्तीरुपस्पृशः ।
विद्याम यासां भुजो धेनूनां न वज्रिवः १३
अहस्ता यदपदी वर्धत क्षाः शचीभिर्वेद्यानाम् ।
शुष्णं परि प्रदक्षिणिद् विश्वायवे नि शिश्नथः १४
पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यो वसवान वसुः सन् ।
उत त्रायस्व गृणतो मघोनो महश्च रायो रेवतस्कृधी नः १५ २४८०

॥ २२४ ॥ (ऋ० १०।२३।१-७) जगती; १, ७ त्रिष्टुप्, ५ अभिसारिणी ।

यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यं विव्रतानाम् ।
प्र श्मश्रु दोधुवदूर्ध्वथा भूद् वि सेनाभिर्दयमानो वि राधसा १
हरी न्वस्य या वने विदे वस्वि--न्द्रो मघैर्मघवा वृत्रहा भुवत् ।
ऋभुर्वाज ऋभुक्षाः पत्यते शवो ऽव क्ष्णौमि दासस्य नाम चित् २
यदा वज्रं हिरण्यमिदथा रथं हरी यमस्य वहतो वि सूरिभिः ।
आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत इन्द्रो वाजस्य दीर्घश्रवसस्पतिः ३
सो चिन्नु वृष्टिर्यूथ्या३ स्वा सचाँ इन्द्रः श्मश्रूणि हरिताभि प्रुष्णुते ।
अव वेति सुक्षयं सुते मधू--दिद्धूनोति वातो यथा वनम् ४
यो वाचा विवाचो मृध्रवाचः पुरू सहस्राशिवा जघान ।
तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः ५ २४८५

स्तोमं त इन्द्र विमदा अजीजन—न्नपूर्व्यं पुरुतमं सुदानवे ।
विद्मा ह्यस्य भोजनमिनस्य य—दा पशुं न गोपाः करामहे ६
माकिर्न एना सख्या वि यौषु—स्तव चेन्द्र विमदस्य च ऋषेः ।
विद्मा हि ते प्रमतिं देव जामिव—दस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ७

॥ २२५ ॥ (ऋ० १०।२४।१-३) आस्तारपङ्क्तिः ।

इन्द्र सोममिमं पिब मधुमन्तं चमू सुतम् ।
अस्मे रयिं नि धारय वि वो मदे सहस्रिणं पुरूवसो विवक्षसे १
त्वां यज्ञेभिरुक्थै—रुप हव्येभिरीमहे ।
शचीपते शचीनां वि वो मदे श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्षसे २
यस्पतिर्वार्याणा—मसि रध्रस्य चोदिता ।
इन्द्र स्तोतॄणामविता वि वो मदे द्विषो नः पाह्यंहसो विवक्षसे ३ १४९०

॥ २२६ ॥ (ऋ० १०।२७।१-२४) (१४९१-१५१९) ऐन्द्रो वसुक्रः । त्रिष्टुप् ।

असत् सु मे जरितः साभिवेगो यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षम् ।
अनाशीर्दामहमस्मि प्रहन्ता सत्यध्वृतं वृजिनायन्तमाभुम् १
यदीदहं युधये संनया—न्यदेवयून् तन्वा३ शूशुजानान् ।
अमा ते तुम्रं वृषभं पचानि तीव्रं सुतं पञ्चदशं नि षिञ्चम् २
नाहं तं वेद य इति ब्रवी—त्यदेवयून्त्समरणे जघन्वान् ।
यदावाख्यत् समरणमृघाव—दादिद्ध मे वृषभा प्र ब्रुवन्ति ३
यदज्ञातेषु वृजनेष्वासं विश्वे सतो मघवानो म आसन् ।
जिनामि वेत् क्षेम आ सन्तमाभुं प्र तं क्षिणां पर्वते पादगृह्य ४
न वा उ मां वृजने वारयन्ते न पर्वतासो यदहं मनस्ये ।
मम स्वनात् कृधुकर्णो भयात एवेदनु द्यून् किरणः समेजात् ५ १४९५
दर्शन्न्वत्र शृतपाँ अनिन्द्रान् बाहुक्षदः शरवे पत्यमानान् ।
घृषुं वा ये निनिदुः सखाय—मध्यू न्वेषु पवयो ववृत्युः ६
अभूर्वौक्षीर्व्यु१ आयुरानड् दर्षन्नु पूर्वो अपरो नु दर्षत् ।
द्वे पवस्ते परि तं न भूतो यो अस्य पारे रजसो विवेष ७
गावो यवं प्रयुता अर्यो अक्षन् ता अपश्यं सहगोपाश्चरन्तीः ।
हवा इदर्यो अभितः समायन् कियदासु स्वपतिश्छन्दयाते ८

सं यद्वयं यवसादो जनाना—महं यवाद उर्वज्रे अन्तः ।
अत्रा युक्तोऽवसातारमिच्छा—दथो अयुक्तं युनजद्ववन्वान् ९
अत्रेदु मे मंससे सत्यमुक्तं द्विपाच्च यच्चतुष्पात् संसृजानि ।
स्त्रीभिर्यो अत्र वृषणं पृतन्या—दयुद्धो अस्य वि भजानि वेदः १० १५००
यस्यानक्षा दुहिता जात्वास कस्तां विद्वाँ अभि मन्याते अन्धाम् ।
कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते य ईं वहाते य ईं वा वरेयात् ११
कियती योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्येण ।
भद्रा वधूर्भवति यत् सुपेशाः स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित् १२
पत्तो जगार प्रत्यञ्चमत्ति शीर्ष्णा शिरः प्रति दधौ वरूथम् ।
आसीन ऊर्ध्वामुपसि क्षिणाति न्यङ्ङुत्तानामन्वेति भूमिम् १३
बृहन्नच्छायो अपलाशो अर्वा तस्थौ माता विषितो अत्ति गर्भः ।
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः १४
सप्त वीरासो अधरादुदाय—न्नष्टोत्तरात्तात् समजग्मिरन्ते ।
नव पश्चातात् स्थिविमन्त आयन् दश प्राक् सानु वि तिरन्त्यश्नः १५ १५०५
दशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वन्ति क्रतवे पार्याय ।
गर्भं माता सुधितं वक्षणा—स्ववेनन्तं तुषयन्ती बिभर्ति १६
पीवानं मेषमपचन्त वीरा न्युप्ता अक्षा अनु दीव आसन् ।
द्वा धन्वं बृहतीमप्स्वन्तः पवित्रवन्ता चरतः पुनन्ता १७
वि क्रोशनासो विष्वञ्च आयन् पचाति नेमो नहि पक्षदर्धः ।
अयं मे देवः सविता तदाह द्र्वन्न इद्वनवत् सर्पिरन्नः १८
अपश्यं ग्रामं वहमानमारा—दचक्रया स्वधया वर्तमानम् ।
सिषक्त्यर्यः प्र युगा जनानां सद्यः शिश्ना प्रमिनानो नवीयान् १९
एतौ मे गावौ प्रमरस्य युक्तौ मो षु प्र सेधीर्मुहुरिन्ममन्धि ।
आपश्चिदस्य वि नशन्त्यर्थं सूरश्च मर्क उपरो बभूवान् २० १५१०
अयं यो वज्रः पुरुधा विवृत्तो ऽवः सूर्यस्य बृहतः पुरीषात् ।
श्रव इदेना परो अन्यदस्ति तदव्यथी जरिमाणस्तरन्ति २१
वृक्षेवृक्षे नियता मीमयद्गौ—स्ततो वयः प्र पतान् पूरुषादः ।
अथेदं विश्वं भुवनं भयात इन्द्राय सुन्वदृषये च शिक्षत् २२
देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन् कृन्तत्रादेषामुपरा उदायन् ।
त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बृबूकं वहतः पुरीषम् २३

सा ते जीवातुरुत तस्य विद्धि मा स्मैतादृगप गूहः समर्ये ।
आविः स्वः कृणुते गूहते बुसं स पादुरस्य निर्णिजो न मुच्यते २४

॥ २२७ ॥ (ऋ० १०।२९।१-८) ।

वने न वा यो न्यधायि चाकञ्छुचिर्वां स्तोमो भुरणावजीगः ।
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षपावान् १ १५१५
प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।
अनु त्रिशोकः शतमावहन्नॄन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान् २
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद् दुरो गिरो अभ्युग्रो वि धाव ।
कद्वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः ३
कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नॄन् कया धिया करसे कन्न आगन् ।
मित्रो न सत्य उरुगाय भृत्या अन्ने समस्य यदसन् मनीषाः ४
प्रेरय सूरो अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधा इव ग्मन् ।
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वीर्नर इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः ५
मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्मना पृथिवी काव्येन ।
वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्मन् भवन्तु पीतये मधूनि ६ १५२०
आ मध्वो अस्मा असिचन्नमत्रमिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधाः ।
स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या अभि क्रत्वा नर्यः पौंस्यैश्च ७
व्यानळिन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः ।
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे ८

॥ २२८ ॥ (१०।२८।१, ३-५, ७, ९, ११)
[१ इन्द्रस्नुषा वसुक्रपत्नी ऋषिका; ३-५, ७, ९, ११ ऐन्द्रो वसुक्र ऋषिः ।]

विश्वो ह्यन्यो अरिराजगाम ममेदह श्वशुरो ना जगाम ।
जक्षीयाद्धाना उत सोमं पपीयात् स्वाशितः पुनरस्तं जगायात् १
अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्र तूयान् त्सुन्वन्ति सोमान् पिबसि त्वमेषाम् ।
पचन्ति ते वृषभाँ अत्सि तेषां पृक्षेण यन्मघवन् हूयमानः ३
इदं सु मे जरितरा चिकिद्धि प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति ।
लोपाशः सिंहं प्रत्यञ्चमत्साः क्रोष्टा वराहं निरतक्त कक्षात् ४ १५२५
कथा त एतदहमा चिकेतं गृत्सस्य पाकस्तवसो मनीषाम् ।
त्वं नो विद्वाँ ऋतुथा वि वोचो यमर्धं ते मघवन् क्षेम्या धूः ५

एवा हि मां तवसं जज्ञुरुग्रं कर्मन्कर्मन् वृषणमिन्द्र देवाः ।
वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानो ऽप व्रजं महिना दाशुषे वम् ९
शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं जगारा ऽद्रिं लोगेन व्यभेदमारात् ।
बृहन्तं चिदृहते रंधयानि वयद्वत्सो वृषभं शूशुवानः १०
तेभ्यो गोधा अयथं कर्षदेत द्ये ब्रह्मणः प्रतिपीयन्त्यन्नैः ।
सिम उक्ष्णोऽवसृष्टाँ अदन्ति स्वयं बलानि तन्वः शृणानाः ११ २५२९

॥ २२९ ॥ (ऋ० १०।३२।१-९)
(२५३०-२५४०) कवष ऐलूषः । जगती, ६-९ त्रिष्टुप् ।

प्र सु ग्मन्ता धियसानस्य सक्षणिं वरेभिर्वराँ अभि षु प्रसीदतः ।
अस्माकमिन्द्र उभयं जुजोषति यत् सोम्यस्यान्धसो बुबोधति १ २५३०
वीन्द्र यासि दिव्यानि रोचना वि पार्थिवानि रजसा पुरुष्टुत ।
ये त्वा वहन्ति मुहुरध्वराँ उप ते सु वन्वन्तु वग्वनाँ अराधसः २
तदिन्मे छन्त्सद्वपुषो वपुष्टरं पुत्रो यज्जानं पित्रोरधीयति ।
जाया पतिं वहति वग्नुना सुमत् पुंस इद्भद्रो वहतुः परिष्कृतः ३
तदित् सधस्थमभि चारु दीधय गावो यच्छासन् वहतुं न धेनवः ।
माता यन्मन्तुर्यूथस्य पूर्व्या ऽभि वाणस्य सप्तधातुरिज्जनः ४
प्र वोऽच्छा रिरिचे देवयुष्पद मेको रुद्रेभिर्याति तुर्वणिः ।
जरा वा येष्वमृतेषु दावने परि व ऊमेभ्यः सिञ्चता मधु ५
निधीयमानमपगूळ्हमप्सु प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम् ६ २५३५
अक्षेत्रवित् क्षेत्रविदं ह्यप्राट् स प्रैति क्षेत्रविदानुशिष्टः ।
एतद्वै भद्रमनुशासनस्यो त स्रुतिं विन्दत्यञ्जसीनाम् ७
अद्येदु प्राणीदममन्निमाहा ऽपीवृतो अधयन्मातुरूधः ।
एमेनमाप जरिमा युवान महेळन् वसुः सुमना बभूव ८
एतानि भद्रा कलश क्रियाम कुरुश्रवण ददतो मघानि ।
दान इद्वो मघवानः सो अ स्त्वयं च सोमो हृदि यं बिभर्मि ९

॥ २३० ॥ (ऋ० १०।३३।२-३) प्रगाथः = (२ बृहती, ३ सतोबृहती)

सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः ।
नि बाधते अमतिर्नग्नता जसु र्वेर्न वेवीयते मतिः २

मृगो न शिश्रा व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो ।
सकृत् सु नो मघवन्निन्द्र मृळया ऽधा पितेव नो भव ३ १५४०

॥ २३१ ॥ (ऋ० १०।३८।१-५) (१५४१-१५४५) मुष्कवानिन्द्रः । जगती ।

अस्मिन् न इन्द्र पृत्सुतौ यशस्वति शिमीवति क्रन्दसि प्राव सातये ।
यत्र गोषाता धृषितेषु खादिषु विष्वक् पतन्ति दिद्यवो नृषाह्ये १
स नः क्षुमन्तं सदने व्यूर्णुहि गोअर्णसं रयिमिन्द्र श्रवाय्यम् ।
स्याम ते जयतः शक्र मेदिनो यथा वयमुश्मसि तद्वसो कृधि २
यो नो दास आर्यो वा पुरुष्टुता ऽदेव इन्द्र युधये चिकेतति ।
अस्माभिष्टे सुषहाः सन्तु शत्रव स्त्वया वयं तान् वनुयाम संगमे ३
यो दभ्रेभिर्हव्यो यश्च भूरिभि र्यो अभीके वरिवोविन्नृषाह्ये ।
तं विखादे सस्निमद्य श्रुतं नर मर्वाञ्चमिन्द्रमवसे करामहे ४
स्ववृजं हि त्वामहमिन्द्र शुश्रवा नानुदं वृषभ रध्रचोदनम् ।
प्र मुञ्चस्व परि कुत्सादिहा गहि किमु त्वावान् मुष्कयोर्बद्ध आसते ५ १५४५

॥ २३२ ॥ (ऋ० १०।४२।१-११)
(१५४६-१५७८) कृष्ण आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन् भूषन्निव प्र भरा स्तोममस्मै ।
वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम् १
दोहेन गामुप शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम् ।
कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्ट मा च्यावय मघदेयाय शूरम् २
किमङ्ग त्वा मघवन् भोजमाहुः शिशीहि मा शिशयं त्वा शृणोमि ।
अप्नस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः ३
त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके ।
अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान् नासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः ४
धनं न स्पन्द्रं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्त्सोमाँ आसुनोति प्रयस्वान् ।
तस्मै शत्रून्त्सुतुकान् प्रातरह्नो नि स्वष्ट्रान् युवति हन्ति वृत्रम् ५ १५५०
यस्मिन् वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा काममस्मे ।
आराच्चित् सन् भयतामस्य शत्रु र्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम् ६
आराच्छत्रुमप बाधस्व दूर मुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन ।
अस्मे धेहि यवमद्गोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम् ७

प्र यमन्तर्वृषसवासो अग्मन् तीव्राः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम् ।
नाह दामानं मघवा नि यंसन्नि सुन्वते वहति भूरि वामम् ८
उत प्रहामतिदीव्या जयाति कृतं यच्छ्वघ्नी विचिनोति काले ।
यो देवकामो न धना रुणद्धि समित् तं राया सृजति स्वधावान् ९
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम १० १५५५
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११

॥ १३३ ॥ (ऋ० १०।४३।१-११) जगती, १०-११ त्रिष्टुप् ।

अच्छा म इन्द्रं मतयः स्वर्विदः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत ।
परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये १
न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत् कामं पुरुहूत शिश्रय ।
राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते २
विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते ।
तस्येदिमे प्रवणे सप्त सिन्धवो वयो वर्धन्ति वृषभस्य शुष्मिणः ३
वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन्त्सोमास इन्द्रं मन्दिनश्चमूषदः ।
प्रैषामनीकं शवसा दविद्युतद्विदत् स्व१र्मनवे ज्योतिरार्यम् ४ १५६०
कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत् ।
न तत् ते अन्यो अनु वीर्यं शकन्न पुराणो मघवन् नोत नूतनः ५
विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद् वृषा ।
यस्याह शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ६
आपो न सिन्धुमभि यत् समक्षरन्त्सोमास इन्द्रं कुल्या इव ह्रदम् ।
वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना ७
वृषा न क्रुद्धः पतयद्रजःस्वा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः ।
स सुन्वते मघवा जीरदानवेऽविन्दज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते ८
उज्जायतां परशुर्ज्योतिषा सह भूया ऋतस्य सुदुघा पुराणवत् ।
वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः स्व१र्ण शुक्रं शुशुचीत सत्पतिः ९ १५६५
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम १०

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चा—दुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इंद्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११

॥ २३४ ॥ (ऋ० १०।४४।१-११) जगती; १-३, १०-११ त्रिष्टुप् ।

आ यात्विंद्रः स्वपतिर्मदाय यो धर्मणा तूतुजानस्तुविष्मान् ।
प्रत्वक्षाणो अति विश्वा सहांस्य—पारेण महता वृष्ण्येन १
सुष्ठामा रथः सुयमा हरी ते मिम्यक्ष वज्रो नृपते गभस्तौ ।
शीभं राजन्त्सुपथा याह्यर्वाङ् वर्धाम ते पपुषो वृष्ण्यानि २
एन्द्रवाहो नृपतिं वज्रबाहु—मुग्रमुग्रासस्तविषास एनम् ।
प्रत्वक्षसं वृषभं सत्यशुष्म—मेमस्मत्रा सधमादो वहन्तु ३ १५७०
एवा पतिं द्रोणसाचं सचेतस—मूर्जः स्कम्भं धरुण आ वृषायसे ।
ओजः कृष्व सं गृभाय त्वे अप्य—सो यथा केनिपानामिनो वृधे ४
गमन्नस्मे वसून्या हि शंसिषं स्वाशिषं भरमा याहि सोमिनः ।
त्वमीशिषे सास्मिन्ना सत्सि बर्हिष्य—नाधृष्या तव पात्राणि धर्मणा ५
पृथक् प्रायन् प्रथमा देवहूतयो ऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा ।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुह—मीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः ६
एवैवापागपरे संतु दूढ्यो ऽश्वा येषां दुर्युज आयुयुज्रे ।
इत्था ये प्रागुपरे संति दावने पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना ७
गिरीँरज्रान् रेजमानाँ अधारयद् द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत् ।
समीचीने धिषणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति ८ १५७५
इमं बिभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवञ्छफारुजः ।
अस्मिन्त्सु ते सवने अस्त्वोक्यं सुत इष्टौ मघवन् बोध्याभगः ९
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभिः प्रथमा धना—न्यस्माकेन वृजनेना जयेम १०
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चा—दुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इंद्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११ १५७८

॥ २३५ ॥ (ऋ० १०।४८।१-११)
(१५७९-१६०७) वैकुण्ठ इंद्रः । जगती; ७, १०-११ त्रिष्टुप् ।

अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पति—रहं धनानि सं जयामि शश्वतः ।
मां हवन्ते पितरं न जंतवो ऽहं दाशुषे वि भजामि भोजनम् १

अहमिन्द्रो रोधो वक्षो अथर्वण—स्त्रिताय गा अजनयमहेरधि ।
अहं दस्युभ्यः परि नृम्णमा ददे गोत्रा शिक्षन् दधीचे मातरिश्वने २ २५८०
मह्यं त्वष्टा वज्रमतक्षदायसं मयि देवासोऽवृजन्नपि क्रतुम् ।
ममानीकं सूर्यस्येव दुष्टरं मामार्यन्ति कृतेन कर्त्वेन च ३
अहमेतं गव्ययमश्व्यं पशुं पुरीषिणं सायकेना हिरण्ययम् ।
पुरू सहस्रा नि शिशामि दाशुषे यन्मा सोमास उक्थिनो अमन्दिषुः ४
अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन ।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन ५
अहमेताञ्छाश्वसतो द्वाद्वे—न्द्रं ये वज्रं युधयेऽकृण्वत ।
आह्वयमानाँ अव हन्मनाहनं दृळ्हा वदन्ननमस्युर्नमस्विनः ६
अभी३दमेकमेको अस्मि निष्षा—ळभी द्वा किमु त्रयः करन्ति ।
खले न पर्षान् प्रति हन्मि भूरि किं मा निन्दन्ति शत्रवोऽनिन्द्राः ७ २५८१
अहं गुङ्गुभ्यो अतिथिग्वमिष्कर—मिषं न वृत्रतुरं विक्षु धारयम् ।
यत् पर्णयघ्न उत वा करञ्जहे प्राहं महे वृत्रहत्ये अशुश्रवि ८
प्र मे नमी साप्य इषे भुजे भूद् गवामेषे सख्या कृणुत द्विता ।
दिद्युं यदस्य समिथेषु मंहय—मादिदेनं शंस्यमुक्थ्यं करम् ९
प्र नेमस्मिन् ददृशे सोमो अन्त—र्गोपा नेममाविरस्था कृणोति ।
स तिग्मशृङ्गं वृषभं युयुत्सन् द्रुहस्तस्थौ बहुले बद्धो अन्तः १०
आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां न मिनामि धाम ।
ते मा भद्राय शवसे ततक्षु—रपराजितमस्तृतमषाळ्हम् ११

॥ २३६ ॥ (ऋ० १०।४९।१-११) जगती; २,११ त्रिष्टुप् ।

अहं दां गृणते पूर्व्यं वस्व—हं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम् ।
अहं भुवं यजमानस्य चोदिता ऽयज्वनः साक्षि विश्वस्मिन् भरे १ २५९०
मां धुरिन्द्रं नाम देवता दिवश्च ग्मश्चापां च जन्तवः ।
अहं हरी वृषणा विव्रता रघू अहं वज्रं शवसे धृष्ण्वा ददे २
अहमत्कं कवये शिश्नथं हथै—रहं कुत्समावमाभिरूतिभिः ।
अहं शुष्णस्य श्नथिता वधर्यमं न यो रर आर्यं नाम दस्यवे ३
अहं पितेव वेतसूँरभिष्टये तुग्रं कुत्साय स्मदिभं च रन्धयम् ।
अहं भुवं यजमानस्य राजनि प्र यद्भरे तुजये न प्रियाधृषे ४

अहं रंधयं मृगयं श्रुतर्वणे यन्माजिहीत वयुना चनानुषक् ।
अहं वेशं नम्रमायवेऽकर-महं सव्याय पड्गृभिमरन्धयम् ५
अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम् ।
यद्वर्धयन्तं प्रथयन्तमानुषग् दूरे पारे रजसो रोचनाकरम् ६ १५९५
अहं सूर्यस्य परि याम्याशुभिः प्रैतशेभिर्वहमान ओजसा ।
यन्मा सावो मनुष आह निर्णिज ऋधक् कृषे दासं कृत्व्यं हथैः ७
अहं सप्तहा नहुषो नहुष्टरः प्राश्रावयं शवसा तुर्वशं यदुम् ।
अहं न्य१न्यं सहसा सहस्करं नव व्राधतो नवतिं च वक्षयम् ८
अहं सप्त स्रवतो धारयं वृषा द्रवित्न्वः पृथिव्यां सीरा अधि ।
अहमर्णांसि वि तिरामि सुक्रतु-र्युधा विदं मनवे गातुमिष्टये ९
अहं तदासु धारयं यदासु न देवश्चन त्वष्टाधारयद्रुशत् ।
स्पार्हं गवामूधःसु वक्षणास्वा मधोर्मधु श्वात्र्यं सोममाशिरम् १०
एवा देवाँ इन्द्रो विव्ये नॄन् प्र च्यौत्नेन मघवा सत्यराधाः ।
विश्वेत् ता ते हरिवः शचीवो ऽभि तुरासः स्वयशो गृणन्ति ११ १६००

॥ २३७ ॥ (ऋ० १०।५०।१-७) जगती; ३, ४ अभिसारिणी, ५ त्रिष्टुप् ।

प्र वो महे मन्दमानायान्धसो ऽर्चा विश्वानराय विश्वाभुवे ।
इंद्रस्य यस्य सुमखं सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः १
सो चिन्नु सख्या नर्य इनः स्तुत-श्चर्कृत्य इंद्रो मावते नरे ।
विश्वासु धूर्षु वाजकृत्येषु सत्पते वृत्रे वाप्स्व१भि शूर मंदसे २
के ते नर इंद्र ये त इषे ये ते सुम्नं सधन्य१मियक्षान् ।
के ते वाजायासुर्याय हिन्विरे के अप्सु स्वासूर्वरासु पौंस्ये ३
भुवस्त्वमिंद्र ब्रह्मणा महान् भुवो विश्वेषु सवनेषु यज्ञियः ।
भुवो नॄँश्च्यौत्नो विश्वस्मिन् भरे ज्येष्ठश्च मन्त्रो विश्वचर्षणे ४
अवा नु कं ज्यायान् यज्ञवनसो महीं त ओमात्रां कृष्टयो विदुः ।
असो नु कमजरो वर्धाश्च विश्वेदेता सवना तूतुमा कृषे ५ १६०५
एता विश्वा सवना तूतुमा कृषे स्वयं सूनो सहसो यानि दधिषे ।
वराय ते पात्रं धर्मणे तना यज्ञो मन्त्रो ब्रह्मोद्यतं वचः ६
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा वसूनां च वसुनश्च दावने ।
प्र ते सुम्नस्य मनसा पथा भुवन् मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः ७ १६०७

॥ २३८ ॥ (ऋ० १०।५४।१-६)

(२६०८-२६२१) बृहदुक्थो वामदेव्यः । त्रिष्टुप् ।

तां सु ते कीर्तिं मघवन् महित्वा यत् त्वा भीते रोदसी अह्वयेताम् ।
प्रावो देवाँ आतिरो दासमोजः प्रजायै त्वस्यै यदशिक्ष इन्द्र १
यदचरस्तन्वा वावृधानो बलानीन्द्र प्रब्रुवाणो जनेषु ।
मायेत् सा ते यानि युद्धान्याहु-र्नाद्य शत्रुं ननु पुरा विवित्से २
क उ नु ते महिमनः समस्या-ऽस्मत् पूर्व ऋषयोऽन्तमापुः ।
यन्मातरं च पितरं च साक-मजनयथास्तन्वः स्वायाः ३ २६१०
चत्वारि ते असुर्याणि नामा-ऽदाभ्यानि महिषस्य सन्ति ।
त्वमङ्ग तानि विश्वानि वित्से येभिः कर्माणि मघवञ्चकर्थ ४
त्वं विश्वा दधिषे केवलानि यान्याविर्या च गुहा वसूनि ।
काममिन्मे मघवन् मा वि तारी-स्त्वमाज्ञाता त्वमिन्द्रासि दाता ५
यो अदधाज्ज्योतिषि ज्योतिरन्त-र्यो असृजन्मधुना सं मधूनि ।
अध प्रियं शूषमिन्द्राय मन्म ब्रह्मकृतो बृहदुक्थादवाचि ६

॥ २३९ ॥ (ऋ० १०।५५।१-८)

दूरे तन्नाम गुह्यं पराचै-र्यत् त्वा भीते अह्वयेतां वयोधै ।
उदस्तभ्नाः पृथिवीं द्यामभीके भ्रातुः पुत्रान् मघवन् तित्विषाणः १
महत् तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृग् येन भूतं जनयो येन भव्यम् ।
प्रत्नं जातं ज्योतिर्यदस्य प्रियं प्रियाः समविशन्त पञ्च २ २६१५
आ रोदसी अपृणादोत मध्यं पञ्च देवाँ ऋतुशः सप्तसप्त ।
चतुस्त्रिंशता पुरुधा वि चष्टे सरूपेण ज्योतिषा विव्रतेन ३
यदुष औच्छः प्रथमा विभाना-मजनयो येन पुष्टस्य पुष्टम् ।
यत् ते जामित्वमवरं परस्या महन्महत्या असुरत्वमेकम् ४
विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार ।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वा ऽद्या ममार स ह्यः समान ५
शाक्मना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः सनादनीळः ।
यच्चिकेत सत्यमित् तन्न मोघं वसु स्पार्हमुत जेतोत दाता ६
ऐभिर्ददे वृष्ण्या पौंस्यानि येभिरौक्षद् वृत्रहत्याय वज्री ।
ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्न ऋतेकर्ममुदजायन्त देवाः ७ २६२०

युजा कर्माणि जनयन् विश्वौजा अशस्तिहा विश्वमनास्तुराषाट् ।
पीत्वी सोमस्य दिव आ वृधानः शूरो निर्युधाधमद् दस्यून् ८ २६११

॥ २४० ॥ (ऋ० १०।६०।५) (२६२२) बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः गायत्री ।

इन्द्र क्षत्रासमातिषु रथप्रोष्ठेषु धारय । दिवीव सूर्यं दृशे ५ २६२२

॥ २४१ ॥ (ऋ० १०।७३।१-११)

(२६२३-२६३९) गौरिवीतिः शाक्त्यः । त्रिष्टुप् ।

जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः ।
अवर्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं दधनद्धनिष्ठा १
द्रुहो निषत्ता पृशनी चिदेवैः पुरू शंसेन वावृधुष्ट इन्द्रम् ।
अभीवृतेव ता महापदेन ध्वान्तात् प्रपित्वादुदरन्त गर्भाः २
ऋष्वा ते पादा प्र यज्जिगा- स्यवर्धन् वाजा उत ये चिदत्र ।
त्वमिन्द्र सालावृकान्त्सहस्र- मासन् दधिषे अश्विना ववृत्याः ३ २६२५
समना तूर्णिरुप यासि यज्ञ- मा नासत्या सख्याय वक्षि ।
वसाव्यामिन्द्र धारयः सहस्रा ऽश्विना शूर ददतुर्मघानि ४
मन्दमान ऋतादधि प्रजायै सखिभिरिन्द्र इषिरेभिरर्थम् ।
आभिर्हि माया उप दस्युमागा- न्मिहः प्र तम्रा अवपत् तमांसि ५
सनामाना चिद् ध्वसयो न्यस्मा अवाहन्निन्द्र उषसो यथानः ।
ऋष्वैरगच्छः सखिभिर्निकामैः साकं प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ ६
त्वं जघन्थ नमुचिं मखस्युं दासं कृण्वान ऋषये विमायम् ।
त्वं चकर्थ मनवे स्योनान् पथो देवत्राञ्जसेव यानान् ७
त्वमेतानि पप्रिषे वि नामे- शान इन्द्र दधिषे गभस्तौ ।
अनु त्वा देवाः शवसा मद- न्त्युपरिबुध्नान् वनिनश्चकर्थ ८ २६३०
चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्त- मुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् ।
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु ९
अश्वादियायेति यद्वद- न्त्योजसो जातमुत मन्य एनम् ।
मन्योरियाय हर्म्येषु तस्थौ यतः प्रजज्ञ इन्द्रो अस्य वेद १०
वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षु- र्मुमुग्ध्यस्मान् निधयेव बद्धान् ११

॥ २४२ ॥ (ऋ० १०।७४।१-६)

वसूनां वा चर्कृष इयक्षन् धिया वा यज्ञैर्वा रोदस्योः ।
अर्वन्तो वा ये रयिमन्तः सातौ वनुं वा ये सुश्रुणं सुश्रुतो धुः १
हव एषामसुरो नक्षत द्यां श्रवस्यता मनसा निंसत क्षाम् ।
चक्षाणा यत्र सुविताय देवा द्यौर्न वारेभिः कृणवन्त स्वैः २ २६३५
इयमेषाममृतानां गीः सर्वताता ये कृपणन्त रत्नम् ।
धियं च यज्ञं च साधन्त—स्ते नो धान्तु वसव्य१मसामि ३
आ तत् त इन्द्रायवः पनन्ता—ऽभि य ऊर्वं गोमन्तं तितृत्सान् ।
सकृत्स्वं१ ये पुरुपुत्रां महीं सहस्रधारां बृहतीं दुदुक्षन् ४
शचीव इन्द्रमवसे कृणुध्व—मनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ।
ऋभुक्षणं मघवानं सुवृक्तिं भर्ता यो वज्रं नर्यं पुरुक्षुः ५
यद्वावान पुरुतमं पुराषा—ळा वृत्रहेन्द्रो नामान्यप्राः ।
अचेति प्रासहस्पतिस्तुविष्मान् यदीमुश्मसि कर्तवे करत् तत् ६ २६३९

॥ २४३ ॥ (ऋ० १०।८६।१-२३)

(२६४०-२६६२) इन्द्रः; ७, १३, २३ ऐन्द्रो वृषाकपिः; २-६, ९-१०, १५-१८ इन्द्राणी। पङ्क्तिः।

वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत ।
यत्रामदद् वृषाकपि—रर्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १ २६४०
परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः ।
नो अह प्र विन्द—स्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २
किमयं त्वां वृषाकपि—श्चकार हरितो मृगः ।
यस्मा इरस्यसीदु न्व१र्यो वा पुष्टिमद्वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ३
यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि ।
श्वा न्वस्य जम्भिष—दपि कर्णे वराहयु—र्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ४
प्रिया तष्टानि मे कपि—र्व्यक्ता व्यदूदुषत् ।
शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ५
न मत् स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत् ।
न मत् प्रतिच्यवीयसी न सक्थ्युद्यमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ६ २६४५
उवे अम्ब सुलाभिके यथेवाङ्ग भविष्यति ।
भसन्मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीव हृष्यति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ७

किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुष्टो पृथुजाघने ।
किं शूरपत्नि नस्त्व- मभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ८
अवीरामिव मामयं शरारुरभि मन्यते ।
उताहमस्मि वीरिणी- न्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ९
संहोत्रं स्म पुरा नारी समनं वाव गच्छति ।
वेधा ऋतस्य वीरिणी- न्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १०
इंद्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम् ।
नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पति- र्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ११ १६५०
नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते ।
यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १२
वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्नुषे ।
घसत् त इंद्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हवि- र्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १३
उक्ष्णो हि मे पञ्चदश साकं पचंति विंशतिम् ।
उताहमद्मि पीव इ- दुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १४
वृषभो न तिग्मशृङ्गो ऽन्तर्यूथेषु रोरुवत् ।
मंथस्त इंद्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयु- र्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १५
न सेशे यस्य रम्बते ऽन्तरा सक्थ्या३ कपृत् ।
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १६ १६५१
न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते ।
सेदीशे यस्य रम्बते ऽन्तरा सक्थ्या३ कपृद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १७
अयमिन्द्र वृषाकपिः परस्वन्तं हतं विदत् ।
असिं सूनां नवं चरु- मादेधस्यान आचितं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १८
अयमेमि विचाकशद् विचिन्वन् दासमार्यम् ।
पिबामि पाकसुत्वनो ऽभि धीरमचाकशं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १९
धन्व च यत् कृन्तत्रं च कति स्वित् ता वि योजना ।
नेदीयसो वृषाकपे ऽस्तमेहि गृहाँ उप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २०
पुनरेहि वृषाकपे सुविता कल्पयावहै ।
य एष स्वप्ननंशनो ऽस्तमेषि पथा पुन- र्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २१ १६६०

यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन ।
क्व१ स्य पुल्वघो मृगः कमगञ्जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २२
पर्शुर्ह नाम मानवी साकं ससूव विंशतिम् ।
भद्रं भल त्यस्या अभूद् यस्या उदरमामयद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २३ २६६२

॥ २४४ ॥ (२६६३-२६७९) (ऋ० १०।८९।१-४, ६-१८) रेणुर्वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं स्तवा नृतमं यस्य मह्ना विबबाधे रोचना वि ज्मो अन्तान् ।
आ यः पप्रौ चर्षणीधृद्वरोभिः प्र सिन्धुभ्यो रिरिचानो महित्वा १
स सूर्यः पर्युरू वरांस्येन्द्रो ववृत्याद्रथ्येव चक्रा ।
अतिष्ठन्तमपस्यं१ न सर्गं कृष्णा तमांसि त्विष्या जघान २
समानमस्मा अनपावृदर्च क्ष्मया दिवो असमं ब्रह्म नव्यम् ।
वि यः पृष्ठेव जनिमान्यर्य इन्द्रश्चिकाय न सखायमीषे ३ २६६५
इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रेरयं सगरस्य बुध्नात् ।
यो अक्षेणेव चक्रिया शचीभिर्विष्वक् तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ४
न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं नाद्रयः सोमो अक्षाः ।
यदस्य मन्युरधिनीयमानः शृणाति वीळु रुजति स्थिराणि ६
जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदन्न सिन्धून् ।
बिभेद गिरिं नवमिन्न कुम्भमा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः ७
त्वं ह त्यदृणया इन्द्र धीरोऽसिर्न पर्व वृजिना शृणासि ।
प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जना मिनन्ति मित्रम् ८
प्र ये मित्रं प्रार्यमणं दुरेवाः प्र संगिरः प्र वरुणं मिनन्ति ।
न्य१मित्रेषु वधमिन्द्र तुम्रं वृषन् वृषाणमरुषं शिशीहि ९ २६७०
इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्या इन्द्रो अपामिन्द्र इत् पर्वतानाम् ।
इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिराणामिन्द्रः क्षेमे योगे हव्य इन्द्रः १०
प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः प्रान्तरिक्षात् प्र समुद्रस्य धासेः ।
प्र वातस्य प्रथसः प्र ज्मो अन्तात् प्र सिन्धुभ्यो रिरिचे प्र क्षितिभ्यः ११
प्र शोशुचत्या उषसो न केतुरसिन्वा ते वर्ततामिन्द्र हेतिः ।
अश्मेव विध्य दिव आ सृजानस्तपिष्ठेन हेषसा द्रोघमित्रान् १२
अन्वह मासा अन्विद्वनान्यन्वोषधीरनु पर्वतासः ।
अन्विन्द्रं रोदसी वावशाने अन्वापो अजिहत जायमानम् १३

कर्हि स्वित् सा त इन्द्र चेत्यास—दघस्य यद् भिनदो रक्ष एषत् ।
मित्रक्रुवो यच्छसने न गावः पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते १४ २६७५
शत्रूयन्तो अभि ये नस्ततस्रे महि व्राधन्त ओगणास इन्द्र ।
अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्तां सुज्योतिषो अक्तवस्ताँ अभि ष्युः १५
पुरूणि हि त्वा सवना जनानां ब्रह्माणि मन्दन् गृणतामृषीणाम् ।
इमामाघोषन्नवसा सहूतिं तिरो विश्वाँ अर्चतो याह्यर्वाङ् १६
एवा ते वयमिन्द्र भुञ्जतीनां विद्याम सुमतीनां नवानाम् ।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विश्वामित्रा उत त इन्द्र नूनम् १७
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् १८ २६७९

॥२४५॥ (ऋ० १०।९९।१-१२) (२६८०-२६९१) वम्रो वैखानसः ।

कं नश्चित्रमिषण्यसि चिकित्वान् पृथुग्मानं वाश्रं वावृधध्यै ।
कत् तस्य दातु शवसो व्युष्टौ तक्षद्वज्रं वृत्रतुरमपिन्वत् १ २६८०
स हि द्युता विद्युता वेति साम पृथुं योनिमसुरत्वा ससाद ।
स सनीळेभिः प्रसहानो अस्य भ्रातुर्न ऋते सप्तथस्य मायाः २
स वाजं यातापदुष्पदा यन् त्स्वर्षाता परि षदत् सनिष्यन् ।
अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो घ्नञ्छिश्नदेवाँ अभि वर्पसा भूत् ३
स यह्व्यो३ऽवनीर्गोष्वर्वा ऽऽजुहोति प्रधन्यासु सस्रिः ।
अपादो यत्र युज्यासोऽरथा द्रोण्यश्वास ईरते घृतं वाः ४
स रुद्रेभिरशस्तवार ऋभ्वा हित्वी गयमारेअवद्य आगात् ।
वम्रस्य मन्ये मिथुना विवव्री अन्नमभीत्यारोदयन्मुषायन् ५
स इद् दासं तुवीरवं पतिर्दन् षळक्षं त्रिशीर्षाणं दमन्यत् ।
अस्य त्रितो न्वोजसा वृधानो विपा वराहमयोअग्रया हन् ६ २६८५
स द्रुह्वणे मनुष ऊर्ध्वसान आ साविषदर्शसानाय शरुम् ।
स नृतमो नहुषोऽस्मत् सुजातः पुरोऽभिनदर्हन् दस्युहत्ये ७
सो अभ्रियो न यवस उदन्यन् क्षयाय गातुं विदन्नो अस्मे ।
उप यत् सीददिन्दुं शरीरैः श्येनोऽयोपाष्टिर्हन्ति दस्यून् ८
स व्राधतः शवसानेभिरस्य कुत्साय शुष्णं कृपणे परादात् ।
अयं कविमनयच्छस्यमान—मत्कं यो अस्य सनितोत नृणाम् ९

अयं दशस्यन् नर्येभिरस्य दस्मो देवेभिर्वरुणो न मायी ।
अयं कनीन ऋतुपा अवेद्यमिमीताररुं यश्चतुष्पात् १०
अस्य स्तोमेभिरौशिज ऋजिश्वा व्रजं दरयद् वृषभेण पिप्रोः ।
सुत्वा यद् यजतो दीदयद्गीः पुर इयानो अभि वर्पसा भूत् ११ २६९०
एवा महो असुर वक्षथाय वम्रकः पड्भिरुप सर्पदिन्द्रम् ।
स इयानः करति स्वस्तिमस्मा इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः १२ २६९१

॥ २४६ ॥ (ऋ० १०।१०३।१-३,५-११,१३)

(२६९२-२७०२) ऐन्द्रोऽप्रतिरथः । [१२ मरुतो वा] । त्रिष्टुप्, १२ अनुष्टुप् ।

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः १
संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
तदिन्द्रेण जयत तत् सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा २
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन ।
संसृष्टजित् सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ३
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ५ २६९५
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
इमं सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ६
अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।
दुश्च्यवनः पृतनाषाळयुध्योऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु ७
इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ८
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम् ।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ९
उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत् सत्वनां मामकानां मनांसि ।
उद्वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः १० २७००
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु ११

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवो ऽनाधृष्या यथासथ १३ २७०२

॥ २४७ ॥ (ऋ० १०।१०४।१-११)

(२७०३-२७१३) अष्टको वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

असावि सोमः पुरुहूत तुभ्यं हरिभ्यां यज्ञमुप याहि तूयम् ।
तुभ्यं गिरो विप्रवीरा इयाना दधन्विर इन्द्र पिबा सुतस्य १
अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व ।
मिमिक्षुर्यमद्रय इंद्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्थवाहः २
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम् ।
इंद्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः ३ २७०५
ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिज ऋतज्ञाः ।
प्रजावदिन्द्र मनुषो दुरोणे तस्थुर्गृणंतः सधमाद्यासः ४
प्रणीतिभिष्टे हर्यश्व सुष्टोः सुषुम्नस्य पुरुरुचो जनासः ।
मंहिष्ठामूतिं वितिरे दधानाः स्तोतार इंद्र तव सूनृताभिः ५
उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि पीतये सुतस्य ।
इंद्र त्वा यज्ञः क्षममाणमानड् दाश्वाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ६
सहस्रवाजमभिमातिषाहं सुतेरणं मघवानं सुवृक्तिम् ।
उप भूषन्ति गिरो अप्रतीत-मिन्द्रं नमस्या जरितुः पनन्त ७
सप्तापो देवीः सुरणा अमृक्ता याभिः सिन्धुमतर इन्द्र पूर्भित् ।
नवतिं स्रोत्या नव च स्रवन्ती-र्देवेभ्यो गातुं मनुषे च विन्दः ८ २७१०
अपो महीरभिशस्तेरमुञ्चो ऽजागरास्वधि देव एकः ।
इंद्र यास्त्वं वृत्रतूर्ये चकर्थ ताभिर्विश्वायुस्तन्वं पुपुष्याः ९
वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः सुशस्ति-रुतापि धेना पुरुहूतमीट्टे ।
आर्दयद् वृत्रमकृणोदु लोकं ससाहे शक्रः पृतना अभिष्टिः १०
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र-मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ११ २७१३

॥ २४८ ॥ (ऋ० १०।१०५।१-११)

(२७१४-२७२४) कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा । उष्णिक्; १ गायत्री वा; २, ७ पिपीलिकमध्या; ११ त्रिष्टुप् ।

कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आव श्मशा रुधद्वाः । दीर्घं सुतं वाताप्याय १

हरी यस्य सुयुजा विव्रता वेरर्वन्तानु शेपा । उभा रजी न केशिना पतिर्दन् २ २७१५
अप योरिन्द्रः पापज आ मर्तो न शश्रमाणो बिभीवान् । शुभे यद्युयुजे तविषीवान् ३
सचायोरिन्द्रश्चर्कृष आँ उपानसः सपर्यन् । नदयोर्विव्रतयोः शूर इन्द्रः ४
अधि यस्तस्थौ केशवन्ता व्यचस्वन्ता न पुष्ट्यै । वनोति शिप्राभ्यां शिप्रिणीवान् ५
प्रास्तौदृष्वौजा ऋष्वेभिस्ततक्ष शूरः शवसा । ऋभुर्न क्रतुभिर्मातरिश्वा ६
वज्रं यश्चक्रे सुहनाय दस्यवे हिरीमशो हिरीमान् । अरुतहनुरद्भुतं न रजः ७ २७२०
अव नो वृजिना शिशीह्यृचा वनेमानृचः । नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे ८
ऊर्ध्वा यत् ते त्रेतिनी भूद् यज्ञस्य धूर्षु सद्मन् । सजूर्नावं स्वयशसं सचायोः ९
श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी भूच्छ्रिये दर्विररेपाः । यया स्वे पात्रे सिञ्चस उत् १०
शतं वा यदसुर्य प्रति त्वा सुमित्र इत्थास्तौद् दुर्मित्र इत्थास्तौत् ।
आवो यद्दस्युहत्ये कुत्सपुत्रं प्रावो यद्दस्युहत्ये कुत्सवत्सम् ११ २७२४

॥ २४९ ॥ (ऋ० १०।१११।१-१०)

(२७२५-२७३४) वैरूपोऽष्टादंष्ट्रः । त्रिष्टुप् ।

मनीषिणः प्र भरध्वं मनीषां यथायथा मतयः सन्ति नृणाम् ।
इन्द्रं सत्यैरेरयामा कृतेभिः स हि वीरो गिर्वणस्युर्विदानः १ २७२५
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत् सं गार्ष्टेयो वृषभो गोभिरानट् ।
उदतिष्ठत् तविषेणा रवेण महान्ति चित् सं विव्याचा रजांसि २
इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य वेद स हि जिष्णुः पथिकृत् सूर्याय ।
आन्मेनां कृण्वन्नच्युतो भुवद्गोः पतिर्दिवः सनजा अप्रतीतः ३
इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य व्रतामिनादङ्गिरोभिर्गृणानः ।
पुरूणि चिन्नि तताना रजांसि दाधार यो धरुणं सत्यताता ४
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं पृथिव्या विश्वा वेद सवना हन्ति शुष्णम् ।
महीं चिद् द्यामातनोत् सूर्येण चास्कम्भ चित् कम्भनेन स्कभीयान् ५
वज्रेण हि वृत्रहा वृत्रमस्तरदेवस्य शूशुवानस्य मायाः ।
वि धृष्णो अत्र धृषता जघन्थाथाभवो मघवन् बाह्वोजाः ६ २७३०
सचन्त यदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो रामविन्दन् ।
आ यन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो नकिरद्धा नु वेद ७
दूरं किल प्रथमा जग्मुरासामिन्द्रस्य याः प्रसवे सस्रुरापः ।
क्व स्विदग्रं क्व बुध्न आसामापो मध्यं क्व वो नूनमन्तः ८

सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानाँ आदिदेताः प्र विविज्रे जवेन ।
मुमुक्षमाणा उत या मुमुच्रे ऽधेदेता न रमन्ते नितिक्ताः ९
सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन् त्सनाज्जार आरितः पूर्भिदासाम् ।
अस्तमा ते पार्थिवा वसून्यस्मे जग्मुः सूनृता इन्द्र पूर्वीः १० १७३४

॥ १५० ॥ (ऋ० १०।११२।१-१०) (१७३५-१७४४) वैरूपो नभःप्रभेदनः ।

इन्द्र पिब प्रतिकामं सुतस्य प्रातःसावस्तव हि पूर्वपीतिः ।
हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रूनुक्थेभिष्टे वीर्या प्र ब्रवाम १ १७३५
यस्ते रथो मनसो जवीयानेन्द्र तेन सोमपेयाय याहि ।
तूयमा ते हरयः प्र द्रवन्तु येभिर्यासि वृषभिर्मन्दमानः २
हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य श्रेष्ठै रूपैस्तन्वं स्पर्शयस्व ।
अस्माभिरिन्द्र सखिभिर्हुवानः सध्रीचीनो मादयस्वा निषद्य ३
यस्य त्यत् ते महिमानं मदेष्विमे मही रोदसी नाविविक्ताम् ।
तदोक आ हरिभिरिन्द्र युक्तैः प्रियेभिर्याहि प्रियमन्नमच्छ ४
यस्य शश्वत् पपिवाँ इन्द्र शत्रूननानुकृत्या रण्या चकर्थ ।
स ते पुरंधिं तविषीमियर्ति स ते मदाय सुत इन्द्र सोमः ५
इदं ते पात्रं सनवित्तमिन्द्र पिबा सोममेना शतक्रतो ।
पूर्ण आहावो मदिरस्य मध्वो यं विश्व इदभिहर्यन्ति देवाः ६ १७४०
वि हि त्वामिन्द्र पुरुधा जनासो हितप्रयसो वृषभ ह्वयन्ते ।
अस्माकं ते मधुमत्तमानीमा भुवन्त्सवना तेषु हर्य ७
प्र त इन्द्र पूर्व्याणि प्र नूनं वीर्या वोचं प्रथमा कृतानि ।
सतीनमन्युरश्रथायो अद्रिं सुवेदनामकृणोर्ब्रह्मणे गाम् ८
नि षु सीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम् ।
न ऋते त्वत् क्रियते किं चनारे महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च ९
अभिख्या नो मघवन् नाधमानान् त्सखे बोधि वसुपते सखीनाम् ।
रणं कृधि रणकृत् सत्यशुष्मा ऽभक्ते चिदा भजा राये अस्मान् १० १७४४

॥ १५१ ॥ (ऋ० १०।११३।१-१०) (१७४५-१७५४) वैरूपः शतप्रभेदनः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

तमस्य द्यावापृथिवी सचेतसा विश्वेभिर्देवैरनु शुष्ममावताम् ।
यदैत् कृण्वानो महिमानमिन्द्रियं पीत्वी सोमस्य क्रतुमाँ अवर्धत १ १७४५

तमस्य विष्णुर्महिमानमोजसां—ऽशुं दधन्वान् मधुनो वि रप्शते ।
देवेभिरिन्द्रो मघवा सयावभि—र्वृत्रं जघन्वाँ अभवद् वरेण्यः २
वृत्रेण यदहिना बिभ्रदायुधा समस्थिथा युधये शंसमाविदे ।
विश्वे ते अत्र मरुतः सह त्मना ऽवर्धन्नुग्र महिमानमिन्द्रियम् ३
जज्ञान एव व्यबाधत स्पृधः प्रापश्यद् वीरो अभि पौंस्यं रणम् ।
अवृश्चदद्रिमव सस्यदः सृज—दस्तभ्नान्नाकं स्वपस्यया पृथुम् ४
आदिन्द्रः सत्रा तविषीरपत्यत वरीयो द्यावापृथिवी अबाधत ।
अवाभरद्धृषितो वज्रमायसं शेवं मित्राय वरुणाय दाशुषे ५
इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो विरप्शिन ऋघायतो अरंहयन्त मन्यवे ।
वृत्रं यदुग्रो व्यवृश्चदोजसा ऽपो बिभ्रतं तमसा परीवृतम ६ १७५०
या वीर्याणि प्रथमानि कर्त्वा महित्वेभिर्यतमानौ समीयतुः ।
ध्वान्तं तमोऽव दध्वसे हत इन्द्रो मह्ना पूर्वहूतावपत्यत ७
विश्वे देवासो अध वृष्ण्यानि ते ऽवर्धयन्त्सोमवत्या वचस्यया ।
रथं वृत्रमहिमिन्द्रस्य हन्मना ऽग्निर्न जम्भैस्तृष्वन्नमावयत् ८
भूरि दक्षेभिर्वचनेभिर्ऋक्वभिः सख्येभिः सख्यानि प्र वोचत ।
इन्द्रो धुनिं च चुमुरिं च दम्भयं—छ्रद्धामनस्या शृणुते दभीतये ९
त्वं पुरूण्या भरा स्वश्व्या येभिर्मंसै निवचनानि शंसन् ।
सुगेभिर्विश्वा दुरिता तरेम विदो षु ण उर्विया गाधमद्य १० १७५४

॥ २५१ ॥ (ऋ० १०।११६।१-९)

(१७५५-१७६३) स्थौरोऽग्नियुतः स्थौरोऽग्नियूपो वा । त्रिष्टुप् ।

पिबा सोमं महत इन्द्रियाय पिबा वृत्राय हन्तवे शविष्ठ ।
पिब राये शवसे हूयमानः पिब मध्वस्तृपदिन्द्रा वृषस्व १ १७५५
अस्य पिब क्षुमतः प्रस्थितस्ये—न्द्र सोमस्य वरमा सुतस्य ।
स्वस्तिदा मनसा मादयस्वा—ऽर्वाचीनो रेवते सौभगाय २
ममत्तु त्वा दिव्यः सोम इन्द्र ममत्तु यः सूयते पार्थिवेषु ।
ममत्तु येन वरिवश्चकर्थ ममत्तु येन निरिणासि शत्रून् ३
आ द्विबर्हा अमिनो यात्विन्द्रो वृषा हरिभ्यां परिषिक्तमन्धः ।
गव्या सुतस्य प्रभृतस्य मध्वः सत्रा खेदामरुशहा वृषस्व ४

नि तिग्मानि भ्राशयन् भ्राश्या—न्यव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् ।
उग्राय ते सहो बलं ददामि प्रतीत्या शत्रून् विगदेषु वृश्च ५
व्यर्य इन्द्र तनुहि श्रवांस्यो—जः स्थिरेव धन्वनोऽभिमातीः ।
अस्मद्र्यग्वावृधानः सहोभि—रनिभृष्टस्तन्वं वावृधस्व ६ २७६०
इदं हविर्मघवन् तुभ्यं रातं प्रति सम्राळहृणानो गृभाय ।
तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पक्वो३ ऽद्धीन्द्र पिब च प्रस्थितस्य ७
अद्धीदिन्द्र प्रस्थितेमा हवींषि चनो दधिष्व पचतोत सोमम् ।
प्रयस्वन्तः प्रति हर्यामसि त्वा सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ८
प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्यामियर्मि सिंधाविव प्रेरयं नावमर्कैः ।
अया इव परि चरन्ति देवा ये अस्मभ्यं धनदा उद्भिदश्च ९ २७६३

॥ २५३ ॥ (ऋ० १०।१२०।१-९)

(२७६४-२७७२) आथर्वणो बृहद्दिवः ।

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः ।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रू—ननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः १
वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति ।
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु २ २७६५
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः ।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा स—मदः सु मधु मधुनाभि योधीः ३
इति चिद्धि त्वा धना जयन्तं मदेमदे अनुमदन्ति विप्राः ।
ओजीयो धृष्णो स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन् यातुधाना दुरेवाः ४
त्वया वयं शाशद्महे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि ।
चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि ५
स्तुषेय्यं पुरुवर्पसमृभ्व—मिनतममाप्त्यमाप्त्यानाम् ।
आ दर्षते शवसा सप्त दानून् प्र साक्षते प्रतिमानानि भूरि ६
नि तद्दधिषेऽवरं परं च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे ।
आ मातरा स्थापयसे जिगत्नू अत इनोषि कर्वरा पुरूणि ७ २७७०
इमा ब्रह्म बृहद्दिवो विवक्ती—न्द्राय शूषमग्रियः स्वर्षाः ।
महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजो दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ८

एवा महान् बृहद्दिवो अथर्वा ऽवोचत् स्वां तन्व१मिन्द्रमेव ।
स्वसारो मातरिभ्वरीररिप्रा हिन्वन्ति च शवसा वर्धयन्ति च ९ २७७२

॥ २५४ ॥ (ऋ० १०।१३१।१-३,६-७) (२७७३-२७७७) सुकीर्तिः काक्षीवतः ।

अप प्राच इन्द्र विश्वाँ अमित्रा—नपापाचो अभिभूते नुदस्व ।
अपोदीचो अप शूराधराच उरौ यथा तव शर्मन् मदेम १
कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः २
नहि स्थूर्यृतुथा यातमस्ति नोत श्रवो विविदे संगमेषु ।
गव्यन्त इंद्रं सख्याय विप्रा अश्वायंतो वृषणं वाजयन्तः ३ २७७५
इंद्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः ।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ६
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्या—ऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ।
स सुत्रामा स्ववाँ इंद्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु ७ २७७७

॥ २५५ ॥ (१०।१३३।१-७)

(२७७८-२७८४) सुदाः पैजवनः । शक्करी, ४-६ महापङ्क्तिः, ७ त्रिष्टुप् ।

प्रो ष्वस्मै पुरोरथ—मिन्द्राय शूषमर्चत ।
अभीके चिदु लोककृत् संगे समत्सु वृत्रहा ऽस्माकं बोधि चोदिता
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु १
त्वं सिंधूँरवासृजो ऽधराचो अहन्नहिम् ।
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे
नभंतामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु २
वि षु विश्वा अरातयो ऽर्यो नशंत नो धियः ।
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इंद्र जिघांसति या ते रातिर्ददिर्वसु
नभंतामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ३ २७८०
यो न इंद्राभितो जनो वृकायुरादिदेशति ।
अधस्पदं तमीं कृधि विबाधो असि सासहि—र्नभंतामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ४
यो न इंद्राभिदासति सनाभिर्यश्च निष्ट्यः ।
अव तस्य बलं तिर महीव द्यौरध त्मना नभंतामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ५

वयमिन्द्र त्वायवः सखित्वमा रभामहे ।
ऋतस्य नः पथा नया ऽति विश्वानि दुरिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ६
अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र तां शिक्ष या दोहते प्रति वरं जरित्रे ।
अच्छिद्रोध्नी पीपयद् यथा नः सहस्रधारा पयसा मही गौः ७ २७८४

॥ २५६ ॥ (ऋ० १०।१३४।१-७)

(२७८५-२७९१) १-६ (पूर्वार्धस्य) मान्धाता यौवनाश्वः, ६ (उत्तरार्धस्य)-७ गोधा ऋषिका । महापङ्क्तिः, ७ पंक्तिः ।

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव ।
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनां देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् १ २७८५
अव स्म दुर्हणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम् ।
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ आदिदेशति देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् २
अव त्या बृहतीरिषो विश्वश्चन्द्रा अमित्रहन् ।
शचीभिः शक्र धूनुही न्द्र विश्वाभिरूतिभि र्देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ३
अव यत् त्वं शतक्रत विन्द्र विश्वानि धूनुषे ।
रयिं न सुन्वते सचा सहस्रिणीभिरूतिभि र्देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ४
अव स्वेदा इवाभितो विष्वक् पतन्तु दिद्यवः ।
दूर्वाया इव तन्तवो व्य१स्मदेतु दुर्मति र्देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ५
दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः ।
पूर्वेण मघवन् पदा ऽजो वयां यथा यमो देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ६ २७९०
नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ।
पक्षेभिरपिकक्षेभि रत्राभि सं रभामहे ७ २७९१

॥ २५७ ॥ (ऋ० १०।१३८।१-६) (२७९२-२७९७) अङ्ग औरवः । जगती ।

तव त्य इन्द्र सख्येषु वह्नय ऋतं मन्वाना व्यदर्दिरुर्वलम् ।
यत्रा दशस्यन्नुषसो रिणन्नपः कुत्साय मन्मन्नह्यश्च दंसयः १
अवासृजः प्रस्वः श्वञ्चयो गिरी नुदाज उस्रा अपिबो मधु प्रियम् ।
अवर्धयो वनिनो अस्य दंससा शुशोच सूर्य ऋतजातया गिरा २
वि सूर्यो मध्ये अमुचद् रथं दिवो विदद् दासाय प्रतिमानमार्यः ।
दृळ्हानि पिप्रोरसुरस्य मायिन इन्द्रो व्यास्यच्चकृवाँ ऋजिश्वना ३

अनाधृष्टानि धृषितो व्यास्यन्निधीँरदेवाँ अमृणदयास्यः ।
मासेव सूर्यो वसु पुर्यमा ददे गृणानः शत्रूँरशृणाद्विरुक्मता ४ २७९५
अयुद्धसेनो विभ्वा विभिंदता दाशद् वृत्रहा तुज्यानि तेजते ।
इंद्रस्य वज्रादबिभेदभिश्नथः प्राक्रामच्छुन्ध्यूरजहादुषा अनः ५
एता त्या ते श्रुत्यानि केवला यदेक एकमकृणोरयज्ञम् ।
मासां विधानमदधा अधि द्यवि त्वया विभिन्नं भरति प्रधिं पिता ६ २७९७

॥ २५८ ॥ (ऋ० १०।१४४।१-६)

(२७९८-२८०३) तार्क्ष्यः सुपर्णः, यामायन ऊर्ध्वकृशनो वा।
गायत्री, १ बृहती, ५ सतोबृहती, ६ विष्टारपंक्तिः।

अयं हि ते अमर्त्य इंदुरत्यो न पत्यते । दक्षो विश्वायुर्वेधसे १
अयमस्मासु काव्य ऋभुर्वज्रो दास्वते ।
अयं बिभर्त्यूर्ध्वकृशनं मदमृभुर्न कृत्व्यं मदम् २
घृषुः श्येनाय कृत्वन आसु स्वासु वंसगः । अव दीधेदहीशुवः ३ २८००
यं सुपर्णः परावतः श्येनस्य पुत्र आभरत् । शतचक्रं योऽह्यो वर्तनिः ४
यं ते श्येनश्चारुमवृकं पदाभरदरुणं मानमन्धसः ।
एना वयो वि तार्यायुर्जीवस एना जागार बंधुता ५
एवा तदिन्द्र इंदुना देवेषु चिद्धारयाते महि त्यजः ।
क्रत्वा वयो वि तार्यायुः सुक्रतो क्रत्वायमस्मदा सुतः ६ २८०३

॥ २५९ ॥ (ऋ० १०।१४७।१-५)

(२८०४-२८०८) सुवेदाः शैरीषिः। जगती, ५ त्रिष्टुप्।

श्रत् ते दधामि प्रथमाय मन्यवेऽहन्यद् वृत्रं नर्यं विवेरपः ।
उभे यत् त्वा भवतो रोदसी अनु रेजते शुष्मात् पृथिवी चिदद्रिवः १
त्वं मायाभिरनवद्य मायिनं श्रवस्यता मनसा वृत्रमर्दयः ।
त्वामिन्नरो वृणते गविष्टिषु त्वां विश्वासु हव्यास्विष्टिषु २ २८०५
ऐषु चाकन्धि पुरुहूत सूरिषु वृधासो ये मघवन्नानशुर्मघम् ।
अर्चन्ति तोके तनये परिष्टिषु मेधसाता वाजिनमह्रये धने ३
स इन्नु रायः सुभृतस्य चाकनन्मदं यो अस्य रंह्यं चिकेतति ।
त्वावृधो मघवन् दाश्वध्वरो मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः ४
त्वं शर्धाय महिना गृणान उरु कृधि मघवञ्छग्धि रायः ।
त्वं नो मित्रो वरुणो न मायी पित्वो न दस्म दयसे विभक्ता ५ २८०८

॥ २६० ॥ (ऋ० १०।१४८।१-५) (२८०९-२८१३) पृथुर्वैन्यः । त्रिष्टुप् ।

सुष्वाणास इंद्र स्तुमसि त्वा ससवांसश्च तुविनृम्ण वाजम् ।
आ नो भर सुवितं यस्य चाकन् त्मना तना सनुयाम त्वोताः १
ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर जातो दासीर्विशः सूर्येण सह्याः ।
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु बिभृमसि प्रस्रवणे न सोमम् २ १८१०
अर्यो वा गिरो अभ्यर्च विद्वा—नृषीणां विप्रः सुमतिं चकानः ।
ते स्याम ये रणयन्त सोमै—रेनोत तुभ्यं रथोळ्ह भक्षैः ३
इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं शंसि दा नृभ्यो नृणां शूर शवः ।
तेभिर्भव सक्रतुर्येषु चाक—न्नुत त्रायस्व गृणत उत स्तीन् ४
श्रुधी हवमिन्द्र शूर पृथ्या उत स्तवसे वेन्यस्यार्कैः ।
आ यस्ते योनिं घृतवन्तमस्वा—रूर्मिर्न निम्नैर्द्रवयन्त वक्वाः ५ १८१३

॥ २६१ ॥ (ऋ० १०।१५२।१-५) (१८१४-१८१८) शासो भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

शास इत्था महाँ अस्य—मित्रखादो अद्भुतः ।
न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदा चन १
स्वस्तिदा विशस्पति—र्वृत्रहा विमृधो वशी ।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः २ १८१५
वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज ।
वि मन्युमिन्द्र वृत्रह—न्नमित्रस्याभिदासतः ३
वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।
यो अस्माँ अभिदास—त्यधरं गमया तमः ४
अपेन्द्र द्विषतो मनो ऽप जिज्यासतो वधम् ।
वि मन्योः शर्म यच्छ वरीयो यवया वधम् ५ १८१८

॥ २६२ ॥ (ऋ० १०।१५३।१-५) (२८१९-२८२३) देवजामय इन्द्रमातरः । गायत्री ।

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते । भेजानासः सुवीर्यम् १
त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः । त्वं वृषन् वृषेदसि २ १८२०
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमातिरः । उद् द्यामस्तभ्ना ओजसा ३
त्वमिन्द्र सजोषस—मर्कं बिभर्षि बाह्वोः । वज्रं शिशान ओजसा ४
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा । स विश्वा भुव आभवः ५ १८२३

॥ २६३ ॥ (१०।१६०।१-५) (२८२४-२८२८) पूरणो वैश्वामित्रः। त्रिष्टुप्।

तीव्रस्याभिवयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरी इह मुञ्च।
इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमन् तुभ्यमिमे सुतासः १
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वास स्त्वां गिरः श्वात्र्या आ ह्वयन्ति।
इन्द्रेदमद्य सवनं जुषाणो विश्वस्य विद्वाँ इह पाहि सोमम् २ २८२५
य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति।
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति ३
अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान् न सुनोति सोमम्।
निररत्नौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः ४
अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तवा उ।
आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम ५ २८२८

॥ २६४ ॥ (ऋ० १०।१६७।१-२, ४) (२८२९-२८३१) विश्वामित्र-जमदग्नी। जगती।

तुभ्येदमिन्द्र परि षिच्यते मधु त्वं सुतस्य कलशस्य राजसि।
त्वं रयिं पुरुवीरामु नस्कृधि त्वं तपः परितप्याजयः स्वः १
स्वर्जितं महि मन्दानमन्धसो हवामहे परि शक्रं सुताँ उप।
इमं नो यज्ञमिह बोध्या गहि स्पृधो जयन्तं मघवानमीमहे २ २८३०
प्रसूतो भक्षमकरं चरावपि स्तोमं चेमं प्रथमः सूरिरुन्मृजे।
सुते सातेन यद्यागमं वां प्रति विश्वामित्रजमदग्नी दमे ४ २८३१

॥ २६५ ॥ (ऋ० १०।१७१।१-४) (२८३२-२८३५) इटो भार्गवः। गायत्री।

त्वं त्यमिटतो रथ मिन्द्र प्रावः सुतावतः। अशृणोः सोमिनो हवम् १
त्वं मखस्य दोधतः शिरोऽव त्वचो भरः। अगच्छः सोमिनो गृहम् २
त्वं त्यमिंद्र मर्त्य मास्त्रबुध्नाय वेन्यम्। मुहुः श्रथा मनस्यवे ३
त्वं त्यमिंद्र सूर्यं पश्चा सन्तं पुरस्कृधि। देवानां चित् तिरो वशम् ४ २८३५

॥ २६६ ॥ (ऋ० १०।१७९।१-३)
(२८३६-२८३८) क्रमेण शिबिरौशीनरः, काशिराजः प्रतर्दनः, रौहिदश्वो वसुमनाः। त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप्।

उत् तिष्ठताव पश्यते न्द्रस्य भागमृत्वियम्।
यदि श्रातो जुहोतन यद्यश्रातो ममत्तन १
श्रातं हविरो ष्विंद्र प्र याहि जगाम सूरो अध्वनो विमध्यम्।
परि त्वासते निधिभिः सखायः कुलपा न व्राजपतिं चरन्तम् २

श्रातं मन्य ऊधनि श्रातमग्नौ सुश्रातं मन्ये तदृतं नवीयः ।
माध्यंदिनस्य सवनस्य दध्नः पिबेन्द्र वज्रिन् पुरुकृज्जुषाणः ३ १८३८

॥ २६७ ॥ (ऋ० १०।१८०।१-३) (१८३९-१८४१) जय ऐन्द्रः । त्रिष्टुप् ।

प्र ससाहिषे पुरुहूत शत्रू ञ्ज्येष्ठस्ते शुष्म इह रातिरस्तु ।
इंद्रा भर दक्षिणेना वसूनि पतिः सिन्धूनामसि रेवतीनाम् १
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः ।
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताळ्हि वि मृधो नुदस्व २ १८४०
इंद्र क्षत्रमभि वाममोजो ऽजायथा वृषभ चर्षणीनाम् ।
अपानुदो जनममित्रयन्त मुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम् ३ १८४१

॥ २६८ ॥ (ऋ० १०।४७।१-८) (१८४२-१८४९) सप्तगुरांगिरसः । [वैकुण्ठ इंद्रः] ।

जगृभ्मा ते दक्षिणमिंद्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम् ।
विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोना मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः १
स्वायुधं स्ववसं सुनीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम् ।
चर्कृत्यं शंस्यं भूरिवार मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः २
सुब्रह्माणं देववन्तं बृहन्त मुरुं गभीरं पृथुबुध्नमिन्द्र ।
श्रुतऋषिमुग्रमभिमातिषाह मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ३
सनद्वाजं विप्रवीरं तरुत्रं धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
दस्युहनं पूर्भिदमिन्द्र सत्य मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ४ १८४५
अश्वावंतं रथिनं वीरवन्तं सहस्रिणं शतिनं वाजमिन्द्र ।
भद्रव्रातं विप्रवीरं स्वर्षा मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ५
प्र सप्तगुमृतधीतिं सुमेधां बृहस्पतिं मतिरच्छा जिगाति ।
य आङ्गिरसो नमसोपसद्यो ऽस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ६
वनीवानो मम दूतास इंद्रं स्तोमाश्चरन्ति सुमतीरियानाः ।
हृदिस्पृशो मनसा वच्यमाना अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ७
यत् त्वा यामि दद्धि तन्न इंद्र बृहन्तं क्षयमसमं जनानाम् ।
अभि तद् द्यावापृथिवी गृणीता मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ८ १८४९

॥ २६९ ॥ (ऋ० १०।११९।१-१३)
(१८५०-१८६२) ऐन्द्रो लवः । [आत्मा (इन्द्रः)] । गायत्री ।

इति वा इति मे मनो गामश्वं सनुयामिति । कुवित् सोमस्यापामिति १ १८५०

प्र वाता इव दोधत उन्मा पीता अयंसत । कुवित् सोमस्यापामिति २
उन्मा पीता अयंसत रथमश्वा इवाशवः । कुवित् सोमस्यापामिति ३
उप मा मतिरस्थित वाश्रा पुत्रमिव प्रियम् । कुवित् सोमस्यापामिति ४
अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम् । कुवित् सोमस्यापामिति ५
नहि मे अक्षिपच्चना ऽच्छान्त्सुः पञ्च कृष्टयः । कुवित् सोमस्यापामिति ६ २८५९
नहि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन प्रति । कुवित् सोमस्यापामिति ७
अभि द्यां महिना भुव मभीऽमां पृथिवीं महीम् । कुवित् सोमस्यापामिति ८
हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा । कुवित् सोमस्यापामिति ९
ओषमित् पृथिवीमहं जङ्घनानीह वेह वा । कुवित् सोमस्यापामिति १०
दिवि मे अन्यः पक्षोऽ ऽधो अन्यमचीकृषम् । कुवित् सोमस्यापामिति ११ २८६०
अहमस्मि महामहो ऽभिनभ्यमुदीषितः । कुवित् सोमस्यापामिति १२
गृहो याम्यरंकृतो देवेभ्यो हव्यवाहनः । कुवित् सोमस्यापामिति १३ २८६१

॥ २७० ॥ (अथर्व० २।५।१-४)

(२८६३-२८६६) भृगुराथर्वणः। १ उपरिष्टान्निचृद्बृहती, २ उपरिष्टाद् विराड्बृहती,
३ विराट्पथ्या बृहती, ४ जगती पुरोविराट् ।

इंद्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिभ्याम् ।
पिबा सुतस्य मतेरिह मधोश्चकानश्चारुर्मदाय १
इंद्र जठरं नव्यो न पृणस्व मधोर्दिवो न ।
अस्य सुतस्य स्वर्णोप त्वा मदाः सुवाचो अगुः २
इंद्रस्तुराषाण्मित्रो वृत्रं यो जघान यतीर्न ।
बिभेद वलं भृगुर्न ससहे शत्रून्मदे सोमस्य ३ २८६५
आ त्वा विशन्तु सुतास इंद्र पृणस्व कुक्षी विड्ढि शक्र धियेह्या नः ।
श्रुधी हवं गिरो मे जुषस्वेन्द्र स्वयुग्भिर्मत्स्वेह महे रणाय ४ + २८६६

॥ २७१ ॥ (अथर्व० ४।२४।१-७)

(२८६७-२८७३) मृगारः । त्रिष्टुप्, १ शाक्करीगर्भा पुरःशाक्करी ।

इंद्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य मन्महे वृत्रघ्न स्तोमा उप मेम आगुः ।
यो दाशुषः सुकृतो हवमेति स नो मुञ्चत्वंहसः १
य उग्रीणामुग्रबाहुर्ययु र्यो दानवानां बलमारुरोज ।
येन जिताः सिंधवो येन गावः स नो मुञ्चत्वंहसः २

+ अथर्व० २।५।५-७; ऋ० १।३२।१-३; दै०सं० [इन्द्रः] ७१५-७१७; [२८६३-६६] अश्व० श्रौ०सू०पूर्व० ६।३

यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वर्विद् यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् ।
यस्याध्वरः सप्तहोता मदिष्ठः स नो मुञ्चत्वंहसः ३
यस्य वशास ऋषभास उक्षणो यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वर्विदे ।
यस्मै शुक्रः पवते ब्रह्मशुम्भितः स नो मुञ्चत्वंहसः ४ १८७०
यस्य जुष्टिं सोमिनः कामयन्ते यं हवन्त इषुमन्तं गविष्टौ ।
यस्मिन्नर्कः शिश्रिये यस्मिन्नोजः स नो मुञ्चत्वंहसः ५
यः प्रथमः कर्मकृत्याय जज्ञे यस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम् ।
येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायताहिं स नो मुञ्चत्वंहसः ६
यः संग्रामान्नयति सं युधे वशी यः पुष्टानि संसृजति द्वयानि ।
स्तोमीन्द्रं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः ७ १८७३

॥ २७२ ॥ (अथर्व० ५।२३।१-१३) (१८७४-१८८६) कण्वः । अनुष्टुप्, १३ विराट् ।

ओते मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती । ओतौ म इंद्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामिति १
अस्येंद्र कुमारस्य क्रिमीन्धनपते जहि । हता विश्वा अरातय उग्रेण वचसा मम २ १८७५
यो अक्ष्यौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति । दतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि ३
सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ । बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हताः ४
ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिबाहवः । ये के च विश्वरूपा स्तान्क्रिमीन्जम्भयामसि ५
उत्पुरस्तात्सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा । दृष्टांश्च घ्नन्नदृष्टांश्च सर्वांश्च प्रमृणन्क्रिमीन् + ६
येवाषासः कष्कषास एजत्काः शिपवित्नुकाः । दृष्टश्च हन्यतां क्रिमि रुतादृष्टश्च हन्यताम् ७ १८८०
हतो येवाषः क्रिमीणां हतो नदनिमोत । सर्वान्नि मष्मषाकरं दृषदा खल्वाँ इव ८
त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः ९
अत्रिवद्वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत् । अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन् १०
हतो राजा क्रिमीणा मुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमि र्हतभ्राता हतस्वसा ११
हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः । अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः १२ १८८५
सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् । भिनद्म्यश्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम् १३ १८८६

॥ २७३ ॥ (अथर्व० ६।३३।१-३) (१८८७-१८८९) जाटिकायनः । गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

यस्येदमा रजो युज स्तुजे जना वनं स्वः । इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् १
नाधृष आ दधृषते धृषाणो धृषितः शवः । पुरा यथा व्यथिः श्रव इन्द्रस्य नाधृषे शवः २
स नो ददातु तां रयि मुरुं पिशङ्गसंदृशम् । इन्द्रः पतिस्तुविष्टमो जनेष्वा ३ १८८९

+ ऋ० १।१९१।८

॥ २७४ ॥ (अथर्व० ६।६६।१-३) (२८९०-२८९५) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ त्रिष्टुप् ।

निर्हस्तः शत्रुरभिदासन्नस्तु ये सेनाभिर्युधमायन्त्यस्मान् ।
समर्पयेन्द्र महता वधेन द्रात्वेषामघहारो विविद्धः १ २८९०
आतन्वाना आयच्छन्तो ऽस्यन्तो ये च धावथ ।
निर्हस्ताः शत्रवः स्थने-न्द्रो वोऽद्य पराशरीत् २
निर्हस्ताः सन्तु शत्रवो ऽङ्गैषां म्लापयामसि ।
अथैषामिन्द्र वेदांसि शतशो वि भजामहै ३

॥ २७५ ॥ (अथर्व० ६।६७।१-३) अनुष्टुप् ।

परि वर्त्मानि सर्वत इन्द्रः पूषा च सस्रतुः । मुह्यन्त्वद्यामूः सेना अमित्राणां परस्तराम् १
मूढा अमित्राश्चरता-शीर्षाण इवाहयः । तेषां वो अग्निमूढाना-मिन्द्रो हन्तु वरंवरम् २
ऐषु नह्य वृषाजिनं हरिणस्या भियं कृधि । पराङमित्र एष-त्वर्वाची गौरुपेषतु ३ २८९५

॥ २७६ ॥ (अथर्व० ६।७५।१-३) (२८९६-२८९८) कबन्धः । अनुष्टुप्, ३ षट्पदा जगती ।

निरमुं नुद ओकसः सपत्नो यः पृतन्यति । नैर्बाध्येन हविषे-न्द्र एनं पराशरीत् १
परमां तं परावत-मिन्द्रो नुदतु वृत्रहा । यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्यः २
एतु तिस्रः परावत एतु पञ्च जनाँ अति ।
एतु तिस्रोऽति रोचना यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्यो यावत्सूर्यो असद्दिवि ३ २८९८

॥ २७७ ॥ (अथर्व० ६।८२।१-३) (२८९९-२९०१) भगः । अनुष्टुप् ।

आगच्छत आगतस्य नाम गृह्णाम्यायतः । इन्द्रस्य वृत्रघ्नो वन्वे वासवस्य शतक्रतोः १
येन सूर्यां सावित्री-मश्विनोहतुः पथा । तेन मामब्रवीद्भगो जायामा वहतादिति २ २९००
यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो बृहन्निन्द्र हिरण्ययः । तेना जनीयते जायां मह्यं धेहि शचीपते ३ २९०१

॥ २७८ ॥ (अथर्व० ६।९८।१-३) (२९०२-२९०४) अथर्वा । त्रिष्टुप्, २ बृहतीगर्भास्तारपङ्क्तिः ।

इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै ।
चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चो-पसद्यो नमस्यो भवेह १
त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्यु-स्त्वं भूरभिभूतिर्जनानाम् ।
त्वं दैवीर्विश इमा वि राजा ऽऽयुष्मत्क्षत्रमजरं ते अस्तु २
प्राच्या दिशस्त्वमिन्द्रासि राजो-तोदीच्या दिशो वृत्रहञ्छत्रुहोऽसि ।
यत्र यन्ति स्रोत्यास्तज्जितं ते दक्षिणतो वृषभ एषि हव्यः ३ २९०४

॥ २७९ ॥ (अथर्व० ७।३१।१) (२९०५) भृग्वङ्गिराः । भुरिक् त्रिष्टुप् ।

इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो अद्य यावच्छ्रेष्ठाभिर्मघवञ्छूर जिन्व ।
यो नो द्वेष्ट्यधरः सस्पदीष्ट यमु द्विष्मस्तमु प्राणो जहातु १ २९०५

॥ २८० ॥ (अथर्व० ७।५०।१--३,५,८--९)

(२९०६--२९११) अङ्गिराः (कितववधकामः)। अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्।

यथा वृक्षमशनि--र्विश्वाहा हन्त्यप्रति । एवाहमद्य कितवा--नक्षैर्बध्यासमप्रति १
तुराणामतुराणां विशामवर्जुषीणाम्। समैतु विश्वतो भगो अन्तर्हस्तं कृतं मम २
ईडे अग्निं स्वावसुं नमोभि--रिह प्रसक्तो वि चयत्कृतं नः।
रथैरिव प्र भरे वाजयद्भिः प्रदक्षिणं मरुतां स्तोममृध्याम् ३ +
अजैषं त्वा संलिखित--मजैषमुत संरुधम्। अविं वृको यथा मथ--देवा मथ्नामि ते कृतम् ५
कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद्भूयासमश्वजि--द्धनंजयो हिरण्यजित् ८ २९१०
अक्षाः फलवतीं द्युवं दत्त गां क्षीरिणीमिव।
सं मा कृतस्य धारया धनुः स्नाव्नेव नह्यत ९ २९११

॥ २८१ ॥ (अथर्व० ७।५५।१)(२९१२) भृगुः। विराट् परोष्णिक्।

ये ते पन्थानोऽव दिवो येभिर्विश्वमैरयः। तेभिः सुम्नया धेहि नो वसो १ २९१२

॥ २८२ ॥ (अथर्व० ७।९३।१) (२९१३) भृग्वङ्गिराः। गायत्री।

इन्द्रेण मन्युना वय--मभि ष्याम पृतन्यतः। घ्नन्तो वृत्राण्यप्रति १ २९१३

॥ २८३ ॥ (अथर्व० १९।१३।१) (२९१४) अप्रतिरथः। त्रिष्टुप्।

इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ वृषाणौ चित्रा इमा वृषभौ पारयिष्णू।
तौ योक्षे प्रथमो योग आगते याभ्यां जितमसुराणां स्व१र्यत् १ × २९१४

॥ २८४ ॥ (अथर्व० १९।१५।२--३) (२९१५--२९१६) अथर्वा। त्रिष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः।

इन्द्रं वयमनूराधं हवामहे ऽनु राध्यास्म द्विपदा चतुष्पदा।
मा नः सेना अररुषीरुप गु--र्विषूचीरिन्द्र द्रुहो वि नाशय २ ॐ २९१५
इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा परस्फानो वरेण्यः।
स रक्षिता चरमतः स मध्यतः स पश्चात्स पुरस्तान्नो अस्तु ३ २९१६

॥ २८५ ॥ (अथर्व० २०।२।३) (२९१७) गृत्समदो मेधातिथिर्वा। आर्च्युष्णिक्।

इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात्सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ३ २९१७

+ अथर्व० ७।५०।४, ६-७; ऋ० १।१०२।४; १०।४२।९-१०; १०।४३-४४।१०; दै० [इन्द्रः] ८३०, २५५४-५५, २५६६, २५७७।

× अथर्व० १९।१३।२-७,९-११; ऋ०१०।१०३।१-३,५-११,१३; दै०[इन्द्रः] २६९१-२७०२।

ॐ अथर्व० १९।१५।१,४; ऋ० ८।६१।१३; ६।४७।८; दै० [इन्द्रः] ५६०,११०६।

॥ २८६ ॥ (वा० य० १।४)

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः ।
इन्द्रस्य त्वा भागꣳ सोमेनातनच्मि विष्णो हव्यꣳ रक्ष ४ २९१८

॥ २८७ ॥ (वा० य० ३।४९-५०)

पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्जꣳ शतक्रतो ४९ +
देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे ।
निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा ५० २९२०

॥ २८८ ॥ (वा० य० ५।२८,३०)

ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात् ।
घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया २८ ×
इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि । ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि ३० २९२२

॥ २८९ ॥ (वा० य० ७।४,१४-१५,२५)

उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम् । उरुष्य राय ऽ एषो यजस्व ४
अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।
सा प्रथमा सꣳस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो ऽ अग्निः १४
स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्मा ऽ इन्द्राय सुतमाजुहोत स्वाहा ।
तृम्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुहुता यत्स्वाहायाडग्नीत् १५ २९२५
ध्रुवं ध्रुवेण मनसा वाचा सोममवनयामि ।
अथा न ऽ इन्द्र इद्विशो ऽसपत्नाः समनसस्करत् २५ ⊛ २९२६

॥ २९० ॥ (वा० य० ८।३२,३६)

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ३२ ::
यस्मान्न जातः परो ऽ अन्यो ऽ अस्ति य ऽ आविवेश भुवनानि विश्वा ।
प्रजापतिः प्रजया सꣳरराणस्त्रीणि ज्योतीꣳषि सचते स षोडशी ३६ २९२८

+ वा० य० ३।५१-५२; ऋ० १।८२।२-३; अथर्व० ३।७।१०; १८।४।६१; तै० सं० [इन्द्रः] ९२६-२७ ।

× वा० य० ५।२९; ऋ० १।१०।१२; तै० सं० [इन्द्रः] ६९ ।

⊛ वा० य० ७।२५; ऋ० १०।१७३।६; अथर्व० ७।९४।१ ।

:: वा० य० ८।३३-३५; ऋ० १।१०।३; १।८४।२-३; साम० १०२९-३०, १३४६; तै०सं० [इन्द्रः] ६०,९३८-३९ ।

⊛

॥ २९१ ॥ (वा० य० १२।६६)

निवेशनः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः ।
देव ऽ इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम् ६६ [] १९२९

॥ २९२ ॥ (वा० य० १३।१४)

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या ऽ अयम् । अपाᳪं रेताᳪंसि जिन्वति १४ + १९३०

॥ २९३ ॥ (वा० १७।३३,३६,४४-४५,५१,६३)

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे ऽ अद्या हुवेम ।
स नो विश्वानि हवनानि जोषद् विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ३३ ×
बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँ२ऽअपबाधमानः ।
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ३६ *
अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ४४
अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्मसᳪंशिते । गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः ४५
इन्द्रेमं प्रतरां नय सजातानामसद्वशी । समेनं वर्चसा सृज देवानां भागदाऽअसत् ५१ १९३५
वाजस्य मा प्रसव उद्ग्राभेणोदग्रभीत् । अधा सपत्नानिन्द्रो मे निग्राभेणाधराँ२ अकः ६३ १९३६

॥ २९४ ॥ (वा० य० १९।३२,८०-९५)

सुरावन्तं बर्हिषदᳪं सुवीरं यज्ञᳪं हिन्वन्ति महिषा नमोभिः ।
दधानाः सोमं दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः ३२ ::
सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति ।
अश्विना यज्ञᳪं सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन् ८०
तदस्य रूपममृतᳪं शचीभिस्तिस्रो दधुर्देवताः सᳪंरराणाः ।
लोमानि शष्पैर्बहुधा न तोक्मभिस्त्वगस्य माᳪंसमभवन्न लाजाः ८१
तदश्विना भिषजा रुद्रवर्तनी सरस्वती वयति पेशो ऽ अन्तरम् ।
अस्थि मज्जानं मासरैः कारोतरेण दधतो गवां त्वचि ८२ १९४०

[] ऋ० १०।१३९।३; अथर्व० १०।८।४२

\+ ऋ० ८।४४।१६; साम० २७,१५३२; दै० सं० [अग्निः] १३५८ ।

× ऋ० १०।८१।७

* वा० य० १७।३३-४५,५१,६३; ऋ० १०।१०३।१-१२; ६।७५।१६; साम० १८४९-१८६१,१८६३; अथर्व० ३।२।५; १९।१३।८; ६।५।२; ६।३७।२; ८।५।२; १९।१३।२-११; दै० सं० [इन्द्रः] २६९२-२७०१ ।

:: वा० य० १९।७१; ऋ० ८।१४।१३; साम० २११; अथर्व० २०।२९।३; दै० सं० [इन्द्रः] ३६६ ।

सरस्वती मनसा पेशलं वसु   नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः ।
रसं परिस्रुता न रोहितं   नग्नहुर्धीरस्तसरं न वेम   ८३
पयसा शुक्रममृतं जनित्रꣳ   सुरया मूत्राज्जनयन्त रेतः ।
अपामतिं दुर्मतिं बाधमाना   ऊवध्यं वातꣳ सब्वं तदारात्   ८४
इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यं   पुरोडाशेन सविता जजान ।
यकृत् क्लोमानं वरुणो भिषज्यन्   मतस्ने वायव्यैर्न मिनाति पित्तम्   ८५
आन्त्राणि स्थालीर्मधु पिन्वमाना   गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः ।
श्येनस्य पत्रं न प्लीहा शचीभि—रासन्दी नाभिरुदरं न माता   ८६
कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभि—र्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो ऽ अन्तः ।
प्लाशिर्व्यक्तः शतधार ऽ उत्सो   दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः   ८७   २९४५
मुखꣳ सदस्य शिर ऽ इत् सतेन   जिह्वा पवित्रमश्विनासन्त्सरस्वती ।
चप्यं न पायुर्भिषगस्य   वालो वस्तिर्न शेपो हरसा तरस्वी   ८८
अश्विभ्यां चक्षुरमृतं ग्रहाभ्यां   छागेन तेजो हविषा शृतेन ।
पक्ष्माणि गोधूमैः कुवलैरुतानि   पेशो न शुक्रमसितं वसाते   ८९
अविर्न मेषो नसि वीर्याय   प्राणस्य पन्था ऽ अमृतो ग्रहाभ्याम् ।
सरस्वत्युपवाकैर्व्यानं   नस्यानि बर्हिर्बदरैर्जजान   ९०
इन्द्रस्य रूपमृषभो बलाय   कर्णाभ्याꣳ श्रोत्रममृतं ग्रहाभ्याम् ।
यवा न बर्हिर्भ्रुवि केसराणि   कर्कन्धु जज्ञे मधु सारघं मुखात्   ९१
आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम   मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम ।
केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा   सिꣳहस्य लोम त्विषिरिन्द्रियाणि   ९२   २९५०
अङ्गान्यात्मन् भिषजा तदश्विना—त्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती ।
इन्द्रस्य रूपꣳ शतमानमायु—श्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः   ९३
सरस्वती योन्यां गर्भमन्त—रश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति ।
अपाꣳ रसेन वरुणो न साम्ने—न्द्रꣳ श्रियै जनयन्नप्सु राजा   ९४
तेजः पशूनाꣳ हविरिन्द्रियावत्   परिस्रुता पयसा सारघं मधु ।
अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या   सुतासुताभ्याममृतः सोम ऽ इन्दुः   ९५   २९५३

॥२९५॥ (वा० य० २०।३१, ७१-७७, ८०, ९०)

अध्वर्यो ऽ अद्रिभिः सुतꣳ   सोमं पवित्र ऽ आ नय ।   पुनाहीन्द्राय पातवे   ३१   +

+ वा० य० २०।२९; ऋ० ३।५२।१, ८।९१।२, सा० २१०, दै० सं० [इन्द्रः] १४४६

सविता वरुणो दधद् यजमानाय दाशुषे । आदत्त नमुचेर्वसु सुत्रामा बलमिन्द्रियम् ७१ १९५५
वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं भगेन सविता श्रियम् । सुत्रामा यशसा बलं दधाना यज्ञमाशत ७२
अश्विना गोभिरिन्द्रिय-मश्वेभिर्वीर्यं बलम् । हविषेन्द्रꣳ सरस्वती यजमानमवर्धयन् ७३
ता नासत्या सुपेशसा हिरण्यवर्तनी नरा । सरस्वती हविष्मती-न्द्र कर्मसु नोऽवत ७४
ता भिषजा सुकर्मणा सा सुदुघा सरस्वती । स वृत्रहा शतक्रतु-रिन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ७५
युवꣳ सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा । विपिपानाः सरस्वती-न्द्रं कर्मस्वावत ७६ * १९६०
पुत्रमिव पितरावश्विनो-भेन्द्रावथुः काव्यैर्दꣳ सनाभिः ।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ७७
अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेने-न्द्राय दधुरिन्द्रियम् ८०
अश्विना पिबतां मधु सरस्वत्या सजोषसा ।
इंद्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ताꣳ सोम्यं मधु ९० † १९६३

॥ २९६ ॥ (वा० य० २६।४-५, १०)

इंद्र गोमन्निहा याहि पिबा सोमꣳ शतक्रतो । विद्यद्भिर्ग्रावभिः सुतम् ४
इंद्रा याहि वृत्रहन् पिबा सोमꣳ शतक्रतो । गोमद्भिर्ग्रावभिः सुतम् ५ १९६५
महाँ२ ऽ इंद्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु । हन्तु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि १० § १९६६

॥ २९७ ॥ (वा० य० २९।५७)

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति ।
समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरो ऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु ५७ ‡ १९६७

॥ २९८ ॥ (वा० य० ३३।२७, ७८-७९, ९०)

कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त ऽ इत्था ।
सं पृच्छसे समराणः शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्ते ऽ अस्मे २७ $
ब्रह्माणि मे मतयः शꣳ सुतासः शुष्म ऽ इयर्ति प्रभृतो मे ऽ अद्रिः ।
आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो ऽ अच्छ ७८

* वा० य० २०।७६-७७; ऋ० १०।१३१।४-५; अथर्व० २०।१२५।४-५ ।

† वा० य० २०।८७-८९; ऋ० १।३।४-६; साम० ११४६-४८; अथर्व० २०।८४।१-३; दै० सं० [इन्द्रः] १-३ ।

§ वा० य० २६।११।२३; ऋ० ८।८८।१; ३।३५।६; साम० २३६, ६८५; अथर्व० २०।९।१, ४९।४; दै० सं० [इन्द्रः] ८९४, १३१७ ।

‡ वा० य० २९।५७; ऋ० ६।४७।३१; अथर्व० ६।१२५।६ ।

$ वा० य० ३३।१८।२९; ऋ० १।९।१; १०२।१; १६५।३-४, ९; ३।३४।३; ३८,४; ७।२३।४,६६।४; ८।४५।१; ८।७२।१२-१३; १०।५१।१; ७४।४; साम० ११७, १८०, १३३९, १३५१, १४८०, १६०१; अथर्व० ४।८।३; ७।२३।४, २०।११।३; ७१।७; दै०सं० [इन्द्रः] २१८३; १३४८,२६०१,४४४,४८,१३०३,८१८,२६३७; दै०सं० [अग्निः]१४३५-३६

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ२ ऽ अस्ति देवता विदानः ।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ७९ २९७०
चन्द्रमा ऽ अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्रदत् ९० २९७१

॥ २९९ ॥ (वा० य० ३५।१८)

परीमे गामनेषत पर्यग्निमहृषत । देवेष्वक्रत श्रवः क ऽ इमाँ२ ऽ आ दधर्षति १८ × २९७२

॥ ३०० ॥ (वा० य० ३६।८)

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो ऽ अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ८ × २९७३

॥ ३०१ ॥ (वा० य० ३८।२६)

यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे ।
तावन्तमिन्द्र ते ग्रहꣳ सहोर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम् २६ * २९७४

॥ ३०२ ॥ (साम० १९०)

क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात् । स नो वसून्या भरात् १९० २९७५

॥ ३०३ ॥ (साम० १९६)

सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन् । न देवो वृतः शूर इन्द्रः १९६ २९७६

॥ ३०४ ॥ (साम० २०९, २१२)

अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः । अरं शक्र परेमणि २०९ २९७७
इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः । तेषां मत्स्व प्रभूवसो २१२ २९७८

॥ ३०५ ॥ (साम० २२६, २३१)

इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः । हरिवान्त्सुतानां सखा २२६
एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः । सत्राजिदुग्र पौंस्यम् २३१ २९८०

॥ ३०६ ॥ (साम० २९४, २९८)

इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।
मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः २९४

‼ वा० य० ३३।५९, ६३-६७, ९५-९६; ऋ० ३।३११६; ४७।४; ४।३२।१; ८।८९।२-३; ९९।५-६; साम० १८१, २५७, ३११, १६३७-३८; दै० सं० [इन्द्रः] ११६५, १४१७, १६४५, २३८०-८१, २३८५-८६, २६१३ ।

× वा० य० ३५।१८; ऋ० १०।१५५।५; अथर्व० ६।२८।२ ।

× वा० य० ३६।४-७; ऋ० ४।३११।१-३; ८।९३।१९, साम० १६९, ६८२-८४, १५८६; अथर्व० २०।१२४।१-३; दै० सं० [इन्द्रः] १६३०-३२, २४४८ ।

* वा० य० ३८।२६; अथर्व० ४।६।२

यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि ।
अस्माकमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बर्हय २९८ १९८१

॥ ३०७ ॥ (साम० ३२७)

मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभं स्थिरप्स्नुम् ।
करोष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्यु—रिन्द्र द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे ३२७ १९८३

॥ ३०८ ॥ (साम० ३३६,३३७)

यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा ।
क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्रा—भी ष्याम वृषमणस्त्वोताः ३३६
यं वृत्रेषु क्षितिय स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते ।
यं शूरसातौ यमपामुपज्म—न्यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः ३३७ १९८५

॥ ३०९ ॥ (साम० ४३८,१७६८,४४४-४४६,१११३-१५)

एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ४३८
उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र ४४४
अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ४४५
प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते ४४६ १९८९

॥ ३१० ॥ (साम० ४४९, ४५३, ४५६, १७७०)

भगो न चित्रो अग्नि—र्महोनां दधाति रत्नम् ४४९ १९९०
वि स्रुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः ४५३
इन्द्रो विश्वस्य राजति ४५६ १९९१

॥ ३११ ॥ (साम० ५८८)

यस्येदमा रजोयुज—स्तुजे जने वनं स्वः । इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् ५८८ १९९३

॥ ३१२ ॥ (साम० ६२३-६२५)

हरी त इन्द्र श्मश्रू—ण्युतो ते हरितौ हरी ।
तं त्वा स्तुवन्ति कवयः पुरुषासो वनर्गवः ६२३

यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्च—स्तेन मा संसृजामसि ६२४
सहस्तन्न इन्द्र दद्ध्योज ईशे ह्यस्य महतो विरप्शिन्।
क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजं वृत्रेषु शत्रून्त्सहना कृधी नः ६२५ २९९६

॥ ३१३ ॥ (साम० ९५२-९५४)

इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिह।
पिबा सुतस्य मतिर्न मधोश्चकानश्चारुर्मदाय ९५२ २९९७
इन्द्र जठरं नव्यं न पृणस्व मधोर्दिवो न।
अस्य सुतस्य स्वा३र्णोप त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः ९५३
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो न जघान वृत्रं यतिर्न।
बिभेद वलं भृगुर्न ससाहे शत्रून्मदे सोमस्य ९५४ २९९९

॥ ३१४ ॥ (साम० १८६९)

इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवाना—वनाधृष्यौ सुप्रतीकावसह्यौ।
तौ युञ्जीत प्रथमौ योग आगते याभ्यां जितमसुराणां सहो महत् १८६९ ३०००

॥ ३१५ ॥ (साम० १८७१)

अन्धा अमित्रा भवता—शीर्षाणोऽहय इव।
तेषां वो अग्निनुन्नाना—मिन्द्रो हन्तु वरंवरम् १८७१ ३००१

इन्द्रसहचारी-देवगणः।

(१) इन्द्राग्नी।

॥ ३१६ ॥ (ऋ० १।२१।१-६)

(३००२-३००७) मेधातिथिः काण्वः। गायत्री।

इहेन्द्राग्नी उप ह्वये तयोरित् स्तोममुश्मसि। ता सोमं सोमपातमा १
ता यज्ञेषु प्र शंसते—न्द्राग्नी शुम्भता नरः। ता गायत्रेषु गायत २
ता मित्रस्य प्रशस्तय इन्द्राग्नी ता हवामहे। सोमपा सोमपीतये ३
उग्रा सन्ता हवामह उपेदं सवनं सुतम्। इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ४ ३००५
ता महान्ता सदस्पती इन्द्राग्नी रक्ष उब्जतम्। अप्रजाः सन्त्वत्रिणः ५
तेन सत्येन जागृत—मधि प्रचेतुने पदे। इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ६ ३००७

॥ ३१६ ॥ (ऋ० १।१०८।१-१३)

(३००८-३०२८) कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

य इ॑न्द्राग्नी चि॒त्रत॑मो॒ रथो॑ वा॒मभि विश्वा॑नि॒ भुव॑नानि॒ चष्टे॑ ।
तेना या॑तं स॒रथं॑ तस्थि॒वांसा॒था सोम॑स्य पिबतं सु॒तस्य॑ १
याव॑दि॒दं भुव॑नं॒ विश्व॒मस्त्यु॑रु॒व्यचा॑ वरि॒मता॑ गभी॒रम् ।
तावाँ॑ अ॒यं पात॑वे॒ सोमो॑ अ॒स्त्वर॑मिन्द्राग्नी॒ मन॑से यु॒वभ्या॑म् २
च॒क्राथे॑ हि स॒ध्र्य॒१॒ङ्नाम॑ भ॒द्रं स॑ध्रीची॒ना वृ॑त्रहणा उ॒त स्थः॑ ।
तावि॑न्द्राग्नी स॒ध्र्य॑ञ्चा नि॒षद्या॒ वृष्णः॒ सोम॑स्य वृष॒णा वृषे॑थाम् ३ ३०१०
समि॑द्धेष्व॒ग्निष्वा॑नजा॒ना य॒तस्रु॑चा ब॒र्हिरु॑ तिस्तिरा॒णा ।
ती॒व्रैः सोमैः॒ परि॑षिक्तेभिर॒र्वागेन्द्रा॑ग्नी सौमन॒साय॑ यातम् ४
यानी॑न्द्राग्नी च॒क्रथु॑र्वी॒र्या॑णि॒ यानि॑ रू॒पाण्यु॒त वृष्ण्या॑नि ।
या वां॑ प्र॒त्नानि॑ स॒ख्या शि॒वानि॒ तेभि॒ः सोम॑स्य पिबतं सु॒तस्य॑ ५
यदब्र॑वं प्रथ॒मं वां॑ वृणा॒नो॒३॒ऽयं सोमो॒ असु॑रैर्नो वि॒हव्यः॑ ।
तां स॒त्यां श्र॒द्धाम॒भ्या हि या॒तमथा॒ सोम॑स्य पिबतं सु॒तस्य॑ ६
यदि॑न्द्राग्नी॒ मद॑थः॒ स्वे दु॑रो॒णे यद्ब्र॒ह्मणि॒ राज॑नि वा यजत्रा ।
अतः॒ परि॑ वृषणा॒वा हि या॒तमथा॒ सोम॑स्य पिबतं सु॒तस्य॑ ७
यदि॑न्द्राग्नी॒ यदु॑षु तु॒र्वशे॑षु॒ यद्द्रु॒ह्युष्वनु॑षु पू॒रुषु॒ स्थः ।
अतः॒ परि॑ वृषणा॒वा हि या॒तमथा॒ सोम॑स्य पिबतं सु॒तस्य॑ ८ ३०१५
यदि॑न्द्राग्नी अव॒मस्यां॑ पृथि॒व्यां म॑ध्य॒मस्यां॑ प॒रमस्या॑मु॒त स्थः
अतः॒ परि॑ वृषणा॒वा हि या॒तमथा॒ सोम॑स्य पिबतं सु॒तस्य॑ ९
यदि॑न्द्राग्नी प॒रमस्यां॑ पृथि॒व्यां म॑ध्य॒मस्या॑मव॒मस्या॑मु॒त स्थः ।
अतः॒ परि॑ वृषणा॒वा हि या॒तमथा॒ सोम॑स्य पिबतं सु॒तस्य॑ १०
यदि॑न्द्राग्नी दि॒वि ष्ठो यत्पृ॑थि॒व्यां यत्पर्व॑ते॒ष्वोष॑धीष्व॒प्सु ।
अतः॒ परि॑ वृषणा॒वा हि या॒तमथा॒ सोम॑स्य पिबतं सु॒तस्य॑ ११
यदि॑न्द्राग्नी॒ उदि॑ता॒ सूर्य॑स्य॒ मध्ये॑ दि॒वः स्व॒धया॑ मा॒दये॑थे ।
अतः॒ परि॑ वृषणा॒वा हि या॒तमथा॒ सोम॑स्य पिबतं सु॒तस्य॑ १२
ए॒वेन्द्रा॑ग्नी पपि॒वांसा॑ सु॒तस्य॒ विश्वा॒स्मभ्यं॒ सं ज॑यतं॒ धना॑नि ।
तन्नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो मामहन्ता॒मदि॑तिः॒ सिन्धु॑ः पृथि॒वी उ॒त द्यौः १३ ३०२०

॥ ३१८ ॥ (ऋ० १।१०९।१-८)

वि ह्यख्यं मनसा वस्य इच्छन्निन्द्राग्नी ज्ञास उत वा सजातान् ।
नान्या युवत् प्रमतिरस्ति मह्यं स वां धियं वाजयन्तीमतक्षम् १
अश्रवं हि भूरिदावत्तरा वां विजामातुरुत वा घा स्यालात् ।
अथा सोमस्य प्रयती युवभ्यामिन्द्राग्नी स्तोमं जनयामि नव्यम् २
मा च्छेद्म रश्मीँरिति नाधमानाः पितॄणां शक्तीरनुयच्छमानाः ।
इन्द्राग्निभ्यां कं वृषणो मदन्ति ता ह्यद्री धिषणाया उपस्थे ३
युवाभ्यां देवी धिषणा मदायेन्द्राग्नी सोममुशती सुनोति ।
तावश्विना भद्रहस्ता सुपाणी आ धावतं मधुना पृङ्क्तमप्सु ४
युवामिन्द्राग्नी वसुनो विभागे तवस्तमा शुश्रव वृत्रहत्ये ।
तावासद्या बर्हिषि यज्ञे अस्मिन् प्र चर्षणी मादयेथां सुतस्य ५ १०२५
प्र चर्षणिभ्यः पृतनाहवेषु प्र पृथिव्या रिरिचाथे दिवश्च ।
प्र सिन्धुभ्यः प्र गिरिभ्यो महित्वा प्रेन्द्राग्नी विश्वा भुवनात्यन्या ६
आ भरतं शिक्षतं वज्रबाहू अस्माँ इन्द्राग्नी अवतं शचीभिः ।
इमे नु ते रश्मयः सूर्यस्य येभिः सपित्वं पितरो न आसन् ७
पुरंदरा शिक्षतं वज्रहस्तास्माँ इन्द्राग्नी अवतं भरेषु ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ८ १०२८

॥ ३१९ ॥ (ऋ० १।१३९।९) (१०२९) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः ।

दध्यङ् ह मे जनुषं पूर्वो अङ्गिराः प्रियमेधः कण्वो अत्रिर्मनुर्विदुस्ते मे पूर्वे मनुर्विदुः ।
तेषां देवेष्वायतिरस्माकं तेषु नाभयः। तेषां पदेन मह्या नमे गिरेन्द्राग्नी आ नमे गिरा ९,१०२९

॥ ३२० ॥ (ऋ० ३।१२।१-९) (१०३०-१०३८) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् । अस्य पातं धियेषिता १ १०३०
इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः । अया पातमिमं सुतम् २
इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे । ता सोमस्येह तृम्पताम् ३
तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता । इन्द्राग्नी वाजसातमा ४
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः । इन्द्राग्नी इष आ वृणे ५
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम् । साकमेकेन कर्मणा ६ १०३५
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः । ऋतस्य पथ्या३ अनु ७
इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च । युवोरप्तूर्यं हितम् ८

इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः । तद् वां चेति प्र वीर्यम् ९ ३०३८

॥ ३२१ ॥ (ऋ० ५।२७।६)

(३०३९) त्रैवृष्णस्त्र्यरुणः, पौरुकुत्सस्त्रसदस्युः, भारतोऽश्वमेधश्च राजानः (अत्रिर्भौम इति केचित्)। अनुष्टुप्।

इन्द्राग्नी शतदाव्य–श्वमेधे सुवीर्यम् । क्षत्रं धारयतं बृहद् दिवि सूर्यमिवाजरम् ६ ३०३९

॥ ३२२ ॥ (ऋ० ५।८६।१-६) (३०४०-३०४५) भौमोऽत्रिः । अनुष्टुप्, ६ विराट्पूर्वा ।

इन्द्राग्नी यमवथ उभा वाजेषु मर्त्यम् । दृळ्हा चित् स प्र भेदति द्युम्ना वाणीरिव त्रितः १ ३०४०
या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या । या पञ्च चर्षणीरभी–न्द्राग्नी ता हवामहे २
तयोरिदमवच्छव–स्तिग्मा दिद्युन्मघोनोः । प्रति द्रुणा गभस्त्यो–र्गवां वृत्रघ्न एषते ३
ता वामेषे रथाना–मिन्द्राग्नी हवामहे । पती तुरस्य राधसो विद्वांसा गिर्वणस्तमा ४
ता वृधन्तावनु द्यून् मर्ताय देवावदभा । अर्हन्ता चित् पुरो दधे–ऽशेव देवावर्वते ५
एवेन्द्राग्निभ्यामहावि हव्यं शूष्यं घृतं न पूतमद्रिभिः ।
ता सूरिषु श्रवो बृहद् रयिं गृणत्सु दिधृत–मिषं गृणत्सु दिधृतम् ६ ३०४५

॥ ३२३ ॥ (ऋ० ६।५९।१-१०) (३०४६-३०७०) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । बृहती, ७-१० अनुष्टुप् ।

प्र नु वोचा सुतेषु वां वीर्या३ यानि चक्रथुः ।
हतासो वां पितरो देवशत्रव इन्द्राग्नी जीवथो युवम् १
बळित्था महिमा वा–मिन्द्राग्नी पनिष्ठ आ ।
समानो वां जनिता भ्रातरा युवं यमाविहेहमातरा २
ओकिवांसा सुते सचाँ अश्वा सप्ती इवादने ।
इन्द्रा न्व१ग्नी अवसेह वज्रिणा वयं देवा हवामहे ३
य इन्द्राग्नी सुतेषु वां स्तवत् तेष्वृतावृधा ।
जोषवाकं वदतः पज्रहोषिणा न देवा भसथश्चन ४
इन्द्राग्नी को अस्य वां देवौ मर्तश्चिकेतति ।
विषूचो अश्वान् युयुजान ईयत एकः समान आ रथे ५ ३०५०
इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः । हित्वी शिरो जिह्वया वावदच्चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत् ६
इन्द्राग्नी आ हि तन्वते नरो धन्वानि बाह्वोः । मा नो अस्मिन् महाधने परा वर्क्तं गविष्टिषु ७
इन्द्राग्नी तपन्ति मा–ऽघा अर्यो अरातयः । अप द्वेषांस्या कृतं युयुतं सूर्यादधि ८
इन्द्राग्नी युवोरपि वसु दिव्यानि पार्थिवा । आ न इह प्र यच्छतं रयिं विश्वायुपोषसम् ९
इन्द्राग्नी उक्थवाहसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता । विश्वाभिर्गीर्भिरा गत–मस्य सोमस्य पीतये १० ३०५५

॥ ३२४ ॥ (ऋ० ६।६०।१-१५) गायत्री; १-३, १३ त्रिष्टुप्, १४ बृहती, १५ अनुष्टुप् ।

श्नथद् वृत्रमुत सनोति वाज—मिन्द्रा यो अग्नी सहुरी सपर्यात् ।
इरज्यन्ता वसव्यस्य भूरेः सहस्तमा सहसा वाजयन्ता १
ता योधिष्टमभि गा इन्द्र नून—मपः स्वरुषसो अग्न ऊळ्हाः ।
दिशः स्वरुषस इन्द्र चित्रा अपो गा अग्ने युवसे नियुत्वान् २
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः शुष्मै—रिन्द्र यातं नमोभिरग्ने अर्वाक् ।
युवं राधोभिरकवेभिरिन्द्रा—ऽग्ने अस्मे भवतमुत्तमेभिः ३
ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम् । इन्द्राग्नी न मर्धतः ४
उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे । ता नो मृळात ईदृशे ५ ३०६०
हतो वृत्राण्यार्या हतो दासानि सत्पती । हतो विश्वा अप द्विषः ६
इन्द्राग्नी युवामिमे३ऽभि स्तोमा अनूषत । पिबतं शंभुवा सुतम् ७
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा । इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ८
ताभिरा गच्छतं नरो—पेदं सवनं सुतम् । इन्द्राग्नी सोमपीतये ९
तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् । कृष्णा कृणोति जिह्वया १० ३०६५
य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः । द्युम्नाय सुतरा अपः ११
ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः । इन्द्रमग्निं च वोळ्हवे १२
उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै ।
उभा दातारविषां रयीणा—मुभा वाजस्य सातये हुवे वाम् १३
आ नो गव्येभिरश्व्यै—र्वसव्यै३रुप गच्छतम् ।
सखायौ देवौ सख्याय शंभुवे—न्द्राग्नी ता हवामहे १४
इन्द्राग्नी शृणुतं हवं यजमानस्य सुन्वतः । वीतं हव्यान्या गतं पिबतं सोम्यं मधु १५ ३०७०

॥ ३२५ ॥ (ऋ० ७।९३।१-८) (३०७१-३०९०) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

शुचिं नु स्तोमं नवजातमद्ये—न्द्राग्नी वृत्रहणा जुषेथाम् ।
उभा हि वां सुहवा जोहवीमि ता वाजं सद्य उशते धेष्ठा १
ता सानसी शवसाना हि भूतं साकंवृधा शवसा शूशुवांसा ।
क्षयन्तौ रायो यवसस्य भूरेः पृङ्क्तं वाजस्य स्थविरस्य घृष्वेः २
उपो ह यद् विदथं वाजिनो गु—र्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः ।
अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नरस्ते ३

गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ईट्टे रयिं यशसं पूर्वभाजम् ।
इन्द्राग्नी वृत्रहणा सुवज्रा प्र नो नव्येभिस्तिरतं देष्णैः ४
सं यन्मही मिथती स्पर्धमाने तनूरुचा शूरसाता यतैते ।
अदेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा हतं सोमसुता जनेन ५ ३०७५
इमामु षु सोमसुतिमुप न एन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ।
नू चिद्धि परिमम्नाथे अस्मा—ना वां शश्वद्भिर्ववृतीय वाजैः ६
सो अग्न एना नमसा समिद्धो ऽच्छा मित्रं वरुणमिन्द्रं वोचेः ।
यत् सीमागश्चकृमा तत् सु मृळ तदर्यमादितिः शिश्रथन्तु ७
एता अग्न आशुषाणास इष्टी—र्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान् ।
मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ८

॥ ३२६ ॥ (ऋ० ७।९४।१-१२) गायत्री, १२ अनुष्टुप् ।

इयं वामस्य मन्मन इंद्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः । अभ्राद् वृष्टिरिवाजनि १
शृणुतं जरितुर्हव—मिंद्राग्नी वनतं गिरः । ईशाना पिप्यतं धियः २ ३०८०
मा पापत्वाय नो नरे—न्द्राग्नी माभिशस्तये । मा नो रीरधतं निदे ३
इन्द्रे अग्ना नमो बृहत् सुवृक्तिमेरयामहे । धिया धेना अवस्यवः ४
ता हि शश्वन्त ईळत इत्था विप्रास ऊतये । सबाधो वाजसातये ५
ता वां गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वंतो हवामहे । मेधसाता सनिष्यवः ६
इंद्राग्नी अवसा गत—मस्मभ्यं चर्षणीसहा । मा नो दुःशंस ईशत ७ ३०८५
मा कस्य नो अररुषो धूर्तिः प्रणङ्मर्त्यस्य । इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ८
गोमद्धिरण्यवद् वसु यद् वामश्वावदीमहे । इंद्राग्नी तद् वनेमहि ९
यत् सोम आ सुते नर इंद्राग्नी अजोहवुः । सप्तीवन्ता सपर्यवः १०
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा । आङ्गूषैराविवासतः ११
ताविद् दुःशंसं मर्त्यं दुर्विद्वांसं रक्षस्विनम् । आभोगं हन्मना हत—मुदधिं हन्मना हतम् १२ ३०९०

॥ ३२७ ॥ (ऋ० ८।३८।१-१०) (३०९१-३१००) श्यावाश्व आत्रेयः। गायत्री ।

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु । इंद्राग्नी तस्य बोधतम् १
तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता । इंद्राग्नी तस्य बोधतम् २
इदं वां मदिरं मध्व—धुक्षन्नद्रिभिर्नरः । इंद्राग्नी तस्य बोधतम् ३
जुषेथां यज्ञमिष्टये सुतं सोमं सधस्तुती । इंद्राग्नी आ गतं नरा ४
इमा जुषेथां सवना येभिर्हव्यान्यूहथुः । इंद्राग्नी आ गतं नरा ५ ३०९५

इमां गायत्रवर्तनिं जुषेथां सुष्टुतिं मम । इंद्राग्नी आ गतं नरा ६
प्रातर्यावभिरा गतं देवेभिर्जेन्यावसू । इंद्राग्नी सोमपीतये ७
श्यावाश्वस्य सुन्वतो ऽत्रीणां शृणुतं हवम् । इंद्राग्नी सोमपीतये ८
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः । इंद्राग्नी सोमपीतये ९
आहं सरस्वतीवतो-रिन्द्राग्न्योरवो वृणे । याभ्यां गायत्रमृच्यते १० ३१००

॥ ३२८ ॥ (ऋ० ८।४०।१-१२)

(३१०१-३११२) नाभाकः काण्वः । महापंक्तिः, २ शक्करी, १२ त्रिष्टुप् ।

इंद्राग्नी युवं सु नः सहन्ता दासथो रयिम् ।
येन दृळ्हा समत्स्वा वीळु चित् साहिषीमह्य-ग्निर्वनेव वात इ-न्नभन्तामन्यके समे १
नहि वां ववयामहे ऽथेन्द्रमिद् यजामहे शविष्ठं नृणां नरम् ।
स नः कदा चिदर्वता गमदा वाजसातये गमदा मेधसातये नभन्तामन्यके समे २
ता हि मध्यं भराणा-मिंद्राग्नी अधिक्षितः ।
ता उ कवित्वना कवी पृच्छ्यमाना सखीयते सं धीतमश्नुतं नरा नभन्तामन्यके समे ३
अभ्यर्च नभाकव-दिन्द्राग्नी यजसा गिरा ।
ययोर्विश्वमिदं जग-दियं द्यौः पृथिवी मह्यु१-पस्थे बिभृतो वसु नभन्तामन्यके समे ४
प्र ब्रह्माणि नभाकव-दिन्द्राग्निभ्यामिरज्यत ।
या सप्तबुध्नमर्णवं जिह्मबारमपोर्णुत इंद्र ईशान ओजसा नभन्तामन्यके समे ५ ३१०५
अपि वृश्च पुराणवद् व्रततेरिव गुष्पित-मोजो दासस्य दम्भय ।
वयं तदस्य संभृतं वस्विंद्रेण वि भजेमहि नभन्तामन्यके समे ६
यदिन्द्राग्नी जना इमे विह्वयन्ते तना गिरा ।
अस्माकेभिर्नृभिर्वयं सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतो नभन्तामन्यके समे ७
या नु श्वेताववो दिव उच्चरात उप द्युभिः ।
इंद्राग्न्योरनु व्रत-मुहाना यंति सिंधवो यान्सीं बंधादमुञ्चतां नभन्तामन्यके समे ८
पूर्वीष्ट इंद्रोपमातयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः सूनो हिन्वस्य हरिवः ।
वस्वो वीरस्यापृचो या नु साधन्त नो धियो नभन्तामन्यके समे ९
तं शिशीता सुवृक्तिभि-स्त्वेषं सत्वानमृग्मियम् ।
उतो नु चिद् य ओजसा शुष्णस्याण्डानि भेदति जेषत् स्वर्वतीरपो नभंतामन्यके समे १० ३११०
तं शिशीता स्वध्वरं सत्यं सत्वानमृत्वियम् ।
उतो नु चिद् य ओहत आण्डा शुष्णस्य भेद-त्यजैः स्वर्वतीरपो नभंतामन्यके समे ११

एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन्नवीयो मंधातृवदंङ्गिरस्वदंवाचि ।
त्रिधातुना शर्मणा पातमुस्मान् वयं स्याम पतंयो रयीणाम् १२ ३१११२

॥ ३२९ ॥ (ऋ० १०।१६१।१-५)

(३११३-३११७) प्राजापत्यो यक्ष्मनाशनः, राजयक्ष्मघ्नं वा । त्रिष्टुप्, ५ अनुष्टुप् ।

मुञ्चामिं त्वा हविषा जीवंनाय क—मज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात् ।
ग्राहिर्जग्राह यदिं वैतदेंनं तस्यां इन्द्राग्नी प्र मुंमुक्तमेनम् १
यदिं क्षितायुर्यदिं वा परेंतो यदिं मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
तमा हंरामि निर्ऋतेरुपस्था—दस्पार्षमेनं शतशांरदाय २
सहस्राक्षेणं शतशांरदेन शतायुंषा हविषाहांर्षमेनम् ।
शतं यथेमं शरदो नयातीं—न्द्रो विश्वंस्य दुरितस्यं पारम् ३ ३११५
शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमंताञ्छतमु वसंतान् ।
शतमिंन्द्राग्नी संविता बृहस्पतिंः शतायुंषा हविषेमं पुनर्दुः ४
आहांर्षं त्वाविदं त्वा पुनरागाः पुनर्नव । सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुंश्च तेऽविदम् ५ ३११७

॥ ३३० ॥ (वा० य० १४।११)

इंद्राग्नी अव्यंथमाना—मिष्टकां दृंहतं युवम् । पृष्ठेन द्यावांपृथिवी अंतरिक्षं च विबांधसे १ १+३११८

॥ ३३१ ॥ (वा० य० १७।६४)

उद्ग्राभं चं निग्राभं च ब्रह्मं देवा अंवीवृधन् । अधां सपत्नांनिंद्राग्नी में विषूचीनान्व्यस्यताम् ६४ ×३११९

॥ ३३२ ॥ (अथर्व० ७।९७।१-८)

(३१२०-३१२७) अथर्वा । त्रिष्टुप्, ५ त्रिपदार्षी भुरिग्गायत्री, ६ त्रिपदा प्राजापत्या बृहती,
७ त्रिपदा साम्नी भुरिग्जगती, ८ उपरिष्टाद्बृहती ।

यदुद्य त्वां प्रयति यज्ञे अस्मिन् होतंश्चिकित्वन्नवृंणीमहीह ।
ध्रुवमंयो ध्रुवमुता शंविष्ठ प्रविद्वान् यज्ञमुपं याहि सोमंम् १ ३१२०
समिंद्र नो मनंसा नेष गोभिः सं सूरिभिर्हरिवन्त्सं स्वस्त्या ।
सं ब्रह्मणा देवहिंतं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञियानाम् २
यानावंह उशतो देंव देवां—स्तान् प्रेरंय स्वे अंग्ने सधस्थें ।
जक्षिवांसः पपिवांसो मधून्य—स्मै धंत्त वसवो वसूंनि ३

+ वा० य० ३।१३; ७।३१; ऋ० ६।६०।१३; ३।१२।१; सा० ६६९; दै० सं० [इन्द्रः] ३०३३, ३०७१ ।
× वा० य० ३३।६१,७६,९३; ऋ० ६।५९।६; ६।६०।५; ७।९४।११; सा० ८५४,१८१; दै० सं० [इन्द्रः] ३०५४, ३०६३, ३०९१ ।

सुगा वो देवाः सदना अकर्म य आजग्म सवने मा जुषाणाः।
वहमाना भरमाणाः स्वा वसूनि वसुं घर्मं दिवमा रोहतानु ४
यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ। स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ५
एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः। सुवीर्यः स्वाहा ६ ३१२५
वषड्ढुतेभ्यो वषडहुतेभ्यः। देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित
मनसस्पत इमं नो दिवि देवेषु यज्ञम्। ७
स्वाहा दिवि स्वाहा पृथिव्यां स्वाहान्तरिक्षे स्वाहा वाते धां स्वाहा ८ ३१२७

॥३३३॥ (अथर्व० ६।१०४।१-३) (३१२८-३१३०) प्रशोचनः। ३ सोम इन्द्रश्च। अनुष्टुप्।

आदानेन संदानेनाऽमित्राना द्यामसि। अपाना ये चैषां प्राणा असुनासून्त्समच्छिदन् १
इदमादानमकरं तपसेन्द्रेण संशितम्। अमित्रा येऽत्र नः सन्ति तानग्न आ द्या त्वम् २
ऐनान्द्यतामिन्द्राग्नी सोमो राजा च मेदिनौ।
इन्द्रो मरुत्वानादानममित्रेभ्यः कृणोतु नः ३ ३१३०

॥३३४॥ (अथर्व० ७।११०।१-३) (३१३१-३१३३) भृगुः। १ गायत्री, २ त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप्।

अग्न इन्द्रश्च दाशुषे हतो वृत्राण्यप्रति। उभा हि वृत्रहन्तमा १
याभ्यामजयन्त्स्व१रग्र एव यावातस्थतुर्भुवनानि विश्वा।
प्रचर्षणी वृषणा वज्रबाहू अग्निमिन्द्रं वृत्रहणा हुवेऽहम् २
उप त्वा देवो अग्रभीच्चमसेन बृहस्पतिः।
इन्द्र गीर्भिर्न आ विश यजमानाय सुन्वते ३ ३१३३

(२) इन्द्रावरुणौ।

॥ ३३५ ॥ (ऋ० १।१७।१-९)।

(३१३४-३१४२) मेधातिथिः काण्वः। गायत्री, ४-५ पादनिचृत् (५ हसीयसी वा) गायत्री।

इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आ वृणे। ता नो मृळात ईदृशे १
गन्तारा हि स्थोऽवसे हवं विप्रस्य मावतः। धर्तारा चर्षणीनाम् २ ३१३५
अनुकामं तर्पयेथामिन्द्रावरुण राय आ। ता वां नेदिष्ठमीमहे ३
युवाकु हि शचीनां युवाकु सुमतीनाम्। भूयाम वाजदाव्नाम् ४
इन्द्रः सहस्रदाव्नां वरुणः शंस्यानाम्। क्रतुर्भवत्युक्थ्यः ५
तयोरिदवसा वयं सनेम नि च धीमहि। स्यादुत प्ररेचनम् ६
इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्राय राधसे। अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृतम् ७ ३१४०

इन्द्रावरुण नू नु वां सिषासन्तीषु धीष्वा । अस्मभ्यं शर्म यच्छतम् ८
प्र वामश्नोतु सुष्टुति—रिन्द्रावरुण यां हुवे । यामृधाथे सधस्तुतिम् ९ ३१४२

॥ ३३६ ॥ (ऋ० ३।६२।१-३)

(३१४३-३१४३) गाथिनो विश्वामित्रः । १-३ त्रिष्टुप् ।

इमा उ वां भृमयो मन्यमाना युवावते न तुज्या अभूवन् ।
क्व१त्यदिन्द्रावरुणा यशो वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः १
अयमु वां पुरुतमो रयीय—ञ्छश्वत्तममवसे जोहवीति ।
सजोषाविन्द्रावरुणा मरुद्भि—र्दिवा पृथिव्या शृणुतं हवं मे २
अस्मे तदिन्द्रावरुणा वसु ष्या—दस्मे रयिर्मरुतः सर्ववीरः ।
अस्मान् वरूत्रीः शरणैरव—न्त्वस्मान् होत्रा भारती दक्षिणाभिः ३ ३१४५

॥ ३३७ ॥ (ऋ० ४।४१।१-११)

(३१४६-३१५६) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रा को वां वरुणा सुम्नमाप स्तोमो हविष्माँ अमृतो न होता ।
यो वां हृदि क्रतुमाँ अस्मदुक्तः पस्पर्शदिन्द्रावरुणा नमस्वान् १
इन्द्रा ह यो वरुणा चक्र आपी देवौ मर्तः सख्याय प्रयस्वान् ।
स हन्ति वृत्रा समिथेषु शत्रू—नवोभिर्वा महद्भिः स प्र शृण्वे २
इन्द्रा ह रत्नं वरुणा धेष्ठे—त्था नृभ्यः शशमानेभ्यस्ता ।
यदी सखाया सख्याय सोमैः सुतेभिः सुप्रयसा मादयैते ३
इन्द्रा युवं वरुणा दिद्युमस्मि—न्नोजिष्ठमुग्रा नि वधिष्टं वज्रम् ।
यो नो दुरेवो वृकतिर्दभीति—स्तस्मिन् मिमाथामभिभूत्योजः ४
इन्द्रा युवं वरुणा भूतमस्या धियः प्रेतारा वृषभेव धेनोः ।
सा नो दुहीयद् यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ५ ३१५०
तोके हिते तनय उर्वरासु सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये ।
इन्द्रा नो अत्र वरुणा स्याता—मवोभिर्दस्मा परितक्म्यायाम् ६
युवामिद्ध्यवसे पूर्व्याय परि प्रभूती गविषः स्वापी ।
वृणीमहे सख्याय प्रियाय शूरा मंहिष्ठा पितरेव शंभू ७
ता वां धियाऽवसे वाजयन्ती—राजिं न जग्मुर्युवयूः सुदानू ।
श्रिये न गाव उप सोममस्थु—रिन्द्रं गिरो वरुणं मे मनीषाः ८
इमा इन्द्रं वरुणं मे मनीषा अग्मन्नुप द्रविणमिच्छमानाः ।
उपेमस्थुर्जोष्टार इव वस्वो रघ्वीरिव श्रवसो भिक्षमाणाः ९

अश्व्यस्य त्मना रथ्यस्य पुष्टे--र्नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।
ता चक्राणा ऊतिभिर्नव्यसीभि--रस्मत्रा रायो नियुतः सचन्ताम् १० ३१५५
आ नो बृहन्ता बृहतीभिरूती इन्द्र यातं वरुण वाजसातौ ।
यद् दिद्यवः पृतनासु प्रक्रीळान् तस्य वां स्याम सनितार आजेः ११ ३१५६

॥ ३३८ ॥ (ऋ० ४।४२।७-१०)

(३१५७-३१६०) त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः । त्रिष्टुप् ।

विदुष्टे विश्वा भुवनानि तस्य ता प्र ब्रवीषि वरुणाय वेधः ।
त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान् त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून् ७
अस्माकमत्र पितरस्त आसन् त्सप्त ऋषयो दौर्गहे बध्यमाने ।
त आयजन्त त्रसदस्युमस्या इन्द्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम् ८
पुरुकुत्सानी हि वामदाश--द्धव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।
अथा राजानं त्रसदस्युमस्या वृत्रहणं ददथुरर्धदेवम् ९
राया वयं ससवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः ।
तां धेनुमिन्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम् १० ३१६०

॥३३९॥ (ऋ० ६।६८।१-११) (३१६१-३१७१) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप्, ९-१० जगती ।

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः सजोषा मनुष्वद् वृक्तबर्हिषो यजध्यै ।
आ य इन्द्रावरुणाविषे अद्य महे सुम्नाय मह आववर्तत् १
ता हि श्रेष्ठा देवताता तुजा शूराणां शविष्ठा ता हि भूतम् ।
मघोनां मंहिष्ठा तुविशुष्म ऋतेन वृत्रतुरा सर्वसेना २
ता गृणीहि नमस्येभिः शूषैः सुम्नेभिरिन्द्रावरुणा चकाना ।
वज्रेणान्यः शवसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः ३
ग्नाश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासो नरां स्वगूर्ताः ।
प्रैभ्य इन्द्रावरुणा महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतमुर्वी ४
स इत् सुदानुः स्ववाँ ऋतावे--न्द्रा यो वां वरुण दाशति त्मन् ।
इषा स द्विषस्तरेद् दास्वान् वंसद् रयिं रयिवतश्च जनान् ५ ३१६५
यं युवं दाश्वध्वराय देवा रयिं धत्थो वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।
अस्मे स इन्द्रावरुणावपि ष्यात् प्र यो भनक्ति वनुषामशस्तीः ६
उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः सूरिभ्य इन्द्रावरुणा रयिः ष्यात् ।
येषां शुष्मः पृतनासु साह्वान् प्र सद्यो द्युम्ना तिरते ततुरिः ७

नू न इन्द्रावरुणा गृणाना पृङ्क्तं रयिं सौश्रवसाय देवा।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्धोऽपो न नावा दुरिता तरेम ८
प्र सम्राजे बृहते मन्म नु प्रिय-मर्च देवाय वरुणाय सप्रथः।
अयं य उर्वी महिना महिव्रतः क्रत्वा विभात्यजरो न शोचिषा ९
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रता।
युवो रथो अध्वरं देववीतये प्रति स्वसरमुप याति पीतये १० ३१७०
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम्।
इदं वामन्धः परिषिक्तमस्मे आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयेथाम् ११ ३१७१

॥३४०॥ (ऋ० ७।८२।१-१०) (३१७२--३२०१) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। जगती।

इन्द्रावरुणा युवमध्वराय नो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम्।
दीर्घप्रयज्युमति यो वनुष्यति वयं जयेम पृतनासु दूढ्यः १
सम्राळन्यः स्वराळन्य उच्यते वां महान्ताविन्द्रावरुणा महावसू।
विश्वे देवासः परमे व्योमनि सं वामोजो वृषणा सं बलं दधुः २
अन्वपां खान्यतृन्तमोजसा सूर्यमैरयतं दिवि प्रभुम्।
इन्द्रावरुणा मदे अस्य मायिनोऽपिन्वतमपितः पिन्वतं धियः ३
युवामिद् युत्सु पृतनासु वह्नयो युवां क्षेमस्य प्रसवे मितज्ञवः।
ईशाना वस्व उभयस्य कारव इन्द्रावरुणा सुहवा हवामहे ४ ३१७५
इन्द्रावरुणा यदिमानि चक्रथु-र्विश्वा जातानि भुवनस्य मज्मना।
क्षेमेण मित्रो वरुणं दुवस्यति मरुद्भिरुग्रः शुभमन्य ईयते ५
महे शुल्काय वरुणस्य नु त्विष ओजो मिमाते ध्रुवमस्य यत् स्वम्।
अजामिमन्यः श्नथयन्तमातिरद् दभ्रेभिरन्यः प्र वृणोति भूयसः ६
न तमंहो न दुरितानि मर्त्य-मिन्द्रावरुणा न तपः कुतश्चन।
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वरं न तं मर्तस्य नशते परिह्वृतिः ७
अर्वाङ्नरा दैव्येनावसा गतं शृणुतं हवं यदि मे जुजोषथः।
युवोर्हि सख्यमुत वा यदाप्यं मार्डीकमिन्द्रावरुणा नि यच्छतम् ८
अस्माकमिन्द्रावरुणा भरेभरे पुरोयोधा भवतं कृष्ट्योजसा।
यद् वां हवन्त उभये अध स्पृधि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु ९ ३१८०
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः।
अवध्रं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे १०

॥३४१॥ (ऋ० ७।८३।१-१०)

युवां नरा पश्यमानास आप्यं प्राचा गव्यन्तः पृथुपर्शवो ययुः ।
दासा च वृत्रा हतमार्याणि च सुदासमिन्द्रावरुणावसावतम् १
यत्रा नरः समयन्ते कृतध्वजो यस्मिन्नाजा भवति किं चन प्रियम् ।
यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्दृशस्तत्रा न इन्द्रावरुणाधि वोचतम् २
सं भूम्या अन्ता ध्वसिरा अदृक्षतेन्द्रावरुणा दिवि घोष आरुहत् ।
अस्थुर्जनानामुप मामरातयोऽर्वागवसा हवनश्रुता गतम् ३
इन्द्रावरुणा वधनाभिरप्रति भेदं वन्वन्ता प्र सुदासमावतम् ।
ब्रह्माण्येषां शृणुतं हवीमनि सत्या तृत्सूनामभवत् पुरोहितिः ४ ३१८५
इन्द्रावरुणावभ्या तपन्ति माघान्यर्यो वनुषामरातयः ।
युवं हि वस्व उभयस्य राजथोऽध स्मा नोऽवतं पार्ये दिवि ५
युवां हवन्त उभयास आजिष्विन्द्रं च वस्वो वरुणं च सातये ।
यत्र राजभिर्दशभिर्निबाधितं प्र सुदासमावतं तृत्सुभिः सह ६
दश राजानः समिता अयज्यवः सुदासमिन्द्रावरुणा न युयुधुः ।
सत्या नृणामद्मसदामुपस्तुतिर्देवा एषामभवन् देवहूतिषु ७
दाशराज्ञे परियत्ताय विश्वतः सुदास इन्द्रावरुणावशिक्षतम् ।
श्वित्यञ्चो यत्र नमसा कपर्दिनो धिया धीवन्तो असपन्त तृत्सवः ८
वृत्राण्यन्यः समिथेषु जिघ्नते व्रतान्यन्यो अभि रक्षते सदा ।
हवामहे वां वृषणा सुवृक्तिभिरस्मे इन्द्रावरुणा शर्म यच्छतम् ९ ३१९०
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।
अवध्रं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे १०

॥ ३४२ ॥ (ऋ० ७।८४।१-५) त्रिष्टुप् ।

आ वां राजानावध्वरे ववृत्यां हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।
प्र वां घृताची बाह्वोर्दधाना परि त्मना विषुरूपा जिगाति १
युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति द्यौर्यौ सेतृभिररज्जुभिः सिनीथः ।
परि नो हेळो वरुणस्य वृज्या उरुं न इन्द्रः कृणवदु लोकम् २
कृतं नो यज्ञं विदथेषु चारुं कृतं ब्रह्माणि सूरिषु प्रशस्ता ।
उपो रयिर्देवजूतो न एतु प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेतम् ३
अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववारं रयिं धत्तं वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।
प्र य आदित्यो अनृता मिनात्यमिता शूरो दयते वसूनि ४ ३१९५

इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ ३४३ ॥ (ऋ० ७।८५।१-५)

पुनीषे वामरक्षसं मनीषां सोममिन्द्राय वरुणाय जुह्वत् ।
घृतप्रतीकामुषसं न देवीं ता नो यामन्नुरुष्यतामभीके १
स्पर्धन्ते वा उ देवहूये अत्र येषु ध्वजेषु दिद्यवः पतन्ति ।
युवं ताँ इन्द्रावरुणावमित्रान् हतं पराचः शर्वा विषूचः २
आपश्चिद्धि स्वयशसः सदःसु देवीरिन्द्रं वरुणं देवता धुः ।
कृष्टीरन्यो धारयति प्रविक्ता वृत्राण्यन्यो अप्रतीनि हन्ति ३
स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु होता य आदित्य शवसा वां नमस्वान् ।
आववर्तदवसे वां हविष्मा नसदित् स सुविताय प्रयस्वान् ४ ३२००
इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ ३२०१

॥ ३४४ ॥ (ऋ० ८।५९।१-७)

(३२०२-३२०८) सुपर्णः काण्वः । जगती ।

इमानि वां भागधेयानि सिस्रत इन्द्रावरुणा प्र महे सुतेषु वाम् ।
यज्ञेयज्ञे ह सवना भुरण्यथो यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षथः १
निष्षिध्वरीरोषधीराप आस्ता मिन्द्रावरुणा महिमानमाशत ।
या सिस्रतू रजसः पारे अध्वनो ययोः शत्रुर्नकिरादेव ओहते २
सत्यं तदिन्द्रावरुणा कृशस्य वां मध्व ऊर्मिं दुहते सप्त वाणीः ।
ताभिर्दाश्वांसमवतं शुभस्पती यो वामदब्धो अभि पाति चित्तिभिः ३
घृतप्रुषः सौम्या जीरदानवः सप्त स्वसारः सदन ऋतस्य ।
या ह वामिन्द्रावरुणा घृतश्चुत स्ताभिर्धत्तं यजमानाय शिक्षतम् ४ ३२०५
अवोचाम महते सौभगाय सत्यं त्वेषाभ्यां महिमानमिन्द्रियम् ।
अस्मान् त्स्विन्द्रावरुणा घृतश्चुत स्त्रिभिः साप्तेभिरवतं शुभस्पती ५
इन्द्रावरुणा यदृषिभ्यो मनीषां वाचो मतिं श्रुतमदत्तमग्रे ।
यानि स्थानान्यसृजन्त धीरा यज्ञं तन्वानास्तपसाभ्यपश्यम् ६
इन्द्रावरुणा सौमनसमदृप्तं रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् ।
प्रजां पुष्टिं भूतिमस्मासु धत्तं दीर्घायुत्वाय प्र तिरतं न आयुः ७ ३२०८

॥ ३४५ ॥ (वा० य० ८।३७) त्रिष्टुप् यजुरन्ता ।

इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च राजा तौ ते भक्षं चक्रतुरग्रऽएतम् ।
तयोरहमनु भक्षं भक्षयामि वाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु सह प्राणेन स्वाहा ॥३७॥ ३२०९

(३) इन्द्र--वायू ।

॥३४६॥ (ऋ० १।२।४--६) (३२१०--३२१२) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम् ।
इन्दवो वामुशन्ति हि ४ ३२१०
वायविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू ।
तावा यातमुप द्रवत् ५
वायविन्द्रश्च सुन्वत आ यातमुप निष्कृतम् ।
मक्ष्वि१त्था धिया नरा ६ ३२१२

॥३४७॥ (ऋ० १।२३।२--३) (३२१३-३२१४) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

उभा देवा दिविस्पृशे--न्द्रवायू हवामहे ।
अस्य सोमस्य पीतये २ ३२१३
इन्द्रवायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये ।
सहस्राक्षा धियस्पती ३ ३२१४

॥३४८॥ (ऋ०१।१३५ ४--८) (३२१५--३२१९) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ७-८ अष्टिः ।

आ वां रथो नियुत्वान् वक्षदवसे ऽभि प्रयांसि सुधितानि वीतये वायो हव्यानि वीतये ।
पिबतं मध्वो अन्धसः पूर्वपेयं हि वां हितम् ।
वायवा चन्द्रेण राधसा गत--मिन्द्रश्च राधसा गतम् ४ ३२१५
आ वां धियो ववृत्युरध्वराँ उप--ममिन्दुं मर्मृजन्त वाजिन--माशुमत्यं न वाजिनम् ।
तेषां पिबतमस्मयू आ नो गन्तमिहोत्या ।
इन्द्रवायू सुतानामद्रिभिर्युवं मदाय वाजदा युवम् ५
इमे वां सोमा अप्स्वा सुता इहा--ध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वायो शुक्रा अयंसत ।
एते वामभ्यसृक्षत तिरः पवित्रमाशवः ।
युवायवोऽति रोमाण्यव्यया सोमासो अत्यव्यया ६
अति वायो ससतो याहि शश्वतो यत्र ग्रावा वदति तत्र गच्छतं गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।
वि सूनृता ददृशे रीयते घृत--मा पूर्णया नियुता याथो अध्वर--मिन्द्रश्च याथो अध्वरम् ७

अत्राह तद् वहेथे मध्व आहुतिं यमश्वत्थमुपतिष्ठन्त जायवो ऽस्मे ते सन्तु जायवः ।
साकं गावः सुवते पच्यते यवो न ते वाय उप दस्यन्ति धेनवो नाप दस्यन्ति धेनवः ८ ३२१९

॥ ३४९ ॥ (ऋ० १।४१।३)

(३२२०) गृत्समदः शौनकः । गायत्री ।

शुक्रस्याद्य गवाशिर इन्द्रवायू नियुत्वतः । आ यातं पिबतं नरा ३ ३२२०

॥ ३५० ॥ (ऋ० ४।४६।२-७)

(३२२१-३२२९) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

शतेना नो अभिष्टिभि—र्नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः । वायो सुतस्य तृम्पतम् २
आ वां सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः । वहन्तु सोमपीतये ३
रथं हिरण्यवन्धुर—मिन्द्रवायू स्वध्वरम् । आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ४
रथेन पृथुपाजसा दाश्वांसमुप गच्छतम् । इन्द्रवायू इहा गतम् ५
इन्द्रवायू अयं सुत—स्तं देवेभिः सजोषसा । पिबतं दाशुषो गृहे ६ ३२२५
इह प्रयाणमस्तु वा—मिन्द्रवायू विमोचनम् । इह वां सोमपीतये ७

॥ ३५१ ॥ (ऋ० ४।४७।२-४) अनुष्टुप् ।

इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः ।
युवां हि यन्तीन्दवो निम्नमापो न सध्र्यक् २
वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती ।
नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ३
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा ।
अस्मे ता यज्ञवाहसे—न्द्रवायू नि यच्छतम् ४ ३२२९

॥ ३५२ ॥ (ऋ० ५।५१।४, ६-७)

(३२३०-३२३२) स्वस्त्यात्रेयः । गायत्री: (६, ७) उष्णिक् ।

अयं सोमश्चमू सुतो ऽमत्रे परि षिच्यते । प्रिय इन्द्राय वायवे ४ ३२३०
इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिमर्हथः । ताञ्जुषेथामरेपसावभि प्रयः ६
सुता इन्द्राय वायवे सोमासो दध्याशिरः । निम्नं न यन्ति सिन्धवोऽभि प्रयः ७ ३२३२

॥३५३॥ (ऋ० ७।९०।५-७) (३२३३-३२४१) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

ते सत्येन मनसा दीध्यानाः स्वेन युक्तासः क्रतुना वहन्ति ।
इन्द्रवायू वीरवाहं रथं वा—मीशानयोरभि पृक्षः सचन्ते ५ ३२३३
ईशानासो ये दधते स्वर्णो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यैः ।
इन्द्रवायू सूरयो विश्वमायु—रर्वद्भिर्वीरैः पृतनासु सह्युः ६

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा　इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम　यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः　७　३२३५

॥ ३५४ ॥ (ऋ० ७।९१।२, ४-७)

उशन्ता दूता न दभाय गोपा　मासश्च पाथः शरदश्च पूर्वीः ।
इन्द्रवायू सुष्टुतिर्वामियाना　मार्डीकमीट्टे सुवितं च नव्यम्　२
यावत् तरस्तन्वो३　यावदोजो　यावन्नरश्चक्षसा दीध्यानाः ।
शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे　इन्द्रवायू सदतं बर्हिरेदम्　४
नियुवाना नियुतः स्पार्हवीरा　इन्द्रवायू सरथं यातमर्वाक् ।
इदं हि वां प्रभृतं मध्वो अग्र—मध प्रीणाना वि मुमुक्तमस्मे　५
या वां शतं नियुतो याः सहस्र—मिन्द्रवायू विश्ववाराः सचन्ते ।
आभिर्यातं सुविदत्राभिरर्वाक्　पातं नरा प्रतिभृतस्य मध्वः　६
अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा　इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम　यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः　७　३२४०

॥ ३५५ ॥ (ऋ० ७।९२।२,४)

प्र सोता जीरो अध्वरेष्वस्थात्　सोममिन्द्राय वायवे पिबध्यै ।
प्र यद् वां मध्वो अग्रियं भर—न्त्यध्वर्यवो देवयन्तः शचीभिः　२
ये वायव इन्द्रमादनास　आदेवासो नितोशनासो अर्यः ।
घ्नन्तो वृत्राणि सूरिभिः ष्याम　सासह्वांसो युधा नृभिरमित्रान्　४　३२४२

॥ ३५६ ॥ (वा० य० ३३।८६)

इन्द्रवायू सुसन्दृशा सुहवेह हवामहे ।
यथा नः सर्वऽइज्जनोऽनमीवः सङ्गमे सुमनाऽअसत् ॥ ८६ ॥ ×　३२४३

॥ ३५७ ॥ (अथर्व० ३।२०।६) वसिष्ठः । पथ्यापङ्क्तिः ।

इन्द्रवायू उभाविह सुहवेह हवामहे ।
यथा नः सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असद्दानकामश्च नो भुवत्　६　३२४४

(४) इन्द्र--मरुतश्च ।

॥ ३५८ ॥ (ऋ० १।६।५,७) (३२४५-३२४६) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

वीळु चिदारुजत्नुभि—र्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः　। अविन्द उस्रिया अनु　५　३२४५
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे　संजग्मानो अबिभ्युषा　। मन्दू समानवर्चसा　७　३२४६

× [वा० य० ७।८; ३३, ५६, ८६, ऋ० १।२।४; १०।१४१।४; अथर्व० ३।२०।६;] दै० सं० [इंद्रः] ३२१५ ।
दै० [इन्द्रः] २७

(५) मरुत्वानिन्द्रः।

॥ ३५९ ॥ (ऋ० १।२३।७-९) (३२४७-३२४९) मेधातिथिः काण्वः। गायत्री।

मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा सोमपीतये । सजूर्गणेन तृम्पतु ७
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम् ८
हत वृत्रं सुदानव इन्द्रेण सहसा युजा । मा नो दुःशंस ईशत ९ ३२४९

॥ ३६० ॥ (ऋ० १।१६५।१-१५)

(३२५०-३२६४) इंद्रः; ३, ५, ७, ९ मरुतः; १३-१५ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। त्रिष्टुप्।

कया शुभा सवयसः सनीळाः समान्या मरुतः सं मिमिक्षुः।
कया मती कुत एतास एते ऽर्चन्ति शुष्मं वृषणो वसूया १ ३२५०
कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवानः को अध्वरे मरुत आ ववर्त।
श्येनाँ इव ध्रजतो अन्तरिक्षे केन महा मनसा रीरमाम २
कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त इत्था।
सं पृच्छसे समराणः शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत् ते अस्मे ३
ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः।
आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ ४
अतो वयमन्तमेभिर्युजानाः स्वक्षत्रेभिस्तन्वः शुम्भमानाः।
महोभिरेताँ उप युज्महे न्विन्द्र स्वधामनु हि नो बभूथ ५
क्व स्या वो मरुतः स्वधासीद् यन्मामेकं समधत्ताहिहत्ये।
अहं ह्युग्रस्तविषस्तुविष्मान् विश्वस्य शत्रोरनमं वधस्नैः ६ ३२५५
भूरि चकर्थ युज्येभिरस्मे समानेभिर्वृषभ पौंस्येभिः।
भूरीणि हि कृणवामा शविष्ठेन्द्र क्रत्वा मरुतो यद् वशाम ७
वधीं वृत्रं मरुत इन्द्रियेण स्वेन भामेन तविषो बभूवान्।
अहमेता मनवे विश्वश्चन्द्राः सुगा अपश्चकर वज्रबाहुः ८
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ अस्ति देवता विदानः।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ९
एकस्य चिन्मे विभ्वस्त्वोजो या नु दधृष्वान् कृणवै मनीषा।
अहं ह्युग्रो मरुतो विदानो यानि च्यवमिन्द्र इदीश एषाम् १०
अमन्दन्मा मरुतः स्तोमो अत्र यन्मे नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र।
इन्द्राय वृष्णे सुमखाय मह्यं सख्ये सखायस्तन्वे तनूभिः ११ ३२६०

एवेदेते प्रति मा रोचमाना अनेद्यः श्रव एषो दधानाः ।
संचक्ष्या मरुतश्चन्द्रवर्णा अच्छान्त मे छदयाथा च नूनम् १२
को न्वत्र मरुतो मामहे वः प्र यातन सखीँरच्छा सखायः ।
मन्मानि चित्रा अपिवातयन्त एषां भूत नवेदा म ऋतानाम् १३
आ यद् दुवस्याद् दुवसे न कारु- रस्माञ्चक्रे मान्यस्य मेधा ।
ओ षु वर्त्त मरुतो विप्रमच्छे- मा ब्रह्माणि जरिता वो अर्चत् १४
एष वः स्तोमो मरुत इयं गी- र्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः ।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् १५ ३२६४

॥ ३६१ ॥ (ऋ० १।१७१।३-६) (३२६५-३२६८) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

स्तुतासो नो मरुतो मृळयन्तू- त स्तुतो मघवा शंभविष्ठः ।
ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वना- न्यहानि विश्वा मरुतो जिगीषा ३ ३२६५
अस्मादहं तविषादीषमाण इन्द्राद् भिया मरुतो रेजमानः ।
युष्मभ्यं हव्या निशितान्यासन् तान्यारे चकृमा मृळता नः ४
येन मानासश्चितयन्त उस्रा व्युष्टिषु शवसा शश्वतीनाम् ।
स नो मरुद्भिर्वृषभ श्रवो धा उग्र उग्रेभिः स्थविरः सहोदाः ५
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो नॄन् भवा मरुद्भिरवयातहेळाः ।
सुप्रकेतेभिः सासहिर्दधानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६ ३२६८

(६) इन्द्रामरुतौ ।

॥ ३६२ ॥ (ऋ० ८।९६।१४)
(३२६९) तिरश्चीराङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप् ।

द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्त- मुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः ।
नभो न कृष्णमवतस्थिवांस- मिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ १४ ३२६९

(७) इन्द्रासोमौ ।

॥ ३६३ ॥ (ऋ० २।३०।६) (३२७०) गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

प्र हि क्रतुं वृहथो यं वनुथो रध्रस्य स्थो यजमानस्य चोदौ ।
इन्द्रासोमा युवमस्माँ अविष्ट- मस्मिन् भयस्थे कृणुतमु लोकम् ६ ३२७०

॥ ३६४ ॥ (ऋ० ६।७२।१-५) (३२७१-३२७५) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रासोमा महि तद् वां महित्वं युवं महानि प्रथमानि चक्रथुः ।
युवं सूर्यं विविदथुर्युवं स्व१- र्विश्वा तमांस्यहतं निदश्च १

इन्द्रासोमा वासयथ उषास—मुत् सूर्यं नयथो ज्योतिषा सह ।
उप द्यां स्कम्भथुः स्कम्भनेना—ऽप्रथतं पृथिवीं मातरं वि २
इन्द्रासोमावहिमपः परिष्ठां हथो वृत्रमनु वां द्यौरमन्यत ।
प्रार्णांस्यैरयतं नदीना—मा समुद्राणि पप्रथुः पुरूणि ३
इंद्रासोमा पक्वमामास्वन्त—र्नि गवामिद् दधथुर्वक्षणासु ।
जगृभथुरनपिनद्धमासु रुशच्चित्रासु जगतीष्वन्तः ४
इन्द्रासोमा युवमङ्ग तरुत्र—मपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे ।
युवं शुष्मं नर्यं चर्षणिभ्यः सं विव्यथुः पृतनाषाहमुग्रा ५ ३२७५

॥ ३६५ ॥ (ऋ० १०।८९।५) (३२७६) रेणुर्वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

आपान्तमन्युस्तृपलप्रभर्मा धुनिः शिमीवाञ्छरुमाँ ऋजीषी ।
सोमो विश्वान्यतसा वनानि नार्वागिन्द्रं प्रतिमानानि देभुः ५ ३२७६

॥ ३६६ ॥ (ऋ० १०।१२४।९) (३२७७) अग्निः (सोमेन्द्रौ) । त्रिष्टुप् ।

बीभत्सूनां सयुजं हंसमाहु—रपां दिव्यानां सख्ये चरन्तम् ।
अनुष्टुभमनु चर्चूर्यमाण—मिन्द्रं नि चिक्युः कवयो मनीषा ९ ३२७७

॥ ३६७ ॥ (अथर्व० ८।४।१-२५)

(३२७८-३३०२) चातनः । जगती, ८-१४, १६-१७, १९, २२, २४ त्रिष्टुप्, २०, २३ भुरिक्, २५ अनुष्टुप् ।

इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उब्जतं न्यर्पयतं वृषणा तमोवृधः ।
परा शृणीतमचितो न्योषतं हतं नुदेथां नि शिशीतमत्त्रिणः १
इन्द्रासोमा समघशंसमभ्यघं तपुर्ययस्तु चरुरग्निमाँ इव ।
ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने २
इन्द्रासोमा दुष्कृतो वव्रे अन्त—रनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम् ।
यतो नैषां पुनरेकश्चनोदयत् तद्वामस्तु सहसे मन्युमच्छवः ३ ३२८०
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो वधं सं पृथिव्या अघशंसाय तर्हणम् ।
उत्तक्षतं स्वर्यं पर्वतेभ्यो येन रक्षो वावृधानं निजूर्वथः ४
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पर्य—ग्नितप्तेभिर्युवमश्महन्मभिः ।
तपुर्वधेभिरजरेभिरत्त्रिणो नि पर्शाने विध्यतं यन्तु निस्वरम् ५
इन्द्रासोमा परि वां भूतु विश्वत इयं मतिः कक्ष्याश्वेव वाजिना ।
यां वां होत्रां परिहिनोमि मेधये—मा ब्रह्माणि नृपती इव जिन्वतम् ६

प्रति स्मरेथां तुजयद्भिरेवैर्हतं द्रुहो रक्षसो भङ्गुरावतः ।
इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगं भूद्यो मा कदा चिदभिदासति द्रुहः ७
यो मा पाकेन मनसा चरन्तमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः ।
आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता ८ ३२८५

ये पाकशंसं विहरन्त एवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः ।
अहये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे ९
यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने अश्वानां गवां यस्तनूनाम् ।
रिपु स्तेन स्तेयकृद्दभ्रमेतु नि ष हीयतां तन्वा३ तना च १०
परः सो अस्तु तन्वा३ तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः ।
प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो मा दिवा दिप्सति यश्च नक्तम् ११
सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत् १२
न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम् ।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते १३ ३२९०

यदि वाहमनृतदेवो अस्मि मोघं वा देवाँ अप्यूहे अग्ने ।
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस्ते निर्ऋथं सचन्ताम् १४
अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यदि वायुस्ततप पूरुषस्य ।
अधा स वीरैर्दशभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह १५
यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह ।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट १६
प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमप द्रुहुस्तन्वं१ गूहमाना ।
ववमनन्तमव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः १७
वि तिष्ठध्वं मरुतो विक्ष्वी३च्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन ।
वयो ये भूत्वा पतयन्ति नक्तभिर्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे १८ ३२९५
प्र वर्तय दिवोऽश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशाधि ।
प्राक्तो अपाक्तो अधरादुदक्तो३ऽभि जहि रक्षसः पर्वतेन १९
एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम् ।
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदशनिं यातुमद्भ्यः २०

इन्द्रो यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्याऽविवासताम् ।
अभीदु शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्त्सत एतु रक्षसः २१
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र २२
मा नो रक्षो अभि नड्यातुमाव-दपोच्छन्तु मिथुना ये किमीदिनः ।
पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसो ऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् २३ ३३००
इन्द्र जहि पुमांसं यातुधान-मुत स्त्रियं मायया शाशदानाम् ।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम् २४
प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्र-श्च सोम जागृतम् ।
रक्षोभ्यो वधमस्यत-मशनिं यातुमद्भ्यः २५ × ३३०१

(८) इन्द्राविष्णू ।

॥ ३६८ ॥ (ऋ० १।१५५।१-३)
(३३०३-३३०५) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

प्र वः पान्तमन्धसो धियायते महे शूराय विष्णवे चार्चत ।
या सानुनि पर्वतानामदाभ्या महस्तस्थतुरर्वतेव साधुना १
त्वेषमित्था समरणं शिमीवतो-रिन्द्राविष्णू सुतपा वामुरुष्यति ।
या मर्त्याय प्रतिधीयमानमित् कृशानोरस्तुरसनामुरुष्यथः २
ता ईं वर्धन्ति मह्यस्य पौंस्यं नि मातरा नयति रेतसे भुजे ।
दधाति पुत्रोऽवरं परं पितु-र्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ३ ३३०५

॥ ३६९ ॥ (ऋ० ६।६९।१-८) (३३०६-३३१३) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

सं वां कर्मणा समिषा हिनोमी-न्द्राविष्णू अपसस्पारे अस्य ।
जुषेथां यज्ञं द्रविणं च धत्त-मरिष्टैर्नः पथिभिः पारयन्ता १
या विश्वासां जनितारा मतीना-मिन्द्राविष्णू कलशा सोमधाना ।
प्र वां गिरः शस्यमाना अवन्तु प्र स्तोमासो गीयमानासो अर्कैः २
इन्द्राविष्णू मदपती मदाना-मा सोमं यातं द्रविणो दधाना ।
सं वामञ्जन्त्वक्तुभिर्मतीनां सं स्तोमासः शस्यमानास उक्थैः ३
आ वामश्वासो अभिमातिषाह इन्द्राविष्णू सधमादो वहन्तु ।
जुषेथां विश्वा हवना मतीना-मुप ब्रह्माणि शृणुतं गिरो मे ४

× ऋ० ७।१०४।१-२५

इन्द्राविष्णू तत् पनयाय्यं वां सोमस्य मद उरु चक्रमाथे।
अकृणुतमन्तरिक्षं वरीयो ऽप्रथतं जीवसे नो रजांसि ५ ३३१०
इन्द्राविष्णू हविषा वावृधाना ऽग्राद्वाना नमसा रातहव्या।
घृतासुती द्रविणं धत्तमस्मे समुद्रः स्थः कलशः सोमधानः ६
इन्द्राविष्णू पिबतं मध्वो अस्य सोमस्य दस्रा जठरं पृणेथाम्।
आ वामन्धांसि मदिराण्यग्मन्नुप ब्रह्माणि शृणुतं हवं मे ७
उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनोः।
इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम् ८ ३३१३

॥ ३७० ॥ (ऋ० ७।९९।४-६) (३३१४-३३१६) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः त्रिष्टुप्।

उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम्।
दासस्य चिद् वृषशिप्रस्य माया जघ्नथुर्नरा पृतनाज्येषु ४
इन्द्राविष्णू दृंहिताः शम्बरस्य नव पुरो नवतिं च श्नथिष्टम्
शतं वर्चिनः सहस्रं च साकं हथो अप्रत्यसुरस्य वीरान् ५
इयं मनीषा बृहती बृहन्तो रुक्रमा तवसा वर्धयन्ती।
ररे वां स्तोमं विदथेषु विष्णो पिन्वतमिषो वृजनेष्विन्द्र ६ ३३१६

(९) इन्द्राबृहस्पती।

॥ ३७१ ॥ (ऋ० ४।४९।१-६) (३३१७-३३२४) वामदेवो गौतमः। गायत्री।

इदं वामास्ये हविः प्रियमिन्द्राबृहस्पती। उक्थं मदश्च शस्यते १
अयं वां परि षिच्यते सोम इन्द्राबृहस्पती। चारुर्मदाय पीतये २
आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम्। सोमपा सोमपीतये ३
अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनम्। अश्वावन्तं सहस्रिणम् ४ ३३२०
इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर्हवामहे। अस्य सोमस्य पीतये ५
सोममिन्द्राबृहस्पती पिबतं दाशुषो गृहे। मादयेथां तदोकसा ६

॥ ३७२ ॥ (४।५०।१०-११) त्रिष्टुप्, १० जगती।

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पते ऽस्मिन् यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू।
आ वां विशन्त्विन्दवः स्वाभुवो ऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम् १०
बृहस्पत इन्द्र वर्धतं नः सचा सा वां सुमतिर्भूत्वस्मे।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ११ ३३२४

॥ ३७३ ॥ (ऋ० ७।९७-९८।१०, ७) (३३२५) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७ ३३२५

॥ ३७४ ॥ (ऋ० ८।९६।१५)
(३३२६) तिरश्चीराङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप् ।

अध द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थे ऽधारयत् तन्वं तित्विषाणः ।
विशो अदेवीरभ्या३चरन्ती बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे १५ ३३२६

(१०) देव-भूमि-बृहस्पतीन्द्राः ।

॥ ३७५ ॥ (ऋ० ६।४७।२०) (३३२७) गर्गो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

अगव्यूति क्षेत्रमागन्म देवा उर्वी सती भूमिरंहूरणाभूत् ।
बृहस्पते प्र चिकित्सा गविष्टा वित्था सते जरित्र इन्द्र पन्थाम् २० ३३२७

॥ ३७६ ॥ (अथर्व- ७।५१।१) (३३२८) अङ्गिराः । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चा दुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इंद्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु १ ३३२८

॥ ३७७ ॥ (अथर्व० २०।१३।१) (३३२९) जगती ।

इंद्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पते ऽस्मिन्यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू ।
आ वां विशन्त्विन्दवः स्वाभुवोऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम् १ ३३२९

(११) इन्द्रापूषणौ ।

॥ ३७८ ॥ (ऋ० ६।५७।१-६) (३३३०-३३३५) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गायत्री ।

इंद्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये । हुवेम वाजसातये १ ३३३०
सोममन्य उपासदत् पातवे चम्वोः सुतम् । करम्भमन्य इच्छति २
अजा अन्यस्य वह्नयो हरी अन्यस्य संभृता । ताभ्यां वृत्राणि जिघ्नते ३
यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः । तत्र पूषाभवत् सचा ४
तां पूष्णः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव । इंद्रस्य चा रभामहे ५
उत पूषणं युवामहे ऽभीशूंरिव सारथिः । मह्या इंद्रं स्वस्तये ६ ३३३५

॥३७९॥ (अथर्व० ६।३।१) (३३३६) अथर्वा । पथ्या बृहती ।

पात नं इंद्रापूषणा ऽदितिः पान्तु मरुतः । अपां नपात्सिंधवः सप्त पातन पातु नो विष्णुरुत द्यौः १ ३३३६

(१२) ऋणंचयेन्द्रौ।

॥३८०॥ (ऋ० ५।३०।१२-१५) (३३३७-३३४०) बभ्रुरात्रेयः। त्रिष्टुप्।

भद्रमिदं रुशमा अग्ने अक्रन् गवां चत्वारि ददतः सहस्रा।
ऋणंचयस्य प्रयता मघानि प्रत्यग्रभीष्म नृतमस्य नृणाम् १२
सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं गवां सहस्रै रुशमासो अग्ने।
तीव्रा इन्द्रममन्दुः सुतासो ऽक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाः १३
औच्छत् सा रात्री परितक्म्या याँ ऋणंचये राजनि रुशमानाम्।
अत्यो न वाजी रघुरज्यमानो बभ्रुश्चत्वार्यसनत् सहस्रा १४
चतुः सहस्रं गव्यस्य पश्वः प्रत्यग्रभीष्म रुशमेष्वग्ने।
घर्मश्चित् तप्तः प्रवृजे य आसीदयस्मयस्तम्वादाम विप्राः १५ ३३४०

(१३) इन्द्र ऋभवश्च।

॥३८१॥ (ऋ० ३।६०।५-७) (३३४१-३३४३) विश्वामित्रो गाथिनः। जगती।

इन्द्र ऋभुभिर्वाजवद्भिः समुक्षितं सुतं सोममा वृषस्वा गभस्त्योः।
धियेषितो मघवन् दाशुषो गृहे सौधन्वनेभिः सह मत्स्वा नृभिः ५
इन्द्र ऋभुमान् वाजवान् मत्स्वेह नो ऽस्मिन् त्सवने शच्या पुरुष्टुत।
इमानि तुभ्यं स्वसराणि येमिरे व्रता देवानां मनुषश्च धर्मभिः ६
इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभिर्वाजयन्निह स्तोमं जरितुरुप याहि यज्ञियम्।
शतं केतेभिरिषिरेभिरायवे सहस्रणीथो अध्वरस्य होमनि ७ ३३४३

॥३८२॥ (ऋ० ८।९३।३४) (३३४४) सुकक्ष आङ्गिरसः। गायत्री।

इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम्। वाजी ददातु वाजिनम् ३४ ३३४४

(१४) इन्द्रोषसौ।

॥३८३॥ (ऋ० ४।३०।९-११) (३३४५-३३४७) वामदेवो गौतमः। गायत्री।

दिवश्चिद् घा दुहितरं महान् महीयमानाम्। उषासमिन्द्र सं पिणक् ९ ३३४५
अपोषा अनसः सरत् संपिष्टादह बिभ्युषी। नि यत् सीं शिश्नथद् वृषा १०
एतदस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्या। ससार सीं परावतः ११ ३३४७

(१५) इन्द्राश्वौ।

॥३८४॥ (ऋ० ४।३२।२३-२४) (३३४८-३३४९) वामदेवो गौतमः। गायत्री।

कनीनकेव विद्रधे नवे द्रुपदे अर्भके। बभ्रू यामेषु शोभेते २३
अरं म उस्रयाम्णे ऽरमनुस्रयाम्णे। बभ्रू यामेष्वस्रिधा २४ ३३४९

(१६) इन्द्रस्त्वष्टा।

॥३८५॥ (ऋ० २।३२।२-३) (३३५०-३३५१) गृत्समदः शौनकः। जगती।

मा नो गुह्या रिप आयोरहन् दभन् मा न आभ्यो रीरधो दुच्छुनाभ्यः।
मा नो वि यौः सख्या विद्धि तस्य नः सुम्नायता मनसा तत् त्वेमहे २ ३३५०
अहेळता मनसा श्रुष्टिमा वह दुहानां धेनुं पिप्युषीमसश्चतम्।
पद्याभिराशुं वचसा च वाजिनं त्वां हिनोमि पुरुहूत विश्वहा ३ ३३५१

(१७) इन्द्रो गावश्च।

॥३८६॥ (ऋ० ६।२८।२,८) (३३५२-३३५३) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। जगती, ८ अनुष्टुप्।

इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्ष—त्युपेद् ददाति न स्वं मुषायति।
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धय—न्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् २
उपेदमुपपर्चन—मासु गोषूप पृच्यताम्। उप ऋषभस्य रेत—स्युपेन्द्र तव वीर्ये ८ ३३५३

(१८) इन्द्राकुत्सौ।

॥३८७॥ (ऋ० ५।३१।९) (३३५४) अवस्युरात्रेयः। त्रिष्टुप्।

इन्द्राकुत्सा वहमाना रथेना—ऽऽ वामत्या अपि कर्णे वहन्तु।
निः षीमद्भ्यो धमथो निः षधस्था—न्मघोनो हृदो वरथस्तमांसि ९ ३३५४

(१९) इन्द्रद्यावापृथिव्यः।

॥३८८॥ (ऋ० १०।५९।१०) (३३५५) बन्धुःश्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः। त्रिष्टुप् (पंक्त्युत्तरा)।

समिन्द्रेरय गामनड्वाहं य आवहदुशीनराण्या अनः।
भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् १० ३३५५

(२०) इन्द्रापर्वतौ।

॥३८९॥ (ऋ० ३।५३।१) (३३५६) गाथिनो विश्वामित्रः। त्रिष्टुप्।

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः।
वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिळया मदन्ता १ ३३५६

(२१) इन्द्रः, सोमो, ब्रह्मणस्पतिर्दक्षिणा च।

॥३९०॥ (ऋ० १।१८।४-५) (३३५७-३३५८) मेधातिथिः काण्वः। गायत्री।

स घा वीरो न रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः। सोमो हिनोति मर्त्यम् ४
त्वं तं ब्रह्मणस्पते सोम इन्द्रश्च मर्त्यम्। दक्षिणा पात्वंहसः ५ ३३५८

(२२) इन्द्राब्रह्मणस्पती।

॥३९१॥ (ऋ० २।२४।१२) (३३५९) गृत्समदः शौनकः। त्रिष्टुप्।

विश्वं सत्यं मघवाना युवोरिदा—पश्चन प्र मिनन्ति व्रतं वाम्।
अच्छेन्द्राब्रह्मणस्पती हविर्नो ऽन्नं युजेव वाजिना जिगातम् १२ ३३५९

॥३९२॥ (ऋ० ७।९७।३,९) (३३६०-३३६१) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। त्रिष्टुप्।

तमु ज्येष्ठं नमसा हविर्भिः सुशेवं ब्रह्मणस्पतिं गृणीषे।
इन्द्रं श्लोको महि दैव्यः सिषक्तु यो ब्रह्मणो देवकृतस्य राजा ३ ३३६०
इयं वां ब्रह्मणस्पते सुवृक्ति—र्ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे अकारि।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ९ ३३६१

(२३) दुन्दुभीन्द्रौ।

॥३९३॥ (ऋ० ६।४७।३१) (३३६२) गर्गो भारद्वाजः। त्रिष्टुप्।

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद् दुन्दुभिर्वावदीति।
समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरो ऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु ३१ ३३६२

(२४) इन्द्रसूर्यादयः।

॥३९४॥ (अथर्व० १९।७०।१) (३३६३) ब्रह्मा। गायत्री।

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम्। सर्वमायुर्जीव्यासम् १ ३३६३

इन्द्रदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[३] १।३।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः ।
सुते दधिष्व नश्चनः ।
(२७०८) १०।१०४।६ (अष्टको वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि पीतये सुतस्य ।
[४] १।४।१ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
सुदुघामिव गोदुहे ।
जुहूमसि... ।
(५१८) ८।५२ (वालखिल्यं ४)।४ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)
सुदुघामिव गोदुहे जुहूमसि ।
[६] १।४।३ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
विद्याम सुमतीनाम् ।
(२६७८) १०।८९।१७ (रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
विद्याम सुमतीनां नवानाम् ।
[७] १।४।४ **यस्ते सखिभ्य आ वरम् ।**
९।४५।२ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
देवान्सखिभ्य आ वरम् ।
[९] १।४।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ।
८।४७।५ (त्रितः आप्त्यः । आदित्याः)
[११] १।४।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
प्रावो वाजेषु वाजिनम् ।
(१०८९) १।१७६।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
[१३] १।४।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
यो रायो३वनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा ।
तस्मा इन्द्राय गायत ।
(९९२) ८।३२।१३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
यो रायो३वनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा ।
तमिन्द्रमभि गायत ।
(१७) १।५।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
तस्मा इन्द्राय गायत ।
[१४] १।५।१ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
इन्द्रमभि प्र गायत ।
(२३९७) ८।९२।१ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[१५] १।५।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम् ।
इन्द्रं सोमे सचा सुते ।
(२०८८) ६।४५।२९ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
पुरूतमं पुरूणां ।
१।२४।३ (शुनःशेपः आजीगर्तिः कृत्रिमो देवरातो वैश्वामित्रो वा । सविता)
ईशानं वार्याणाम् ।
(अग्निः १४२१) ८।७१।१३ (सुदीति-पुरुमीळ्हावाङ्गिरसौ, तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
ईशे यो वार्याणाम् ।
१०।९।५ (त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः सिन्धुद्वीप आम्बरीषो वा। आपः)
ईशाना वार्याणां ।
(४७१) ८।४५।२९ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रं सोमे सचा सुते ।
[१७] १।५।४ (१३) १।४।१०
[१८] १।५।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये
सोमासो दध्याशिरः ।
(२४५१) ८।९३।२२ (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये ।
१।१३७।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
सोमासो दध्याशिरः ।
५।५१।७ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वेदेवाः)
सोमासो दध्याशिरः ।
(२२३८) ७।३२।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
९।२२।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
९।६३।१५ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
९।१०१।१२ (मनुः सांवरणः । पवमानः सोमः)
[२१] १।५।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
त्वां स्तोमा अवीवृधन्त्वामुक्था शतक्रतो ।
त्वां वर्धन्तु नो गिरः ।
(अग्निः १३६१) ८।४४।१९ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
त्वामग्ने मनीषिणस्त्वां हिन्वन्ति चित्तिभिः ।
त्वां वर्धन्तु नो गिरः ।

[२३] १।५।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
ईशानो यवया वधम्।
(२८१८) १०।१५२।५ (शासो भारद्वाजः। इन्द्रः)
वरीयो यवया वधम्।
[३०] १।७।३ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
आ सूर्यं रोहयद्दिवि।
... ... **ऐरयत्।**
(१३९०) ८।८९।७ (नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ। इन्द्रः)
ऐरय आ सूर्यं रोहयो दिवि।
९।१०७।७ (सप्तर्षयः। पवमानः सोमः)
आ सूर्यं रोहयो दिवि।
(अग्निः १७०६) १०।१५६।४ (केतुराग्नेयः। अग्निः)
आ सूर्यं रोहयो दिवि।
[३१] १।७।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
उग्र उग्राभिरूतिभिः।
(१००४) १।१२९।५ (परुच्छेपो दैवोदासिः। इन्द्रः)
उग्राभिरुग्रोतिभिः।
[३५] १।७।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
ईशानो अप्रतिष्कुतः।
(९४३) १।८४।७ (गोतमो राहूगणः। इन्द्रः)
ईशानो अप्रतिष्कुतः।
[३६] १।७।९ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
य एकश्चर्षणीनां।
(१०८६) १।१७६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः। इन्द्रः)
[३७] १।७।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
... **हवामहे जनेभ्यः।**
अस्माकमस्तु केवलः।
(अग्निः १९१५) १।१३।१० (मेधातिथिः काण्वः। त्वष्टा)
... **ह्वये।**
अस्माकमस्तु केवलः।
[४१] १।८।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
सासह्याम पृतन्यतः।
(३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः। इन्द्राग्नी)
सासह्याम पृतन्यतो।
९।६१।२९ (अमहीयुराङ्गिरसः। पवमानः सोमः)
[४२] १।८।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
द्यौर्न प्रथिना शवः।
(५४४) ८।५६।(वालखिल्यं ८)।१ (पृषध्रः काण्वः। इन्द्रः)
[४४] १।८।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
समुद्र इव पिन्वते।

(२९१) ८।११।५ (पर्वतः काण्वः। इन्द्रः)
[५०] १।९।३ **स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे।**
(अग्निः ८६५) ५।१४।६ (सुतंभर आत्रेयः। अग्निः)
स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम्।
[५३] १।९।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
राये रभस्वतः।
तुविद्युम्न यशस्वतः।
(अग्निः ५९९) ३।१६।६ (उत्कीलः कात्यः। अग्निः)
सं राया भूयसा सृज मयोभुना तुविद्युम्न यशस्वता।
[५५] १।९।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
अस्मे धेहि श्रवो बृहद्।
(अग्निः ८७) १।४४।२ (प्रस्कण्वः काण्वः। अग्निः, अश्विनौ, उषा)
(६०९) ८।६५।९ (प्रगाथः काण्वः। इन्द्रः)
[५७] १।९।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
इन्द्राय शूषमर्चति।
१०।९६।२ (बरुराङ्गिरसः सर्वहरिर्वा ऐन्द्रः। हरिः)
इन्द्राय शूषं हरिवन्तमर्चत।
(२७७८) १०।१३३।१ (सुदाः पैजवनः। इन्द्रः)
[६१] १।१०।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
ब्रह्म च नो वसो सचेन्द्र यज्ञं च वर्धय।
१०।१४१।६ (अग्निस्तापसः। विश्वेदेवाः)
ब्रह्म यज्ञं च वर्धय।
[६२] १।१०।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
उक्थमिन्द्राय शंस्यं।
(१७६४) ५।३९।५ (अत्रिभौमः। इन्द्रः)
[६४] १।१०।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
इन्द्र त्वादातमिद्यशः।
कृणुष्व राधो अद्रिवः।
(१३६९) ३।४०।६ (विश्वामित्रो गाथिनः। इन्द्रः)
इन्द्र त्वादातमिद्यशः।
(५८९) ८।६४।१ (प्रगाथः काण्वः। इन्द्रः)
कृणुष्व ... ...।
[६५] १।१०।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
ऋघायमाणमिन्वतः।
जेषः स्वर्वतीरपः।
(१०८५) १।१७६।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः। इन्द्रः)
ऋघायमाण इन्वसि।
(३११०) ८।४०।१० (नाभाकः काण्वः। इन्द्राग्नी)
तं शिशीता सुवृक्तिभिस्त्वेषं सत्वानमृग्मियम्।

उतो नु चिद्य ओजसा शुष्णस्याण्डानि भेदति
जेषत्स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥
(३२११) ८।४०।११ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
तं शिशीता स्वध्वरं सत्यं सत्वानमृत्वियम् ।
उतो नु चिद्य ओहत आण्डा शुष्णस्य भेदत्यजैः
स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥
[६७] १।१०।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं ।
(१७३८) ५।३५।३ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
वृषन्तमस्य हूमहे ।
[७०] १।११।१ (जेता माधुच्छन्दसः । इन्द्रः)
रथीतमं रथीनां ।
(४४९) ८।४५।७ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
रथीतमो रथीनाम् ।
[७१] १।११।२ (जेता माधुच्छन्दसः । इन्द्रः)
जेतारमपराजितम् ।
(अग्निः ९१६) ५।२५।६ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
१।११।८ (जेता माधुच्छन्दसः । इन्द्रः)
इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनूषत ।
(६२८) ८।७६।१ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रमीशानमोजसा ।
(३०६२) ६।६०।७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
गृणाभिमि३ऽभि स्तोमा अनूषत ।
१।१५।१ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः [ऋतुदेवता])
त्वा विशन्त्विन्दवः ।
(२४१८) ८।९२।२२ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)
आ त्वा ... ।
[८०] १।१६।३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
(२६०) ८।३।५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ।
(१३८५) ३।४२।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे ।
(४०८) ८।१७।१५ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
(२४०१) ८।९२।५ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
(९८६) ८।९७।११ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
९।१२।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
[८१] १।१६।४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र ।
(१३८२) ३।४२।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम् ।
हरिभ्यां...... ।
५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
उप नः सुतमा गतं ।
[८२] १।१६।५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
आ गह्युपेदं सवनं सुतम् ।
(३००५) १।२१।४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी)
उपेदं सवनं सुतम् ।
इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ।
(३०६४) ६।६०।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
आ गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम् ।
इन्द्राग्नी...... ।
[८३] १।१६।६ इमे सोमास इन्दवः ।
९।४६।३ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
एते सोमास इन्दवः ।
[८५] १।१६।८ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
वृत्रहा सोमपीतये ।
(२४४९) ८।९३।२० (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[८६] १।१६।९ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
सेमं नः काममा पृण ।
(५९४) ८।६४।६ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
अस्माकं काममा पृण ।
[६८८-६९१] १।२८।१-४ शुनःशेप आजीगर्तिः स कृत्रिमो विश्वामित्रो देवरातः । इन्द्रः)
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः ।
[६९२] १।२९।१ (शुनः शेप आजीगर्तिः । इन्द्रः)
अनाशस्ताइव स्मसि ।
आ तू न इन्द्र शंसय ।
२।४१।१६ (गृत्समदः शौनकः । सरस्वती)
अप्रशस्ताइव स्मसि प्रशस्तिम् ।
[६९३] १।२९।२ (शुनः शेप आजीगर्तिः । इन्द्रः)
शिप्रिन् वाजानां पते ।
आ तू न इन्द्र शंसय ।

(२०६९) ६।४५।१० (शंयुर्बार्हस्पत्यः। इन्द्रः)
इन्द्र वाजानां पते।
[७०५] १।३०।७ (शुनःशेप आजीगर्तिः। इन्द्रः)
सखाय इन्द्रमूतये।
(४१७) ८।२१।९ (सोभरिः काण्वः। इन्द्रः)
[७०६] १।३०।८ (शुनःशेप आजीगर्तिः। इन्द्रः)
सहस्रिणीभिरूतिभिः।
(२७८८) १०।१३४।४ (पूर्वार्धः) मान्धाता यौवनाश्वः। इन्द्रः)
[७०७] १।३०।९ (शुनःशेप आजीगर्तिः। इन्द्रः)
अनु प्रत्नस्यौकसो। यं ते पूर्व ...... ॥
(२३२०) ८।६९।१८ (प्रियमेध आङ्गिरसः। इन्द्रः)
अनु प्रत्नस्यौकसः। पूर्वा......।
[७०८] १।३०।१० (शुनःशेप आजीगर्तिः। इन्द्रः)
सखे वसो जरितृभ्यः।
(१४३९) ३।५१।६ (विश्वामित्रो गाथिनः। इन्द्रः)
सखे वसो जरितृभ्यो वयो धाः।
(अग्निः १४१७) ८।७१।९ (सुदीति-पुरुमीळ्हावाङ्गिरसौ तयोर्वान्यतरः। अग्निः)
[७१५] १।३२।१ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। इन्द्रः)
इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं।
(१२१९) २।२१।३ (गृत्समदः शौनकः। इन्द्रः)
इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या।
[७१७] १।३२।३ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। इन्द्रः)
त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य।
अहन्नेनं प्रथमजामहीनाम्।
(११६२) २।१५।१ (गृत्समदः शौनकः। इन्द्रः)
त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्यास्य मदे अहिमिन्द्रो जघान।
[७१८] १।३२।४ आत्सूर्यं जनयन्द्यामुषासं।
(१९७२) ६।३०।५ साकं सूर्यं—।
[७१९] १।३२।५ अहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः।
(२६७५) १०।८९।१४ पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते।
[७२६] १।३२।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। इन्द्रः)
अवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून्।
(११३३) २।१२।१२ (गृत्समदः शौनकः। इन्द्रः)
अवासृजत् सर्तवे—।
[७२९] १।३२।१५ अरान्न नेमिः परि ता बभूव।
(अग्निः ३१३) १।१४१।९ (दीर्घतमा औचथ्यः। अग्निः)
अरान्न नेमिः परिभूरजायथाः।
[७३४] १।३३।५ प्र यद्दिवो हरिवः स्थातरुग्र।
(१९९५) ६।४१।३ एवं पिब हरिवः स्थातरुग्र।

[७४१] १।३३।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। इन्द्रः)
यावत्तरो मघवन् यावदोजो।
(३२३७) ७।९१।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्रवायू)
यावत्तरस्तन्वो३ यावदोजो।
[७४३] १।३३।१४ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। इन्द्रः)
आवः कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन् प्रावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम्।
(१०७३) १।१७४।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। इन्द्रः)
वह कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन्।
(१९५०) ६।२६।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। इन्द्रः)
आवो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम्।
[७४७] १।५१।३ (सव्य आङ्गिरसः। इन्द्रः)
त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपोत्।
९।८६।२३ (पृश्नयोऽजाः। पवमानः सोमः)
सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप।
[७५०] १।५१।६ अरन्धयोऽतिथिग्वाय शम्बरम्।
(१०१७) १।१३०।७ अतिथिग्वाय शम्बरम्।
[७५२] १।५१।८ शाकी भव यजमानस्य चोदिता।
(२५९०) १०।४९।१ (वैकुण्ठ इन्द्रः। इन्द्रः)
अहं भुवं यजमानस्य चोदिता।
[७५७] १।५१।१३ (सव्य आङ्गिरसः। इन्द्रः)
— सुन्वते।
विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या।
(९९६) ८।१००।६ (नेमो भार्गवः। इन्द्रः)
विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या ... ... सुन्वते।
१०।३९।४ (घोषा काक्षीवती। अश्विनौ)
विश्वेत्ता वां सवनेषु प्रवाच्या।
[७६०] १।५२।१ एन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः।
१।१६८।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। मरुतः)
मंह ववृत्यामवसे—।
[७६१] १।५२।२ इन्द्रो यद्वृत्रमवधीन्नदीवृतम्।
(३१३)८।१२।२६ यदा वृत्रं नदीवृतं शवसा वज्रिन्नवधीः।
[७६४,७७३] १।५२।५,१४ अभि (१४ नोत) स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो।
[७७४] १।५२।१५ (सव्य आङ्गिरसः। इन्द्रः)
विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा।
(८४५) १।१०३।७ (कुत्स आङ्गिरसः। इन्द्रः)
[७८५] १।५३।११ (सव्य आङ्गिरसः। इन्द्रः)
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः।

(अग्निः १६७३) १०।११५।८ (उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः। अग्निः)

[७८८] १।५४।३ **स्वक्षत्रं** यस्य धृषतो **धृषन्मनः** ।

(१७३९) ५।३५।४ **स्वक्षत्रं** ते **धृषन्मनः** ।

[७८९] १।५४।४ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)

त्वं दिवो **बृहतः** सानु कोपयोऽव **त्मना धृषता**

शम्बरं भिनत् ।

(२१३८) ७।१८।२० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

आव त्मना बृहतः शम्बरं भेत् ।

[७९६] १।५४।११ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)

रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन् राये ।

१०।६१।२२ (नाभानेदिष्ठो मानवः । विश्वेदेवाः)

— सूरीन् ।

[७९८] १।५५।२ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)

इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते ।

(२९९) ८।१२।१२ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)

इन्द्रः सोमस्य पीतये ।

[८०६] १।५६।२ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)

समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।

४।५५।६ (वामदेवो गौतमः । विश्वेदेवाः)

[८०८] १।५६।४ इन्द्रं **सिषक्त्युषसं न सूर्यः** ।

९।८४।२ (प्रजापतिर्वाच्यः । पवमानः सोमः)

इन्दुः **सिषक्त्युषसं न सूर्यः** ।

[८०९] १।५६।५ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)

अहन् वृत्रं निरपामौब्जो अर्णवम् ।

१।८५।९ (गोतमो राहूगणः । मरुतः)

अहन् वृत्रं निरपामौब्जदर्णवम् ।

[८६०] १।६१।५ अस्मा इदु **सप्तिमिव श्रवस्या** ।

९।९६।१६ (प्रतर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः)

अभि वाजं **सप्तिरिव श्रवस्या** ।

[८७३] १।६२।२ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)

येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो

गा अविन्दन् ।

९।९७।३९ (पराशरः शाक्त्यः । पवमानः सोमः)

येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि

गा अद्रिमुष्णन् ।

[८७४] १।६२।३ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)

बृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद्गाः ।

१०।६८।११ (अयास्य आङ्गिरसः । बृहस्पतिः)

[८८३] १।६२।१२ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)

शिक्षा शचीवस्तव नः शचीवभिः ।

(१३०) ८।२।१५ (मेधातिथिः काण्वः

प्रियमेधश्चाङ्गिरसः । इन्द्रः)

शिक्षा शचीवः शचीभिः ।

[८९१] १।६३।७ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)

अंहो राजन् **वरिवः पूरवे कः** ।

(१५५३) ४।२१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

सम्राड्हन्ता वृत्रं **वरिवः पूरवे कः** ।

[९००-९१६] १।८०।१-१६ **अर्चन्ननु स्वराज्यम्** ।

[९०५] १।८०।६ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)

जिघ्नते **वज्रेण शतपर्वणा** ।

(२४८) ८।६।६ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)

वज्रेण शतपर्वणा । शिरो बिभेद ... ...॥

(६२९) ८।७६।२ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)

आभिनच्छिरः ।

वज्रेण शतपर्वणा ।

(२३८६) ८।८९।३ (नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ । इन्द्रः)

वृत्रं **हनति** वृत्रहा शतक्रतुर्**वज्रेण शतपर्वणा** ।

[९०७] १।८०।८ महत्त **इन्द्र वीर्यं** ।

(५३९) ८।५५। (वाल० ७) १ भूरीदिन्द्रस्य **वीर्यम्** ।

[९०८] १।८०।९ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)

इन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ।

(२३१२) ८।६९।९ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[९०९] १।८०।१० महत्त**दस्य पौंस्यं** ।

(५८०) ८।६३।३ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)

स्तुषे **तदस्य पौंस्यम्** ।

["] १।८०।१० (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)

वृत्रं जघन्वाँ असृजद् ।

(१५१५) ४।१८।७ (वामदेवो गौतमः अदितिः

ऋषिका । इन्द्रः, वामदेवः)

... असृजद्धि सिन्धून् ।

(१५२९) ४।१९।८ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

[९१०] १।८१।५ **आ पप्रौ पार्थिवं रजो** ।

६।६१।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सरस्वती)

आपप्रुषी पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम् ।

["] १।८१।५ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)

न त्वावाँ इन्द्र कश्चन **न जातो न जनिष्यते** ।

(२२५७) ७।३२।२३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

न त्वावाँ अन्यो दिव्यो **न** पार्थिवो **न जातो**

न जनिष्यते ।

[९१०] १।८१।५ अति विश्वं ववक्षिथ ।
(८३५) १।१०२।८ अतीदं विश्वं भुवनं ववक्षिथ ।
[९१३] १।८१।८ अथा नोऽविता भव ।
१।९१।९ (गोतमो राहूगणः । सोमः)
ताभिर्नोऽविता भव ।
[९१४] १।८१।९ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
अदाशुषां तेषां नो वेद आ भर ।
(अग्निः ८०६) ५।६।६ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
विश्वं —
(२७७९) १०।१३३।२ (सुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
विश्वं पुष्यसि वार्यं ।
(४५७) ८।४५।१५ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
अदाशुरिः ... ।
तस्य नो वेद आ भर ।
[९१५-१९] १।८२।१-५ योजा न्विन्द्र ते हरी ।
[९१६] १।८२।२ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
विप्रा नविष्ठया मती ।
८।२५।२४ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
[९१७] १।८२।३ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
सुसंदृशं त्वा वयं ।
१०।१५८।५ (चक्षुः सौर्यः । सूर्यः)
[९३१] १।८३।१ अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति ।
२।२५।४ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
स सत्वभिः प्रथमो गोषु गच्छति ।
[९३८] १।८४।२ ऋषीणां च स्तुतीरुप ।
(३९७) ८।१७।४ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)
अस्माकं सुष्टुतीरुप ।
[९३९] १।८४।३ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ।
(१३३५) ३।३७।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
अर्वाचीनं सु ते मन ।
इन्द्र कृण्वन्तु ... ।
[९४०] १।८४।४ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
इममिन्द्र सुतं पिब ।
(२७८) ८।६।३६ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
[९४३] १।८४।७ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
वसु मर्ताय दाशुषे ।
९।९८।४ (अम्बरीषो वार्षागिरः ऋजिश्वा भारद्वाजश्च । पवमानः सोमः)

[९४३] १।८४।७ ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ।
(३५) १।७।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
ईशानो अप्रतिष्कुतः ।
[९४५] १।८४।९ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
सुतावाँ आविवासति ।
(९७९) ८।९७।४ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
सुतावाँ आ विवासति ।
[९४६-९४८] १।८४।१०-१२ वस्वीरनु स्वराज्यम् ।
[९४७] १।८४।११ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
(२३०६) ८।६९।३ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
ता अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
[९४९] १।८४।१३ जघान नवतीर्नव ।
९।६१।१ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
अवाहन्नवतीर्नव ।
[९५०] १।८४।१४ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
पर्वतेष्वपश्रितम् ।
५।६१।१९ (श्यावाश्व आत्रेयः । रथवीतिर्दार्भ्यः)
[९५५] १।८४।१९ न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डिता ।
(६२५) ८।६६।१३ (कलिः प्रागाथः । इन्द्रः)
नहि त्वदन्यः पुरुहूत कश्चन मघवन्नस्ति मर्डिता ।
[९५७-९७१] १।१००।१-१५ (वार्षागिराः ऋज्राश्वाऽम्बरीष-सहदेव-भयमान-सुराधसः । इन्द्रः)
मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ।
[९६७] १।१००।११ (ऋज्राश्वाऽम्बरीष० । इन्द्रः)
अपां तोकस्य तनयस्य जेषे ।
(२०५३) ६।४४।१८ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
[९६८] १।१००।१२ (ऋज्राश्वाऽम्बरीष० । इन्द्रः)
सहस्रचेताः शतनीथ ऋभ्वा ।
(अग्निः १६३१) १०।६९।७ (सुमित्रो वाध्र्यश्वः । अग्निः)
सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभ्वा ।
[९७१] १।१००।१५ आपश्चन शवसो अन्तमापुः ।
१।१६७।९ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । मरुतः)
आरात्ताच्चिच्छवसो अन्तमापुः ।
[९७५] १।१००।१९ (ऋज्राश्वाऽम्बरीष० । इन्द्रः)
(८३८) १।१०२।११ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिह्वृताः सनुयाम वाजम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥

[८२३] १।१०१।१-७ मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ।
[८२४-२५] १।१०१।८-९ त्वाया हविश्चकृमा सत्यराधः ।
(९ ब्रह्मवाहः)
[८३१] १।१०२।४ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र शत्रूणां
मघवन् वृष्ण्या रुज ।
(२०१३) ६।४४।१८ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
मघवन्निन्द्र पुरुभ्यस्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः।
[८३५] १।१०२।८ अतीदं विश्वं भुवनं ववाक्षिथ ।
(९२०) १।८१।५ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
अति विश्वं ववाक्षिथ ।
["] १।१०२।८ (कुत्स आङ्गिरस । इन्द्रः)
अशत्रुरिन्द्र जनुषा सनादसि ।
(४२१) ८।२१।१३ (सोभरिः काण्वः । इन्द्रः)
अनापिरिन्द्र -- ।
(१७६९) १०।१३३।२ (सुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे ।
[८३८] १।१०२।११ = (९७५) १।१००।१०.
[८४०] १।१०३।२ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च ।
(११६३) २।१५।२ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
[८४५] १।१०३।७=(७७४) १।५२।१५
[८४७] १।१०४।१ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
योनिष्ट इन्द्र निषदे अकारि तमा ।
(२१८६) ७।२४।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
इन्द्र सदने अकारि तमा ।
[८५४] १।१०४।८ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा ।
७।४६।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । रुद्रः)
मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा।
[८५५] १।१०४।९ उरुव्यचा जठर आ वृषस्व ।
१०।९६।१३ (बरुराङ्गिरसः, सर्वहरिर्वा ऐन्द्रः । हरिः)
सत्रा वृषञ्जठर आ वृषस्व
[१००१] १।१२९।२ धूमत्यं न वाजिनम् ।
(३०१६) १।१३५।५ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)
आशुमत्यं -- ।
[१००२] १।१२९।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इंद्रः)
मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृळीकाय
सप्रथः ।

१।१३६।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
मित्राय वोचं वरुणाय मीळ्हुषे सुमृळीकाय मीळ्हुषे ।
[१००४] १।१२९।५ उग्राभिरुग्रोतिभिः। पश्य-(३१)१।७।४
[१००८] १।१२९।९ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इंद्रः)
त्वं न इन्द्र राया परीणसा ।
अभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ।
(१६४१) ४।३१।१२ (वामदेवो गौतमः । इंद्रः)
इन्द्र राया परीणसा ।
(९८१) ८।९७।६ (रेभः काश्यपः । इंद्रः)
१०।९३।११ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वेदेवाः)
अभिष्टये सदा पाह्यभिष्टये ।
[१०११] १।१३०।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
मंहिष्ठं वाजसातये ।
८।४।१८ (देवातिथिः काण्वः । पूषा)
अस्माकं — भव मंहिष्ठो वाजसातये ।
(८९९) ८।८८।६ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)
[१०१६] १।१३०।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
– वाचं — रथं न धीरः स्वपा अतक्षिषुः ।
(अग्निः ७७७) ५।२।११ (कुमार आत्रेयः, वृषो वा
जानः उभौ वा, २ वृशो जानः । अग्निः)
– स्तोमं — रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ।
(१६८१) ५।२९।१५ (गौरिवीतिः शाक्त्यः । इन्द्रः)
ब्रह्म ... ।
रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ।
[१०१७] १।१३०।७ अतिथिग्वाय शम्बरं ।
पश्य-- (७५०) १।५१।६
[१०१८] १।१३०।८ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
न्यर्शसानमोषति ।
(२९६) ८।१२।९ (पर्वतः काण्वः । इंद्रः)
[१०१९] १।१३०।९ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इंद्रः)
उशना यत् परावतो ।
८।७।२६ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
[१०२१] १।१३१।१ = (३०९) ८।१२।२२
देवासो दधिरे पुरः ।
(अग्निः ८७१) ५।१६।१ (पुरुरात्रेयः । अग्निः)
मर्तासो दधिरे पुरः ।
(३१२) ८।१२।२५ देवास्त्वा दधिरे पुरः ।
[१०२४] १।१३१।४ पुरो यदिंद्र शारदीरवातिरः ।
(१०७०) १।१७४।२= (१८९३) ६।२०।१०
सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्दर्त् ।

[१०२८] १।१३२।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इंद्रः)
इंद्रत्वोताः सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतः ।
(३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
सासह्याम— ।
[१०३१] १।१३२।४ यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रजम् ।
(७४७) १।५१।३ त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप ।
[१०३२] १।१३२।५ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इंद्रः)
धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ।
१।१३९।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । विश्वेदेवाः)
[१०४०] १।१३३।७ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
सहस्रा वाजयवृतः ।
(१९७) ८।३२।१८ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
[१०४१] १।१३९।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इंद्रः)
सुमृळीको न आ गहि ।
१।९१।११ (गोतमो राहूगणः । सोमः)
सुमृळीको न आ विश ।
[१०४२] १।१६७।१ सहस्रिण उप नो यन्तु वाजाः ।
(२२०२) ७।२६।५ —नो माहि वाजान् ।
[१०४७] १।१६९।५ ते षु णो मरुतो मृळयन्तु ।
(३२६५) १।१७१।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । मरुत्वानिंद्रः)
स्तुतासो नो मरुतो मृळयन्तु ।
[१०५५] १।१७०।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इंद्रः)
त्वमीशिषे वसुपते वसूनां ।
(अग्निः १४१६) ८।७१।८ (सुदीति-पुरुमीळ्हावाङ्गिरसौ, तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
त्वमीशिषे वसूनाम् ।
[१०७०] १।१७४।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इंद्रः)
मृध्रवाचः सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्दर्त् ।
(१८९३) ६।२०।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्दर्द्धन् दासीः पुरुकुत्साय ।
[१०७३] १।१७४।५ = (७४३) १।३३।१४
["] १।१७४।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
प्र सूरश्चक्रं वृहतादभीके ।
(१४७८) ४।१६।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
[१०७६] १।१७४।८ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
ननमो वधरदेवस्य पीयोः ।
(१२०५) २।१९।७ (गृत्समदः शौनकः । इंद्रः)
[१०७७] १।१७४।९ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इंद्रः)
(१८९५) ६।२०।१२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इंद्रः)
त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवंतीः ।
प्र यत्समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति ॥
[१०८०] १।१७५।२ वृषा मदो वरेण्यः ।
(१८२४) ८।४६।८ यस्ते मदो वरेण्यः ।
[१०८१] १।१७५।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
सहावान् दस्युमव्रतम् ।
९।४१।२ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
साह्वांसो दस्युमव्रतम् ।
[१०८३] १।१७५।५ शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युम्निन्तम उत क्रतुः
(अग्निः २८०) १।१२७।९ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
[१०८४] १।१७५।६ =
(१०९०) १।१७६।६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मयइवापो न तृष्यते बभूथ । तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥
[१०८५] १।१७६।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः ।)
इन्द्रमिन्दो वृषा विश ।
९।२।१ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
["] १।१७६।१ ऋघायमाण इन्वसि ।
(६५) १।१०।८ —मिन्वतः ।
[१०८६] १।१७६।२ = (३६) १।७।९
["] १।१७६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
यवं न चर्षकृद् वृषा ।
१।२३।१५ (मेधातिथिः काण्वः । पूषा)
[१०८७] १।१७६।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
यस्य विश्वानि हस्तयोः ।
(२०६७) ६।४५।८ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
[१०८९] १।१७६।५ = (११) १।४।८
[१०९०] १।१७६।६ = (१०८४) १।१७५।६
[१०९१] १।१७७।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः ।
(१४९१) ४।१७।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
["] १।१७७।१ युक्त्वा हरी वृषणा याह्यर्वाङ् ।
(१७६८) ५।४०।४ युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ् ।
[१०९३] १।१७७।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि ।
(२१८७) ७।२४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
[१०९५] १।१७७।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो ।

(१९४६) ६।२५।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
एवा ... ... इंद्र ।
विद्याम ... ... ।

(२६७८) १०।८९।१७ (रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
एवा ... ... इन्द्र ।
विद्याम ... ... ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[११०२] २।११।२ (गृत्समदः शौनकः । इंद्रः)
नृज्रो महिन्द्र... परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः ।
(१२६३) ७।२१।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
स्रवितवा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः ।
[११०४-५] २।११।४-५ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
दासीर्विशः सूर्येण सह्याः ॥४॥
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु ॥५॥
(१३६०) ३।३९।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इंद्रः)
गुहा हितं— ।
(२८१०) १०।१४८।२ (पृथुर्वैन्यः । इंद्रः)
दासी— ।
गुहा— ।
[११११] २।११।११ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं ।
(२४८०) १०।२२।१५ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः । इन्द्रः)
["] २।११।११ मदन्तु त्वा मन्दिनः सुतासः ।
१।१३४।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । वायुः)
मदन्तु त्वा मन्दिनो वायविन्दवो ।
[११२१] २।११।२१ (११७१) २।१५।१० = (११८०) २।१६।९
(११८९) २।१७।९ = (११९८) २।१८।९
(१२०६) २।१९।९ (१२१६) २।२०।९
(गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥
[११२४] २।१२।३ यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून् ।
(१५९९) ४।२८।१ १०।६७।१२ (अयास्य आंगिरसः । बृहस्पतिः)
अहन्नहिम ... ।
[११३३] २।१२।१२ यः सप्त रश्मिर्वृषभस्तुविष्मान् ।
(आग्नः १७६०) ४।५।३ (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)
[illegible] वृषभस्तुविष्मान् ।
["] २।१२।१२ = (७२६) १।३२।१२

[११३५] २।१२।१४ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती ।
(१२१०) २।२०।३ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
यः शंसन्तं यः शशमानमूती पचन्तं ।
[११३६] २।१२।१५ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः ।
८।४८।१४ (प्रगाथो घौरः काण्वः । सोमः)
वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः ।
["] २।१२।१५ सुवीरासो विदथमा वदेम ।
१।११७।२५ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
[११३८-४०] २।१३।२-४ यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ।
[११४५] २।१३।९ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
एकस्य श्रुष्टौ यद्ध चोदमाविथ ।
(९६७) ८।३।१२ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
शर्धो नो अस्य यद्ध पौरमाविथ ।
[११४९] २।१३।१३ =
(११६१) २।१४।१२ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् । इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥
[११५०] २।१४।१ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोमम् ।
१०।३०।१५ (कवष ऐलूषः । आपः अपांनपात् वा)
अध्वर्यवः सुनुतेन्द्राय सोमम् ।
[११५१] २।१४।१ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
अध्वर्यवो —।
तस्मा एतं भरत तद्वशायँ ।
२।३७।१ (गृत्समदः शौनकः । द्रविणोदा ऋतवश्च)
—अध्वर्यवः— ।
तस्मा एतं भरत तद्वशो ददिः ।
[११५९] २।१४।१० (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।
—दिदासन्तम् ॥
(१९२६) ६।२३।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
सोमै—। — पृणिध्वम् ॥

[११६१] २।१४।११ = (११४९) २।१३।१३
[११६२] २।१५।१ = (७१७) १।३२।३
[११६३] २।१५।२ = (८४०) १।१०३।२
[११६३–७०] २।१५।२–९ सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार।
[११७१] २।१५।१०= (११११) २।११।२१
[११८०] २।१६।९= (११११) २।११।२१
[११८४] २।१७।४ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
अधा यो विश्वा भुवनाभि मज्मना ।
... ... रोदसी ... ।
९।११०।९ (त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः ।
पवमानः सोमः)
अध ... रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना।
[११८६] २।१७।६ = (११११) २।११।२१
[११९२] २।१८।३ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
हरी ... ।
मो ... बह्वो ... नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।
(१३१६) ३।३५।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
मा ... हरी ... नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।
... अश्विनो ... ।
[११९६] २।१८।७ (गृत्समदः शौनकः ।इन्द्रः)
ब्रह्मा ... हरी ... ।
अस्मिञ्छूर सवने मादयस्व ।
(२१८४) ७।२३।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
अस्मिन् ... ।
(२२१४) ७।२९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
ब्रह्मकृतिं ... ... हरिभिः ... ।
अस्मिन्नू षु सवने मादयस्वोप ब्रह्माणि।
[११९८] २।१८।९ = (११११) २।११।२१
[१२०५] २।१९।७ = (११७६) २।१७।८
[१२०७] २।१९।९ = (११११) २।११।२१
[१२१०] २।२०।३ = (११३५) २।१२।१४
[१२१२] २।२०।५ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
अश्नस्य चिच्छिश्नथत् पूर्व्याणि ।
(अग्निः ९७३) ६।४।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
[१२१६] २।२०।९ = (११११) २।११।२१
[१२१८] २।२१।२ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
अषाळ्हाय सहमानाय वेधसे ।
७।४६।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । रुद्रः)
अषाळ्हाय— ।
[१२१९] २।२१।३ = (७१५) १।३२।१
[१२२३--२५] २।२२।१--३ सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ।
[१२२६] २।२२।४ दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।
१।१०५।१६ (त्रितः आप्त्यः,कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वेदेवाः)
दिवि प्रवाच्यं कृतः ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[१२३९] ३।३०।२ स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा।
(अग्निः ४६६) ३।१।२० (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा।
[१२५०] ३।३०।१७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ।
(१२८९) ३।३२।८ = (१३०६) ३।३४।६
[१२५४] ३।३०।१७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिमस्य ।
६।५२।३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
[१२५७] ३।३०।२० = (१४३२) ३।५०।४
(विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च। स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् ।
[१२५८] ३।३०।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
अस्मभ्यं सु मघवन् बोधि गोदाः ।
(१२७३) ३।३१।१४ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्रः)
अस्माकं सु मघवन् बोधि गोपाः ।
(१५६४) ४।२२।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
अस्माकं सु मघवन् बोधि गोदाः ।
[१२५९] ३।३०।२२ = (१२८१) ३।३१।२२ = (१२९८)
३।३२।१७ = (१३११) ३।३४।११ = (१३२२)
३।३५।११ = (१३३३) ३।३६।११ = (१३५४)
३।३८।१० = (१३६३) ३।३९।९ = (१३९८)
३।४३।८ = (१४२३) ३।४८।५ = (१४२८)
३।४९।५ = (१४३३) ३।५०।५ = (२६७९)
१०।८९।१८

=(२७१३)१०।१०४।११ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥
[१२६७] ३।३१।८ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्रः)
प्रतिमानं... विश्वावेद जनिमा हन्ति शुष्णम्।
(२७२९) १०।१११।५ (अष्ट्रादंष्ट्रो वैरूपः । इन्द्रः)
प्रतिमानं ... विश्वावेद सवना हन्ति शुष्णम्।
[१२६८] ३।३१।९= (अग्निः २०३) १।७२।९
(पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
[१२७३] ३।३१।१४ = (१२५८) ३।३०।२२
[१२७५] ३।३१।१६ = (अग्निः ४५१) ३।१।५
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
[१२७६] ३।३१।१७ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा। इन्द्रः)
अनु कृष्णे वसुधिती जिहाते ।
४।४८।३ (वामदेवो गौतमः । वायुः)
... ... वसुधिती येमाते ।
[१२७७] ३।३१।१८= (अग्निः ४६५) ३।१।१९
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
[१२८०] ३।३१।२१ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा। इन्द्रः)
... गोत्रानि ... ।
... दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ।
(२७७१) १०।१२०।८ (बृहद्दिव आथर्वणः । इन्द्रः)
गोत्रस्य ... दुरश्च ... ।
[१२८१] ३।३१।२२ = (१२५९) ३।३०।२२
[१२८५] ३।३२।४ अमर्मणो मन्यमानस्य मर्म ।
(१७०९) ५।३२।५ अमर्मणो विदद्स्य मर्म ।
[१२८८] ३।३२।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
इन्द्रं बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।
(१८७२) ६।१९।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
इन्द्रं... बृहन्त ... ।
६।४९।१० (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नम् — ।
[१२८९] ३।३२।८ = (१२५०) ३।३०।१३
["] ३।३२।८ दाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमाम् ।
(१३०८) ३।३४।८ ससान यः ... ।

[१२९२] ३।३२।११ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
अहन्नहिं परिशयानमर्णः ।
(१५१३) ४।१९।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
अवासृजन्त ... ।
अहन्नहिं ... ।
(१९७१) ६।३०।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
अहन्नहिं परिशयानमर्णोऽवासृजो ।
[१२९८] ३।३२।१७ = (१२५९) ३।३०।२२
[१३०२] ३।३४।२= (अग्निः ७१९) १।५९।५
(नोधा गौतमः । अग्निर्वैश्वानरः)
[१३०५] ३।३४।५= (अग्निः १९५) १।७२।१
(पराशर शाक्त्यः । अग्निः)
[१३०६] ३।३४।६ = (१२५०) ३।३०।१३
[१३०७] ३।३४।७ = (अग्निः ७११) १।५९।५
[१३०८] ३।३४।८ = (अग्निः २५१) १।७९।८
(गोतमो राहूगणः । अग्निः)
["] ३।३४।८ = (१२८९) ३।३२।८
[१३११] ३।३४।११ = (१२५९) ३।३०।२२
[१३१२] ३।३५।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ ।
... इन्द्र .... ।
(२१८३) ७।२३।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
... ... इन्द्र ।
याहि ... ... ।
[१३१५] ३।३५।४ = (अग्निः ५७३) ३।२९।१६
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
[१३१६] ३।३५।५ = (११९२) २।१८।३
[१३१७] ३।३५।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्य ।
१०।१४।५ (यमो वैवस्वतः । यमः)
... ... निषद्य ।
[१३२२] ३।३५।११ = (१२५९) ३।३०।२२
[१३२४] ३।३६।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
इन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्णः ।
(१३९७) ३।४३।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
[१३२९] ३।३६।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तः ।
(१८७५) ६।१९।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः ।

१०।३०।१३ (कवष ऐलूषः । आपः अपांनपात् वा)
इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तीः ।
[१३३३] ३।३६।११ = (१२५९) ३।३०।२२
[१३३५] ३।३७।२ = (९३९) १।८४।३
[१३३८] ३।३७।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।
(३०९) ८।१२।२२ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
९।६१।२२ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
[१३४१] ३।३७।८ ... पाहि ...। इन्द्र सोमं शतक्रतो ।
(६३४) ८।७६।७ इन्द्र ... पिबा सोमं ... ।
[१३४४] ३।३७।११ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः ।
इन्द्रेह तत आ गहि ।
(१३७१) ३।४०।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन् ।
(१३७२) ३।४०।९
परावतमर्वावतम् ।
इन्द्रेह तत आ गहि ।
[१३५२] ३।३८।८ हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत् ।
७।३८।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सविता)
[१३५४] ३।३८।१० = (१२५९) ३।३०।२२
[१३६०] ३।३९।६ = (११०५) २।११।५
[१३६३] ३।३९।९ = (१२५९) ३।३०।२२
[१३६७] ३।४०।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
इन्द्र सोमाः सुता इमे ।
(१३८६) ३।४२।५ इन्द्र सोमाः सुता इमे ।
[१३६९] ३।४०।६ = (६४) १।१०।७
[१३७१] ३।४०।८ = (१३४४) ३।३७।११
[१३७२] ३।४०।९ = (१३४४) ३।३७।११
[१३७४] ३।४१।२ = (अग्निः १९१०) १।१३।५
[१३७८] ३।४१।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः) =
(२०८६) ६।४५।२७ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे ।
न स्तोतारं निदे करः ।
[१३७९] ३।४१।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
वयमिन्द्र त्वायवो ...। ... वसो ।
(११६६) ७।३१।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
वयमिन्द्र त्वायवो ...। ... वसो ।
(२७८३) १०।१३३।६ (सुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
वयमिन्द्र त्वायवः ... ।

[१३८१] ३।४१।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
वहतामिन्द्र केशिना ।
(३९५) ८।१७।२ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)
[१३८२] ३।४२।१ = (८१) १।१६।४
[१३८५] ३।४२।४ = (८०) १।१६।३
[१३८६] ३।४२।५ = (१३६७) ३।४०।४
[१३८७] ३।४२।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
विद्मा हि त्वा धनंजयं ।
अधा ते सुम्नमीमहे ।
(४५५) ८।४५।१३ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
विद्मा ... ।
(अग्निः १३८८) ८।७५।१६ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
विद्मा हि... ।
अधा ते सुम्नमीमहे ... ।
(२२७४) ८।९८।११ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[१३८९] ३।४२।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
सोमं चोदामि पीतये ।
(२१९७) ८।६८।७ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
इन्द्रं चोदामि पीतये ।
[१३९३] ३।४३।३ इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूयम् ।
(२११४) ७।२९।२ अर्वाचीनो हरिभिः— ।
[१३९६] ३।४३।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
आ त्वा बृहन्तो हरयो युजाना......वहन्तु ।
(२०५४) ६।४४।१९ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
आ त्वा हरयो वृषणो युजाना ।
...वहन्तु ।
[१३९७] ३।४३।७ = (१३२४) ३।३६।२
[१३९८] ३।४३।८ = (१२५९) ३।३०।२२
[१३९९] ३।४४।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ गहि ।
८।१३।१३ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
... इन्द्र सप्तिभिर्न... ।
[१४०२] ३।४४।४ = १।४९।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषा)
[१४१०] ३।४६।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
एको विश्वस्य भुवनस्य राजा ... जनान् ।
(२०३४) ६।३६।४ (नरो भारद्वाजः । इन्द्रः)
जनानामेको— ।
[१४१५] ३।४७।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।

(१४५२) ३।५२।७ अपूपमद्धि सगणो मरुद्भिः… ।

[१४१६] ३।४७।३ (विश्वामित्रो गाथिनः। इन्द्रः)

पाहि सोममिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः ।

(१४४१) ३।५१।८ पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः सुतं नः ।

[१४१८]३।४७।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)= (१८८१) ६।१९।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् ।

विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम ॥

[१४२२] ३।४८।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

यथावशं तन्वं चक्र एषः ।

७।१०१।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः [वृष्टिकामः], कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः)

[१४२३] ३।४८।५ = (१२५९) ३।३०।२२

[१४२८] ३।४९।५ = (१२५९) ३।३०।२२

[१४३०] ३।५०।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

हरयः सुशिप्र पिबा त्व१स्य सुषुतस्य चारोः।

(२११३) ७।२९।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

… हरिवः … ।

पिबा… ।

[१४३२] ३।५०।४ = (१२५७) ३।३०।२०

[१४३३] ३।५०।५ = (१२५९) ३।३०।२२

[१४३८] ३।५१।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

पूर्वीरस्य निष्षिधो मर्त्येषु ।

(२०४६) ६।४४।११ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

पूर्वीष्ट इन्द्र निष्षिधो जनेषु ।

[१४३९] ३।५१।६ = (७०८) १।३०।१०

[१४४१] ३।५१।८ = (१४१६) ३।४७।३

[१४४३] ३।५१।१० (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

… सुतं … ।

पिबा त्व१स्य गिर्वणः ।

(११२) ८।१।२६ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)

पिबा त्व१स्य गिर्वणः सुतस्य ।

[१४४६] ३।५२।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् ।

(१७८४) ८।९१।२ (अपाला आत्रेयी । इन्द्रः)

[१४४८] ३।५२।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

(१६६०) ४।३२।१६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

जोषयासे गिरश्च नः । वधूयुरिव योषणाम् ।

३।६२।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा)

जुषस्व गिरं । वधूयुरिव योषणाम् ।

[१४५२] ३।५२।७ = (१४१५) ३।४७।२

[१४५५] ३।५३।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

एदं बर्हिर्यजमानस्य सीद ।

(१९२४) ६।२३।७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

[१४५७-५८] ३।५३।५-६ यत्रा रथस्य बृहतो निधानं ।

[१४५९] ३।५३।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

… अंगिरसो … दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।

ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ।

१०।६७।२ (अयास्य आंगिरसः । बृहस्पतिः)

दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।

… अंगिरसो …

७।१०३।१० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मण्डूकाः। पर्जन्यस्तुति-… संहृष्टाः)

ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ।

[१४६४] ३।५३।१२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

य इमे रोदसी उभे ।

(२५९) ८।६।१७ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)

… रोदसी मही ।

९।१८।५ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

… रोदसी मही।

[१४६५] ३।५३।१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे ।

(१७९०) ८।२४।१ (विश्वमना वैयश्वः । इन्द्रः)

["] ३।५३।१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

करदिन्नः सुराधसः।

१।२३।६ (मेधातिथिः काण्वः । मित्रावरुणौ)

करतां नः सुराधसः।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[१४७१] ४।१६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।

३।५४।१५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वेदेवाः)

[१४७२] ४।१६।६ विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वान् ।

(२१६४) ७।२१।४ अपांसि विश्वा… ।

["] ४।१६।६ = (अग्निः ६४१) ४।१।१५ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[१४७८] ४।१६।१२ = (१०७३) १।१७४।५
[१४८६] ४।१६।२० ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् ।
१०।३९।१४ (घोषा काक्षीवती । अश्विनौ)
अतक्षाम भृगवो ... ।
[१४८७] ४।१६।२१ = (१५०८) ४।१७।२१
(वामदेवो गौतमः । इन्द्रः) =
(१५३२) ४।१९।११ = (१५४३) ४।२०।११ =
(१५५४) ४।२१।११ = (१५६५) ४।२२।११ =
(१५७६) ४।२३।११ = (१५८७) ४।२४।११
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ।
४।५६।४ (वामदेवो गौतमः । द्यावापृथिवी)
नू ... ... ।
धिया स्याम रथ्यः सदासाः ।
[१४८८] ४।१७।१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानान् ।
(२७३३) १०।१११।९ (अष्टादंष्ट्रो वैरूपः । इन्द्रः)
[१४९०] ४।१७।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।
(२५२७) १०।२८।७ (वसुक्र ऋषिः । इन्द्रः)
वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।
[१४९२] ४।१७।५ = (१०९१) १।१७७।१
[१४९४] ४।१७।७ त्वं प्रति प्रवत आशयानमहिं वज्रेण
मघवन् वि वृश्चः ।
(१५२४) ४।१९।३ त्वम प्रति प्रवत आशयानमहिं
वज्रेण वि रिणा अपर्वन् ।
[१५०१] ४।१७।१४ त्वचो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।
(अग्निः ६३७) ४।१।११ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।
[१५०३] ४।१७।१६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।
(२७७५) १०।१३१।३ (सुकीर्तिः काक्षीवतः । इन्द्रः)
[१५०८] ४।१७।२१ = (१४८७) ४।१६।२१
[१५११] ४।१८।४ नही न्वस्य प्रतिमानमस्ति ।
(१८६७) ६।१८।१२ नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति ।
[१५१३] ४।१८।५ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।
(अग्निः ४८१) ३।६।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
आ रोदसी अपृणा जायमानः ।
[१५१५] ४।१८।७ = (९०९) १।८०।१०
[१५१९] ४।१८।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

वृत्रमिन्द्रो... हनिष्यन्त्सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ।
(९९९) ८।१००।१२ (नेमो भार्गवः । इन्द्रः)
सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ।
हनाव... वृत्रं... ।
[१५२३] ४।१९।१ = (१२९२) ३।३२।११
[१५२४] ४।१९।३ = (१४९४) ४।१७।७
[१५२६] ४।१९।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
त्वं वृतॉं अरिणा इन्द्र सिन्धून् ।
(३१५७) ४।४२।७ (त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः । इन्द्रावरुणौ)
[१५२९] ४।१९।८ = (९०९) १।८०।१०
[१५३२] ४।१९।११ = (१४८७) ४।१६।२१
[१५३५] ४।२०।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
पुरो दधत् सनिष्यसि क्रतुं नः ।
(१७०२) ५।३१।११ (अवस्युरात्रेयः । इन्द्रः)
[१५३८] ४।२०।६ उद्रेव कोशं वसुना न्यृष्टम् ।
(२५४७) १०।४२।२ कोशं न पूर्णं वसुना ... ।
[१५४३] ४।२०।११ = (१४८७) ४।१६।२१
[१५५३] ४।२१।१० = (८९१) १।६३।७
["] ४।२१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य ।
५।५७।७ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)
भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य ।
[१५५४] ४।२१।११ = (१५४३) ४।२०।११
[१५५७] ४।२२।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः ।
(२०१४) ६।३२।४ (सुहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
[१५५९] ४।२२।५ = (७५७) १।५१।१३
[१५६३] ४।२२।९ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य ।
(२१९४) ७।२५।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
[१५६४] ४।२२।१० = (१२५८) ३।३०।२१
[१५६५] ४।२२।११ = (१४८७) ४।१६।२१
[१५६८] ४।२३।४ = (३२६२) १।१६५।१३
[१५७६] ४।२३।११ = (१४८७) ४।१६।२१
[१५७९] ४।२४।३ रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत त्राम् ।
(अग्निः १९९) १।७२।५ (पराशर शाक्त्यः । अग्निः)
... कृण्वत स्वाः ।
["] ४।२४।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
वि ह्वयन्ते समीके ।
उभयासो ......नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ ।

(३१८०) ७।८२।९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्रावरुणौ)
हवन्त उभये...स्पृधि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु ।
[१५८७] ४।२४।११ = (१४८७) ४।१६।२१
[१५९१] ४।२५।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
ज्योक्पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम् ।
य इन्द्राय सुनवामेत्याह ।
६।५२।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
(३३०१) ७।१०४।२४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
(रक्षोहणौ) इन्द्रासोमौ)
मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम् ।
१०।५९।४ (बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः ।
निर्ऋतिः सोमश्च)
पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
१०।५९।६ (बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः ।
असुनीतिः)
ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम् ।
(१७५०) ५।३७।१ (अत्रिर्भौमः । इन्द्रः)
य इन्द्राय सुनवामेत्याह ।
[१५९२] ४।२५।५ उरुस्मा अदितिः शर्म यंसत् ।
१।१०७।२ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वेदेवाः)
आदित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ।
[१५९७] ४।२६।२ मम देवासो अनु केतमायन् ।
(अग्निः १५२६) १०।६।७ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
त्वां देवासो ... ।
[१६०४] ४।२९।१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
तिरश्चिदर्यः सवना पुरूणि ।
(६२४) ८।६६।१२ (कलिः प्रागाथः । इन्द्रः)
तिरश्चिदर्यः सवना वसो गहि ।
[१६२५] ४।३०।२० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
शतमश्मन् ... पुराम् ... ।
दिवोदासाय दाशुषे ।
(अग्निः १०४६) ६।१६।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
दिवोदासाय सुन्वते ।
...... दाशुषे ।
(२००९) ६।३१।४ (सुहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
शतानि......पुरो...... ।
दिवोदासाय सुन्वते सुतक्रे ।
[१६२६] ४।३०।२१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
अस्वापयद्दभीतये...... हर्थैः ।

(२१४३) ७।१९।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
अस्वापयो दभीतये सुहन्तु ।
[१६२८] ४।३०।२३ करिष्या इन्द्र पौंस्यम् ।
(१७५)८।३।२०=(१८२)८।३२।३ कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ।
[१६३३] ४।३१।४ अभी न आ ववृत्स्व ।
१०।८३।६ (मन्युस्तापसः । मन्युः)
मन्यो वज्रिन्नभि मामा ववृत्स्व ।
[१६४०] ४।३१।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
सख्याय स्वस्तये ।
(३३३०) ६।५७।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। इन्द्रापूषणौ)
[१६४१] ४।३१।१२ = (१००८) १।११९।९
[१६४५] ४।३२।१ महान् महीभिरूतिभिः ।
(अग्निः ४६५) ३।१।१९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
[१६५२] ४।३२।८ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्दित्ससि स्तुतो मघम् ।
स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ।
(३५७) ८।१४।४ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। इन्द्रः)
न ते वर्तास्ति ।
यद्दित्ससि स्तुतो मघम् ।
(१८६) ८।३२।७ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
स्तोतार इन्द्र गिर्वणः ।
[१६५३] ४।३२।९ अभि त्वा गोतमा गिरा ।
(अग्निः २३९) १।७८।१ (गोतमो राहूगणः। अग्निः)
[१६५५] ४।३२।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
... वेधसो ... ।
सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ।
(२३७७) ८।९९। २ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
... वेधसः ... ।
सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ।
[१६५६] ४।३२।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः).
एषु धा वीरवद्यशः ।
५।७९।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
[१६५७] ४।३२।१३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
(६०७) ८।६५।७ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम् ।
तं त्वा वयं हवामहे ।
(अग्निः १३३२) ८।४३।२३ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
तं त्वा वयं हवामहे ।
[१६६०] ४।३२।१६ = (१४४८) ३।५२।३

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[१६६७] ५।२९।१ श्री रोचना दिव्या धारयन्त ।
२।२७।९ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्यः)
[१६६९] ५।२९।३ अहन्नहिं पपिवाँ इन्द्रो अस्य ।
(१६९१) ५।३०।११ पुरंदरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य ।
[१६७५] ५।२९।१० (गौरिवीतिः शाक्त्यः । इन्द्रः)
नि दुर्योण आवृणङ् मृध्रवाचः ।
(१७१२) ५।३२।८ (गातुरात्रेयः । इन्द्रः)
—मृध्रवाचम् ।
[१६७८] ५ २९।१२ दशग्वासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः
भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
[१६७९] ५।२९।१३ वीर्या मघवन्या चकर्थ ।
(१६९८) ५।३१।६ प्र नूतना मघवन्या चकर्थ ।
[१६८९] ५।३०।८ (बभ्रुरात्रेयः । इन्द्रः)
शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।
(१८८९) ६।२०।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
[१६९१] ५।३०।११ = (१६६९) ५।२९।३
[३३३८] ५।३०।१३ (बभ्रुरात्रेयः । ऋणंचयेन्द्रौ)
अक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाः ।
(१९३६) ६।२४।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
—परितक्म्यायाम् ।
[१६९५] ५।३१।३ = (अग्निः ६३९) ४।१।१३
(वामदेवो गौतमः । अग्निः)
[१६९६] ५।३१।४ अवर्धयन्नहये हन्तवा उ ।
(२३४९) ८।९६।५ मदच्युतमहये हन्तवा उ ।
[१६९८] ५।३१।६ (अवस्युरात्रेयः । इन्द्रः)
प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन्या चकर्थ ।
(२२८३) ७।९८।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार ।
[१७०२] ५ ३१।११ = १।१२१।१३ (कक्षीवान् औशिजो
दैर्घतमसः । विश्वेदेवा इन्द्रो वा)
["] ५।३१।११ = (१५३५) ४।२०।३
[१७०९] ५।३२।५ = (१२८५) ३।३२।४
[१७११] ५।३२।७ (गातुरात्रेयः । इन्द्रः)
इन्द्रो...महते ...वधः ...। विश्वस्य जन्तोरधमं चकार ।
(२२८६) ७।१०४।१६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
इन्द्रः......महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट ।

[१७१२] ५।३२।८ = (१६७५) ५।२९।१०
[१७२१] ५।३३।५ (संवरणः प्राजापत्यः । इन्द्रः)
वयं ते त इन्द्र ये च नरः ।
(२२२१) ७।२०।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
— ये च देव ।
[१७३३] ५।३४।७ वि दाशुषे भजति सूनरं वसु ।
१।४०।४ (कण्वो घौरः । ब्रह्मणस्पतिः)
[१७३६] ५।३५।१ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
यस्ते साधिष्ठोऽवस...।
अस्मभ्यं चर्षणीसहम् ।
(...३१) ८।५३(वाल०)।७ (मेध्यः काण्वः । इन्द्रः)
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ।
(३०८५) ७।९४।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
अस्मभ्यं चर्षणीसहा ।
[१७३७] ५।३५।२ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
यदिन्द्र ... ... ।
यद्वा पञ्च क्षितीनाम् ... ... आ भर ।
(२०९६) ६।४६।७ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
यदिन्द्र ... ... ।
यद्वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर ।
[१७३८] ५ ३५।३ = (६७) १।१०।१०
[१७३९] ५ ३५।४ = (७८८) १।५४।३
[१७४०] ५।३५।५ त्वं तमिन्द्र मर्त्यम् ।
(२८३४) १०।१७१।३ त्वं त्यमिन्द्र मर्त्यम् ।
[१७४१] ५।३५।६ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
त्वामिद् वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः ।
... ... हवन्ते वाजसातये ।
(२७९) ८।६।३७ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
त्वामिद् ... ... ।
हवन्ते ... ... ।
(४२८) ८।३४।४ (नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
हवन्ते ... ... ।
(३३३०) ६।५७।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रापूषणौ)
हुवेम वाजसातये ।
८।९।१३ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
हुवेय वाजसातये ।
["] ५।३५।६=३।५९।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)

[१७४०] ५।३५।७ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
पुरोयावानमाजिषु ।
वाजयन्तम् ... ।
(अग्निः १४६१) ८।८४।८ (उशना काव्यः । अग्निः)
पुरो ... ... ।
... ...वाजिनम् ।
[१७५०] ५।३७।१= (१५९१) ४।२५।४
[१७५४] ५।३७।५ (अत्रिर्भौमः । इन्द्रः)
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति ।
(अग्निः १५९८) १०।४५।१० (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति ।
[१७५७] ५।३८।३=१।२५।२० (शुनःशेप आजीगर्तिः । वरुणः)
[१७६२] ५।३९।३ आ वाजं दर्षि सातये ।
९।६८।७ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)
नृभिर्यतो वाजमा दर्षि ... ।
[१७६३] ५।३९।४ मंहिष्ठं वो मघोनां ।
८।१।३० (आसङ्गः प्लायोगिः । आसङ्गः)
मंहिष्ठासो मघोनाम् ।
[१७६४] ५।३९।४=(६२) १।१०।५
["] ५।३९।५=(अग्निः ९०२) ५।२२।४
(विश्वसामा आत्रेय । अग्निः)
[१७६५] ५।४०।१ (अत्रिर्भौमः । इन्द्रः)
आ याहि ... ... सोमं सोमपते पिब ।
(४११) ८।२१।३ (सोभरिः काण्वः । इन्द्रः)
आ याहीम ... ... ।
सोमं सोमपते पिब ।
["] ५।४०।१-३ वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम ।
[१७६६-६७] ५।४०।२-३ (अत्रिर्भौमः । इन्द्रः)
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः ॥३॥
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः ॥४॥
(३५२-५३) ८।१३।३२-३३ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
वृषा ग्रावा ... ... ॥३२॥
वृषा त्वा ... ... ॥३३॥
[१७६८] ५।४०।४= (१०९१) १।१७७।१

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[१८५७] ६।१८।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
स युध्मः सत्वा खजकृत्समद्वा ।
(२६५३) ७।२०।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
युध्मो अनर्वा खजकृत्समद्वा ।
[१८६७] ६।१८।१२ = (१५१२) ४।१८।४
[१८७१] ६।१९।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
उरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।
७।६२।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सूर्यः)
क्रत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।
[१८७२] ६।१९।२ = (१२८८) ३।३२।७
[१८७३] ६।१९।३ = ३।५४।२२ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,
प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वेदेवाः)
[१८७५] ६।१९।५ (१३२९) ३।३६।७
[१८७७] ६।१९।७ = (१५७९) ४।२४।३
[१८७८] ६।१९।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
वृषणं ... धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
येन वंसाम पृतनासु शत्रून् ।
(२८४५) १०।४७।४ (सप्तगुराङ्गिरसः । इन्द्रो वैकुण्ठः)
धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
... वृषणं ।
(अग्निः १४००) ८।६०।१२ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
येन वंसाम पृतनासु शर्धतः ।
[१८७९] ६।१९।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
इन्द्र द्युम्नं स्वर्वद्धेह्यस्मे ।
(२०२७) ६।३५।२ (नरो भरद्वाजः । इन्द्रः)
[१८८१] ६।१९।११ = (१४१८) ३।४७।५
[१८८८] ६।२०।५ = (१६००) ४।२८।२
[१८८९] ६।२०।६ = (१६८९) ५।३०।८
[१८९३] ६।२०।१० = (१०७०) १।१७४।२
[१८९५] ६।२०।१२ = (१०७७) १।१७४।९
[१९०५] ६।२१।१० अग्निरागे अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
[१९०८] ६।२२।२ = (अग्निः ९७९) ६।५।१ (भारद्वाजो
बार्हस्पत्यः । अग्निः)
[१९१०] ६।२३।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमम् ।
... ... कीरये ।
(२०५०) ६।४४।१५ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
पाता ... । ... कारुधायाः ।

[१९२०] ६।२३।३ दाता वसु स्तुवते कीरये यत् ।
(३३२५) ७।९७।१० धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चित् ।
[१९२४] ६।२३।७ = (१४५५) ३।५३।३
[१९२६] ६।२३।९ = (११५९) २।१४।१०
[१९३६] ६।२४।९ = (३३३८) ५।३०।१३
[१९४१] ६।२५।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
तोके वा गोषु तनये यदप्सु ।
६।६६।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । मरुतः)
... ... यमप्सु ।
[१९४६] ६।२५।९ = (१०९५) १।१७७।५
["] ६।२५।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
एवा नः ... ।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो भरद्वाजा उत त इन्द्र नूनम् ।
(२६७८) १०।८९।१७ (रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
एवा ते ... ... ।
... गृणन्तो विश्वामित्रा उत ... ।
[१९४८] ६।२६।२ = (अग्निः ९९९) ६।१०।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
[१९४९] ६।२६।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
अतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ।
(२१४७) ७।१९।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
[१९५०] ६।२६।४ = (७४३) १।३३।१४
[१९५५-५६] ६।२७ १-२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
किमस्य मदे किम्वस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार ।
रणा वा ये निषदि किं ते अस्य पुरा विविद्रे किमु नूतनासः ॥१
सदस्य ... सद्वस्य ... सदस्य ... ।
... सन् ... ... सद्‌ ... ॥२॥
[१९५७] ६।२७।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
नहि नु ते महिमनः समस्य ।
(२६१०) १०।५४।३ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । इन्द्रः)
क उ नु ते महिमनः समस्य ।
[१९६४] ६।२९।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वर्ण नृतविषिरो बभूथ ।
१०।१२३।७ (वेनो भार्गवः । वेनः)
......स्वर्ण नाम जनत प्रियाणि ।
[१९७१] ६।३०।४=(१२९२) ३।३२।११
[१९७२] ६।३०।५ = (७१८) १।३२।४
[२००९] ६।३१।४ = (१६२५) ४।३०।२०
[२०११] ६।३२।१ महे वीराय तवसे तुराय ।
६।४९।१२ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
प्र वीराय प्र तवसे तुराय ।
[२०१४] ६।३२।४ = (१५५७) ४।२२।३
[२०१७] ६।३३।२ (शुनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
त्वोत इत्सनिता वाजमर्वा ।
७।५६।२३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
मरुद्भिरित्सनिता वाजमर्वा ।
[२०२०] ६।३३।५ (शुनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
नूनं न इन्द्रः ......।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन् ।
(३१६८) ६।६८।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ)
नू न इन्द्र......।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मा ।
[२०३४] ६।३६।४ = (१४१०) ३।४६।२
[१९९१] ६।४०।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
याहि...... ।
उप ब्रह्माणि शृणव इमा नः ।
(२२१४) ७।२९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
याहि...... ।
उप— ।
[१९९२] ६।४०।५ = ४।३४।७ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
[१९९५] ६।४१।३ = (७३४) १।३३।५
[१९९९] ६।४२।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
सोमेभिः सोमपातमम् ।
(३०७) ८।१२।२० (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
[२००२-५] ६।४३।१-४ अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ।
[२०३६-३८] ६।४४।१-३ सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः ।
[२०४०] ६।४४।५ = (३०४३) ५।८६।४
["] ६।४४।५ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
रोदसी देवी शुष्मं सपर्यतः ।
(२४४१) ८।९३।१२ (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
देवी शुष्मं सपर्यतः ।
......रोदसी ।
[२०४४] ६।४४।९ = १।११०।९ (कुत्स आङ्गिरसः । ऋभवः)
[२०४५] ६।४४।१० शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
किमङ्ग रध्रचोदनं त्वाहुः ।
(६६३) ८।८०।३ (एकद्यूर्नौधसः । इन्द्रः)
किमङ्ग रध्रचोदनः ।
[२०४६] ६।४४।११ = (१४३८) ३।५१।५

[२०४९] ६।४४।१४ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
इन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान ।
सोमं वीराय शिप्रिणे पिबध्यै ।
(११८१) ७।२३।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
इन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ।
(२०३) ८।३२।२४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
सोमं वीराय शिप्रिणे ।
[२०५०] ६।४४।१५ = (१९२०) ६।२३।३
["] ६।४४।१५ = (१४९०) ४।१७।३
[२०५१] ६।४४।१६ = २।३३।२ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)
[२०५२] ६।४४।१७ एना मन्दानो जहि शूर शत्रून् ।
(२७३५) १०।११९।१ दर्पस्य हन्तवे शूर शत्रून् ।
[२०५३] ६।४४।१८ = (८३१) १।१०२।४
["] ६।४४।१८ = (९६७) १।१००।११
[२०५४] ६।४४।१९ = (१३९६) ३।४३।६
[२०५५] ६।४४।२० घृतपृषो नोर्मयो मदन्तः ।
१०।६८।१ (अयास्य आङ्गिरसः । बृहस्पतिः)
गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तः ।
[२०५६] ६।४४।२१ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
... ... वराय ॥
(अग्निः १७९५) ७।५।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। वैश्वानरोऽग्निः)
नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
... ... वरेण ।
[२०५८] ६।४४।२३ अयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः ।
(२६१३) १०।५४।६ यो अदधाज्ज्योतिषि ज्योतिरन्तः
[२०६२] ६।४५।३ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः ।
(३०८) ८।१२।२१ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
(३१०९) ८।४०।९ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
पूर्वीरुतः प्रशस्तयः ।
[२०६७] ६।४५।८= (१०८७) १।१७६।३
[२०६९] ६।४५।१०= (६९३) १।२९।२
["] ६।४५।१० (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
तम् ... ... वाजानां पते ।
अहूमहि श्रवस्यवः ।
(१८०७) ८।२४।१८ (विश्वमना वैयश्वः । इन्द्रः)
तं ... ... वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः ।
[२०७६] ६।४५।१७ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
स त्वं न इन्द्र मृळय ।

(६६१) ८।८०।१ (एकद्यूर्नौधसः । इन्द्रः)
[२०७९] ६।४५।२०= (अग्निः १०६१) ६।१६।१०
(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
[२०८१] ६।४५।२२ पुरुहूताय सत्वने ।
(४६३) ८।४५।२१ पुरुनृम्णाय सत्वने ।
[२०८४] ६।४५।२५ इमा उ त्वा शतक्रतो ।
(१४०८) ८।९२।१२ वयमु त्वा शतक्रतो ।
["] ६।४५।२५=(१३७७) ३।४१।५ (शंयुर्बार्हस्पत्यः। इन्द्रः)
... ... णोनुवुर्गिरः ।
इन्द्र वत्सं न मातरः ।
[२०८६] ६।४५।२७= (१३७८) ३।४१।६
[२०८७] ६।४५।२८ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
वत्सं गावो न धेनवः ।
९।१२।२ (असितः काश्यपो देवलो वा। पवमानः सोमः)
गावो वत्सं न मातरः ।
[२०८८] ६।४५।२९= (१५) १।५।१
[२०८९] ६।४५।३० (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
अस्माकं...भूतु...स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।
८।५।१८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
अस्माकं ... स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।
... ... भूतु ।
[२०९२] ६।४६।३ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
इन्द्रं तं हूमहे वयम् ।
(५०९) ८।५१ (वाल०३)।५ (श्रुष्टिगुः काण्वः। इन्द्रः)
["] ६।४६।३=(अग्निः ८३४) ५।९।७ (गय आत्रेयः। अग्निः)
[२०९३] ६।४६।४ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
बाधसे जनान् ।
अस्माकं बोध्यविता महाधने ।
(२२५९) ७।३२।२५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
णुदस्व ... ... अमित्रान् ।
अस्माकं बोध्यविता महाधने ।
[२०९६] ६।४६।७ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
यदिन्द्र नाहुषीष्वाँ .... कृष्टिषु ।
(२६६) ८।६।२४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
यदिन्द्र नाहुषीष्वा ।
... ... विक्षु ।
["] ६।४६।७ = (१७३७) ५।३५।२
[२०९८] ६।४६।९ छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च ।
९।३२।६ (श्यावाश्व आत्रेयः। पवमानः सोमः)
मघवद्भ्यश्च मह्यं च ।

[११०५] ६।४७।७ (गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः)
प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।
(अग्निः १५९७) १०।४५।९ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।
(अग्निः १४१४) ८।७१।६ सुदीतिः पुरुमीळ्हावांगिरसौ तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
प्र णो नय वस्यो अच्छ ।
[१११०] ६।४७।१२ (गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः)
(२७७६) १०।१३१।६ (सुकीर्तिः काक्षीवतः । इन्द्रः)
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः । बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥
[”] ६।४७।१२=(२७७६) १०।१३१।६=(अग्निः ६४६) ४।१।२० (वामदेवो गौतमः अग्निः)
[”] ६।४७।१२ = (२७७६) १०।१३१।६ = ४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषाः)
[११११] ६।४७।१३=(२७७७) १०।१३१।७=(अग्निः ४६७) ३।१।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
[”] ६।४७।१३ (गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः) =
(२७७७) १०।१३१।७ (सुकीर्तिः काक्षीवतः इन्द्रः)
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम । स सुत्रामा स्ववाँ इंद्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोत ।
७।५८।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
आराच्चिद् द्वेषो वृषणो युयोत ।
१०।७७।६ (स्यूमरश्मिर्भार्गवः । मरुतः)
आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोत ।
[१११७] ६।४७।२० = १।९१।२३ (गोतमो राहूगणः । सोमः)
६।४७।२८ (गर्गो भारद्वाजः । रथः)
देव रथ प्रति हव्या गृभाय ।
१।९१।४ (गोतमो राहूगणः । सोमः)

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[११३०] ७।१८।११ त्वायन्तो ये **अमदन्ननु त्वा ।**
(७७४) १।५२।१५ (सव्य आंगिरसः । इन्द्रः)
विश्वे देवासो **अमदन्ननु त्वा ।**
[११३८] ७।१८।२० = (७८९) १।५४।४
(८४५) १।१०३।७ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[११४३] ७।१९।४ भूरीणि **वृत्रा हर्यश्व हंसि ।**
(११७२) ७।२२।२ येन **वृत्राणि हर्यश्व हंसि ।**
[”] ७।१९।४ = (१६२६) ४।३०।११
[११४७] ७।१९।८ = (१९४९) ६।२६।३
[११५३] ७।२०।३ = (१८५७) ६।१८।२
[”] ७।२०।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
व्यास **इन्द्रः पृतनाः स्वोजाः ।**
(२५२२) १०।२९।८ (वसुक्र ऐन्द्रः । इंद्रः)
व्यानळिन्द्रः **पृतनाः स्वोजाः ।**
[११६०] ७।२०।१० = (११७०) ७।२१।१० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्मना च ये मघवानो जुनन्ति । वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः
[११६३] ७।२१।३ = (११०२) २।११।२
[११६४] ७।२१।४ = (१४७२) ४।१६।६
[११७०] ७।२१।१० = (११६०) ७।२०।१०
[११७२] ७।२२।२ =(११४३) ७।१९।४
[११७९] ७।२२।९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ।
(२४८७) १०।२३।७ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुकः । इन्द्रः)
[११८२] ७।२३।३ = (२०४९) ६।४४।१४
[११८३] ७।२३।४ = (१३११) ३।३५।१
[११८४] ७।२३।५ = (११९६) २।१८।७
[११८५] ७।२३।६ **यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।**
९।९७।३,६ (इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः । पवमानः सोमः)
[”] ७।२३।६ = ६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
[”] ७।२३।६ = १।१९०।८ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । बृहस्पतिः)
[११८६] ७।२४।१ = (८४७) १।१०४।१
[११८७] ७।२४।२ = (१०९३) १।१७७।३
[११८८] ७।२४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् ।
८।६९।४ (कृतुर्भार्गवः । सोमः)
दिव आ … ।
[११८९] ७।२४।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
आ नो विश्वाभिरूतिभिः ।
८।८।१ = ८।८।१८ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ वां विश्वाभिरूतिभिः ।

८।८७।३ (कृष्ण आङ्गिरसो द्युम्नीको वा वासिष्ठः
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
आवां विश्वाभिरूतिभिः ।
[२१९१] ७।२४।६ = (२१९७) ७।२५।६
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम ।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
[२१९४] ७।२५।३ = (१५६३) ४।२२।९
[२१९७] ७।२५।६ = (२१९१) ७।२४।६
[२२०१] ७।२६।५ = (१०४२) १।१६७।१
[२२१२] ७।२८।५ = (२२१७) ७।२९।५ =
(२२२२) ७।३०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
[२२१३] ७।२९।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे ।
९।८८।१ (उशना काव्यः । पवमानः सोमः)
["] ७।२९।१ = (१४३०) ३।५०।२
[२२१४] ७।२९।२ = (१३९३) ३।४३।३
["] ७।२९।२ = (११९६) २।१८।७
["] ७।२९।२ = (१९९१) ६।४०।४
[२२१७] ७।२९।५ = (२२१२) ७।२८।५ = (२२२२) ७।३०।५
[२२२१] ७।३०।४ = (१७२१) ५।३३।५
[२२२२] ७।३०।५ = (२२१२) ७।२८।५ = (२२१७) ७।२९।५
[२२२६] ७।३१।४ = (१३७९) ३।४१।७
[२२३४] ७।३१।१२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव ।
(३०९) ८।१२।२२ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रं वाणीरनूषता समोजसे ।
[२२३६] ७।३२।२ इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा ।
(२६०७) १०।५०।७ ये ते विप्र ब्रह्मकृतः ... ।
[२२३८] ७।३२।४ = (१८) १।५।१
[२२४०] ७।३२।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
सुनोत्या च धावति ।
८।३१।५ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः)
सुनुत आ च धावतः ।
[२२४२] ७।३२।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
सुनोता ... ... सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
९।३०।६ (बिंदुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
९।५१।२ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
... सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
... ... सुनोता ... ... ।
[२२४४] ७।३२।१० = १।८६।३ (गोतमो राहूगणः । मरुतः)
[२२४५] ७।३२।११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
अस्माकं बोध्यविता रथानाम् ।
१०।१०३।४ (अप्रतिरथ ऐन्द्रः । बृहस्पतिः)
अस्माकमेध्यविता रथानाम् ।
[२२५६] ७।३२।२२ अभि त्वा शूर नोनुमः ।
...... इन्द्र ...... ।
(१३०) ८।२१।५ अभि त्वां इन्द्र नोनुमः ।
[२२५७] ७।३२।२३ = (९२०) १।८१।५
[२२५९] ७।३२।२५ अमित्रान्त्सुवेदा नो वसू कृधि ।
६।४८।१५ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । मरुतः)
करत्सुवेदा नो वसू करत् ।
[२२७८] ७।९७।१ नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
१।१५४।५ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)
नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
[२२७९] ७।९८।१ जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।
(अग्निः १७११) १०।१८७।१ (वत्स आग्नेयः । अग्निः)
वृषभाय क्षितीनाम् ।
[२२८१] ७।९८।३ = (अग्निः १७२१) १।५९।५ (नोधा
गौतमः वैश्वानरोऽग्निः)
[२२८३] ७।९८।५ = (१६९८) ५।३१।६
[३३२५] ७।९८।१० = (३३२५) ७।९७।१०
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
[२२८६] ७।१०४।१६ = (१७११) ५।३२।७
[२२८७] ७।१०४।१९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्ताद् ।
(अग्निः १८४८) १०।८७।२१ (पायुर्भारद्वाजः ।
रक्षोहाग्निः)
पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात् ।
[२२८८,३३९७] ७।१०४।२० नूनं सृजदशनिं यातुमद्भ्यः ।
(३३०२) ७।१०४।२५ अशनिं यातुमद्भ्यः ।

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[८९] ८।१।३ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
नाना हवन्त ऊतये ।
अस्माकं ... ।
(३८०) ८।१५।१२ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ।
इन्द्रः)
नाना ... अस्माकेभिः ...... स्वर्जय ।

(२२९५) ८।६८।५ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
स्वर्मीळ्हेषु ... ।
नाना ... ।
[९०] ८।१।४ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
उप क्रमस्व **पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ।**
(अग्निः १४०६) ८।६०।१८ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
इषण्यया नः **पुरुरूपमा भर वाजं** — ।
[९८] ८।१।१२ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ इन्द्रः)
इष्कर्ता विहुतं पुनः ।
८।२०।२६ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)
[१०३] ८।१।१७ सोता हि **सोममद्रिभिः ।**
९।३४।३ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
सुन्वन्ति **सोममद्रिभिः ।**
[१०८] ८।१।२२ = (अग्निः १०७) १।४५।८
(प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
[११०] ८।१।२४ = (३२२१) ४।४६।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
[१११] ८।१।२५ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
विचक्षणस्य पीतये ।
८।३५।२३ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
[११२] ८।१।२६ = (१४४३) ३।५१।१०
[१३०] ८।२।१५ = (८८३) १।६२।१२
[१४७] ८।२।३२ (मेधातिथिः काण्वः, प्रियमेधश्चाङ्गिरसः। इन्द्रः)
इन्द्रः पुरू पुरुहूतः ।
महान् महीभिः शचीभिः ।
(३८८) ८।१६।७ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)
[१५६] ८।३।१ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
आपिर्नो **बोधि सधमाद्यो वृधे ।**
(५३५) ८।५४ (वाल० ६) । ५ (मातरिश्वा काण्वः । इन्द्रः)
तेन नो **बोधि** — ।
[१५९] ८।३।४ **समुद्र इव पप्रथे ।**
१०।६२।९(नाभानेदिष्ठो मानवः।सावर्णेर्दानस्तुतिः)
वि **सिन्धुरिव पप्रथे ।**
[१६०] ८।३।५ = (८०) १।१६।३
[१६१] ८।३।६ इन्द्रे ह **विश्वा भुवनानि येमिरे ।**
(३१५-१७) ८।१२।२८-३० आदित्ते **विश्वा** — ।
९।८६।३० (पृश्नयोऽजाः । पवमानः सोमः)
तुभ्येमा **विश्वा** — ।
१०।५६।५ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । विश्वेदेवाः)
तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे ।
[१६२] ८।३।७ = (अग्निः २४४६) १।१९।९
(मेधातिथिः काण्वः । अग्निर्मरुतश्च)
["] ८।३।७ (मेध्यातिथिः काण्वः इन्द्रः)
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् ।
(३१९) ८।१२।३२ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
समीचीनासो अस्वरन् ।
[१६३] ८।३।८ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
अनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ।
(३७४) ८।१५।६ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
[१६७] ८।३।१२ = (१८४५) ७।१३।२
[१७०] ८।३।१५ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
गिरः स्तोमास ईरते ।
वाजयन्तो रथाइव ।
(अग्निः १३१०) ८।४३।१ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
गिरः— ।
९।६७।१७ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
वाजयन्तो— ।
[१७१] ८।३।१७ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
युक्ष्वा......**हरी......परावतः ।**
......**उग्र ऋष्वेभिरा गहि ।**
(४९१) ८।४९ (वाल० १)। ७ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे यद्वा पृथिव्यामधि ।
......**महेमत उग्र उग्रेभिरा गहि ।**
(५०१) ८।५० (वाल० २)।७(पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
यद्ध नूनं परावति **यद्वा पृथिव्यां** दिवि ।
युजान ......हरिभिर्**महेमत ऋष्व ऋष्वेभिरा गहि ।**
[१७५] ८।३।२० (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ।
(१८२) ८।३२।३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
[२२९] ८।४।१ (देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
(६०१) ८।६५।१ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
[२३०] ८।४।२ इन्द्र **मादयसे सचा ।**
(५१५) ८।५२ (वाल० ४) । १ आर्ये **मादयसे सचा ।**
[२४०] ८।४।१२ (देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
यथा सोमस्य तृम्पसि ।
तस्येहि प्र द्रवा पिब ।
(५२८) ८।५३ (वाल० ५) । ४ (मेध्यः काण्वः । इन्द्रः)
यथा— ।

(५९८) ८।६४।१० (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
तस्येद्धि ... ।
[२४२] ८।४।१४ अर्वाञ्चं त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप
१।४७।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो...।
[२४३] ८।६।१ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ।
९।२।९ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
[२४५] ८।६।३ = (अग्निः ९६) १।४४।११
(प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
[२४६] ८।६।४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
समुद्रायेव सिन्धवः ।
(अग्निः १३६७) ८।४४।२५ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
[२४८] ८।६।६ = (९०५) १।८०।६
[२५१] ८।६।९ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
रयिं गोमन्तमश्विनम् ।
९।६२।१२ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
९।६३।१२ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
[२५५] ८।६।१३ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
वृत्रं पर्वशो रुजन् ।
८।७।२३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
नि वृत्रं पर्वशो ययुः ।
[२५६] ८।६।१४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
वृत्रा शुभ्र शृणिषे ।
(२११) ८।३३।१० (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
वृत्रा शुभ्र शृणिषे परावति ।
[२५७] ८।६।१५ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
न न......नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् ।
......विव्यचन्त भूमयः ।
(३११) ८।१२।२४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
विविक्थो ... नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् ।
[२६०] ८।६।१७ = (१४६४) ३।५३।१२
[२६१] ८।६।१९ घृतं दुहत आशिरम् ।
१।१३४।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । वायुः)
घृतं दुहत आशिरम् ।
[२६३] ८।६।२१ कण्वा उक्थेन वावृधुः ।
(२८५) ८।६।४३ कण्वा उक्थेन...।
[२६५] ८।६।२३ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
आ न इन्द्र महीमिषम् ।

९।६५।१३ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
आ न इन्दो महीमिषम् ।
[२६६] ८।६।२४ = (अग्निः ८१०) ५।६।१०
(वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
["] ८।६।२४ = (२०९६) ६।४६।७
[२६७] ८।६।२५ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
यदिन्द्र मृळयासि नः ।
(४७५) ८।४५।३३ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
[२६८] ८।६।२६ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
यदङ्ग तविषीयस ।
८।७।२ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
यदङ्ग तविषीयवो ।
[२७१] ८।६।२९ चिकित्वाँ अव पश्यति ।
१।२५।११ (शुनःशेप आजीगर्तिः । वरुणः)
चिकित्वाँ अभि पश्यति ।
[२७४] ८।६।३२ इमा म इन्द्र सुष्टुतिम् ।
(३१८) ८।१२।३१ इमां त इन्द्र...।
[२७६] ८।६।३४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
आपो न प्रवता यतीः ।
(३१८) ८।१३।८ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
९।२४।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
[२७७] ८।६।३५ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः समुद्रमिव सिन्धवः ।
(२३४१) ८।९५।६ (तिरश्चीराङ्गिरसः । इन्द्रः)
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ।
(२४१८) ८।९२।२२ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)
समुद्रमिव सिन्धवः ।
९।१०८।१६ (ऊर्ध्वसद्मा आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
समुद्रमिव सिन्धवः ।
[२७८] ८।६।३६ = (९४०) १।८४।४
[२७९] ८।६।३७ = (१७४१) ५।३५।६
["] ८।६।३७ = ३।५९।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
["] ८।६।३७ = (१७४१) ५।३५।६ =
(४२८) ८।३४।४ हवन्ते वाजसातये ।
(३३३०) ६।५७।१ हुवेम वाजसातये ।
८।९।१३ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
हुवेय वाजसातये ।

[२८०] ८।६।३८ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
अनु त्वा रोदसी उभे ।
(६३८) ८।७६।११ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
[२८१] ८।६।३९ मन्द्रस्वा सु स्वर्णरे ।
(६०१) ८।६५।२ मादयासे स्वर्णरे ।
(अग्निः२४४७) ८।१०३।१४ (सोभरिः काण्वः । अग्निमरुतः)
मादयस्व स्वर्णरे ।
[२८३] ८।६।४१ ईशान ओजसा ।
(३१०५) ८।४०।५ इन्द्र ईशान ओजसा ।
[२८७] ८।६।४५ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः) =
(२०९) ८।३२।३० (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी ।
सोमपेयाय वक्षतः ।
(३६५)८।१४।१२(गोषुक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
[२९१] ८।१२।४= (३०४५) ५।८६।६
[२९२] ८।१२।५=(४४) १।८।७
["] ८।१२।५ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्र विश्वाभिरूतिभिर्ववक्षिथ ।
(१९१) ८।३२।१२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रो विश्वाभिरूतिभिः ।
(५५२) ८।६१।५ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
(२७८७) १०।१३४।३ (मान्धाता यौवनाश्वः । इन्द्रः)
शचीभिः शक ... इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
[२९५] ८।१२।८ यदि प्रवृद्ध सत्पते ।
(२४३४) ८।९३।५ यद्वा प्रवृद्ध सत्पते ।
[२९६] ८।१२।९ = (१०१८) १।१३०।८
[२९७] ८।१२।१० इयं त ऋत्वियावती ।
(६६७) ८।८०।७ इयं धीर्ऋत्वियावती ।
[२९८] ८।१२।११ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
क्रतुं पुनीत आनुषक् ।
(५३०) ८।५३ (वाल० ५) ।६ (मेध्यः काण्वः । इंद्रः)
क्रतुं पुनत आनुषक् ।
[२९९] ८।१२।१२=(७९८) १।५५।२
[३०१] ८।१२।१४ उत स्वराजे अदितिः ।
७।६६।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः)
["] ८।१२।१४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
पुरुप्रशस्तमूतय ऋतस्य यत् ।
(अग्निः १४१८) ८।७१।१० (सुदीति-पुरुमीळ्हावाङ्गिरसौ तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
... ... पुरुप्रशस्तमूतये ।
[३०६] ८।१२।१९ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
देवंदेवं वोऽवस इन्द्रमिन्द्रं गृणीषणि ।
८।२७।१३ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः)
... वोऽवसे देवं देवमभिष्टये ।
... ... गृणन्तो ।
[३०७] ८।१२।२० = (१९९९) ६।४२।२
[३०८] ८।१२।२१ = (२०६२) ६।४५।२
[३०९] ८।१२।२२ = (१३३८) ३।३७।५
["] ८।१२।२२ = (१०२१) १।१३१।१
["] ८।१२।२२ = (२२३४) ७।३१।१२
[३१०] ८।१२।२३ = (३०११) ६।५९।१०
[३११] ८।१२।२४ = (२५७) ८।३।१५
[३१२] ८।१२।२५ = (३०९) ८।१२।२२
[३१२-३१४] ८।१२।२५-२७ आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ।
[३१३] ८।१२।२६ = (७६१) १।५२।२
[३१४] ८।१२।२७ = १।२२।१८ (मेधातिथिः काण्वः । विष्णुः)
त्रीणि पदा वि चक्रमे ।
[३१५] ८।१२।२८ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
वावृधाते दिवेदिवे ।
(५२६) ८।५३ (वाल० ५) ।२ (मेध्यः काण्वः । इन्द्रः)
वावृधानो दिवेदिवे ।
[३१५-१७] ८।१२।२८-३० आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ।
[३१८] ८।१२।३१ = (२७४) ८।३।३२
[३१९] ८।१२।३२ = (१६२) ८।३।७
[३२०] ८।१२।३३ = (अग्निः १७५१) ३।२६।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
सुवीर्यं स्वश्व्यं ।
[३२१] ८।१३।१ = (२९८) ८।१२।११
[३२४] ८।१३।४ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ।
(३७३) ८।१५।५ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
[३२६] ८।१३।६ = २।५।४
[३२७] ८।१३।७ = (३०८०) ७।९४।२
[३२८] ८।१३।८ = (२७६) ८।३।३४
[३३०] ८।१३।१० = ८।५।५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
गन्तारा दाशुषो गृहम् ।
[३३१] ८।१३।११ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
अश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः ।

८।८७।५ (कृष्ण आंगिरसो, द्युम्नीको वा वासिष्ठः प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)

[३३०] ८।१३।१२ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

इन्द्र शविष्ठ सत्पते ।

(२२९१) ८।६८।१ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

["] ८।१३।१२ (३०४५) ५।८६।६

["] ८।१३।१२ = ७।८१।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । उषाः)

श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम् ।

[३३३] ८।१३।१३ = (१३९०) ३।४४।१

[३३४] ८।१३।१४ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

मत्स्वा सुतस्य गोमतः ।

(२४२६) ८।९२।३० (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)

["] ८।१३।१४ = (अग्निः १९१८) १।१४२।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं [इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा])

तन्तुं तनुष्व पूर्व्यं ।

[३३५] ८।१३।१५ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।

(९७९) ८।९७।४ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)

[३३७] ८।१३।१८ तमिद्विप्रा अवस्यवः ।

९।१७।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

धीभिर्विप्रा अवस्यवः ।

९।६३।२० (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)

[३३८] ८।१३।१८ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

(२४१७) ८।९२।२१ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)

त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत ।

तमिद्वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम् ।

९।६१।१४ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

तमिद्वर्धन्तु नो गिरो

[३३९] ८।१३।१९ शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः ।

(अग्निः १९२०) १।१४२।३ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं [नराशंसः])

शुचिः पावको अद्भुतः ।

[३४५] ८।१३।२५ धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।

८।७।३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

धुक्षन्त ... ... ।

[३४७] ८।१३।२७ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

इह त्या सधमाद्या ।

(२०८) ८।३२।२९ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

(२४१३) ८।९३।२४ (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[३५१] ८।१३।३१ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

वृषायमिन्द्र ते रथ उतो ते वृषणा हरी ।

वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः ।

(२२०) ८।३३।११ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

वृषा रथो मघवन् वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो ।

[३५२] ८।१३।३२ = (१७६६) ५।४०।२

[३५३] ८।१३।३३ = (१७६७) ५।४०।३

[३५६] ८।१४।३ = (अग्निः ९२४) ५।२६।५ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)

[३५७] ८।१४।४ = (१६५२) ४।३२।८

[३५९] ८।१४।६ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः ।

ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ।

९।६५।९ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)

ते......वयं विश्वा धनानि जिग्युषः ।

सखित्वमा वृणीमहे ।

[३६०] ८।१४।७ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

व्य१न्तरिक्षमतिरन् ।

(२८२१) १०।१५३।३ (देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः)

व्य१न्तरिक्षमतिरः ।

[३६५] ८।१४।१२ = (२८७) ८।६।४५

[३६९] ८।१५।१ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

तम्वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतं ।

इन्द्रं......॥

(२४०१) ८।९२।५ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)

तम्वभि प्रार्चतेन्द्रं ... ।

(२३९८) ८।९२।२ पुरुहूतं पुरुष्टुतं ... ... ।

इन्द्र ... ।

[३७१] ८।१५।३ एको वृत्राणि जिघ्नसे ।

(२३४४) ८।९५।९ शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे ।

[३७३] ८।१५।५= (३२४) ८।१३।४

[३७४] ८।१५।६= (१६३) ८।३।८

[३८०] ८।१५।१२= (८९) ८।१।३

[३८१] ८।१५।१३=७।५५।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वास्तोष्पतिः)

विश्वा रूपाण्याविशन् ।

["] ८।१५।१३ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

इन्द्रं जैत्राय हर्षया शचीपतिम् ।

९।१११।३ (अनानतः पारुच्छेपिः । पवमानः सोमः)

इन्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।

[३८१] ८।१६।१= (अग्निः ५०९) ३।१०।१
(विश्वामित्रो गाथिनः। अग्निः)
(२७८५) १०।१३४।१ (मान्धाता यौवनाश्वः। इन्द्रः)
सम्राजं चर्षणीनाम्।
[३८८] ८।१६।७= (१४७) ८।२।३२
[३९१] ८।१६।११ (इरिम्बिठिः काण्वः। इन्द्रः)
इन्द्रो विश्वा अति द्विषः।
(२३१६) ८।६९।१४ (प्रियमेध आङ्गिरसः। इन्द्रः)
[३९४] ८।१७।१ **एदं बर्हिः सदो मम।**
(अग्निः ५२९) ३।२४।३ (विश्वामित्रो गाथिनः। अग्निः)
[३९५] ८।१७।२= (१३८१) ३।४१।९
[३९६] ८।१७।३ (इरिम्बिठिः काण्वः। इन्द्रः)
सुतावन्तो हवामहे।
(५१०) ८।५१(वाल० ३)।६ (श्रुष्टिगुः काण्वः। इन्द्रः)
(५६१) ८।६१।१४ (भर्गः प्रागाथः। इन्द्रः)
(२४५९) ८।९३।३० (सुकक्ष आङ्गिरसः। इन्द्रः)
[३९७] ८।१७।४ **अस्माकं सुष्टुतीरुप।**
(९३८) १।८४।२ **ऋषीणां च स्तुतीरुप।**
[४०१] ८।१७।८= ६।५६।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। पूषा)
इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते।
[४०३] ८।१७।१०= (३५६) ८।१४।३=
(अग्निः ९२४) ५।२६।५ (वसूयव आत्रेयाः। अग्निः)
(३०७०) ६।६०।१५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। इंद्राग्नी)
[४०४] ८।१७।११ (इरिम्बिठिः काण्वः। इन्द्रः)
एहीमस्य द्रवा पिब।
(६००) ८।६४।१२ (प्रगाथः काण्वः। इन्द्रः)
एहीमिन्द्र द्रवा पिब।
[४०८] ८।१७।१५=(८०) १।१६।३
इन्द्रं सोमस्य पीतये।
[४११] ८।२१।३= (१७६५) ५।४०।१
[४१२] ८।२१।४= १।१४।१ (मेधातिथिः काण्वः। विश्वेदेवाः)
[४१३] ८।२१।५= (२२५६) ७।३२।१२
[४१६] ८।२१।९= (७०५) १।३०।७
[४१९] ८।२१।११ (सोभरिः काण्वः। इन्द्रः)
त्वया ह स्विद्युजा वयं।
(अग्निः १४६५) ८।१०२।३ (प्रयोगो भार्गवः पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रौऽन्यतरो वा। अग्निः)
[४२१] ८।२१।१३= (८३५) १।१०२।८
[१७९०] ८।२४।१= (१४६५) ३।५३।१३

[१७९२] ८।२४।३ = (अग्निः २०) १।१२।११
(मेधातिथिः काण्वः। अग्निः)
[१७९७] ८।२४।८ (विश्वमना वैयश्वः। इन्द्रः)
विद्याम शूर नव्यसः।
वसोः ... ...।
(५०३) ८।५०(वाल० २)।९ (पुष्टिगुः काण्वः। इन्द्रः)
वसो विद्याम ... ...।
[१८०२] ८।२४।१३ = (३०७०) ६।६०।१५
[१८०७] ८।२४।१८ = (२०६९) ६।४५।१०
[१८०८] ८।२४।१९ (विश्वमना वैयश्वः। इन्द्रः)
एतो न्विन्द्रं स्तवाम।
(६७३) ८।८१।४ (कुसीदी काण्वः। इन्द्रः)
(२३४१) ८।९५।७ (तिरश्चीराङ्गिरसः। इन्द्रः)
[१८१] ८।३२।१ (मेधातिथिः काण्वः। इन्द्रः)
वधीदुग्रो रिणन्नपः।
९।१०९।२२ (अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। पवमानः सोमः)
श्रीणन्नुग्रो रिणन्नपः।
[१८२] ८।३२।३ = (१७५) ८।३।२०
[१८६] ८।३२।७ = (१६५२) ४।३२।८
[१९१] ८।३२।१२ = (२९२) ८।१२।१५
[१९२] ८।३२।१३ = (१३) १।४।१०
["] ८।३२।१३ = (१३) १।४।१०= (१७) १।५।४
[१९७] ८।३२।१८ = (१०४०) १।१३३।७
[२०१] ८।३२।२२ **धेना इन्द्रावचाकशत्।**
(२५६२) १०।४३।६ जनानां **धेना अवचाकशद् वृषा।**
[२०२] ८।३२।२३ = (३२२७) ४।४७।२
(वामदेवो गौतमः। इन्द्रवायू)
[२०३] ८।३२।२४ = (२०४९) ६।४४।१४
(शंयुर्बार्हस्पत्यः। इन्द्रः)
[२०६] ८।३२।२७ = १।२७।४ (कण्वो घौरः। मरुतः)
[२०८] ८।३२।२९ (मेधातिथिः काण्वः। इन्द्रः) =
(२४५३) ८।९३।२४ (सुकक्ष आङ्गिरसः। इन्द्रः)
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या।
वोळ्हामभि प्रयो हितम्॥
["] ८।३२।२९ = (२४५३) ८।९३।२४
= (३४७) ८।१३।२७
[२०९] ८।३२।३० = (२८७) ८।६।४५
["] ८।३२।३० = (२८७) ८।६।४५
=(३६५) ८।१४।१२

[२११] ८।३३।३ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
मक्षू गोमन्तमीमहे ।
(८९५) ८।८८।२ (नोधाः गौतमः । इन्द्रः)
[२१९] ८।३३।१० (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
सत्यमित्था वृषेदसि ।
९।६४।२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
सत्यं वृषन् वृषेदसि ।
[२२०] ८।३३।११ = (३५१) ८।१३।३१
[२२४] ८।३३।१५ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
मदाय चुक्ष सोमपाः ।
(६१८) ८।६६।६ (कलिः प्रागाथः । इन्द्रः)
[४२५-३१] ८।३४।१-१५ दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ।
[४२८] ८।३४।४ = (१७४१) ५।३५।६
[४३१] ८।३४।७ (नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
सहस्रोते शतामघ ।
९।६२।१४ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
सहस्रोतिः शतामघो ।
[४३२] ८।३४।८ आ त्वा होता मनुर्हितः ।
(अग्निः १०.०९) १।१३।४ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं [इळः])
अग्नि होता......।
१।१४।११ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वेदेवाः)
त्वं होता......।
(अग्निः१०५०)६।१६।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
[४३५] ८।३४।११ आ नो याह्युपश्रुति ... ।
८।८।५ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नो यातमुपश्रुति ।
[४३७] ८।३४।१३ (नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
समुद्रस्याधि विष्टपः ।
(९८०) ८।९७।५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
......विष्टपि ।
९।१२।६(असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
......विष्टपि ।
९।१०७।१४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
......विष्टपि मनीषिणो ।
[१७६९-७४] ८।३६।१-६ पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो, यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ।
[१७७२] ८।३६।४ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रः)
जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
९।९६।५ (प्रतर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः)
[१७७५] ८।३६।७ = (१७८२) ८।३७।७
(श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रः)
श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा [८।३७।७ रेभतस्तथा]
शृणु यथाशृणोरत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्य इन्द्र ब्रह्माणि ।
[८।३७।७ क्षत्राणि] वर्धयन् ।
(३०९८) ८।३८।८ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
श्यावाश्वस्य सुन्वतो ।
[१७७६-८१] ८।३७।१-६ इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ।
[१७८२] ८।३७।७ = (१७७५) ८।३६।७
["] ८।३७।७ = (१७७५)८।३६।७
= (३०९८) ८।३८।८
[४४६] ८।४५।४ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
जातः पृच्छद्वि मातरम् ।
क उग्राः के ह शृण्विरे ।
(६४०) ८।७७।१ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
जज्ञानो......वि पृच्छदिति मातरम् ।
क......।
[४४९] ८।४५।७ = (७०) १।११।१
[४५२] ८।४५।१० (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
अरं ते शक्र दावने ।
(२४२२) ८।९२।२६ (श्रुतकक्ष सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[४५३] ८।४५।११ शनैश्चिद्यन्तो अद्रिवः ।
(५५१) ८।६।१४ मक्षू चिद्यन्तो...।
[४५५] ८।४५।१३ = (१३८७) ३।४२।६
[४५७] ८।४५।१५ = (९२४) १।८१।९
[४६३] ८।४५।२१ स्तोत्रमिन्द्राय गायत ।
(२३८४) ८।८९।१ बृहदिन्द्राय गायत ।
["] ८।४५।२१ = (२०८१) ६।४५।२२
[४७१] ८।४५।२९ = (१५) १।५।२
[४७५] ८।४५।३३ = (२६७) ८।६।२५
[४८२-८४] ८।४५।४०-४२ वसु स्पार्हं तदा भर ।
[१८१९] ८।४६।३ (वशोऽश्व्यः । इन्द्रः)
शतमूते शतक्रतो ।
गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ।
(२३८३) ८।९९।८ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
शतमूतिं शतक्रतुम् ।

(५३३) ८।५४ (वाल० ६)।१ (मातरिश्वा काण्वः । इन्द्रः)
गीर्भिः ... ... ।
[१८२२] ८।४६।६ = ६।५४।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
ईशानं राय ईमहे ।
[१८२४] ८।४६।८ (वशोऽश्व्यः । इन्द्रः)
यस्ते मदो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः ।
९।६१।१९ (अमहीयुरांगिरसः । पवमानः सोमः)
यस्ते मदो वरेण्यः ।
(२४१३) ८।९२।१७ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आंगिरसः । इन्द्रः)
यस्ते ... य इन्द्रवृत्रहन्तमः ।
य ... ... मदः ।
[१८२५] ८।४६।९ (वशोऽश्व्यः । इन्द्रः)
गमेम गोमति व्रजे ।
(५०९) ८।५१ (वाल० ३)।५ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
[१८२९] ८।४६।१३ पुरः स्थाता मघवा वृत्रहा भुवत् ।
(२४८२) १०।२३।२ इन्द्रो मघैर्मघवा ... ।
[१८३६] ८।४६।२० = ८।२२।२ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ।
[४८५] ८।४९(वाल० १)।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
अभि प्र ... इन्द्रमर्च यथा विदे ।
(२३०७) ८।६९।४ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
अभि प्र... ...इन्द्रमर्च यथा विदे ।
[४८९] ८।४९(वाल० १)।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
आ न...धियानो अश्वो ।
यं ते स्वदावन्स्वदयन्ति धेनवः ।
(४९९) ८।५०(वाल० २)।५ (पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
आ नः ...... इयानो अत्यो ।
यं ते स्वदावन्स्वदन्ति गूर्तयः ।
[४९०] ८।४९।(वाल० १)।६ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
उग्रं ... वीरं ... विभूतिम् ।
उद्रीव वज्रिन्नवतो न सिञ्चते ।
(५००) ८।५०(वाल० २)।६ (पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
वीरमुग्रं ... ... विभूतिम् ।
उद्रीव वज्रिन्नवतो वसुत्वना ।
[४९१] ८।४९(वाल० १)।७ = (१७१) ८।३।१७
[४९३] ८।४९(वाल० १)।९ (प्रस्कण्व. काण्वः । इन्द्रः)
एतावतस्त ...... ।
यथा प्रावो मघवन् मेध्यातिथिं यथा ।
(५०३) ८।५०(वाल० २) ९ (पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
एतावतस्ते ...... ।
यथा प्राव एतशं कृत्व्ये धने यथा ।
[४९४] ८।४९(वाल० १)।१० (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
यथा कण्वे मघवन् त्रसदस्यवि ।
यथा गोशर्ये असनोर्ऋजिश्वनि ... गोमद् ।
(५०४) ८।५०।(वाल० २)।१० (पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
यथा कण्वे मघवन् मेधे अध्वरे ।
यथा गोशर्ये अपिपासो अद्रिवो ... गोत्रं ।
[४९९] ८।५०(वाल० २)।५ = (४८९) ८।४९(वाल० १)।५
[५००] ८।५०(वाल० २)।६ = (४९०) ८।४९(वाल० १)।६
[५०१] ८।५०(वाल० २)।७= (१७१) ८।३।१७
[५०३] ८।५० (वाल० २)। ९ = (१७९७) ८।२४।८
["] ८।५० (वाल० २)। ९=
(४९३) ८।४९ (वाल० १)। ९
[५०४] ८।५० (वाल० २)। १० =
(४९४) ८।४९ (वाल० १)। १०
[५०५] ८।५१ (वाल० ३)। १ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
यथा मनौ सांवरणौ सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।
(५१५) ८।५२ (वाल० ४)। १ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)
यथा मनौ विवस्वति सोमं शक्रापिबः सुतम् ।
[५०९] ८।५१ (वाल० ३)। ५ = (२०९१) ६।४६।३
["] ८।५१ (वाल० ३) ५ = (१८२५) ८।४६।९
[५१०] ८।५१ (वाल० ३)। ६ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
यस्मै त्वं वसो दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्नुते ।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ।
(५२०) ८।५२ (वाल० ४)। ६ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)
यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति ।
(५६१) ८।६१।१४ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
तं त्वा वयं......।
["] ८।५१ (वाल० ३)। ६ = (५६१) ८।६१।१४
= (३९६) ८।१७।३
[५१५] ८।५२(वाल० ४)।१ यथा मनौ...सोमं शक्रापिबः सुतम् ।
...इन्द्र...सचा ।
(५०५) ८।५१ (वाल० ३)।१ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
यथा मनौ...सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।
...मघवन् ...सचा ।
["] ८।५२ (वाल० ४) १ = (२३०) ८।४।१
[५१७] ८।५२ (वाल० ४)। ३

विष्णुस्त्रीणि पदा वि चक्रम ...।
१।२२।१८ (मेधातिथिः काण्वः । विष्णुः)
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः... ।
[५१८] ८।५१ (वाल० ४)।४ जुहूमसि श्रवस्यवः ।
(४) १।४।१ जुहूमसि द्यविद्यवि ।
[५१९] ८।५२ (वाल० ४)।५ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)
महाँ उग्र ईशानकृत् ।
(६०५) ८।६५।५ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
[५२०] ८।५२ (वाल० ४)। ६
यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति ।
(५१०) ८।५१ (वाल० ३)। ६
...दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्नुते ।
["] ८।५२ (वाल० ४)। ६ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ।
(५५७) ८।६१।१० (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
[५२४] ८।५२ (वाल० ४)। १० सं क्षोणी समु सूर्यम् ।
८।७।२२ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
[५२५] ८।५३ (वाल० ५)। १ ईशानं राय ईमहे ।
६।५४।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
[५२६] ८।५३ (वाल० ५)। २ = (३१५) ८।१२।२८
["] ८।५३ (वाल० ५)। २ वाजयन्तो हवामहे ।
(अग्निः १२२२) ८।११।९ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
[५२७] ८।५३(वाल० ५)।३ यं परावति सुन्विरे जनास्त्वा ये अर्वावतीन्दवः ।
(२४३५) ९।९३।६ ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे ।
९।६५।२२(भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
[५२८] ८।५३(वाल० ५)।४ = (२४०) ८।४।१२
यत्रा सोमस्य तृम्पसि ।
[५३०] ८।५३(वाल० ५)।६ = (२९८) ८।१२।११
क्रतुं पुन (नी) त आनुषक् ।
[५३१] ८।५३(वाल० ५)।७ = (१७३६) ५।३५।१
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ।
[५३३] ८।५४(वाल० ६)।१ = (१८१९) ८।४६।३
गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ।
[५३५] ८।५४(वाल० ६)।५ = (१५६) ८।३।१
नो बोधि सधमाद्यो वृधे ।
[५३६] ८।५४(वाल० ६)।६ ससवांसो वि शृण्विरे ।
(अग्निः ७०९) ४।८।६ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
[५३७] ८।५४ (वाल० ६)। ७ धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।
८।७।३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
धुक्षन्त...।
[५३८] ८।५४ (वाल० ६)।८ वयं त इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम ।
(अग्निः ७९६) ५।४।७ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम ।
(अग्निः ११७५) ७।१४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
वयं ते अग्ने समिधा विधेम ।
[५४४] ८।५६ (वाल० ८)। १ = (४२) १।८।५
द्यौर्न प्रथिना शवः
[५५१] ८।६१।४ मक्षू चिद् यन्तो अद्रिवः ।
(४५३) ८।४५।११ शनैश्चिद् यन्तो अद्रिवः ।
[५५२] ८।६१।५ = (२९२) ८।१२।५ इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
[५५३] ८।६१।६ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
उत्सो देव हिरण्ययः ।
९।१०७।४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
[५५७] ८।६१।१० = (५२०) ८।५२ (वाल० ४)। ६
स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ।
[५६०] ८।६१।१३ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
वि द्विषो वि मृधो जहि ।
(२८१६) १०।१५२।३ (शासो भारद्वाजः । इन्द्रः)
वि रक्षो वि मृधो जहि ।
[५६१] ८।६१।१४ = (३९६) ८।१७।३ सुतावन्तो हवामहे ।
[५६६-७७] ८।६२।१-१२ भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।
[५६९] ८।६२।४ इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।
५।७३।१० (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
इमा ब्रह्माणि...।
[५७९] ८।६३।२ उक्था ब्रह्म च शंस्या ।
(४७) १।८।१० स्तोम उक्थं च शंस्या ।
[५८०] ८।६३।३ = (९०९) १।८०।१०
[५८३] ८।६३।६ कृतानि कर्त्वानि च ।
१।२५।११ (शुनःशेप आजीगर्तिः । वरुणः)
कृतानि या च कर्त्वा ।
[५८६] ८।६३।९ उरु क्रमिष्ट जीवसे ।
१।१५५।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)
[५८९] ८।६४।१ = (६४) १।१०।७
[५९१] ८।६४।४ ओभे पृणासि रोदसी ।
(अग्निः १६८५) १०।१४०।२ (पावकोऽग्निः । अग्निः)
पृणाक्षि रोदसी उभे ।
[५९४] ८।६४।६ = (८६) १।१६।९

[५९५] ८।६४।७ **ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ।**
८।७।२० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
ब्रह्मा को वः सपर्यति ।
[५९८] ८।६४।१० = (२४०) ८।४।१२
[६००] ८।६४।१२ = (४०४) ८।१७।११
[६०१] ८।६५।१ = (२२९) ८।४।१
[६०२] ८।६५।२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
मादयासे स्वर्णरे ।
(अग्निः २४४७) ८।१०३।१४ (सोभरिः काण्वः । अग्निमरुतः)
मादयस्व स्वर्णरे ।
[६०३] ८।६५।३ = (८०) १।२६।३
[६०५] ८।६५।५ = (५९९) ८।५२ (वाल० ४) ।१
[६०६] ८।६५।६ **प्रयस्वन्तो हवामहे ।**
(अग्निः ८९३) ५।२०।३ (प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अग्निः)
["] ८।६५।६ **इदं नो बर्हिरासदे ।**
(अग्निः १९१२) १।१३।७ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं = [उषासानक्ता])
[६०७] ८।६५।७ = (१६५७) ४।३२।१३
तं त्वा वयं हवामहे ।
["] ८।६५।७ = (१६५७) ४।३२।१३ = (अग्निः १३३२) ८।४३।२३ (विरूप आंगिरसः । अग्निः)
[६०८] ८।६५।८ **इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः ।**
(३०९३) ८।३८।३ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
इदं वा मदिरं मध्वधुक्ष०...।
[६०९] ८।६५।९ = (५५) १।९।८
अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ।
[६११] ८।६५।११ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
श्रवो देवेष्वक्रत ।
१०।६२।७ (नाभानेदिष्ठो मानवः । विश्वेदेवाः)
[६१८] ८।६६।६ = (२२४) ८।३३।१५
मदाय द्युक्ष सोमपाः ।
[६२०] ८।६६।८ **सेमं नः स्तोमं जुजुषाण आ गहि ।**
(८१) १।१६।५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
[६२४] ८।६६।१२ = (१६०४) ४।२९।१
[६२५] ८।६६।१३ = (९५५) १।८४।१९
[२२९१] ८।६८।१ = (३३२) ८।१३।१२
इन्द्र शविष्ठ सत्पते ।
[२२९५] ८।६८।५ = (८९) ८।१।३ **नाना हवन्त ऊतये ।**
[२२९७] ८।६८।७ = (१३८९) ३।४२।८

दै० [इन्द्रः] ३२

इन्द्रं (सोमं) चोदामि पीतये ।
[२२९९] ८।६८।९ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
जयेम पृत्सु वज्रिवः ।
(२४०७) ८।९२।११ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आंगिरसः। इन्द्रः)
[२३०४] ८।६९।१ **प्र वस्त्रिष्टुभमिषं ।**
८।७।१ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
प्र यत्त्रिष्टुभमिषं ... ।
[२३०६] ८।६९।३ = (९४७) १।८४।११
ता अस्य ... सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
["] ८।६९।३ **त्रिष्वा रोचने दिवः ।**
१।१०५।५ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आंगिरसो वा । विश्वेदेवाः)
[२३०७] ८।६९।४ = (४८१) ८।४९ (वाल० १) ।१
इन्द्रमर्च यथा विदे ।
[२३०९] ८।६९।६ **दुदुह्रे वज्रिणे मधु ।**
८।७।१० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
[२३१०] ८।६९।७ = (३२१८) १।१३५।७
(परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)
[२३१२] ८।६९।९=(९०८) १।८०।९ **इन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ।**
[२३१३] ८।६९।१०=९।१।९ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
सोममिन्द्राय पातवे ।
९।४।४ (हिरण्यस्तूप आंगिरसः । पवमानः सोमः)
९।२४।३ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
सोमेन्द्राय पातवे ।
[२३१६] ८।६९।१४ = (३९२) ८।१६।११
इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।
[२३१७] ८।६९।१५ **अर्भको न कुमारकः ।**
८।३०।१ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः)
[२३१८] ८।६९।१६ **स्वस्तिगामनेहसम् ।**
६।५१।१६ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
[२३१९] ८।६९।१७ **तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।**
(अग्निः७४) १।३६।७ (कण्वो घौरः । अग्निः)
[२३२०] ८।६९।१८ = (७०७) १।३०।९ **अनु प्रत्नस्यौकसः ।**
[२३२३] ८।७०।३ **न किष्टं कर्मणा नशत् ।**
८।३१।१७ (मनुर्वैवस्वतः । दम्पत्याशिषः)
[६२८] ८।७६।१ = (७७) १।१६।८ **इन्द्रमीशानमोजसा ।**
[६२९] ८।७६।२ = (९०५) १।८०।६ **वज्रेण शतपर्वणा ।**
[६३२] ८।७६।५ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे ।

(८९४) ८।८८।१ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)
इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ।
[६३३] ८।७६।६ मरुत्वन्तं हवामहे ।
(३२४७) १।२३।७ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः)
["] ८।७६।६ = १।२२।१
[६३४] ८।७६।७ पिबा सोमं शतक्रतो ।
(१३४१) ३।३७।८ इन्द्र सोमं शतक्रतो !
[६३६] ८।७६।९ सुतं सोमं दिविष्टिषु ।
१।८६।४ (गोतमो राहूगणः । मरुतः)
सुतः सोमो दिविष्टिषु ।
["] ८।७६।१० (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
वज्रं शिशान ओजसा ।
(२८२२) १०।१५३।४ (देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः)
[६३८] ८।७६।११=(२८०) ८।६।३८ अनु त्वा रोदसी उभे ।
[६४०] ८।७७।१=(४४६) ८।४५।४ क उग्राः के ह शृण्विरे ।
[६४७] ८।७७।८ तेन स्तोतृभ्य आ भर ।
(अग्निः८०१-१०) ५।६।१-१० (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
इषं स्तोतृभ्य आ भर ।
[६५८] ८।७८।८ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
विश्वा च सोम सौभगा ।
९।४।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
९।५५।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
सोम विश्वा च सौभगा ।
[६६१-६२] ८।८०।१-२ = (२०७६) ६।४५।१७
स त्वं न इन्द्र मृळय ।
[६६३] ८।८०।३ = (२०८५) ६।४४।१०
किमङ्ग रध्रचोदनः (०नं०) ।
[६६७] ८।८०।७ = (२९७) ८।१२।१०
तुर्यं धा (०) कर्त्वियावती ।
[६७३] ८।८१।४=(१८०८) ८।२४।१९ एतो न्विन्द्रं स्तवाम
[६८०] ८।८२।२ तीव्राः सोमास आ गहि ।
१।२३।१ (मेधातिथिः काण्वः । वायुः)
[६८१] ८।८२।३ मृळा न इन्द्र शं हृदे ।
(२६५४) १०।८६।१५ (इन्द्राणी । इन्द्रः)
मन्थस्त इन्द्र शं हृदे ।
[६८२] ८।८२।५ तुभ्यायमद्रिभिः सुतो ।
१।१३५।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । वायुः)
तुभ्यायं सोमः परिपूतो अद्रिभिः ।
[६८५-८७] ८।८२।७-९, पिबेदस्य त्वमीशिषे ।
[६८७] ८।८२।९ (कुसीदी काण्वः । इन्द्रः)
तिरो रजांस्यस्पृतम् ।
९।३।८ (शुनःशेप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
तिरो रजांस्यस्पृतः ।
[६९४] ८।८८।१ अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।
(अग्निः ३८६) २।२।२ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)
अग्ने वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।
["] ८।८८।१ = (६३२) ८।७६।५
इन्द्रं गीर्भिर्न (०ई) वामहे ।
[६९५] ८।८८।२ = (२१२) ८।३३।२ मक्षू गोमन्तमीमहे ।
[६९९] ८।८८।६ = (१०११) १।१३०।१
मंहिष्ठो (०ष्ठं) वाजसातये ।
[२३८४] ८।८९।१ = (४६३) ८।४५।२१
बृहदि (स्तोत्रमि) न्द्राय गायत ।
[२३८५] ८।८९।१ (नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ । इन्द्रः)
देवास्त इंद्र सख्याय येमिरे ।
(२३६६) ८।९८।३ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[२३८६] ८।८९।३ = (९०५) १।८०।६ वज्रेण शतपर्वणा ।
[२३९०] ८।८९।७ = (३०) १।७।३
आ सूर्यं रोहयो (रोहयद्) दिवि ।
[२३९५] ८।९०।५ त्वमिन्द्र यशा असि ।
(आग्नि: १२९९) ८।२३।३०(विश्वमना वैयश्वः । आग्नि:)
अग्ने त्वं यशा असि ।
[१७८४] ८।९१।२ = (१४४६) ३।५२।१
धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् ।
[१७८५] ८।९१।३ (अपाला आत्रेयी । इन्द्रः)
इन्द्रायेन्दो परि स्रव ।
९।१०६।४ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)
[२३९७] ८।९२।१ = (१४) १।५।१
इन्द्रमभि प्र गायत ।
(३६९) ८।१५।१ तम्वभि प्र गायत ।
[२३९८] ८।९२।२ = (३६९) ८।१५।१
पुरुहूतं पुरुष्टुतं ।
[२४०१] ८।९२।५ तम्वभि प्र गायत ।
(३६९) ८।१५।१ तम्वभि प्रार्चत ।
["] ८।९२।५ = (८०) १।१६।३
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
[२४०२] ८।९२।६ (श्रुतकक्षो सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)
अस्य पीत्वा मदानाम् ।

९।२३।७ (असितः काश्यपो देवलो वा।
पवमानः सोमः)
[२४०७] ९।९२।११ =(२२९९) ८।६८।९
जयेम पृत्सु वज्रिवः।
[२४०८] ८।९२।११ = (२०८४) ६।४५।२६
वयमु (इमा उ) त्वा शतक्रतो।
["] ८।९२।१२ गावो न यवसेष्वा।
१।९१।१३ (गोतमो राहूगणः। सोमः)
[२४१०,२४१८] ८।९२।१४,२२ न त्वामिन्द्राति रिच्यते।
[२४१३] ८।९२।१७ = (१८२४) ८।४६।८
य इन्द्र वृत्रहन्तमः।
[२४१६] ८।९२।२० यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो।
१।१३९।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः। अश्विनौ)
युवोर्विश्वा......।
[२४१७] ८।९२।२१ = (३३८) ८।१३।१८
त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत।
तमिद्वर्धन्तु नो गिरः (सदावृधम्)॥
९।६६।१४ (अमहीयुरांगिरसः। पवमानः सोमः)
[२४१८] ८।९२।२२ आ त्वा विशन्त्विन्दवः।
१।१५।१ (मेधातिथिः काण्वः। ऋतवः [इन्द्रः])
["] ८।९२।२२ = (२७७) ८।६।३५ समुद्रमिव सिन्धवः।
[२४२१] ८।९२।२५ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आंगिरसः। इन्द्रः)
अरमिन्द्रस्य धाम्ने।
९।२४।५ (असितः काश्यपो देवलो वा। पवमानः सोमः)
[२४२२] ८।९२।२६(४५२) ८।४५।१० अरं ते शक्र दावने।
[२४२६] ८।९२।३० = (३३४) ८।१३।१४
मत्स्वा सुतस्य गोमतः।
[२४३१] ८।९३।३ (सुकक्ष आंगिरसः। इन्द्रः)
अश्वावद्गोमद्यवमत्।
९।६९।८ (हिरण्यस्तूप आंगिरसः। पवमानः सोमः)
अश्वावद्गोमद्यवमत् सुवीर्यम्।
[२४३४] ८।९३।५ यद्वा प्रवृद्ध सत्पते।
(२९५) ८।१२।८ यदि प्रवृद्ध ...।
[२४३५] ८।९३।६ (सुकक्ष आंगिरसः। इन्द्रः)
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे।
९।६५।२२ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा।
पवमानः सोमः)
[२४४०] ८।९३।११ न मिनन्ति स्वराज्यम्।
५।८२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः। सविता)
[२४४१] ८।९३।१२ = (२०४०) ६।४४।५
देवी शुष्मं सपर्यतः।
[२४४८] ८।९३।१९ कथा स्तोतृभ्य आ भर।
(अग्निः ८०१-१०)५।६।१-१० (वसुश्रुत आत्रेयः। अग्निः)
[२४४९] ८।९३।२० = (८५) १।१६।८ वृत्रहा सोमपीतये।
द्युम्नं स्तोतृभ्य आ भर।
[२४५१] ८।९३।२२ उशन्तो यन्ति वीतये।
(१८) १।५।५ ...न्तयो यन्ति ...।
[२४५३] ८।९३।२४ = (२०८) ८।२२।२९
वोळ्हामभि प्रयो हितम्।
["] ८।९३।२४=(२०८) ८।२२।२९=(३४७) ८।१३।२७
इह त्या सधमाद्या।
[२४५४] ८।९३।२५ = (१३६७) ३।४०।४
तुभ्यं(इन्द्र) सोमाः सुता इमे।
[२४५५] ८।९३।२६ दधद्रत्ना वि दाशुषे।
(अग्निः ७५१) ४।१५।३ (वामदेवो गौतमः। सोमः)
दधद्रत्नानि दाशुषे।
९।३।६ (शुनःशेप आजीगर्तिः स देवरातः कृत्रिमो वैश्वामित्रः। पवमानः सोमः)
[२४५७-५९] ८।९३।२८-३० = (२६७) ८।६।२५
यदिन्द्र मृळयासि नः।
[२४५८] ८।९३।२९ स नो विश्वान्या भर।
(अग्निः १७१६) १०।१९१।१ (संवनन आङ्गिरसः। अग्निः)
स नो वसून्या भर।
[२४५९] ८।९३।३० = (३९६) ८।१७।३
सुतावन्तो हवामहे।
[२४६०-६२] ८।९३।३१-३३ उप नो हरिभिः सुतम्।
[२३३६]८।९५।१ = (२०८४)६।४५।२५इन्द्र वत्सं न मातरः।
[२३३७] ८।९५।२ सुतास इन्द्र गिर्वणः।
(१६५५) ४।३२।१२ सुतेष्विन्द्र...।
[२३३८] ८।९५।३ (तिरश्चीराङ्गिरसः। इन्द्रः)
इन्द्र ......।
त्वं हि शश्वतीनां पती ...।
(२३६९) ८।९८।६ (नृमेध आङ्गिरसः। इन्द्रः)
... शश्वतीनामिन्द्र।
... पतिः...।
[२३४१] ८।९५।६ = (२७७)८।६।३५ इन्द्रमुक्थानि वावृधुः।
["] ८।९५।६ (तिरश्चीराङ्गिरसः। इन्द्रः)
सिषासन्तो वनामहे।
९।६१।११ (अमहीयुराङ्गिरसः। पवमानः सोमः)
[२३४२] ८।९५।७ = (१८०८)८।२४।१९

[२३४३] ८।९५।८ शुद्धो रयिं नि धारय ।
१।३०।२२ (शुनःशेप आजीगर्तिः । उषा)
अस्मे रयिं ... ।
[२३४४] ८।९५।९ = (३७१) ८।९५।३
शुद्धो (एको) वृत्राणि जिघ्नसे ।
["] ८।९५।९ शुद्धो वाजं सिषाससि ।
९।२३।६ (काश्यपोऽसितो देवलो वा । पवमानः सोमः)
इन्दो वाजं सिषाससि ।
[२३४९] ८।९६।५ = (१६९६) ५।३१।४ अहये हन्तवा उ ।
[२३५१] ८।९६।७ (तिरश्चीराङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः । इन्द्रः)
अथेमा विश्वाः पृतना जयासि ।
१०।५२।५ (अग्निः सौचीकः । विश्वे देवाः)
... जयाति ।
[२३५६] ८।९६।१२ स्तुहि सुष्टुतिं नमसा विवास ।
५।८३।१ (भौमोऽत्रिः । पर्जन्यः)
स्तुहि पर्जन्यं नमसाविवास ।
[२३६३] ८।९६।२१ (तिरश्चीराङ्गिरसो द्युतानो वा मारुतः । इन्द्रः)
सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव ।
(अग्निः १५२६) १०।६।७ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
... बभूथ ।
[९७९] ८।९७।४=(३३५) ८।१३।१५
यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।
["] ८।९७।४=(९४५) १।८४।९ सुतावाँ आ विवासति ।
[९८०] ८।९७।५ (४३७) ८।३४।१३
समुद्रस्याधि विष्टपि (०पः) ।
["] ८।९७।५ यदन्तरिक्ष आ गहि ।
५।७३।१ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
... गतम् ।
[९८१] ८।९७।६ (१६४१)४।२१।१२=(१००८) १।१२९।९
त्वं न इन्द्र राया परीणसा ।
(१००९) १।१२९।१० त्वं न इन्द्र राया तरूषसा ।
[९८२] ८।९७।७ मा न इन्द्र परा वृणक् ।
[९८३] ८।९७।८ अस्मे इन्द्र सचा सुते ।

[९८६] ८।९७।११=(८०) १।१६।३ इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
[९९०] ८।९७।१५ कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ।
७।३७।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वेदेवाः)
[२३६५] ८।९८।२ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
त्वमिन्द्राभिभूरसि ।
(२८२३) १०।१५३।५ (देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः)
["] ८।९८।२ त्वं सूर्यमरोचयः ।
९।६३।७ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
यथा सूर्यमरोचयः ।
[२३६६] ८।९८।३ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
विभ्राजञ्ज्योतिषा स्व१रगच्छो रोचनं दिवः ।
१०।१७०।४ (विभ्राट् सौर्यः । सूर्यः)
["] ८।९८।३ = (२३८५) ८।८९।२
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ।
[२३६९] ८।९८।६ = (२३३८) ८।९५।३
[२३७४] ८।९८।११ = (१३८७) ३।४२।६
अधा ते सुम्नमीमहे ।
[२३७५] ८।९८।१२ स नो रास्व सुवीर्यम् ।
(अग्निः ८५८) ५।१३।५ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
[२३७७] ८।९९।२ = (१६५५) ४।३२।११
सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ।
[२३८३] ८।९९।८ = (१८१९) ८।४६।३
[९९२] ८।८००।२ (नेमो भार्गवः । इन्द्रः)
मधुनो भक्षमग्रे ।
दक्षिणतः......मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि
१०।८३।७ (मन्युस्तापसः । मन्युः)
दक्षिणतो भवा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि ।
... मध्वो अग्रम् ... ।
[९९४] ८।१००।४ विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना ।
२।२८।१ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । वरुणः)
विश्वानि सान्त्यभ्यस्तु मह्ना ।
[९९९] ८।१००।१२ = (१५१९)४।१८।११
सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[२४६७] १०।२२।२ यशश्चक्रे असाम्या ।
१।२५।१५ (शुनःशेप आजीगर्तिः । वरुणः)
[२४७३] १०।२२।८ वधर्दासस्य दम्भय ।
(३१०६) ८।४०।६ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
ओजो दासस्य दम्भय ।

[२४८०] १०।२२।१५ = (१११९) १।११।११
पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं ।
["] १०।२२।१५ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा वासुक्रः । इन्द्रः)
उत त्रायस्व गृणतो मघोनः ।

(१८११) १०।१४८।४ (पृथुर्वैन्यः। इन्द्रः)
—गृणत उत स्तीन्।
[२४८१] १०।२३।२ =(१८११) ८।४६।१३
मघवा वृत्रहा भुवत्।
[२४८४] १०।२३।४ वातो यथा वनम्।
५।७८।८ (सप्तवध्रिरात्रेयः। अश्विनौ)
[२४८७] १०।२३।७= (२१७९) = ७।२२।९
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि।
[२४८८] १०।२४।१ = (३९४) ८।१७।१
इन्द्र सोमं (पिबा) इमं पिब।
["] १०।२४।१ अस्मे रयिं नि धारय।
१।३०।२२ (शुनः शेप आजीगर्तिः। उषा)
[२४८९] १०।२४।२ श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्षसे।
(अग्निः ६११) ३।२१।२ (गाथी कौशिकः। अग्निः)
श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम्।
[२४९१] १०।२७।१ यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षम्।
(३२०१) ८।५९ (वाल० ११)। १ (सुपर्णः काण्वः। इन्द्रावरुणौ)......यजमानाय शिक्षथः।
[२४९७] १०।२७।७ (वसुक्र ऐन्द्रः। इन्द्रः)
यो अस्य पारे रजसो विवेष।
(अग्निः १७१५)१०।१८७।५(वत्स आग्नेयः। अग्निः)
......रजसः।
[२५०३] १०।२७।१३ (वसुक्र ऐन्द्रः। इन्द्रः)
न्यङ्ङुत्तानामन्वेति भूमिम्।
(अग्निः १६९४)१०।१४२।५ (शार्ङ्गाः। अग्निः)
......न्वेषि भूमिम्।
[२५०४] १०।२७।१४ अन्वस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः।
३।५५।१३(प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,प्रजापतिर्वाच्यो वा। विश्वेदेवाः)
[२५११] १०।२७।२१ अव इदेना परो अन्यदस्ति।
१०।३१।८ (कवष ऐलूषः। विश्वेदेवाः।
नैनावदेना परो अन्यदस्ति।
[२५२७] १०।२८।७ वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानो।
(१४९०) ४।१७।३ वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः।
[२५२२] १०।२९।८ व्यानळिन्द्रः पृतनाः स्वोजा।
(२१५३) ७।२०।३ व्याग इन्द्रः ...।
[२५३५] १०।३२।६ ... प्र मे देवानां व्रतपा उवाच। इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम्॥

(अग्निः ७७४) ५।२।८ (कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः, उभौ वा। अग्निः)
[२५३९] १०।३३।२ सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः।
१।१०५।८ [पूर्वार्धः] (त्रित आप्त्यः, कुत्स आंगिरसो वा। विश्वेदेवाः)
[२५४०] १०।३३।३ मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो ...।
१।१०५।८ [उत्तरार्धः] (त्रित आप्त्यः, कुत्स आंगिरसो वा। विश्वेदेवाः)
[२५४२] १०।३८।२ रयमिन्द्र श्रवाय्यम्।
९।६३।२३ (निध्रुविः काश्यपः। पवमानः सोमः)
रयिं सोम श्रवाय्यम्।
[२५४४] १०।३८।४ अर्वाञ्चमिन्द्रमवसे करामहे।
८।२२।३ (सोभरिः काण्वः। अश्विनौ)
अर्वाचीना स्ववसे करामहे।
[२५४७] १०।४२।२ कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टम्।
(१५३५) ४।४०।६ उद्रेव कोशं वसुना न्यृष्टम्।
[२५५३] १०।४२।८ सुन्वते वहति भूरि वामम्।
१।१२४।१२ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। उषा)
न ते वहसि भूरि वामम्।
[२५५५] १०।४२।१० = (२५६६) १०।४३।१० =
(२५७७) १०।४४।१० (कृष्ण आंगिरसः। इन्द्रः)
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजने ना जयेम।
[२५५६] १०।४२।११ = (२५६७) १०।४३।११ =
(२५७८) १०।४४।११ (कृष्ण आंगिरसः। इन्द्रः)
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु।
[२५६२] १०।४३।६ = (२०१) ८।३२।२२
धेना इन्द्रावचाकशत्।
[२५६६-६७] १०।४३।१०-११ =
(२५५५-५६) १०।४२।१०-११
[२५७७-७८] १०।४४।१०-११ =
(२५५५-५६) १०।४२।१०-११
[२५८२] १०।४८।४ पुरू सहस्रा नि शिशामि।
१०।२८।६ (इन्द्र ऋषिः। वसुको देवता)
["] १०।४८।४ यन्मा सोमास उक्थिनो अमन्दिषुः।
४।४२।६ (त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः। आत्मा)
यन्मा सोमासो ममदन्यदुक्था।

[२५९०] १०।४९।१ अहं भुवं यजमानस्य चोदिता ।
(७५१) १।५१।८ शाकी भव यजमानस्य चोदिता ।
[२६०७] १०।५०।७ ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा ।
(११३६) ७।३२।२ इमे हि ते ब्रह्मकृतः... ।
["] १०।५०।७ मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः ।
१०।९४।८ (अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः । ग्रावाणः)
न ऊ सुतस्य ... ।
[२६१०] १०।५४।३ = (१९५७) ६।२७।३
क उ (नहि) नु ते महिमनः समस्य ।
[२६१३] १०।५४।६ = (२०५८) ६।४४।२३
[२६१७] १०।५५।४ महन्महत्या असुरत्वमेकम् ।
३।५५।१-२३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वेदेवाः)
महद्देवानामसुरत्वमेकम् ।
[२६३८] १०।७४।५ शचीव...अनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ।
(अग्निः१८०६)७।६।४(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
["] १०।७४।५ ऋभुक्षणं मघवानं सुवृक्तिं ।
(२७०९) १०।१०४।७ मुनेरणं मघवानं सुवृक्तिम् ।
[२६४०-६२] १०।८६।१-२३ विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।
[२६४४] १०।८६।५ न सुगं दुष्कृते भुवं ।
(३२८४) ७।१०४।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । (राक्षोघ्नं) इन्द्रासोमौ)
[२६५४] १०।८६।१५-(६८१)८।८२।३
[२६५५-५६] १०।८६।१६-१७ अन्तरा सक्थ्या३कपृत् ।
["] १०।८६।१६-१७ निषेदुषो विजृम्भते ।
[२६६४] १०।८९।२ कृष्णा तमांसि त्विष्या जघान ।
९।६६।२४ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ।
[२६६९] १०।८९।८ प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम...
मिनन्ति मित्रम् ।
(अग्निः१७६१) ४।५।४ (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)
प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य... ।
[२६७५] १०।८९।१४ = (७१९) १।३२।५
[२६७६] १०।८९।१५ शत्रूयन्तो अभि ये न तस्तस्रे ।
४।५०।२ (वामदेवो गौतमः । बृहस्पतिः)
बृहस्पते अभि ... ।
["] १०।८९।१५ (रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्तां ।
१०।१०३।१२ (अप्रतिरथ ऐन्द्रः । अप्वा देवी)
[२६७८] १०।८९।१७-(६) १।४।३ विद्याम सुमतीनाम् ।
["] १०।८९।१७=(१९४६) ६।२५।९
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो ।
[२६७९] १०।८९।१८ = (१२५९) ३।३०।२२
[२७०८] १०।१०४।६ उप ब्रह्माणि हरिवः ।
१।४।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वेदेवाः)
["] १०।१०४।६ दाश्वाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ।
(अग्निः११६६)७।११।१(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
महाँ अस्यध्वरस्य......।
[२७०९] १०।१०४।७ = (२६३८) १०।७४।५
[२७१३] १०।१०४।११ = (१२५९) ३।३०।२२
[२७१८] १०।१११।४ इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य ।
१०।६७।१२ (अयास्य आङ्गिरसः । बृहस्पतिः)
[२७२९] १०।१११।५ = (१२६७) ३।३१।८
विश्वा वेद भवना (जनिमा) हन्ति शुष्णम् ।
[२७३३] १०।१११।९ = (१४८८) ४।१७।१
सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानाँ (०नान्)
[२७३५] १०।११२।१ = (२०५२) ६।४४।१७
हन्तवे (जहि) शूर शत्रून् ।
[२७४२] १०।११२।८ = (१६९८) ५।३१।६
[२७५९] १०।११६।५ अवस्थिरा तनुहि यातुजूनाम् ।
......शत्रून्......।
(अग्निः१८१७) ४।४।५ (वामदेवो गौतमः । रक्षोहाऽग्निः)
[२७६१] १०।११६।७
तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पक्वो३......पिब......।
२।३६।५ (गृत्समदः शौनकः । ऋतुदेवता [इन्द्रोनभश्च])
तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतः......पिब ।
[२८५०-६२] १०।११९।१-३ कुवित् सोमस्यापामिति ।
[२८५१-५२] १०।११९।२-३ उन्मा पीता अयंसत ।
[२८६२] १०।११९।१३ देवेभ्यो हव्यवाहनः ।
(अग्निः ५०५) ३।९।६(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
देवेभ्यो हव्यवाहन ।
(अग्निः १८५७) १०।११८।५ (उरुक्षय आमहीयवः । रक्षोहाऽग्नि)
(अग्निः१६९८)१०।१५०।१ (मृळीको वासिष्ठः । अग्निः)
[२७७५] १०।१३१।३ = (१५०३) ४।१७।१६
अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।
[२७७६] १०।१३१।६ = (२११०) ६।४७।१२
["] १०।१३१।६ सुमृळीको भवतु विश्व(जात) वेदाः ।
(अग्निः६४६) ४।१।२० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[२७७६] १०।१३१।६ सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।
४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषाः)
९।८९।७ (उशना काव्यः । पवमानः सोमः)
९।९५।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । पवमानः सोमः)
[२७७७] १०।१३१।७ = (२१११) ६।४७।१३
["] १०।१३१।७ तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ।
(अग्नि:४६७) ३।१।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
= ३।५९।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
=१०।१४।६ (यमो वैवस्वतः । अङ्गिरः पित्रथर्वभृगुसोमाः)
["] १०।१३१।७ = (२१११) ६।४७।१३
आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु ।
७।५८।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
आराच्चिद् द्वेषो वृषणो युयोत ।
१०।७७।६ (स्यूमरश्मिर्भार्गवः । मरुतः)
[२७७८] १०।१३३।१ = (५७) १।९।१० =
१०.९६।२ (बरुराङ्गिरसः, सर्वहरिर्वा ऐन्द्रः । हरिः)
[२७७८-८३] १०।१३३।१-६ नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ।
[२७७९] १०।१३३।२=(८३५)१।१०२।८=(४२१)८।२१।१३
["] १०।१३३।२ विश्वं पुष्यसि वार्यम् ।
(९२४) १।८१।९ विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
(अग्नि:८०६) ५।६।६ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
[२७८०] १०।१३३।३ अर्यो नशन्त नो धियः ।
९।७९।१ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
[२७८१] १०।१३३।४ (सुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
यो न......आदिदेशति।
अधस्पदं तमीँ कृधि ।
(२७८६) १०।१३४।२ (मान्धाता यौवनाश्वः । इन्द्रः)
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ आदिदेशति ।
[२७८३]१०।१३३।६=(१३७९)३।४१।७ वयमिन्द्र त्वायवः।
["] १०।१३३।६ सखित्वमा रभामहे ।
९।६१।४ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सखित्वमा वृणीमहे ।
९।६५।९(भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
[२७८४] १०।१३३।७ सहस्रधारा पयसा मही गौः ।
१०।१०१।९ (बुधः सौम्यः । विश्वेदेवा, ऋत्विग् वा)
[२७८५] १०।१३४।१ = (अग्निः ५०९) ३।१०।१
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

[२७८५-९०] १०।१३४।१-६ देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ।
[२७८६] १०।१३४।२ = (२७८१) १०।१३३।४
["] १०।१३४।२ यो अस्माँ आदिदेशति ।
९।५२।४ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
[२७८७]१०।१३४।३=(९९१)८।१२।५=(१९१)८।३२।१२=
(१७७६) ८।३७।१ = (५५२)८।६१।५
[२७८८] १०।१३४।४ = (७०६) १।३०।८
[२८०७] १०।१४७।४ मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः ।
१।६४।१३ (नोधा गौतमः । मरुतः)
अर्वद्भिर्वाजं भरते... ।
२।२६।३ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
पुत्रैर्वाजं भरते... ।
[२८१०] १०।१४८।२ = (११०४) २।११।४
दासीर्विशः सूर्येण सह्याः ।
["] १०।१४८।२ = (११०५) २।११।५
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु ।
[२८१२] १०।१४८।४ = (२४८०) १०।२२।१५
उत त्रायस्व गृणत (०णतो) ।
[२८१६] १०।१५२।३ = (५६०) ८।६१।१३
वि रक्षो (द्विषो) वि मृधो जहि ।
[२८१८] १०।१५२।५ = (२३) १।५।१०
वरीयो (ईशानो) यवया वधम् ।
[२८२०] १०।१५३।२ = (२१९) ८।३३।१० =
९।६४।२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
[२८२१] १०।१५३।३ = (३६०) ८।१४।७
व्य१न्तरिक्षमतिरः (०मतिरन्) ।
[२८२२] १०।१५३।४ = (६३६) ८।७६।९
वज्रं शिशान ओजसा ।
[२८२३]१०।१५३।५=(१३६५)८।९८।२ त्वमिन्द्राभिभूरसि ।
[२८२४] १०।१६०।१ = (११९२) २।१८।३
[२८२८] १०।१६०।५ अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो ।
(१५०३) ४।१७।१६=(२७७५) १०।१३१।३
अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।
[२८३४] १०।१७१।३ त्वं त्यमिन्द्र मर्त्यम् ।
(१७४०) ५।३५।५ त्वं तमिन्द्र मर्त्यम् ।
[२८४०] १०।१८०।२ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
१।१५४।२ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)
[३३५७] १।१८।४ सोमो हिनोति मर्त्यम् ।
(३३५८) सोम...मर्त्यम् ।

[३३५८] १।१८।५ सोम इन्द्रश्च मर्त्यम् ।
४।३७।६ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
यूयमिन्द्रश्च मर्त्यम् ।
[३२४७] १।२३।७ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः)
मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा सोमपीतये ।
(६३३) ८।७६।६ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे ।
अस्य सोमस्य पीतये ।
[३२४८] १।२३।८ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः) =
२।४१।१५ (गृत्समदः शौनकः । विश्वेदेवाः)
इन्द्रजेष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः ।
विश्वे मम श्रुता हवम् ।
[३२४९] १।२३।९ (मेधातिथि काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः)
......युजा...।
मा नो दुःशंस ईशत ।
२।२३।१० (गृत्समदः शौनकः । बृहस्पतिः)
... युजा । मा नो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत ।
(३०८५) ७।९४।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
मा नो दुःशंस ईशत ।
१०।२५।७ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः । सोमः)
मा नो दुःशंस ईशता विवक्षसे ।
[३१३४] १।१७।१ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)
ता नो मृळात ईदृशे ।
४।५७।१ (वामदेवो गौतमः । क्षेत्रपतिः)
स नो मृळातीदृशे ।
(३०६०) ६।६०।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
[३१३५] १।१७।२ हवं विप्रस्य मावतः ।
(अग्निः १९१९) (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं [तनूनपात्])
१।१४२।२ यज्ञं विप्रस्य ... ।
["] १।१७।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)
धर्तारा चर्षणीनाम् ।
५।६७।२ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
[३३०५] १।१५५।३ (दीर्घतमा औचथ्यः । इन्द्राविष्णू)
दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः।
९।७५।२ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं १ नाम......।
[१५७५] ४।२३।१० ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ।
१०।१७८।२ (अरिष्टनेमिस्तार्क्ष्यः । तार्क्ष्यः)
उर्वी न पृथ्वी बहुले गभीरे ।
[३००४] १।२१।३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
सोमपा सोमपीतये ।
(३०४१) ५।८६।२ (अत्रिर्भौमः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी ताहवामहे ।
(३०६९) ६।६०।१४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
(३३१९) ४।४९।३ (वामदेवो गौतमः। इन्द्राबृहस्पती)
सोमपा सोमपीतये ।
[३००५] १।२१।४ = (८९) १।१६।५
उपेदं सवनं सुतम् ।
[३००६] १।२१।५ इन्द्राग्नी रक्ष उब्जतम् ।
७।१०४।१ इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उब्जतं ।
[३००७] १।२१।६ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ।
(३०८६) ७।९४।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
[३००८] १।१०८।१ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
अभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।
७।६१।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे ।
[३००८] १।१०८।१ = (३०१३-१९)
१।१०८।६-१२ अथा सोमस्य पिबतं सुतस्य।
(३०११) १।१०८।५ तेभिः सोमस्य......।
[३०१०] १।१०८।३ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
वृषणः सोमस्य वृषणा वृषेथाम् ।
(३१७१)६।६८।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ)
[३०११] १।१०८।४ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
एन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ।
(३०७६) ७।९३।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
[३०१४-१९]१।१०८।७-१२अतः परि वृषणावा हि यातम् ।
[३०१९] १।१०८।१२ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
मध्ये दिवः स्वधया मादयेथे ।
१०।१५।१४ (शङ्खो यामायनः । पितरः)
......स्वधया मादयन्ते ।
[३११३] १।२३।२ उभा देवा दिविस्पृशा ।
१।२२।२ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
["] १।२३।२= १।२२।१ =(३३११) ४।४९।५
=(३०५५) ६।५९।१०
=(६३३) ८।७६।६

अस्य सोमस्य पीतये।
१।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
८।९४।१०-१२ (बिन्दुः पूतदक्षो वा आङ्गिरसः । मरुतः)

[३११५] १।१३५।४ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)
अभि प्रयांसि सुधितानि वीतय वायो हव्यानि वीतये।
(अग्निः १०८५) ६।१६।४४
(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। अग्निः)
अभि प्रयांसि वीतये।

["] १।१३५।४ **वायवा चंद्रेण** राधसा गतम्।
४।४८।१-४ (वामदेवो गौतमः । वायुः ।)
वायवा चंद्रेण रथेन।

[३११६] १।१३५।५ **आशुमत्यं न वाजिनम्।**
(१००१) १।१२९।२ **पृक्षमत्यं......।**

[३११७] १।१३५।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)
तिरः पवित्रमाशवः।
९।६२।१ (जामदग्निर्भार्गवः ।पवमानः सोमः)
इन्दवस्तिरः......।
९।६७।७ (गोतमो राहूगणः । पवमानः सोमः)
इन्दवस्तिरः......।

[३११८] १।१३५।७ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)
गृहमिन्द्रश्च गच्छतम्।
(३३१९) ४।४९।३ (वामदेवो गौतमः। इन्द्राबृहस्पती)
(२३१०) ८।६९।७ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
गृहमिन्द्रश्च गन्वहि।

[१५९९] ४।२८।१ (वामदेवो। गौतमः । इन्द्रः इन्द्रासोमौ वा)
अहन्नहिमरिणात्सप्त सिन्धून्।
१०।६७।१२ (अयास्य आङ्गिरसः । बृहस्पतिः)

[१६००] ४।२८।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः इन्द्रासोमौ वा)
महो द्रुहो अप विश्वायु धायि।
(१८८८) ६।२०।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

[३१५०] ४।४१।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)
धियः......।
सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः।
१०।१०१।९(बुधः सौम्यः। विश्वेदेवा, ऋत्विग वा)
धियम्......।
सा नो......।

[३१५१] ४।४१।६ (वामदेवो गौतमः। इन्द्रावरुणौ)
सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये।
१०।९२।७ (शार्यातो मानवः । विश्वेदेवाः)

[३१५२] ४।४१।७ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)
वृणीमहे सख्याय प्रियाय।
९।६६।१८ (शतं वैखानसाः। पवमानः सोमः)
वृणीमहे सख्याय।

[३१५५] ४।४१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)
नित्यस्य रायः पतयः स्याम।
(अग्नि ११४०)७।४।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)

[३१५७] ४।४२।७=(१५२६) ४।१९।५
त्वं वृत्राँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्।

[३१५९] ४।४२।९ **हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः।**
१।१५३।१ (मामतेयो दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः।

[३२२१] ४।४६।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः।
४।४८।२ (वामदेवो गौतमः । वायुः)

[३२२२] ४।४६।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
सहस्रं हरय।
वहन्तु सोमपीतये।
(११०)८।१।२४ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ। इन्द्रः)
सहस्रं ...।
हरय...वहन्तु सोमपीतये।

[३२२३] ४।४६।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
रथं हिरण्यवन्धुरम्।
आ हि स्थाथो दिविस्पृशम्।
८।५।२८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
रथं ... ...।
आ ... ...।

[३२२४] ४।४६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
रथेन पृथुपाजसा।
८।५।२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

["] ४।४६।५ **दाश्वांसमुप गच्छतम्।**
१।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

[३२२५] ४।४६।६ (वामदेवो गौतमः। इन्द्रवायू)
पिबतं दाशुषो गृहे।
(३३२२) ४।४९।६ (वामदेवो गौतमः। इन्द्राबृहस्पती)
८।२२।८ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)

[३२२७] ४।४७।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः।
निम्नमापो न सध्र्यक्।

(३२३१) ५।५१।६ (स्वस्त्यात्रेयः । इन्द्रवायू)
इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिमर्हथः ।
(२०२) ८।३२।२३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
निम्नमापो न सध्र्यक् ।
[३३१८] ४।४७।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
आ यातं सोमपीतये ।
८।२२।८ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
[३३१९] ४।४७।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा ।
(३०३३) ६।६०।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
[३३१७] ४।४९।१ उक्थं मदश्च शस्यते ।
१।८६।४ (गोतमो राहूगणः । मरुतः)
[३३१९] ४।४९।३= (३२१८) १।१३५।७
गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।
["] ४।४९।३=(३००४) १।२१।३ सोमपा सोमपीतये ।
[३३२०] ४।४९।४ रयिं धत्तं वसुमन्तं शतग्विनम् ।
१।१५९।५ (दीर्घतमा औचथ्यः । द्यावापृथिवी)
[३३२१] ४।४९।५ = १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
अस्य सोमस्य पीतये ।
[३३२२] ४।४९।६=(३२२५) ४।४६।६ पिबतं दाशुषो गृहे।
८।२२।८ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
[३३२४] ४।५०।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्राबृहस्पती)
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ।
७।६४।५=७।६५।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीः ।
(३३३१) ७।९७।९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्राब्रह्मणस्पती)
[३३३१] ५।५१।६ सुतानां पीतिमर्हथः ।
१।१३४।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । वायुः)
सोमानां प्रथमः पीतिमर्हसि सुतानां पीतिमर्हसि ।
(३३१७) ४।४७।२ सोमानां पीतिमर्हथः ।
[३३३२] ५।५१।७ (स्वस्त्यात्रेयः । इन्द्रवायू)
सुता इन्द्राय वायवे ।
९।३३।३ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
सोमा अर्षन्ति विष्णवे ।
९।३४।२ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
सुत......।
सोमो अर्षति......।
९।६५।२०(भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। पवमानः सोमः)
आ सा इन्द्राय......।
सोमो......।
[३३३२] ५।५१।७ = (१८) १।५।५ सोमासो दध्याशिरः ।
[३०४१] ५।८६।१ (अत्रिर्भौमः । इन्द्राग्नी)
......श्रवाय्या ।
या पञ्च चर्षणीरभि ।
(अग्निः ११७८) ७।१५।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अग्निः)
यः पञ्च चर्षणीरभि ।
९।१०१।९ (नहुषो मानवः । पवमानः सोमः)
......श्रवाय्यम् ।
यः पञ्च चर्षणीरभि ।
["] ५।८६।२ = (३००४) १।२१।३ इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
[३०४३] ५।८६।४ ता वामेषे रथानाम् ।
५।६६।३ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
["] ५।८६।४ (अत्रिर्भौमः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी हवामहे ।
पती तुरस्य राधसो ।
(३०६०) ६।६०।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी हवामहे ।
(२०४०) ६।४४।५ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
पतिं तुरस्य राधसः ।
[३०४५] ५।८६।६ (अत्रिर्भौमः । इन्द्राग्नी)
घृतं न पूतमद्रिभिः ।
सूरिषु श्रवो......रयिं गृणत्सु दिधृतम् ।
(२९१) ८।१२।४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
घृतं न पूतमद्रिवः ।
(३३२) ८।१३।१२ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
रयिं गृणत्सु धारय ।
श्रवः सूरिभ्यो......।
[३३३०] ६।५७।१ वयं सख्याय स्वस्तये ।
(१६४०) ४।३१।११ अस्माँ......सख्याय स्वस्तये।
["] ६।५७।१ = (१७४१) ५।३५।६
हुवेम (हवन्ते) वाजसातये ।
[३०४८] ६।५९।३ इन्द्रा न्वग्नी अवसे ।
५।४५।४ (सदापृण आत्रेयः । विश्वेदेवाः)
[३०५१] ६।५९।७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
मा नो अस्मिन् महाधने परा वर्क्तं गविष्टिषु ।
(अग्निः१३८४) ८।७५।१२ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
—परा वर्ग्भारभृद्यथा ।
[३०५३] ६।५९।८ अघा अर्यो अरातयः ।
६।४८।१६ (शंयुर्बार्हस्पत्यः [तृणपाणिः]। पूषा)

[३०५४] ६।५९।९ रयिं विश्वायुपोषसम्।
(अग्निः २५२) १।७९।९ (गोतमो राहूगणः। अग्निः)
[३०५५] ६।५९।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। इन्द्राग्नी)
स्तोमेभिर्हवनश्रुता।
गीर्भिरा गतम्।
८।८।७ (सध्वंसः काण्वः। अश्विनौ)
आ......गतम्।
धिभिः......स्तोमेभिर्हवनश्रुता।
(३१०) ८।१२।२३ (पर्वतः काण्वः। इन्द्रः)
स्तोमेभिर्हवनश्रुतम्।
["] ६।५९।१० = १।१२।१ (मेधातिथिः काण्वः। अश्विनौ)
[३०६०] ६।६०।५ = (३०४३) ५।८६।४
["] ६।६०।५ = (३१३४) १।१७।१
[३०६२] ६।६०।७ = (७७) १।११।८
[३०६३] ६।६०।८ = (३२२९) ४।४७।४
[३०६४] ६।६०।९ = (८२) १।१६।५
["] ६।६०।९ = (३०९७-९९) ८।३८।७-९
इन्द्राग्नी सोमपीतये।
[३०६९] ६।६०।१४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। इन्द्राग्नी)
आ नो गव्येभिरश्व्यैर्वसव्यै३रुप गच्छतम्।
८।७३।१४ (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा। अश्विनौ)
आ नो गव्येभिरश्व्यैः सहस्रैरुप गच्छतम्।
["] ६।६०।१४ = (३००४) १।२२।३
[३०७०] ६।६०।१५ = ६।५४।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। पूषा)
["] ६।६०।१५ पिबतं सोम्यं मधु।
७।७४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
८।५।११ (ब्रह्मातिथिः काण्वः। अश्विनौ)
८।८।१ (सध्वंसः काण्वः। अश्विनौ)
८।३५।२२ (श्यावाश्व आत्रेयः। अश्विनौ)
(१८०२) ८।२४।१३ पिबाति सोम्यं मधु।
[३१६२] ६।६८।२ शूराणां शविष्ठा ता हि भूतम्।
(३०७२) ७।९३।२ ता सानसी शवसाना हि भूतं।
[३१६४] ६।६८।४ द्यौश्च पृथिवि भूतमुर्वी।
१०।९३।१ (तान्वः पार्थ्यः। विश्वेदेवाः)
महि द्यावापृथिवी भूतमुर्वी।
[३१६६] ६।६८।६ = १।१५९।५ (दीर्घतमा औचथ्यः। द्यावापृथिवी)
[३१६८] ६।६८।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। इन्द्रावरुणौ)
अपो न नावा दुरिता तरेम।
७।६५।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। मित्रावरुणौ)

[३१७१] ६।६८।११ = (३०१०) १।१०८।३
["] ६।६८।११ = ६।५२।१३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः। विश्वेदेवाः)
[३३०९,३३१२] ६।६९।४,७ उप ब्रह्माणि शृणुतं गिरः (७ हवं) मे।
[३१७२] ६।७२।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। इन्द्रासोमौ)
उदसूर्यं नयथो ...।
... अप्रथतं पृथिवीं मातरं वि।
१०।६२।३ (नाभानेदिष्ठो मानवः। विश्वेदेवाः)
सूर्यमारोहयन् ...अप्रथन् पृथिवीं मातरं वि।
[३१७४] ६।७२।४ इन्द्रासोमा पक्वमामास्वन्तः।
२।४०।२ (गृत्समदः शौनकः। सोमापूषणौ)
आस्वामिन्द्रः पक्वमामास्वन्तः।
[३१७५] अपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे।
१।११७।२३ (कक्षीवान् औशिजः दैर्घतमसः। अश्विनौ)
... रराथाम्।
[३१७७] ७।८२।१ विशे जनाय महि शर्म यच्छतम्।
(अग्निः २४७२) १।९३।८ (गोतमो राहूगणः। अग्नीषोमौ)
[३१७८] ७।८२।७ न तमंहो न दुरितानि ... कुतश्चन।
२।२३।५ (गृत्समदः शौनकः। ब्रह्मणस्पतिः)
[३१८०] ७।८२।९ = (१५७९) ४।२४।३
[३१८१] ७।८२।१० = (३१९१) ७।८३।१०
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्रावरुणौ)
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः।
अवध्रं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे॥
[३१९२] ७।८४।१ = १।१५३।१ (दीर्घतमा औचथ्यः। मित्रावरुणौ)
["] ७।८४।१ दधाना परि त्मना विषुरूपा जिगाति।
(अग्निः ८६९) ५।१५।४ (धरुण आङ्गिरसः। अग्निः)
[३१९३] ७।८४।२ परि नो हेळो वरुणस्य वृज्याः।
२।३३।१४ (गृत्समदः शौनकः। रुद्रः)
[३१९४] ७।८४।३=७।५८।३
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। मरुतः)
[३१९५] ७।८४।४ = १।१५९।५ (दीर्घतमा औचथ्यः। द्यावापृथिवी)
[३१९६] ७।८४।५ = (३२०१) ७।८५।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्रावरुणौ)
इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये तूतुजाना।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

[३१९६] ७।८४।५ तोके तनये तूतुजाना।
७।६७।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
[३२३४] ७।९०।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्रवायू)
गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यैः।
१०।१०८।७ (पणयोऽसुराः। सरमा देवता)
गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्यृष्टः।
[३२३५] ७।९०।७=(३२४०) ७।९१।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्रवायू)
अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
[३२३७] ७।९१।४=(७४१) १।३३।१२
[३२४०] ७।९१।७=(३२३५) ७।९०।७
[३०७०] ७।९३।२=(३१६२) ६।६८।२
[३०७६] ७।९३।६=(३०११) १।१०८।४
[३०७७] ७।९३।७=१।१७९।५ (अगस्त्यशिष्यः। रतिः)
[३०७८] ७।९३।८=१।१६२।१ (दीर्घतमा औचथ्यः। अश्वः)
[३०८०] ७।९४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्राग्नी)
शृणुतं जरितुर्हवम्।
(३२७) ८।१३।७ (नारदः काण्वः। इन्द्रः)
शृणुधी जरितुर्हवम्।
८।८५।४ (कृष्ण आङ्गिरसः। अश्विनौ)
["] ७।९४।२ ईशाना पिप्यतं धियः।
५।७१।२ (बाहुवृक्त आत्रेयः। मित्रावरुणौ)
[३०८१] ७।९४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्राग्नी)
मा नो रीरधतं निदे।
८।८।१३ (सध्वंसः काण्वः। अश्विनौ)
[३०८३] ७।९४।५=(अग्निः ८६९) ५।१४।३
(सुतंभर आत्रेयः। अग्निः)
["] ७।९४।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्राग्नी)
सबाधो वाजसातये।
(अग्निः १४५३) ८।७४।१२ (गोपवन आत्रेयः। अग्निः)
[३०८४] ७।९४।६=(अग्निः ८९३) ५।२०।३
(प्रयस्वन्त आत्रेयाः। अग्निः)
[३०८५] ७।९४।७=(१७३६) ५।३५।१
["] ७।९४।७=(३२४९) १।२३।९
[३०८६] ७।९४।८=१।१८।३ (मेधातिथिः काण्वः। ब्रह्मणस्पतिः)
["] ७।९४।८=(३००७) १।२१।६
[३३६१] ७।९७।९=(३३२४) ४।५०।११
[३३६५] ७।९७।१०=(३३२५) ७।९८।७
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्राबृहस्पती)
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
[३३२५] ७।९७।१०=(१९२०) ६।२३।३
[३३१४] ७।९९।४ उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकम्।
(अग्निः २४७०) १।९३।६ (गोतमो राहूगणः। अग्नीषोमौ)
[३०९१-९३] ८।३८।१-३ इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्।
[३०९२] ८।३८।२=(३०३३) ३।१२।४
[३०९३] ८।३८।३ (श्यावाश्व आत्रेयः। इन्द्राग्नी)
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः।
(६०८) ८।६५।८ (प्रगाथः काण्वः। इन्द्रः)
इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः।
[३०९४] ८।३८।४=५।७२।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः। मित्रावरुणौ)
[३०९४-९६] ८।३८।४-६ इन्द्राग्नी आ गतं नरा।
[३०९७] ८।३८।७=५।५१।३ (स्वस्त्यात्रेयः। विश्वेदेवाः)
[३०९७-९९] ८।३८।७-९=(३०६४) ६।६०।९
[३०९८] ८।३८।८=(१७७५) ८।३६।७
[३०९९] ८।३८।९ (श्यावाश्व आत्रेयः। इन्द्राग्नी)
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः।
इन्द्राग्नी सोमपीतये।
८।४२।६ (नाभाकः काण्वः अर्चनाना आत्रेयो वा। अश्विनौ)
एवा ... ...।
नासत्या सोमपीतये।
[३१००] ८।३८।१० इन्द्राग्न्योरवो वृणे।
८।९४।८ (बिन्दुः पूतदक्षो वा, आङ्गिरसः। मरुतः)
देवानामवो वृणे।
[३१०५] ८।४०।५=(७७) १।११।८
[३१०६] ८।४०।६ ओजो दासस्य दम्भय।
[३१०७] ८।४०।७=(१०) १।४।७
["] ८।४०।७=(१०२८) १।१३२।१
[३१०९] ८।४०।९=(२०६२) ६।४५।३
[३११०-११] ८।४०।१०-११
उतो न चिद्य ओजसा (११ ओहते)
[३११०] ८।४०।१० शुष्णस्याण्डानि भेदति।
(३१११) ८।४०।११ आण्डा शुष्णस्य भेदति।
["] ८।४०।१०=(६५) १।१०।८
[३११२] ८।४०।१२ वयं स्याम पतयो रयीणाम्।
४।५०।६ (वामदेवो गौतमः। बृहस्पतिः)
[५३९] ८।५५ (वाल० ७)।१ (कृशः काण्वः। इन्द्रः प्रस्कण्वश्च)
राधस्ते दस्यवे वृक।

(५४४)८।५६(वाल०८) । १ (पृषध्रः काण्वः । इन्द्रः)

प्रति ते दस्यवे वृक राधो ।

[३२०२]८।५९(वाल०११) । १ (सुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)

यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षथः ।

(२४९१) १०।२७।१ (वसुक्र ऐन्द्रः । इन्द्रः)

......शिक्षम् ।

[३२०३] ८।५९ (वाल०११) । २ = १।८५।२

(गोतमो राहूगणः । मरुतः)

[३२०४] ८।५९ (वाल०११) । ३ = १।४७।५

(प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

[३२०८] ८।५९ (वाल०११) । ७ (सुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)

रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् ।

१०।१७।९ (देवश्रवा यामायनः । सरस्वती)

......धेहि ।

(अग्निः १६८२) १०।१२२।८ (चित्रमहा वासिष्ठः । अग्निः)

......धारय ।

[३३४४] ८।९३।३४ ऋभुक्षणमृभुं रयिम् ।

४।३७।५ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)

ऋभुमृभुक्षणो रयिं ।

[३३२६] ८।९६।१५ विशो अदेवीरभ्या३ चरन्तीः ।

६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)

विश आदेवीरभ्य१ श्नवाम ।

[२८४२-४९] १०।४७।१-८ अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ।

[२८४५] १०।४७।४ = (१८७८) ६।१९।७

[२६९१] १०।९९।१२ इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः ।

(अग्निः १५८०) १०।२०।१० (विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा वासुक्रः । अग्निः)

[२७७१] १०।१२०।८ = (१२८०) ३।३१।२१

दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ।

[२७७२] १०।१२०।९ हिन्वन्ति च शवसा वर्धयन्ति च ।

(अग्निः ८४६) ५।११।५ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)

पृणन्ति शवसा ... ।

सूचना

पुनरुक्त-मंत्रसूची को निम्नलिखित विधिसे देखना चाहिये—

(१) चतुष्कोण [ ] कंसमें जो अंक है वह मंत्रोंका 'क्रमांक' है। उसके साथके अंक ऋग्वेदादिके विभागोंके दर्शक हैं।

(२) गोल कंस ( ) में पूर्व आये मंत्रोंके क्रमांक हैं और उनके साथवाले अंक ऋग्वेदादिके दर्शक हैं।

(३) जहां तहां आवश्यक पुनरुक्त मंत्रभाग दिया है। एक वार दिया पुनः नहीं दिया है। पुनः पुनः पुनरुक्त मंत्रभाग नहीं दिया, केवल उसके स्थानका ही निर्देश किया है— जैसा— [२७७१] १०।१२०।८=(१२८०) ३।३१।२१ इसका अर्थ यह है कि यह मंत्र क्रम "[१२८०] पृ० २३०" पर देखिये। इन दो मंत्रोंमें "...गोपति... दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः।" इतना मंत्रभाग पुनरुक्त हुआ है, पर दूसरे मंत्रमें 'गोत्र' शब्द है, 'गोपति' नहीं है। इस तरह सर्वत्र समझना चाहिये।

इन्द्रमन्त्रान्तर्गतानां उपमानां सूची।

अंशं न प्रतिजानते ३,४५,४; १४०७ रयिं आभर।

अंशा इव ५,८६,५; ३०४४ अहं पुरः दधे।

अक्षः न चक्र्योः ६.२४,३; १९३० बृहन् मह्ना रोदस्योः।

अक्षं न चक्र्योः १,३०,१४: ७१२ घ आ ऋणोः।

अक्षं न शचीभिः १,३०,१५; ७१३ जरितृणां कामं आ।

अक्षेण इव चक्रिया १०,८९,४; २६६६ शचीभिः विष्वक्।

अग्निः न जम्भैः १०,११३,८; २७५२ तृषु अन्नं आवयत्।

अग्निः वना इव ८,१२,९; २९६ अर्शसानं नि ओषति।

अग्निः न शुष्कमनम् ६,१८,१०: १८६५ हेतिः रक्षः।

अग्निमान् चरुः इव ७,१०४,२; अथ०८,४,२; ३२७९ तपुः।

अग्नौ इव हविः समिधाने २,१६,१; ११७२ ज्येष्ठ तमाय।

अंकी इव वृक्षं पक्वं फलम् ३,४५,४; १४०७ सं पारणं वसु।

अंकुशम् यथा हि दीर्घं १०,१३४,६; २७९० शकित बिभर्षि।

अंगिरस्वत् १,६२,१; ८७२ शूषं आंगूषं प्र मन्महे।

" ८,४०,१२; ३११२ नवीयः अत्राधि।

अतथा इव १,८२,१; ९२५ मघवन् मा भूः।

अत्कं न ४,१६,१३; १४७९ पुरः विदर्दः।

अत्यः न ८,५०,५; ४९९ आ इयानः तोशते।

" १०,१४४,१; २७९८ इन्दुः पत्यते।

अत्यः न योषाम् १,५६,१; ८०५ पूर्वीः चम्रिषः प्र भर।

अत्यः न वाजी ५,३०,१४; ३३३९ रघुः अज्यमानः।

अत्यः न ७,२४,५; २१९० वाजयन् अधायि।

अत्यः न वाजी सुधुरः ३,३८,१; १३४५ जिहानः प्रियाणि।

अत्यम् इव १,१३०,६; १०१६ शवसे सातये धना।

अत्यम् न वाजम् १,५२,१; ७६० हवनस्यदं रथं।

अत्यं न वाजिनम् १,१२९,२; १००१ पृक्षं वाजिनं इन्द्रं।

अत्यं न वाजिनम् १,१३५,५; ३२१६ आशुं वाजिनं।

अत्यान् इव आजौ ३,३२,६; १२८७ (अन्तरिक्षात् अपः)

अत्रेः यथा कृण्वतः ८,३६,७:१७७५ सुन्वतः श्यावाश्वस्य।

" ८,३७,७: १७८२ रेभतः श्यावाश्वस्य।

अदुग्धा इव धेनवः ७,३२,२२; २२५६ त्वा अभि नोनुमः।

अद्रुतं न रजः १०,१०५,७; २७२० इन्द्रः अरुतहनुः।

अधाप्नदः न ६.३०,३; १९७० पर्वताः नि सेदुः।

अध्वनः न अन्ते ४,१६,२; १४६८ सवने नः अवस्य।

अन्तरिक्षे न वातम् २,१४,३; ११५२ तस्मै सोमम् ...।

अतिष्ठन्तं अमस्यं न सर्गम् १०,८९,२; २६६४ कृष्णा तमांसि।

अपः न नावा ६,६८,८; ३१६८ दुरिता तरेम।

अपाम् इव प्रवणे १,५७,१; ८११ बलं दुर्धरम्।

अपाम् ऊर्मिः मदन् इव ८,१४,१०; ३६३ स्तोमः अजिरायते।

अपाम् अवः न समुद्रे ८,१६,२; ३८३ यस्मिन् उक्थानि।

अपी इव योषा जनिमानि ३,३८ ८; १३५२ रोदसी आ वव्रे।

अप्सः न ८,४५,५; ४४७ गिरौ योधिषत्।

अभीवृता इव महापदेन १०,७३,२; २६२४ गर्भाः अत्।

अभीशून् इव सारथिः ६,५७,६; ३३३५ इन्द्रं स्वस्तये।

अभ्राणि इव सानयन् ६,४४,१२; २००७ इन्द्रः उत् इयर्ति।

अमाजूः इव पित्रोः २,१७,७ ११८७ त्वाम् भगम् आ हुये।

अयम् (अग्निः सोमः वा) न १,१३०,१; १०११ परावतः।

अयसः न धाराम् ६,४७,१० २१०८ धियं चोदय।

अया इव १०,११६,९; २७६३ देवाः परिचरन्ति।

अरणा इव ८,१,१३; ९९ वयं मा भूम।

अरान् न नेमिः १,३२,१५; ७२९ राजा(चर्षणीः)परिबभूव।

अरान् इव खे खेदया ८,७७,३; ६४२ तान् इत् समखिदत्।

अर्चा इव मासा दिवि ६,३४,४; २०२४ इन्द्रे सोमः मिमिक्षः।

अर्णवः न १,५५,२; ७९८ नद्यः प्रति गृभ्णाति।

अर्थम् न शूरः १०,२९,५; २५१९ नः पारं प्रेरय।

अर्भकः न कुमारकः ८,६९,१५; २३१७ नवं रथन्।

अर्वा न ३,४९,३: १४२६ पृत्सु सदावा तरणिः।

अर्वन्तः न ७,९०,७; ३२३५ श्रवसः भिक्षमाणाः।

" ७,९१,७; ३२४० "

अर्वन्तः न काष्ठां ७,९३,३; ३०७३ नरः इन्द्राग्नी।

अर्वतः न ५,३६,२; १७४५ त्वा अनु वयं गीर्भिः हिन्वन्।

अर्वता इव साधुना १,१५५,१; ३३०३ महः तस्थतुः।

अवते न कोशम् ४,१७,१६;१५०३ अक्षितोतिं आच्या वयामः।

अवतासः न १,५५,८ ८०४ तनवः कर्तृभिः आवृतासः।

अवतम् न १,१३०,२; १०१२ सिक्तं सोमं पिब।

अवनाम् इव मानुषः ८,६१,६; ५७१ ऋचीषमः अव चष्टे।

अवस्यवः न वयुनानि १,१९,८; ११०६ गृत्समदाः मन्म ।
अविता यथा नः ७,२४,१; २१८६ एवा नः वसूनि ददः ।
अवीराम् इव १०,८६,९; २६४८ माम् अभिमन्यते ।
अशनिः न ६,८,१०; १८६५ भीमा हेतिः ।
अशनिः यथा अथ०७,५०,१; २९०६ कितवान् अप्रति ।
अशन्या इव वृक्षम् २,१४,२; ११५१ वृत्रं जघान ।
अशनिमान् इव द्यौः ४,१७,१३; १५०० समोहं रेणुं इयर्ति ।
अशीर्षाणः इव अथ. ६,६७,२; २८९४ अमित्राः अहयः ।
अशीर्षाणः अहयः साम. १८७१; ३००१ अमित्राः अन्धाः ।
अश्मा इव २,३०,४; १२३० वीरान् तपुषा विध्य ।
अश्मा इव १०,८९,१२; २६७३ द्रोघ मित्रान् आविध्य ।
अश्मना इव पूर्वीः २,१४,६; ११५५ शम्बरस्य पुरः बिभेद ।
अश्वः न निक्तः ८,२,२; ११७ धूतः सोमः वारैः परिपूतः ।
अश्वः न हियानः ८,४९,५; ४७९ स्तोमम् उप आ द्रवत् ।
अश्वा इव वाजिना ७,१०४,६; अथ. ८,४,६;३२८३ मतिः ।
अश्वासः न ८,५५,४; ५४२ यूयम् चङ्क्रमत ।
अश्वः क्रन्दत्(लुप्तोपमा) १,१७३,३;१०५८ अग्निः क्रन्दति ।
अश्वीर इव जामाता ८,२,२०; १३५ असत् आरे सायं ।
असिः न पर्व १०,८९,८; २६६९ त्वम् वृजिना शृणासि ।
अस्ता इव ४,३१,१३; १६४२ व्रजान् अपा वृधि ।
अस्ता इव ६,२०,९; १८९२ हरी अधि तिष्ठत् ।
अस्ता इव १०,४२,१; २५४६ सु प्रतरं लायं अस्यन् ।
अह इव ८,९६,१९; २३६१ रेवान् ।
अहा विश्वा इव सूर्यम् १,१३०,२; १०१२ ते मदाय त्वा ।
अहोभिः इव द्यौः १,१३०,१०; १०२० दिवोदासेभिः ।
आजिं न अश्वाः ६,२४,६; १९३३ गिर्वाहः त्वा जग्मुः ।
आजिम् न ४,४१,८; ३१५३ युवयूः धियः वां जग्मुः ।
आपः न १,६३,८; ८९२ ऊर्जं परिज्मन् पीपयः ।
आपः न ८,३३,१; २१० वृक्तबर्हिषः ।
आपः न अनु ओक्यं सरः ८,४९,३; ४८७ राधसे पृणन्ति ।
आपः न तृष्यते १,१७५,६;१०८४जरितृभ्यः मय इव बभूथ ।
" १,१७६,६;१०९० " "
आपः न देवीः १,८३,२; ९३२ होत्रियं देवासः उप यन्ति ।
आपः न द्वीपम् १,१६९,३; १०४५ प्रयांसि दधति ।
आपः न निम्नम् ४,४७,२; ३२२७ इन्दवः युवाम् ।
आपः न निम्नम् ८,३२,२३; २०२ मे गिरः त्वा यच्छन्तु ।
आपः निम्नेव १,५७,२; ८१२ हविष्मन्तः सवनासं वाजन्ते ।
आपः न पर्वतस्य पृष्ठात् ६,२४,६; १९३३ उक्थेभिः यज्ञैः ।
आपः न प्रवता ८,६,३४; २७६ इन्द्रं वनन्वती मतिः ।
आपः न प्रवता ८,१३,८; ३१८ सूनृताः यतीः क्रीळन्ति ।

आपः न सिन्धुम् १०,४३,७; २५६३ सोमासः इन्द्रम् ।
आपः न सृष्टा ७,१८,१५; २१३३ तृत्सवः नीचीः ।
आपः न उर्वीः ककुदः १,८,७; ४४ एवा इन्द्रस्य ।
आपः इव काशिना ७,१०४,८; २२८५ असतः वक्ता असन् संगृभीता अथ. ८,४,८;३२८५ अस्तु ।
आपः न धायि ८,५०,३; ४९७ सवनं मे आ वसो ।
आशुः न रश्मिम् ४,२२,८; १५३२ शुशुचानस्य ।

इन्द्रम् न ४,४२,८; ३१५८ वृत्रतुरम् आ अयजन्त ।
इन्द्रं न चितयन्तः १,१३१,२; १०२२ आयवः यज्ञैः ।
इषम् न १०,४८,८; २५८६ वृत्रतुरम् विक्षु धारयम् ।

उग्रं न वीरम् ८,४९,६; ४९० विभूतिं उपसेदिम ।
उत्सम् न २,१६,७; ११७८ वयं इन्द्रं सिचामहे ।
उद्रा इव यन्ता । ८,९८,७; २३७० उप त्वा कामान् ।
उद्रा इव कोशम् ४,२०,६; १५३८ वसुनान्यूष्टं वज्रं ।
उद्भिः नवाजिनम् २,१३,५; ११४१ देवाः देवं स्तोमेभिः ।
उदधीन् इव गभीरान् ३,४५,३; १४०६ त्वं क्रतुं पुष्यसि ।
उद्री इव ८,४९,६; ४९० अवतः न सिञ्चते ।
उद्री इव अवतः ८,५०,६; ५०० वसुत्वना सदा पीपेथ ।
उप इव दिवि ८,३,२१; १७६ धावमानम् विश्वेषां त्मना ।
उरा न वृकः ८,३४,३; ४२७ नेमिः एषां विधूनुते ।
उरुधारा इव ८,९३,३; २४३२ इन्द्रः नः दोहते ।
उशती इव ५,३२,१०; १७१४ गातुः इन्द्राय येमे ।
उशतीः इव १०,१११,१०; २७३४ सध्रीचीः सिन्धुम् आयन् ।
उशनाः इव ४,१६,२; १४६८ वेधाः असुर्याय मन्मशंसति ।
उषाः इव १०,१३४,१; २७८५ रोदसी आपप्राथ ।
उषसम् न ७,८१,१; ३१९७ घृतप्रतीकां देवीम् ।
उषसम् न सूर्यः १,५६,४; ८०८ इन्द्रं देवी तविषी सिषक्ति ।
उषसः न ७,१८,२०; २१३८ रायः सुमतयः न संचक्षे ।
उषसः न केतुः १०,८९,१२; २६७३ हेतिः असिन्वा वर्ततान् ।
उस्रा इव राशयः ८,२६,८; २३५२ मरुतः त्वा वावृधानाः ।

ऊधः न ८,२,१२; १२७ नग्नाः जरन्ते ।
ऊधः गोः पयसा यथा २,१४,१०; ११५९ इन्द्रं सोमेभिः ।
ऊर्जं न विश्वध क्षरध्यै १,६३,८; ८९२ यया त्मनम् अस्मभ्यं ।
ऊर्दरम् न यवेन २,१४,११; ११६० इन्द्रं सोमेभिः आपृणीत ।
ऊर्वः इव ३,३०,१९; १२५६ अस्मे कामः पप्रथे ।

ऋणावानं न १,१६९,७; १०४९ पृतनायन्तं सर्गैः पतयन्त ।
ऋभुः न १०,१०५,६; २७१९ क्रतुभिः मातरिश्वा ।
ऋश्यः न तृष्यन् ८,४,१०; २३८ अप पानम् आ गहि ।

ओकः न ४,१६,१५; १४८१ रणवः ।
ओकः न जानती १,१०४,५; ८५१ दस्योः सदनं अच्छा गात्।
ओपशम् इव १,१७३,६; १०६१ इन्द्रः द्याम् भर्ति ।

कण्वाः इव ८,३,१६; १७१ इन्द्रं स्तोमेभिः महयन्ते ।
कनीनका इव ४,३२,२३; ३३४८ कमनीयौ ।
कविः न निण्यम् ४,१६,३; १४६९ विदथानि साधन् ।
कारं न ५,२९,८;१६७४ इन्द्राय भरं अहृन्त ।
कारुः उक्थ्यः [इव] १,८३,६; ९३६ यत्र ग्रावा वदति ।
किरणाः न १,६३,१; ८८५ गिरयः अभ्वा दळहासः ऐरयन्।
कुलपाः न व्राजपतिम् १०,१७९,२; २८३७ सखायः चरन्तं ।
कुल्याः इव ह्रदम् ३,४५,३;१४०६ सोमाः त्वाम् प्र आशत।
" " " १०,४३,७; २५६३ सोमासः इन्द्रं अभि ।
कृतं न श्वघ्नी देवने १०,४३,५; २५६१ संवर्गं यत् मघवा ।
कोशं न पूर्णं वसुना १०,४२,२; २५४७ न्यृष्टं इन्द्रं ।
क्रिविम् यथा १,३०,१; ६९९ इन्द्रं इन्दुभिः आसिञ्चे ।
क्षत्र इव १,१३०,४; १०१४ इन्द्रः वज्रं संशयत् ।
क्षाः न १,१३३,६; १०३९ द्यौः भीषान् शुशोच ।
क्षुद्रम् इव १,१२९,६; १००५ अघशंसः अवतरं अव स्त्रवेत्।
क्षुम्पम् इव १,८४,८; ९४४ मर्तं पदा अस्फुरत् ।
क्षुल्लकाः इव अथर्व० ५,२३,११; २८८५ क्रिमयः हताः ।
क्षोणयः यथा १०,२२,९; २४७४ पर्तयः त्वां पुरुत्रा वि ।
क्षोणीः इव १,५७,४; ८१४ त्वं नः वचः हर्य ।

खले न पर्षान् १०,४८,७; २५८५ अहम् भूरि प्रति हन्मि ।

खर्गला इव ७,१०४,१७; ३६०४ तन्वं गूहमाना ।
अथ०८,४,१७;

गयम् यथा ८,४५,१३; ४५५ तथा त्वां वयं विद्म ।

गर्भं न माता ३,४६,५; १४१३ सोमं द्यावापृथिवी ।
गर्भधिम् इव कपोतः १,३०,४;७०२ अयम् उ ते समतसि ।
गवे न शाकिने ६,४५,२१; २०८१ पुरुहूताय शम् गाय ।
गवां व्रजम् इव १,१३०,३; १०१३ वज्री सोमं अविन्दत् ।
गवाम् इव स्तुतयः ६,२४,४; १९३१ ते शाकाः संचरणीः ।
गावः न यवसात् ७,१८,१०; २११८ चितासः मित्रम् ।
गावः न यूथम् ८,४६,३०; १८३८ वध्रयः मा उप यन्ति ।
गावः न यवसेषु ८,९२,१२; २४०८ त्वा उक्थेषु ।
गाम् न ८,१,१; ९० इन्द्रं शंसत ।
गाम् इव भोजसे ८,६५,३; ६०३ सोमस्य त्वा आ हुवे ।
गाम् न दोहसे ६,४५,७ २०६६ सखायं गीर्भिः हुवे ।
गाम् क्षीरिणीम् इव अथ०७,५०,९; २९११ फलवतीं युवं ।

गाः न १,६१,१०; ८६५ इन्द्रः अवनीः अमुञ्चत् ।
गाः इव सुगोपाः ३,४५,३; १४०६ त्वम् क्रतुं पुष्यसि ।
गावः न ६,४१,१; १९९३ त्वम् ओकः अच्छ आ गहि ।
गावः न धेनवः वत्सम् । ६,४५,२८; २०८७ गिरः सुते ।
गिरिः न ४,२०,६; १५३८ स्वतवान् ऋष्वः इन्द्रः ।
गिरिः न भुज्म ८,५०,२; ४९६ मघवत्सु पिन्वते ।
गिरिः न विश्वतस्पतिः ८,९८,४ २३६७ विश्वतस्पृथुः ।
गिरिम् न ८,८८,२; ८९५ इंद्रं ईमहे ।
गिरिं न वेनाः १,५६,२; ८०६ विदथस्य नू सदः ।
गिरेः इव ८,४९,२; ४८६ अस्य रसाः प्र पिन्विरे ।
गोभिः इव व्रजम् ८,२४,६; १७९५ त्वा गीर्भिः आ वृणोमि।
गोः न १,६१,१२; ८६७ पर्व तिरश्चा वि रदा ।
गौः इव (लुप्तोपमा) १,१७३,३; १०५८ (अग्निः) ।
गौः इव ८,३३,६; ११५ पुरुष्टुतः क्रत्वा शाकिनः ।
गौरः न १,१६,५; ८१ तृषितः (सोमं) पिब ।
गौरः यथा ८,४५,२४; ४६६ तथा सरः पिब ।
गौरःयथा अपा कृतं ८,४,३; २३१ तथा आपित्वे नः प्रपित्वे ।
ग्रावा इव ५,३६,४; १७४७ जरिता ते वाचं इयर्ति ।

घनेन इव १,६३,५; ८८९ अमित्रान् श्नथिहि ।

घर्मम् न सामन् ८,८९,७; २३९० जुष्टम् बृहत् तपत ।
घृणात् न १,१३३,६; १०३९ द्यौः भीषाँ शुशोच ।
घृतम् न ८,१२,४; २९१ इमं स्तोत्रं अभिष्टये ।
घृतं न ८,१२,१३; ३०० ऋतस्य आसनि पिप्ये ।
घृतं न पूतं अद्रिभिः ५,८६,६; ३०४५ इन्द्राग्निभ्यां हव्यं।
घृतप्रुषः न ऊर्मयः ६,४४,२०; २०५५ वृषणः द्रोणं ।
चक्रं न वृत्तम् ४,३१,४; १६३३ अर्वतः नः चर्षणीनाम् ।
" " ५,३६,३; १७४६ मे मनः भिया वेपते ।
चक्रं न वर्ति एतशम् ८,६,३८; २८० रोदसी त्वा अनु ।
विश्वा चक्रा इव ४,३०,२; १६१० कृष्टयः ते अनु सत्रा ।
चक्रिया इव ४,३०,८; १६८९ मरुद्भ्यः रोदसी ।
चन्द्रमा इव अप्सु ८,८२,८; ६८६ सोमः चमूषु ददृशे ।
चम्रीषः न १,१००,१२; ९६८ शवसा पाञ्चजन्यः ।
चर्म इव ८,६,५; २४७ रोदसी समवर्तयत् ।

जघना इव द्वौ १,२८,२; ६८९ अधिषवण्या कृता ।

जघन्थ यथा प्रवता १,३०,४; ११३० अस्माकं शत्रुं जहि ।
जनं न धन्वन् अभि ६,३४,४; २०२४ सत्रा वावृधुः ।
जनयः न १,६२,१०; ८८९ स्वसारः पत्नीः दुवस्यन्ति ।
जनयः न गर्भम् ४,१९,५; १५२६ अग्रुवः अभि प्र वद्रुः ।
जनयः यथा पतिम् १०,४३,१; २५५७ मघवानं मतयः ।

जनीः इव ८,१७,७; ५१० सोमः त्वा अभि संवृतः।
जनीः इव एकः पतिः ७,२६,३; २२०० सर्वाः पुरः सुसमानः।
जनिधा इव १०,२९,५; २५१९ अस्य कामं गमन्।
जामिवत् १०,२३,७; २४८७ ते प्रमतिं विद्म हि।
जिग्रयः न ४,१९,२; १५२३ देवाः त्वां अवासृजन्त।
जुष्टां न श्येनः वसतिम् १,३३,२; ७३१ इन्द्रं उत इव।
जूः न वस्त्रैः २,१४,३; ११५२ इन्द्रं सोमैः आ ऊर्णुत।
जेन्यम् यथा १,१३०,६; १०१६ वाजिनं शुम्भन्तः।
जोष्टारः इव वस्वः ४,४१,९; ३१५४ मनीषां इन्द्रं वरुणं।
ज्योतिः न ८,२४,१; १८१० दक्षिणा विश्वं अभि।
तष्टा इव ३,३८,१; १३४५ मनीषां अभि दीधय।
" १,६१,४; ८५९ अहं स्तोमं सं हिनोमि।
तष्टा इव सुद्रुवंनेमिम् ७,३२,२०; २२५४ इन्द्रं गिरा।
तष्टा इव बन्धुरम् १०,११९,५; २९५४ अहं मतिं पर्यचामि।
तीर्थे न अर्यः १,१६९,६; १०४८ पृथुबुध्नासः एताः।
तीर्थे न तातृषाणम् ओकः १,१७३,११; १०६६ यज्ञः ऋन्धन्।
तुजये न १०,४९,४; २५९३ यजमानाय प्रिया प्र भरे।
तूर्णाशं न गिरेः अधि ८,३२,४; १८३ हुवे सुशिप्रम्।
त्वष्टा न वृक्षं वनिनः १,१३०,४; १०१४ शवसा (शत्रून्)।
दक्षिणया इव ओजिष्ठया १,१६९,४; १०४६ वयं रातिं।
दस्मः न सद्मन् ७,१८,११; २१८९ इन्द्रः सर्गं अकृणोत्।
दिवः न १,१००,३; ९५९ इन्द्रस्य पन्थासः दुघानाः।
दिवः न १,१००,१३; ९६९ त्वेषः शिमीवान् रवथः।
दिवः न ६,२०,२; १८८५ असुर्यं विश्वं तुभ्यम् अनु।
दिवः ,, अथर्व. २,५,२; २८६४ मघोः पृणस्व।
दिवः ,, साम. ९५३; २९९८ ,, ,,
दिवः न वृष्टिम् ८,१२,६; २९३ प्रथयन् ववक्षिथ।
दिवे न सूर्यः ८,७०,२; २३२१ दर्शतः हस्ताय वज्रः।
दिवि इव ७,२४,५; २१९० द्याम् अधि नः श्रोमतं धाः।
दिवि इव सूर्यं दृशे १०,६०,५; २६२२ असमातिषु क्षत्र।
दिवि तारः न ८,५५,२; ५४० श्वेतासः उक्षणः रोचन्ते।
दिव्या इव अशनिः १,१७६,३; १०८७ यः असाध्रुक् तं।
दीर्घः न अध्वा सिध्रं १,१७३,११; १०६६ यज्ञः जुहुराणः।
दुघा इव ८,५०,३; ४९७ दाशुषे उप।
दुर्गे दुरोणे क्रत्वान ४,२८,३; १६०१ यातां सहस्रा।
दुर्मदासः न सुरायाम् ८,२,१२; १२७ हृत्सु पीतासः।
दुर्यः न यूपः १,५१,१४; ७५८ पज्रेषु स्तोमः।
दूतः न १,१७३,३; १०५८ रोदसी अन्तः चरत्।
दूर्वायाः इव तन्तवः १,१३४,५; २७८९ दिद्यवः विष्वक्।

दृषदा इव ७,१०४,२२; अथ० ८,४,२२; ३२९९ रक्षः प्रमृण।
देवः इव सविता वा०य० १२,६६; २९२९ सत्यधर्मा इन्द्रः।
द्यौः न १,८,५; ४२ शवः प्रथिना [शुशुवताम्।]
द्यौः न ४,२१,१; १५४४ अभिभूति क्षत्रं पुष्यात्।
द्यौः न ६,२०,१; १८८४ रयिः अभि भूम।
द्यौः न ६,३६,५; २०३५ दुर्वायुः अर्यः रायः अभिभूम।
द्यौः न ८,५६,१; ५४८ शव प्रथिना।
गावः न १,१२,३; ७३५ (कर्माणि) मानुषा विचरन्ति।
व्रातः न शूरैः ४,२३,१९; १४०१ वयम् अर्यः मदेम।
द्याम् इव उपरि वर्षिष्ठम् २,३१,१५; १६४४ देवेषु अस्माकं।
द्रुणा न पारं ८,२६,१२; २३५५ उक्थ वाहसे विभ्वे।
धनं न जिग्युः ७,३२,१२; २२३६ अस्य अंश उत् रिच्यते।
धनं न स्पन्द्रं १०,४२,५; २५५० सोमान् बहुलं आ सुनोति।
धन्वा इव ३,४५,१; १४०४ तान् अति इहि।
धन्वचरः न वंसगः ५,३६,१; १७४४ रयीणां दामनः आगमन्।
धर्म इव सूर्यम् ८,६,२०; २६२ प्रत्नः ऋता गर्भं अचक्रिरन्।
धानानाम् न ८,७०,१२; २३३२ आसां हस्ते नः दावने।
धिषणा इव ३,४९,४; १४२७ भागं वाजं विभक्त।
धुरि इव ७,२४,५; २१९० एष स्तोमः उग्राय अवाचि।
धेनुः न वत्सं यवसस्य पिप्युषी २,१६,८; ११७९ सं बाधात्।
धेनवः यथा यवसम् ३,४५,३; १४०६ तथा त्वं सोमान्।
धेनवः संपृक्ता मध्वा सारघेण ८,४,८; २३६ नः सोमाः वर्तन्ते।
धेनुं न सूयवसे ७,१८,४; २१८२ ब्रह्माणि त्वा उप मसृजे।
धेनूः इव मनवे १,१३०,५; १०१५ अस्मद्र्यं समानं।
धेनूनां न [पयः] १०,२२,१३; २४७८ [स्तुतीनां] सुजः।
नदं न भिन्नम् १,३२,८; ७२२ शयानं आपः अति यन्ति।
नद्यः न ४,१६,२१; १४८७ जरित्रे इषं पीपे।
,, ४,२४,११-१५८७ ,,
(सूक्तान्ते अष्टवारं पुनरुक्तः) १४८७-१५८७
नभः न ८,९६,१४; ३२६१ कृष्णं अवतस्थिवांसं इष्यामि।
नभन्वान् अक्षः ४,१९,७; १५२८ धन्वाः युवतीः प्र अपिन्वत्।
नरां न शंसैः १,१७३,९; १०६४ स्वभिष्टयः वयं असाम।
नरां न विप्रघोसः १,१७३,१०; १०६५ अस्माकं शंसैः।
नवं इत् न कुम्भम् १०,८९,७; २६६८ गिरिं बिभेद।
नव्यः न। अथ० २,५,२; २८६४ इन्द्र जठरं पृणस्व।
नव्यं न। साम० ९५३; २९९८ जठरं पृणस्व।
नावम् न पर्षणिम् १,१३१,२; १०२२ इन्द्रं श्रवस्य धुरि।
नावम् न समने २,१६,७; ११७८ वचस्युवं सवनेषु।
नावा इव यान्तम् ३,३२,१४; १२९५ इन्द्रं उभये हवन्ते।

नासत्या इव १,१७३,४; १०५९ सुगम्यः इन्द्रः ।

निधया इव १०,७३,११; २६३३ अस्मान् मुमुग्धि ।

निम्नम् न १,३०,२; ७०० समाशिरां सहस्रं एदुरीयते ।

निम्नम् न सिंधवः ५,५१,७; ३२३२ प्रयः युवाम् अभि ।

निष्क्याः इव ८,१,१३; ९९ वयं मा भूम ।

नृपती इव ७,१०४,६; अथ० ८,४,६; ३२८३ इमा ब्रह्माणि ।

नृवत् ४,२२,४; १५५८ वाताः परिज्मन् नो नुवन्त ।

पक्षा इव श्येनम् ८,३४,९; ४३३ मदच्युता हरी त्वा ।

पणिना इव गावः १,३२,११; ७२५ आपः निरुद्धाः ।

पतिं न पत्नीः उशतीः १,६२,११; ८८२ मनीषाः त्वा ।

पत्नीभिः न वृषणः २,१६,८; ११७९ ते सुमतिभिः ।

पदा इव पिप्रतीं जामिम् ८,१२,३१; ३१८ विप्रः धीभिः ।

पदा पूर्वेण अजः वयां यथा १०,१३४,६; २७९० तथा यमः ।

परशुः यथा वनम् ७,१०४,२१; अथ० ८,४,२१; ३२९८ रक्षसः ।

पश्वा इव १,१३०,४; १०१४ (अस्मद् द्वेषिणः) निवृश्चसि ।

परिधीन् इव त्रितः १,५२,५; ७६४ वलस्य परिधीन् ।

परिपन्थी इव १,१०३,६; ८४४ अयज्वनः वेदः विभजन् ।

पर्जन्यः वृष्टिमान् इव ८,६,१; २४३ इन्द्रः ओजसा महान् ।

पर्वतः न १,५२,२; ७६१ धरुणेषु अच्युतः ।

पशुं न गोपाः १०,२३,६; २४८६ भोजनः (प्रासये) वयं ।

पशुम् पुष्टीवन्तः यथा ८,४५,१६; ४५८ सोमिनः तथा ।

पात्रं न शोचिषा १,१७५,३; १०८१ सहावान् दस्युं ।

पात्रा भिन्दाना ६,२७,६; १९६० वृचीवन्तः व्यर्थानि ।

पात्रा इव ७,१०४,२१; अ० ८,४,२१; ३२९८ रक्षसः भिन्दन् ।

पात्रस्य इव १,१७५,१; १०७९ (त्वया) महा अपायि ।

पादौ इव ६,४७,१५; २११३ प्रहरन् अन्यं कृणोति ।

पितृवत् ८,४२,१२; ३११२ नवीयः अवाचि

पिता इव १,१०४,९; ८५५ इन्द्र नः शृणुहि ।

पिता इव ३,४९,३; १४२६ चारुः सुहवः च ।

पिता इव ८,२१,१४; ४२२ त्वम् समूहस्य आत् इत् ।

पिता इव ७,२९,४; २२१६ त्वं नः प्रमतिः असि ।

पिता इव १०,२३,५; २४८५ यः तविषीं शवः वावृधे ।

पिता इव १०,३३,३; २५४० इन्द्र त्वं नः भव ।

पिता इव १०,४९,४; २५९३ अहम् वेतसून् अभिष्टये ।

पिता यथा पुत्रेभ्यः ७,३२,२६; २२६० इन्द्र नः क्रतुम् ।

पितरौ इव शम्भू ४,४१,७; ३६५२ युवां सख्याय ।

पितरं न पुत्रासः १,१३०,१ १०११ वयं मंहिष्ठं त्वा ।

पितरं न पुत्राः ७,२६,२; २१९९ सबाधः समान दक्षाः ।

पितरं न १०,४८,१; २५७९ जन्तवः माम् हवन्ते ।

पुत्रः न पितरम् ७,३२,३; २२३७ रायस्कामः सुदक्षिणं हुवे ।

पुत्रः न पितुः ३,५३,२; १४५४ सिचम् स्वादिष्ठया गिरा ।

पुत्रम् इव प्रियं पिता १०,२२,३; २४६८ इन्द्रः [नःअवतु]

पुर एता इव ६,४७,७; २१०५ इन्द्र नः पश्य ।

पुरम् न ८,३२,५; १८४ अश्वस्य व्रजम् दर्षसि ।

पुरम् न धृष्णु ८,६९,८; २३११ प्रियमेधासः इन्द्रं प्र अर्चत ।

यथाचित् आविध वाजेषु ८,६८,१०; २३०० तथा माम् ।

पूर्वथा १,८०,१६; ९१५ उक्था इन्द्रं समतात ।

पूर्वपाः इव ८,१,२६; ११२ अस्य सुतस्य आ पिब ।

पृष्ठा इव १०,८९,३; २६६५ इन्द्रः जनिमानि विचिकाय ।

प्र इव १,१०३,७; ८४५ तत् वीर्यं चकर्थ ।

प्रयः न १,६१,१; ८५६ इमं स्तोमं प्रहर्षि ।

प्रयः इव १,६१,२; ८५७ अस्मै आंगूषं भरामि ।

प्रवतः न ऊर्मिः ६,४७,१४; २११२ ब्रह्माणि त्वा अवधयन्ते ।

बर्हिः न १,६३,७; ८९१ सुदासे अंहोः यत् वृथा वर्क ।

ब्रह्मा इव तन्द्रयुः ८,९२,३०; २४२६ मा सु भवः ।

भगः न १,६२,७; ८७८ मेने परमे व्योमन् ।

भगः न ३,४९,३; १४२६ कारे मतीनां हव्यः ।

भगः न ५,३३,५; १७२१ हव्यः, चारुः ।

भगम् न ८,६१,५; ५५२ वसुविदं त्वा अनुचरामसि ।

भगं न कारिणम् ८,६६,१; ६१३ अध्वरे इन्द्रं हुवे ।

भागम् इव ८,९०,६; २३९६ प्रचेतसं त्वा राधः ईमहे ।

भीमं न गाम् ८,८१,३; ६७२ दित्सन्तं त्वा न वारयन्ते ।

भूषत् इव १०,४२,१; २५४६ अस्मै स्तोमं आ भर ।

भृगुः न । अथ० २,५,३; २८६५ इन्द्रः बलं बिभेद ।

" साम० ९५४; २९९९ " "

भृगवः रथं न ४,१६,२०; १४८६ इन्द्राय ब्रह्म अकर्म ।

भृतिं न ८,६६,११; ६२३ वयं ते ब्रह्माणि प्र भरामसि ।

भृष्टिः न गिरेः १,५६,३; ८०७ इन्द्रस्य शवः पौंस्ये ।

मृघा इव निष्पपी १,१०४,५; ८५१ चर्कृतात् इत् नः ।

मध्वौ न मक्षः ७,३२,२; २२३६ इमे ब्रह्मकृतः सुते सचा ।

मनुषा इव १,१३०,९; १०१९ विश्वा सुमनानि तुर्वणिः ।

मनुष्वत् ६,६८,१; ३१६१ वृक्तबर्हिषः यजध्यै ।

मंधातृवत ८,४०,१२; ३११२ नवीयः अवाचि ।

मर्तः न १०,१०५,३; २७१६ शश्रमाणः बिभीवान् इन्द्रः ।

मर्ताय [मर्ताविव] ५,८६,५ ३०४४ ता अनु द्यून् ।

मर्यः न योषाम् । ४,२०,५; १५३७ इन्द्रं अच्छा ।

मर्यं न शुन्ध्युम् १०,४३,१; २५५७ मघवानम् मे ।

महान् इव युवजानिः ८,२,१९; १३४ अस्मान् मा अभि।
मही इव ८,९०,६; २३९६ ते कृत्तिः शरणा।
मही इव द्यौः १०,१३३,५; २७८२ तस्य बलं अव तिर।
मातुः न सीम् ६,२०,८; १८९१ उप सृज इयध्यै।
मासा इव सूर्यः १०,१३८,४; २७९५ पुर्य वसु आ ददे।
मित्रः न १०,२२,१; २४६६ इन्द्रः जने श्रूयते।
मित्रः न १०,२२,२; २४६७ इन्द्रः जनेषु असाम्या।
मित्रः न १०,२९,४; २५१८ नः कत् आगन्।
मित्रः न। साम. ९५४; २९९९ इन्द्रः वृत्रं जघान।
मित्रायुवः न पूर्वतिम् १,१७३,१०; १०६५ मध्यायुवः।
मूषः न शिश्ना १०,३३,३; २५४० ते स्तोतारं मा आध्यः।
मृगः न १,१७३,२; १०५७ अश्नः (सन्) अति।
मृगः न कुचरः १०,१८०,२; २८४० इन्द्रः भीमः।
मृगः न वारणः दाना (नि) ८,३३,८; ३१७ त्वं पुरुत्रा।
मृगः न हस्ती ४,१६,१४; १४८० तविषीं उपाणः भीमः।
मृगं न व्राः ८,२,६; १२१ यत् ईम् अस्वन् अन्ये मृगयन्ते।
मृगं न ८,१,२०; १०६ अहं गिरा भूर्णिं त्वा मा चुक्रुधम्।

यथा मेधिराः आहुवन्त ८,३८,९; ३०२९ एवावाम्।
यजमानः न होता ४,१७,१५; १५०२ कृष्णः ईम् अजिघर्ति।
यतिः न। साम० ९५४; २९९९ इन्द्रः वृत्रं जघान।
यतीः न। अथ० २,५,३; २८६५ ” ” ”
यवम् न १,१७६,२; १०८६ इन्द्रः वृषा चर्कृषत्।
यवं न पश्वः आ ददे ८,६३,९; ५८६ अस्य वृष्णः ओदने।
यवं न वृष्टिः १०,४३,७; २५६३ विप्राः अस्य मदः।
यवं यथा गोभिः श्रीणन्तः ८,२,३; ११८ वयं तथा तं।
यवमन्तः यवं चित् यथा १०,१३१,२; २७७४ इह एषां।
युजं न १०,८९,८; २६६९ जना मित्रं प्र मिनन्ति।
युजा इव वाजिना अक्षं २,२४,१२; ३३५२ नः हविः।
यूथा इव वंसगः १,७,८; ३५ वृषा कृष्टीः ओजसा इयर्ति।
यूथा इव पश्वः ५,३१,१; १६९३ इन्द्रः (शत्रुसैन्यानि)।
यूथा इव पश्वः पशुपाः ६,१९,३; १८७३ दमूना वाजौ।
यूथा इव अप्सु ६,२९,५; १९६६ समीजमानः ऊती।

रघ्वीः इव प्रवणे १,५२,५; ७६४ ऊतयः स्ववृष्टिं।

रघ्वीः इव श्रवसः ४,४१,९; ३१५४ प्रविणं इच्छमानाः।
रजी न १०,१०५,२; २७१५ यस्य हरी केशिना।
रथः न ३,४९,४; १४३७ वायुः रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वः।
रथः न महे ६,३४,२; २०२२ इन्द्रः अनुमाद्यः।
रथाः इव ४,१९,५; १५२६ अद्रयः साकं प्र ययुः।
रथाः इव वाजयन्तः ८,३,१५; १७० अक्षितोतयः।

रथं न १,६१,४; ८५९ अस्मै स्तोमं सं हिनोमि।
रथं न ५,२९,१५; १६८१ स्वपाः भद्रा सुकृता अतक्षम्।
रथं न पृतनासु १०,२९,८; २५३२ अस्मान् आतिष्ठ।
रथं न धीरः १,१३०,६; १०१६ आयवः ते इमां वाचं।
रथम् यथा ८,६८,१; २२९१ तथा त्वाम् सुम्नाय आवर्त..।
रथम् इव अश्वाः १०,११९,३; २८५२पीताः उत् मा अयं।
रथान् इव १,१३०,५; १०१५ नद्यः समुद्रं असृजः।
रथान् इव ८,१२,३; २९७ येन सिन्धुम्... प्रचोदयः।
रथान् इव वाजयतः १,१३०,५; १०१५ नद्यः समुद्रं अच्छ।
रथैः इव। अथ. ७,५०,३; २९०८ वाजयद्भिः प्र भरे सोमम्।
रथे न पादम् ७,३२,२; २२३६ जरितारः इन्द्रे कामं दधुः।
रथीः इव ८,९५,१; २३३६ सुतेषु आ त्वा गिरः अस्थुः।
रथ्यः न धेनाः ७,२१,३; २१६३ रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि।
रथ्या इव ३,३६,६; १३२८ आपः समुद्रं जग्मुः।
रथ्या चक्रा इव १०,८९,२; २६६४ सूर्यः वर्तांसि उरु।
रम्भं न जिव्रयः ८,४५,२०; ४६२ वयं त्वा आ रम्भा।
रयिम् न १०,१३४,४; २७८८ सुन्वते सचा ऊतिभिः।
रयिम् इव पृष्ठं प्रथवन्तं २,१३,४; ११४० पुष्टिं प्रजाभ्यः।
रश्मीन् यमितवा इव १,२८,४; ६९ यत्र मन्थां विबध्नते।
राजा इव १०,४३,२; २५५८ बर्हिषि अधि निषद्।
राजा इव जनिभिः ७,१८,२; २१२० द्युभिः त्वं क्षेषि।
राजा इव सत्पतिः १,१३०,१; १०११ विदथानि अच्छ।
रिष्टं न यामन् १,१३१,७; १०२७ विश्वा दुर्मतिः अप भूतु।

वंशम् इव १,१०,१; ५८ ब्रह्माणः त्वा उद् येमिरे।
वंसगः न १,५५,१; ७९७ इन्द्रः वज्रं शिशीते।
वंसगः तातृषाणः न १,१३०,२; १०१२ इन्द्र सोमं पिब।
वज्रः न संभृतः ८,९३,९; २४३८ सबलः अनपच्युतः।
वत्सं न मातरः ३,४१,५; १३७७ मतयः इन्द्रं रिहन्ति।
वत्सं न मातरः ६,४५,२५; २०८४ गिरः त्वा अभि प्र णोनुमः।
वत्सं न मातरः ८,९५,१; २३३६ गिरः त्वा समनूषत।
वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ८,८८,१; ८९४ इन्द्रं गीर्भिः।
वत्सानां न तन्तयः ६,२४,४; १९३१ ते दामन्वन्तः।
वधूयुः इव ३,५२,३; १४४८ नः गिरः जोषयासे।
वधूयुः इव योषणाम् ४,३२,१६; १६६० ”
वना इव सुधितेभिः ६,३३,३; २०१८ पृत्सु अर्कैः वधीः।
वना इव अग्निः ८,४०,१; ३१०१ येन दृळ्हा समत्सु।
वना इव स्वधितिः १०,८९,७; २६६८ इन्द्रः वृत्रं जघान।
वनानि न ८,१,१३; ९९ प्रजहितानि अमन्महि।
वने न वायो न्यधायि १०,२९,१; २५११ वां स्तोमः शुचिः।
वयः न स्वसराणि २,१९,२; ११०० नदीनां प्रयांसि।

वयः न वर्तन्ति आमिषि ६,४६,१४; २१०३ बाह्वोः गवि।
वयः न अस्तम् ८,३,२३; १७८ वह्नयः तुग्र्यं धुरं ।
वयः यथा ८,२१,५; ४१३ तथा वयं मधौ सीदन्तः ।
वयः न वृक्षं १०,४३,४; २५६० सोमासः इन्द्रं ।
वयाः इव ८,१३,१७; ३३७ इन्द्रं क्षोणीः अवर्धयन् ।
वयाः इव ८,१३,६; ३२६ गिरः अनु रोहते ।
वयाम् इव वृक्षस्य ६,५७,५; ३३३४ इन्द्रस्य सुमतिं ।
वराः इव १,८३,२; ९३२ देवासः ब्रह्मप्रियं जोषयन्ति ।
वरुणः न १०,९९,१०; २६८९ दस्मः मायी ।
वरुणः न १०,१४७,५; २८०९ दस्मः त्वं मायी ।
वस्त्रा इव ५,२९,१५; १६८१ अहं भद्रा सुकृता अतक्षम् ।
वस्त्रा इव गत्या ८,१,१७; १०३ वासयन्तः नरः ।
वहतुं न धेनवः १०,३२,४; २५३३ सधस्थं अभिचारु ।
वाचं न वेधसाम् १,१२९,१; १००० अस्माकं (हविः)।
वाजम् न जिग्युषे ६,४६,२; २०९१ रथ्यं अश्वं सं किर ।
वाजं न गध्यम् ४,१६,११; १४७७ ऋज्रा ।
वाजयुः न रथम् २,२०,१; १२०८ ते वयः प्र भरामहे ।
वाणीः इव चित्राः ५,८६,१; ३०४० स दृळ्हा चित् द्युम्ना ।
वातः न जूतः स्तनयद्भिः ४,१७,१२; १४९९ सः अस्य शुष्मं।
वातः यथा वनं १०,२३,४; २४८४ इन्द्रः सुते मधु उत् ।
वाताः इव ८,४९,८; ४९२ प्रसक्षिणः हरयः ।
वाताः इव प्रदोधतः १०,११९,२; २८११ उत् मा पीताः ।
वायुः न नियुतः ३,३५,१; १३१२ रथं युज्यमाना हरी ।
वायुः न नियुतः ७,२३,४; २१८३ नः अच्छा आ याहि ।
वार् न वातः तविषीभिः ४,१९,४; १५२५ इन्द्रः शवसा ।
वाशी इव श्राची सुन्वते ८,१२,१२; २९९ सनिः मित्रस्य ।
वाश्राः इव धेनवः १,३२,२; ७१६ आपः समुद्रं अव जग्मुः।
वाश्रा पुत्रं इव प्रियम् १०,११९,४; २८१३ मतिः मा उप।
विम् न पाशिनः ३,४५,१; १४०४ त्वां केचिन् मा ।
विततं यथा रजः १,८३,२; ९३२ देवासः अव पश्यन्ति ।
विदथ्यः न सम्राट् ४,२१,२; १५४५ क्रतुः कृष्टीः अभ्यस्ति ।
विदे यथा ८,४९,१; ४८५ सुराधसम् इन्द्रम् अर्च ।
विः इव १०,८६,७; २६४६ (मपिता) हृष्यति ।
विपः नः ६,४४,६; २०४१ यस्य ऊतयः ।
वी इव भ्राजन्तः ७,५५,२; २२७१ ऋष्टयः उप स्रक्वेषु ।
वृकः यथा अविम् । अथ. ७,५०,५; २९१० एव ते कृतं ।
वृक्षः न पक्वः ४,२०,५; १५३० नवेभिः ऋषिभिः ।
वृक्षस्य नु वयाः ६,२४,३; १९३० ते ऊतयः वि रुरुहुः ।
वृक्षाः इव ८,४,५; २३३ ते पृतनायवः नि येमिरे ।
वृजनम न १,१७३,६; १०६१ इन्द्रः भूमा संविव्ये ।

वृत्रः इव दासम् १०,४९,६; २५९५ अहम् वृत्रहथं ।
वृषभः न भीमः तिग्मशृंगः ७,१९,१; २१४० एकः विश्वाः।
वृषभः न १०,१०३,१; २६८२ भीमः इन्द्रः ।
वृषभः न तिग्मशृंगः १०,८६,१५; २६५४ मन्थः ते इन्द्र ।
वृषभा इव धेनोः ४,४१,५; ३१५० अस्याः धियः युवां ।
वृषभा इव ६,६४,४; २०९३ मन्युना मनुष्यान् बाधसे ।
वृषभं यथा अवक्रक्षिणम् ८,१,२; ९० तथा इन्द्रं शंसत ।
वृषा न क्रुद्धः १०,४३,८; २५६४ इन्द्रः रजःसु आपतयत् ।
वृषणे न ८,३४,५; ४२९ सुतानां ते पूर्वपाय्यं दधामि ।
वृषायुधः न वध्रयः १,३३,६; ७३५ निरष्टाः इन्द्रात् प्रवद्भिः।
वृष्टिः इव अभ्रात् ७,९४,१; ३०७९ पूर्व्यस्तुतिः मन्मनः।
वेः न १०,३३,२; २५३९ अमतिः नग्नता नि बाधते ।
वेः न गर्भम् १,१३०,३; १०१३ इन्द्रः गुहा निहितं ।
वेनः न ८,३,१८; १७३ हवं शृणु धी ।
व्रजं न गावः ५,३३,१०; १७२६ रायः प्रयताः अपि ग्मन्।
व्रततेः इव पुराणवत् ८,४०,६; ३१०६ अपि वृश्च गुष्पितम्।
व्यथिः यथा। अथ. ६,३३,२; २८८८ इन्द्रस्य श्रवः नाधृषे।

शची इव १०,७४,५; २६३८ इन्द्रं अवसे कृणुध्वम् ।
शतानीका इव ८,४९,२; ४८६ धृष्णुया प्र जिगाति ।
शवः ते यथा अपरीतम् ८,२४,९; १७९८ तथा दाशुषे रातिः।
शसने न गावः १०,८९,१४; २६७५ पृथिव्याः आपृक् ।
शाखा न पक्वा १,८,८; ४५ अस्य दाशुषे सूनृता ।
शार्याते सुतस्य यथा अपिबः ३,५१,७; १४४० तथा इह ।
शिशुम् न मातरा ८,९९,६; २३८१ क्षोणी तुरयन्तं अनु ।
शुन्ध्युः परिपदाम् ८,२४,२४; १८१३ निर्ऋतीनां परिवृजं ।
शोचिः न अग्नेः ८,६,७; २४९ दिद्युतः धीतयः विपाम् ।
श्मशा (लुप्तोपमा) १०,१०५,१; २७१४ (अवरुध्यच)कदा।
श्येतः न १,३२,१४; ७२८ स्रवन्तीः रजांसि अतिरः ।
श्येनान् इव ध्रवस्यतः ६,४६,१३; २१०२ महाधने सर्गे ।
श्येनान् इव अन्तरिक्षे १,१६५,२; ३२५१ महा मनसा ।
श्रायन्तः इव सूर्यम् ८,९९,३; २३७८ विश्वा इत् इन्द्रस्य।
श्रियेन गावः सोमम् ४,४१,८; ३१५३ मे मनीषाः इन्द्रं ।
श्वघ्नी इव ३,१२,४; ११२५ [इन्द्रः] लक्षं जिगीवान् ।
श्वघ्नी इव ४,२०,३; १५३५ धनानां सनये आजिं जयेम ।
श्वघ्नी इव निवताचरन् ८,४५,३८; ४८० एवारे वृषभा ।

सत्पतिः इव १,१३०,१; १०११ इन्द्र विदथानि आ याहि।
सद्मो न भूम ४,१७,४; १४९१ य ईम् जजान अनपच्युतम्।
सद्म इव मानैः २,१५,३; ११६४ इन्द्रः प्राचः वि मिमाय।
सपत्नीः इव १०,३३,२; २५३९ पर्शवः माम् अभितः ।

ससिम् इव १,६१,५; ८६० अस्मै श्रवस्या जुह्वा समञ्जे ।
सखी इव आदने ६,५९,३; ३०४८ ओकिवांसा सुते सचा ।
समना इव केतुः १,१०३,१; ८३९ अस्य अन्यत् इदम् ।
समना इव वपुष्यतः ८,६२,९; ५७४ कृणवन् मानुषा युगा ।
समुद्रः न १,३०,३; ७०१ अस्य उदरे व्यचः दधे ।
समुद्रः इव १,८,७; ४४ अस्य सूनृता दाशुषे ।
समुद्रः इव ८,३,४; १५९ सहस्कृतः अयं पप्रथे ।
" " ८,१२,५; २९२ पिन्वते इमं जुषस्व ।
समुद्रं न सिन्धवः ६,३६,३; २०३३ उक्थ शुष्मा गिरः ।
समुद्रम् इव सिन्धवः ८,६,३५; २७६ उक्थानि इन्द्रं ।
" " " ८,९२,२२, २४१८ त्वा इन्दवः ।
समुद्रं न स्रवतः ३,४६,४; १४१२ सोमासः इन्द्रं आविशन्ति ।
समुद्रं न सुभ्वः स्वाः १,५२,४;७६३ सद्म बर्हिषः दिवि यम् ।
समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः १,५६,२; ८०६ गूर्तयः परीणसः ।
समुद्राय इव सिन्धवः ८,६,४; २४६ अस्य मन्यवे विशः ।
समुद्रे न सिन्धवः ६,१९,५; १८७५ अस्मिन् पथ्याः रायः ।
सरः न ८,१,२३; १०९ सोमेभिः उरु स्फिरं आ प्रासि ।
ससताम् इव १,५३,१; ७७५ इन्द्रः नू चित् रत्नं अविदत् ।
सहवत्सा न धेनुः १,३२,९; ७२३ उत्तरा सूः अधरः पुत्रः ।
सिंहः न १,१७४,३; १०७१ अपांसि वस्तोः रक्षः ।
सिंहः न ४,१६,१४; १४८० आयुधानि बिभ्रत् भीमः त्वम् ।
सिन्धवः न २,११,१; ११०१ वसूयवः त्वाम् ऊर्जः ।
सिन्धुं यथा आपः अभितः १,८३,१; ९३१ भवीयसा वसुना ।
सिन्धून् इव प्रवणे ६,४६,१४; २१०३ आशुया यतः यदि ।
सिन्धौ इव नावम् १०,११६,९; २७६३ [अहम् इन्द्राग्नी] ।
सीराः न स्रवन्तीः १,१७४,९; १०७७ धुनिः त्वं धुनिमतीः ।
" " ६,२०,२; १८९५ " "
सुतेषु यथा १,१०,५; ६२ तथा नः सख्येषु सुतेषु च ।
सुदुघाम् इव गोदुहे १,४,१; ४ सुरूपकृत्नं ऊतये जुहूमसि ।
सुदुघाम् इव गोदुहः ८,५२,४; ५१८ तं त्वा वयम् ।
सुदृशी इव पुष्टिः ४,१६,१५; १४८१ रण्वः (भवसि) ।
सुयतः न अर्वा ७,२२,१; २१७१ सोतुः बाहुभ्यां यं ते ।
सूनुभिः न १,१००,५; ९६१ रुद्रेभिः ऋभ्वास इन्द्रः ।
सूरिः न धातवे अजाम् ८,७०,१५;२३३५ मघवा वत्सं नः ।
सूर्यः न २,११,२०; ११२० इन्द्रः चक्रं अवर्तयत् ।
" " ८,१२,७; २९४ इन्द्रः रोदसी अवर्धयत् ।

सूर्यः इव ८,६,१०; २५२ अहम् अजनि ।
सूर्यः रश्मिम् यथा ८,३२,२३; २०२ तथा मे गिरः त्वा ।
सूर्यम् इव दिवि ५,२७,६, ३०३९ शतदाम्नि अश्वमेधे ।
सूर्यस्य इव १,१००,२; ९५८ इन्द्रस्य यामः अनाशुः ।
" " १०,४८,३; २५८१ मम अनीकं दुस्तरम् ।
सूर्याः इव ८,३,१६; १७१ भृगवः स्तोमेभिः महयन्ते ।
" " ८,३४,१७; ४४१ रघुष्यदः भ्राजन्ते ।
सृण्यः न जेता ४,२०,५; १५३७ यः ऋषिभिः विरप्शे ।
सेक्ता इव कोशम् ३,३२,१५; ११९६ सिसिचे पिबध्यै ।
सोमः न पीतः ८,९६,२१; २३६३ नर्या अपांसि कृण्वन् ।
सोमः न पृष्ठे पर्वतस्य ५,३६,२; १७४५ ते हनू शिप्रे ।
स्कन्धांसि इव कुलिशेन १,३२,५, ७१९ इन्द्रः वज्रेण वृत्रं ।
स्तनं न मध्वः १,१६९,४; १०४६ त्वां वाजैः पीपयन्त ।
स्तर्यः न गावः ७,२३,४; २१८३ आपः चित् पिप्युः ।
स्थिरा इव धन्वनः १०,११६,६; २७६० अभिमातीः ओजः ।
स्थूरं न कच्चित् ८,२१,१; ४०९ वयं त्वां वाजे चित्रं ।
स्नाव्ना इव धनुः । अथ० ७,५०,९; २९११ कृतस्य धारया ।
स्त्रक्ती इव वंसगः ८,३३,२; २११ सुतं तृषाणः ओकः ।
स्वर् न ४,२३,६; १५७१ गोः चित्रतमं वपुः आ इषे ।
स्वर् न ६,२९,३; १९६४ दृशे कं नृतो इषिरः बभूथ ।
स्वर् न १०,४३,९; २५६५ शुक्रं शुशुचीत सत्पतिः ।
स्वर् न । अथ० २.५,२;२८६४ उप त्वा मदाः सुवाचः अगुः ।
स्वर् न । साम० ९५३;२९९८ उप त्वा मदाः सुवाचः अस्थुः ।
स्वर् मीळ्हे न च ४,१६,१५; १४८१ तवने चकानाः ।
स्वानः न अर्वा १,१०४,१; ८४७ तम् (योनिम्) ।
स्वेदाः इव १०,१३४,५; २७८९ दिद्यवः विष्वक् अभितः ।
हंसाः इव ३,५३,१०; १४६२ हे कुशिकाः श्लोकं कृणुथ ।
हरितः न १,५७,३; ८१३ यस्य ज्योतिः श्रवसे अकारि ।
हरितः न सूर्यम् १,१३०,२; १०१२ त्वा (अश्वाः) आ ।
हर्म्यम् यथा इदं ७,५५,६; २२७५ तथा तेषां अक्षाणि ।
हव्यः न १,१२९,६; १००५ इषयान् मन्म रेजति ।
हिन्वानं न वाजयुम् ८,१,१९; १०५ शक्रः एनं विश्व ।
होता इव ८,१२,३३; ३२० पूर्व चित्तये प्राध्वरे ।
होता न अमृतः ४,४१,१; ३१४६ वां सुम्नम् कः स्तोमाः ।
ह्रदाः इव ३,३६,८; १३३० सोमधानाः कुक्षयः ।
ह्रदं न ऊर्मयः १,५२,७; ७६६ ब्रह्माणि त्वां न्यृण्वन्ति ।

दैवत-संहितान्तर्गत--

इन्द्रमन्त्राणां सूची ।

अकर्मा दस्युरभि २४७३
अकारि त इन्द्र गोतमेभि० ८९३
अक्षन्नमीमदन्त ९२६
अक्षाः फलवती ध्रुवं २९११
अक्षितोतिः सनेदिमं १२
अक्षेत्रवित् क्षेत्रविदं २५३६
अक्षोदयच्छवसा १५२५
अक्षो न चक्र्योः १९३०
अगच्छदु विप्रतमः ११६६
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद् १३४३
अगव्यूति क्षेत्रमागन्म ३३२७
अगोरुधाय गविषे १८०९
अग्न इन्द्रश्च दाशुषे ३१३१
अग्निर्जज्ञे जुह्वा १२६१
अग्निर्न शुष्कं १८६५
अग्निर्मूर्धा दिवः २९३०
अङ्गान्यात्मन् भिषजा २९५१
अच्छा कविं नृमणो १४७५
अच्छा च त्वैना नमसा ४१४
अच्छा म इन्द्रं मतयः २५५७
अच्छा यो गन्ता नाधमान १६०७
अच्छिन्नस्य ते देव २९२४
अजा अन्यस्य वह्नयो ३३३२
अजातशत्रुमजरा १७२७
अजा वृत इन्द्र १०७१
अजिरासो हरयो ४९१
अजैषं त्वा संलिखितम् २९०९
अतः समुद्रमुद्वताश्चिकित्वाँ २७१
अतश्चिदिन्द्र ण उपा २४०६
अति वायो ससतो याहि ३२१८
अतिविद्धा विथुरेणा २३४६
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां ७२४
अतीदु शक्र ओहत २३१६
अतीहि मन्युषाविणं २००
अतृष्णुवन्तं वियतमबुध्य० १५२४
अत्रा वि नेमिरेषामुरां ४२७
अत्राह गोरमन्वत ९५१
अत्राह तद् वहेथे ३२१९
अत्राह ते हरिवस्ता १५६१
अत्रिवद्वः क्रिमयो २८८३
अत्रीणां स्तोममद्रिवो १७७४
अत्रेदु मे मंससे २५००
अथा ते अन्तमानां ६
अदद्रा अर्भां महते ७५७
अदर्दरुत्समसृजो १७०५
अदेदिष्ट वृत्रहा १२८०
अद्धीदिन्द्र प्रस्थितेमा २७६१
अद्या चिन्नू चित् १९७०
अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र ५६४
अद्या मुरीय यदि ३२९१
अद्येदु प्राणीदम० २५३७
अद्रिणा ते मन्दिनः २५२४
अद्रोघ सत्यं तव १२९०
अधः पश्यस्व मोपरि २२८
अध क्त्वा मघवन् १६७१
अध ग्मन्तोशना पृच्छते २४७१
अध ज्मो अध वा दिवो १०४
अध ते विश्वमनु ८१२
अध त्वष्टा ते मह १८५०
अध त्वा विश्वे पुर १८४८
अध त्विषीमाँ १२१४
अध द्यौश्चित् ते १८४९
अध द्रप्सो अंशुमत्या ३३२६
अध प्रियमिषिराय १८३७
अध यच्चारथे गणे १८३९
अध श्रुतं कवषं २१३०
अध स्मा ते चर्षणयो १९४४
अध स्मा नो वृधे २१००
अध स्मा योषणा १८४०
अधाकृणोः पृथिवीं ११४१
अधाकृणोः प्रथमं ११८३
अधा ते अप्रतिष्कुतं २४४१
अधा मन्ये बृहदसुर्यम् १९६९
अधा मन्ये श्रत् ते ८५३
अधा यो विश्वा ११८४
अधा हीन्द्र गिर्वणः २३७०
अधि द्वयोरदधा ९३३
अधि यस्तस्थौ केशवन्ता २७१८
अधि सानौ नि जिघ्नते ९०५
अध्वर्यवः कर्तना ११५८
अध्वर्यवः पयसोधर्यथा ११५९
अध्वर्यवा तुहि षिञ्च २०३
अध्वर्यवो भरतेन्द्राय ११५०
उध्वर्यवो य उरणं ११५३
अध्वर्यवो यः शतं ११५५
अध्वर्यवो यः शतमा ११५६
अध्वर्यवो यः स्वश्नं ११५४
अध्वर्यवो यच्नरः ११५७
अध्वर्यवो यो अपो ११५१
अध्वर्यवो यो दिव्यस्य ११६०
अध्वर्यवो यो दृभीकं ११५२
अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं २२७९
अध्वर्यो अद्रिभिः २९५४
अध्वर्यो द्रावया त्वं २३९
अध्वर्यो वीर प्र २०४८
अनर्शरातिं वसुदामुप २३७९
अनवस्ते रथमश्वाय १६९६
अनाधृष्टानि धृषितो २७९५
अनानुदो वृषभो ११९०

अनुकामं तर्पयेथाम् ३११६
अनु कृष्णे वसुधिती १२७६
अनु ते दायि मह इन्द्रियाय १९४५
अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः २३८१
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु २९७०
अनुत्तमा ते मघवन् ३२५८
अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणं ६३८
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं २८०
अनु त्वाहिघ्ने अध देव १८६९
अनु द्यावापृथिवी १८७०
अनु द्वा जहिता नयो १६२४
अनु प्रत्नस्यौकसः प्रिय० २३२०
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे ७०७
अनु प्र येजे जन ओजो २०३१
अनु यदीं मरुतो १६६८
अनुव्रताय रन्धयन् ७५३
अनुस्पष्टो भवत्येषो २८२७
अनु स्वधामक्षरन्नापो ७४०
अनेहसं वो हवमानमूतये ४९८
अनेहसं प्रतरणं ४८८
अन्धा अमित्रा भवता ३००१
अन्यद्द्य कर्वरमन्यदु १९३२
अन्यव्रतममानुषम् २३३१
अन्वपां खान्यतृन्तम् ३१७४
अन्वह मासा अन्विद्वनानि २६७४
अन्वेको वदति यद् ११३९
अप प्राच इन्द्र विश्वाँ २७७३
अप योरिन्द्रः पापज २७१६
अपश्चिदेष विभ्वो १२७५
अपश्यं ग्रामं वहमानम् २५०९
अपाः सोममस्तमिन्द्र १४५८
अपादहस्तो अपृतन्यद् ७२१
अपादित उदु १९७८
अपादिन्द्रो अपादग्निः २३१४
अपादु शिप्र्यन्धसः २४००
अपाधमदभिशस्तीः २३८५
अपामतिष्ठद्धरुणह्वरं ७९५
अपामूर्मिर्मदन्निव ३६३
अपां फेनेन नमुचेः ३६६
अपाय्यस्यान्धसो मदाय ११९९
अपिबत् कद्रुवः सुतम् ४६८
अपि वृश्च पुराणवद् ३१०६
अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै २०११
अपेन्द्र द्विषतो मनो २८१८
अपो महीरभिशस्तेः २७११
अपो यदद्रिं पुरुहूत १४७४
अपो वृत्रं वव्रिवांसं १४७३
अपोषा अनसः सरत् ३३४३
अप्तूर्ये मरुत आपिरेषो १४४१
अप्रक्षितं वसु बिभर्षि ८०४
अप्रामिसत्य मघवन् ५५१
अप्सु धूतस्य हरिवः ७०४
अभि कण्वा अनूषत ९७६
अभि क्रत्वेन्द्र भूरध २१६६
अभिख्या नो मघवन् २७४४
अभि गन्धर्वमतृणद् ६४४
अभि गोत्राणि सहसा २६९७
अभि जैत्रीरसचन्त १२६३
अभि तष्टेव दीधया १३४५
अभि त्यं मेषं पुरुहूतम् ७४५
अभि त्वा गोतमा गिरा १६५३
अभि त्वा पाजो रक्षसो १९०३
अभि त्वा पूर्वपीतय १६१
अभि त्वा वृषभा सुते ४६४
अभि त्वा शूर नोनुमो २२५६
अभि द्यां महिना भुवम् २८५७
अभि द्युम्नानि वनिन १३७०
अभि प्र गोपतिं गिरा २३०७
अभि प्र दद्रुर्जनयो १५१६
अभि प्र भर धृषता २३८७
अभि प्र वः सुराधसम् ४८५
अभिभुवेऽभिभङ्गाय ११९८
अभि वह्नय ऊतये ३०१
अभि वो वीरमन्धसो १८३०
अभि व्रजं न तत्निषे २६७
अभिव्लग्या चिदद्रिवः १०३५
अभिष्टने ते अद्रिवो ९१३
अभिष्टये सदावृधं २२९५
अभि सिध्मो अजिगादस्य ७४२
अभि स्वरन्तु ये तव ३४८
अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य ७६४
अभि हि सत्य सोमपा २३६८
अभीदमेकमेको २५८१
अभी न आ ववृत्स्व १६३३
अभी नवन्वन्तस्वभिष्टिमूतयो ७४६
अभी षतस्तदा भरेन्द्र २१५८
अभी षु णः सखीनाम् १६३१
अभी षु णस्त्वं रयिं २४५०
अभूरु वीर गिर्वणो २०७१
अभूरेको रयिपते २००६
अभूर्वौक्षीर्व्यु आयुरानड् २४९७
अभ्यर्च नभाकवद् ३१०४
अभ्रातृव्यो अना त्वम् ४२१
अमन्दन्मा मरुतः ३२६०
अमन्महीदनाशवो १००
अमाजूरिव पित्रोः ११८७
अमीषां चित्तं प्रति २९३३
अम्यक् सा त इन्द्रः १०४५
अयं यज्ञो देवया १०२४
अयं यो वज्रः पुरुधा २५११
अयं रोचयदरुचो १९८६
अयं वां परि षिच्यते ३३१८
अयं वृतश्चातयते १४९६
अयं शृण्वे अध १४९७
अयं सहस्रमृषिभिः १५९
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं २११३
अयं सोमश्चमू सुतो ३२३०
अयं ह येन वा इदं ६३१
अयं हि ते अमर्त्य २७९८
अयं चक्रमिषणत् १५०१
अयं त इन्द्र सोमो ४०४
अयं त एमि तन्वा ९९१
अयं ते अस्तु हर्यतः १३९९
अयं ते मानुषे जने ५९८
अयं ते शर्यणावति ५९९
अयं ते स्तोमो अग्रियो ८४
अयं दशस्यन्नर्येभिरस्य २६८९

अयं दीर्घाय चक्षसे ३५०
अयं देवः सहसा २०५७
अयं द्यावापृथिवी २०५९
अयं द्योतयदद्युतो १९८५
अयमकृणोदुषसः २०५८
अयमस्मासु काव्यः २७९९
अयमस्मि जरितः ९९४
अयमिन्द्र वृषाकपिः २६५७
अयमिन्द्रो मरुत्सखा ६२९
अयमु ते समतसि ७०२
अयमु त्वा विचर्षणे ४००
अयमु वां पुरुतमो ३१४४
अयमुशानः पर्यद्रिमुस्रा १९८४
अयमेमि विचाकशद् २६५८
अयं पन्था अनुवित्तः १५०९
अया धिया च गव्यया २४४६
अयाम धीवतो धियो २४०७
अयामि घोष इन्द्र २१८१
अया वाजं देवहितं १८५५
अया ह त्यं मायया १९१२
अयुजो असमो नृभिरेकः ५६७
अयुज्रन्त इन्द्र १०४४
अयुद्ध इद् युधा ४४५
अयुद्धसेनो विभ्वा २७९६
अयुयुत्सन्ननवद्यस्य ७३५
अयोद्धेव दुर्मद ७२०
अरं हि ष्मा सुतेषु २४२२
अरं कृण्वन्तु वेदिं १०५४
अरं क्षयाय नो महे ३८१
अरं त इंद्र कुक्षये २४९०
अरं त इन्द्र श्रवसे २९७७
अरमयः सरपस ११४८
अरमश्वाय गायति २४२१
अरं म उस्रयाम्णे ३३४९
अरोरवीद् वृष्णो ११२०
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो २३११
अर्चद् वृषा वृषभिः १०५७
अर्चन्त्यर्कं मरुतः २९८८
अर्चा दिवे बृहते ७८८
अर्चा शक्राय शाकिने ७८७
अर्णांसि चित् पप्रथाना २१२३
अर्धं वीरस्य शृतपाम् २१३४
अर्भको न कुमारको २३१७
अर्यो वा गिरो अभ्यर्च २८११
अर्वन्तो न श्रवसो ३२३५; ३२४०
अर्वाग्रथं विश्ववारं १९७३
अर्वाङेहि सोमकामं ८५५
अर्वाङ् नरा दैव्येनावसा ३१७९
अर्वाचीनं सु ते १३३५
अर्वाचीनो वसो १६५८
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत २०९; २८७
अर्वाञ्चं त्वा सुखे १३८१
अर्वावतो न आ गहि १३७१
अर्वावतो न आ गह्यथो १३४४
अलातृणो वल १२४७
अवंशे द्यामस्तभायद् ११६३
अवक्रक्षिणं वृषभं ८८
अव क्षिप दिवो १२३१
अव चष्ट ऋचीषमो ५७१
अव त्मना भरते ८४९
अव त्या बृहतीरिषो २७८७
अव त्वे इन्द्र प्रवतो २११२
अवद्यमिव मन्यमाना १५१३
अव द्रप्सो अंशुमती २३५७
अव नो वृजिना २७२१
अव यत् त्वं शतक्रतविन्द्र २७८८
अवर्त्या शुन आन्त्राणि १५२१
अवर्मह इन्द्र दादृहि १०३९
अवसृष्टा परा पत २९३४
अव स्म दुर्हणायतो २७८६
अव स्य शूराध्वनो १४६८
अव स्वराति गर्गरो २३१२
अव स्वेदा इवाभितो २७८९
अवाचचक्षं पदमस्य १६८३
अवा नु कं ज्यायान् २६०५
अवा नो वाजयुं रथं ६६६
अवासां मघवञ्जहि १०३६
अवासृजः प्रस्वः २७९३
अवासृजन्त जिव्रयो १५१३
अवितासि सुन्वतो १७६९
अविदद् दक्षं २०४१
अविन्दद् दिवो १०१३
अविप्रे चिद् वयो २०६१
अविप्रो वा यदविधद्विप्रो ५५६
अविर्न मेषो नसि २९४८
अवीरामिव मामयं २६४८
अवीवृधन्त गोतमा १६५६
अवोचाम महते ३२०६
अश्रवं हि भूरिदावत्तरा ३०२२
अश्वादियायेति २६३२
अश्वायन्तो गव्यन्तो २८२८
अश्वावति प्रथमो ९३१
अश्वावन्तं रथिनं २८४६
अश्विना गोभिरिन्द्रियं २९५७
अश्विना तेजसा २९६२
अश्विना पिबतां २९६३
अश्विभ्यां चक्षुरमृतं २९४७
अश्वी रथी सुरूप इत् २३७
अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र ६२६
अश्व्यस्य त्मना ३१५५
अषाळ्हमुग्रं पृतनासु २३२४
असत् सु मे जरितः २४९१
असमं क्षत्रमसमा ७९३
असाम यथा सुषखाय १०६४
असावि देवं गोऋजीकं २१६१
असावि सोम इन्द्र ९३७
असावि सोमः पुरुहूत २७०३
असिक्न्यां यजमानो १५०२
असि हि वीर सेन्यो ९१७
असुन्वन्तं समं १०८८
असुन्वामिन्द्र संसदं ३६८
असूत पूर्वो वृषभो १३४९
असौ च या न १७८८
असौ य एषि वीरको १७८४
अस्रमिन्द्र ते ५१
अस्तावि मन्म पूर्व्यं ५२३
अस्तेव सु प्रतरं २५४६

अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र २७८४
अस्मभ्यं तद् वसो ११४९;११६१
अस्मभ्यं तौं अपा १६४२
अस्माअस्मा इदन्धसो २००१
अस्मा इत् काव्यं १७६४
अस्मा इदु ग्नाश्चिद् ८६३
अस्मा इदु त्यदनु ८७०
अस्मा इदु त्यमुपमं ८५८
अस्मा इदु त्वष्टा ८६१
अस्मा इदु प्र तवसे ८५६
अस्मा इदु प्र भरा ८६७
अस्मा इदु प्रय इव ८५७
अस्मा इदु सप्तिमिव ८६०
अस्मा इदु स्तोमं ८५९
अस्मा उषास आतिरन्त २३४५
अस्मा एतद् दिव्य१र्चेव २०२४
अस्मा एतन्मह्याङ्गूषं २०२५
अस्माकं व इन्द्रम् १००३
अस्माकं शिप्रिणीनां ७०९
अस्माकं सु रथं पुर ४५१
अस्माकं त्वा मतीनाम् १६५९
अस्माकं त्वा सुतौं २८४
अस्माकं धृष्णुया १६४३
अस्माकमत्र पितरः ३१५८
अस्माकमद्यान्तमं २२४
अस्माकमित्सु शृणुहि १५६४
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु २७०१
अस्माकमिन्द्र भूतु २०८९
अस्माकमिन्द्र दुष्टरं १७४२
अस्माकमिन्द्रावरुणा ३१८०
अस्माकमिन्द्रेहि १७४३
अस्माकमुत्तमं कृधि १६४४
अस्माकेभिः सत्वभिः १२३४
अस्मादहं तविषा० ३२६६
अस्माँ अवन्तु ते १६३९
अस्माँ अविड्ढि विश्वहेन्द्र १६४१
अस्माँ इहा वृणीष्व १६४०
अस्मान्त्सु तत्र चोदय ५३
अस्मिन् न इन्द्र पृत्सुतौ २५४१
अस्मे इन्द्र सचा सुते ९८३
अस्मे इन्द्राबृहस्पती ३३२०
अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववारं ३१९५
अस्मे इन्द्रो वरुणो ३१८१;३१९१
अस्मे तदिन्द्रावरुणा ३१४५
अस्मे ता त इन्द्र २४७८
अस्मे धेहि श्रवो बृहद् ५५
अस्मे प्र यन्धि मघवन् १३३२
अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि १५६३
अस्मै भीमाय नमसा ८६२
अस्मै वयं यद् १२२२
अस्य त्रितः क्रतुना २४६६
अस्य पिब क्षुमतः २७५६
अस्य पिब यस्य १९८९
अस्य पीत्वा मदानां २४०२
अस्य पीत्वा शतक्रतो ११
अस्य मदे पुरु २०४५
अस्य मन्दानो मध्वो १२००
अस्य वृष्णो व्योदन ५८६
अस्य श्रवो नद्यः ८९९
अस्य सुवानस्य ११२०
अस्य स्तोमेभिरौशिजः २६९०
अस्येदिन्द्रो वावृधे १६६२
अस्येदु त्वेषसा ८६६
अस्येदु प्र ब्रूहि ८६८
अस्येदु भिया गिरयश्च ८६९
अस्येदु मातुः सवनेषु ८६२
अस्येदेव प्र रिरिचे ८६४
अस्येदेव शवसा ८६५
अस्येन्द्र कुमारस्य २८७५
अस्वापयद् दभीतये १६२६
अहं रन्धयं मृगयं २५९४
अहं सप्त स्रवतो २५९८
अहं सप्तहा नहुषो २५९७
अहं स यो नववास्त्वं २५९५
अहं सूर्यस्य परि २५९६
अहं हि ते हरिवो ५३१
अहं गुङ्गुभ्यो अतिथिग्वं २५८६
अहं च त्वं च वृत्रहन् ५७६
अहं चन तत् सूरिभि १९५३
अहं तदासु धारयं २५९९
अहं तष्टेव वन्धुरं २८५४
अहं दां गृणते २५९०
अहन्नहिं परिशयानम् १२९१
अहन्नहिं पर्वते ७१६
अहन्निन्द्रो अदहदग्निः १६०१
अहन् वृत्रं वृत्रतरं ७१९
अहन् वृत्रमृचीषम २०५
अहमत्कं कवये २५९२
अहमस्मि महामहो २८६१
अहमिद्धि पितुष्परि २५२
अहमिन्द्रो न परा २५८३
अहमिन्द्रो रोधो २५८०
अहमेतं गव्ययमश्व्यं २५८२
अहमेताञ्छाश्वसतो २५८४
अहं पिप्रं वनसू २५९३
अहं पुरो मन्दसानो २५९८
अहं प्रत्नेन मन्मना २५३
अहं भुवं वसुनः २५७९
अहं भूमिमददामार्याय २५९७
अहं मनुरभवं सूर्यश्चाहं० २५९६
अहस्ता यदपदी २४७९
अहा यदिन्द्र सुदिना २२२०
अहितेन चिदर्वता ५६८
अहेळता मनसा श्रुष्टिं ३३५२
अहेळमान उप याहि १९९३
अह्यीनारं कमपश्य ७२८
आके रमोर्जरिता १४३६
आ क्षोदो महि वृतं १८५२
आगच्छत आगतस्य २८९९
आ घ त्वावान् त्मना ७१२
आ घा गमद्यदि श्रवत् ७०६
आ घा ये अग्निमिन्धते ४४२
आ च त्वामेता वृषणा १३९४
आ चन त्वा चिकित्सामो १७८५
आ चर्षणिप्रा वृषभो २०९१
आ जनाय द्रुह्वणे १९१४
आजितुरं सत्पतिं ५३०
आजिपते नृपते ५३६
आ त इंद्र महिमानं ६०४

आ त एता वचोयुजा ४८१
आ तन् त इन्द्रायवः २६३७
आतन्वाना आयच्छंतो २८९१
आतिष्ठन्तं परि विश्वे १३४८
आ तिष्ठ रथं वृषणं १०९३
आ तिष्ठ वृत्रहन् ९३९
आ तू गहि प्र तु ३३४
आ तू न इंद्र कौशिक ६८
आ तू न इंद्र क्षुमन्तं ६७०
आ तू न इंद्रमद्र्यग् १३७३
आ तू न इंद्र वृत्रहन १६४५
आ तू भर माकिरेतत् १३३१
आ तू सुशिप्र दंपते २३१८
आ तू षिञ्च कण्वमंतं १३७
आ ते दक्षं वि रोचना २४५५
आ ते दक्षामीन्द्रियम् २४५६
आ ते मह इंद्रोत्युग्र २१९२
आ ते वृषन् वृषणो २०५५
आ तेऽयो वरेण्यं १७३८
आ ते शुष्मो वृषभ १८७९
आ ते सपूर्यं जवसे १४३०
आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योरनु ३०८
आ ते हनू हरिवः १७४५
आत्मन्नुपस्थेन २९५०
आत्मा पितुस्तनूर्वास १७९
आ त्वाद्य सबर्दुघां १०२
आ त्वाद्य सबर्दुघां ९६
आ त्वशत्रवा गहि ६८२
आ त्वा कण्वा इहावसे ४२८
आ त्वा गिरो रथीरिव २३५६
आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं ६०३
आ त्वा गोभिरिव १७९५
आ त्वा ग्रावा वदन्निह ४२६
आ त्वा बृहंतो हरयो १३९६
आ त्वा ब्रह्मयुजा ३९५
आ त्वा मदच्युता ४३३
आ त्वा रथं यथोतये २२९१
आ त्वा रथे हिरण्यये १११
आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ४६२
आ त्वा वहन्तु हरयो ७८
आ त्वा विशन्तु सुतास २८६६
आ त्वा विशन्त्वाशवः २०
आ त्वा विशन्त्विन्दवः २४१८
आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः २३३७
आ त्वा सहस्रमा ११०
आ त्वा सुतास इन्दवो ४८७
आ त्वा हरयो वृषणो २०५४
आ त्वा होता मनुर्हितो ४३२
आ त्वेता नि षीदत १४
आदङ्गिराः प्रथमं ९३४
आ दस्युघ्ना मनसा १४७६
आदानेन संदानेन ३१२८
आदित् ते अस्य १०२५
आदित् प्रत्नस्य रेतसो २७२
आदित्यानां वसूनां २५८९
आदित् साप्तस्य ५४३
आदित्थ नेम इंद्रियं १५८१
आदिन्द्रः सत्रा तविषी २७४९
आदीं शवस्यब्रवीद् ६४१
आदु मे निवरो २४४४
आद् नु ते अनुक्रतुं ५८१
आद् रोदसी वितरं १६७०
आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र ११९३
आ द्विबर्हा अमिनो २७५८
आध्रेण चित् तद्वेकं २१३५
आ न इन्द्र पृक्षसे २४७२
आ न इन्द्र महीमिषं २६५
आ न इन्द्राबृहस्पती ३३१९
आ न इन्द्रो दूरादा १५३३
आ न इन्द्रो हरिभिः १५३४
आ नः सहस्रशो ४३९
आ नस्तुजं रयिं १४०७
आ नस्ते गन्तु १०८०
आ नः स्तुत उप १६०४
आ नः स्तोममुप ४८९
आ निरेकमुत १७९३
आ नो गव्यान्यश्व्या ४३८
आ नो गव्येभिः ३०६९
आ नो गोत्रा दर्दृहि ११५८
आ नो दिव आ पृथिव्या २१८८
आ नो देव शवसा २२१८
आ नो बृहन्ता ३१५६
आ नो भर दक्षिणेनाऽभि ६७५
आ नो भर भगमिन्द्र ११५६
आ नो भर वृषणं १८७८
आ नो भर व्यञ्जनं ६५२
आ नो यज्ञं नमोवृधं १३९३
आ नो याहि परावतो २७८
आ नो याहि महेमते ४३१
आ नो याहि सुतावतो ३९७
आ नो याह्युपश्रुत्युक्थेषु ४३५
आ नो विश्वाभिरूतिभिः २१८९
आ नो विश्वासु हव्य २३९१
आ नो विश्वेषां ५२७
आन्त्राणि स्थालीर्मधु २९४४
आ पक्थासो भलानसो २१२५
आ पप्राथ महिना २३२६
आ पप्रौ पार्थिवं रजो ९२०
आपश्चित् पिप्युः स्तर्यो २१८३
आपश्चिद्धि स्वयशसः ३१९९
आपान्तमन्युः ३२७६
आपूर्णो अस्य कलशः ११९६
आपो न देवीरुप ९३२
आपो न सिंधुमभि २५६३
आ प्र द्रव परावतो ६७९
आ प्र द्रव हरिवो १६९४
आ बुन्दं वृत्रहा ४४६
आ भरतं शिक्षतं ३०२७
आभिः स्पृधो मिथतीः १९३९
आ मध्वो अस्मा २५२१
आ मन्द्रैरिन्द्र १४०४
आमासु पक्वमैरय २३९०
आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः २९६७; ३३६२
आ यः सोमेन जठरम् १७२८
आयं जना अभिचक्षे १७०३
आ यत् पतन्त्येन्यः २३१३
आ यदिन्द्रश्च दद्वहे ४४०
आ यद् दुवः शतक्रतवा ७१३
आ यद् दुवस्याद् ३२६३

आ यद्धरी इन्द्र	८८६
आ यद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र	२३४९
आयन्तारं महि स्थिरं	१९३
आ यन्मा वेना	९९५
आ यं पृणन्ति दिवि	७६३
आ यस्मिन् हस्ते नर्या	१९६३
आ यस्य ते महिमानं	१८१९
आ यात्विन्द्रः स्वपतिः	२५६८
आ यात्विन्द्रो दिव आ	१५४६
आ यात्विन्द्रोऽवस	१५४४
आ याहि कृणवाम	५६९
आ याहि पर्वतेभ्यः	४३७
आ याहि पूर्वीरति	१३९२
आ याहि शश्वदुशता	१९९१
आ याहि सुषुमाहि	३९४
आ याहीम इंदवो	४११
आ याह्यद्रिभिः सुतं	१७६५
आ याह्ययं आ परि	४३४
आ याह्यर्वाङुप	१३९१
आराच्छत्रुमप बाधस्व	२५५२
आ रोदसी अपृणादोत	२६१६
आर्चन्नत्र मरुतः	७७४
आ व इंद्रं क्रिविं	६९९
आ वः कुत्समिन्द्र	७४३
आ वः शमं वृषभं	७४४
आवदिन्द्रं यमुना	२१३७
आ वां रथो नियुत्वान्	३२१५
आ वां राजानावध्वरे	३१९२
आ वां सहस्रं हरय	३२२२
आ वां धियो ववृत्युः	३२१६
आ वामश्वासो अभिमातिषाह	३३०९
आ विंशत्या त्रिंशता	११९४
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः	३०५८
आ वृषस्व पुरूवसो	५५०
आ वृषस्व महामह	१७९९
आवो यस्य द्विबर्हसो	१०८९
आशीत्या नवत्या	११९५
आशुः शिशानो वृषभो	२६९२
आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवं	६६
आ संयतमिंद्र	१९१६
आ सत्यो यातु मघवाँ	१४६७
आसस्त्राणासः शवसानम्	१९७५
आ सहस्रं पथिभिरिंद्र	१८६६
आसु ष्मा णो मघवन्निंद्र	२०५३
आ स्मा रथं वृषपाणेषु	७५६
आहं सरस्वतीवत्	३१००
आ हरयः ससृज्रिरे	२३०८
आहार्षं त्वाविदं त्वा	३११७
आ हि ष्मा याति	१६०५
इच्छन्ति त्वा सोम्यासः	१२३८
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं	१३३
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः	९५०
इत ऊती वो अजरं	२३८२
इति चिद्धि त्वा धना	२७६७
इति वा इति मे मनो	२८५०
इतो वा सातिमीमहे	२७
इत्था धीवन्तमद्रिवः	१५५
इत्था हि सोम इन्मदे	९००
इदं वसो सुतमन्धः	११६
इदं वामास्ये हविः	३३१७
इदं वां मदिरं मधु	३०९३
इदं सु मे जरितरा	२५२५
इदं हविर्मघवन्	२७६१
इदं ह्यन्वोजसा सुतं	१४४३
इदं ते पात्रं सनवित्त	२७४०
इदं ते सोम्यं मधु	६०८
इदं त्यत् पात्रम्	२०५१
इदं नमो वृषभाय	७५९
इदमादानमकरं	३१२९
इदा हि ते वेविषतः	१९०१
इनोत पृच्छ जनिमा	१३४६
इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिः	२६९८
इन्द्र आशाभ्यस्परि	१२३७
इन्द्र इन् सोमपा	११९
इन्द्र इद्धर्योः सचा	२९
इंद्र इन्द्रा महानां	२३९०
इंद्र इषे ददातु न	३३४४
इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो	२९७९
इंद्र ऋभुभिर्वाजवद्भिः	३३४१
इंद्र ऋभुभिर्वाजिभि	३३४३
इंद्र ऋभुमान् वाजवान्	३३४२
इन्द्र ओषधीरसना	१३१०
इन्द्रं वयं महाधन	३२
इन्द्रं वयमनूराधं	२९१५
इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर	३३६
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव	२२३४
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्	७०
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे	३०९; १३३८
इन्द्रं वो नरः सख्याय	१९६२
इन्द्रं वो विश्वतस्परि	३७
इन्द्रं सोमस्य पीतये	१३८५
इंद्रं स्तवा नृतमं यस्य	२३६३
इंद्रः किल श्रुत्या अस्य	२७२७
इंद्रः पूर्भिदातिरद्	१३०१
इंद्रः स दामने	२४३७
इन्द्रः समत्सु यजमानमार्यं	१०१८
इंद्रः सहस्रदाव्नां	३१३८
इंद्रः सुतेषु सोमेषु	३२१
इंद्रः सुत्रामा स्ववाँ	२११०; २७७६
इंद्रः सुत्रामा हृदयेन	२९४३
इंद्रः सुशिप्रो मघवा	१२४०
इंद्रः सूर्यस्य रश्मिभिः	२९६
इंद्रः स्पळुत वृत्रहा	५६२
इंद्रः स्वर्षा जनयन्	१३०४
इंद्रः स्वाहा पिबतु	१४२९
इंद्र क्रतुं न आ भर	२२६०
इंद्र क्रतुविदं सुतं	१३६५
इंद्र क्षत्रमभि वाममोजो	२८४१
इंद्र क्षप्रासमातिषु	२६२२
इंद्र गोमन्निहा याहि	२९६४
इंद्र गृणीष उ स्तुषे	६०५
इंद्र कामा वसूयन्तो	१४८१
इंद्र जठरं नव्यं	२९९८
इंद्र जठरं नव्यो	२८६४
इंद्र जहि पुमांसं यातुधान	३३०१
इंद्र जामय उत	१९४०
इंद्र जीव सूर्य जीव	३३६३
इंद्र ज्येष्ठं न आ भरॅ	२८६३; २९९७

इंद्र ज्येष्ठं न आ	२०९४	इन्द्र यथा ह्यस्ति	१७९८	इंद्राग्नी अव्यथमानाम्	३११८
इंद्र ज्येष्ठा समदृगा	३०४८	इन्द्र यस्ते नवीयसीं	२३४०	इन्द्राग्नी आ गतं	३०३०
इंद्र तुभ्यमिदद्रिवो	९०६	इन्द्र वाजेषु नोऽव	३१	इन्द्राग्नी आ हि तन्वते	३०५२
इंद्र तुभ्यमिन्मघवन्	२०४५	इन्द्रवायू अयं	३२२५	इन्द्राग्नी उक्थवाहसा	३०५५
इंद्र त्रिधातु शरणं	२०९८	इन्द्रवायू इमे सुता	३२१०	इन्द्राग्नी जरितुः	३०३१
इंद्र त्वयविंनदसीभ्या	३६६	इन्द्रवायू उभाविह	३२४४	इन्द्राग्नी तपन्ति	३०५३
इंद्र त्वा वृषभं वयं	१३६४	इन्द्रवायू मनोजुवा	३२१४	इन्द्राग्नी नवतिं	३०३७
इंद्र त्वोतास आ वयं	४०	इन्द्रवायू सुसंदृशा	३२४३	इन्द्राग्नी नवतिं	३०३५
इंद्र दृह्य यामकोशा	१०५२	इन्द्र शविष्ठ सत्पते	३३०	इन्द्राग्नी यमवथ	३०४०
इंद्र दृह्यस्व पूरसि	६६७	इन्द्र शुद्धो न आ	२३४३	इन्द्राग्नी युवं सु नः	३१०१
इंद्र नेदीय एदिहि	५२९	इन्द्र शुद्धो हि नो	२३४४	इन्द्राग्नी युवामिमे	३०६२
इंद्रं नं शुभ्र पुरुतमे	२३००	इन्द्रश्च मृळयाति नो	३२३६	इन्द्राग्नी युवोरपि	३०५४
इंद्रं नरो नेमधिता	२२०३	इन्द्रश्च वायवेषां	३२०७; ३२३१	इन्द्राग्नी रोचना	३०३८
इंद्र पिब तुभ्य	१९८८	इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च	३२०९	इन्द्राग्नी शतदाव्नि	३०३९
इंद्र पिब प्रतिकामं	२७३५	इन्द्रश्च सोमं पिबतं	३२२३; ३३२९	इन्द्राग्नी शृणुतं	३०७०
इन्द्र पिब वृषधूतस्य	१३९७	इन्द्रश्चिद् घा तदब्रवीत्	२२६	इन्द्राणीमासु नारिषु	२६५०
इन्द्र पिब स्वधया	१३०१	इन्द्र श्रुधि सु मे	६८४	इंद्रा नु पूषणा वयं	३३३०
इन्द्र प्र णः पुरएतेव	२२०५	इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि	१२२२	इन्द्रापर्वता बृहता	३३५६
इन्द्र प्र णो रितावानं	१३६६	इन्द्र सोमं सोमपते	१२८२	इन्द्राबृहस्पती वयं	३३२१
इन्द्र प्र णो …	६६४	इन्द्र सोममिमं पिब	२४८८	इन्द्राय गाव आशिरं	२३०९
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं	४०२	इन्द्र सोमाः सुता इमे	१६६७; १३८६	इन्द्राय गिरो अनिशित	२६६६
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा	१६८१	इन्द्रस्तुजो बर्हणा	१३०५	इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि	९४१
इन्द्रमग्निं कविच्छदा	३०३७	इंद्रस्नु पाणिमिता	२८३५, २२९९	इन्द्राय मद्वने सुतं	२४१५
इन्द्र मरुत्व इह	१४४०	इन्द्रस्य नाम वृषभा	२०१६	इन्द्राय साम गायत	२३६४
इन्द्रमित्था गिरो	१३४८	इन्द्र स्थातर्हरीणां	१८०६	इन्द्राय सु मदिन्तमं	१०५
इन्द्रमिद्गाथिनो	३६५	इन्द्रस्य कर्म सुकृता	१२८९	इन्द्राय सोमाः प्रदिवो	१३२४
इन्द्रमिद्धरी वहतो	२८	इन्द्रस्य नु वीर्याणि	७१५	इन्द्राय हि द्यौरसुरो	१०२१
इन्द्रमिद्देवतातय	६६०	इन्द्रस्य वा… स्थविरो	२९१४, ३०००	इन्द्रा याहि चित्रभानो	१
इन्द्रमिद्विमहीनां	९३८	इंद्रस्य मन्महे शश्वदिद्धि	२८६७	इन्द्रा याहि तूतुजान	३
इन्द्रमिन्द्र हिवीषवो	८८६	इन्द्रस्य रूपमुत्तमा	२२४९	इन्द्रा याहि धियेषितो	२
इन्द्रमीशानमोजसाभि	७७	इन्द्रस्य वज्र आयसो	२३४७	इंद्रा याहि वृत्रहन्	२९६५
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः	८६७	इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य	२६९९	इंद्रा युवं वरुणा	३१४९; ३१५०
इन्द्र मृळ …	११०८	इन्द्रस्य सधूर्…स्य	२३२२	इंद्रावरुण नू नु	३१४१
इन्द्रमेव धिषणा	१८७२	इन्द्रस्या इन्द्रो	८७४	इंद्रावरुणयोरहं	३१३४
इन्द्रं … समाय	१५९१	इन्द्रस्य नाभिवीर्यं	२७५०	इंद्रावरुण वामहं	३१४०
इन्द्रं प्रणेन मन्मना	६३३	इन्द्राकुत्सा वहमाना	३३५४	इंद्रावरुणा मधुमत्तमस्य	३१७१
इन्द्रं प्रातर्हवामहे	८०	इन्द्रा को वां वरुणा	३१४६	इंद्रावरुणा यदिमानि	३१७६
इन्द्रं मतिर्हृद आ	१३५५	इन्द्राग्नी अपसस्परि	३०३६	इंद्रावरुणा यदृषिभ्यो	३२०७
इन्द्र य उ नु ते अस्ति	६७४	इन्द्राग्नी अपादियं	३०५१	इंद्रावरुणा युवं	३१७२
		इन्द्राग्नी अवसा	३०८५		

इंद्रावरुणा वधनाभि ३१८५
इंद्रावरुणावभ्रा तपंति ३१८६
इंद्रावरुणा सुतपाविमं० ३१७७
इंद्रावरुणा सौमनसं ३२०८
इंद्राविष्णू तत् पनयाय्यं ३३१०
इन्द्राविष्णू दृंहिताः ३३१५
इंद्राविष्णू पिबतं ३३१२
इन्द्राविष्णू मदपती ३३०८
इंद्राविष्णू हविषा ३३११
इंद्रासोमा तपतं ३२७८
इन्द्रासोमा दुष्कृतो ३२८०
इंद्रासोमा पक्वमामासु ३२७४
इंद्रासोमा परि वां ३२८३
इंद्रासोमा महि ३२७१
इंद्रासोमा युवमङ्ग ३२७५
इंद्रासोमा वर्तयतं दिवो ३२८१
इंद्रासोमा वर्तयतं दिवस्परि ३२८२
इन्द्रासोमावहिमपः ३२७३
इंद्रासोमा वासयथ ३२७२
इन्द्रासोमा समघशंसं ३२७९
इंद्रा ह यो वरुणा ३१४७
इन्द्रा ह रत्नं वरुणा ३१४८
इंद्रियाणि शतक्रतो १३४२
इंद्रे अग्ना नमो ३०८२
इंद्रेण मन्युना २९१२
इंद्रेण रोचना दिवो ३६२
इंद्रेण सं हि दृक्षसे ३२४६
इंद्रेणैते तृत्सवो २१३३
इंद्रेमं प्रतरां नय २०,३५
इंद्रे विश्वानि वीर्या ५८३
इंद्रेहि मत्स्यंधसो ४८
इंद्रो अङ्ग महद् १२३५
इंद्रो अश्वाग्नि ७५८
इंद्रो अस्माँ अरदद् १२०९
इंद्रो जयाति न परा २१०२
इंद्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो २९०५
इंद्रो दधीचो अस्थभिः ९४९
इंद्रो दिव इन्द्र ईशे २६७१
इंद्रो दिवः प्रतिमानं २७१९
इंद्रो दीर्घाय चक्षस ३०
इंद्रो ब्रह्मा बाह्मणात् २९१७
इंद्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरिंद्रः ३८८
इन्द्रो मदाय वावृधे ९१६
इन्द्रो मधु संभृतमुस्रियायां १३६०
इन्द्रो महां सिन्धुमाशयं ११०९
इन्द्रो मह्ना महतो २७२८
इन्द्रो मह्ना रोदसी १६१
इन्द्रो यज्वने पृणते ३३५१
इन्द्रो यातूनामभवत् २२८९; ३२२८
इन्द्रो यातोऽवसितस्य ७२९
इन्द्रो रथाय प्रवतं १६९३
इन्द्रो राजा जगतः २२०५
इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य १९७७
इन्द्रो विश्वस्य राजति २९७३; २०९१
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः १३०३
इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं ९०९
इन्द्रो वृत्रस्य दोधतः ९०४
इंद्रो हर्यंतमर्जुनं १४०३
इम इंद्र मदाय ते २९८१
इम इंद्राय सुन्विरे २२३८
इम उ त्वा पुरुशाक १९०५
इम उ त्वा वि चक्षते ४५८
इमं यज्ञं त्वमस्माकमिंद्र १५३५
इमं स्तोममभिष्टये २०१
इमं कामं मंदया १२५७; १४३२
इमं जुषस्व गिर्वणः ९९२
इमं नरः पर्वतास्तुभ्यमापः १३१९
इमं नु मायिनं हुव ६२८
इममिंद्र गवाशिरं १३८८
इममिंद्र सुतं पिब ९४०
इमं बिभर्मि सुकृतं २५७६
इमा अभि प्र णोनुमो २४९
इमा अस्य प्रतूर्तयः ३४९
इमा इंद्रं वरुणं मे ३१५४
इमा उ त्वा पस्पृधानासो २१२१
इमा उ त्वा पुरुतमस्य १८९७
इमा उ त्वा पुरूवसो १५८
इमा उ त्वा शतक्रतो २०८४
इमा उ त्वा सुतेसुते २०८७
इमा उ वां भृमयो ३१४३
इमां सुपूर्व्यां धियं २८५
इमौ गायत्रवर्तनिं ३०९६
इमा जुषेथां सवना ३०९५
इमा धाना घृतस्नुवो ७९
इमानि त्रीणि विष्टपा १७८७
इमानि वां भागधेयानि ३२०१
इमां त इंद्र सुष्टुतिं ३१८
इमां ते धियं प्र भरे ८२८
इमां ते वाचं वसूयंत १०१६
इमां म इंद्र सुष्टुतिं २७४
इमा ब्रह्म बृहद्दिवो २७७१
इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः १३७५
इमा ब्रह्मेंद्र तुभ्यं २८१२
इमामु षु सोमसुतिमुप ३०७६
इमामू षु प्रभृतिं १३२३
इमास्त इंद्र पृश्नयो २६१
इमे चित् तव मन्यवे ९१०
इमे त इन्द्र ते वयं ८१४
इमे त इन्द्र सोमाः २९७८
इमे त इन्द्र सोमास्तीव्रा १२५
इमे भोजा अङ्गिरसो १४५९
इमे वां सोमा अप्स्वा ३११७
इमे सोमास इन्दवः ८३
इमे हि ते कारवो १७३
इमे हि ते ब्रह्मकृतः २२३६
इयं वामस्य मन्मन ३०७०
इयं वां ब्रह्मणस्पते ३३६१
इयं त इंद्र गिर्वणो ३२४
इयं त ऋत्वियावती २९७
इयमिंद्रं वरुणमष्ट ३१९६, ३२०१
इयमु ते अनुष्टुतिः ५८५
इयमेषाममृतानां २६३६
इयं मनीषा बृहती ३३१६
इषा मन्दस्वादु तेऽरं ६८१
इष्कर्तारमनिष्कृतं २३८३
इष्टा होत्रा असृक्षत २४५२
इह त्या सधमाद्या युजानः ३४७
इह त्या सधमाद्या हरी२०८; २४५३

इह त्वा गोपरीणसा	४६६
इह प्रयाणमस्तु	३२२६
इह श्रुत इंद्रो अस्मे	२४६७
इहि तिस्रः परावत	२०१
इहेन्द्राग्नी उप ह्वये	३००२
ईक्षे रायः क्षयस्य	१५४०
ईङ्खयंतीरपस्युव	२८१९
ईळे अग्निं स्वावसुं	२९०८
ईयुरर्थं न न्यर्थं	२१२७
ईयुर्गावो न यवसाद्	२१२८
ईशानासो ये दधते	३२३४
उक्थउक्थे सोम	२१९९
उक्थं चन शस्यमानम्	१२०
उक्थमिंद्राय शंस्यं	६२
उक्थवाहसे विभ्वे	२३५५
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा	३०८९
उक्थेष्विन्नु शूर	११०३
उक्षणो हि मे पञ्चदश	२६५३
उग्रं युयुज्म पृतनासु	५१९
उग्रं न वीरं नमसोप	४९०
उग्रबाहुर्म्रक्षकृत्वा	५५७
उग्रस्तुराषाळभि	१४२२
उग्रा विघनिना मृध	३०६०
उग्रा सन्ता हवामह	३००५
उग्रेष्विन्नु शूर	११०७
उग्रो जज्ञे वीर्याय	२१५१
उज्जातमिन्द्र ते शव	५७५
उज्जायतां परशुर्ज्योतिषा	२५६५
उत ऋतुभिर्ऋतुपाः	१४१६
उत ते सुष्टुता हरी	२४२
उत त्यद्दाश्वश्व्यं	२६६
उत त्यं पुत्रमग्रुवः	१६२१
उत त्या तुर्वशायदू	१६२२
उत त्या सद्य आर्या	१६९३
उत त्ये मा ध्वन्यस्य	१७२६
उत त्ये मा पौरुकुत्स्यस्य	१७२४
उत त्ये मा मारुताश्वस्य	१७२५
उत त्वं मघवञ्छृणु	४४८
उत त्वा बधिरं वयं	४५९

उत दासं कौलितरं	१६१९
उत दासस्य वर्चिनः	१६२०
उत नः कर्णशोभना	६५३
उत नः पितुमा भर	१८७
उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः	३१६७
उत नः सुभगाँ	९
उत नूनं यदिन्द्रियं	१६२८
उत नो गोमतस्कृधि	१८८
उत प्रहामतिदीव्या	२५५४
उत ब्रह्मण्या वयं	२७५
उत ब्रह्माणो मरुतो	१६६९
उत ब्रुवन्तु नो निदो	८
उत माता महिषमन्ववेन	१५१९
उत शुष्णस्य धृष्णुया	१६१८
उत सिन्धुं विबाल्यं	१६१७
उत स्मा सद्य इत्	१६३७
उत स्मा हि त्वामाहु	१६३६
उत स्वराजे अदितिः	३०१
उताभये पुरुहूत	१२४१
उतो घा ते पुरुष्याः	२२१६
उतो नो अस्य कस्य	१७५८
उतो नो अस्या उषसो	१०२६
उतो पतिर्य उच्यते	३२९
उत् तिष्ठताव पश्यत	२८३६
उत् तिष्ठन्नोजसा सह	६३७
उत् ते शतान्मघवन्नुच्च	८३४
उत् त्वा मन्दन्तु स्तोमाः	५८९
उत्पुरस्तात्सूर्य एति	२८७९
उत् पूषणं युवामहे	३३३५
उदश्राणीव स्तनयन्	२०४७
उदावता त्वक्षसा	१८३४
उदिन्न्वस्य रिच्यते	२२४६
उदु त्ये मधुमत्तमा	१७०
उदु ब्रह्माण्यैरत	२१८०
उदू षु णो वसो महे	२३२९
उद् गा आजदङ्गिरोभ्य	३६१
उद्ग्राभं च निग्राभं	३११९
उद्वेदभि श्रुतामघं	२४३०
उद् घामिवेत् तृष्णजो	२२६६
उद्धर्षय मघवन्नायुधा०	२७००

उद्यत् सहः सहस	१६९५
उद्यदिंद्रो महते	१७११
उद्यद्ब्रध्नस्य विष्टपं	२३१०
उद् वृह रक्षः	१२५४
उन्मा पीता अयंसत	२८५१
उप क्रमस्वा भर	६७६
उप त्वा कर्मन्नूतये	४१०
उप त्वा देवो अग्रभी०	३१३३
उप नः सवना	५
उप नः सुतमा गहि सोम	१३८१
उप नः सुतमा गहि हरिभिः	८१
उप नो हरिभिः सुतं	२४६०
उप प्रक्षे मधुमति	२९८७
उप प्रेत कुशिकाश्चेतय	१४६३
उप ब्रध्नं वावाता	२४१
उप ब्रह्माणि हरिवो	२७०८
उपमं त्वा मघोनां	५२५
उप मा मतिरस्थित	२८५३
उपयामगृहीतोऽसि	२९२३
उप यो नमो नमसि	१५४८
उपस्थाय मातरमन्नं	१४२१
उपह्वरे गिरीणां संगथे	२७०
उपाजिरा पुरुहूताय	१३१३
उपेदमुपपर्चनं	३३५३
उपेदहं धनदामप्रतीतं	७३१
उपो नयस्व वृषणा	१३१४
उपो षु शृणुहि गिरो	९२५
उपो ह यद् विदथं	३०७३
उपो हरीणां पतिं	१८०३
उभयं शृणवच्च न	५४८
उभा जिग्यथुर्न परा	३३१३
उभा देवा दिविस्पृशा	३२१३
उभा वामिंद्राग्नी	३०६८
उभे चिदिंद्र रोदसी	२१५४
उभे पुनामि रोदसी	१०३४
उभे यदिंद्र रोदसी	२७८५
उरुं यज्ञाय चक्रथुरु	३३१४
उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं	१४११
उरु णस्तन्वे तन	१३०२

उरुं नृभ्य उरुं गव २३०३
उरुं नो लोकमनु २१०६
उरुव्यचसे महिने २२३३
उरोष्ट इंद्र राधसो १७५५
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं २२९०, ३२९९
उवे अम्ब सुलाभिके २६४६
उशना यत् सहस्यैः १६७१
उशंता दूता न ३२३६
उशन्नु षु णः सुमना १५३६
ऊती शचीवस्तव २७०६
ऊर्जो देवाँ अवस्योजसा १७७१
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये ७०४
ऊर्ध्वा यत् ते त्रेतिनी २७२२
ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवो २२३१
ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे ४५४
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षे १२२९
ऋजीषी वज्री वृषभः १७६८
ऋतं येमान ऋतमिद् १५७५
ऋतं देवाय कृण्वते १२२७
ऋतस्य दृळ्हा धरुणानि १५७४
ऋतस्य पथि वेधा २०४३
ऋतस्य हि शुरुधः १५७३
ऋतस्य हि सदसो २७२६
ऋतुर्जनित्री तस्या ११३७
ऋभुक्षणं न वर्तव ४७१
ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा २३८
ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक १८३
ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर २८१०
ऋष्वा ते पादा प्र २६२५
एकं च यो विंशतिं २१२९
एकं नु त्वा सत्पतिं १७१५
एकया प्रतिधापिबत् ६४३
एकराळस्य भुवनस्य १७७८
एकस्य चिन्मे विभ्व१स्त्वोजः ३२५९
एको द्वे वसुमती १२४८
एत उ त्ये पतयन्ति २२८८; ३२९७
एतत् त इन्द्र वीर्यं ५३३
एतत् त्यत् त इंद्र वृष्ण ९७३
एतत् त्यत् त इंद्रियमचेति १९५८
एतदस्या अनःशये ३३४७
एतद् घेदुत वीर्य१मिन्द्र १६१६
एता अग्न आशुषाणास ३०७८
एता अर्षंत्यलला भवंती १५१४
एता च्यौत्नानि ते कृता ६४८
एता त्या ते श्रुत्यानि २७९७
एतानि भद्रा कलश २५३८
एतायामोप गव्यंत ७३०
एतावतस्त ईमह ४९३
एतावतस्ते वसो ५०३
एता विश्वा चकृवाँ १६८०
एता विश्वा सवना २६०६
एतु तिस्रः परावत २८९८
एते त इंद्र जंतवो ९१४
एते स्तोमा नरां नृतम २१४०,
एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं २३४९
एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखाय १८०८
एतो न्विन्द्रं स्तवामेशानं ६७३
एतौ मे गावौ प्रमरस्य २५१०
एदु मध्वो मदिन्तरं १८०५
एना मंदानो जहि २०५२
एन्दुमिंद्राय सिञ्चत १८०२
एंद्र नो गधि प्रियः २३६७
एंद्र पृक्षु कासु २९८०
एंद्र याहि पीतये २२२
एंद्र याहि मत्स्व १०९
एंद्र याहि हरिभिरुप ४२५
एंद्र याह्युप नः १०११
एंद्रवाहो नृपतिं २५७०
एन्द्र सानसिं रयिं ३८
एभिर्द्युभिः सुमना ७७८
एभिर्न इन्द्राहभिर्दशस्य २१११
एभिर्नृभिरिन्द्र १४८५
एमाशुमाशवे १०
एमेनं सृजता सुते ४९
एमेनं प्रत्येतन १९९९
एवा जज्ञानं सहसे १९८२
एवा त इन्द्रोचथ महेम १९०५
एवा तदिन्द्र इंदुना २८०३
एवा तमाहुरुत शृण्व २२०१
एवा ता विश्वा १८५३
एवा ते गृत्समदाः १२०६
एवा ते वयमिन्द्र २६७८
एवा ते हारियोजना ८७१
एवा त्वामिंद्र वज्रिन्नत्र १५२२
एवा देवाँ इंद्रो २६००
एवा न इंद्र वार्यस्य २१९१; २१९७
एवा न इंद्रोतिभिरव १७९३
एवा न इंद्रो मघवा १५०७
एवा नः स्पृधः समजा १९४६
एवा नूनमुप स्तुहि १८११
एवा नृभिरिंद्रः १०९९
एवा पतिं द्रोणसाचं २५७१
एवा पाहि प्रत्नथा १८४३
एवा महान् बृहद्दिवो २७७२
एवा महो असुर २६९१
एवा रातिस्तुवीमघ २४९५
एवारे वृषभा सुतेऽसिन्वन् ४८०
एवा वसिष्ठ इंद्रमूतये २२०२
एवा वस्व इंद्रः १५५३
एवा वामह्व ऊतये ३०९९
एवा सत्यं मघवाना १६०३
एवा हि ते विभूतय ४६
एवा हि ते शं सवना १०६३
एवा हि त्वामृतुथा १७१६
एवा हि मां तवसं २५२७
एवा ह्यसि वीरयुरेवा २४२४
एवा ह्यस्य काम्या ४७
एवा ह्यस्य सूनृता ४५
एवेदिंद्रं वृषणं २१८५
एवेदिंद्रः सुते १९२७
एवेदिन्द्र सुहव १९६७
एवेदिन्द्राय वृषभाय १४८६
एवेदेते प्रति मा ३२६१
एवेदेष तुविकूर्मिर्वाजां १४६
एवेन्द्राग्निभ्यामहावि ३०४५
एवेन्द्राग्निभ्यां पितृव० ३११२
एवेन्द्राग्नी पपिवांसा ३०२०
एवेन्नु कं सिन्धुमे० २२६४

एवैवापागपरे सन्तु	२५७४
एष एतानि चकारेन्द्रो	१४९
एष ग्रावेव जरिता	१७४७
एष ते यज्ञो यज्ञपते	३१२५
एष द्रप्सो वृषभो	१९९५
एष प्र पूर्वीरव तस्य	८०५
एष ब्रह्मा य ऋत्विय	२९८६
एष वः स्तोमो मरुत	३२६४
एष स्तोम इन्द्र	१०३८
एष स्तोमो अचिक्रदद्	२११२
एष स्तोमो मह उग्राय	२१९०
एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा	१४२
एहि प्रेहि क्षयो	५९२
एहि स्तोमाँ अभि स्वरा	६१
ऐनान्यताभिन्द्राग्नी	३१३०
ऐभिर्ददे वृष्ण्या	२६२०
ऐषु चाकन्धि पुरुहूत	२८०६
ऐषु नह्य वृषाजिनं	२८९५
ओकिवांसा सुते	३०४८
ओजस्तदस्य तित्विष	२४७
ओते मे द्यावापृथिवी	२८७४
ओ त्यं नर इन्द्रमूतये	८४८
ओषमित् पृथिवीमहं	२८१९
ओषु प्र याहि वाजेभिर्मा	१३४
ओ सुष्टुत इन्द्र	१०९५
औच्छत् सा रात्री	३३३९
क इमं दशभिर्ममेन्द्रं	१५८६
क इमं नाहुषीष्वा	२९७५
क ईं वेद सुते सचा	२१६
क ईं स्तवत् कः	२११३
क ईषते तुज्यते	९५३
क उ नु ते महिमनः	२६१०
ककुहं चित् त्वा कवे	४५६
कण्वा इन्द्रं यदक्रत	२४५
कण्वा इव भृगवः	१७१
कण्वास इन्द्र ते	२७३
कण्वेभिर्धृष्णवा	२१२
कथा कदस्या उषसो	१५७०
कथा त एतदहमा	२५१६
कथा महामवृधत्	१५६६
कथा शृणोति हूयमानं	१५६८
कथा सबाधः शशमानो	१५६९
कथो नु ते परि चराणि	१६७९
कदा चन प्रयुच्छस्युभे	५२१
कदा चन स्तरीरसि	५११
कदा त इन्द्र गिर्वणः	३४२
कदा भुवन् रथक्षयाणि	२०२६
कदा मर्तमराधसं	९४४
कदा वसो स्तोत्रं	२७१४
कदु द्युम्नमिन्द्र	२५१८
कदु स्तुवन्त ऋतयन्त	१६९
कदू न्वस्याकृतं	६२१
कदू महीरधृष्टा	६२२
कनीनकेव विद्रधे	३३४८
कं ते दाना असक्षत	५९७
कन्नव्यो अतसीनां	१६८
कं नक्षिश्रमिषण्यसि	२६८०
कन्या वारवायती	१७८३
कया तच्छृण्वे शच्या	१५४१
कया त्वं न ऊत्या	२४४८
कया नश्चित्र आ	१६३०
कया शुभा सवयसः	३२५०
कर्णगृह्या मघवा	२३३५
कर्हि स्वित् तदिन्द्र यज्जरित्रे	२०२८
कर्हि स्वित् तदिन्द्र यन्नृभिर्नॄन्	२०२७
कर्हि स्वित् सा त इन्द्र	२६७५
कविर्न निण्यं विदथानि	१४६९
कस्तमिन्द्र त्वावसुमा	२२४८
कस्त मद इन्द्र रन्त्यो	२५१७
कस्ते मातरं विधवामचक्र०	१५२०
कस्त्वा सत्यो मदानां	१६३१
कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवा	३२५१
कस्य वृषा सुते सचा	२४४९
कस्य स्वित् सवनं	५९६
का ते अस्त्यरंकृतिः	२२१५
का सुष्टुतिः शवसः	१५७७
किं स ऋधक् कृणवद्	१५१२
किं सुबाहो स्वङ्गुरे	२६४७
किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु	१४६६
किं न इन्द्र जिघांससि	१०५२
किं नो भ्रातरगस्त्य	१०५३
किमङ्ग त्वा मघवन्	२५४८
किमङ्ग रध्रचोदनः	६६३
किमयं त्वां वृषाकपिः	२६४२
किमस्य मदे किम्वस्य	१९५५
किमादमत्रं सख्यं	१५७१
किमादुतासि वृत्रहन्	१६१५
किमु ष्विदस्मै निविदो	१५१५
कियती योषा मर्यतो	२५०२
कियत् स्विदिन्द्रो	१४९९
कीरिश्चिद्धि त्वामवसे	२१६८
कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः २९६८;	३२५२
कुत्सा एते हर्यश्वाय	२१९६
कुत्साय शुष्णमशुषं	१४७८
कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता	२९४५
कुविच्छकत् कुवित्	१७८६
कुवित्सस्य प्र हि	२०८३
कुविदङ्ग यवमन्तो	२७७४
कुविन्मा गोपां करसे	१३९५
कुह श्रुत इन्द्रः कस्मिन्नद्य	२४६६
कृणोत्यस्मै वरिवो	१५८२
कृतं न श्वघ्नी वि	२५६१
कृतं नो यज्ञं विदथेषु	३१९४
कृतं मे दक्षिणे हस्ते	२९१०
केतुं कृण्वन्नकेतवे	२६
के ते नर इन्द्र ये	२६०३
को अग्निमीट्टे हविषा	९५४
को अद्य नर्यो देवकामः	१५८८
को अद्य युङ्क्ते धुरि	९५२
को अस्य वीरः सधमा०	१५६७
को अस्य शुष्मं तविषीं	१७१३
को देवानामवो अद्या	१५९०
को नानाम वचसा	१५८९
को नु मर्या अमिथितः	४७९
को न्वत्र मरुतो	३२६२
क्रतूयन्ति क्षितयो	१५८०
क्रत्व इत् पूर्णमुदरं	६५७
क्रत्वा महाँ अनुष्वधं	९१९
क्रीळन्त्यस्य सूनृता	३१८

क१स्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं १६८२
क१स्य वृषभो युवा ५९५
क१स्या वो मरुतः ३२५५
केयथ केदसि पुरुत्रा ९३
क्षत्राय त्वमवसि १७८१
क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं १५००
क्षेमस्य च प्रयुजश्च १७८०
खे रथस्य खेऽनसः १७८९
गन्तारा हि स्थोऽवसे ३१३५
गन्तेयान्ति सवना १९२१
गमद् वाजं वाजयन्निन्द्र २२४५
गमन्नस्मे वसून्या २५७२
गम्भीराँ उदधीँरिव १४०६
गम्भीरेण न १९३६
गर्भो यज्ञस्य देवयुः २९८
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र १२८३
गव्यंत इंद्रं १५०३
गव्यो षु णो यथा १८२६
गाथश्रवसं सत्पतिं १५३
गायत् साम नभन्यं १०५६
गायंति त्वा गायत्रिणो ५८
गावो न यूथमुप १८३८
गावो यवं प्रयुता २४९८
गिरश्च यास्ते गिर्वाह १४५
गिरा वज्रो न संभृतः २४३८
गिरिर्न यः स्वतवाँ १५३८
गिरीँरज्रान् रेजमानाँ २५७५
गिर्वणः पाहि नः १३६९
गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ३०७४
गुहा सतीरुप त्मना २५०
गुहा हितं गुह्यं ११०५
गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्म ८७६
गृणे तदिंद्र ते शव ५७३
गृभीतं ते मन इंद्र २१८७
गृष्टिः ससूव स्थविरं १५१८
गृहो याम्यरंकृतो २८६२
गोजिता बाहू अमितक्रतुः ८३३
गोत्रभिदं गोविदं २६९६
गोभिर्मिमिक्षुं १४३१
गोभिर्यदीमन्ये १२१
गोभिष्टरेमामतिं२५५५;२५६६;२५७७
गोमद्धिरण्यवद् ३०८७
ग्राश्च यन्नरश्च ३१६४
घृतप्रुषः सौम्या ३२०५
घृषुः श्येनाय कृत्वन २८००
चकार ता कृणवन्नूनमन्या २९००
चक्रं यदस्याप्स्वा २६३१
चक्रं न वृत्तं पुरुहूत १७५६
चक्राणासः परीणहं ७३७
चक्राथे हि सध्र्य१ङ्नाम ३०१०
चतुः सहस्रं गव्यस्य ३३४०
चत्वारि ते असुर्याणि २६११
चन्द्रमा ऽअप्स्वन्तरा २९७१
चर्षणीधृतं मघवान० १४३४
जगृम्मा ते दक्षिणमिंद्र २८४२
जघन्वाँ इन्द्र १०७४
जघन्वाँ उ हरिभिः ७६७
जघान वृत्रं स्वधि० २६६८
जज्ञान एव व्यबाधत २७४८
जज्ञानः सोमं सहसे २२८१
जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि ६४०
जज्ञानो हरितो १४०२
जनं वज्रिन् महि १८८२
जनिता दिवो जनिता १७७२
जनिताश्वानां जनिता १७७३
जनिष्ठा उग्रः सहसे २६२३
जयेम कारे पुरुहूत ४२०
जायेदस्तं मघवन्त्सेदु १४५६
जुष्टी नरो ब्रह्मणा वः २२६५
जुषेथां यज्ञमिष्टये ३०९४
जेता नृभिरिन्द्रः १०९८
ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय १३८
ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी १३६२
ज्योतिर्वृणीत तमसो १३६१
त इन्द्रियं हृदयस्य २२७०
त इन्न्वस्य मधुमद् १२८५
तं व इन्द्रं चतिनमस्य १८७४
तं वः सखायः १९२६
तं वो दस्ममृतीषह ८९४
तं वो धिया नव्यस्या १९१३
तं वो धिया परमया १९८०
तं वो महो महाय्य० २३२८
तं वो वाजानां पति० १८०७
तं शिशीता सुवृक्तिभि० ३११०
तं शिशीता स्वध्वरं ३११२
तं सध्रीचीरूतयो २०३३
तं सुष्टुत्या विवासे ३८४
तं स्मा रथं मघवन् ८३०
तं हि स्वराज्यं वृषभं ५४९
तक्षद् यत् त उशना ७५४
तं गूर्तयो नेमन्निषः ८०६
तं घेमित्था नमस्विन २३१९
ततुरिर्वीरो नर्यो १९२९
तत् त इन्द्रियं परमं ८३९
तत् तु प्रयः प्रत्नथा १०३०
तत् ते यज्ञो अजायत २३८९
तत् त्वा यामि सुवीर्यं १६४
तत्रो अपि प्राणीयत ५४७
तथा तदस्तु सोमपाः ७१०
तद्द्या चित् त उक्थिनो ३७४
तदश्विना भिषजा २९४०
तदस्मै नव्यमङ्गिर० ११८१
तदस्य रूपममृतं २९३९
तदस्येदं पश्यता भूरि ८४२
तदित् सधस्थमभि २५३३
तदिदास भुवनेषु २७६४
तदिद् रुद्रस्य चेतति ३४०
तदिन्द्र प्रेव वीर्यं ८४५
तदिन्द्राव आ भर १८१४
तदिन्नु ते करणं दस्म १६९९
तदिन्न्वस्य वृषभस्य १३५१
तदिन्न्वस्य सवितुः १३५२
तदिन्मे छन्त्सद्वपुषो २५३२
तदु प्रयक्षतममस्य ८७७
तदूचुषे मानुषेमा ८४२
तद्धाना अवस्यवो ५८७
तद् व उक्थस्य २०४१
तद विविड्ढि यत् २३५६
तद् वो गाय सुते सचा २०८१

तंतमिद्राधसे मह २२९७
तं ते मदं गृणीमसि ३७२
तं ते यवं यथा गोभिः ११८
तं त्वा महस्वती २२३०
तं त्वा यज्ञेभिरीमहे २३००
तं त्वा विश्ववारा ७०८
तं त्वा वाजेषु वाजिनं ६२
तं त्वा हविष्मतीर्विश २६९
तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु १८६०
तन्नो वि वोचो १९१०
तन्म ऋतमिन्द्र शूर ९९०
तमङ्गिरस्वन्नमसा १२७८
तमद्य राधसे महे ६००
तमप्सन्त शवस ९६४
तमर्केभिस्तं सामभिस्तं ३९०
तमस्य द्यावापृथिवी २७४५
तमस्य विष्णुर्महिमान० २७४६
तमह्वे वाजसातय ३९३
तमा नूनं वृजनमन्यथा २०३०
तमिच्च्यौत्नैरार्यन्ति ३८७
तमित् सखित्व ईमहे ६३
तमिद् धनेषु हितेषु ३८६
तमिद् व इन्द्रं सुहवं १४८२
तमिद् विप्रा अवस्यवः ३३७
तमिन्द्रं जोहवीमि ९८८
तमिन्द्रं वाजयामसि २४३६
तमिन्द्रं दानमीमहे १८२२
तमिन्द्र मदमा १३८३
तमिन्नरो वि ह्वयंते १५७९
तमीळिष्व यो अर्चिषा ३०६५
तमीमह इंद्रमस्य १९०९
तमीमहे पुरुष्टुतं ३४४
तमु ज्येष्ठं नमसा ३३६०
तमु त्वा नूनमसुर २३९६
तमु त्वा नूनमीमहे १८१५
तमु त्वा यः पुराசिथ २०७०
तमु त्वा सत्य सोमपा २०६९
तमु नः पूर्वे पितरो १९०८
तमु ष्टवाम य इमा २३५०
तमु ष्टवाम यं गिरः २३४१
तमु ष्टुहि यो अभि० १८५६
तमु ष्टुहीन्द्रं यो १०६०
तमु स्तुष इन्द्रं तं ११११
तमु स्तुष इन्द्रं यो १८९८
तमूतयो रणयञ्छूरसातौ ९६३
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं १९११
तं पृच्छन्तोऽवरासः १९०२
तम्वभि प्र गायत ३६९
तम्वभि प्रार्चतेन्द्रं २४०१
तयोरिदमवच्छव० ३०४२
तयोरिदवसा वयं ३१३९
तरणिं वो जनानां ४७०
तरणिरित् सिषासति २२५४
तराभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं ६१३
तव क्रत्वा तव तद् १८४६
तव च्यौत्नानि वज्रहस्त २१४४
तव त्य इंद्र सख्येषु २७९२
तव त्यदिन्द्रियं बृहत् ३७५
तव त्यन्नर्यं नृतोऽप १२२६
तव त्विषो जनिमन् १४८९
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं ३७६
तव प्रणीतीन्द्र जोहुवा० २११०
तव ह त्यदिन्द्र १८९६
तवायं सोमस्त्व० १३१७
तवाहं शूर रातिभिः ७५
तवेदं विश्वमभितः २२८४
तवेदिन्द्र प्रणीतिषूत २६४
तवेदिन्द्रावमं वसु २२५०
तवेदिन्द्राहमाशसा ६६०
तवेदु ताः सुकीर्तयो ४७५
तस्मा अग्निर्भारतः शर्म १५९१
तस्मिन्ना वेशया १०८६
तस्मिन् हि सन्त्यूतयो १८२३
तस्मै तवस्यमनु १२१५
तस्य वज्रः क्रन्दति ९६९
तस्य वयं सुमतौ २१११; २७७७
तस्येदिह स्तवथ १५४५
ता अस्य नमसा सहः ९४८
ता अस्य पृशनायुवः ९४७
ता अस्य सूददोहसः २३०६
ता ईं वर्धन्ति मह्यस्य ३३०५
तां सु ते कीर्तिं मघवन् २६०८
ता कर्माषतरास्मै १०५९
ता गृणीहि नमस्येभिः ३१६३
ता तू त इंद्र महतो १५५९
ता तू ते सत्या तुविनृम्ण १५६०
ता ते गृणन्ति वेधसो १६५५
ताँ आशिरं पुरोळाशमिंद्रेमं ११६
ता नासत्या सुपेशसा २९५८
ता नो वाजवतीरिष ३०६७
ताभिरा गच्छतं ३०६४
ता भिषजा सुकर्मणा २९५९
ता महान्ता सदस्पती ३००६
ता मित्रस्य प्रशस्तय ३००४
तां पूष्णः सुमतिं वयं ३३३४
ता यज्ञेषु प्र शंसते० ३००३
ता योधिष्टमभि ३०५७
ता वां गीर्भिर्विपन्यवः ३०८४
ता वां धियोऽवसे ३१५३
ता वामेषे रथाना० ३०४३
ताविद् दुःशंसं मर्त्यं ३०९०
ता वृधन्तावनु ३०४४
ता सानसी शवसाना ३०७२
ता हि मध्यं भराणा० ३१०३
ता हि शश्वन्त ईळत ३०८३
ता हि श्रेष्ठा देवताता ३१६१
ता हुवे ययोरिदं ३०५९
तिग्ममायुधं मरुता० २३५३
तिग्मा यदन्तरशनिः १४८३
तिष्ठा सु कं मघवन् १४५४
तिष्ठा हरी रथ १३१२
तीव्रस्याभिवयसो २८१४
तीव्रा सोमास आ गहि ६८०
तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे ३४
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु २८१५
तुभ्यं सोमाः सुता इमे २४५४
तुभ्यं ब्रह्माणि गिर १४३९
तुभ्यायमद्रिभिः सुतो ६८३
तुभ्येदमिन्द्र परि षिच्यते २८१९

तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते ६३५
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये० १३८९
तुभ्येदिमा सवना २१७७
तुभ्येदेते बहुला ७९४
तुभ्येदेते मरुतः १६८७
तुरण्यवो मधुमन्तं ५१४
तुराणामतुराणां २९०७
तुरीयं नाम यज्ञियं ६६९
तुविक्षं ते सुकृतं ६५०
तुविग्रीवो वपोदरः ४०१
तुविशुष्म तुविक्रतो २२९२
तूतुजानो महेमते ३३१
तूर्वन्नोजीयान् तवस० १८८६
तृतीये धानाः सवने १४५१
तेजः पशूनां हवि० २९५३
ते त्वा मदा अमदन् ७८०
ते त्वा मदा इंद्र २१८४
ते त्वा मदा बृहदिंद्र १८४४
तेन सत्येन जागृत० ३००७
तेन स्तोतृभ्य आ भर ६४७
तेभ्यो गोधा अयथं २५२९
ते सत्येन मनसा ३२३३
तोके हिते तनय ३१५१
तोशा वृत्रहणा ३०३३
तोशासा रथयावाना ३०९२
त्यं सु मेषं महया ७६०
त्यं चित् पर्वतं गिरिं ५९३
त्यं चिदर्णं मधुपं १७१२
त्यं चिदस्य क्रतुभि० १७०९
त्यं चिदित्था कत्पयं १७१०
त्यं चिदेषां स्वधया १७०८
त्यमु वः सत्रासाहं २४०३
त्यमु वो अप्रहणं २०३९
त्यस्य चिन्महतो १७०७
त्रय इन्द्रस्य सोमाः १९१
त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु २२६८
त्रयः कोशासः श्चोतन्ति १९३
त्राता नो बोधि दद्दशान १५०४
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं २१०९
त्रिंशच्छतं वर्मिण १९६०
त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो २३५२
त्रिकद्रुकेषु चेतनं ३३८; २४१७
त्रिकद्रुकेषु महिषो १२२३
त्रिविष्टिधातु प्रतिमानमोजस० ८३५
त्रीशीर्षाणं त्रिककुदं २८८१
त्रीणि राजाना विदथे १३५०
त्री यच्छता महिषाणामघो १६७४
त्र्यर्यमा मनुषो १६६७
त्वं रथं प्र भरो १९५०
त्वं राजेन्द्र ये च १०६९
त्वं वर्मासि सप्रथः २२१८
त्वं वलस्य गोमतो ७४
त्वं विश्वस्य धनदा २२५१
त्वं विश्वा दधिषे २६१२
त्वं वृथा नद्य इन्द्र १०१५
त्वं वृध इन्द्र पूर्व्यो १८९४
त्वं वृषा जनानां ३७८
त्वं शतान्यव शम्बरस्य २००९
त्वं शर्धाय महिना २८०८
त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः १९५२
त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेतान् ८८७
त्वं सद्यो अपिबो १९९१
त्वं सिंधूँरवासृजो २७७९
त्वं सुतस्य पीतये १९
त्वं सूकरस्य दर्दृहि २२७३
त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो २३५८
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो २३५९
त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः २१४१
त्वं ह त्यदिन्द्र चोदीः ८८८
त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त ८९१
त्वं ह त्यदिन्द्रारिषण्यन् ८८९
त्वं ह त्यदृणया २६६९
त्वं ह त्यद् वृषभ २३६०
त्वं ह नु त्यददमायो १८५८
त्वं हि नः पिता वसो २३७४
त्वं हि राधस्पते ५६१
त्वं हि वृत्रहन्नेषां २४६२
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र २३६९
त्वं हि शूरः सनिता १०८१
त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युता० १२४१
त्वं हि सत्यो मघवन् २३९४
त्वं हि स्तोमवर्धन ३६४
त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र १६५१
त्वं ह्येहि चेरवे विदा ५५४
त्वं करञ्जमुत पर्णयं ७८२
त्वं कविं चोदयोऽर्कसातौ १९४६
त्वं कुत्सं शुष्णहत्येष्वाविथा० ७५०
त्वं कुत्सेनाभि २००८
त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपो ७४७
त्वं जघन्थ नमुचिं २६२९
त्वं जिगेथ न धना ८३७
त्वन्निवेन्द्र पार्थिवानि २००७
त्वं तदुक्थमिन्द्र १९५१
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न ७९९
त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं ८१६
त्वं तमिन्द्र मर्त्य० १७४०
त्वं तमिन्द्र वावृधानो १०२७
त्वं तं ब्रह्मणस्पते सोम ३३५८
त्वं ताँ इन्द्रोभयाँ २०१८
त्वं तान् वृत्रहत्ये २४७५
त्वं तू न इन्द्र १०४६
त्वं त्यमिटतो रथमिन्द्र २८३२
त्वं त्यमिंद्र मर्त्यं० २८३४
त्वं त्यमिंद्र सूर्यं २८३५
त्वं त्या चिद् वातस्याश्वागा २४७०
त्वं त्यां न इन्द्र देव ८९२
त्वं दाता प्रथमो २३९२
त्वं दिवो धरुणं धिष ८१०
त्वं दिवो बृहतः ७८९
त्वं धुनिरिन्द्र १०७७; १८९५
त्वं धृष्णो धृषता २१४२
त्वं न इन्द्र ऋतयु० २३३०
त्वं न इन्द्र त्वाभिरूती १२०९
त्वं न इन्द्र राया तरूषसोग्रं १००९
त्वं न इन्द्र राया परीणसा १००८
त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं २२२५
त्वं न इन्द्र शूर २४७४
त्वं न इंद्रा भरँ २३७३

॥

त्वं न इन्द्रासां हस्ते २३३२
त्वं नः पश्चादधरादुत्तरात् ५६३
त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ २१४३
त्वं नो अस्या अमतेरुत ६२६
त्वमङ्ग प्र शंसिषो ९५५
त्वमध प्रथमं जायमानो १४९४
त्वमपामपिधानावृणोरपा० ७४८
त्वमपो यदवे तुर्वशाया० १७००
त्वमपो यद्ध वृत्रं १२८७
त्वमपो वि दुरो १९७२
त्वमस्माकमिन्द्र १०७८
त्वमस्य पारे रजसो ७७१
त्वं मानेभ्य इन्द्र १०५०
त्वमाविथ नर्यं ७९१
त्वमाविथ सुश्रवसं ७८४
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि २३८०
त्वमिन्द्र बलादधि २८२०
त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी २३९५
त्वमिन्द्र सजोषस० २८२२
त्वमिन्द्र स्रवितवा २१६३
त्वमिन्द्राधिराजः २९०३
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा २८२३
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं २३६५
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा २८२१
त्वमीशिषे वसुपते १०५५
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र ५९१
त्वमुत्साँ ऋतुभि० १७०६
त्वमेकस्य वृत्रह० २०६४
त्वमेतदधारयः कृष्णासु २४४२
त्वमेताञ्जनराज्ञो ७८३
त्वमेतान् रुदतो ७३६
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो ३२६८
त्वं पिप्रुं मृगयं १४७०
त्वं पुर इन्द्र चिकिदेना ९८९
त्वं पुरं चरिष्ण्वं ११४
त्वं पुरूण्या भरा २७५४
त्वं पुरु सहस्राणि ५५५
त्वं भुवः प्रतिमानं ७७२
त्वं मखस्य दोधतः २८३३
त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं १४८८
त्वं महाँ इन्द्र यो ह ८८५
त्वं महीमवनिं १५२७
त्वं मायाभिरनवद्य २८०५
त्वं मायाभिरप ७४९
त्वया वयं मघवन्निन्द्र ११००
त्वया वयं मघवन् पूर्व्ये १०१८
त्वया वयं शाशद्महे २७६८
त्वया ह स्विद् युजा ४१९
त्वयेदिन्द्र युजा वयं २४२८
त्वां यज्ञेभिरुक्थैरुप २४८९
त्वां वाजी हवते १९४८
त्वां विष्णुर्बृहन् ३७७
त्वां शुष्मिन् पुरुहूत २३७५
त्वां सुतस्य पीतये १३९०
त्वां स्तोमा अवीवृधन् २१
त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ ८९०
त्वां हि सत्यमद्रिवो १८१८
त्वां हीं३द्रावसे २०१७
त्वां जना ममसत्ये० २५४९
त्वां देवेषु प्रथमं ८३६
त्वामिच्छवसस्पते २६३
त्वामिदा ह्यो नरो २३७६
त्वामिद्धि त्वायवो २४२९
त्वामिद्धि हवामहे २०९०
त्वामिद्यवयुर्मम ६५९
त्वामिद् वृत्रहन्तम २७९; १७४१
त्वामिद् वृत्रहन्तम सुतावन्तो २४५९
त्वामुग्रमवसे २०९५
त्वा युजा तव तत् १५९९
त्वा युजा नि खिदत् १६००
त्वायेन्द्र सोमं सुषुमा ८२५
त्वावतः पुरूवसो १८२७
त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे २१९५
त्वे इन्द्राप्यभूम ११११
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति २७६६
त्वमेतानि पप्रिषे २६३०
त्वे राय इन्द्र तोशतमाः १०४७
त्वे वसूनि संगता ६५८
त्वे विश्वा तविषी ७५१
त्वेषमित्था समरणं ३३०४
त्वे सु पुत्र शवसे २४१०
त्वे ह यत् पितरश्चिन २११९
त्वोतासस्त्वा युजा २१९९
त्वोतासो मघवन्निन्द्र १६८८

दण्डा इवेद् गोअजनास ३२६७
ददी रेक्णस्तन्वे १८३१
दधानो गोमदश्ववत् १८२१
दधामि ते मधुनो ९९१
दधामि ते सुतानां ४१९
दधिष्वा जठरे सुतं १३६८
दध्यङ् ह मे जनुषं ३०२९
दनो विश इन्द्र १०७०
दभ्रं चिद्धि त्वावतः ४७४
दभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं १६४७
दर्शन्न्वत्र शृतपाँ २४९६
दश ते कलशानां १६६३
दश मह्यं पौतक्रतः ५४५
दश राजानः समिता ३१८८
दशानामेकं कपिलं २५०६
दस्मो हि ष्मा वृषणं १००१
दस्यूञ्छिम्यूँश्च ९७४
दाता मे पृषतीनाम ६१०
दादृहाणो वज्रमिन्द्रो १०१४
दाना मृगो न वारणः २१७
दानाय मनः सोमपावन्नस्तु ८०३
दाशराज्ञे परियत्ताय ३१८९
दासपत्नीरहिगोपा ७२५
दिदृक्षन्त उषसो १२५०
दिवश्चिदस्य वरिमा ७९७
दिवश्चिदा पूर्व्या १३५६
दिवश्चिद् घा दुहितरं ३३४५
दिवि मे अन्यः पक्षो३ २८६०
दिवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं २११८
दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र १८८५
दिवो न यस्य रेतसो ९५९
दिवो मानं नोत्सदन् ५७२
दिशः सूर्यो न मिनाति १२४९

दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा	२७९०
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो	४०३
दुराध्यो अदितिं	२११६
दुरो अश्वस्य दुर	७७६
दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि	२४३९
दूणाशं सख्यं तव	२०८५
दूरं किल प्रथमा	२७३२
दूराच्चिद्रा वसतो	१९७९
दूरादिन्द्रमनयन्ना	२२६३
दूरे तन्नाम गुह्यं	२६१४
देवंदेवं वोऽवस	३०६
देवानां माने प्रथमा	२५१३
देवाश्चित् ते असुर्याय	२१६७
देवी यदि तविषी	८०८
देहि मे ददामि ते	२९२०
दोहेन गामुप शिक्षा	२५४७
द्यामिन्द्रो हरिधायसं	१४०१
द्यावा चिदस्मै	११३४
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं	८९५
द्युमत्तमं दक्षं	२०४४
द्युम्नेषु पृतनाज्ये	१३४०
द्यौर्न य इन्द्राभि	१८८४
द्यौश्चिदस्यामवाँ	७६९
द्रप्समपश्यं विषुणे	३२६९
द्रुहं जिघांसन् ध्वरसमनिन्द्रां	१५७१
द्रुहो निषत्ता पृशनी	२६२४
द्विता यो वृत्रहन्तमो	२४६१
द्विता वि वव्रे सनजा	८७८
धनं न स्यन्द्रं बहुलं	२५५०
धन्व च यत् कृन्तत्रं	२६५९
धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट	१४२७
धानावन्तं करम्भिण०	१४४६
धिषा यदि धिषण्यतः	१५४९
धिष्व वज्रं गभस्त्यो	२०७७
धिष्वा शवः शूर	११९८
धीभिरर्वद्भिरर्वतो	२०७१
धृतव्रतो धनदाः	१८७५
धृषतश्चिद् धृषन्मनः	५७०
धृषत् पिब कलशे	२१०४
धेनुं न त्वा सूयवसे	२१२१
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता	३५६
ध्रुवं ध्रुवेण मनसा	२९२६
ध्रुवासि ध्रुवोऽयं	२९२१
नकिः परिष्टिर्मघवन्	८९९
नकिः सुदासो रथं	२२४४
नकिरस्य शचीनां	१९४
नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो	१६०९
नकिरेषां निन्दिता	१३५८
नकिर्देवा मिनीमसि	२७९१
नकिष्टं कर्मणा नश०	२३२३
नकिष्ट्वद् रथीतरो	९४१
नक्षद्धोता परि	१०५८
नक्षन्त इंद्रमवसे	५३४
न क्षोणीभ्यां परिभ्वे	११७४
नकीं वृधीक इंद्र ते	६५४
नकीमिन्द्रो निकर्तवे	६५५
नकी रेवन्तं सख्याय	४२२
न घा त्वद्रिगप वेति	२५५८
न घा राजेन्द्र आ	१०९७
न घा वसुर्नि यमते	२०८२
न घेमन्यदा पपन	१३२
न जामये तान्वो	११६१
न त इंद्र सुमतयो	२१३८
न तं जिनन्ति बहवो	१५९२
न तमंहो न दुरितानि	३१७८
न ते अंतः शवसो	१९६६
न ते गिरो अपि मृष्ये	२१७५
न ते त इंद्राभ्य०	१७१९
न ते दूरे परमा	१२२९
न ते वर्तास्ति राधस	३५७
न ते सव्यं न दक्षिणं	१७९४
न त्वा गभीरः	१२९७
न त्वा देवास आशत	९८४
न त्वा बृहन्तो अद्रयो	८९६
न त्वा वरन्ते अन्यथा	१६५१
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो	२२५७
नदं व ओदतीनां	२३०५
नदं न भिन्नममुया	७११
न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते	२२५५
न द्याव इंद्रमोजसा	२५७
न नूनमस्ति नो	१०५१
न नूनं ब्रह्मणामृणं	१९५
न पञ्चाभिर्दशभिर्वष्ट्यारभं	१७३१
न पातो दुर्गहस्य	६११
न पापासो मनामहे	५५८
न म इंद्रेण सख्यं	११९७
न मत् स्त्री सुभसत्तरा	२६४५
न मा तमन्न	१२३२
न यं विविक्तो रोदसी	३११
न यं शुक्रो न दुराशीर्न	१२०
न यं हिंसन्ति धीतयो	२०२३
न यं जरन्ति शरदो	१९३४
न यं दुध्रा वरन्ते	६१४
नयसीद्वति द्विषः	२०६५
न यस्य ते शवसान	२२९८
न यस्य देवा देवता	९७१
न यस्य द्यावापृथिवी अनु	७७३
न यस्य द्यावापृथिवी न	२६६७
न यस्य वर्ता जनुषा	१५३९
न यातव इंद्र	२१६५
न ये दिवः पृथिव्या	७३९
न रेवता पणिना	१५९४
नवग्वासः सुतसोमास	१६७८
नव यदस्य नवतिं	१६७१
नव यो नवतिं	२४३१
न वा उ मां वृजने	२४९५
न वा उ सोमो वृजिनं	३११०
न वीळवे नमते	१९३५
न वेपसा न तन्यतेन्द्रं	९११
न स राजा व्यथते	१७५३
न सीमदेव आपदिषं	२३२७
न सेशे यस्य रम्बते	२६५५
न सेशे यस्य रोमशं	२६५६
स सोम इंद्रमसुतो	२११८
नहि ते शूर राधसो	१८२७
नहि त्वा रोदसी उभे	६५
नहि त्वा शूर देवा	६७१

नहि त्वा शूरो न १९४२
नहि नु ते महिमनः १९५७
नहि नु यादधीमसींद्र ९१४
नहि मे अक्षिपच्चना० २८५५
नहि मे रोदसी उभे २८५६
नहि वां वव्रयामहे ३१०२
नहि षस्तव नो मम २१५
नहि ष्मा ते शतं चन १६३८
नहि स्थूर्यृतुथा २७७५
नह्यङ्ग नृतो त्वदन्यं १८०१
नह्यङ्ग पुरा चन १८०४
नह्यन्यं बळाकरं ६६१
नाधस आ दधृषते २८८८
नाना हि त्वा हवमाना ८३२
नामानि ते शतक्रतो १३३६
नास्मै विद्युन्न तन्यतुः ७२७
नाहं तं वेद य इति २४९३
नाहमतो निरया १५१०
नाहमिन्द्राणी रारण २६५१
निखातं चित्रः पुरुसंभृतं ६१६
नि गव्यता मनसा १२६८
नि गव्यवोऽनवो २१३२
नि तद्दधिषेऽवरं २६७०
नि तिग्मानि भ्राशयन् २७५९
नि दुर्ग इंद्र श्नथि० २१९३
निधीयमानमपगू० २५३५
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन् ११०८
नि यद् वृणक्षि ७९०
नियुत्वाना नियुतः ३१३८
नि येन मुष्टिहत्यया ३९
निरग्नयो रुरुचुर्निरु १७५
निरमुं नुद ओकसः २८९६
निराविध्यद् गिरिभ्य ६४५
निरिन्द्र बृहतीभ्यो १७४
निरिन्द्र भूम्या अधि ९०३
निर्हस्तः शत्रुरभिदास० २८९०
निर्हस्ताः संतु शत्रवो २८९२
निवेशनः संगमनो २९२१
नि शुष्ण इंद्र धर्णसिं २५६
नि षीमिदत्र गुह्या १३४७
नि षु सीद गणपते २७४३
नि पू नमातिमतिं १००४
नि ष्वापया मिथूदृशा ६९४
निष्षिध्वरीरोषधीराप ३२०३
नि सर्वसेन इषुधीरस ७३२
नि सामनामिषिरामिंद्र १२४६
नीचावया अभवद् ७२३
नू अन्यत्रा चिदद्रिव० १८००
नू इत्था ते पूर्वथा १०३१
नू इंद्र राये वरीव० २२०७
नू इंद्र शूर स्तवमान २१५०
नू गृणानो गृणते १९८७
नू चित् स भ्रेषते २१५६
नू चिन्न इंद्रो मघवा २२०६
नू चिन्नु ते मन्यमानस्य २१७८
नू त आभिरभिष्टिभि० १७५९
नूत्ना इदिंद्र ते ४१५
नू न इंद्रावरुणा गृणाना ३१६८
नूनं सा ते प्रति ११२१;११७१;११८०;
११८९;११९८;१२०७;१२१६
नूनं तदिंद्र दद्धि ३१५
नूनं न इंद्रापराय २०२०
नू ष्टुत इंद्र नू १४८७;१५०८;१५३२;
१५४३;१५५४;१५६५;१५७६;१५८७
नृणामु त्वा नृतमं १४३७
नृभिर्धूतः सुतो ११७
नृवत् त इंद्र नृतमाभिरूती १८८०
नेमिं नमन्ति चक्षसा ९८७
न्यर्बुदस्य विष्टपं १८१
न्यस्मै देवी स्वधिति० १७१४
न्याविध्यदिलीबिशस्य ७४१
न्यू षु वाचं प्र महे ७७५
पुताति कुण्डृणाच्या ६९७
पतिर्भव वृत्रहन्त्सूनृतानां १२७७
पत्तो जगार प्रत्यञ्चमत्ति २५०३
पत्नीवन्तः सुता इम २४५१
पद्या पणीरराधसो ५९०
पन्य आ दर्दिरच्छता १९७
पन्य इदुप गायत १९६
पन्यं पन्यमित् सोतार १४०
पपृक्षेण्यमिन्द्र १७२२
पप्राथ क्षां महि १८४७
पयसा शुक्रममृतं २९४२
परः सो अस्तु तन्वा ३१८८
परमां तं परावत० २८९७
पराकात्ताच्चिदद्रिवस्त्वां २४२३
परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त ७३४
परा णुदस्व मघवन्नमित्रान् २२५१
परा पूर्वेषां सख्या २११५
परायतीं मातर० १५११
परा याहि मघवन्ना १४५७
परा हीन्द्र धावसि १६४१
परि त्वा गिर्वणो गिर ६२
परि यदिन्द्र रोदसी ७३८
परि वर्त्मानि सर्वत २८९३
परीं घृणा चरति ७६५
परीमे गामनेषत २९७२
परेहि विग्रमस्तृत० ७
परोमात्रमृचीषम० २११६
परो यत् त्वं परम १६८६
पर्शुर्ह नाम मानवी २६६१
पात न इंद्रापूषणा० ३३३६
पाता वृत्रहा सुतमा १४१
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु १९२०;२०५०
पान्तमा वो अंधस २३९७
पारावतस्य रातिषु ४४१
पार्षद्वाणः प्रस्कण्वं समसादय ५०६
पाहि गायान्धसो मद २१३
पाहि न इंद्र सुष्टुत १०१०
पित्रे चिच्चक्रुः सदनं १२७१
पिपीळे अंशुर्मद्यो १५६२
पिब स्वधैनवानामुत १९९
पिबा त्वस्य गिर्वणः ११२
पिबापिबेदिन्द्र शूर ११११; २४८०
पिबा वर्धस्व तव १३२५
पिबा सुतस्य रसिनो १५६

पिबा सोममभि १८४१
पिबा सोममिन्द्र मंदतु ११७१
पिबा सोममिंद्र सुवान १०१२
पिबा सोमं मदाय २३३८
पिबा सोमं महत २७५५
पिबेदिन्द्र मरुत्सखा ६३६
पिशङ्गभृष्टिमम्भृणं १०३८
पीत्वानं मेषमपचन्त २५०७
पुत्रमिव पितरा० २९६१
पुनरेहि वृषाकपे २६६०
पुनीषे वामरक्षसं ३१९७
पुरंदारा शिक्षतं ३०२८
पुरां भिन्दुर्युवा ७३
पुरा संबाधादभ्या ११७९
पुरुकुत्सानी हि ३१५९
पुरुष्टुतस्य धामभिः १३३७
पुरुहूतं पुरुष्टुतं २३९८
पुरुहूतो यः पुरुगूर्त २०११
पुरूणि हि त्वा सवना २६७७
पुरूतमं पुरूणां स्तोतॄणां २०८८
पुरूतमं पुरूणामीशानं ६५
पुरू यत् त इन्द्र सन्त्युक्था १७२०
पुरोळा इत् तुर्वशो ११२४
पुरोळाशं सनश्रुत १४४९
पुरोळाशं च नो घसो १४४८; १६६०
पुरोळाशं नो अन्धस ६५१
पुरोळाशं पचत्यं १४४७
पुष्यात् क्षेमे अभि १७५४
पूर्णा दर्वि परा २९१९
पूर्वीरस्य निष्षिधो १४३८
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो ७२
पूर्वीरुषसः शरदश्च १५२९
पूर्वीश्चिद्धि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो ६२४
पूर्वीष्ट इन्द्रोपमातयः ३१०९
पूषण्वते ते चकृमा १४५२
पृथक् प्रायन् प्रथमा २५७३
पृथू करस्ना बहुला १८७३
पृदाकुसानुर्यजतो ४०८
पृषध्रे मेध्ये मातरिश्वनीन्द्र ५१६
पौरो अश्वस्य पुरुकृद् ५५३
प्र कृतान्यृजीषिणः १८०
प्र घा न्वस्य महतो ११६१
प्र चक्रे सहसा सहो २३३
प्र चर्षणिभ्यः पृतना० ३०२६
प्रजाभ्यः पुष्टिं ११४०
प्रजामृतस्य पिप्रतः २४४
प्रणीतिभिष्टे हर्यश्व २७०७
प्रणेतारं वस्यो अच्छा ३९१
प्र त इन्द्र पूर्व्याणि २७४१
प्र तत् ते अद्या करणं १८६८
प्र तद् वोचेयं २००५
प्र तमिन्द्र नशीमहि २५१
प्रति घोराणामेता० २०४९
प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च ३३०२
प्रति ते दस्यवे वृक ५४४
प्रति त्वा शवसी ४४७
प्रति धाना भरत १४५३
प्रति प्र याहीन्द्र १०४८
प्रति यत् स्या नीथादर्शि ८५१
प्रति श्रुताय वो धृषत् १८३
प्रति स्परेथां तुजय० ३१८४
प्र तुविद्युम्नस्य १८६७
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः १४४५
प्र ते अस्या उषसः २५१६
प्र ते नावं न समने ११७८
प्र ते पूर्वाणि करणानि १५३१; १६९८
प्र ते बभ्रू विचक्षण १६६६
प्र ते वोचाम वीर्या १६५४
प्रत्नं रयीणां युजं २०७८
प्रत्नवज्जनया गिरः ३२७
प्रत्यस्मै पिपीषते १९९८
प्र नु वयं सुते या १६८४
प्र नु वोचा सुतेषु वां ३०४६
प्र नूनं धावता ९९७
प्र नेमस्मिन् ददृशे २५८८
प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं २३०४
प्रप्रा वो अस्मे १००७
प्र ब्रह्माणि नभाकव० ३१०५
प्रभंगं दुर्मतीनामिन्द्र १८३५
प्रभङ्गी शूरो मघवा ५६५
प्रभर्ता रथं गव्यन्तमपाकाच्चिद् १५०
प्र मंहिष्ठाय बृहते ८११
प्र मन्दिने पितुमदर्चता ८१७
प्र मन्महे शवसानाय ८७१
प्र मात्राभी रिरिचे १४११
प्र मे नमी साप्य २५८७
प्र यत् सिन्धवः १३१८
प्र यदित्था महिना १०६१
प्र यन्ति यज्ञं विप० २१६१
प्र यमन्तर्वृषसवासो २५५३
प्र या जिगाति खर्गलेव ३१९४
प्र ये गृहादममदुस्त्वाया २१३९
प्र ये मित्रं प्रार्यमणं २६७०
प्र यो ननक्षे अभ्योजसा ५११
प्र व इंद्राय बृहते २३८६
प्र व इन्द्राय मादनं ११२३
प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय २९८९
प्र व उग्राय निष्टुरे २०६
प्र वः पान्तमन्धसो ३३०३
प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय ११७२
प्रवता हि क्रतूनामा १६३४
प्र वर्तय दिवो अश्मा० २९८७; ३१९६
प्रवाच्यं शश्वधा १३००
प्र वाता इव दोधत २८५१
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो ३०३४
प्र वामश्नोतु सुष्टुति० ३१४१
प्र वीरमुग्रं विविचिं ५००
प्र वोऽच्छा रिरिचे २५३४
प्र वो महे मन्दमाना० २६०१
प्र वो महे महि नमो ८७३
प्र वो महे महिवृधे ११३१
प्र सस्रगुमृतधीतिं १८४७
प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं ३८१
प्र सम्राजे बृहते मन्म ३१६९
प्र ससाहिषे पुरुहूत २८३९
प्र सु ग्मन्ता धियसानस्य २५३०
प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा ४९५

प्र सु स्तोमं भरत ९९३
प्र सू त इन्द्र प्रवता १२४३
प्रसूतो भक्षमकर २८३१
प्र सोता जीरो अध्वरेषु ३२४१
प्र स्तोषदुप गासिषच्छ्रवत् ६७४
प्र हि क्रतुं वृहथो ३०७०
प्र हि रिरिक्ष ओजसा ८९८
प्र शोशुचत्या उषसो २६७३
प्र श्येनो न मदिरमंशुमस्मै १८८९
प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र २६७२
प्राग्रुवो नभन्वो १५२८
प्राच्या दिशस्त्वमिन्द्रासि २९०४
प्रातर्यावभिरा गतं ३०९७
प्राता रथो नवो ११९०
प्रान्यच्चक्रमवृहः १६७३
प्राव स्तोतारं मघवन्नव १७५०
प्रास्तौदृष्वौजा ऋष्वेभि० २७१९
प्रास्मै गायत्रमर्चत ९४
प्रिया तष्टानि मे २६४४
प्रियास इत् ते २१४७
प्रेता जयता नर २७०२
प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ १७७६
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा २२८३
प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवच० २७६३
प्रेरय सूरो अर्थं २५१९
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि ९०२
प्रो अस्मा उपस्तुतिं ५६६
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण २७०५
प्रो द्रोणे हरयः १५७४
प्रोष्ठेशया वह्येशया २२७७
प्रो ष्वस्मै पुरोरथ० २५७८

बळित्था महिमा ३०४७

बळृत्वियाय धाम्न ५८८
बर्हिर्वा यत् स्वपत्याय ९३६
बलविज्ञायः स्थविरः २६९५
बाधसे जनान् वृषभेव २०९३
बिभया हि त्वावत ४७७
बीभत्सूनां सयुजं ३२७७

बृबदुक्थं हवामहे १८९
बृहत् स्वश्चन्द्रममवद् ७६८
बृहदिन्द्राय गायत २३८४
बृहन्त इन्नु ये ११९६
बृहन्नच्छायो अपलाशो २५०४
बृहन्निदिध्म एषां ४४४
बृहस्पत इन्द्र वर्धतं ३३२४
बृहस्पतिर्नः परि २५५६; २५६७; २५७८; ३३२८
बृहस्पते तपुषाश्नेव १२३०
बृहस्पते परिदीया २९३२
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च ३३२५
बोधा सु मे मघवन् २१७३
बोधिन्मना इदस्तु २४४७
ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा १३१५
ब्रह्मन् वीर ब्रह्मकृतिं २२१४
ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि २२०८
ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं २०६६
ब्रह्माणस्त्वा वयं ३९६
ब्रह्माणि मे मतयः शं २९६९; ३२५३
ब्रह्माणि हि चकृषे १९२३
ब्रह्मा त इंद्र गिर्वणः २३९३

भगो न चित्रो अग्नि० २९९०
भद्रमिदं रुशमा ३३३७
भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं २४५७
भद्रा ते हस्ता सुकृतोत १५५२
भद्रा वरूथं मघवन् २२४१
भिनत् पुरो नवतिमिन्द्र १०१७
भिनद् गिरिं शवसा १४९०
भिनद् वलमङ्गिरोभि० ११६९
भिन्धि विश्वा अप ४८२
भीमो विवेषायुधे० २१६४
भुवस्त्वमिन्द्र ब्रह्मणा २६०४
भुवो जनस्य दिव्यस्य १९१५
भुवोऽविता वामदेवस्य १४८४
भूय इद् वावृधे १९६८
भूयसा वस्नमचरत्. १५८५
भूयाम ते सुमतौ १५७
भूयामो षु त्वावतः १६५०

भूरिकर्मणे वृषभाय ८४४
भूरि चकर्थ युज्येभिरस्मे ३२५६
सूरिभिः समह २३३४
भूरित इंद्र वीर्यं ८१५
भूरि दक्षेभिर्वचने० २७५३
भूरिदा भूरि देहि १६६४
भूरिदा ह्यसि श्रुतः १६६५
भूरि हि ते सवना २१७६
भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्त० २४६५
भूरिदिन्द्रस्य वीर्यं ५३९
भृमिश्चिद् घासि १६४६
भोजं त्वामिन्द्र वयं ११८८
मंहिष्ठं वो मघोनां १७६३
मक्षू ता त इन्द्र दाना० २४७६
मखस्य ते तविषस्य १३०१
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु २२४९
मतयः सोमपामुरुं १३७७
मत्सि नो वस्यइष्टय १०८५
मत्स्यपायि ते महः १०७९
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः ५०
मत्स्वा सुशिप्र हरि० २३६७
मदेनेषितं मदमुग्रमुग्रेण १०७
मदेमदे हि नो ददिर्यूथा ९२१
मनसस्पत इमं नो ३११७
मनीषिणः प्र भरध्वं २७२५
मनुष्वदिन्द्र सवनं १२८६
मन्त्रमखर्वं सुधितं २२४७
मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो २३२
मन्दमान ऋतादधि २६१७
मन्दस्वा सु स्वर्णर २८१
मन्दिष्ट यदुशने ७५५
मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य १९८३
मन्ये त्वा यज्ञियं २३४८
ममच्चन ते मघवन् १५१७
ममच्चन त्वा युवतिः १५१६
मम ब्रह्मेन्द्र ११९६
ममत्तु त्वा दिव्यः २७५७
मम त्वा सूर उदिते ११५
मरुत्वन्तं वृषभं १४१८; १८८१

मरुत्वन्तं हवामह	३२४७
मरुत्वन्तमृजीषिण०	६३२
मरुत्वाँ इन्द्र मीढ्वः	६३४
मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो	१४१४
मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य	८२७
मह उग्राय तवसे	२३५४
महः सु वो अरमिषे	१८३३
महत् तन्नाम गुह्यं	२६१५
महश्चित् त्वमिन्द्र	१०४३
महाँ अमत्रो वृजने	१३२६
महाँ असि महिष	१४१०
महाँ इन्द्रः परश्च	४२
महाँ इन्द्रो नृवदा	१८७१
महाँ इन्द्रो य ओजसा	२४३
महाँ२ ऽ इंद्रो वज्रहस्तः	२९६६
महाँ उग्रो वावृधे	१३२७
महाँ उतासि यस्य	२२२९
महाँ ऋषिर्देवजा	१४६१
महान्तं महिना वयं	३१०
महि क्षेत्रं पुरु	१२७४
महि ज्योतिर्निहितं	१२५१
महि महे तवसे	१७१७
मही द्यौः पृथिवी च	२९१७
मही यदि धिषणा	१२७२
महीरस्य प्रणीतयः	३०८; २०६२
महे चन त्वामद्रिवः	९१
महे शुल्काय वरुणस्य	३१७७
महो द्रुहो अप विश्वायु	१८८८
महोभिरेताँ उप	३२५४
महो महानि	१३०६
महो यस्पतिः शवसो	२४६८
मह्यं त्वष्टा वज्रमत०	२५८१
मह्या ते सख्यं वश्मि	१२७३
मा कस्य नो अररुषो	३०८६
माकिर्न एना सख्या	२४८७
माकुध्र्यगिन्द्र शूर	२४७७
मा चिदन्यद् वि शंसत	८७
मा च्छेद्म रश्मीँरिति	३०२३
मा जस्वने वृषभ	२०४६
मा ते अमाजुरो यथा	४२३
मा ते अस्यां सहसावन्	२१४६
मा ते गोदत्र निरराम	४२४
मा ते राधांसि मा त	९५६
मा ते हरी वृषणा	१३१६
मा त्वा मूरा अविष्यवो	४६५
मा त्वा सोमस्य गल्दया	१०६
मात्रे नु ते सुमिते	२५२०
मादयस्व सुते सचा	९२३
मादयस्व हरिभिर्ये	८०६
माध्यंदिनस्य सवनस्य	१४५०
मा न इन्द्र पीयत्नवे	१३०
मा न इन्द्र परा	९८२
मा न इंद्राभ्यादिशः	२४२७
मा न एकस्मिन्नागसि	४७६
मा नो अज्ञाता वृजना	२२६१
मा नो अस्मिन् मघवन्	७८६
मा नो गुह्या रिप	३३५०
मा नो निदे च वक्तवे	२२२७
मा नो मर्ता अभि	२३
मा नो मर्धीरा भरा	१५४२
मा नो रक्षो अभि नड्या०	३३००
मा नो वधीरिन्द्र मा	८५४
मां धुरिन्द्रं नाम	२५९१
मा पापत्वाय नो	३०८१
मा भूम निष्ट्या इवेन्द्र	९९
मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य	२३५
मायाभिरिन्द्रमायिनं	७६
मायाभिरुत्सिसृप्सत	३६७
मारे अस्मद् वि मुमुचो	१३८०
मा सख्युः शूनमा	४७८
मा सोमवद्य आ भागुर्वा	६६८
मा स्रेधत सोमिनो	२२४३
मिहः पावकाः प्रतता	१२७९
मुखं सदस्य शिर ऽ इत्	२९४६
मुञ्चामि त्वा हविषा	३११३
मुषाय सूर्यं कवे	१०८९
मूढा अमित्राश्चरता०	२८९४
मूषो न शिश्ना व्यदन्ति	२५४०
मृगो न भीमः कुचरो	२८४०
मेडिं न त्वा वज्रिणं	२९८३
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयु०	२४२६
मो षु त्वा वाघतश्चना०	२२३५
मो षू ण इन्द्रात्र	१०६७
मो ष्वद्य दुर्हणावान्	१३५
य आनयत् परावतः	२०६०
य आयुं कुत्समतिथिग्वमर्दयो	५२६
य आस्ते यश्च चरति	२२७५
य इन्दु आविवासति	३०६६
य इन्द्र चमसेष्वा	६८५
य इन्द्र यतयस्त्वा	२६०
य इन्द्र शुष्मो मघवन्	२२०४
य इन्द्र सस्त्यव्रतो	९७८
य इन्द्राय सुनवत्	१५८३
य इन्द्र सोमपातमो	२८८
य इन्द्राग्नी चित्रतमो	३००८
य इन्द्राग्नी सुतेषु वां	३०४९
य इमे रोदसी उभे	१४६४
य इमे रोदसी मही	२५९
य उक्था केवला दधे	५१७
य उक्थेभिर्न विन्धते	५०७
य उग्रः सन्ननिष्टृतः	२१८
य उग्रीणामुग्रबाहुर्ययुर्यो	२८६८
य उदचीन्द्र देवगोपाः	७८९
य उद्नः फलिगं भिनन्न्यक्	२०४
य उशता मनसा सोममस्मै	२८२६
य ऋक्षादंहसो	१८१६
य ऋज्रा वातरंहसो	४४१
य ऋते चिद् गास्पदेभ्यो	१५४
य ऋते चिदभिश्रिषः	९८
य ऋष्वः श्रावयत्सखा	१८२८
य एक इच्च्यावयति	१४९२
य एक इत् तमु	२०७५
य एक इद्धव्यश्चर्षणीना०	१९०७
य एक इद् विदयते	९४३
य एकश्चर्षणीनां	३६
य एको अस्ति	११३
य ओजिष्ठ इन्द्र तं सु	२०१६
यं युवं दाश्वध्वराय	३१६६
यं वर्धयंतीद्	२०४०

यं विप्रा उक्थवाहसो० ३००
यं वृत्रेषु क्षितय २९८५
यं सुपर्णः परावतः २८०१
यं सोममिन्द्र पृथिवी० १४१३
यं स्मा पृच्छन्ति ११२६
यः कुक्षिः सोमपातमः ४४
यः कृन्तदिद् वि ४७२
यः पुष्पिणीश्च ११४३
यः पृथिवीं व्यथमानाम० ११२३
यः प्रथमः कर्मकृत्याय २८७२
यः शक्रो मृक्षो अश्व्यो ६१५
यः शग्मस्तुविशग्म २०३७
यः शम्बरं पर्वतेषु ११३२
यः शश्वतो मह्येनो ११३१
यः शूरेभिर्हव्यो यश्च ८२२
यः संस्थे चिच्छतक्रतुरादीं १९०
यः संग्रामान्नयति २८७३
यः सप्तरश्मिर्वृषभ० ११३३
यः सत्राहा विचर्षणि० २०९२
यः सुन्वते पचते ११३६
यः सुन्वन्तमवति ११३५
यः सुपव्यः सुदक्षिण २१४
यः सृबिन्दुमनर्शनिं १८१
यं क्रन्दसी संयती ११२९
यच्चिद्धि ते अपि ४६१
यच्चिद्धि त्वा जना ८९
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र ६०७; १६५७
यच्चिद्धि सत्य सोमपा ६९२
यच्छक्रासि परावति ३३५; ९७९
यच्छुश्रूया इमं हवं ४६०
यजध्वैनं प्रियमेधा १५२
यजाम इन्द्रमसा १२८८
यजामह इन्द्रं २४८१
यज्ञायथा अपूर्व्य २३८८
यज्ञायथास्तदहस्य १४२०
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् ३५८
यज्ञ यज्ञं गच्छ ३१२४
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा ३०९१
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं ३०७
यज्ञे दिवो नृषदने २२७८
यज्ञेन गातुमप्तुरो १२२१
यज्ञेनेन्द्रमवसा ११९४
यज्ञैरथर्वा प्रथमः ९३५
यज्ञो हि त इन्द्र ११९३
यज्ञो हि ष्मेन्द्रं १०६६
यत इन्द्र भयामहे ५६०
यत् तुदत् सूर ९७
यत् ते दित्सु प्राध्यं १७६२
यत् त्वा यामि दद्धि २८४९
यत् पाञ्चजन्यया ५८४
यत्र ग्रावा पृथुबुध्न ६८८
यत्र देवाँ ऋघायतो १६१३
यत्र द्वाविव जघनाधिषवण्या ६८९
यत्र नार्यपच्यवमुपच्यवं ६९०
यत्र मन्थां विबध्नते ६९१
यत्र शूरासस्तन्वो २२०१
यत्रा नरः समयन्ते ३१८३
यत्रोत बाधितेभ्य० १६१२
यत्रोत मर्त्याय १६१४
यत् सानोः सानुमारुहद् ५९
यत् सोम आ सुते ३०८८
यत् सोममिन्द्र ३०३
यथा कण्वे मघवन् ५०४
यथा गौरो अपा कृतं २३१
यथा मनौ विवस्वति ५१५
यथा मनौ सांवरणौ ५०५
यथा वृक्षमशनि २९०६
यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य १०८४; १०९०
यथा प्रावो मघवन् ४९४
यदङ्ग तविषीयस २६८
यदचरस्तन्वा वावृधानो २६०९
यदज्ञातेषु वृजनेष्वासं २४९४
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा २४३३
यदद्य त्वा प्रयति ३११०
यदन्तरा परावत० १३७२
यदग्रं प्रथमं ३०१३
यदर्जुन सारमेय २२७१
यदस्य धामनि प्रिये ३१९
यदस्य मन्युरध्वनीद् २५५
यदाजिं यात्याजिकृदिन्द्रः ४४९
यदा ते मारुतीर्विश० ३१६
यदा ते विष्णुरोजसा ३१४
यदा ते हर्यता हरी ३१५
यदा वज्रं हिरण्यमिदथा २४८३
यदा वृत्रं नदीवृतं ३१३
यदा समर्यं व्यचे० १५८४
यदा सूर्यममुं दिवि ३१७
यदि क्षितायुर्यदि ३११४
यदिन्द्र चित्र मेहना १७६०
यदिन्द्र ते चतस्रो १७३७
यदिन्द्र दिवि पार्ये १९९२
यदिन्द्र नाहुषीष्वाँ २०९६
यदिन्द्र पूर्वो अपराय २१५७
यदिन्द्र पृतनाज्ये ३११
यदिन्द्र प्रागपागुदङ् २२९; ६०१
यदिन्द्र मन्मशस्त्वा ३८०
यदिन्द्र यावतस्त्व० २२५२
यदिन्द्र राधो अस्ति ५३५
यदिन्द्र शासो अव्रतं १९८२
यदिन्द्र सर्गे अर्वत० २१०२
यदिन्द्राग्नी अवमस्यां ३०१६
यदिन्द्राग्नी उदिता ३०१९
यदिन्द्राग्नी जना ३१०७
यदिन्द्राग्नी दिवि ३०१८
यदिन्द्राग्नी परमस्यां ३०१७
यदिन्द्राग्नी मदथः ३०१४
यदिन्द्राग्नी यदुषु ३०१५
यदिन्द्राहं यथा ३५४
यदिन्द्राहन् प्रथमजामहीना ७१८
यदिन्द्रो अनयद्रितो ३३३३
यदिन्निन्द्र पृथिवी ७७०
यदि प्रवृद्ध सत्पते १९५
यदि मे रारणः सुत १८५
यदि मे सख्यमावरं ३४१
यदि वाहमनृतदेवो ३२९१
यदि स्तोमं मम १०१
यदीं सुतास इन्दवो ४९७
यदीं सोमा बभ्रुधूता १६९१
यदीदहं युधये संनया० २४९१

यदीमिन्द्र श्रवाय्यमिषं १७५६
यदी सुतेभिरिन्दुभिः २०००
यदुदञ्चो वृषाकपे २६६१
यदुदीरत आजयो ९१८
यदुष औच्छः प्रथमा २६१७
यद् दधिषे प्रदिवि २२८०
यद् दधिषे मनस्यसि ४७३
यद् याव इन्द्र ते २३१५
यद्ध नूनं परावति ५०१
यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे ४९१
यद्ध स्या त इन्द्र १०९६
यद् योधया महतो २२८२
यद्वर्चो हिरण्यस्य २१९५
यद्वा तृक्षौ मघवन् २०९७
यद्वा दक्षस्य बिभ्युषो १९१९
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते २४३४
यद्वा प्रस्रवणे दिवो ६०२
यद्वा मरुत्वः परमे ८२४
यद्वा रुमे रुशमे २३०
यद्वावन्थ पुरुष्टुत ६१७
यद्वावान पुरुतमं २६३९
यद्वा शक्र परावति ३०४
यद्वासि रोचने दिवः ९८०
यद्वासि सुन्वतो वृधो ३०५
यद्वीळाविन्द्र यत् ४८३
यद् वृत्रं तव चाशनिं ९११
यं ते श्येनः पदाभरत् ६८७
यं ते श्येनश्चा० २८०२
यं ते स्वदावन्स्वदन्ति ४९९
यं त्वं रथमिन्द्र १०००
यन्न इन्द्रो जुजुषे १५५५
यं नु नकिः पृतनासु १४२५
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र १७६१
यमा चिदत्र १३५७
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं ९७७
यमिमं त्वं वृषाकपिं २६४३
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः १७६
यश्चर्षणिप्रो वृषभः २८६३
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य ९४५
यस्त इन्द्र प्रियो जनो २१५८
यस्त इन्द्र महीरपः २५८
यस्ता चकार स १९००
यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो २१४०
यस्ते अनु स्वधामसत् १४४४
यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो २९०१
यस्ते चित्रश्रवस्तमो २४१३
यस्ते नूनं शतक्रत २४१२
यस्ते मदः पृतनाषाळमृध्र १८७७
यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति २१७२
यस्ते मदो वरेण्यो १८२४
यस्ते रथो मनसो २७३६
यस्ते रेवाँ अदाशुरिः ४५७
यस्ते शृङ्गवृषो ४०६
यस्ते साधिष्ठोऽवस १७३६
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ५३१
यस्त्वतिर्वार्याणामसि २४९०
यस्मा अन्ये दशप्रति १७८
यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानृचु० ५०८
यस्मादिन्द्राद् बृहतः ११७३
यस्मान्न ऋते विजयन्ते ११३०
यस्मान्न जातः परो० २९२८
यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति ३८३
यस्मिन् वयं दधिमा २५५१
यस्मिन् विश्वा अधि २४१६
यस्मिन् विश्वाश्चर्षणय १४८
यस्मै त्वं मघवन्निंद्र ५२२
यस्मै त्वं वसो दानाय ५१०; ५२०
यस्मै धायुरदधा १२४४
यस्य गा अन्तरश्मनो २००४
यस्य गावावरुषा १९६१
यस्य जुष्टिं सोमिनः २८७१
यस्य तीव्रसुतं २००३
यस्य ते नू चिदादिशं २४४०
यस्य ते महिना महः २२९३
यस्य ते विश्वमानुषो ४८४
यस्य ते स्वादु सख्यं २३०१
यस्य त्यच्छम्बरं २००२
यस्य त्यत् ते महिमानं २७३८
यस्य त्वामिंद्र स्तोमेषु ५१८
यस्य द्यावापृथिवी ८१९
यस्य द्विबर्हसो ३७०
यस्य मंदानो अन्धसो २००५
यस्य वशास ऋषभास २८७०
यस्य विश्वानि हस्तयोः १०८७
यस्य विश्वानि हस्तयोरूचु० २०६७
यस्य शश्वत् पपिवाँ २७३९
यस्य संस्थे न वृण्वते १७
यस्याजस्रं शवसा ९७०
यस्यानक्षा दुहिता २५०१
यस्यानाप्तः सूर्यस्येव ९५८
यस्यानूना गभीरा ३८५
यस्यामितानि वीर्या३ १८१०
यस्यायं विश्व आर्यो ५१३
यस्यावधीत् पितरं १७३०
यस्याश्वासः प्रदिशि ११२८
यस्येदमा रजो युज० २८८७; १९९३
याँ आभजो १३२०
या इंद्र प्रस्वस्त्वा २६२
या इंद्र भुज आभरः ०७६
या त ऊतिरमित्रहन् २०७३
या त ऊतिरवमा १९३८
या ते काकुत् सुकृता १९९४
यानावह उशतो देव ३१२२
यानीन्द्राग्नी चक्रथुर्वीर्याणि ३०१२
या नु श्वेताववो ३१०८
या पृतनासु दुष्टरा ३०४१
याभ्यामजयन्त्स्वरग्र ३१३२
यामथर्वा मनुष्पिता ९१५
यावती द्यावापृथिवी २९७४
यावत् तरस्तन्वो ३२३७
यावदिदं भुवनं ३००९
या वां सन्ति पुरुस्पृहो ३०६३; ३२२९
या वां शतं नियुतो ३२३९
या विश्वासां जनितारा ३३०७
या वीर्याणि प्रथमानि २७५१
या वृत्रहा परावति ४६७
यासां तिस्रः पञ्चाशतो १०३७
यासि कुत्सेन सरथ० १४७७
युक्तस्ते अस्तु दक्षिण ९२९

युक्ष्वा हि केशिना हरी	६०
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम	६७२
युजं हि मामकृथा	१६८९
युजा कर्माणि जनयन्	२६११
युजानो अश्वा वातस्य	२४६९
युजानो हरिता रथे	२११७
युजे रथं गवेषणं	२१८२
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं	२४
युञ्जन्ति हरी इषि	२३७२
युञ्जन्त्यस्य काम्या	२५
युधा युधमुप घेदेषि	७८१
युधेन्द्रो मह्ना	१३०७
युध्मं सन्तमनर्वाणं	२४०४
युध्मस्य ते वृषभस्य	१४०९
युध्मो अनर्वा खज	२१५३
युनज्मि ते ब्रह्मणा	९३०
युयोप नाभिरुपरस्यायोः	८५०
युवँ सुराममश्विना	२९६०
युवं तमिन्द्रापर्वता	१०३३
युवं प्रत्नस्य साधथो	१३५३
युवां हवन्त उभयास	३१८७
युवाकु हि शचीनां	३१३७
युवां नरा पश्यमानाम	३१८२
युवामिद्ध्यवसे	३१५२
युवामिद् युत्सु	३१७५
युवामिन्द्राग्नी वसुनो	३०२५
युवाभ्यां देवी	३०२४
युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति	३१९३
ये क्रिमयः शितिकक्षा	२८७८
ये गव्यता मनसा	२०९९
ये च पूर्व ऋषयो	२१७९
ये चाकनन्त चाकनन्त	१७०४
ये ते पन्थानोऽव	२९१२
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः	२३०७
ये ते वृषणो वृषभास	१०९२
ये ते शुष्मं ये	१२८४
ये ते सन्ति दशग्विनः	९५
ये त्वामिंद्र न	२५४
ये त्वाहिहत्ये मघवन्	१४१७
येन ज्योतींष्यायवे	३७३
येन मानासश्चितयन्त	३२६७
येन वृद्धो न शवसा	२०३८
येन सिन्धुं महीरपो	२९०
येन सूर्यां सावित्री	२९००
येना दशग्वमध्रिगुं	२८९
येना समुद्रमसृजो	१६५
येनेमा विश्वा च्यवना	११२५
ये पाकशंसं विहरन्त	३२८६
ये पातयन्ते अज्मभिः०	१८३४
येभिः सूर्यमुषसं	१८४५
ये वायव इंद्रमादनास	३२४२
येवाषासः कष्कषास	२८८०
ये सोमासः परावति	२४३५
यो अक्ष्यौ परिसर्पति	२८७६
यो अद्धाज्ज्योतिषि	२३१३
यो अप्सु चन्द्रमा इव	६८६
यो अर्यो मर्तभोजनं	९२१
यो अश्वानां यो गवां	८२०
यो अस्मै घ्रंस उत	१७२९
यो गृणतामिदासिथा०	२०७६
यंगेयोगे तवस्तरं	७०५
यो जात एव प्रथमो	११२१
यो दभ्रेभिर्हव्यो	२५४४
यो दुष्टरो विश्ववार	१८२५
यो देवो देवतमो	१५५७
योद्धासि क्रत्वा शवसोत	८९७
यो धृषितो योऽवृतो	२१५
यो न इदमिदं पुरा	४१७
यो न इंद्राभितो	२७८१
यो न इंद्राभिदासति	२७८२
यो नः शश्वत् पुराविथा०	६६२
यो नार्मरं सहवसुं	११४४
योनिष्ट इंद्र निषदे	८४७
योनिष्ट इंद्र सदने	२१८६
यो नो दाता वसूनामिन्द्रं	५०९
यो नो दाता स नः	५१९
यो नो दास आर्यो वा	२५४३
यो नो देवः परावतः	२९३
यो नो रसं दिप्सति	३२८७
यो नो वनुष्यन्नभिदाति	२९८४
यो भोजनं च दयसे	११४२
यो मा पाकेन मनसा	२२८५; ३२८५
यो मायातुं यातुधाने०	२२८६; ३२९३
यो रध्रस्य चोदिता	११२७
यो रयिवो रयिन्तमो	२०३६
यो राजा चर्षणीनां	२३२१
यो रायोऽवनिर्महान्	१३; १९२
यो रोहितौ वाजिनौ	१७४९
यो वाचा विवाचो	२४८९
यो विश्वस्य जगतः	८२१
यो विश्वान्यभि व्रता	२०७
यो वृत्राय सिनमत्रा०	११२८
यो वेदिष्ठो अव्यथिष्वश्वावन्तं	१३९
यो व्यंसं जाहृषाणेन	८१८
यो व्यतीरफाणयत्	२३१५
यो हत्वाहिमरिणात्	११२४
रथं हिरण्यवन्धुर०	३२२३
रथिरासो हरयो	५०१
रथेन पृथुपाजसा	३२२४
रथेष्ठायाध्वर्यव:	२४१
रपत् कविरिन्द्रार्कसातौ	१०७५
राजेव हि जनिभिः	२१२०
रायस्कामो वज्रहस्तं	२२३७
राया वयं ससवांसो	३१६०
रारन्धि सवनेषु	१३७६
रासि क्षयं रासि	११२४
रुद्राणामेति प्रदिशा	८२३
रूपंरूपं प्रतिरूपो	२११६
रूपंरूपं मघवा	१४६०
रेवतीर्नः सधमाद	७११
रेवाँ इद् रेवतः	१२८
रोहिच्छ्यावा	९७२
रोहितं मे पाकस्थामा	१७७
वृत्रं यश्चक्रे सुहनाय	२७२०
वज्रेण हि वृत्रहा	२७३०
वधीं वृत्रं मरुत	३२५७
वधीदिन्द्रो वरशिखस्य	१९५९
वधीर्हि दस्युं धनिनं	७३३
वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति	१७५१

वनीवानो मम दूतास १८४८
वने न वा यो न्यधायि २५१५
वनेम तद्धोत्रया १००६
वनोति हि सुन्वन् १०४०
वम्रीभिः पुत्रमग्रुवो १५३०
वयं शूरेभिरस्तृभिः ४१
वयं हित्वा बन्धुमन्तमबन्धवो ४१२
वयः सुपर्णा उप सेदुः २६३३
वयं घ त्वा सुतावन्त २१०
वयं घा ते अपि ष्मसि १८६
वयं घा ते अपूर्व्येन्द्र ६२३
वयं घा ते त्वे इद्विन्द्र ६२५
वयं जयेम त्वया ८३१
वयं त इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम ५३८
वयं त एभिः पुरुहूत १८८३
वयं ते अस्य वृत्रहन् १७९७
वयं ते अस्यामिन्द्र १९५४
वयं ते त इंद्र ये १७२१; २२२१
वयं ते वय इंद्र ११०८
वयमिन्द्र त्वे सचा १६४८
वयमिन्द्र त्वायवः २७८३
वयमिन्द्र त्वायवो २२२६
वयमु त्वा शतक्रतो २४०८
वयमिन्द्र त्वायवो १३७९
वयमु त्वा तदिदर्था १३१
वयमु त्वा दिवा सुते ५९४
वयमु त्वामपूर्व्यस्थूरं ४०९
वयमेनमिदा ह्यो ६१९
वयो न वृक्षं सुपलाश० २५६०
वरिष्ठे न इन्द्र २१०७
वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियर्तीन्द्रो १९७६
वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं २९५६
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत ३४५
वर्धाद् यं यज्ञ १९८१
वर्धान् यं विश्वे १८५१
ववक्ष इन्द्रो अमित० १४७१
ववक्षुरस्य केतव २९४
वषट्कृतेभ्यो वषट्कृतेभ्यः ३११६
वसूनां वा चर्कृष २६३४
वसोरिन्द्रं वसुपतिं ५६
वस्यां इन्द्रासि मे ९२
वह कुत्समिन्द्र १०७३
वहन्तु त्वा रथेष्ठामा २२३
वाचमष्टापदीमहं ६३९
वाचस्पतिं विश्वकर्मा० २९३१
वाजस्य मा प्रसव २१३६
वाजेषु सासहिर्भव १३३९
वातस्य युक्तान्त्सु० १७०१
वामं वामं त आदुरे १६२९
वायविन्द्रश्च चेतथः ३२११
वायविन्द्रश्च शुष्मिणा ३२२८
वायविन्द्रश्च सुन्वत ३११२
वार्ण त्वा यव्याभिः २३७१
वार्त्रहत्याय शवसे १३३४
वावृधान उप द्यवि २८२
वावृधानः शवसा २७६५
वावृधानस्य ते वयं ३५९
वावृधानो मरुत्सखेन्द्रो ६३०
वास्तोष्पते ध्रुवा ४०७
वि क्रोशनासो विष्वञ्च २५०८
वि चिद् वृत्रस्य दोधतो २४८
वि जानीह्यार्यान् ये ७५२
वि तर्तूर्यन्ते मघवन् ९०
वि तिष्ठध्वं मरुतो ३२९५
वि ते वज्रासो अस्थिरन्नवतिं ९०७
वित्वक्षणः समृतौ १७३२
वि त्वदापो न पर्वतस्य १९३३
वि त्वा ततस्रे मिथुना १०२३
विदद् यदी सरमा १२६५
विदुष्टे अस्य वीर्यस्य १०२४
विदुष्टे विश्वा भुवनानि ३१५७
वि दृळ्हानि चिदद्रिवो २०६८
विद्मा सखित्वमुत ४१६
विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं ६७१
विद्मा हि त्वा धनंजयं वाजेषु १३८७
विद्मा हि त्वा धनंजयमिन्द्र ४५५
विद्मा हि त्वा वृषन्तमं ६७
विद्मा हि यस्ते आद्रिव० २४१४
विद्मा ह्यस्य वीरस्य १३६
विधुं दद्राणं समने २६१८
वि न इन्द्र मृधो जहि २८१७
वि पिप्रोरहिमायस्य १८९०
विभ्राजञ्ज्योतिषा २३६६
वि यदहेरध त्विषो २४४३
वि यत् तिरो धरुणमच्युतं ८०९
वि यद् वरांसि पर्वतस्य १५५१
वि यो ररप्श ऋषिभि० १५३७
वि रक्षो वि मृधो २८१६
विवेष यन्मा धिषणा १२९५
विवक्थ महिना २४१९
विशंविशं मघवा २५६१
विश्वं सत्यं मघवाना ३३५९
विश्वजिते धनजिते १२१७
विश्वमित् सवनं ८५
विश्वस्मात् सीमधमाँ १६०२
विश्वाँ अर्यो विपश्चितो ६०९
विश्वाः पृतना अभिभूतरं ९८५
विश्वा द्वेषांसि जहि ५१८
विश्वानरस्य वस्पति० २२९४
विश्वानि विश्वमनसो १७९६
विश्वानि शक्रो नर्याणि १४७२
विश्वामित्रा अरासत १४६५
विश्वा रोधांसि १५५८
विश्वा हि मर्त्यत्वना २४०९
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता ८३८; ९७५
विश्वे चनेदना त्वा १६११
विश्वे त इंद्र वीर्यं ५७२
विश्वेत् ता ते ९९६
विश्वेत् ता विष्णुराभर ६४९
विश्वेदनु रोधना ११४६
विश्वे देवासो अध २७५२
विश्वेषामिरज्यन्तं १८३२
विश्वेषु हि त्वा १०२२
विश्व ह्यस्मै यजताय ११७५
विश्वो ह्यन्यो अरिराजगाम २५२३
वि षु विश्वा अभियुजो ४५०
वि षु विश्वा अरातयो २७८०
वि षू चर स्वधा १९८
विषूचो अश्वान् ३०५७

वि पू मृधो जनुषा १६८८
विपृवृदिन्द्रो अमतेरुत २५५९
विष्पर्धसो नरां १०६५
वि सद्यो विश्वा दृंहिता० २१३१
वि सूर्यो मध्ये २६९४
वि सुतयो यथा पथा २९९१
वि हि त्वामिन्द्र २७४१
वि हि सोतोरसृक्षत २६४०
वि ह्यख्यं मनसा ३०११
वीन्द्र यासि दिव्यानि २५३१
वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः २७१२
वीळु चिदारुजत्नुभि० ३२४५
वीळौ सतीरभि १२६४
वृकश्चिदस्य वारण ६२०
वृक्षेवृक्षे नियता २५१२
वृज्याम ते परि द्विषो ४५२
वृत्रखादो वलंरुजः १४०५
वृत्रस्य त्वा श्वसथा० २३५१
वृत्राण्यन्यः समिथेषु ३१९०
वृत्रेण यदहिना २७४७
वृषणस्ते अभीशवो २२०
वृषभो न तिग्मशृङ्गो २६५४
वृषन्निन्द्र वृषपाणास १०४१
वृषाकपायि रेवति २६५२
वृषा ग्रावा वृषा ३५२; १७६६
वृषा जजान वृषणं २२५५
वृषा ते वज्र उत ११७७
वृषा त्वा वृषणं वर्धतु १७४८
वृषा त्वा वृषणं हुवे ३५३; १७६७
वृषा न क्रुद्धः पतय० २५६४
वृषा मद इंद्रे १९२८
वृषायमाणोऽवृणीत ७१७
वृषायमिन्द्र ते रथ ३५१
वृषा यूथेव वंसगः ३५
वृषा वृषन्धि १५५६
वृषासि दिवो २०५६
वृषा सोता सुनोतु २२१
वृषा ह्यसि राधसे १७३९
वृष्णः कोशः पवते ११७६
वृष्णे यत् ते वृषणो १६९७
वेत्था हि निर्ऋतीनां १८१३
वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं २२१२; २२१७; २२२२
व्य१न्तरिक्षमतिरन्मदे ३६०
व्यन्निन्वनु येषु १११५
व्य१र्य इंद्र तनुहि २७६०
व्यानळिन्द्रः पृतनाः २५२२
शंसा महामिन्द्रं १४२४
शंसावाध्वर्यो प्रति १४५५
शंसेदुक्थं सुदानव २२२४
शग्धी न इन्द्र यत् १६६
शग्धी नो अस्य यद्ध १६७
शग्ध्यू३षु शचीपत ५५२
शचीव इन्द्र पुरुकृद् ७७७
शचीव इन्द्रमवसे २६३८
शचीवतस्ते पुरुशाक १९३१
शतं वा यः शुचीनां ७००
शतं वा यस्य दश ११४५
शतं वा यदसुर्य २७२४
शतं वेणूञ्छतं शुनः ५४१
शतं श्वेतास उक्षणो ५४०
शतक्रतुमर्णवं १४३५
शतं जीव शरदो ३११६
शतेना नो अभिष्टि० ३२२१
शतं ते शिप्रिन्नूतयः २१९४
शतब्रध्न इषुस्तव ६४६
शतमश्मन्मयीनां १६२५
शतं मे गर्दभानां ५४६
शतानीका हेतयो ४९६
शतानीकेव प्र ४८६
शतैरपद्रन् पणय १८८७
शत्रूयन्तो अभि ये २६७६
शनैश्चिद् यन्तो ४५३
शवसा ह्यसि श्रुतो १७९१
शविष्ठं न आ भर १८७६
शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं २५१८
शश्वदिन्द्रः पोप्रुथद्भिर्जिगाय ७१४
शश्वन्तो हि शत्रवो २१३६
शाक्मना शाको अरुणः २३१९
शाचिगो शाचिपूजनाऽयं ४०५
शास इत्था महाँ अस्य० २८१४
शासद् वह्निर्दुहितु० ११६०
शिक्षा ण इंद्र राय २४०५
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं ३५५
शिक्षेयमिन्महयते २२५३
शिप्रिन् वाजानां ६९३
शुक्रस्याद्य गवाशिर ३११०
शुचिं नु स्तोमं ३०७१
शुचिरसि पुरुनिःष्ठाः ११४
शुनं हुवेम मघवान० १२५९,१२८१; १२९८;१३११,१३२२;१३३३;१३५४; १३६३;१३९८;१४१३;१४२८,१४३३; १६७९;२७१३
शुभ्रं नु ते शुष्मं ११०४
शुष्णं पिप्रुं कुयवं ८४६
शुष्मासो ये ते अद्रिवो १७५७
शुष्मिन्तमं न ऊतये १३४१
शुष्मिन्तमो हि ते १०८३
शूरो वा शूरं वनते १९४१
शृणुतं जरितुर्हव० ३०८०
शृण्वे वीर उग्रमुग्रं २११४
शेवारे वार्या पुरु १०८
शेषन् नु त इन्द्र १०७१
श्नथद् वृत्रमुत ३०५६
श्यावाश्वस्य रेभत० १७८१
श्यावाश्वस्य सुन्वत० १७७५
श्यावाश्वस्य सुन्वतो ३०९८
श्रत् ते दधामि प्रथमाय १८०४
श्रवच्छुत्कर्ण ईयते २२३९
श्रातं हविरो ष्विन्द्र २८३७
श्रातं मन्य ऊधनि २८३८
श्रायन्त इव सूर्यं २३७८
श्रावयेदस्य कर्णा १६०६
श्रिये ते पादा दुव १९६४
श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी २७२३
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं २४४५
श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि १९४७
श्रुधी हवं विपिपान० २१७४
श्रुधी हवं तिरश्च्या २३३९
श्रुधी हवमिन्द्र ११०१; २८१३

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः	३१६१
श्चित्यञ्चो मा दक्षिणत०	२२६२
स आ गमदिन्द्रो	१७४४
स इत् तमोऽवयुनं	१८९९
स इत् सुदानुः स्ववाँ	३१६५
स इद् दासं तुवीरवं	२६८५
स इद् वने नमस्युभिर्वचस्यते	८००
स इन्नु रायः सुभृतस्य	२८०७
स इन्महानि समिथानि	८०१
स इषुहस्तैः स नि०	२६९४
स ईं पाहि य ऋजीषी	१८४२
स ईं महीं धुनिमेतो०	११६६
स ईं स्पृधो वनते	१८९२
सं यज्जनान् क्रतुभिः	१०३२
सं यज्जनौ सुधनौ	१७३४
सं यत् त इन्द्र मन्यवः	१६३५
सं यद्वयं यवसादो	२४९९
सं यन्मदाय शुष्मिण	७०१
सं यन्मही मिथती	३०७५
सं वां कर्मणा समिषा	३३०६
सं होत्रं स्म पुरा	२६४९
सः स्तोम्यः स हव्यः	३८९
संक्रन्दनेनानिमिषेण	२६९३
सखाय आ शिषामहि	१७९०
सखायः क्रतुमिच्छत	२३३३
सखायस्त इन्द्र	२१६९
सखायो ब्रह्मवाहसे	२०६३
सखा सख्ये अपचत्	१६७३
सखा ह यत्र सखिभि०	१३५९
सखीयतामविता	१५०५
सखे विष्णो वितरं	९९९
सख्ये त इन्द्र वाजिनो	७१
स गोमघा जरित्रे	२०१९
स गोरश्वस्य वि व्रजं	१८४
स ग्रामेभिः सनिता	९६६
स घा तं वृषणं रथमधि	९१८
स घा नो योग आ	१६
स घा राजा सत्पतिः	७९१
स घा वीरो न रिष्यति	३३५७
स घेदुतासि वृत्रहन्	१६२७
सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे	५४
सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रै०	१२५३
सचन्त यदुषसः	२७३१
सचस्व नायमवसे	१९३७
सचायोरिन्द्रश्चर्कृष	२७१७
सचा सोमेषु पुरुहूत	६१८
सं च त्वे जग्मुर्गिर	२०२१
सं चोदय चित्रमर्वाग्	५२
स जातूभर्मा श्रद्धान	८४१
स जातेभिर्वृत्रहा	१२७०
स जामिभिर्यत्	९६७
सजोषा इन्द्र सगणो	२४१५
सतः सतः प्रतिमानं	२१६७
स तुर्वणिर्महाँ अरेणु	८०७
स तु श्रुधि श्रुत्या	२०३५
स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य	१९०४
सत्तो होता न ऋत्विय	१३७४
सत्यं तत् तुर्वशे	४६९
सत्यं तादिन्द्रावरुणा	३२०४
सत्यमित् तन्न	१९७१
सत्यमित्था वृषेदसि	२१९
सत्यमिद् वा उ तं वयमिन्द्रं	५७७
स त्वं न इन्द्र धियसानो	१७१८
स त्वं न इन्द्र वाजेभि०	३९३
स त्वं न इन्द्र सूर्ये	८५२
स त्वं न इन्द्राकवाभिरूती	२०१९
स त्वं नश्चित्र	२०९१
स त्वामदद् वृषा	९०१
सत्रा ते अनु कृष्टयो	१६१०
सत्रा त्वं पुरुष्टुतँ	३७९
सत्रा मदासस्तव	२०३१
सत्रा यदीं भार्वरस्य	१५५०
सत्रासाहं वरेण्यं	१३०८
सत्रासाहो जनभक्षो	१२१९
सत्रा सोमा अभवन्नस्य	१४९३
सत्राहणं दाधृषिं	१४९५
सदस्य मदे सद्वस्य	१९५६
सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा	२९७६
सदिद्धि ते तुविजातस्य	१८५९
सध्रीच प्राचो वि	११६४
सद्यश्चिन्नु ते मघवन्	२१४८
सद्योजुवस्ते वाजा	६७८
सद्यो ह जातो	१४१९
स द्रुह्वणे मनुष	२६८६
स धारयत् पृथिवीं	८४०
सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन्	२७३४
सध्रीमा यन्ति	११३८
स न इन्द्रः शिवः	२४३२
स न इन्द्र त्वयताया २१६०;	२१७०
स नः क्षुमन्तं सदने	२५४२
स नः पप्रिः पारयाति	३९१
स नः शक्रश्चिदा	१९१
स नः सोमेषु सोमपाः	९८१
स नः स्तवान	१७९२
स नश्चित्राभिरद्रिवो	१६४९
सनद्वाजं विप्रवीरं	२८४५
सना ता त इन्द्र भोजनानि	२१४५
सना ता त इन्द्र नव्या	१०७६
सनात् सनीळा अवनीरवाता	८८१
सनादेव तव रायो	८८३
सनाद् दिवं परि	८७९
सनामाना चिद् ध्वसयो	२६१८
सनायते गोतम	८८४
सनायुवो नमसा०	८८२
सनितः सुसनितरुग्र	१८३६
सनिता विप्रो अर्वद्भिर्हन्ता	१५१
सनिर्मित्रस्य पप्रथ	२९९
स नीव्याभिर्जरितारमच्छा	२०१४
सनेम तेऽवसा	१८९३
सनेम ये त	११२९
सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः	८८०
स नो ददातु तां रयि०	२८८९
स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्नुक्थैः	१०२०
स नो नियुद्भिः पुरुहूत	१९१७
स नो नियुद्भिरा पृण	२०८०
स नो बोधि पुरएता	१९०६
स नो बोधि पुरोळाशं	१९२४

स नो युवेन्द्रो १२१०
स नो वाजाय श्रवस १८५४
स नो वाजेष्वविता १८२९
स नो विश्वान्या भर २४५८
स नो वृषन्त्सनिष्ठया २४११
स नो वृषन्नमुं चरुं ३३
सन्ति ह्यर्य आशिष ५३७
स पत्यत उभयोर्नृम्णमयोर्यदी १९४३
स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः ७६१
स पिप्र्याण्यायुधानि २४६४
स पूर्व्यो महानां वेनः ५७८
सप्त वीरासो अधरादुदाय २५०५
सप्तापो देवी: सुरणा २७१०
सप्ती चिद् घा मदच्युता २२७
स प्रत्नथा कविवृध ५८१
स प्रथमे व्योमनि ३२२
स प्रथमो बृहस्पति० २९२५
स प्रवोळ्हॄन् ११६५
स प्राचीनान् ११८५
स भूतु यो ह प्रथमाय ११८२
स मज्मना जनिम १८६२
समत्र गावोऽभितो० १६९१
समत्सु त्वा शूर १०६२
समना तूर्णिरुप यासि २६२६
समनेव वपुष्यतः ५७४
स मन्दस्वा ह्यनु १९२५
स मन्दस्वा ह्यन्धसो १३७८; २०८६
स मन्युं मर्त्याना० ६५६
स मन्युमी: समदनस्य ९६२
समस्य मन्यवे विशो २४६
स मातरा सूर्येणा २०१२
समानमस्मा अनपा० २६६५
स माहिन इन्द्रो १२०१
समित् तान् वृत्रहाखिदत् ६४२
समिद्धाग्निर्वनवत् १७५१
समिद्धे अग्नौ १९९०
समिद्धेष्वग्निष्वानजाना ३०११
समिन्द्र गर्दभं मृण ६९६
समिन्द्र नो मनसा ३१२१
समिन्द्र राया समिषा ७७९
समिन्द्रेरय गामनड्वाहं ३३५५
समिन्द्रो गा अजयत् १४९८
समिन्द्रो रायो ५२४
समीं रेभासो अस्वरन्निन्द्रं ९८६
समीं पणेरजति १७३३
समुद्रे अन्तः शयत ५९८
समुद्रेण सिन्धवो १३२९
समोहे वा य आशत ४३
संपश्यमाना अमदन्नभि १२६९
सं भानुना यतते १७५०
सं भूम्या अन्ताध्वसिरा ३१८४
सं मा तपन्त्यभितः २५३९
सम्राळन्यः स्वराळन्य ३१७३
स यह्व्योऽवनीर्गोष्वर्वा २६८३
स युध्मः सत्वा खजकृत् १८५७
स यो न मुहे १८६३
स यो वृषा वृष्ण्येभिः ९५७
स रथेन रथीतमो २०७४
स रन्धयत् सदिवः १२०४
सरस्वति त्वमस्माँ १२३३
सरस्वती मनसा २९४१
सरस्वती योन्यां २९५२
स राजसि पुरुष्टुतँ ३७१
स रायस्खामुप २०३४
स रुद्रेभिरशस्तवार २६८४
सरूपैरा सु नो गहि ४३६
सरूपौ द्वौ विरूपौ २८७७
सर्वं परिक्रोशं जहि ६९८
सर्वेषां च क्रिमीणां २८८६
स वज्रभृद् दस्युहा ९६८
स वह्निभिर्ऋक्वभिर्गोषु २०१३
स वाजं यातापदुष्पदा २६८२
स वावशान इह १४४१
सविता वरुणो २९५५
स विद्वाँ अङ्गिरोभ्य ५८०
स विद्वाँ अपगोहं ११६८
स वीरो अप्रतिष्कुत २२४०
स वृत्रहत्ये हव्यः १५७८
स वृत्रहेंद्र ऋभुक्षाः २३६३
स वृत्रहेंद्रः कृष्णयोनीः १२१४
स वृत्रहेंद्रश्चर्षणीधृत् २३६२
स वेतसुं दशमायं १८९१
सव्यामनु स्फिग्यं २३६
स व्राधतः शवसाने० २६८८
स शेवृधमधि धा ७९६
स श्रुधि यः स्मा १००१
स सत्यसत्वन् २०१०
ससन्तु त्या अरातयो ६९५
स सर्गेण शवसा तक्तो २०१५
स सव्येन यमति ९६५
ससानात्याँ उत १३०९
स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु ३२००
स सुक्रतू रणिता २३६१
स सुन्वत इंद्रः १२०३
स सुष्टुभा स स्तुभा ८७५
स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋभ्वा ९६१
स सूर्यः पर्युरू २६६४
स सोम आमिश्लतमः १९६५
सस्तु माता सस्तु पिता २२७४
सस्थावाना यवयसि १७७९
सहदानुं पुरुहूत १२४५
स ह श्रुत इन्द्रो १२१३
सहस्तन्न इंद्र २९९६
सहस्रं व्यतीनां १६६१
सहस्रं साकमर्चत ९०८
सहस्रं त इंद्रोतयो १०४२
सहस्रवाजमभिमातिषाहं २७०९
सहस्रशृङ्गो वृषभो २२७६
सहस्रसामाग्निवेशिं १७३५
सहस्राक्षेण शतशारदेन ३११५
सहस्रा ते शता १६६२
सहस्रेणेव सचते २३४
सहस्रे पृषतीनामधि ६११
सहावा पृत्सु १४२६
स हि धीभिर्हव्यो १८६१
स हि द्युता विद्युता २६८१
स हि द्वरो द्वरिषु ७६२
स हि विश्वानि पार्थिवाँ २०७९
स हि श्रवस्यु सदनानि ८०२
साकं जातः क्रतुना १२२५

सा ते जीवातुरुत २५१४
सा विश्वायुः सा २९१८
सास्मा अरं प्रथमं ११९१
सास्मा अरं बाहुभ्यां ११८६
सिन्धूँरिव प्रवण २१०३
सीदन्तस्ते वयो यथा ४१३
सीसेन तन्त्रं मनसा २९३८
सुगा वो देवाः सदना ३१२३
सुत इत् त्वं निमिश्ल १९१८
सुतः सोमो असुतादिन्द्र १९९६
सुतपाव्ने सुता इमे १८
सुता इन्द्राय वायवे ३२३२
सुतावन्तस्त्वा ६०६
सुतेसुते न्योकसे ५७
सुदेवाः स्थ काण्वायना ५४२
सुनीथो घा स मर्त्यो १८२०
सुनोता सोमपाव्ने २२४२
सुपेशसं मात्र सृजन्त्यस्तं ३३३८
सुप्रवाचनं तव ११४७
सुप्राव्यः प्राशुषाळेष १५९३
सुब्रह्माणं देववन्तं २८४४
सुरावन्तं बर्हिषदँ २९३७
सुरूपकृत्नुमूतये ४
सुविज्ञानं चिकितुषे ३२८९
सुविवृतं सुनिरजमिन्द्र ६४
सुवीरस्ते जनिता १४९१
सुवीर्यं स्वश्व्यं ३२०
सुष्ठामा रथः सुयमा २५६९
सुष्वाणास इंद्र स्तुमसि २८०९
सुसंदृशं त्वा वयं ९१७
सूर उपाके तन्वं १४८०
सूरश्चक्रं प्र बृहज्जात १०१९
सूराश्चिद् रथं १७०२
सूर्यस्येव वक्षथो २२६९
सूर्यो रश्मिं यथा सृजा २०२
सृजः सिन्धूँरहिना २७३३
सृजो महीरिन्द्र ११०२
सेमं नः काममा पृण ८६
सेमं नः स्तोममा ८२
सेहान उग्र पृतना १७७७
सो अग्न एना नमसा ३०७७
सो अङ्गिरसामुचथा १२१२
सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो ९६०
सो अप्रतीनि १२०२
सो अप्रियो न यवस २६८७
सो अर्णवो न नद्यः ७९८
सो चिन्नु वृष्टिर्यूथ्या २४८४
सो चिन्नु सख्या २६०२
सोता हि सोममद्रिभि० १०३
सोदञ्चं सिन्धुमरि० ११६७
सोम इद्वः सुतो अस्तु ६२७
सोममन्य उपासदत् ३३३१
सोममिन्द्राबृहस्पती ३३२२
स्तवा नु त इन्द्र ११०६
स्तीर्णं ते बर्हिः १३१८
स्तुत इन्द्रो मघवा १५०६
स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति १४४
स्तुतासो नो मरुतो ३२६५
स्तुषेय्यं पुरुवर्प० २७६९
स्तुहि श्रुतं विपश्चितं ३३०
स्तुहीन्द्रं व्यश्ववत् १८११
स्तेनं राय सारमेय २२७१
स्तोता यत् ते अनुव्रत ३३९
स्तोता यत् ते विचर्षणि० ३२६
स्तोमं त इंद्र २४८६
स्तोमासस्त्वा गौरिवीते १६७७
स्तोत्रं राधानां पते ७०३
स्तोत्रमिन्द्राय गायत ४६३
स्त्रियो हि दास आयुधानि १६९०
स्थिरं मनश्चकृषे १६८५
स्थूरस्य रायो बृहतो १५४७
स्पर्धन्ते वा उ ३१९८
स्मत्पुरन्धिर्न आ ४३०
स्याम ते त इंद्र ११११३
स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं ११७०
स्वयं चित् स मन्यते २४०
स्वयुरिन्द्र स्वराळसि १४०८
स्वरन्ति त्वा सुते नरो २११
स्वर्जितं महि २८३०
स्वर्जेषे भर १०२९
स्वार्यद् वेदि सुदृशीक० १४७०
स्वर्वृजं हि त्वामह० २५४५
स्वस्तये वाजिभिश्च १२५५
स्वास्तश्चा त्रिशस्ति २८१५
स्वादवः सोमा आ १४३
स्वादुष्टे अस्तु संसुदे ३९९
स्वादोरित्था विषूवतो ९४६
स्वायुधं स्ववसं २८४३
हंसा इव कृणुथ १४६२
हत वृत्रं सुदानव ३२४९
हतासो अस्य वेशसो २८८५
हतो येवाषः क्रिमीणां २८८१
हतो राजा क्रिमीणा० २८८४
हतो वृत्राण्यार्या ३०६१
हन्ता वृत्रं दक्षिणेनेन्द्रः १४७
हन्ता वृत्रमिंद्रः २१५२
हन्ताहं पृथिवीमिमां २८५८
हन्तो नु किमाससे ६६५
हरित्वता वर्चसा २७३७
हरी त इंद्र श्मश्रू० २९९४
हरी नु कं रथ ११९२
हरी नु त इंद्र वाजयन्ता ११०७
हरी न्वस्य या वने २४८२
हरी यस्य सुयुजा २७१५
हर्यन्नुषसमर्चयः १४००
हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं ४१८
हव एषामसुरो २६३५
हवं त इंद्र महिमा २२०९
हवन्त उ त्वा हव्यं २२१९
हवे त्वा सूर उदिते ३३३
हत्सु पीतासो युध्यन्ते १०७
हृदं न हि त्वा ७६६
हृदा इव कुक्षयः १३३०
ह्वयामसि त्वेन्द्र १०९७

दैवत-संहितान्तर्गत--इन्द्रदेवतायाः

गुणबोधक-पदानां सूची ।

अंहूरणा [भूमिः] ६,४७,२०; ३३२७

अकल्पः १,१०२,६; ८३३

अकवारिः ३,४७,५; १४१८। ६,१९,११; १८८१

अकामकर्शनः १,५४,१; ७७६

अक्षिता [त] वसुः ८,४९ ६; ४९०

अक्षितोतिः १,५,९;२२।४,१७,१६; १५०३।६,२४,१;१९२८

अगोरुधः ८,२४,२०; १८०९

अगोह्यः ८,९८,४; २३६७

अगोः अरिः ८,२,१४; १२१

अग्निः ५,३४,९; १७३५

अघ्नन् ७,२०,८; २१५८

अङ्गिरस्तमः १,१३०,३; १०१३

अङ्गिरस्तमः आङ्गिरोभिः १,१००,४; ९६०

अङ्गिरसां उचथा जुजुष्वान् २,२०,५; १२१२

अङ्गिरस्वान् २,११,२०; ११२०। ६,१७,६; १८४६

अङ्गिरोभिः गृणानः ४,१६.८; १४७४

अच्युतः १०,१११.३; २७२७

अच्युतच्युत् २,१२,९; ११३०। ६,१८,५; १८६०

अच्युतानि च्यावयन् ३,३०,४; १२४१

अच्युतानां च्यवनः ८,९६.४; २३४८

अजरः ३,३२,७; १२८८। ६,१९,२; १८७२।२२.१; १८९७। २२,३;१९०९। ३८,३; १९८०। ८,६,३५; २७७। ९९,७; २३८२। १०,५०,५; २६०५। [वरुणः] ६,६८,९; ३१६९

अजातशत्रुः ५,३४,१; १७२७। ८,९३,१५; १४४४

अजुरः ८,१,२; ८८

अजुर्यः २,१६,१; ११७२। ६,१७,१३; १८५३। २२,९; १९१५। ३०,१; १९६८। ८,१३,२३; ३४३

अजुर्यत् ३,४६,१; १४०९

अतसाय्यः २,१९,४; १२०२

अतिनेनीयमानः अन्यं अन्यम् ६,४७.१६; २११४

अतिपान्तम् (द्वितीो०) वैशन्तम् ७,३३,२, २२६३

अतूर्तः ८,५,७; २३८७

अत्कं वसानः ४,१८,५; १५१३। ६,२९,३; १९६४

अदब्धः ८,७८.६; ६५६

अद्था (थौ) [इन्द्राग्नी] ५,८६,५; ३०४४

अद्वयः १०,१०३,७; २६९७

अदाभ्यः ७,१०४,२०; २२८८। ८,६१,१२; ५५९। अथर्व० ८,४,२०; ३२९७

अदृष्टहा। अथर्व० ५,२३,६; २८७९

अद्भुतः ८.१३,१९; ३३९। १०,१५२,१; २८१४

अद्रिः ४,२१,६;१५४०।५,३८,३;१७५७।१,१०९,३;३०२३

अद्रिवत् १,१०,७; ६४। ११.५; ७४। ८०,७; ९०६। ८०, १४; ९१३। १२१,१०,१०;१००९,१००९। १३३,२,६,६; १०३५,१०३९-३९। ३,३७,११; १३४४। ४१,१; १३७३। ४,३२,५, १६४९। ५,३५,५; १७४०। ३६,३, १७४६। ३९,१,३;१७६०,१७६२। ६,४५,९,२०६८। ४६,२;२०९१। ७,२०,८; २१५८। ८,१,५,१३; ९१,९९। २,४०; १५५। ६,२२,२६४।१२,४; २९१। १३,२६;३४६। १५,४;३७२। २१,७;४१५। २४,६,११,१७९५,१८००। ३६,६;१७७४। ४५,११;४५३। ४६,२,११;१८१८,१८२७। ५०,१०;५०४। ६१,४; ५५१। ६२,११; ५७६। ६४,१; ५८९। ६८,११; २३०१। ७६,८, ६३५। ९२,१८; २४१४। २७, २४२३। ९७,९; ९८४। ९८,८; २३७१। १०,१४७,१; २८०४

अद्रोघः ३,३२,९; १२९०

अद्रोघवाक् ६,२२,२; १९०८

अधिराजः। अथर्व० ६,९८,१-२; २९०२-३

अधिवक्ता १,१००,१९; ९७५। १०२,११,८३८। ८,९६,२०; २३६२

अधृष्टः ८,६१,३; ५५०। ७०,३; २३२३

अध्रिगुः १,६१,१; ८५६। ६,४५,२०; २०७९। ८,७०,१; २३११। ९३,११; २४४०

अध्वरः ८,६३,६; ५८३

अनपच्युतः ८,९२,८; २४०४। ९३,९; २४३८

अनर्वा ४,१७,२०; १५०७। ७,२०,३; २१५३। ८,९२,८; २४०४। १०,९९,३; २६८२

अनर्शरातिः ८,९९,४; २३७९

अनवद्यः १,१२९,१,१;१०००,१०००। १०,१४७,२,२८०५
अनाधृष्यः ४,१८,१०; १५१८
अनानतः ६,४५,९; २०६८ । ८,६४,७; ५९५ । १०,४; २३९४ । १०,७४,५; २६३८
अनानुदः २,२१,४; १२२० । १०,३८,५; २५४५
अनानुदिष्टः (ब्रह्मद्विषः हन्ति) १०,१६०,४; २८२७
अनापिः जनुषा ८,२१,१३; ४११
अनामृणः १,३३,१; ७३०
अनाश्रयिन् (यी) ८,२,१, ११६
अनिभृष्टः १०,११६,६; २७६०
अनिमानः ६,२२,७; १९१३
अनिमिषः १०,१०३,१-२; २६९२-९३
अनिष्कृतः ८,९९,८; २३८३
अनिष्टृ (निःस्तृतः) ८,३३,९, २१८
अनुत्तमन्युः ७,३१,१२, २२३४ । ८,६,३५; २७७
अनुत्तमन्युः सुतेषु ८,९६,१९; २३६१
अनुमाद्यः ६,३४,२; २०११
अनुस्पष्टः (अस्य यः सोमं सुनोति) १०,१६०,४; २८२७
अनूनः ६,१७,४; १८४४
अनूराधः। अथर्व० १९,१५,२; २९१५
अनूर्मिः ८,२४,२२; १८११
अनृतुपाः ३,५३,८; १४६०
अनेद्यः ८,३७,१-६; १७७६-८१
अन्तमः ६,४६,१०; २०९९ । ८,१३,३; ३२३
अन्तमः आपिः ८,४५,१८; ४६०
अन्तरा भरः ८,३२,१२; १९१
अन्तरिक्षप्राः १,५१,२; ७४६
अपजर्गुराणः ५,२९,४; १६७०
अपबाधमानः अमित्रान् [बृहस्पतिः] य० १७,३६; २९३२
अपराजितः १,११,२; ७१। १०,४८,११; २५८९। [इंद्राग्नी] ३,१२,४; ३०३३ । ८,३८,२; ३०९२
अपरीतः ५,२९,१४; १६८०
अपः रिषत्-न् ८,३२,२; १८१
अपवर्ता गोनाम् ४,२०,८; १५४०
अपांसि कर्ता ८,९६,१९; २३६१
अपां जग्मिः ८,९३,२२; २४५१
अपामजः ३.४५,२; १४०५
अपारः ४,१७,८; १४९५ । ८,६,२६; २६८
अपू(पु)रुषघ्नः १,१३३,६; १०३९
अपूर्व्यः ८,२१,१; ४०९ । ६६,११; ६२३ । ८९,५; २३८८
अप्तुरः ३,५१,३; १४३६
अप्रतिः ५,३२,३; १७०७
अप्रतिधृष्टशवाः १,८४,२; ९३८
अप्रतिष्कुतः १,७,६,८:३३.३५ । ८४,७:९४३। १३:९४९। ८,९७,१३; ९८८
अप्रतीतः १,३३,२: ७३२ । १३३,३: १०३९ । ५,३२,९: १७१३ । ६,२०,१; १८९१ । १०,१०४,७; २७०९ । १११,३; २७२७
अप्रतीतः त्रिश्रतः ३,४६,३; १४११
अप्रभङ्गी ८.४५,३५; ४७७
अप्रहा-ह-न् ६,४४,४; २०३९
अप्रहितः ८.९९,७; २३८२
अप्रामिसत्यः ८,६१.४; ५५१
अप्सुजित् ८,१३,२; ३२२ । ३६,१-६; १७६९-७४
अबधिरः ८,४५,१७; ४५९
अबिभीवान् १,६,७; ३२४६
अभिजित् २,२१,१; १२१७
अभयंकरः ८,१,२; ८८ । १०,१५२,२; २८१५
अभिख्याता ४,१७,१७; १५०४
अभिगाहमानः गोत्राणि सहसा १०,१०३,७; २६९७
अभिभङ्गः २,२१,२; १२१८
अभिभूः २,२१,२; १२१८ । ८,९७,९; ९८४ । ९८,२; २३६५ । १०,१५३,५; २८२३
अभिभूः विश्वम् ८,८९,६; २३८९
अभिभूतरः ८,९७,१०; ९८५
अभिभूतिः ६,१९,६; १८७३ । ८,१६,८; ३८९ । १०,१३१,१; २७७३
अभिभूतिः जनानाम्। अथर्व० ६,९८,२; २९०३
अभिभूत्योजाः ३,३४,६; १३०६ । ४८,४; १४२२ । ६,१८,१; १८५६
अभिभूवसः ८,१७,१५; ४०८
अभिमातिषा-स-हः १०,४७,३; २८४४ । १०,४,७; २७०९
अभिमातिहन्-हा ३,५१,३; १४३६
अभिवीरः १०,१०३,५; २६९५
अभिषा-सा-चः ३,५१,२; १४३५
अभिष्टिः पृतनाः ३,३४,४; १३०४
अभिष्टिः महान् १,९.१; ४८
अभिष्टिकृत् ४,२०,१; १५३३
अभिष्टिपाः २,२०,१; १२०९

❀

अभिसत्वः १०,१०३,५; २६९५
अभीरुः ४,२९,२; १६०५
अभीर्वः ८.४६,६; १८२२
अभ्रातृव्यः ८,२१,१३; ४२१
अमत्रः १,६१,९; ८६४
अमत्रः वृजने ३,३६,४; १३२६
अमत्रिन् (त्री) ६,२४,९; १९३६
अमर्त्यः १,१२९,१०; १००९। १७५,२; १०८०। ३,५१,१; १४३४
अमितक्रतुः १,१०२,६; ८३३
अमितौजाः १,११,४; ७३
अमित्रखादः १०,१५२,१; २८१४
अमित्रहन् (हा) ६,४५,१४; २०७३ । १०,२२,८; २४७३। १३४,३; २७८७
अमिनः १०,११६,१४; २७५८
अमिनः सहोभिः ६,१९,१; १८७१
अमृक्तः सनात् ८,२,३१; १४६
अमृतः ५,३१,१३; १७०४। ६,२१, १; १९०५। ७,२०,७; २१५७
अमृध्रः ८,८०,२; ६६२
अयामन् ८,५२,५; ५१९
अयास्यः १,६२,७; ८७८। ८,६२,२; ५६७
अयुजः ८,६२,२; ५६७
अयुद्धसेनः १०,१३८,५; २७९६
अयुध्यः १०.१०३,७; २६९७
अयोपाष्टिः १०,९९ ८; २६८७
अरंकृत् ८,१,११; ९६
अरंकृतः १०,११९,१३; २८६२
अरंगमः ६,४२,१; १९९८। ८,४६,१७; १८३३
अरध्रः ६,१८ ४; १८५९
अरिः अर्गो: ८,१२,१४; १२९
अरिपण्वन् दक्षस्य चित् १,६३,५; ८८९
अरिष्टः ५,३१,१; १६९३
अरिष्टु स्तु-तः ८,१,२२; १०८
अरीळ्हः ४.१८,१०; १५१८
अरुणः १,१३०,९; १०१९
अरुतहनुः १०,१०५,७; २७२०
अरुशहा १०,११६,४; २७५८
अरुषः १,६,१; २४। १०,४३,९; २५६५
अरेपसौ [इन्द्रवायू] ५,५१,६; ३२३१
अर्कः १,१०,१; ५८
अर्चन्त्यः ६,२४,१; १९२८
अर्णवः ३,५१,२; १४३५
अर्भके [इन्द्राश्वौ] ४,३२,२३; ३३४८
अर्यः १,३३,३; ७३२। ८१,९; ९२४। ३,४३,२; १३९२। ४,१६,१७; १४८३। २४,८; १५८४। २९,१; १६०४। ७,३१,५; २२२७। ८,२,२३; १३८। ३४,१०; ४३४। ५४,७; ५३७। ६३,७; ५८४। ६५,९; ६०९। १०,८९,३; २६६५। ११६,६; २७६०। १४८,३; २८११
अर्वन्-र्वा १०,९९,४; २६८३
अर्वाञ्च्-र्वाङ् ८,४,१४; २४२। ६,४५; २८७ ३२,३०; २०९
अर्वाचीनः ४,२४,१; १५७७। ७,२९,२; २२१४। १०, ११६,२; २७५६
अर्हरिस्वनिः-ष्वणिः १,५६,४; ८०८
अर्हन्ता-(न्तौ) [इन्द्राग्नी] ५,८६,५; ३०४४
अवक्रक्षिन्-क्षी ८,१,२; ८८
अवत्-न् ३,४६,४; १४१२
अवधून्वानः अनानुभूतीः ६,४७,१७; २११५
अवनिः रायः १,४,१०; १३। ८,३२,१३; १९२
अवयातहेळाः [मरुतः] १,१७१,६; ३२६८
अवयाता दुर्मतीनां सद्मित् १,१२९,११; १०१०
अवस्युः ४,१६,११; १४७७
अवहन्ता दुष्प्राव्यः अवाच्यः ४,२५,६; १५९३
अवातः ६,१८,१; १८५६
अवार्यक्रतुः ८.९२,८; २४०४
अविता १,१२९,१०; १००९। ६,३३,४; २०१९। ३४,५; २०२५। ४७,११: २१०९। ७,३२,११; २२४५। ३२,२५; २२५९। ८,१३,१५,२६; ३३५,३४६। २१,२; ४१०
अविता एकस्य द्वयोः ६,४५,५; २०६४
अविता कारुधाय्योः ६.४४,१५; २०५०
अविता जरितृणाम् ४,३१,३; १६३२
अविता नृणाम् ७,१९,१०; २१४९
अविता रथानाम् [बृहस्पतिः] य० १७,३६; २९३२
अविता वामदेवस्य धीनाम् ४,१६,१८,२०; १४८४,१४८६
अविता वाजेषु ८,४६,१३; १८२९
अविता विधन्तम् ८,२,३६; १५१
अविता सखीयताम् ४,१७,१८; १५०५
अविता सुन्वतः वृक्तबर्हिषः ८,३६,१; १७६९
अविता स्तोतॄणाम् १०,२४,३; २४९०
अविद्दीधयुः ४,३१,७; १६३६
अविहर्यतक्रतुः १,६३,७; ८८६

अवृकः ४,१६,१८; १४८४
अवृकतमः विमृध १,१७४,१०; १०७८
अवृतः ८,३२,१८; १९७ । ३३,६,१०; २१५,२१९
अशत्रुः १,१०२,८;८३५ । ८,९२,४;६८२ । १०,१३३,२; २७७९
अशस्तवारः १०,९९,५; २६८४
अशस्तिहा ८,८९,२; २३८५ । ९९,५; २३८० । १०,५५,८; २६२१
अश्मानं बिभ्रत् ४,२२,१; १५५५
अश्वजित् २,२१,१; १२१७
अश्वपतिः ८,२१,३; ४११
अश्वयुः १,५१,१४; ७५८
अश्वसातमः १,१७५,५; १०८३
अश्वः भव अश्वायते ६,४५,२६; २०८५
अश्वानां जनिता ८,३६,५; १७७३
अश्वानां पतिः १,१०१,४; ८२०
अश्वावान् १०,४७,५; २८४६
अश्व्यः ८,६६,३; ६१९
अषाळ्हः २,२१,२; १२१८ । ६,१८,१; १८५६ । ७,२०,३; २१५३ । २८,२; २२०९ । ८,३२,२; २०६।७०,४; २३२४ । १०,४८,११; २५८९
असमः ६,३६,४; २०३४ । ८,६२,२; ५६७
असमष्ट काव्यः २,२१,४; १२२०
असमात्योजाः ६,२९,६; १९६७
असुतानाम् ईशिषे ८,६४,३; ५९१
असुन्वतः विषुणः ५,३४,६; १७३२
असुरः १,५५,३;७८८।१७४,१;१०६९ । ३,३८,४;१३४८ । ८,९०,६; २३९६ । १०,९९,१२; २६९१
असुरहा ६,२२,४; १९१०
असुर्यः ४,१६,२; १४६८।७,२२,५;२१७५। १०,१०५,११; २७२४
अस्कृधोयुः ६,२२,३; १९०९
अस्तृ [-स्ता] ८,९३,१; २४३० । १०,१०३,३; २६९४
अस्ता अग्निम् १,६१,७; ८६२
अस्तृतः १,४,४;७।८,९३,९,१५; २४३८,२४४४। १०,४८,११; २५८९
अस्रग्रा ८,६३,४; ५८१
अस्मयुः १,१३१,७;१०२७।३,४१,७; १३७९ । [इन्द्रवायू] १.१३५,५; ३२१६
अस्रिधा [इन्द्राग्नी] ४,३२,२४; ३३४९
अहंसनः ८,६१,९; ५५३
अहिहन् [हा] २,१९,३; १२०१ । ३०,१; १२२७
अहेळमानः ६,४१,१; १९९३
अह्नयानः १०,११६,७; २७६१
अह्रयः ८,७०,१३; २३३३
आकरः वस्वः ५,३४,४; १७३०
आकरः सहास्रा ८,३३,१; २१४
आकाय्यः ४,२९,१; १६०८
आखंडलः ८,१७,१२; ४०५
आजिकृत् ८,४५,७; ४४९
आजितुरः ८,५३,६; ५३०
आजिपतिः ८,५४,६; ५३६
आज्ञाता १०,५४,१; २६१२
आतपः चर्षणीनाम् १,५६,१; ७९७
आदारिन्-री ८,४५,१३; ४५५
आदित्यः [वरुणः] ७,८४,४; ३१९५ । ७,८५,४; ३२००
आदुरिः ४,३०,२४; १६२९
आनजाना (नौ) [इंद्राग्नी] १,१०८,४; ३०११
आपान्तमन्युः [सोमः] १०,८९,५; ३२७६
आपिः ३,५१,६; १४३९ । ५१,९;१४४२ । ४,१७,१७; १५०४। ६,२१,८; १९०४। ६,४५,१७;२०७६।८,३,१;१५६
आपिः अन्तमः ८,४५,१८; ४६०
आप्यः आप्यानाम् १०,१२०,६; २७६९
आमुरिः ८,९८,१०; ९८५
आयतः विश्वासु गीर्षु ८,९१,७; २४०३
आयन्ता ८,३२,१४; १९३
आयसः १,५७,३; ८०७
आयुधा बिभ्रत् १०,११३,३; २७४७
आरितः १,१०१,४; ८२० । ८,३३,५; २१४। १०,१११,१०; २७१४
आरितः विक्षु २,२१,३; १२१९
आरुज् दृळ्हा चित् ८,४५,१३; ४५५
आरुजत्नु [मरुत्] १,६,५; ३२४५
आरे अवद्यः १०,९९,५; २६८४
आर्यः ५,३४,६; १७३२
आविष्कृणानः ओजः ४,१७,३; १४९०
आशुः १,४,७;१०। ८,९९,७;२३८२। १०,१०३,१;२६९२
आश्रुत्कर्णः १,१०,९; ६६
आसीनः हर्यतस्य पृष्ठे ८,१००,५; ९९५
आहुवः ८,३२,१९; १९८

इच्छन् सुतसोमम् ७,९८,१; २२७९
इन: २,२०,२; १२०९ । ७,२०,५; २१५५ । ८,३३,५;
२३४ । १०,५०,२; २६०१
इनः वसुनः १,५४,२; ७७६
इनतमः ३,४९,२; १४२५ । १०,१२०,६; २७६९
इन्द्रज्येष्ठाः [मरुद्गणाः] १,२३,८; ३२४८
इन्द्रसारथिः [वायुः] ४,४६,२; ३२२१
इन्द्रियः ४,२४,५; १५८१
इन्द्रियं प्रब्रुवाणः जनेषु १,५६,४; ८००
इन्वन् दानं गवा ५,३०,७; १६८८
इयानः २,२०,४; १२११ । ७,२९,१; २२१३
इरज्यन्तं विश्वेषां वसूनाम् ८,४६,१६; १८३२
इरज्यन्तम् भूरेः वसव्यस्य [इन्द्राग्नी] ६,६०,१; ३०५६
इरज्यति एकः चर्षणीनाम् १,७,९; ३६
इरज्यति एकः पञ्चक्षितीनाम् १,७,९; ३६
इरज्यति एकः वसूनाम् १,७,९; ३६
इषां दाता ८,४६,२; १८१८
इषितः धिया ३,६०,५; ३३४१
इषिरः १,१२९,१; १०००
इषुमान्। अथर्व० ४,२४,५; २८७१
इषुः तव शतब्रध्नः सहस्रपर्णः एक इत् ८,७७,७; ६४६
इषुहस्तः १०,१०३,२; २६९३
इष्णानः आयुधानि १,६१,१६; ८६८
इक्षे वस्वः उभयस्य ६,१९,१०; १८८०
ईड्यः ४,२४,२; १५७८ । ८,२४,८; ४३२ । अथर्व०
६,९८,१; २९०२
ईशानः १,५,१०; २३ । ७,८; ३५ । ११,८; ७७ । ६१,
६,१२,१५; ८६१,८६७,८७० । ८४,७; ९४३ । १७५,
४; १०८२ । १०,७३,८; २६३० । [इन्द्राग्नी] ७,९४,२;
३०८० । [इन्द्रवायू]७,९०,५; ३२३३
ईशानः अस्य जगतः ७,३२,२२; २२५६
ईशानः एकः ओजसा ८,६,४१; १८३ । ७६,१; ६२८ ।
८,४०,५; ३१०५
ईशानः तस्थुषः ७,३२,२२; २२५६
ईशानः भूरे ओजसा ८,३२,१४; १९३
ईशानः रायः ८,४६,६; १८२२ । ५३,१; ५२५
ईशानः वसूनाम् ८,६८,६; २२९६
ईशानः वस्वः ८,८१,४; ६७३ । [इन्द्रावरुणौ] ७,८२,४;
३१७५
ईशानः वार्याणां पुरूणाम् १,५,२; १५
ईशानः विश्वस्य ओजसा ८,१७,९; ४०२
ईशानः हर्योः ४,१६,११; १४७७
ईशानकृत् १,६१,११; ८६६ । २,१७,४; ११८४ । ६,
१८,६; १८६१ । ८,५२,५; ५१९ । ६५,५; ६०५ । १०,
२; २३९२
ईशिषे त्वम् १०,४४,५; २५७२
ईशिषे असुतानाम् ८,६४,३; ५९१
ईशिषे अस्य (सोमस्य) ८,८२,७,८,९; ६८५ ८६.८७
ईशिषे क्षेमस्य प्रयुजश्च ८,३७,५; १७८०
ईशिषे सुतानाम् ८,६४,३; ५९१
ईशे कृष्टीनां पूर्व्यां अनुष्टुतिम् ८,६८,७; २२९७
ईशे दिवः पृथिव्याः अपाम् पर्वतानाम् वृधाम् मेधिराणाम्
१०,८९,१०; २६७१
ईशे विश्वस्य करणस्य एकः १,१००,७; ९६३
ईशे स्थूरस्य रायः बृहतः ४,२१,४; १५४७
ईशे वस्वः रायः १०,४३,३; २५५९

उक्थवर्धनः ८,१४,११; ३६४

उक्थवाहस्-हाः ८,९६,११;२३५५ । १०,१०४,१;२७०४ ।
६,५९,१०; ३०५५
उक्थ्यः २,१३,२,१२; ११३७,११४८ । ३,५१,१; १४३४
उक्थ्यः शंस्यानाम् [वरुणः] १,१७,५; ३११८
उक्षितः २,१६,१; ११७२
उग्रः १,७,४; ३१ । ३३,५; ७३४ । ५१,११; ७५५ ।
५६,३; ७९९ । १००,१२; ९६८ । १०२,१०; ८३७ ।
११९,५; १००४ । १३०,७; १०१७ । ३,३०,३,२२;
१२४०,१२५९ । ३१,२२; १२८१ । ३२,१७; १२९८ ।
३४,११; १३११ । ३५,११; १३२२। ३६,११; १३३३ ।
३८,१०; १३५४ । ३६,५; १३२७ । ४६,१; १४०९ ।
२७,५; १४१८ । ४८,४; १४२२ । ३९,९; १३६३ । ४३,८;
१३९८। ४८,५; १४२३ । ४९,५; १४२८ । ५०,५;
१४३३ । ४,१६,२०; १४८६ । २०,१,६-७; १५३३,३८-
३९ । ४,२२,२; १५०६ । २३,७; १५७२ । २४,४; १५८० ।
५,३१,१,८; १७०६,१२ । ३५,६; १७४१ । ६,१७,१,
१०,१३; १८४१,५०,५३ । १९,११; १८८१ । १८,१,४,६;
१८५६,५९,६१ । २३,३,८; १९२०,२५ । २५,१; १९३८ ।
३७,१; १९७३ । ३८,५; १९८२ । ४१,३; १२९५ ।
६,४६,६; २०९५ । ७,२०,१; २१५१ । २१,८; २१७८ ।
२४,५; २१९० । २५,१,४; २१९२,९५ । २८,१; २२०९ ।
३३,२; २२६३ । ८,१,२७; ११३ । ३,१७; १७१ ।

४,७; २३५। ६,१४,१८;२५६,२६०। २१,२; ४१०। २४,७; १७९६। ३१,२,२७; १८१,२०६। ३३,९; २१८। ३३,१०; २१९। ३७,२;१७७७। ४५,३५;४७७। ४६,२०;१८३६। ४९,७; ४९१। ५०,६; ५००। ५२,५,५; ५१९,५१९। ६१,१२;५५९। ६५,५; ६०५। ६८,६;२२९६। ७०,४; २३२४। ९६,१०; २३५४। ९७,१०,१३; ९८१,९८८। १०,२९,३; २५१७। ४४,३; २५७०। ७३,१; २६२३। ८९,१८; २६७९। १०३,५; २६९५। १०४,११; २७१३। ११३,३,६; २७४७,२७५०। ११६,५; २७५९। १२०,१; २७६४। ४७,३; २८४४। ७.८२,५; ३१७६। साम० २३१,२९८०। [इन्द्राग्नी] १,२१,४;३००५। ऋ०६,६०,५; ३०६०। [इन्द्रः] ऋ० १,१६५,६,१०; ३२५५,३२५९। १,१७१,५; ३२६७। [इन्द्रासोमौ] ६.७२,५; ३२७५
उग्रः जनुषा ३,४६,२; १४१०
उग्रधन्वा १०,१०३,३; २६९४
उग्रबाहुः ८,६१,१०; ५५७। अ० ४,२४,२; २८६८
उग्राः [मरुतः] १,१७१,५; ३२६७
उत्तरः ८,१४,१५; ३६८
उत्तरः विश्वस्मात् १०,८६,१,२३; २६४०,२६६२
उत्सः हिरण्ययः ८,६१,६; ५५३
उद्यन्ता गिरः १,१७८,३; १०९८
उद्वा-द्व-वृषाणः ४,२०,७; १५३९। २९,३; १६०६
उपद्धानः आशून् धुरि ४,२९,४; १६०७
उपमः मघोनाम् ८,५३,१; ५२५
उपमानां प्रथमः ८,६१,२; ५४९
उपसद्यः। अथर्व० ६,९८,१; २९०२
उपस्तभायन् ४,२१,५; १५४८
उभयस्य राजा ६,४७,१६; २११४
उभयाविन्-वी ८,१,२; ८८
उराणः समत्सु सताम् १,१७३,७; १०६२
उरुः २,१३,७; ११४३। २१,१; ११२३। ३,४१,५; १३७७। ४६,४; १४१२। ६,१९,१; १८७१। ८,६५,३; ६०३। १०,४७,३; २८४४
उरुक्रमः ८,७७,१०; ६४९। [इन्द्राविष्णू] ७,९९,६; ३३१६
उरुगायः १०,२९,४; २५१८
उरुव्रयाः ८,६,२७; २६९
उरुधारा ८,१,१०; ९६
उरुव्यचस्-चाः १,१०४,९; ८५५। ६,३६,३; २०३३। ७,३१,११; २२३३। ८,२,५; ११०। ३,५०,१; १४२९
उरुशंसः ४,१६,१८; १४८४
उर्वराजित् २,२१,१; ११२७
उर्वरापतिः ८,२१,३; ४११
उर्वी [भूमिः] ६,४७.२०; ३३१७
उर्व्यूतिः ६,२४,२; १९२९
उशन् १,१०१,१०; ८२६। ३,४३,७; १३९७। ४,२०,४; १५३६
उशन् सोमम् सोमान् ४,२४,६; १५८२। ७,९८,२; २२८०
उशधक् ३,३४,३; १३०३
ऊर्ध्वः रथः न ३,४९,४; १४२७
ऊर्ध्वसानः द्रुह्वणे मनुषे १०,९९,७; २६८६
ऋग्मी ऋग्मिभिः १,१००,४; ९६०
ऋग्मियः १,९,९; ५६। ५१,१; ७९५। ६२,१; ८७२। ६,४५,७; २०६६। ८,४०,१०; ३११०
ऋघायन् १०,११३,६; २७५०
ऋघायमाणः १,१०,८;६५। ६१,१३;८६८। १७६,१;१०८५
ऋघावान् ३,३०,३; १२४०। ४,२४,८; १५८४
ऋचीषमः १,६१,१;८५६। ६,४६,४;२०९३। ८,३२,२६; २०५। ६२,६; ५७१। ६८,६; २२९६। ९०,१; २३९१। ९१,९; २४०५। १०,२२,२; २४६७
ऋजीषः १,३२,६; ७१०
ऋजीषिन्-षी ३,३२,१; १२८२। ३६,१०; १३३२। ४३,५; १३९५। ४६,३; १४११। ५०,३; १४३१। ४,१६,१,५; १४६७,१४७१। ५,४०,४; १७६८
ऋजीषिन् ६,१७,२,१०; १८४२,५०। १८,२; १८५७। २०,२; १८८५। २४,१; १९२८। ४२,२; १९९९। ७,२४,३; २१८८। ८,३२,१; १८०। ३३,१२; २११। ७६,५; ६३२। ८,९०,५; २३९५। ९६,९; २३५३। [सोमः] १०,८९,५; ३२७६
ऋजुक्रतुः १,८१,७; ९२२
ऋञ्जसानः ४,२१,५; १५४८
ऋणकातिः ८,६१,१२; ५५९
ऋणयाः ४,२३,७; १५७२
ऋतम् ४,२३,८,९,१०; १५७३-७४-७५। ८,६,१०; २५२
ऋतं कृण्वन् २,३०,१; ११२७
ऋतपाः ७,२०,६; २१५६
ऋतस्य प्रजा ८,६,२; २४४
ऋतयुः ८,७०,१०; २३३०
ऋतावत्-वा ३,५३,८; १४६०
ऋतावृधा (द्यौ) [इन्द्राग्नी] ६,५९,४; ३०४९। [सविता] ७,८२,१०; ३१८१। ७,८३,१०; ३१९१

ऋतीष-तिस-द: ८,४५,३५; ४७७ । ६८,१; २२९१ ।
८८,१; ८९४
ऋतुपा: ३,४७,३; १४१६ । १०,९९,१०, २६८९
ऋतेजा: ७,२०,६; २१५६
ऋत्विजा [इन्द्राग्नी] ८,३८,१; ३०९१
ऋत्वियः ८,६३,११, ५८८ । ८,४०,११; ३१११
ऋभुः १०,२३,२; २४८२ । १४४,२; २७९८
ऋभुक्षा: १,६३,३; ८८७ । ८,४५,२९; ४७१ । ९६,२१;
२३८३ । १०,२३,२; २४८२ । ७४,५; २६३८
ऋभुमान् ३,५२,६, १४५१ । ६०,६; ३३४२
ऋभुष्ठिरः ८,७७,८; ६४७
ऋम्त्र: १०,१२०,६; २७६९
ऋम्त्रा १,१००,१२;९६८ । ६,३४,२;२०२२ । ८,७०,३;
२३२३
ऋम्त्रा रुम्रेभिः १,१७०,५; ९६१ । १०,९९,५; २६८४
ऋषिः ५,२९,१; १६६७ । ८,६,४१;२८३ । १६,७, ३८८
ऋषिचोदन: ८,५१,३; ५०८
ऋष्वीवस्-वान् ८,२,२८; १४३
ऋष्व: १,८१,४, ९१९ । २,२१,४; १२२१ । ३,३२ ७;
१२८८ । ३५,८; १३१९ । ४,१९,१; १५२२ । २०,६,
९; १५३८,१५४१ । २३,१; १५६६ । ३३.३; १७१९ । ६,
१९,२; १८७२ । २९.६; १९६७ । ८,४६,१२; १८१८ ।
५०,७; ५०१ । ९३,९; २४३८ । १०,१४८,२; २८१०
ऋष्वौजा: १०,१०५,६; २७१९

एक: ५,३२,९,११; १७१३,१७१५ । ६,१८,३: १८५८ ।
८,२,३१; १४६ । १०,१३८,६; २७९७
एक: आजिषु ४,१७,९; १४९६
एक: ईशानः ओजसा ८,६,४१; २८३
एक: चर्षणीनाम् १,१७६,२;१०८६।३,३०,४-५; १२४१-४२
एकराट् अस्य भुवनस्य ८,३७,३; १७७८
एकवीरः १०,१०३,१; २६९२
एधमानद्विट् ६,४७,१६; २११४
एन: १,१७३,९; १०६४
एवया त्वत् न ८,२४,१५; १८०४

ओजः आविष्कृण्वानः ४,१७,३; १४९०
ओजः उशमानः ४,१९,४; १५२५
ओजसा एकः ईशानः ८,६,४१; २८३
ओजसा महान् ८,६,१,२६; २४३,२६८
ओजसा साकं जातः २,२२,३; १२२५
ओजस्वान् ८,७६,५; ६३२
ओजः मिमानः २,१७,२; ११८२
ओजिष्ठः १,११९,१०; १००९ । ८,९३,८; २४३७ । ९७,
१०; ९८५ । १०,७३,१; २६२३
ओजीयान् ६,२०,३; १८८१ । १०,१२०,४; २७६७
ओदतीनां नदः ८,६९,२; २३०५
ककुद्-प् ८,४५,१४; ४५६
ककुद् [अग्निः] वा० य० १३,१४; २९३०
कण्वमत्-मान् ८,२,२२; १३७
कनीनः ३,४८,१; १४१९ । ८,६९,१४; २३१६ । १०,
९९,१०, २६८९
कर्ता अपांसि ८,९६,१९; २३६१
कर्ता ज्योतिः समत्सु ८,१६,१०; ३९१
कर्ता पितृणाम् ४,१७,१७; १५०४
कर्ता वीरं नर्यं सर्ववीरम् ६,२३,४; १९११
कर्ता समदनस्य १,१००,६; ९६२
कर्ता सुदासे लोकम् ७,२०,२; २१५२
कर्मणः धर्ता विश्वस्य १,११,४; ७३
कवासखः ५,३४,३; १७२९
कविः १,११,४; ७३ । १७४,७; १०७५ । १७५,४; १०८२ ।
३,४२,६; १३८७ । ४,२५,२; १५८९ । ६,३२,३; २०१३ ।
७,१८,२; २११० । ८,४५,१४; ४५६ । १०,९९,९;
२६८८ । ८,४०,३; ३१०३
कविच्छदा (दौ) [इन्द्राग्नी] ३,१२,३; ३०३२
कविवृधः प्रत्नथा ८,६३,४; ५८१
कवीनां कवितमः ६,१८,१४; १८६९
कामी २,१४,१; ११५०
कारुधायाः ३,३२,१०; १२९१ । ६,२४,२; १९२९
काव्यः १०,१४४,२, २७९८
कियेधाः १,६१,६,१२; ८६१, ८६७
कीजः ८,६६,३; ६१५
कीरिचोदनः ६,४५,१९; २०७८
कृणवत् मानुषायुगा ८,६२,९; ५७४
कृण्वन् पुरूणि नर्या अपांसि ८,९६,२१; २३६३
कृण्वन् साधु ८,३२,१०; १८९
कृण्वानः मायाः ३,५३,८; १४६०
कृतब्रह्मा ६,२०,३; १८८१
कृत्नुः ६,१८,१५; १८७० । ८,१६,३; ३८४
कृष्टीनां पतिः ६,४५,१६; २०७५
कृष्टीनां राजा १,१७७,१; १०९७ । ४,१७,५; १४९२

केतुः संवनाम् ८,९६,४; २३४८
केवल: १,७,१०; ३७ । ४,२५,७; १५१४
कौशिकः १,१०,११; ६८
क्रतुः १०,१०४,१०; २७११
क्रतुः द्युम्निन्तमः ते १,१७५,५; १०८३
क्रतुः सहस्रदाम्नाम् १,१७,५; ३११८
क्रतुना साकं जातः २,२२,३; ११२५
क्रतुमान् १,६१,१२; ८८३ । १०,११३,१; २७४५
क्रतुम् शीर्षणि भरति २,१६,२; ११७३
क्रत्वा योद्धा ८ ८८,४; ८९२
क्षपावान् १०,२९,१; २५१५
क्षपां वस्ता ३,४९,४; १४१७
क्षममाणः १०,१०४,६; २७०८
क्षयः मानस्य ८,६३,७; ५८४
क्षयत् मघोनः ६,२३,१०; १९१८
क्षेमस्य आम् १,१००,७; ९६३
क्षोभणः चर्षणीनाम् १०,१०३,१; २६९२

खजकृत् ६,१८,२;१८५७ । ७,२०,२;१७१२ । ८,१,७;९३
खजंकरः १,१०२,६; ८३३
गणपतिः १०,११२,९; २७४३
गन्ता १,९,९; ५६
गभीरः ३,४६,४; १४११ । १०,४७,३; २८४४
गम्भीरः २,२१,४; ११२०
गवां जनिता ८,३६,५; १७७२
गवां पतिः १,१०१,४; ८२० । ३,३१,४; १२६३
गविषे (चतु०) ८,२४,२०; १८०९
गवेषणः १,१३२,३; १०३० । ७,२०,५;२२५१ । २३,३; २८१२ । ८,१७,१५; ४०८
गव्युः १,५१,१४; ७५८ । ७,३१,३; २२२५
गाथश्रवाः ८,२,३८; १५३
गाथान्यः ८,९२,२; २३९८
गायत्रवेपस्-पाः ८,१,१०; ९६
गार्ह्यः १०,१११,२; २७२६
गिर्वणस्--णाः १,५,७,१०; २०,२३ । १०,१२; ६९ । ११,६; ७५ । ६२,१, ८७२ । ३,४०,६; १३६९ । ४१,४; १३७६ । ५१,१०; १४४३। ४,३२,८,११; १६५२,१६५५। ६,३२,४; २०१४ । ३४,३; २०२३ । ४०,५; १९९२ । ४५,१३; २०७२ । ४५,२८; २०८७ । ४६,१०; २०९९ । ८,१,२६;११२ । २,२,७; १४२ । ३,१८; १७३ । १२,५; २१२ । १३,४,२२; ३१४,३४२। २४,१२; १८०१। ३२ ७; १८६ । ४९,३; ४८७ । ५१,६; ५१० । ५२,८; ५२२ । ६१,१४; ५६१ । ८९,७; २३९० । ९०,३; २३९३ । ९३,१०; २४३९ । ९५,१; २३३६ । ९५,२; २३३७ । ९८,७; २३७० । ९९,२; २३७७ । साम० २९४; २९८१
गिर्वणस्तमः ६,४५,२०; २०७९ । ८,६८,१०; २३०० । ५,८६,४; ३०४३
गिर्वणस्युः १०,१११,१; २७२५
गिर्वाहस्-हाः १,३०,५;७०३ । ६१,४;८५९ । १३९,६; १०४१ । ६,११,२; १८९८। २४,६; १९३३। ८,२,३०; १४५ । ९६,१०; २३५४
गीर्भिः श्रुतः ८,२,२७; १४२
गीर्षु आयतः विश्वासु ८,९२ ७; २४०३
गूर्तः १,१७३,२; १०५७
गूर्तश्रवाः १,६१,५; ८६२
गृणानः ६,३२,२; २०१२ । ३६,४; २०३४ । ८,९३,१०; २४३९ । १०,१३८,४; २७९५ । १४७,५; २८०८
गृणाना [इंद्रावरुणौ] ६,६८,८; ३१६८
गृणानः अंगिरोभिः २,१५,८; ११६९ । ४,१६,८; १४७४। १०,१११,४; २७२८
गृणानः अंगूषेभिः ४,२९,१; १६०४
गृणानः विश्वाभिः धीभिः शच्या १०,१०४,३; २७०५
गृत्सः ३,४८,३; १४२१ । १०,२८,५; २५१६
गोजित् २,२१,१; ११२७
गोत्रभिद् ६,१७,२; १८४२ । १०,१०३,६; २६९६
गोत्राणि सहसा अभिगाहमानः १०,१०३,७; २६९७
गोदत्रः ८,२१,१६; ४२४
गोदाः ३,३०,२१; १२५८ । ४,२२,१०; १५६४
गोनाम् अपवर्ता ४,२०,८; १५४०
गोपतिः १,१०१,४; ८२० । ३,३०,२१; १२५८ । ३१,२१; १२८० । ४,२४,१; १५७७ । ३०,२२;१६२७ । ६,४५,२१; २०८० । ७,१८,४; २१२२ । ८,२१,३; ४११ । ६९,४; २३०७ । १०,४७,१; २८४२
गोपतिः गवाम् एकः ७,९८,६; २२८४
गोपतिः विश्वस्य ८,६२,७; ५७२
गोपाः ३,३१,१४; १२७३ । [इन्द्रवायू] ७,९१,२;३२३६
गोमान् ४,३२,७; १६५१ । य० २६,४; २९६४
गोविद् ८,५३,१; ५९५ । १०,१०३,५-६; २६९५-९६
गोषणः [गोसनः] ४,३२,२२; १६६६
गौः गव्यते असि ६,४५,२६; २०८५

ग्मन्ता अध १०,२२,६; २४७१
घ्नन्: वृत्राणाम् १,४,८; ११ । ३,४९,१; १४२४ । ८,९६,१८; २३६०
घनाघनः १०,१०३,१; २६९२
घृतासुती [इन्द्राविष्णू] ६,६९,६; ३३११
घृषुः १०,२७,६; २४९६ । १४४,३; २८००
घृष्विः ३,४६,१; १४०९ ६,१८,१२; १८६७
घोरः ७,२८,२; २२०९
घ्नन् वृत्राणि ३,३०,२२; १२५८ । ३१,२२; १२८१ । ३२,१७; १२९८ । ३४,११; १३११ । ३५,११; १३२२ । ३६.११; १३३३ । ३८,१०; १३५४ । ३९,९; १३६३ । ४३,८; १३९८ । ४८,५; १४२३ । ४९,५; १४२८ । ५०,५; १४३३
चक्रमाणः ५,३६,१; १७४४
चकानः शवसा ६,३६,५; २०३५ । ७,२७,१; २२०३
चकानः सुमतिम् १०,१४८,३; २८११
चकृवम्...वान् विश्वा ६,१७,१३; १८५३
चक्रमासजः ५,३४,६; १७३२
चक्राणा [इंद्रावरुणौ] ४.४०,१०; ३१५५
चक्रिः १,९,२; ८९
चनिनः ६,१९,४; १८७४
चतुः समुद्रः १०,४७,२; २८४३
चन्द्रबुध्नः १,५२,३; ७६२
चन्द्रवर्णाः [मरुतः] १,१६१,१२; ३२६१
चरन् १,६,१; २४
चर्चूर्यमाणः अनुष्टुभम् अनु १०,१२४,९; ३२७७
चर्कृत्यः १०,५०,२; २६०२ । ६७,२; २८४३ अथ० ६,९८,१; २९०२
चर्कृत्यः चरणीनाम् ८,२४,२३; १८१२
चर्षणी [इन्द्राग्नी] १,१०९,५; ३०९५
चर्षणिप्राः १,१७७,१; १०९१ । ३,३४,७; १३०७ । ६,१९,१; १८७१ । ३९,४; १९८६ । ७,३१,१०; २२३२ । अ० ४,२४,३; २८६९
चर्षणीधृत् ३,३७,४; १३३७ । ५१,१; १४३४ । ४,१७,२०; १५०७ । ८,९३,२०; २३६२ । १०,८९,१; २६६३
चर्षणीसहः ६ ४६,६; २०९५ । ८,१,२; ८८ । २१,१०; ४१८ । ७,९४,७; ३०८५
चर्षणीनाम् एकः १,१७६,२; १०८६
चर्षणीनां धर्तारा [इन्द्रावरुणौ] १,१७,२; ३१३५
चर्षणीनां राजा ७,२३,३; २२०५ । ८,७०,१; २३२१
चर्षणीनां वृषभः ६,१८,१; १८५६ । ८,९६,४,१८; २३४८-६०
चर्षणीनां सम्राट् ८,१६,१; ३८२
चारुः ३,४९,३; १४२६
चिकित् ८,५१,३; ५०७
चिकित्रः साम० २९४; २९८१
चिकित्वान् १,१६९,१; १०४३ । ३,४४,२; १४०० । ४,१६,२; १४६८ । २९,२; १६०५ । ८,६,२९; २७१ । ९५,५; २४० । १०,९९,१; २६८० । अथ० ७,९७,१; ३११०
चित्रः ४,३१,१; १६३० । ३२,२; १६४६ । ५,३९,१; १७६० । ६,४६,२,५; २०९१,२०९४ । ७,२०,७; २१५७ । ८.४६,२०; १८३६ । ९७,१५; ९९० । [मरुतः] १,१६५,१३; ३२६२
चित्रतमः ६,३८,१; १९७८
चित्रभानुः १,३,४; १
चेकितानः युगेयुगे वयसा ६,३६,५; २०३५
चेतिष्ठः ८,४६,२०; १८३६
चोदप्रवृद्धः १,१७४,६; १०७४
चोदिता रध्रस्य १०,२४,३; २४९०
चोदौ रध्रस्य [इन्द्रासोमौ] २,३०,६; ३२७०
च्यवनः २,२१,३; १२१९ । ६,१८,२; १८५७
च्यवनः अच्युतानाम् ८,९६,४; २३४८
च्यवनः विभूतद्युम्नः ८,३३,६; २२५
च्यावयन् अच्युतानि ३,३०,४; १२४१
च्यौत्नः विश्वस्मिन् भरे नृन् १०,५०,४; २६०४
छुन्दुः हर्यतः १,५५,४; ८००
जग्मिः ६ ४२,१; १९९८ । ७,२०,१; २१५१ । ८,४६,१७; १८३३
जनंसहः २,२१,३; १२१९
जनभक्षः २,२१,३; १२१९
जनयोपनः १०,८६,२२; २६६१
जनानां तरणिः ८ ४५,२८; ४७०
जनानां राजा ८,६४,३; ५९१
जनाषाट् १,५४,११; ७९६
जनिता १,१२९,११; १०१० । ८,९९,५; २३८०
जनिता अश्वानाम् ८,३६,५; १७७३
जनिता गवाम् ८,३६,५; १७७३
जनिता दिवः ८,३६,४; १७७२
जनिता पृथिव्याः ८,३६,४; १७७२
जनिता सूर्यस्य ३,४९,४; १४२७
जनितारा मतीनाम् [इन्द्राविष्णू] ६,६९,२; ३३०७

जनुषां राजा ४,१७,२०; १५०७
जज्ञानः ३,४४,४; १४०२ । ६,३८,५; १९८२
जज्ञानः सद्यः ८,९६,२१; २३६३
जयत्-न् १०,१०३,६; २६९६
जयन् प्रमृणः [बृहस्पतिः] वा० य० १७.३६; २९३२
जयन् धना १०,१२०,४; २७६७
जयन् स्पृधः १०,१६७,२; २८३०
जरमाणः सुवृक्तिभिः दिवेदिवे ३,५१,१; १४३४
जरयन् २,१६,१; ११७२
जरिता वसोः ३,५१,३; १४३६
जर्हृषाणः ७,२१,४; २१६४
जागृविः ८,९२,२३; २४१९
जावः ३,५१,८; १४४१
जातः सहसे सनादेव ४,२०,६; १५३८
जातूभर्मा १,१०३,३; ८४१
जायमानः प्रथमम् ४,१७,७; १४९४
जायमानः सप्तभ्यः अशत्रुभ्यः ८,९६,१६; २३५८
जारः १०,४२,२; २५४७ । १०,१,१०; २६३४
जिघ्नमानः वृत्रा ३,३०,४; १२४१
जिष्णुः ६,४५,१५; २०७४ । १०,१११,३; २७२७
जीरदानुः ८,६१,३; ५६८ [१०३,२; २६९३
जुजुषाणः ७,२३,३; २१८९
जुजुषाणः स्तोमम् ८,६६,८; ६२०
जुजुष्वान् ८,६४,८; ५९६
जुषाणः २,१४,९; ११५८ । ८,१३,१३; ३३३ । १०,१७९,३; २८३८
जुषाणः ब्रह्म ७,२४,४; २१८९
जुषाणः ब्रह्मकृतिम् ७,२९,२; २२१४
जुषाणः सवनम् १०,१६०,२; २८२५
जुषाणः हृदा मनसा ब्रत ७,९८,२; २२८०
जुषाणः होतुः यज्ञम् ४,२३,१; १५६६
जुष्टतरः ८,९६,११; २३५५
जेता १,११,२; ७१ । २,४१,१२; १२३७।८,९९,७;२३८१
जेता पृत्सु १,१७८,३; १०९८
जेन्यावसू [इन्द्राग्नी] ८,३८,७; ३०९७
जोहूत्रः २,२०,३; १२१०
ज्यायस्--यान् ३,३८,५; १३४९ । १०,५०,५; २६०५
ज्येष्ठः [ब्रह्मणस्पतिः] ७,९७,३; ३३६०
ज्येष्ठः मातृभिः १,१००,४; ९६०
ज्येष्ठः वृषभाणाम् ८,५३,१; ५२५
ज्येष्ठतमः २,१६,१; ११७२
ज्येष्ठराजः ८,१६,३; ३८४
ज्योतिषा विभ्राजत् ८,९८,३; २३६६
तक्तः शवसा भत्यैः ६,३२,५; २०१५
तनुरिः ६,२२,२; १९०८ । २४,२; १९२०
ततृद्वानः ४,२८,५; १६०३
ततान भा विश्वानि शवसा ७,२३,१; २१८०
तत् [बर्हिः] ओकः ३,३५,७; १३१८
तत् [रथ] सिनः १,६१,४; ८५९
तत् [सोम] कामः २,१४,२; ११५१
तनुः ८,९३,१०; २३५४
तनूपाः ४,१६,२०; १४८६ । ६,४६,१०; २०९९
तनूरुचा (चौ) [इन्द्राग्नी] ७,९३,५; ३०७५
तन्वे इच्छमानः ४,१८,१०; १५१८
तन्तं ८,६८,७; २२९७
तमसः विहन्ता वयुषश्चित् १,१७३,५; १०६०
तरणिः ७,२६,४; २२०१
तरणिः जनानाम् ८,४५,२८; ४७०
तरणिः पृत्सु ३,४९,३; १४२६
तरद्द्वेषाः १,१००,३; ९५९
तरस्वी ८,९८,१०; ९८५
तरुता पृतनानां विश्वासाम् ८,७०,१; २३२१
तरुता वाजयम् १,१२९,२; १००१
तरुत्रः १,१७४,१; १०६९ । २,११,१५-१६; ११९५-९६ । ३,३०,३; १२४० । ६,१७,२; १८४२ । २६,२; १९४८ । १०,४७,४; २८४५
तरुत्रः महिना ७,२१,९; २१६९
तरुष्यतः ८,९९,५; २३८०
तवस्-से (चतु०) १,५१,१५; ७५९ । ५८,१८; ११ । ६१,१; ८५६ । ५,३३,१; १७१७ । ६,१७,४,८; १८४४-१८४८ । १८,४; १८५९ । ३२,१; २०११ । ८,९३,१०; २३५४ । ९८,१०; ९८५ । १०,२५,५; २५२६
तवसः तवीयान् ६,२०,३; १८८६
तवस्तरः १,३०,७; ७०५
तवस्तमा (मौ) [इन्द्राग्नी] १,१०९,५; ३०२५
तवागाः ४,१८,१०; १५१८
तविषः ३,३४,२; १३०२ । ८,१५,१; ३६९ । ४६,१२; १८१८ । ९६,१८; २३६० । १,१६५,६,८; ३२५५, ३२५७ । १,१७१,४; ३२६६

तविषीवान् ४,२०,७; १५३९ । ७,२५,४; २१९५ ।
१०,१०५,३; २७१६
तविषीभिः आवृतः १,५१,२; ७४६ । ८,८८,२; ८९५
तव्यान् ३,३२,११; १२९२
तस्थिवस्-वान् ३,३८,९; १३५३
तिग्मायुधः २,३०,३; १२२०
तिग्निपाणः १०,५५,१; २६१४
तिम्तिराणा (णां) बर्हिः [इन्द्राग्नी] १,१०८,४; ३०११
तुग्ग्याबृधः ८,४५,२९; ४७१ । ८,९१,७; २३८१
तुजन्-न् १,६१,६; ८६१
तुजा [इन्द्रावरुणौ] ६,६८,२; ३१६२
तुम्रः ३,५०,१;१४२९। ४,१७,८;१४९५। १८,१०;१५१८
तुरः १,६१,१,१३; ८५६,८६८ । ६,१८,४; १८५९ ।
३२,१; २०११ । ७,२२,५; २१७५ । ८,७८,७; ६५७
तुरन् ६,१८,४; १८५९
तुराषाट् [माह] ३,४८,४; १४२२ । ५,४०,४; १७६८ ।
६,३२,५; २०१५ । १०,५५,८; २६२१ । अथ० २,५,३;
२८३५ । साम० ९५४, २९९९
तुरीयादित्य ८,५२,७; ५२१
तुर्वणिः १,५७,३; ८०६ । ६१,११; ८६६ । १३०,९,९;
१०१९,१०१९ । ५,३५,३; १७३८ । १०,३२,५; २५३४
तुर्वणिः पृतन्यून् ४,२०,१, १५३३
तुविकूर्मि ३,३०,३;१२४० । ६,२२,५;१९११ । ८,२,३१;
१४६ । १६,८; ३८९ । ६८,१; २२९१ । ८०,२, ६७१
तुविकूर्मिन्-र्मी ८,६६,१२; ६२४
तुविकूर्मितमः ६,३७,४; १९७६
तुविक्रतुः ८,६८,२; २२९२
तुविग्राभः ६,२२,५; १९११
तुविग्रिः २,२१,२; १२१८
तुविग्रीवः ८,१७,८; ४०१ । ६४,७; ५९५
तुविजातः १,१३१,७; १०२७ । ३,३२,११; १२९२ ।
६,१८,४; १८५९ । १०,९९,५; २५१९
तुविदेष्णः ८,८१,२; ६७१
तुविद्युम्नः १,९,६; ५३। ४,२१,२, १५५५। ६,१८,११-१२;
१८६६-६७ । ८,९०,२, २३९२
तुविनृम्णः ४,२२,६; १५६० । ६,३०,५; २०१० ।
६,४६,३,२०९२ । ८,२४,२७; १८१६ । ७०,१०; २३३० ।
१०,१४८,१; २८०९
तुविप्रतिः १,३०,९; ७०८
तुविबाधः १,३२,६; ७२०
तुविमात्रः अमोभि ८,८१,२; ६७१
तुविम्रक्षः ६,१८,२; १८५७
तुविराधाः ४,२१,२; १५४५
तुविशग्मः ६,४४,२; २०३७
तुविशुष्मः [इन्द्रावरुणौ] २,२१,१; १२१३ । ८,६८,२;
२२९२ । ६,६८,२; ३१६२
तुविष्टमः अथ० ६,३३,३; २८८९
तुविष्मान् १,५५,१; ७९७ । २,११,११; ११३३ । ४,२१,
३; १६०६ । ७,२०,४; २१५४ । १०,४४,१; २५६८ ।
७४,६, २६३९ । १,१६५,६; ३२५५
तुविष्वणिः (स्वनिः) २,१७,६; ११८६
तुवी [वि] मघः १,२९,१-७; ६९१-९८ । ८,६१,१८;
५६५ । ८१,२; ६७१ । ९२,२९; २४२५
तूतुजानः १,३,६; ३ । ६१,११; ८६७ । ६,३७,५; १९७७।
८,१३,११; ३३१ । १०,४४,१; २५६८
तूतुजिः ४,३२,२; १६४६ । १०,२२,३; २४६८
तूर्णिः ३,५१,२; १४३५
तूर्यः ८,९९,५; २३८०
तूर्वन् ६,२०,३; १८८६
तूर्वन् श्रवस्यानि १,१००,५; ९६१
तृपल प्रभर्मा [सोमः] १०,८९,५; ३२७६
तृषत् २,२१,१; १२१३
तृषाणः ५,३६,१; १७४४
तोकसाता ६,१८,६; १८६१
तोदः ४,१६,११; १४७७
तोशा(शौ)[इंद्राग्नी] ३,१२,४; ३०३३ । ८,३८,२; ३०९१
त्यागः ४,२४,३; १५७९
त्रदः ८,४५,२८; ४७०
त्रा ४,२४,३; १५७६
त्रा क्षेमस्य १,१००,७; ९६३
त्राता १,१२९,१०; १००९ । १७८,४; ११०० । ६,२५,७;
१९४४ । ६,४७,११; २११९
त्राता त्रिप्रस्य मावतः १,१२९,११; १०१० । ७,२०,१;
२१५१ । ४,१७,१७; १५०४ । अथ० १९,१५,३; २९१६
त्रिसप्तैः सत्वभिः [उपेतः] १,१३३,६; १०३९
त्वष्टा ६,४७,१९; २११७
त्वा प्रति कश्चन न ८,६४,२; ५९०
त्विषीमान् १,५६,५; ८०१ । २,२२,२; १२२४
त्वेषः १,१००,१२; ९६९ । ८,४०,१०; ३११०
त्वेषनृम्णः १०,१२०,१; २७६४
त्वेषसंदृक् ६,२१,९; १९१५

दंसना ८,१,२७; ११३ । ८८,४; ८९७
दंसनावान् १,३०,१६; ७१४ । ३,३९,४; १३५८
दंसिष्ठः ८,२४,२५--२६ । १८१४--१५
दक्षं पृङ्वत् ८,२४,१४; १८०३
दक्षाय्यः भरहूतये प्रतूर्तये (च) १,१२९,२; १००१
दक्षिणावान् ३,३९,६; १३६०
दत्-न् १०,१०५,२; २७१५
ददत् विप्रेभ्यः मघा ५,३२,१२; १७१६
ददिः गाः ६,२३,४; १९११
ददृशानः ४,१७,१७; १५०४
दधत् पुरः ५,३१,११; १७०२
दधानः पुरूणि नर्या ३,३४,५; १३०५
दधानः सत्रा शवांसि ८,९७,१२; ९८७
दधाना द्रविणः [इन्द्राविष्णू] ६,६९,३; ३३०८
दधृषः वाजेषु ३,४२,६; १३८७
दधृष्वणिः ८,६१,३; ५५०
दधृष्वान् ४,२२,५; १५५९ । ५,२९,१४; १६८०
दध्वन्-ध्वा ६,४२,१; १९९८
दमयन् पृतन्यून् १०,७४,५; २६३८
दमायन् ६,४७,१६; २११४
दमिता अभिक्रतूनाम् ३,३४,१०; १३१०
दमिता विश्वस्य ५,३४,६; १७३२
दमूनाः ३,३१,१६; १५७१ । ६,१९,३; १८७३
दम्पतिः ८,६९,१६; २३१८
दम्भयन् धुनिम् १०,११३,९; २७५३
दयते एकः देवत्रा मर्तान् ७,२३,५; २१८४
दयमानः महो धनानि १,१३०,७; १०१७
दयमानः सेनाभिः १०,२३,१; २२८१
दरीमन् दुर्मतीनाम् १,१२९,८; १००७
दर्ता पुराम् १,१३०,१०; १०२० । ८,४,६; २३६९
दर्मा पुराम् १,६१,५; ८६० । १३१,६; १०३३ । ३,४५,२; १४०५
दशमः ८,२४,२३; १८१२
दशस्यन् दाशुषे १,६१,११; ८६६
दस्मः १,६२,५-६,११-१२; ८७६-७७,८८१-८२; १२९,३; १००२ । ५ ३१,७; १६९९ । ३४,१; १७२७ । ६,१८,५; १८६० । ७,२२,८; २१७८ । ३१,९; २२३१ । ८,४५,३५; ४७७ । ८८,१; ८९५ । ९२,१८; २४१४ । १०,९९,१०; २६८९ । १४७,५; २८,८
दस्मतमः २,२०,६; १११३
दस्मवर्चाः १,१७३,४; १०५९
दस्युहत्याय उपप्रयन् १,१०३,४; ८४२
दस्युहा १,१००,१२; ९६८ । ६,४५,२४; २०८३ । ८,७६,११; ६३८ । ७७,३; ६४२ । १०,४७,४; २८४५
दस्योः हन्ता ८,९८,६; २३६९
दस्रा [इन्द्राविष्णू] ६,६९,७; ३३१२
दाता ४,१,७; १६३६ । ६,२२,३; १९२० । ८,३३,८; २१७ । ५२,५; ५१९ । १०,२४,१; २६१२
दाता इषान् ८,४६,२; १८४८ । ६,६०,१३; ३०६८
दाता प्रथमः ८,९०,२; २३९२
दाता मघानि ४,१७,८ १४९५
दाता महः ८ २९,१; १९६२
दाता महानां राजानाम् ८,९२,३; २३९९
दाता रयीणाम् ८,४६,२; १८५८ । ६,६०,१३; ३०६८
दाता वसु दाशुषे ७,२०,२; २१५२
दाता वसूनाम् ८,५१,५; ५०९
दाता वाजस्य अश्व्यस्य ८,९६,२०; २३६१
दाता विश्ववारस्य रायः ६,२३,१०; १९२७
दाता स्तुवते काम्यं वसु २,२२,३; १११५
दाता स्थविरस्य वाजस्य ६,३७,५; १९७७
दा [द] दहाणः १,१३०,४; १०१४
दाधृषिः ४,१७,८; १४९५
दानः ७,२७,४; २२०६
दानवान् ८,३२,१२; १९१
दामनः रयीणाम् ५,३६,१; १७४४
दाशुषः अथर्व० ४,२४,१; २८६७
दाशने कृतः ८,९३,८; २४३७
दाशत् १०,१३८,५; २७९६
दाश्वान् ८,४९,२; ४८६ । १०,१०४,६; २७०८
दिरसत् ८,८१,३; ६७२
दिवक्षाः ३,३०,२१; १२५८
दिवः अमुष्य शासतः ८,३४,१-१५; ४२५-४३९
दिवः जनिता ८,३६,४; १७७२
दिवः दुहिता [उषाः] ४,३०,९; ३३४५
दिवः पतिः ८,१३,८, ३२८ । ९८,४--६; २३६७--६९
दिवः मूर्धा [अग्निः] वा० य० १३,१४; २९३०
दिवः मानः ८,६३,२; ५७९
दिवा वसुः ८,३४,१-१५; ४२५--४३९
दिविस्पृशा [इन्द्रवायू] १,२३,२; ३११३
दिवे (चतुर्थी द्यौः) १,५५,३; ७८८

दिव्यः ३,४७,५: १४१८। ६,१९,११; १८८१
दीद्यानः ३,३१,१५; १२७४
दीर्घायुः ८,७०,७; २३२७
दुधः १,५७,३; ८०७। २,११,१५: ११३६
दुरः अश्वस्य १,५४,२: ७७६
दुरः गोः १,५४,२; ७७६
दुरः यवस्य १,५४,२; ७७६
दुरोषाः ४,२१,६; १५४९
दुर्मतीनां प्रभङ्कः ८,४६,१९; १८३५
दुर्हणावान् ८,२,२०; १३५
दुश्च्यवनः १०,१०३,२,७; २६९३,२६९७
दुष्टरा (रौ) [इन्द्राग्नी] ५,८६,२; ३०४२
दुष्टरीतुः २,२१,२; १२१८
दुहिता दिवः [उषाः] ४,३०,९; ३३४५
दूणाशः ७,३२,७; २२४१
दूता उशन्ता [इन्द्रवायू] ७,९१,२; ३२३६
दृळहा ७,२७,२; २२०४
दृळहा चित् ८,२४,१०; १७९९
दृळहा चित् आरुजः ३,४५,२; १४०५
देवः १,६३,८;८९२। ८४,१९;९५५। १२९,१०;१०१०। १६९,८;१०५०। १७३,१३;१०६८। २,११,१३;१११२। १२,१; ११२२। १३,५; ११४१। १९,५; १२०३। २०,६;१२१३। २२,१-३;१२२३-२५। ३,३३,६;१२९९। ४,१७,५;१४९२। २२,३;१५५७। २३,४-५; १५६९-७०। ५,३३,३; १७१९। ६,१८,१४; १८६९। ३९,१,६; १९८३,१९८३। ७,३०,४; २२२१। ८,१,२२-२३; २०८-९। २,७; १२२। १२,६,१५,१०; २९३,३०२,३०६। ५१,७; ५११। ६१,६;५५३। ६५,४;६०४। ९३,११; २४४०। १०,२३,७; २४८७। ८६,१; २६४०। १०४,९; २७११। साम० १९६; २९७६। ऋ० ५,८६,५; ३०४४। [इन्द्राग्नी] ६,५९,४-५; ३०४९-५० ६,६०,१४: ३०६९। अथ० ७,९७,३; ३११२
देवः [वरुणः] ६,६८,९; ३१६९
देवतमः ४,२२,३; १५५७
देवत्रा [अग्निः वि०] ८,३४,८; ४३२
देवः देवस्य ८,९२,६; २४०२। १०,२२,४; २४६९
देववत्-वान् १०,४७,३; २८४४
देवौ [इन्द्रावरुणौ] ४,४१.२;३१४७। [इन्द्रापर्वतौ]३,५३,१: ३३५६।
देष्णः ३,३०,१९; १२५६
दोधतः वधः २,२१,४; १२२०
दोधुवत् श्मश्रु १०,२३,१; २४८१
द्युक्षः ६,२४,१; १९२८। ३७,२; १९७४। ८,२४,२०; १८०९। ६६,६; ६१८। ८८,२; ८९५
द्युमत्-मान् १,६२,१२; ८८३। ६,१७,४; १८४४।
द्युमत्तमः १,५४,३; ७७७
द्युम्नी ८,८९,२; २३८५। ९३,८; २४३७
द्रप्सः ८,१७,१४; ४०७
द्रुपदे [इन्द्राश्वौ] ४,३२,२३; ३३४८
द्रुः द्रुरिषु १,५२,३; ७६२
द्विबर्हस्-र्हाः ६,१९,१; १८७१। ७,२४,२; २१८७। ८,१४,२; ३७०। १०,११६,४; २७५८
धनजित् २,२१,१; १२१७
धनञ्जयः ३,४२,६; १३८७। ८,४५,१३; ४५५
धनदाः १,३३,२; ७३१। ६,१९,५; १८७५
धनदाः विश्वस्य-श्रुतः ७,३२,१७; २२५१
धनपतिः अथर्व० ५,२३,२; २८७५
धनस्पृत् ३,४६,२; १४१०। ८,५०,६; ५००। १०,४७,४; २८४५
धनानां संजितः ३,३०,२२; १२५९। ३१-३२,२२,१७; १२८१,१२९८। ३४-३६,११; १३११,१३२२,१३३३। ३८-३९,१०,९; १३५४,१३६३। ४३,८; १३९८। ४८-५०,५, १४९३, १४२८, १४३३। १०, ८९, १८; २६७९। १०४,११, २७१३
धनुः ते तुविक्षम् ८,७७,११; ६५०
धरुणः रयीणाम् १०,४७,२; २८४३
धर्तारा चर्षणीनाम् [इन्द्रावरुणौ] १,१७,२; ३१३५
धर्ता धनानाम् १,१०३,५: ८३२
धर्ता दिवो रजसः ३,४९,४, १४२७
धर्ता विश्वस्य कर्मणः १,११,४: ७३
धर्मकृत् ८,९८,१; २३६४
धामन् ८,६३,११; ५८८
धामसाचः ३,५१,२; १४३५
धायुः ३,३०,७; १२४४
धियसानः नः५,३३,२; १७१८
धियस्पती [इन्द्रवायू] १,२३,३; ३२१४
धीतः ८,३,१६; १७१
धीतिः ऋतस्य सदसः १०,१११,२; २७२६
धीरः १,६२,१२;८८३।५,२९,१;१६६७।१०,८९,८;२६६९
धुनिः १,१७४,९; १०७७। ५,३४,५-८; १७३१-३४। ६,२०,१२; १८९५। [सोमः] १०,८९,५; ३२७६

धुनी वातस्य १०,२२,४; २४६९
धृतव्रतः [इन्द्रावरुणौ] ६,१९,५; १८७५। ८,९७,११; ९८६। ६,६८,१०; ३१७०
धृषत् १,५५,३-४; ७८८-७८९। ६,४५,२१; २०७०। ८,२१,२; ४१०
धृषन्मनाः १,५२,१२; ७७१। ६२,५; ५७०।८,८९,४;२३८७
धृषमाणः १,५२,५; ७६४
धृषितः ८,३३,६; २१५।९६,१७; २३५९। १०,११३,५; २७४९। १३८,४; २७९५
धृष्णः ७,१९,३; ११४२
धृष्णुः १,३०,१४; ७११। ६३,३; ८८७। ८४,१; ९३७। २,१६,४; ११७५। ३,५२,८; १४५३। ४,१६,७; १४७३। २२,५; १५५९। ६,१७,१; १८४१। २१,७; १९०३। २९,३; १९६४। ३७,४; १९७६। ७,२०,५; ११५५। ८,२४,१,४; १७९०,१७९३। ३३,३; २११। ४५,१४; ४५६। ७८,३; ६५३। ८१,७; ६७६। १०,१०३,३; २६९३। १११,६; २७३०। १२०,४; २७६७।
धृष्णुया ४,३०,१३; १६१८। ६,४६,२; २०९१
धृष्णवोजाः ८,७०,३; २३२३
धेनुः ८,१,१०; ९६
धेनूनां अह्रयाणां पतिः ८,६९,२; २३००

नक्षद्दाभः ६,२२,२; १९०८
नदः ओदतीनाम् ८,६९,२; २३०५
नदः योयुवतीनाम् ८,६९,२; २३०५
नदनुमान् ६,१८,२; १८५७
नपात् ४,३२,२२; १६६६
नमस्यः। अथ० ६,९८,१; २९०२
नरः ३,५१,२; १४३५। ४,२५,४; १५९१। ६,४४,४; २०३९। ८,४०,२; ३१०२। ८,१६,१; ३०२। २७,१९; १८०८। ९२,८; २४०४
नरा [इन्द्राग्नी] ६,६०,८-९; ३०६३-६४। ७,९४,३; ३०८१। ८,३८,५-६; ३०९५-९६। ८,४०,३; ३१०३। [इन्द्रावरुणौ] ७,८२,८; ३१७९। ७,८३,१; ३१८२। [इन्द्रवायू] ७,९१,६; ३२३९
नरे (चतुर्थी) ६,४२,१; १९९८
नर्यः १,६३,३; ८८७। ४,२५,४; १५९१। २९,२; १६०५। २४,२; १९२९। ७,२०,१; २१५१। ५; २०५५। ८५,१; २१९२। १०,२९,१; २५१५। ५०,२; २६०२।
नर्यापसः ८,९३,१; २४३०
नरः [मरुतः] १,१६५,११; ३२६०
नवः ८,२४,२३; १८११। [इन्द्राग्नी] ४,३२,२३; ३३४८
नविष्ठः ५,३२,११; १७१५
नवीयस्-यान् २,१९,८; १२०६। ३,३६,३; १३२५। ६,२२,१; १८९७। ६,४४,७; २०४२।१०,२७,१९; २४०९
नवेदाः ऋतानाम् ४,२३,४; १५६९
नव्यः ६,१७,१; १८५३। ७,१८,५; २१२३। ८,१६,१; ३८२। २४,८,२६; १७०७,१८१५
नहुषः नहुष्टरः १०,४९,८; २५९७
नाम बिभ्रत् श्रुत्यम् ५,३०,५; १६८६
नामा ते चत्वारि असुर्याणि १०,५४,४; २६११
निचुम्पुणः ८,९३,२२; २४५१
निमेघमानः दिवेदिवे ८,४,१०; २३८
नियन्ता सूनृतानां शचीनाम् ८,३२,१५; १९४
नियुत्वस्-त्वान् १,१०१,९; ८२५। ६,४०,५; १९९२। ८,९३,२०; २४४९। ६,६०,२, ३०५७। [इन्द्रवायू] २,४१,३;३२२०। [वायु०] ४,४६,२;३२२१। ४,४७,३; ३२२८। ७,९१,५; ३२३८
नियुत्वान् वसुभिः ३,४९,४; १४२७
नित्रः ८,९३,१५; २४४४
निवेशनः [अग्निः] वा०य० १२,६६; २९२९
निशितः सोमसुद्भिः ४,२४,८; १५८४
निष्टुरः ८,३२,२७; २०६
नृजित् २,२१,१; १२१७
नृतमः ३,३०,२२;१२५९।अयं मंत्रः द्वादशकृत्वः ३,५०,५; १४३३। पुनरपि च १०,८९,१८;२६७९।१०४,११;२७१३। इत्यादिस्थलेषु पुनरुक्तः। ३,४९,२; १४२५। ४,१७,११; १४९८। २२,२; १४५६। ६,१८,७; १८६२। ८,२४,१-१०; १७९०-९९। १०,२९.१-२; २५१५-१६। ८९,१; २६६३
नृतमः नृणाम् ४,२५,४; १५८९। ६,३३,३; २०१८
नृतमः नराम् ७,१९,१०; २१४९
नृतमः शाकैः ४,१७,११; १७९८
नृतुः २,२२,४; १२२६। ८,२४,१२; १८०१। ६८,७; २१९७। ९२,३; २३९९। १,१३०,७; १०१७
नृपतिः १,१०२,८; ८३५। ४,२०,१;१५३३। ७,३०,१; २११८। ८,५४,६; ५३६। १०,४४,२-३; २५६९-७०
नृपाता नराम् १,१७४,१०; १०७८
नृमणः १,५१,५,१०; ७४९,७५४। ४,१६,९; १६७५। ७,१९,४; २१४३। ८,९६,१३; २३५७
नृम्णः २,११,१; ११२२। अथ० ४,२४,३; २८६९

नृवत् वान् ६,११,३; १९०९
नृषाता ७,२७,१; २२०३
नृषाहः ८,१६,१; ३८२
नेमिः ८,९७,१२: ९८७
न्यृष्टः वसुना १०,४२,२; २५४७
न्योकाः १,९,१८; ५७
पणिः ८,४५,१४; ४५६
पतिः १,५४,२; ७७६ । ६१,२; ८५७ । ३,३९,१; १३५५ । ४,१६,७; १४७३ । ८,१३,९: ३२९ । ८०,९; ६६९ । १०,७४,६; २६३९ । ९९,६; २६८५ । १०५,२; २७१५ । अथर्व० ६,३३,३; २८८९
पतिः अघ्न्यानां धेनूनाम् ८,६९,२; २३०५
पतिः कृष्टीनाम् ६,४५,१६; २०७५ । ८,१३,९; ३२९
पतिः जनानाम् ६,३४,४; २०३४
पतिः दिवः ८,१३,८; ३२८ । ९८,४,५,६; २३६७-६८-६९ । १११,३; २७२७
पतिः पृथिव्याः [अग्निः] वा० य० १३,१४; २९३०
पतिः राधसः तुरस्य ६,४४,५; २०४५ । ५,८६,४; ३०४३
पतिः राधानाम् ३,५१,१०; १४४३
पतिः वाजस्य दीर्घश्रवसः १०,२३,३; २४८३
पतिः वाजानाम् ६,४५,१०; २०६९ । ८,२४,८; १८०७ । ९२,३; २४२६
पतिः वार्गाणाम् १०,२४,३; २४९०
पतिः विश्वस्य जगतः प्राणतः १,१०१,५; ८२१
पतिः विश्वानरस्य अनानतस्य शवसः ८,६८,४; २२९४
पतिः शवसः महः १०,२२,३; २४६८
पतिः शश्वतीनाम् ८,९५,३; २३३८
पतिः सिन्धूनां रेवतीनाम् १०,१८०,१; २८३९
पतिः सूनृतानां गिराम् ३,३१,१८; १२७७
पतिः सोमानाम् ८,९३,३३; २४६२
पतिः हरीणाम् ८,२४,१४; १८०३
पथिकृत् ६,२१,१२: १९०६
पथिकृत् सूर्याय १०,१११,३; २७२७
पनस्यः ८,९८,१; २३६४
पनीयान् १,५८,३; ८१३
पन्यः ३,३६,३; १३२५ । ८,३२,१७-१८; १९६-१९७
पपानः मधोः साम० २९४; २९८१
पपिः सोमम् ६,२३,४; १९२१
पपिवान् ५,२९,३; १६६९
पपिवान् सुतस्य ५,२९,२; १६६८

पपुरिः ४,२३,३; १५६८
पप्रिः ८,१६,११; ३९२
पप्रिः अन्धसः १,५२,३; ७६२
परः १,८,५; ४२ । २,१३,१०; ११४६ । ५,३०,५; १६८६ । ८,६९,१४; २३१६ । १०,८,७; २४६३
परमः ५,३०,५; १६८६
परमज्या ८,९०,१; २३९९
परस्पा ८,६१,१५; ५६२
परस्फानः अथ० १९,१५,३; २९१६
परावृक्तिः १,८१,२; ९१७
पराशरः यातूनाम् ७,१०४,२१; २२८९
परिप्रीतः वार्येण पन्यसा १०,२७,१२; २५०२
पर्हुग्गीं ऊर्णाम् उषमाणः ४,२२,२; १५५६
परोमात्रः ८,६८,६; २२९६
पर्वतेष्ठाः ६,२२,२; १९०८
पाञ्चजन्यः ५,३२,११; १७१५
पाञ्चजन्यः शवसा १,१००,१२; ९६८
पात् वैशन्तं पान्तम् (द्वि०) अति ७,३३,२; २२६३
पाता ८,२,२६; १४१
पाता नराम् २,२०,३; ११२०
पाता सुतम् ६,२३,३; १९२० । ४४,१५; २०५०
पाशाः तं ऋत्वा १०,७३,३; २६२५
पावकः ८,१३,१९; ३३९
पिता ३,३१,१२; १२७१ । ४,१७,१७; १५०४ । ८,६,१०; २५२ । ५२,५; ५१९।९८,११; २३७४ । १०,८,७; २४६३ । २२,३; २४६८
पितृतमः पितॄणाम् ४,१७,१७; १५०४
पितॄणां कर्ता ४,१७,१७; १५०४
पिपीषत् ६,४२,१; १९९८
पिशंगरातिः ५,३१,२; १६९४
पीत्वी सोमस्य १०,५५,८; २६११ । ११३,१; २७४५
पुत्रः शवसः ८ ९०,२; २३९२
पुरः स्थाता ८,४६,१३; १८१९
पुर एता ६,२९,१२; १९०६
पुरन्दरः १,१०२,७; ८३४ । २,२०,७; ११२४ । ५,३०, ११; १६८१ । ८,१,७-८; ९३-९४ । ६१,८,१०; ५५५,५५७
पुरन्दरा (रौ) [इन्द्राग्नी] १,१०९.८; ३०१८
पुरां भिन्दुः १,११,४; ७३
पुरां भेत्ता ८,१७,१४; ४०७
पुराजाः ३,३१.१९; १२७८ । ६,३८,३; १९८१

पुराषाट्–साह् १०,७४,६, २६३९
पुरुकृत् १,५४,३; ७७७ । २,१३,८; ११४४ । ६,२२,५; १९०१ । ८,६१,६; ५५३ । १०,१७९,३; २८३८
पुरुक्षुः ४,२९,५; १६०८ । ६,२२,३; १९०९ । १०,७४,५; २६३८
पुरुक्षुः वामस्य वसुनः ६,१९,५; १८७५
पुरुगूर्तः ६,३४,२; २०११
पुरुणामन्–नामन् ८,९३,१७; २४४६
पुरुतमः १,५,२; ५१ । ३,३९,७; १३६१
पुरुत्मा ८,२,३८; १५३
पुरुत्रा ८,३३,८; २१७
पुरुदस्मः ६,१८,९; १८६४
पुरुधप्रतीकः ३,४८,३; १४२१
पुरुधस्मन् साम० ३२७, १९८३
पुरुनिःषिध् १,१०,५; ६२
पुरुनृम्णः ८,४५,२१; ४६३
पुरुप्रशस्तः ६,३४,२; २०११
पुरुभोजाः ८,८८,२; ८९५
पुरुमायः ३,५१,४; १४३७ । ६,१८,१२; १८६७ । २१,२; १८९८ । २२,१; १९०७
पुरुरुच् १०,१०४,५; २७०७
पुरुवर्पस्–र्पाः १०,११०,६; २७६९
पुरुवारः उक्थैः ४,२१,५; १५४८
पुरुवीरः ६,२२,३; १९०९
पुरुशाकः ३,३५,७; १५१८ । ६,२१,१०; १९०५ । २४,४; १९३१ । ७,१९ ६; २१४५
पुरुष्टु [स्तु] तः १,११,४; ७३ । ५८,४; ८१४ । १०२,३; ८३० । ३,३७,४; १३३७ । ४५,५; १४०८ । ५२,६; १४५१ । ४,२१,१०; १५५३ । ५,३४,१; १७२७ । ८,१३,२४-२५; ३४४-४५ । १५,१,३,११; ३६९,३७१, ३७९ । ३२,३०; २०९ । ३३,६; २१५ । ४६,१२; १८२८ । ६२,७; ५७२ । ६६,५; ६१७ । ७३,७; ६३४ । ९२,२; २३९८ । ९३,१७; २४४६ । १०,३२,२; २५३१ । ३८,३; २५४३ । ३,६०,६; ३३४२ ।
पुरुहूतः १,३०,१०; ७०८ । ५१,१; ७४५ । ६३,२; ८८६ । १००,६,११,१८; ९६२,९६७,९७४ । १०४,७; ८५३ । ११४, ३; १०७१ । १७७,१; १०९१ । ३,३०,५,७,८,१०; १२४२, १२४४-४५,४७ । ३२,१६; १२९७ । ३५,२; १३१३ । ३७, ५; १३३८ । ४०,२; १३६५ । ५१,१; १४३३ । ५१,८; १४४८ । ४,१६,८; १४७४ । १७,५; १४९२ । २०,५,७; १५३७,३९ । ५,३०,१; १६८१ । ३१,४; १६९६ । ३६, २-३; १७४५-४६ । ६,१८,१,११; १८५६,१८६६ । १९,१३; १८८३ । २१,५; १९०१ । २२,४,११; १९१०,१७ । २३, ८; १९२५ । २४,३; १९३० । २७,६; १९६० । ३४,२; २०११ । ४५,२२; २०८१ । ४७,११; २१०९ । ७,२४,१; २१८६ । २५,२; २२०४ । ३२,१७,२०,२६; २२५१,५४, ६० । ८,१४,१; ३६९ । १६,११; ३९२ । २१,११; ४२० । २४,८-९; १७९७-९८ । ४६,१५; १८३१ । १०,४२,१०; २५५५ । ४३,२,१०; २५५८,२५६६ । ४४,१०; २५७७ । १०,४,१,१०; २७०३,२७१२ । १४७,३; २८०६ । १८०, १; २८३९ । ८,६६,६,११,१३; ६१८,६२३,६२५ । ९२,२; २३९८ । ९८,१२; २३७५ । २,३२,३; ३३५१
पुरुहूतः पुरु ८,२,३२; १४७ । १६,७; ३८८
पुरूतमः पुरूणाम् ६,४५,२९; २०८८
पुरूवसुः १,८१,८; ९२३ । ६,२२,४; १९१० । ८,१,१२; ९८ । ३,३; १५८ । ३२,११; १९० । ४६,१,७,१३; १८१७,१८२३,१८२९; ४६,१३; १८२९ । ४९,१; ४८५ । ५२,५; ५१९ । ६१,३; ५५०
पुरूवसुः सनात् ७,३२,२४; २२५८
पुरोभूः ३,३१,८; १२६७
पुरोयुधः १,१३२,६; १०३३
पुरोयोधः ७,३१,६; २२१८ । [इन्द्रावरुणौ] ७,८२,९; ३१८०
पुरोहा ६,३२,३; २०१३
पुरोहितः विश्वस्मा कर्मणे १,५६,३; ७९९
पूः त्वम् असि ८,८० ७; ६५७
पूर्णबन्धुरः १,८२,३; ९२७
पूर्भित् ३,३४,१; १३०१ । ५१,२; १४३५ । ८,३३,५; २१४ । १०,४७,४; २८४५ । १११,१०; २७३४ । १०४,८; २७१०
पूर्भित्तमः ८,५३,१; ५२५
पूर्वः ३,३८,५; १३४९
पूर्वजा ८,६,४१; २८३
पूर्वयावा क्षितीनां मानुषीणां विशां दैवीनाम् ३,३४,२; १३०२
पूर्व्यः ३,३२,१०; १२९१ । ५,३५,६; १७४१ । ६,२०,११; १८९४ । ३७,२; १९७४ । ८,३,७,११; १६२,१६६
पूर्व्यः महानाम् ८,६३,१; ५७८
पूषण्वान् ३,५२,७; १४५२ । १,८२,६; ९३०
पूषरातयः [मरुद्गणाः] १,२३,८; ३२४८
पृच्छन् दक्षम् ८,२४,१४; १८०३
पृतनानां तरुता विश्वासाम् ८,७०,१, १३११

पृतनाषाट् १,१७५,२;१०८० । ६,१९,७;१८७७ । ४५,८; २०६७ । १०,१०३,७; २६९७
पृतनासु सासहिः ८,७०,४; २३२४
पृथिव्याः जनिता ८,३६,४; १७७२
पृथिव्याः पतिः [अग्निः] वा० य० १३,१४; २९३०
पृथुः २,२१,४; १२२० । ६,१९,१; १८७१
पृथुज्रयाः ३,४९,२; १४२५
पृथुवृध्नः १०,४७,३; २८४४
पृदाकुसानुः ८,१७,१५; ४०८
पृष्टः ३,४९,४; १४२७
पौरः अश्वस्य ८,६१,६; ५५३
प्रकेतः अध्वरस्य १०,१०४,६; २७०८
प्रख्यादः १,१७८,४; १०९८
प्रचर्षणी [इन्द्राग्नी] अथ० ७,११०,२; ३१३२
प्रचेताः ७,३१,१०; २२३२ । ८,९०,६; २३९६
प्रजा ऋतस्य ८,६,२; २४४
प्रजानन् ३,३५,४,८; १३१५,१३१९
प्रणेता ३,३०,१८;१२५५ । ८,२४,७;१७९६ । ४६,१;१८१७
प्रणेता वस्वः अच्छ ८,१६,१०; ३९१
प्रणेता: ६,२३,३; १९२०
प्रतिमानम् ओजसः १,१०२,८; ८३५
प्रतिमानम् सतः सतः ३,३१,८; १२६७
प्रत्नः १,६१,२; ८५७ । ३,४२,९; १३९० । ६,२२,७; १९१३ । ३९,५;१९८७ । ४५,१९; २०७८ । ८,६,३०;२७२
प्रत्यक्षाणः श्रसम् [ऋ०] १०,४४,१;२५६८ । ४४,३;२५७०
प्रथमः ५,३१,१; १६९३
प्रथमः उपमानाम् ८,६१,२; ५४९
प्रथमः जातः एव २,१२,१; ११२२
प्रथमः दाता ८,९०,२; २३०२
प्रथमः ब्रह्मणि १,१०१,५; ८२१
प्रथमः यज्ञियानाम् ३,४९,१; १९२३
प्रथमं जायमानः ४,१७,७; १४१४
प्रदिवः १,५४,२; ७६६ । ३,५१,४; १४३७ । ६,२३,५; १९२२ । ४४,१२; २०४७
प्रदिशमानः ऋतेन ३,३१,२१, १२८०
प्रपान्थतमः १,१७३,७; १०६२
प्रब्रुवाणः जनेषु बलानि १०,५४,२; २६०९
प्रभङ्गः दुर्मतीनाम् ८,४६,१९; १८३५
प्रभङ्गी ८,६१,१८; ५६५
प्रभञ्जन् सेनाः [बृहस्पतिः] वा० य० १७,३६; २९३२
प्रभर्ता १,१७८,३; १०९८ । ८,२,३५; १५०
प्रभूवसुः १,५८,४; ८१४ । ८,४५,३६; ४७८ । साम० ११२, ११७८
प्रमतिः ४,१६,१८; १४८४ । ६,४५,४; २०६३ । ७,२९,४; २११६
प्रमथिन् ६,३१,५; २०१०
प्रमरः १०,२७,२०; २५१०
प्रमिनानः १०,२७,१९; २५०९
प्रमृणन् ओजसा १०,१०३,६; २६९६
प्रयज्युः ६,२१,१०; १९०५ । २२,११; १९१७
प्रयन्ता ८,९३,२१; २४५०
प्रया[य] वयन् अन्वान् ३,४८,३; १४२१
प्ररिक्वा क्षमः दिवः च १,१००,१५; ९७१
प्रवयाः २,१७,४; ११८४
प्रविद्वान् अथर्व० ७,९७,१; ३१२०
प्रवीरः १०,१०३,५; २६९५
प्रवृद्धः १,३३,३; ७३२ । ८,६,३३; २७५ । १२,८; २९५ । ७७,३; ६४२ । ९३,५, २४१४ । ९६,२; २३४६ । वा० य० ३३,७९; २९७० । ऋ० १,१६५,९; ३१५८
प्रवेपनी ५,३४,८; १७३४
प्रशर्धः ८,४,१; २२९
प्रसक्षिन् ८,३२,२७; २७६
प्रसाहः ६,१७,४; १८४४
प्रहावान् समिथेषु ४,२०,८; १५४०
प्रहेतृ-ता ८,९९,७; २३८२
प्राचामन्युः ८,६१,९; ५५६
प्राविता ८,९६,२०; २३६२
प्राशुषाट् ४,२५,६; १५९३
प्रासहः १,१२९,४,४; १००२,१००३ । १०,७४,६; २६३९ । ८४६,२०; १८३६
प्रियः ८,५०,३; ४९७ । ९८,४; २३६७
प्रेतारा (रौ) धियः [इन्द्रावरुणौ] ४,४१,५; ३१५०
प्रोणाना [इन्द्रवायू] ७,९१,५; ३२३८
बन्धुमान् ८,२१,४; ४१२
बभ्रिः वज्रम् ६,२३,४; १९२१
बभ्रू [इन्द्राग्नी] ४,३२,२३-२४; ३३४८-४९
बर्हणा १,५५,३; ७८८ । ५७,५; ८०९
बर्हिः ओकाः [तदोकाः] ३,३५,७; १३१८
बलविज्ञायः १०,१०३,५; २६९५
बहुलाभिमानः १०,७३,१; २६१२

बाहुशर्धी १०,१०३,३; २६९४
बाहूतेरण्यौ संस्कृते ८,७७,११; ६५०
बाह्वोजाः १०,१११,६; २७३०
बृबदुक्थः ८,३२,१०; १८९
बृहत्-न् १,९,१०; ५७ । ५५,३; ७८८ । ५८,१; ८११ ।
२,१६,१; ११७३ । ३,३२,७; १२०८ । ४,१७,६; १४९३।
६,१८,२; १८७२ । २४,३; १९३० । ८,८९,३; २३८६ ।
९८,१; २३६४ । १०,४७,३; २८४४ । [इन्द्रावरुणौ]
४,४१,१०; ३१५६ । [वरुणः] ६,६८,९; ३१६९ ।
[इन्द्राविष्णू] ७,९९,६; ३३१६
बृहद्दिवः ४,२१,५; १६०८
बृहद्भानुः ८,८९,२; २३८५
बृहद्रिः--द्रये (चतु०) १,५७,१; ८११
बृहद्रेणुः ६,१८,२; १८५७
बृहच्छ्रवाः १,५४,३; ७८८
बृहस्पतिः २,३०,४; ११३०
ब्रह्मः १,६,१; २४
ब्रह्मन्- ह्मा ६,४५,७; २०६६ । ७,२९,२; २२१४ । ८,
१६,७; ३८८ । अथ० २०,२,३; २९१७
ब्रह्मजूतः ३,३४,१; १३०१ । ७,१९,११; २१५०
ब्रह्मवाहस्-हाः १,१०१,९; ८९५ । ५,३४,१; १७२७ । ३९,५;
१७६४ । ६,११,६; १९०२ । ६,४५,४,७; २०६३,२०६६
ब्रह्मवाहस्तमः ६,४५,१९; २०७८
ब्रह्मसंशितः [इषुः] वा० य० १७,४५; २९३४
भगः २,११,२१; ११२१ । १५,१०: ११७१ । १६,९;
११८० । १७,७; ११८७ । १७,९: ११८९ । १८,९; ११९८ ।
१९,९; १२०७ । २०,९; १२१६ । ३,३६,५; १३२७
भद्रकृत् स्तोतॄणाम् ८,१४,११; ३६४
भद्रवातः १०,४७,५; २८४६
भद्रहस्ता (स्तौ) [इन्द्राग्नी] १,१०९,४; ३०२४
भर्ता धृष्णोः वज्रस्य १०,२२,३; २४६८
भर्ता वज्रं नर्यम् १०,७४,५; २६३८
भार्वरः ४,२१,१०; १५५०
भिन्दुः पुराम् १,११,४; ७३
भीमः १,५६,१; ९७ । ५८,३; ८१३ । ८१,४; ९१९ ।
१००,१२; ९६८ । ४,२०,६; १५३८ । ७,२१,४; २१६४ ।
१०,१८०,२; २८४०
भुर्वणिः १,५७,१; ८०५
भुवनस्य प्रकराट् ८,३७,३; १७७८
भूरिकर्मा १,१०३,५; ८४२
भूरिगुः ८,६२,१०; ५७५
भूरिदाः ४,३२,१९,२०,२१; १६६३-६४-६५
भूरिदात्रः ३,३४,१; १३९१
भूरिदावत्तरौ [इन्द्राग्नी] १,१०९,१; ३०२२
भूरिवारः १०,२७,२; २८४३
भूरेः ईशानः ८,३३,१४; १९३
भूर्यासुतिः ८,९३,१८; २४४०
भूमिः ४,३२,२; १६४६
भृष्टिमान् साम० ३२७; २९८३
भेत्ता पुराम् ८,१७,१४; ४०७ ।
भोजः २,१४,१०; ११५९ । २,१७,८; ११८८ । ८,७०,१३;
२३३३ । १०,४२,३; २५४८
भ्राता ३,५३,५; १४१७
भ्रातरा (रौ) [इन्द्राग्नी] ६,५९,२; ३०४७
भ्राशयन् तिग्मानि भ्राष्ट्रानि १०,११६,५; २७१९
मंहिष्ठः १,३०,१; ९९९ । ५०,१; ७४५ । ५८,१: ८११ ।
६१,३; ८५८ । १३०,१; १०११ । ६,४४,४: २०३९ ।
८,१,२; ८८ । १५,१०: ३७८ । १६,१; ३८२ । ८८,६;
८०९ । ९७,१३; ९८८ । [इन्द्रावरुणौ] ४,४१,७; ३१५२
मंहिष्ठरातिः १,५२,३; ७६२
मंहिष्ठः मघोनाम् ५,३९,४; १७६३ । [इन्द्रावरुणौ] ६,६८,२;
३१६२
मघवन् १,३२,३,१३; ७१७,७२७ । ३३,१२,१५; ७३१,४४ ।
५२,११; ७०० । ५५,१; ७८६ ५६,४; ८०० । ८२,१,३;
९२५,९२७ । ८४,१९; ९५५ । १०२,३,३-४,७,१०;
८३०-३०-३१,३४,३७ । १०३,२,४; ८४०,४२ । १०४,५,८;
८५१,५४ । १३२,१; १०२८ । १३३,३; १०३६ । १७३,५;
१०३० । १७४,१,७; १०६९,१०७५ । १७८,५; ११०० ।
३,३०,३,५,१६,२१,२२; १२४०,१२४२,१२५३,५८,५९ ।
३१,१४,१९,२२; १२७३,७८,८१ । ३२,१,१७; १२८२,९८ ।
३४-३५,११; १३११,१३२२ । ३६,१०-११; १३३२-३३ ।
३८,१०; १३५४ । ३९,९; १३६३ । ४३,५,८; १३९५,
१३९८ । ४७,४; १४१७ । ४८-५०,५; १४२३,१४२८,
१४३३ । ५१,१; १४३४ । ५३,२,४,५,८,१४; १४५४,
५६,५७,६०,६६ । ४,१६,१,९,१९; १४६७,७५,८५ ।
१७,५,७,८,९,११,१३,१३,१९,२०; १४९२,९४,९५,९६,
१४९८,१५००,१५००,१५०३-७ । १८,९; १५१७ ।
२०,२; १५३४ । २२,१; १५५५ । १०; १५६४ ।
४,२४,२; १५७८ । २८,५; १६०३ । २९,५; १६०८ । ३०,७;
१६१५ । ३१,७; १६३३ । ५,२९,५-६,८; १६७ १७२,७४ ।

ॐ

३०,३,७; १६८४,८८। ३१,१,६; १६९३,९८। ३४,२-३; १७२८-२९। ३६,३-४; १७४६-१७४७। ६,१९,१; १८७१। २१,६; १९०२। २३,१; १९१८। २४,१;१९२८। २७,३;१९५७।४४,१०,१७,१८;२०४५,५२,५३।४६,८,१०; २०९७,९९। ४७,९,११,१५; २१०७,९,१३। ७,१८,२; २१२०। १९,८,९; २१४७-४८। २०,९;२१५९।२२,३,६; २१७३,७६।२६,१,२;२१९८-९९।२७,२,२,४;२२०४,४,६। २८,५; २२१२। २९,१,३,४,५;२२१३,१५,१६,१७।३०,५; २२२२। ३२,७,१४,१५;२२४१,४८,४९।३२,१९,२१,२३, २४,२५;२२५३,५५,५७,५८,५९।९८,५;२२८३।१०४,१९; २२८७। ८,१,४,११;१०,१८।२,१३;११८। ३,१४,१७,१८; १६९,७२,७३। ४,४,१०;२३२,३८। २१,१०;४१८। २४,१०, ११; १७९९,१८००। ३२,८; १८७। ३३,३,९,११,१३; २१२,१८,२०,२२। ३६,२: १७७०। ४५,६: ४४८। ४६,११,१३: १८२७,२९। ४९,१,९,१०; ४८५,९३,९४। ५०,१०: ५०४। ५१,१,६,७; ५०५,१०,११। ५२,५,८; ५१९,२२। ५३,१; ५२५। ५४,७, ५३७। ६१,१,४,७, १३,१४,१८;५४८,५१,५४,६०,६१,६५। ६२,१०, ५७५। ६५,१०; ६१०। ६६,१३; ६२५। ७०,६,९,१५; २३२६, २९,३५। ७८,१०;६६०। ८८,६;८१९। ८९,५;२३८८; ९०,४; २३९४। ९३,१०; २४३९। ९६,१०; २३६२। ९७,१,८,१३; ९७६,८३,८८। १००,६; ९९६। १०,२३, २,३, २४८२-८३। २८,३; २५२४। ५; २५२६। ३३,३; २५४०। ४२,३,८, २५४८,५३। ४३,१,३,५,५,६,८; २५५७,५९,६१,६१,६२,६४। ४४,९,९; २५७६-७६। ४९,११; २६००। ५४,१,४,५, २६०८,११,१२। ५५,१, २६१४। ७४,५, २६३८। ८९,१८; २६७९। १०३,१०; २७००। १०४,७,११; २७०९,१३। १११,६, २७३०। ११२,९,१०; २७४३, २७४४। ११३,२; २७४६। ११६,७,७; २७६१, २७६१। १३४,६; २७९०। १०,१४७,३; २८०६। १४७,४,५; २८०७-८। १६०,४; २८२७। १६७,२, २८३०। अथ० ७,३१,१; २९०५। वा० य० ७,४: २९१३। १०,७७; २९६१। ३३,७२; २९७०। साम० २९८; २९८२। ऋ० ५,८६,३; ३०४२। १,१६५,९; ३२५८। १,१७१,३; ३२६५। अथर्व० ८,४, १९, ३२९६। ऋ० ३,६०,५; ३३४१। [इन्द्राब्रह्मणस्पती] २,२४ १२; ३३५९

मघवत्तमः ८,५४ ५; ५३५

मघानां विभक्ता ७,२६,४; २२०१

मघानि दाता ४,१७,८; ४९५

मघोनां उपमः ८,५३,१; ५२५

मघोनां मंहिष्ठः ५,३९ ४; १७६३

मतिः (ते- संबो०) ८,६८,२; २२९१

मत्वः ३,३४.२; १३०१

मथायन् नमुचेः शिरः ५,३०,८; १६८९

मदः शुष्मिन्तमः ते १,१७५,५; १०८३

मदच्युत् १,५१,२; ७४६

मदपती मदानाम् [इन्द्राविष्णू] ६,६९,३; ३३०८

मदवृद्धः १,५२,३; ७६२

मदिन्तमः ८.१३,१३; ३४३

मदे हितः ८,९३.८; २४३७

मधः ८,२,२५, १४०

मधुने (चतुर्थी) ८,९२,१९, २४१५

मनस्वान् १,१२,१; ११११

मनुर्हितः [अग्निः] ८,३४,८; ४३२

मनोजुवः वा० य० १७,२३; २९३१। [इन्द्रवायू] ऋ० १,२३,३; ३२१४

मनोः वृधः ८,९८,६; २३६९

मन्तुमत् (मः- सं.) १०,१३४,६, २७९०

मन्त्रः १०,५०,४; २६०४

मन्दद्वीरः ८,६९,१; २३०४

मन्दमानः १०,५०,१; २६०१। ७३,५, २६२७। ११२, १; २७३६

मन्दसानः १,१०,११; ६८। १००,१४; ९७०। १३१,४; १०२४।२,११.३,१५,१७;११०३,१५,१७।३०,५;१२३१। ४,२६,३; १५२८।२९,१; १६०४। ४.३२,१०; १६५४। ५,२९,२; १६६८। ६,२६,६; १९५२। ४,१७,३;१४९०। ६,१७,५; १८४१। ६,४४,१५; २०५०। ८,४९,४; ४८८। ९३,११; २४५०। [इन्द्राबृहस्पती] ४,५०,१०; ३३२३। अथ० २०,१३,१; ३३२९

मन्दसानः सुस्वनिभिः ४,२९,२; १६०५

मन्द्रानः १,८०,६; ९०५।८२,४; ९२९।२,१९,२,१२००। ३.५०,३; १४३१। ५.३२,६; १७१०। ८,१३,४, ३२४। १५,५; ३७३। ३२,५; १८४। ३३,७; २१६। ८८,१; ८९४। ४५,३१; ४७३। १९,१६७,२; २८३०। ७,९४, ११; ३०८९

मन्दू [इन्द्रामरुतः] १,६,७; ३१४६

मन्दिन्-न्दी १,९,२; ४९

मन्दिष्ठः साम० २२६; २९७९

मन्त्रः १०,७३,१; २६२३

मन्यमानः ७,२१,८; २१७८
मन्युः अथ० ७,९३,१; २९१३
मन्युमीः १,१००,६; ९६२
महतां वेधाः १,१६९,१; १०४३
महत्वान् १,९०,११; ९१० । १००,१-१५; ९५७-९७१ । १०१,१-७,८; ८१७-८१३,८२४ । ३,३५ ७; १३१८ । ४७,१,५; १४१४,१८१३,५०,१; १४१९ । ५१ ७;१४४० । ४,२१,३; १५४६ । ६,१९,११; १८८१ । ८,३६,१-६; १७६९-१७७४। ७६,१,५-८; ६१८,६३१-६३५। १,२३,७; ३२४७
मरुत्सखा ८,७६,१,३,९; ६१९-६३०,६३६
मर्डिता १,८४,१९;९५५ । ४,१७,१७,१५०४ । १८,१३; १५११ । ८,६६,१३; ६२५ । ८०,१; ६६१
मर्धत् १०,२७,१२; २५०१
महः १,१०१,१; ८१८ । ३,३४,६; १३०६ । ६,१९,१; १९६१ । ६;४६,२,२०९१ । ८,६६,३;३८४ । १०,२२,३; २४६८ । ९९,१२; २६९१ । १२०,८; २७७१
महे (चतु०) १,६२,२; ८७३ । ५,३३,१; १७१७ । ६,३२,१;२०११ । ७,२४,५; २१९० । ३१,१०; २२३२। ८.९६,१०;२३५४। १०,५०,१,२६०१ [विष्णुः]१,१५५,१; ३३०३।
महाम् [द्वि०] २,२२,१; १२२३ । ३,४९,१; १४२४ । ४,१७,८; १४९५ । ४,१९,१; १५२२ । ६,१७,१३; १८५३ । ४,२३,१;१५६६ । ६,३८,५;१९८२ । ६,२९,१; १९२२ । ६,१७,४; १८४४ । ८,६५,३; ६०३
महान् १,४,१०;१३ । ८,५;४१ । ५७,३;८०७ । ६३,१; ८८५ । २,१५,१;११६२ । ३,३१,१८;१२७७ । ३६,४,५; १३२६-२७ । ४६,१,२; १४०९-१० । ४,१७,१; १४८८ । २१,६; १५४९ । २२,१,५; १५५५,१५५९ । ४,३०,९; ३३४५ । ४,३२,१;१६४५ । ७,३१,७;२२२९ । ८,१,२७; १२३ । ६,४५,१३; २०७२ । ८,१३,१; ३२१ । ३१,१३; ११९ । ५१,५; ५१९ । ६४,२; ५९० । ६५,४; ६०५ । ९१,३; २३९९ । ९५,४; २३३९ । ९८,२; २३६५ । वा०य०-२६,१०; २९६६। १,११,५; ३००६। [इन्द्रावरुणौ] ७,८२,२; ३१७३
महान् ओजसा ८,६,१,२६; २४३,२६८ । ३३,८; २१७
महान् क्रत्वा १,८१,४; ९१९
महान् ब्रह्मणा १०,५०,४; २६०४
महान् महिना ८,१२,२३; ३१०
महान् महीभिः शचीभिः ८,१,३१; १४७ । १६,७; ३८८
महान् महीनाम् १०,१३४,१; २७८५
महानां दाता ८,९२,३; २३९९
महानां पतिः ८,९३,३१; २४६०
महः दाता ६,२९,१; १९६२
महः क्षयस्य ८,६१,१४; ५६१
महः धृष्णुया ६,४६,२; २०९१
महः राधस्य ८,६१,१४; ५६१
महामहः ८,२४,१०; ७९९ । ३३,१५; २२४ । ४६,१०; १८२६ । १० ११९,१२; २७६१
महाय्यः ८,७०,८; २३२८
महावधः ५,३४,२; १७१८
महावसू [इन्द्रावरुणौ] ७,८२,२; ३१७३
महावीरः १,३२,६; ७२०
महाव्रातः ३,३०,३; १२४०
महाहस्ती ८,८१,१; ८७०
महिः ८,१७,१४; ४०७ । १०,१६७,२; २८३० । ७,९३,५; ३०७५
महित्वा सिन्धुम्यः रिरिचानः १०,८९,१; २६६३
महिनः ६,२६,८; १९५४
महिने [चतुर्थी] ७,३१,११; २२३३
महिवृधे ७,३१,१०; २२३२
महिव्रतः [वरुणः] ६,६८,९; ३१६९
महिषः १०,५४,४; २६११
महीयमाना [उषाः] ४,३०,९; ३३४५
महेमते ८,१३,११; ३३१ । ३४,७; ४३१ । ४९,७,४९१। ५०,७; ५०१
मातरिश्वन्-श्वा १०,१०५,६; २७१९
माता त्वम् ८,९८,११; २३७४
मानः दिवः ८,६३,२; ५७९
मानस्य क्षयः ८,६३,७; ५८४
मानुषः १,१८४,२०; ९५६ । २,११,१०; ११९०
मानुषीणाम् एकः ६,१८,२; १८५७
मायाः कृण्वानः ३,५३,८; १४६०
मायी ७,२८,४; २२११ । ८,७६,१; ६१८ । १०,१४७, ५; २८०८
माहिनः १,६१,१; ८५६ । २,१९,३; १२०१ । वा० य० ३३,२७; २९६८ । १,१६५,३; ३२५२
माहिनावान् ३,३९,४; १३५८
मित्रः ६,४४,७; २०४२। अथर्व० २,५,३; २८६५
मित्रपतिः १,१७०,५; १०५५

मित्रस्य: सनि: ८,१२,१२; २९९
मिमान: ओजः २,१७,२; ११८२
मिमिक्षु: ३,५०,३; १४३१
मीढ्वस्-ढ्वान् ८,४६,१७; १८३३ ७३,७: ६३४
मुनीनां सखा ८,१७.१४; ४०७
मुष्कयो: बद्धः १०,३८,५; २५४५
मूर्धा: दिवः-[अग्निः] वा० य० १३,१४; २९३०
मृक्ष: ८,६६,३: ६१५
मृळीक: ६,३३,९; २०२०
मेडि: साम० ३२७; २९८३
मेधिर: १,६१,४; ८५९ । ६,४२,३; २०००
मेष: १,५१,१; ७४५ । ५२,१: ७६० । ८,९७,१२: ९८७
मेष: भूत: ८,२,४०; १५५
मेहनावान् ३,४९,३: १४२६
म्रक्षकृत्वा ८,६१,१०; ५५७
यजत: २,१६.४; ११७५।२१,१: ११९७।८,१७,१५;४०८
यजत्र: १,१२९,७; १००६ । ३,३५,१०; १३२१ । ६,२५, ८; १९४५
यज्ञवाहस्-हा:८,१२,२०;३०७।[इन्द्रवायू]४,४७,४:३२२९
यज्ञवृद्ध: ६,२१,२; १८९८
यज्ञिय: ३,३२,७,१२; १२८८,१२९३ । ६,४७,१३; २१११ । ८,९७,१३; ९८८
यज्ञिय: विश्वेषु सवनेषु १०,५०,४; २६०४
यज्ञियानां यज्ञिय: ८,९६ ४; २३४८
यज्वन: वृध: ८,३२,१८; १९७
यतंकर: ५,३४,४; १७३०
यतस्रुचा (चौ) [इन्द्राग्नी] १,१०८,४; ३०११
यम: ८,२४,२२; १८११
यमी [इन्द्राग्नी] ६,५९,२; ३०४७
यश: ५,३२,११;१७१५ । ८,३१,५,५५२ । ९०,५;२३९५
यह्वः ८,१३,२४; ३४४
यातयन् ऋतुथा ५,३२,१२; १७१६
याता रथेभि: ८,७०,१: २३११
यादृमान: शश्वन् शश्वन् ऊतिभि: ३,३६,१; १३२३
युगा मानुषा कृण्वन् ८,६२,९: ५७४
युजः १,७,५; ३२ । १२९,४,४; १००३,१००३
युजम् रथीणाम् (द्वि०) ६,४५.१९, २०७८
युजान: अश्वा १०,२२,४; २४६९
युजान: हरिभि: ८,५०,७; ५०१
युजान: हरिभि: रथे ६ ४७,१९: २११७
युज् (जा-तृती०) १,२३,९; ३२४९
युत्कार: १०,१०३,२; २६९३
युध: १०,१०३,३; २६९४
युध्म: २,११,३; ११२९ । ३,४६,१; १४०९ । ६,१८,२; १८५७ । ७,२०,३;२१५३ । ८,१,७;२३ । ९२,८;२४०४
युवा १,११,४; ७३ । २,१६,१; ११७२ । २०,३; १२१० । ३,३२,७; १२८८ । ४६,१; १४०९ । ६,१९,२; १८७२ । ४५,१; २०६० । ७,२०,१; २१५१ । ८,४५,१,२,३; ४४३-४४-४५ । ६४,७; ५९५ । साम० ४४५; २९८८ । [मरुत:] १,१६५,२; ३२५१
योद्धा कत्वा ८,८८,४; ८९७
योद्धा शवसा ८,८८,४; ८९७
योधीयान् प्रतीचश्चित् १,१७३,५; १०६०
योयुवतीनां नदः ८,६९,२; २३०५
रक्षिता चरमतः मध्यतः पश्चात् पुरस्तात् अथ० १९,१५,३; २९१६
रक्षोहा [बृहस्पतिः] वा० य० १७,३६; २९३२
रणकृत् १०,११२,१०; २७४४
रणिता ८,९६,१९; २३६१
रथ: १,५५,३; ७८८
रथयावाना [इन्द्राग्नी] ८,३८,२; ३०९२
रथयु: १,५१,१४; ४५८
रथिन्-थी १०,४७,५; २८४६
रथिर: ३,३१.२०; १२७९
रथीतम: ६,४५,१५:२०७४ । ८,६१,१२;५५९ । ८,९९,७, २३८२
रथीतम: रथीनाम् १,११,१; ७० । ८,४५,७; ४४९
रथेभि: याता ८,७०,१; २३११
रथेष्ठा: १,१७३,४,५; १०५९-६० । ६,२१,१; १८९७ । २२.५; १९११ । २९.२; १९६३ । ८,४,१३; २४१ । ३३,१४; २०३
रथोळ्हा १०,१४८,२; २०११
रथ्य: हरीणाम् विव्रतानाम् १०,२३,१; २४९०
रद्रावसु: ७,३२,१८; २२५२
रध्रचोद: २,२१,४; १२२०
रध्रचोदन: ६,४४,१०; २०४५ । ८,८०,३; ६६३ । १०,३८,५: २५४५
रध्रस्य चोदिता १०,२४,३; २४९०
रभस: ३,३१,१२; १२७१
रयिपति: ६,३१,१; २००६

रयिवस्-वान् १,१२९,७; १००६ । ६,४४,१; २०३६
रयीणां दाता ८,४६,२; १८१८
रयीणां युज्-क् ६,४५,१९; २०७८
रराणः ६,२३,७; १९२४ । ३९,५; १९८७
रवथः १,१००,१३; ९६९
राजसि विश्वस्य परमस्य ७,३२,१६; २२५०
राजा १,६३,७; ८९१ । १७४,१; १०६९ । १७८,२; १०९७ । ४,१९,१०; १५३१ । ५,३६,२; १७४५ । ४०,४; १७६८ । ६,१९,१०; १८८० । २४,१; १९२८ । ४६,३; २०९५ । ७,३१,१२; २२३४ । ८,९७,१५; ९९० । १०,४४,२; २५६९ । [इन्द्रावरुणौ] ७,८४,१; ३१९२ । [वरुणः] वा० य० ८,३७; ३२०९
राजा अवसितस्य शवस्य शृङ्गिणः १,३२,१५; ७२९
राजा उभयस्य ६,४७,१६, २१४
राजा कृष्टीनाम् १,१७७,१; १०९१ । ४,१७,५; १४९२
राजा क्षम्यस्य २,१४,११; ११६०
राजा चर्षणीनाम् १,३२,१५; ७२९ । ५,३९ ४; १७६३ । ७,२७,३; २२०५ । ८,७०,१; २३२१
राजा जगतः चर्षणीनाम् ६,३०,५; १९७२ । ७,२७,३; २२०५
राजा जनानाम् ८,६४,३; ५९१
राजा जनुषाम् ४,१७,२०; १५०७
राजा दिव्यस्य वस्वः २,१४,११; ११६०
राजा पार्थिवस्य २,१४,११; ११६० । ६,२२,९; १९१५
राजा प्रदिवः सुतानाम् ३,४७,१; १४१४
राजा ब्रह्मणः देवकृतस्य ७,९७,३; ३३६०
राजा भुवः दिव्यस्य जनस्य ६,२२,९; १९१५
राजा मदस्य सोम्यस्य ६,३७,२; १९७४
राजा मधुनः सोम्यस्य ६,२०,३; १८८६
राजा विशः अथ० ६,९८,२; २९०३
राजा प्राच्याः दिशः अथ० ६,९८,३; २९०४
राजा उदीच्या दिशः अथ० ६,९८,३; २९०४
राजा विशाम् ८,९५,३; २३३८
राजा विश्वस्य भुवनस्य एकः ३,४६,२; १४१० । ६,३४,४; २०३४
राजा विश्वस्य स्पृहयाय्यस्य ८,९७,१५; ९९०
राजा हिरण्ययीनाम् ८,६५,१०; ६१०
रातिः सहस्रदाना [इन्द्रस्य] ३,३०,७; १२४४
रातयः यस्य सहस्रम् १,११,८; ७७
रातहव्या नमसा [इन्द्राविष्णू] ६,६९,६; ३३१९
राधानां पतिः १,३०,५; ७०३ । ३, ५१,१०; १४४३
राया नकिः त्वत् ८,२४,१५; १८०४
रायः अवनिः ८,३२,१३; १९२
रायः ईशानः ८,४६,६; १८२२ । ५३, १; ५७५
रायः विभक्ता ४,१७,११; १४९८
रायः वृधः ७,३०,१; २२१८
रायस्पतिः ८,६१,१४; ५६१
रिणन् अपः ८,३२,२; १८१
रिरिचानः सिन्धुभ्यः महित्वा प्र १०,८९,१; २६६३
रिरिचे अक्तुभ्यः दिवः अन्तरिक्षात् प्र १०,८९,११; २६७२
रुवानः ६,३९,४; १९८६
रुजन् गोत्राणि ४,१६,८, १४७३
रेवत्-वान् १,४,२; ५ । ६,४४,११; २०४६ । ८,२,११; १२६ । ५५.२५; ४५७
रोचना [नं.] दिवः [इन्द्राग्नी] ३,१२,९; ३०३८
रोचमानः ३,४६.३; १४११ । [मरुतः] १,१६१,१२; ३२६१
रोरुवत्-वना १,५४,५; ७९०
लोककृत् १०,१३३,१; २७७८
वंसगः १,१३०,२; १०१२ । १०,१४४,३; २८००
वक्ता नकिः न दात् इति ८,३२,१५; १९४
वक्षणिः वाकस्य ८,६३,४; ५८१
वज्रः वासवते १०,१४४,२; २७९८
वज्रं बाह्वोः दधानः ४,२२,३; १५५७
वज्रं शिशानः ओजसा ८,७६,९; ६३६
वज्रम् [वज्रधारिणम्] १०,४८,३; २५८४
वज्रं हस्ते भरति २,१६,२; ११७३
वज्रदक्षिणः १, १०१,१; ८१७ । १०,२३,१; २४८१
वज्रबाहुः १, ३२, १५; ७२९ । १७४, ५; १०७३ । २,१२,१२-१३; ११३३-३४ । ३,३३,६; १२९९ । ४,२०,१; १५३३ । २९ ४; १६०७ । ८,१८,१२; २१३० । २३,६; २१८५ । १, १६५, ८; ३२५७ । १०, ४४, ३; २५७० । १०३,६; २६२६ । [इन्द्राग्नी] १,१०९,७; ३०२७ [इंद्राग्नी] अथ० ७,११०,२; ३१३२
वज्रभृत् १,१००,१२; ९६८ । ६,१७,२; १८४२
वज्रहस्तः १,१७३,१०; १०६५ । २,१२,१३; ११३४ । १९, २; १२०० । ३,३२,३; १२८४ ५,३३,३; १७१९ । ६,१७,१; १८४१ । २२,५; १९११ । २९,१; १९६२ । ४६,५; २०९४ । ७,१९,५; २१४४ । २१,४; २१६४ । ३२,३-४; २२३७-३८ । ८,२,३; १४६ । २४,२४; १८१३ । ९०,४; २३९४ । १०,४७,१; २८४२ । वा० य० २६,१०; २९६६ । १,१०९,८; ३०२८

वज्रिन्-ज्री १,७,२,५,७; २९,३२,३४ । ८,५; ४२ । ११,४; ७३ । ३०,११-१२; ७०९-१० । ३२,१; ७१५ । ५२,५; ७६४ । ६३,४-५,७; ८८८-८९,८९१ । ८०, १-२,७,११; ९००-१ ६,१० । ८२,६; ९३० । १०३,३,४; ८४१-४२ । १३०, ३; १०१३ । १३१, ६; १०२६ । ३,४६,१: १४०९ । ५३,१३; १४६५ । ४,१९,१; १५२२ । २०,२,३; १५३४-३५ । ५,२९,१४; १६८० । ३०,१; १६८२ । ३२,२,४; १७०६,८ । ३६,५: १७४८ । ४०,३,४; १७६७-६८ । ६,१८,६; १८६१ । १९,१२; १८८२ । २२,७; १८९० । २१,१०, १९१६ । २९,३; १९६४ । ३२,१; २०११ । ४१,१; १९९३ । ४७,१४; २११२ । ७,३२,८; २२४२ । ८,१,८; ९४ । २,१७; १३२ । ६,१५; २५७ । ६,४०, २८२ । १२,२४,२६, ३११,३१३ । १३,१३; ३५३ । २१,८: ४१६ । २४,१: १७९० । ३३,४; २१३ । ४५,८, ४५० । ४९,३,६; ४८७,४९० । ५०,६; ५०० । ६६,४,७; ६१६,६१९ । ६९,६; २३०२ । ७०,५,६; २३२५-२६ । ९२,१३; २४०९ । ९६,१७; २३५९ । ९७,१३,१४,१५; ९८८-८९-९० । ९९,१; २३७६ । १०,२२,२; २४६७ । ५५,७; २६२० । १७९,३; २९३८ । ७,९७,९, ३३६१ । साम० ३२७;२९८३ ।
ऋ० [इन्द्राग्नी] ६,५९,३; ३०४८
वज्रिवस्-वान् ८,३७,१-६; १७७६--८१ । ६६,६,११; ६१८,६२३ । ६८,९; २२१९ । ९२,११, २४०७ । १०,२२, ४,१०,११,१२,१३; २४६०,२४७५-७६-७७-७८
वधः असुन्वतः वीळोश्चित् १,१०१,४; ८२०
वधः द्रोधतः २,२१,४; १२२०
वनिष्ठः ७,१८,१; २२१९
वन्दनश्रुत् १,५६,७; ८०३
वन्दनेष्ठाः १,१७३,९; १०६४
वन्द्यः अथ० ६,९८,१; २९०२
वन्धुरेष्ठाः ३,४३,१; १३९१
वन्वन्-न् २,११,११: १११८ । ६,१८,१: १८५६
वपुः ४,२३,९; १५७४
वपोदरः ८,१७,८; ४०१
वयोधाः ३,३१,१८; १२७७ । ४९,३: १४२६ । ४,१७, १७; १५०४
वरः १०,२९,६: २५२०
वरिवस्कृत् ८,१६,६; ३८७
वरिवोवित् १०,३८,४; २५७४
वरिष्ठः ८,९७, १०; ९८५
वरीयान् अतश्चिन् सदसः ३,३६,६; १३२८
वरुणः [देवता] ७,२८,४; २२११
वरूता २,२०,२; ११०९ । ६,२५,७; १९४४
वरूथम् ७.३२,७; २२४१
वरेण्यः ३,३४,८;१३०८ । ८,६१,१५,५६२ । १०,११३,२; २७४६ । अथ० १९,१५,३; २९१६
वर्णः १,१०४,२; ८४८
वर्पणीतिः ३,३४,३; १३०३
वर्म त्वम् असि ७,३१,६; २२२८
वलंरुजः ३,४५,२; १४०५
वशः ८,९३,१०; २४३५
वशिन्-शी १,१०१,४; ८२० । ८,१३,९; ३२९ । १०,१०३,३;२६९४ । १५२,६;२८१५ । अथ०४,२४,७;२८७३
वसवानः १,१७४,१; १०६९ । ८,९९,८; २३८३ । १०,२२, १५; २४८०
वसिष्ठः ७,३३,१-९; २२६२-७०
वसुः १,१०,४; ६१; ३०,१०; ७०८ । ८४,२०, ९५६ । १२९,११,११: १०१०-१० । २,१३,१३; ११४९ । १४,१२; ११६१ । ३,४१,७;१३७९ । ५१,६;१४३९ । ४,३२,१४; १५५८ । ६,२४,२: १९३९ । ४५,२३; २०८२ । ४६,६; २०९५ । ७.३१,३,४;२२२५-२६ । ८,१,६,२९;९२,११५ । २,१; ११६ । २१,८;४१६ । २४,७,८; १७९६-१७९७ । ३३,२,२११ । ४६ ९;१८२५ । ५०,३,४,९;४९७-९८,५०३ । ५१,६; ५१० । ५२,६,८; ५२०,५२२; ६६,१२; ६२४ । ७०,९; २३२९ । ७८,३; ६५२ । ९८,११; २३७४ । १०,२२,१५; २४८० । ३८,२; २५४२ । १०५,१;२७१४ । अथ० ७,५५,१; २९१२
वसु दयमानः १,१०,६; ६३
वसुदाः ८,९९,४; २३७९
वसुनः पूर्व्यः पतिः १०,४८,१; २५७९
वसुपतिः १,९,९; ५६ । ३,३०,१९; १२५६ । ८,५२,६; ५२० । ६१,१०; ५५७ । १०,१११,१०; २७४४
वसुपतिः वसूनाम् १,१७०,५;१०५५ । ३,३६,९;१३३१ । ४,१७,६; १४९३ । १०,४७,१; २८४२
वसुभिः नियुत्वान् ३,४९,४; १४२७
वसुविद् ८,६१.५; ५५२
वसूनां ईशानः ८,६८,६; २२९६
वसूनां दाता ८,५१,५, ५०९
वसूनां विश्वेषां इरज्यन् ८,४६,१६; १८३२
वसूयुः १,५१,१४,७५८ । ८,९९,८,२३८३ । १०,२७,११; २५०२

वस्ता क्षपाम् ३,४९,४; १४२७
वस्यः ७,३२,१९; २२५३
वस्यान् ८,१,६; ९२
वस्वः अर्णवः १,५१,१; ७४५
वस्वः आकरः ५,३४,४; १७३०
वस्वः ईशः ८,१४,१; ३५४
वस्वः ईशानः ८,८१,४; ६७३
वस्वः सम्भरः ४,१७,११; १७९८
वस्वः सम्राट् ४,२१,१०; १५५३
वह्निः २,२१,२; ११९८। [मरुतः] १,६,५; ३२४५
वह्निः संवरणेषु ४,२१,६; १५४९
वाकस्य वक्षणिः ८,६३,४; ५८१
वाघतः नान्यः त्वत् ८,७८,४; ६५४
वाचं जनयन् यजध्यै ४,२१,५; १५४८
वाचस्पतिः वा० य० १७,२३; २९३१
वाजः १०,२३,२; २४८२। ४७,५; २८४६
वाजदा [इन्द्रवायू] १,१३५,५; ३२१६
वाजदावा मघोनाम् ८,२,३४; १४९
वाजपतिः साम० ११६; २९७९
वाजयन् ८.९८,१२; २३७५
वाजयन्ता (तौ) ६,६०,१; ३०५५
वाजयुः ७,३१,३; २२२५
वाजवान् ३,५२,६; १४५१। ६०,६; ३३४२
वाजं सनिता ४,१७,८; १४९५
वाजसातमा (मौ) [इन्द्राग्नी] ३,१२,४; ३०३३
वाजानां पतिः १,११,१; ७०। २९,२; ६९३।६,४५,१०; २०६९। ८,२४,१८; १८०७। ९२,३०; २४२६
वाजिन्-जी १,४,९; १२। १७६,५; १०८९। ६,२४,२; १९२९। ८,५२,४; ५१८। २,३८; १५३।१४,६; २५९। १६,३; ३८४। २४,२२; १८११। ३२,१८; १९७। १०, १०३,५; २६९५। ८,९३,३४; ३३४४।२,३२,३; ३३५१।
वाजिनीवसुः ३,४२,५; १३८६।[इन्द्रवायू]१,२,५; ३२११।
वाजेषु अविता ८,४६,१३; १८२९
वामनीतिः ६.४७,७; २१०५
वार्याणां पतिः १०,२४,३; २४९०
वावशानः ३,५१,८; १४४१। ६,३२,२; २०१२
वावशानः सोमम् ३,३५,९; १३२०
वावृधानः १,१३१,७; १०२७। २,११,४,२०; ११०४,२०। १९,१; ११९९। ४,२१,१; १५४४। ३,५१,१; १४३४। ६,१९,११; १८८१। ३८,५; १९८२। ८,६,४०; २८२। ७६,३; ६३०
वावृधानः उक्थैः २,११,२; ११०२
वावृधानः ओजसा ३,४५,५; १४०८
वावृधानः तन्वा ३,३४,१; १३०१। १०,५४,२; २६०९
वावृधानः दिवेदिवे ८,५३,१; ५२६
वावृधानः शवसा १०,१२० २; २७६५
वावृधानः सहोभिः १०,११६,६; २७६०
वावृधानः हविषा [इन्द्राविष्णू] ६,६९,६; ३३११
वावृधेन्यः ८,२४ १८; १८०७
वावृधान् ८,९५,७; २३४२। ९८,८; २३७१
वासयन्तः गव्या वस्त्रा इव [मरुतः] ८,१,१७; १०३
वास्तोष्पतिः ८,१७,१४; ४०७
विक्षु आपिः २,२१,२; १२१९
विप्रः १,४,४; ७
विघनिना (नौ) [इन्द्राग्नी] ६,६०,५; ३०६०
वासवः अथ० ६,८२,१; २८९०
विचक्षणः १,१०१,७; ८९३। ४,३२,२२; १६६६
विचर्षणिः २,२२,३; १२२५। ४१,१०,१२; १२३५,१२३७। ६,४५,१६; २०७५। ४६,३; २०९२। ८,१७,७; ४००। ३२,३; २१२। ९८,१०; २३७३
विचेताः ६,२४,२; १९२९। ७,२७,२; २२०४। ८,४६, १४; १८३०
विजानन् ३,३९,७; १३६१
वितन्तसाय्यः ६,१८,६; १८६१। ४५,१३; २०७२
वितर्तुराणः ६,४७,१७; २११५
वित्वक्षणः ५,३४,६; १७३२
विद् १०,१३८.३; २७९४
विदथस्य पतिः १,५७,२; ८०६
विद्यमानः ३,३४,१; १३०१
विद्द्वसुः ३,३४,१;१३०१।५,३९,१;१७६०। ८,६६,१;६१३
विदानः ६,२१,२,१२; १८९८,१९०६। १०,१११,१; २७१५। वा०य० ३३,७९; २९७०। ऋ० १,१६५,९,१०; ३२५८,३२५९
विवृधे [इन्द्राग्नी] ४,३२.२३; ३३४८
विद्वान् १,१०३,३; ८४१। २,३०,२; १२२८। ३,३५,४; १३१५। ३,३५,८; १३१९। ४४,२; १४००। ४७,२; १४१५। ५२,७; १४५२। ४,३०,१७; १६२२। ५,३०,३; १६८४। ६,४७,८; २१०६। ७.१८,१; २२०८। ८.६३,३; ५८०। १०, ३२, ६; २५३५। १४८, ३; २८११। ५,८६,४; ३०४३

विद्वान् अपांसि विश्वा नर्याणि ७,२०,४; ११६४
विद्वान् विश्वानि नर्याणि ४,१६,६; १४७१
विद्वान् विश्वस्य १०,१६०,२; २८२५
विद्वान् विश्वानि ६,४२,१; १९९८
विद्वेषणः ८,१,२; ८८
विधर्तृ-र्ता ८,७०,२; २३२१
विपाश्चित् १,४४; ७। ८,३३,१०; ३३०। ९८,१;२३६४
विपानः ८,६,२९; २७१
विप्रः १,५१,१; ७४५। १३०,६; १०१६। ४,१९,१०; १५३१। ५,३१,७;१६९९। ६ ३५,५;२०३०। ८,२,३६; १५१। ६,२८; २७०। ९८,१; २३६४। १०,५०,७; २६०७। साम० ४४६; २९८९
विप्रतमः ३,३१,७; १२६६
विप्रतमः कवीनाम् १०,११२,९; २७४३
विप्रवीरः १०,४७,४,५; २८४५,२८४६
विबाधः १०,१३३,४; २७८१
विभक्ता भागं वाजम् ३,४९,४; १४२७
विभक्ता मघानाम् ७,२६,४; ११०१
विभक्ता रायः ४,१७,११; १४९८
विभञ्जनुः ४,१७,१३; १५००
विभावसुः ८,९३,२५, २४५४
विभीषणः ५,३४,६; १७३२
विभुः (भवे-चतु०) ८,९६,११; २३५५
विभूतिः ६,१७,४;१८४१। ८,४९,६;४९०। ५०,६,५००
विभ्राजन् ज्योतिषा ८,९८,३; २३६६
विभ्वतष्टः ३,४९,१; १४२४
विमृधः १०,१५२,२; २८१५
विरप्शिन् प्रशी ३,३६,४; १३२६। ४,१७,२०; १५०७। २०,२; १५३४। ६,२२,६; १९१२। ३१,१; २०११। ४०,२;१९८९। ८,७३,५,६३१। १०,११३,६; २७५०। साम० ६२५; २९९६
विविचिः ८,५०,३; ५००
विशस्पतिः १०,१५२,२; २८१५
विशां राजा ८,९५,३; २३३८
विशः राजा अथर्व० ६,९८,२, २९०३
विश्पतिः ३,४०,३; १३६६
विश्रुतः १,६२,१; ८७१
विश्वं अभिभूः जातं जन्त्वम् ८,८९,६; २३८९
विश्वः ८,३,१६; १७१
विश्वकर्मा ८,९८,२; २३६५। वा० य० १७,२३; २९३१

विश्वगूर्तः १,६१,९;८६४। ८,१,२२;१०८। ७०,३;२३२३
विश्वचर्षणिः १,९,३; ५०। ५,३८,१; १७५५। ६,४४,४; २०३९। ८,५३,६; ५३०। १०,५०,४; २६०४
विश्वजन्याः १,१६९,८; १०५०
विश्वजित् २,२१,१; ११२७
विश्वतस्पृथुः ८,९८,४; २३६७
विश्वतुः ८,९९,५; २३८०
विश्वतोधीः ८,३४,६; ४३०
विश्वदृष्टः अथर्व० ५,२३,६; २८७९
विश्वदेवः ८,९८,२; २३६५
विश्वमनाः १०,५५,८; २६११
विश्वमिन्व ७,२८,१; ११०८
विश्वरूपः ३,३८,४; १३४८
विश्ववारः १,३०,१०; ७०८। ८,४६,९; १८२५
विश्ववेदाः ६,४७,११; २११०। १०,१३१,६; २७७६
विश्वव्यचाः ३,४६,४; १४११
विश्वशम्भूः वा० य० १७,२३; २९३१
विश्वस्य गोपतिः ८,९२,७; ५७२
विश्वस्य विद्वान् १०,१६०,२; २८२५
विश्वानरः १०,५०,१; २६०१
विश्वभूः १०,५०,१; २६०१
विश्वायुः १,१२९,४, १००३। ३,३१,१८; १२७७। ६,३३,४; २०१९। ३४,५; २०२५। ८,२,४; ११९
विश्वासाहः ३,४७,५; १४१८। ६,१९,११; १८८१। ४४,५; २०३९। ८,९२,१; २३९७
विश्वासु समत्सु हव्यः ८,९०,१; २३९१
विश्वौजाः १०,५५,८; २६११
विषुणः असुन्वतः ५,३४,६; १७३२
विष्णुः १,६१,७; ८६२। ८,१२,२७; ३१४। ७७,१०; ६४९। १००,१२; ९९९। १०,१४८,३; २८११
विहन्ता वसुधाश्रित तमसः १,१७३,५; १०६०
विहव्यः पुरुत्रा २,१८,७; ११९६
वीरः १,३०,५; ७०३। ६१,५; ८६०। ८१,२; ९१७। २,१३,११;११४७। १४,१;११५०। ३,५१,४;१४३७। ४,२४,१; १५७७। २५,६; १५९३। ५,३०,१; १६८१। ६,२१,१; १८९७। २१,६; १९०२। ३१,१; २०११। ४४,१४; २०४९। २४,२; १९२१। ४५,८,१३,२६, २०६७,७२,८५। ४७,१६; २११४। ७,२०,२; ११५१। २९,२; ११४४। ८,२,११,१३,२५; १३६,१३८,१४०। ३२,२४; २०३। ३३,१६; २२५। ४६,१४; १८३०।

५०,६; ५०० । १०,१०३,७; २६९७ । १११,१; २७२५ । ११३,४; २७४८ । ८,४०,९; ३१०९
वीरकः ८,९१.२; १७८४
वीरतमः नृणाम् ३,५२.८; १४५३
वीरतरः ८,२४,१५; १८१४
वीरयुः ८,९२,१८; २४२४
वीरवत्-वान् १०,४७,५; २८४६
वीरेण्यः १०,१०४,१०; २७१२
वीर्याणि करिष्यन् ८,६२,३; ५६८
वीर्यैः साकं वृद्धः २,२२,३; १२२५
वीळितः २,२१,४; १२२०
वीर्याणि विश्वानि यस्मिन् अधि संभृता[नि]२.१६,२:११७३
वृजनः १,१०१,११; ८२७
वृतंचयः २,२१.३; १२१९
वृत्रखादः ३,४५,२; १४०५
वृत्रघ्नः अथ० ४,२४.१; २८६७
वृत्रहन्ता ४,२१,१०; १५५३ । १७.८; १४९५ । ८.२, ३२,३६; १४७.१५१
वृत्रतुरा [इन्द्रावरुणौ] ६,६८,२; ३१६२
वृत्रहन्-हा १.१६,८;८५ । ८१,१; ९१६ । ८४,३; ९३९ । २,११,७; ११९४ । ३,४०,८; १३७१ । ३०,५; १२४२ । ३१,११,१४.१८,२१; १२७०, ७३, ७७, ८० । ४१,४; १३७६ । ४७,२; १४११ । ५२,७; १४५२ । ४,३०,१.७; १६०९,१५ । ३२, १, १९, २१; १६४५, १६६३, ६५ । ५,३८,४; १७५८ । ४०,४; १७६८ । ६,४५,५; २०६४ । ४७,६; २०९४ । ७,३१,६: २२२८ । ३२,६; २२४० । ८,१,१४; १०० । २.२६; १४१ । ४,११; २३९ । ६.४०; २८२ । १३,१५; ३३५ । १७,९; ४०२ । २४,८; १७९७ । ३२,११; १९० । ३३,१,१४; २१०,२२३ । ३७,१-६; १७७६-१७८१ । ४५,४,२५; ४४६,४६७ । ४६,१३: १८२९ । ५४,५; ५३५ । ६१,१५; ५६२ । ६२,११; ५७६ । ६४,९; ५९७ । ६६.३ ११; ६१५,६२३ । ७०,१; २३१ । ७७,३; ६४२ । ७८,७; ६५७ । ८२,१; ६७९ । ८९,३; २३८६ । ९०,१; २३९१ । ९२,२४; २४२० । ९३,२, ४,१५.१८,२०,३३; २४३१, ३३, ४४, ४७, ४९, ६२ । ९६,१९-२१; २३६१-६३ । ९७,४; ९७९ । १०,२३ २; २४८२ । ७४,६; २६३९ । १०३,१०; २७०० । १११,६; २७३० । १३३,१; २७७८ । १३८,५; २७९६ । १५२,२,३; २८१५-१६ । १५३,३; २८२२ । अथ० ६,७५,२; २८९७ । ८२,१; २८९९ । ६.९८,३; २९०४ । १९,१५,३; २९१६ । वा० य० २०,७५; २९५९ । २०,९०; २९६३ । २६.५; २९६५ । साम० ३२७; २९८३ । [इन्द्राग्नी] १,१०८,३; ३०१० । ३,१२,४; ३०३३ । ६,६०.३; ३०५८ । ७ ९३.१,४; ३०७१,३०७४ । ७,९४,११; ३०८९ । ८.३८.२; ३०९२ । अथर्व० ७,११०,२; ३१३२
वृत्रहा भरेभरे १,१००.२; ९५८
वृत्रहा वृत्रहत्येन ८.२४,२; १७९१
वृत्रहन्तमः ५,३५.६; १७४१ । ४०,१-३; १७६५-६७ । साम० ४४६; २९८९
वृत्रा जिघ्नमानः ३.३०.४; १२४१
वृत्राणि घ्नन् ३.३०,२२; १२५९ । ५०,५; १४३३ । द्वादशकुरः पुनरुक्त मन्त्रः १०,८९,१८; २६७९ । १०४,११; २७१३
वृत्राणां घनः ८,९६, ८; २३६०
वृथाषाट् १,६३ ४; ८८८
वृद्धः ३.३२,७; १२८८ । ४,१९,१; १५२२ । ६,२४,७; १९३४
वृद्धमहाः ६,२०,३; १८८६ । ३७.५; १९७७
वृद्धायुः १,१०,१२; ६९
वृधः ६,३४,५; २०२५ । ७.३२,२५; २२५९
वृधः यज्वनः ८,३३.१८; १९७
वृधः मनोः ८,९८,६; २३६९
वृधः प्र अक्तुभ्यः अहभ्यः अन्तरिक्षात् १०,८९,११; २६७२
वृधन्ता (न्तौ) अनुष्टून् [इन्द्राग्नी] ५,८६,५; ३०४४
वृधः रायः ७,३०,१; २२१८
वृधः सुन्वतः ५,३४,६; १७३२ । ८,९८.५; २३६८
वृधानः १,५६,६; ८०२ । १०,५५,८; २६२१
वृषन्-षा १,७,६.८; ३३,३५ । १६, १; ७८ । ५४,२; ७८७ । ५५,४; ८०० । १००,१,१७; ९५७,९७३ । १०१,१; ८१७ । १०३,६; ८४४ । १०४,७; ८५३ । १३१,५,६; १०२५-२६ । १३२.६; १०४१ । १७५,१; १०७९ । १७६,२; १०८६ । २.११,९,१०; ११०९-१० । १४,१; ११५० । १७,८; ११८८ । ३,३०,२; १२३९ । ४,१६,३,२०; १४६९,८६ । १७,१६; १५०३ । २१ ७; १५५० । २२,२,६; १५५६,१५६० । २४,८; १५८४ । ४,३०,१०; ३३४६ । ५,३१,५; १६९७ । ३३,२; १७१८ । ३५,४; १७३९ । ३६ ५;५.५.५; १७४८-४८-४८-४८; ५ ४०,१,२,३,३.३; १७६५-६७ । ६,२२,८; १९१४ । ३३,१; २०१६ । ४४,२०,२१; २०५५-५६ । ७ १९,६; २१४५ । २०,५; २१५५ । २३,६; २१८५ । ३१.४; २२२६ । ८,१,१; ८७ । ४,७,८; २३५-३६ । ६,४०; २८२ । १३,३१-३३;

२५१२-५३ । १५,१०; ३७८ । ३३,१०,११,१२,१८; ३१९,२०,२१,२७। ६१,११; ५५८। ६३,९; ५८६। ६४,८; ५९६। ७०,६; २३२६। ९२,१५,२३; २४११, २४१९। ९३,७,१९,२०; २४३६, २४४८, २४४९। [इन्द्रावरुणौ] ६ ६८,११; ३१७१ । ७,८२,२; ३१७३। [मरुतः] १,१६५,१; ३२५० । [इन्द्रासोमौ] अथर्व० ८,४,१; ३२७८। १,१६५,११; ३२६०। १०,४३,६; २५६२। ४९,९; २५९८। ८९,९; २६७०। १०,१२३,२,९; २६९३,९०। ११६,४; २७५८। १५३,२; २८२०। १५२,२; २८१५। [इन्द्राग्नी] १,१०८,३; ३०२० । ७-१२; ३०१४-१९। अथ० ७,११०,२; ३१३२

वृप इति परावति अर्वावति श्रुतः ८,३३,१०; २१९

वृपकर्मा १,६३ ४; ८८८। १३०,१०; १०२०

वृपक्रतुः ५,३६,५; १७३८। ६,४५,१६; २०७५

वृपजूतिः ५,३५,३; १७३८। ८,३३,१०; २१०

वृपण्वसू [इन्द्रावृहस्पती] ४,५०,१०; ३३९३। अथर्व० २०,१३,१; ३३२९

वृपण्वान् १,१७३,५; १०६०

वृपन्तमः १,१०,१०,१०; ६७,६७। १००,२; ९५८। ५,३५,३; १७३८। ६,५७४; ३३३३

वृपपर्वा ३,३०,२; १३२४

वृपप्रभर्मा ५,३२,२; १७०८

वृपमनाः १,६३ ४; ८८८। ४,२२,६; १५६०।

वृपरथः ५,३६,५; १७३८

वृपाकपिः १०,८६,१-२३; २६४०-२६६२

वृपायमाणः १,३२,३; ७१७

वृष्णिः १,१०,२; ५९

वृष्ण्यावान् ६,२२,१; १९०७

वृष्ण्येभिः संमोकाः १,१००,१; ९५७

वृषा दिवः ६,४४,२१; २०५६

वृषा वृषभिः १,१००,४; ९६०

वृषा सिन्धूनाम् ६,४४,२१; २०५६

वृषभः १,९,४; ५१। ३३,१०; ७३९। ५१,१५; ७५९। ५५,२-३; ७८७-८८। १०३ ६; ८४४। १७७,३; १०९३। २,१२,१२; ११३३। १६,४,५ ६; ११७५,११७६,७६ ७७। २२,४; १२२०। ३,३०,३९,२१; १२४०,४६,५८ ३२,१८; १२७७। ३५,३; १३१४। ३६,५; १३२७। ३८,५,७; १३४९,५१। ४०,१; १३६४। ४३ ६; १३९६। ४६,१,५; १४०९,१३। ४७,१,५; १४१४,१४१८। ४८,१; १४१९। ५० १; १४२९। ४,१६,२०; १४८१। १७,८; १४९५। १८ १०; १५१८। २४,५; १५८१। ३०,१९,२२; १६२४,२७। ५,३०,११; १६९२। ३२,६; १७१०। ४०,४; १७६८। ६,१९,११; १८८१। २२,१; १९०७। ३२,४; २०१४। ४४,११,२०-२१; २०४६,२०५५-५६। ४७,२१; २११८। ७,२६,५; २२०२। ८,१,२; ८८। २१,४,११; ४१२,४१९। ४५,२२,३८; ४६४,४८०। ६१,२; ५४९। ६४ ७; ५९५। ९३,१,७,२०; २४३०,३६,४९। ९६,२,६; २३४६,२३५०। १०,३८,५; २५४५। ४३,३; २५५९। ४४,३; २५७०। ११२,७; २७४१। १३१,३; २७७५। अथर्व० ४,२४,३; २८६९। ६,९८,३; २९०४। साम० ३१७; २९८३। ऋ० १,१६५,७; ३२५६। १,१७१,५; ३२६७

वृषभः क्षितीनाम् ७,९८ १; २२७९

वृषभः चर्षणीनाम् ६,१८,१; १८५६। ८,९६,४,१८; २३४८,२३६०

वृषभः जनानाम् १,१७७,१; १०९१

वृषभः पृथिव्याः ६,४४,२१; २०५६

वृषभः मतीनाम् ६,१७,२; १८४२। १०,१८०,३; २८४१

वृषभः स्तियानाम्। ६,४४,२१; २०५६

वृषभाणां उग्रः ८,५३,१; ५२५

वृषभान्नः २,१६,५; ११७६

वेद विश्वा जनिमा ८ ४६,१२; १८२८

वेविष्टः ८,२ २४; १३९

वेदीयस्-यान् गौरात् अवपानम् ७,९८,१; २२७९

वेधाः २,२१,२; १२१८। ६,२२,११; १९१७। १०,१४४,१; २७९८

वेधाः मरुताम् १,१६९,१; १०४३

वेनः ८,६३,१; ५७८

व्रतपा देवानाम् १०,१२,६; २५३५

शंसः ६,२४,२, १९२९

शंस्यः १०,४७ २; २०४३

शंस्यानां उक्थ्यः [वरुणः] १,१७,५; ३१३८

शक्तीवस्-वान् ५,३१ ६; १६९८

शक्र. १,१०,५ ६; ६२-६३। ५५ २; ७८७। ६२,४; ८७५। १०४,८; ८५४। १७७,४; १०९४। ३,३५,१०; १३२१। ३७,११; १३४४। ४,१६,६; १४७२। ५,३४,३; १७२९। ६,३५,५; २०३०। ४७,११; २१०९। ७,२०,९; २१५९। ७ १०४,२०-२१; २२८८-८९। ८,१,१९; १०५। २,२३; १३८। १२,१७; ३०४। १३,१५; ३३५। ३२,१२; १९१। ४५,१०; ४५२। ५०,१; ४९५। ५२,१; ५१५

६६,३; ६१५ । ६९,१४; २३१६ । ७८,५; ६५५ । ९१,१, १७८३ । ९२,११,१६; २४०७,२२ । ९३,१८; २२४७। ९७,४,१४; ९७९,८९। १०,४३,६; २५६१ । १०४,१०; २७११। १३४,३; २७८७। १६७,१; २८३०। अथर्व० १,५,४; १८६६ । ८,४,११; ३२९८। साम० २०९; २९७७

शचिष्ठः ४,२०,९; १५४१

शचीपतिः ४,३०,१७; १६२२। ३१,७; १८३६। ६,४५,९; २०६८। ८.१४,१; ३५५ । १५,१३; ३८१ । ३७,१-६; १७७६-१७८१। ६१,५; ५५२। ६२,८; ५७३। १०,२४,२; २४८९ । अथर्व० ६,८२,३; २९०१

शचीभिः महान् महीभिः ८,१६,७; ३८८ । १,३२; १४७

शचीवसू-वान् १,२९,१; ६९३ । ५४,३; ७७७ । ५५,२; ७८७। ६२,१२; ८८३ । ३,५३,१; १४५४ । ४,२२,२; १५५६। ६,२४,४;१९३१। ३१,४; २००९। ८,२,१५,२८,३९; १३०,१४३,१५४ । ६८,१; २२९२ । १०,४९,११; २६००। १०४,४; २७०६

शतक्रतुः १,४,८-९; ११-१२ । ५,८; ११ । १०,१; ५८। १६,९; ८६। ३०,१,६,१५; ६९९,७०४,१३। ५१,२; ७४६। ५५.६; ७९१ । ८२,५; ९२९ । २,१६,८; ११७९। २२,४; ११२६। ३,३७,१,३,६.८-९; १३३५-३६,३९,४१-४२ । ४२,५; १३८६ । ५१,२; १४३५ । ४,३०,१६; १६२१। ५,३५,५; १७४०। ३८,१,५; ७५५,५९। ६,४१,५; १९९७। ४५,२५; २०८४। ७,३१,३; २२२५। ८,१,११; ९७। ३२, ११; १९०। ३३,११,१४; २२०,२३। ३६,१-६; १७६९-७४। ५२,४,६; ५१८,५२०। ५३,२; ५२६। ५४,८; ५३८। ६१,९,१०,१८; ५५६,५७,६५। ७६,७; ६३४। ७७,१; ६४०। ८०,१; ६६१। ८९,३; २३८६। ९१,७; १७८९। ९२,१,११,१३,१६; २३९७,२४०८-९,१२। ९३.२७,२८, २९,३०; २४५६-५७,५८,६१। ९८,१०,११,१२; २३७३-७४-७५। ९९,८; २३८३। १० ३३.३; २५४०। ११२,६; २७४०। १३४,४; २७८८। अथर्व० ६,८२,१, २८९९। वा०य० ३.४९; २९१९। २०,७५; २९५९। २६,४५; २९६४-६५

शतनीथः १,१००,१२; ९६८

शतमन्युः १०,१०३,७; २६९७

शतमूतिः १.१०२,६;८३३। १३०,८;१०१८। ७.२१,८; २१६८। ८,२,२२,२६; १३७,१४१। ९९,८; २३८३

शतामघः ८,१,५; ९१। ३३,५; २१४। ३४,७; ४३१। ४६,३; १८१९

शतावान् ६ ४७,९; २१०७

शतिन्-ती १०,४७,५; २८४६

शत्रुः १०,११०,२; २७६५

शत्रुहः अथर्व० ६,९८,३; २९०४

शन्तमः ८,३३.१५; २२४। ५३,५; ५२९

शम्भविष्ठः १,१९१,३; ३२६५

शंभू [इन्द्रावरुणौ] ४,४१,७; ३१५२

शम्भुवा (वौ) [इन्द्राग्नी] ६,६०,७; ३०६२ । १४,३१६०

शरः ८,७०,१३,१४; २३३३,२३३४

शरव्यः [इषुः] वा० य० १७,४५; २९३४

शरुमान् [सोमः] १०,८९,५; ३२७६

शर्धनीतिः ३,३४,३; १३०३

शवसू-सा ६,२९,३;१९६४। ७,३०,१;२२१८। ८,१,२१; १०७। १०,७३,८; २६३०

शवसः पतिः १,११,२;७१। १३१,४; १०२४। ३,४१,५; १३७७। ५,३५ ५;१७४०। ६,४४,४;२०३९। ८,६,२१; २६३। ४५,२०;४६२। ९०,२,५;२३९२,९५। ९२,१४; २४१०। ९७,६; ९८१। [इन्द्रवायू] ४,४७ ३; ३२२८

शवसः सूनुः १ ६२,९; ८८०। ४,२४,१; १५७७

शवसानः १,६२,१,२,१३; ८७२,७३,८४। ६,३७,३; १९७५। ८,२,२२; १३७। ४६,६; १८२२। ६८,८; २२९८। ७,९३,२; ३०७२

शवसा चकानः ७,२७,१; २२०३

शवसा योद्धा ८,८८,४; ८९७

शवसः श्रुतः ८,२४,२; १७९१

शवसावन् १,६२,११; ८८२

शवसिन् ७,२८,२; २२०९

शवसी [इन्द्रमाता] ८ ४५,५; ४४७। ७७,२; ६६१

शविष्ठः १.८०,१; ९००। ८४,१,१९; ९३७,९५५। ५,२९,१३,१५; १६७९,८१। ३५,८; १७४३। ३८,२; १७५६। ८.४०,२; ३१०२। [इन्द्रावरुणौ] ६,६८,२; ३१६२। ६.२२,२,७; १९०८,१३। २६,७; १९४३। ३५,३; २०९८। ७,२१,५; २१६५। ८,६,३१; २७३। १२,१; २८८। १३,१२; ३३२। ३३,१३; २२२। ४६.९ १९; १८२५,३५। ६१,१; ५४८। ६२,४; ५६९। ६६,१२,१४; ६२४,२६। ६८.१; २२९१। ७०,६,१२; २३२६,३२। ९०,४;२३९४। ९७,१४;९८९। १०,११६,१; २७५५। १,१६५.७; ३२५६। अथ० ७,९७,१; ३११०

शश्वतां साधारणः ४,३२,१३; १६५७। ८,६५,७; ६०७

शश्वतीनां पतिः ८,९५,३; २३३८

शरुयमानः १०,८९,९; २६८८

शाकिन्--की १,५१,८; ७५२ । ५५,२, ७८७ । ३,५१,२; १४३५ । ६,४५,२२; २०८१ । ८,४६,१४; १८३०

शाचिगुः ८,१७.१२; ४०५

शाचिपूजनः ८,१७.१२; ४०५

शाशदानः १,३३,१३; ७४२

शासः ३.४७,५; १४१८ । ६,१९,११; १८८१

शासतः दिवः अमुष्य ८.३४.१-१५; ४२५-४३९

शिक्षानरः १,५४,२; ७७६ । ४,२०,८; १५४०

शिप्रवान् ६,१७.२; १८२२

शिप्रिन्--प्री १,२९,२; ६९३ । ८१,४; ९१९ । ८,३२,७; २१६ । ६१,४; ५५१ । ९२,४; २४४०

शिप्रिणीवान् १०,१०५,५; २७१८

शिमीवान् १,१००,१३;९६९ । [सोमः] १०,८९,५;३२७६

शिवः २,२०,३;१२१० । ६,४५,१७; २०७६ । ८,६३,४; ५८१ । ९३,३; २४३२

शिवतमः ८,९६,१०; २३५४

शिशगः (यम्-द्वि०) १०,४२,३; २५४८

शिशानः १०,१०३,१; २६९२

शिशानः वज्रम् ८,७६.९; ६३६ । १०,१५३,४; २८२२

शीर्ष्णाशीर्ष्णोपवाच्यः १,१३२,२; १०२९

शुचिः ८,१३,१९; ३३९ । १०,४३,९; २५६५

शुचिपा [इन्द्रवायू] ७.९१,४; ३२३७

शुक्रः ८.९५,७,८,९; २३४२-४३-४४

शुन्ध्युः १०,४३.१; २५५७

शुनः ३, ३०, २२; १२५९ । द्वादशकृत्वः पुनरुक्तः ३,५०,५, १४३३ । १०.८९,१८; २६७९ । १०.४,११; २७१३ । १६०,५; २८२८

शुभस्पती [इन्द्रावरुणौ] ८,५९,३; ३२०४ । ५; ३२०६

शुभ्रः २,११,४; ११०४

शुष्मः १,१००,२; ९५८

शुष्म ज्येष्ठं ते १०,१८०,१; २८३९

शुष्मिन्-ष्मी १,१७३,१२; १०६७ । ४,२२,१,४; १५५५, ५८ । ५,४०.४; १७६८ । ६,२५,१; १९३८ । ७,३०,१; २२१८ । ८,१३,३; ३२३ । ९८,१२; २३७५ । १०,४३,३; २५५९ । [इन्द्रवायू] ४ ४७,३; ३२२८

शुष्मिन्तमः शुष्मिभिः १,१३३,६; १०३९

शूरः १,११,६; ७५ । २९,४; ६९५ । ३२,१२; ७२६ । ६३,४; ८८८ । ८१.८; ९२३ । १०३.६; ८४४ । १२९, ३,५; १००२,४ । १३१,७; १०२७ । १३२,५,६; १०३२, ३३ । १३३,६.६; १०३९.३९ । १७३,५; १०६० । १७६, ७; १०६२ । १७४,९; १०७७ । १७५,३; १०८१ । १७८, ३; १०९८ । २,११,२,३,५,११,१७,१८; ११०२,३.५, ११,१७,१८ । १७,२; ११८२ । १८.७; ११९६ । १९,८; १२०६ । ३० १०; १२३४ । ३,३०,११; १२४८ । ४७.२; १४१५ । ५१,७.१२; १४३५,५२ । ४.१६.२,७; १४६८,७३ । २१, १; १५०४ । २२, ५; १५५९ । ३२.२१; १६६५ । ५,३५,२; १७३७ । ३६,२; १७४५ । ३८.५; १७५९ । ६,१९,६.१३; १८७६,८३ । २०,१२; १८९५ । २४,३; १९३० । २६,५; १९५१ । ३३,३,४; २०१८-१९ । ३५.५; २०३० । ४४,१७; २०५२ । ४७.६,११; २१०४,९ । ७.१८,११; २१२९ । १९,१०, ११; २१४९-५० । २०,३; २१५३ । २१.३; २१६३ । २२,७; २१७७ । २३,५; २१८४ । २५ ४,५; २१९५, ९६ । २७,१; २२०३ । ३०,१ ४; २२१८,२१ । ३२, ११.२२,२७; २२४५.५६,६१ । ८,१,१४; १०० । २,९, २५ ३६; ११४.४०,५१ । २१,८; ४१६ । २४,२,८; ७९१,९७ । ३२,५; १८४ । ३४.१४; ४३८ । ४५,३,३४, ४४५,७६ । ४६,११; १८२७ । ४९,.३; ४८७ । ५०,९; ५०३ । ६१,५ १८; ५५२,६५ । ६२.११; ५७६ । ६३, ११; ५८८ । ६६,५; ६१७ । ७०.९; २३२९ । ७८,१.४; ६५१.५४; ८१.३; ६७२ । ९१.१८; २४२४ । ९८८; २३७१ । ९७.१५; ९९० । १०,२२.९,१०,११,१२,१५; २४७४,७५.७६,७७.८० । ४२,२,४; २५४७,४९ । ५०,२; २६०२ । ५५,८; २६११ । ७३,४; २६२६ । १०५,४.६; २७१७,१९ । ११२, १; २७३५ । १३१. १; २७७३ । १४८,२,४,५; २८१० १२,१३ । ४७ १; २८४२ । अथर्व० ७.३१.१; २९०५ । २,५,१; २८६३ । साम० १९६, २९७६ । २०९; २९७७ । ९५२; २९८७ । खा० ४,४१, ७; ३१५२

शूरः [वरुणः] ७ ८४ ४; ३१९५ । [विष्णुः] १,१५५,१; ३३०३

शूरसाता [इन्द्राग्नी] ७.९३,५; ३०७५

शूशुवस्-वांसम् (द्वि०) ६,१९,२; १८७२ । ७,९३,२; ३०७२

शूशुवानः ७,२०.२; २१५२ । १०,४७,४; २८४५

शृंगवृषः नपात् ८,१७ १३; ४०६

शृण्वन् (स्तुतिम्) ३,३०.२२; १२५९ । ३१,२२; १२८१ । १०.१०४ ११; २७१३

श्नथनः २,२१ ४; १२२०

श्मश्रु ऊर्ध्वथा दोधुवत् १०,२३,१; २४८१

श्रद्दधानः ओजः १,१०३.३; ८४१

श्रवयन् २,१३,११; ११४८

श्रवस्कामः ८,२,३८; १५३
श्रवस्यन् १,१७७,१; १०९१
श्रवस्युः १,५६,६; ८०१ । अथ० ६,९८ २; २९०३
श्रवाय्या (य्यौ) वाजेषु [इन्द्राग्नी] ५,८६,२; ३०४१
श्रवोजित् पृतनासु ८,३२,१४; १९३
श्रावयत्सखा ८,४६,१२; १८१८
श्रितः श्मश्रुषु ८,३३,६; २१५
श्रियः वसानः ३.३८,४; १३४८
श्रियः विश्वाः यस्मिन् अधि ८,९२,२०; २४१६
श्रुतः १.५४,९; ७८३ । ५६.८; ८०४ । २,२०,६; ११२३ । ३.४६.१; १४०९ । ४.३०,२; १६१० । ८,२,१३; ११८। १३,१०, ३३० । ५०,१; ४९५ । ६२,९; ५७४ । ९६,१; २३५५ । १०.२२,१-२; २४६६-६७ । ३८,४; २५४४ ।
साम० ४४५; २९८८
श्रुतऋषिः १०,४७ ३; २८४४
श्रुतः गीर्भिः ८,२,२७; १४२
श्रुतः पुरुत्रा ४,३२,२१; १६६५
श्रुतः शवसा ८,२४.२; १७९१
श्रुता [त] मघः ८.९३.१;२४३०
श्रुत्कर्णः ७,३२,५; २२३९ । ८.४५,१७;४५९
श्रुत्यः ८.४६,१४; १८३०
श्रुत्यं नाम बिभ्रत् ५.३०.४; १६८६
श्रेष्ठा [इन्द्रावरुणौ] ६,६८,२; ३१६२
श्रोता ६ २३,४; १९२१ । २४,२; १९२९
श्लोकी ८,९३.८; २४३७
श्वेतौ [इंद्राग्नी] ८,४०,८; ३१०८

षाट् १,६३,३; ८८७

षोडशी--शिन् वा०य० २६,१०; २९६६

संरराणः ८.३२,८; १८७
संवननः ८,१,२; ८८
संविव्यानः ओजसा शवोभिः १,१३०.४; १०१४
संसदः सप्त यस्मिन् रणन्ति ८,९२,२०; २४१६
संसृष्टजित् १०.१०३,३; २६९४
संस्कृतः रणाय ८.३३,९, २१८
संस्रष्टा १०,१०३,३; २६९४
सक्रतुः १०,१४८,४; २८१२
सक्षणिः ८.७०,८; २३२८
सक्षणिः अभिमातीः ८,२४,२६; १८१५
सखा १,३०,१०,११,१२; ७०८-९-१० । ५४,२; ७७६ । ११९ ४; १००३ । २,२०.३; ११२० । ३.३१.८; १२६७ । ३९,५; १३५९ । ४३,४; १३९४ । ५१,६; १४३९ । ४,१७.१८;१५०५ । ४,३१.१,१६३० । ६.३३.४;२०१९ । ४५,१,७,१७,१९; २०६०.६६,७६,७८ । ७,१९,१०; २१४९ । ८,२,२७.४०; १४२,१५५ । १३,३; ३१३ । ६१,११, ५५८ । ९३,३; २०३२ । १००,१२; ९९१ । १०,४२,२,११; २५४७,५६ । ४३,११; २५६७ । ४४,११; २५७८ । ११२.१०; २७४४ । ६,६०,१४; ३०६९
सखायः [मरुतः] १.१६५,११,१२; ३२६०,३२६१
सखा मे ८,१००,२; ९९२
सखा अवृकः ४,१६.१८; १४८४
सखा वृधः १०,२७,६; २४९६
सखा मुनीनाम् ८,१७,१४; ४०७
सखा सखिभिः १,८४,४; ९६०
सखा सुतानाम् साम० २१६; २९७९
सखा सुव्रतः १,४.१०; १३ । ८,३२,१३; १९२
सखा सोम्यानाम् ४,१७,१७; १५०४
सखीयन् अंगिरोभिः ३,३१ ७; १२६६
सखीयताम् अविता ४,१७,१८; १५०५
संक्रन्दनः १०,१०३,१,२; २६९२--९३
संगमनः वसूनाम् [अग्निः] वा० य० १२,६६; २९१९
सचेताः १,६१,१०; ८६५
साजित्वाना (नौ) [इन्द्राग्नी] ३,१२,४; ३०३३
संचकानः ५,३०,७; १६८८
सञ्जग्मानः [मरुद्गणः] १.६,७, ३२४६
सत् (सन्) ८,४५,१७; ४५९
सतः सतः अतिमानम् ३,३१,८; १२६७
सतीनमन्युः १०,११२ ८; २७४२
सतीनसत्वा १,१००,१; ९५७
सत्पतिः १,११,१; ७० । ५४,६; ७८० । १००,६; ९६१ । १७४,१; १०६९ । ३,३४,७, १३०७ । ४०,४; १३६७ । ५,३२,११, १७१५ । ६,२६,२; १९४३ । ४६,१,३; २०९०,९२ । ८,२,३८; १५३ । १२,८,१८; २९५,३०५ । १३,१२,३३२ । २१,१०;४१८ । ३६,१-६;१७६९-७४ । ५३,६,५३० । ६१,१७; ५६४ । ६८,१; २७९१ । ६९ ४; २३०७ । ९३,५; २४३४ । १०,८.९; २३६५ । ४३,९; २५६५ । ५०,२,२६०२ । वा०य०३३,२७; २९६८ । ऋ० ६,६०.६; ३०६१ । १,१६५,३; ३२५२
सत्यः १,२९.१; ६९२ । ६३,३; ८८७ । १७४,१; १०६९ । २,११,१५; ११३६ । १५,१, ११६२ । २२,१-३; १२२३-२५ ।

४,२१,१०; १५५३ । ६, २२, १; १९०७ । ४५,१०; २०६९ । ८२,३३; १५१ । ९६,८; ३८९ । ९०,२,४; २३९२,९४ । ९२,१८; २४१४ । ९८,५; २३६८ । १०,४७, ४; २८४५ । ८,४०,१०; ३११०

सत्यताता १०,१११,४; २७२८

सत्यधर्मा [अग्निः] वा० य० १२,६६; २९२९

सत्यमद्वा ८,२,३७; १५१

सत्ययोनिः ४,१९,२; १५२३

सत्यराधस्-धाः १,१०१,८; ८२४ । ४,२४,२; १५७८ । २९,१; १६०४ । ७,३१,२; २२२४ । १०,२९,७; २५२२ । ४९,११; २६००

सत्यशुष्मः १,५१,१५; ७५९ । ५८,१; ८११ । १०३,६; ८४२ । ३,३०,२१; १२५८ । १०,४४,३; २५७० । ११२, १०; २७४४

सत्यसत्वन् ६,३१,५; २०१०

सत्यस्य सूनुः ८,६९,४; २३०७

सत्राकरः १,१७८,४; १०९९

सत्राजित् २,२१,१; ११७ । ८,९८,४; २३६७ । साम० २३१; २९८०

सत्रादावन्-वा १,७,६; ३३

सत्रासाह्-षाट् २,२१,२-३; ११९८-९९ । ३,३४,८; १३०८ । ५१,३; १४३६ । ७,२०,३; २१५३ । ८,९२,७; २४०३

सत्राहन्-हा । ४,१७,८; १४९५ । ६,४६,३; २०९६

सत्वन्-त्वा १,१७३,५; १०६० । ६,१८,२; १८५७ । २२,१; १९०७ । २९,६; १९६७ । ३७,५; १९७७ । ४५, २२; २०८१ । ७,२०,५; २१५५ । ८,१३,८; ३८९ । ४५,२१; ४६३ । ८,४०,१०-११; ३११०-३१११

सत्वनां केतुः ८,९६,४; २३४८

सदस्पती [इन्द्राग्नी] १,२१,५; ३००६

सदावृधः ४,३१,१; १६३० । ५,३६,३; १७४६ । ८,१३, १८; ३३८ । ९८,५; २२९५ । ७०,३; २३१३

सद्विवः २,१९,६; ११०४

सद्यो जज्ञानः हव्यः ८,९६,२१; २३६३

सद्यो जातः ८,७७,८; ६४७

सद्यो ह जातः ३,४८,१; १४१९

सधमाद्यः ८,३,१; १५६ । ५४,५; ५३५ । ९७,७; ९८२

सधवीरः ६,२६,७; १९५३

सधस्तुती [इन्द्राग्नी] ८,३८,४; ३०२४

सनजाः १०,१११,३; २७२७

सनद्वाजः १०,४७,४; २८४५

सनश्रुतः ३,५१,४; १४४९ । ८,९२,२; २३९८ । १०,२३,३; २४८३

सनात् २,१६,१; ११७२ । ८,२,३१; १४६ । २१,१३; ४२१

सनात् अमृक्तः ८,२,३१; १४६

सनात् पुरूवसुः ७,३२,२४; २२५८

सनिर्मित्रस्य ८,१२,१२; २९९

सनितृ-ता १,३०,१६; ७१४ । १००,९,१०; ९६५-६६ । ८,२,३६; १५१ । ४६,२०; १८३६ । ६१,१२; ५५९

सनिता वाजम् ४,१७,८; १४९५

सनीळाः [मरुतः] १,१६५,१; ३२५०

सन्धाता सन्धिम् ८,१,१२; ९८

सपर्यन् १०,१०५,४; २७१७

सप्तरश्मिः २,१२,१२; ११३३

सप्तहा १०,४९,८; २५९७

सप्रथः ७,३१,६; २२२८

सबर्दुघः [धेनुरूपः इन्द्रः] ८,१,१०; ९६

सबलः ८,९३,९; २४३८

समः ६,२७,३; १९५७

समत्-द् ७,२०,३; २१५३

समत्सु हव्यः विश्वासु ८,९०,१; ३९१

समदनस्य कर्ता १,१००,६; ९६२

समराणः वा०य० ३३,२७; २९६८ । ऋ० १,१६५,३; ३२५२

समर्यः ५,३३,१; १७१७

समह (संबो०) ८,७०,१४; २३३४

समानः १,१३१,२; १०३२ । ४,३०,२१; १६२७ । ८,९९,८; २३८३ । ८,४५,२८; ४७०

समानवर्चसा [इन्द्रामरुतः] १,६,७; ३२४६

समिथेषु प्रहावान् ४,२०,८; १५४०

समुद्रव्यचस्-चाः १,११,१; ७०

समुद्रियः १,५६,२; ७९८

सम्भरः वस्वः ४,१७,११; १४९८

सम्भृतक्रतुः १,५२,८; ७६७

सम्भृताश्वः ८,३४,१२; ४३६

संमिश्लः ८,६१,१८; ५६५

सम्राट् ४,१९,२; १५२३ । ८,४६,२०; १८३६ । १०,११६,७; २७६१ । वा०य० ८,३७; ३२०९ [इन्द्रावरुणौ] १,१७,१; ३१३४ । [वरुणः] ६ ६८,९; ३१६९ । ७,८२,२; ३१७३

सम्राट् चर्षणीनाम् ८,१६,१; ३८९

सम्राट् महः दिवः पृथिव्याश्च १,१००,१; ९५७ । १०, १३४,१; २७८५

सम्राट् वस्वः ४,२१,१०; १५५३
सरण्यन् ३,३१,१८; ११७७
सरस्वतीवन्तौ [इन्द्राग्नी] ८,३८,१०; ३१००
सर्वसेनः ५,३०,३; १६८४। [इन्द्रावरुणौ] ६,६८,२: ३१६२
सवनं जुषाणः ३,३२,५; ११८६
सवयसः (मरुतः) १,१६५,१; ३२५०
सविता २,३०,१; १२२७। ३,३३.६; १२९१। ३८,८; १३५२
सश्चत् (ते-चतुर्थी) २,१६,४; ११७५
ससवान् ६,४४,७; १०४२
ससवान् देवीः अपः स्वः च ३,३४,८; १३०८
ससह्वान् पश्य 'सासह्वान्'।
सखिः १०,३८,४; २५४४। [इन्द्राग्नी] ८,३८,१; ३०९१
सखिः १०,९९,४; २६८३
सख्यावाना त्वं एक इत् यवयसि ८,३७,४; १७७९
सहः १,५७,२; ८०६
सहः दधिषे ओजिष्ठम् ८,४,१०; २३८
सहः दधिषे ज्येष्ठम् ८,४,४; २३२
सहः महः तन्वी भरति २.१६,२; ११७३
सहमानः २,२१,२; १२१८। ६,१८,१; १८५६। १०, १०३,५; २६९५
सहमानः वृष्ण्येभिः अन्यान् ३,४६,२; १४१०
सहसानः ४,१७ ३; १४९०
सहसः सूनुः ६,१८,११; १८९६। २०,१; १८८४। १०, ५०,६; २६०६
सहसावन् ७,१९,७; २१४६
सहस्कृतः ८,९१ ८; २३८३
सहस्कृतः सहस्र ऋषिभिः ८,३,४; १५९
सहस्रचेताः १,१००,१२; ९६३
सहस्रणीथः ३,६०,७; ३३४३
सहस्रदाम्नां क्रतुः १.१७.५; ३११८
सहस्रमुष्कः ६,४६ ३; २०९२
सहस्रमूतिः १,५२,२; ७६१
सहस्रवाजः १०,१०४,७; २७०९
सहस्राक्षा [इन्द्रवायू] १,२३,३; ३२१४
सहस्रिन्-स्रो १०,४७,५; २८४६
सहस्रोतिः ८,३४,७; ४३१
सहस्तमा (मौ) [इन्द्राग्नी] ६.६०,१; ३०५६
सहावान् १,१७५ २,३, १०८०-८१। ३,४९,३; १४२६। ६,१८,२; १८५७
सहिष्ठः ६,१८,४; १८५९
सहीयस्-यान् १,६१,७; ८६१
सहुरिः २,२१,३; १२१२। ४,२२,९; १५६३। ६,६०,१; ३०५६
सहोजाः १०,१०३,५; २६९५
सहोदाः १,१७४,१.१०; १०६९.७८। ३,३४.८; १३०८। ४७,५; १४१८। ६,१७,१३; १८५३। १९,११; १८८१। १,१७१,५; ३२६७
सह्युः ६,१८,१२; १८६७
साकं जातः ओजसा २,२२,३; १२२५
साकं जातः क्रतुना २.२२,३; १२२५
साकं वृधा (धौ) [इन्द्राग्नी] ७.९३,२; ३०७२
साकं वृद्धः वीर्यैः २,२२,३: १२२५
साधारण, शश्वताम् ६,३२.१३; १६५७। ८,६५,७; ६०७
साधुकर्मा वा० य० १७,२३; २९३१
साधु कृण्वन् ८.३२,१०; १८९
सानसिः १.१७५ २; १०८०। ८.२१,२; ४१०। ७,९३,२; ३०७२
सासहानः १.१३१,४; १०२४
सासहिः १०,१३३,४; २७८१। १,१७१ ६; ३२६८
सासहिः पृतनासु १,१०२,९; ८३६। ८,६१,१२; ५५९। ७०,४; २३२४
सासहिः पृत्सु ८.६१,३; ५५०
सासहिः पौंस्येभिः १,१००,३; ९५९। १०१,१; ८२८। ८,१२,९; २९६
सासहिः मृधः २,२२,३; १२२५
सासहिः वाजेषु ३,३७,६; १३३९
सासह्वान् ८.४६,१६; १८३२
सासह्वान् नृषाह्ये अमित्रान् १.१००,५; ९६१
सासह्वान् युधा अमित्रान् ८,१६,१०; ३९१
साह्वान् २,१२,६; १२१३
सिमः १,१०१,३; ८३३
सिषासन् १,१३०,३; १०१३। ५,३१,१; १६९३
सुकर्माणौ [अश्विनौ] वा० य० २०,७५; २९५९
सुकृत् ३,३१ ७; ११६६
सुकृतः ६,१९,१; १८७१
सुक्रतुः १,५.६; ६९। ५१,१३; ७५७। ५६.६; ८०२। ३,४९,१; १४२४। ६.३०,२,३; १९६९-७०। ८,१,१८; १०४। ३३.५,१३; २१४,२२२
सुक्रतुः ८.५४ ६; ५३६। ९६,१९; २३६१। १०,४९,९; २५९८। १४४,६; २८०३
सुक्षत्रः ५,३२.५; १७०९। ३८.१; १७५५
सुखरथः ५,३०,१; १६८१

सुगम्यः १,१७३,४; १०५९
सुजातः १०,९९,७; २६८६
सुतक्रिः (ऋ--मंत्रो०) ६,३१,४; २००९
सुतपाः ४.२५,७; १५९४ । ६,२३,६; १९२३ । २४,१; १९२८ । ८,२ ४;११९ । [इन्द्रावरुणौ] ६,६८,१०;३१७०
सुतपावान् ६,२४,९; १९३३ । ८ २,७; ११२
सुतसोमम् इच्छन् ५,३०,१; १६८२ । ७,९८,१; २२७९
सुतानाम् ईशिषे ८.६४,३; ५९१
सुतेरणः १०,१०४,७; २७०९
सुत्रामा ६,४७,१२,१३; २११०-११ । १०,१३१,६ ७; २७७६-७७ । वा० य० १९,८५; २९४३ । २०,७१,७२. ९०; २९५५,२९५६,२९६३
सुदंसाः १,६२,७,९; ८७८,८० । ३,३२.८; १२८९
सुदक्षः १,१०१,९; ८२५ । १०,४७,४; २८४५
सुदक्षिणः ७,३२,३; २२३७ । ८,३३,५; २१४
सुदाः ८,७८,४; ६५४
सुदानुः ६,३८,१; १९७८ । ७ ३१,२; २२२४ । ८,८८,२; ८९५ । [इन्द्रावरुणौ] ४,४१,८;३१५३ । [मरुद्गणाः]१,२३,९; ३२४९
सुदामन्-मा ६,२०,७; १८९०
सुदुघा [धेनुरूप इन्द्रः] ८,१,१०; ९६ । [सरस्वती] वा०य० २०,७५; २९५९
सुदृक् ४,२३,६; १५७१
सुनीतिः ६,४७,५; २१०५
सुनीथः १०,४७,३; २८४३
सुन्वतः वृधः ५,३४,६; १७३१
सुन्वतः सखा ८,३२,१३; १९२
सुपाणिः ३,३३.६; १२९९
सुपारः १,४,१०; १३ । ३,५०,३; १४३१ । ६,४७,७; २१०५ । १,१०९,४;३०२४ । ८.१३.२;३२२ । ३२,१३;१९२
सुपेशसौ [अश्विनौ] वा० य० २०,७४; २९५८
सुपाठ्यः २.१३.९; ११४५
सुप्रकेताः [मरुतः] १,१७१,६; ३२६८
सुबाहुः ८,१७.८; ४०१
सुब्रह्मा १०,४७,३; २८४४
सुमखः १,१६५,१०; ३२६०
सुमतिं चकानः १०,१४८,३; २८११
सुमतिः भद्रा अस्य ३,३०,७; १२४४
सुमनाः ३,३५.६.८; १२६७ ६९ । ४,२०,४; १५३६
सुमन्तुनामा ६,१८,८; १८६३
सुमृळीकः १,१३९,६; १०४१ । ६.४७,१२; २११० । १०,१३१.६; २७७६
सुयज्ञः २,२१,४; ११२०
सुराधाः ४,१७,८; १४९५ । ८.१४,१२; ३६५ । ४९,१; ४८५ । ५०,१; ४९५
सुरूपकृत्नुः १,४.१; ४
सुशिप्रः १.१००.१८; ९७४ । ४,१७,८; १४९५ । ६,१७, १३; १८५३ । ७,९३ ४; ३०७४ । ७,३०,१; २२१८
सुव्रह्मा ६,२२,७; १९१३
सुविद्वान् ८,२४.२३; १८११
सुवीरः ६,१७ १३; १८५३ । ४५.६; २०६५
सुवृक्तिः १०,७४,५; २६३८ । १४०,७; २७०९
सुवेदाः ७,३३,२५; २२५९
सुशस्तिः १०.१०४,१०; २७१२
सुशिप्रः १,९,३; ५० । १०१,१०; ८२६ । २,१२,६; ११२७ । ३,३०,३; १२४० । ३२,३; १२८४ । ५०,२; १४३० । ५,३६,५; १७४८ । ६.४६.५; २०९४ । ७ २४, ४; २३८९ । ८,२१,८; ४१६ । ३२,४; १८३ । ६६,२.४, ४; ६१४,१६.१६ । ६९,१६; २३१८ ।९३,३२; २४४१ । ९९.२; २३७७
सुशेवः [ब्रह्मणस्पतिः] ७.९७,३; ३३६०
सुश्रवस्तमः १,१३१,७; १०२७ । ३,४५,५; १४०८ । ८, १३,२; ३२२ । ४५ ८; ४५०
सुश्रवस्यः १.१७८,४; १०९९
सुश्रुतः ३,३६.१; १३२३
सुषव्यः ८,३३,५; २१४
सुषाः ८ ७८,४; ६५४
सुषुम्नः १०,१०४,५; २७०७
सुष्टुः १०,१०४,५; २७०७
सुष्टुतः १.११९,११; १०१० । १७७,५; १०९५ । ४,२४, २; १५७८ । ८.६,११; २५४
सुष्टुतिः ८,९६,१२; २३५६
सुष्टुभः ब्रह्मणात् अथर्व० २०,२.३; २९१७
सुसंदृशः १,८२,३; ९२७ । [इन्द्रवायू] वा० य० ३३,८६; ३२४३
सुसनिता ८,४६,२०; १८३६
सुहवः ३ ४९.३; १४२६ । ४.१६,१६; १४८२ । ६,२१.८; १९०४ । २९,६; १९६७ । ४७.११; २१०९ । [इन्द्राग्नी] ७,९३,१; ३०७१ । [इंद्रावरुणौ] ७,८२,४; ३१७५ । [इंद्रवायू] वा०य० ३३,८६; ३२४३ । अथर्व० ३,२०,६; ३२५४

सुहार्दः ८,२,५; ११०
सुतुः १,१०३,४; ८४२
सुतुः सत्यस्य ८,६९,४; २३०७
सुनृतः ८,४६ २०; १८३६
सूनृतानां गिरां पतिः ३,३१,१८; १२७७
सूरः ८,६,२५; २६७
सूरिः ६,२३,१०; १९२८। ३७,५; १९७७। ८,७०,१३; २३३३
सूर्यः ४,३१,१५; १६४४। ८,९३,१,४; २४३०,३३। १०,८९,२; २६६४
सूर्यस्य जनिता ३,४९,४; १४२७।
सृजानः अध्वनः १०,२२,४; २३६९
सृप्रकरस्नः ८,३२,१०; १८९
सेनानी ७,२०,५; २१५५
सेन्यः १,८१,२; ९१७
सेन्यः विश्वेषु जनेषु ७,३०,२; २२१९
सेहानः अभिद्रुहः पृतनाः ८,३७,२; १७७७
सेहानः उरुज्रयः ८,३६,१-६; १७६९-१७७४
सेहानः विश्वा पृतनाः ८,३६,१-६; १७६९-१७७४
सोमः ८,७८,८; ६५८
सोमकामः १,१०४,९; ८५५
सोमपतिः ३,३२,१; १२८२। ५,४०,१; १७६५। ८,११,३; ४११
सोमपाः १,१०,३; ६०। २९,१; ६९१। ३०,११-१२; ७०९ १०। २,१२,१३; ११३४। ३,३९,७; १३६१। ४१,५; १३७७। ४,३१,१४; १६५८। ६,४५,१०; २०६९। ८,२,४; ११९। १४,१५; ३६८। १७,३; ३९६। ३२,७; १८६। ३३,१५; २२४। ६६,६; ६१८। ९२,८,१८; २४०४,१४। ९७,६; ९८१। ९८,५; २३६८। १०,१०३,३; २६९४। १५२,२; २८१५। [इन्द्राबृहस्पती] ४,४९,३; ३३१९।
सोमपातमः ६,४२,२; १९९९। ८,६,४०; २८२। १२,१,२०; २८८,३०७
सोमम् जठरे भरति २,१६,२; ११७३
सोमपावन्-वा १,५६,७; ८०३। ५,४०,४; १७६८। ७,३२,१; २२२३। ३२,८; २२४२। ८,७८,७; ६५७
सोमम् उशन् ४,२४,६; १५८२
सोमवृद्धः ३,३९,७; १३६१। ६,१९,५; १८७५
सोमस्य पीत्वी १०,११३,१; २७४५
सोमानां पाता ८,९३,३३; २४६१
सोमिन् ८,६२,१; ५६६
सोम्यः ४,२५ २; १५८८। ८,९३,८; २४३७। ९५,८; २३४३
स्तवमानः ७,१९,११; २१५०। ८,२४,४; १७९३
स्तवान् २,१९,५; ११०३। २०,५; १११२। ६,२४,८; १९३५
स्तवानः ३,४०,३; १३६६। ६,४६,२; २०९१। ८,२४,३; १७९२
स्तुतः ८,१४,४; ३५७। १०,५०,२; २६०२
स्तुषेय्यः १०,१२०,६; २७६९
स्तोतॄणाम् अविता १०,२४,३; २४९०
स्तोत्रं हर्यन् १०,१०५,१; २७१४
स्तोमवर्धनः ८,१४,११; ३६४
स्तोमवाहाः ६,२३,४; १९२१
स्तोमं जुजुषाणः ८,६६,८; ६२०
स्तोम्यः ८,१६,८; ३८९। २४,१९; १८०८
स्थविरः ३ ४६,१; १४०९। ४,१८,१०; १५१८। ६,१८,१२; १८६७। ३२,१; २०११। ४७,८; २१०६। १०,१०३,५; २६९५। १,१७१,५; ३२६७
स्थाता ६,४१,३; १९९५
स्थाता रथस्य ३,४५,२; १४०५
स्थाता हरीणाम् ८,२४,१७; १८०६। ३३,११; २२१। ४६,१; १८१७
स्थिरः २ ४१,१०; ११३५। ३,३०,२; १३३९। ८,३३,९; २१८। ९१,२८; २४१४
स्थिरः कर्मणि कर्मणि १,१०१,४; ८२०
स्थिरः पृतनासु ८ ३२,१४; १९३
स्थिरप्स्नुः साम० ३२७; २९८३
स्पट् ८,६१,१५; ५६२
स्पर्धमाने मिथती [इन्द्राग्नी] ७,९३,५; ३०७५
स्पार्हः ८,२४,८; १७९७
स्पार्हराधाः ४,१६,१६; १४८२
स्पृधानः ३,३१ ४; १२६३
स्मत्पुरन्धिः ८ ३४,६; ४३०
स्मदिष्टिः ३,४५,५; १४०८
स्यन्ता १०,२२,४; २४६९
स्वतवः ६,२२,६; १९१२
स्वदावन् ८,५०,५; ४९९
स्वधापतिः ६,४४,१,२,३; २०३६-३७-३८
स्वधावान् १,६३,६; ८९०। १७३,६; १०६१। २,११,६; ११२३। ३,३५,३; १३१४। ४७,८; १३८०। ४,२०,४; १५३६। ५,३२,१०; १७१४। ६,१७,४; १८४४।

२१,३; १८९९ । ७,२०,१; २१५१ । ८,४९,५; ४८९ ।
१०.४२.९; २५५४
स्वपतिः १०,४४,१; २५६८
स्वपस्यमानः १,६२,९; ८८०
स्वभिष्टि १,५१,२; ७४६
स्वभिष्टिसुम्नः ६,२०,८; १८९१
स्वभूत्योजाः १,५२,१२; ७७१
स्वयं गातुः ४,१८,१०; १५१८
स्वयशस्तरः ३,४५,५; १४०८
स्वयुः ३,४५,५; १४०८
स्वराट् १,५१,१५; ७५९ । ६१,९; ८६४ । ३,४५,५; १४०८ ।
४६,१; १४०९ । ४९,२; १४२५ । ८,१२,४; ३०१ ।
६१,२; ५४९ । ६९,१७; २३१९ । ८१,४; ६७३ । ७,
८२,२; ३१७३
स्वरिः १,६१,९; ८६४
स्वरोचिः ३,३८,४; १३४८
स्वर्जित् २,२१,१; १२१७ । १०,१६७,२; २८३०
स्वर्दृक् ७,३२,२२; २२५६
स्वर्पतिः ८,९७,११; ९८६
स्वर्वान् ६,२२,३; १९०९ । ८,९७,१; ९८६
स्वर्विद् १,५२,१; ७६० । ३,५१,२; १४३५ । अथर्व० ४,
२४,३,४; २८६९-२८७०
स्वर्षा १,६१,३; ८५८ । १००,१३; ९६९
स्वर् जितं येन महत्वता ८,७६,४; ६३१
स्वयसः १०,४७,२; २८४३
स्ववान् ६,४७,१२,१३; २११०-११ । १०,१३१,६,७;
२२७६-७७
स्ववृज् १० ३८,५; २५४५
स्वश्वः ४,२९,२; १६०५ । ५,३३ ३; १७१९
स्वश्वयुः ८,४५,७; ४४९
स्वभिष्टाः १०,११६,२; २७५६ । १५२,२; २८१५
स्वापिः ८,५३,५; ५२९
स्वायुधः ६,१७,१३; १८५३ । १०,४७,२; २८४३
स्वावसुः [अग्निः] अथ० ७,५०,३; २९०८
स्वोजाः ६,२२,६; १९१२ । ७,२०,३; २१५३ । १०,२९,८; २५२२
हन्ता दस्योः ८,९८,६; २३६९
हन्ता पापस्य रक्षसः १,१२९,११; १०१०
हन्ता वृत्रम् ४,१७,८; १४९५ । २१,१०; १५५३ । ६,
४४,१५; २०५० । ७,२०,२; २१५२ । ८,२,३२,३६; १४७.१५१
हरिः ३,४४,३; १४०१
हरितः ३ ४४,४; १४०१
हरिवान्-वः [संबो०] १,३ ६; ३ । ८१ ४; ९१९ । १६७,
१; १०४२ । १७३,१३; १०६८ । १७४,६; १०७४ ।
१७५,१; १०७९ । ३,३०,२; १२३९ । ४७,४; १४१७ ।
५१,६; १४३९ । ५२,७; १४५२ । ४,१६,११; १४८७ ।
१९,९; १५३० । २२,७; १५६१ । ५,३१,२; १६९४ ।
३६,२,४; १७४५,४७ । ६,१९ ६; १८७६ । २२,३; १९०९ ।
४१,३; १९९५ । ४४,१०; २०४५ । ७,१९,७; २१४६ ।
२०,४; २१५४ । २५ ४; २१९५ । २९,१; २२१३ । ३२,
१२; २२४६ । ८,२,१३; १२८ । २१,६; ४१४ । २४,३,
५; १७९२.९४ । ५३,८; ५३२ । ६१,३; ५५० । ९९,२;
२३७७ । १०,४९,११; २६०० । १०४,२,६; २७०४,८ ।
वा० य० ३३,२७; २९६८ । साम० २२६; २९७९ । ऋ० ८,
४०,९; ३१०९ । अथ० ७,९७,२, ३१११ । ऋ० १,१६५,
३; ३२५२
हरिप्रियः ३,४१,८; १३८०
हरिष्ठाः ३,४९,२; १४२५ । ६,१७,२; १८४२
हरिभ्याम् ईयमानः ५,३०,१; १६८१
हरिभिः युजानः ८,५०,७; ५०१
हर्योः ईशानः ४,१६,११; १४७७
हरीणां पतिः ८,२४,१४; १८०३
हरीणां स्थाता ८,२४,१७; १८०६ । ३३,१२; २११ ।
४६,१; १८१७
हर्यन् ३,४४,२,२; १४००,१४००
हर्यतः १,५८,२; ८१२
हर्यत् स्तोत्रम् १०,१०५,१; २७१४
हर्यश्वः ३,३१,३; १२६२ । ३२,५; १२८६ । ३६,४,९;
१३२६,३१ । ४४,२,४; १४००,२ । ५२,७; १४५२ ।
७,१९,४; २१४३ । २१,१; २१६१ । २२,१,२; २१७२-७३ ।
२४,४; २१८९ । २५,५; २१९६ । ३१,१,१२; २२२३,३४ ।
३२,१५; २२४९ । ८,२१,१०; ४१८ । ५३,२; ५२६ ।
६६,४; ६१६ । ९०,३; २३९३ । १०,१०४,३,५; २७०५,७
हवनश्रुतः ८,१२,२३; ३१० । [इन्द्राग्नी] ६,५९,१०; ३०५५ ।
[इन्द्रावरुणौ] ७,८३,३; ३१८४
हवनश्रुतः वाजेषु १,१०,१०; ६७
हवमानः अनेहसम् ८,५०,४; ४९८
हविष्मती [सरस्वती] वा० य० २० ७४; २९५८
हव्यः १,३३,२; ७३१ । १००,१; ९५७ । ८,१६,८; ३८९ ।
९६,२०-२१; २३६२-६३ । अथ० ६,९८,३; २९०४
हव्यः आरणेषु ८,७०,८; २३१८

हव्यः एकः इत् ६,२२.१; १९०७
हव्यः गाधेषु ८,७०,८; २३२८
हव्यः दस्मेभिः भूरिभिः च १०,३८,४; २५४४
हव्यः धीभिः ६,१८,६; १८६१
हव्यः नृभिः विश्वथा ७.२२ ७; २१७७
हव्यः भगो न ३,४९,३; १४२६
हव्यः भरेभरे ७,३२,२४; २२५८
हव्यः वाजेषु ८,७०,८; २३२८
हव्यः वृत्रहत्ये ४,२४,२; १५७८
हव्यः शूरेभिः भीरुभिः च १,१०१,६; ८२२
हव्यः समत्सु विश्वासु ८,९०,१; २३९१
हव्यवाहनः देवेभ्यः १०,११९,१३; २८६२
हिरण्ययः १,७,२; २९ । ८,६६,३; ६१५
हिरण्ययः उत्सः ८,६१,६; ५५३
हिरण्ययुः ७,३०,३; २२२५
हिरण्यवर्णः ५.३८ १; १७५६
हिरण्यवर्तनी [आश्विनौ] वा० य० २०,७४; २९५८
हिरण्ययीनां राजा ८.६५,१०; ६१०
हिरिशिप्रः ६,२९,६; १९६७
हिरीमशः १०,१०५ ७; २७२०
हिरीमान् १०,१०५,७; २७२०
हुवानः अस्माभिः सखिभिः १०,११२,३; २७३७
हुवानः देवान् [अग्निः] ७,३०,३; २२२०
हूयते यः धावद्भिः जिग्युभिः च १,१०१,६; ८२२
हूयमानः १,१०४,९;८५५ । १०,२८,३;२५२४ । ११६,१; २७५५
हूयमानः सोतृभिः ४,२९,२; १६०५
होता ८ ३४,८; ४३२ । २९,७; २३८२
होता असुरो न ७,३०,३; २२२०

(१) रथे-ष्ठाः । [इन्द्रस्य रथः ।]

अनपच्युतः ४,३१,१४; १६४३
अनेहाः ८ ६९,१६; २३१८
अरुषः ८,६९ १६; २३१८
अश्वयुः ४.३१,१४; १६४३
इष्टिभिः मतिभिः रंह्यः २,१८,१; ११९०
उरुः ८,९८,९; २३७२
उरुयुगः ८,९८.९; २३७२
ऋभ्वसम् (द्वि०) १,५६,१; ८०५
गवेषणः ७,२३,३; २१८२
गव्ययुः ४,३१ १४; १६४३
गोविद् १,८२.४; ९१८
चतुर्युगः २,१८,१; ११९०
चिकेतति यः हारियोजनं पूर्णं पात्रम् १,८२,४; ९१८
चित्रतमः १ १०८,१; ३००८
जवीयान् मनसः १०,११२,२; २७३६
जेत्रः १,१०२,३; ८३०
त्रिकशः २,१८,१; ११९०
त्रिविस्पृक् ४,४६,४; ३२२३
द्युमान् ४,३१,१४; १६४३
द्युक्षः ८,६९,१६; २३१८
द्रोणः ६.४४,२; २०५५
धृष्णुया [=धृष्णुः ४,३१,१४; १६४३
नवः २.१८,१; ११९०
नाभिः ६,३९.४; १९८६
परिभ्वे न पर्वतैः समुद्रैः २,१७.३; ११७४
पृथुपाजस् ४,४६,५; ३२२४
प्रवता [तृतीया] १.१७७,३; १०९३
बृहन् ३,५३,५,६; १४५७-१४५८
भीमः ६,३१,५; २०१०
मतिभिः रंह्यः २,१८,१; ११९०
मनसः जवीयान् १०,११२,२; २७३६
मनुष्यः २,१८,१; ११९०
युक्तः दक्षिणः उत सव्यः १,८२,५; ९१९
रंह्यः मतिभिः इष्टिभिः २,१८,१; ११९०
वज्री ८,३३.४; २१३
वन्धुरः ६,४७,९; २१०७
वरिष्ठः ६,४७,९; २१०७
विश्ववारः ६.३७,१; १९७३
वीरवाहः ७,९०.५; ३२३३
वृषा १.८२,४; ९१८। १७७,३; १०९३। २,१६,६; ११७७

८,३३,११; २२०
वृषभः १,५४,३; ७८८
सप्तरश्मिः २,१८,१; ११९०
समुद्रैः न परिभ्वे २,१७,३; ११७४
संमिश्लः हर्योः ८,३३,४; २१३
सप्तिनः २,१८,१; ११९०
सहस्रपाद् ८,६९,१६; २३१८
सुखः ३,३५.४; १३१५ । ४१,९; १३८१
सुखतमः १,१६,२; ७९
सुचक्रः ६,३७,३; १९७५
सुष्ठा (स्था) मा १०,४४,२; २५६९
स्थिरः ३,३५ ४; १३१५
स्वध्वरः ४,४६.४; ३११३
स्वर्विद् ६,२९,४; १९८६
स्वर्षाः २,१८.१; ११९०
स्वस्तिगा ८,६९,१६; २३१८
हरितः ३,४४,१; १३९९
हरियोगः १,५६,१; ८०५
हर्योः (संमिश्लः) ८ ३३,४; २१३
हिरण्ययः १,५६,१;८०५ । ६,२९,२;१९६३ । ८,१,२४,२५; ११०,१११ । ८,३३,४; २१३ । ६९,१६; २३१८
हिरण्यवन्धुरः ४,४६,४; ३११३

(२) वज्र-बाहुः । [इन्द्रस्य वज्रम् ।]

अंकुशः अथर्व० ६,८२,३; २९०१
अशनिम् तपिष्ठाम् ३,३०,१६; १२५३
अश्मा ४,२२,१; १५५५
आयसः १,८०,१२;९११ । ८१,४;९१९ । ८,९६,३;२३४७
आयुधम् ३,५४,४; १४०२
आयुधानि ४,१६,१४; १४८०
चक्रम् ८,९६,९; २३५३
चतुरास्रिम् ४,२२,२; १५५६
चरता युधेन ३,३२,६; १८०७
तपिष्ठाम् (अशनिम्) ३,३०,१६; १२५३
तपुषिम् हेतिम् ३,३०,१७; १२५४
तिग्मम् १,१३०,४; १०१४
दृन्तु त्रिधातो पुराम् ६,२०,३; १८८६
दर्शतः ८,७०,२; ३२२
द्युमन्तम् ५,३१,४; १६९६
निमिश्लः ८,९६,३; २३४७
न्यृष्टम् वसुना ४,२०,६; १५३८
पर्वतेन ६,२२,६; १९१२
प्रत्नेन ६,११,७; १९०३
मदच्युतम् ८,९६,५; २३४९
मनोजुवा ६,२२,६; १९१२
महः ८,७०,२; ३२२
महता वधेन ५,३२,८; १७११
युज्येन ६,११,७; १९०३
वज्रासः १,८०,८; ९०७
वधम् १ ५५,५;८०१ । १७४,८;१०७६ । ५,३४,२;१७२८
वधेन ४,१८,९; १५१७
वधेन चरता ३,३२,६; १२८७
वधेन महता ५,३२.८; १७११
वसुना (न्यृष्टम्) ४,२० ६; १५३८
वसुदानः अथर्व० ६,८२,३; २९०१
वृत्रहनम् ६,२०,९; १८९२
वृषा १,१३१,३; १०२३
वृषण्धिम् ४,२२,२; १५५६
शतपर्वणा ८,८९,३; २३८६
शताश्रिम् ६,१७,१०; १८५०
श्रथिता १,५७,२; ८११
सख्या १,८०,६; ९०५ । ६,११,७; १९०३
सचा भुवम् १.१३१,३ १०२३
सहस्रभृष्टिम् १,८०,१२; ९११ । ५,३४,२; १७२८ । ६, १७,१०; १८५०
सायकम् १,८४.११; ९४७
स्थविरम् ४.२०,६; १५३८
स्वपस्तमम् १,६१,६; ८६१
स्वर्यम् १,६१,६; ८६१
ह्रुरिम् ३,४४,४; १४०१
हरितम् ३,४४,४; १४०२

हर्यतः १,५७.१; ८११
हिरण्ययः १,५७,१; ८११ । ८,६८,३; २२०३ ।
अथर्वं० ६,८२,३; २९०१
हेतिम् (तपुषिम्) ३,३०,१७; १२५४

(३) वज्र-बाहुः। [इन्द्रस्य बाहू।]

अनाधृष्यौ साम० १८६९; ३०००
असह्यौ साम० १८६९; ३०००
उपाकौ १,८१,४; ९१९
चित्रौ अथर्व० १९,१३,१; २९१४
गोजिता १,१०२,६; ८३३
पारयिष्णू अथर्व० १९,१३,१; २९१४
युवानौ साम० १८६९; ३०००
वृषभौ अथर्व० १९.१३,१; २९१४
वृषाणौ अथर्व० १९,१३,१; २९१४
सुप्रतीकौ साम० १८६९; ३०००
स्थविरौ अथ० १९.१३,१; २९१४। साम० १८६९,३०००
सव्येन यमति व्राधतश्चित् दक्षिणे संगृभीता कृतानि १, १००,९; ९६५

(४) हर्यश्वः। [इन्द्रस्य अश्वौ।]

अजिराः ३,३५,२, १३१३
अत्याः १,१७७.२; १०९१
अध्वरश्रियः ८,४.१४; २४१
अन्तमाः १,१६५,५; ३२५४
अभिमातिषाहः ६,६९,४; ३३०९
अर्वन्तः ८,९१,११; २४०७।१०,७४,१; २६३४। १०५,२; २७१५
अर्वाञ्चः १,५५,७; ८०३ । ७,१८,१; २२०८
अशीतिः २,१८,६; ११९५
अश्वमासः ६,२१,१२; १९०६
अश्वासः ६,२९,२; १९६३ । ८,१,९; ९५
अष्टौ २,१८,४; ११९३
अस्मत्राः १०,४४,३; २५७०
अस्मत्राञ्चः ६,४४,१९; २०५४
आशवः २.१६,३; ११७४ । ३,३५,४; १३१५ । ४,२९,४; १६०७ । १०.४९,७; २५९६
आसस्नाणासः ६,३७,३; १९७५
इन्द्रवाहा (द्विव०) ८,९८,९; २३७१
उग्रासः १०,४४,३; २५७०
उरवः ६,२१,१२; १९०६
ऋज्यन्तः ६,३७,२; १९७४
ऋज्रा [द्विवचनम्] १,१७४,५; १०७३
ऋतयुजः ६,३९,४; १९८६
एतग्वा [द्विव०] ८,७०,७; २३२७
एतशा [द्विव०] ८,७० ७; २३२७
काम्या [द्विव०] १,६.२; २५
केता [द्विव०] १,५५,७; ८०३
केतू सूर्यस्य २,११,६; ११०६
केशवन्ता [द्विव०] १०,१०५,५; २७१८
केशिनः १,८२,६; ९३० । ८,१,२४; ११०।१०,१०५,२; २७१५
गभस्त्योः रश्मयः ६,२९,२; १९६३
गावौ [द्विव०] १०,२७,२०; २५१०
घृतस्नू [द्विव०] ३,४१,९; १३८१
चत्वारः २,१८,४; ११९३
चत्वारिंशत् २,१८,५; ११९४
जूजुवानासः ५,२९,९; १६७५
तपुष्पा [पुःपा] ३,३५,३; १३१४
तविषासः १०,४४,३; २५७०
तौलाभिः [तृ० स्त्री०] ६,४४,७; २०४२
त्रिंशत् २,१८,५; ११९४
दश २,१३,९; ११४५ । १८,४; ११९३
दशग्विनः ८,१,९; ९५
दुर्युजः १०.४४,७; २५७४
युक्षा [द्विव०] १,१००,१६; ९७२

द्वौ २,१८,४; ११९३
धुनी (वातस्य) १०,२२,४; २४६९
धृष्णू [द्विव०] १,६,२; २५
धौतरीभिः [स्त्री० तृ०] ६,४४,७; २०४२
नवौ १०,१०५,४; २७१७
नवतिः २.१८,६; ११९५
नियुतः ६,२२,११; १९१७। ३६,३; २०३३। ४५,२१; २०८०। ७.१८,१०; २१२८। ९१,५,६; ३२३८-३२३९। ४,४७,४; ३२२९
नृमणः वातस्य १.५१.१०; ७५४
नृवाहसा [द्विव०] १,६,२; २५
पञ्चाशत् २,१८,५; ११९४
पर्णिना [द्विव०] ८,१,११; ९७
पुनानासः ६.३७,२; १९७४
पुरुस्पृहः ४,४७.४; ३२२९
पृश्निगावः ७,१८,१०; २१२८
पृश्निनिप्रेषितासः ७,१८,१०; २१२८
प्रिया [द्विव०] ३.४३,१; १३९१। १० ११२,४; २७३८
प्रियमेधस्तुता [द्विव०] ८.६,४५; २८७। ३२,३०; २०९
प्रैतशाः १०,४९,७; २५९६
बभ्रू [द्विव०] ४,३२,२२; १६६२
बृहन्तः ३,४३.६; १३९६
ब्रह्मणायुक्ता [द्विव०] १,८४ ३; ९३९
ब्रह्मयुजा १,१७७,२; १०९२। ३,३५,४; १३१५। ८,१,२४; ११०। २.२७; १४२
मदच्युता [द्विव०] १,८१,३; ९१८
मनोयुजः १.५१.१०; ७५४
मन्द्रा १,१००,१६; ९७१। ३,४५,१; १४०४
मयूररोमाणः-मभिः [तृ०]३.४५,१; १४०४
मयूरशेप्या ८,१,२५; १११
मरुतः सखायः ५ ३१,१०; १७०१
मूराः वृषभस्य ३,४३,६; १३९६
युक्ता ब्रह्मणा [द्विव०] १.८४.३; ९३९
युक्तासः ३,५३,४; १४५६। ४,३२,१७; १६६१। ६,२३,१; १९१८। ६,३७,१; १९७३। ७,२८,१; २२०८। १०,२७,२०; २५१०। ११२,४; २७३८
युजानाः १,१७७,२; १०९२। ३,४३,६; १३९६। ६,२९,२; १९६३। ४४,१९; २०५४
रघ्वी [द्विव०] १०,४९,२: २५९१
रघुद्रुवः ८,१,९; ९५
रजी (न) (महान्तौ) १०,१०५,२; २७१५
रथ्यासः ६,३७,३; १९७५
रन्तयः ७,१८,१०; २१२८
रयिमन्तः १०,७४.१; २६३४
रश्मयः गभस्त्योः ६,२९.२; १९६३
रासभः ३,५३,५; १४५७
रोहितः १,१००,१६; ९७२। ५,३६,६; १७४९
ललामीः [स्त्री०] १,१००,१६ ९७२
वंकू [द्विव०] १,५१,११; ७५५। ८,१,११; ९७
वंकूतरा [द्विव०] १,५१,११; ७५५
वचोयुजा [द्विव०] ६,२०,९; १८९२। ८.९८,९; २३७२
वहिष्ठाः ६,२१,१२; १९०६। ४०,३; १९९०। ४७,९; २१०७
वाजाः ३,५३,५-६; १४५७-५८। ५,३६,६; १७४९। ६,४५,२१; २०८०। ८,२४,१८; १८०७
वातस्य (समानवे गौ) १,१७४,५; १०७३
वातस्य धुनी १०,२२,४; २४६९
वातस्य नृमणः १,५१.१०; ७५४
वातस्य पर्णिना ८,१.११; ९७
वातस्य युक्ताः ५,३१.१०; १७०१
वावाता ८,४,१४; २४२
वाहः ३,५०,४; १४३२। ५३,३; १४५५
विंशतिः २ १८.५; ११९४
विप्रता (द्विव०) १,६३,२; ८८६। १०,२३,१; २४८१। ४९.२; २५९१। १०५,२,४; २७१५,२७१७
विश्वा २,१८,७; ११९६
विश्ववाराः ६,२२,११; १९१७। ७.९१.६; ३२३९
वीतपृष्ठाः ८,६.४२; २८४। ३,३५,५; १३१६
वृषणा (द्विव०) १,१७७,१,३; १०९१,१०९३। २,१६,६; ११७७। ३,३५ ३,५; १३१४,१६। ४३,४; १३९४। ५.३६,५; १७४८। ६,२९.२; १९६३। ४४,१९,१९; २०५४,५४। ७ १९,६; २१४५। ८,१,९; ९५। ३३,११; २२०। ४,११, १४; २३९,२४२। १०,४९,२,२५९१। ११२.२; २७३६
वृषभासः १,१७७,२; १०९२
वृषभस्य (मूराः) ३,४३,६; १३९६·
वृषरथासः १,१७७,२; १०९२। ६,४४,१९; २०५४
वृषरश्मयः ६.४४,१९; २०५४
श्यचस्वन्ता १०,१०५,५; २७१८

च्यतानाम् ४,३२,१७; १६६१
शग्मा ८,१,२७, १४२
शतम्-शतानि २,१८,६; ११९५ । ४,२९,४; १६०७ । ७,
९१,६; ३२३९ । ८,१,२४; ११०
शतिनः ८,१,९; ९५
शितिपृष्ठा (द्विव०) ८,१,२५; १११
शेपा १०,१०५,२; २७१५
शोणा १,६,१, २५ । ३,३५,३; १३१४ । ८,१,९; ९५,
श्यावा १,१००,१६; ९७२
षट् २,१८,४; ११९३
षष्टिः २,१८,५; ११९४
सखाया (द्विव०)३,३५,४; १३१५। ४३,१,४; १३९१,९४।
६,४०,१; १९८८
सचमानौ त्रिभिः शतैः ५,३७,६, १७४९
सधमादः ३,३५,४, १३१५ । ४३,६; १३९६ । ६,३७,१,
१; १९७३,१९७३ । ६९,४; ३३०९ । १०,४४,३; २५७०
सधमाद्या ८,३२,२९; २०८ । ९३,२४; २४५३
सप्ततिः २,१८,५; ११९४
सप्तयः सप्ती ८,४,१४; २४२ । ३,३५,२; १३१३ । ८,
४६,७; १८२३
सर्वरथा (द्विव०) १०,१६०,१; २८२४
सहस्राः ५,२९,९; १६७५
सहस्रम्-स्राणि ४,२९,४; १६०७ । ३२,१७; १६६१ ।
७,९१,६; ३२३९ । ८,१,२४; ११०
सहस्रिणः ८,१,९; ९५
सुधुरा (द्विव०) ३,४३,४; २३९४
सुमदंशुः (स्त्री०) १,१००,१६; ९७२
सुयमा (द्विव०) १०,४४,२; २५६९
सुयुजः ५,३१,१०; १७०१ । ६,४४,१९; २०५४ । १०,
१०५,२; २७१५
सुरथाः २,१८,५; ११९४
सुविदत्राः ७,९१,६; ३२३९
सुसंमृष्टासः ३,४३,६; १३९६
स्थूरयः ६,२९,२; १९६३
स्यूमन्यू १,१७४,५; १०७३
स्वङ्गा ३,४३,४; १३९४
हरी-हरयः १,५,४; १७ । ६,२; २५ । ७,२; २९ । ५५,
७; ८०३ । १,१७४,४; १०७२ । १७७,१,३,४; १०९१,
९३-९४ । २,११,६; ११०६ । १६,६; ११७७ । १८,३,
४; ११९२-९३ । ३,३५,१; १३१२ । ८,१,२४,२५;११०-
१११ । २,२७; १४२ । ३३,२९,३०; २०८-९ । ३३,११;
२२० । ४,११,१४, २३९,२४२ । ६,३६; २७८ । ६,४२;
२८४ । ६,४५; २८७ । ९३,२४; २४५३ । २४,१७; १८०६
हरिता [द्विव०] ६,४७,१९; २११७
हरितौ (द्विव०) साम० ६२३;२९९४
हर्यतौ (द्विव०) ८,६,३६; २७८
हिरण्यकेश्या (द्विव०) ८,३२,२९; २०८ । ९३,२४;२४५३

(५) इन्द्राणी । [इन्द्रपत्नी ।]

इन्द्रपत्नी १०,८६,९; २६४८ । १०; २६४९
इन्द्राणी १०,८६,११-१२; २६५०-२६५१
ऋतस्य वेधाः १०,८६,१०; २६४९
पृथुजाघनिः १०,८६,८; २६४७
पृथुष्टुः १०,८६,८; २६४७
प्रतिच्यवीयसि १०,८६,६; २६४५
भावयुः १०,८६,१५; २६५४
रेवती १०,८६,१३; २६५२
वीरिणी १०,८६,९-१०; २६४८-२६४९
वृषाकपायी १०,८६,१३, २६५२
शूरपत्नी १०,८६,८; २६४७
संहोत्रं समनं गच्छति १०,८६,१०; २६४९
सक्थि उद्यमीयसी १०,८६,६; २६४५
सुपुत्रा १०,८६,१३; २६५२
सुबाहुः १०,८६,८; २६४७
सुभगा १०,८६,११; २६५०
सुभसत्तरा १०,८६,६; २६४५
सुयाशुतरा १०,८६,६; २६४५
सुलाभिका १०,८६,७; २६४६
सुस्नुषा १०,८६,१३; २६५२
स्वङ्गुरा १०,८६,८; २६४७

इन्द्र-देवतायाः विभिन्नरूपत्वम् ।

अग्निरूपी १,६,१; २४
अन्तरात्मा १०.२४,२४; २५१४
अभयंकरः ८,६१,१३; ५६०
आदित्यरूपी १,६,१; २५ । १,६,३; २६। १०,२७,१३-१४; २५०३-२५०४
कालात्मकः १०,५५,५; २६१८
कुयवाख्य-असुर-नाशकः १,१०४,३-४; ८४९-८५०
ज्येष्ठः १०,५०,४; २६०४
त्राता ६,४७,११; २१०९ । ७,१९,७; २१४६
नक्षत्ररूपी १,६,१; २४
पर्जन्यरूपी ८,६९,२; २३०५
पुरोळाशाहः ३,५२,१-८; १४४६-१४५३
पूषण्वान् १,८२,६; ९३०
प्रजापतिरूपी १०,२७,१५; २५०५
प्रदाता ८,१७,१०; ४०३ । ४,२१,९; १५५२
भूरिदाः ४,३२,१९-२१, १६६३-१६६५
मरुत्वान् ८,६३,१०; ५८७ । १,१०१,१-११; ८१७-८२७ १,१००,१-१९; ९५७-९७५ । १,१२९,१; १००० । २, ११,१-२१; ११०१-११२१ । ३,३२-१-१७; १२८२-१२९८। ३,३५,१-११; १३१२-१३२२।३,४७,१-५; १४१४-१४१८। ३,५०,१-५; १४२९-१४३३ । ३,५१,७-९; १४४०-१४४२। ४,२१,३, १५४६ । ५,२९,१-१५; १६६७-१६८१ । ५, ३०,१-११; १६८२-१६९२ । ५,३१,१-१३; १६९३-१७०४। ८,६.१-७; १७६९-१७७५ । ६,१९,१-१३; १८७१-१८८३। ६,२०,१-१२; १८९७-१९०६ । ६.४०,५; १९९२ । ७, ३२,१०; २२४४ । ८,६८,१-१३; २२९१-२३०३ । १०, ७३,१-११; २६२३-२६३३
मुष्कवान् १०,३८,१-५; २५४१-२५४५
यज्ञमार्गानभिज्ञः १,१७३,११; १०६६
रक्षोहा १,१२९,११;१०१०।३,३०,१५-१७; १२५२-१२५४
वायुरूपी १,६,१; २४
सरस्वतीवन्तौ [इन्द्राग्नी] ८,३८,१०; ३१००
सुत्रामा ८,४७,१२,१३; २११०,२१११
सुपर्णात्मकः १०,५५,६; २६१९
सूर्यात्मा ८,६,२९,३०; २७१,२७२। १,८३,५;९३५ । ३,३९,७;१३६१ । ८,६९,२; २३०५ । १०,५५,३;२६१६ । १०,१११,७; २७३१
स्त्रीरूपी ८,३३,१९; २१८

इन्द्रदेवताया गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तरपद-सूची ।

सहस्र – अक्षि [क्षा] १,२३,३; ३११४
अन् – अनुदः [अनानुदः] २,२१,४; ११२०
अन् – अनुदिष्टः [अनानुदिष्टः] १०,१६०,४:२८२७
वृषभ – अन्नः २,१६,५; ११७६
गाथा – अन्यः ८,९२,२; २३९८
अन् – अपच्युतः ८,९२,८; २४०४
नर्य – अपसः ८,९३,१; २४३०
अयस् – अपाष्टिः [अयोपाष्टिः] १०,९९,८; २६८७
बहुल – अभिमानः १०,७३,१, २६२३
सु – अभिष्टिः १,५१.२; ७४६
सु – अभिष्टिसुम्नः ६,२०,८; १८९१
अ – कव-अरिः ३,४७,५; १४१८
सु – अरिः १,६१,९, ८६४
अन् – अर्वा ४,१७.२०; १५०७
सु – अर्वा ६,२२,३: १९०९
अन् – अर्शरातिः ८,९९ ४; २३७९
सु – अर्-सन् [स्वर्षा] १,६१,३; ८५८
अन् – अवद्यः १,१२९,१; १०००
सु – अवसः १०,९७,२; २८४३
प्र – अविता ८,९६,२०, २३६२
सु – प्र-अव्यः २,१३,९; ११४५
सम्भृत – अश्वः ८,३४,१२; ४३६
सु – अश्वः ४,२९,२; १६०५
हरि – अश्वः ३.३१,३; १२६०
सु – अश्वयुः ८,४५.७; ४४९
तव – आगस् ४,१८,१०; १५१८
पर – आददिः १,८१.२; ९१७
तुरीय – आदित्यः ८,५२,७, ५११
अन् – आधृष्यः ४,१८.१०, १५१८
अन् – आनतः ६,४५,९; २०६८
अन् – आपिः ८.२१ १३; ४२१
सु – आपिः ८,५३,५; ५२९
अन् – आस्तृणः १,३३,१, ७३०
अस्कृध – आयुः [अस्कृधोयु] ६,२२,३; १९०९

दीर्घ – आयुः ८,७०,७; २३२७
वृद्ध – आयुः १,१०,१२; ६९
तिग्म – आयुधः २,३०,३; ११२९
सु – आयुधः ६,१७,१३; १८५३
प्र – आशुषाट् ४,२५,६; १५९३
अन् – आभयी ८,२,१; ११६
चक्रम् – आरूजः ५,३४,६; १७३२
घृत – आसुती ६,६९,६; ३३११
भूरि – आसुतिः ८,९३,१८; २४४०
अ -- प्रति-इतः १,३३,२; ७३१
वेद -- इष्ठः [वेदिष्ठः] ८,२,२४; १३९
शची -- इष्ठः [शचिष्ठः] ४,२०,९; १५४१
शवस् -- इष्ठः [शविष्ठः] १,८०,१; ९००
शम्भू -- इष्ठः [शम्भविष्ठः] १,१७१,३; ३२६५
सहस् -- इष्ठः [सहिष्ठः] ६,१८,४; १८५९
प्रशस्य -- ईयस् [ज्यायस्-यान्] ३,३८,५; १३४९
वृद्ध -- ईयस् [ज्यायस्-यान्] " "
तवस् -- ईयस् [तवीयस्-यान्] ६,२०,३; १८८६
वेद -- ईयस् [वेदीयस्-यान्] ७,९८,१; २२७९
सहस् – ईयस् [सहीयस्-यान्] १,६१.७; ८६१
वन -- इष्ठः [वनिष्ठः] ७,१८.१; १८१९
वर -- इष्ठः [वरिष्ठः] ८,९७,१०; ९८५
बृबद् -- उक्थः ८.३२,१०; १८९
वपा – उदरः ८,१७,८; ४०१
अक्षित -- ऊतिः १,५,९; २२
उर्वी -- ऊतिः ६,२४,२; १९२९
शतम् -- ऊतिः १,१०२.६; ८३३
सहस्र -- ऊतिः ८,३४,७; ४३१
सहस्रम् -- ऊतिः १,५२,२; ७६१
अन् -- ऊनः ६,१७,४; १८४४
अन् – ऊर्मिः ८,२४,२२; १८११
अन् – ऋतुपाः ३,५३,८; १४६०
श्रुत – ऋषिः १०,४७,३; २८४४
नि – ऋष्टः १०,४२,२; २५४७
पुरस् – एता ६,२१,१२; १९०६
तत् – (बर्हिः)-ओकस् ३,३५,७; १३१८
नि – ओकस् १,९,१०; ५७
अभिभूति – ओजस् ३,३४,६; १३०६
अमित – ओजस् १,११,४; ७३
असमाति – ओजस् ६,२९,६; १९६७
ऋष्व – ओजस् १०,१०५,६; २७१९
धृष्णु – ओजस् ८,७०,३; २३२३
बाहु -- ओजस् १०,१११,६; २७३०
विश्व -- ओजस् १०,५५.८; २६२१
सु -- ओजस् ६.२२,६; १९१२
स्वधूति – ओजस् १,५२,१२; ७७१
दूर् – ओषस् ४,२१,६; १५४९
रथ – ओळ्हाः १०,१४८,३; २८११
वृषा – कपिः १०,८६,१; २६४०
अभयम् – करः ८,१,२; ८८
खजम् – करः १,१०२,६; ८३३
यतम् – करः ५,३४,४; १७३०
सत्रा – करः १,१७८,४; १०९९
सृप्र – करस्नः ८,३२.१०; १८९
आश्रुत् – कर्णः १,१०,९; ६६
श्रुत् – कर्णः ७,३२,५; २२३९। ८,४५,१७; ४५९
भूरि – कर्मन् [र्मा] ३,१०३,५; ८४३
विश्व – कर्मन् [र्मा] ८,९८,२; २३६५
वृष – कर्मन् (र्मा) १,६३,४; ८८८
अकाम – कर्शनः १,५४,२; ७७६
अ -- कल्पः १,१०२,६; ८३३
अ – कवारिः ३,४७,५; १४१८
अ – कामकर्शनः १,५४,२; ७७६
ऋण – कातिः ८,६१,१२; ५५९
तत् – (=सोम) – कामः २,१४,१; ११५०
श्रवस् – कामः ८,२,३८; २५३
सोम – कामः १,१०४,९; ८५५
युत् – कारः १०,१०३,२; २६९३
आ – काव्यः ४,२९,५; १६०८
अ-समष्ट – काव्यः २,२१,४; १२२०
अप्रति – कुतः [अप्रतिष्कुतः] १,७,६; ३३
तुवि – कूर्मिः ३,३०,३; १?४०
तुवि – कूर्मितमः ६,३७,४; १९७६
अभिष्टि – कृत् ४,२०,१; १५३३
अरम् – कृत् ८.१,११; ९६
आजि -- कृत् ८,४५,७; ४४९
ईशान -- कृत् १,६१,२१; ८६६
खज – कृत् ६,१८,२; १८५७
धर्म -- कृत् ८,९८,१; २३६४
पथि -- कृत् ६,२१,१२; १९०६

पुरु -- कृत् १,५४,३; ७७७
भद्र -- कृत् ८,१४,११; ३६४
रण -- कृत् १०,११२,१०; २७४४
लोक -- कृत् १०,१३३,१; २७७८
वरिवस् -- कृत्८,१६,६; ३८७
सु -- कृत् ३,३१,७; १२३६
अ -- निस्-कृतः [निष्कृतः] ८,९९,८; २३८३
अरम् -- कृतः १०,११९,१३; २८६१
दामने -- कृतः ८,९३,८; २४३७
सम् -- कृतः [संस्कृतः] ८,३३,९; ३१८
सहस् -- कृतः ८,९९,८; २३८३
सु -- कृतः ६,१९,१; १८७१
सुरूप -- कृत्नुः १,४,१; ४
अश्व -- कृत्वः ८,६१,१०; ५५७
प्र -- केतः १०,१०४,६; २७०८
सुप्र -- केताः १.१७१,६; ३२६८
अमितः -- क्रतुः १,१०२,६; ८३३
अवार्य -- क्रतुः ८,९२,८; २४०४
अविहर्यत -- क्रतुः १,६३,१; ८८६
ऋजु -- क्रतुः १,८१,७; ९२१
तुवि -- क्रतुः ८,६८,२; २२९२
वृष -- क्रतुः ५,३६,५; १७४८
शत -- क्रतुः १,४,८; ११
स -- क्रतुः १०,१४८,४; २८१२
सम्भृत -- क्रतु १,५२,८; ७६८
सु -- क्रतुः १,५,६; १९
सम् -- क्रन्दनः १०,१०३,१; २६९२
उरु -- क्रमः ८,७७,१०; ६४९
सुत -- क्रिः ६,३१,४; २००९
द्यु -- क्षः ६,२४,१; १९१८
स -- क्षणिः ८,७०,८; २३१८
सु -- क्षत्रः ५.३२.५; १७०९
ऋभु -- क्षाः १,६३,३; ८८७
दिव -- क्षाः ३ ३०,२१; १२५८
अ -- क्षितोतिः १,५,९; २२
अ -- क्षितवसुः ८.४९,६; ४९०
पुरु -- क्षुः ४.२१,५; १६०८
अमित्र -- खादः १०.१५२,१; २८१४
प्र -- खादः १,१७८,४; १०९८
वृत्र -- खादः ३.४५,२; १४०५
अभि -- ख्याता ४,१७,१७; १५०४
अरम् -- गमः ६,४२,१; १९९८
स्वयम् -- गातुः ४,१८,१०; १५१८
उरु -- गायः १०,२९,४; २५१८
अभि -- गो [गुः] १,६१,१; ८५६
शचि -- गो [गुः] ८,१७,१२; ४०५
भूरि -- गो [गुः] ८.६२,१०; ५७५
पुरु -- गूर्तः ६,३४,२; २०२२
विश्व -- गूर्तः १,६१,९; ८६४
अ -- गोह्यः ८,९८,४; २३६७
तुवि -- ग्राभः ६.२२,११; १९११
तुवि -- ग्रिः २,२१,२; १११८
तुवि -- ग्रीवः ८.१७,८; ४०१
घन -- घनः [घनाघनः] १०,१०३,१; २६९२
अ -- घ्नन् ७,२०,८; २१५८
अपूरुष -- घ्नः १,१३३,६; १०३९
सम् -- चकानः ५,३०,७; १६८८
वि -- चक्षणः १,१०१,७; ८२३
वृतम् -- चयः २,२१,३; ११२९
वि -- चर्षणिः २,२२,३; १२२५
विश्व -- चर्षणिः १,९,३; ५०
प्र -- चेताः ७,३१,१०; २२३२
वि -- चेताः ६,२४,२; १९२९
स -- चेताः १,६१,१०; ८६५
सहस्र -- चेताः १,१०,१२; ९६३
रध्र -- चोदः २,२१,४; १११०
ऋषि -- चोदनः ८.५१,३; ५०८
कीरि -- चोदनः ६,४५,१९; २०७८
रध्र -- चोदनः ६,४४,१०; २०४५
दुस् -- च्यवनः १०,१०३,२; २६९३
अच्युत -- च्युत् २,१२,९; ११३०
मद -- च्युत् १,५१,२; ७४६
अ -- च्युतः १० १११,३; २७२७
अनप -- च्युतः ८,९२,८; २४०४
कवि -- च्छदा ३,१२,३; ३०३१
सद्यः -- जज्ञानः ८,९६,२१; २३६३
पाञ्च -- जन्यः ५.३२,११; १७१५
विश्व -- जन्याः १,१६९,८; १०५०
धनम् -- जयः ३,४२,६; १३८७

अ – जरः ३ ३१,७; ११८८
अप – जर्गुराणः ५,२९,४; १६७०
ऋते – जाः ७,२०.६; ११५६
पुरा – जाः ३.३१,१९; १२७८
पूर्व – जाः ८,६ ४१; २८३
सन – जाः १०,१११,३; २७२७
सहस् – जाः १०.१०३,५; २६९५
तुवि – जातः १,१३१,७; १०२७
सद्यः – जातः ८,७७.८; ६४७
सु – जातः १०,९९,७; २६८६
प्र – जानन् ३,३५.४; १३१५
वि – जानन् ३,३९,७; १३६१
तुतु – जानः (तूतुजानः) १,३,६; ३
तुतु – जिः (तूतुजिः) ४,३२,२; १६४६
अपरा -- जित् [ता] ३,१२,४; ३०३३
अप्[ब्] -- जित् २;२१,१; १२१७
अप्सु -- जित् ८,१३,२; ३१२
अश्व -- जित् २.२१,१; १२१७
उर्वरा -- जित् २,२१,१; १२१७
गो -- जित् २,२१,१; १२१७
धन -- जित् २,२१,१; १२१७
नृ -- जित् २,२१,१; १२१७
विश्व -- जित् २,२१,१; १२१७
श्रवस् -- जित् ८,३२,१४; १९३
संसृष्ट -- जित १०,१०३,३; २६९४
सत्रा -- जित् २,२१,१; १२१७
स्वर् – जित् २,२१,१; १२१७
स – जित्वाना ३,१२,४; ३०३३
अ – जुरः ८.१,२; ८८
अ – जुर्यः २,१६,१; ११७२
मनः -- जुवा १,२३,३; ३११४
ब्रह्म -- जूतः ३,३४,१; १३०१
वृष -- जूतिः ५,३५,३; १७३८
अ -- जूर्यत् ३,४६,१; १४०९
परम -- ज्या ८,९०,१; २३९९
उरु -- ज्रयाः ८,६.२७; २६९
पृथु -- ज्रयाः ३,४९,२; १४२५
इन्द्र -- ज्येष्ठाः १,२३,८; ३११८
अङ्गिरस् – तमः १,१३०,३; १०१३
अद्भुत -- तमः १,१७४,१०; १०७८
इन – तमः ३,४९,२, १४२५
कवि – तमः ६,१८,१४; १८६९
गिर्वणस् – तमः ६,४५.२०; २०७९
चित्र – तमः ६.३८,१; १९७८
ज्येष्ठ – तमः २.१६,१; ११७२
तवस् – तमा १,१०९.५, ३०२५
तुविकूर्मि – तमः ६,३७.४: १९७६
दस्म -- तमः २,२०.६; १२१३
देव -- तमः ४.२२,३; १५५७
द्युमत् -- तमः १,५४,३; ७७७
पितृ -- तमः ४,१७,१७; १५०४
पुरु -- तमः १ ५,२; १५
मघवन् -- तमः ८,१४.५; ५३५
मन्दिन् -- तमः ८,१३,२३; ३४३
रथी -- तमः ६,४५,१५; २०७४
वाजसा -- तमा ३,१२,४; ३०३३
विप्र -- तमः १०.११२,९; २७४३
वीर -- तमः ३,५२,८; १४५३
वृषन् -- तमः १,१०,१०; ६७
शम् -- तमः ८,३३,१५; २२४
शिव – तमः ८,९६,१०; २३५४
शुष्मिन् – तमः १,१३३,६; १०३९
सहस् -- तमौ ६,६०,१; ३०५६
सुश्रवस् – तमः १,१३१,७; १०२७
सोमपा -- तमः ६,४२,२; १९९९
वृत्रहन् -- तमः ५,३५.६; १७४१
अभिभू -- तरः ८,९७,१०; ९८५
उत् -- तरः ८,१४,१५; ३६८
जुष्ट -- तरः ८,९६,११; २३५५
तवस् -- तरः १,३०,७; ७०५
वीर -- तरः ८,२४,१५; १८१४
स्व-यशस् -- तरः ३,४५.५; १४०८
दुस् (ष्) – तरां (रौ) ५,८६,२; ३०४१
वि – तन्तसाय्यः ६,१८,६; १८६?
सु – तपाः ४,२५,७; १५९४
दुस् – तरितुः २,११,२; ११९८
वि – तर्तुराणः ६,४७,१७; २११५
स्व – तवः ६,२२,६; १९१२
विभु (भ्व) – तष्टः ३,४९,१; १४२४
सत्य – ताता १०,१११,४; २७१८

अप् -- तुरः ३,५१,३; १४३६
आजि -- तुरः ८,५३,६; ५३०
निस् -- तुरः [निष्टुरः] ८,३२,२७; २०६
अ -- तूर्तः ८,५,७; २३८७
पुरु -- त्मा ८,२,३८; १५३
अम -- त्रः ३,३६,४; १३२६
सह -- त्रः १,१७४.१; १०६९
यज -- त्रः १,१२९,७; १००६
देव -- त्रा ८,३४,८; ४३२
पुरु -- त्रा ८,३३,८; २१७
सु -- त्रामन् ६,४७,१२; २११०
वि -- त्वक्षण: ५,३४,६; १७३२
प्र -- त्वक्षाणः १०,४४,१; २५६८
सु -- दंसाः १,६२,७; ८७८
सु -- दक्षः १,१०१,०; ८२५
वज्र -- दाक्षिणः १,१०१,१; ८१७
सु -- दक्षिणः ७,३२,३; २२३७
गो -- दत्रः ८,२१,१६; ४२४
पुरु -- दत्रः ६,१८,९; १८३४
पर -- आ दद्रिः १,८१,२; ९१७
उप -- दधानः ४,२९,४; १६०७
अ -- दब्धः ८,७८,६; ६५६
अ -- दभा [भौ] ५,८६,५; ३०४४
अ -- दयः १०,१०३,७; २६९७
वि -- दयमानः ३,३४,१; १३०१
पुरम् -- दरः १,१०२,७; ३४
गो -- दाः ३,३०,२१; १२५८
धन -- दाः १,३३,२; ७३१
भूरि -- दाः ४,३२.१९; १६९३
वसु -- दाः ८,९३ ४; २३७९
वाज -- दा १,१३५,५; ३२१६
सहस्र -- दाः १,१७४,१; १०६९
सु -- दाः ८,७८,१०; ६५४
स्वस्ति -- दाः १०,११६,२; २७५६
भूरि -- दात्रः ३,३४,१; १३९१
जीर -- दानुः ८,६२,३; ५६८
सु -- दानुः ६,३८,१; १९७८
नक्षत् -- दाभः ६,२२,२; १९०८
अ -- दाभ्यः ७,१०४,२०; २२८८
सु -- दामन् ६,२०,७; १८९०
वाज -- दावन् ८,२,३४; १४९
सत्रा -- दावन् १,१७,६; ३३
स्व -- दावन् ८,५०,५; ४९९
प्र -- दिवः १,५४,२; ७७६
बृहत् -- दिवः ४,२९,५; १६०८
स -- दिवः २,१९,६; १२०४
प्र -- दिशमानः ३,३१,११; ११८०
स्मत् -- दिष्टिः ३,४५,५; १४०८
अ -- वि -- दीधयुः ४,३१,७; १६३६
सबर् -- दुघः ८,१,१०; ९६
सु -- दुघा ८,१,१०; ९६
आ -- दुरिः ४,३०,२४; १६२९
सु -- दृक् ४,२३,६; १५७१
स्वर् -- दृक् ७,३२,२२; २२५६
विश्व -- देवः ८,९८,२; २३६५
तुवि -- देष्णः ८,८१,२; ६७१
तुवि -- द्युम्नः १,९,६; ५३
अ -- द्रोघः ३,३२,९; १२९०
अ -- द्रोघवाक् ६.२२,२; १९०८
ऩ्धमान -- छिद् ६,४७,१६; २११४
तरत् -- द्वेषः १,१००,३; ९५९
वि -- द्वेषणः ८,१,२; ८८
उग्र -- धन्वा १०,१०३,३; २६९४
वि -- धर्ता ८.७०,२; २३१२
वयस् -- धाः ३,३१,१८; ११७७
सम् -- धाता ८,१,१२; ९८
कारु -- धायाः ३,३२,१०; ११९१
उरु -- धारः ८,१,१०; ९६
विश्वतस् -- धीः ८,३४,६; ४३०
अव -- धून्वानः ६,४७,१७; २११५
चर्षणी -- धृत् ३,३७,४; १३३७
अ -- धृष्टः ८,६१,३; ५५०
अन् -- आ -- धृष्यः ४,१८,१०; १५१८
अ -- ध्वरः ८,६३,६; ५८३
दुर् -- नशः (दूणाशः) ७,३२,७; २२४१
अन् -- आ -- नतः ६,४५,९; २०६८
शृंगवृषो -- नपात् ८,१७,१३; ४०६
विश्व [श्वा] -- नरः १०,५०,१; २६०१
शिक्षा -- नरः १,५४,२; ७७६
पुरु -- ना [णा] मन् ८,९३,१७; २४४६

अ — निभृष्टः १०,११६,६; २७६०
अ — निमिषः १०.१०३,१,२; १६९२-९३
अ — निष्कृतः ८,९९,८; २३८३
अ — निःस्तृत [निष्टृतः] ८,३३,९; २१८
पुरु — निष्षिधः १,१०,५; ६२
सेना — नी ७,२०,५; २१५५
धर्प — नीतिः ३,३४,३; १३०३
धाम — नीतिः ६,४७,७; २१०५
शर्ध — नीतिः ३,३४,३; १३०३
सु — नीतिः ६,४७.५; २१०५
शत — नीथः १,१००,१२; ९६८
सहस्र — नी [णी]थः ३,६०,७; ३३४३
सु — नीथः १०,४७,२; २८४३
स — नीळाः १,१६५,१; ३२५०
तुवि — नृम्णः ४,२२,६; १५६०
त्वेष — नृम्णः १०,१२०,१, २७६४
पुरु — नृम्णः ८,४५,२१; ४६३
प्र — ने[णे]ता ३,३०,१८; १२५५
अ — नेद्यः ८,३७,१-६; १७७६-१७८१
प्र — ने[णे]नीः ६,२३,३; १९२०
अति — नेनीयमानः ६,४७,१६; २११४
अश्व — पतिः ८,२१,३; ४११
आजि — पतिः ८.५४,६; ५३६
उर्वरा — पतिः ८,२१,३; ४११
गण — पतिः १०,११२,९; २७४३
गवाम् — पतिः १.१०१,४; ८२०
गो — पतिः १,१०१,४; ८२०
दम् — पतिः ८,६९,१६; २३१८
धियः— पती १.२३,३; ३२१४
नृ — पतिः १,१०२,८; ८३५
बृहत् — पतिः [बृहस्पतिः] २,३०,४; १२३०
मित्र — पतिः १.१७०,५; १०५५
रयि — पतिः ६,३१,१; २००६
रायस् — पतिः ८,६१,१४; ५६१
मद — पती ६,६९,३; ३३०८
वसु — पतिः १,९,९; ५६
वास्तोस् — पतिः ८,१७,१४; ४०७
विशस् — पतिः १०,१५२,२; २८६५
विश् — पतिः ३,४०,३; १३६६
शची — पतिः ४,३०,१७; १६२२
शवसस् — पतिः १,११,२; ७१
सत् — पतिः १,११,१; ७०
सोम — पतिः ३,३२,१; १२८२
स्वधा — पतिः ६,४४,१, २०३६
स्व — पतिः १०,४४,१; २५६८
स्वर् — पतिः ८,९८,११; २८६
प्र — पथिन्तमः १,१७३,७; १०६२
अ — पराजितः १,११,६; ७१
अ — परीतः ५,२९,१४; १६८०
वृष — पर्वा ३,३६,२; १३२४
अभिष्टि — पाः २,२०,२; ११०९
अनू — ऋत-पाः ३,५३,८; १४६०
ऋत — पाः ७,२०,६; २१५६
ऋतु — पाः ३,४७,३; १४१६
गो — पाः ३,३१,१४; १२७३
तनु [नू] — पाः ४,१६,२०; १४८६
परस् — पाः ८,६१,१५; ५६२
व्रत — पाः १०,३२,६; २५३५
शुचि — पा ७,९१,४, ३२३७
सोम — पाः १,१०,३; ६०
सु — पाणिः ३,३३,६; १२९९
सोम — पातमः ६,४२,२; १९९९
नृ — पाता १,१७४,१०; १०७८
अति — पान् [नाम् द्वि०] ७,३३,२; २१६३
अ — पारः ४,१७.८; १४९५
सु — पारः १,४.१०; १३
सुत — पावन् ६.२४.९; १९३६
सोम — पावन् १,५६.७; ८०३
स्मत् — पुरन्धिः ८,३४,६; ४३०
शाचि — पूजनः ८,१७,१२; ४०५
अ — पूरुषघ्नः १,१३३,६; १०३९
अ — पूर्यः ८,११,१; ४०९
निचान्त — पृणः [निचुम्पुणः] ८,९३,२२; २४५१
विश्वतस् — पृथुः ८,९८,४; २३६७
वृष — प्रभर्मा ५,३२,४; १७०८
अ — प्रतिः ५,३२,३, १७०७
तुवि — प्रतिः १,३०,९; ७०८
अ — प्रतिधृष्टशवाः १,८४,२; ९३८
अ — प्रतिष्कुतः १.७,६, ३३
पुरुध — प्रतीकः ३,४८,३, १४११
अ — प्रतीतः १,३३,२; ७३१
सु — प्रकेताः १,१७१,६; ३१६८

स – प्रथः ७,३१,६; २११८
अ – प्रभङ्गी ८,४५,३५; ४७७
तृपळ – प्रभर्मा १०,८९,५; ३२७६
चोद – प्रवृद्धः १,१७४,६; १०७४
पुरु – प्रशस्तः ६,३४,१; २०११
अ – प्रहन् ६,४४,४; २०३९
अ – प्रहित ८,९९,७; २३८१
अन्तरिक्ष – प्राः १,५१,१; ७४६
चर्षणि – प्राः १,१७७,१; १०९१
अ – प्रामि-सत्यः ८.६१,४; ५५१
सु – प्राव्यः २,१२,९; ११४५
हरि – प्रियः ३.४१,८; १३८०
अ – बधिरः ८,४५,१७; ४५९
पूर्ण – बन्धुरः १,८२,३; ९१७
द्वि – बर्हाः ६,१९,१; १८७१
स – बलः ८,९३,९; २४३८
तुवि – बाधः १,३२,६; ७२०
वि – बाधः १०,१३३,४; २७८१
उग्र – बाहुः ८,६१,१०; ५५७
वज्र – बाहुः १,३२,१५; ७२९
सु – बाहुः ८,१७,८; ४०१
अ – बिभीवान् १,६,७; ३२४७
चन्द्र – बुध्नः १,५२,३; ७६२
पृथु – बुध्नः १०,४७,३; २८४४
कृत – ब्रह्मा ६,२०,३; १८८१
सु – ब्रह्मा १०,४७,३; २८४४
प्र – भृताणः १०,५४,१; २६०९
वि – भक्ता ३.४९,४; १४२७
जन – भक्षः २,२१,३; ११२९
अभि – भङ्गः २,२१,२; ११२८
प्र – भङ्गः ८,४६,१९: १८३५
अ-प्र – भङ्गी ८,४५,३५; ४७७
प्र – भङ्गी ८,६१,१८; ५६५
वि – भञ्जनुः ४,१७,३; १५००
अ – भयङ्करः ८,१,२; ८८
अन्तरा – भरः ८,३२,११; १९१
सम् – भरः ४,१७,११; ४९८
प्र – भर्ता १,१७८,३; १०९८
जान् – भर्मा १,१०३,३; ८४१
वृष-प्र – भर्मा ५,३२,४; १७०८
चित्र – भानुः १,३,४: १

बृहत् – भानुः ८,८९,१; २३८५
गोत्र – भित् ६,१७,२; १८४२
पुर् [पूर्] – भित् ३,३४,१; १३०१
पुर् [पूर्] – भित्तमः ८,५३,१८; ५२५
अ – भीरुः ४,२९,२; १६०५
अ – भीर्वः ८,४६,६; १८२२
वि – भीषणः ५,३४,६; १७३२
वि – भुः ८,९६,११; २३५५
अद् – भुतः ८,१३,१९; ३३९
अभि – भूः २,२१,२; ११२८
पुरस् – भूः ३,३१,८; १२६७
विश्व [श्वा] – भूः १०,५०,१; २६०१
शम् – भूः (वौ) ६,६०,७; ३०६२
अभि – भूतरः ८,९७,१०; ९८५
अभि – भूतिः ६,१९,६; १८७६
वि – भूतिः ६,१७,४; १८४४
अभि – भूत्योजाः ३,३४,६; १३०६
स्व – भूत्योजाः १,५२,१२; ७७१
अभि – भूयसः ८,१७,१५; ४०८
प्र – भूवसुः १,५८,४; ८१४
वज्र – भृत् १,१००,१२; ९६८
सम् – भृतक्रतुः १,५२,८; ७६७
सम् – भृताश्वः ८,३४,१२; ४३६
पुरु – भोजाः ८,८८,२; ८९५
वि – भ्राजत् ८,९८,३; २३६६
अ – भ्रातृव्यः ८.२१,१३; ४११
सु – मखः १,१६५,११; ३२६०
तुवि [वी] – मघः १,२९,१; ६९२
शत [ता] – मघः ८,१,५; ९१
श्रुत [ता] – मघः ८,९३,१; २४३०
प्र – मतिः ४,१६,१८; १४८४
महे – मतिः ८,१३,११; ३३१
अ – मत्रिन् ६,२४,९; १९३६
प्र – मथिन् ६,३१,५; २०१०
स – मद् ७,२०,३; २१५३
सत्य – मद्वन् ८,२,३७; १५२
नृ – मनः [णः] १,५१,५; ७४९
विश्व – मनाः १०,५५,८; २६२२
वृष – मनाः १,६३,४; ८८८
सु – मनाः ३,३५,६; १११७

अनुत्त — मन्युः ७,३१,१२; २२३४
आपान्त — मन्युः १०,८९.५, ३२७६
प्राचा — मन्युः ८,६१,९; ५५६
शत — मन्युः१०,१०३,७; २६९७
सतीन — मन्युः १०,११२,८; २७४२
प्र — मरः १०,२७,२०; २५१०
अ — मर्त्यः १,१२९,१०, १००९
स — मर्यः ५,३३,१; १७१७
महा — महः ८,२४,१०; १७९९
वृद्ध — महाः ६,२०,३; १८८६
स — महः ८,७०,१४; २३३४
अभि — मातिषाहं १०,४७,३; २८४४
अभि — मातिहन्-हा ३,५१,३; १४३६
परस् — मात्रः ८,६८,६; २१९६
तुवि — मात्रः ८,८१,२; ६७१
अनु — माद्यः ६,३४,१; २०१२
सध — माद्यः ८,३,१; १५६
प्रति — मानम् १,१०२,८; ८३५
अनि — मानः ६,२२,७; १९१३
पुरु — मायः ३,५१,४; १४३७
अ — मित्रक्रतुः १,१०२,६; ८३३
अ — मितौजाः १,११,४; ७३
अ — मित्रखादः १०.१५२,१; २८१४
अ — मित्रहन्-हा ६,४५,१४; २०७३
अ — मिनः १०,११६,१४; २७५८
प्र — मिनानः १०,२७.१९; २५०९
विश्व — मिन्व ७,२८,१; २२०८
सम् — मिश्लः ८,६१,१८; ५६५
मन्यु — मीः १,१००,६; ९६२
सहस्र — मुष्कः ६,४६,३; २०९२
अ — मृक्तः ८,२,३१; १४६
तुवि — मृक्षः ६,१८,२; १८५७
प्र — मृणन् १०,१०३,६; २६९६
अ — मृतः ५,३१,१३; १७०४
अ — मृध्रः ८,८०,२; ६६२
वि — मृधः १,१५२,२; २८१५
सु — मृळीकः १,१३९,६; १०४१
सु — यज्ञः २,११,४; १११०
प्र — यज्युः ६,२१,१०; १९०५
उद् — यन्ता १,१७८,३; १०९८
प्र — यन्ता ८,९३,११; २४५०
प्र — य [या] वयन् ३,४८,३; १४२१
स्व — यशस्तरः ३,४५,५; १४०८
ऋण — याः ४,२३,७; १५७२
अव — याता १,१२९,११; १०१०
अ — वामन् ८,५२,५; ५१९
पूर्व — यावा ३,३४,२; १३०२
रथ — यावाना ८.३८,२; ३०९२
अ — यास्यः १,६२,७; ८७८
अवस् — युः ४,१६,११; १४७७
अश्व — युः १,५१,१४; ७५८
अस्म — युः १,१३१,७; १०२७
ऋत — युः ८.७०,१०; २३३४
गिर्वणस् — युः १०,१११,१; २७२५
गो [गव्] — युः १,५१,१४; ७५८
रथ — युः १,५१.१४; ७५८
वसु [सू] — युः १,५१,१४; ७५८
वाज — युः ७,३१,३; २२२५
विश्व [श्वा] — युः १,१२९.४; १००३
वीर — युः ८,९२,२८; २४२४
श्रवस् — युः १,५६,६; ८०२
स्व — युः ३,४५,५; १४०८
सु-अश्व — युः ८,४५,७; ४४९
हिरण्य — युः ७,३०,३; २२२५
अ — युजः ८,६२,२; ५६७
पुरस् — युधः १,१३२,६; १०३३
अ — युद्धसेनः १०,१३८.५; २७९६
अ — युध्यः १०,१०३,७; २६९७
सत्य — योनिः ४,१९,२; १५२३
पुरस् — योधः ७,३१,६; २२२८
सुते — रणः १०,१०४.७; २७०९
वृष — रथः ५,३६,५; १७४८
सुख — रथः ५,३०,१; १६८१
अ — रध्रः ६,१८,४; १८५९
वि — रप्शिन् ३,३६,४; १३१६
सम् — रराणः ८,३२,८; १८७
सप्त — रश्मिः २,१२,१२; ११३३
एक — राज् - द् ८.३७,३; १७७८
सम् — राज् — द् ४,१९,२; १५१३

स्व – राज – द् १,५१,१५; ७५९
ज्येष्ठ – राजः ८,१६,३; ३८४
अनर्श – रातिः ८,९९,४; २३७९
पिशङ्ग – रातिः ५,३१,२; १६९४
मंहिष्ठ – रातिः १,५२,३; ७६२
पूष – रातयः १,२३,८; ३१४८
सत्य – राधः १,१०१,८; ८२४
तुवि – राधाः ४,२२,२; १५४५
सु – राधाः ४,१७,८; १४९५
स्पार्ह – राधाः ४,१६,१६; १४८२
बृहत् – रिः १,५८,१; ८११
प्र – रिक्वा १,१००,१५; ९७१
अ – रिष्टः ५,३१,१; १६९३
अ – रीळ्हः ४,१८,१०; १५१८
पुरु – रुच् १०,१०४,४; २७०७
तनू – रुचा (चौ) ७,९३,५; ३०७५
वलं – रुजः ३,४५,२; १४०५
अ – रुतहनुः १०,१०५,२७; २७२०
अ – रुषः १,६,१; २४
विश्व – रूपः ३,३८,४; १३४८
सु – रूपकृत्नुः १,४,१; ४
बृहत् – रेणुः ६,१८,२; १८५७
स्व – रोचिः ३,३८,४; १३४८
अ – रेपसौ ५,५१,६; ३२३१
अधि – वक्ता १,१००,१९; ९७५
सु – वज्रः १,१००,१; ९७४
अन् – अ – वद्यः १,१२९,१; १०००
महा – वधः ५,३४,२; १७२८
सम् – वननः ८,१,२; ८८
प्र – वयाः २,१७,४; ११८४
स – वयसः १,१६५,१; ३२५०
नि – वरः ८,९३,१५; २४४४
युस्म – वर्चाः १,१७३,४; १०५९
समान – वर्चसा १,६,७; ३२४६
हिरण्य – वर्णः ५,६८,२, १७५६
चन्द्र – वर्णाः १,१६१,१२; ३२६१
अप – वर्ता (गोनाम्) ४,२०,८; १५४०
उक्थ – वर्धनः ८,१४,११; ३६४
स्तोम – वर्धनः ८,१४,११; ३६४
पुरु – वर्पाः १०,१२०,६; २७६९
उद् – व [वा] वृषाणः ४,२०,७; १५३९
अक्षित – वसुः ८,४९,६; ४९०
दिवा – वसुः ८,३४,१; ४२५
पुरु [रू] – वसुः १,८१,८; ९१३
रद [द्रा] – वसुः ७,३२,१८; ११५१
वाजिनी – वसुः ३,४२,५; १३८६
विदद् – वसुः ३,३४,१; १३०१
विभा – वसुः ८,९३,२५; २४५४
वृषन् – वसु ४,५०,१०; ३३२३
सु – वह्मा ६,२२,७; १९१३
अद्रोघ – वाक् ६,२२,२; १९०८
सनात् [नत्] – वाजः १०,४७,४; २८४५
सहस्र – वाजाः १०,१०४,७; २७०९
अ – वातः ६,१८,१; १८५६
अत्र – वातः १०,४७,५; २८४६
अ-शस्त – वारः १०,९९,५; २६८४
पुरु – वारः ४,२२,५; १५४८
भूरि – वारः १०,२७,१, २८४३
विश्व – वारः १,३०,१०; ७०८
अ – वार्यक्रतुः ८,९२,८; २४०४
हव्य – वाहनः १०,११९,१३; २८६२
ब्रह्म – वाहस्-हाः १,१०१,९; ८२५
यज्ञ – वाहस्-हाः ८,१२,२०; ३०७
स्तोम – वाहस्-हाः ६,२३,४; १९११
ब्रह्म – वाहस्तमः ६,४५,१९; २०७८
उक्थ – वाहस् ८,९६,११; २३५५
गिर् – वाहस् १,३०,५; ७०३
बल – विज्ञायः १०,१०३,५; २६९५
गो – विद् ८,५३,१; ५२५
वरिवस् – विद् १०,३८,४; २५०४
वसु – विद् ८,६१,५; ५५१
स्वर् – विद् १,५२,१; ७६०
अ – विदीधयुः ४,३१,७; १६३६
सु – विद्वान् ८,२४,२३; १८१२
सम् – विध्यानः १,१३०,४; १०१४
अ – विहर्यक्रतुः १,६३,२; ८८६
अभि – वीरः १०,१०३,५; २६९५
एक – वीरः १०,१०३,१; २६९१
पुरु – वीरः ६,२२,३; १९०९
प्र – वीरः १०,१०३,५; २६९५

मन्दत् – वीरः ८,६९,१; १३०४
महा – वीरः १,३२,६; ७२०
विप्र – वीरः १०,४७,४; २८४५
सध – वीरः ६,२६,७; १९५५
सु – वीरः ६,१७,१३; १८५३
सु – वृक्तिः १०,७४,५; २६३८
अ – वृकः ४,१६,१८; १४८४
अ – वृकतमः १,१७४,१०; १०७८
स्व – वृज् १०,३८,५; २५४५
अ – वृतः ८,३२,१८; १९७
महि – वृध् ७,३१,१०; २२३२
कवि – वृधः ८,६३,४; ५८१
तुव्य – वृधः [व्या] ८,४५,२, ४७१
सधा – वृधः ४,३१,१; १६३०
साकम् – वृधा (धौ) ७,९३,२; ३०७१
प्र – वृद्धः १,३३,३; ७३२
मद – वृद्धः १,५२,३; ७६१
यज्ञ – वृद्धः ६,२१,२; १८९८
सोम – वृद्धः ३,३९,७; १३६१
शृंग – वृषो नपात् ८,१७,१३; ४०६
न – वेदाः ४,२३,४; १५६९
त्रिश्व – वेदाः ६,४७,१२; २११०
सु – वेदाः ७,३३,२५; २२५९
प्र – वेपनी ५,३४,८; १७३४
गायत्र – वेपाः ८,१,१०; ९६
उरु – व्यचाः ३,५०,१; १४२९
विश्व – व्यचाः ३,४६,४; १४१२
समुद्र – व्यचाः १,११,१; ७०
धृत – व्रतः ६,१९,५; १८७५
महा – व्रातः ३.३०,३; ११४०
उरु – शंसः ४,१६,१८; १४८४
तुवि – शग्मः ६,४४,२; २०३७
अजात – शत्रुः ५,३४,१; १७२७
अ – शत्रुः १,१०२,८; ८३५
प्र – शर्धः ८,४,१; २२९
बाहु – शर्धी १०,१३०,३; २६९४
अप्रतिधृष्ट – शवाः १,८४,२; ९३८
अ – शस्तवारः १०,९९,५; २६८४
अ – शस्तिहा ८,८९,२; २३८५
सु – शस्तिः १०,१०४,१०; २७१९
पुरु – शाकः ३,३५,७; १५१८
सु – शिप्रः १,९,३; ५०
हिरि – शिप्रः ६,२९,६; १९६७
तुवि – शुष्मः २.२२.१; ११९३
सत्य – शुष्मः १,५१,१५; ७५९
गाथ – श्रवाः ८,२.३८; १५३
गूर्त – श्रवाः १,६१,५; ८६२
बृहत् – श्रवाः १,५४,३; ७८८
सु – श्रवस्तमः १,१३१,७; १०२७
सु – श्रवस्यः १,१७८,४; १०९९
वन्दन – श्रुत् १,५६,७; ८०३
वि – श्रुतः १,६२,१; ८७२
मन – श्रुतः ३,५२,४; १४४९
सु – श्रुतः ३,३६,१; १३२३
हवन – श्रुतः ८.१२,२३; ३१०
आ – श्रुत्कर्णः १,१०,९; ६६
प्र – सक्षिन् ८,३२,२७; २७६
कव [वा] – सखः ५,३४,३; १७२९
मरुत् – सखा ८,७६,२; ६२९
श्रावयत् – सखा ८,४६,१२; १८२८
अप्रामि – सत्यः ८,६१.४; ५५१
अभि – सत्वः १०,१०३,५; २६९५
सतीन – सत्वा १,१००,१; ९५७
सत्य – सत्व ६,३१,५; २०१०
गो – सनः [गोषणः ४.३२,२२; १६६६
सु – सनिता ८.४६,२०; १८३६
त्वेष – संदृक् ६,२२.९; १९१५
सु – संदृशः १,८२,३; ९२७
अ – समः ६,३६,४; २०३४
अ – समाति·ओजाः ६,२९.६; १९६७
चतुः – समुद्रः १०,४७,२; २८४३
सु – स·[ष]·त्यः ८,३३,५; २१४
अभिमाति – सहं [षाहं] १०,१०४.७; २७०९
ऋति – सहः [ऋतीषहः] ८,४५.३५; ४७७
चर्षणी – सहः ६.४६,६; २०९५
जनम् – सहः २,१,२३; ११२९
नृ – सहः [नृषाहः] ८,१६,१; ३८१
प्र – सहः [प्रसाहः] ८,१७ ४; १८४४
प्रा – सहः १,१२९,४; १००३
विश्व – सहः [विश्वासाहः] ३,४७,५; १४१८
तुरा – साह् [तुराषाट्] ३,४८,४; १४२१

पुरा - साह् [पुराषाट्] १०,७४,६; २६३९
पृतना - साह् [पृतनाषाट्] १,१७५,२; १०८०
प्र-आशु - साह् [षाट्] ४,२५,६; २५९३
वृथा - साह् [षाट्] १,६३,४; ८८८
सत्रा - साह् [षाट्] २,२१,२,३; १२१८-१९
आभि - सा [षा] चः ३,५१,२; १४३५
धाम - साचः ३,५१,२; १४३५
अश्व - सातमः १,१७५,५; १०८३
तोक - साता ६,१८,६; १८६१
नृ - साता ७,२७,१; २२०३
शूर - साता ७,९३,५; ३०७१
ऊर्ध्व - सानः १०,९९,७; २६८६
ऋज्र - सानः ४,२१,५; १५४८
पृदाकु - सानुः ८,१७,१५; ४०८
मन्द - सानः १,१०,११; ६८
सु - साः [षाः] ८,७८,४; ६५४
इन्द्र - सारथिः ४,४६,२; ३२२१
पुरु -निस्-सि [षि] ध् १,१०,५; ६२
अ - सोढ [अषाळ्हः] २,२१,२; १२१८
सु - सु [षु] म्नः १०,१०४,५; २७०७
सु-आभिष्टि - सुम्नः ६,२०,८; १८९१
अ - सुरः १,५५,३; ७८८
शवसः - सूनुः १,६२,९; ८८०
सहसः - सूनुः ६,१८,११; १८९६
सम् - सृष्टजित् १०,१०३,१; २६९४
अयुद्ध - सेनः १०,१३८,५; २७९६
सर्व - सेनः ५,३०,३; १६८४
सु - स्तु [ष्टुः] १०,१०४,५; २७०७
अरि - स्तु [ष्टु] तः ८,१,२२; १०८
पुरु - स्तु [ष्टु] तः १,११,४; ७३
सु - स्तु [ष्टु] तः १,१२९,११; १०१०
सध - स्तुती ८,३८,४; ३०९४
सु - स्तु [ष्टु]तिः ८,९६,१२; २३५६
अ - निस्-स्तृ [ष्टृ] तः ८,३३,९; २१८
अ - स्तृतः १,४,४; ७
पर्वते - स्था [ष्ठाः] ६,२२ २; १९०८
रथे - स्थाः [ष्ठाः] १,१७३,४; १०५९
वन्दने - स्थाः [ष्ठाः] १,१७३,९; १०६४
वन्धुरे - स्थाः [ष्ठाः] ३,४३,१; १३९१
हरि - स्थाः [ष्ठाः] ३,४९,१; १४२५
पुरस् - स्थाता ८,४६,१३; १८१९
ऋभु - स्थि [ष्ठि] रः ८,७७,८; ६४७
अनु - स्पष्टः १०,१६०,४; २८२७
धन - स्पृत् ३, ४६,२; १४०६
दिवि - स्पृशा १,२३,१; ३२१३
सम् - स्रष्टा १०,१०३,३; २६९४
यत - स्रुचा [चौ] १,१०८,४; ३०११
अर्हरि - स्व [ष्व] निः [णिः] १,५६,४; ८०८
तुवि - स्व [ष्व] निः [णिः] २,१७,६; ११८६
अ-प्र - हन् [हा] ६,४४,४; २०३९
अरुश - हन् [हा] १०,११६,४; २७५८
अशस्ति - हन् [हा] ८,८९,२; २३८५
असुर - हन् [हा] ६,२२,४; १९१०
अहि - हन् [हा] २,१९,३; १२०१
दस्यु - हन् [हा] १,१००,१२; ९६८
पुरः - हन् [हा] ६,३२,३; २०१३
वृत्र - हन् [हा] १,१६,८; ८५
सत्रा - हन् [हा] ४,१७,८; १४९५
सप्त - हन् [हा] १०,४९,८; २५९७
अहृत - हनुः १०,१०५,७; २७२०
अव - हन्ता ४,२५,६; १५९३
वि - हन्ता १,१७३,५; १०६०
वृत्र - हन्ता ४,२१,१०; १५५३
वृत्र - हन्तमः ५,३५,६; १७४१
अर - हरिस्वनिः १,५६,४; ८०८
सु - हवः ३,४९,३; १४२६
वि - हव्यः २,१८,७; ११९६
रात - हव्या६,६९,६; ३३११
इषु - हस्तः १०,१०३,२; २६९३
वज्र - हस्तः १,१७३,१०; १०६५
भद्र - हस्ता १,१०९,४; ३०२४
महा - हस्ती ८,८१,१; ८६०
सु - हार्दः ८,२,५; ११०
प्र - ह्वावान् ४,२०,८; १५४०
अ -प्र - हितः ८,९९,७; २३८२
पुरस् - हितः १,५६,३; ७९९
पुरु - हूतः १,३०,१०; ७०८
अ - हृणानः १०,११६,७; २७११
प्र - हेता ८,९७ ७; २३८१
अवयात - हेळाः १,१७१,६, ३१६८
अ - हेळमानः ६,४१,१; १९९३
अ - ह्रयः ८,७०,१३; २३३३

दैवत-संहिता ।

(३)

सोमदेवता ।

सम्पादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)

संवत १९९९; शके १८६४; सन् १९४२

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B. A.
स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध (जि० सातारा)

सोमदेवता का परिचय ।

अमरकोश में सोम ।

सोम के नाम अमरकोश में निम्नलिखित दिये हैं-

हिमांशुः चन्द्रमाः चन्द्रः इन्दुः कुमुदबान्धवः १३
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुः ओषधीशः निशापतिः ।
अब्जः जैवातृकः सोमः ग्लौः मृगांकः कलानिधिः १४
द्विजराजः शशधरः नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

(अमरकोश १।३)

ये बीस नाम सोम के अर्थात् ' चांद ' के दिये हैं। तथा इसी कोश में ' वत्सादिनी, छिन्नरुहा, गुडूची, तंत्रिका, अमृता, जीवंतिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी ' (अमर० २।४।८३) ये नौ नाम सोमवल्ली के दिये हैं। पर ये गुडूची नामक वल्ली जो वृक्षोंपर उगती और बढती है, उस वल्ली के हैं। इसको मराठी में ' गुळवेल ' और हिंदी में ' गुडुच ' बोलते हैं।

इन नामों में ' जीवंतिका, अमृता ' ये नाम इसमें जीवनीय गुण हैं, इस बात के सूचक हैं। यह गुण सोम में है, इसलिये सोम के और इन के अर्थ समान हैं। सोम के ऊपर दिये नामोंमें ' जैवातृकः ' में दीर्घ जीवन का भाव है और ' सुधांशु ' (सुधा-अंशुः) अमृत किरणवाला इसमें अमृत का भाव है। इस तरह गुडुच के ये नाम और सोम के- चांद के ये नाम सदृशार्थक हैं।

इन नामों में अमरकोश में दिये नाम चन्द्रमा के (चांद के) हैं, सोम औषधि के नहीं, तथा जो सोमवल्ली के नाम अमरकोश में हैं, वे भी सोम औषधि के नहीं। अर्थात् अमरकोश के समय सोम औषधि का कोई महत्त्व नहीं रहा था। अथवा वह सोमवल्ली मिलती नहीं होगी। सोम का महत्त्व चरक सुश्रुत के समय था। क्योंकि चरक सुश्रुत में सोम औषधिका अच्छा वर्णन है, पर उस वल्ली के लिये अमरकोश में स्थान भी नहीं है।

जो चन्द्रमा के नाम (चांद के नाम) अमरकोश में हैं, वे साक्षात् अथवा भावार्थ से वेद में आये सोमवल्ली के नामों के समान ही अर्थवाले हैं। यह एक बडा भारी विचार करनेयोग्य विषय है, जिसे हम यहां संक्षेप से देते हैं। अमरकोश में दिये चांद के नाम वेद में सोमवल्ली के लिये प्रयुक्त हुए नाम ही हैं-

१. सोम- यह नाम वेद में सोम औषधि के लिये है जैसा-

' सोमो वीरुधामधिपतिः । '

(अथर्व. ५।२४।७)

' अपाम सोमं० ' । (ऋ. ८।४८।३)

२. इन्दुः- यह नाम वेद में सोमवल्लीका है, जैसा-

' इन्द्राय इन्दो परिस्रव । '

(ऋ० ९।११२-११३)

' इन्दुः पुनानः । ' (ऋ० ९।१०९।३)

' सोम ' और ' इन्दु ' ये दो नाम अनेक वार सोमवर्णन में वेद में प्रयुक्त हुए हैं। वैसे अन्य नाम नहीं, पर अन्य नाम भी अर्थ के द्वारा वेद में हैं-

३. द्विजराजः- ' सोमराजानो ब्राह्मणाः ।

(तै० ब्रा० १।७।४।२; १।७।६।७)

' सोमो अस्माकं ब्राह्मणानां राजा । '

(वा. यजु. ९।१०; १०।१८; श. ब्रा. ५।४।२।३)

ब्राह्मणों का (द्विजों का) राजा सोम है। इस तरह द्विजराज शब्द यजुर्वेद वाज० संहिता के तथा ब्राह्मणों के वर्णन से सिद्ध होता है।

४. अंशुः- उक्त शब्दों में ' हिमांशुः, सुधांशुः, शुभ्रांशुः ' में ' अंशुः ' शब्द है, वेद में यह ' अंशु ' पद सोम औषधि का वाचक है। उदाहरण- 'अंशुं दुहन्ति' (ऋ० ५।७२।६) ' अंशुं दुहन्ति उक्षणं गिरिष्ठा'

(ऋ० ९।९५।४)

५. चन्द्रः- ऋग्वेद में 'पवमानस्य जंघ्नतो हरेः चन्द्रा असृक्षत' (ऋ० ९।६६।२५) में 'चन्द्र' पद सोमवाचक है। (पवमानस्य हरेः) छानने जानेवाले हरे रंग के सोम के (चन्द्राः) चमकनेवाले प्रवाह प्रवाहित होते हैं। यह सोम का वर्णन है। सोम की धाराएं चमकती हैं, यह वर्णन सोम का है और वह 'चन्द्र' शब्द से हुआ है।

६. ओषधीशः- ऋग्वेद में ९।११४।२ में इस अर्थ का वर्णन है। 'सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पतिः। यहां के 'वीरुधांपतिः' और 'ओषधीश' का अर्थ एक ही है। 'वीरुधां अधिपतिः' (अथर्व० ५।२४।७)

७. अब्जः- ऋ. ९·६१।७ में सोमको 'सिंधुमातर' कहा है। सिन्धु के 'जल से उत्पन्न' यह इसका अर्थ है और वही 'अब्ज' पद का अर्थ है। ऋ० ९।६२।४ में 'अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः' कहा है। पर्वत पर जलस्थान में बलवर्धक सोम रहता है, ऐसा वर्णन है। तथा ऋ० ९।८५।१० में 'अप्सु द्रप्सं वावृधानं' अर्थात् 'जलोंमें बढनेवाला सोम है' ऐसा कहा है। इस तरह का वर्णन 'अब्ज' पद का भाव ही बताता है।

८ जैवातृकः- इस पद का अर्थ 'जीवनवर्धक' है। जो दीर्घ जीवन बनाता है। यह भाव 'जीवसे' शब्द से सोम के वर्णन में वेद में है- (ऋ. ९।६६।३० में) 'यस्य ते द्युम्नवत् पयः पवमान आभृतं दिवः। तेन नो मृड जीवसे॥' सोमका तेजस्वी रस स्वर्ग से (आकाश से, पहाड की चोटी से) लाया है, उससे (नः जीवसे) हमारा दीर्घ जीवन कर और हमें (मृड) सुखी कर।' यहां सोम का जीवनीय गुण बताया है। ऋ. ९।११०।११ में 'इन्दुः वयोधाः' सोमरस दीर्घ आयु देनेवाला है, ऐसा कहा है। इस वर्णन में जीवनीय भाव स्पष्ट है।

९. कलानिधिः- यह भाव 'इन्दु' का (ऋ. ९।११२) सूक्त के चारों मंत्रों में है। यह बात इसी भूमिका के अन्त में बतायी है। वहां पाठक अवश्य देखें।

१०. सुधांशुः- 'सुधा' का अर्थ 'अमृत' है। यह अमृत शब्द वेद में सोम के लिये आता है। 'दिवः पीयूषं सोमं' (ऋ. ९।५१।२, ९।११०।८) यहां पीयूष शब्द सोमके लिये आया है, जो अमृत और सुधा का वाचक है। ऋ. ९।९७।३२ में 'शुक्रो भासि अमृतस्य धाम' मंत्र में सोम को 'अमृत का धाम' कहा है। 'अमृत' सुधावाचक ही पद है, वैसा ही 'पीयूष' भी है।

११. शुभ्रांशुः- ऋ.९।६६।२६में 'पवमानः...शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः' कहा है। ऋ. ९।६३।२६ में 'शुभ्राः असृग्रमिन्दवः' तथा ऋ. ९।६२।५ में 'शुभ्रं अन्धः' ये सोम के वर्णन हैं। इनमें यह सोम 'शुभ्र' है, ऐसा ही कहा है। वही भाव 'शुभ्रांशु' पद का है।

१२. मृगांकः- सोम को मृग की उपमा ऋग्वेद ९।३२।४ में मृगो न तक्तो' और ९।९२।६ में 'मृगो न मद्दिषो वनेषु।' इन मंत्रों में दी है। मृग के साथ साम्य यहां बताया है। वही साम्य चन्द्र पर के मृगचिह्न में है।

इस तरह अमरकोश के लौकिक संस्कृतमें आये 'चांद' वाचक बीस नामों में से तीन नाम तो स्पष्ट ही वेद में सोमऔषधिवाचक हैं और नौ नाम अर्थ की अथवा उपमा की दृष्टि से आये हैं, यह बात ऊपर बतायी है।

शेष नामों में 'हिम, कुमुदबांधव, विधु, निशापति, ग्लौ, शशधर, नक्षत्रेश, क्षपाकर' इन आठ नामों का

सम्बन्ध वेद में देखने में हमें अभीतक सफलता नहीं हुई। तथापि इन में से चारपांच नामों का सम्बन्ध वेद में दीख सकता है, ऐसी हमें आशा है। अब अन्यान्य कोशों में चान्द्र के अन्यान्य जो नाम आते हैं, उनका विचार करते हैं-

शशी, हिमद्युतिः (शब्दार्णवः) ये नाम अधिक हैं, पर इन का भाव पूर्व नामों में है। तथा संस्कृत भाषा की रचना ऐसी है कि, और भी नाम बनाये जा सकते हैं। अतः इस तरह बनाये जानेवाले नामों का विचार करने की यहां आवश्यकता नहीं है।

निघण्टु में सोम।

निघण्टु में 'पद' नामों में (४-२ में) सोमो अक्षाः, (४-३ में) सोमानम्, (५-५ में) सोमः, ये तीन नाम दिए हैं। 'पद' नामों में ये नाम रखे गए हैं, इसलिए निघण्टुकार इन का अर्थ कुछ भी नहीं देते हैं। अतः निघण्टु में 'सोम' का अर्थ निश्चित नहीं है। निघण्टु के इन पदों के अर्थ निरुक्त में दिए हैं, अतः हम अब इनका निरुक्त देखते हैं। निरुक्तकार इस तरह कहते हैं-

निरुक्तमें सोम।

'आ तु षिञ्च हरिमीं द्रोरुपस्थे वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः॥ (ऋ० १०।१०१।१०)
'आसिञ्च हरिं द्रोरुपस्थे द्रुममयस्य। हरिः सोमो हरितवर्णः। अयमपीतरो हरिरेतस्मादेव। वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः, वाशीभिरश्ममयीभिरिति वा, वाग्भिरिति वा।'
(निरु० नै० ४।३।१९)

'(ईं हरिं) इस सोम को (द्रोः उपस्थे आसिञ्च) लकडी के बर्तन में सिञ्चित करो, (अश्मन्मयीभिः वाशीभिः तक्षत) और पाषाण से निर्मित खरल से उसको कूटो।'

यहां हरि पद सोम औषधि का वाचक है, क्योंकि यह औषधि हरे रंग की होती है। इस तरह निरुक्तकार सोम का नाम 'हरि' है, ऐसा कहकर, वह औषधि हरे रंगकी है, ऐसा भी कहते हैं। वह सोम वनस्पति लकडी के फट्टेपर रखकर पत्थरों से कूटी जाती है, ऐसा भी यहां कहा है। और भी देखिए-

'न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं नाद्रयः सोमो अक्षाः।' (ऋ० १०।८९।६)
अश्नोतेरित्येवमेके। 'अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः। सोमो दुग्धाभिरक्षाः।' (ऋ० ९।१०७।९)
क्षियतिनिगमः पूर्वः, क्षरतिनिगम उत्तर- इत्येके। अनूपे गोमान् गोभिर्यदा क्षियत्यथ सोमो दुग्धाभ्यः क्षरति। सर्वे क्षियतिनिगमा इति शाकपूणिः॥ (निरु० ५।१।३)

'जिसके पास द्युलोक, पृथ्वी, मरुदेश, अन्तरिक्ष अथवा पर्वत नहीं पहुंच सकते, पर सोम ही (अक्षाः) पहुंचता है। यहां 'अक्षाः' रूप 'अश् (अश्नोति) का है, ऐसा कई कहते हैं। (अनूपे) उत्तम जलवाले देश में (गोमान् गोभिः अक्षाः) गौओंका स्वामी गौओंके साथ जाकर निवास करता है और (सोमः) सोमरस (दुग्धाभिः अक्षाः) दुही हुई गौओं के दूध के साथ मिला दिया जाता है। यहां पहिली 'अक्षाः' क्रिया 'क्षि (निवासे)' इस धातु से बनी है और दूसरी 'क्षर (संचलने)' धातु से बनी है। जलपूर्ण देश में गौरक्षक जब रहता है, तब सोम गोदुग्धके साथ मिलाया जाता है। शाकपूणि ऋषिके मत से 'अक्षाः' क्रियाका सर्वत्र अर्थ निवास करना ही है।

यहां गोदुग्ध के साथ साथ सोम मिलाया जाता है, यह बात कही है। और देखिए-

'सोमानं' का अर्थ 'सोतारं' अर्थात् 'सोमका रस निकालनेवाला' बताया है। (निरुक्त० नै० ६।३।१०)
आगे निरुक्त में

'ओषधिः सोमः सुनोतेः यदेनमभिषुण्वंति।'
(निरु० ११।२।२)

'सोम औषधि है, जिस का रस निकाला जाता है। निरुक्त में सोम का इतना ही आशय दिया है। सोम का अर्थ चन्द्र आदि जो निरुक्त ने बताया है, वह अन्यत्र भी है। निघण्टु में जो सोमवाचक तीन पद दिए हैं, उन के अर्थ जो निरुक्तकारने दिये हैं, वे ये हैं। अब हम ब्राह्मण-ग्रंथों में दिए सोम के अर्थ देखते हैं-

ब्राह्मण-ग्रन्थों में सोम।

स्वा वै म एषेति तस्मात्सोमो नाम।
(श० ब्रा० ३।९।४।२२)

ज्योतिः सोमः ।
(श. ब्रा. ५।१।२।१०; ५।१।५।२८)
श्रीर्वै सोमः । (श. ब्रा. ४।१।३।९)
सोमः राज्यं । (श. ब्रा. ११।४।३।३)
राजा वै सोमः । (श. ब्रा. १४।१।३।१२)
सोमो राजा राजपतिः । (तै. ब्रा. २।५।७।३)
सोमो राजा...चंद्रमाः ॥ (कौ. ब्रा. ४।४; ७।१०; श. ब्रा. १०।४।२।१)
वृत्रो वै सोम आसीत् । (श. ब्रा. ३।४।३।१३; ३।९।४।२, ४।२।५।१५)
पितृलोकः सोमः । (कौ. ब्रा. १६।५)
पितृदेवत्यो वै सोमः । (श. ब्रा. २।४।२।१२; ३।२।३।१७; ४।४।२।२)
संवत्सरो वै सोमः पितृमान् । (तै. ब्रा. १।६।८।२; १।६।२।५)
संवत्सरो वै सोमो राजा । (कौ. ब्रा. ७।१०)
ऋतवो वै सोमस्य राज्ञो राजभ्रातरः ।
(ऐ. ब्रा. १।१३)
सोमो हि प्रजापतिः । (श. ब्रा. ५।१।५।२६; ५।१।३।७)
श्येनोऽसीति सोमं...आह । (गो. पू. ५।१२)
सोमो राजा...अप्सरसो विशः ।
(श. ब्रा. १३।४।३।८)
विष्णुः सोमः । (श. ब्रा. ३।३।४।२१; ३।६।३।१९)
वायुः...सोमः । (श. ब्रा. ७।३।१।१)
सम्राडसीति सोमं...आह । (गो. पू. ५।१३)
सोमः सर्वा देवताः । (श. ब्रा. १।६।३।२१; ऐ. ब्रा. २।३)
सोमो वा इन्दुः । (श. ब्रा. २।२।३।२३; ७।५।२।११)
सोमो रात्रिः । (श. ब्रा. ३।४।४।१५)
सोमो वै पर्णः । (श. ब्रा. ६।५।१।१)
सोमो वै पलाशः । (कौ. ब्रा. २।२; श. ब्रा. ६।६।३।७)
पशुः वै...सोमः । (श. ब्रा. ५।१।३।७; १२।७।२।२)
सोमो वै दधि । (कौ. ब्रा. ८।९)
स्वरोऽसीति सोमं...आह । (गो. पू. ५।१४)

यजमानः...सोमः । (तै. ब्रा. १।३।३।५)
वर्चः सोमः । (श. ब्रा. ५।२।५।१०-११)
सोमो वै भ्राट् । (श. ब्रा. ३।२।४।९)
क्षत्रं सोमः । (ऐ. ब्रा. २।३८; कौ. ब्रा. ७।१०; ९।५; १०।५; १२।८; श. ब्रा. ३।४।१।१०; ३।९।३।३।७; ५।३।५।८)
यशो वै सोमः । (श. ब्रा. ४।२।४।९; ऐ. ब्रा. १।१३; तै. ब्रा. २।२।८।८)
यशो वै सोमो राजा अन्नाद्यम् । (कौ. ९।६)
प्रजापतेर्वा एते अन्धसी यत्सोमश्च सुरा च ।
(श. ब्रा. ५।१।२।१०)
अन्नं सोमः । कौ. ब्रा. ९।६; श. ब्रा. ३।३।४।२८; तां. ब्रा. ६।६।१; श. ब्रा. ३।९।१।८ ७।२।२।११; तै. ब्रा. १।३।३।२)
हविर्वै देवानां सोमः । (श. ब्रा. ३।५।३।२)
हरिः...सोमः । (श. ब्रा. १२।८।२।१२)
प्राणः सोमः । (श. ब्रा. ७।३।१।२; ४५. तां. ब्रा. ९।९।१-५; कौ. ब्रा. ९।६)
रेतः सोमः । (कौ. ब्रा. १३।७; तै. ब्रा. २।७।४।१; श. ब्रा. ३।३।२।१; ३।३।४।२८; ३।४।३।११)
सोमस्य...प्रिया तनूः...सुवर्णं ।
(तै. ब्रा. १।४।७।४-५)
शत्रुः सोमः । (तां. ब्रा. ६।६।९)
सोम इव गंधेन (भूयासं)। (मं. ब्रा. २।४।१४)
रसः सोमः । (श. ब्रा. ७।३।१।३)
सर्वं हि सोमः । (श. ब्रा. ५।५।४।११)
गिरिषु हि सोमः । (श. ब्रा. ३।३।४।७)
सोमो वै राजौषधीनाम् । (कौ. ब्रा. ४।१२; तै. ब्रा ३।९।१७।१)
सोमराजानो ब्राह्मणाः । (तै. १।७।४।२; १।७।६।७)
सोमो वै ब्राह्मणः । (तां. ब्रा. २३।१६।५)
प्रतीची दिक् । सोमो देवता । (तै. ब्रा. ३।११।५।२)
उत्तरा ह वै सोमो राजा । (ऐ. ब्रा. १।८)
सोमः पयः । (श. ब्रा. १२।७।३।१३)
आपः सोमः सुतः । (श. ब्रा. ७।१।१।२२)

आपो हि...सोमस्य लोकः (श. ब्रा. ४।४।५।२१)
वैराजः सोमः। (कौ. ब्रा. ९।६; श. ब्रा. ३।३।२।१७; ३।९।४।१९)
पुमान् वै सोमः स्त्री सुरा। (तै. ब्रा. १।३।३।४)
सौमायनो बुध। (तां. ब्रा. २४।१८।६)
प्रजापति...सोमाय राज्ञे...दुहितरं प्रायच्छत् सूर्यां सावित्रीम्। (ऐ. ब्रा. ४७)
दीक्षा सोमस्य राज्ञः पत्नी। (गो. उ. २।९)

पूर्वलिखित ब्राह्मणग्रंथों के वचनों से सोम के ये अर्थ दीखते हैं- ज्योति, श्री, राज्य, राजा, राजपति, चन्द्रमा, वृत्र, पितृलोक, पितृदेवता, संवत्सर, प्रजापति, श्येन, विष्णु, वायु, सम्राट्, सर्पदेवता, इन्दु, रात्री, पर्ण (पत्ता), पलाश, पशु, दही, स्वर, यजमान, वर्च (तेज), भ्राट् (तेज, प्रकाश), क्षत्र, यश, अन्न, हवि, प्राण, रेत, सुवर्ण, शुक्र, रस, सर्व (सब कुछ), ब्राह्मण, दूध, जल ये इतने सोम के अर्थ हैं।

इसके अतिरिक्त सोमके विषय में निम्नलिखित बातें उक्त वचनों में कहीं हैं- (१) ऋतु सोम के भाई हैं, (२) सोम राजा है और उसकी प्रजाएं अप्सराएं हैं, (३) सोम ओषधियोंका राजा है, (४) ब्राह्मणों का राजा सोम है, (५) सोम ब्राह्मण ही है, (६) आप् (जल) सोम का स्थान है, (७) सोम और सुरा भाईबहिन हैं, (८) बुध सोम का पुत्र है, (९) प्रजापतिने सोम-राजा को अपनी पुत्री सूर्यासावित्री दी थी, (१०) सोम की पत्नी दीक्षा है। (११) उत्तर दिशा का सोम राजा है, (१२) पश्चिम दिशा सोम की दिशा है। (१३) सोम का राज्य वैराज्य है। इत्यादि बातें यहां कहीं हैं। इन का संबंध और आशय ब्राह्मणग्रंथों को देखकर और विचार कर ढूंढकर निकालना चाहिए।

सोम का अर्थ 'स + उमा' (उमया ब्रह्मविद्यया सहितः सोमः) विद्या, ब्रह्मविद्या से जो युक्त, इन विद्याओं में जो प्रवीण है, वह सोम कहलाता है। यह भी एक सोम है। इस सोम का ज्ञानरस विद्यार्थी या ब्रह्मचारी प्राप्त करते और वे ही सेवन करते हैं।

सोम परमात्मा है, उससे अमृतरस प्राप्त होता है, जो जीव-न्मुक्त अथवा मुक्त होते हैं, वे इस सोमरसका सेवन करते हैं।

इस तरह अन्यान्य अर्थ विचार करनेवाले पाठक स्वयं जान सकते हैं, इन अर्थों का बतानेवाला मंत्रभाग सोम के इन मंत्रों में पाठक देख सकते हैं।

उक्त सब अर्थों में मुख्य अर्थ और गौण अर्थ इस तरह भेद करना चाहिए। सोमरस अन्न है, वह वीर्यवर्धक, रेत बढानेवाला, बल, ओज, तेज की वृद्धि करनेवाला है, इस तरह इनकी संगति लगायी जा सकती है। दूध और दहीके साथ मिलाकर यह सोम पिया जा सकता है, इत्यादि बातें इस संगति से मालूम होंगीं।

सोम के उत्पत्तिस्थान।

पर्वतों पर के जलयुक्त स्थलों में शायद सोम की पैदा-इश होती होगी। इसी कारण से उसे 'पर्वतावृध्, गिरिष्ठा' कहते थे। मौजवत्, शर्यणावत, आर्जी-कीया, सुषोमा तथा सिन्धु स्थानों में सोम की उत्पत्ति होती थी।

साधारण रूप से यों उल्लेख पाया जाता है कि, उपरि-निर्दिष्ट स्थलोंमें सोम का जन्म हुआ करता है, परन्तु यद्यपि सभी स्थानों के बारे में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है, तो भी निस्सन्देह बहुतसी जगहें पर्वतों एवं नदियों से निगडित हैं। हिमालय का ही एक विभाग 'मूजवान्' नाम से विश्रुत है और तैत्तिरीय आरण्यक में दी हुई 'शर्यणावत' की चहारदीवारी से ज्ञात होता है कि, हिमालय की तराई में तथा कुरुक्षेत्र के ऊपरी विभाग में शर्यणावत् नामक एक झील विद्यमान था। 'आर्जीकीया' तथा 'सुषोमा' तो स्पष्टतया नदियाँ हैं। ये भी पंजाब के पार्वतीय प्रान्त में ही थीं। कह नहीं सकते कि, वर्तमानकाल में ये नदियाँ किस नाम से विख्यात हैं।

द्युलोक तथा सोम।

द्युलोक से पर्जन्यद्वारा सोम भूलोकपर आता है, ऐसा वर्णन बहुधा दीख पडता है और इस का अर्थ अनेक स्थलोंपर यों किया जाता है कि, ऊँची जगह लटका कर रखी हुई छलनी से सोम धाराप्रवाही रूप में नीचे आ गिरता है। सोम के विषय में कहा है कि, प्रारंभ में वह द्युलोक में था और पश्चात् वह भूमिपर उतर आया (९-

६१-१०) दिवः पुत्र- दिवः शिशुः नाम उसे दिया गया है । एक जगह उसे पर्जन्यपुत्र कहा है (९-८२-३)। सच पूछा जाय, तो सोम का द्युलोक से संबंध उस का पर्वत की चोटीपर होना सिद्ध करता है। पर्वत की चोटी आकाश में होती है, वहां से यह लाया जाता है।

सोम का स्थान ।

सोम पर्वतपर होता है, यह बात निम्नलिखित मंत्र में कही है-

परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षाः ।

(ऋ० ९।१८।१)

' (गिरि-स्थाः) पर्वतपर रहनेवाले सोमका रस छाननेके के लिए (पवित्रे) छाननीपर रखा है । '

यहां ' गिरि-स्थाः ' यह सोम का विशेषण बताता है कि सोम पर्वतपर रहता है। हिमवान् के मौंजवान् पर्वतपर सोमवल्ली उगती है, इसलिए ' मौंजवान् सोम ' कहते हैं ।

एतं उ त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिंधुमातरं ॥

(ऋ० ९।६१।७)

'उस (सिन्धु-मातरं) सिंधुनदी के पुत्र सोम को दश अंगुलियाँ पीस कर रस निकालती हैं ।' इस मन्त्र से पता लगता है कि, सिंधु के पास सोमवल्ली का स्थान है ।

असावि अंशुः मदाय अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः।

(ऋ. ९।६२।४)

' पर्वतपर रहनेवाला सोम (दक्षः) बलवर्धक है, वह (अप्सु) जलस्थान में भी होता है, यह (मदाय) हर्ष बढाता है । इस (अंशुः) सोम का (असावि) रस निकालते हैं। ' तथा--

परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं । (ऋ. ९।७१।४)

'यहां सोम को (पर्वत-वृधं) पर्वत पर उगनेवाला और (द्यु-क्षं) आकाश में रहनेवाला कहा है ।' अर्थात् ऊंची से ऊंची पहाड की चोटी पर जो सोम उगता है, वह श्रेष्ठ है । हिमालय की १६००० फीट से ऊंचे स्थान पर जो सोम मिलता है, वह उत्तम है, १२००० फीट से ऊंचे स्थान पर जो मिलता है, वह मध्यम और इससे कम ऊंचाई पर मिलनेवाला कनिष्ठ समझा जाता है । आज भी यह सोम मिलता है, इसकी इसी तरह उत्कृष्टता समझी जाती है ।

राजा सिन्धूनां अवसिष्ट वासः । (ऋ. ९।८९।२)

' सिन्धुओं का वस्त्र (राजा) सोम राजाने परिधान किया है । ' यहां संपूर्ण सिन्धुसरितों के मध्य प्रदेश में अर्थात् पहाडों पर सोम होता है, ऐसा आशय कदाचित् होना संभव है ।

शर्यणावति सोमं इन्द्रः पिबतु वृत्रहा ॥ १ ॥
आर्जीकात् सोम मीढ्वः ॥ २ ॥

(ऋ. ९।११३।१-२)

शर्यणावती नदी के पास, तथा ऋजीक के स्थान के पास ' सोम ' होता है । यहां विचार करना चाहिये कि, क्या सोम के स्थान का निर्णय करने के लिये ये दो पद सहायक हो सकते हैं ?

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः । (अथर्व. ३।२७।४)

' उत्तरदिशा का अधिपति सोम है ' इससे सोम उत्तर दिशा में है, ऐसा प्रतीत होता है । उत्तरदिशा में हिमालय में सोम है ।

पर्वत पर सोम ।

यह सोम पहाड पर होता है, इस विषयमें कहा है—

परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमः ।

(ऋ. ९।१८।१)

असावि अंशुर्मदाय अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।

(ऋ. ९।६२।४)

वेना दुहन्ति उक्षणं गिरिष्ठां । अप्सु द्रप्सं ॥

(ऋ. ९।८५।१०)

अंशुं दुहंति उक्षणं गिरिष्ठां । (ऋ. ९।९५।४)

यह सोमवल्ली (गिरि-स्थः) पहाडों पर होती है, उसको पर्वत से लाकर उसका रस निकालते हैं, तथा—

पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे । (ऋ. ९।८२।३)

'इस (महिषस्य पर्णिनः) पत्तोंवाले बलशाली सोम का पिता पर्जन्य है और (गिरिषु क्षयं) पर्वतों पर इस का निवास है।' इससे सोम पर्वतों पर होता है, यह सिद्ध है और इसको ' दिव्य ' कहा है, इसलिये कि यह ऊंचे पर्वतों के शिखरों पर होता है ।

पत्तों के साथ सोम।

सोमवल्ली पत्तों के साथ होती है, ऐसा वर्णन कई मंत्रों में दीखता है-

सोमो वीरुधां अधिपतिः। (अथर्व. ५।२४।७)
दिव्याः सुपर्णाः मधुमन्त इन्दवो मदिन्तमासः
परि कोशमासते। (ऋ. ९।८६।१)
दिवः सुपर्णो अव्यथिर्भरत् ॥ (ऋ. ९।४८।३)
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः (ऋ. ९।७१।९)
नाके सुपर्ण उपपप्तिवांसं ॥ (ऋ. ९।८५।११)
युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः ॥ (ऋ. ९।८६।३७)
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि सोम ॥ (ऋ. ९।९७।३३)
सोमस्य पर्णः सह उग्रं आगन्। (अथर्व. ३।५।४)

इतने मंत्रों में यह (सोमः इन्दुः) सोमवल्ली (हरितः सुपर्णः) हरे रंगवाली सुन्दर पत्तोंवाली होती है, तथा यह (दिव्यः= दिवि भवः) पहाडकी चोटीपर, जैसी कि स्वर्ग में होने के समान उच्च गिरिशिखरपर, होती है, ऐसा कहा है।

सोम का वर्ण।

कुछ कुछ हरा, तनिक साँवला और लालिमायुक्त ऐसा भाँति भाँति का वर्णन किया हुआ है, तथा उसे सुपर्ण नाम भी दिया गया है, जिस से अनुमान किया जा सकता है कि, वह अच्छे पत्तों से युक्त होगा। उसी प्रकार ऐसा भी बखान किया है कि, वह तिनकों से पूर्ण रहता है। हरित शब्द से बहुधा उस के रंग का वर्णन किया हुआ है।

सोम में विद्यमान गुण।

सोम की सराहना करते समय बतलाया है कि, उस में भाँति भाँति के गुण छिपे पडे हैं। इन सब गुणों में उत्साह एवं उमंग बढाने की उस की शक्ति प्रमुखतया प्रेक्षणीय है। युद्धों में अनिवार्यतया उस का उपयोग किया जाता था। एक बार सोमरस का सेवन कर चुकनेपर इन्द्र को किसी से भी परास्त होने की संभावना नहीं रहा करती थी। अन्य देवतागण भी यथोचित सोमरस का पान करते थे। साधारणतया वर्णन पढने से प्रतीत होता है कि सोमरस का पान करना, वैदिक समय अतिसामान्य बात थी। विशेषतया युद्ध के अवसरपर आवेश एवं जोशीला भाव पैदा करने के लिए सोम का प्रमुख उपयोग किया जाता था। सोमरस में बुद्धि बढाने की भी क्षमता थी, इस का यत्रतत्र वर्णन किया हुआ पाया जाता है। सोम का पान कर लेनेपर उमंग एवं उत्साह की मात्रा बढ जाती थी और प्रतिभा का नवनवोन्मेष प्रतिपल प्रस्फुटित हुआ करता था। वक्तृता एवं स्तुतिपाठ में मानों बाढसी आती थी। अनेक स्थानोंपर कहा है कि, सोम आनन्द बढाने में सर्वोपरि है। 'कुवित्सोमस्यापामिति' (ऋ० १०-११९) आदि सूक्त पढने से पता लगता है कि, सोम में उत्साहकता का अंश कहाँतक था। इसके अतिरिक्त ऐसा भी दर्शाया है कि, वैदिक देवता तथा ऋषि सोम के बारे में अतीव लोलुप थे।

उसी प्रकार उस में साधारण रोग हटाने की भी योग्यता होगी। परन्तु उसके प्रमुख आलोचनीय गुण बुद्धि बढाना और उत्साहित कर देना है, क्योंकि ऐसी प्रभावशालिता के न रहते उस विषयमें इतनी आसक्ति होना असंभव है।

स्वर्गीय अमृत।

दिवः पीयूषं उत्तमं सोमं इन्द्राय पातवे।
सुनोता मधुमत्तमम्। (ऋ. ९।५१।२)
दिवः पीयूषं पूर्व्यं। (ऋ. ९।११०।८)

'इन्द्र के पान करने के लिये मधुर सोमरस निकाल दें। यह (दिवः उत्तमं पीयूषं) स्वर्ग का उत्तम अमृत-रस है।' तथा—

त्वां देवासो अमृताय कं पपुः।
(ऋ. ९।१०६।८)

'सब देव (अमृताय) अमृतलाभ के लिये आनन्द से (पपुः) पीते हैं।

वीर्यवर्धक सोम।

(सोम) प्रजावत् रेत आभर। (ऋ. ९।६०।४)

'हे सोम! तू (प्रजावत् रेतः) जिससे प्रजा उत्पन्न हो सकती है, जिससे संतान उत्पन्न हो सकता है, ऐसा वीर्य हमारे शरीरमें (आ भर) भर दे।'

इस वर्णन में सोम का वीर्यवर्धक गुण बताया है।

महां असि सोम ज्येष्ठ उग्राणां इन्द ओजिष्ठः ।
(ऋ. ९।६६।१६)

'हे सोम ! तू वीरोंमें श्रेष्ठ और बडा बलवान् वीर है । '

सोमरस पीनेसे वीर्य बढता है, यह बात निम्नलिखित मंत्र में कही है-

(सोमाः) वर्धन्तो अस्य वीर्यम् । (ऋ. ९।८।१)

सोम तारुण्य देता है ।

सोम तारुण्य (जवानी) देता है, इस विषय में कहा है-

महे युवानं आ दधुः । इन्दुं० (ऋ. ९।९।५)

' (इन्दुं) सोम (युवानं) तारुण्य देनेवाला है, इसलिये (महे आ दधुः) बडे कार्य के लिये उस सोम का हम धारण करते हैं । '

बल की वृद्धि ।

सोम बल की वृद्धि करता है, इस विषय में कहा है-

सहो नः सोम पृत्सु धाः । (ऋ. ९।८।८)

' हे सोम ! तू (पृत्सु) युद्धप्रसंगों में (नः) हमारे अन्दर का (सहः धाः) सामर्थ्य बढाओ । '

सोम का विद्युत्तेज ।

आ यो गोभिः सृज्यत ओषधीष्वा देवानां सुम्न इषयन्नुपावसुः । आ विद्युता पवते धारया सुत इन्द्रं सोमो मादयन् दैव्यं जनम् ॥
(ऋ. ९।८४।३)

'(यः) जो सोम (गोभिः) गोदुग्धके साथ (ओषधीषु आ सृज्यते) औषधियों के रसों में उण्डेला जाता है, जो (उपावसुः) धन के साथ देवों को सुख देता है तथा (इंद्रं) इन्द्र को और (दैव्यं जनं) दिव्य मानव को (मादयन्) हर्षयुक्त करता है, वह (सुतः) सोमरस (विद्युता धारया) बिजली जैसी चमकीली धारा से (आ पवते) छाना जाता है, शुद्ध किया जाता है । '

सोमरस की धारा अंधेरे में बिजली के समान चमकती है । यह इस रस की विशेषता है । अनेक ओषधिरसों से इसका मिश्रण भी करते हैं, इसी को मसालेदार सोमरस बोलते हैं । गोदुग्ध तो इस में मिलाया जाता है ।

सोम से सबको लाभ ।

स नः पवस्व, शं गवे, शं जनाय, शं अर्वते ।
शं राजन् ओषधीभ्यः ॥ (ऋ. ९।११।३)

' सोमरस से हमारा, गौओं का, लोगों का, घोडों का और ओषधियों का (शं) कल्याण होता है । ' अर्थात् सोम से औषधियां वीर्यवती होती हैं, मनुष्य हृष्टपुष्ट होते हैं तथा गौवें और घोडे भी आरोग्यसंपन्न होते हैं ।

यहां गौओं के खाने में सोम आता था, यह बात स्पष्ट है । जो गौ सोम खाती है, उसके दूध में सोमरस के गुण आते हैं, यह बात स्मरण रखनेयोग्य है । इस तरह सोम का सेवन बडा लाभदायी है ।

सोम की रुचि ।

साधारण ढंग से सोम जिह्वा को कैसे लगता था, इसका स्पष्ट बखान करना अति कठिन जान पडता है । कारण यही है कि, इस भाँति की वस्तुओं की साधारण रुचि नहीं बतलायी जाती है, अपितु उस वस्तु की ओर जो अति तीव्र आकर्षण अपने अंतस्तल में उत्पन्न होता है, उसी के अनुसार वर्णन का सिलसिला प्रचलित होता है !

सोम का वर्णन यों किया है कि-

' स्वादुः किलायं मधुमाँ उतायं तीव्रः किलायं '
(ऋ० ६-४७-१)

तो भी यह कुछ कुछ तीखी, स्वादवाली वस्तु हो । उस में दूध, शहद आदि चीजों की मिलावट करके ही विशेष ढंग की मधुरिमा से युक्त कर देते थे ।

सोम तथा सुरा ।

ऋग्वेदकाल में भी सोम सुरा से सुतरां विभिन्न वस्तु थी, ऐसा प्रतिपादन करनेके लिए पर्याप्त आधार है ।

हृत्सु पीतासो युध्यंते दुर्मदासो न सुरायां ।
(ऋ० ८।२।१२)

यहाँपर सेवन की हुई सुरा से दुर्मद होते हैं, ऐसा वर्णन है और कहा है कि, मद्यसेवन से जो नशा मालूम पडता है, वह दुर्मद है ।

सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः ॥ (ऋ० ७-८६-६)

' मद्य, क्रोध तथा द्यूतक्रीडा के साधन पाप की ओर ले

चलनेवाले हैं।' जैसे वर्णन सुराका यहाँपर किया गया है, वैसे सोम का बखान कहीं भी नहीं किया है, उलटे सभी जगह इस के विपरीत चित्रण किया है।

अतः ऐसा कह सकते हैं कि, उस समय सोम तथा सुरा दोनों ही अत्यंत विभिन्न वस्तुएँ थीं और मद्य के द्वारा उत्पादित मतवालेपन में बहुत ही बुरे गुण थे। इस के सिवा, आगे चलकर वाङ्मय में एवं सौत्रामणियाग में मद्य की विभिन्न प्रणाली बतलाई है। अतः ऐसा कहने में कोई आपत्ति नहीं उठाई जा सकती है कि, सोम सुरासे विभिन्न एवं पृथक् अन्य कोई आनंददायक वस्तु थी।

सोम तैयार करने की प्रणाली।

प्रारम्भ में ब्राह्मण से यज्ञशाला के बाहर सोमवल्ली खरीद लेनी चाहिए और उसे यज्ञशाला ले जाकर उस पर पानी का छिडकाव कर चुकने पर ठीक प्रकार से रखना चाहिए, ताकि वह सूखने न पाय। इस के पश्चात् फलक पर सोम रखा जाय। सोम कूटने के दो तख्ते, जो कि ३६ अँगुलियाँ लम्बाई में और १८ अंगुल चौडाई में रहें, 'अभिषवण फलक' नाम से ज्ञात हैं; अर्थात् यदि दोनों समीप समीप रखे जाँय, तो 'समभुज चतुष्कोण' की निर्मिति होती है, जिसकी प्रत्येक रेखा ३६ अंगुलियों से परिमित हो जाती है। उस पर सोमवल्ली रखी जाय। पश्चात् ग्रावासे उसे कूटना प्रारम्भ करे। यह ग्रावा पत्थर की बनी रहती है और इस का ऊपरी हिस्सा पतला तथा निम्नविभाग मोटा रहता है। कूटते समय मंत्र पढते पढते कुछ थोडा जल डालना पडता है। तदुपरान्त कूटी हुई वह सोमवल्ली आधवनीय नामक बर्तन में, जो अनुकूलता के अनुसार मिट्टी का या धात का बनाया जाता है, डालनी चाहिए। यथेष्ट जल डाल कर उसे अच्छी तरह रगड कर जलमें मिला दे। पानी में जब सोमवल्ली का रस मिश्रित हो जाय, तब निचोडकर अवशिष्ट अंशको बाहर निकाल दे, जिसे ऋजीष नाम दिया गया है। अब छानने के लिए अधिषवण पर रँगरेज के यहाँ की तिपाई जैसे एक चौकी रख कर उस पर 'दशापवित्र' नामक एक छानने का वस्त्र बाँधकर रखना चाहिए, यही छाननी है। जलमिश्रित सोम अब आधवनीय पात्र में से उस पर उँडेलना चाहिए। पवित्र के नीचे एक छोटासा छेद बनाकर उसमें से ऊनी धागा इस तरह डाला जाय कि, पतली धारा गिरने लगे। अब सोम टपकने लगता है, जिसे पात्र में ले लिया जाय। 'ग्रह, चमस' ये नाम पात्रों के हैं। उस सोम को विभिन्न देवताओं को लक्ष्यमें रखकर अग्निमें आहुति के रूप में डाल चुकने पर, सभामण्डप में होम करनेवाले एवं वषट्कार कहनेवाले, उद्गाता, यजमान, ब्रह्मा तथा अन्य सदस्य क्रमशः सोमरस का पान करें।

इस सोमरस में देवताभेद के अनुसार दुग्ध, दधि, स्वर्णधूलि एवं घृत डालकर अर्पण करने की प्रथा है।

आश्वलायन श्रौतसूत्र ६-८-५ में कहा है कि, सोमवल्ली न मिलने की दशामें 'पूतिक' अथवा 'फाल्गुन' नामक वनस्पति का उपयोग करना चाहिए। 'अनधिगमे पूतिकान् फाल्गुनानि।'

वर्तमानकाल में कहीं कहीं होनेवाले सोमयाग के सोम की यह दशा या कृति है।

हिरण्यकेशीय श्रौतसूत्र में भी लगभग इसी तरह की प्रणाली बखानी गयी है, (देखिए ८-३-४)। सोम कूटते समय ग्रावा से कितने आघात दिये जांय, फलक कैसे रखा जाय, आदि बातें भी बारीकी से बतलायीं गई हैं।

छलनी कैसे रहे?

'दशापवित्र' या 'पवित्र' शब्द से सोम को विशुद्ध करना सर्वत्र निर्दिष्ट किया हुआ है। अवि, अव्य, अविमय जैसे विशेषणोंसे ज्ञात होता है कि, वह छलनी भेड के ऊन से बनायी जाती थी। निश्चित रूप से कह नहीं सकते कि, वह बुनी गयी थी या नहीं, परन्तु एक स्थान पर कहा गया है कि, उस का वर्ण श्वेत था। आधुनिक सोमयाग में ऊन की बनायी छलनी नहीं रहती है, केवल स्वच्छ, सुफेद कपडा रहता है, जिस पर तनिक ऊन केवल शास्त्रविधि के लिए लगाया जाता है। 'ह्वरांसि' पद से दीख पडता है, उस के अंचल लटकते थे।

सोमरस की छाननी।

सोमरस छानने की छाननी बकरी के ऊनकी की जाति थी। इस का नाम 'पवित्र' होता था। इस का वर्णन ऐसा आता है-

अव्यो वारे महीयते । सोमो यः सुक्रतुः कविः॥
(ऋ. ९।१२।४)

रसो । अव्यो वारं वि पवमान धावति ।
(ऋ. ९।७४।९)

'(अव्यः वारे) बकरी के ऊनकी छाननी पर सोम महत्त्व का स्थान प्राप्त करता है । ' यह सोम यज्ञको संपन्न करनेवाला और काव्य की स्फूर्ति बढाता है ।

वि वारं अव्यं आशवः । (ऋ. ९।१३।६)

'(अव्यं वारं) बकरी के ऊनकी छाननीसे (आशवः) शीघ्र प्रवाहित होनेवाले सोमरस नीचे चूते हैं, नीचे के पात्र में प्रवाहित होते हैं । ' तथा–

वि वारं अव्यं अर्षति । (ऋ. ९।६१।१७)

' बकरी के ऊनकी छाननी पर सोम रखते हैं । '

(असितः काश्यपो देवलः । गायत्री ।)

ऋभुर्न रथ्यं नवं दधाता केतं आदिशे ।
शुक्राः पवध्वं अर्णसा ॥(ऋ. ९।२१।६)

'(ऋभुः) कारीगर जैसा नवीन (रथ्यं) रथको जोतनेवाले घोडे को सिखाता है, वैसा (आदिशे केतं दधात) धर्म का आदेश देने के लिये ज्ञान दीजिये और हे सोमकी रसधाराओं ! तुम बडे वेगसे स्वच्छ हो । ' अर्थात् छाननी से शुद्ध हो ।

शुम्भमान ऋतायुभिः मृज्यमानो गभस्त्योः ।
पवते वारे अव्यये । (ऋ. ९।३६।४; ९।६४।५)
असृग्रं वारे अव्यये ॥ (ऋ. ९।६६।११)

'(ऋत-आयुभिः) सत्य धर्म पालन करनेवाले याजकोंने शुद्ध किया, किरणों से पवित्र बना (अव्यये वारे) बकरी की छाननी से (पवते) अर्थात् पवित्र होता है, छाना जाता है । '

स न ऊर्जे वि अव्ययं पवित्रं धाव धारया ।
(ऋ. ९।४९।४)

प्र सुवान इन्दुरक्षाः पवित्रमत्यव्ययम् ।
(ऋ. ९।६६।२८)

पवित्रं अति गाहते । रक्षोहा वारं अव्ययम् ।
(ऋ. ९।६७।२०)

पवस्व सोम अव्यो वारे परिधाव ।(ऋ. ९।८६।४८)

' यह सोमरस (अव्ययं पवित्रं) बकरी के ऊनसे बनी छाननी के पास (धारया विधाव) रस की धारा के साथ जाता है । '

रोमाण्यव्या समया वि धावति । (ऋ. ९।७५।४)
सो अर्ष इंद्राय पीतये तिरो रोमाणि अव्यया ।
(ऋ. ९।६२।८)

अर्षति तिरो वाराण्यव्यया । (ऋ. ९।६७।४)

' इंद्र के पीने के लिये उस रस को छानने के लिये (अव्यया) बकरी के (रोमाणि तिरः) बाल तिरछे रखने चाहिये और उस छाननी से रस छानना चाहिये । '

ऊन एक दूसरे पर ऐसी रखना चाहिये, जिस से वह छाननीसी बने । अथवा ऊन का बुना कपडा कम्बल जैसा लेना चाहिये । तिरछे बाल हों, ऐसी छाननी बने ।

तीन छाननियाँ ।

सोम छानने के लिये एक के ऊपर एक ऐसी कुल तीन छाननियां होती थीं, ऐसा निम्न लिखित मंत्र से दीखता है—

सं त्री पवित्रा विततानि एषि अनु एकं धावसि
पूयमानः । (ऋ. ९।९७।५५)

'(त्री पवित्रा विततानि) तीन छाननियां फैली रखी हैं, उनमें से क्रमपूर्वक (एकं अनु धावसि) एक के पीछे एक पर सोम दौडता है, ' अर्थात् तीनों में से क्रमपूर्वक छाना जाता है ।

ये तीन छाननियां एक दर्भ की, एक ऊनकी और तीसरी (दशा-पवित्र) कंबल की होगी, ऐसा हमारा अनुमान है, अथवा तीनों ऊनकी ही होंगीं । इस विषय में निश्चय करने के लिये अधिक खोज की आवश्यकता है ।

अव्यो वारेभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि ।
(ऋ. ९।१०१।१६)

अव्यो वारेभिः पवते । (ऋ. ९।१०८।५)

' सोमरस (गव्ये त्वचि अधि) गौके चर्म पर (अव्यः वारेभिः) बकरी के ऊनकी छाननियों से (पवते) छाना जाता है ।

नूनं पुनानो अविभिः परिस्रव अदब्धः सुरभिंतरः ।
सुते चित् त्वा अप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम् । (ऋ. ९।१०७।२)

' सोम रस को (अविभिः पुनानः) बकरी के ऊनकी छाननी से छानते हैं, तब यह (सुरभितरः) अधिक सुवास-से पूर्ण बनता है। रस (सुते) निकालते ही (अप्सु) पानी में स्वच्छ करते हैं, (उत्तरं) पश्चात् (गोभिः श्रीणन्तः) गौके दूध के साथ मिलाते हैं। इस (अन्धसा मदामः) अन्न से हम आनंदित होते हैं।'

यहां ' अवि ' शब्द बकरी के ऊनकी छाननी के लिये और ' गो ' पद दूध के लिये आया है।

(असितः काश्यपो देवलो वा। गायत्री।)

यं अत्यं इव वाजिनं मृजन्ति योषणो दश।
वने क्रीळन्तं अत्यविम्॥ (ऋ. ९।६।५)

' (वने) वन के काष्ठ से निर्मित पात्र में (अत्यविं क्रीळन्तं) छाननी से खेलनेवाले जैसे सोम को (अत्यं वाजिनं इव) घुडदौड के घोडे की सेवा करने के समान (दश योषणः) दस स्त्रियां अर्थात् दस अंगुलियां (मृजन्ति) शुद्ध करती हैं।'

दस अंगुलियां सोमरस निकालती हैं और उसको छाननी पर रख कर स्वच्छ करती हैं। यहां (वाजिनं दश योषणः मृजन्ति) किसी घुडसवार-अश्ववीर-को दस स्त्रियां स्नानादि से सेवा करती हैं, वैसे सोम की सेवा दस अंगुलियां करती हैं, यह उपमा है।

गौका चर्म।

एष सोमो अधि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः॥२९॥
यस्य ते द्युम्नवत्पयः पवमानाभृतं दिवः॥३०॥
(ऋ. ९।६६)

द्युमन्तं शुष्मं उत्तमं। (ऋ. ३।६७।३)

' यह सोम (गवां त्वचि) गौके चमडे पर (अद्रिभिः क्रीडति) पत्थरों के साथ खेलता है। इस सोम का तेजस्वी चमकीला दूध जैसा रस स्वर्ग से ही लाया है, ऐसा प्रतीत होता है।'

गौके अथवा बैल के किंवा गवे के चमडे पर फलक रखकर, उस फलक पर सोमवल्ली पत्थरों से कूट कर रस निकालते हैं। और वह कूटा हुआ सोम दस अंगुलियों से, दोनों हाथों से निचोडकर उनकी छाननी से छाना जाता है। यह रस स्वयं (द्युमन्तं) चमकीला श्वेतसा रहता है। यह वनस्पति भी रात में चमकती है। इस से अनुमान होता है कि, इसमें कुछ विशेषता है। तथा-

आ योनिः सोमः सुकृतं निषीदति
गव्ययी त्वग्भवति निर्णिगव्ययी॥ (ऋ.९।७०।७)

' सोम अपने स्थान पर रहता है, अर्थात् छाना जानेके समय छाननी पर बैठता है। वहां (गव्ययी त्वक्) गवय का चर्म तथा (अव्ययी) बकरी का चर्म उसके ढक्कन होते हैं।' तथा-

अद्रयस्त्वा बप्सति गोरधि त्वचि अप्सु त्वा
हस्तैर्दुदुहुर्मनीषिणः॥ (ऋ. ९।७९।४)

' सोम को हाथों से (अप्सु) पानी में रखकर हिला-कर धोते हैं, और (गोः त्वचि अधि) गाय के चर्म पर रखकर (अद्रयः) पत्थर कूटते हैं।'

इससे स्पष्ट हो जाता है कि, सोमवल्ली लाते ही पर्याप्त जल में वह रखकर हिला हिलाकर अच्छी तरह धोते हैं। इसके बाद चमडे पर फलक रखकर उस पर वह सोम-वल्ली रखकर पत्थरों से कूटते हैं। रस निचोडने योग्य होते ही ऊनकी छाननी पर रखकर दसों अंगुलियों से दबाते हैं, जिस से सब रस बर्तन में इकट्ठा होता है।

सोम के साथ मिलानेयोग्य वस्तुएँ।

सोम तैयार करते समय उसमें दूध, दधि, घृत, मधु, जल एवं भूने सत्तु या गेहूँ का आटा डालते थे। इसीलिए उसे ' यवाशिर, गवाशिर, दध्याशिर ' आदि नाम प्राप्त हुए। संभवतः इस भाँति मिलावट होने के फलस्वरूप उसमें अतिरिक्त मिठास पैदा होती होगी। कई स्थानों पर सोम को मधु, मधुवत्, पीयूष संबोधित किया गया है।

सोम में दूध आदि मिलाया जाता था, इसका वर्णन पाठक निम्नलिखित मंत्रों में देख सकते हैं-

सोम में दूध मिला दो।

(असितः काश्यपो देवलो वा। गायत्री।)

तं गोभिर्वृषणं रसं मदाय देववीतये।
सुतं भराय सं सृज॥ (ऋ. ९।६।६)

' वह सोमरस (मदाय) हर्ष उत्पन्न करनेवाला बनने के लिये (देववीतये) देवों के अर्पण के लिये तथा (भराय) पोषक अन्न बनने के लिये (गोभिः सं सृज)

गौओं के दूध के साथ मिला दो, जिस से वह (वृषणं) वीर्यवर्धक, बलवर्धक बनेगा।'

'यहां (गोभिः सं सृज) गौओंके साथ इसे छोड दो,' ऐसा कहा है। इसका अर्थ 'गौका दूध सोममें मिलाओ' ऐसा है। यह लुप्ततद्धित प्रक्रिया पाठक अवश्य देखें।

'गौ' का ही अर्थ दूध, दही, मक्खन, घृत, छाछ आदि गोविकार हैं। इन में से दूध, दही और घी सोमरस में मिलाते हैं।

(असितः काश्यपो देवलो वा। गायत्री।)

राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिः अञ्जते।
(ऋ. ९।१०।३)

आ यो गोभिः सृज्यते ओषधीषु। (ऋ. ९।८४।३)

'राजालोग जैसे (प्रशस्तिभिः) स्तुतियों से उत्साहित होते हैं, वैसा ही (सोमासः) सोमरस (गोभिः) गौओं के दूधसे (अञ्जते) शोभित होते हैं।'

यहां 'गो' का अर्थ 'गोदुग्ध' है। तथा-

अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः।
देवं देवाय देवयु॥ (ऋ. ९।११।२)

'(अथर्वाणः) अथर्वविधि से यज्ञ करनेवाले याजक एक (देवं) ईश्वर की प्राप्ति की इच्छा से (मधुना) मधुर सोमरस के साथ (पयः) गौका दूध (अभि अशिश्रयुः) मिला देते हैं।'

यहां सोमरस के साथ, दूध और मधु-शहद मिलाने की विधि है।

सोमरस में शहद मिलाओ।

सोमरस के साथ शहद मिलाने के विषय में निम्न-लिखित मंत्र देखो-

हस्तच्युतेभिः अद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन।
मधौ आ धावता मधु॥ ५॥
नमसेत् उप सीदत दध्नेत् अभि श्रीणीतन॥ ६॥
(ऋ. ९।११)

'हाथोंसे पत्थरोंद्वारा कूट कर सोमरस निकाल कर उस को (पुनीतन) छानो। उस में (मधु) शहद (आ धावता) मिलाओ। तथा (दध्ना इत्) दही के साथ (अभि श्रीणीतन) मिला दो।'

जिन्वन् कोशं मधुश्चुतम्। (ऋ. ९।१२।६)

'शहद से युक्त रस का खजाना सोमरस है।'

अस्य शुष्मिणो रसे विश्वे देवा अमत्सत।
यदी गोभिर्वसायते॥ (ऋ. ९।१४।३)
यद् गोभिर्वासयिष्यसे (ऋ. ९।६६।१३)

'(शुष्मिणः रसे) बल बढानेवाले सोमरस में जब (गोभिः वसायते) गौओं का दूध मिलाया जाता है, तब वह पेय सब देवों को आनन्द देनेवाला बनता है।'

गाः कृण्वानो निर्णिजम्। (ऋ. ९।१४।५)

'गौका दूध उस सोमरस को (निर्णिजं) उत्तम सुंदर रूप देता है।' तथा-

अति श्रिती तिरश्चता गव्या जिगाति अण्व्या।
(ऋ. ९।१४।६)

'(अण्व्या) सूक्ष्म छिद्रवाली छाननी से (तिरश्चता) तिरछा होकर (गव्या जिगाति) गौके दूध के साथ मिश्रित होने के लिये जाता है।' अर्थात् छाना जाने के बाद उस में गोदुग्ध मिलाया जाता है।

सोममें दहि मिला दो।

एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः।
विपा व्यानशुः धिया॥ (ऋ. ९।२२।३)

'ये पवित्र शुद्ध हुए सोमरस (दधि-आशिरः) दही के साथ मिलाये जाते हैं। ज्ञान के साथ बुद्धिको बढाते हैं।' यहां सोमरस का दही के साथ मिश्रण बताया है।

अभि गावो अधन्विषुः। पुनानाः० ॥ २॥
इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधावसि॥५॥
शुचिः पावक उच्यसे सोमः सुतस्य मध्वः।
देवावीः अघशंसहा॥ ७॥ (ऋ. ९।२४)

'सोमरस छाना जानेके बाद (गावः) गौका दूध उस में मिलाते हैं। पहिले पत्थरों से कूट कर रस निकालते हैं, पश्चात् छानते हैं। यह रस (देवावीः) देवत्व देनेवाला और (अघ-शंस-हा) पापप्रवृत्ति का विनाशक है।'

अत्यो न गोभिः अज्यते। (ऋ. ९।३२।३)

'जिस तरह घोडा घुडदौडमें जाता है, उस तरह सोम-रस (गोभिः अज्यते) गौओं के साथ अर्थात् गोदुग्ध के साथ जाता है, अर्थात् मिलता है।' यथा-

अभि गावो अनूषत योषा जारं इव प्रियम्।
अगन् आजिं यथा हितम्॥ (ऋ. ९।३२।५)

'जिस तरह (योषा) स्त्री (प्रियं जारं) प्रिय के पास जाने की इच्छा करती है, अथवा जिस तरह (हितं आजिं) हितकारी युद्ध में वीर योद्धा (अगन्) जाते हैं, उस तरह सोमरस के पास (गावः अभि अनूषत) गौवें अर्थात् गोदुग्ध जाता है।'

यो अत्य इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः ॥
(ऋ. ९।४३।१)

'जो सोम (अत्यः इव) चपल घोडे के समान वेगसे (गोभिः) गौओं के साथ (मृज्यते) मिलाया जाता है, शुद्ध करके मिश्रित किया जाता है।' तथा—

आ धावत सुहस्त्यः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना ।
गोभिः श्रीणीत मत्सरम् ॥ (ऋ. ९।४६।४)

'(सुहस्त्यः) कुशल लोग यहां आवें, मन्थनपात्र में सोमरस को रखें और उस के साथ (गोभिः श्रीणीत) गोदुग्ध मिला दें।'

स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः ।
(ऋ. ९।५०।५)

'वह हर्षवर्धक सोमरस (गोभिः अञ्जानः) गौके दूध के साथ मिलता है, मिश्रित होता है।'

यहां 'गौ' पद का अर्थ 'दूध, दहि, घी' आदि है, यह बात भूलना नहीं चाहिये ।

उपो षु जातं अप्तुरम् । गोभिर्भंगं परिष्कृतम् ।
(ऋ. ९।६१।१३)

'(अप्तुरं) जल के पास त्वरा से जानेवाला सोमरस (गोभिः भंगं) गौओं के दूध के साथ मिलाया जाता है और वह (परिष्कृतं) परिशुद्ध किया गया है।'

यहां गोदुग्ध के साथ सोमका मिलान होनेका वर्णन है और उसके पूर्व जलके साथ मिलनेका भी है, अर्थात् सोम के साथ प्रथम जल मिलाकर छाना जाता है और पश्चात् दूध मिलाकर पिया जाता है।

शुभ्रं अन्धः देववातं अप्सु धूतः नृभिः सुतः ।
स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥ (ऋ० ९।६२।५)

'देवोंके लिए प्रिय यह सोमरस (शुभ्रं अन्धः) शुभ्रवर्ण का अन्न है। (अप्सु धूतः) जलों से प्रथम धोकर रस निकालते हैं और पश्चात् (गावः पयोभिः स्वदन्ति) गौवें अपने दूध से उस का स्वाद बढा देती हैं।'

अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षति ।
(ऋ. ९।६२।२३)

'सोमरस (गव्यानि वीतये) गौके दूध, दही आदि गौसे उत्पन्न पदार्थों के साथ मिलकर पौरुष बढाता हुआ, स्वयं पवित्र हुआ प्रवाहित होता है।'

यहां 'गव्यानि' शब्द है। गौ से उत्पन्न दूध, दही, छाछ, मक्खन, घृत आदि पदार्थ गव्य कहलाते हैं। ये सोमरस के साथ मिलाए जाते हैं। मक्खन मिलाने का उल्लेख किसी जगह नहीं है। 'गवाशिरः' और 'दध्याशिरः' इन शब्दों से दूध और दही के साथ सोम मिलाया जाता था, यह बात स्पष्ट हो जाती है।

सोमाः शुक्रा गवाशिरः । (ऋ० ९।६४।२८)

'सोमरस वीर्यवर्धक है, जब वह गौके दूध के साथ पिया जाता है।'

अद्भिर्गोभिर्मृज्यते अद्रिभिः सुतः । पुनान इंदुः० ॥
(ऋ० ९।६७।९)

'(अद्रिभिः सुतः) पत्थरों से कूट कर निकाला हुआ (सुतः इन्दुः) सोमरस (पुनानः) पवित्र बनता हुआ, छाननी से छाना जाकर (अद्भिः) जलों से तथा (गोभिः) गौओंके दूध से मिश्रित किया जाता है।'

त्रिः अस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रे सत्यां आशिरं ।
(ऋ० ९।७०।१)

अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते ।
(ऋ० ९।८६।२१)

'इक्कीस गौओंका दूध इस सोमके लिए निकाला जाता है।' इक्कीस गौओंका दूध कितने सोम में मिलाया जाता था, इस का पता नहीं चलता। पर यज्ञ में १८ ऋत्विज, ३३ देव और कुछ सदस्य इतने पीनेवाले हैं। इक्कीस गौओं का दूध २०० सेर होगा। इस में कितना सोम होगा, इस का प्रमाण निश्चित नहीं है। अन्य वचनों के विचार से इस विषय में निर्णय करना चाहिए।

परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिंचन्ति हर्म्यस्य सक्षणिम् । आ यस्मिन् गावः सुहुताद ऊधनि मूर्धञ्छ्रीणन्ति अग्रियं वरीमभिः ॥
(ऋ० ९।७१।४)

'(द्यु-क्षं पर्वता-वृधं) द्युलोकमें रहनेवाला, पहाडोंपर उगनेवाला (सहसः मध्वः) बलवर्धक मधु जिसमें मिला है, उस सोममें (सुहुतादः गावः) उत्तम भक्ष्य खानेवाली गौवें (ऊधनि) अपने दुग्धाशयमें स्थित दूधसे (श्रीणन्ति) मिश्रण करती हैं, अर्थात् सोममें दूध मिलाया जाता है।'

यहां सोममें दूध मिलाने का वर्णन स्पष्ट है।

हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते ॥ (ऋ० ९।७२।१)

'(हरिं) हरे रंग का सोम कूटकर उसका रस निकाला जाता है और (कलशे सोमः) बर्तन में वह सोमरस रखकर (धेनुभिः सं अज्यते) गौओंके दूध से मिश्रण किया जाता है।'

प्र सोमस्य पवमानस्य ऊर्मयः इन्द्रस्य यन्ति जठरं सुपेशसः। दध्ना यदीं उन्नीता यशसा गवां दानाय शूरं उदमन्दिषुः सुताः ॥
(ऋ० ९।८१।१)

'सोमरस की छानी जानेवाली लहरियां सुन्दर इन्द्रके पेटमें (जठरं यन्ति) जाती हैं। जब (गवां दध्ना) गौवों के दही से सोमरस मिश्रित होता है, तब वह रस शूर को अधिक उत्तेजित करता है।' तथा–

अभि त्यं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणंति।
(ऋ० ९।८४।५)

'(गावः) गौवें उस (पयोवृधं सोमं) दूध से बढाये जानेवाले सोमरस को (अभि श्रीणन्ति) अच्छी तरह मिला देती हैं।'

सोमरस के साथ दूध अच्छी तरह मिलाया जाता है, पश्चात् हवन करते और नंतर पीते हैं।

रसाय्यः पयसा पिन्वमानः ईरयन्नेषि मधुमन्तं अंशुम्। (ऋ. ९।९७।१४)

'रसवाला सोम दूध के साथ मिला हुआ मधुर बनता है।' तथा–

अभिश्रीणन् पयः पयसाभि गोनां।
(ऋ. ९।९७।४३)

'सोम का (पयः) दूध अर्थात् रस (गोनां पयसा) गौओं के दूध के साथ मिलाया जाता है।'

एते सोमा विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः।
(ऋ. ९।१०१।१२)

'यह सोमरस दहीं के साथ मिलाया है।'

गोभिष्टे वर्णं अभि वासयामसि। (ऋ. ९।१०४।४)

'(गोभिः) गौके दूध से सोम के रंग का पोषण करते हैं।' यहां (Dressing) अन्न सिद्ध करना यह अर्थ 'अभिवासयामसि' का है। मसाले वगैरह डालकर सिद्ध करते हैं।

मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिः उत्तरं ॥ २ ॥
अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः, सोमो दुग्धाभिरक्षाः ९
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविः
अच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ १२ ॥
अपो वसानः परि गोभिः उत्तरः ॥ १८ ॥
देवानां सोम पवमान निष्कृतं
गोभिः अञ्जानो अर्षसि ॥ २२ ॥
गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥ २६ ॥
(ऋ. ९।१०७)

गौके दूध के साथ सोमरस का मिलान होता है। यह भाव इन सब मंत्रों में है। यहां 'गौ' शब्द ही 'दूध' के लिये आया है।

पिबन्ति अस्य विश्वेदेवासो गोभिः श्रितस्य नृभिः सुतस्य। अद्भिः मृजानः गोभिः श्रीणानः।
(ऋ. ९।१०९।१५-१६)

'सब देव सोम ऐसा पीते हैं कि, जो अच्छी तरह छाना है और दूध के साथ मिलाया है।' सोम 'उग्र' (ऋ. ९।१०९।२२) है, इसलिये दूध के साथ मिलाकर उसकी उग्रता कम की जाती है। उसकी उग्रता के कारण सोमरस दूध, दही की मिलावट के विना पिया नहीं जा सकता।

सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः।
(ऋ. ९।९१।१८)

'सोमरस के साथ दूध मिल जावे, तथा (वाजाः) अन्न भी मिलाया जावे।' सत्तू का आटा अथवा अन्य कोई खाद्य हो, वह सोम के साथ मिलाकर खाया जावे।

अभि त्यं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति मतिभिः स्वर्विदम् । धनंजयः पवते कृत्व्यो रसो विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ॥ (ऋ. ९।८४।५)

(त्यं पयोवृधं) उस दूध से बढाये जानेवाले और (मतिभिः स्वर्विदं) बुद्धियों से स्वर्ग को प्राप्त करनेवाले (सोमं) सोम को (गावः पयसा अभिश्रीणन्ति) गौवें दूध के साथ मिला देती हैं । वह (रसः) सोमरस धन को जीतनेवाला, (कृत्व्यः) कर्म की शक्ति बढानेवाला, ज्ञान बढानेवाला, काव्य की स्फूर्ति देनेवाला (स्वर्चनाः) अपने प्रकाशको (पवते) छाना जाने के समय बढाता है ।

सोमरस दूध से बढाया जाता है । इस से बुद्धि बढती है, उत्साह बढता है । और कर्मशक्ति भी बढती है । जो कहते हैं कि सोम मद्य है, वे यहां देखें कि, सोम का रस छाना जाने के बाद ही उसमें दूध मिलाया जाता है और हवन होते ही पीया जाता है । इसलिये इसका मद्य बन जाने की संभावना ही नहीं है ।

(मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।)

इमं अघ्न्या श्रीणन्ति धेनवः सोमम् । (ऋ. ९।१।९)

' इस सोम के साथ अवध्य गौवें (अपने दूध को) मिलाती हैं । ' यहां ' धेनु ' शब्द का ही अर्थ ' धेनु का दूध ' है । यह वेद की भाषा की पद्धति है । इसी तरह गोवाचक शब्द गौसे उत्पन्न दूध, दही आदि के लिये प्रयुक्त होते हैं । लौकिक संस्कृत में ऐसे प्रयोग नहीं होते, यह बात ध्यान में धारण के योग्य है ।

(मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।)

महान्तं त्वा महीनां आपो अर्षन्ति सिंधवः ।
यद् गोभिः वासयिष्यसे ॥ (ऋ. ९।२।४)

' (यत्) जब (गोभिः) गौके दूध के साथ (वासयिष्यसे) मिलाया जाता है, तब हे सोम ! (त्वा) तेरे साथ (सिंधवः आपः) नदियों के जल (अर्षन्ति) मिलते हैं । ' अर्थात् सोम के साथ जल भी मिलाया जाता है और दूध भी मिलाते हैं । यह दूध गौका ही दूध है ।

सोम औषधि से रस निकालने के समय थोडा पानी उसमें मिलाते हैं, जिस से अच्छा रस निकल आता है । जब रस निकल आता है तब उस के साथ गौओं का दूध मिलाया जाता है । तब वह पीनेयोग्य होता है ।

इतने मंत्रों के विचार से निश्चित होता है कि, सोमरस में किन वस्तुओं का मिलान होता है ?

वैद्यशास्त्र में सोम ।

वैद्यशास्त्र की अत्यन्त प्राचीन मानी हुई सुश्रुत-संहिता में सोमरसायन के विषय में एक अध्याय पाया जाता है । इस में सोमवल्ली का वर्णन किया है । ईसा के पूर्व पांच से छे, दसवीं शताब्दी तक के काल में सुश्रुत का अस्तित्व माना गया है । इतने प्राचीन काल के ग्रंथ में सोम का जो वर्णन दिया गया है, उस के सहारे उस काल में भी सोम की जानकारी कितनी विद्यमान थी, इस का स्पष्टीकरण बहुत कुछ हो सकता है ।

ब्रह्मादयोऽसृजन् पूर्वममृतं सोमसंज्ञितम् ।
जरामृत्युविनाशाय विधानं तस्य वक्ष्यते ॥ ३ ॥
एक एव खलु भगवान् सोमः स्थाननामाकृतिवीर्यविशेषैश्चतुर्विंशतिधा भिद्यते ॥ ४ ॥

" बुढापा और मौत को नष्ट करने के लिए पहले ब्रह्मा आदिकोंने अमृत बना डाला, जिसे सोम कहते हैं । इसी के बारे में अब कहा जायगा । "

" यद्यपि सोम एक ही है, तो भी जगह, नाम, शकल सूरत एवं विशिष्ट शक्तियों में विभिन्नता होने से २४ प्रकारों में विभक्त हुआ, ऐसा प्रतीत होता है । "

१ २ ३ ४
अंशुमान् मुञ्जवांश्चैव चन्द्रमा रजतप्रभः ।
५ ६ ७ ८
दूर्वासोमः कनीयांश्च श्वेताक्षः कनकप्रभः ॥५॥
९ १० ११ १२
प्रतानवान् तालवृन्तः करवीरोंऽशवानपि ।
१३ १४ १५
स्वयंप्रभो महासोमो यश्चापि गरुडाहृतः ॥ ६ ॥
१६ १७ १८ १९ २०
गायत्र्यस्त्रैष्टुभः पाङ्क्तो जागतः शांकरस्तथा ।
२१ २२
अग्निष्टोमो रैवतश्च यथोक्त इति संज्ञितः ॥७॥
२३ २४
गायत्र्या त्रिपदा युक्तो यश्चोडुपतिरुच्यते ।
एते सोमाः समाख्याता वेदोक्तैर्नामभिः शुभैः॥८

सर्वेषामेव चैतेषामेको विधिरुपासने।
सर्वे तुल्यगुणाश्चैव विधानं तेषु वक्ष्यते ॥९॥

" अंशुमान से ले, उडुपति तक के सोम वेद में कहे हुए अच्छे नामों से विख्यात हैं। इन सबों के गुण समान हैं और तैयार करने का ढंग भी एकसा है।"

अतोऽन्यतमं सोममुपयुयुक्षुः सर्वोपकरण-परिचारकोपेतः प्रशस्तदेशे त्रिवृतमागारं कार-यित्वा हृतदोषः प्रतिसंसृष्टभक्तः प्रशस्तेषु तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रेषु अंशुमन्तमादाया-ध्वरकल्पेनाहृतमभिषुतमभिहुतं, चान्तरागारे कृतमंगलः सोमकंदं सुवर्णसूच्या विदार्य, पयो गृह्णीयात् सौवर्णे पात्रेऽञ्जलि मात्रं, ततः सकृदेवोपयुञ्जीत........ ॥१०॥

पश्चात् इस के परिणाम का वर्णन किया है और सोम का लक्षण कहा है।

सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि दश पंच च।
तानि शुक्ले च कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च ॥
एकैकं जायते पत्रं सोमस्याहरहस्तदा।
शुक्लस्य पौर्णमास्यां तु भवेत् पंचदशच्छदः ॥२१॥
शीर्यते पत्रमेकैकं दिवसे दिवसे पुनः।
कृष्णपक्षक्षये चापि लता भवति केवला ॥२२॥

१ २ ३ ४
अंशुमानाज्यगन्धस्तु कन्दवान् रजतप्रभः।
५ ६ ७
कदल्याकारकन्दस्तु मुंजवांल्लशुनच्छदः ॥२३॥
८ ९
चन्द्रमाः कनकाभासो जले चरति सर्वदा।
१० ११
गरुडाहृतनामा च श्वेताक्षश्चापि पाण्डुरौ ॥२४॥
सर्पनिर्मोकसदृशौ तौ वृक्षाग्रावलंबिनौ।
तथान्यैर्मण्डलैश्चित्रैश्चित्रिता इव भान्ति ते।
सर्वे एव तु विज्ञेया सोमाः पंचदशच्छदाः।
क्षीरकन्दलतावन्तः पत्रैर्नानाविधैः स्मृताः ॥२६॥
(सुश्रुतस० अ० २९)

" सभी सोमों के पंद्रह पत्तियाँ होती हैं, जो शुक्लपक्षमें बढकर कृष्णपक्ष में गिर जाती हैं। गिर चुकने पर प्रति दिन एक एक पत्ता उत्पन्न होता है और पूर्णिमा के दिन सोम-लता पंद्रह पत्तियों से युक्त होती है। पश्चात् प्रतिदिन एक एक पत्ती झडने लगती है और अमावास्या के दिन निरी लता ही शेष रहती है। ये सभी सोम भाँति भाँतिके रहने पर भी १५ पत्तियों से युक्त रहते हैं और सभी में दूधसा रस, कन्द, लता और विविध पत्तियाँ पाई जाती हैं।"

सोम की उत्पत्ति के स्थानों का भी वर्णन वहाँ पर किया है।

हिमवत्यर्बुदे सह्ये महेन्द्रमलये तथा।
श्रीपर्वते देवगिरौ गिरौ देवसहे तथा ॥२७॥
पारियात्रे च विन्ध्ये देवसुन्दे-ह्रदे तथा।
उत्तरेण वितस्तायाः प्रवृद्धा ये महीधराः ॥२८॥
पंच तेषामधो मध्ये सिन्धुनामा महानदः।
हठवत् प्लवते तत्र चन्द्रमाः सोमसत्तमः ॥२९॥
तस्योद्देशेषु चाप्यस्ति मुंजवानंशुमानपि।
काश्मीरेषु सरो दिव्यं नाम्ना क्षुद्रकमानसं ॥३०॥
गायत्र्यस्त्रैष्टुभः पांक्तो जागतः शांकरस्तथा।
अत्र सन्त्यपरे चापि सोमाः सोमसमप्रभाः ॥३१॥
(सुश्रुतसंहिता अ० २९)

" नीचे लिखे हुए स्थलों में सोम की उत्पत्ति होती है- हिमवान्, अर्बुद, सह्य, महेन्द्र, मलय, श्रीपर्वत देवगिरी, देवसह, पारियात्र, विन्ध्य, देवसुन्द तालाब, वितस्ता नदी के उत्तर में जो बडेबडे पहाड हैं। सिन्धुनद में और काश्मीर में जो क्षुद्रक मानस नामक सुन्दर झील है, वहाँ पर अन्य कई सोम जो चाँद के समान चमकीले हैं, पाये जाते हैं।

यहाँ पर सोम के चौबीस प्रकार होते हैं, ऐसा कह कर वे सभी नाम वेदविहित हैं, ऐसा प्रतिपादन किया है, पर स्वयं ऋग्वेद में ही वास्तव में दो और पर्याय के ढंग से पांच नाम पाये जाते हैं।

ध्यान में रखनेयोग्य विशेष उल्लेख है कि, सोम कन्द के रूप में पाया जाता है, और केले के कन्दवत् कन्दस्वरूप सोम यह वर्णन नया और सोम के स्वरूप को समझने के लिए अधिक उपयुक्त है।

इसी प्रकार सभी सोमवल्लियों की पंद्रह पत्तियाँ रहती हैं और चंद्र की क्षयवृद्धिके समान एक एक पत्ती क्रम से घटती और बढती जाती है। प्रत्येक प्रकार का सोम पंद्रह पत्तियों से युक्त रहता है और वह गोंद, कन्द तथा वल्लिके रूप में प्रकट होता है।

सोम के जन्मस्थानों का वर्णन करते समय सभी प्रांतों के स्थलों का उल्लेख किया है। पानीपर तैरनेवाला, वृक्षसे लटकनेवाले और भूमिपर उगनेवाला सोम बतलाया है।

सुश्रुतसंहिता में यह कल्पना कि, चन्द्रमा की कलाओं के समान ही घटबढनेवाली पत्तियों से युक्त सोमवल्ली रहती है, हमें देखने मिलती है। सोमरस के लिए सुवर्ण का बर्तन और सोमकंद को फोडने के लिए सोने की सूई ये बातें भी ऋग्वेद में सोम तथा सुवर्ण का जो संबंध प्रस्थापित हुआ, पाया जाता है, उस पर प्रकाश डालनेवाली हैं। इससे शंका होती है कि, उन दिनों में भी क्या सोम इतनी दुर्लभ वस्तु थी। हाँ, ऋग्वेद में कई जगह सोमलता का स्पष्ट निर्देश किया गया है। सोमलता के सभी विशेष गुण चन्द्रमा में पाये जाते हैं। चन्द्रमा की बदौलत मन हर्षित हो उठता है, उमंग की मात्रा बढ जाती है, समुद्र के जल की तरंग कीसी उठान होती है, विषयवासना उद्दीप्त हो जाती है, निद्रा अच्छी तरह आती है, वनस्पतियाँ बढने लगती हैं, मानव के दिल को हराभरा कर वह उसे युद्धादि कार्यों को अधिक सुचारु रूप से निभाने में प्रवृत्त करता है। चन्द्रमा एवं सोमलता में उपर्युक्त सभी बातें समान रूप से पाई जाती हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखकर चन्द्रमा तथा सोमवनस्पति के मध्य अभिन्न एकता मानने की ओर प्रवृत्त होना अत्यंत स्वाभाविक जान पडता है।

स्वर्ग से जब श्येन सोम को ले आ रहा था, तब धनुर्धारी कृशानु नामक एक गन्धर्व ने उसे एक बाण मारा। (ऋ० ४-२७)

पुराणों में अमृत लाने के संबंध में कथा पाई जाती है, ऋग्वेद में अनेक जगह उल्लेख मिलता है कि, श्येन अर्थात् बाजपक्षी स्वर्गसे सोम को भूमिपर लाया।
(देखो ऋग्वेद ३-४३-७,४-२६-६;८-९५-३)

कुछ स्थानोंपर ऋग्वेद में सोम को श्येनाभृत भी कहा है (ऋ० १-८०-२;८-९५-३.)। पर काव्यमय भाषामें अग्नि एवं इन्द्र के लिए भी श्येन शब्द प्रयुक्त हुआ है।

चन्द्रमा तथा सोम।

अर्वाचीन साहित्य में सोम से चन्द्रमा का बोध हुआ करता है, परन्तु ऋग्वेद में सोम का अर्थ चन्द्रमा करनेके लिये बहुत उपयुक्त स्थान पाये जाते हैं। चन्द्रमा प्रतिदिन घटता जाता है और देवतागण उसकी कलाओं का भक्षण करते हैं। पश्चात् वह फिर बढता है, जब कि उसे सूर्य की सहायता प्राप्त होती है। छान्दोग्य उपनिषद् (५।१०।१), ऐतरेय ब्राह्मण (७।११) तथा शतपथ ब्राह्मण (१।६।४।५) में सोम का अर्थ किया है चन्द्र। कौषीतकी ब्राह्मण के कथनानुसार (७।४०।४।४) यज्ञ में जिस लता या रस का ग्रहण करना हो, वह चन्द्रदेवता का प्रतीक है, ऐसा समझना चाहिए। ब्राह्मणग्रंथों में सभी जगह यों कहा है कि, पितर एवं देवतागण भक्षण करने में प्रवृत्त होते हैं, इसलिए चन्द्रमा का क्षय या घटाव होता है। ऋग्वेद के सूर्याविवाहसूक्त (१०।८५) से स्पष्ट है, सोम तथा चन्द्रमा की अभिन्नता से लोग परिचित थे और इसी सूक्त में उल्लेख पाया जाता है, नक्षत्रों के मध्य में सोम बैठा हुआ है। आगे चलकर कहा है कि, जो सोम ब्राह्मणों को ज्ञात है, उसे कोई नहीं खाता है और जिसे वे निचोडते हैं, वह अन्य ही है। चन्द्रमा का सोमत्व केवल ब्राह्मणों को ही ज्ञात है, इससे ज्ञात होता है, यह धारणा उन दिनों रूढ नहीं थी।

इस के सिवा ऐसा भी उल्लेख पाया जाता है कि, सोम के कारण समुद्रमें जल चढ आता है। उसी के कारण रात्रियों का निर्माण होता है। इस से ज्ञात होता है, सोमलता एवं चन्द्रमा की अभिन्नता चित्रित की गयी हो।

ब्राह्मणसदृश ग्रन्थों में और आगे दी हुई संहितांतर्गत आख्यायिका में सोम का अर्थ स्पष्टतया चन्द्रमा ऐसा किया है।

ऋग्वेद के अष्टम मंडल के ९१ सूक्त में वृद्ध कुमारी अपाला के जो मन्त्र हैं, उन से प्रतीत होता है, इंद्र सोम को पाने के लिए कितना लालायित रहा करता था।

सोम किस समय विनष्ट हुआ होगा?

अब यह एक जटिल समस्या उठ खडी होती है कि, यह इतना सुपरिचित सोम कब और कैसे विलुप्त हुआ होगा ? जिस सोम का सदैव उपयोग किया जाता था, जो हिमालयके मूजवत् पर्वतशिखर पर उत्पन्न होता था, तथा हिमाचल की तराइयों में विद्यमान शर्यणावत झील में पैदा होता था, वही सुतरां अलभ्य हो, यहाँ तक कि, उस के सम्बन्ध में सामान्य कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, इतना ही नहीं, अपितु ब्राह्मणग्रंथों में उस के प्रतिनिधि की योजना करनी पडी। यह अत्यन्त आश्चर्यजनक एवं विचारणीय घटना है।

शतपथ ब्राह्मण में (४-५-१०,१ से ६) स्पष्ट शब्दों में सोम के प्रतिनिधि का निर्देश किया हुआ है। परन्तु ऐतरेय ब्राह्मण (३५-३७) तथा तैत्तिरीय संहिता में उस के अलभ्यपन की सूचना मिलती है। सोम मोल लेने के अवसरपर उसे पाने के लिए छीनाझपटी करनी पडती थी, आदि बातों से साफ साफ पता चलता है कि, ब्राह्मणकाल में ही सोम दुर्लभ एवं अप्राप्य बन बैठा था।

यज्ञ के अतिरिक्त सोम का पान न किया जाय, यदि यज्ञ में सोम की त्रुटि प्रतीयमान हो, तो क्या किया जाय, उस के चुरा लेने पर क्या करना चाहिए, इत्यादि तैत्तिरीय ब्राह्मण में जो चर्चा की गयी है, उस से पता चलता है कि, सोम उस काल में प्रचुर मात्रा में नहीं उपलब्ध होता था।

यद्यपि ऋग्वेद में उल्लेख पाया जाता है कि, प्रतिदिन तीन बार सोम का विपुलतया उपयोग किया जाता था।

सोम के सम्बन्ध में विविध कल्पनाएँ।

अर्वाचीन युग में सोम के बारे में भाँतिभाँति की धारणाएँ प्रचलित हैं। तैत्तिरीय संहिता के आंग्लभाषानुवाद में ए. बी. कीथ महोदय सोम को सुरासदृश पदार्थ समझते हैं। वाट महोदय के कथनानुसार अफगानिस्थान के द्राक्ष का आसव ही सोमरस है। रायस की धारणा है कि, गन्ने का रसही सोमरस है। हिल ब्रण्ड्ट् कहता है, सोम एक तरह का शहद है। मधुरता के लिए जैसे अमृत, सुन्दरता का ज्यों कामदेव और सुखका प्रतीक जिसप्रकार स्वर्ग माना जाता है, उसी प्रकार सर्वोपरि पीनेयोग्य वस्तु का प्रतीक सोम है, ऐसी कुछ लोगों की राय है।

शतपथ ब्राह्मण में सोमके प्रतिनिधिके रूपमें दूर्वादलका उल्लेख किया है, (४. ५. १०. १ से ६) पर सुश्रुतसंहिता में उसे सोमके ही एक प्रकार के रूप में निर्दिष्ट किया है।

सोम तैयार करते समय उसमें सुवर्ण की धूलि डालते हैं। नवम मंडल में भी सोम एवं कांचन का संबंध प्रदर्शित किया है। सायणाचार्यजीने उसका विभिन्न अर्थ प्रस्तुत कर दिखाया है- हिरण्मये कोशे, तस्य हिरण्मयत्वं हिरण्यपाणिरभिषुणोति इति हिरण्यसंबंधात् ' (९-१-२; ९-७५-३)। सुश्रुत-संहितामें सोमविषयक जो अवतरण दिया जा चुका है, उस में सोम कन्द को तोडने के लिए सोने की सूई और सोमरस को रखने के लिए सुवर्ण का बना हुआ बर्तन सूचित किया है।

पञ्चजनों को प्रिय सोम।

गिरा यदी सबन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः।
परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् ॥ (ऋ. ९।१४।२)

(सबन्धवः) आपस में भाई भाई के समान बर्तनेवाले (पंच व्राताः) चार वर्ण और पांचवां निषाद ये पांच प्रकार के लोग (धर्णसिं) सब के धारक सोम को (गिरा परिष्कृण्वन्ति) स्तुति से शोभित करते हैं।

(मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। गायत्री)

रक्षोहा विश्वचर्षणिः अभि योनिं अयोहतं।
द्रुणा सधस्थं आसदत् ॥ (ऋ. ९।१।२)

यह सोम (रक्षो-हा) राक्षसों का नाश करनेवाला, (विश्व-चर्षणिः) सब मानवों का हितकारी है। वह सोम (अयोहतं) लोहे की कूटनी से कूटने के अथवा (द्रुणा) लकडी के दण्डे से कूटने के (सधस्थं योनिं) अपने निज स्थान के पास अथवा अपने खरल में (अभि-आ-सदत्) प्राप्त हुआ है।

यहां सोम को ' रक्षो-हा ' कहा है। सोम औषधि है। औषधि से जिन राक्षसों का नाश होता है, वे राक्षस रोगों के उत्पादक कृमि हैं। इस विषय में ' वैदिक चिकित्साशास्त्र ' नामक पुस्तक में तथा ' औषधि '

देवता के मंत्रों के विवरण में पाठक विस्तार से देख सकते हैं।

यह सोम ' विश्व-चर्षणि ' है, सब मानवों का हितकारी है। क्योंकि रोगनिवारण और बलवर्धन करके दीर्घायु और उत्साह बढाने के गुण इस औषधि में हैं और सब मानवों का हित करनेवाले हैं।

यह खरल में रखकर प्रथम लोहे की कुटणी से अथवा लकडी के दण्डे से कूटा जाता है। यहां ' अयः ' का अर्थ ' सुवर्ण ' मान कर कई लोग सुवर्ण से कूटा हुआ सोम अर्थात् सुवर्ण के आभूषण हाथ में धारण करके कूटा हुआ सोम ऐसा इसका अर्थ करते हैं। इसी तरह ' द्रुणा ' का अर्थ भी दूसरा ही करते हैं, पर वह दूर का सम्बन्ध होता है।

यह सोम रोगोत्पादक कृमियों का नाशक है, यह चिकित्सा की बात यहां स्पष्ट कही है।

वीर सोम।

(अवत्सारः काश्यपः । गायत्री)

योे जिनाति, न जीयते हन्ति शत्रुं अभीत्य। स पवस्व सहस्रजित् ॥ (ऋ. ९।५५।४)

जो सोम शत्रु को जीतता है, पर कभी शत्रुओं से पराभूत नहीं होता, यह सोम शत्रु का नाश करता है, वह सहस्रों शत्रुओं को जीतनेवाला है, वह स्वयं पवित्र होता है।

यहां सोम की ' वीर ' विभूति का वर्णन है, तथा-

पवस्व गोजित् अश्वजित् विश्वजित् सोम रण्यजित्। प्रजावत् रत्न आ भर ॥ (ऋ. ९।५९।१)

हे सोम वीर ! तू गौओंको, घोडों को, सब शत्रु को, युद्ध को जीतनेवाला है। तू विजय करके प्रजा के साथ रत्न हमें ला दे।

(गोतमो राहूगणः । त्रिष्टुप्)

सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तं आशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशत् अस्मै ॥ २० ॥

अषाळ्हं युत्सु पृतनासु पप्रिं स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम्। भरेषुजां सुक्षितिं सुश्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम ॥ २१ ॥

(ऋ. १।९१)

सोम गौ, चपल घोडे, वीर और (कर्मण्यं) पुरुषार्थी (सादन्यं) घर का यश बढानेवाले, (विदथ्यं) युद्ध में प्रवीण, (सभेयं) सभा में संमान प्राप्त करनेयोग्य, (पितृ-श्रवणं) पिता की कीर्ति बढानेवाले पुत्र को (ददाति) देता है।

(अ-साळ्हं) युद्ध में अजिंक्य, (पृतनासु पप्रिं) संग्रामों में से पार पहुंचानेवाला, (स्वर्षां अप्सां) जलों को प्राप्त करनेवाला, (वृजनस्य गोपां) पाप से बचानेवाला (भरेषुजां) संपत्तियों में उत्पन्न हुआ (सु-क्षितिं) उत्तम घरों से युक्त, (सुश्रवसं) यशस्वी (जयन्तं) विजयी तुझ को देखकर, हे सोम ! हम आनन्दित होंगे।

सर्वविजयी।

गोजिन्नः सोमो रथजित् हिरण्यजित् स्वर्जिद्ब्जित् पवते सहस्रजित्। यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदं स्वादिष्ठं द्रप्सं अरुणं मयोभुवम् ॥

(ऋ. ९।७८।४)

यह सोम गौ, रथ, सुवर्ण, स्वर्ग, जल और सहस्रों पदार्थों को जीतनेवाला है, यह सोम (पवते) छाना जा रहा है। इस स्वादु (मदं) आनंदवर्धक (अरुणं मयोभुवं) लाल वर्णवाले सुखकारक (द्रप्सं) प्रवाही पेय को देवोंने (पीतये) पीने के लिये अपना पेय बनाया। इस तरह का यह उत्तम पेय है।

प्रभावी वीर।

शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान् जेता पवस्व सनिता धनानि। तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्सु अषाळ्हः साह्वान् पृतनासु शत्रून् ॥

(ऋ. ९।९०।३)

(शूरग्रामः) शूरों के संघों का चालक, (सर्ववीरः) सर्व वीरों को पास रखनेवाला, (सहावान्) शक्तिमान्, (जेता) विजयी, (धनानि सनिता) धनों को जीत कर

बांटनेवाला, (तिग्म-आयुधः) तीक्ष्ण शस्त्रों को पास रखनेवाला, (क्षिप्र-धन्वा) धनुष्य को शीघ्र सज्ज करनेवाला (समत्सु असाळ्हः) युद्धों में शत्रु को असह्य होनेवाला (साह्वान्) शत्रु के हमले होने पर अपने स्थान को न छोडनेवाला यह वीर है।

सोमरस का सेवन करनेवाला वीर कैसा प्रभावी होता है, यह इस मंत्र में कहा है।

शूर वीर।

प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना। भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान् सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि धत्ते॥ (ऋ० ९।९६।१)

(सेनानीः शूरः) सेना चलानेवाला शूर वीर (गव्यन्) गौवों की प्राप्ति की इच्छा करके (रथानां अग्रे प्र एति) रथों के अग्रभाग में जाता है, तब (अस्य सेना हर्षते) इसकी सेना आनंदित होती है। (सखिभ्यः) अपने मित्रों के लिए (भद्रान् कृण्वन्) कल्याणकारक कर्म करता हुआ यह वीर (रभसानि वस्त्राणि आ धत्ते) पक्के रंगके वस्त्र धारण करता है।

जो वीर सेनाके आगे चलता है, उसपर सैनिक संतुष्ट रहते हैं। यह अपने लोगों को आनंद देता है और पक्के वस्त्र धारण करता है।

(अमहीयुरांगिरसः। गायत्री)

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा।
अवाहन् नवतीर्नव॥ (ऋ० ९।६१।१)

हे सोम! तू इस तरह प्रवाहयुक्त (परिस्रव) हो। तेरे आनन्द से आनंदित होकर इन्द्रने असुरोंके (नवतीः नव) न्यानवे नगर तोड डाले (अर्थात् असुरों के कीलों का नाश किया।

(असितः काश्यपः। गायत्री)

पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदसि।
यदीं ऋण्वन्ति वेधसः (ऋ० ९।७।५)

'(पवमानः) शुद्ध होनेवाला सोम (विशः राजा इव) प्रजाओं में जैसा राजा बैठता है, वैसा अपने (स्पृधः) स्पर्धा करनेवालों के ऊपर (अभि सीदसि) बैठता है, जब (वेधसः) ज्ञानी लोग (ऋण्वन्ति) उसे ऊपर लाते हैं।'

जिस तरह राजा उच्च स्थानपर विराजता है और अन्य लोग नीचे बैठते हैं, और शत्रुओं को भगाया जाता है, उस तरह सोम छाननी के ऊपर विराजता है और उस का रस नीचे जाता है।

(हिरण्यस्तूप आंगिरसः। गायत्री)

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः॥०॥ १
सना ज्योतिः सना स्वः विश्वा च सोम सौभगा॥०॥ २
सना दक्षं उत क्रतुं अप सोम मृधो जहि॥०
अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ३॥ (ऋ० ९।४।१-३)

'हे सोम! हमारे लिए (महिश्रवः) बडा यश (जेषि) जय करके प्राप्त कराओ। हमें प्रकाश, आत्मबल, और (विश्वा सौभगा) सब प्रकार के सौभाग्य दो। तथा हमें (दक्षं) चातुर्य, (क्रतुं) कर्तृत्व दो और (मृधः अप जहि) शत्रुओं का नाश कर हमें (वस्यसः कृधि) श्रेय से युक्त कर।

(अजीगर्तिः शुनःशेपः। गायत्री)

एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः।
पवमानः सिषासति॥ (ऋ० ९।३।४)

'(शूरः सत्वभिः यन् इव) वीर अपने सैनिकों के साथ शत्रुपर हमला करने के लिए जाने के समान यह (पवमानः) शुद्ध होनेवाला सोम (विश्वानि वार्या) सब स्वीकार करनेयोग्य धन (सिषासति) जीत कर प्राप्त करता है।

(मेधातिथिः काण्वः। गायत्री।)

गोषा इन्दो नृषा असि अश्वसा वाजसा उत।
आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः॥ (ऋ० ९।२।१०)

'हे (इन्दो) सोम! तू (पूर्व्यः यज्ञस्य आत्मा) तू यज्ञ का पुरातन आत्मा है, वह तू (गो-षा) गौ देनेवाला, (नृ-षा) वीर पुरुष देनेवाला, (अश्व-सा) घोडे देनेवाला और (वाज-सा) अन्न अथवा बल देनेवाला है।'

शत्रुनाश।

सोम राक्षसों, असुरों, द्वेषियों और शत्रुओं को दूर करता है, इस विषय में कहा है-

जहि विश्वा अप द्विषः। इन्दो ! (ऋ. ९-८-७)
' हे सोम ! तू सब द्वेषियों का नाश कर। '
पवमान ! विश्वा अप द्विषो जहि।
(ऋ. ९-१३-७)

उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रुषु।
पवमान विदा रयिम् ॥ ६ ॥
नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं नि शुष्मं नि वयः तिर।
दूरे वा सतो अन्ति वा ॥७॥ (ऋ. ९-१९)

(अप-तस्थुषः) जो दूर हैं, वे हमारे (उपाशिक्ष) पास आ जाय, हमारे मित्र बनें, शत्रुओं में (भियसं आ धेहि) भय बढे, क्योंकि हे सोम ! तू (रयिं विद्) धन देनेवाला, विजय देनेवाला तू ही है। (शत्रोः वृष्ण्यं) शत्रु का बल घटाओ, (शुष्मं नि) शत्रु सामर्थ्य नष्ट कर, (वयः नितिर) शत्रु का आयु तथा उत्साह दूर कर, फिर वे शत्रु हम से दूर हों वा पास हों।

सोमः पवित्रे अर्षति
निघ्नन् रक्षांसि देवयुः। (ऋ. ९-१७-३; ९-५६-१)

सोम (पवित्रे) छाननी पर पहुंचता है और (रक्षांसि) राक्षसों का (निघ्नन्) नाश करता है और (देव-युः) देवता के साथ सम्बन्ध जोडता है। तथा-

यत् ते शुष्मासः असृक्ष्रन् रक्षो भिन्दन्तः अद्रिवः।
नुदस्व या परिस्पृधः। (ऋ. ९-५३-१)

जो सोम के (शुष्मासः) बल हैं, वे (रक्षः भिन्दन्तः) राक्षसों का नाश करते हैं और (परि-स्पृधः) स्पर्धा करनेवाले शत्रुओं को (नुदस्व) दूर भगाते हैं।

अपघ्नन् पवते मृधो अप सोमो अराव्णः।
(ऋ. ९-६१-२५)

यह सोम (मृधः) शत्रुओं का और (अ-राव्णः) खानेवालों का, दूसरों को न देते हुए स्वयं भोगियों का नाश करता है।

वेति द्रुहो, रक्षसः पाति, जागृविः।
(ऋ. ९-७१-१)

' द्रोही शत्रुओं को भगाता है और राक्षसों से रक्षा करता है, ऐसा प्रभाववान् जागृत सोम यह है।

सोमः सुषुतः परिस्रव अप अमीवा भवतु रक्षसा सह॥
(ऋ. ९-८५-१)

' सोमरस निकाला है। यह (अमीवाः) आमजन्य रोगबीज (रक्षसा सह अप) रोगकृमियों के साथ दूर करता है।

यहां ' रक्षस् ' का अर्थ ' रोगबीजरूप सूक्ष्म कृमि ' यह निश्चित हुआ, क्योंकि ये राक्षस (अमीवा) आमसे उत्पन्न हुए रोगबीजों के साथ दूर होते हैं। इसलिये आमजन्य रोगबीज और रोगकृमिरूप राक्षस साथ रहनेवाले रोगोत्पादक सूक्ष्म बीज है।

रुजा दृळ्हा चित् रक्षसः सदांसि।
(ऋ. ९-९१-४)

" राक्षसों के सुदृढ स्थानों का नाश कर " यह वर्णन चिकित्सा की दृष्टि से स्थायी रोगबीजों के नाश का भाव बताता है।

सनेमि कृध्यस्मदा रक्षसं कंचिदत्रिणम्।
अपादेवं द्वयुं अंहो युयोधि नः (ऋ. ९।१०४-६)
सनेमि त्वमस्मादा अदेवं कंचिदत्रिणम्।
साह्वां इन्दो परिबाधो अप द्वयुम् ॥
(ऋ. ९-१०५-६)

(अत्रिणं रक्षसं) खानेवाले राक्षस अर्थात् रोगबीज को (अ-देवं) इंद्रियों के घातक (द्वयुं अंहः) शत्रु की सहायक होनेवाले पापी को (नः युयोधि) हम से दूर कर। सोम यह सब करता है।

यहां ' अत्रिन् ' का अर्थ रुधिर अथवा मांस खानेवाले रोगबीजरूपी कृमि हैं, ' रक्षस् ' भी वैसे ही रोग बढानेवाले हैं, (अ-देवं) देव इंद्रियां हैं, उन की क्षीणता करनेवाले रोगबीज हैं, (अंहः) पाप से होनेवाले रोगबीज है, (द्वयुः) दोनों घातक साधनों का समान प्रयोग करनेवाले रोगबीज हैं। इन का नाश सोमरस करता है।

(दृढच्युतः आगस्त्यः गायत्री)
विश्वा रूपाणि आविशन् पुनानः याति हर्यतः।
यत्र अमृतास आसते ॥ (ऋ. ९-२५-४)

यह सोम (पुनानः) छाना जाने के बाद अनेक रूपों में प्रविष्ट होता है, जहां अमर देव रहते हैं।

अमर देवताओं के अंश सब अवयवों और इन्द्रिय-स्थानों में रहते हैं। सोमरस पीने के बाद वह उन इंद्रियों में पहुंचता है और उनको उत्तेजित करता है। यही भाव निम्नलिखित मंत्र में है—

एष सूर्यमरोचयत् पवमानो विचर्षणिः।
विश्वा धामानि विश्ववित्॥ (९-२८-५)

यह सोमरस विशेष स्फूर्ति देनेवाला है, उसने सूर्य को प्रकाशित किया और सब धामों को उत्तेजित किया है। देवों के जो जो स्थान-इंद्रियस्थान हमारे शरीर में हैं, वहां जाकर यह उत्तेजना देता है। शरीर में सूर्य नेत्रस्थान में है। उसे इस की उत्तेजना मिलती है।

सोमरस वज्र जैसा है।

आत् सोम इंद्रियो रसः वज्रः सहस्रसा भुवत्॥
(ऋ. ९-४७-३)

यह सोमरस (इंद्रियः) इंद्र के लिये अथवा इंद्रियों की शक्ति बढाने के लिये है, यह सहस्र शक्तिवाले वज्र जैसा सामर्थ्य बढानेवाला है।

कलावान् सोम।

नानानं वा उ नो धियो, वि व्रतानि जनानाम्।
तक्षा रिष्टं, रुतं भिषक्, ब्रह्मा सुन्वन्तं इच्छति०॥१
जरतीभिः ओषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम्।
कर्मारो अश्मभिः द्युभिः, हिरण्यवन्तं इच्छति० ॥२॥
कारुः अहं, ततो भिषक्, उपलप्रक्षिणी नना।
नानाधियो वसूयवो, अनु गा इव तस्थिम० ॥३॥
अश्वो वोळ्हा सुखं रथं, हसनां उपमन्त्रिणः।
शेपो रोमण्वन्तौ भेदौ, वार इन्मण्डूक इच्छति।
इन्द्राय इन्दो परिस्रव॥ ४॥ (ऋ. ९-११२)

(नः धियः नानानं) हमारी बुद्धियां विविध हैं, तथा (जनानां व्रतानि वि) लोगों के कर्म भी विभिन्न हैं। (तक्षा रिष्टं) तरखाण साफ लकडी चाहता है, (भिषक् रुतं) वैद्य रोगी को ढूंढता है, (ब्रह्मा सुन्वन्तं इच्छति) याजक यज्ञकर्ता की इच्छा करता है॥१॥ (जरतीभिः ओषधीभिः) परिपक्क औषधियों के साथ वैद्य, (शकुनानां पर्णेभिः) पक्षियों के विविध रंगों के पंखों के साथ कारीगर, (द्युभिः अश्मभिः कर्मारः) चमकीले रत्नों के साथ सुनार (हिरण्यवन्तं इच्छति) धनिक को चाहता है॥२॥ मैं स्वयं (कारुः अहं) कारीगर हूं, (ततः भिषक्) मेरा पिता वैद्य है, (नना उपलप्रक्षिणी) मेरी माता चक्की पीसती है, हम सब (नानाधियः) विविध प्रकार की बुद्धियों से युक्त हैं, पर सब (वसूयवः) धन कमाने के इच्छुक हैं, (गाः इव अनुतस्थिम) गौवों के समान अनुकूलता से इकट्ठे रहते हैं और अपने काम का अनुष्ठान करते हैं॥३॥ (वोळ्हा अश्वः) रथ खींचनेवाला घोडा (सुखं रथं) सुख से खींचा जानेवाला रथ चाहता है, (उपमंत्रिणः हसनां) साथ काम करनेवाले हंसी खेल करना चाहते हैं, (शेपः रोमण्वन्तौ भेदौ) तरुण तरुणी को चाहता है, (मण्डूकः वार इच्छति) मेंडक जल चाहता है। हे (सोम) कलावान् पुरुष ! (इंद्राय) परम ऐश्वर्यवान् के लिये ही (परि स्रव) चारों ओर से अपने कला-रस का प्रवाह पहुंचाओ।

' सोम, इन्दु ' का पर्याय ' कलानिधि, कलावान् ' है। जो कलाओं से (Arts & Crafts से) युक्त होता है, वह कलावान् अर्थात् कारीगर कहलाता है। सोम का यह कलावान् (Artist) अर्थ यहां लेना चाहिये। हे इंदो, सोम=कलानिधे) कारीगर ! तू (इन्द्राय) इंद्र के लिये अर्थात् (इदि परमैश्वर्ये) परम ऐश्वर्यवान् के लिये उस परम धनी के उपयोग में आनेवाले पदार्थ निर्माण करने के हेतु से अपनी कला का प्रवाह (परिस्रव) प्रवाहित करो।

इस अर्थ को लेकर पूर्वोक्त चारों मंत्रों का अर्थ किया जाय, तो अर्थ की ठीक संगति लगती है। सब युरोपीयन पंडित लिखते हैं कि, यह मंत्रभाग ' इन्द्रायेन्दो परिस्रव ' यह इन चार मंत्रों में अप्रासंगिक है। देखिये-

The hymn appears to be an old popular song transformed into an address to soma, by attaching to each stanza a refrain which has no connection with the subject of the song. (R. T. H. Griffith, RigVeda Vol. II, Page 380)

इसी तरह मराठी अनुवादकर्ता श्री सिद्धेश्वरशास्त्री

चित्रावजीने भी यह मन्त्रभाग प्रसंगहीन है, ऐसा लिखा है। ये सब विद्वान इन चार मंत्रों के इस मन्त्रभाग को अप्रासंगिक कहते हैं। पर हमारा विश्वास है कि, 'सोम' के श्लेष अर्थ से यह मन्त्रभाग यहां सुसंगत है। तखाण, सुनार, लुहार, वैद्य, विद्वान्, तथा अन्यान्य लोग अपनी कारीगरी का प्रवाह ऐश्वर्यवान् के पास पहुंचा देवें।

जब 'कारीगर' ही सोम होगा, तो उसका सोमरस कारीगरी अथवा 'कुशलता' होगी, ब्रह्मा जब सोम कहलायेगा, तब उसका सोमरस 'ब्रह्मज्ञान' होगा। जब वैद्य सोम होगा, तब उसका सोमरस 'चिकित्सा' होगा। इस तरह अन्यान्य श्लेषार्थों के विषय में जानना चाहिये।

आशा है कि, पाठक इस तरह इन सोमसूक्तों में जो अन्यान्य श्लेषादि अर्थ हैं, उनका विचार करें और ज्ञान प्राप्त करें।

पुरातन पिता।

पवित्रवन्तः परि वाचमासते पितैषां प्रत्नो अभि रक्षति व्रतम्। महः समुद्रं वरुणस्तिरो दधे धीरा इत् शेकुर्धरुणेष्वारभम्॥

(ऋ. ९।७३।३)

(पवित्रवन्तः वाचं परि आसते) सोम को छाननेवाले स्तुति करते हुए बैठते हैं, इस समय (एषां प्रत्नः पिता) इनका पुरातन पिता (व्रतं अभिरक्षति) यज्ञ की रक्षा करता है। (वरुणः) वरुणने (महः समुद्रं तिरो दधे) बडे अन्तरिक्षरूपी महासागर को ढांक दिया है, अर्थात् उसने सब आकाश व्याप लिया है, (धीराः इत् शेकुः) बुद्धिमान् ज्ञानीहि समर्थ हुए और उन्हों ने (धरुणेषु आरभं) आधारों पर सोमरस छानने का कार्य किया है।

यज्ञ में ऋत्विज सोमरस छानते हैं, वेदमंत्रों से स्तुति होती रहती है। सर्वव्यापक ईश्वर की भक्ति चलती है। ऐसे समय सोमरस छाना जाकर तैयार होता है।

प्रभु के गुप्त दूत।

सहस्रधारेऽव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः। अस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदे पदे पाशिनः सन्ति सेतवः॥

(ऋ. ९।७३।४)

(ते असश्चतः मधुजिह्वाः) वे रस पृथक् होकर तथा मधुर बनकर (सहस्रधारे अव समस्वरन्) हजारों धाराओं द्वारा नाद करते हुए नीचे चूते थे। (अस्य भूर्णयः स्पशः) इसके पार्थिव सेवक (न निमिषन्ति) कभी आंख बंद करके चुप नहीं रहते, प्रत्युत (पदे पदे) प्रतिपद में (पाशिनः) हाथ में पाश लिये (सेतवः सन्ति) मर्यादा बांधकर रहते हैं।

सोमरस की धाराएं छाननी के नीचे सहस्रों धाराओं से गिरती हैं। मानो ये परमेश्वर की मधुर जिह्वायें ही हैं। इसी प्रभु के हजारों गुप्त दूत हाथ में पाश लिये, दुष्टों को पकडने के लिये, आंख न बंद करते हुए चारों ओर पद-पद में खडे हैं, इन्होंने अपनी मर्यादा निश्चित की है, उसके बाहर जो जाता है, उसे वे अपने पाशों से बांध देते हैं।

तप का महत्त्व।

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः। अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत् समाशत॥ (ऋ. ९।८३।१)

हे (ब्रह्मणस्पते) ज्ञान के स्वामिन्! (ते पवित्रं विततं) तेरा पवित्रता का साधन फैला है। तू सब का (प्रभुः) स्वामी, प्रभु, होकर (गात्राणि विश्वतः परि एषि) सब अवयवों, सब वस्तुओं में व्यापक होता है। (अतप्त-तनूः) जिसने तप नहीं किया, वे (तत् आमः न अश्नुते) उस सुख को प्राप्त नहीं कर सकते, पर (शृतासः इत्) जो परिपक्व हुए हैं, वे सत्पुरुष (वहन्तः तत्) उसे धारण करते हुए (सं आशत) मिलकर बैठते हैं, अर्थात् वे ही आनन्द लाभ करते हैं।

प्रभु परमेश्वर सर्वत्र है, उसका पवित्रता का साधन सर्वत्र है। पर जो तप नहीं करते, वे उसे प्राप्त नहीं कर सकते, जो तप करके परिपक्व बनते हैं, वे उसको अच्छी तरह धारण करते हैं।

त्रिभुवनों का अधिष्ठाता।

आ यः तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति। कृण्वन् संचृतं विचृतं अभिष्टय इन्दुः सिषक्ति उषसं न सूर्यः॥ (ऋ. ९।८४।२)

(यः सोमः) जो सोम (विश्वानि भुवनानि) सब भुवनों का (आ तस्थौ) अधिष्ठाता हुआ है, वह (अमर्त्यः) अमर सोम (तानि परि अर्षति) उन भुवनों के चारों ओर रहता है। यह प्रभु सब के (अभिष्टये) हित के लिये (संचरं विचरं कृण्वन्) संयोग और वियोग करता है, वही जैसा सूर्य उषाके साथ आता है, वैसा वह भी सब के साथ रहता है।

यहां सर्वव्यापक प्रभुको सोम कहा है, क्योंकि जैसा इस सोमवल्ली के रस पीने से आनन्द प्राप्त होता है, उसी तरह प्रभुका भक्तिरस पीनेसे परम आनन्द प्राप्त होता है।

देवों के गुह्य नाम।

हरिः सृजानः पथ्यां ऋतस्य इयर्ति वाचं अरितेव नावम्।
देवो देवानां गुह्यानि नामा आविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे॥ (ऋ. ९-९५-२)

(अरिता नावं इव) मल्लाह नौका को चलाता है, वैसा (हरिः सृजानः) हरे रंग के पत्तोंवाला सोम (ऋतस्य पथ्यां) सत्य के मार्ग को प्रेरित करनेवाले (वाचं इयर्ति) सन्देशवाणी को चलाता है। यह देवों के सब गुप्त नामों को (बर्हिषि प्रवाचे) यज्ञ में प्रवक्ता के लिये (आविष्कृणोति) प्रकट करता है।

सोम से सोमयाग सिद्ध होता है, जो सत्यधर्म का प्रवर्तक है। देवों की गुह्य शक्तियां उन के नामों से प्रकट कर के वह सोम इस यज्ञद्वारा गुप्त ज्ञान का आविष्कार करता है।

उन्नति की इच्छा।

अजीतयेऽहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते। तदुशन्ति विश्व इमे सखायः तदहं वश्मि पवमान सोम ॥ ४ ॥ (ऋ. ९।९६)

(अ-जीतये) पराभव न होने के लिये अर्थात् विजय के लिये (अ-हतये) अमरपन के लिये, (स्वस्तये) कल्याण के लिये, (सर्वतातये) सर्वत्र फैलने के लिये (बृहते) महत्त्व के लिये (इमे विश्वे सखायः) ये सब मित्र (उशन्ति) इच्छा करते हैं, (तत् अहं वश्मि) मैं भी यही चाहता हूं।

सब लोग अपना विजय, अमरपन, कल्याण, विस्तार और महत्त्व चाहें। कभी इस के विपरीत, हीन अवस्था न चाहें।

सहस्रों का नेता।

ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम्। तृतीयं धाम महिषः सिषासन् त्सोमो विराजं अनु राजति ष्टुप् ॥
(ऋ. ९-९६-१८)

(ऋषि-मनाः) ऋषि के समान मनवाला, (ऋषिकृत्) ऋषियों का निर्माण करनेवाला, (स्वर्षाः) तेजस्वी (सहस्र-नीथः) हजारों का नेता, (कवीनां पद-वी) कवियों का मार्गदर्शक है, वह (तृतीयं धाम सिषासन्) तृतीय धाम में विराजने की इच्छा करता हुआ (महिषः) महनीय होकर वह सोमवीर (विराजं अनुराजति) विशेष तेजस्वी होने के लिये प्रकाशता है।

सरलता, सत्य और श्रद्धा।

ऋतं वदन् ऋतद्युम्न सत्यं वदन् सत्यकर्मन्।
श्रद्धां वदन् सोम राजन् धात्रा सोम परिष्कृतः॥
(ऋ. ९-११३-४)

हे (ऋत-द्युम्न) सत्य के तेज से युक्त ! तू सरल बोलता है, (हे सत्य-कर्मन्) सत्य कर्म करनेवाले ! तू सत्य बोलता है, हे सोम राजन् ! तू श्रद्धायुक्त भाषण करता है, हे सोम ! (धात्रा) धाताने तुझे (परिष्कृतः) सुसंस्कृत बनाया है।

इस मंत्रमें सरलता, सत्य और श्रद्धा का महत्त्व कहा है।

यम का राज्य।

यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः।
यत्रामूर्यह्वतीरापः तत्र माममृतं कृधि ॥
(ऋ. ९-११३-८)

जहां विवस्वान का पुत्र (यम) राज्य करता है, जहां (दिवः अवरोधनं) द्युलोक का न दीखनेवाला स्थान है, जहां ये पानी के प्रवाह चलते हैं, वहां (मां अमृतं कृधि) मुझे अमर कर।

यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः।
लोका यत्र ज्योतिष्मन्तः तत्र माममृतं कृधि ॥
(ऋ. ९।११३।९)

(दिवः त्रिनाके त्रिदिवे) द्युलोक के तीसरे विभाग में (यत्र) जहां (अनुकामं चरणं) इच्छा के अनुसार गमन किया जा सकता है, जहां (ज्योतिष्मन्तः लोकाः) तेजस्वी लोक हैं, वहां मुझे अमर कर।

यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रध्नस्य विष्टपम्।
स्वधा यत्र च तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधि ॥
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते।
कामस्य यत्राप्ताः कामाः तत्रमाममृतं कृधि ॥
(ऋ. ९।११३।१०-११)

(यत्र) जहां (कामाः निकामाः) सकाम कर्म करनेवाले और निष्काम कर्म करनेवाले, (यत्र ब्रध्नस्य विष्टपं) जहां मूल आधार का स्थान है, जहां (स्वधा) अपनी धारक शक्ति और अपनी तृप्ति प्रकट होती है, वहां मुझे अमर कर।

जहां आनन्द, उल्हास, हर्ष और प्रमोद होते हैं, जहां (कामस्य कामाः आप्ताः) वासना के भी सब काम सफल होते हैं, वहां मुझे अमर कर।

अनेक सूर्य हैं।

सप्त दिशो नाना सूर्याः सप्त होतारो ऋत्विजः।
देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष नः।
(ऋ. ९।११४।२)

(सप्त दिशः) सातों दिशाओं में नाना सूर्य हैं, यज्ञ में सात ऋत्विज हैं, आदित्य देव भी सात हैं, हे सोम ! इन सब से हमारी रक्षा कर।

(प्रगाथो घौरः। त्रिष्टुप्।)

अपाम सोमं अमृता अभूम अगन्म ज्योतिः
अविदाम देवान्। किं नूनमस्मान् कृणवदरातिः
किमु धूर्तिः अमृत मर्त्यस्य ॥ (ऋ. ८।४८।३)

(सोमं अपाम) हमने सोमरस पीया है, (अमृता अभूम) हम अमर हुए हैं, (ज्योतिः अगन्म) हमने प्रकाश प्राप्त किया है, (देवान् अविदाम) हमने देवों को जान लिया है, अब (अरातिः किं नु कृणवत्) शत्रु हमारा क्या करेगा? (धूर्तिः किं उ) धूर्त भी हमारा क्या करेगा ?

सोमकी कथाएँ।

सोम के संबंध में कुछ कथाएँ नीचे बानगी के तौरपर दी जाती हैं-

(१) सोम का क्षय से पीडित होना।

तैत्तिरीय संहिता में निम्नलिखित प्रकार यह कथा दीखती है-

प्रजापतेस्त्रयस्त्रिंशद् दुहितर आसन्, ताः सोमाय राज्ञेऽददात्, तासां रोहिणीमुपैत्, ता ईर्ष्यन्तीः पुनरगच्छन्, ता अन्वैत्, ताः पुनर-याचत, ता अस्मै न पुनरददात्, सोऽब्रवीत्, ऋतममीष्व यथा समावच्छ उपैष्यामि, अथ ते पुनः दास्यामि इति, स ऋतमामीत्, ता अस्मै पुनरददात्, तासां रोहिणीमेवोपैत्, तं यक्ष्म आर्च्छत्, राजानं यक्ष्म आरदिति, तद्राजयक्ष्म-स्य जन्म। ... वरं वृणामहै, समावच्छ एव न उपाय इति, तस्मा एतमादित्यं चरुं निरवपन् तेनैवैनं पापात् स्रामादमुञ्चन्० ।(तै० सं० २।३।५)

प्रजापति की तैंतीस कन्याओं का ब्याह सोमराजा से निष्पन्न हुआ, पर सोम रोहिणी से अधिक प्रेम करने लगे, जिस के फलस्वरूप अन्य बहनें क्रुद्ध हो, पिता के निकट चली गयीं। जब सोम शपथ खा चुका कि, मैं अब सब पर समान रूप से प्रेम करूँगा, तभी प्रजापति ने उन्हें सोमके निकट लौट जाने दिया। सोम का स्वभाव ज्यों का त्यों रहा और अतिविषयलंपटता के कारण राजयक्ष्मा नामक दुर्धर रोग से वह पीडित हो गया। अब सोम अन्य स्त्रियों से क्षमा की याचना करने लगा। उन्हों ने उसे प्रणबद्ध करा के रोग हटाने के लिए आदित्य को आहुतियाँ दे दीं जिस पर आदित्य ने उसे रोगमुक्त कर दिया।

(२) शंड, मर्क एवं सोम।

बृहस्पतिर्देवानां पुरोहित आसीत्, शण्डामर्कौ असुराणां, ब्रह्मण्वन्तो देवा आसन्, ब्रह्मण्वन्तो असुराः, ते अन्योन्यं नाशक्नुवन्नभिभवितुं, ते देवाः शण्डामर्कावुपामन्त्रयन्त, तावब्रूतां, वरं वृणावहै, ग्रहावेव नावत्रापि गृह्येतामिति, ताभ्यामेतौ शुक्रामन्थिनौ अगृह्णन्, ततो देवा अभवन् पराऽसुरा ॥ (तै. सं. ६।४।१०)

जिस प्रकार देवताओं के बृहस्पति उसी प्रकार असुरों के बुद्धिमान् पुरोहित शंड एवं मर्क नामक थे। जब दोनों दलों में एक भी परास्त न हो रहा था, तो देवताओं ने

सोम का प्रलोभन देकर शंड तथा मर्क को अपने दल में मिला लिया। अब असुरों की हार हुई। आगे चलकर जब देवों ने यज्ञ का प्रारम्भ किया, तब पूर्ववचनानुसार शुक्र तथा मांथी नामक बर्तनों में रखा हुआ सोमरस पीने को मिलेगा, इस आशा से शंड तथा मर्क उस यज्ञ भूमि में आ उपस्थित हुए। पर जो देव उन विश्वासघातियों को प्रवेश देने के विरुद्ध थे, उन्हों ने दोनों को अपमानित कर वहाँ से हटाया। (तै. सं. ६-४-१०)

(३) सावित्री का सोम से ब्याह।

सोम को पैदा कर चुकने पर प्रजापति ने तीनों वेदों का सृजन किया, पर सोमने वे वेद अपनी हथेलीमें ढक दिये। प्रजापति की दुहिता सावित्री चाहती थी कि, सोम उसका पति बने। पर सोम श्रद्धानामक प्रजापति की अन्य कन्या पर मुग्ध हुआ। अपने पिता के निकट चले जाकर सावित्री ने सोम से पाणिग्रहण करने की अपनी अभिलाषा व्यक्त कर दी। प्रजापति भली भाँति जानते थे कि, सोम किस पर आसक्त है। अतः उसने वशीकरणप्रयोग करने की इच्छा से स्थागरवनस्पति के सौरभपूर्ण चूर्ण को अभिमंत्रित कर उसके माथे पर तिलक के रूप में अंकित किया। सावित्री के सोम के निकट चले जाने पर उसे देख कर सोम मंत्रमुग्ध हो, उससे चाटुकारिता की बातें करने लगा। सोम के सच्चे प्रेम की ठीक ठीक जाँच करवाने के हेतु उसने सोम से कहा कि, यदि वह एकनिष्ठ रहेगा और अपनी मुष्टि में छिपायी वस्तु को उसे साफ साफ बतलायेगा, तो ही वह उसके निकट आयेगी। सोम प्रेम से पागल बन चुका था, इसलिए ये सारी बातें उसने चुपचाप मान लीं और अपने हाथ में विद्यमान तीनों वेद सदर्प उसे प्रदान किये। दोनों का विवाह पूर्ण हुआ और वे सुखपूर्वक जीवन बिताने लगे। जो स्त्रियाँ चतुर हों, उनकी दशा सावित्री जैसे हुआ करती है। (तै. ब्राह्मण २-३-११)

(४) गायत्री सोम लायी थी।

सोमो वै राजा गन्धर्वेषु आसीत्, तं देवाश्च ऋषयश्चाभ्यध्यायन्, कथमयमस्मान्त्सोमो राजागच्छेदिति ? सा वागब्रवीत्, स्त्रीकामा वै गंधर्वा, मयैव स्त्रीभूतया पणध्वमिति। नेति देवा अब्रुवन्, कथं वयं त्वदृते स्यामेति ? साब्रवीत्क्रीणीतैव, यर्हि वाव वो मयार्थो भविता, तर्ह्येव वोऽहं पुनरागन्तास्मीति,तथेति। गन्धर्वेषु हि तर्हि वाग्भवति......०॥

(ऐ. ब्रा. १।२७)

सभी देवता तथा ऋषि आदि सोचने लगे कि, किस भाँति सोम अपने यज्ञमें उपस्थित किया जाय, क्योंकि वह गन्धर्वों में रहता था। सोमरस पाने के लिए देवता अत्यधिक लालायित हो उठे थे, अतः वे खूब प्रयत्न करने लगे। उन्हें विदित हुआ कि गन्धर्व नारियों को बहुत चाहते हैं। उन्होंने वाणी को गन्धर्वों के निकट भेज दिया। वह गायत्रीसदृश छन्दों के रूप में पहुँचकर और पंछी का रूप धारण कर वहाँ से सोम लायी। श्येनपंछी पैर में रख सोम लाया आदि कथाएँ, इसी तरह की हैं। अतः सोमाहरणविषयक सूक्तों को सौपर्णसूक्त कहने की प्रणाली है। (ऐतरेय ब्रा० १.२७;३.२५;२-२५;१.१२)

(५) सोम के लिए घुडदौड।

देवा वै सोमस्य राज्ञोऽग्रपेये न समपादयन्, अहं प्रथमः पिबेयं, अहं प्रथमः पिबेयं, इत्येवाकामयन्त। ते संपादयन्तोऽब्रुवन्, हन्ताजिमयाम, स यो न उज्जेष्यति, स प्रथमः सोमस्य पास्यतीति, तथेति। त आजिमयुः,तेषामाजिं यतामभिसृष्टानां वायुर्मुखं प्रथमः प्रत्यपद्यत, अथेन्द्रो,ऽथ मित्रावरुणावश्विनौ। सो वेदिन्द्रो वायुमुद्धेजयतीति, तमनुपरापतत्, ... ते एषामेते यथोजितं भक्षा इन्द्रवाय्वोः प्रथमोऽथ मित्रावरुणयोरथाश्विनोः स एष इन्द्रतुरीयो ग्रहो गृह्यते० (ऐ० ब्रा० २।२५)

एक समय यज्ञमें सोमरसके सेवनार्थ देवतागणमें प्रतिद्वन्द्विता होने लगी। उन्होंने ठान लिया कि, घुडदौड में जिसे सफलता मिलेगी, वही सोमपान करे। अन्तमें इन्द्र एवं वायु प्रथम श्रेणीमें आये, पश्चात् मित्रावरुण इत्यादि वर्णन है। ईशान्य दिशा सोमापहरण के लिए अच्छी, क्योंकि उसी दिशा में देवतागण असुरोंपर विजयी हुआ।

(ऐ० ब्रा० २-२५)

(६) विश्वन्तर का सोमयज्ञ।

ऐतरेय ब्राह्मण में (३५-३७) सोम के बारेमें एक

चमत्कृतिजनक कथा है,जिसमें चार वर्णोंके लिए चार विभिन्न सोमों का प्रतिपादन किया है। संक्षेप में वह यों है-

विश्वंतरो ह सौषद्मनः श्यापर्णान् परिचक्षाणो विश्यापर्णं यज्ञमाजन्हे, तद्धानुबुध्य श्यापर्णास्तं यज्ञमाजग्मुस्ते ह तदन्तर्वेद्यासां चक्रिरे। तान्ह दृष्ट्वोवाच, पापस्य वा इमे कर्मणः कर्तार आसतेऽपूतायै वाचो वदितारो यच्छ्यापर्णा इमानुत्थापयतेमे मेऽन्तर्वेदिमासिषतेति, तथेति, तानुत्थापयांचक्रुस्ते होथाप्यमाना रुरुविरे; ये तेभ्यो भूतवीरेभ्य...... कस्वित्सोऽस्माकास्ति वीरो य इमं सोमपीथमभिजेष्यतीति, अयमहमस्मि यो वीर इति होवाच रामो भार्गवेयो...... तेषां होत्तिष्ठतामुवाचापि नु राजन्नित्थं विदं वेदेरुत्थापयन्तीति यस्त्वं कथं वेत्थ ब्रह्मबन्धविति ॥

यत्रेन्द्रं देवताः पर्यवृञ्जन् ...तत्रेन्द्रः सोमपीथेन व्यार्ध्यत, इन्द्रस्यानु क्षत्रं सोमपीथेन व्यार्धत...तद्व्यद्धमेवाद्यापि क्षत्रं सोमपीथेन, स यस्तं भक्षं विद्यादः क्षत्रस्य सोमपीथेन व्युद्धस्य, येन क्षत्रं समृध्यते, कथं तं वेदेरुत्थापयन्तीति, वेत्थ ब्राह्मण त्वं तं भक्षाम्। वेद्हीति तं वै नो ब्राह्मण ब्रूहीति तस्मै वै ते राजन्निति होवाच।... यदि सोमं ब्राह्मणानां स भक्षो ब्राह्मणांस्तेन भक्षेण जिन्विष्यसि ब्राह्मणकल्पस्ते प्रजायामाजनिष्यत आदाय्यापाय्यावसायी यथाकामप्रयाप्यो यदा वै क्षत्रियाय पापं भवति...ईश्वरो हास्माद्वितीयो वा ...अथ यदि दधि वैश्यानां स भक्षो वैश्यांस्तेन भक्षेण जिन्विष्यसि, ... यद्यपः शूद्राणां स भक्षः शूद्रांस्तेन भक्षेण जिन्विष्यसि... अथास्यैष स्वो भक्षो न्यग्रोधस्यावरोधाश्च फलानि चौदुम्बराण्याश्वत्थानि... श्यापर्ण उ मे यज्ञ इति एतमु हैव प्रोवाच॥

(ऐ० ब्रा० ७।२७-३४)

यज्ञमें श्यापर्णों की ओर ध्यान न देकर विश्वन्तरने विश्यापर्णों को बुलवाया, पर यज्ञ का समाचार पाकर श्यापर्ण भी अनाहूत होते हुए भी वहाँ जा बैठे। जब नरेश उन्हें हटाने लगा, तो खलबली मचने लगी। श्यापर्ण ने प्रश्न उठाया, क्या कोई उनमें शूर वीर नहीं, जो राजाको अपने अधीन कर लेगा। राम भार्गवेय नामक एक नवयुवक आगे बढकर राजा से पूछने लगा-

" क्या तू मुझ जैसे ज्ञानी का भी तिरस्कार करता है?

" अरे पागल! भला तू क्या जानता है?

" लेकिन क्या तू सुननेयोग्य दशा में है?

" सुननेयोग्य कौनसी बात तुम्हारे समीप है?

" बिना सुने कैसे वह समझ में आयेगी?

" क्या तू जानता है, इन्द्र को सोम देना निषिद्ध हुआ है?

" हाँजी। इन्द्र को सोम देना क्यों रोक दिया?

" उसने पाँच अपराध किये हैं इसलिए।

" यदि इन्द्रको सोम नहीं, तो उसके अनुयायी-क्षत्रियोंको वह कैसे भला मिल सकता है?

" हाँ, बिलकुल ठीक। अब आगे किसी को सोम नहीं।

" पर इन्द्र जैसा वीर बिना सोम पिये कैसे रहेगा? वह यज्ञ में बलात् घुसकर सोम पी जाता है।

" महाराज! हम क्षत्रिय भला उस योग्यता को क्या जानें?

" पर बिना सोम के क्षत्रियों को स्फूर्ति कैसे आयेगी?

" क्षत्रियों के बल को बढानेवाला सोम मुझे विदित है।

" कहिए श्रीमन्! हम क्षत्रियों का उद्धार कीजिए।

" सोमवल्ली केवल ब्राह्मणों के उपयोग के लिए ही है। यदि तुम सोमवल्ली का उपयोग करने लगोगे, तो तुम्हारी प्रजा ब्राह्मणों के समान दानप्रतिग्रह लेनेवाली, घूमनेवाली, गरीब तथा युद्धकार्य के लिए अत्यंत निरुपयुक्त बन जायगी।

" फिर क्षत्रियों का बडप्पन अक्षुण्ण कैसे रहेगा?

" वैश्यों का सोम दधि हैं। उसे खाने से क्या वैश्य जैसी सन्तान होगी?

" इस भाँति दुर्बलता, परमात्मा करे, हमारी संतान को कभी न आ जाय।

" शूद्र जाति के लिए जल ही सोम है। उस का उपयोग करनेपर दासमनोवृत्ति एवं चाटुकारिता से पूर्ण

प्रजा का उत्पादन होगा।

" छीः छीः। ऐसा पतन हमारा कभी न होवे ! ! !

" यदि सच्चा क्षत्रिय उत्पन्न हो, संसारपर उसे अपनी धाक जमाकर बैठानी हो, तो बडकी शाखाएँ, औदुंबर, पिप्पल या प्लक्ष पेडों से यज्ञ किया जाय। आया समझ में ?

" महाराज ! यह कहकर आपने क्षत्रियजातिपर बडा भारी उपकार किया है। अब आप श्यापर्णसहित मेरे यज्ञ में आ जाएँ और उसे यथावत् पूरा कर लेवें।

पश्चात् श्यापर्ण यज्ञ में आए और उन्होंने यज्ञकी पूर्णता निष्पन्न कर दी।

इस कथा से भी सोम के बारे में उस समय क्या दशा थी, इसपर अच्छा प्रकाश पडता है।

सोम की कथाओं का मनन।

ऊपर सोम की छः कथाएं दी हैं। पर ये सब सोमवल्ली की नहीं हैं। पहिली कथा सोम की अर्थात् चन्द्रमा की है। यह एक लाक्षणिक कथा है। बहु स्त्रीसेवन से क्षयरोग होने की सम्भावना होती है। इत्यादि भाव इस कथा से मिलता है। सूर्यप्रकाश क्षयरोग का निवारण करता है, यह भी इस में तात्पर्य है। अर्थात् यह कथा सोमवल्ली की नहीं है।

दूसरी ' शण्ड-मर्क ' की कथा है। असुरों में जब तक ब्रह्मविद्या थी, (ब्रह्मण्वन्तः) तबतक वे परास्त नहीं हुए, जब असुरोंने ब्रह्मविद्या-वेदविद्या का त्याग किया, यज्ञ करना छोड दिया, तब देवोंने असुरों को परास्त किया। इस से ब्रह्मविद्या, वेदविद्या, यज्ञविद्या, और सोमविद्या से विजय प्राप्त हो सकता है, यह सिद्ध किया है।

इन विद्याओं में विजय की बातें हैं, इनको यथावत् जानने से और योग्य अनुष्ठान से विजय प्राप्त हो सकता है। विजय के इच्छुक इस का अवश्य विचार करें।

तीसरी कथा सावित्री के विवाह की है। सावित्री सविता की पुत्री सोम से अर्थात् चन्द्रमा से ब्याही है। यह सूर्यासावित्री के विवाह का कथाभाग ऋ० १०।८५ और अथर्व. १४।१ में है। पर इसमें और इस तै० ब्रा० की कथा में थोडासा हेरफेर है। वास्तव में यह कथा केवल रूपकात्मक है। प्रेमपूर्वक विवाह किस तरह करना चाहिये, इस का उपदेश इस कथा से मिलता है। यह सोम चन्द्रमा है और इस सोम का सोम-औषधि से कोई सम्बन्ध नहीं है।

चतुर्थ कथा गायत्री सोम लायी, यह है। यहां गायत्री छंद के मंत्र सोमको यज्ञशाला में लाने के समय पढे जाते हैं, इस विधि पर यह कथा रची है। यत्न कर के धार्मिक इष्ट की प्राप्ति करनी चाहिये, यही उपदेश इस कथा से मिलता है।

पांचवी कथा घुडदौड में प्रथम आनेवालों को सोम पीने के लिये दिया जाता है। इस भाव की है। बडे परिश्रम होने पर पीनेयोग्य सोमपान है, यह इस से सिद्ध होता है। श्रमपरिहार करनेवाला पेय सोमपान है।

छठी कथा में क्षत्रियों की उन्नति का विचार किया है। ब्राह्मणों जैसे नरम मनवाले क्षत्रिय न हों, प्रत्युत क्षत्रिय वीरवृत्तिवाले स्वराज्य बढानेवाले बनें। यह इस कथा का आशय स्पष्ट है। सोमपान ऐसे क्षत्रिय करें कि, जो वीर क्षत्रिय हैं। उक्त कथाओंमें इससे अधिक कुछ उपदेश होंगे, तो उस का आविष्कार खोजपूर्वक करना चाहिये। सोमसावित्री के विवाह का मूल वेद में हमें मिला है। अन्य कथाओं का मूल वेद के मंत्रभाग में कहां है और उस का वहां आशय क्या, यह देखना चाहिये। अन्य कथाओं का मूल संहिता के मंत्रों में आवश्य होगा, ऐसा हमारा ख्याल है। यह एक खोज करनेयोग्य विषय है।

आगे का कर्तव्य।

सोम के विषय में ये संहिता के मंत्र हमने पाठकों के सामने रखे हैं। भूमिका में कुछ वक्तव्य जो इस समय रखनेयोग्य प्रतीत हुआ, वह इस लेखद्वारा पाठकों के सन्मुख रख दिया है।

मंत्रों के अर्थों की परिपूर्ण संगति लगाने के बाद और जो वक्तव्य होगा, वह विस्तारपूर्वक पाठकों के सन्मुख रखा जायगा। वेदका विषय बहुत ही खोज होनेके बाद सुव्यवस्था से पाठकों के सन्मुख प्रकट होगा, तब तक जितना व्यक्त हो रहा है, उतना ही हम प्रकट कर रहे हैं।

यहां जो वेदविद्या के विषय में प्रेम रखते हैं, उन पर एक बडी भारी जिम्मेवारी है, वह यह है कि, वे एक ४।५ औषधिविद्याविशारद विद्वानों का मण्डल कायम करें कि, जो सोम की खोज करें। यह खोज घर में बैठते हुए नहीं हो सकती है। इस के लिये कई वर्ष हिमालय में गुजारने होंगे। मूंजवान् आदि पर्वतशिखरों पर जाकर सुश्रुत में

कहे चिन्हों से युक्त २४ प्रकार के सोम का पता लगाना चाहिये। कई क्षुद्र सोम तो अन्य पर्वतों पर भी मिल सकते हैं। जो मुख्य और श्रेष्ठ सोम है, वह हिमालय की ऊंची से ऊंची चोटीपर प्राप्त होगा। इस कार्य के लिये सहस्रों रु० का व्यय हो जाय, तो कोई अधिक नहीं है। हमने इस व्यय का अंदाजा लगाया नहीं है, पर पांच औषधिशास्त्रज्ञ अच्छे उत्साही पुरुष पांच वर्ष खोज करते रहे और अविरत परिश्रम करते रहे, तो दस हजार रु. से कम व्यय नहीं होगा। संभव है कि, प्रथम वर्ष ही इस औषधि का पता लगे और अधिक व्यय करना न पडे। पर करना पडे तो उस व्यय के प्रबंध का विचार पहिले से ही करके रखना चाहिये।

वेद की मुख्य वस्तु '**सोम औषधि**' है। यह शतपथ, ऐतरेय के समय से दुष्प्राप्य हुई थी। तब से इतने राजा, महाराजा सनातनधर्म में हुए, पर किसी ने दस-बीस हजार रु. इस खोज के लिये खर्च नहीं किये। इस समय बडे बडे धुरंधर वैद्य भारत में विद्यमान हैं, वे आर्य-वैद्यक के औषध बनाते और लाखों रु. कमाते भी हैं। पर आर्यवैद्यक में जो जीवनीय औषध है, उनमें से बहुत से औषध दुष्प्राप्य मानकर ही वे च्यवनप्राश आदि पाक बनाते हैं और भोले लोग उन का सेवन करते हैं। पर सामूहिक रूप से उक्त औषधियों को प्राप्त करने का यत्न ये वैद्य नहीं करते। यदि करेंगे, तो हिमालय उक्त औषधियां उनको अवश्य प्रदान करेगा।

सोम औषधि के कई प्रकार हैं। सुश्रुत ने तो २४ प्रकार के सोम बताये हैं। पत्तों का रस और कंद का रस या दुग्ध लेने की विधि ऊपर बताई है। सोमरस में सुवर्ण का वर्ख या बारीक चूर्ण जो रस के साथ मिल सकता है, सेवन करने की विधि पूर्वस्थान में बताई है। सोम कूटनेके समय कूटनीके नीचे लोहेकी कूटनी पर सोने का आवरण होना चाहिये, ऐसा प्रतीत होता है। यह विधि अन्वेष्टव्य है, पर इतनी बात सत्य है कि, सोमरस के साथ अल्प अंश से सुवर्ण का सेवन होता था।

सोम के कन्द का रस निकालने के लिये सोने की सुई लेनी है और उस से कन्द में सुराख निकाल कर वह दूध या रस सुवर्ण के पात्र में लेने का है। यह दूध के साथ तथा शहद के साथ सेवन करना होता है। यहां सुवर्ण का प्रयोग विशेष महत्व का है। निरर्थक नहीं।

यह सोमरस दीर्घायु, बल, आरोग्य, ओज, उत्साह, रोगदूरीकरण की शक्ति, वीर्यवृद्धि, शुक्र-शोणित वृद्धि करके नवजीवन देनेवाला है। वेद जो कई नई बातें बताता है, उनमें से सोम औषधि का स्थान बडा प्रमुख है। इस सोम पर इतना बडा काव्य वेद में मिलता है, वेदमंत्रों की पूर्ण संख्या के करीब दसवां भाग अकेले सोमदेवता के लिये वेद में रखा है। वेद की दृष्टि से इस का इतना महत्व है। अतः इस औषधि की खोज होना अत्यंत आवश्यक है।

इस खोज के लिये जो भी धन लगे, वैदिकधर्मियों को लगाना चाहिये और सोम वनस्पति की प्राप्ति अवश्य करनी चाहिये। हिमालयमें तथा जहां जहां सोम मिलता है, ऐसा आर्षग्रंथोंमें लिखा है, वहां जाकर खोज करनेसे पांच-दस वर्षोंके यत्नसे निःसंदेह यह औषधि प्राप्त होगी।

इस समय जर्मनों ने तथा अन्यान्य खोजकर्ताओं ने एक प्रकार की सोम करके वनस्पति प्राप्त की है और वह सैकडों मन प्रतिवर्ष हिमालय से युरोप में जाती भी है। इसका सत् निकाल कर वह बाजारों में बहुत ही मूल्य से बिकता है। इस विषय में हम चाहते हैं कि, निश्चित रूप से हमें ज्ञान हो, पर इस समय वह हमें नहीं मिल सकता, जब उस ज्ञान की प्राप्ति होनेयोग्य समय आवेगा, उस समय हम इस संबंध का संपूर्ण ज्ञान पाठकोंके सम्मुख रखेंगे। यह यूरोप में भेजी जानेवाली वनस्पति काश्मीर से लेकर ब्रह्मदेश तक व्यापनेवाले हिमालय की चोटी से प्राप्त होती है और इसका गुण भी नवतारुण्य देना है, अर्थात् जीवनीय गुण इसमें है।

यदि युरोपीयन लोग ऐसी वनस्पतियों की खोज हिमालय में कर सकते हैं, तो वेद को अपना धर्मग्रंथ माननेवाले भारतीय विद्वान् क्यों नहीं कर सकते? यह उत्तरदायित्व भारतीयों पर है, इतना पाठकों से निवेदन करके इस भूमिका की समाप्ति करते हैं।

औंध, (जि. सातारा) निवेदनकर्ता
ता. २२।७।४२. **श्रीपाद दामोदर सातवलेकर,**
अध्यक्ष-स्वाध्याय-मंडल, औंध

सोम-देवता का परिचय।

१	अमरकोश में सोम।	पृष्ठांक ३
२	निघण्टु में सोम।	५
३	निरुक्त में सोम।	,,
४	ब्राह्मण ग्रंथों में सोम।	,,
५	सोम के उत्पत्ति-स्थान।	७
६	द्युलोक तथा सोम।	,,
७	सोम का स्थान।	८
८	पर्वत पर सोम।	,,
९	पत्तों के साथ सोम।	९
१०	सोम का वर्ण।	,,
११	सोम में विद्यमान गुण।	,,
१२	स्वर्गीय अमृत।	,,
१३	वीर्यवर्धक सोम।	,,
१४	सोम तारुण्य देता है।	१०
१५	बल की वृद्धि।	,,
१६	सोम का विद्युत्तेज।	,,
१७	सोम से सबको लाभ।	,,
१८	सोम की रुचि।	,,
१९	सोम तथा सुरा।	,,
२०	सोम तैयार करने की प्रणाली।	११
२१	छलनी कैसे रहे?	,,
२२	सोमरस की छाननी।	,,
२३	तीन छाननियाँ।	१२
२४	गौका चर्म।	१३
२५	सोम के साथ मिलानेयोग्य वस्तुएँ।	,,
२६	सोम में दूध मिला दो।	,,
२७	सोम में शहद मिला दो।	१४
२८	सोम में दही मिला दो।	,,
२९	वैद्यशास्त्र में सोम।	१७
३०	चन्द्रमा तथा सोम।	१९
३१	सोम किस समय विनष्ट हुआ होगा?	२०
३२	सोम के सम्बन्ध में विविध कल्पनाएँ।	,,
३३	पञ्च जनों को प्रिय सोम।	,,
३४	वीर सोम।	पृष्ठांक २१
३५	सर्वविजयी।	,,
३६	प्रभावी वीर।	,,
३७	शूर वीर।	२२
३८	शत्रुनाश।	,,
३९	सोमरस वज्र जैसा है।	२४
४०	कलावान् सोम।	,,
४१	पुरातन पिता।	२५
४२	प्रभु के गुप्त दूत।	,,
४३	तप का महत्त्व।	,,
४४	त्रिभुवनों का अधिष्ठाता।	,,
४५	देवों के गुह्य नाम।	२६
४६	उन्नति की इच्छा।	,,
४७	सहस्रों का नेता।	,,
४८	सरलता, सत्य और श्रद्धा।	,,
४९	यम का राज्य।	,,
५०	अनेक सूर्य हैं।	२७
५१	सोम की कथाएँ।	,,
५२	सोम का क्षय से पीडित होना।	,,
५३	शंड, मर्क एवं सोम।	,,
५४	सावित्री का सोम से ब्याह।	२८
५५	गायत्री सोम लायी थी!	२९
५६	सोम के लिये घुड़दौड़।	,,
५७	विश्वन्तर का सोमयज्ञ।	,,
५८	सोम की कथाओं का मनन।	३०
५९	आगे का कर्तव्य	,,

सोम-देवता के मंत्र।

१	पुनरुक्त-मन्त्रभागाः।	पृष्ठ ७७-९५
२	उपमा-सूची।	९६-९९
३	वर्णानुक्रम-सूची।	१००-११०
४	गुणबोधक-पदसूची।	१११-१३४
५	निपात-देवतानां वर्णानुक्रमसूची।	१३४-१३५
६	ऋग्वेदीय-सर्वानुक्रमण्यनुक्त-देवता-तद्विशेष-सूची	१३६

सोमदेवता-मंत्रों की ऋषिसूची।

मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । १-१० ।
रेणुर्वैश्वामित्रः । ६२०-२९ । ऋषभो वैश्वामित्रः । ६३०-३८ ।
प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा । ९५६-५९ ।
विश्वामित्रो गाथिनः । ५८०-८२; ११२४-२६ ।
विश्वामित्र-जमदग्नी । १२३९ । मेधातिथिः काण्वः । ११-२० ।
मेध्यातिथिः काण्वः । २९०-३०७ ।
कण्वो घौरः । ८२३-२७; १०९८-११०० ।
प्रगाथो घौरः काण्वः । ११३५-४९ । प्रस्कण्वः काण्वः ८२८-३२ ।
पर्वतनारदौ काण्वौ । ९७४-८५ ।
शुनःशेप आजीगर्तिः, कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । २१-३० ।
हिरण्यस्तूप आंगिरसः । ३१-४० । ६१०-१९ ।
नृमेध आंगिरसः । २०६-११, ११८-२३ ।
प्रियमेध आंगिरसः । २११-१७ । बिंदुरांगिरसः । २२४-२९ ।
प्रभूवसुरांगिरसः । २५४-६५ । रहूगण आंगिरसः । २६६-७७ ।
बृहन्मतिरांगिरसः । २७८-८९ । अयास्य आंगिरसः ३०८-३२५ ।
उचथ्य आंगिरसः । ३४१-५५ । अमहीयुरांगिरसः । ३८८-४१७ ।
पवित्र आंगिरसः । ५८९-९९; ६४८-५६; ७०६-१० ।
हरिमंत आंगिरसः । ६३९-४७ । कुत्स आंगिरसः । ९०१-१४ ।
उरुरांगिरसः । १०२९-३० । ऊर्ध्वसद्मा आंगिरसः । १०३३-३४ ।
कृतयशा आंगिरसः । १०३५-३६ । शिशुरांगिरसः । १०७९-८२ ।
गृत्समद आंगिरसः । १११७-२२ ।
असितः काश्यपो देवलो वा । ४१-१९३ ।
दृळहच्युत आगस्त्यः । १९४-९९ ।
इध्मवाहो दार्ढच्युतः । २००-२०५ ।
गोतमो राहूगणः । २३०-३५, ५७४-७६; ११०१-२३ ।
श्यावाश्व आत्रेयः । २३६-४१ ।
त्रित आप्त्यः । २४२-५३; ९६०-६७ ।
द्वित ,, । ९६८-७३ ।
कविर्भार्गवः । ३२६-४०; ६६६-९० ।
जमदग्निर्भार्गवः । ४१८-४७; ५८३-८५; ११५९ ।
वेनो भार्गवः । ७१६-२७ । कृत्नुर्भार्गवः । ११५०-५८ ।
अवत्सारः काश्यपः । ३५६-८७ । निध्रुविः काश्यपः । ४४८-७७ ।
कश्यपो मारीचः । ४७८-५०७; ५७१-७३; ८०६-१७ ।
१०८३-९७ । रेभसूनू काश्यपौ । ९२७-४३ ।
भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । ५०८-३७ ।
शतं वैखानसाः । ५३८-५५, ५५९-६७ ।
अग्निः पवमानः । ५५६-५८ । अग्निर्भौमः । ५७७-७९ ।
भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । ५६८-७०, १११३-२६ ।

वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । ५८६ ८८; ८००-८०५; ८५७-५९,;
११३२-३४ ;१२२९ । वासिष्ठ इंद्रप्रमतिः । ८६०-६२ ।
वासिष्ठो वृषगणः । ८६३-६५ । वासिष्ठो मन्युः । ८६६-६८ ।
वासिष्ठ उपमन्युः । ८६९-७१ । वासिष्ठो व्याघ्रपाद् ८७२-७४ ।
वासिष्ठः शक्तिः ८७५-७७; १०२८; १०३९-४१ ।
वासिष्ठः कर्णश्रुद् । ८७८-८० । वासिष्ठो मृळीकः । ८८१-८३ ।
वासिष्ठो वसुक्रः । ८८४-८६ । वत्सप्रिर्भालंदनः । ६००-६०९ ।
कक्षीवान्दैर्घतमसः । ६५७-६५ । वसुर्भारद्वाजः । ६९१-७०५ ।
ऋजिश्वा भारद्वाजः । १०३१-३२ । गर्गो भारद्वाजः । ११२७-३१ ।
पायुर्भारद्वाजः । १२२७-२८ । वाच्यः प्रजापतिः । ७११-१५ ।
अकृष्टा माषाः । ७२८-७३७ । अकृष्टामाषादयस्त्रयः । ७५८-६७ ।
सिकता निवावरी । ७३८-४७ । पृश्नयोऽजाः । ७४८-५७ ।
भौमोऽत्रिः । ७६८-७२ । गृत्समदः शौनकः ७७३-७५ ।
उशना काव्यः । ७७६-९९ । नोधा गौतमः । ८१८-२२ ।
दैवोदासिः प्रतर्दनः । ८३३-५६ । दैवोदासिः परुच्छेपः । १११६ ।
पराशरः शाक्त्यः । ८८७-९०० । गौरवीतिः शाक्त्यः १०२६-२७ ।
अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिश्वा भारद्वाजश्च । ९१५-२६ ।
अन्धीगुः श्यावाश्विः । ९४४-४६ ।
ययातिर्नाहुषः । ९४७-४९ । नहुषो मानवः । ९५०-५२ ।
चक्षुर्मानवः । ९८९-९१ । मनुः सांवरणः । ९५३-५५ ।
मनुराप्सवः । ९९२-१०४ ।
अग्निश्चाक्षुषः । ९८६-८८; ९९५-९९ ।
सप्तर्षयः (१ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, २ कश्यपो मारीचः,
३ गोतमो राहूगणः, ४ भौमोऽत्रिः, ५ विश्वामित्रो गाथिनः,
६ जमदग्निर्भार्गवः ७ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः) १०००-१०२५ ।
ऋणंचयो राजर्षिः । १०३७-३८ ।
अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वरयः । १०४२-६३ ।
त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः । १०६४-७५ ।
अनानतः पारुच्छेपिः । १०७६-७८ । ब्रह्मा ११८९ ।
ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा । ११६०-७० ।
सूर्या सावित्री ऋषिका । ११७१-७५; १२३८ ।
अथर्वा । ११७६-८६; ११९०; १२४४-६० ।
बृहद्दिवोऽथर्वा । ११८७ । शुक्रः । ११८८ । बृहच्छुक्रः १२६१ ।
वैवस्वतो यमः । १२३० । देवश्रवा यामायनः । १२३१ ।
मथितो यामायनः, भृगुर्वारुणिर्वा, भार्गवश्च्यवनो
वा । १२३४ । पतिवेदनः । १२३५, १२४३ ।
बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः । १२३६-३७ ।
चातनः । १२४०-४१ । भृग्वंगिराः । १२४२ ।

ॐ

दैवत-संहिता ।

[ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।]

३ सोमदेवता ।

॥ १ ॥ (ऋ. ९ । १ । १—१०)

(१—१०) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः १
रक्षोहा विश्वचर्षणि—रभि योनिमयोहतम् । द्रुणा सधस्थमासदत् २
वरिवोधातमो भव मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः । पर्षि राधो मघोनाम् ३
अभ्यर्ष महानां देवानां वीतिमन्धसा । अभि वाजमुत श्रवः ४
त्वामच्छा चरामसि तदिदर्थं दिवेदिवे । इन्दो त्वे न आशसः ५ ५
पुनाति ते परिस्रुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता । वारेण शश्वता तना ६
तमीमण्वीः समर्य आ गृभ्णन्ति योषणो दश । स्वसारः पार्ये दिवि ७
तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो धमन्ति बाकुरं दृतिम् । त्रिधातु वारणं मधु ८
अभीममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् । सोममिन्द्राय पातवे ९
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा विश्वा वृत्राणि जिघ्नते । शूरो मघा च मंहते १० १०

॥ २ ॥ (ऋ. ९ । २ । १—१०)

(११-२०) मेधातिथिः काण्वः ।

पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या । इन्द्रमिन्दो वृषा विश १
आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः । आ योनिं धर्णसिः सदः २
अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः । अपो वसिष्ट सुक्रतुः ३
महान्तं त्वा महीर—न्वापो अर्षन्ति सिन्धवः । यद्गोभिर्वासयिष्यसे ४
समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः । सोमः पवित्रे अस्मयुः ५ १५
अचिक्रदद् वृषा हरि—र्महान् मित्रो न दर्शतः । सं सूर्येण रोचते ६
गिरस्त इन्दु ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुम्भसे ७ १७

तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे । तव प्रशस्तयो महीः ८
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयु — र्मध्वः पवस्व धारया । पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ९
गोषा इन्दो नृषा अ — स्यश्वसा वाजसा उत । आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः १०

॥ ३ ॥ (ऋ. ९ । ३ । १—१०)

(२१—३०) आजीगर्तिः शुनःशेपः, कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः ।

एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति । अभि द्रोणान्यासदम् १
एष देवो विपा कृतो ऽति ह्वरांसि धावति । पवमानो अदाभ्यः २
एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः । हरिर्वाजाय मृज्यते ३
एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः । पवमानः सिषासति ४
एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति । आविष्कृणोति वग्वनुम् ५
एष विप्रैरभिष्टुतो ऽपो देवो वि गाहते । दधद् रत्नानि दाशुषे ६
एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया । पवमानः कनिक्रदत् ७
एष दिवं व्यासरत् तिरो रजांस्यस्पृतः । पवमानः स्वध्वरः ८
एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रे अर्षति ९
एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः । धारया पवते सुतः १०

॥ ४ ॥ (ऋ. ९ । ४ । १—१०)

(३१—४०) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ।

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । अथा नो वस्यसस्कृधि १
सना ज्योतिः सना स्व१ — र्विश्वा च सोम सौभगा । अथा नो वस्यसस्कृधि २
सना दक्षमुत क्रतु — मप सोम मृधो जहि । अथा नो वस्यसस्कृधि ३
पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे । अथा नो वस्यसस्कृधि ४
त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः । अथा नो वस्यसस्कृधि ५
तव क्रत्वा तवोतिभि — र्ज्योक् पश्येम सूर्यम् । अथा नो वस्यसस्कृधि ६
अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम् । अथा नो वस्यसस्कृधि ७
अभ्य१र्षानपच्युतो रयिं समत्सु सासहिः । अथा नो वस्यसस्कृधि ८
त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान विधर्मणि । अथा नो वस्यसस्कृधि ९
रयिं नश्चित्रमश्विन — मिन्दो विश्वायुमा भर । अथा नो वस्यसस्कृधि १०

॥ ५ ॥ (ऋ. ९ । ६ । १—९)

(४१—१९३) असितः काश्यपो देवलो वा ।

मन्द्रया सोम धारया　वृषा पवस्व देवयुः　। अव्यो वारेष्वस्मयुः　१
अभि त्यं मद्यं मद—मिन्दविन्द्र इति क्षर　। अभि वाजिनो अर्वतः　२
अभि त्यं पूर्व्यं मदं　सुवानो अर्ष पवित्र आ　। अभि वाजमुत श्रवः　३
अनु द्रप्सास इन्दव　आपो न प्रवतासरन्　। पुनाना इन्द्रमाशत　४
यमत्यमिव वाजिनं　मृजन्ति योषणो दश　। वने क्रीळन्तमत्यविम्　५　४५
तं गोभिर्वृषणं रसं　मदाय देववीतये　। सुतं भराय सं सृज　६
देवो देवाय धारये—न्द्राय पवते सुतः　। पयो यदस्य पीपयत्　७
आत्मा यज्ञस्य रंह्या　सुष्वाणः पवते सुतः　। प्रत्नं नि पाति काव्यम्　८
एवा पुनान इन्द्रयु—र्मदं मदिष्ठ वीतये　। गुहा चिद्दधिषे गिरः　९

॥ ६ ॥ (ऋ. ९ । ७ । १—९)

असृग्रमिन्दवः पथा　धर्मन्नृतस्य सुश्रियः　। विदाना अस्य योजनम्　१　५०
प्र धारा मध्वो अग्रियो　महीरपो वि गाहते　। हविर्हविष्षु वन्द्यः　२
प्र युजो वाचो अग्रियो　वृषाव चक्रदद्वने　। सद्माभि सत्यो अध्वरः　३
परि यत्काव्या कवि—र्नृम्णा वसानो अर्षति　। स्वर्वाजी सिषासति　४
पवमानो अभि स्पृधो　विशो राजेव सीदति　। यदीमृण्वन्ति वेधसः　५
अव्यो वारे परि प्रियो　हरिर्वनेषु सीदति　। रेभो वनुष्यते मती　६　५५
स वायुमिन्द्रमश्विना　साकं मदेन गच्छति　। रणा यो अस्य धर्मभिः　७
आ मित्रावरुणा भगं　मध्वः पवन्त ऊर्मयः　। विदाना अस्य शक्मभिः　८
अस्मभ्यं रोदसी रयिं　मध्वो वाजस्य सातये　। श्रवो वसूनि सं जितम्　९

॥ ७ ॥ (ऋ. ९ । ८ । १—९)

एते सोमा अभि प्रिय—मिन्द्रस्य काममक्षरन्　। वर्धन्तो अस्य वीर्यम्　१
पुनानासश्चमूषदो　गच्छन्तो वायुमश्विना　। ते नो धान्तु सुवीर्यम्　२　६०
इन्द्रस्य सोम राधसे　पुनानो हार्दि चोदय　। ऋतस्य योनिमासदम्　३
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो　हिन्वन्ति सप्त धीतयः　। अनु विप्रा अमादिषुः　४
देवेभ्यस्त्वा मदाय कं　सृजानमति मेष्यः　। सं गोभिर्वासयामसि　५　६३

पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः । परि गव्यान्यव्यत ६
मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो सखायमा विश ७ ६५
वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि । सहो नः सोम पृत्सु धाः ८
नृचक्षसं त्वा वय—मिन्द्रपीतं स्वर्विदम् । भक्षीमहि प्रजामिषम् ९

॥ ८ ॥ (ऋ. ९ । ९ । १—९)

परि प्रिया दिवः कवि—र्वयांसि नप्त्योर्हितः । सुवानो याति कविक्रतुः १
प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहे । वीत्यर्ष चनिष्ठया २
स सूनुर्मातरा शुचि—र्जातो जाते अरोचयत् । महान् मही ऋतावृधा ३ ७०
स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रुहः । या एकमक्षि वावृधुः ४
ता अभि सन्तमस्तृतं महे युवानमा दधुः । इन्दुमिन्द्र तव व्रते ५
अभि वह्निरमर्त्यः सप्त पश्यति वावहिः । क्रिविर्देवीरतर्पयत् ६
अवा कल्पेषु नः पुम—स्तमांसि सोम योध्या । तानि पुनान जङ्घनः ७
नू नव्यसे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः । प्रत्नवद् रोचया रुचः ८ ७५
पवमान महि श्रवो गामश्वं रासि वीरवत् । सना मेधां सना स्वः ९

॥ ९ ॥ (ऋ. ९ । १० । १—९]

प्र स्वानासो रथा इवा—ऽर्वन्तो न श्रवस्यवः । सोमासो राये अक्रमुः १
हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गभस्त्योः । भरासः कारिणामिव २
राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते । यज्ञो न सप्त धातृभिः ३
परि सुवानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा । सुता अर्षन्ति धारया ४ ८०
आपानासो विवस्वतो जनन्त उषसो भगम् । सूरा अण्वं वि तन्वते ५
अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः । वृष्णो हरस आयवः ६
समीचीनास आसते होतारः सप्तजामयः । पदमेकस्य पिप्रतः ७
नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुश्चित् सूर्ये सचा । कवेरपत्यमा दुहे ८
अभि प्रिया दिवस्पद—मध्वर्युभिर्गुहाहितम् । सूरः पश्यति चक्षसा ९ ८५

॥ १० ॥ (ऋ. ९ । ११ । १—९)

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ इयक्षते १
अभि ते मधुना पयो ऽथर्वाणो अशिश्रयुः । देवं देवाय देवयु २
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते । शं राजन्नोषधीभ्यः ३ ८८

बभ्रवे नु स्वतवसे ऽरुणाय दिविस्पृशे । सोमाय गाथमर्चत ४
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन । मधावा धावता मधु ५ ९०
नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन । इन्दुमिन्द्रे दधातन ६
अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे । देवेभ्यो अनुकामकृत् ७
इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे । मनश्चिन्मनसस्पतिः ८
पवमान सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि नः । इन्दविन्द्रेण नो युजा ९

॥ ११ ॥ (ऋ. ९ । १२ । १—९)

सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य सादने । इन्द्राय मधुमत्तमाः १ ९५
अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न मातरः । इन्द्रं सोमस्य पीतये २
मदच्युत् क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित् । सोमो गौरी अधि श्रितः ३
दिवो नाभा विचक्षणो ऽव्यो वारे महीयते । सोमो यः सुक्रतुः कविः ४
यः सोमः कलशेष्वाँ अन्तः पवित्र आहितः । तमिन्दुः परि षस्वजे ५
प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि । जिन्वन् कोशं मधुश्चुतम् ६ १००
नित्यस्तोत्रो वनस्पति—र्धीनामन्तः सबर्दुघः । हिन्वानो मानुषा युगा ७
अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्षति । विप्रस्य धारया कविः ८
आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम् । अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ९

॥ १२ ॥ (ऋ. ९ । १३ । १—९)

सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः । वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् १
पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत । सुष्वाणं देववीतये २ १०५
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः । गृणाना देववीतये ३
उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः । द्युमदिन्दो सुवीर्यम् ४
ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः ५
अत्या हियाना न हेतृभि—रसृग्रं वाजसातये । वि वारमव्यमाशवः ६
वाश्रा अर्षन्तीन्दवो ऽभि वत्सं न धेनवः । दधन्विरे गभस्त्योः ७ ११०
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमान कनिक्रदत् । विश्वा अप द्विषो जहि ८
अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः । योनावृतस्य सीदत ९

॥ १३ ॥ (ऋ. ९ । १४ । १-८)

परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः । कारं बिभ्रत् पुरुस्पृहम् १
गिरा यदी सबन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः । परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् २ ११४

आदस्य शुष्मिणो रसे विश्वे देवा अमत्सत । यदी गोभिर्वसायते ३ ११५
निरिणानो वि धावति जहच्छर्याणि तान्वा । अत्रा सं जिघ्नते युजा ४
नप्तीभिर्यो विवस्वतः शुभ्रो न मामृजे युवा । गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ५
अति श्रिती तिरश्चता गव्या जिगात्यण्व्या । वग्नुमियर्ति यं विदे ६
अभि क्षिपः समग्मत मर्जयन्तीरिषस्पतिम् । पृष्ठा गृभ्णत वाजिनः ७
परि दिव्यानि मर्मृशद् विश्वानि सोम पार्थिवा । वसूनि याह्यस्मयुः ८ १२०

॥ १४ ॥ (ऋ. ९ । १५ । १-८)

एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः । गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् १
एष पुरू धियायते बृहते देवतातये । यत्रामृतास आसते २
एष हितो वि नीयते ऽन्तः शुभ्रावता पथा । यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ३
एष शृङ्गाणि दोधुव- च्छिशीते यूथ्यो३ वृषा । नृम्णा दधान ओजसा ४
एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः । पतिः सिन्धूनां भवन् ५ १२५
एष वसूनि पिब्दना परुषा ययिवाँ अति । अव शादेषु गच्छति ६
एतं मृजन्ति मर्ज्य- मुप द्रोणेष्वायवः । प्रचक्राणं महीरिषः ७
एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सप्त धीतयः । स्वायुधं मदिन्तमम् ८

॥ १५ ॥ (ऋ. ९ । १६ । १-८)

प्र ते सोतार ओण्यो३ रसं मदाय घृष्वये । सर्गो न तक्त्येतशः १
क्रत्वा दक्षस्य रथ्य- मपो वसानमन्धसा । गोषामण्वेषु सश्चिम २ १३०
अनप्तमप्सु दुष्टरं सोमं पवित्र आ सृज । पुनीहीन्द्राय पातवे ३
प्र पुनानस्य चेतसा सोमः पवित्रे अर्षति । क्रत्वा सधस्थमासदत् ४
प्र त्वा नमोभिरिन्दव इन्द्र सोमा असृक्षत । महे भराय कारिणः ५
पुनानो रूपे अव्यये विश्वा अर्षन्नभि श्रियः । शूरो न गोषु तिष्ठति ६
दिवो न सानु पिप्युषी धारा सुतस्य वेधसः । वृथा पवित्रे अर्षति ७ १३५
त्वं सोम विपश्चितं तना पुनान आयुषु । अव्यो वारं वि धावसि ८

॥ १६ ॥ (ऋ. ९ । १७ । १-८)

प्र निम्नेनेव सिन्धवो घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः । सोमा असृग्रमाशवः १
अभि सुवानास इन्दवो वृष्टयः पृथिवीमिव । इन्द्रं सोमासो अक्षरन् २ १३८

अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः सोमः पवित्रे अर्षति । विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ३
आ कलशेषु धावति पवित्रे परि षिच्यते । उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते ४ १४०
अति त्री सोम रोचना रोहन् न भ्राजसे दिवम् । इष्णन्त्सूर्यं न चोदयः ५
अभि विप्रा अनूषत मूर्धन् यज्ञस्य कारवः । दधानाश्चक्षसि प्रियम् ६
तमु त्वा वाजिनं नरो धीभिर्विप्रा अवस्यवः । मृजन्ति देवतातये ७
मधोर्धारामनु क्षर तीव्रः सधस्थमासदः । चारुर्ऋताय पीतये ८

॥ १७ ॥ (ऋ. ९ । १८ । १-७)

परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षाः । मदेषु सर्वधा असि १ १४५
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः । मदेषु सर्वधा असि २
तव विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत । मदेषु सर्वधा असि ३
आ यो विश्वानि वार्या वसूनि हस्तयोर्दधे । मदेषु सर्वधा असि ४
य इमे रोदसी मही सं मातरेव दोहते । मदेषु सर्वधा असि ५
परि यो रोदसी उभे सद्यो वाजेभिरर्षति । मदेषु सर्वधा असि ६ १५०
स शुष्मी कलशेष्वा पुनानो अचिक्रदत् । मदेषु सर्वधा असि ७

॥ १८ ॥ (ऋ. ९ । १९ । १-७)

यत् सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु । तन्नः पुनान आ भर १
युवं हि स्थः स्वर्पती इन्द्रश्च सोम गोपती । ईशाना पिप्यतं धियः २
वृषा पुनान आयुषु स्तनयन्नधि बर्हिषि । हरिः सन् योनिमासदत् ३
अवावशन्त धीतयो वृषभस्याधि रेतसि । सूनोर्वत्सस्य मातरः ४ १५५
कुविद् वृषण्यन्तीभ्यः पुनानो गर्भमादधत् । याः शुक्रं दुहते पयः ५
उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रुषु । पवमान विदा रयिम् ६
नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं नि शुष्मं नि वयस्तिर । दूरे वा सतो अन्ति वा ७

॥ १९ ॥ (ऋ. ९ । २० । १-७)

प्र कविर्देववीतये ऽव्यो वारेभिरर्षति । साह्वान् विश्वा अभि स्पृधः १
स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति । पवमानः सहस्रिणम् २ १६०
परि विश्वानि चेतसा मृशसे पवसे मती । स नः सोम श्रवो विदः ३
अभ्यर्ष बृहद् यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम् । इषं स्तोतृभ्य आ भर ४ १६२

त्वं राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ । पुनानो वह्ने अद्भुत ५
स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः । सोमश्चमूषु सीदति ६
क्रीळुर्मखो न मंहयुः पवित्रं सोम गच्छसि । दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ७ १६५

॥ २० ॥ (ऋ. ९ । २१ । १-७)

एते धावन्तीन्दवः सोमा इन्द्राय घृष्वयः । मत्सरासः स्वर्विदः १
प्रवृण्वन्तो अभियुजः सुष्वये वरिवोविदः । स्वयं स्तोत्रे वयस्कृतः २
वृथा क्रीळन्त इन्दवः सधस्थमभ्येकमित् । सिन्धोरूर्मा व्यक्षरन् ३
एते विश्वानि वार्या पवमानास आशत । हिता न सप्तयो रथे ४
आस्मिन् पिशङ्गमिन्दवो दधाता वेनमादिशे । यो अस्मभ्यमरावा ५ १७०
ऋभुर्न रथ्यं नवं दधाता केतमादिशे । शुक्राः पवध्वमर्णसा ६
एत उ त्ये अवीवशन् काष्ठां वाजिनो अक्रत । सतः प्रासाविषुर्मतिम् ७

॥ २१ ॥ (ऋ. ९ । २२ । १—७)

एते सोमास आशवो रथा इव प्र वाजिनः । सर्गाः सृष्टा अहेषत १
एते वाता इवोरवः पर्जन्यस्येव वृष्टयः । अग्नेरिव भ्रमा वृथा २
एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः । विपा व्यानशुर्धियः ३ १७५
एते मृष्टा अमर्त्याः ससृवांसो न शश्रमुः । इयक्षन्तः पथो रजः ४
एते पृष्ठानि रोदसो विप्रयन्तो व्यानशुः । उतेदमुत्तमं रजः ५
तन्तुं तन्वानमुत्तम मनु प्रवत आशत । उतेदमुत्तमाय्यम् ६
त्वं सोम पणिभ्य आ वसु गव्यानि धारयः । ततं तन्तुमचिक्रदः ७

॥ २२ ॥ (ऋ. ९ । २३ । १—७)

सोमा असृग्रमाशवो मधोर्मदस्य धारया । अभि विश्वानि काव्या १ १८०
अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः । रुचे जनन्त सूर्यम् २
आ पवमान नो भरा ऽर्यो अदाशुषो गयम् । कृधि प्रजावतीरिषः ३
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् । अभि कोशं मधुश्चुतम् ४
सोमो अर्षति धर्णसि र्दधान इन्द्रियं रसम् । सुवीरो अभिशस्तिपाः ५
इन्द्राय सोम पवसे देवेभ्यः सधमाद्यः । इन्दो वाजं सिषाससि ६ १८५
अस्य पीत्वा मदाना मिन्द्रो वृत्राण्यप्रति । जघान जघनच्च नु ७ १८६

॥ २३ ॥ (ऋ. ९ । २४ । १—७)

प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः । श्रीणाना अप्सु मृञ्जत १
अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः । पुनाना इन्द्रमाशत २
प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय पातवे । नृभिर्यतो वि नीयसे ३
त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीसहे । सस्निर्यो अनुमाद्यः ४ १९०
इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधावसि । अरमिन्द्रस्य धाम्ने ५
पवस्व वृत्रहन्तमोक्थेभिरनुमाद्यः । शुचिः पावको अद्भुतः ६
शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतस्य मध्वः । देवावीरघशंसहा ७ १९३

॥ २४ ॥ (ऋ. ९ । २५ । १—६) (१९४—१९९) दृळ्हच्युत आगस्त्यः ।

पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे । मरुद्भ्यो वायवे मदः १
पवमान धिया हितो३ऽभि योनिं कनिक्रदत् । धर्मणा वायुमा विश २ १९५
सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः । वृत्रहा देववीतमः ३
विश्वा रूपाण्याविशन् पुनानो याति हर्यतः । यत्रामृतास आसते ४
अरुषो जनयन् गिरः सोमः पवत आयुषक् । इन्द्रं गच्छन् कविक्रतुः ५
आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे । अर्कस्य योनिमासदम् ६ १९९

॥ २५ ॥ (ऋ. ९ । २६ । १-६) (२००-२०५) इध्मवाहो दार्ढच्युतः ।

तममृक्षन्त वाजिनमुपस्थे अदितेरधि । विप्रासो अण्व्या धिया १ २००
तं गावो अभ्यनूषत सहस्रधारमक्षितम् । इन्दुं धर्तारमा दिवः २
तं वेधां मेधयाह्यन् पवमानमधि द्यवि । धर्णसिं भूरिधायसम् ३
तमह्यन् भुरिजोर्धिया संवसानं विवस्वतः । पतिं वाचो अदाभ्यम् ४
तं सानावधि जामयो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । हर्यतं भूरिचक्षसम् ५
तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः पवमान गिरावृधम् । इन्दविन्द्राय मत्सरम् ६ २०५

॥ २६ ॥ (ऋ. ९ । २७ । १-६) (२०६—२११) नृमेध आङ्गिरसः ।

एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते । पुनानो घ्नन्नप स्रिधः १
एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित् परि षिच्यते । पवित्रे दक्षसाधनः २
एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः । सोमो वनेषु विश्ववित् ३
एष गव्युरचिक्रदत् पवमानो हिरण्ययुः । इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ४ २०९

एष सूर्येण हासते पवमानो अधि द्यवि । पवित्रे मत्सरो मदः ५ २१०
एष शुष्म्यसिष्यदद्-अन्तरिक्षे वृषा हरिः । पुनान इन्दुरिन्द्रमा ६ २११

॥ २७ ॥ (ऋ. ९ । २८ । १—६) (२१२—२१७) प्रियमेध आङ्गिरसः ।

एष वाजी हितो नृभि-र्विश्वविन्मनसस्पतिः । अव्यो वारं वि धावति १
एष पवित्रे अक्षरत् सोमो देवेभ्यः सुतः । विश्वा धामान्याविशन् २
एष देवः शुभायते ऽधि योनावमर्त्यः । वृत्रहा देववीतमः ३
एष वृषा कनिक्रदद् दशभिर्जामिभिर्यतः । अभि द्रोणानि धावति ४ २१५
एष सूर्यमरोचयत् पवमानो विचर्षणिः । विश्वा धामानि विश्ववित् ५
एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति । देवावीरघशंसहा ६ २१७

॥ २८ ॥ (ऋ. ९ । २९ । १-६) (२१८—२२३) नृमेध आङ्गिरसः ।

प्रास्य धारा अक्षरन् वृष्णः सुतस्यौजसा । देवाँ अनु प्रभूषतः १
सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा । ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम् २
सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो । वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् ३ २२०
विश्वा वसूनि संजयन् पवस्व सोम धारया । इनु द्वेषांसि सध्र्यक् ४
रक्षा सु नो अररुषः स्वनात् समस्य कस्य चित् । निदो यत्र मुमुच्महे ५
एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पवस्व धारया । द्युमन्तं शुष्ममा भर ६ २२३

॥ २९ ॥ (ऋ. ९ । ३० । १—६) (२२४—२२९) बिन्दुराङ्गिरसः ।

प्र धारा अस्य शुष्मिणो वृथा पवित्रे अक्षरन् । पुनानो वाचमिष्यति १
इन्दुर्हियानः सोतृभि-र्मृज्यमानः कनिक्रदत् । इयर्ति वग्नुमिन्द्रियम् २ २२५
आ नः शुष्मं नृषाह्यं वीरवन्तं पुरुस्पृहम् । पवस्व सोम धारया ३
प्र सोमो अति धारया पवमानो असिष्यदत् । अभि द्रोणान्यासदम् ४
अप्सु त्वा मधुमत्तमं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दविन्द्राय पीतये ५
सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे । चारुं शर्धाय मत्सरम् ६ २२९

॥ ३० ॥ (ऋ. ९ । ३१ । १—६) (२३०—२३५) गोतमो राहूगणः ।

प्र सोमासः स्वाध्यः पवमानासो अक्रमुः । रयिं कृण्वन्ति चेतनम् १ २३०
दिवस्पृथिव्या अधि भवेन्दो द्युम्नवर्धनः । भवा वाजानां पतिः २
तुभ्यं वाता अभिप्रिय-स्तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः । सोम वर्धन्ति ते महः ३ २३२

आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ४
तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रो दुदुह्रे अक्षितम् । वर्षिष्ठे अधि सानवि ५
स्वायुधस्य ते सुतो भुवनस्य पते वयम् । इन्दो सखित्वमुश्मसि ६ २३५

॥ ३१ ॥ (ऋ. ९ । ३१।१-६) (२३६—२४१) श्यावाश्व आत्रेयः ।

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनः । सुता विदथे अक्रमुः १
आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दुमिन्द्राय पीतये २
आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम् । अत्यो न गोभिरज्यते ३
उभे सोमावचाकशन् मृगो न तक्तो अर्षसि । सीदन्नृतस्य योनिमा ४
अभि गावो अनूषत योषा जारमिव प्रियम् । अगन्नाजिं यथा हितम् ५ २४०
अस्मे धेहि द्युमद् यशो मघवद्भ्यश्च मह्यं च । सनिं मेधामुत श्रवः ६ २४१

॥ ३२ ॥ (ऋ. ९ । ३३ । १-६) (२४२—२४७) त्रित आप्त्यः ।

प्र सोमासो विपश्चितोऽपां न यन्त्यूर्मयः । वनानि महिषा इव १
अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् २
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमा अर्षन्ति विष्णवे ३
तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरिरेति कनिक्रदत् ४ २४५
अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः । मर्मृज्यन्ते दिवः शिशुम् ५
रायः समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणः ६

॥ ३३ ॥ (ऋ. ९ । ३४ । १—६)

प्र सुवानो धारया तनेन्दुर्हिन्वानो अर्षति । रुजद् दृह्ळा व्योजसा १
सुत इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमो अर्षति विष्णवे २
वृषाणं वृषभिर्यतं सुन्वन्ति सोममद्रिभिः । दुहन्ति शक्मना पयः ३ २५०
भुवत् त्रितस्य मर्ज्यो भुवदिन्द्राय मत्सरः । सं रूपैरज्यते हरिः ४
अभीमृतस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः । चारु प्रियतमं हविः ५
समेनमह्रुता इमा गिरो अर्षन्ति सस्रुतः । धेनूर्वाश्रो अवीवशत् ६ २५३

॥ ३४ ॥ (ऋ. ९ । ३५ । १—६) (२५४—२५९) प्रभूवसुराङ्गिरसः ।

आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम् । यया ज्योतिर्विदासि नः १
इन्दो समुद्रमीङ्खय पवस्व विश्वमेजय । रायो धर्ता न ओजसा २ २५५

त्वया॑ वी॒रेण॑ वीरवो॒ ऽभि ष्या॑म पृतन्यतः । क्षरा॑ णो अ॒भि वार्य॑म् ३
प्र वाज॒मिन्दु॑रिष्यति॒ सिषा॑सन् वाज॒सा ऋषिः॑ । व्र॒ता वि॒दान आयु॑धा ४
तं गी॒र्भिर्वा॑चमीङ्ख॒यं पु॑ना॒नं वा॑सयामसि । सोम॒ं जन॑स्य॒ गोप॑तिम् ५
विश्वो॒ यस्य॑ व्र॒ते जनो॑ दा॒धार॒ धर्म॑ण॒स्पतेः॑ । पु॒नानस्य॑ प्र॒भूव॑सोः ६

॥ ३५ ॥ (ऋ. ९ । ३६ । १—६)

अस॑र्जि॒ रथ्यो॑ यथा प॒वित्रे॑ च॒म्वोः॑ सु॒तः । काष्म॑न् वा॒जी न्य॑क्रमीत् १ २६०
स वह्निः॑ सोम॒ जागृ॑विः॒ पव॑स्व देव॒वीरति॑ । अ॒भि कोश॑ं मधु॒श्चुत॑म् २
स नो॒ ज्योती॑ंषि पूर्व्य॒ पव॑मान॒ वि रो॑चय । क्रत्वे॒ दक्षा॑य नो हिनु ३
शु॒म्भमा॑न ऋता॒युभि॑र्मृ॒ज्यमा॑नो॒ गभ॑स्त्योः । पव॑ते॒ वारे॑ अ॒व्यये॑ ४
स विश्वा॑ दा॒शुषे॑ वसु॒ सोमो॑ दि॒व्यानि॒ पार्थि॑वा । पव॑ता॒मान्तरि॑क्ष्या ५
आ दि॒वस्पृ॒ष्ठम॑श्व॒युर्ग॑व्य॒युः सो॑म रोहसि । वी॒र॒युः श॑वसस्पते ६ २६५

॥ ३६ ॥ (ऋ. ९ । ३७ । १—६) (२६६—२७७) रहूगण आङ्गिरसः ।

स सु॒तः पी॒तये॒ वृषा॒ सोमः॑ प॒वित्रे॑ अर्षति । वि॒घ्नन् रक्षा॑ंसि देव॒युः १
स प॒वित्रे॑ विचक्ष॒णो हरि॑रर्षति धर्ण॒सिः । अ॒भि योनि॒ं कनि॑क्रदत् २
स वा॒जी रो॑च॒ना दि॒वः पव॑मानो॒ वि धा॑वति । र॒क्षो॒हा वार॑म॒व्यय॑म् ३
स त्रि॒तस्याधि॒ सान॑वि॒ पव॑मानो अरोचयत् । जा॒मिभि॒ः सूर्य॑ं स॒ह ४
स वृ॑त्र॒हा वृषा॑ सु॒तो व॑रिवो॒विद॑दा॑भ्यः । सोमो॒ वाज॑मिवासरत् ५ २७०
स दे॒वः क॒विने॑षि॒तो॒३ ऽभि द्रोणा॑नि धावति । इन्दु॒रिन्द्रा॑य म॒ंहना॑ ६

॥ ३७ ॥ (ऋ. ९ । ३८ । १—६)

ए॒ष उ॒ स्य वृषा॒ रथो ऽव्यो॒ वारे॑भिरर्षति । गच्छ॒न् वाज॑ं सह॒स्रिण॑म् १
ए॒तं त्रि॒तस्य॒ योष॑णो॒ हरि॑ं हिन्व॒न्त्यद्रि॑भिः । इन्दु॒मिन्द्रा॑य पी॒तये॑ २
ए॒तं त्यं ह॒रितो॒ दश॑ म॒र्मृ॒ज्यन्ते॑ अप॒स्युवः॑ । या॒भिर्मदा॑य॒ शुम्भ॑ते ३
ए॒ष स्य मानु॑षी॒ष्वा श्ये॒नो न वि॒क्षु सी॑दति । गच्छ॑ञ्जा॒रो न यो॒षित॑म् ४ २७५
ए॒ष स्य मद्यो॒ रसो ऽव॑ चष्टे दि॒वः शिशु॑ः । य इन्दु॒र्वार॒मावि॑शत् ५
ए॒ष स्य पी॒तये॑ सु॒तो हरि॑रर्षति धर्ण॒सिः । क्रन्द॒न् योनि॑म॒भि प्रि॒यम् ६ २७७

॥ ३८ ॥ (ऋ. ९ । ३९ । १—६) (२७८—२८९) बृहन्मतिराङ्गिरसः ।

आ॒शुर॑र्ष बृहन्मते॒ परि॑ प्रि॒येण॒ धाम्ना॑ । यत्र॑ दे॒वा इ॒ति ब्रव॑न् १
प॒रि॒ष्कृ॒ण्वन्ननि॑ष्कृत॒ं जना॑य या॒तय॒न्निषः॑ । वृ॒ष्टिं दि॒वः परि॑ स्रव २ २७९

सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा । विचक्षाणो विरोचयन् ३ १८०
अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ । सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत् ४
आविवासन् परावतो अथो अर्वावतः सुतः । इन्द्राय सिच्यते मधु ५
समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । योनावृतस्य सीदत ६

॥ ३९ ॥ (ऋ. ९ । ४० । १—६)

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः । शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः १
आ योनिमरुणो रुहद् गमदिन्द्रं वृषा सुतः । ध्रुवे सदसि सीदति २ १८५
नू नो रयिं महामिन्दो ऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणम् ३
विश्वा सोम पवमान द्युम्नानीन्दवा भर । विदाः सहस्रिणीरिषः ४
स नः पुनान आ भर रयिं स्तोत्रे सुवीर्यम् । जरितुर्वर्धया गिरः ५
पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम् । वृषन्निन्दो न उक्थ्यम् ६ १८९

॥ ४० ॥ (ऋ. ९ । ४१ । १—६) (१९०—२०७) मेध्यातिथिः काण्वः ।

प्र ये गावो न भूर्णय स्त्वेषा अयासो अक्रमुः । घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् १ १९०
सुवितस्य मनामहे ऽति सेतुं दुराव्यम् । साह्वांसो दस्युमव्रतम् २
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः । चरन्ति विद्युतो दिवि ३
आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् । अश्वावद् वाजवत् सुतः ४
स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण । उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ५
परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः । सरा रसेव विष्टपम् ६ १९५

॥ ४१ ॥ (ऋ. ९ । ४२ । १—६)

जनयन् रोचना दिवो जनयन्नप्सु सूर्यम् । वसानो गा अपो हरिः १
एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि । धारया पवते सुतः २
वावृधानाय तूर्वये पवन्ते वाजसातये । सोमाः सहस्रपाजसः ३
दुहानः प्रत्नमित् पयः पवित्रे परि षिच्यते । क्रन्दन् देवाँ अजीजनत् ४
अभि विश्वानि वार्या ऽभि देवाँ ऋतावृधः । सोमः पुनानो अर्षति ५ २००
गोमन्नः सोम वीरव दश्वावद् वाजवत् सुतः । पवस्व बृहतीरिषः ६

॥ ४२ ॥ (ऋ. ९ । ४३ । १—६)

यो अत्य इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः । तं गीर्भिर्वासयामसि १
तं नो विश्वा अवस्युवो गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा । इन्दुमिन्द्राय पीतये २ २०३

पुनानो याति हर्यतः सोमो गीर्भिः परिष्कृतः । विप्रस्य मेध्यातिथेः ३
पवमान विदा रयि—मस्मभ्यं सोम सुश्रियम् । इन्दो सहस्रवर्चसम् ४ ३०५
इन्दुरत्यो न वाजसृत् कनिक्रन्ति पवित्र आ । यदक्षारति देवयुः ५
पवस्व वाजसातये विप्रस्य गृणतो वृधे । सोम रास्व सुवीर्यम् ६ ३०७

॥ ४३ ॥ (ऋ. ९ । ४४ । १—६) (३०८-३१५) अयास्य आङ्गिरसः ।

प्र ण इन्दो महे तन ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि । अभि देवाँ अयास्यः १
मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति । विप्रस्य धारया कविः २
अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ । सोमो याति विचर्षणिः ३ ३१०
स नः पवस्व वाजयु—श्चक्राणश्चारुमध्वरम् । बर्हिष्माँ आ विवासति ४
स नो भगाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः । सोमो देवेष्वा यमत् ५
स नो अद्य वसुत्तये क्रतुविद् गातुवित्तमः । वाजं जेषि श्रवो बृहत् ६

॥ ४४ ॥ (ऋ. ९ । ४५ । १—६)

स पवस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये । इन्दविन्द्राय पीतये १
स नो अर्षाभि दूत्यं१ त्वमिन्द्राय तोशसे । देवान्त्सखिभ्य आ वरम् २ ३१५
उत त्वामरुणं वयं गोभिरञ्ज्मो मदाय कम् । वि नो राये दुरो वृधि ३
अत्यू पवित्रमक्रमीद् वाजी धुरं न यामनि । इन्दुर्देवेषु पत्यते ४
समी सखायो अस्वरन् वने क्रीळन्तमत्यविम् । इन्दुं नावा अनूषत ५
तया पवस्व धारया यया पीतो विचक्षसे । इन्दो स्तोत्रे सुवीर्यम् ६

॥ ४५ ॥ (ऋ. ९ । ४६ । १—६)

असृग्रन् देववीतये ऽत्यासः कृत्व्या इव । क्षरन्तः पर्वतावृधः १ ३२०
परिष्कृतास इन्दवो योषेव पित्र्यावती । वायुं सोमा असृक्षत २
एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः । इन्द्रं वर्धन्ति कर्मभिः ३
आ धावता सुहस्त्यः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना । गोभिः श्रीणीत मत्सरम् ४
स पवस्व धनंजय प्रयन्ता राधसो महः । अस्मभ्यं सोम गातुवित् ५
एतं मृजन्ति मर्ज्यं पवमानं दश क्षिपः । इन्द्राय मत्सरं मदम् ६ ३२५

॥ ४६ ॥ (ऋ. ९ । ४७ । १—५) (३२६—३४०) कविर्भार्गवः ।

अया सोमः सुकृत्यया महश्चिदभ्यवर्धत । मन्दान उद् वृषायते १
कृतानीदस्य कर्त्वा चेतन्ते दस्युतर्हणा । ऋणा च धृष्णुश्चयते २ ३२७

आत् सोम इन्द्रियो रसो　वज्रः सहस्रसा भुवत्　। उक्थं यदस्य जायते　३
स्वयं कविर्विधर्तरि　विप्राय रत्नमिच्छति　। यदी मर्मृज्यते धियः　४
सिषासतू रयीणां　वाजेष्वर्वतामिव　। भरेषु जिग्युषामसि　५　३३०

॥ ४७ ॥ (ऋ. ९ । ४८ । १-५)

तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं　सधस्थेषु महो दिवः　। चारुं सुकृत्ययेमहे　१
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं　महामहिव्रतं मदम्　। शतं पुरो रुरुक्षणिम्　२
अतस्त्वा रयिमभि　राजानं सुक्रतो दिवः　। सुपर्णो अव्यथिर्भरत्　३
विश्वस्मा इत् स्वर्दृशे　साधारणं रजस्तुरम्　। गोपामृतस्य विर्भरत्　४
अधा हिन्वान इन्द्रियं　ज्यायो महित्वमानशे　। अभिष्टिकृद् विचर्षणिः　५　३३५

॥ ४८ ॥ (ऋ. ९ । ४९ । १-५)

पवस्व वृष्टिमा सु नो　ऽपामूर्मिं दिवस्परि　। अयक्ष्मा बृहतीरिषः　१
तया पवस्व धारया　यया गाव इहागमन्　। जन्यास उप नो गृहम्　२
घृतं पवस्व धारया　यज्ञेषु देववीतमः　। अस्मभ्यं वृष्टिमा पव　३
स न ऊर्जे व्य१व्ययं　पवित्रं धाव धारया　। देवासः शृणवन् हि कम्　४
पवमानो असिष्यदद्　रक्षांस्यपजङ्घनत्　। प्रत्नवद् रोचयन् रुचः　५　३४०

॥ ४९ ॥ (ऋ. ९ । ५० । १-५) (३४१-३५५) उचथ्य आङ्गिरसः ।

उत् ते शुष्मास ईरते　सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः　। वाणस्य चोदया पविम्　१
प्रसवे त उदीरते　तिस्रो वाचो मखस्युवः　। यदव्य एषि सानवि　२
अव्यो वारे परि प्रियं　हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः　। पवमानं मधुश्चुतम्　३
आ पवस्व मदिन्तम　पवित्रं धारया कवे　। अर्कस्य योनिमासदम्　४
स पवस्व मदिन्तम　गोभिरञ्जानो अक्तुभिः　। इन्दविन्द्राय पीतये　५　३४५

॥ ५० ॥ (ऋ. ९ । ५१ । १-५)

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं　सोमं पवित्र आ सृज　। पुनीहीन्द्राय पातवे　१
दिवः पीयूषमुत्तमं　सोममिन्द्राय वज्रिणे　। सुनोता मधुमत्तमम्　२
तव त्य इन्दो अन्धसो　देवा मधोर्व्यश्नते　। पवमानस्य मरुतः　३
त्वं हि सोम वर्धय－न्त्सुतो मदाय भूर्णये　। वृषन्त्स्तोतारमूतये　४
अभ्यर्ष विचक्षण　पवित्रं धारया सुतः　। अभि वाजमुत श्रवः　५　३५०

॥ ५१ ॥ (ऋ. ९ । ५२ । १—५)

परि द्युक्षः सनद्रयि र्भरद्वाजं नो अन्धसा । सुवानो अर्ष पवित्र आ १
तव प्रत्नेभिरध्वभि रव्यो वारे परि प्रियः । सहस्रधारो यात् तना २
चरुर्न यस्तमीङ्खयेन्दो न दानमीङ्खय । वधैर्वधस्नवीङ्खय ३
नि शुष्ममिन्दवेषां पुरुहूत जनानाम् । यो अस्माँ आदिदेशति ४
शतं न इन्द ऊतिभिः सहस्रं वा शुचीनाम् । पवस्व मंहयद्रयिः ५ ३५५

॥ ५२ ॥ (ऋ. ९ । ५३ । १—४) (३५६—३८७) अवत्सारः काश्यपः ।

उत् ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः । नुदस्व याः परिस्पृधः १
अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते । स्तवा अबिभ्युषा हृदा २
अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या । रुज यस्त्वा पृतन्यति ३
तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ४

॥ ५३ ॥ (ऋ. ९ । ५४ । १—४)

अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः । पयः सहस्रसामृषिम् १ ३६०
अयं सूर्य इवोपदृ गयं सरांसि धावति । सप्त प्रवत आ दिवम् २
अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि । सोमो देवो न सूर्यः ३
परि णो देववीतये वाजाँ अर्षसि गोमतः । पुनान इन्दविन्द्रयुः ४

॥ ५४ ॥ (ऋ. ९ । ५५ । १—४)

यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव । सोम विश्वा च सौभगा १
इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः । नि बर्हिषि प्रिये सदः २ ३६५
उत नो गोविदश्ववित् पवस्व सोमान्धसा । मक्षूतमेभिरहभिः ३
यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य । स पवस्व सहस्रजित् ४

॥ ५५ ॥ (ऋ. ९ । ५६ । १—४)

परि सोम ऋतं बृह दाशुः पवित्रे अर्षति । विघ्नन् रक्षांसि देवयुः १
यत् सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः । इन्द्रस्य सख्यमाविशन् २
अभि त्वा योषणो दश जारं न कन्यानूषत । मृज्यसे सोम सातये ३ ३७०
त्वमिन्द्राय विष्णवे स्वादुरिन्दो परि स्रव । नृन्स्तोतॄन् पाह्यंहसः ४ ३७१

॥ ५६ ॥ (ऋ. ९ । ५७ । १—४)

प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः । अच्छा वाजं सहस्रिणम् १
अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति । हरिस्तुञ्जान आयुधा २
स मर्मृजान आयुभि- रिभो राजेव सुव्रतः । श्येनो न वंसु षीदति ३
स नो विश्वा दिवो वसू- तो पृथिव्या अधि । पुनान इन्दवा भर ४ ३७५

॥ ५७ ॥ (ऋ. ९ । ५८ । १—४)

तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । तरत् स मन्दी धावति १
उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः । तरत् स मन्दी धावति २
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्यो- रा सहस्राणि दद्महे । तरत् स मन्दी धावति ३
आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे । तरत् स मन्दी धावति ४

॥ ५८ ॥ (ऋ. ९ । ५९ । १—४)

पवस्व गोजिदश्वजिद् विश्वजित् सोम रण्यजित् । प्रजावद् रत्नमा भर १ ३८०
पवस्वाद्भ्यो अदाभ्यः पवस्वौषधीभ्यः । पवस्व धिषणाभ्यः २
त्वं सोम पवमानो विश्वानि दुरिता तर । कविः सीद नि बर्हिषि ३
पवमान स्वर्विदो जायमानोऽभवो महान् । इन्दो विश्वाँ अभीदसि ४

॥ ५९ ॥ (ऋ. ९ । ६० । १—४) गायत्री, ३ पुरउष्णिक् ।

प्र गायत्रेण गायत पवमानं विचर्षणिम् । इन्दुं सहस्रचक्षसम् १
तं त्वा सहस्रचक्षस- मथो सहस्रभर्णसम् । अति वारमपाविषुः २ ३८५
अति वारान् पवमानो असिष्यदत् कलशाँ अभि धावति । इन्द्रस्य हार्द्याविशन् ३
इन्द्रस्य सोम राधसे शं पवस्व विचर्षणे । प्रजावद् रेत आ भर ४ ३८७

॥ ६० ॥ (ऋ. ९ । ६१ । १—३०) (३८८—४१७) अमहीयुराङ्गिरसः ।

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा । अवाहन् नवतीर्नव १
पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शम्बरम् । अध त्यं तुर्वशं यदुम् २
परि णो अश्वमश्वविद् गोमदिन्दो हिरण्यवत् । क्षरा सहस्रिणीरिषः ३ ३९०
पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः । सखित्वमा वृणीमहे ४
ये ते पवित्रमूर्मयो ऽभिक्षरन्ति धारया । तेभिर्नः सोम मृळय ५
स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम् । ईशानः सोम विश्वतः ६
एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् । समादित्येभिरख्यत ७ ३९४

समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ । सं सूर्यस्य रश्मिभिः ८ ३९५
स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान् । चारुर्मित्रे वरुणे च ९
उच्चा ते जातमन्धसो दिवि षद्भूम्या ददे । उग्रं शर्म महि श्रवः १०
एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् । सिषासन्तो वनामहे ११
स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः । वरिवोवित् परि स्रव १२
उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् । इन्दुं देवा अयासिषुः १३ ४००
तमिद् वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव । य इन्द्रस्य हृदंसनिः १४
अर्षा णः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् । वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् १५
पवमानो अजीजनद् दिवश्चित्रं न तन्यतुम् । ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् १६
पवमानस्य ते रसो मदो राजन्नदुच्छुनः । वि वारमव्यमर्षति १७
पवमान रसस्तव दक्षो वि राजति द्युमान् । ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे १८ ४०५
यस्ते मदो वरेण्य—स्तेना पवस्वान्धसा । देवावीरघशंसहा १९
जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे । गोषा उ अश्वसा असि २०
संमिश्लो अरुषो भव सूपस्थाभिर्न धेनुभिः । सीदञ्छ्येनो न योनिमा २१
स पवस्व य आविथे—न्द्रं वृत्राय हन्तवे । वव्रिवांसं महीरपः २२
सुवीरासो वयं धना जयेम सोम मीढ्वः । पुनानो वर्ध नो गिरः २३ ४१०
त्वोतासस्तवावसा स्याम वन्वन्त आमुरः । सोम व्रतेषु जागृहि २४
अपघ्नन् पवते मृधो ऽप सोमो अराव्णः । गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् २५
महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः । रास्वेन्दो वीरवद् यशः २६
न त्वा शतं चन ह्रुतो राधो दित्सन्तमा मिनन् । यत् पुनानो मखस्यसे २७
पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने । विश्वा अप द्विषो जहि २८ ४१५
अस्य ते सख्ये वयं तवेन्दो द्युम्न उत्तमे । सासह्याम पृतन्यतः २९
या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे । रक्षा समस्य नो निदः ३० ४१७

॥ ३१ ॥ (ऋ. ९ । ६२ । १-३०) (४१८-४७) जमदग्निर्भार्गवः ।

एते असृग्रमिन्दव—स्तिरः पवित्रमाशवः । विश्वान्यभि सौभगा १
विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः । तना कृण्वन्तो अर्वते २
कृण्वन्तो वरिवो गवे ऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् । इळामस्मभ्यं संयतम् ३ ४२०
असाव्यंशुर्मदाया—ऽप्सु दक्षो गिरिष्ठाः । श्येनो न योनिमासदत् ४ ४२१

शुभ्रमन्धो देववात—मप्सु धूतो नृभिः सुतः । स्वदन्ति गावः पयोभिः ५
आदीमश्वं न हेतारो ऽशूशुभन्नमृताय । मध्वो रसं सधमादे ६
यास्ते धारा मधुश्चुतो ऽसृग्रमिन्द ऊतये । ताभिः पवित्रमासदः ७
सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो रोमाण्यव्यया । सीदन् योनावनेष्वा ८ ४२
त्वमिन्दो परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः । वरिवोविद् घृतं पयः ९
अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति । हिन्वान आप्यं बृहत् १०
एष वृषा वृषव्रतः पवमानो अशस्तिहा । करद् वसूनि दाशुषे ११
आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् । पुरुश्चन्द्रं पुरुस्पृहम् १२
एष स्य परि षिच्यते मर्मृज्यमान आयुभिः । उरुगायः कविक्रतुः १३ ४३
सहस्रोतिः शतामघो विमानो रजसः कविः । इन्द्राय पवते मदः १४
गिरा जात इह स्तुत इन्दुरिन्द्राय धीयते । विर्योना वसताविव १५
पवमानः सुतो नृभिः सोमो वाजमिवासरत् । चमूषु शक्मनासदम् १६
तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे रथे युञ्जन्ति यातवे । ऋषीणां सप्त धीतिभिः १७
तं सोतारो धनस्पृत—माशुं वाजाय यातवे । हरिं हिनोत वाजिनम् १८ ४३
आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः । शूरो न गोषु तिष्ठति १९
आ त इन्दो मदाय कं पयो दुहन्त्यायवः । देवा देवेभ्यो मधु २०
आ नः सोम पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम् । देवेभ्यो देवश्रुत्तमम् २१
एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे । मदिन्तमस्य धारया २२
अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि । सनद्वाजः परि स्रव २३ ४४
उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः । गृणानो जमदग्निना २४
पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः । अभि विश्वानि काव्या २५
त्वं समुद्रिया अपो ऽग्रियो वाच ईरयन् । पवस्व विश्वमेजय २६
तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे । तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः २७
प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यसश्चतः । अभि शुक्रामुपस्तिरम् २८ ४४
इन्द्रायेन्दुं पुनीतनो—ग्रं दक्षाय साधनम् । ईशानं वीतिराधसम् २९
पवमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमासदत् । दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ३० ४४

॥ ६२ ॥ (ऋ. ९ । ६३ । १-३०) (४४८ - ४७७) निध्रुविः काश्यपः ।

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम् । अस्मे श्रवांसि धारय १
इषमूर्जं च पिन्वस इन्द्राय मत्सरिन्तमः । चमूष्वा नि षीदसि २
सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत् । मधुमाँ अस्तु वायवे ३ ४५०
एते असृग्रमाशवो ऽति ह्वरांसि बभ्रवः । सोमा ऋतस्य धारया ४
इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । अपघ्नन्तो अराव्णः ५
सुता अनु स्वमा रजो ऽभ्यर्षन्ति बभ्रवः । इन्द्रं गच्छन्त इन्दवः ६
अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः । हिन्वानो मानुषीरपः ७
अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ८ ४५५
उत त्या हरितो दश सूरो अयुक्त यातवे । इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन् ९
परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम् । अव्यो वारेषु सिञ्चत १०
पवमान विदा रयि—मस्मभ्यं सोम दुष्टरम् । यो दूणाशो वनुष्यता ११
अभ्यर्ष सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् । अभि वाजमुत श्रवः १२
सोमो देवो न सूर्यो ऽद्रिभिः पवते सुतः । दधानः कलशे रसम् १३ ४६०
एते धामान्यार्या शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् १४
सुता इन्द्राय वज्रिणे सोमासो दध्याशिरः । पवित्रमत्यक्षरन् १५
प्र सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ । मदो यो देववीतमः १६
तमी मृजन्त्यायवो हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् १७
आ पवस्व हिरण्यव—दश्वावत् सोम वीरवत् । वाजं गोमन्तमा भर १८ ४६५
परि वाजे न वाजयु—मव्यो वारेषु सिञ्चत । इन्द्राय मधुमत्तमम् १९
कविं मृजन्ति मर्ज्यं धीभिर्विप्रा अवस्यवः । वृषा कनिक्रदर्षति २०
वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया । मती विप्राः समस्वरन् २१
पवस्व देवायुष—गिन्द्रं गच्छतु ते मदः । वायुमा रोह धर्मणा २२
पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम् । प्रियः समुद्रमा विश २३ ४७०
अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् २४
पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः । अभि विश्वानि काव्या २५
पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः । घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः २६
पवमाना दिवस्प—र्यन्तरिक्षादसृक्षत । पृथिव्या अधि सानवि २७ ४७४

पुनानः सोम धारये—न्दो विश्वा अप स्त्रिधः । जहि रक्षांसि सुक्रतो २८ ४७५
अपघ्नन्त्सोम रक्षसो ऽभ्यर्ष कनिक्रदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् २९
अस्मे वसूनि धारय सोम दिव्यानि पार्थिवा । इन्दो विश्वानि वार्या ३० ४७७

॥ ६३ ॥ (ऋ. ९ । ६४ । १-३०) (४७८—५०७) कश्यपो मारीचः ।

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः । वृषा धर्माणि दधिषे १
वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा मदः । सत्यं वृषन् वृषेदसि २
अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः । वि नो राये दुरो वृधि ३ ४८०
असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाशवः ४
शुम्भमाना ऋतायुभि—र्मृज्यमाना गभस्त्योः । पवन्ते वारे अव्यये ५
ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा । पवन्तामान्तरिक्ष्या ६
पवमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा असृक्षत । सूर्यस्येव न रश्मयः ७
केतुं कृण्वन् दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि । समुद्रः सोम पिन्वसे ८ ४८५
हिन्वानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि । अक्रान् देवो न सूर्यः ९
इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मती । सृजदश्वं रथीरिव १०
ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ देवावीः पर्यक्षरत् । सीदन्नृतस्य योनिमा ११
स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः । इन्दविन्द्राय पीतये १२
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि १३ ४९०
पुनानो वरिवस्कृध्यू—र्जं जनाय गिर्वणः । हरे सृजान आशिरम् १४
पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् । द्युतानो वाजिभिर्यतः १५
प्र हिन्वानास इन्दवो ऽच्छा समुद्रमाशवः । धिया जूता असृक्षत १६
मर्मृजानास आयवो वृथा समुद्रमिन्दवः । अग्मन्नृतस्य योनिमा १७
परि णो याह्यस्मयु—र्विश्वा वसून्योजसा । पाहि नः शर्म वीरवत् १८ ४९५
मिमाति वह्निरेतशः पदं युजान ऋक्वभिः । प्र यत् समुद्र आहितः १९
आ यद् योनिं हिरण्यय—माशुर्ऋतस्य सीदति । जहात्यप्रचेतसः २०
अभि वेना अनूषते—यक्षन्ति प्रचेतसः । मज्जन्त्यविचेतसः २१
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः । ऋतस्य योनिमासदम् २२
तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति वेधसः । सं त्वा मृजन्त्यायवः २३ ५००

रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे । पवमानस्य मरुतः २४
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो वाचमिष्यसि । इन्दो सहस्रभर्णसम् २५
उतो सहस्रभर्णसं वाचं सोम मखस्युवम् । पुनान इन्दवा भर २६
पुनान इन्दवेषां पुरुहूत जनानाम् । प्रियः समुद्रमा विश २७
दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा । सोमाः शुक्रा गवाशिरः २८ ५०५
हिन्वानो हेतृभिर्यत आ वाजं वाज्यक्रमीत् । सीदन्तो वनुषो यथा २९
ऋधक् सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवः कविः । पवस्व सूर्यो दृशे ३० ५०७

॥ ६४ ॥ (ऋ. ९ । ६५ । १—३०) (५०८—५३७) भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् । महामिन्दुं महीयुवः १
पवमान रुचारुचा देवो देवेभ्यस्परि । विश्वा वसून्या विश २
आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः । इषे पवस्व संयतम् ३ ५१०
वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे । पवमान स्वाध्यः ४
आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध । इहो ष्विन्दवा गहि ५
यदद्भिः परिषिच्यसे मृज्यमानो गभस्त्योः । द्रुणा सधस्थमश्नुषे ६
प्र सोमाय व्यश्ववत् पवमानाय गायत । महे सहस्रचक्षसे ७
यस्य वर्णं मधुश्चुतं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दुमिन्द्राय पीतये ८ ५१५
तस्य ते वाजिनो वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । सखित्वमा वृणीमहे ९
वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः । विश्वा दधान ओजसा १०
तं त्वा धर्तारमोण्यो३ः पवमान स्वर्दृशम् । हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ११
अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया । युजं वाजेषु चोदय १२
आ न इन्दो महीमिषं पवस्व विश्वदर्शतः । अस्मभ्यं सोम गातुवित् १३ ५२०
आ कलशा अनूषतेन्दो धाराभिरोजसा । एन्द्रस्य पीतये विश १४
यस्य ते मद्यं रसं तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः । स पवस्वाभिमातिहा १५
राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे १६
आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम् । वहा भगत्तिमूतये १७
आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर । सुष्वाणो देववीतये १८ ५२५
अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् । सीदञ्छ्येनो न योनिमा १९ ५२६

अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमो अर्षति विष्णवे २०
इषं तोकाय नो दध—दस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणम् २१
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । ये वादः शर्यणावति २२
य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम् । ये वा जनेषु पञ्चसु २३ ५३०
ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः २४
पवते हर्यतो हरि—र्गृणानो जमदग्निना । हिन्वानो गोरधि त्वचि २५
प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न सप्तयः । श्रीणाना अप्सु मृञ्जत २६
तं त्वा सुतेष्वाभुवो हिन्विरे देवतातये । स पवस्वानया रुचा २७
आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे । पान्तमा पुरुस्पृहम् २८ ५३५
आ मन्द्रमा वरेण्य—मा विप्रमा मनीषिणम् । पान्तमा पुरुस्पृहम् २९
आ रयिमा सुचेतुन—मा सुक्रतो तनूष्वा । पान्तमा पुरुस्पृहम् ३० ५३७

॥ ६५ ॥ (ऋ. ९ । ६६ । १—३०)

(५३८-५६७) शतं वैखानसाः । १९-२१ अग्निः पवमानः । गायत्री, १८ अनुष्टुप् ।

पवस्व विश्वचर्षणे ऽभि विश्वानि काव्या । सखा सखिभ्य ईड्यः १
ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी । प्रतीची सोम तस्थतुः २
परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः । पवमान ऋतुभिः कवे ३ ५४०
पवस्व जनयन्निषो ऽभि विश्वानि वार्या । सखा सखिभ्य ऊतये ४
तव शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्ठे वि तन्वते । पवित्रं सोम धामभिः ५
तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिस्रते । तुभ्यं धावन्ति धेनवः ६
प्र सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः । दधानो अक्षिति श्रवः ७
समु त्वा धीभिरस्वरन् हिन्वतीः सप्त जामयः । विप्रमाजा विवस्वतः ८ ५४५
मृजन्ति त्वा समग्रुवो ऽव्ये जीरावधि ष्वणि । रेभो यदज्यसे वने ९
पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत । अर्वन्तो न श्रवस्यवः १०
अच्छा कोशं मधुश्चुत—मसृग्रं वारे अव्यये । अवावशन्त धीतयः ११
अच्छा समुद्रमिन्दवो ऽस्तं गावो न धेनवः । अग्मन्नृतस्य योनिमा १२
प्र ण इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति सिन्धवः । यद् गोभिर्वासयिष्यसे १३ ५५०
अस्य ते सख्ये वय—मियक्षन्तस्त्वोतयः । इन्दो सखित्वमुश्मसि १४
आ पवस्व गविष्टये महे सोम नृचक्षसे । एन्द्रस्य जठरे विश १५ ५५१

महाँ असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्दु ओजिष्ठः। युध्वा सञ्छश्वज्जिगेथ १६
य उग्रेभ्यश्चिदोजीया ञ्छूरेभ्यश्चिच्छूरतरः । भूरिदाभ्यश्चिन्मंहीयान् १७
त्वं सोम सूर एष स्तोकस्य साता तनूनाम् । वृणीमहे सख्याय वृणीमहे युज्याय ५५५
अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम् १९
अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम् २०
अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद् रयिं मयि पोषम् २१
पवमानो अति स्रिधो ऽभ्यर्षति सुष्टुतिम् । सूरो न विश्वदर्शतः २२
स मर्मृजान आयुभिः प्रयस्वान् प्रयसे हितः। इन्दुरत्यो विचक्षणः २३ ५६०
पवमान ऋतं बृह च्छुक्रं ज्योतिरजीजनत् । कृष्णा तमांसि जङ्घनत् २४
पवमानस्य जङ्घ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत । जीरा अजिरशोचिषः २५
पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः । हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः २६
पवमानो व्यश्नवद् रश्मिभिर्वाजसातमः । दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् २७
प्र सुवान इन्दुरक्षाः पवित्रमत्यव्ययम् । पुनान इन्दुरिन्द्रमा २८ ५६५
एष सोमो अधि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः। इन्द्रं मदाय जोहुवत् २९
यस्य ते द्युम्नवत् पयः पवमानाभृतं दिवः । तेन नो मृळ जीवसे ३० ५६७

॥ ६६ ॥ (ऋ. ९ । ६७ । १—३२)

(५६८—५९९)१ ३ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, ४-६ कश्यपो मारीचः, ७-९ गोतमो राहूगणः, १०-१२ अत्रिर्भौमः, १३-१५ विश्वामित्रो गाथिनः, १६—१८ जमदग्निर्भार्गवः, १९-२१ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः, २२—३२ पवित्र आङ्गिरसो वा वसिष्ठो वा उभौ वा। पवमानः सोमः, १०—१२ पवमानः पूषा वा, २३—२७ पवमानोऽग्निः, २५ पवमानः सविता वा, २६ पवमानाग्निसवितारः, २७ विश्वे देवा वा, ३१—३२ पावमान्यध्येता । गायत्री, १६ —१८ नित्यद्विपदा गायत्री, ३० पुरउष्णिक्, २७, ३१, ३२, अनुष्टुप् ।

त्वं सोमासि धारयु र्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे । पवस्व मंहयद्रयिः १
त्वं सुतो नृमादनो दधन्वान् मत्सरिन्तमः । इन्द्राय सूरिरन्धसा २
त्वं सुष्वाणो अद्रिभि रभ्यर्ष कनिक्रदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ३ ५७०
इन्दुर्हिन्वानो अर्षति तिरो वाराण्यव्यया । हरिर्वाजमचिक्रदत् ४
इन्दो व्यव्यमर्षसि वि श्रवांसि वि सौभगा । वि वाजान्त्सोम गोमतः ५
आ न इन्दो शतग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम् । भरा सोम सहस्रिणम् ६
पवमानास इन्दव स्तिरः पवित्रमाशवः । इन्द्रं यामेभिराशत ७ ५७४

ककुहः सोम्यो रस इन्दुरिन्द्राय पूर्व्यः । आयुः पवत आयवे ८ ५७९
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं मधुश्चुतम् । अभि गिरा समस्वरन् ९
अविता नो अजाश्वः पूषा यामनियामनि । आ भक्षत् कन्यासु नः १०
अयं सोमः कपर्दिने घृतं न पवते मधु । आ भक्षत् कन्यासु नः ११
अयं त आघृणे सुतो घृतं न पवते शुचि । आ भक्षत् कन्यासु नः १२
वाचो जन्तुः कवीनां पवस्व सोम धारया । देवेषु रत्नधा असि १३ ५८०
आ कलशेषु धावति श्येनो वर्म वि गाहते । अभि द्रोणा कनिक्रदत् १४
परि प्र सोम ते रसो ऽसर्जि कलशे सुतः । श्येनो न तक्तो अर्षति १५
पवस्व सोम मन्दय न्निन्द्राय मधुमत्तमः १६
असृग्रन् देववीतये वाजयन्तो रथा इव १७
ते सुतासो मदिन्तमाः शुक्रा वायुमसृक्षत १८ ५८१
ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रं सोम गच्छसि । दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् १९
एष तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रमति गाहते । रक्षोहा वारमव्ययम् २०
यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह । पवमान वि तज्जहि २१
पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु नः २२
यत् ते पवित्रमर्चिष्य ग्ने विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनीहि नः २३ ५९०
यत् ते पवित्रमर्चिव दग्ने तेन पुनीहि नः । ब्रह्मसवैः पुनीहि नः २४
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । मां पुनीहि विश्वतः २५
त्रिभिष्ट्वं देव सवित र्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः । अग्ने दक्षैः पुनीहि नः २६
पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मा २७
प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः । देवेभ्य उत्तमं हविः २८ ५९१
उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम् । अगन्म बिभ्रतो नमः २९
अलाय्यस्य परशुर्ननाश त मा पवस्व देव सोम । आखुं चिदेव देव सोम ३०
यः पावमानीरध्ये त्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना ३१ ५९८

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ३२ ५९९

॥ ६७ ॥ (ऋ. ९ । ६८ । १—१०) (६००—६०९) वत्सप्रिर्भालन्दनः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवो ऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः ।
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे १ ६००
स रोरुवदभि पूर्वा अचिक्रद दुपारुहः श्रथयन्त्स्वादते हरिः ।
तिरः पवित्रं परियन्नुरु ज्रयो नि शर्याणि दधते देव आ वरम् २
वि यो ममे यम्या संयती मदः साकंवृधा पयसा पिन्वदक्षिता ।
मही अपारे रजसी विवेविद दभिव्रजन्नक्षितं पाज आ ददे ३
स मातरा विचरन् वाजयन्नपः प्र मेधिरः स्वधया पिन्वते पदम् ।
अंशुर्यवेन पिपिशे यतो नृभिः सं जामिभिर्नसते रक्षते शिरः ४
सं दक्षेण मनसा जायते कवि र्ऋतस्य गर्भो निहितो यमा परः ।
यूना ह सन्ता प्रथमं वि जज्ञतु र्गुहा हितं जनिम नेममुद्यतम् ५
मन्द्रस्य रूपं विविदुर्मनीषिणः श्येनो यदन्धो अभरत् परावतः ।
तं मर्जयन्त सुवृधं नदीष्वाँ उशन्तमंशुं परियन्तमृग्मियम् ६ ६०५
त्वां मृजन्ति दश योषणः सुतं सोम ऋषिभिर्मतिभिर्धीतिभिर्हितम् ।
अव्यो वारेभिरुत देवहूतिभि र्नृभिर्यतो वाजमा दर्षि सातये ७
परिप्रयन्तं वय्यं सुषंसदं सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभः ।
यो धारया मधुमाँ ऊर्मिणा दिव इयर्ति वाचं रयिषाळमर्त्यः ८
अयं दिव इयर्ति विश्वमा रजः सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।
अद्भिर्गोभिर्मृज्यते अद्रिभिः सुतः पुनान इन्दुर्वरिवो विदत् प्रियम् ९
एवा नः सोम परिषिच्यमानो वयो दधच्चित्रतमं पवस्व ।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् १० ६०९

॥ ६८ ॥ (ऋ. ९।६९।१ – १०) (६१०—६१९) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। जगती, ९-१०त्रिष्टुप्।

इषुर्न धन्वन् प्रति धीयते मति र्वत्सो न मातुरुप सर्ज्यूधनि ।
उरुधारेव दुहे अग्र आय त्यस्य व्रतेष्वपि सोम इष्यते १ ६१०
उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनि ।
पवमानः संतनिः प्रघ्नतामिव मधुमान् द्रप्सः परि वारमर्षति २ ६११

अव्ये वधूयुः पवते परि त्वचि श्रथ्नीते नप्तीरदितेर्ऋतं यते ।
हरिरक्रान् यजतः संयतो मदो नृम्णा शिशानो महिषो न शोभते ३
उक्षा मिमाति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप यन्ति निष्कृतम् ।
अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत ४
अमृक्तेन रुशता वाससा हरिरमर्त्यो निर्णिजानः परि व्यत ।
दिवस्पृष्ठं बर्हणा निर्णिजे कृतोपस्तरणं चम्वोर्नभस्मयम् ५
सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुपः साकमीरते ।
तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन ६ ६१५
सिन्धोरिव प्रवणे निम्न आशवो वृषच्युता मदासो गातुमाशत ।
शं नो निवेशे द्विपदे चतुष्पदेऽस्मे वाजाः सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ७
आ नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवदश्वावद् गोमद् यवमत् सुवीर्यम् ।
यूयं हि सोम पितरो मम स्थन दिवो मूर्धानः प्रस्थिता वयस्कृतः ८
एते सोमाः पवमानास इन्द्रं रथा इव प्र ययुः सातिमच्छ ।
सुताः पवित्रमति यन्त्यव्यं हित्वी वव्रिं हरितो वृष्टिमच्छ ९
इन्दविन्द्राय बृहते पवस्व सुमृळीको अनवद्यो रिशादाः ।
भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः १० ६१९

॥ ६९ ॥ (ऋ. ९ । ७० । १-१०) (६२०—६२९) रेणुर्वैश्वामित्रः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रे सत्यामाशिरं पूर्व्ये व्योमनि ।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत १ ६२०
स भिक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे
तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः २
ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवोऽदाभ्यासो जनुषी उभे अनु ।
येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद् राजानं मनना अगृभ्णत ३
स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः प्र मध्यमासु मातृषु प्रमे सचा ।
व्रतानि पानो अमृतस्य चारुण उभे नृचक्षा अनु पश्यते विशौ ४
स मर्मृजान इन्द्रियाय धायस ओभे अन्ता रोदसी हर्षते हितः ।
वृषा शुष्मेण बाधते वि दुर्मतीरादेदिशानः शर्यहेव शुरुधः ५ ६२४

स मातरा न ददृशान उस्रियो नानददेति मरुतामिव स्वनः ।
जानन्नृतं प्रथमं यत् स्वर्णरं प्रशस्तये कमवृणीत सुक्रतुः ६ ६१५
रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया शृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणः ।
आ योनिं सोमः सुकृतं नि षीदति गव्ययी त्वग् भवति निर्णिगव्ययी ७
शुचिः पुनानस्तन्वमरेपस—मव्ये हरिर्न्यधाविष्ट सानवि ।
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे त्रिधातु मधु क्रियते सुकर्मभिः ८
पवस्व सोम देववीतये वृषे—न्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते ९
हितो न सप्तिरभि वाजमर्ष—न्द्रस्येन्दो जठरमा पवस्व
नावा न सिन्धुमति पर्षि विद्वा—ञ्छूरो न युध्यन्नव नो निदः स्पः १० ६१९

॥ ७० ॥ (ऋ. ९ । ७१ । १—९) (६३०—६३८) ऋषभो वैश्वामित्रः । जगती, ९ त्रिष्टुप् ।

आ दक्षिणा सृज्यते शुष्म्या३सदं वेति द्रुहो रक्षसः पाति जागृविः ।
हरिरोपशं कृणुते नभस्पय उपस्तिरे चम्वो३र्ब्रह्म निर्णिजे १ ६३०
प्र कृष्टिहेव शूष एति रोरुव—दसुर्यं१ वर्णं नि रिणीते अस्य तम् ।
जहाति वव्रिं पितुरेति निष्कृत—मुपप्रुतं कृणुते निर्णिजं तना २
अद्रिभिः सुतः पवते गभस्त्यो—र्वृषायते नभसा वेपते मती ।
स मोदते नसते साधते गिरा नेनिक्ते अप्सु यजते परीमणि ३
परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिञ्चन्ति हर्म्यस्य सक्षणिम् ।
आ यस्मिन् गावः सुहुताद ऊधनि मूर्धञ्छ्रीणन्त्यग्रियं वरीमभिः ४
समी रथं न भुरिजोरहेषत दश स्वसारो अदितेरुपस्थ आ ।
जिगादुप ज्रयति गोरपीच्यं पदं यदस्य मतुथा अजीजनन् ५
श्येनो न योनिं सदनं धिया कृतं हिरण्ययमासदं देव एषति ।
ए रिणन्ति बर्हिषि प्रियं गिरा ऽश्वो न देवाँ अप्येति यज्ञियः ६ ६३५
परा व्यक्तो अरुषो दिवः कवि—र्वृषा त्रिपृष्ठो अनविष्ट गा अभि ।
सहस्रणीतिर्यतिः परायती रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति ७
त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत् समृता सेधति स्रिधः ।
अप्सा याति स्वधया दैव्यं जनं सं सुष्टुती नसते सं गोअग्रया ८ ६३७

उक्षेव यूथा परियन्नरावी—दधि त्विषीरधित सूर्यस्य।
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः परि क्रतुना पश्यते जाः ९ ६३८

॥ ७१ ॥ (ऋ. ९। ७२। १—९) (६३९—६४७) हरिमन्त आङ्गिरसः। जगती।

हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते।
उद् वाचमीरयति हिन्वते मती पुरुष्टुतस्य कति चित् परिप्रियः १
साकं वदन्ति बहवो मनीषिण इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहुः।
यदी मृजन्ति सुगभस्तयो नरः सनीळाभिर्दशभिः काम्यं मधु २ ६४०
अरममाणो अत्येति गा अभि सूर्यस्य प्रियं दुहितुस्तिरो रवम्।
अन्वस्मै जोषमभरद् विनंगृसः सं द्वयीभिः स्वसृभिः क्षेति जामिभिः ३
नृधूतो अद्रिषुतो बर्हिषि प्रियः पतिर्गवां प्रदिव इन्दुर्ऋत्वियः।
पुरंधिवान् मनुषो यज्ञसाधनः शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ४
नृबाहुभ्यां चोदितो धारया सुतो ऽनुष्वधं पवते सोम इन्द्र ते।
आप्राः क्रतून्त्समजैरध्वरे मती—र्वेर्न द्रुषच्चम्वो३रासदद्धरिः ५
अंशुं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितं कविं कवयोऽपसो मनीषिणः।
समी गावो मतयो यन्ति संयत ऋतस्य योना सदने पुनर्भुवः ६
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवो३ ऽपामूर्मौ सिन्धुष्वन्तरुक्षितः।
इन्द्रस्य वज्रो वृषभो विभूवसुः सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ७ ६४५
स तू पवस्व परि पार्थिवं रजः स्तोत्रे शिक्षन्नाधून्वते च सुक्रतो।
मा नो निर्भाग् वसुनः सादनस्पृशो रयिं पिशङ्गं बहुलं वसीमहि ८
आ तू न इन्दो शतदात्वश्व्यं सहस्रदातु पशुमद्धिरण्यवत्।
उप मास्व बृहती रेवतीरिषो ऽधि स्तोत्रस्य पवमान नो गहि ९ ६४७

॥ ७२ ॥ (ऋ. ९। ७३। १-९) (६४८-६५६) पवित्र आङ्गिरसः।

स्रक्वे द्रप्सस्य धमतः समस्वर—न्नृतस्य योना समरन्त नाभयः।
त्रीन्त्स मूर्ध्नो असुरश्चक्र आरभे सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन् १
सम्यक् सम्यञ्चो महिषा अहेषत सिन्धोरूर्मावधि वेना अवीविपन्।
मधोर्धाराभिर्जनयन्तो अर्कमित् प्रियामिन्द्रस्य तन्वमवीवृधन् २ ६४९

पवित्रवन्तः परि वाचमासते पितैषां प्रत्नो अभि रक्षति व्रतम् ।
महः समुद्रं वरुणस्तिरो दधे धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम् ३ ६५०
सहस्रधारेऽव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः ।
अस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवः ४
पितुर्मातुरध्या ये समस्वरन्नृचा शोचन्तः संदहन्तो अव्रतान् ।
इन्द्रद्विष्टामप धमन्ति मायया त्वचमसिक्नीं भूमनो दिवस्परि ५
प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वरञ्छ्लोकयन्त्रासो रभसस्य मन्तवः ।
अपानक्षासो बधिरा अहासत ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः ६
सहस्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः ।
रुद्रास एषामिषिरासो अद्रुहः स्पशः स्वञ्चः सुदृशो नृचक्षसः ७
ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुस्त्री ष पवित्रा हृद्य१न्तरा दधे ।
विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यत्यवाजुष्टान् विध्यति कर्ते अव्रतान् ८ ६५५
ऋतस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ जिह्वाया अग्रे वरुणस्य मायया ।
धीराश्चित् तत् समिनक्षन्त आशतात्रा कर्तमव पदात्यप्रभुः ९ ६५६

॥ ७३ ॥ (ऋ. ९ । ७४ । १—९.) (६५७—६६५) कक्षीवान् दैर्घतमसः । जगती, ८ त्रिष्टुप् ।

शिशुर्न जातोऽव चक्रदद् वने स्व१र्यद् वाज्यरुषः सिषासति ।
दिवो रेतसा सचते पयोवृधा तमीमहे सुमती शर्म सप्रथः १
दिवो यः स्कम्भो धरुणः स्वातत आपूर्णो अंशुः पर्येति विश्वतः
सेमे मही रोदसी यक्षदावृता समीचीने दाधार समिषः कविः २
महि प्सरः सुकृतं सोम्यं मधूर्वी गव्यूतिरदितेर्ऋतं यते ।
ईशे यो वृष्टेरित उस्रियो वृषापां नेता य इतऊतिर्ऋग्मियः ३
आत्मन्वन्नभो दुह्यते घृतं पय ऋतस्य नाभिरमृतं वि जायते ।
समीचीनाः सुदानवः प्रीणन्ति तं नरो हितमव मेहन्ति पेरवः ४ ६६०
अरावीदंशुः सचमान ऊर्मिणा देवाव्यं१ मनुषे पिन्वति त्वचम् ।
दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे ५
सहस्रधारेऽव ता असश्चतस्तृतीये सन्तु रजसि प्रजावतीः ।
चतस्रो नाभो निहिता अवो दिवो हविर्भरन्त्यमृतं घृतश्चुतः ६ ६६१

श्वेतं रूपं कृणुते यत् सिषासति सोमो मीढ्वाँ असुरो वेद भूमनः ।
धिया शमी सचते सेमभि प्रवद् दिवस्कवन्धमव दर्षदुद्रिणम् ७
अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तं कार्ष्मन्ना वाज्यक्रमीत् ससवान् ।
आ हिन्विरे मनसा देवयन्तः कक्षीवते शतहिमाय गोनाम् ८
अद्भिः सोम पपृचानस्य ते रसो ऽव्यो वारं वि पवमान धावति ।
स मृज्यमानः कविभिर्मदिन्तम स्वदस्वेन्द्राय पवमान पीतये ९ ६६५

॥ ७४ ॥ (ऋ. ९ । ७५ । १-५ ; (६६६-६७०) कविर्भार्गवः । जगती ।

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते ।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद् विचक्षणः १
ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं१ नाम तृतीयमधि रोचने दिवः २
अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभिर्येमानः कोश आ हिरण्यये ।
अभीमृतस्य दोहना अनूषताऽधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति ३
अद्रिभिः सुतो मतिभिश्चनोहितः प्ररोचयन् रोदसी मातरा शुचिः ।
रोमाण्यव्या समया वि धावति मधोर्धारा पिन्वमाना दिवेदिवे ४
परि सोम प्र धन्वा स्वस्तये नृभिः पुनानो अभि वासयाशिरम् ।
ये ते मदा आहनसो विहायसस्तेभिरिन्द्रं चोदय दातवे मघम् ५ ६७०

॥ ७५ ॥ (ऋ. ९ । ७६ । १—५)

धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः ।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुते नदीष्वा १
शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्व१: सिषासन् रथिरो गविष्टिषु ।
इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः २
इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश ।
प्र णः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया न वाजाँ उप मासि शश्वतः ३
विश्वस्य राजा पवते स्वर्दृशं ऋतस्य धीतिमृषिषाळवीवशत् ।
यः सूर्यस्यासिरेण मृज्यते पिता मतीनामसमष्टकाव्यः ४
वृषेव यूथा परि कोशमर्षस्यपामुपस्थे वृषभः कनिक्रदत् ।
स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमो यथा जेषाम समिथे त्वोतयः ५ ६७५

॥ ७६ ॥ (ऋ. ९ । ७७ । १—५)

एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रद—दिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः ।
अभीमृतस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः १
स पूर्व्यः पवते यं दिवस्परि श्येनो मथायदिषितस्तिरो रजः ।
स मध्व आ युवते वेविजान इत् कृशानोरस्तुर्मनसाह बिभ्युषा २
ते नः पूर्वास उपरास इन्दवो महे वाजाय धन्वन्तु गोमते ।
ईक्षेण्यासो अह्यो न चारवो ब्रह्मब्रह्म ये जुजुषुर्हविर्हविः ३
अयं नो विद्वान् वनवद् वनुष्यत इन्दुः सत्राचा मनसा पुरुष्टुतः ।
इनस्य यः सदने गर्भमादधे गवामुरुब्जमभ्यर्षति व्रजम् ४
चक्रिर्दिवः पवते कृत्व्यो रसो महाँ अदब्धो वरुणो हुरुग्यते ।
असावि मित्रो वृजनेषु यज्ञियो ऽत्यो न यूथे वृषयुः कनिक्रदत् ५ ६८०

॥ ७७ ॥ (ऋ. ९ । ७८ । १—५)

प्र राजा वाचं जनयन्नसिष्यद—दपो वसानो अभि गा इयक्षति ।
गृभ्णाति रिप्रमविरस्य तान्वा शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम् १
इन्द्राय सोम परि षिच्यसे नृभि—र्नृचक्षा ऊर्मिः कविरज्यसे वने ।
पूर्वीर्हि ते स्रुतयः सन्ति यातवे सहस्रमश्वा हरयश्चमूषदः २
समुद्रिया अप्सरसो मनीषिण—मासीना अन्तरभि सोममक्षरन् ।
ता ईं हिन्वन्ति हर्म्यस्य सक्षणिं याचन्ते सुम्नं पवमानमक्षितम् ३
गोजिन्नः सोमो रथजिद्धिरण्यजित् स्वर्जिदब्जित् पवते सहस्रजित् ।
यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदं स्वादिष्ठं द्रप्समरुणं मयोभुवम् ४
एतानि सोम पवमानो अस्मयुः सत्यानि कृण्वन् द्रविणान्यर्षसि ।
जहि शत्रुमन्तिके दूरके च य उर्वीं गव्यूतिमभयं च नस्कृधि ५ ६८१

॥ ७८ ॥ (ऋ. ९ । ७९ । १—५)

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र सुवानासो बृहद्दिवेषु हरयः ।
वि च नशन् न इषो अरातयो ऽर्यो नशन्त सनिषन्त नो धियः १
प्र णो धन्वन्त्विन्दवो मदच्युतो धना वा येभिरर्वतो जुनीमसि ।
तिरो मर्तस्य कस्य चित् परिह्वृतिं वयं धनानि विश्वधा भरेमहि २ ६८७

उत स्वस्या अरात्या अघिर्हि ष उतान्यस्या अरात्या वृको हि षः ।
धन्वन् न तृष्णा समरीत ताँ अभि सोम जहि पवमान दुराध्यः ३
दिवि ते नाभा परमो य आददे पृथिव्यास्ते रुरुहुः सानवि क्षिपः
अद्रयस्त्वा बप्सति गोरधि त्वच्यप्सु त्वा हस्तैर्दुदुहुर्मनीषिणः ४
एवा त इन्दो सुभ्वं सुपेशसं रसं तुञ्जन्ति प्रथमा अभिश्रियः ।
निदंनिदं पवमान नि तारिष आविस्ते शुष्मो भवतु प्रियो मदः ५ ६९०

॥ ७९ ॥ (ऋ. ९ । ८० । १–५) (६९१–७०५) वसुर्भारद्वाजः ।

सोमस्य धारा पवते नृचक्षस ऋतेन देवान् हवते दिवस्परि ।
बृहस्पते रवथेना वि दिद्युते समुद्रासो न सवनानि विव्यचुः १
यं त्वा वाजिन्नघ्न्या अभ्यनूषता ऽयोहतं योनिमा रोहसि द्युमान् ।
मघोनामायुः प्रतिरन् महि श्रव इन्द्राय सोम पवसे वृषा मदः २
एन्द्रस्य कुक्षा पवते मदिन्तम ऊर्जं वसानः श्रवसे सुमङ्गलः ।
प्रत्यङ् स विश्वा भुवनाभि पप्रथे क्रीळन् हरिरत्यः स्यन्दते वृषा ३
तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं नरः सहस्रधारं दुहते दश क्षिपः
नृभिः सोम प्रच्युतो ग्रावभिः सुतो विश्वान् देवाँ आ पवस्वा सहस्रजित् ४
तं त्वा हस्तिनो मधुमन्तमद्रिभि र्दुहन्त्यप्सु वृषभं दश क्षिपः ।
इन्द्रं सोम मादयन् दैव्यं जनं सिन्धोरिवोर्मिः पवमानो अर्षसि ५ ६९५

॥ ८० ॥ (ऋ. ९ । ८१ । १–५) जगती, ५ त्रिष्टुप् ।

प्र सोमस्य पवमानस्योर्मय इन्द्रस्य यन्ति जठरं सुपेशसः ।
दध्ना यदीमुन्नीता यशसा गवां दानाय शूरमुदमन्दिषुः सुताः १
अच्छा हि सोमः कलशाँ असिष्यद दत्यो न वोळ्हा रघुवर्तनिर्वृषा ।
अथा देवानामुभयस्य जन्मनो विद्वाँ अश्नोत्यमुत इतश्च यत् २
आ नः सोम पवमानः किरा व स्विन्दो भव मघवा राधसो महः ।
शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना मा नो गयमारे अस्मत् परा सिचः ३
आ नः पूषा पवमानः सुरातयो मित्रो गच्छन्तु वरुणः सजोषसः ।
बृहस्पतिर्मरुतो वायुरश्विना त्वष्टा सविता सुयमा सरस्वती ४
उभे द्यावापृथिवी विश्वमिन्वे अर्यमा देवो अदितिर्विधाता ।
भगो नृशंस उर्वन्तरिक्षं विश्वे देवाः पवमानं जुषन्त ५ ७००

॥ ८१ ॥ (ऋ. ९ । ८२ । १—५) जगती ।

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत् ।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् १
कविर्वेधस्या पर्येषि माहिन–मत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि ।
अपसेधन् दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् २
पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे ।
स्वसार आपो अभि गा उतासरन् त्सं ग्रावभिर्नसते वीते अध्वरे ३
जायेव पत्यावधि शेव मंहसे पज्राया गर्भ शृणुहि ब्रवीमि ते ।
अन्तर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसे ऽनिन्द्यो वृजने सोम जागृहि ४
यथा पूर्वेभ्यः शतसा अमृध्रः सहस्रसाः पर्यया वाजमिन्दो ।
एवा पवस्व सुविताय नव्यसे तव व्रतमन्वापः सचन्ते ५ ७०५

॥ ८२ ॥ (ऋ. ९।८३।१—५) (७०६—७१०) पवित्र आङ्गिरसः ।

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद् वहन्तस्तत् समाशत १
तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन् ।
अवन्त्यस्य पवीतारमाशवो दिवस्पृष्ठमधि तिष्ठन्ति चेतसा २
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा बिभर्ति भुवनानि वाजयुः ।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ३
गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पाति देवानां जनिमान्यद्भुतः ।
गृभ्णाति रिपुं निधया निधापतिः सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत ४
हविर्हविष्मो महि सद्म दैव्यं नभो वसानः परि यास्यध्वरम् ।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयसि श्रवो बृहत् ५ ७१०

॥ ८३ ॥ (ऋ. ९ । ८४ । १-५) (७११-७१५) वाच्यः प्रजापतिः ।

पवस्व देवमादनो विचर्षणि–रप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे ।
कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्तिम–दुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम् १
आ यस्तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति ।
कृण्वन्त्संचृतं विचृतमभिष्टय इन्दुः सिषक्त्युषसं न सूर्यः २ ७११

आ यो गोभिः सृज्यत ओषधीष्वा देवानां सुम्न इषयन्नुपावसुः।
आ विद्युता पवते धारया सुत इन्द्रं सोमो मादयन् दैव्यं जनम् ३
एष स्य सोमः पवते सहस्रजि-द्धिन्वानो वाचमिषिरामुषर्बुधम्।
इन्दुः समुद्रमुदियर्ति वायुभि-रेन्द्रस्य हार्दि कलशेषु सीदति ४
अभि त्यं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति मतिभिः स्वर्विदम्।
धनंजयः पवते कृत्व्यो रसो विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ५ ७१५

॥ ८४ ॥ (ऋ. ९ । ८५ । १—१२) (७१६—७२७) वेनो भार्गवः। जगती, ११—१२ त्रिष्टुप्।

इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवा-ऽपामीवा भवतु रक्षसा सह।
मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः १
अस्मान्त्समर्ये पवमान चोदय दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः।
जहि शत्रूँरभ्या मन्दनायतः पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि २
अदब्ध इन्दो पवसे मदिन्तम आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुत्तमः।
अभि स्वरन्ति बहवो मनीषिणो राजानमस्य भुवनस्य निंसते ३
सहस्रणीथः शतधारो अद्भुत इन्द्रायेन्दुः पवते काम्यं मधु।
जयन् क्षेत्रमभ्यर्षा जयन्नप उरुं नो गातुं कृणु सोम मीढ्वः ४
कनिक्रदत् कलशे गोभिरज्यसे व्य१व्ययं समया वारमर्षसि।
मर्मृज्यमानो अत्यो न सानसि-रिन्द्रस्य सोम जठरे समक्षरः ५ ७२०
स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः ६
अत्यं मृजन्ति कलशे दश क्षिपः प्र विप्राणां मतयो वाच ईरते।
पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुति-मेन्द्रं विशन्ति मदिरास इन्दवः ७
पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्य-मुर्वीं गव्यूतिं महि शर्म सप्रथः।
माकिर्नो अस्य परिषूतिरीशते-न्दो जयेम त्वया धनंधनम् ८
अधि द्यामस्थाद् वृषभो विचक्षणो ऽरूरुचद् वि दिवो रोचना कविः।
राजा पवित्रमत्येति रोरुवद् दिवः पीयूषं दुहते नृचक्षसः ९
दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतो वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम्।
अप्सु द्रप्सं वावृधानं समुद्र आ सिन्धोरूर्मा मधुमन्तं पवित्र आ १० ७२५

नाके सुपर्णमुपपप्तिवांसं गिरो वेनानामकृपन्त पूर्वीः ।
शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्नतं हिरण्ययं शकुनं क्षामणि स्थाम् ११
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थाद् विश्वा रूपा प्रतिचक्षाणो अस्य ।
भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यद्यौत् प्रारूरुचद् रोदसी मातरा शुचिः १२ ७२७

॥ ८५ ॥ (ऋ. ९ । ८६ । १—४८)

(७२८—७७५) १—१० अकृष्टा माषाः, ११—२० सिकता निवावरी, २१—३० पृश्नयोऽजाः, ३१-४० अकृष्टामाषाद्यस्त्रयः, ४१—४५ भौमोऽत्रिः, ४६—४८ गृत्समदः शौनकः । जगती ।

प्र त आशवः पवमान धीजवो मदा अर्षन्ति रघुजा इव त्मना ।
दिव्याः सुपर्णा मधुमन्त इन्दवो मदिन्तमासः परि कोशमासते १
प्र ते मदासो मदिरास आशवो ऽसृक्षत रथ्यासो यथा पृथक् ।
धेनुर्न वत्सं पयसाभि वज्रिण मिन्द्रमिन्दवो मधुमन्त ऊर्मयः २
अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष स्वर्वित् कोशं दिवो अद्रिमातरम् ।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्यये सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ३ ७३०
प्र त आश्विनीः पवमान धीजुवो दिव्या असृग्रन् पयसा धरीमणि ।
प्रान्तर्ऋषयः स्थाविरीरसृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः ४
विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोस्ते सतः परि यन्ति केतवः ।
व्यानशिः पवसे सोम धर्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ५
उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः ।
यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योना कलशेषु सीदति ६
यज्ञस्य केतुः पवते स्वध्वरः सोमो देवानामुप याति निष्कृतम् ।
सहस्रधारः परि कोशमर्षति वृषा पवित्रमत्येति रोरुवत् ७
राजा समुद्रं नद्यो३ वि गाहते ऽपामूर्मिं सचते सिन्धुषु श्रितः ।
अध्यस्थात् सानु पवमानो अव्ययं नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ८ ७३५
दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदद् द्यौश्च यस्य पृथिवी च धर्मभिः ।
इन्द्रस्य सख्यं पवते विवेविदत् सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ९
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः ।
दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः १० ७३७

अभिक्रन्दन् कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः ।
हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ११
अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्ष—त्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छति ।
अग्रे वाजस्य भजते महाधनं स्वायुधः सोतृभिः पूयते वृषा १२
अयं मतवाञ्छकुनो यथा हितो ऽव्ये ससार पवमान ऊर्मिणा ।
तव क्रत्वा रोदसी अन्तरा कवे शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते १३ ७४०
द्रापिं वसानो यजतो दिविस्पृश—मन्तरिक्षप्रा भुवनेष्वर्पितः ।
स्वर्जज्ञानो नभसाभ्यक्रमीत् प्रत्नमस्य पितरमा विवासति १४
सो अस्य विशे महि शर्म यच्छति यो अस्य धाम प्रथमं व्यानशे ।
पदं यदस्य परमे व्योमन् यतो विश्वा अभि सं याति संयतः १५
प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम् ।
मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयाम्ना पथा १६
प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवसनेष्वक्रमुः ।
सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभो ऽभि धेनवः पयसेमशिश्रयुः १७
आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिष—मिन्दो पवस्व पवमानो अस्रिधम् ।
या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद् वाजवन्मधुमत् सुवीर्यम् १८ ७४५
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नः प्रतरीतोषसो दिवः ।
क्राणा सिन्धूनां कलशाँ अवीवश—दिन्द्रस्य हार्द्याविशन् मनीषिभिः १९
मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कवि—र्नृभिर्यतः परि कोशाँ अचिक्रदत् ।
त्रितस्य नाम जनयन् मधु क्षर—दिन्द्रस्य वायोः सख्याय कर्तवे २०
अयं पुनान उषसो वि रोचय—दयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत् ।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः २१
पवस्व सोम दिव्येषु धामसु सृजान इन्दो कलशे पवित्र आ ।
सीदन्निन्द्रस्य जठरे कनिक्रद—न्नृभिर्यतः सूर्यमारोहयो दिवि २२
अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र आँ इन्दविन्द्रस्य जठरेष्वाविशन् ।
त्वं नृचक्षा अभवो विचक्षण सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप २३ ७५०

त्वां सोम पवमानं स्वाध्यो ऽनु विप्रासो अमदन्नवस्यवः ।
त्वां सुपर्ण आभरद् दिवस्परी—न्दो विश्वाभिर्मतिभिः परिष्कृतम् २४
अव्ये पुनानं परि वार ऊर्मिणा हरिं नवन्ते अभि सप्त धेनवः ।
अपामुपस्थे अध्यायवः कवि—मृतस्य योना महिषा अहेषत २५
इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कवि—रत्यो न क्रीळन् परि वारमर्षति २६
असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः ।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः २७
तवेमाः प्रजा दिव्यस्य रेतस—स्त्वं विश्वस्य भुवनस्य राजसि ।
अथेदं विश्वं पवमान ते वशे त्वमिन्दो प्रथमो धामधा असि २८ ७५५
त्वं समुद्रो असि विश्ववित् कवे तवेमाः पञ्च प्रदिशो विधर्मणि ।
त्वं द्यां च पृथिवीं चाति जभ्रिषे तव ज्योतींषि पवमान सूर्यः २९
त्वं पवित्रे रजसो विधर्मणि देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे ।
त्वामुशिजः प्रथमा अगृभ्णत तुभ्येमा विश्वा भुवनानि येमिरे ३०
प्र रेभ एत्यति वारमव्ययं वृषा वनेष्वव चक्रदद्धरिः
सं धीतयो वावशाना अनूषत शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्नतम् ३१
स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे ।
नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुप याति निष्कृतम् ३२
राजा सिन्धूनां पवते पतिर्दिव ऋतस्य याति पथिभिः कनिक्रदत् ।
सहस्रधारः परि षिच्यते हरिः पुनानो वाचं जनयन्नुपावसुः ३३ ७६०
पवमान मह्यर्णो वि धावसि सूरो न चित्रो अव्ययानि पव्यया ।
गभस्तिपूतो नृभिरद्रिभिः सुतो महे वाजाय धन्याय धन्वसि ३४
इषमूर्जं पवमानाभ्यर्षसि श्येनो न वंसु कलशेषु सीदसि ।
इन्द्राय मद्वा मद्यो मदः सुतो दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः ३५
सप्त स्वसारो अभि मातरः शिशुं नवं जज्ञानं जेन्यं विपश्चितम् ।
अपां गन्धर्वं दिव्यं नृचक्षसं सोमं विश्वस्य भुवनस्य राजसे ३६
ईशान इमा भुवनानि वीयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः ।
तास्ते क्षरन्तु मधुमद् घृतं पय—स्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ३७ ७६४

त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि ।
स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद् वयं स्याम भुवनेषु जीवसे ३८ ७६५
गोवित् पवस्व वसुविद्धिरण्यविद् रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्पितः ।
त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित् तं त्वा विप्रा उप गिरेम आसते ३९
उन्मध्व ऊर्मिर्वनना अतिष्ठिपदपो वसानो महिषो वि गाहते ।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहत् सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो बृहत् ४०
स भन्दना उदियर्ति प्रजावतीर्विश्वायुर्विश्वाः सुभरा अहर्दिवि ।
ब्रह्म प्रजावद् रयिमश्वपस्त्यं पीत इन्दविन्द्रमस्मभ्यं याचतात् ४१
सो अग्रे अह्नां हरिर्हर्यतो मदः प्र चेतसा चेतयते अनु द्युभिः ।
द्वा जना यातयन्नन्तरीयते नरा च शंसं दैव्यं च धर्तरि ४२
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते ।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमासु गृभ्णते ४३ ७७०
विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्यन्धो अर्षति ।
अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचमत्यो न क्रीळन्नसरद् वृषा हरिः ४४
अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः ।
हरिर्घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः ४५
असर्जि स्कम्भो दिव उद्यतो मदः परि त्रिधातुर्भुवनान्यर्षति ।
अंशुं रिहन्ति मतयः पनिप्नतं गिरा यदि निर्णिजमृग्मिणो ययुः ४६
प्र ते धारा अत्यण्वानि मेष्यः पुनानस्य संयतो यन्ति रंहयः ।
यद् गोभिरिन्दो चम्वोः समज्यस आ सुवानः सोम कलशेषु सीदसि ४७
पवस्व सोम क्रतुविन्न उक्थ्योऽव्यो वारे परि धाव मधु प्रियम् ।
जहि विश्वान् रक्षस इन्दो अत्रिणो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ४८ ७७५

॥ ८६ ॥ (ऋ. ९।८७।१-९) (७७६—७८४) उशना काव्यः । त्रिष्टुप् ।

प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष ।
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति १
स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा वृजनं रक्षमाणः ।
पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः २ ७७७

ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन ।
स चिद् विवेद निहितं यदासामपीच्यं१ गुह्यं नाम गोनाम् ३
एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णे परि पवित्रे अक्षाः ।
सहस्रसाः शतसा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात् ४
एते सोमा अभि गव्या सहस्रा महे वाजायामृताय श्रवांसि ।
पवित्रेभिः पवमाना असृग्रञ्छ्रवस्यवो न पृतनाजो अत्याः ५ ७८०
परि हि ष्मा पुरुहूतो जनानां विश्वासरद् भोजना पूयमानः ।
अथा भर श्येनभृत प्रयांसि रयिं तुञ्जानो अभि वाजमर्ष ६
एष सुवानः परि सोमः पवित्रे सर्गो न सृष्टो अदधावदर्वा ।
तिग्मे शिशानो महिषो न शृङ्गे गा गव्यन्नभि शूरो न सत्वा ७
एषा ययौ परमादन्तरद्रेः कूचित् सतीरूर्वे गा विवेद ।
दिवो न विद्युत् स्तनयन्त्यभ्रैः सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा ८
उत स्म राशिं परि यासि गोनामिन्द्रेण सोम सरथं पुनानः ।
पूर्वीरिषो बृहतीर्जीरदानो शिक्षा शचीवस्तव ता उपष्टुत् ९

॥ ८७ ॥ (ऋ. ९ । ८८ । १—८)

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि ।
त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम् १ ७८१
स ईं रथो न भुरिषाळयोजि महः पुरूणि सातये वसूनि ।
आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त २
वायुर्न यो नियुत्वाँ इष्टयामा नासत्येव हव आ शंभविष्ठः ।
विश्ववारो द्रविणोदा इव त्मन् पूषेव धीजवनोऽसि सोम ३
इन्द्रो न यो महा कर्माणि चक्रिर्हन्ता वृत्राणामसि सोम पूर्भित् ।
पैद्वो न हि त्वमहिनाम्नां हन्ता विश्वस्यासि सोम दस्योः ४
अग्निर्न यो वन आ सृज्यमानो वृथा पाजांसि कृणुते नदीषु ।
जनो न युध्वा महत उपब्दिरियर्ति सोमः पवमान ऊर्मिम् ५
एते सोमा अति वाराण्यव्या दिव्या न कोशासो अभ्रवर्षाः ।
वृथा समुद्रं सिन्धवो न नीचीः सुतासो अभि कलशाँ असृग्रन् ६ ७९०

शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वाऽनभिशस्ता दिव्या यथा विट् ।
आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्राप्साः पृतनाषाण्न यज्ञः ७
राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्गभीरं तव सोम धाम ।
शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम ८

॥ ८८ ॥ (ऋ. ९ । ८९ । १—७)

प्रो स्य वह्निः पथ्याभिरस्यान् दिवो न वृष्टिः पवमानो अक्षाः ।
सहस्रधारो असदन्न्यस्मे मातुरुपस्थे वन आ च सोमः १
राजा सिन्धूनामवसिष्ट वास ऋतस्य नावमारुहद् रजिष्ठाम् ।
अप्सु द्रप्सो वावृधे श्येनजूतो दुह ईं पिता दुह ईं पितुर्जाम् २
सिंहं नसन्त मध्वो अयासं हरिमरुषं दिवो अस्य पतिम् ।
शूरो युत्सु प्रथमः पृच्छते गा अस्य चक्षसा परि पात्युक्षा ३ ७९५
मधुपृष्ठं घोरमयासमश्वं रथे युञ्जन्त्युरुचक्र ऋष्वम् ।
स्वसार ईं जामयो मर्जयन्ति सनाभयो वाजिनमूर्जयन्ति ४
चतस्र ईं घृतदुहः सचन्ते समाने अन्तर्धरुणे निषत्ताः ।
ता ईमर्षन्ति नमसा पुनानास्ता ईं विश्वतः परि षन्ति पूर्वीः ५
विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या विश्वा उत क्षितयो हस्ते अस्य ।
असत् त उत्सो गृणते नियुत्वान् मध्वो अंशुः पवत इन्द्रियाय ६
वन्वन्नवातो अभि देववीतिमिन्द्राय सोम वृत्रहा पवस्व ।
शग्धि महः पुरुश्चन्द्रस्य रायः सुवीर्यस्य पतयः स्याम ७ ७९९

॥ ८९ ॥ (ऋ. ९ । ९० । १—६) (८००—८०५ वासिष्ठो मैत्रावरुणिः ।

प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिष्यन्नयासीत् ।
इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः १ ८००
अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामाङ्गूषाणामवावशन्त वाणीः ।
वना वसानो वरुणो न सिन्धून् वि रत्नधा दयते वार्याणि २
शूरग्रामः सर्ववीरः सहावाञ्जेता पवस्व सनिता धनानि ।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाळ्हः साह्वान् पृतनासु शत्रून् ३
उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन्त्समीचीने आ पवस्वा पुरंधी ।
अपः सिषासन्नुषसः स्वर्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ४ ८०२

मत्सि सोम वरुणं मत्सि मित्रं मत्सीन्द्रमिन्दो पवमान विष्णुम् ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि महामिन्द्रमिन्दो मदाय ५
एवा राजेव क्रतुमाँ अमेन विश्वा घनिघ्नद् दुरिता पवस्व ।
इन्दो सूक्ताय वचसे वयो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६ ८०५

॥ ९० ॥ (ऋ. ९ । ९१ । १-६) (८०६—८१७) कश्यपो मारीचः ।

असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमो मनीषी ।
दश स्वसारो अधि सानो अव्ये ऽजन्ति वह्निं सदनान्यच्छ १
वीती जनस्य दिव्यस्य कव्यै—रधि सुवानो नहुष्येभिरिन्दुः ।
प्र यो नृभिरमृतो मर्त्येभि—र्मर्मृजानोऽविभिर्गोभिरद्भिः २
वृषा वृष्णे रोरुवदंशुरस्मै पवमानो रुशदीर्ते पयो गोः ।
सहस्रमृक्वा पथिभिर्वचोवि—दध्वस्मभिः सूरो अण्वं वि याति ३
रुजा दृळ्हा चिद् रक्षसः सदांसि पुनान इन्द ऊर्णुहि वि वाजान् ।
वृश्चोपरिष्टात् तुजता वधेन ये अन्ति दूरादुपनायमेषाम् ४
स प्रत्नवन्नव्यसे विश्ववार सूक्ताय पथः कृणुहि प्राचः ।
ये दुष्षहासो वनुषा बृहन्त—स्ताँस्ते अश्याम पुरुकृत् पुरुक्षो ५ ८१०
एवा पुनानो अपः स्वर्गा अस्मभ्यं तोका तनयानि भूरि ।
शं नः क्षेत्रमुरु ज्योतींषि सोम ज्योङ्नः सूर्यं दृशये रिरीहि ६

॥ ९१ ॥ (ऋ. ९ । ९२ । १—६)

परि सुवानो हरिरंशुः पवित्रे रथो न सर्जि सनये हियानः ।
आपच्छ्लोकमिन्द्रियं पूयमानः प्रति देवाँ अजुषत प्रयोभिः १
अच्छा नृचक्षा असरत् पवित्रे नाम दधानः कविरस्य योनौ ।
सीदन् होतेव सदने चमूषू—पेमग्मन्नृषयः सप्त विप्राः २
प्र सुमेधा गातुविद् विश्वदेवः सोमः पुनानः सद एति नित्यम् ।
भुवद् विश्वेषु काव्येषु रन्ता ऽनु जनान् यतते पञ्च धीरः ३
तव त्ये सोम पवमान निण्ये विश्वे देवास्त्रय एकादशासः ।
दश स्वधाभिरधि सानो अव्ये मृजन्ति त्वा नद्यः सप्त यह्वीः ४ ८१५
तन्नु सत्यं पवमानस्यास्तु यत्र विश्वे कारवः संनसन्त ।
ज्योतिर्यदह्ने अकृणोदु लोकं प्रावन्मनुं दस्यवे करभीकम् ५ ८१६

परि सद्मेव पशुमान्ति होता राजा न सत्यः समितीरियानः ।
सोमः पुनानः कलशाँ अयासीत् सीदन् मृगो न महिषो वनेषु ६ ८१७

॥ ९२ ॥ (ऋ. ९ । ९२ । १-५) (८१८-८२२) नोधा गौतमः ।

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः ।
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी १
सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः ।
मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्त्सं गच्छते कलश उस्रियाभिः २
उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते सुमेधाः ।
मूर्धानं गावः पयसा चमूष्वभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निक्तैः ३ ८२०
स नो देवेभिः पवमान रदेन्दो रयिमश्विनं वावशानः ।
रथिरायतामुशती पुरंधिरस्मद्र्यगा दावने वसूनाम् ४
नू नो रयिमुप मास्व नृवन्तं पुनानो वाताप्यं विश्वश्चन्द्रम् ।
प्र वन्दितुरिन्दो तार्यायुः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ५ ८२२

॥ ९३ ॥ (ऋ. ९ । ९४ । १—५) (८२३-८२७) कण्वो घोरः ।

अधि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयन् व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म १
द्विता व्यूर्ण्वन्नमृतस्य धाम स्वर्विदे भुवनानि प्रथन्त ।
धियः पिन्वानाः स्वसरे न गाव ऋतायन्तीरभि वावश्र इन्दुम् २
परि यत् कविः काव्या भरते शूरो न रथो भुवनानि विश्वा ।
देवेषु यशो मर्ताय भूषन् दक्षाय रायः पुरुभूषु नव्यः ३ ८२५
श्रिये जातः श्रिय आ निरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति ।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ ४
इषमूर्जमभ्यर्षाश्वं गामुरु ज्योतिः कृणुहि मत्सि देवान् ।
विश्वानि हि सुषहा तानि तुभ्यं पवमान बाधसे सोम शत्रून् ५ ८२७

॥ ९४ ॥ (ऋ. ९ । ९५ । १-५) (८२८—८३२) प्रस्कण्वः काण्वः ।

कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे पुनानः ।
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गा अतो मतीर्जनयत स्वधाभिः १ ८२८

*

हरिः सृजानः पथ्यामृतस्ये—यर्ति वाचमरितेव नावम् ।
देवो देवानां गुह्यानि नामा—ऽऽविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे २
अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ ।
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चा ऽऽ च विशन्त्युशतीरुशन्तम् ३ ८३०
तं मर्मृजानं महिषं न सानां—वंशुं दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।
तं वावशानं मतयः सचन्ते त्रितो बिभर्ति वरुणं समुद्रे ४
इष्यन् वाचमुपवक्तेव होतुः पुनान इन्दो वि ष्या मनीषाम्
इन्द्रश्च यत् क्षयथः सौभगाय सुवीर्यस्य पतयः स्याम ५ ८३१
॥ ९५ ॥ (ऋ० ९ । ९६ । १—२४) (८३२—८५६) दैवोदासिः प्रतर्दनः ।
प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।
भद्रान् कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते १
समस्य हरिं हरयो मृजन्त्य—श्वहयैरनिशितं नमोभिः ।
आ तिष्ठति रथमिन्द्रस्य सखा विद्वाँ एना सुमतिं यात्यच्छ २
स नो देव देवताते पवस्व महे सोम प्सरस इन्द्रपानः ।
कृण्वन्नपो वर्षयन् द्यामुतेमा—मुरोरा नो वरिवस्या पुनानः ३ ८३५
अजीतयेऽहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते ।
तदुशन्ति विश्व इमे सखाय—स्तदहं वश्मि पवमान सोम ४
सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ५
ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीना—मृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम् ।
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ६
प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धु—र्गिरः सोमः पवमानो मनीषाः ।
अन्तः पश्यन् वृजनेमावरा—ण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन् ७
स मत्सरः पृत्सु वन्वन्नवातः सहस्ररेता अभि वाजमर्ष ।
इन्द्रायेन्दो पवमानो मनी—ष्यं१शोरूर्मिमीरय गा इषण्यन् ८ ८४०
परि प्रियः कलशे देववात इन्द्राय सोमो रण्यो मदाय ।
सहस्रधारः शतवाज इन्दु—र्वाजी न सप्तिः समना जिगाति ९ ८४१

स पूर्व्यो वसुविज्जायमानो मृजानो अप्सु दुदुहानो अद्रौ ।
अभिशस्तिपा भुवनस्य राजा विदद् गातुं ब्रह्मणे पूयमानः १०
त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः
वन्वन्नवातः परिधीँरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः ११
यथापवथा मनवे वयोधा अमित्रहा वरिवोविद्धविष्मान् ।
एवा पवस्व द्रविणं दधान इन्द्रे सं तिष्ठ जनयायुधानि १२
पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावा ऽपो वसानो अधि सानो अव्ये ।
अव द्रोणानि घृतवान्ति सीद मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः १३ ८४५
वृष्टिं दिवः शतधारः पवस्व सहस्रसा वाजयुर्देववीतौ ।
सं सिन्धुभिः कलशे वावशानः समुस्रियाभिः प्रतिरन् न आयुः १४
एष स्य सोमो मतिभिः पुनानो ऽत्यो न वाजी तरतीदरातीः ।
पयो न दुग्धमदितेरिषिर—मुर्विव गातुः सुयमो न वोळ्हा १५
स्वायुधः सोतृभिः पूयमानो ऽभ्यर्ष गुह्यं चारु नाम ।
अभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्या ऽभि वायुमभि गा देव सोम १६
शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन ।
कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन् त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन् १७
ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् ।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन् त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् १८ ८५०
चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् ।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति १९
मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानो ऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् ।
वृषेव यूथा परि कोशमर्षन् कनिक्रदच्चम्वोरा विवेश २०
पवस्वेन्दो पवमानो महोभिः कनिक्रदत् परि वाराण्यर्ष ।
क्रीळञ्चम्वोरा विश पूयमान इन्द्रं ते रसो मदिरो ममत्तु २१
प्रास्य धारा बृहतीरसृग्र—न्नक्तो गोभिः कलशाँ आ विवेश ।
साम कृण्वन्त्सामन्यो विपश्चित् क्रन्दन्नेत्यभि सख्युर्न जामिम् २२
अपघ्नन्नेषि पवमान शत्रून् प्रियां न जारो अभिगीत इन्दुः ।
सीदन् वनेषु शकुनो न पत्वा सोमः पुनानः कलशेषु सत्ता २३ ८५५

आ ते रुचः पवमानस्य सोम योषेव यन्ति सुदुघाः सुधाराः ।
हरिरानीतः पुरुवारो अप्स्व चिक्रदत् कलशे देवयूनाम् २४ ८५६

॥ ९६ ॥ (ऋ. ९ । ९७ । १—५८)

(८५७—९१४) १—३ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः, ४-६ वासिष्ठ इन्द्रप्रमतिः, ७—९वासिष्ठो वृषगणः, १०—१२ वासिष्ठो मन्युः,१३-१५ वासिष्ठ उपमन्युः, १६-१८ वासिष्ठो व्याघ्रपाद्, १९-२१ वासिष्ठः शक्तिः, २२—२४ वासिष्ठः कर्णश्रुद्, २५—२७ वासिष्ठो मृळीकः, २८—३० वासिष्ठो वसुकः, ३१—४४ पराशरः शाक्त्यः, ४५—५८ कुत्स आङ्गिरसः।

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमान्ति होता १
भद्रा वस्त्रा समन्या३ वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन् ।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ २
समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे ।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ३
प्र गायताभ्यर्चाम देवान् त्सोमं हिनोत महते धनाय ।
स्वादुः पवाते अति वारमव्य मा सीदाति कलशं देवयुर्नः ४ ८६०
इन्दुर्देवानामुप सख्यमायन् त्सहस्रधारः पवते मदाय ।
नृभिः स्तवानो अनु धाम पूर्व मगन्निन्द्रं महते सौभगाय ५
स्तोत्रे राये हरिरर्षा पुनान इन्द्रं मदो गच्छतु ते भराय ।
देवैर्याहि सरथं राधो अच्छा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६
प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ७
प्र हंसासस्तृपलं मन्युमच्छा मादस्तं वृषगणा अयासुः ।
आङ्गूष्यं१ पवमानं सखायो दुर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम् ८
स रंहत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीळन्तं मिमते न गावः ।
परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः ९ ८६५
इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय ।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यराती र्वरिवः कृण्वन् वृजनस्य राजा १०
अध धारया मध्वा पृचान स्तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः ।
इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ११ ८६७

अभि प्रियाणि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन् ।
इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये १२
वृषा शोणो अभिकनिक्रदद् गा नदयन्नेति पृथिवीमुत द्याम् ।
इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ प्रचेतयन्नर्षति वाचमेमाम् १३
रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम् ।
पवमानः संतनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः १४ ८७०
एवा पवस्व मदिरो मदायो दग्राभस्य नमयन् वधस्नैः ।
परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः १५
जुष्टी न इन्दो सुपथा सुगान्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन् ।
घनेव विष्वग् दुरितानि विघ्नन्नधि ष्णुना धन्व सानो अव्ये १६
वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां जिगत्नुमिळावतीं शंगयीं जीरदानुम् ।
स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन् बन्धूँरिमाँ अवराँ इन्दो वायून् १७
ग्रन्थिं न वि ष्य ग्रथितं पुनान ऋजुं च गातुं वृजिनं च सोम ।
अत्यो न क्रदो हरिरा सृजानो मर्यो देव धन्व पस्त्यावान् १८
जुष्टो मदाय देवतात इन्दो परि ष्णुना धन्व सानो अव्ये ।
सहस्रधारः सुरभिरदब्धः परि स्रव वाजसातौ नृषह्ये १९ ८७५
अरश्मानो येऽरथा अयुक्ता अत्यासो न ससृजानास आजौ ।
एते शुक्रासो धन्वन्ति सोमा देवासस्ताँ उप याता पिबध्यै २०
एवा न इन्दो अभि देववीतिं परि स्रव नभो अर्णश्चमूषु ।
सोमो अस्मभ्यं काम्यं बृहन्तं रयिं ददातु वीरवन्तमुग्रम् २१
तक्षद् यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य वा धर्मणि क्षोरनीके ।
आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम् २२
प्र दानुदो दिव्यो दानुपिन्व ऋतमृताय पवते सुमेधाः ।
धर्मा भुवद् वृजन्यस्य राजा प्र रश्मिभिर्दशभिर्भारि भूम २३
पवित्रेभिः पवमानो नृचक्षा राजा देवानामुत मर्त्यानाम् ।
द्विता भुवद् रयिपती रयीणामृतं भरत् सुभृतं चार्विन्दुः २४ ८८०
अर्वाँ इव श्रवसे सातिमच्छेन्द्रस्य वायोरभि वीतिमर्ष ।
स नः सहस्रा बृहतीरिषो दा भवा सोम द्रविणोवित् पुनानः २५ ८८१

देवाव्यो नः परिषिच्यमानाः क्षयं सुवीरं धन्वन्तु सोमाः ।
आयज्यवः सुमतिं विश्ववारा होतारो न दिवियजो मन्द्रतमाः २६
एवा देव देवताते पवस्व महे सोम प्सरसे देवपानः ।
महश्चिद्धि ष्मसि हिताः समर्ये कृधि सुष्ठाने रोदसी पुनानः २७
अश्वो न क्रदो वृषभिर्युजानः सिंहो न भीमो मनसो जवीयान् ।
अर्वाचीनैः पथिभिर्ये रजिष्ठा आ पवस्व सौमनसं न इन्दो २८
शतं धारा देववाता असृग्रन् त्सहस्रमेनाः कवयो मृजन्ति ।
इन्दो सनित्रं दिव आ पवस्व पुरएतासि महतो धनस्य २९ ८८९
दिवो न सर्गा अससृग्रमह्नां राजा न मित्रं प्र मिनाति धीरः ।
पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यतान आ पवस्व विशे अस्या अजीतिम् ३०
प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन् वारान् यत् पूतो अत्येष्यव्यान् ।
पवमान पवसे धाम गोनां जज्ञानः सूर्यमपिन्वो अर्कैः ३१
कनिक्रददनु पन्थामृतस्य शुक्रो वि भास्यमृतस्य धाम ।
स इन्द्राय पवसे मत्सरवान् हिन्वानो वाचं मतिभिः कवीनाम् ३२
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि सोम पिन्वन् धाराः कर्मणा देववीतौ ।
एन्दो विश कलशं सोमधानं क्रन्दन्निहि सूर्यस्योप रश्मिम् ३३
तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ३४ ८९०
सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः ।
सोमः सुतः पूयते अज्यमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते ३५
एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।
इन्द्रमा विश बृहता रवेण वर्धया वाचं जनया पुरंधिम् ३६
आ जागृविर्विप्र ऋता मतीनां सोमः पुनानो असदच्चमूषु ।
सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः ३७
स पुनान उप सूरे न धातोभे अप्रा रोदसी वि ष आवः ।
प्रिया चिद् यस्य प्रियसास ऊती स तू धनं कारिणे न प्र यंसत् ३८
स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वाँ अभि नो ज्योतिषावीत् ।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिमुष्णन् ३९ ८९१

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्म-ञ्जनयन् प्रजा भुवनस्य राजा ।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत् सोमो वावृधे सुवान इन्दुः ४०
महत् तत् सोमो महिषश्चकारा-ऽपां यद् गर्भोऽवृणीत देवान् ।
अदधादिन्द्रे पवमान ओजो ऽजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ४१
मत्सि वायुमिष्टये राधसे च मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम ४२
ऋजुः पवस्व वृजिनस्य हन्ता ऽपामीवां बाधमानो मृधश्च ।
अभिश्रीणन् पयः पयसाभि गोना-मिन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः ४३
मध्वः सूदं पवस्व वस्व उत्सं वीरं च न आ पवस्वा भगं च ।
स्वदस्वेन्द्राय पवमान इन्दो रयिं च न आ पवस्वा समुद्रात् ४४ ९००
सोमः सुतो धारयात्यो न हित्वा सिन्धुर्न निम्नमभि वाज्यक्षाः ।
आ योनिं वन्यमसदत् पुनानः समिन्दुर्गोभिरसरत् समद्भिः ४५
एष स्य ते पवत इन्द्र सोम-श्चमूषु धीर उशते तवस्वान् ।
स्वर्चक्षा रथिरः सत्यशुष्मः कामो न यो देवयतामसर्जि ४६
एष प्रत्नेन वयसा पुनान-स्तिरो वर्पांसि दुहितुर्दधानः ।
वसानः शर्म त्रिवरूथमप्सु होतेव याति समनेषु रेभन् ४७
नू नस्त्वं रथिरो देव सोम परि स्रव चम्वोः पूयमानः ।
अप्सु स्वादिष्ठो मधुमाँ ऋतावा देवो न यः सविता सत्यमन्मा ४८
अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानो३ ऽभि मित्रावरुणा पूयमानः ।
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठा-मभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम् ४९ ९०१
अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षा-ऽभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः ।
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्या ऽभ्यश्वान् रथिनो देव सोम ५०
अभी नो अर्ष दिव्या वसू-न्यभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः
अभि येन द्रविणमश्नवामा-ऽभ्यार्षेयं जमदग्निवन्नः ५१
अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।
ब्रध्नश्चिदत्र वातो न जूतः पुरुमेधश्चित् तकवे नरं दात् ५२
उत न एना पवया पवस्वा-ऽधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे ।
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद् रणाय ५३ ९०२

महीमे अस्य वृषनाम शूषे माँश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे ।
अस्वापयन्निगुतः स्नेहयच्चा ऽपामित्राँ अपाचितो अचेतः ५४ ९१०
सं त्री पवित्रा विततान्येष्य न्वेकं धावसि पूयमानः ।
असि भगो असि दात्रस्य दाता ऽसि मघवा मघवद्भ्य इन्दो ५५
एष विश्ववित् पवते मनीषी सोमो विश्वस्य भुवनस्य राजा ।
द्रप्साँ ईरयन् विदथेष्विन्दु र्वि वारमव्यं समयाति याति ५६
इन्दुं रिहन्ति महिषा अदब्धाः पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः ।
हिन्वन्ति धीरा दशभिः क्षिपाभिः समञ्जते रूपमपां रसेन ५७
त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ५८ ९१४

॥ ९७ ॥ (ऋ. ९ । ९८ । १-१२)

(९१५-९२६) अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिश्वा भारद्वाजश्च । अनुष्टुप्, ११ बृहती ।

अभि नो वाजसातमं रयिमर्ष पुरुस्पृहम् । इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभ्वासहम् १ ९१५
परि ष्य सुवानो अव्ययं रथे न वर्माव्यत । इन्दुरभि द्रुणा हितो हियानो धाराभिरक्षाः २
परि ष्य सुवानो अक्षा इन्दुरव्ये मदच्युतः । धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा नैति गव्ययुः ३
स हि त्वं देव शश्वते वसु मर्ताय दाशुषे । इन्दो सहस्रिणं रयिं शतात्मानं विवाससि ४
वयं ते अस्य वृत्रहन् वसो वस्वः पुरुस्पृहः । नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्नस्याध्रिगो ५
द्विर्यं पञ्च स्वयशसं स्वसारो अद्रिसंहतम् । प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त्यूर्मिणम् ६ ९२०
परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण । यो देवान् विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति ७
अस्य वो ह्यवसा पान्तो दक्षसाधनम् । यः सूरिषु श्रवो बृहद् दधे स्वर्ण हर्यतः ८
स वां यज्ञेषु मानवी इन्दुर्जनिष्ट रोदसी । देवो देवी गिरिष्ठा अस्रेधन् तं तुविष्वणि ९
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे । नरे च दक्षिणावते देवाय सदनासदे १०
ते प्रत्नासो व्युष्टिषु सोमाः पवित्रे अक्षरन् । अपप्रोथन्तः सनुतर्हुरश्चितः प्रातस्ताँ अप्रचेतसः ११ ९२५
तं सखायः पुरोरुचं यूयं वयं च सूरयः । अश्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् १२ ९२६

॥ ९८ ॥ (ऋ. ९ । ९९ । १-८) (९२७-९३४) रेभसूनू काश्यपौ । अनुष्टुप्, १ बृहती ।

आ हर्यताय धृष्णवे धनुस्तन्वन्ति पौंस्यम् । शुक्रां वयन्त्यसुराय निर्णिजं विपामग्रे महीयुवः १
अध क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहते । यदी विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे २
तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः । यं गाव आसभिर्दधुः पुरा नूनं च सूरयः ३
तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत । उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ४ ९३०

तमुक्षमाणमव्यये वारे पुनन्ति धर्णसिम् । दूतं न पूर्वचित्तय आ शासते मनीषिणः ५
स पुनानो मदिन्तमः सोमश्चमूषु सीदति । पशौ न रेत आदधत् पतिर्वचस्यते धियः ६
स मृज्यते सुकर्मभि- र्देवो देवेभ्यः सुतः । विदे यदासु संददि- र्महीरपो वि गाहते ७
सुत इन्दो पवित्र आ नृभिर्यतो वि नीयसे । इन्द्राय मत्सरिन्तम- श्चमूष्वा नि षीदसि ८ ९३४

॥ ९९ ॥ (ऋ. ९ । १०० । १—९) (९३५—९४३) रेभसूनू काश्यपौ । अनुष्टुप् ।

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः १ ९३५
पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम् । त्वं वसूनि पुष्यसि विश्वानि दाशुषो गृहे २
त्वं धियं मनोयुजं सृजा वृष्टिं न तन्यतुः । त्वं वसूनि पार्थिवा दिव्या च सोम पुष्यसि ३
परि ते जिग्युषो यथा धारा सुतस्य धावति । रंहमाणा व्यव्ययं वारं वाजीव सानसिः ४
क्रत्वे दक्षाय नः कवे पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतो मित्राय वरुणाय च ५
पवस्व वाजसातमः पवित्रे धारया सुतः । इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तमः ६ ९४०
त्वां रिहन्ति मातरो हरिं पवित्रे अद्रुहः । वत्सं जातं न धेनवः पवमान विधर्मणि ७
पवमान महि श्रव- श्चित्रेभिर्यासि रश्मिभिः । शर्धन् तमांसि जिघ्नसे विश्वानि दाशुषो गृहे ८
त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे । प्रति द्रापिममुञ्चथाः पवमान महित्वना ९ ९४३

॥ १०० ॥ (ऋ. ९ । १०१ । १—१६)

(९४४—९५९) १—३ अन्धीगुः श्यावाश्विः, ४-६ ययातिर्नाहुषः, ७-९ नहुषो मानवः, १०—१२ मनुः सांवरणः, १३-१६ वैश्वामित्रो वाच्यो वा प्रजापतिः । अनुष्टुप्, २—३ गायत्री ।

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे । अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् १
यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः । इन्दुरश्वो न कृत्व्यः २ ९४५
तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया । यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः ३
सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः । पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ४
इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् । वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा ५
सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः । सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ६
अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति । पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद् रोदसी उभे ७ ९५०
सम्मु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः । सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ८
य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम् । यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहै ९
सोमाः पवन्त इन्दवो ऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः । मित्राः सुवाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः १०
सुष्वाणासो व्यद्रिभि- श्चिताना गोरधि त्वचि । इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन् वसुविदः ११ ९५४

*

एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः । सूर्यासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते १२ ९५५
प्र सुन्वानस्यान्धसो मर्तो न वृत तद् वचः । अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः १३
आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः । सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् १४
स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी । हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् १५
अव्यो वारेभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि । कनिक्रदद् वृषा हरि-रिन्द्रस्याभ्येति निष्कृतम् ९५९

॥ १०१ ॥ (ऋ. ९ । १०२ । १—८) (९६०—९६७) त्रित आप्त्यः। उष्णिक् ।

क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् । विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता १ ९६०
उप त्रितस्य पाष्योऽ३-रभक्त यद् गुहा पदम् । यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् २
त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वेरया रयिम् । मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ३
जज्ञानं सप्त मातरो वेधामशासत श्रिये । अयं ध्रुवो रयीणां चिकेत यत् ४
अस्य व्रते सजोषसो विश्वे देवासो अद्रुहः । स्पार्हा भवन्ति रन्तयो जुषन्त यत् ५
यमी गर्भमृतावृधो दृशे चारुमजीजनन् । कविं मंहिष्ठमध्वरे पुरुस्पृहम् ६ ९६५
समीचीने अभि त्मना यह्वी ऋतस्य मातरा । तन्वाना यज्ञमानुषग् यदञ्जते ७
क्रत्वा शुक्रेभिरक्षभि-र्ऋणोरप व्रजं दिवः । हिन्वन्नृतस्य दीधितिं प्राध्वरे ८ ९६७

॥ १०२ ॥ (ऋ. ९ । १०३ । १—६) (९६८—९७३) द्वित आप्त्यः ।

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उद्यतम् । भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते १
परि वाराण्यव्यया गोभिरञ्जानो अर्षति । त्री षधस्था पुनानः कृणुते हरिः २
परि कोशं मधुश्चुत-मव्यये वारे अर्षति । अभि वाणीर्ऋषीणां सप्त नूषत ३ ९७०
परि णेता मतीनां विश्वदेवो अदाभ्यः । सोमः पुनानश्चम्वोर्विशद्धरिः ४
परि दैवीरनु स्वधा इन्द्रेण याहि सरथम् । पुनानो वाघद् वाघद्भिरमर्त्यः ५
परि सप्तिर्न वाजयु-र्देवो देवेभ्यः सुतः । व्यानशिः पवमानो वि धावति ६ ९७३

॥१०३॥ (ऋ. ९।१०४।१-६) (९७४—९८५) पर्वतनारदौ काण्वौ, काश्यपौ शिखण्डिन्यावप्सरसौ वा ।

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत । शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये १
समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम् । देवाव्यं१ मदमभि द्विशवसम् २ ९७५
पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये । यथा मित्राय वरुणाय शंतमः ३
अस्मभ्यं त्वा वसुविद-मभि वाणीरनूषत । गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ४
स नो मदानां पत इन्दो देवप्सरा असि । सखेव सख्ये गातुवित्तमो भव ५
सनेमि कृध्य१स्मदा रक्षसं कं चिदत्रिणम् । अपादेवं द्वयुमंहो युयोधि नः ६ ९७९

॥ १०४ ॥ (ऋ. ९। १०५। १—६)

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत । शिशुं न यज्ञैः स्वदयन्त गूर्तिभिः १ ९८०
सं वत्स इव मातृभि—रिन्दुर्हिन्वानो अज्यते । देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः २
अयं दक्षाय साधनो ऽयं शर्धाय वीतये । अयं देवेभ्यो मधुमत्तमः सुतः ३
गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धन्व । शुचिं ते वर्णमधि गोषु दीधरम् ४
स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः । सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ५
सनेमि त्वमस्मदाँ अदेवं कं चिदत्रिणम् । साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् ६ ९८५

॥१०५॥(ऋ. ९।१०६।१-१४) (९८६-९९९)१-३,१०- १४अग्निश्चाक्षुषः,४-६चक्षुर्मानवः ७-९मनुराप्सवः ।

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । श्रुष्टी जातास इन्दवः स्वर्विदः १
अयं भराय सानसि—रिन्द्राय पवते सुतः । सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे २
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णीत सानसिम् । वज्रं च वृषणं भरत् समप्सुजित् ३
प्र धन्वा सोम जागृवि—रिन्द्रायेन्दो परि स्रव । द्युमन्तं शुष्ममा भरा स्वर्विदम् ४
इन्द्राय वृषणं मदं पवस्व विश्वदर्शतः । सहस्रयामा पथिकृद् विचक्षणः ५ ९९०
अस्मभ्यं गातुवित्तमो देवेभ्यो मधुमत्तमः । सहस्रं याहि पथिभिः कनिक्रदत् ६
पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा । आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ७
तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः । त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ८
आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम् । वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ९
सोमः पुनान ऊर्मिणा ऽव्यो वारं वि धावति । अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् १० ९९५
धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं वने क्रीळन्तमत्यविम् । अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ११
असर्जि कलशाँ अभि मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः । पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् १२
पवते हर्यतो हरि—रति ह्वरांसि रंह्या । अभ्यर्षन्त्स्तोतृभ्यो वीरवद् यशः १३
अया पवस्व देवयु—र्मधोर्धारा असृक्षत । रेभन् पवित्रं पर्येषि विश्वतः १४ ९९९

॥ १०६ ॥ (ऋ. ९।१०७।१—२६)

(१०००—१०२५) सप्तर्षयः (१ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, २ कश्यपो मारीचः, ३ गोतमो राहूगणः, ४ भौमोऽत्रिः, ५ विश्वामित्रो गाथिनः, ६ जमदग्निर्भार्गवः, ७ मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः) । प्रगाथः =(१, ४, ६, ८—१०, १२, १४, १७ बृहती; २, ५, ७, ११, १३, १५, १८ सतोबृहती); ३, १६ द्विपदा विराट्; १९—२६ प्रगाथः =(विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः १ १०००

नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवा—ऽदब्धः सुरभिंतरः ।
सुते चित् त्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम् २
परि सुवानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः ३
पुनानः सोम धारया ऽपो वसानो अर्षसि ।
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीद—स्युत्सो देव हिरण्ययः ४
दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत् ।
आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षति नृभिर्धूतो विचक्षणः ५
पुनानः सोम जागृवि—रव्यो वारे परि प्रियः ।
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तमो मध्वा यज्ञं मिमिक्ष नः ६ १००५
सोमो मीढ्वान् पवते गातुवित्तम ऋषिर्विप्रो विचक्षणः ।
त्वं कविरभवो देववीतम आ सूर्यं रोहयो दिवि ७
सोम उ षुवाणः सोतृभि—रधि ष्णुभिरवीनाम् ।
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ८
अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।
समुद्रं न संवरणान्यग्मन् मन्दी मदाय तोशते ९
आ सोम सुवानो अद्रिभि—स्तिरो वाराण्यव्यया ।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दधिषे १०
स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः ।
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रेभिर्ऋक्वभिः ११ १०१०
प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृवि—रच्छा कोशं मधुश्चुतम् १२
आ हर्यतो अर्जुने अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः ।
तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः १३
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
समुद्रस्याधि विष्टपि मनीषिणो मत्सरासः स्वर्विदः १४
तरत् समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत् ।
अर्षन्मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत् १५
नृभिर्येमानो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्रियः १६ १०१५

इन्द्राय पवते मदः　सोमो मरुत्वते सुतः ।
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति　तमी मृजन्त्यायवः　१७
पुनानश्चमू जनयन् मतिं कविः　सोमो देवेषु रण्यति ।
अपो वसानः परि गोभिरुत्तरः　सीदन् वनेष्वव्यत　१८
तवाहं सोम रारण　सख्य इन्दो दिवेदिवे ।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव　परिधींरति ताँ इहि　१९
उताहं नक्तमुत सोम ते दिवा　सख्याय बभ्र ऊधनि ।
घृणा तपन्तमति सूर्यं परः　शकुना इव पप्तिम　२०
मृज्यमानः सुहस्त्य　समुद्रे वाचमिन्वसि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं　पवमानाभ्यर्षसि　२१ १०२०
मृजानो वारे पवमानो अव्यये　वृषाव चक्रदो वने ।
देवानां सोम पवमान निष्कृतं　गोभिरञ्जानो अर्षसि　२२
पवस्व वाजसातये　ऽभि विश्वानि काव्या ।
त्वं समुद्रं प्रथमो वि धारयो　देवेभ्यः सोम मत्सरः　२३
स तू पवस्व परि पार्थिवं रजो　दिव्या च सोम धर्मभिः ।
त्वां विप्रासो मतिभिर्विचक्षण　शुभ्रं हिन्वन्ति धीतिभिः　२४
पवमाना असृक्षत　पवित्रमति धारया ।
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया　मेधामभि प्रयांसि च　२५
अपो वसानः परि कोशमर्षती न्दुर्हियानः सोतृभिः ।
जनयञ्ज्योतिर्मन्दना अवीवशद्　गाः कृण्वानो न निर्णिजम्　२६ १०२५

॥ १०७ ॥ (ऋ. ९ । १०८ । १—१६)

(१०२६—१०४१) १—२ गौरिवीतिः शाक्त्यः. ३, १४-१६ शक्तिर्वासिष्ठ , ४-५ ऊरुराङ्गिरसः, ६—७ ऋजिश्वा भारद्वाजः, ८-९ ऊर्ध्वसद्मा आङ्गिरसः, १०—११ कृतयशा आङ्गिरसः, १२—१३ ऋणंचयो राजर्षिः । काकुभः प्रगाथः = (विषमा ककुप्, समा सतोबृहती), १३ यवमध्या गायत्री ।

पवस्व मधुमत्तम　इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः । महि द्युक्षतमो मदः　१
यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायते　ऽस्य पीता स्वर्विदः ।
स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषो　ऽच्छा वाजं नैतशः　२
त्वं ह्य१ङ्ग दैव्या　पवमान जनिमानि द्युमत्तमः । अमृतत्वाय घोषयः　३ १०२८

येना नवग्वो दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे ।
देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवांस्यानशुः ४
एष स्य धारया सुतोऽव्यो वारेभिः पवते मदिन्तमः । क्रीळन्नूर्मिरपामिव ५ १०३०
य उस्रिया अप्या अन्तरश्मनो निर्गा अकृन्तदोजसा ।
अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज ६
आ सोता परि षिञ्चताऽश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम् । वनक्रक्षमुदप्रुतम् ७
सहस्रधारं वृषभं पयोवृधं प्रियं देवाय जन्मने ।
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत् ८
अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुः । वि कोशं मध्यमं युव ९
आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विश्पतिः ।
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपां जिन्वा गविष्टये धियः १० १०३५
एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहुः । विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ११
वृषा वि जज्ञे जनयन्नमर्त्यः प्रतपञ्ज्योतिषा तमः ।
स सुष्टुतः कविभिर्निर्णिजं दधे त्रिधात्वस्य दंससा १२
स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इळानाम् । सोमो यः सुक्षितीनाम् १३
यस्य न इन्द्रः पिबाद् यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः ।
आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे १४
इन्द्राय सोम पातवे नृभिर्यतः स्वायुधो मदिन्तमः । पवस्व मधुमत्तमः १५ १०४०
इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश समुद्रमिव सिन्धवः ।
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे दिवो विष्टम्भ उत्तमः १६ १०४१

॥ १०८ ॥ (ऋ. ९ । १०९ । १—२२) (१०४२-१०६३) अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वरयः । द्विपदा विराट् ।

परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय १
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयाः क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः ॥१॥ २
एवामृताय महे क्षयाय स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः ३
पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥२॥ ४ १०४५
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै ५
दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व ॥३॥ ६
पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो महामवीनामनु पूर्व्यः ७ १०४८

नृभिर्येमानो जज्ञानः पूतः   क्षरद् विश्वानि मन्द्रः स्वर्वित् ॥४॥ ८
इन्दुः पुनानः प्रजामुराणः   करद् विश्वानि द्रविणानि नः ९ १०५०
पवस्व सोम क्रत्वे दक्षाया—ऽश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥५॥१०
तं ते सोतारो रसं मदाय   पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय ११
शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति   पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम् ॥६॥१२
इन्दुः पविष्ट चारुर्मदाया—ऽपामुपस्थे कविर्भगाय १३
बिभर्ति चार्विन्द्रस्य नाम   येन विश्वानि वृत्रा जघान ॥७॥१४ १०५५
पिबन्त्यस्य विश्वे देवासो   गोभिः श्रीतस्य नृभिः सुतस्य १५
प्र सुवानो अक्षाः सहस्रधार—स्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम् ॥८॥१६
स वाज्यक्षाः सहस्ररेता   अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः १७
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा   नृभिर्येमानो अद्रिभिः सुतः ॥९॥१८
असर्जि वाजी तिरः पवित्र—मिन्द्राय सोमः सहस्रधारः १९ १०६०
अञ्जन्त्येनं मध्वो रसेने—न्द्राय वृष्ण इन्दुं मदाय ॥१०॥२०
देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसे   ऽपो वसानं हरिं मृजन्ति २१
इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते   श्रीणन्नुग्रो रिणन्नपः ॥११॥२२ १०६३

॥ १०९ ॥ (ऋ. ९ । ११० । १—१२)

(१०६४—१०७५) त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः। १—३ पिपीलिकमध्या अनुष्टुप्, ४-९ ऊर्ध्वबृहती, १०-१२ विराट् ।

पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये   परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईयसे १
अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि   महे समर्यराज्ये ।
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे २ १०६५
अजीजनो हि पवमान सूर्यं   विधारे शक्मना पयः ।
गोजीरया रंहमाणः पुरन्ध्या ३
अजीजनो अमृत मर्त्येष्वाँ   ऋतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः ।
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत् ४
अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथो—त्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम् ।
शर्याभिर्न भरमाणो गभस्त्योः ५ १०६८

आर्दां के चित् पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत ।
वारं न देवः सविता व्यूर्णुते ६
त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः ।
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय ७ १०७०
दिवः पीयूषं पूर्व्यं यदुक्थ्यं महो गाहाद् दिव आ निरधुक्षत ।
इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन् ८
अध यदिमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना ।
यूथे न निःष्ठा वृषभो वि तिष्ठसे ९
सोमः पुनानो अव्यये वारे शिशुर्न क्रीळन् पवमानो अक्षाः ।
सहस्रधारः शतवाज इन्दुः १०
एष पुनानो मधुमाँ ऋतावे न्द्रायेन्दुः पवते स्वादुरूर्मिः ।
वाजसनिर्वरिवोविद् वयोधाः ११
स पवस्व सहमानः पृतन्यून् त्सेधन् रक्षांस्यप दुर्गहाणि ।
स्वायुधः सासह्वान्त्सोम शत्रून् १२ १०७५

॥ ११० ॥ (ऋ. ९ । १११ । १—३) (१०७६—१०७८) अनानतः पारुच्छेपिः । अत्यष्टिः ।

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति स्वयुग्वभिः सूरो न स्वयुग्वभिः ।
धारा सुतस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः ।
विश्वा यद् रूपा परियात्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः १
त्वं त्यत् पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि स्व आ दम ऋतस्य धीतिभिर्दमे ।
परावतो न साम तद् यत्रा रणन्ति धीतयः ।
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे २
पूर्वामनु प्रदिशं याति चेकितत् सं रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः ।
अग्मन्नुक्थानि पौंस्ये न्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।
वज्रश्च यद् भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता ३ १०७८

॥ १११ ॥ (ऋ. ९ । ११२ । १-४) (१०७९—१०८२) शिशुराङ्गिरसः । पङ्क्तिः ।

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम् ।
तक्षा रिष्टं रुतं भिषग् ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छती न्द्रायेन्दो परि स्रव १ १०७९

जरतीभिरोषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम् ।
कार्मारो अश्मभिर्द्युभि- र्हिरण्यवन्तमिच्छती- न्द्रायेन्दो परि स्रव २ १०८०
कारुरहं ततो भिष- गुपलप्रक्षिणी नना ।
नानाधियो वसूयवो ऽनु गा इव तस्थिमे- न्द्रायेन्दो परि स्रव ३
अश्वो वोळ्हा सुखं रथं हसनामुपमन्त्रिणः ।
शेपो रोमण्वन्तौ भेदौ वारिन्मण्डूक इच्छती- न्द्रायेन्दो परि स्रव ४ १०८१
॥ ११२ ॥ (ऋ. ९ । ११३ । १—११) (१०८३-१०९३) कश्यपो मारीचः ।
शर्यणावति सोम- मिन्द्रः पिबतु वृत्रहा ।
बलं दधान आत्मनि करिष्यन् वीर्यं मह- दिन्द्रायेन्दो परि स्रव १
आ पवस्व दिशां पत आर्जीकात् सोम मीढ्वः ।
ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुत इन्द्रायेन्दो परि स्रव २
पर्जन्यवृद्धं महिषं तं सूर्यस्य दुहिताभरत् ।
तं गन्धर्वाः प्रत्यगृभ्णन् तं सोमे रसमादधु- रिन्द्रायेन्दो परि स्रव ३ १०८५
ऋतं वदन्नृतद्युम्न सत्यं वदन्त्सत्यकर्मन् ।
श्रद्धां वदन्त्सोम राजन् धात्रा सोम परिष्कृत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ४
सत्यमुग्रस्य बृहतः सं स्रवन्ति संस्रवाः ।
सं यन्ति रसिनो रसाः पुनानो ब्रह्मणा हर इन्द्रायेन्दो परि स्रव ५
यत्र ब्रह्मा पवमान छन्दस्यां३ वाचं वदन् ।
ग्राव्णा सोमे महीयते सोमेनानन्दं जनय- न्निन्द्रायेन्दो परि स्रव ६
यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिन् लोके स्वर्हितम् ।
तस्मिन् मां धेहि पवमाना- ऽमृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परि स्रव ७
यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः ।
यत्रामूर्यह्वतीराप- स्तत्र माममृतं कृधी- न्द्रायेन्दो परि स्रव ८ १०९०
यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः ।
लोका यत्र ज्योतिष्मन्त- स्तत्र माममृतं कृधी- न्द्रायेन्दो परि स्रव ९
यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रध्नस्य विष्टपम् ।
स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधी- न्द्रायेन्दो परि स्रव १०
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।
कामस्य यत्राप्ताः कामा- स्तत्र माममृतं कृधी- न्द्रायेन्दो परि स्रव ११ १०९३

॥ ११३ ॥ (ऋ. ९ । ११४ । १-४)

य इन्दोः पवमानस्या–ऽनु धामान्यक्रमीत् ।
तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमाविधन्मन इन्द्रायेन्दो परि स्रव १
ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्वर्धयन् गिरः ।
सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पति–रिन्द्रायेन्दो परि स्रव २ १०९५
सप्त दिशो नानासूर्याः सप्त होतार ऋत्विजः ।
देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष न इन्द्रायेन्दो परि स्रव ३
यत् ते राजञ्छृतं हवि–स्तेन सोमाभि रक्ष नः ।
अरातीवा मा नस्तारी–न्मो च नः किं चनाममु–दिन्द्रायेन्दो परि स्रव ४ १०९७

॥ ११४ ॥ (ऋ. १ । ४३ । ७–९)

(१०९८–११००) कण्वो घौरः । गायत्री, ९ अनुष्टुप् ।

अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् । महि श्रवस्तुविनृम्णम् ७
मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त । आ न इन्दो वाजे भज ८
यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन् धामन्नृतस्य ।
मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ९ ११००

॥ ११५ ॥ (ऋ. १ । ९१ । १–२३)

(११०१–११२३) गोतमो राहूगणः । त्रिष्टुप्; ५–१६ गायत्री; १७ उष्णिक् ।

त्वं सोम प्र चिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम् ।
तव प्रणीती पितरो न इन्दो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः १
त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भू–स्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः ।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युम्न्यभवो नृचक्षाः २
राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद् गभीरं तव सोम धाम ।
शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम ३
या ते धामानि दिवि या पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।
तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेळन् राजन्त्सोम प्रति हव्या गृभाय ४
त्वं सोमासि सत्पति–स्त्वं राजोत वृत्रहा । त्वं भद्रो असि क्रतुः ५ ११०५
त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ६ ११०६

त्वं सोम मुहे भगं त्वं यून ऋतायते । दक्षं दधासि जीवसे ७
त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः । न रिष्येत् त्वावतः सखा ८
सोम यास्ते मयोभुव ऊतयः सन्ति दाशुषे । ताभिर्नोऽविता भव ९
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि । सोम त्वं नो वृधे भव १० १११०
सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः । सुमृळीको न आ विश ११
गयस्फानो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव १२
सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा । मर्य इव स्व ओक्ये १३
यः सोम सख्ये तव रारणद् देव मर्त्यः । तं दक्षः सचते कविः १४
उरुष्या णो अभिशस्तेः सोम नि पाह्यंहसः । सखा सुशेव एधि नः १५ १११५
आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे १६
आ प्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः । भवा नः सुश्रवस्तमः सखा वृधे १७
सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः ।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व १८
या ते धामानि हविषा यजन्ति ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम् ।
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरो ऽवीरहा प्र चरा सोम दुर्यान् १९
सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ।
सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै २० ११२०
अषाळ्हं युत्सु पृतनासु पप्रिं स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम् ।
भरेषुजां सुक्षितिं सुश्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम २१
त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वा—स्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः ।
त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ २२
देवेन नो मनसा देव सोम रायो भागं सहसावन्नभि युध्य ।
मा त्वा तनदीशिषे वीर्यस्यो—भयेभ्यः प्र चिकित्सा गविष्टौ २३ ११२३

॥ ११६ ॥ (ऋ. ३ । ६२ । १३—१५)

(११२४—११२६) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

सोमो जिगाति गातुविद् देवानामेति निष्कृतम् । ऋतस्य योनिमासदम् १३
सोमो अस्मभ्यं द्विपदे चतुष्पदे च पशवे । अनमीवा इषस्करत् १४ ११२५
अस्माकमायुर्वर्धय—न्नभिमातीः सहमानः । सोमः सधस्थमासदत् १५ ११२६

॥ ११७ ॥ (ऋ. ६ । ४७ । १—५)

(११२७--११३१) गर्गो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

स्वादुष्किलायं मधुमाँ उतायं तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम् ।
उतो न्व१स्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु १
अयं स्वादुरिह मदिष्ठ आस यस्येन्द्रो वृत्रहत्ये ममाद ।
पुरूणि यश्च्यौत्ना शम्बरस्य वि नवतिं नव च देह्यो३ हन् २
अयं मे पीत उदियर्ति वाच—मयं मनीषामुशतीमजीगः ।
अयं षळुर्वीरमिमीत धीरो न याभ्यो भुवनं कच्चनारे ३
अयं स यो वरिमाणं पृथिव्या वर्ष्माणं दिवो अकृणोदयं सः ।
अयं पीयूषं तिसृषु प्रवत्सु सोमो दाधारोर्व१न्तरिक्षम् ४ ११३०
अयं विदच्चित्रदृशीकमर्णः शुक्रसद्मनामुषसामनीके ।
अयं महान् महता स्कम्भने—नोद् द्यामस्तभ्नाद् वृषभो मरुत्वान् ५ ११३१

॥ ११८ ॥ (ऋ. ७ । १०४ । ९, १२-१३)

(११३२—११३४) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।

ये पाकशंसं विहरन्त एवै—र्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः ।
अहये वा तान् प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे ९
सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।
तयोर्यत् सत्यं यतरदृजीय—स्तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत् १२
न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम् ।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद् वदन्त—मुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते १३ ११३४

॥ ११९ ॥ (ऋ. ८ । ४८ । १—१५)

(११३५—११४९) प्रगाथो घौरः काण्वः । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

स्वादोरभक्षि वयसः सुमेधाः स्वाध्यो वरिवोवित्तरस्य ।
विश्वे यं देवा उत मर्त्यासो मधु ब्रुवन्तो अभि संचरन्ति १ ११३५
अन्तश्च प्रागा अदितिर्भवास्य—वयाता हरसो दैव्यस्य ।
इन्दविन्द्रस्य सख्यं जुषाणः श्रौष्टीव धुरमनु राय ऋध्याः २
अपाम सोमममृता अभूमा—गन्म ज्योतिरविदाम देवान् ।
किं नूनमस्मान् कृणवदरातिः किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्य ३ ११३७

शं नो भव हृद आ पीत इन्दो पितेव सोम सूनवे सुशेवः ।
सखेव सख्य उरुशंस धीरः प्र ण आयुर्जीवसे सोम तारीः ४
इमे मा पीता यशस उरुष्यवो रथं न गावः समनाह पर्वसु ।
ते मा रक्षन्तु विस्रसश्चरित्रादुत मा स्रामाद् यवयन्त्विन्दवः ५
अग्निं न मा मथितं सं दिदीपः प्र चक्षय कृणुहि वस्यसो नः ।
अथा हि ते मद आ सोम मन्ये रेवाँ इव प्र चरा पुष्टिमच्छ ६ ११४०
इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः ।
सोम राजन् प्र ण आयूंषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि ७
सोम राजन् मृळया नः स्वस्ति तव स्मसि व्रत्या३स्तस्य विद्धि ।
अलर्ति दक्ष उत मन्युरिन्दो मा नो अर्यो अनुकामं परा दाः ८ ११४२
त्वं हि नस्तन्वः सोम गोपा गात्रेगात्रे निषसत्था नृचक्षाः ।
यत् ते वयं प्रमिनाम व्रतानि स नो मृळ सुषखा देव वस्यः ९
ऋदूदरेण सख्या सचेय यो मा न रिष्येद्धर्यश्व पीतः ।
अयं यः सोमो न्यधाय्यस्मे तस्मा इन्द्रं प्रतिरमेम्यायुः १०
अप त्या अस्थुरनिरा अमीवा निरत्रसन् तमिषीचीरभैषुः ।
आ सोमो अस्माँ अरुहद् विहाया अगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ११ ११४५
यो न इन्दुः पितरो हृत्सु पीतोऽमर्त्यो मर्त्याँ आविवेश ।
तस्मै सोमाय हविषा विधेम मृळीके अस्य सुमतौ स्याम १२
त्वं सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ ।
तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम् १३
त्रातारो देवा अधि वोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः ।
वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम १४
त्वं नः सोम विश्वतो वयोधास्त्वं स्वर्विदा विशा नृचक्षाः ।
त्वं न इन्द ऊतिभिः सजोषाः पाहि पश्चातादुत वा पुरस्तात् १५ ११४९

॥ १२० ॥ (ऋ. ८ । ७९ । १—९)

(११५०—११५८) कृत्नुर्भार्गवः । गायत्री, ९ अनुष्टुप् ।

अयं कृत्नुरगृभीतो विश्वजिदुद्भिदित् सोमः। ऋषिर्विप्रः काव्येन १ ११५०
अभ्यूर्णोति यन्नग्नं भिषक्ति विश्वं यत् तुरम् । प्रेमन्धः ख्यन्निः श्रोणो भूत २ ११५१

त्वं सोम तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यः। उरु यन्तासि वरूथम् ३
त्वं चित्ती तव दक्षै—र्दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् । यावीरघस्य चिद् द्वेषः ४
अर्थिनो यन्ति चेदर्थं गच्छानिद् ददुषो रातिम् । ववृज्युस्तृष्यतः कामम् ५
विदद् यत् पूर्व्यं नष्ट—मुदीमृतायुमीरयत् । प्रेमायुस्तारीदतीर्णम् ६ ११५५
सुशेवो नो मृळयाकु—रदृप्तक्रतुरवातः । भवा नः सोम शं हृदे ७
मा नः सोम सं वीविजो मा वि बीभिषथा राजन् । मा नो हार्दि त्विषा वधीः ८
अव यत् स्वे सधस्थे देवानां दुर्मतीरीक्षे ।
राजन्नप द्विषः सेध मीढ्वो अप स्रिधः सेध ९ ११५८

॥ १२१ ॥ (ऋ. ८ । १०१ । १४)

(११५९) जमदग्निर्भार्गवः । त्रिष्टुप् ।

प्रजा ह तिस्रो अत्यायमीयु—र्न्यन्या अर्कमभितो विविश्रे ।
बृहद्ध तस्थौ भुवनेष्वन्तः पवमानो हरित आ विवेश १ ११५९

॥ १२२ ॥ (ऋ. १० । २५ । १-११)

(११६०-११७०) ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुक्रो वसुकृद्वा । आस्तारपङ्क्तिः।

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् ।
अधा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणन् गावो न यवसे विवक्षसे १ ११६०
हृदिस्पृशस्त आसते विश्वेषु सोम धामसु ।
अधा कामा इमे मम वि वो मदे वि तिष्ठन्ते वसूयवो विवक्षसे २
उत व्रतानि सोम ते प्राहं मिनामि पाक्या ।
अधा पितेव सूनवे वि वो मदे मृळा नो अभि चिद् वधाद् विवक्षसे ३
समु प्र यन्ति धीतयः सर्गासोऽवताँ इव ।
क्रतुं नः सोम जीवसे वि वो मदे धारया चमसाँ इव विवक्षसे ४
तव त्ये सोम शक्तिभि—र्निकामासो व्यृण्विरे ।
गृत्सस्य धीरास्तवसो वि वो मदे व्रजं गोमन्तमश्विनं विवक्षसे ५
पशुं नः सोम रक्षसि पुरुत्रा विष्ठितं जगत् ।
समाकृणोषि जीवसे वि वो मदे विश्वा संपश्यन् भुवना विवक्षसे ६ ११६५
त्वं नः सोम विश्वतो गोपा अदाभ्यो भव ।
सेध राजन्नप स्रिधो वि वो मदे मा नो दुःशंस ईशता विवक्षसे ७ ११६६

त्वं नः सोम सुक्रतु—र्वयोधेयाय जागृहि ।
क्षेत्रवित्तरो मनुषो वि वो मदे द्रुहो नः पाह्यंहसो विवक्षसे　८
त्वं नो वृत्रहन्तमे—न्द्रस्येन्दो शिवः सखा ।
यत् सीं हवन्ते समिथे वि वो मदे युध्यमानास्तोकसातौ विवक्षसे　९
अयं घ स तुरो मद इन्द्रस्य वर्धत प्रियः ।
अयं कक्षीवतो महो वि वो मदे मतिं विप्रस्य वर्धयद् विवक्षसे　१०
अयं विप्राय दाशुषे वाजाँ इयर्ति गोमतः ।
अयं सप्तभ्य आ वरं वि वो मदे प्रान्धं श्रोणं च तारिषद् विवक्षसे　११　११७०

॥ १२३ ॥ (ऋ. १० । ८५ । १-५)

(११७१—११७५) सूर्या सावित्री ऋषिका । अनुष्टुप् ।

सत्येनोत्तभिता भूमिः सूर्येणोत्तभिता द्यौः ।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः　१
सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही ।
अथो नक्षत्राणामेषा—मुपस्थे सोम आहितः　२
सोमं मन्यते पपिवान् यत् संपिषन्त्योषधिम् ।
सोमं यं ब्रह्माणो विदु—र्न तस्याश्नाति कश्चन　३
आच्छद् विधानैर्गुपितो बार्हतैः सोम रक्षितः ।
ग्राव्णामिच्छृण्वन् तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः　४
यत् त्वा देव प्रपिबन्ति तत आ प्यायसे पुनः ।
वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः　५　११७५

॥ १२४ ॥ (अथर्व० ३ । ५ । १-८)

(११७६-११८३) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ पुरोऽनुष्टुप्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्, ८ विराडुरोबृहती ।

आयमगन् पर्णमणिर्बली बलेन प्रमृणन्त्सपत्नान् ।
ओजो देवानां पय ओषधीनां वर्चसा मा जिन्वत्वप्रयावन्　१
मयि क्षत्रं पर्णमणे मयि धारयताद् रयिम् ।
अहं राष्ट्रस्याभीवर्गे निजो भूयासमुत्तमः　२
यं निदधुर्वनस्पतौ गुह्यं देवाः प्रियं मणिम् ।
तमस्मभ्यं सहायुषा देवा ददतु भर्तवे　३　११७८

सोमस्य पर्णः सह उग्रमाग-न्निन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टः ।
तं प्रियासं बहु रोचमानो दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ४

आ मारुक्षत् पर्णमणि-र्मह्या अरिष्टतातये ।
यथाहमुत्तरोऽसा-न्यर्यम्ण उत संविदः ५ ११८०

ये धीवानो रथकाराः कर्मारा ये मनीषिणः ।
उपस्तीन् पर्ण मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान् ६

ये राजानो राजकृतः सूता ग्रामण्यश्च ये ।
उपस्तीन् पर्ण मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान् ७

पर्णोऽसि तनूपानः सयोनिर्वीरो वीरेण मया ।
संवत्सरस्य तेजसा तेन बध्नामि त्वा मणे ८ ११८३

॥ २२५ ॥ (अथर्व० ५ । २४ । ७) अतिशक्करी ।

सोमो वीरुधामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ७ ११८४

॥ २२६ ॥ (अथर्व० ६ । ६ । २—३) अनुष्टुप् ।

यो नः सोम सुशंसिनो दुःशंस आदिदेशति ।
वज्रेणास्य मुखे जहि स संपिष्टो अपायति २ ११८५

यो नः सोमाभिदासति सनाभिर्यश्च निष्ट्यः ।
अप तस्य बलं तिर महीव द्यौर्वधत्मना ४ ११८६

॥ २२७ ॥ (अथर्व० ५ । ३ । ७) (११८७) बृहद्दिवोऽथर्वा । त्रिष्टुप् ।

तिस्रो देवीर्महि नः शर्म यच्छत प्रजायै नस्तन्वे३ यच्च पुष्टम् ।
मा हास्महि प्रजया मा तनूभि-र्मा रधाम द्विषते सोम राजन् ७ ११८७

॥ २२८ ॥ (अथर्व० ४ । ४० । ४) (११८८) शुक्रः । त्रिष्टुप् ।

ये उत्तरतो जुह्वति जातवेद उदीच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
सोममृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि ४ ११८८

॥ २२९ ॥ (अथर्व० ५ । २६ । १०) (११८९) ब्रह्मा । द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

सोमो युनक्तु बहुधा पयां-स्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा १० ११८९

॥ १३० ॥ (अथर्व० ६ । ८९ । १) (११९०) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

इदं यत् प्रेण्यः शिरो दत्तं सोमेन वृष्ण्यम् ।
ततः परि प्रजातेन हार्दिं ते शोचयामसि १ ११९०

॥ १३१ ॥ (११९१-११९३) (वा० यजु० ४ । १६ उत्तरार्धं , २४ २७

रास्वेयत् सोमा भूयो भर देवो नः सविता वसोर्दाता वस्वदात् १६

एष ते गायत्रो भाग इति मे सोमाय ब्रूतादेष ते त्रैष्टुभो भाग इति मे सोमाय
ब्रूतादेष ते जागतो भाग इति मे सोमाय ब्रूताच्छन्दोनामानां साम्राज्यं गच्छेति
मे सोमाय ब्रूतादास्माकोऽसि शुक्रस्ते ग्रह्यो विचितस्त्वा वि चिन्वन्तु २४

मित्रो न एहि सुमित्रध इन्द्रस्योरुमा विश दक्षिणमुशन्नुशन्तं स्योनः स्योनम् ।
स्वान भ्राजाङ्घारे बम्भारे हस्त सुहस्त कृशानवेते वः सोमक्रयणास्तान्
रक्षध्वं मा वो दभन् २७ ११९३

॥ १३२ ॥ (११९४) (वा० यजु० ५ । ७)

अंशुरंशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे ।
आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।
आप्याययास्मान्त्सखीन्त्सन्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।
एष्टा रायः प्रेषे भगाय ऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम् ७ ११९४

॥ १३३ ॥ (११९५—१२००) (वा० यजु० ६ । २५-२६, ३२-३३, ३५-३६)

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा ।
ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ २५ ११९५
सोम राजन् विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु ।
शृणोत्वग्निः समिधा हवं मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः ।
श्रोता ग्रावाणो विदुषो न यज्ञं शृणोतु देवः सविता हवं मे स्वाहा २६
इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत इन्द्राय त्वादित्यवत इन्द्राय त्वाभिमातिघ्ने ।
श्येनाय त्वा सोमभृतेऽग्नये त्वा रायस्पोषदे ३२
यत् ते सोम दिवि ज्योतिर्यत् पृथिव्यां यदुरावन्तरिक्षे ।
तेनास्मै यजमानायोरु राये कृध्यधि दात्रे वोचः ३३
मा भेर्मा संविक्था ऊर्जं धत्स्व धिषणे वीड्वी सती वीडयेथामूर्जं दधाथाम् ।
पाप्मा हतो न सोमः ३५ ११९९

*

प्रागपागुदगधराक् सर्वतस्त्वा दिश आधावन्तु ।
अम्ब निष्पर समरीर्विदाम् ३६ ११००

॥ १३४ ॥ (११०१) (वा० यजु० ७ । १४)

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः १४ ११०१

॥ १३५ ॥ (११०२—११०८) (वा० य० ८ । १, ९, २५-२६, ४८—५०)

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा ।
विष्ण उरुगायैष ते सोमस्तꣳ रक्षस्व मा त्वा दभन् १

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिसुतस्य देव सोम त
इन्दोरिन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्रहाँ२ ऋध्यासम् ।
अहं परस्तादहमवस्ताद् यदन्तरिक्षं तदु मे पिताभूत् ।
अहꣳ सूर्यमुभयतो ददर्शाऽहं देवानां परमं गुहा यत् ९

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।
यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत् स्वाहा २५

देवीराप एष वो गर्भस्तꣳ सुप्रीतꣳ सुभृतं बिभृत ।
देव सोमैष ते लोकस्तस्मिञ्छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व २६ ११०५

प्रेशीनां त्वा पत्मन्नाधूनोमि कुकूननानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि भन्दनानां त्वा
पत्मन्नाधूनोमि मदिन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि मधुन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि
शुक्रं त्वा शुक्र आधूनोम्यह्नो रूपे सूर्यस्य रश्मिषु ४८

ककुभꣳ रूपं वृषभस्य रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः सोमः सोमस्य पुरोगाः ।
यत् ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै त्वा गृह्णामि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा ॥ ४९

उशिक् त्वं देव सोमाग्नेः प्रियं पाथोऽपीहि वशी त्वं देव सोमेन्द्रस्य प्रियं पाथोऽपी-
ह्यस्मत्सखा त्वं देव सोम विश्वेषां देवानां प्रियं पाथोऽपीहि ५० ११०८

॥ १३६ ॥ (११०९) (वा० य० १९ । ७२)

सोमो राजामृतꣳ सुत ऋजीषेणाजहान्मृत्युम् ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ७२ ११०९

॥ १३७ ॥ (१२१०) (वा० य० २० । १९)

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।
सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि
यं च वयं द्विष्मः १९ १२१०

॥ १३८ ॥ (१२११-१२१४) (साम० १३००-१३०३)

पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः ।
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् ॥ ३ ॥ १३००
पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम् ।
कामान्त्समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः ॥ ४ ॥ १३०१
येन देवाः पवित्रेणाऽऽत्मानं पुनते सदा ।
तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः ॥ ५ ॥ १३०२
पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम् ।
पुण्यांश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥ ६ ॥ १३०३ १२१४

॥ १३९ ॥ (ऋ. १० । १२४ । ६) (१२१५) अग्नि-वरुण-सोमाः । त्रिष्टुप् ।

इदं स्वरिदमिदास वाममयं प्रकाश उर्वन्तरिक्षम् ।
हनाव वृत्रं निरेहि सोम हविष्ट्वा सन्तं हविषा यजाम ६ १२१५

सोमसहचारी देवगणः ।

(१) सूर्यरोदसीमित्रवरुणरुद्रेन्द्राग्न्यर्यमभगसोमाः ।

॥ १४० ॥ (ऋ. १ । १३६ । ६) (१२१६) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः ।

नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळ्हुषे सुमृळीकाय मीळ्हुषे ।
इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।
ज्योग् जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि ६ १२१६

(२) सोमापूषणौ, ६ (अन्त्योऽर्धर्चस्य) अदितिः ।

॥ १४१ ॥ (ऋ. २ । ४० । १-६)

(१११७-११२२) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

सोमापूषणा जनना रयीणां जनना दिवो जनना पृथिव्याः ।
जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम् १

इमौ देवौ जायमानौ जुषन्ते—मौ तमांसि गूहतामजुष्टा ।
आभ्यामिन्द्रः पक्वमामास्वन्तः सोमापूषभ्यां जनदुस्रियासु २

सोमापूषणा रजसो विमानं सप्तचक्रं रथमविश्वमिन्वम् ।
विषूवृतं मनसा युज्यमानं तं जिन्वथो वृषणा पञ्चरश्मिम् ३

दिव्य१न्यः सदनं चक्र उच्चा पृथिव्यामन्यो अध्यन्तरिक्षे ।
तावस्मभ्यं पुरुवारं पुरुक्षुं रायस्पोषं वि ष्यतां नाभिमस्मे ४ ११२०

विश्वान्यन्यो भुवना जजान विश्वमन्यो अभिचक्षाण एति ।
सोमापूषणाववतं धियं मे युवाभ्यां विश्वाः पृतना जयेम ५

धियं पूषा जिन्वतु विश्वमिन्वो रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु ।
अवतु देव्यदितिरनर्वा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ६ ११२२

(३) सोमारुद्रौ ।

॥ १४२ ॥ (ऋ. ६ । ७४ । १—४)

(११२३-२६) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

सोमारुद्रा धारयेथामसुर्य१ं प्र वामिष्टयोऽरमश्नुवन्तु ।
दमेदमे सप्त रत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे १

सोमारुद्रा वि वृहतं विषूची—ममीवा या नो गयमाविवेश ।
आरे बाधेथां निर्ऋतिं पराचै—रस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु २

सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।
अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत् ३ ११२५

तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृळतं नः ।
प्र नो मुञ्चतं वरुणस्य पाशाद् गोपायतं नः सुमनस्यमाना ४ ११२६

(४) ब्राह्मण-पितृ-सोम-द्यावापृथिवी-पूषाणः।

॥ १४३ ॥ (ऋ. ६। ७५। १०)

(१२२७) पायुर्भारद्वाजः। जगती।

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा।
पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत १० १२२७

(५) वर्म-सोम-वरुणाः।

॥ १४४ ॥ (१२२८) (ऋ० ६। ७५। १८) पायुर्भारद्वाजः। त्रिष्टुप्।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु १८ १२२८

(६) अग्नींद्रमित्रावरुणाश्विभगपूषब्रह्मणस्पतिसोमरुद्राः।

॥ १४५ ॥ (ऋ० ७। ४१। १)

(१२२९) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। जगती।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम १ १२२९

(७) अङ्गिरःपित्रथर्वभृगुसोमाः।

॥ १४६ ॥ (ऋ. १०। १४। ६)

(१२३०) वैवस्वतो यमः। त्रिष्टुप्।

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियाना—मपि भद्रे सौमनसे स्याम ६ १२३०

(८) आपः सोमो वा।

॥ १४७ ॥ (ऋ. १०। १७। ११-१३)

(१२३१-१२३३) देवश्रवा यामायनः। त्रिष्टुप् १३ अनुष्टुप्, पुरस्ताद्बृहती वा।

द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु द्यू—निमं च योनिमनु यश्च पूर्वः।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः ११ १२३१

यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशुर्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात् ।
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात् तं ते जुहोमि मनसा वषट्कृतम् १२
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशुरवश्च यः परः स्रुचा ।
अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिञ्चतु राधसे १३ १२३३

(९) अग्नीषोमौ ।

१४८ ॥ (ऋ० १० । १९ । १ उत्तरार्धः)
(१२३४) मथितो यामायनः, भृगुर्वारुणिर्वा, भार्गवश्च्यवनो वा । अनुष्टुप् ।
अग्नीषोमा पुनर्वसू अस्मे धारयतं रयिम् । १ १२३४

॥ १४९ ॥ (अथर्व. २ । ३६ । ३)
(१२३५) पतिवेदनः । त्रिष्टुप् ।
इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।
सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु २ १२३५

(१०) निर्ऋतिसोमौ ।

॥ १५० ॥ (ऋ १० । ५९ । ४)
(१२३६) बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः । त्रिष्टुप् ।
मो षु णः सोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
द्युभिर्हितो जरिमा सू नो अस्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ३ १२३६

(११) पृथिवीद्यवन्तरिक्षसोमपूषपथ्यास्वस्तयः ।

॥ १५१ ॥ ऋ. १० । ५९ । ७)
(१२३७) बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः । त्रिष्टुप् ।
पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम् ।
पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३ या स्वस्तिः ७ १२३७

(१२) सोमार्कौ ।

॥ १५२ ॥ (ऋ १० । ८५ । १८)
(१२३८) सूर्या सावित्री ऋषिका । जगती ।
पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीळन्तौ परि यातो अध्वरम् ।
विश्वान्यन्यो भुवनाभिचष्ट ऋतूँरन्यो विदधज्जायते पुनः १८ १२३८

(१३) सोम-वरुण-बृहस्पति-अनुमति-मघवत्-धातृ-विधातारः।

॥ १५३ ॥ (ऋ. १० । १६७ । ३)

(१२३९) विश्वामित्र-जमदग्नी। जगती।

सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मणि।
तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातर्विधातः कलशाँ अभक्षयम् ३ १२३९

(१४) बृहस्पतिः, अग्नीषोमौ च।

॥ १५४ ॥ (अथर्व० १ । ८ । १-२)

(१२४०-१२४१) चातनः। अनुष्टुप्।

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवा वहत्।
य इदं स्त्री पुमानकरिह स स्तुवतां जनः १ १२४०

अयं स्तुवान आगमदिमं स्म प्रति हर्यत।
बृहस्पते वशे लब्ध्वाऽग्नीषोमा वि विध्यतम् २ १२४१

(१५) अग्निः, आपः, ओषधयः, सोमः।

॥ १५५ ॥ (अथर्व० २ । १० । २)

(१२४२) भृग्वङ्गिराः। सप्तपदाष्टिः।

शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥२॥ १२४२

(१६) सोमः, अर्यमा, धाता।

॥ १५६ ॥ (अथर्व० १।३६।२)

(१२४३) पतिवेदनः। अनुष्टुप्।

सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्टमर्यम्णा संभृतं भगम्।
धातुर्देवस्य सत्येन कृणोमि पतिवेदनम् २ १२४३

(१७) वरुणः, सोमः, इन्द्रः ।

॥ १५७ ॥ (अथर्व० ३।३।३)

(१२४४-१२६०) अथर्वा । चतुष्पदा भुरिक्पङ्क्तिः ।

अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो ह्वयतु सोमस्त्वा ह्वयतु पर्वतेभ्यः ।
इन्द्रस्त्वा ह्वयतु विड्भ्य आभ्यः श्येनो भूत्वा विश आ पतेमाः ३ १२४४

(१८) सोमः, सविता, आदित्यः, अग्निः ।

॥ १५८ ॥

(१२४५) (अथर्व० ३ । ८ । ३) त्रिष्टुप् ।

हुवे सोमं सवितारं नमोभि-र्विश्वानादित्याँ अहमुत्तरत्वे ।
अयमग्निर्दीदायद् दीर्घमेव संजातैरिद्धोऽप्रतिब्रुवद्भिः ३ १२४५

(१९) सोमः, स्वजः, अशनिः ।

॥ १५९ ॥

(१२४६) (अथर्व० ३।२७।४) पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः ।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ४ १२४६

(२०) आपः, सोमः ।

॥ १६० ॥ (१२४७) (अथर्व० ४ । ४ । ५) अनुष्टुप् ।

अपां रसः प्रथमजो ऽथो वनस्पतीनाम् ।
उत सोमस्य भ्राता-ऽस्युतार्शमसि वृष्ण्यम् ५ १२४७

(२१) सोमः, वनस्पतिः ।

॥ १६१ ॥ (१२४८-१२४९) (अथर्व० ६ । २ । १-२) परोष्णिक् ।

इन्द्राय सोममृत्विजः सुनोता च धावत ।
स्तोतुर्यो वचः शृणवद्धवं च मे १
आ यं विशन्तीन्दवो वयो न वृक्षमन्धसः ।
विरप्शिन् वि मृधो जहि रक्षस्विनीः २ १२४९

(२२) द्यावापृथिवी, ग्रावा, सोमः, सरस्वती, अग्निः।

॥१६२॥ (१२५०) (अथर्व० ६।३।२) जगती।

पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः।
पातु नो देवी सुभगा सरस्वती पात्वग्निः शिवा ये अस्य पायवः २ १२५०

(२३) सोमः, अदितिः।

॥१६३॥ (१२५१-१२५२) (अथर्व० ६।७।१-२) १ निचृत्, २ गायत्री।

येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः।
तेना नोऽवसा गहि १
येन सोम साहन्त्या-सुरान् रन्धयासि नः।
तेना नो अधि वोचत २ १२५२

(२४) द्यावापृथिवी, सोमः, सविता, अन्तरिक्षं, सप्तऋषयः।

॥१६४॥ (१२५३) (अथर्व० ६।४०।१) जगती।

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नो ऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु।
अभयं नोऽस्तूर्वन्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हविषाभयं नो अस्तु १ १२५३

(२५) अग्निः, इन्द्रः, सोमः।

॥ १६५ ॥ (१२५४) (अथर्व० ६।५८।३)। अनुष्टुप्।

यशा इन्द्रो यशा अग्नि-र्यशाः सोमो अजायत।
यशा विश्वस्य भूतस्या-ऽहमस्मि यशस्तमः ३ १२५४

(२६) सविता, सोमः, वरुणः।

॥ १६६ ॥ (१२५५) (अथर्व० ६।६८।३) अतिजगतीगर्भा त्रिष्टुप्।

येनावपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्
तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्ववानयमस्तु प्रजावान् ३ १२५५

(२७) सांमनस्यम्, वरुणसोमोऽग्निबृहस्पतिवसवः।

॥२६७॥ (१२५६—१२५७) (अथर्व० ६। ७३। १—२) १ भुरिक् २ त्रिष्टुप्।

एह यांतु वरुणः सोमो अग्नि—र्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।
अस्य श्रियमुपसंयांत सर्वे उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः १
यो वः शुष्मो हृदयेष्वन्तरा—ऽऽकूतिर्या वो मनसि प्रविष्टा।
तान्त्सीवयामि हविषा घृतेन मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु २ १२५७

(२८) इन्द्रः, सोमः, सविता च।

॥२६८॥ (१२५८—१२६०) (अथर्व० ६। ९९। १-३) अनुष्टुप्, ३ भुरिग्बृहती।

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वांहूरणाद्धुवे।
ह्वयाम्युग्रं चेत्तारं पुरुणामानमेकजम् १
यो अद्य सेन्यो वधो जिघांसन्न उदीरते।
इन्द्रस्य तत्र बाहू समन्तं परि दद्मः २
परि दद्म इन्द्रस्य बाहू समन्तं त्रातुस्त्रायतां नः।
देव सवितः सोम राजन् त्सुमनसं मा कृणु स्वस्तये ३ १२६०

(२९) द्यौः, पृथिवी, शुक्रः, सोमः, अग्निः, वायुः, सविता।

॥२६९॥ (१२६१) (अथर्व० ६। ५३। १) बृहच्छुक्रः। जगती।

द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्नि—र्वायुर्नः पातु सविता भगश्च १ १२६१

सोमदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य नवमं मण्डलम् ।

[१] ९।१।१ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

पवस्व सोम धारया ।

इन्द्राय पातवे सुतः ।

(२११)९।२९।४ (नृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

पवस्व... ।

(२२६)९।३०।३ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

पवस्व... ।

(५८०)९।६७।१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । पवमानः सोमः)

पवस्व... ।

(९३९)९।१००।५ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)

इन्द्राय... ।

[३]९।१।३ =(अग्निः ११६३)८।१०३।७

पर्षि राधो मघोनाम् ।

[४]९।१।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

अभ्यर्ष...।

अभि वाजमुत श्रवः ।

(४३)९।६।३(असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

अभि...अर्ष ।

अभि... ।

(३५०)९।५१।५ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

अभ्यर्ष...।

अभि... ।

(४५९)९।६३।१२ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)

अभ्यर्ष... । अभि... ।

[१०]९।१।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ।

(९८८)९।१०६।३ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)

[११]९।२।१ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवस्व देववीरति ।

(२६१)९।३६।२ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[,,]९।२।१ = (इन्द्र. १०८५) १।१७६।१

(अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

इन्द्रमिन्दो वृषा विश ।

[१३]९।२।३ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

धारा सुतस्य वेधसः ।

(१३१)९।१६।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

[१४]९।२।४ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

आपो अर्षन्ति सिन्धवः ।

यद्गोभिर्वासयिष्यसे ।

(५५०)९।६६।१३ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)

[१६]९।२।६ **अचिक्रदद् वृषा हरिः ।**

(९५९)९।१०१।१६ **कनिक्रदद् वृषा हरिः ।**

[,,]९।२।६ **सं सूर्येण रोचते ।**

८।९।१८ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)

[१७]९।२।७ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।

याभिर्मदाय शुम्भसे ।

(२७४)९।३८।३ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

मर्मृ... ।

...शुम्भते ।

[१९]९।२।९ =(इन्द्रः २४३) ८।६।१

पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ।

[२०]९।२।१० अस्यश्**वसा वाजसा उत ।**

६।१३।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)

धिय**मश्वसां वाजसामुत ।**

[,,] ९।२।१० आत्मा **यज्ञस्य पूर्व्यः ।**

(अग्निः ५२०) ३।११।३ केतु**र्यज्ञस्य पूर्व्यः ।**

[२१] ९।३।१ (शुनः शेप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

अभि द्रोणान्यासदम् ।
(२२७) ९।३०।४ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
[२६] ९।३।६ = (अग्निः ७५१) ४।१५।३
दधद्रत्नानि दाशुषे ।
[२७] ९।३।७ (शुनःशेप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
पवमानः कनिक्रदत् ।
(१११) ९।१३।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
[२८] ९।३।८ व्यासरत्तिरो **रजांस्यस्पृतः ।**
(इन्द्रः ६८७) ८।८२।९ यदामरत्तिरो **रजांस्यस्पृतम् ।**
[२९] ९।३।९ (शुनःशेप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
एष प्रत्नेन जन्मना **देवो देवेभ्यः सुतः ।**
(२९७) ९।४२।२ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
एष प्रत्नेन मन्मना **देवो देवेभ्यस्परि ।**
(९३३)९।९९।७ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
देवो देवेभ्यः सुतः ।
(९७३)९।१०३।६ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
देवो देवेभ्यः सुतः ।
[३०]९।३।१० (शुनःशेप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
धारया पवते सुतः ।
(२९७)९।४२।२ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
[३१]९।४।१ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सना...पवमान महि श्रवः ।
(७६)९।९।९ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
पवमान... ।
सना...।
(९४१)९।१००।८ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
पवमान... ।
[३१-४०]९।४।१-१० **अथा नो वस्यसस्कृधि ।**
[३२]९।४।२ **सना** ज्योतिः **सना स्वः ।**
(७६)९।९।९ **सना** मेधं **सना स्वः ।**
[,,]९।४।२ = (इन्द्रः ६५८) ८।७८।८
विश्वा च सोम सौभगा ।

[३३]९।४।३ सना **दक्षमुत क्रतुम् ।**
(११६०)१०।२५।१ मनो **दक्षमुत क्रतुम् ।**
[३४]९।४।४ = (९)९।१।९ **सोममिन्द्राय पातवे ।**
[३५-३६]९।४।५-६ **तव क्रत्वा तवोतिभिः ।**
[३७]९।४।७ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सोम द्विबर्हसं रयिम् ।
(२८९)९।४०।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
(९३६)९।१००।२ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
[३९]९।४।९ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
पवमान विधर्मणि ।
(४८६)९।६४।९ (काश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
(९४१)९।१००।७ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
(अग्निः१९८३ ९।५।३ रयिर्वि **राजति द्युमान् ।**
(४०५)९।६१।१८ दक्षो **वि राजति द्युमान् ।**
(अग्निः१९८४)९।५।४ = (अग्निः१९३४)१।१८८।४
(अग्निः१९८८,९।५।८ = (अग्निः१९७०)५।५।७
[४२-४३]९।६।२-३ **अभि** त्यं मद्यं (२पूर्व्यं) **मदम् ।**
[४३]९।६।३ = (४)९।१।४ **अभि वाजमुत श्रवः ।**
[,,]९।६।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
सुवानो अर्ष पवित्र आ ।
(३५१)९।५२।१ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
[४४]९।६।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
आपो न प्रवतासरन् ।
पुनाना इन्द्रमाशत ।
(१८८)९।२४।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
आपो न प्रवता यतीः ।
पुनाना... ।
[४५]९।६।५ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
वने क्रीळन्तमत्यविम् ।
(३१८)९।४५।५ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
अस्वरन् वने ।
(९९६)९।१०६।११ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
वने... ।
अस्वरन्... ।
[४७]९।६।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
इन्द्राय पवते सुतः ।

(४३१)९।६२।१४ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
...मदः ।
(९८७)९।१०६।१ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
(१०१६)९।१०७।१७ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
...मदः ।
[५१]९।७।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
महीरपो वि गाहते ।
(९३३)९।९९।७ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
[५२]९।७।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
वृषाव चक्रदद् वने ।
(१०२१)९।१०७।२२ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
...चक्रदो वने ।
[५३]९।७।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
नृम्णा वसानो अर्षति ।
स्वर्वाजी **सिषासति ।**
(४४०)९।६२।२३ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
नृम्णा पुनानो अर्षसि ।
(६५७)९।७४।१ (कक्षीवान्दैर्घतमसः । पवमानः सोमः)
स्व१र्यद्वाज्यरुषः **सिषासति ।**
[५५]९।७।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अव्यो वारे परि प्रियो ।
(३४३)९।५०।३ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
...प्रियम् ।
(३५१)९।५२।२ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
(१००५)९।१०७।६ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
[६१]९।८।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो ।
(३८७ ९ ६०।४ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
राधसे...पवस्व ।
[,,]९।८।३=(११२४)३।६२।१३ **ऋतस्य योनिमासदम् ।**
[६७]९।८।९ = ७।९६।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सरस्वान्)
[७६]९।९।९ = (३१)९।४।१ **भक्षीमहि प्रजामिषम् ।**
[,,]९।९।९ = (३१)९।४।२
[७७ ९।१०।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अर्वन्तो न श्रवस्यवः ।
(५४७)९।६६।१० (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
[७८]९।१०।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
दधन्विरे गभस्त्योः ।

(११०)९।१३।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
[९३]९।११।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
इन्द्राय सोम पातवे ...परि षिच्यसे ।
(९२४)९।९८।१० (अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिश्वा भारद्वाजश्च । पवमानः सोमः)
(१०४०)९।१०८।१५ (शक्तिर्वासिष्ठः। पवमानः सोमः)
[,,]९।११।८ मनश्चिन्**मनसस्पतिः ।**
(९१९)९।९८।९ विश्वविन्**मनसस्पतिः**
[९५]९।१२।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
इन्द्राय मधुमत्तमाः ।
(४३० ९।६३।१९ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
...मधुमत्तमम् ।
(५८३)९।६७।१६ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
...मधुमत्तमः ।
[९६]९।१२।२ = (इन्द्रः२०८४)६।४५।२५
=(इन्द्रः१३७७)३।४१।५
गावो वत्सं न मातरः ।
(इन्द्रः२०८७)६।४५।२८ **वत्सं गावो न** धेनवः ।
[,,]९।१२।२ = (इन्द्रः८०)१।१६।३=(इन्द्रः१३८५)३।४२।४
= (इन्द्रः४०८)८।१७।१५ = (इन्द्रः२४०१)८।९२।५
= (इन्द्रः९८६)८।९७।११
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
[१००]९।१२।६ (असितः काश्यपो देवलो वा। पवमानः सोमः)
प्र वाचमिन्दुरिष्यति ।
(२५७)९।३५।४ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
प्र वाजमिन्दुरिष्यति ।
[,,]९।१२।६(इन्द्रः४३७)८।३४।१३
समुद्रस्याधि विष्टपि (०पः) ।
[१०१]९।१२।७ = (११०६)१।९१।६
निल्य (प्रिय०) **स्तोत्रो वनस्पतिः ।**
[१०२]९।१२।८(असितः काश्यपो देवलो वा। पवमानः सोमः)
सोमो हिन्वानो अर्षति ।
विप्रस्य धारया कविः ।
(३०९)९।४४।२ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सोमो हिन्वे परावति । **विप्रस्य**... ।
[१०४]९।१३।१(असितः काश्यपो देवलो वा। पवमानः सोमः)
सोमः पुनानो अर्षति ।

(११७)९।१२८।६ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

(३००)९।४२।५ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

(९५०)९।१०१।७ (नहुषो मानवः । पवमानः सोमः)

[१०५]९।१३।२ सुष्वाणं देववीतये ।

(५९५)९।६५।१८ सुष्वाणो देववीतये ।

[१०६]९।१३।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः।

(२९८)९।४२।३ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवन्ते वाजसातये ।

सोमाः... ।

(३०७)९।४३।६ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवस्व वाजसातये ।

(९४०)९।१००।६ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)

पवस्व वाजसातमः ।

(१०२२)९।१०७।२३ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

पवस्व वाजसातये ।

[१०७]९।१३।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

पवस्व बृहतीरिषः । ...सुवीर्यम् ।

(३०१)९।४१।६ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवस्व... ।

[११०]९।१३।७ = (इन्द्रः २०८४) ६।४५।२५
= (इन्द्रः१३७७) ३।४१।५

अभि (इन्द्र) **वत्सं न धेनवः** (मातरः) ।

[,,]९।१३।७ = (७८) ९।१०।१ **दधन्विरे गभस्त्योः** ।

[१११]९।१३।८ = (२७) ९।३।७

पवमान(०नः) कनिक्रदत् ।

[,,]९।१३।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

विश्वा अप द्विषो जहि ।

(३८९)९।६१।२८ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[११२]९।१३।९ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

अपघ्नन्तो अराव्णः ।

योनावृतस्य सीदत ।

(४५२)९।६३।५ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)

अपघ्नन्तो अराव्णः ।

(२८३)९।३९।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

योनावृतस्य सीदत ।

[११५]९।१४।३ = (इन्द्रः२३१४)८।६९।११

विश्वे देवा अमत्सत ।

[११७]९।१४।५ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ।

(७५३)९।८६।२६ (पृश्नयोऽजाः । पवमानः सोमः)

गाः कृण्वानो निर्णिजं न ।

(१०२५)९।१०७।२६ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ।

[१२१]९।१५।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ।

(४१२)९।६१।२५ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[१२३]९।१५।३ **एष** हितो **वि नीयते ।**

(२०८)९।२७।३ **एष** नृभिर्वि **नीयते ।**

[१२७]९।१५।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

एतं मृजन्ति मर्ज्यम् ।

(३२५)९।४६।६ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[१२८]९।१५।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति ।

(३९४)९।६१।७ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[१३१]९।१६।३=१।२८।९ (शुनः शेप आजिगर्तिः प्रजापतिः हरिश्चन्द्रः चर्म सोमो वा)

सोमं पवित्र आ सृज ।

[,,]९।१६।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सोमं पवित्र आ सृज ।

पुनीहीन्द्राय पातवे ।

(३४६)९।५१।१ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

सोमं... ।

पुनीही...।

[१३२]९।१६।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सोमः पवित्रे अर्षति ।

(१३९)९।१७।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सोमः... । विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ।

(१६६) ९।३७।१ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सोमः— ।
विघ्न— ।

[१३४] ९।१६।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
विश्वा अर्षन्नभि श्रियः ।
शूरो न गोषु तिष्ठति ।
(४३६) ९।६१।१९ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)

[१३५] ९।१६।७ = (१३) ९।२।३ **धारा सुतस्य वेधसः ।**

[१३६] ९।१६।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
त्वं सोम विपश्चितं......पुनान ।
अव्यो वारं वि धावसि ।
(५०१) ९।६४।२५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो ।
(२११) ९।२८।१ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
अव्यो वारं वि धावति ।
(९९५) ९।१०६।१० (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
पुनान......अव्यो वारं वि धावति ।
(६६५) ९।७४।९ (कक्षीवान्दैर्घतमसः । पवमानः सोमः)
अव्यो वारं वि पवमान धावति ।

[१३७] ९।१७।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
सोमा असृग्रमाशवः ।
(१८०) ९।२३।१ (असितःकाश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

[१३९] ९।१७।३ = (१३२) ९।१६।४ **सोमः पवित्र अर्षति ।**

["] ९।१७।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
सोमः पवित्रे अर्षति ।
विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ।
(१६६) ९।३७।१ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
(३६८) ९।५६।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
आशुः **पवित्रे अर्षति ।**
विघ्नन्— ।

[१४०] ९।१७।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
आ कलशेषु धावति पवित्रे परि षिच्यते ।
(५८१) ९।६७।१४ (विश्वामित्रो गाथिनः । पवमानः सोमः)
— धावति ।
(१९९) ९।४२।४ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
पवित्रे परि षिच्यते ।

[१४३] ९।१७।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
धीभिर्विप्रा अवस्यवः ।
मृजन्ति...... ।

(४६७) ९।६३।२० (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
मृजन्ति......धीभिर्विप्रा अवस्यवः ।

[१४४] ९।१७।८ = १।१३७।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
चारुमृताय पीतये ।

[१४५-५१] ९।१८।१-७ **मदेषु सर्वधा असि ।**

[१४९] ९।१८।५ = (इन्द्रः १४६४) ३।५३।१२
(विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
य इमे रोदसी मही (उभे) ।

[१५२] ९।१९।१ **तन्नः** पुनान **आ भर ।**
(अग्निः १०) १।१२।११ स नः स्तवान **आ भर ।**

[१५३] ९।१९।२=५।७१।२ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ईशाना पिप्यतं धियः ।

[१५५] ९।१९।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अवावशन्त धीतयो ।
(५४८) ९।६६।११ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)

[१५७] ९।१९।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
पवमान विदा रयिम् ।
(३०५) ९।४३।४ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
(४५८) ९।६३।११ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)

[१५९] ९।२०।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अव्यो वारेभिरर्षति ।
(२७२) ९।३८।१ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[१६४] ९।२०।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
मृज्यमानो गभस्त्योः ।
सोमश्चमूषु सीदति ।
(२६३) ९।३६।४ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
मृज्यमानो— ।
(४८२) ९।६४।५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
मृज्यमाना गभस्त्योः ।
(५१३) ९।६५।६ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।
पवमानः सोमः)
(९३१) ९।९९।६ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः
सोमश्चमूषु सीदति ।

[१६५] ९।२०।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
पवित्रे सोम गच्छसि ।
दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ।
(५८६ ९।६७।१९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । पवमानः सोमः)
(४४७) ९।६१।३० (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
सोमः पवित्रम् ।
दधत्— ।

(५६४) ९।६६।२७ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
वृधत्...... ।

[१६६] ९।२१।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
मत्सरासः स्वर्विदः ।

(१०१३) ९।१०७।१४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

[१७५] ९।२२।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।

(९५५) ९।१०१।१२ (मनुः सांवरणः । पवमानः सोमः)

["] ९।२२।३=(इन्द्र १८) १।५।५=(इन्द्रः २२३८) ७।३२।४
= १।१३७।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
= ५।५१।७ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वे देवाः)
सोमासो दध्याशिरः ।

[१८०] ९।२३।१ = (१३७) ९।१७।१ सोमा असृग्रमाशवः ।

["] ९।२३।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अभि विश्वानि काव्या ।

(४४२) ९।६२।२५ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)

(७१) ९।६३।२५ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)

(५३८) ९।६६।१ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)

[१८३] ९।२३।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
अभि कोशं मधुश्चुतम् ।

(१०१३) ९।१०७।१४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
अभि सोमास...... ।

(२६१) ९।३६।२ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
अभि कोशं मधुश्चुतम् ।

[१८४] ९।२३।५ सोमो अर्षति धर्णसिः ।
(२६७) ९।३७।२=(२७७) ९।३८।६ हरिरर्षति... ।

[१८५] ९।२३।६ = (इंद्रः २३४४) ८।९५।९
इन्द्ो (शुद्धो) वाजं सिषासति ।

[१८६] ९।२३।७ = (इन्द्रः २४०२) ८।९२।६
अस्य पीत्वा मदानां ।

[१८७] ९।२४।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
प्र.........पवमानास इन्दवः ।
श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ।

(५७४) ९।६७।७ गोतमो राहूगणः । पवमानः सोमः)
पवमानास इन्दवः ।

(९५१) ९।१०१।८ (नहुषो मानवः । पवमानः सोमः)
पवमानास इन्दवः ।

(५३३) ९।६५।२६ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
प्र......... ।
श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ।

[१८८] ९।२४।२=(इन्द्रः २७६) ८।६।३४=(इन्द्रः ३२८) ८।१३।८
आपो न प्रवता यतीः ।

["] ९।२४।२ =(४४) ९।६।४ पुनाना इन्द्रमाशत ।

[१८९] ९।२४।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
नृभिर्यतो वि नीयसे ।

(९३४) ९।९९।८ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)

[१९१] ९।२४।५=(इन्द्र २४११) ८।९२।२५ अरमिन्द्रस्य धाम्ने ।

[१९२] ९।२४।६ = (अग्निः १९१०) १।१४२।३
शुचिः पावको अद्भुतः ।

[१९३] ९।२४।७=(१९२) ९।२४।६ शुचिः पावक उच्यते ।

["] ९।२४।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
देवावीरघशंसहा ।

(२१७) ९।२८।६ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

(४०६) ९।६१।१९ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[१९५] ९।२५।१ (दृळहच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)
अभि योनिं कनिक्रदत् ।

(२६७) ९।३७।२ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[१९६] ९।२५।३ (दृळहच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)
शोभते......योनावधि ।
वृत्रहा देववीतमः ।

(२१४) ९।२८।३ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
शुभायतेऽधि योनौ ।
वृत्रहा देववीतमः ।

[१९७] ९।२५।४=७।५५।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वास्तोष्पतिः)
विश्वा रूपाण्याविशन् ।

["] ९।२५।४ (दृळहच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)
पुनानो याति हर्यतः ।

(३०४) ९।४३।३ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
पुनानो याति हर्यतः ।

[१९९] ९।२५।६ (दृळहच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)
=(३४४) ९।५०।४ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे ।
अर्कस्य योनिमासदम् ।

[२०४] ९।२६।५ (इध्मवाहो दार्ढच्युतः । पवमानः सोमः)
हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।

(२१८) ९।३०।५ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

(२३७) ९।३२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः)

(२७३) ९।३८।१ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
(२८३) ९।३९।६ बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
(३४३) ९।५०।३ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
(५१५) ९।६५।८ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।
पवमानः सोमः)
[२०५] ९।२६।६ (इध्मवाहो दार्ढच्युतः । पवमानः सोमः)
तं......हिन्वन्ति ।
......इन्दविन्द्राय मत्सरम् ।
(३५१) ९।५३।४(अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
तं हिन्वन्ति...... ।
इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ।
(४६४) ९।६३।१७ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ।
[२०८]९।२७।३=(१२३)९।१५।३ एष नृभि (र्हितो) र्वि नीयते ।
[२११] ९।२७।६ (नृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
पुनान इन्दुरिन्द्रमा ।
(५६५) ९।६६।१८ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
[२१२] ९।२८।१ = (१३६) ९।१६।८ अत्यो वार वि धावति ।
[२१३] ९।२८।२ = (९९)९।३।९ सोमो (देवो) देवेभ्यः सुतः ।
[२१४] ९।२८।३ = (१९६) ९।२५।३ वृत्रहा देववीतमः ।
[२१५] ९।२८।४ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
अभि द्रोणानि धावति ।
(२७१) ९।३७।६ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
[२१६] ९।२८।५ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
पवमानो विचर्षणिः ।
(३८४) ९।६०।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
पवमानं विचर्षणिम् ।
[२१७ ९।२८।६ = (१०४) ९।१३।१ सोमः पुनानो अर्षति ।
["] ९।२८।६ = (१९३) ९।२४।७ देवावीरघशंसहा ।
[२२०] ९।२९।३ (नृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोम)
पुनानाय प्रभूवसो ।
वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् ।
(२५९) ९।३५।६ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
पुनानस्य प्रभूवसोः ।
(४०२) ९।६१।१५ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् ।
[२२१] ९।२९।४ = (१) ९।१।१ पवस्व सोम धारया ।
[२२३] ९।२९।६ (नृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
द्युमन्तं शुष्ममा भर ।
(९८९) ९।१०६।४ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)

द्युमन्तं शुष्ममा भरा स्वर्विदम् ।
[२२४] ९।३०।१ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
पुनानो वाचमिष्यति ।
(५०१) ९।६४।१५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
पुनानो वाचमिष्यसि ।
[२२५] ९।३०।२ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
इन्दुर्हियानः सोतृभिः ।
(१०२५) ९।१०७।२६ (सप्तर्षयः पवमानः सोमः)
[२२६] ९।३०।३ = (१)९।१।१ पवस्व सोम धारया ।
[२२७] ९।३०।४ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
पवमानो अभिष्यदत् ।
(३४८) ९।४९।५ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
["] ९।३०।४ = (२१) ९।३।१ अभि द्रोणान्यासदम् ।
[२२८] ९।३०।५ = (२०५) ९।२६।५
["] (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
इन्दविन्द्राय पीतये ।
(३१४) ९।४५।१ (अयास्य आंगिरसः । पवमानः सोमः)
(३४५) ९।५०।५ (उचथ्य आंगिरसः । पवमानः सोमः)
(४८९) ९।६४।१२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
[२२९] ९।३०।६ (बिन्दुरांगिरसः । पवमानः सोमः)
सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
(३४७) ९।५१।१ (उचथ्य आंगिरसः । पवमानः सोमः)
सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
सुनोता मधुमत्तमम् ।
(इन्द्रः १२४२) ७।३२।८ सुनोता सोमपाव्ने ।
सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
[२३२] ९।३१।३ (गोतमो राहूगणः । पवमानः सोमः)
तुभ्यं ... तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।
(४४४) ९।६२।२७ (जमदग्निर्भार्गव । पवमानः सोमः)
तुभ्येमा ... ... ।
तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।
[२३३] ९।३१।४ = (१११६) १।९१।१६
[२३५] ९।३१।६ (गोतमो राहूगणः । पवमानः सोमः)
इन्दो सखित्वमुश्मसि ।
(५५१) ९।६६। ४ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
[२३७] ९।३२।२ = (२०४) ९।२६।५
["] ९।३२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः)
(२७३) ९।३८।२ (रहूगण आंगिरसः । पवमानः सोमः)
एतं (९।३२।२ आदौ) त्रितस्य योषणो हरिं
हिन्वन्त्यद्रिभिः ।

इन्दुमिन्द्राय पीतये ।
(३०३) ९।४३।२ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
इन्दु——— ।
(५१५) ९।६५।१८ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।
पवमानः सोमः)
हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
इन्दुमिन्द्राय... ।
[२३०.] ९।३२।४ = (अग्निः १०७६) ३।१६।३५
सीदन्नृतस्य योनिमा ।
[२४०] ९।३२।५ अभि गावो अनूषत ।
(२४६) ९।३३।५ अभि ब्रह्मीरनूषत ।
[२४१] ९।३२।६ = (इन्द्रः २०९८) ६।४६।९
मघवद्भ्यश्च मह्यं च ।
[२४३] ९।३३।१ (त्रित आप्त्यः। पवमानः सोमः)
शुक्रा ऋतस्य धारया ।
वाजं गोमन्तमक्षरन् ।
(४६१) ९।६३।१४ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
[२४४] ९।३३।३ = (इन्द्रः ३२३२) ५।५१।७
(स्वस्त्यात्रेयः । इन्द्रवायू)
सुता इन्द्राय वायवे ।
["] ९।३३।३ = ८।४१।१ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)
वरुणाय मरुद्भ्यः ।
[२४६] ९।३३।५ =(२४०) ९।३२।५
["] ९।३३।५ = (अग्निः १९२४) १।१४२।७
=(अग्निः १९६९) ५।५।६
= १०।५९।८ (बन्धुः श्रुतबन्धुः० । द्यावापृथिवी)
[२४७] ९।३३।६ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
रायः ... अस्मभ्यं सोम विश्वतः ।
आ पवस्व सहस्रिणः ।
(२८६) ९।४०।३ (बृहन्मतिरांगिरसः । पवमानः सोमः)
रयिं ... अस्मभ्यं ... ।
आ पवस्व सहस्रिणम् ।
(४२९) ९।६१।१२ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
आ पवस्व सहस्रिणं रयिम् ।
(४४८) ९।६३।१ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
आ पवस्व सहस्रिणं रयिम् ।
(५२८) ९।६५।२१ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।
पवमानः सोमः)
अस्मभ्यं सोम विश्वतः ।
आ पवस्व सहस्रिणम् ।
[२४८] ९।३४।१ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
इन्दुर्हिन्वानो अर्षति ।
(५७१) ९।६७।४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
[२४९] ९।३४।२ = (इन्द्रः ३२३१) ५।५१।७
(स्वस्त्यात्रेयः । इन्द्रवायू)
["] ९।३४।२ = ८।४१।१ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)
[२५०] ९।३४।३ सुन्वन्ति सोममद्रिभिः ।
(इन्द्रः १०३) ८।१।१७ सोता हि सोममद्रिभिः ।
[२५५] ९।३५।१ इन्दो समुद्रमीङ्खय ।
(३५३) ९।५१।४ इन्दो न दानमीङ्खय ।
["] ९।३५।१ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
समुद्रमीङ्खय पवस्व विश्वमेजय ।
(४४३) ९।६२।२६ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
समुद्रिया......ईरयन् ।
पवस्व विश्वमेजय ।
[२५६]=९।३५।३(अग्निः४०१)१।८।६ अभि ष्याम पृतन्यतः।
[२५७] ९।३५।४ = (१००) ९।११।६
प्र वाज (०च) मिन्दुरिष्यति ।
[२५९] ९।३५।६ = (२२०) ९।२९।३
[२६१] ९।३६।१ = (११) ९।१।१ पवस्व देववीरति ।
["] ९।३६।२ = (१८२)९।२३।४ अभि कोशं मधुश्चुतम्।
[२६३] ९।३६।४ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
शुम्भमान ऋतायुभिर्मृज्यमानो गभस्त्योः ।
पवते वारे अव्यये ।
(४८२) ९।६४।५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
शुम्भमानो ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः ।
पवन्ते वारे अव्यये ।
["] ९।३६।४ = (१६४) ९।२०।६ मृज्यमानो गभस्त्योः।
[२६४] ९।३६।५ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
स विश्वा दाशुषे वसु सोमो दिव्यानि पार्थिवा।
पवतामान्तरिक्ष्या ।
(४८३) ९।६४।६ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा।
पवन्तामान्तरिक्ष्या ।
[२६६] ९।३७।१ = (१३२) ९।१६।४ =(१३९) ९।१७।३
सोमः पवित्रे अर्षति ।
[२६७] ९।३७।२ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

हरिरर्षति धर्णसिः ।
अभि योनिं कनिक्रदत् ।
(२७७) ९।३८।६ (रहूगण आङ्गिरसः। पवमानः सोमः)
हरि— ।
क्रन्दन् योनिमभि ।
[२६७] ९।३७।२ = (१९५) ९।२५।२
[२६८] ९।३७।३ (रहूगण आङ्गिरसः। पवमानः सोमः)
पवमानो वि धावति ।
(९७३) ९।१०३।६ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
व्यानशिः पवमानो— ।
[२७०] ९।३७।५ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सोमो वाजमिवासरत् ।
(४३३) ९।६२।१६ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
[२७१] ९।३७।६ = (२१५) ९।२८।४ अभि द्रोणानि धावति ।
[२७२] ९।३८।१ = (१५९) ९।२०।१ अव्यो वारेभिरर्षति ।
["] ९।३८।१ गच्छन् वाजं सहस्रिणम् ।
(३७२) ९।५७।१ अच्छा वाजं सहस्रिणम् ।
[२७३] ९।३८।२ = (२३७) ९।३१।२
["] ९।३८।२ = (२०४) ९।२६।५
[२७४] ९।३८।३ = (१७) ९।२।७
[२७५] ९।३८।४ (रहूगण आङ्गिरसः। पवमानः सोमः)
श्येनो न विक्षु सीदति ।
(३७४) ९।५७।३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
श्येनो न वंसु षीदति ।
(७६१) ९।८६।३५
(अकृष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः)
श्येनो न वंसु कलशेषु सीदसि ।
[२८०] ९।३९।३ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सुत एति पवित्र आ ।
(३१०) ९।४४।३ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
(३९५) ९।६१।८ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोम)
[२८३] ९।३९।६= (२०४) ९।२६।५
["] ९।३९।६= (१११) ९।१३।९
[२८६] ९।४०।३= (२४७) ९।३३।६
[२८७] ९।४०।४ विदाः सहस्रिणीरिषः ।
(३९०) ९।६१।३ क्षरा सहस्रिणीरिषः ।
[२८८] ९।४०।५= (अग्निः २०) १।११।११
स नः पुमान (स्तवान) आ भर ।
[२८९] ९।४०।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम् ।

(३७५) ९।५७।४ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
पुनान इन्दवा भर ।
(५०३) ९।६४।२६ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
पुनान इन्दवा भर ।
(९३६) ९।१००।२ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
["] ९।४०।६ = (३७) ९।४।७
सोम द्विबर्हसं रयिम् ।
[२९१] ९।४१।२ साह्वांसो दस्युमव्रतम् ।
(इन्द्रः १०८१) १।१७५।३ सहावान् दस्युमव्रतम् ।
[२९३] ९।४१।४ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
पवस्व मंहीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् ।
अश्वावद्वाजवत् सुतः ।
(३९०) ९।६१।३ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
गोमदिन्दो हिरण्यवत् । ... सहस्रिणीरिषः ।
(३०१) ९।४२।६ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
गोमन्नः सोम......अश्वावद्वाजवत् सुतः ।
पवस्व बृहतीरिषः ।
[२९७] ९।४२।२ = (२९--३०) ९।३।९--१०
[२९८] ९।४२।३ = (१०६) ९।१३।३
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः ।
[२९९] ९।४२।४ = (१४०) ९।१७।४
पवित्रे परि षिच्यते ।
[३००] ९।४२।५ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
अभि विश्वानि वार्या ।
(५४१) ९।६६।४ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
पवस्व......अभि विश्वानि वार्या ।
["] ९।४२।५ = (१०४) ९।१३।१
[३०१] ९।४२।६ = (२९३) ९।४१।४ अश्वावद् वाजवत् सुतः ।
["] ९।४२।६ = (१०७) ९।१३।४ पवस्व बृहतीरिषः ।
[३०३] ९।४३।२ = (२३७) ९।३२।२
["] ९।४३।३ = (३०४) ९।२५।४
[३०५] ९।४३।४ = (१५७) ९।१९।६
["] ९।४३।४ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम सुश्रियम् ।
(४५८) ९।६३।११ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
.........सोम दुष्टरम् ।
["] ९।४३।४ इन्दो सहस्रवर्चसम् ।
(५०२) ९।६४।२५ = (९१५) ९।९८।१ इन्दो सहस्रभर्णसम् ।
[३०७] ९।४३।६ = (१०६) ९।१३।३
["] ९।४३।६ = (अग्निः ८५८) ५।१३।५

(इन्द्रः २३७५)८।९८।१२ = (अग्निः ११८१)८।२३।१२
[३०८] ९।४४।१ प्र ण इन्दो महे तने ।
(५५०) ९।६६।१३......महे रणे ।
[३०९] ९।४४।२ = (१०२) ९।१२।८ विप्रस्य धारया कविः।
[३१०] ९।४४।३ = (२८०) ९।३९।३
[३१२] ९।४४।५ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
स नो भगाय वायवे ।
(३९६) ९।६१।९ (अमहीयुराङ्गिरसः। पवमानः सोमः)
[३१४] ९।४५।१ = (२२८) ९।३०।५
[३१५] ९।४५।२ = (इन्द्र ७) १।४।४
देवान् (यन्ते) सखिभ्य आ वरम् ।
[३१६] ९।४५।३ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
वि नो राये दुरो वृधि ।
(४८०) ९।६४।३ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
[३१७] ९।४५।४ (अग्निः१४७१) ८।१०२।९
[३१८] ९।४५।५ = (४५) ९।६।५
[३१९] ९।४५।६ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
तया पवस्व धारया यया ।
(३३७) ९।४९।२ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
[३२०] ९।४६।१ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
असृग्रन् देववीतये।
(५८४) ९।६७।१७ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
[३२२] ९।४६।३ = (इन्द्रः८३) १।१६।६ एते इमे सोमास इन्दवः।
[३२४] ९।४६।५ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
पवस्व.........महः ।
अस्मभ्य सोम गातुवित् ।
(५२०) ९।६५।१३ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
महीम.........पवस्व ।
अस्मभ्यं ।
[३२५] ९।४६।६ = (१२७) ९।१५।७ एतं मृजन्ति मर्ज्यम् ।
[३३७] ९।४९।२ = (३१९) ९।४५।६
[३४०] ९।४९।५ = (२२७) ९।३०।४
[३४३] ९।५०।३ = (५५) ९।७।६
["] ९।५०।३ = (२०४) ९।२६।५
["] ९।५०।३ (उचथ्य आंगिरसः । पवमानः सोमः)
हिन्वन्ति ... ।
पवमानं मधुश्चुतम्।
(५७६) ९।६७।९ (गोतमो राहूगणः । पवमानः सोमः)
[३४४] ९।५०।४ = (१९९) ९।२५।६
[३४५] ९।५०।५ (उचथ्य आंगिरसः । पवमानः सोमः)
स पवस्व मदिन्तम ।
(९३२) ९।९९।६ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
स पुनानो मदिन्तमः ।
["] ९।५०।५ = (२२८) ९।३०।५
[३४६] ९।५१।१ = (१३१) ९।१६।३ = १।२८।९
(शुनःशेप आजीगर्तिः । प्रजापतिः हरिश्चन्द्रः चर्म सोमो वा)
[३४७] ९।५१।२ = (२२९) ९।३०।६
= (इन्द्रः २२४२) ७।३२।८
[३४८] ९।५१।३ (उचथ्य आंगिरसः । पवमानः सोमः)
पवमानस्य मरुतः ।
(५०१) ९।६४।२४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
[३५०] ९।५१।५ = (४) ९।१।४
[३५१] ९।५२।१ = (४३) ९।६।३
[३५२] ९।५२।२ = (५५) ९।७।६
[३५३] ९।५२।३ = (२५५) ९।३५।२
[३५४] ९।५२।४ (उचथ्य आंगिरसः। पवमानः सोमः)
इन्दवेषां पुरुहूत जनानाम् ।
यो अस्माँ आदिदेशति ।
(५०४) ९।६४।२७ (कश्यपो मारीचः। पवमानः सोमः)
एषां पुरुहूत जनानाम् ।
(इन्द्रः २७८६) १०।१३४।२ (मान्धाता यौवनाश्वः। इन्द्रः)
यो अस्माँ आदिदेशति ।
[३५५] ९।५२।५ (उचथ्य आंगिरसः । पवमानः सोमः)
पवस्व मंहयद्रयिः ।
(५६८) ९।६७।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पवमानः सोमः)
[३५९] ९।५३।४ = (४६४) ९।६३।१७
हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्।
["] ९।५३।४ = (२०५) ९।२६।६
३६१] ९।५४।३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
सोमो देवो न सूर्यः ।
(४६०) ९।६३।१३ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
[३६४] ९।५५।१ = (३१) ९।४।२ = (इन्द्रः ६५८) ८।७८।८
[३६८] ९।५६।१ = (१३२) ९।१६।४
["] ९।५६।१ = (१३९) ९।१७।३
[३७१] ९।५६।४ = (९८९) ९।१०६।४
= (इन्द्रः १७८५) ८।९१।३
[३७२] ९।५७।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)

प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः ।
(५६५) ९।६२।२८ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यसश्चतः ।
[३७४] ९।५७।३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
स मर्मृजान आयुभिः ।
(५६०) ९।६६।२३ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
["] ९।५७।३ = (२७५) ९।३८।४
[३७५] ९।५७।४ = (२८९) ९।४०।६
[३७६ ७९] ९।५८।१, १-४ तरत् स मन्दी धावति ।
[३८४] ९।६०।१ = (२१६) ९।२८।५
[३८५] ९।६०।२ अथो सहस्रभर्णसम् ।
(५०३) ९।६४।२६ उतो सहस्रभर्णसम् ।
[३८६] ९।६०।३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
कलशाँ...... । इन्द्रस्य हार्दाविशन् ।
(७४६) ९।८६।१९ (सिकता निवारी । पवमानः सोमः)
कलशाँ......इन्द्रस्य हार्दाविशन् मनीषिभिः ।
[३८८] ९।६१।१ = (इन्द्रः ९४९) १।८४।१३
[३९०] ९।६१।३ = (२८७)९।४०।४ = (२९३) ९।४१।४
[३९१] ९।६१।४ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सखित्वमा वृणीमहे ।
(५१६) ९।६५।९ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
(इन्द्रः २७८३) १०।१३३।६ (सुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
सखित्वमा रभामहे ।
[३९३] ९।६१।६ = (१८८) ९।४०।५
= (अग्नि २०) १।१२।११ = (इन्द्रः १७९२) ८।२४।३
[३९४] ९।६१।७ = (१२८) ९।१५।८
[३९५] ९।६१।८ = (२८०) ९।३९।३
[३९६] ९।६१।९ = (३१२) ९।४४।५
[३९८] ९।६१।११ एना विश्वान्यर्य आ ।
(अग्निः १७१६) १०।१९१।१ अग्ने विश्वान्यर्य आ ।
["] ९।६१।११ = (इन्द्रः २३४१) ८।९५।६
[३९९] ९।६१।१२ = ८।४१।१ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)
[४०१]९।६१।१४ = (इन्द्रः३३८)८।१३।१८
= (इन्द्रः२४१७) ८।९२।२१ = ८।६९।११ उत्तरार्धः
(प्रियमेध आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)
[४०१] ९।६१।१५ = (इन्द्र ५३७) ८।५४ (वाल०६) । ७
= (मरुत् ४८) ८।७ ३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
["] ९।६१।१५ = (११०) ९।१९।३
[४०५] ९।६१।१८ = (अग्निः १९८३)

(असितः काश्यपो देवलो वा । आप्रीसूक्तं [इळः ।])
[४०६] ९।६१।१९ = (इन्द्रः १८२४) ८।४६।८
= (इन्द्रः २४१३) ८।९२।१७
["] ९।६१।१९ = (१९३) ९।२४।७
[४०८] ९।६१।२१ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सीदञ्छ्येनो न योनिमा ।
(५२६) ९।६५।१९ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
[४०९] ९।६१।२२ = (इन्द्रः१३३८) ३।३७।५
(विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
[४१२] ९।६१।२५ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
अपघ्नन् पवते मृधो ।
(४९१) ९।६३।२४ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
अपघ्नन् पवसे मृधः ।
["] ९।६१।२५ = (१२१) ९।१९।१
[४१५] ९।६१।२८ = (१११) ९।१३।८
[४१६] ९।६१।२९ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
अस्य ते सख्ये वयं ।
(५५१) ९।६६।१४ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
["] ९।६१।२९ = (इन्द्रः४१) १।८।४
= (इन्द्रः३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
[४१८] ९।६२।१ = (५७४) ९।६७।७
= (इन्द्रः ३११७) १ १३५।६
[४२०] ९।६२।३ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
(५५९) ९।६६।२२ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
पवमानो......अभ्यर्षति सुष्टुतिम् ।
(७२१) ९।८५।७ (वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
[४२१] ९।६२।४ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
असाव्यंशुः... ।
श्येनो न योनिमासदत् ।
(७०१) ९।८२।१ (वसुर्भारद्वाजः । पवमानः सोमः)
असावि सोमो... ।
श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् ।
[४२५] ९।६२।८ तिरो रोमाण्यव्यया ।
(५७१) ९।६७।४ = (१००९) ९।१०७।१०
तिरो वाराण्यव्यया ।
[४२६] ९।६२।९ = (इन्द्रः१७८५) ८।९३।१३ = (९८९) ९।१०६।४
[४२९] ९।६२।१२ = (१४७) ९।३३।६

[४२९] ९।६२।११ = (२५१) ८।६।९ = (४५९) ९।६३।१२
[४३०] ९।६२।१३ = (३७४) ९।५७।३
[४३१] ९।६२।१४ = (इन्द्रः ४३१) ८।३४।७
["] ९।६२।१४ = (४७) ९।६।७
[४३३] ९।६२।१६ = (२७०) ९।३७।५
[४३५] ९।६२।१८ हरिं हिनोत वाजिनम् ।
(अग्निः१८६३) ०।१८८।१(श्येन आग्नेयः।जातवेदा अग्निः)
अश्वं हिनोत वाजिनम् ।
[४३६] ९।६२।१९ = (१३४) ९।१६।६
[४४०] ९।६२।२३ = (५३) ९।७।४
[४४१] ९।६२।२४ = ५।७९।८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
[४४२] ९।६२।२५ = (१८०) ९।२३।१
[४४३] ९।६२।२६ = (२५५) ९।३५।२
[४४४] ९।६२।२७ = (२३१) ९।३१।३
तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।
[४४५] ९।६२।२८ = (३७२) ९।५७।१
[४४७] ९।६२।३० = (१६५) ९।२०।७
[४४८] ९।६३।१ = (२४७) ९।३३।६
[४४९] ९।६३।२ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
इन्द्राय मत्सरिन्तमः । चमूष्वा नि षीदसि ।
(९३४) ९।९९।८ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
इन्द्राय मत्सरिन्तमश्चमूष्वा नि षीदसि ।
[४५१] ९।६३।४ = (१३७) ९।१७।१
["] ९।६३।४ = (२४३) ९।३३।२
[४५२] ९।६३।५ = (११२) ९।१३।९
[४५४] ९।६३।७ = (इन्द्रः २३६५) ८।९८।२
[४५५] ९।६३।८ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ।
(५९३) ९।६५।१६ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
[४५७] ९।६३।१० = (२०५) ९।२६।६
[४५८] ९।६३।११ = (१५७) ९।२१।६
["] ९।६३।११ = (३०५) ९।४३।४
[४५९] ९।६३।१२=(इन्द्रः२५१) ८।६।९=(४२९) ९।६२।११
["] ९।६३।१२= (४) ९।१।४
[४६०] ९।६३।१३= (३६१) ९।५४।२
[४६१] ९।६३।१४= (२३७) ९।३२।१
[४६२] ९।६३।१५= (इन्द्रः १८) १।५।५=(१७५) ९।२२।३
=(४६२) ९।६३।१५=(९५५) ९।१०१।१२
=१।१३७।१(परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
= ५।५१।७ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वे देवाः)
=(इन्द्रः२२३८) ७।३२।४
[४६३] ९।६३।१६ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
राये अर्ष पवित्र आ । मदो यो देववीतमः ।
(४८९) ९।६४।१२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
स नो अर्ष— ।
[४६४] ९।६३।१७ निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
तमी मृजन्त्यायवः ।
(१०१६) ९।१०७।१७ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
["] ९।६३।१७ = (३५९) ९।५३।४ = (२०५) ९।२६।६
[४६६] ९।६३।१९ = (९५) ९।११।१
[४६७] ९।६३।२० = (१२७) ९।१५।७
["] ९।६३।२० = (१४३) ९।१७।७
[४७०] ९।६३।२३ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
प्रियः समुद्रमा विश ।
(५०४) ९।६४।२७ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
[४७१] ९।६३।२४ = (४२२) ९।६२।२५
[४७२] ९।६३।२५ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
पवमाना असृक्षत ।
(१०१४) ९।१०७।२५ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
["] ९।६३।२५=(१८०) ९।२३।१
[४७५] ९।६३।२८ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
पुनानः सोम धारय ।
(१००३) ९।१०७।४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
["] ९।६३।२८= (अग्निः १०७०) ६।१६।२९
(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
[४७६] ९।६३।२९ (निध्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
अभ्यर्ष कनिक्रदत् ।
द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ।
(५७०) ९।६७।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पवमानः सोमः)
[४७७] ९।६३।३०= (२६४) ९।३६।५
[४७९] ९।६४।२= (इन्द्रः २१९) ८।३३।१०
[४८०] ९।६४।३= (३१६) ९।४५।३
[४८१] ९।६४।५= (२६३) ९।३६।४
["] ९।६४।५= (१६४) ९।२०।६
[४८३] ९।६४।६= (२६४) ९।३६।५
[४८६] ९।६४।९= (३९) ९।४।९
["] ९।६४।९ =(३६१) ९।५४।३
[४८८] ९।६४।११ =(अग्निः १०७६) ६।१६।३५
= (२३९) ९।३२।४

[४८९] ९।६४।११ = (४६३) ९।६३।१६
["] ९।६४।१२ = (२२८) ९।३०।५
[४९४] ९।६४।१७ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
वृथा **समुद्रमिन्दवः ।**
अग्मन्नृतस्य योनिमा ।
(५४९) ९।६६।११ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
अच्छा **समुद्र ... ।**
अग्मन्नृ ... ।
[४९९] ९।६४।२२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
इन्द्रायेन्दो ... **पवस्व मधुमत्तमः ।**
(१०२६) ९।१०८।१ (गौरिवीतिः शाक्त्यः । पवमानः सोमः)
पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम ।
(१०४०) ९।१०८।१५ (गौरिवीतिः शाक्त्यः । पवमानः सोमः)
इन्द्राय सोम ... ।
पवस्व मधुमत्तमः ।
["] ९।६४।२२ = (११२४) ३।६२।१३
(विश्वामित्रो गाथिनः । सोमः)
[५०१] ९।६४।२४ = (३४८) ९।५१।३
[५०२] ९।६४।२५ = (१३६) ९।१६।८ = (२२४) ९।३०।१
["] ९।६४।२५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
इन्दो **सहस्रभर्णसम् ।**
(९१५) ९।९८।१ (अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिश्वा भारद्वाजश्च । पवमानः सोमः)
[५०३] ९।६४।२६ उतो **सहस्रभर्णसम् ।**
["] ९।६४।२६ = (२८९) ९।४०।६
[५०४] ९।६४।२७ = (३५४) ९।५२।४ = (४७०) ९।६३।२३
[५०५] ९।६४।२८ = १।१३७।१
(परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
सोमाः शुक्रा गवाशिरः ।
[५०६] ९।६४।२९ = (अग्निः ३१) १।२६।४
(शुनःशेप आजीगर्तिः । अग्निः)
[५०८] ९।६५।१ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः ।
(५७६) ९।६७।९ (गोतमो राहूगणः । पवमानः सोमः)
[५०९] ९।६५।२ = (२९७) ९।४२।२
[५१३] ९।६५।६ = (१६४) ९।२०।६
[५१४] ९।६५।७ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
पवमानाय गायत ।
(७७१) ९।८६।४४ (अत्रिर्भौमः । पवमानः सोमः)
विपश्चिते पवमानाय गायत ।

[५१५] ९।६५।८ = (१०४) ९।१६।५ = (२३७) ९।३२।२
[५१६] ९।६५।९ = (३९१) ९।६१।४
= (इन्द्रः ३५९) ८।६४।६
[५२०] ९।६५।१३ = (इन्द्रः २६५) ८।६।१२ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
["] ९।६५।१३ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः ।
पवस्व विश्वदर्शतः ।
(९९०) ९।१०६।५ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)
["] ९।६५।१३ = (३२४) ९।४६।५
[५२१] ९।६५।१४ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
आ कलशा ... इन्दो ... धाराभिरोजसा ।
(९९२) ९।१०६।७ (मनुराप्सवः । पवमानः सोमः)
इन्दो धाराभिरोजसा ।
आ कलशं ।
[५२२] ९।६५।१५ = १।१३७।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
[५२३] ९।६५।१६ = (४५५) ९।६३।८
[५२४] ९।६५।१७ = (अग्निः २४६६) १।९३।२
(गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)
[५२५] ९।६५।१८ = (१०५) ९।१३।२
[५२६] ९।६५।१९ = (४०८) ९।६१।११
[५२७] ९।६५।२० = (इन्द्रः ३३३२) १।५१।७ (स्मृत्याङ्गिरसः । इन्द्रवायू)
["] ९।६५।२० = ८।४१।१ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)
[५२८] ९।६५।२१ = (२४७) ९।३३।६
[५२९] ९।६५।२२ = (इन्द्रः २४३५) ८।९३।६
[५३१] ९।६५।२४ = (अग्निः ४३७) २।६।५
["] ९।६५।२४ = (१०८) ९।१३।५
[५३२] ९।६५।२५ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
पवते हर्यतो हरिः ।
(९९८) ९।१०६।१३ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
["] ९।६५।२५ = ३।६२।१८ (विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
गृणाना जमदग्निना ।
[५३३] ९।६५।२६ = (१८७) ९।२४।२
[५३५-३७] ९।६५।२८-३० पान्तमा **पुरुस्पृहम् ।**
[५३८] ९।६६।१ = (१८०) ९।२३।१

[५३८] ९।६६।१ = (अग्निः २२७) १।७५।४ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
[५४३] ९।६६।४ = (३००) ९।४२।५
[५४४] ९।६६।७ = १।४०।४ (कण्वो घोरः । ब्रह्मणस्पतिः)
[५४७] ९।६६।१० = (६१) ९।१०।१
दधानो (धत्ते) अक्षितिः श्रवः ।
[५४८] ९।६६।११ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
अच्छा कोशं मधुश्चुतम् ।
(१०११) ९।१०७।१२ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
[५४८] ९।६६।११ = (१५५) ९।११।४
[५४९] ९।६६।१२ = (४९४) ९।६४।१७
[५५०] ९।६६।१३ = (३०८) ९।४४।१
प्र ण इन्दो महे रण (तन) ।
["] ९।६६।१३ = (१४) ९।२।४ आपो अर्षन्ति सिन्धवः ।
[५५१] ९।६६।१४ = (४१६) ९।६१।२९
अस्य ते सख्ये वयम् ।
["] ९।६६।१४ = (२३५) ९।३१।६ इन्द्रो सखित्वमुश्मसि ।
[५५५] ९।६६।१८ = (इन्द्रः ३१५२) ४।४१।७
[५५९] ९।६६।२२ = (४२०) ९।६२।३
[५६०] ९।६६।२३ = (३७४) ९।५७।३ स मर्मृजान आयुभिः ।
[५६१] ९।६६।२४ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ।
(इन्द्रः २६६४) १०।८९।२ (रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
—तमांसि त्विष्या जघान ।
[५६४] ९।६६।२७ = (१६५) ९।२०।७
[५६५] ९।६६।२८ = (२११) ९।२७।३
[५६८] ९।६७।१ = (३५५) ९।५२।५
[५७०] ९।६७।३ = (४७६) ९।६३।२९
[५७१] ९।६७।४ = (२४८) ९।३४।१
["] ९।६७।४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
तिरो वाराण्यव्यया ।
हरिः— ।
(१००९) ९।१०७।१० (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
[५७४] ९।६७।७ = (१८७) ९।२४।१
["] ९।६७।७ (इन्द्रः ३२१७) १।१३५।६ = (४१८) ९।६२।१
[५७६] ९।६७।९ = (५०८) ९।६५।१
["] ९।६७।९ = (३४३) ९।५०।३
[५७७-७९] ९।६७।१०-१२ आ भक्षत् कन्यासु नः ।
[५८०] ९।६७।१३ = (१) ९।१।१
[५८१] ९।६७।१४ = (१४०) ९।१७।४

[५८३] ९।६७।१६ = (९५) ९।११।१
[५८४] ९।६७।१७ = (३१०) ९।४६।१
["] ९।६७।१७ = (इन्द्रः १७०) ८।३।१५
(मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
[५८६] ९।६७।१९ = (१६५) ९।२०।७
[५९५] ९।६७।२८ = (११७) १।९१।१७
[५९६] ९।६७।२९ (पवित्र आङ्गिरसो वा वसिष्ठो वा उभौ वा । पवमानः सोमः)
अगन्म बिभ्रतो नमः ।
१०।६०।१ (बंधुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः । असमातिः)
[५९८] ९।६७।३१ यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
(५९९) ९।६७।३२ पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः— ।
[६०६] ९।६८।७ = (इन्द्रः १७६९) ५।३९।३
[६०७] ९।६८।८ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)
सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभः ।
(७४४) ९।८६।१७ (सिकता निवावरी । पवमानः सोमः)
[६०८] ९।६८।९ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)
सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।
(७३६) ९।८६।९ (अकृष्टा माषाः । पवमानः सोमः)
[६०९] ९।६८।१० (वत्सप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)
एवा नः सोम परिषिच्यमानो ।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ।
(८९१) ९।९७।२६ (पराशरः शाक्त्यः । पवमानः सोमः)
एवा— ।
(अग्निः १६००) १०।४५।१२ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
अद्वेषे— ।
[६१७] ९।६९।८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
आ नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद् ।
(७६५) ९।८६।३८ (अकृष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः)
स नः— ।
["] ९।६९।८ = (इन्द्रः २४३२) ८।९३।३
(सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[६१९] ९।६९।१० = (अग्निः ५७) १।३१।८
(हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अग्निः)
[६२२] ९।७०।३ = (अग्निः ३८८) २।२।४
(गृत्समदः शौनकः । अग्निः)
[६२३] ९।७०।४ स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः ।
(९३३) ९।९९।७ स मृज्यते सुकर्मभिः ।
[६२४] ९।७०।५ स मर्मृजान इन्द्रियाय धायसे ।
(७३०) ९।८६।३ सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ।

[६२७] ९।७०।८ = (१०४१) ९।१०८।१६
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे ।
[६२८] ९।७०।९ (रेणुर्वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश ।
(१०४१) ९।१०८।१६ (शक्तिर्वासिष्ठः । पवमानः सोमः)
[६२९] ९।७०।१० (रेणुर्वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
हितो न सप्तिरभि वाजमर्ष ।
(७३०) ९।८६।३ (अकृष्टा माषाः । पवमानः सोमः)
अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष ।
[६३७] ९।७१।८= (अग्निः १८७५) १।९५।८
(कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः औषसोऽग्निर्वा)
[६३९] ९।७२।४ (हरिमन्त आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ।
(७४०) ९।८६।१३ (सिकता निवावरी । पवमानः सोमः)
[६४४] ९।७२।६= (मरुतः ११३) १।६४।६
(नोधा गौतमः । मरुतः)
[६४५] ९।७२।७ (हरिमन्त आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवोऽपामूर्मौ सिन्धुषु ।
सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ।
(७३५) ९।८६।८ (अकृष्टा माषाः । पवमानः सोमः)
अपामूर्मि ...... सिन्धुषु ।
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ।
(७४८) ९।८६।२१ (पृश्नयोऽजाः । पवमानः सोमः)
सोमो हृदे .... ।
[६४६] ९।७२।८ (हरिमन्त आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
स तू पवस्व परि पार्थिवं रजः। रयिं पिशङ्गं बहुल वसीमहि।
(१०२३) ९।१०७।२४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
स तू .... ।
(१०२०) ९।१०७।२१ रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं ।
[६५१] ९।७३।४ (पवित्र आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः ।
(७२५) ९।८५।१० (वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
[६५७] ९।७४।१= (५३) ९।७।४
[६६१] ९।७४।५= १।९२।१३ (गोतमो राहूगणः । उषा)
[६६५] ९।७४।९= (१३६) ९।१६।८
["] ९।७४।९ (कक्षीवान् दैर्घतमसः । पवमानः सोमः)
स्वदस्वेन्द्राय पवमान पीतये ।
(९००) ९ ९७।४४ (पराशरः शाक्त्यः । पवमानः सोमः)
...... पवमान इन्दो ।
[६६७] ९।७५।२= (इन्द्रः ३३०५) १।१५५।३
(दीर्घतमा औचथ्यः । इन्द्राविष्णू)
[६६९] ९।७५।४ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
प्ररोचयन् रोदसी मातरा शुचिः ।
(७२७) ९।८५।१२ (वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
प्रारूरुचद् रोदसी मातरा शुचिः ।
[६७१] ९।७६।१ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसः ।... अत्यो न ।
(६८०) ९।७७।५ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
चक्रिर्दिवः —। ... अत्यो न ।
[६७५] ९।७६।५ (कविर्भार्गवः पवमानः सोमः)
वृषेव यूथा परि कोशमर्षसि ...... कनिक्रदत् ।
स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमो ।
(८४१) ९।९६।२० (प्रतर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः)
— — परि कोशमर्षन् कनिक्रदत् ।
(८८८) ९।९७।३१ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
कनिक्रदत् ... ... ।
— — मत्सरवान् ।
[६७६] ९।७७।१ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः ।
१०।७५।४ (सिन्धुक्षित्प्रैयमेधः । नद्यः)
[६८१] ९।७८।१ प्र राजा वाचं जनयन्नसिष्यदत् ।
(७६०) ९।८६।३३ = (९९७) ९।१०६।१२
पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् ।
(९।८६।३३ उपावसुः)
["] ९।७८।१ शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम् ।
(७३४) ९।८६।७ सोमो देवानामुप ... ।
[६८५] ९।७८।५ = ७।७७।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । उषा)
[६८६] ९।७९।१ अर्यो नशन्त सनिषन्त नो धियः ।
(इन्द्रः २७८०) १०।१३३।३ अर्यो नशन्त नो धियः ।
[६९५] ९।८०।५ (वसुर्भारद्वाजः । पवमानः सोमः)
इन्द्रं सोम मादयन् दैव्यं जनं ।
(७१३) ९।८४।३ (प्रजापतिर्वाच्यः । पवमानः सोमः)
इन्द्रं सोमो मादयन् ... ।
[७०१] ९।८२।१ = (४२१) ९।६२।४
[७१०] ९।८३।५ (पवित्र आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
नभो वसानः ।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयसि श्रवो बृहत् ।
(७६७) ९।८६।४० (अकृष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः)
... अपो वसानो ।
वाजमारुहत् सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो बृहत् ।

[७११] ९।८४।१ = (इन्द्रः ३१३१) ५।५१।७ (स्वस्त्यात्रेयः । इन्द्रवायू)
= (१४४) ९।३३।३ = (१४९) ९।३४।१
(त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
[७१२] ९।८४।२ = (इन्द्रः ८०८) १।५६।४ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[७१३] ९।८४।३ = (६९५) ९।८०।५
[७१५] ९।८४।५ = (६७१) ९।७६।१
[७२०] ९।८५।५ त्य१व्ययं समया वारमर्षसि ।
(९१२) ९।९७।५६ वि वारमव्यं समयाति याति ।
[७२१] ९।८५।७ = (४२०) ९।६२।३
[७२४] ९।८५।९ = (अग्निः १७७९) ६।७।७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । वैश्वानरोऽग्निः)
["] ९।८५।९ राजा पवित्रमत्येति रोरुवत् ।
(७३४) ९।८६।७ वृषा पवित्रमत्येति ... ।
[७२५] ९।८५।१० = (६५१) ९।७३।४
["] ९।८५।१० वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।
(८३१) ९।९५।४ अंशुं दुहन्त्युक्षणं ... ।
[७२६] ९।८५।११ (वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्नतं ।
(७५८) ९।८६।३१ (अकृष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः)
[७२७] ९।८५।१२ (वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थाद् ।
भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यद्यौत् ।
१०।१२३।७ (वेनो भार्गवः । वेनः)
ऊर्ध्वो ... ।
१०।१२३।८ (वेनो भार्गवः । वेनः)
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानः ।
["] ९।८५।१२ = (६६९) ९।७५।४
[७३०] ९।८६।३ = (६२९) ९।७०।१०
["] ९।८६।३ (अकृष्टा माषाः । पवमानः सोमः)
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्यये ।
(८९६) ९।९७।४० (पराशरः शाक्त्यः । पवमानः सोमः)
... **सानो अव्ये ।**
[७३०] ९।८६।३ = (६२४) ९।७०।५
[७३४] ९।८६।७ = (६८१) ९।७८।१
["] ९।८६।७ = (७२४) ९।८५।९
[७३५] ९।८६।८ = (६४५) ९।७२।७
[७३६] ९।८६।९ = (अग्निः १११) १।५८।२
["] ९।८६।९ = (६०८) ९।६८।९
[७४०] ९।८६।१३ = (६४२) ९।७२।४
[७४४] ९।८६।१७ = (६०७) ९।६८।८
[७४६] ९।८६।१९ = (३८६) ९।६०।३
[७४८] ९।८६।२१ = (६४५) ९।७२।७
[७५३] ९।८६।२६ = (११७) ९।१४।५
[७५६] ९।८६।२९ (पृश्नयोऽजाः । पवमानः सोमः)
त्वं द्यां च पृथिवीं चाति जभ्रिषे ।
(९४३) ९।१००।९ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
[७५७] ९।८६।३० = (इन्द्रः १६१) ८।३।६
[७५८] ९।८६।३१ = (७२६) ९।८५।११
[७६०] ९।८६।३३ (अकृष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः)
पुनानो वाचं जनयन्नुपावसुः ।
(९९७) ९।१०६।१२ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
—**जनयन्न**सिष्यदत् ।
[७६२] ९।८६।३५ = (२७५) ९।३८।४
["] ९।८६।३५ (अकृष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः)
दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः ।
(१०३३) ९।१०८।१६ (शक्तिर्वासिष्ठः । पवमानः सोमः)
दिवो विष्टम्भ उत्तमः ।
[७६५] ९।८६।३८ = (६१७) ९।६९।८
[७६७] ९।८६।४० = (७१०) ९।८३।५
[७७१] ९।८६।४४ = (५१४) ९।६५।७
[७७३] ९।८६।४६ = (७२६) ९।८५।११
[७८४] ९।८७।९ = (अग्निः ९५०) ६।१।१२
(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
[७८५] ९।८८।१ = (इन्द्रः २११३) ७।२९।१
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
[७९२] ९।८८।८ = (११०३) १।९१।३
[७९९] ९।८९।७ = ४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषाः)
[८०२] ९।९०।३ = (इन्द्रः १८७८) ६।१९।८
(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
[८०४] ९।९०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । पवमानः सोमः)
मत्सि...वरुणं मत्सि मित्रं मत्सि ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि ।
(८९८) ९।९७।४२ (पराशर शाक्त्यः । पवमानः सोमः)
मत्सि...मत्सि मित्रावरुणा ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि ।
[८०६] ९।९१।१ दश स्वसारो **अधि सानो अव्ये ।**
(८१५) ९।९२।४ दश स्वसाभिरधि **सानो अव्ये ।**

[८२५] ९।९२।४ = ८।५७(वाल०९)२ (मेध्यः काण्वः । अश्विनौ)
["] ९।९२।४ = (८०६) ९।९१।१
[८२७] ९।९२।६ परि सद्मेव पशुमान्ति होता ।
(८५७) ९।९७।१ मितेव सद्म पशुमान्ति होता ।
[८२९] ९।९५।१ = २।४२।१ (गृत्समदः शौनकः । शकुन्तः)
[८३१] ९।९५।४ = (७२५) ९।८५।१०
[८३२] ९।९५।५ = ४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषाः)
[८३५] ९।९६।३ (प्रतर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः)
स नो देव देवताते पवस्व महे सोम प्सरस इन्द्रपानः ।
...पुनानः ।
(८८३) ९।९७।२७ (मृळीको वासिष्ठः । पवमानः सोमः)
एवा देव देवताते पवस्व महे सोम प्सरसे देवपानः ।
... पुनानः ।
[८३७] ९।९६।५ = (इन्द्रः १७७२) ८।३६।४
(श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रः)
[८३८,८४९] ९।९६।६,१७ सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ।
[८४१] ९।९६।९ (प्रतर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः)
सहस्रधारः शतवाज इन्दुः ।
(१०७३) ९।११०।१० (त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः । पवमानः सोमः)
[८४८] ९।९६।१६ = (इन्द्रः ८६०) १।६१।५
[८४९] ९।९६।१७ (प्रतर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः)
शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति ।
(१०७५) ९।१०९।१२ (अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः । पवमानः सोमः)

—जज्ञानं हरिं मृजन्ति ।
[८५२] ९।९६।२० = (६७५) ९।७६।५
[८५५] ९।९६।२३ = (६०८) ९।६८।९
[८५७] ९।९७।१ = (८२७) ९।९२।६
[८६१] ९।९७।५ = ४।३३।१ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
["] ९।९७।५ सहस्रधारः पवते मदाय ।
(९४९) ९।१०१।६ सहस्रधारः पवते ।
[८६७] ९।९७।११ = (११३६) ८।४८।१
[८७२,८७५] ९।९७।१६,१९
अभि (१९ परि) ष्णुना धन्व सानो अव्ये ।
[८८०] ९।९७।२४ = (अग्निः १११) १।६०।४
(नोधा गौतमः । अग्निः)
[८८३] ९।९७।२७ = (८३५) ९।९६।३
[८८६] ९।९७।३० = (अग्निः १६१) १।६८।९
(पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)

[८८८] ९।९७।३२ = (६७५) ९।७६।५
[८९२] ९।९७।३६ = (६०९) ९।६८।१०
[८९५] ९।९७।३९ = (इन्द्रः ८७३) १।६२।२
(नोधा गौतमः । इन्द्रः)
[८९६] ९।९७।४० = (७३०) ९।८६।३
[८९८,९०५] ९।९७।४२,४९ मत्सि (९।९७।४९ अभि)
मित्रावरुणा पूयमानः ।
[८९८] ९।९७।४२ = (८०४) ९।९०।५
[९००] ९।९७।४४ = (६६५) ९।७४।९
[९०२] ९।९७।४६ = १।१९०।१
(अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । बृहस्पतिः)
[९०४] ९।९७।४ = (अग्निः २०६) १।७३।२
(पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
[९०५] ९।९७।४९ = (इन्द्रः २१८५) ७।२३।६
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
[९१२] ९।९७।५६ = (इन्द्रः १४१०) ३।४६।२
(विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
["] ९।९७।५६ = (७२०) ९।८५।५
[९१५] ९।९८।१ = (५०२) ९।६४।२५
[९१८] ९।९८।४ = (इन्द्रः ९४३) १।८४।७
(गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
[९२०] ९।९८।६ = १।१८।६ (मेधातिथिः काण्वः । सदसस्पतिः)
[९२४] ९।९८।१० = (९३) ९।११।८
[९३२] ९।९९।६ = (३४५) ९।५०।५
["] ९।९९।६ = (१६४) ९।२०।६
[९३३] ९।९९।७ = (६२३) ९।७०।४
["] ९।९९।७ = (२९) ९।३।९
["] ९।९९।७ = (५१) ९।७।२
[९३४] ९।९९।८ = (१८९) ९।२४।३
["] ९।९९।८ = (४४९) ९।६३।२
[९३५] ९।१००।१ = १।१८।६ (मेधातिथिः काण्वः । सदसस्पतिः)
[९३६] ९।१००।२ = (२८०) ९।४०।६
["] ९।१००।२ = (३७) ९।४।७
[" ९४२] ९।१००।२,८ विश्वानि दाशुषो गृहे ।
[९४५] ९।१००।५ = (१) ९।१।१
["] ९।१००।५ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
मित्राय वरुणाय च ।
१०।८५।१७ (सूर्या सावित्री ऋषिका । देवाः)
[९४०] ९।१००।६ = (१०६) ९।१३।३
["] ९।१००।६ = (९९१) ९।१०६।६ देवेभ्यो मधुमत्तमः ।

[९४१] ९।१००।७ = (इन्द्रः२०८७) ६।४५।२८
(शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
["] ९।१००।७ = (३९) ९।४।९
[९४२] ९।१००।८ = (३१) ९।४।१
["] ९।१००।८ = (अग्निः१३३२) ८।४३।२३
[९४३] ९।१००।९ = (७५६) ९।८६।२०.
[९४९] ९।१०१।६ = (८६१) ९।९७।५
[९५०] ९।१०१।७ = ८।३१।११ (मनुर्वैवस्वतः । दम्पत्याशिषः)
["] ९।१०१।७ = (१०४) ९।१३।१
[९५१] ९।१०१।८ = (१८७) ९।२४।१ .
[९५२] ९।१०१।९ = (इन्द्रः३०४१) ५।८६।२
(अत्रिर्भौमः । इन्द्राग्नी)
[९५३] ९।१०१।१० (मनुः सांवरणः । पवमानः सोमः)
अस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
(९९१) ९।१०६।६ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)
अस्मभ्यं गातुवित्तमः ।
[९५५] ९।१०१।१२ = (१७५) ९।२२।३
["] ९।१०१।१२ = (इन्द्रः१८) १।५।५
[९५८] ९।१०१।१५ = ७।८६।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वरुणः)
[९५९] ९।१०१।१६ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ।
पवमानः सोमः)
अव्यो वारेभिः पवते ।
(१०३०) ९।१०८।५ (ऊरुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
["] ९।१०१।१६ = (१६) ९।२।६
[९६४] ९।१०२।५ = (अग्निः२४४०) १।१३।३
(मेधातिथिः काण्वः । अग्निर्मरुतश्च)
[९६६] ९।१०२।७ = (अग्निः१९२४) १।१४२।७
(दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं [उषासानक्ता])
[९६९] ९।१०३।२ = (५७१) ९।६७।४
["] ९।१०३।२ (द्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
वारेण्यव्यया गोभिरञ्जानो अर्षति ।
(१०११) ९।१०७।२२ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
वारे ... **अव्यये** ।
गोभिरञ्जानो अर्षसि ।
[९७०] ९।१०३।३ = (१८३) ९।२३।४
[९७३] ९।१०३।६ = (२९) ९।३।९
["] ९।१०३।६ = (२६८) ९।३७।३
[९७४] ९।१०४।१ = १।२२।८ (मेधातिथिः काण्वः । सविता)
[९७५] ९।१०४।२ (पर्वतनारदौ काण्वौ, शिखण्डिन्याप्सरसौ
काश्यपौ वा । पवमानः सोमः)
समी **वत्सं न मातृभिः ।**
देवाव्यं१ मदम् ।
(९८१) ९।१०५।२ (पर्वतनारदौ काण्वौ । पवमानः सोमः)
सं **वत्स इव मातृभिः ।**
देवावीर्मदो ।
[९७६] ९।१०४।३ = १।१३६।४
(परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
[९७९] ९।१०४।६ रक्षसं **कं चिदत्रिणम् ।**
(९८५) ९।१०५।६ अदेवं **कं** ... ।
[९८१] ९।१०५।२ = (९७५) ९।१०४।२
[९८७] ९।१०६।१ = (४७) ९।६।७
[९८८] ९।१०६।३ = (७७) ९।१०।१
[९८९] ९।१०६।४ = (इन्द्रः १७८५) ८।९।१३
(अपाला आत्रेयी । इन्द्रः)
["] ९।१०६।४ = (२२३) ९।२९।६
[९९०] ९।१०६।५ = (५२०) ९।६५।१३
[९९१] ९।१०६।६ = (९५३) ९।१०१।१०
["] ९।१०६।६ = (९४०) ९।१००।६
[९९२] ९।१०६।७ = (५२१) ९।६५।१४
[९९५] ९।१०६।१० = (१३६) ९।१६।८
["] ९।१०६।१० = (२७) ९।३।७
[९९६] ९।१०६।११ = (४५) ९।६।५
[९९७] ९।१०६।१२ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः ।
(१०१०) ९।१०७।११ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
[९९७] ९।१०६।१२ = (७६०) ९।८६।३३
[९९८] ९।१०६।१३ = (५३२) ९।६५।२५
[१०००] ९।१०७।१ = ४।४५।५ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
[१००३] ९।१०७।४ = (४७५) ९।६३।१८
["] ९।१०७।४ = (इन्द्रः ५५३) ८।६१।६
(भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
[१००५] ९।१०७।६ = (५५) ९।७।६
[१००६] ९।१०७।७ = (इन्द्रः ३०) १।७।३
(मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
[१००९] ९।१०७।१० = (५७१) ९।६७।४
[१०१०] ९।१०७।११ = (९९७) ९।१०६।१२
[१०११] ९।१०७।१२ = (५४८) ९।६६।११
[१०१३] ९।१०७।१४ = (१८३) ९।२३।४
["] ९।१०७।१४ = (इन्द्रः ४३७) ८।३४।१३
(नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

[१०१३] ९।१०७।१४ = (१६६) ९।११।१
[१०१४] ९।१०७।१५ (सप्तर्षयः। पवमानः सोमः)
राजा देव ऋतं बृहत्।
(१०३३)९।१०८।८(ऊर्ध्वसद्मा आङ्गिरसः। पवमानः सोमः)
[१०१६] ९।१०७।१७ = (४७) ९।६।७
["] ९।१०७।१७ = (४६४) ९।६३।१७
[१०२०] ९।१०७।२१ = (६४६) ९।७२।८
[१०२१] ९।१०७।२२ = (५२) ९।७।३
["] ९।१०७।२२ = (९६९) ९।१०३।२
[१०२२] ९।१०७।२३ = (१०६) ९।१३।३
[१०२३] ९।१०७।२४ = (६४६) ९।७२।८
[१०२४] ९।१०७।२५ = (४७२) ९।६३।२५
[१०२५] ९।१०७।२६ = (२२५) ९।३०।२
["] ९।१०७।२६ = (११७) ९।१४।५
[१०२६] ९।१०८।१ = (४९९) ९।६४।२२
[१०३०] ९।१०८।५ = (९५९) ९।१०१।१६
[१०३१] ९।१०८।६ = ८।७३।१८
(गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा। अश्विनौ)
[१०३३] ९।१०८।८ = (१०१४) ९।१०७।१५
[१०४०] ९।१०८।१५ = (९३) ९।११।८
["] ९।१०८।१५ = (४९९) ९।६४।२२

[१०४१] ९।१०८।१६ = (६२८) ९।७०।९
["] ९।१०८।१६ = (इन्द्रः२७७) ८।६।३५
(वत्सः काण्वः। इन्द्रः)
["] ९।१०८।१६ = (६२७) ९।७०।८
["] ९।१०८।१६ = (७६२) ९।८६।३५
[१०५३] ९।१०९।१२ = (८४९) ९।९६।१७
[१०६३] ९।१०९।२० = (इन्द्रः१८१) ८।३२।२
(मेधातिथिः काण्वः। इन्द्रः)
[१०७२] ९।११०।९ = (इन्द्रः११८४) २।१७।४
(गृत्समदः शौनकः। इन्द्रः)
[१०७३] ९।११०।१० = (८४१) ९।९६।९
[१०७८] ९।१११।३ = ८।१५।१३
[१०७९-८२] ९।११२।१-४=(१०८३-९३)९।११३।१-११=
(१०९४-९८) ९।११४।१-४ इन्द्रायेन्दो परि स्रव।
[१०९०-९३] ९।११३।८-११ तत्र माममृतं कृधि।
[१०९७] ९।११४।४ (कश्यपो मारीचः। पवमानः सोमः)
मो च नः किं चनाममत्।
१०।५९।८-९ (बन्धुः श्रुतबन्धु०। द्यावापृथिवी)
मो षु ते किं चनाममत्।
(इन्द्रः३३५५) १०।५९।१० (बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धु-
गौपायनाः। इन्द्रद्यावापृथिव्यः।

दैवत-संहितान्तर्गत

सोमदेवता-मंत्राणां उपमासूची ।

(अस्यां सूच्यां मंत्रक्रमाङ्क १०९७ पर्यन्तं ऋग्वेदस्य नवमं मण्डलं वर्तते । तस्य निर्देशः कृतो नास्ति ।)

अग्निः न वने ८८,५; ७८९ आसृज्यमानः पाजांसि ।
अग्निं न मथितम् ८,४८,६; ११४० सं दिदीपः ।
अग्नेः इव २२,२; १७४ अमाः वृथा ।
अत्कं न निक्तम् ६९,४; ६१३ परि सोमः अव्यत ।
अत्याः हियानाः न १३,६; १०९ असृग्रं वाजसातये ।
अत्यः न ३२,३; २३८ गोभिः अज्यते ।
अत्यः इव ४३,१; ३०२ मृज्यते ।
अत्यः न वाजसृत् ४३,५; ३०६ इन्दुः कनिक्रन्ति ।
अत्यः न सत्वभिः ७६,१; ६७१ वृथा पाजांसि कृणुते ।
अत्यः न यूथे ७७,५; ६८० वृषयुः कनिक्रदत् ।
अत्यः न ८१,२; ६९७ वीळ्हा वृषा ।
अत्यः न ८२,२; ७०२ मृष्टः ।
अत्यः न ८५,५ ७२० सानसिः ।
अत्यः न हियानः ८६,३; ७३० अभि वाजम् अर्ष ।
अत्यः न ८६,२६; ७५३ क्रीळन् परिवारं अर्षति ।
अत्यः न ८६,४४; ७७१ क्रीळन् हरिः असरत् ।
अत्यः न ९३,१; ८१८ वाजी द्रोणं ननक्षे ।
अत्यः न वाजी ९६,१५; ८४७ अरातीः तरतीन् ।
अत्यः न ९६,२०; ८५२ सृत्वा ।
अत्यः न ९७,१८; ८७४ क्रदः ।
अत्यः न ९७,४५; ९०१ हित्वा ।
अत्यासः न ससृजानासः ९७,२०; ८७६ शुक्रासः धन्वन्ति ।
अत्यम् इव वाजिनम् ६,५; ४५ मृजन्ति योषणः दश ।
अन्धसः यथा ते जातम् ५५,२; ३६५ नि बर्हिषि सदः ।
अपसः यथा रथम् १०७,१३; १०१२ तम् ईम् नदीषु ।
अपां न ऊर्मयः ३३,१; २४२ सोमासः प्रयन्ति ।
अपाम् इव ऊर्मयः ९५,३; ८३० तर्तुराणाः मनीषाः ।
अभ्रा इव विद्युत् ७६,३; ६७३ रोदसी प्र पिन्व ।
अरिता इव नावम् ९५,२; ८२९ पथ्यां वाचम् इयर्ति ।
अरुषः न ७२,१; ६३९ युज्यते ।
अर्यमा इव ८८,८; ७९२ दक्षाय्यः ।
अर्यमा इव १,९१,३; ११०३ दक्षाय्यः ।
अर्वान् इव ९७,२५; ८८१ श्रवसे सातिम् अच्छा ।
अर्वन्तः न १०,१; ७७ अवस्यवः ।
अर्वन्तः न श्रवस्यवः ६६,१०; ५४७ सर्गाः असृक्षत ।
अर्वताम् इव वाजेषु ४७,५; ३३० भरेषु जिग्युषाम् असि ।
अर्वताम् इव सर्गासः १०,२५,४; ११६३ समु प्रयन्ति ।
अश्वः न ६४,३; ४८० चक्रदः वृषा ।
अश्वः न ७१,६; ६३५ यज्ञियः देवान् अप्येति ।
अश्वः न ९७,२८; ८८४ क्रदः ।
अश्वः न १०१,२; ९४५ कृत्व्यः ।
अश्वः न १०९,१०; १०५१ निक्तः सोमः ।
अश्वं न हेतारः ६२,६; ४२३ अमृताय ईम् आशूशुभन् ।
अश्वं न ८७,१; ७७६ वाजिनं मर्जयन्तः ।
अश्वं न १०८,७; १०३१ अप्तुरम् रजस्तुरम् ।
अश्वया इव १०७,८; १००७ हरिता याति धारया ।
अहानि इव सूर्यः वासराणि ८,४८,७; ११४१ नः आयूंषि ।
अहिः न ८६,४४; ७७१ जूर्णाम् अति सर्पति त्वचम् ।
अह्यः न ईक्षेण्यासः ७७,३; ६७८ चारवः ।
आजिम् यथा ३२,६; २४० एवं हितम् अगन् ।
आपः न प्रवता: ६,४; ४४ इन्दवः अन्वसरन् ।
आपः न प्रवता: २४,२; १८८ अभि गावः अधन्विषुः ।
आपः न ८८,७; ७९१ सुमतिः भव ।
इन्द्रः न ८८,४; ७८८ महा कर्माणि चक्रिः ।
इन्द्रस्य इव आजौ ९७,१३; ८६९ वग्नुः आ शृण्वे ।
इषुः न धन्वन् ६९,१; ६१० मतिः प्रति धीयते ।
उक्षा इव यूथा ७१,९; ६३८ परियन् अरावीत् ।
उत्सं न कंचित् जनपानम् ११०,५; १०५८ अभि अभि हि ।
उपवक्ता इव होतुः ९५,५; ८३२ वाचम् इष्यन् ।
उरु इव ९६,१५; ८४७ गातुः ।
उशना इव काव्यम् ९७,७; ८६३ देवः देवानां जनिमा ।
उषसः न सूर्यः ८४,२; ७१२ इन्दुः सिषक्ति ।
उषाः सूर्यः न रश्मिभिः ४१,५; २९४ मही रोदसी आपृण ।
ऊर्मिः इव अपाम् १०८,५; १०३० क्रीळन् पवते ।
ऊर्मिं न सिन्धुः ९६,७; ८३९ सोमः गिरः आवीविपत् ।
ऊर्मेः इव सिन्धोः ५०,१; ३४१ ते स्वनः उदीरते ।
ऋभुः न रथ्यं नवम् २१,६; १७१ दधाता केतम् आदिशे ।

कवयः न गृध्राः ९७,५७; ९१३ अदब्धाः पदे रेभन्ति ।
कामः न ९७,४६; ९०२ यः देववतां असर्जि ।
कारिणे न ९७,३८; ८९४ धनं प्र यंसत् ।
कारिणाम् इव भरासः १०,२; ७८ गुभस्त्योः दधन्विरे ।
कुल्या इव अत्यासः ४६,१; ३२० देववीतये असृग्रन् ।
कृष्टिहा इव ७१,२; ६३१ शुष्मः रोरुवत् प्र एति ।
गावः न ४१,१; २९० भूर्णयः ।
गावः यन्ति गोपतिम् ९७,३४; ८९० पृच्छमानाः सोमं ।
गावः अस्तं न धेनवः ६६,१२; ५४९ इन्दवः समुद्रम् ।
गावः न धेनवः ६८,१; ६०० इन्दवः प्र असिष्यदन्त ।
गावः न यवसेषु १,९१,१३; १११३ नः हृदि रारन्धि ।
गावः न यवसे १०,२५,१; ११६० ते सख्ये वय रणन् ।
गावः वत्सं न मातरः १२,२; ९६ इन्द्रं विप्राः अभ्यनूषत ।
गाः इव ११२,३; १०८१ नानाधियः अनुतस्थिम ।
ग्रन्थिम् न ९७,१८; ८७४ ग्रथितं माम् वि ष्य ।
घ्ना इव ९७,१६; ८७२ विष्वक् दुरितानि विघ्नन् ।
घृतं न पवते मधु ६७,११; ५७८ अयं सोमः कपर्दिने ।
घृतं न पवते शुचि ६७,१२; ५७९ अयं ते आघृणे सुतः ।
चमसाम् इव १०,२५,४; ११६३ त्वम् विवक्षसे ।
चरुः न ५२,३; ३५३ तम् ईङ्खय ।
चित्रम् न दिवः ६१,१६; ४०३ ज्योतिः बृहत् ।
जनः न पुरि १०७,१०; १००९ हरिः चम्वोः सदः विशत् ।
जनः न युध्वा ८८,१; ७८९ महतः उपब्दिः ।
जमदग्निवत् ९७,५१; ९०७ नः आर्षेयं द्रविणं अभ्यश्रवाम ।
जाया इव पत्यौ ८२,४; ७०४ अधिशेव मंहसे ।
जारः न योषितम् ३८,४; २७५ मानुषीषु आ सीदति ।
जारः न योषणाम् १०१,१४; ९५७ सरत् योनिम् आसदत् ।
जारम् इव योषा प्रियम् ३२,५; २४० प्रियं त्वा गावः ।
जारम् न कन्या ५६,३; ३७० दश योषणः त्वा अभ्यनूषत ।
दिवः न विद्युत् ८७,८; ७८३ सोमस्य धारा पवते ।
दिवः न वृष्टिः ८९,१; ७९३ पवमान अक्षाः ।
दिवः न वृष्टयः ५७,१; ३७२ ते धाराः प्रयन्ति ।
दिवः न वृष्टयः ६२,२८; ४४५ असश्चतः ते धाराः प्रयन्ति ।
दिवः न सर्गाः ९७,३०; ८८६ अससृग्रम् अह्नाम् ।
दिवः न सानु १६,७; १३५ धारा पवित्रे वृथा अर्षति ।
दिवः न सानु ८६,९; ७३६ स्तनयन् अचिक्रदत् ।
दिव्याः न कोशासः ८८,६; ७९० सोमासः अभ्रवर्षाः ।
दिव्या विट् यथा ८८,७; ७९१ अनभिशस्ता तथा ।
दूतम् न ९९,५; ९३१ पूर्वचित्तयः तम् आशासते ।
देवः न सूर्यः ५४,३; ३६२ सोमः भुवनोपरि तिष्ठति ।
देवः न सूर्यः ६४,९; ४८६ अक्रान् ।
देवः न ६३,१३; ४६० सूर्यः ।
देवः न ९७,४८; ९०४ सविता सत्यमन्मा ।
द्रविणोदाः इव ८८,३; ७८७ रमन् विश्ववारः ।
धन्वन् न तृष्णा ७९,३; ६८८ समरीत तान् अभि ।
धारा इव उरु दुहे ६९,१; ६१० मतिः अस्य अग्रे आयती ।
धुरं वाजी न यामनि ४५,४; ३१७ पवित्रं अत्यक्रमीत् ।
धेनुः न वत्सम् ८६,२; ७२९ पयसाभि वज्रिणम् इन्दवः ।
नदी फेनम् इव अथ० १,८,१; ११४० हविः यातुधानान् ।
नावा न सिन्धुम् ७०,१०; ६२९ वि अति पर्षि विद्वान् ।
नासत्या इव ८८,३; ७८७ इन्द्रे आ शंभविष्ठः ।
निम्नेन इव सिन्धवः १७,१; १३७ घ्नतः वृत्राणि भूर्णयः ।
पयः न ९६,१५; ८४७ दुग्धम् ।
पयसा इव धेनवः ७७,१; ६७६ वाश्राः अभि अर्षन्ति ।
परावतः न साम १११,२; १०७७ धीतयः यत्र आरणन्ति ।
पर्जन्यः वृष्टिमान् इव २,९; १९ मघवा धारया पवस्व ।
पर्जन्यस्य इव २२,२; १७४ वृष्टयः ।
पर्णवीः इव ४३,१; २१ एषः दीयति ।
पशौ न रेतः ९९,६; ८३२ सोमः चमूषु सीदति ।
पिता इव सूनवे १०,२५,३; ११६२ न मृळ ।
पिता इव सूनवे ८,४८,४; ११३८ सुशेवः नः शं भव ।
पितुः न पुत्रः ९७,३०; ८८६ क्रतुभिः यतानः त्वम् ।
पित्र्यस्य इव रायः ८,४८,७; ११४१ सुतस्य ते भक्षीमहि ।
पूषा इव ८८,३; ७८७ धीजवनः ।
पृतनाषाट् न ८८,७; ७९१ त्वं यज्ञः ।
पैद्वः न ८८,४; ७८८ त्वं अहि हन्ता ।
प्रघ्नताम् इव संततिः ६९,२; ६११ पवमानः परिवारम् अर्षति ।
प्रियः न मित्रः ८८,८; ७९२ शुचिः त्वम् असि ।
प्रियः न मित्रः १,९१,३; ११०३ शुचिः ।
प्रियाम् न जारः ९६,२३; ८५५ शत्रून् अपघ्नन् एषि ।
भुजे न पुत्रः ओण्योः १०१,१४; ९५७ जामिः अत्के अव्यत ।
भृतिम् न १०३,१; ९६८ उद्यतं वचः आभर ।
मखः न २०,७; १६५ क्रीळुः मंहयुः ।
मखम् न भृगवः १०१,१३; ९५६ अराधसं श्वानम् अपहत ।
मनवे यथा आपवथाः वयोधाः ९६,१२; ८४४ एवा पवस्व ।
मरुताम् इव स्वनः ७०,६; ६२५ नानदत् एति ।
मर्यः इव स्व ओक्ये १,९१,१३; १११३ नः हृदि रारन्धि ।
मर्यः न योषाम् ९३,२; ८१९ अभि निष्कृतं यन् ।

मर्यः न शुभ्रः ९६,२०; ८५२ तन्वं मृजानः ।
महिषः न ६९,३; ६१२ नृम्णः शिशानः शोभते ।
महिषः न शृङ्गे ८७,७; ७८२ तिग्मे शिशानः अदधावत् ।
महिषाः इव वनानि ३३,१; २४२ सोमासः प्र यन्ति ।
मर्मृजानं महिषं न ९५,४; ८३१ सानौ अंशुं दुहन्ति ।
मही इव द्यौः । अथ० ६,६,३; ११८६ वधत्मना तस्य बलं ।
मही न धारा ८६,४४; ७७१ अति अन्धः अर्षति ।
मातरा इव १८,५; १४९ मही रोदसी सं दोहते ।
मातरा न ददृशानः ७०,६; ६२५ उस्रियः नानदत् एति ।
मातृभिः न शिशुः ९३,२; ८१९ वावशानः ।
मिता इव सद्म ९७,१; ८५७ सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् ।
मित्रः न २,६; १६ दर्शतः ।
मृगः न ३२,४; २३९ तक्तः ।
मृगः न महिषः ९२,६; ८१७ वनेषु सीदन् अयासीत् ।
यज्ञः न रुप्त धातृभिः १०,३; ७९ सोमासः गोभिः अञ्जते ।
यूथे न निःष्ठा वृषभः ११०,९; १०७२ विश्वा भुवना वितिष्ठसे
योषा इव पिश्यावती ४६,२; ३२१ वायुम् असृक्षत ।
योषा इव सुदुघाः ९६,२४; ८५६ सुधाराः आ यन्ति ।
रघुजाः इव ८६,१; ७०८ त्मना मदाः अर्षन्ति ।
रथः न ८८,२; ७८६ भूरिषाट् ।
रथः न ९०,१; ८०० वाजं सनिष्यन् अयासीत् ।
रथः न ९२,१; ८११ सार्जि सनये हियानः ।
रथाः इव १०,१; ७७ प्रस्वानासः अक्रमुः ।
रथाः इव १०,२; ७८ हिन्वानासः दधन्विरे ।
रथाः इव प्र वाजिनः २२,१; १७३ सर्गाः सृष्टाः अहेषत ।
रथाः इव वाजयन्तः ६७,१७; ५८४ असृग्रन् देववीतये ।
रथाः इव सातिम् अच्छ ६९,९; ६१८ सोमाः इन्द्रं प्र ययुः ।
रथम् न ७१,५; ६३४ भुरिजोः सम् ईं अहेषत ।
रथं न गावः समनाह ८,४८,५; ११३९ सोमाः मां पर्वसु ।
रथे न वर्मं ९८,२; ९१६ सुवानः अव्ययम् अव्यत ।
रथीः इव अश्वं ६४,१०; ४८७ इन्दुः पविष्ट सृजत् ।
रथ्यः यथा ३६,१; २६० सुतः पवित्रे असर्जि ।
रथ्ये आजौ यथा ९१,१; ८०६ धिया सचेताः असर्जि ।
रथ्यासः यथा ८६,१; ७२९ एवा ते प्रमदासः पृथक् आशवः ।
रसा इव विष्टपम् ४१,६; २९५ सोम विश्वतः परिस्रव ।
राजा इव विशः ७,५; ५४ पवमानः स्पृधः अधि सीदति ।
राजा इव २०,५; १६३ सुव्रतः ।
राजा इव इभः ५७,३; ३७४ सुव्रतः ।
राजा इव ८२,१; ७०१ दस्मः ।
राजा इव ९०,६; ८०४ क्रतुमान् ।
राजा न ९७,३०; ८८६ मित्रम् ।
राजा न ९२,६; ८१७ समितीः इयानः ।
राजानः न प्रशस्तिभिः १०,३; ७९ सोमासः गोभिः अञ्जते ।
रेभः न ७१,७; ६३६ पूर्वीः उषसः विराजति ।
वत्सः न मातुः ऊधनि ६९,१; ६१० मतिः उपसर्जि ।
वत्सः इव मातृभिः १०५,२; ९८१ इन्दुः हिन्वानः समज्यते ।
वत्सम् न धेनवः १३,७; ११० वाश्राः अभि अर्षन्ति ।
वत्सं जातं न धेनवः १००,७; ९४१ मातरः त्वां रिहन्ति ।
वत्सं न मातृभिः १०४,२; ९७५ गय साधनं संसृजत ।
वत्सं संशिश्वरीः इव ६१,१४; ४०१ तम् इत् गिरः ।
वत्सं न पूर्वे आयुनि १००,१; ९३५ जातं रिहन्ति मातरः ।
वनुषः यथा सीदन्तः ६४,२९; ५०६ वाजी अक्रमीत् ।
वयो न वृक्षम् अथ० ६,२,२; ११४९ आ यं विशन्तीन्दवः ।
वरः न योषणाम् १०१,१४; ९५७ सरत् योनिम् आसदम् ।
वरुणः न सिन्धून् ९०,२; ११ वना वसाना ।
वर्मी इव १०८,६; १०३१ घृष्णो आ रुज ।
वसुभिः नानिक्तैः ९३,३; ८२० गावः पयसा अभि ।
वाजम् इव ३७,५; २७० सोमः असरत् ।
वाजम् इव ६२,१६; ४३३ सोमः असरत् ।
वाजं न एतशः अच्छा १०८,२; १०१८ सः इषः ।
वाजे न वाजयुम् ६३,१९; ४६६ अव्यः वारेषु सिञ्चत ।
वाजी न सप्तिः ९६,९; ८४१ समना जिगाति ।
वाजी इव सानसिः १००,४; ९३८ वारं रंहमाणा ।
वाजिनि इव शुभः ९४,१; ८२३ अस्मिन् धियः स्पर्धन्ते ।
वातः न ९७,५२; ९०८ जूतः ।
वाताः इव २२,२; १७४ उरवः ।
वायुः न नियुत्वान् ८८,३; ७८७ इष्टयामा त्वम् ।
विः योना वसतौ इव ६२,१५; ४३२ इन्दुः इह धीयते ।
विदुषः न यज्ञम् यजु० ६,२६; ११९६ शृणोति देवः ।
विश्पतिः न १०८,१०; १०३५ वह्निः ।
वृक्षम् न पक्वम् ९७,५३; ९०९ धूनवत् वसूनि ।
वृषा इव यूथा ७६,५; ६७५ परि कोशम् अर्षसि ।
वृषा इव यूथा ९६,२०; ८५२ परि कोशम् अर्षन् ।
वृषा अभि कनिक्रदत् गाः ९७,१३; ८६२ शोणः नदयन् ।
वृष्टयः पृथिवीम् इव १७,२; १३८ इन्द्रं सोमासः अक्षरन् ।
वृष्टिं न तन्यतुः १००,३; ९३७ मनोयुजं धियम् आ सृज ।
वृष्टेः इव ४१,३; २९२ स्वनः शृण्वे ।
वेः न द्रुषद् ७२,५; ६४३ चम्वोः आसदत् हरिः ।
वेधाः न योनिम् १०१,१५; ९५८ हरिः पवित्रे अव्यतः ।
व्रजम् न पशुवर्धनाय ९४,१; ८२३ कनीयन् मन्म पवते ।

शकुनः न पत्वा वनेषु ९६,२३; ८५५ सोमः कलशेषु सत्ता ।
शकुनाः इव १०७,२०; १०१९ सूर्यम् अति पप्तिम् ।
शर्धः न मारुतम् ८८,७; ७९१ त्वं पवस्व ।
शर्यहा इव शुरुधः ७०,५; ६२४ दुर्मतीः आदेदिशानः ।
शर्याभिः न भरमाणः ११०,५; १०६८ अभ्यभि हि श्रवसा ।
शिशुः न क्रीळन् ११०,१०; १०७३ पवमानः अक्षाः ।
शिशुः न जातः ७४,१, ६५७ अवचक्रदत् वने ।
शिशुं जज्ञानम् (न) ९६,१७; ८४९ हर्यतं मृजन्ति ।
शिशुम् न १०४,१; ९७४ यज्ञैः परि भूषत श्रिये ।
शिशुम् न १०५,१; ९८० यज्ञैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ।
शुभ्रः न १४,५; ११७ ममृजे युवा ।
शूरः न ७६,२; ६७२ आयुधा धत्ते ।
शूरः न सत्वा गाः गव्यन् अभि ८७,७; ७८२ अद्धावत् ।
शूरः न १६,६; १३४ । ६२,१९; ४३६ गोषु तिष्ठति ।
शूरः यन्निव सत्वभिः ३,४; २४ सिषासति ।
शूरः न युध्यन् ७०,१०; ६२९ अव नः निदः स्पः ।
शूरः न रथः ९४,३; २५ कविः काव्या भरते ।
श्येनः न ३८,४; २७५ विक्षु सीदति ।
श्येनः न ५७,३; ३७४ वंसु सीदति ।
श्येनः न ६१,२१; ४०८ योनिम् आसीद ।
श्येनः न ६२,४; ४११ योनिम् आसदत् ।
श्येनः न ६५,१९; ५२६ योनिम् आसीदन् ।
श्येनः न योनिम् ७१,६; ६३५ सदनम् एषति ।
श्येनः न ८२,१; ७०१ योनिं घृतवन्तं आसदम् ।
श्येनः न वंसु ८६,३५; ७६२ कलशेषु सीदसि ।
श्येनः न तक्तः ६७,१५; ५८२ ते रसः अर्षति ।
श्येनः वर्म वि गाहते ६७,१४; ५८१ कलशेषु आ धावति ।
श्रवस्यवः न पृतनाजः ८७,५; ७८० पवित्रेभिः पवमानाः ।
श्रौष्टी इव धुरम् ८,४८,२; ११३६ राये अनु ऋध्याः ।
सखा इव सख्ये १०४,५; ९७८ नः गातुवित्तमः भव ।
सखा इव सख्ये १०५,५; ९८४ नर्यः रुचे भव ।
सखा इव सख्ये ८,४८,४; ११३८ नः शं भव ।
सखा सख्युः न ८६,१६; ७४३ प्र मिनाति संगिरम् ।
सख्युः न जामिम् ९६,२२; ८५४ क्रन्दन् एति ।
सप्त इव ९२,६; ८१७ पशुमान्ति होता ।
सप्तिः इव ९६,१६; ८४८ श्रवस्य ।
सप्तिः न १०३,६; ९७३ वाजयुः ।
सप्तिः न वाजयुः १०६,१२; ९९७ असर्जि कलशान् अभि ।
सप्तिः न वाजयुः मीळ्हे १०७,११; १०१० ति: अव्यानि ।
समुद्रासः न ८०,१; ६९१ सवनानि वि विव्यचुः ।
समुद्रम् न १०७,९; १००८ संवरणानि अग्मन् ।
समुद्रम् इव सिन्धवः १०८,१६; १०४१ धानम् आ विश ।
सिन्धवः न नीचीः ८८,६; ७९१ सुतासः कलशान् अभि ।
सर्गः न तक्ति १६,१; १२९ एतशः ।
सर्गः न सृष्टः ८७,७; ७८२ अर्वा अद्धावत् ।
सिंहः न ९७,२८; ८८४ भीमः ।
सिन्धुः न निम्नम् ९७,४५; ९०१ अभि वाजि अक्षाः ।
सिन्धुः न १०७,१२; १०११ पिप्ये अर्णसा ।
सिन्धोः इव ऊर्मिः ८०,५; ६९५ पवमानः अर्षसि ।
सिन्धोः इव प्रवणे ६९,७; ६१६ वृषच्युता मदासः ।
सुयमः न ९६,१५; ८४७ वोळ्हा
सूनुः न १०७,१३; १०१२ प्रियः सोमः मर्ज्यः ।
सूपस्थाभिः न धेनुभिः ६१,२१; ४०८ संमिश्लः अरुणः ।
सूरः न ६६,२२; ५५९ विश्वदर्शतः ।
सूरः न ८६,२४; ७११ चित्रः ।
सूरः न स्वयुग्भिः १११,१; १०७६ हरिण्या रुचा पुनानः ।
सूरे न उप ९७,३८; ८९४ उभे रोदसी वि अप्राः ।
सूर्यः इव ५४,२; ३६१ उपदृक् ।
सूर्यः इव ५४,२; ३६१ सरांसि धावति ।
सूर्यासः न १०१,१२; ९५५ दर्शतासः ।
सूर्यस्य इव न रश्मयः ६४,७; ४८४ प्र ते सर्गाः असृक्षत ।
सूर्यस्य इव रश्मयः ६९,६; ६१५ द्रावयित्नवः ।
सूर्ये न विशः ९४,१; ८२३ अस्मिन् धियः स्पर्धन्ते ।
स्तवः तव यथा ५५,२; ३६५ तथा प्रियं बर्हिषि नि सदः ।
स्तुका इव ९७,१७; ८७३ वीता ।
स्पशः न ७३,४; ६५१ नि मिषन्ति भूर्णयः ।
स्वर् न ९८,८; ९२१ हर्यतः ।
स्वसरे न गावः ९४,२; ८२४ धियः पिन्वानाः अभि वावश्रे ।
हंसः यथा ३२,३; २३८ गणम् आवीविशत् ।
हितः न सप्तिः ७०,१०; ६२९ वाजम् अभि अर्ष ।
हिताः न सप्तयः रथे २१,४; १६९ पवमानासः वार्या आशत ।
हिन्वानासः न सप्तयः ६५,२६; ५३३ श्रीणानाः अप्सु मृञ्जत ।
होता इव ९७,४७; ९०३ याति समनेषु रेभन् ।
होता इव सदने ९२,२; ८१३ चमूषु सीदन् ।
होतारः न ९७,२६; ८८२ दिवियजः मन्द्रतमाः ।

दैवत-संहितान्तर्गत--

सोममंत्राणां वर्णानुक्रमसूची।

अंशुरंशुष्टे देव ११९४
अंशुं दुहन्ति स्तनयन् ६४४
अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे ८९६
अग्न आयूंषि पवस ५५६
अग्निं न मा मथितं ११४०
अग्निर्ऋषिः पवमानः ५५७
अग्निर्न यो वन आ ७८९
अग्नीषोमा पुनर्वसू ११३४
अग्ने पवस्व स्वपा ५५८
अग्रेगो राजाप्यस्त० ७७१
अग्रे सिन्धूनां पवमानो ७३९
अङ्गिरसो नः पितरो १२३०
अचिक्रदद् वृषा हरि० १६
अचोदसो न धन्व० ६८६
अच्छा कोशं मधुश्चुतं ५४८
अच्छा नृचक्षा असरत् ८१३
अच्छा समुद्रमिन्दवो ५४९
अच्छा हि सोमः कलशाँ ६९७
अच्छिन्नस्य ते देव ११०१
अजीजनो अमृत १०६७
अजीजनो हि पवमान १०६६
अजीतयेऽहतये ८३६
अञ्जते व्यञ्जते ७७०
अञ्जन्त्येनं मध्वो १०६१
अतस्त्वा रयिमभि ३३३
अति श्री सोम रोचना १४१
अति वारान् पवमानो ३८६
अति श्रिती तिरश्चता ११८
अत्यं मृजन्ति कलशे ७२१
अत्या हियाना न १०९
अत्यू पवित्रमक्रमीद् ३१७
अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः १३९
अत्यो न हियानो अभि ७३०
अदब्ध इन्दो पवसे ७१८
अद्भिः सोम पपृचानस्य ६६५
अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो ११४४
अद्रिभिः सुतः पवते ६३१
अद्रिभिः सुतः पवसे ७५०
अद्रिभिः सुतो मतिभिः ६६९
अध क्षपा परिष्कृतो ९२८
अध धारया मध्वा ८६७
अध यदिमे पवमान १०७१
अध श्वेतं कलशं ६६४
अधा हिन्वान इन्द्रियं ३३५
अधि द्यामस्थाद् वृषभो ७२४
अधि यदस्मिन् ८१३
अधुक्षत प्रियं मधु १३
अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं ३४६
अनप्तमप्सु दुष्टरं १३१
अनु द्रप्सास इन्दव ४४
अनु प्रत्नास आयवः १८१
अनु हि त्वा सुतं १०६५
अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः १००८
अन्तश्च प्रागा अदितिः ११३६
अपघ्नन्तो अराव्णः ११२
अपघ्नन्नेषि पवमान ८५५
अपघ्नन्त्सोम रक्षसो ४७६
अपघ्नन् पवते मृधो ४१२
अपघ्नन् पवसे मृधः ४७१
अप त्या अस्थुरनिरा ११४५
अप द्वारा मतीनां ८२
अपाम सोमममृता ११३७
अपामिवेदूर्मय ८३०
अपां रसः प्रथमजो ११४७
अपो वसानः परि १०२५
अप्सा इन्द्राय वायवे ५२७
अप्सु त्वा मधुमत्तमं २१८
अभयं द्यावापृथिवी ११५३
अभिक्रन्दन् कलशं ७३८
अभि क्षिपः समग्मत ११९
अभि गव्यानि वीतये ४४०
अभि गावो अधन्विषु १८८
अभि गावो अनूषत २४०
अभि ते मधुना पयो ८७
अभि त्यं गावः पयसा ७१५
अभि त्यं पूर्व्यं मदं ४३
अभि त्यं मद्यं मदम् ४१
अभि त्रिपृष्ठं वृषणं ८०१
अभि त्वा योषणो दश ३७०
अभि त्वेन्द्र वरिमतः ११५८
अभि द्युम्नं बृहद् यश १०३४
अभि द्रोणानि बभ्रवः २४३
अभि नो वाजसातमं ९१५
अभि प्रिया दिवस्पदं(०दा) ८५, १०२
अभि प्रियाणि काव्या ३७३
अभि प्रियाणि पवते ६६६, ८६८
अभि ब्रह्मीरनूषत २४६
अभि वह्निरमर्त्यः ७३
अभि वस्त्रा सुवसना ९०६
अभि वायुं वीत्यर्षा ९०५
अभि विप्रा अनूषत ९६, १४१
अभि विश्वानि वार्या ३००
अभि वेना अनूषत ४९८
अभि सुवानास इन्दवो १३८
अभि सोमास आयवः १८३, १०१३
अभी नवन्ते अद्रुहः ९३५

अभी नो अर्ष दिव्या	९०७
अभीश्ममघ्न्या उत	९
अभीमृतस्य विष्टपं	२५२
अभ्यभि हि श्रवसा	१०६८
अभ्यर्ष बृहद् यशो	१६२
अभ्यर्ष महानां देवानां	४
अभ्यर्ष विचक्षण	३५०
अभ्यर्ष सहस्रिणं	४५९
अभ्यर्ष स्वायुध सोम	३७
अभ्य१र्षानपच्युतो	३८
अभ्यूर्णोति यन्नग्नं	११५१
अमित्रहा विचर्षणिः	९२
अमृक्तेन रुशता	६१४
अयं कक्षीवतो महो	११६९
अयं कृत्नुरगृभीतो	११५०
अयं त आघृणे सुतो	५७९
अयं दक्षाय साधनो	९८२
अयं दिव इयर्ति	६०८
अयं देवेषु जागृविः	३१०
अयं नो विद्वान्	६७९
अयं पुनान उषसो	७४८
अयं पूषा रयिर्भगः	९५०
अयं भराय सानसि	९८७
अयं मतवाञ्छकुनो	७४०
अयं मे पीत उदियर्ति	११२९
अयं विचर्षणिर्हितः	४२७
अयं विदच्चित्रदृशी०	११३१
अयं विप्राय दाशुषे	११७०
अयं विश्वानि तिष्ठति	३६२
अयं स यो दिवस्परि	२८१
अयं स यो वरिमाणं	११३०
अयं सूर्य इवोप	३६१
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं	७८५
अयं सोमः कपर्दिने	५७८
अयं स्तुवान आगम	१२४१
अयं स्वादुरिह मदिष्ठ	११९८
अया चित्तो विपानया	५१९
अया निजघ्निरोजसा	३५७
अया पवस्व देवयु	९९९
अया पवस्व धारया	४५४
अया पवा पवस्वैना	९०८
अया रुचा हरिण्या	१०७६
अया वीती परि स्रव	३८८
अया सोमः सुकृत्यया	३२६
अयुक्त सूर एतशं	४५५
अरममाणो अत्येति	६४१
अरश्मानो येऽरथा	८७६
अरावीदंशुः सचमान	६६१
अरुषो जनयन् गिरः	१९८
अरूरुचदुषसः	७०८
अर्थिनो यन्ति चेदर्थं	११५४
अर्वाँ इव श्रवसे	८८१
अर्षा णः सोम शं गवे	४०२
अर्षा सोम द्युमत्तमो	५२६
अलाय्यस्य परशुः	५९७
अव द्युतानः कलशाँ	६६८
अव यत् स्वे सधस्थे	११५८
अवा कल्पेषु नः	७४
अवावशन्त धीतयो	१५५
अविता नो अजाश्वः	५७७
अव्ये पुनानं परि	७५२
अव्ये वधूयुः पवते	६१२
अव्यो वारे परि प्रियो(०यं)	५९, ३४३
अव्यो वारेभिः पवते	९५९
अश्वो न क्रदो वृषभिः	८८४
अश्वो न चक्रदो वृषा	४८०
अश्वो वोळ्हा सुखं रथं	१०८२
अषाळ्हं युत्सु पृतनासु	११२१
असर्जि कलशाँ अभि	९९७
असर्जि रथ्यो यथा	२६०
असर्जि वक्वा रथ्ये	८०६
असर्जि वाजी तिरः	१०६०
असर्जि स्कम्भो दिव	७७३
असश्चतः शतधारा	७५४
असावि सोमो अरुषो	७०१
असाव्यंशुर्मदायाप्सु	४११
असृक्षत प्र वाजिनो	४८१
असृग्रन् देववीतये	३२०, ५८४
असृग्रमिन्दवः पथा	५०
अस्मभ्यं गातुवित्तमो	९९१
अस्मभ्यं त्वा वसु०	९७७
अस्मभ्यमिन्दविन्द्र	१९
अस्मभ्यं रोदसी रयिं	५८
अस्माकमायुर्वर्धय	११२६
अस्मान्त्समर्ये पवमान	७१७
अस्मे धेहि द्युमद्	२४१
अस्मे वसूनि धारय	४७७
अस्मे सोम श्रियमधि	१०९८
अस्य ते सख्ये वयं	४१६, ५५१
अस्य पीत्वा मदाना०	१८६
अस्य प्रत्नामनु द्युतं	३६०
अस्य प्रेषा हेमना	८५७
अस्य व्रतानि नाधृषे	३५८
अस्य व्रते सजोषसो	९६४
अस्य वो ह्यवसा पान्तो	९२२
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा	१०, ९८८
आ कलशा अनूषत	५२१
आ कलशेषु धावति	१४०, ५८१
आच्छद् विधानैर्गुपितो	११७४
आ जागृविर्विप्र	८९३
आ जामिरत्के अव्यत	९५७
आ त इन्दो मदाय	४३७
आ तू न इन्दो शत	६४७
आ ते दक्षं मयोभुवं	५३५
आ ते रुचः पवमानस्य	८५६
आत्मन्वन्नभो दुह्यते	६६०
आत्मा यज्ञस्य रंह्या	४८
आत् सोम इन्द्रियो	३१८
आ दक्षिणा सृज्यते	६३०
आदस्य शुष्मिणो रसे	११५
आ दिवस्पृष्ठमश्वयुः	२६५
आदीं केचित् पश्य	१०६९
आदीं त्रितस्य योषणो	२३७
आदीमश्वं न हेतारो	४२३
आदीं हंसो यथा गणं	२३८
आ धावता सुहस्त्यः	३२३
आ न इन्दो महीमिषं	५२०

आ न इन्दो शतग्विनं ५२४, ५७३
आ नः पवस्व धारया २५४
आ नः पवस्व वसु ६१७
आ नः पूषा पवमानः ६९९
आ नः शुष्मं नृषाह्यं २२६
आ नः सुतास इन्दवः ९९४
आ नः सोम पवमानः ६९८
आ नः सोम सहो जुवो ५२५
आ नः सोम संयन्तं ७४५
आ नः सोमं पवित्र आ ४३८
आ पवमान धारय १०३
आ पवमान नो १८२
आ पवमान सुष्टुतिं ५१०
आ पवस्व गविष्टये ५५२
आ पवस्व दिशां १०८४
आ पवस्व मदिन्तम १९९, ३४४
आ पवस्व महीमिषं २९३
आ पवस्व सहस्रिणं ४२९, ४४८
आ पवस्व सुवीर्यं ५१२
आ पवस्व हिरण्यवद् ४६५
आपानासो विवस्वतो ८१
आप्यायस्व मदिन्तम १११७
आ प्यायस्व समेतु ते २३३, १११६
आ मन्द्रमा वरेण्यमा ५३६
आ मारुक्षत् पर्णमणिः ११८०
आ मित्रावरुणा भगं ५७
आ यं विशन्तीन्दवो १२४९
आ यद् योनिं हिरण्य० ४९७
आयमगन् पर्णमणिः ११७६
आ ययोस्त्रिंशतं तना ३७९
आ यस्तस्थौ भुवना० ७१२
आ यो गोभिः सृज्यत ७१३
आ योनिमरुणो रुहद् २८५
आ यो विश्वानि वार्या १४८
आ रयिमा सुचेतुनमा ५३७
आ वच्यस्व महि १२
आ वच्यस्व सुदक्ष १०३५
आविवासन् परावतो २८२
आविशन् कलशं सुतो ४३६
आशुरर्ष बृहन्मते २७८
आ सोता परि षिञ्चता १०३१
आ सोम सुवानो अद्रिभिः १००९
आस्मिन् पिशङ्गमिन्दवो १७०
आ हर्यताय धृष्णवे ९२७
आ हर्यतो अर्जुने १०१२

इदं यत् प्रेण्यः शिरो ११९०
इदं स्वरिदमिदास ११९५
इदं हविर्यातुधानान् १२४०
इन्दविन्द्राय बृहते ६१९
इन्दुं रिहन्ति महिषा ९१३
इन्दुः पविष्ट चारु १०५४
इन्दुः पविष्ट चेतनः ४८७
इन्दुः पुनानः प्रजा १०५०
इन्दुः पुनानो अति ७५३
इन्दुरत्यो न वाजसृत् ३०६
इन्दुरिन्द्राय तोशते १०६३
इन्दुरिन्द्राय पवत ९४८
इन्दुर्देवानामुपसख्यं ८६१
इन्दुर्वाजी पवते ८६६
इन्दुर्हिन्वानो अर्षति ५७१
इन्दुर्हियानः सोतृभिः २२५
इन्दो यथा तव स्तवो ३६५
इन्दो यदद्रिभिः सुतः १९१
इन्दो व्यव्यमर्षसि ५७९
इन्द्रो समुद्रमीङ्खयः २५५
इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः ४५२
इन्द्रमच्छ सुता इमे ९८६
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य १०४३
इन्द्रस्य सोम पवमानं ६७३
इन्द्रस्य सोम राधसे ६१, ३८७
इन्द्रस्य हार्दि सोम १०४१
इन्द्राय त्वा वसुमते ११९७
इन्द्राय पवते मदः १०१६
इन्द्राय वृषणं मदं ९९०
इन्द्राय सोम पवसे १८५
इन्द्राय सोम परि ६८१
इन्द्राय सोम पातवे ९३,९२४,१०४०
इन्द्राय सोममृत्विजः १२४८
इन्द्राय सोम सुषुतः ७१६
इन्द्रायेन्दुं पुनीतन ४४६
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते ४९९
इन्द्रो न यो महा ७८८
इमं यज्ञमिदं वचो १११०
इमे मा पीता यशस ११३९
इमौ देवौ जायमानौ १११८
इयमग्ने नारी पतिं ११३५
इषं तोकाय नो दधद० ५२८
इषमूर्जमभ्य१र्षाश्वं ८२७
इषमूर्जं च पिन्वस ४४९
इषमूर्जं पवमाना ७६२
इषिरेण ते मनसा ११४१
इषुर्न धन्वन् प्रति ६१०
इषे पवस्व धारया ४९०
इष्यन् वाचमुपवक्तेव ८३२
ईशान इमा भुवनानि ७६४

उक्षा मिमाति प्रति ६१३
उक्षेव यूथा परिय० ६३८
उच्चा ते जातमन्धसो ३९७
उत त्या हरितो दश ४५६
उत त्वामरुणं वयं ३१६
उत न एना पवया ९०९
उत नो गोमतीरिषो ४४१
उत नो गोविदश्ववित् ३६६
उत नो वाजसातये १०७
उत प्र पिप्य ऊध० ८१०
उत व्रतानि सोम ते ११६२
उत स्म राशिं परि ७८४
उत स्वस्या अरात्या ६८८
उताहं नक्तमुत १०१९
उतो सहस्रभर्णसं ५०३
उत् ते शुष्मास ईरते ३४१
उत् ते शुष्मासो अस्थू ३५६
उदीची दिक् सोमो १२४६
उन्मध्व ऊर्मिर्वनना ७६७
उप त्रितस्य पाष्यो ९६१
उप प्रियं पनिप्नतं ५९६
उपयामगृहीतोऽसि १२०१, १२०३

उप शिक्षापतस्थुषो	१५७
उपास्मै गायता नरः	८६
उपो मतिः पृच्यते	६११
उपो षु जातमप्तुरं	४००
उभयतः पवमानस्य	७३३
उभाभ्यां देव सवितः	५९१
उभे द्यावापृथिवी	७००
उभे सोमावचाकशन्	९३९
उरुगव्यूतिरभयानि	८०३
उरुष्या णो अभिशस्तेः	११६५
उशिक् त्वं देव सोमाग्नेः	११०८
उस्रा वेद वसूनां	३७७
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि	७२७
ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ	४८८
ऋजुः पवस्व वृजिनस्य	८९९
ऋतं वदन्नृतद्युम्न	१०८६
ऋतस्य गोपा न दभाय	६५५
ऋतस्य जिह्वा पवते	६६७
ऋतस्य तन्तुर्विततः	६५६
ऋदूदरेण सख्या	११४४
ऋधक् सोम स्वस्तये	५०७
ऋभुर्न रथ्यं नवं	१७१
ऋषिमना य ऋषिकृत्	८५०
ऋषिर्विप्रः पुरएता	७७८
ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः	१०९५
एत उ त्ये अवीवशन्	१७२
एतं त्यं हरितो दश	२७४
एतं त्रितस्य योषणो	२७३
एतमु त्यं दश क्षिपो	१२८, ३९४
एतमु त्यं मदच्युतं	१०३६
एतं मृजन्ति मर्ज्यं	१२७, ३२५
एतानि सोम पवमानो	६८५
एते असृग्रमाशवो	४५१
एते असृग्रमिन्दवस्तिरः	४१८
एते धामान्यार्या शुक्रा	४६१
एते धावन्तीन्दवः	१६६
एते पूता विपश्चितः	१७५, ९५५
एते पृष्ठानि रोदसो०	१७७
एते मृष्टा अमर्त्याः	१७६
एते वाता इवोरवः	१७४
एते विश्वानि वार्या	१६९
एते सोमा अति	७९०
एते सोमा अभि गव्या	७८०
एते सोमा अभि प्रिय	५९
एते सोमा असृक्षत	४३९
एते सोमाः पवमानास	६१८
एते सोमास आशवो	१७३
एते सोमास इन्दवः	३२२
एना विश्वान्यर्य आ	३९८
एन्दो पार्थिवं रयिं	७२३
एन्द्रस्य कुक्षा पवते	६९३
एवा त इन्दो सुभ्वं	६९०
एवा देव देवताते	८८३
एवा न इन्दो अभि	८७७
एवा नः सोम परि	६०९, ८९२
एवा पवस्व मदिरो	८७१
एवा पुनान इन्द्रयुः	४९
एवा पुनानो अपः	८११
एवामृताय महे	१०४४
एवा राजेव क्रतुमाँ	८०५
एष उ स्य पुरुव्रतो	३०
एष उ स्य वृषा रथो	१७१
एष इन्द्राय वायवे	२०७
एष कविरभिष्टुतः	२०६
एष गव्युरचिक्रदत्	२०९
एष शुष्मी अभिष्टुतः	५८७
एष ते गायत्रो भाग	११९२
एष दिवं वि धावति	२७
एष दिवं व्यासरत्	२८
एष देवः शुभायते	२१४
एष देवो अमर्त्यः	२१
एष देवो रथर्यति	२५
एष देवो विपन्युभिः	२३
एष देवो विपा कृतो	२२
एष धिया यात्यण्व्या	२११
एष नृभिर्वि नीयते	२०८
एष पवित्रे अक्षरत्	२१३
एष पुनानो मधुमाँ	१०७४
एष पुरु धियायते	२२२
एष प्र कोशे मधुमाँ	६७६
एष प्रत्नेन जन्मना	२९
एष प्रत्नेन मन्मना	२९७
एष प्रत्नेन वयसा	९०३
एष रुक्मिभिरीयते	२२५
एष वसूनि पिब्दना	२२६
एष वाजी हितो नृभिः	२१२
एष विप्रैरभिष्टुतो	२६
एष विश्ववित् पवते	९१२
एष विश्वानि वार्या	२४
एष वृषा कनिक्रदद्	२१५
एष वृषा वृषव्रतः	४२८
एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः	२१७
एष शुष्म्यसिष्यदद्	२११
एष शृङ्गाणि दोधुव०	१२४
एष सुवानः परि	७८९
एष सूर्यमरोचयत्	२१६
एष सूर्येण हासते	२१०
एष सोमो अधि त्वचि	५६६
एष स्य ते पवत	९०१
एष स्य ते मधुमाँ	७७९
एष स्य धारया सुतो	१०३०
एष स्य परि षिच्यते	४३०
एष स्य पीतये सुतो	२७७
एष स्य मद्यो रसो	२७६
एष स्य मानुषीष्वा	२७५
एष स्य सोमः पवते	७१४
एष स्य सोमो मतिभिः	८४७
एष हितो वि नीयते	२२३
एषा ययौ परमा	७८३
एह यातु वरुणः	११५६
ककुभं रूपं वृषभस्य	१२०७
ककुहः सोम्यो रस०	५७५
कनिक्रदत् कलशे	७२०
कनिक्रदन्नु पन्था०	८८८
कनिक्रन्ति हरिरा	८९८
कविं मृजन्ति मर्ज्यं	४६७
कविर्वेधस्या पर्येषि	७०९

कारुरहं ततो १०८१
कुविद् वृषण्यन्तिभ्यः १५६
कृण्वन्तो वरिवो गवे ४१०
कृतानीदस्य कर्त्वा ३२७
केतुं कृण्वन् दिवस्परि ४८५
क्रत्वा दक्षस्य रथ्यमपो १३०
क्रत्वा शुक्रेभिरक्षभिः ९६७
क्रत्वे दक्षाय नः कवे ९३९
क्राणा शिशुर्महीनां ९६०
क्रीळुर्मखो न मंहयुः १६५
गन्धर्व इत्था पदमस्य ७०९
गयस्फानो अमीवहा ११११
गिरस्त इन्द ओजसा १७
गिरा जात इह स्तुत ४३२
गिरा यदी सबन्धवः ११४
गोजिन्नः सोमो रथ० ६८४
गोमन्न इन्दो अश्ववत् ९८३
गोमन्नः सोम वीरवद् ३०१
गोवित् पवस्व वसु० ७६६
गोपा इन्दो नृपा असि २०
ग्रन्थिं न वि ष्य ग्रथितं ८७४
ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः ५८६
घृतं पवस्व धारया ३३८
चक्रिर्दिवः पवते ६८०
चतस्र ईं घृतदुहः ७९७
चमूषच्छ्येनः शकुनो ८५१
चरुर्न यस्तमीङ्खयेन्दो ३५३
जज्ञिर्वृत्रममित्रियं ४०७
जज्ञानं सप्त मातरो ९६३
जनयन् रोचना दिवो २९६
जरतीभिरोषधीभिः १०८०
जायेव पत्यावधि ७०४
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः १११
जुष्टो मदाय देवतात ८७५
जुष्ट्वी न इन्दो सुपथा ८७२
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते ७३७
तं वः सखायो मदाय ९८०
तं वेधां मेधयाह्यन् २०१
तं सखायः पुरोरुचं ९२६
तं सानावधि जामयो २०४
तं सोतारो धनस्पृत ४३५
तं हिन्वन्ति मदच्युतं ३५९
तक्षद् यदी मनसो ८७८
तं गाथया पुराण्या ९३०
तं गावो अभ्यनूषत २०१
तं गीर्भिर्वाचमीङ्खयं २५८
तं गोभिर्वृषणं रसं ४६
तन्तुं तन्वानमुत्तममनु १७८
तं ते सोतारो रसं १०५१
तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे ४३४
तं त्वा देवेभ्यो मधु० ६९४
तं त्वा धर्तारमोण्योः ५१८
तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं ३३१
तं त्वा मदाय घृष्वय १८
तं त्वा विप्रा वचोविदः ५००
तं त्वा सहस्रचक्षस ३८५
तं त्वा सुतेष्वाभुवो ५३४
तं त्वा हस्तिनो मधु० ६९५
तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः २०५
तं दुरोषमभी नरः ९४६
तन्नु सत्यं पवमान ८१६
तं नो विश्वा अवस्युवो ३०३
तपोष्पवित्रं विततं ७०७
तममृक्षन्त वाजिनं २००
तमस्य मर्जयामसि ९२९
तमह्यन् भुरिजोर्धिया २०३
तमिद् वर्धन्तु नो गिरो ४०१
तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो ८
तमीमण्वीः समर्य ७
तमी मृजन्त्यायवो ४६४
तमुक्षमाणमव्यये ९३१
तमु त्वा वाजिनं नरो १४३
तं मर्मृजानं महिषं ८३१
तया पवस्व धारया ३१९, ३३७
तरत् स मन्दी धावति ३७६
तरत् समुद्रं पवमान १०१४
तव क्रत्वा तवोतिभिः ३६
तव त्य इन्दो अन्धसो ३४८
तव त्ये सोम पवमान ८१५
तव त्ये सोम शक्तिभिः ११६४
तव द्रप्सा उदप्रुत ९९३
तव प्रत्नेभिरध्वभि० ३५२
तव विश्वे सजोषसो १४७
तव शुक्रासो अर्चयो ५४२
तवाहं सोम रारण १०१८
तवेमाः प्रजा दिव्यस्य ७५५
तवेमे सप्त सिन्धवः ५४३
ता अभि सन्तमस्तृतं ७२
तस्य ते वाजिनो वयं ५१६
ताभ्यां विश्वस्य राजसि ५३९
तिग्मायुधौ तिग्महेती ११२६
तिस्रो देवीर्महि नः ११८७
तिस्रो वाच ईरयति ८९०
तिस्रो वाच उदीरते २४५
तुभ्यं वाता अभिप्रियः २३२
तुभ्यं गावो घृतं पयो २३४
तुभ्येमा भुवना कवे ४४४
ते अस्य सन्तु केतवो ६२२
ते नः पूर्वास उपरास ६७८
ते नः सहस्रिणं रयिं १०८
ते नो वृष्टिं दिवस्परि ५३१
ते प्रत्नास व्युष्टिषु ९२५
ते विश्वा दाशुषे वसु ४८३
ते सुतासो मदिन्तमाः ५८५
त्रातारो देवा अधि ११४८
त्रिभिष्ट्वं देव सवितः ५९३
त्रिरस्मै सप्त धेनवो ६२०
त्रीणि त्रितस्य धारया ९६२
त्वं राजेव सुव्रतो १६३
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु १४६
त्वं समुद्रिया अपो ४४३
त्वं समुद्रो असि ७५६
त्वं सुतो नृमादनो ५६९
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिः ५७०
त्वं सूर्ये न आ भज ३५
त्वं सोम क्रतुभिः ११०२

त्वं सोम तनूकृद्भ्यो ११५२
त्वं सोम नृमादनः १९०
त्वं सोम पणिभ्य आ १७९
त्वं सोम पवमानो ३८२
त्वं सोम पितृभिः ११४७
त्वं सोम प्र चिकितो ११०१
त्वं सोम महे भगं ११०७
त्वं सोम विपश्चितं १३६, ५०२
त्वं सोम सूर एषः ५५५
त्वं सोमासि धारयुः ५६८
त्वं सोमासि सत्पतिः ११०५
त्वं हि नस्तन्वः सोम ११४३
त्वं हि सोम वर्धयन् ३४९
त्वं ह्य१ङ्ग दैव्या १०२८
त्वं च सोम नो वशो ११०६
त्वं चित्ती तव दक्षैः ११५३
त्वं त्यत् पणीनां १०७७
त्वं द्यां च महीव्रत ९४३
त्वं धियं मनोयुजं ९३७
त्वं नः सोम विश्वतो ११०८, ११४९, ११६६
त्वं नः सोम सुक्रतुः ११६७
त्वं नृचक्षा असि ७६५
त्वं नो वृत्रहन्तमे ११६८
त्वमिन्दो परि स्रव ४२६
त्वमिन्द्राय विष्णवे ३७१
त्वमिमा ओषधीः सोम ११२२
त्वं पवित्रे रजसो ७५७
त्वया वयं पवमानेन ९१४
त्वया वीरेण वीरवो २५६
त्वया हि नः पितरः ८४३
त्वां यज्ञैरवीवृधन् ३९
त्वां रिहन्ति मातरो ९४१
त्वां सोम पवमानं ७५१
त्वामच्छा चरामसि ५
त्वां मृजन्ति दश योषणः ६०६
त्वे सोम प्रथमा १०७०
त्वेषं रूपं कृणुते ६३७
त्वोतासस्तवावसा ४११
द्विद्युतत्या रुचा ५०५
दिवः पीयूषं पूर्व्यं १०७१
दिवः पीयूषमुत्तमं ३४७
दिवस्पृथिव्या अधि २३१
दिवि ते नाभा परमो ६८९
दिवो धर्तासि शुक्रः १०४७
दिवो न सर्गा असमृग्र० ८८६
दिवो न सानु पिप्युषी १३५
दिवो न सानु स्तनय० ७३६
दिवो नाके मधुजिह्वा ७२५
दिवो नाभा विचक्षणो ३८
दिवो यः स्कम्भो धरुणः ६५८
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि ८८९
दिव्य१न्यः सदनं चक्र १२२०
दुहान ऊधर्दिव्यं १००४
दुहानः प्रत्नमित् पयः २९९
देवाव्यो नः परिषिच्य ८८२
देवीराप एष वो १२०५
देवेन नो मनसा देव ११२३
देवेभ्यस्त्वा मदाय कं ६३
देवेभ्यस्त्वा वृथा १०६२
देवो देवाय धारया ४७
द्यौश्च म इदं पृथिवी १२६१
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ १२३१
द्रापिं वसानो यजतो ७४१
द्विता व्यूर्ण्वन्नमृतस्य ८२४
द्विर्यं पञ्च स्वयशसं ९२०
धर्ता दिवः पवते ६७१
धियं पूषा जिन्वतु १२२२
धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं ९९६
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा ३७८
न त्वा शतं चन हुतो ४१४
नप्तीभिर्यो विवस्वतः ११७
नमसेदुप सीदत ९१
नमो दिवे बृहते १२१६
न वा उ सोमो वृजिनं ११३४
नाके सुपर्णमुप० ७१६
नानानं वा उ नो धियो १०७९
नाभा नाभिं न आ ददे ८४
नाभा पृथिव्या धरुणो ६४५
नित्यस्तोत्रो वनस्पतिः १०१
निरिणानो वि धावति ११६
नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं १५८
नि शुष्ममिन्दवेषां ३५४
नूनं पुनानोऽविभिः १००१
नू नव्यसे नवीयसे ७५
नू नस्त्वं रथिरो देव ९०४
नू नो रयिमुप ८२२
नू नो रयिं महामिन्दो २८६
नृचक्षसं त्वा वयं ६७
नृधूतो अद्रिषुतो ६४२
नृबाहुभ्यां चोदितो ६४३
नृभिर्येमानो जज्ञानः १०४९
नृभिर्येमानो हर्यतो १०१५
पुरा व्यक्तो अरुषो ६३६
परि कोशं मधुश्चुत ९७०
परि णः शर्मयन्त्या २९५
परि णेता मतीनां ९७१
परि णो अश्वमश्वविद् ३०,०
परि णो देववीतये ३६३
परि णो याह्यस्मयुः ४९५
परि ते जिग्युषो यथा ९३८
परि त्यं हर्यतं हरिं ९२१
परि दक्ष इन्द्रस्य १२६०
परि दिव्यानि मर्मृशद् १९०
परि दैवीरनु स्वधा ९७२
परि द्युक्षं सहसः ६३३
परि द्युक्षः सनद्रयिः ३५१
परि धामानि यानि ते ५४०
परि प्र धन्वेन्द्राय १०४९
परिप्रयन्तं वय्यं ६०७
परि प्र सोम ते रसो ५८२
परि प्रासिष्यदत् कविः ११३
परि प्रियः कलशे ८४१
परि प्रिया दिवः कविः ८६
परि यत् कविः काव्या ८२५
परि यत् काव्या कविः ५३

परि यो रोदसी उभे १५०
परि वाजे न वाजयुं ४६६
परि वाराण्यव्यया ९६९
परि विश्वानि चेतसा १६१
परिष्कृतास इन्दवो ३११
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं २७९
परि ष्य सुवानो अक्षा ९१७
परि ष्य सुवानो अव्ययं ९१६
परि सद्मेव पशु ८१७
परि सप्तिर्न वाजयुः ९७३
परि सुवानश्चक्षसे १००२
परि सुवानास इन्दवो ८०
परि सुवानो गिरिष्ठाः १४५
परि सुवानो हरि ८१२
परि सोम ऋतं ३६८
परि सोम प्र धन्वा ६७०
परि हि ष्मा पुरुहूतो ७८१
परीतो वायवे सुतं ४५७
परीतो षिञ्चता सुतं १०००
पर्जन्यः पिता महिषस्य ७०३
पर्जन्यवृद्धं महिषं १०८५
पर्णोऽसि तनूपानः ११८३
पर्यू षु प्र धन्व १०६४
पवते हर्यतो हरिः ५३१, ९९८
पवन्ते वाजसातये १०६
पवमान ऋतः कविः ४४७
पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ५६१
पवमानः सुतो नृभिः ४३३
पवमानः सो अद्य नः ५८९
पवमान धिया हितो १९५
पवमान नि तोशसे ४७०
पवमानमवस्यवो १०५
पवमान महि श्रवः ७६, ९४२
पवमान मह्यर्णो वि ७६१
पवमान रसस्तव ४०५
पवमान रुचारुचा ५०९
पवमान विदा रयिम् ३०५, ४५८
पवमान सुवीर्यं ९४
पवमानस्य जङ्घ्नतो ५६२
पवमानस्य ते कवे ५४७
पवमानस्य ते रसो ४०४
पवमानस्य ते वयं ३९१
पवमानस्य विश्ववित् ४८४
पवमान स्वर्विदो ३८३
पवमाना असृक्षत ४७२, १०२४
पवमाना दिवस्परि ४७४
पवमानास आशवः ४७३
पवमानास इन्दवः ५७४
पवमानो अजीजनद् ४०३
पवमानो अति स्रिधो ५५९
पवमानो अभि स्पृधो ५४
पवमानो अभ्यर्षा ७२३
पवमानो असिष्यदद् ३४०
पवमानो रथीतमः ५६३
पवमानो व्यश्नवद् ५६४
पवस्व गोजिदश्वजिद् ३८०
पवस्व जनयन्निषो ५४१
पवस्व दक्षसाधनो १९४
पवस्व देवमादनो ७११
पवस्व देववीतय ९९२
पवस्व देववीरति ११
पवस्व देवायुषग् ४६९
पवस्व मधुमत्तम १०२६
पवस्व वाचो अग्रियः ४४२
पवस्व वाजसातमः ९४०
पवस्व वाजसातये ३०७, १०२२
पवस्व विश्वचर्षणे ५३८
पवस्व वृत्रहन्तमो १९२
पवस्व वृष्टिमा सु नो ३३६
पवस्व सोम क्रत्वे १०५१
पवस्व सोम क्रतुविन्न ७७५
पवस्व सोम दिव्येषु ७४९
पवस्व सोम देववीतये ६१८
पवस्व सोम द्युम्नी १०४८
पवस्व सोम मधुमाँ ८४५
पवस्व सोम मन्दयन् ५८३
पवस्व सोम महान्त्समुद्रः १०४५
पवस्वाद्भ्यो अदाभ्यः ३८१
पवस्वेन्दो पवमानो ८५३
पवस्वेन्दो वृषा सुतः ४१५
पवित्रं ते विततं ७०६
पवित्रवन्तः परि ६५०
पवित्रेभिः पवमानो ८८०
पवीतारः पुनीतन ३४
पशुं नः सोम रक्षसि ११६५
पातां नो द्यावापृथिवी ११५०
पावमानीः स्वस्त्ययनीः १२११, १२१४
पावमानीर्दधन्तु न १२१२
पावमानीर्यो अध्येति ५९१
पितुर्मातुरध्या ये ६५२
पिबन्त्यस्य विश्वे १०५६
पुनन्तु मां देवजनाः ५९४
पुनर्नो असुं पृथिवी १२३७
पुनाता दक्षसाधनं ९७६
पुनाति ते परिस्रुतं ६
पुनान इन्दवा भर २८९, ९३६
पुनान इन्दवेषां ५०४
पुनानः कलशेष्वा ६४
पुनानः सोम जागृविः १००५
पुनानः सोम धारया ४७५, १००३
पुनानश्चमू जनयन् १०१७
पुनानास्चमूषदो ६०
पुनानो अक्रमीदभि २८४
पुनानो देववीतय ४९२
पुनानो याति हर्यतः ३०४
पुनानो रूपे अव्यये १३४
पुनानो वरिवस्कृधि ४९१
पुरः सद्य इत्थाधिये ३८९
पुरोजिती वो अन्धसः ९४४
पूर्वापरं चरतो १२३८
पूर्वामनु प्रदिशं याति १०७८
प्र कविर्देववीतये १५९
प्र काव्यमुशनेव ८६३
प्र क्रीळन्निव शूष ६३१
प्र गायताभ्यर्चाम ८६०
प्र गायत्रेण गायत ३८४
प्रजा ह तिस्रो अत्या ११५९

प ण इन्दो महे तन ३०८
प्र ण इन्दो महे रण ५५०
प्र णो धन्वन्त्विन्दवो ६८७
प्र त आशवः पवमान ७१८
प्र त आश्विनीः पवमान ७३१
प्र तु द्रव परि कोशं ७७६
प्र ते दिवो न वृष्टयो ४४५
प्र ते धारा अत्यण्वानि ७७४
प्र ते धारा असश्चतो ३७२
प्र ते धारा मधुमती ८८७
प्र ते मदासो मदिरास ७२९
प्र ते सोतार ओण्यो ६२९
प्रत्नान्मानादध्या ये ६५३
प्र त्वा नमोभिरिन्दवः १३३
प्र दानुदो दिव्यो ८७९
प्र देवमच्छा मधुमन्त ६००
प्र धन्वा सोम जागृविः ९८९
प्र धारा अस्य शुष्मिणो २२४
प्र धारा मध्वो अग्रियो ५१
प्र निम्नेनेव सिन्धवो १३७
प्र पवमान धन्वसि १८९
प्र पुनानस्य चेतसा १३२
प्र पुनानाय वेधसे ९६८
प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व ५९२
प्रप्र क्षयाय पन्यसे ६९
प्र युजो वाचो अग्रियो ५२
प्र ये गावो न भूर्णय २९०
प्र राजा वाचं जनय० ६८१
प्र रेभ एत्यति ७५८
प्र वाचमिन्दुरिष्यति १००
प्र वाजमिन्दुरिष्यति २५७
प्र शृण्वन्तो अभियुजः १६७
प्र वो धियो मन्द्रयुवो ७४४
प्र शुक्रासो वयोजुवो ५३३
प्रसवे त उदीरते ३४२
प्र सुन्वानस्यान्धसो ९५६
प्र सुमेधा गातुविद् ८१४
प्र सुवान इन्दुरक्षाः ५६५
प्र सुवानो अक्षाः १०५७
प्र सुवानो धारया २४८
प्र सेनानीः शूरो अग्रे ८३३
प्र सोम देववीतये १०११
प्र सोम मधुमत्तमो ४६३
प्र सोम याहि धारया ५४४
प्र सोम याहीन्द्रस्य १०५९
प्र सोमस्य पवमानस्य ६९६
प्र सोमाय व्यश्ववत् ५१४
प्र सोमासः स्वाध्यः २३०
प्र सोमासो अधन्विषुः १८७
प्र सोमासो मदच्युतः १३६
प्र सोमासो विपश्चितो १४२
प्र सोमो अति धारया २२७
प्र स्वानासो रथा इव ७७
प्र हंसासस्तृपलं ८६४
प्र हिन्वानास इन्दवो ४९३
प्र हिन्वानो जनिता ८००
प्रागपागुदगधराक् १२००
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं १२२९
प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं ८३९
प्रास्य धारा अक्षरन् ११८
प्रास्य धारा बृहती ८५४
प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य ७४३
प्रो स्य वह्निः पथ्या० ७९३
बभ्रवे नु स्वतवसे ८९
बिभर्ति चार्विन्द्रस्य १०५५
ब्रह्मा देवानां पदवीः ८३८
ब्राह्मणासः पितरः १२१७
भद्रं नो अपि वातय ११६०
भद्रा वस्त्रा समन्या ८५८
भुवत् त्रितस्य मर्ज्यो २५१
मघोन आ पवस्व नो ६५
मती जुष्टो धिया हितः ३०९
मत्सि वायुमिष्टये ८९८
मत्सि सोम वरुणं ८०४
मदच्युत् क्षेति सादने ९७
मधुपृष्ठं घोरमया ७९६
मधोर्धारामनु क्षर ९४४
मध्वः सूदं पवस्व ९००
मनीषिभिः पवते ७४७
मन्द्रया सोम धारया ४१
मन्द्रस्य रूपं विविदुः ६०५
मयि क्षत्रं पर्णमणे ११७७
मर्माणि ते वर्मणा १२२८
मर्मृजानास आयवो ४९४
मर्यो न शुभ्रस्तन्वं ८५२
महत् तत् सोमो महिष ८९७
महाँ असि सोम ज्येष्ठ ५५३
महान्तं त्वा महीः १४
महि प्सरः सुकृतं ६५९
महीमे अस्य वृषनाम ९१०
महो नो राय आ भर ४१३
मा नः सोमपरिबाधो १०९९
मा नः सोम सं वीविजो ११५७
मा भेर्मा संविक्था ११९९
मित्रो न एहि सुमित्रध ११९३
मिमाति वह्निरेतशः ४९६
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो ६२
मृजन्ति त्वा समग्रुवो ५४६
मृजानो वारे पवमानो १०२१
मृज्यमानः सुहस्त्य १०२०
मो षु णः सोम मृत्यवे ११३६
य आर्जीकेषु कृत्वसु ५३०
य इन्दो पवमान १०९४
य इमे रोदसी मही १४९
य उग्रेभ्यश्चिदोजीया ५५४
य उत्तरतो जुहोति ११८८
य उस्रिया अप्या १०३२
य ओजिष्ठस्तमा भर ९५२
यः पावमानीरध्येति ५९८
यः सोमः कलशेष्वाँ ९९
यः सोम सख्ये तव १११४
यज्ञस्य केतुः पवते ७३४
यत् ते पवित्रमर्चिवदग्ने ५९१
यत् ते पवित्रमर्चिष्यग्ने ५९०
यत् ते राजञ्छृतं १०९७
यत् ते सोम दिवि ११९८
यत् त्वा देव प्रपिबन्ति ११७५
यत्र कामा निकामाश्च १०९२

यत्र ज्योतिरजस्रं	१०८९
यत्र ब्रह्मा पवमान	१०८८
यत्र राजा वैवस्वतो	१०९०
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च	१०९३
यत्रानुकामं चरणं	१०९१
यत् सोम चित्रमुक्थ्यं	१५२
यत् सोमो वाजमर्षति	३६९
यथापवथा मनवे	८४४
यथा पूर्वेभ्यः शतसा	७०५
यदद्भिः परिषिच्यसे	५१३
यदन्ति यच्च दूरके	५८८
यं त्वा वाजिन्नघ्न्या	६९२
यं निदधुर्वनस्पतौ	११७८
यमत्यमिव वाजिनं	८५
यमी गर्भमृतावृधो	९६५
यवंयवं नो अन्धसा	३६४
यशा इन्द्रो यशा अग्निः	१२५४
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति	१२३२
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो	१२३३
यस्ते मदो वरेण्यः	४०६
यस्य ते द्युम्नवत्	५६७
यस्य ते पीत्वा वृषभो	१०२७
यस्य ते मद्यं रसं	५२२
यस्य न इन्द्रः पिबाद्	१०३९
यस्य वर्णं मधुश्चुतं	५१५
या ते धामानि दिवि	११०४
या ते धामानि हविषा	१११९
या ते भीमान्यायुधा	४१७
यास्ते धारा मधुश्चुतो	४२४
यास्ते प्रजा अमृतस्य	११००
युवं हि स्थः स्वर्पती	१५३
ये ते पवित्रमूर्मयो	३९२
ये धीवानो रथकाराः	११८१
येन देवाः पवित्रेण	१२१३
येन सोम साहन्त्या	१२५२
येन सोमादितिः पथा	१२५१
येना नवग्वो दध्यङ्	१०२९
येनावपत् सविता	१२५५
ये पाकशंसं विहरन्त	११३२
ये राजानो राजकृतः	११८२
ये सोमासः परावति	५२९
यो अत्य इव मृज्यते	३०१
यो अद्य सेन्यो वधो	१२५९
यो जिनाति न जीयते	३६७
यो धारया पावकया	९४५
यो न इन्दुः पितरो	११४६
यो नः सोम सुशंसिनो	११८५
यो नः सोमाभिदासति	११८६
यो वः शुष्मो हृदयेषु	१२५७
रक्षा सु नो अररुषः	२१२
रक्षोहा विश्वचर्षणिः	२
रयिं नश्चित्रमश्विनम्	४०
रसं ते मित्रो अर्यमा	५०१
रसाय्यः पयसा	८७०
राजानो न प्रशस्तिभिः	७९
राजा मेधाभिरीयते	५२३
राजा समुद्रं नद्यो	७३५
राजा सिन्धूनामवसिष्ट	७९४
राजा सिन्धूनां पवते	७६०
राज्ञो नु ते वरुणस्य	७९९, ११०३
रायः समुद्रांश्चतुरो	२४७
रास्वेयत् सोमा भूयो	११९१
रुजा दृळ्हा चिद्	८०९
रुवति भीमो वृषभ	६२६
वन्वन्नवातो अभि	७९९
वयं ते अस्य वृत्रहन्	९१९
वरिवोधातमो भव	३
वाचो जन्तुः कवीनां	५८०
वायुर्न यो नियुत्वाँ	७८७
वावृधानाय तूर्वये	२९८
वाश्रा अर्षन्तीन्दवो	११०
विघ्नतो दुरिता पुरु	४१९
विदद् यत् पूर्व्यं नष्ट०	११५५
विपश्चिते पवमानाय	७७१
वि यो ममे यम्या	६०२
विश्वसा इत् स्वर्दृशे	३३४
विश्वस्य राजा पवते	६७४
विश्वा धामानि विश्वचक्ष	७३२
विश्वान्यन्यो भुवना	११११
विश्वा रूपाण्याविशन्	१९७
विश्वा वसूनि संजयन्	२२१
विश्वा सोम पवमान	२८७
विश्वो यस्य व्रते जनो	२५९
विष्टम्भो दिवो धरुणः	७९८
वीती जनस्य दिव्यस्य	८०७
वृथा क्रीळन्त इन्दवः	१६८
वृषणं धीभिरप्तुरं	४६८
वृषाणं वृषभिर्यतं	२५०
वृषा पवस्व धारया	५१७
वृषा पुनान आयुषु	१५४
वृषा मतीनां पवते	७४६
वृषा वि जज्ञे जनय०	१०३७
वृषा वृष्णे रोरुव०	८०८
वृषा शोणो अभि	८६९
वृषा सोम द्युमाँ असि	४७८
वृषा ह्यसि भानुना	५११
वृषेव यूथा परि	६७५
वृष्टिं दिवः परि स्रव	६६
वृष्टिं दिवः शतधारः	८४६
वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां	८७३
वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो	४७९
व्रशीनां त्वा पत्मन्ना०	११०६
शतं धारा देवजाता	८८५
शतं न इन्द्र ऊतिभिः	३५५
शं ते अग्निः सहाद्भिः	११४१
शं नो भव हृद आ	११३८
शर्यणावति सोम	१०८३
शिशुं जज्ञानं हरिं	१०५३
शिशुं जज्ञानं हर्यतं	८४९
शिशुर्न जातोऽव चक्रदद्	६५७
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः	१०४६
शुचिः पावक उच्यते	१९३
शुचिः पुनानस्तन्वं	६१७
शुभ्रमन्धो देववातं	४११
शुम्भमान ऋतायुभिः	२६३
शुम्भमाना ऋतायुभिः	४८२
शुष्मी शर्धो न मारुतं	७९१

शूरग्रामः सर्ववीरः ८०२
शूरो न धत्त आयुधा ६७२
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः २९२
श्येनो न योनिं सदनं ६३५
श्रिये जातः श्रिय आ ८२६
श्वेतं रूपं कृणुते ६६३
स ईं रथो न भुरि ७८६
सं वत्स इव मातृभिः ९८१
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं ३३२
सखाय आ नि षीदत ९७४
स तू पवस्व परि ६४६, १०२३
सत्यमुग्रस्य बृहतः १०८७
सत्येनोत्तभिता भूमिः ११७१
स त्रितस्याधि सानवि २६१
स देवः कविनेषितो २७१
स न इन्द्राय यज्यवे ३९९
स न ऊर्जे व्य१व्ययं ३३९
स नः पवस्व वाजयुः ३११
स नः पवस्व शं गवे ८८
स नः पुनान आ भर २८८, ३९३
सना च सोम जेषि ३१
सना ज्योतिः सना ३२
सना दक्षमुत क्रतुं ३३
सनेमि कृध्य१स्मदा ९७९
सनेमि त्वमस्मदाँ ९८५
स नो अद्य वसुत्तये ३१३
स नो अर्ष पवित्र आ ४८९
स नो अर्षाभि दूत्यं ३१५
स नो ज्योतींषि पूर्व्य २६२
स नो देव देवताते ८३५
स नो देवेभिः पवमान ८११
स नो भगाय वायवे ३१२, ३९६
स नो मदानां पत ९७८
स नो विश्वा दिवो ३७५
स नो हरीणां पत ९८४
सं ते पयांसि समु ११९८
सं त्री पवित्रा वितता ९११
सं दक्षेण मनसा ६०४
सं देवैः शोभते वृषा १९६
स पवस्व धनंजय ३२४
स पवस्व मदाय कं ३१४
स पवस्व मदिन्तम ३४५
स पवस्व य आविथ ४०९
स पवस्व विचर्षण २९४
स पवस्व सहमानः १०५५
स पविश्र विचक्षणो २६७
स पुनान उप सूरे ८९४
स पुनानो मदिन्तमः ९३२
स पूर्व्यः पवते यं ६७७
स पव्यों वसुविज्जायमानो ८४२
सप्त दिशो नानासूर्याः १०९६
सप्त स्वसारो अभि ७६३
सप्तिं मृजन्ति वेधसो २२९
स प्रत्नवन्नव्यसे ८१०
स भन्दना उदियर्ति ७६८
स भिक्षमाणो अमृतस्य ६२१
स मत्सरः पृत्सु ८४०
स मर्मृजान आयुभिः ३७४, ५६०
स मर्मृजान इन्द्रियाय ६२४
समस्य हरिं हरयो ८३४
स मातरा न ददृशान ६२५
स मातरा विचरन् ६०३
स मामृजे तिरो १०१०
समिन्द्रेणोत वायुना ३९५
समीचीना अनूषत २८३
समीचीनास आसते ८३
समीचीने अभि त्मना ९६६
समी रथं न भुरिजो ६३४
समी वत्सं न मातृभिः ९७५
समी सखायो अस्वरन् ३१८
समु त्वा धीभिरस्वरन् ५४५
समुद्रिया अप्सरसो ६८३
समुद्रं ते हृदयमप्स्वन्तः ११०४, ११९०
समुद्रो अप्सु मामृजे १५
समु प्र यन्ति धीतयः ११६३
समु प्रिया अनूषत ९५१
समु प्रियो मृज्यते ८५९
स मृज्यते सुकर्मभिः ९३३
स मृज्यमानो दशभिः ६२३
समेनमह्रुता इमा २५३
सम्यक् सम्यञ्चो महिषा ६४९
सं मातृभिर्न शिशुः ८१९
संमिश्लो अरुषो भव ४०८
स रंहत उरुगायस्य ८६५
स रोरुवदभि पूर्वा ६०१
स वर्धिता वर्धनः ८९०
स वह्निरप्सु दुष्टरो २२४
स वह्निः सोम जागृविः २६१
स वां यज्ञेषु मानवी ९२३
स वाजी रोचना दिवः २६८
स वाजयक्षाः सहस्ररेता १०५८
स वायुमिन्द्रमश्विना ५६
स विश्वा दाशुषे वसु २६४
स वीरो दक्षसाधनो ९५८
स वृत्रहा वृषा सुतो २७०
स शुष्मी कलशेष्वा १५१
स सप्त धीतिभिर्हितो ७१
स सुतः पीतये वृषा २६६
स सुन्वे यो वसूनां १०३८
स सूनुर्मातरा शुचिः ७०
स सूर्यस्य रश्मिभिः ७५९
सहस्रणीथः शतधारो ७१९
सहस्रधारः पवते ९४९
सहस्रधारं वृषभं १०३३
सहस्रधारेऽव ता ६६२
सहस्रधारेऽव ते ६५१
सहस्रधारे वितते ६५४
सहस्रोतिः शतामघो ४३१
स हि त्वं देव शश्वते ९१८
स हि ष्मा जरितृभ्यः १६०
साकं वदन्ति बहवो ६४०
साकमुक्षो मर्जयन्त ८१८
सिन्धोरिव प्रवणे ६१६
सिषासतू रयीणां ३३०
सिंहं नसन्त मध्वो ७९५
सुत इन्दो पवित्र आ ९३४
सुत (ता) इन्द्राय वायवे २४४, २४९
सुत इन्द्राय विष्णवे ४५०
सुत एति पवित्र आ १८०

सुता अनु स्वमा रजो	४५३
सुता इन्द्राय वज्रिणे	४६२
सुतासो मधुमत्तमाः	९४७
सुनोता मधुमत्तमं	२२९
सुविज्ञानं चिकितुषे	११३३
सुवितस्य मनामहे	२९१
सुवीरासो वयं धना	४१०
सुशेवो नो मृळयाकु	११५६
सुषहा सोम तानि ते	२२०
सुष्वाणासो व्यद्रिभिः	९२४
सूर्यस्येव रश्मयो	६१५
सो अग्रे अह्नां हरिः	७६९
सो अर्षेन्द्राय पीतये	४२५
सो अस्य विशे महि	७४२
सोम उ षुवाणः	१००७
सोमः पवते जनिता	८३७
सोमः पुनान ऊर्मिणा	९९५
सोमः पुनानो अर्षति	१०४
सोमः पुनानो अव्यये	१०७३
सोमः सुतो धारयात्यो	९०१
सोम गीर्भिष्ट्वा वयं	११११
सोमं गावो धेनवो	८९१
सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्टं	११४३
सोमं मन्यते पपिवान्	११७३
सोम यास्ते मयोभुव	११०९
सोम राजन् मृळया	११४२
सोम राजन् विश्वास्त्वं	११९६
सोम रारन्धि नो हृदि	१११३
सोमस्य धारा पवते	६९१
सोमस्य पर्णः सह	११७९
सोमस्य राज्ञो वरुणस्य	१२३९
सोमा असृग्रमाशवो	१८०
सोमा असृग्रमिन्दवः	९५
सोमाः पवन्त इन्दवो	९५३
सोमापूषणा जनना	१२१७
सोमापूषणा रजसो	१२१९
सोमारुद्रा धारयेथां०	१२२३
सोमारुद्रा युवमेतानि	१२२५
सोमारुद्रा वि वृहतं	१२२४
सोमेनादित्या बलिनः	११७२
सोमो अर्षति धर्णसि	१८४
सोमो अस्मभ्यं द्विपदे	११२५
सोमो जिगाति गातुविद्	११२४
सोमो देवो न सूर्यो	४६०
सोमो धेनुं सोमो	११२०
सोमो मीढ्वान् पवते	१००६
सोमो युनक्तु बहुधा	११८९
सोमो राजामृतं सुत	१२०९
सोमो वीरुधामधिपतिः	११८४
स्तोत्रे राये हरिरर्षा	८६२
स्रक्वे द्रप्सस्य धमतः	६४८
स्वयं कविर्विधर्तरि	३२९
स्वादिष्ठया मदिष्ठया	१
स्वादुः पवस्व दिव्याय	७२१
स्वादुष्किलायं मधुमाँ	११२७
स्वादोरभाक्षि वयसः	११३५
स्वायुधः पवते देव	७७७
स्वायुधः सोतृभिः	८४८
स्वायुधस्य ते सतो	२३५
हरिः सृजानः पथ्या	८२९
हरिं मृजन्त्यरुषो न	६३९
हविर्हविष्मो महि सद्म	७१०
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः	९०
हितो न सप्तिरभि	६१९
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः	५०८, ५७६
हिन्वानासो रथा इव	७८
हिन्वानो वाचमिष्यसि	४८६
हिन्वानो हेतृभिर्यत	५०६
हुवे सोमं सवितारं	१२४५
हृदिस्पृशस्त आसते	११६१
हृदे त्वा मनसे त्वा	११९५

दैवत-संहितान्तर्गत--सोमदेवताया

गुणबोधक-पदानां सूची।

[सोमदेवतायाः 'सोमः' इति 'सोमासः' इति च एकानेकवचनत्वेन निर्देशकारणाद्गुणबोधकपदानामपि तथाविधत्वमेव।]
(अस्यां सूच्यां १०९७ पर्यन्तं मन्त्राः ऋग्वेदस्य नवममण्डलस्थाः विद्यन्ते। तेषां मण्डलक्रमाङ्कः '९' इत्यत्र न निर्दिष्टः।)

अंशुः ६२,४; ४११। ६८,४,६; ६०३,६०५। ७२,६; ६४४। ७४,२,५; ६५८,६६१। ८६,३६, ७७३। ९१,३; ८०८। ९२,१; ८१२। ९५,४; ८३१। या० य० ५,७; ११९४
अक्तः गोभिः ९६,२२, ८५४
अक्तुभिः गोभिः अञ्जानः ५०,५: ३४५
अक्रान् ६९,३; ६१२
अक्षितः २६,२; २०१। ७८,३; ६८३। ७२,६; ६४४
अगृभीतः ८,६९,१; ११५०
अग्नेः जनिता ९६,५; ८३७
अग्रियः ७,३; ५२
अग्रियः गोषु ८६,१२, ७३९
अग्रेगः ८६,४५; ७७२
अघशंसः २४,७; १९३। २८,६; २१७। ६१,१९; ४०६
अंगिरस्तमः १०७,६, १००५
अचोदसः ७९,१, ६८६
अजाश्वः [पूषा] ६७,१०; ५७७
अजिरशोचिः ६६,२५; ५६९
अज्यमानः ९७,३५; ८९१
अञ्जानः गोभिः १०३,२; ९६९
अञ्जानः गोभिः अक्तुभिः ५०,५; ३४५
अत्यः-त्यासः-त्याः १३,६,१०९। ४६,१;३२०। ६६,२३;५६०
अत्यविः १०६,११; ९९६
अत्यूर्मिः १७,३; १३९
अदब्धः ७७,५; ६८०। ८५,३, ७१८। ९७,१९: ८७५। १०७,२; १००१
अदाभ्यः ३,२; २२। २६,४; २०३। ७५,२; ६६७। ८५,६; ७२१। १०३,४; ९७१। १०,२५,७; ११६६
अदाभ्यासः अस्य केतवः ७०,३, ६१२
अदितिः ८,४८,२; ११३६
अद्दसक्रतुः ८,७९,७; ११५६
आद्रिः मृजानः १०९,१७; १०५८
अद्भुतः २०,५; १६३। ८५,४; ७१९
अद्रिबाधः ९७,११; ८६७
अद्रि… १३,१; ३५६
अद्रि… ७२,४; ६४२
अद्रिसंहतः ९८,६; ९२०
अद्रौ दुदुहानः ९६,१०; ८४२
अधिपतिः अथ० ३,२७,४; ११४६
अधिपतिः वीरुधाम् अथ० ५,२४,७; ११८४
अध्रिगुः ९८,५; ९१९
अध्वर्युभिः गुहाहितः १०,९, ८५
अनपच्युतः ४,८;३८
अनप्तः १६,३; १३१
अनभिशस्ता ८८,७; ७९१
अनवद्यः ६९,१०; ६१९
अनिन्द्यः ८२,४; ७०४
अनिशितः तमोभिः ९६,२; ८३४
अनुकामकृत्, देवेभ्यः ११,७; ९२
अनुमाद्यः २४,४,६, १९०,१९२। १०७,११, १०१०
अनुमाद्यः नृभिः ७६,१; ६७१
अन्तः पश्यन् ९६,७; ८३९
अन्तरिक्षप्राः ८६,१४; ७४१
अन्धः ५१,३; ३४८। ६१,५; ४१२। १०१,१३, ९५६
अपघ्नन् मृधः ६३,२४, ४७१
अपघ्नन् रक्षसः ६३,२९; ४७६
अपघ्नन् शत्रून् ९६,२३; ८५५
अपप्रोथन्तः ९८,११, ९२५
अपसेधन् दुरिता ८१,२; ७०२
अपां गन्धर्वः ८६,३६; ७६३
अपः कृण्वन् ९६,३; ८३५

अपः वसानः १६,२; १३० । ७८,१; ६८१ । ८६,४०; ७६७ । ९६,१३; ८४५ । १०७,४,१८,२६; १००३, १०१७,१०२५ । १०९,२१; १०६२
अपः वृणानः ९४,१; ८२३
अपः श्रीणन् १०९,२३; १०६४
अपः सिषासन् ९०,४; ८०३
अप्तुरः ६१,१३; ४०० । ६३,५,२१; ४५२, ४६८ । १०८,७; १०३२
अग्रयावन् अथ० ३,५,१; ११७६
अप्साः १,९१,२१; ११२१
अप्सु द्रप्सः ८९,२; ७९४
अप्सु मृजानः ९६,१०; ८४२
अब्जित् ७८,४; ६८४
अभयानि कृण्वन् ९०,४; ८०३
अभिक्रन्दन् ८६,११; ७३८
अभिगीतः ९६,२३; ८५५
अभियुजः २१,२; १६७
अभिमातिषाहः १,९१,१८; १११८
अभिमातिहा ६५,१५; ५२२
अभिमातीः सहमानः ३,६३,१५; ११२६
अभिशस्तिपाः २३,५; १८४ । ९६,१०; ८४२
अभिश्रीणन् पयः पयसा ९७,४३; ८९९
अभिष्टिकृत् ४८,५; ३३५
अभिष्टुतः २७,१; २०६ । ६७,१९-२०; ५८६-५८७
अभिष्टुतः त्रिभिः ३,६; २६
अभ्युन्दतः पवित्रम् ६१,४; ३९१
अभ्रवर्षाः ८८,६; ७९०
अमर्त्यः-र्त्याः ३,१; २१ । ९,६; ७३ । २२,४; १७५ । २८,३,६; २१४,२१७ । ६८,८; ६०७ । ६९,५, ६१४ । ८४,२; ७१२ । १०३,५; ९७२ । १०८,१२; १०३७ । ८,४८,१२; ११४६
अमित्रहा ११,७; ९२ । ८६,१२; ८४४
अमीवहा १,९१,१२; १११२
अमृतः -म् ९१,२८; ८०७ । ११०,४; १०६७ । १,४३,९; ११०० । ८,४८,३; ११३७ । वा०य० १९,७२; १२०९
अमृत्यवः अस्य केतवः ७०,३; ६२२
अयासः ४१,१; २९० । ८९,४; ७९६
अयासः मध्वः ८९,३; ७९५
अरममाणः ७२,३; ६४१
अराव्णः अपघ्नन्तः १३,९; ११२ । ६३,५; ४५२
अरिः ७९,३; ६८८
अरुणः ११,४; ८९ । ४०,२, २८५ । ४५,३; ३१६ । ७८,४; ६८४
अरुषः ८,६; ६४ । २५,५; १९८ । ७१,७; ७३६ । ७४,१; ६५७ । ८२,१; ७०१ । ८९,३; ७९५ । १११,१; १०७६
अरेपसः १०१,१०; ८५३
अर्पितः भुवनेषु ८६,१४; ७४१ । ८६,४५, ७७२
अर्यः २३,३; १८२
अर्वा ८७,७; ७८२
अवयाता हरस्य दैव्यस्य ८,४८,२; ११३६
अवातः ९६,८,११; ८४०,८४३ । ८,७९,७; ११५६
अवीरहा १,९१,१९; १११९
अव्यः ६,१; ४१ । ९,५; ६३ । १२,४; ९८ । २८,१; २१२ । ३८,१, २७२ । ५०,२-३; ३४२-३४३ । ५२,२; ३५२ । ६८,७; ६०६
अशस्तिहा ६२,११; ४२८ । ८७,२; ७७७
अश्वजित् ५९,१; ३८०
अश्वयुः ३६,६; २६५
अश्वविद् ५५,३; ३६६ । ६१,३; ३९०
अश्वसा २,१०; २० । ६१,१०; ४०७
अषाळहः युत्सु १,९१,२१; ११२१
अषाळहः समत्सु ९०,३; ८०२
असमष्टकाव्यः ७६,४; ६७४
असश्चतः ७३,४; ६५१
असुरः ७३,१; ६४८ । ७४,७; ६६३
अस्तृतः ९,५; ७२ । २७,४; २०९
अस्पृतः ३,८; २८
अस्मभ्यं गातुवित्तमः १०६,६; ९९१
अस्मयुः २,५; १५ । ६,१; ४१ । ६४,१८; ४९५
अस्मत्सखा वा० य० ८,५०; १२०८
आघृणिः [पूषा] ६७,१२; ५७९
आङ्गूषाणः ९०,२; ८०१
आङ्गूष्यः ९७,८; ८६४
आत्मा इन्द्रस्य ८५,३; ७१८
आत्मा यज्ञस्य ६,८; ४८
आदधानः हस्तयोः विश्वावसु ९०,१; ८००
आनेता इळानाम् १०८,१३; १०३८
आनेता रायाम् १०८,१३; १०३८
आनेता वसूनाम् १०८,१३; १०३८
आनेता सुक्षितीनाम् १०८,१३; १०३८

आपानासः विवस्वतः १०,५; ८१
आपूर्णः ७४,१; ६५८
आप्यः ११०,६, १०६९
आप्यायमानः १,९१,१८; १११८
आयुः-यवः २३,२,४; १८१,१८३। ६४,१७, ४९४। १०७,१४; १०१३
आयुधा तुञ्जानः ५७,१, ३७३
आयुधानि बिभ्रत् ९६,१९; ८५१
आयुधा संशिशानः ९०,१; ८००
आयुधा ते तिग्मानि ६१,३०; ४१७
आयुषक् २५,५; १९८
आविवासन् परावतः ३९,५; २८२
आविवासन् अर्वावतः ३९,५; २८१
आविशन् विश्वा रूपाणि २५,४; १९७
आवृतः गोभिः ८६,२७; ७५४
आशिरं सृजानः ६४,१४; ४९१
आशुः शवः १३,६८; १०९। १७,१; १३७। २२,१; १७३। २३,१; १८०। ३९,१, २७८। ५६,१; ३६८। ६२,१,१८; ४१८,४३५। ६३,४, ४५१। ६४,४,१६; ४८१,४९३। ६९,६,७; ६१५,६१६। ८६,१,२; ७२८,७२९
आश्विनीः धीजुवः ते ८६,४; ७३१
आहितः कलशेषु १२,५; ९९
आहितः पवित्रे अन्तः १२,५; ९९
आहुतीवृधः ६७,२९; ५९६
इन्दुः १,५; ५। २,१,२,७,९,१०; ११-१२,१७,१९,२०। ४,१०; ४०। ६,२; ४२। ८,७; ६५। ९,५; ७२। ११,१,६,९; ८६,९१,९४। १२,५,९; ९९,१०३। १३,४; १०७। २३,६; १८५। २४,५; १९१। २६,२,६, २०१,२०५। २७,४,६; २०९,२११। २९,६; २२३। ३०,२,५; २२५,२२८। ३१,२,६; २३१,२३५। ३२,२; २३७। ३४,१; २४८। ३५,२,४; २५५,२५७। ३७,६; २७१। ३८,२,५; २७३,२७६। ४०,३-४; २८६-२८७। ४१,४,२९३। ४३,२,४,५; ३०३,३०५, ३०६। ४४,१; ३०८। ४५,१,४-६; ३१४,३१७-३१९। ५०,५, ३४५। ५१,३; ३४८। ५२,३-५; ३५३-३५५। ५३,४; ३५९। ५४,४; ३६३। ५५,२; ३६५। ५६,४, ३७१। ५७,४; ३७५। ५९,४; ३८३। ६०,१; ३८४। ६१,१,१३,२६,२८,२९;३८८,४००,४१३,४१५, ४१६। ६२,२०,२९;४३७,४४६। ६३,९,१७,२८,३०; ४५६,४६४,४७५,४७७। ६४,३,१०,१२,१३,२२,२५-२७;४८०,४८७,४८९,४९०,४९९,५०२-५०४। ६५,१, ५,८,१३,१४,१७; ५०८,५१२,५१५,५२०,५२१,५२४। ६६,१३,१४,१६,२३,२८; ५५०-५१,५५३,५६०,५६५। ६७,४-६,८; ५७१-५७३,५७५। ६८,९; ६०८। ७०, १०; ६२९। ७२,४,९; ६४२,६४७। ७६,२; ६७२। ७७,४; ६७९। ७९,५; ६९०। ८१,३; ६९८। ८२,५, ७०५। ८४,२,४; ७१२,७१४। ८५,३,४,८, ७१८, ७१९, ७२३। ८६,१६,१८,२२-२४,२६,२८,२७,३९, ४२,४७,४८; ७४३,७४५,७४९,७५०,७५१,७५३, ७५५,७६४,७६६,७६८,७७४,७७५। ८७,२; ७७७। ८८,१; ७८५। ९०,५,६; ८०४,८०५। ९१,२,४; ८०८,८०९। ९३,३,५;८१०,८२२। ९४,२;८२४। ९५,५; ८३१। ९६,८,९,२१,२३; ८४०-४१,८५३,८५५। ९७,५,१०-१२,१६,१७; ८६१,८६६-८६८,८७२,८७३। ९७,१९,२१,२२,२४,२८, २९, ३३.४०,४४,५२,५५-५७; ८७५,८७७,८७८,८८०,८८४,८८५,८८९,८९६, ९००,९०८,९११-९१३। ९८,१-४,९; ९१५-९१८, ९२३। ९९,८; ९३४। १००,२; ९३६। १०१,५; ९४८। १०४,५; ९७८। १०५,२,४-६; ९८१,९८३-९८५। १०६,४,६; ९८९,९९१। १०७,३; १००२। १०९,९,१२,२०,२२; १०५०,१०५३,१०६१,१०६३। ११०,१०,११; १०७३-७४। १११,१-४;१०७९-१०८२। ११३,१-११;१०८३-१०९३। ११४,१-४;१०९४-१०९७। १,४७,८; १०९९। १,९१,१; ११०१। ८,४८,२,४,८, १२,१३,१५; ११३६,११३८,११४२,११४६-४७,११४९। १०,२५,९; ११६८। वा० य० ८,९; १२०३
इन्दवः ६,४; ४४। ७,१; ५०। १०,४; ७०। १२,१; ९५। १३,५,७; १०८,११०। १६,५; १३३। २१, १,३,५; १६६,१६८,१७०। २४,१, १८७। ४६,२,३; ३२१,३२२। ६२,१; ४१८। ६३,६,२५,२६, ४५३, ४७२-७३। ६४,१६,१७; ९९३-९४। ६५,२४,५३१। ६६,१२; ५४९। ६७,७; ५७४। ६८,१, ६००। ७७,३; ६७८। ७९,१,२; ६८६-८७। ८५,१,७; ७१६,७२२। ८६,१,२; ७२८-२९। १०१,२,८,१०; ९४५,९५१,९५३। १०६,१,९; ९८६,९९४। १०७,२६; १०२५। ८,४८,५; ११३९। अथर्व० ६,२,२; १२४९
इन्द्रः ६,२; ४२
इन्द्रः इति ब्रुवन् ६३,९; ४५६
इन्द्रं वर्धन्तः ६३,५; ४५२

इन्द्रेण दत्तः अथ० ३,५,४; ११७९
इन्द्रस्य प्रियः ९८,६; ९२० । १०९,१; ९३५
इन्द्रस्य जनिता ९६,५; ८३७
इन्द्रस्य सखा ९६,२; ८३४। १०१,६; ९४९। १०,२५,९; ११६८
इन्द्रस्य सख्यं जुषाणः ९७,११; ८६७ । ८,४८,२; ११३६
इन्द्रस्य हृदंसनिः ६१,१४; ४०१
इन्द्रपातमः ९९,३; ९२९
इन्द्रपानः ९६,३,१३, ८३५,८४५
इन्द्रपीतः ८,९; ६७
इन्दयुः २,९; १९ । ६,९; ४९ । ५४,४; ३६३
इन्द्रियः रसः ४७,३; ३२८ । ८६,१०; ७३७ । १०७,२५; १०२४
इन्द्रियावान् वा० य० ८,९; १२०३
इभः ५७,३; ३७४
इयक्षन्तः पथः रजः २२,४; १७६
इयानः समितीः ९२,६; ८१७
इषः जनयन् ३,१०; ३०
इषः महीः प्रचक्राणः १५,७; १२७
इषणयन् गाः ९६,८; ८४०
इषयन् देवानां सुम्नम् ८४,३; ७१३
इषस्पतिः १४,७; ११९ । १०८,९; १०३४
इषितः कविना ३७,६; २७१
इष्टयामा ८८,३; ७८७
इष्यन् वाचम् ९५,५; ८३२
इळानां आनेता १०८,१३; १०३८
ईड्यः ६६,१; ५३१
ईरयन् अग्रियः वाचः ६२,२६; ४४३
ईरयन् द्रप्सान् ९७,५६; ९१२
ईरयन् समुद्रियाः अपः ६२,२६; ४४३
ईशानः-ना: १९,२; १५३ । ६१,६; ३९३ । ६२,२९; ४४६ । ८६,३७; ७६४
ईशानः विश्वस्य १०१,५; ९४८
उक्थ्यः २९,२; २१९ । ४८,२; ३३२ । ८६,४८; ७६४ । १०८,१६; १०४१
उक्षणम् (द्वि०) ८५,१०; ७२५ । ८७,४३; ७७० । ९५,४; ८३१
उक्षमाणः ९९,५; ९३
उक्षितः अपां ऊर्मौ ७२,७; ७४५
उग्रः ६२,२९; ४४६ । १०९,६३; १०६४ । ११३,५; १०८७
उत्तमः ५१,१; ३४७ । १०८,१६, १०४१
उत्तमः धासिः ८५,३; ७१८
उत्तमं हविः १०७,१; १०००
उत्सः १०७,४; १००३
उत्सः वस्त्रः ९७,४४; ९००
उद्भिद् ८,७९,१; ११५०
उद्प्रुतः १०८,७; १०३२
उन्नीताः वृष्णा ८१,१; ६९६
उपदृक् ५४,२; ३६१
उपपप्तिवान् नाके ८५,११; ७२६
उपमः ८६,३५; ७६२
उपरासः ७७,३; ६७८
उपष्टुत ८७,९; ७८४
उपारुहः ६८,२; ६०१
उपावसुः ८४,३; ७१३
उराणः १०९,९; १०५०
उरवः २२,२; १७४
उरुगव्यूतिः ९०,४; ८०३
उरुगायः ६२,१३; ४३० । ९७,९; ८६५
उरु वरूथम् ८,७९,३, ११५२
उरुशंसः ८,४८,४; ११३८
उरुष्युः-ष्यवः ८,४८,५; ११३९
उशन् ६८,६; ६०५ । ९५,३; ८३०
उशिक् वा० य० ८,५०; १२०८
उषसः प्रतरीता ८६,१९; ७४६
उषसः भगं जनन्तः १०,५; ८१
ऊर्जं वसानः ७८,३; ६८३
ऊर्मिः ७८,२; ६८२ । ८६,४०; ७६७ । ११०,११; १०७४
ऊर्मिः ते देवावीः ६४,११; ४८८
ऊर्मयः अस्य मध्वः ७,८; ५७
ऊर्मयः मधुमन्तः ८६,२; ७२९
ऊर्मिणा सचमानः ७४,५; ६६१
ऊर्मौ ९८,६; ९२०
ऋग्मियः ६८,६; ६०५
ऋजीषी ८,७९,४; ११५३
ऋजुः ९७,४३; ८९९
ऋज्रः ९७,९; ८६५
ऋतः ६२,३०; ४४७ । ६६,२४; ५६१ । ७७,१; ६७६ । १०७,१५; १०१४ । १०८,१०; १०३३
ऋतः परस्मिन् धाम १,४३,९; ११००

ऋतजातः १०८,८; १०३३
ऋतद्युम्नः ११३,४; १०८६
ऋतं वदन् ११३,४; १०८६
ऋतस्य गर्भः ६८,५; ६०४
ऋतस्य गोपाः ४८,४; ३३४ । ७३,८; ६५५
ऋतस्य जिह्वा ७५,२; ६६७
ऋतस्य तन्तुः ७३,९; ६५६
ऋतस्य विष्टपः ३४,५; २५२
ऋतावा ९६,१३;८४५ । ९७,४८;९०४ । ११०,११; १०७४
ऋतावृधः ४२,५; ३०० । ६,७५,१०; १२२७
ऋत्वियः ७२,४; ६४२
ऋषिः ३५,४; २५७ । १०७,७; १००६ । ८,७९,१; ११५०
ऋषिः [अग्निः] ६६,२०; ५५७
ऋषिः विप्राणाम् ९६,६; ८३८
ऋषिकृत् ९६,१८; ८५०
ऋषिमनाः ९६,१८; ८५०
ऋषिषाट् ७६,४; ६७४
ऋषिभिः संभृतः साम० १३००; १२११
ऋष्वः ८९,४; ७९६
एतशः ६४,१९; ४९६
ओक्यः ८६,४५; ७७२
ओजः देवानाम् अथ० ३,५,१; ११७६
ओजिष्ठः ६६,१६; ५५३ । ६७,१; ५६८ । १०१,९; ९५२
ओजीयान् उग्रेभ्यः चित् ६६,१७; ५५४
ओषधीनां पयः अथ० ३,५,१; ११७६
ककुहः ६७,८; ५७५
कनिक्रत् ६३,२०; ४६७
कनिक्रदत् ३,७; २७ । १३,८; १११ । २५,२; १९५ । २८,४; ११५ । ३०,२; २२५ । ३३,४; २४५ । ३६,२; २६७ । ६३,२१; ४७६ । ८१,५; ७२० । ९६,२०,२१; ८५२,८५३ । ९७,३२; ८८८ । १०६,१०; ९९५
कलशम् आविशन् ६२,१९; ४३६
कविः ७,४; ५३ । ९,१; ६८ । १२,४,८; ९८,१०२ । १४,१; ११३ । १८,२; १४६ । २०,१; १५१ । २५,३; १९६ । ५०,४; ३४४ । ५९,३; ३८२ । २५,६; १९९ । २७,१; २०६ । ४४,२; ३०९ । ४७,४; ३२९ । ६२,१४,२७,३०; ४३१,४४४,४४७ । ६३,२; ४६७ । ६४,२४; ५०१ । ६६,३,१०; ५४०,५४७ । ६८,५; ६०४ । ७१,७; ६३६ । ७२,६; ६४४ । ७४,२; ६५८ । ७८,२; ६८१ । ८२,१; ७०१ । ८४,५; ७१५ । ८५,९; ७२४ । ८६,२०,२५,२९; ७४७,७५२,७५६ । ९२,२; ८१३ । ९६,१७; ८४९ । ९७,२; ८५८ । १००,५; ९३९ । १०२,६; ९६५ । १०७,७,१८; १००६,१०१७ । १०९,१३; १०५४ । १,९६,१४; १११४ ।
कविः दिवः ६४,३०; ५०७
कविना इषितः ३७,६; २७१
कविभिः सुष्टुतः १०८,१२; १०३७
कवीनां पदवीः ९६,६,१८; ९३८,९५०
कवीनां वाचः जन्तुः ६७,१३; ५८०
कविक्रतुः ९,१; ६८ । २५,५; १९८ । ६२,१३; ४३०
कवीयन् ९४,१; ८२३
काम्य ९८,६; ९२० । १०२,१; ९३५
कारं पृथ्स्पृहं बिभ्रत् १४,१;११३
कारिणः १६,५; १३३
कार्ष्मन् श्वेतं कलशम् ७४,८; ६६४
काव्येषु रन्ता विश्वेषु ९२,३; ८१४
कृण्वन् अपः ९६,३; ८३५
कृण्वन् अभयानि ९०,४; ८०३
कृण्वन् केतुं दिवस्परि ६४,८; ४८५
कृण्वन् भद्रान् ९६,१; ८३३
कृण्वन् वरिवांसि ९७,१६; ८७२
कृण्वन् विश्वानि सुपथानि यज्यवे ८६,२६; ७५३
कृण्वन् सचृतं विचृतं ८४,२; ७१२
कृण्वन् सत्यानि द्रविणानि ७८,५; ६८५
कृण्वन् साम ९६,२२; ८५४
कृण्वन्तः वरिवः गवे ६२,३; ४२०
कृण्वन्तः विश्वं आर्यम् ६३,५; ४५२
कृण्वानः गाः ८६,२६; ७५३ । १०७,२६; १०२५
कृत्नुः ८,७९,१; ११५०
कृत्व्यः ७६,१; ६७१ । ७७,५; ६८० । ८४,५; ७१५
कृष्णां त्वचं अपघ्नन्तः ४१,१; २९०
केतुः यज्ञस्य ८६,७; ७३४
कोशः ६६,११; ५४८
क्रतुः ८६,४३; ७७० । १,९१,५; ११०५ । १०७,३; १००२
क्रतुमान् ९०,६; ८०५
क्रतुवित् ४४,६; ३१३ । ६३,२४; ४७१ । ८६,४८; ७७५
क्रतुवित्तमः १०८,१; १०२६
क्रतुभिः सुक्रतुः १,९१,२; ११०२

क्रदः ९७,१८: ८८४
क्रन्दन् ४२,४; २९९ । ९६,२२; ८५४ । ९७,३३; ८८९
क्राणा १०२,१; ९६०
क्राणा सिन्धूनाम् ८६,१९; ७४६
क्रिविः ९,६; ७३
क्रीळन्-न्तः २१,३; १६८ । ४५,५; ३१८ । ८६,२६; ७५३
९६,२१; ८५३ । ९७,९; ८६५ । १०८,५; १०३० ।
११०,१०; १०७३ । १०,८५,१८; ११३८
क्रीळन् वने ६,५; ४५ । १०६,११; ९९६
क्रीळुः २०,७; १६५
क्षरन्तः ४६,१; ३२०
क्षिप्रधन्वा ९०,३; ८०२
क्षेत्रवित्तरः १०,२५,८; ११६७
क्षैतः ९७,३; ८५९

गच्छन् इन्द्रम् २५,५; १९८
गच्छन् वाजं सहस्रिणम् ३८,१; २७२
गन्धर्वः ८५,१२; ७२७
गन्धर्वः अपाम् ८६,३६, ७६३
गभस्तिपूतः ८६,३४; ७६१
गयसाधनः १०४,२; ९७५
गयस्फानः १,९१,१२,१९; १११२,१११९
गर्भः १०२,६; ९६५
गर्भः पत्र्यायाः ८२,४; ७०४
गवां पतिः ७२,४; ६४२
गवां शिरः ६४,२८; ५०५
गव्ययुः ३६,६; २६५
गव्युः २७,४; २०९ । ९७,१५; ८७१
गाः इषण्यन् ९६,८; ८४०
गाः कृण्वानः १०७,२६; १०२५
गावः ८,४८,५; ११३९
गातुवित् ४६,५; ३२४ । ६,५,१३; ५२० । ९१,३;
८१४ । ३,६२,१३; ११२४
गातुवित्तमः ४४,६; ३१३ । १०१,१०; ८५३ । १०४,५;
९७८ । १०७,७; १००६
गातुवित्तमः अस्मभ्यम् १०६,६; ९९१
गातुं विदत् ९६,१०: ८४२
गिरा जातः ६२,१५; ४३२
गिरावृध् २६,६; २०५
गिरिष्ठाः १८,१; १४५ । ६२,४; ४२१ । ८५,१०; ७२५ ।
९५,४: ८३१ । ९८,९; ९१३
गिर्वणाः ६४,१४; ४९१
गीर्भिः परिष्कृतः ४३,३; ३०४
गुपितः विधानैः १०,८५,४, ११७४
गुहाहितः अध्वर्युभिः १०,९; ८५
गुह्यः [पर्णमणिः] अथ० ३,५,३; ११७८
गृणानः-नाः ६२,२२; ४३९ । ९७,४९, ९०५
गृणानः जमदग्निना ६२,२४; ४४१ । ६५,२५; ५३२
गृणाना देववीतये १३,३; १०६
गृत्सः १०,२५,५; ११६४
गृध्राणां श्येनः ९६,६; ८३८
गोभिः अक्तः ९६,२२; ८५४
गोभिः अञ्जानः १०३,२; ९६९
गोभिः श्रीणानः १०९,१७; १०५८
गोभिः श्रीतः १०९,११५; १०५६
गोजित् ५९,१; ३८० । ७८,४; ६८४ ।
गोजीरयाः ११०,३, १०६६
गोपतिः १९,२; १५३ । ९७,३४; ८९०
गोपतिः जनस्य ३५,५; २५८
गोपाः २,१०; २० । १६,२, १३०
गोपाः ऋतस्य ४८,४; ३३४ । ७३,८, ६५५
गोपाः तन्वः ८,४८,९; ११४३
गोपाः विश्वतः १०,२५,७; ११६६
गोपाः विश्वस्य भुवनस्य २,४०,१; ११२७
गोपाः वृजनस्य १,९१,२१; ११११
गोमान् १०७,९; १००८
गोवित् ५५,३; ३६६ । ८६,३९; ७६६
गोविन्दुः ९६,१९, ८५१
गोषाः १६,२; १३० । ६१,२०; ४०७
गोषु अग्रियः ८६,१२; ७३९
ग्राव्णा तुन्नः ६७,१९; ५८६

घ्नन्निघ्नत् विश्वा दुरिता ९०,६; ८०५

घृतं वसानः ८२,२; ७०२
घृतश्चुत्-तः ७७,१; ६७६ । साम० १३००; ११११
घृतस्नुः ८६,४५; ७७२
घृष्वयः २१,१, १६६
घोरः ८९,४; ७९६
घ्नन् स्रिधः अप २७,१; २०६
घ्नन्तः विश्वा द्विषः अप ६३,२६; ४७३

चक्रदः वने १०७,११; १०११

चक्राणः चारुं अध्वरम् ५४,९; ३११

चक्रिः ७७,५; ६८०

चक्षाणः विश्वा काव्या ५७,२; ३७३

चनोहितः ७५,१; ६६६

चनोहितः मतिभिः ७५,४; ६६९

चन्द्रः ६६,२६; ५६३

चमूषदः ८,२; ६० । ९६,१९; ८५१

चमूः पुनानः १०७,१८; १०१७

चमू सुताः ४६,३; ३२२

चम्वोः सुतः १०८,१०; १०३५

चारुः-रवः १७,८; १४४ । ३०,६; २२९ । ४८,१; ३३१
६१,९; ३९६ । ७७,३; ६७८ । ८६,२१; ७४८ ।
१०२,६; ९६५ । १०९,१२; १०५४

चिकितः मनीषा प्र १,९१,१; ११०१

चिताना गोः अधि त्वचि १०१,११; ९५४

चित्तः विपानया अया ६५,१२; ५१९

चेतनः ६४,१०; ४८७

चोदितः नृबाहुभ्याम् ७२,५; ६४३

जङ्घनत् कृष्णा तमांसि ६६,२४; ५६१

जङ्घ्नतः (त्वष्टी) ६६,२५; ५६२

जज्ञानः ३,१०; ३० । २९,२; २१९ । ८६,३६; ७६३ ।
९६,१७; ८४९ । १०९,८,१२; १०४९,१०५३

जनना दिवः [सोमपूषणौ] २,४०,१; १११७

जनना पृथिव्याः " २,४०,१; १११७

जनना रयीणाम् " २,४०,१; १११७

जनयन् १०८,१२; १०३७

जनयन् इषः ३,१०; ३० । ६६,४; ५४१

जनयन् ज्योतिः १०७,२६; १०२५

जनयन् मतिम् १०७,१८; १०१७

जनयन् रोचना दिवः ४२,१; २९६

जनयन् वाचम् ७८,१; ६८१ । १०६,१२; ९९७

जनयन् सूर्यम् अप्सु ४२,१; २९६

जनिता अग्नेः ९६,५; ८३७

जनिता इन्द्रस्य ९६,५; ८३७

जनिता दिवः ९६,५; ८३७

जनिता देवानाम् ८६,१०; ७३७ । ८७,२; ७७७

जनिता पृथिव्याः ९६,५; ८३७

जनिता मतीनाम् ९६,५; ८३७

जनिता रोदस्योः ९०,१; ८००

जनिता विष्णोः ९६,५; ८३७

जनिता सूर्यस्य ९६,५; ८३७

जन्तुः कवीनां वाचः ६७,१३; ५८०

जयन् १,९१,२१; ११२१

जयन् अपः ८५,४; ७१९

जयन् क्षेत्रम् ८५,४; ७१९

जवीयान् मनसः ९७,२८; ८८४

जागृविः ३६,२; २६१ । ४४,३; ३१० । ७१,१; ६२०

जातः ९,३; ७०

जातः गिरा ६२,१५; ४३२

जातः श्रिये ९४,४; ८२६

जातामः श्रुष्टी १०६,१; ९८६

जानन् ९३,७; ८३९

जानन् ... प्रथमम् ७०,६; ६१५

जायमानः ९६,१० ८४२

जायमानः इन्द्रम् अभि ११०,८; १०७१

जिगत्नवः १०१,१२; ९५५

जिग्युषः (षष्ठी) १०१,४; ९३८

जिह्वा ऋतस्य ७५,२; ६६७

जीरदानुः ८७,९; ७८४

जुवाणः इन्द्रस्य सख्यम् ९७,११; ८६७ । ८,४८,२; ११३६

जुष्टः ९७,२१; ८७८

जुष्टः इन्द्राय १३,८; १११ । ७०,८; ६२७

जुष्टः मती ४४,२; ३०९

जुष्टः मदाय ९७,१९; ८७५

जुष्टः मित्राय १०८,१६; १०४१

जुष्टः वरुणाय ७०,८; ६२७ । १०८,१६; १०४१

जुष्टः वायवे ७०,८; ६२७ । १०८,१६; १०४१

जूतः ९७,५२; ९०८

जूताः धिया ६४,१६; ४९३

जेता ९०,३; ८०२

जेन्यः ८६,३६; ७६३

ज्येष्ठः उग्राणाम् ६६,१६; ५५३

ज्योतिः २९,२; २१९ । ६६,२४; ५६१

ज्योतिः जनयन् १०७,२६; १०२५

ज्योतिः यज्ञस्य ८६,१०; ७३७

ज्योतीरथः ८६,४५; ७७२

त्र्ययः ऊरु ६८,२; ६०१

तनूपानः अथ० ३,५,८; ११८३

तन्तुः ऋतस्य ७३,९; ६५६

तन्वं सृजानः ९६,२०; ८५२
तन्वः गोपाः ८,४८,९; ११४३
तमः ज्योतिषा प्रतपन् १०८,१२; १०३७
तरत् ५८,१-४; ३७६-३७९
तवस् (सः-षष्ठी) १०,२५,५; ११६४
तवस्वान् ९७,४६; ९०२
तविष्यमाणः ७६,३; ६७३
तिग्मदन्तिः ६,७४,४; ११२६
तिग्मशृंगः ९७,९; ८६५
तिग्मायुधः ९०,३; ८०२। ६,७४,४; ११२६
तिरः दधानः दुहितुः वपांसि ९७,४७; ९०३
तीव्रः १७,८; १४४। ६,४७,१; ११२७
तुञ्जानः आयुधा ५७,२; ३७३
तुञ्जानः रयिम् ८७,६; ७८१
तुम्रः ६७,२०; ५८७
तुम्रः प्राव्णा ६७,१९; ५८६
तुरः १०,२५,१०; ११६९
तृतीयं धाम सिषासन् ९६,१८; ८५०
त्रिधातुः ८६,४६; ७७३। १०८,१२; १०३७
त्रिपृष्ठः ७१,७; ६३६। ९०,२; ८०१
त्रिवरूथं शर्म वसानः ९७,४७; ९०३
त्विषिं दधानः ३९,३; २८०
त्वेषाः ४१,१; २९०
दक्षः ६१,१८; ४०५। ६२,४; ४२१। ६५,२८; ५३५। ८५,२; ७१७। १,९१,१४; १११४
दक्षः देवानाम् ७६,१; ६७१
दक्षसाधनः २५,१; १९४। २७,२; २०७। १०१,१२; ९५६। १०४,३; ९७६
दक्षाय साधनः ६२,२९; ४४६। १०५,३; ९८२
दक्षाय्यः ८८,८; ७९१। १,९१,३; ११०३
दत्तः इन्द्रेण अथ० ३,५,४; ११७९
दधत् दाशुषे रत्नानि ३,६; २६
दधत् वयः ६८,१०; ६०९
दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् २०,७; १६५। ६२,३०; ४४७। ६६,२७; ५६४। ६७,१९; ५८६
दधानः इन्द्रियं रसम् २३,५; १८४
दधानः ओजसा विश्वा ६५,१०; ५१४
दधानः कलशे रसम् ६३,१३; ४६०
दधानः अक्षिति श्रवः ६६,७; ५४४
दधानः त्विषिम् ३९,३; २८०
दधानः द्रविणम् ९६,१२; ८१४
दधानः नाम ९२,२; ८१३
दधानः रत्ना दमेदमे ६,७४,१; ११२३
दध्ना उन्नीताः ८१,१; ६९६
दध्याशिरः २३,३; १७५। ६३,१५; ४६२। १०१,१२; ९५५
दमेदमे सप्त रत्ना दधानः ६,७४,१; ११२३
दशंतः-तासः २,६; १६। १०१,१२; ९५५
दस्मः ८२,१; ७०१
दस्योः हन्ता ८८,४; ७८८
दाता दात्रस्य ९७,५५; ९११
दात्रस्य दाता ९७,५५; ९११
दानुदः ९७,२३; ८७९
दानुपिन्वः ९७,२३; ८७९
दाशुषे वसूनि करत् ६२,११; ४२८
दिदसन् राधः ६१,२७; ४१४
दिवः आभृतं पयः ६६,३०; ५६७
दिवः कविः ६४,३०; ५०७
दिवः जननः २,४०,१; ११२७
दिवः जनिता ९६,५; ८३७
दिवः धरुणः २,५; १५
दिवः धर्ता ७६,१; ६७१। १०९,६; १०४७
दिवः पतिः ८६,११,३३; ७३८,७६०
दिवः पदम् (दिवस्पदम्) १०,९; ८५
दिवः प्रतरीता ८६,१९; ७४६
दिवः मूर्धा-र्धानः २७,३; २०८। ६९,८; ६१७
दिवः रोचनः ३७,३; २६८
दिवः विष्टम्भः ८६,३५; ७६२। ८७,२; ७७७। ८९,६; ७९८। १०८,१६; १०४१
दिवः शिशुः ३३,५; २४६। ३८,५; २७६
दिवः स्कम्भः ७४,२; ६५८। ८६,४६; ७७३
दिवा हरिः ९७,९; ८६५
दिवियजः ९७,२६; ८८२
दिवि अधि श्रितः १०,८५,१; ११७१
दिविस्पृक् ११,४; ८९
दिवे शम् १०९,५; १०४६
दिव्यः-व्याः ७१,९; ६३८। ८६,१; ७२८। ३६; ७६३। ९७,२३,३३; ८७९,८८९। १०७,५; १००४। १०९,३; १०४४
दिशां पतिः ११३,२; १०८४
दुदुहानः अद्रौ ९६,१०; ८४२

दुदुहानः त्रिः सप्त आशिरम् ८६,२१; ७४८

दुराध्यः ७९,३; ६८८

दुरिता अपसेधन् ८९,२; ७०२

दुरिता घनिघ्नत् विश्वा ९०,६; ८०१

दुरिता पुरु विघ्नन्तः ६२,२; ४१९

दुरितानि विघ्नन् ९७,१६; ८७२

दुरोषः १०१,३; ९४६

दुर्मर्षः ९७,८; ८६४

दुष्टरः अप्सु २०,६; १६४

दुस्तरः १६,३; १३१

दुहानः प्रत्नं इत् पयः ४२,४; २९९

देवः-वासः ३,१,६,९; २१,२६,२९ । ६,७; ४७ । १३,५; १०८। ३७,६; २७१ । ४२,२; २९७ । ६३,२२; ४६९ । ६४,१; ४७८। ६५,२,२४; ५०९,५३१ । ६७,३०; ५९७। ६८,२; ६०१ । ७१,६; ६३५ । ८७,२; ७७७।९५,२; ८२९।९६,३,१६; ८३५,८४८। ९७,१,७,११,१२,१८,२७,४२,४८,५०; ८५७,८६३, ८६७--६८,८७४.८८३,८९८,९०४,९०६ । ९८,४,९; ९१८,९२३। ९९,७; ९३३। १०३,६; ९७३। १०७,१५; १०१४। १०८,९; १०३४। १,९१,१४,२३; ११११४, ११२३। ८,४८,१; ११४३ । १०,८५,५; ११७५। वा०य० ५,७; ११९४।७,१४; १२०१।८,२६,५०; १२०५,१२०८

देवः [सविता] ६७,२५,२६; ५९२,५९३

देवतात: ९७,१९; ८७५

देवतातिः ९७,२७; ८८३

देवपानः ९७,२७; ८८३

देवप्सराः १०४,५; ९७८

देवप्सरस्तमः १०५,५; ९८४

देवमादनः ८४,१; ७११ । १०७,३; १००२

देवयुः ६,१; ४१ । ११,२; ८७ । १७,३; १३९ । ३७, १; २६६ । ४३,५; ३०६ । ५६,१; ३६८ ।९७,४; ८६० । १०६,१४; ९९९ । १०८,९; १०३४

देववातः ६२,५; ४२२ । ९६,९; ८४१ ।

देववीः ३६,२; २६१

देववीतमः २५,३; १९६।२८,३; २१४।४९,३; ३३८। ६३,१६; ४६३ । ६४,११; ४८९ । १०७,७; १००६।

देवश्रुत्तमम् ६१,२१; ४३८

देवान् पृञ्चन् स्वेन रसेन ९७,१२; ८६८

देवानाम् ओजः अथ० ३,५,१; ११७६

देवानां जनिता ८६,१०; ७३७ । ८७,२; ७७७

देवानां दक्षः ७६,१; ६७१

देवानां पिता ८६,१०; ७३७ ।८७,२; ७७७ । १०९,४; १०४५

देवानां ब्रह्मा ९६,६; ८३८

देववीः २,१; ११ । २४,७; १९३ । २८,६; २१७ । ६१, १९; ४०६

देवीः [पावमानीः] साम० १३०१, १२१२

देवेभ्यः मधुमत्तमः १०६,६; ९९१

देवैः समाहृताः साम० १३०१; १२१२

द्युक्षः ५२,१; ३५१

द्युक्षतमः १०८,१; १०२६

द्युतानः ६४,१५; ४९२ । ७५,३; ६६८

द्युमान् ६१,१८; ४०५ । ६४,१; ४७८ । ६५,४; ५११। ८०,२; ६९२

द्युमत्तमः ६५,१९; ५२६ । १०८,३; १०२८

द्युम्नवत् पयः यस्य ६६,३०; ५६७ ।

द्युम्नवत्तमः २,२; १२

द्युम्नवर्धनः ३१,२; २३१

द्युम्नी १०९,७; १०४८

द्युम्नी द्युम्नेभिः १,९१,२; ११०२

द्रप्सः-प्सासः ६,४; ४४ । ६९,२; ६११ । ७३,१; ६४८ । ७८,४; ६८४ । ८५,१०; ७२९ । ९६,१९; ८५१ । १०,१७,११-१३; १२३१-३३

द्रप्सः अप्सु ८९,२; ७२४

द्रप्सान् ईरयन् ९७,५६; ९१२

द्रविणं दधानः ९६,१२; ८४४

द्रविणानि सत्यानि कृण्वन् ७८,५; ६८५

द्रविणस्वन्तः ८५,१; ७१६ ।

द्रविणोवित् ९७,२५; ८८१

द्रापिं वसानः ८६,१४; ७४१

द्रावयित्नवः ६९,६; ६१५

द्रुयाविनः ८५,१; ७१६

द्विशवस् १०४,२; ९७५

धनञ्जयः ४६,५; ३२४ । ८४,५, ७१५

धनस्पृत् ६२,१८; ४३५

धनस्य धुर एता ९७,२९; ८८५

धनानि सनिता ९०,३, ८०१

धमन् ७३,१; ६४८

धरुणः ७४,२; ६५८

धरुणः दिवः २,५; १५ । ७२,७; ६४५ । ८६,८; ७३५
धरुणः पृथिव्याः ८७,२; ७७७ । ८९,६; ७९८
धर्णसिः २,२; १२ । १४,२; ११४ । २३,५; १८४ । २६,३; २०२ । ३७,३; २६८ । ३८,६; २७७ । ९९,५; ९३१
धर्ता २६,२; २०१ । ६५,११; ५१८
धर्ता दिवः ७६,१; ६७१ । १०९,६; १०४७
धर्मणः पतिः ३५,६; २५९
धर्माणि वसानः ऋतुथा ९७,१२; ८६८
धाम्ना परिष्कृतः ११३,४; १०८६
धामधाः प्रथमः ८६,२८; ७५५
धाम तव बृहत् गभीरम् १,९१,३; ११०३
धाराः अस्य ३०,१; २२४
धाराः असश्चतः ५७,१; ३७२ । ६२,२८; ४४५
धाराः मदिष्ठा १,१; १
धाराः मध्वः ७,२; ५१
धाराः मधुश्चुतः ६२,७; ४२४
धाराः मन्द्राः ६,१; ४१
धाराः शतम् ५६,२; ३६९
धाराः शर्मयन्त्यः ४१,६; २९५
धाराः स्वादिष्ठा १,१; १
धाराः शतम् अपस्युवः ५६,२; ३६९
धाराः पिन्वन् ९७,३४; ८८०
धाराभिः हियानः ९८,२; ९१६
धारयुः ६७,१; ५६८
धासिः उत्तमः ८५,३; ७१८
धियः पतिः ७५,२; ६६७ । ९९,६; ९३२
धिया मनोता ९१,१; ८०६
धियावसुः ९३,५; ८२२
धियाहितः ४४,२; ३०९
धीजवः ८६,१; ७२८
धीजवनः ८८,३; ७८७
धीजुवः ८६,४; ७३१
धीनां अन्तः सबर्दुघः १२,७; १०१
धीरः ९२,३; ८१४ । ९३,१; ८१८ । ९७,३०,४६; ८८६,९०२ । ६,४७,३; ११२९ । ८,४८,४; ११३८
धूतः अप्सु ६२,५; ४२२
धूतः नृभिः १०७,५; १००४
धृष्णुः ४७,२; ३२७ । ९९,१; ९२६ । १०८,६; १०३१
ध्रुवः ८६,६; ७३३ । १०१,१२; ९५५ । १०२,४; ९६३
नक्तं ऋभ्वः ९७,९; ८६५
नद्योः हितः ९,१; ६८
नभः वसानः ८३,५; ७१०
नर्यः १०५,५; ९८४ । १०७,१; १०००
नवः ८६,३६; ७६३
नाम दधानः ९२,२; ८१३
निक्तः १०९,१०; १०५१
नित्यस्तोत्रः १२,७; १०१
निधापतिः ८३,४; ७०९
निरिणानः १४,४; ११६
निर्णिक् ८६,४६; ७७३
निर्णिजानः ६९,५; ६१४
नृचक्षाः ८,९; ६७ । ४५,१; ३२५ । ७८,२; ६८१ । ८०,१; ६७१ । ८६,२३,३६,३८; ७५०,७६३,७६५ । ९२,२; ८१३ । ९७,२४; ८८० । १,९१,२; ११०२ । ८,४८,९,१५; ११४३,११४९
नृधूतः ७२,४; ६४२
नृभिः धूतः १०७,५; १००४
नृभिः यतः १०८,१५; १०४०
नृभिः येमानः ७५,३; ६६८ । १०७,१६; १०१५ । १०९,८,१८; १०४९,१०५९
नृमादनः २४,४; १९० । ६७,२; ५६९
नृम्णा दधानः ओजसा १५,४; १२४
नृम्णानि बिभ्रत् ४८,१; ३३१
नृपा २,१०; २०
पज्रायाः गर्भः ८२,४; ७०४
पतिः ६५,१; ५०८ । ९७,२२; ८७८
पतिः गवाम् ७२,४; ६४२ ।
पतिः जनीनाम् ८६,३२; ७५९
पतिः दिवः ८६,११,३३; ७३८,७६०
पतिः दिशाम् ११३,२; १०८४
पतिः धियः ७५,२; ६६७ । ९९,६; ९३२
पतिः भुवनस्य ३१,६; २३५
पतिः मदानाम् १०४,५; ९७८
पतिः रयीणाम् १०१,६; ९४९
पतिः वाचः २६,४; २०३
पतिः विश्वस्य भुवनस्य ८६,५; ७३२
पतिः वीरुधाम् ११४,२; १०९५
पतिः सिन्धूनाम् १५,५; १२५
पतिः हरीणाम् १०५,५; ९८४

पत्नीवान् वा० य० ८,९; ११०३
पत्मन् कुकूननानाम् वा० य० ८,४८; ११०६
पत्मन् भन्दनानाम् वा० य० ८,४८; ११०६
पत्मन् मदिन्तमानाम् वा य० ८,४८; ११०६
पत्मन् मधुन्तमानाम् वा० य० ८,४८; ११०६
पत्मन् म्रेशीनाम् वा० य० ८,४८; ११०६
पथिकृत् १०६,५; ९९०
पदवीः कवीनाम् ९६,६,१८; ८३८,८५०
पनिप्नत् ६७,२९; ५९६ । ८५,११; ७२६ । ८६,३१, ४६; ७५८,७७३ ।
पपृचानः अग्निः ७४,९; ६६५
पप्रिः पृतनासु १,९१,२१; ११११
पयः अस्य ५४,१; ३६०
पयः ऋषिम् ५४,१; ३६०
पयः द्युतम् ५४,१; ३६०
पयः द्युम्नवत् ६६,३०; ५६७
पयः दिवः आभृतम् ६६,३०; ५६७
पयः प्रत्नम् ५४,१; ३६०
पयः शुक्रम् ५४,१; ३६०
पयः सहस्रसाम् ५४,१; ३६०
पयः ओषधीनाम् [पर्णमणिः] अथ० ३,५,१; ११७६
पयः पयसा अभिश्रीणन् ९७,४३; ८९९
पयसा पिन्वमानः ९७,१४; ८७०
पयोवृध् ८४,५; ७१५
पयोवृधः १०८,८; १०३३
परस्मिन् धामन् ऋतः १,४३,९; ११००
परायतिः ७१,७; ६३६
परिप्रयन् ६८,८; ६०७
परियन् ६८,६; ६०५ । ७१,९; ६३८
परिषिच्यमानः ६८,१०; ६०९ । ९७,१४,३६; ८७०,८९२
परिष्कृण्वन् अनिष्कृतम् ३९,२; २७९
परिष्कृतः अद्य क्षपा ९९,२; ९१८
परिष्कृतः गीर्भिः ४३,३; ३०४
परिष्कृतः गोभिः ६१,१३; ४००
परिष्कृतः धाम्ना ११३,४; १०८६
परिष्कृतः मतिभिः १०५,२; ९८१
परिष्कृतः विश्वाभिः मतिभिः ८६,२४; ७५१
परिष्कृतासः ४६,२; ३११
पर्जन्यः पिता ८२,३; ७०३
पर्जन्यवृद्धः ११३,३; १०८५

पर्णः [देवता] अथ० ३,५,४,६-८; ११७९,११८१-११८३
पर्णमणिः [देवता] अथ० ३,५,१,२,५; ११७६,११७७, ११८०
पर्णी ८२,३; ७०३
पर्वतावृधः ४६,१; ३१०
पवमानः ३,२,३,५,७,८; २२,२३,२५,२७,२८ । ४,१, ३१ । ७,५; ५४ । ९,९; ७६ । ११,१,९; ८६,९७। १३,२,८; १०५,१११ । १९,६; १५७ । २०,२,१६०। २३,३; १८१ । २५,२; १९५ । २६,३,६; २१३, २१६ । २७,४,५; २२०,२२१ । २८,५; २२६ । ३०,४; २२७ । ३१,१; २५४ । ३६,३; २६२ । ३७,३,४; २६८,२६९ । ४०,४; २८७ । ४१,३; २९२ । ४३,४; ३०५ । ४६,६; ३२५ । ४९,५; ३४० । ५०,३; ३४३ । ५१,३; ३४८ । ६०,१,३; ३८४,३८६ । ६१,४,१६-१८,२६; ३९१,४०३-४०५, ४१३ । ६२,१०,११,१६,३०; ४२७,४२८,४३३,४४७। ६३,८,२३; ४५५,४७० । ६४,६,९,२४; ४८४,४८६, ५०१ । ६५,२-४,७,११,१६; ५०९-५११,५१४,५१८, ५२३ । ६६,२,३,१०,२२,२४-२७,३०; ५३९,५४०, ५४७,५५९,५६१-५६४,५६७। ६७,९,२१,२२; ५७६, ५८८,५८९ । ६९,२; ६११ । ७२,९; ६४७ । ७४,९; ६६५ । ७६,३; ६७३ । ७८,३,५; ६८३,६८५ । ७९,३; ६८८ । ८०,५; ६९५ । ८१,१,३-५; ६९६, ६९८-७०० । ८५,८; ७२३ । ८६,१,४,६,१२,१३, १८,२४,२८-३०,३४,३५,३८,४४; ७२८,७३१,७३३, ७३९,७४०,७४५, ७५१,७५५-७५७,७६१, ७६२, ७६५, ७७१ । ८८,५; ७८९ । ८९,१; ७९३ । ९०,५; ८०४ । ९१,३; ८०८ । ९२,४,५; ८१५,८१६ । ९३,४; ८२१ । ९४,५; ८२७ । ९६,४,७,८,११, २१, २३, २४; ८३६,८३९,८४०,८४३,८५३,८५५, ८५६ । ९७,८,१४,२४,३१,४१,४४,५८; ८६४,८७०, ८८०,८८७,८९७,९००,९१४ । १००,७,८,९; ९४१, ९४२,९४३ । १०१,९; ९५२ । १०३,६; ९७३ । १०६,१०; ९९५ । १०७,११,१५,२१,२२; १०१०, १०१४,१०२०,१०२१ । १०८,३; १०२८ । ११०,२, ३,९,१०; १०६५,१०६६,१०७२,१०७३ । ११३,७; १०८९ । ११४,१; १०९४ । ८,१०१,१४; ११५९ ।
पवमानाः-नासः १३,९; ११२ । २१,४; १६९ । २४,१, १८७ । ३१,१; २३० । ५९,४; ३८३ । ६३,२५- २७; ४७२-४७४ । ६७,७; ५७४ । ६९,९; ६१८ ।

८५,७; ७२२ । ८७,५; ७८० । १०१,८; ९५१ । १०७,२५; १०२४ ।
पवित्रः ३९,३,४; २८०,२८१
पवित्रम् अभि उन्दन् ६१,४; ३९१
पवित्रः तपोः ८३,२; ७०७
पवित्र रथः ८३,५; ७१० । ८६,४०; ७६७
पवित्रवन्तः ७३,३; ६५० । १०१,४; ९४७
पवित्रे विततः ७३,९; ६५६
पश्यन् अन्तः ९६,७; ८३९
पस्त्यावान् ९७,१८; ८७४
पाञ्चजन्यः [अग्निः] ६६,२०; ५५७
पात् (पान्तम् द्वि०) ६५,२८-३०; ५३५-५३७
पावकः २४,६,७; १९२,१९३ । ९७,७; ८६३
पावमानीः साम० १३००-१३०३; १२११-१२१४
पाशिनः ७३,४; ६५१
पिता ७३,३; ६५० । ८७,२; ७७७
पिता देवानाम् ८६,१०; ७३७ । ८७,२; ७७७ । १०९,४; १०४५
पिता मतीनाम् ७६,४; ६७४
पिन्वन् धाराः ९७,३४; ८९०
पिन्वमानः पयसा ९७,१४; ८७०
पीयूषः १०९,३,६; १०४४,१०४७
पीयूषम् दिवः उत्तमम् ५१,२; ३४७
पुनानः-नाः-नासः ६,९; ४९ । ८,२,३,६; ६०,६१, ६४ । ९,७; ७४ । १६,६,८; १३४,१३६ । १८,७; १५१ । १९,१,३; १५२,१५४ । २०,५; १६३ । २४,२; १८८ । २५,४; १९७ । २७,१,६; २०६, २११ । २८,६; २१७ । ३०,१; २२४ । ३५,५,६; २५८,२५९ । ४०,१,५,६; २८४,२८८,२८९ । ४२,५; ३०० । ४३,३; ३०४ । ५४,३,४; ३६२,३६३ । ५७,४; ३७५ । ६१,६,२३,२७; ३९३,४१०,४१४ । ६२,२३; ४४० । ६३,२८; ४७५ । ६४,१४,१५,२५, २६,२७; ४९१,४९२,५०२,५०३,५०४ । ६६,२८; ५६५ । ६८,९; ५९७ । ८६,३,११,२५,३३,४७; ७३०,७४८,७५२,७५३,७६०,७७४ । ८७,१,९; ७७६, ७८४ । ९१,४,६; ८०९,८११ । ९२,३,६; ८१४, ८१७ । ९३,५; ८२२ । ९५,१; ८२८ । ९६,३,२३; ८३५,८५५ । ९७,६,१२,१८,२५,२७,३७,३८,४५; ८६२,८६८,८७४,८८१,८८३,८९३,८९४,९०१ । ९७,४७; ९०३ । ९९,४,६; ९३०,९३२ । १००,२; ९३६ । १०३,१,४,५; ९६८,९७१,९७२ । १०५,१; ९८० । १०६,९; ९९४ । १०७,२,४,६; १००१, १००३,१००५ । १०९,९; १०५० । ११०,१०,११; १०७३,१०७४ । १११,१; १०७६
पुनानः चमूः १०७,१८; १०१७
पुनानः तन्वं अरेपसम् ७०,८; ६२७
पुनानः देववीतये ६४,१५; ५०२
पुनानः नृभिः ७५,५; ६७०
पुनानः ब्रह्मणा ११३,५; १०८७
पुनानः मतिभिः ९६,१५; ८४७
पुनानः वारम् ८२,१; ७०१
पुर एता महतः धनस्य ९७,२९; ८८५
पुरन्धिवान् ७२,४; ६४२
पुरुकृत् ९१.५; ८१०
पुरुक्षुः ९१,५; ८१०
पुरुत्राः १०,२५,६; ११६५
पुरुमेधः ९७,५२; ९०८
पुरुवारः ९३,२; ८१९ । ९६,२४; ८५६
पुरुव्रतः ३,१०; ३०
पुरुष्टुतः ७२,१; ६३९ । ७७,४; ६७९
पुरुस्पृहः ६५,२८-३०; ५३५-५३७ । १०२,६; ९६५
पुरुहूतः ५२,४; ३५४ । ८७,६; ७८१
पुरोरुक् ९८,१२; ९२६
पुरोजिती १०१,१; ९४४
पुरोहितः [अग्निः] ६६,२०; ५५७
पुष्टिवर्धनः १,९१,१२; ११११
पूतः-ताः २३,३; १७५ । ६७,३१; ५९८ । ९७,३१; ८८७ । १०१,११; ९५५ । १०९,८; १०४९
पूयमानः ८७,६; ७८१ । ९१,१; ८११ । ९६,१०,२२; ८४२,८५३ । ९७,१,२,३६,३९,४२,४८-५१; ८५७, ८५८,८९२,८९५,८९८,९०४-९०७ । १०६,९; ९९४
पूयमानः धन्वा ९७,३; ८५९
पूयमानः सोतृभिः ९६,१६; ८४८
पूर्भित् ८८,४; ७८८
पूर्वासः ७७;३; ६७८
पूर्व्यः ३६,३; २६२ । ६७,८; ५७५ । ७७,२; ६७७ । ८६,२०; ७४७ । ९६,१०; ८४२ । १०९,७; १०४८
पृञ्चन् देवान् स्वेन रसेन ९७,१२; ८६८
पृतनासु पप्रिः १,९१,२१; ११२१
पृत्सु वन्वन् ९६,८; ८४०

पृथिव्यै शम् १०९,५; १०४६
पृथिव्याः जनन: १,४०,१; १२१७
पृथिव्या: जनिता ९६,५; ८३७
पृथिव्याः धरुण: ८७,२; ७७७ । ८९,६; ७९८
पृथिव्याः नाभा ७२,७; ६४५
पेरवः ७४,४; ६६०
पोता ६७,२२; ५८९
प्रच्युत: ८०,४; ६९४
प्रजायै शम् १०९,५; १००६
प्रतपन् ज्योतिषातमः १०८,१२; १०३७
प्रतरण: १,९१,१९; १११९
प्रतरीता अह्नः ८६,१९; ७४६
प्रतरीता उषसः ८६,१९; ७४६
प्रतरीता दिवः ८६,१९; ७४६
प्रत्नः-स्मासः २३,२; १८१ । ७३,३; ६५० । ९८,११; ९२५
प्रत्नवत् ९१,५; ८१०
प्रथम: १०७,२३; १०२२
प्रथमः धामधाः ८६,२८; ७५५
प्रथमः मनीषी ९१,१; ८०६
प्रथमः युत्सु ८९,३; ७९५
प्रभुः ८३,१; ७०६ । ८६,५; ७३२
प्रभूवसुः २९,३; २२० । ३५,४; २५९
प्रभूषत् २९,१; २१८
प्रयसे हित: ६६,२३; ५६०
प्रयस्वान् ६६,२३; ५६०
प्रवृण्वन्तः २१,२; १६७
प्रसुपः ६९,६; ६१५
प्रस्थिताः ६९,८; ६१७
प्रियः ७,६; ५५ । १०,९; ८५ । २५,३; १९६ । ५०,३; ३४३ । ६३,२३; ४७० । ६४,१०,२७; ४८७,५०४ । ६७,२९; ५९६ । ७९,५; ६९० । ८५,२; ७१७ । ९६,९; ८४१ । ९७,३; ८५९ । १०२,२; ८६१ । १०७,५,६,१३; १००४, १००५,१०१२ । १०८,८; १०३३ । १०,२५,१०; १०६९ । अथ० ३,५,३-४; ११७८,११७९
प्रियः इन्द्रस्य ९८,६; ९२० । १०२,१; ९३५
प्रियस्तोभः १,९१,६; ११०६
प्सरः ७४,३; ६५९

बभ्रुः ११,४; ८९ । ३१,५; २३५ । ३३,२; २४३ । ६३,४,६; ४५१,४५३ । ९८,७; ९२१ । १०७,१९-२०; १०१८-१०१९ ।
बर्हिषि प्रियः ७२,४; ६४२ । १०७,१५; १०१४ । १०८,८; १०३३ । ११३,५; १०८७
बर्हिष्मान् ४४,४; ३११
बली [पर्णमणिः] अथ० ३,५,१; ११७६
बाधमानः मृधः ९७,४३; ८९९
बार्हतैः रक्षितः १०,८५,४; ११७४
बिभ्रत् आयुधानि ९६,१९; ८५१
बिभ्रत् नृम्णानि ४८,१; ३३१
बिभ्रत् विश्वा वसूनि १०८,११; १०३६
बृहत् ६६,२४; ५६१ । ७५,१; ६६६
बृहन्मतिः ३९,१; २७८
बृहस्पतिसुतः वा०य० ८,९; १२०३
ब्रह्मणस्पतिः ८२,१; ७०६
ब्रह्मणा पुनानः ११३,५; १०८७
ब्रह्मा देवानाम् ९६,६; ८३८
ब्राह्मणेषु हितम् साम० १३००; १२११
भगः ९७,५५; ९११
भङ्गः ६१,१३; ४००
भद्रः १,९१,५; ११०५
भद्रान् कृण्वन् ९६,१ ८३३
भरमाणः रुशन्तं वर्णम् ९७,१५; ८७१
भराय सानसिः १०६,२; ९८७
भरेषु राजा १,९१,२१; ११२१
भानुः ८५,१२; ७२७
भीमः ७०,७; ६२६ । ९७,२८; ८८४
भुवना विश्वा संपश्यन् १०,२५,६; ११६५
भुवनस्य पतिः ३१,६; २३५
भुवनस्य राजा ९६,१०; ८४२ । ९७,४०; ८९६
भुवनस्य विश्वस्य गोपाः २,४०,१; १२१७
भुवनस्य विश्वस्य राजा ९७,५६; ९१२
भुवनेषु अर्पितः ८६,४५; ७७२
भूरिचक्षाः २६,५; २०४
भूरिधायाः २६,३; २०२
भूरिषाट् (साट्) ८८,२; ७८६
भूर्णयः १७,१; १३७ । ४१,१; २९०
भूषन् देवेषु यशः मर्ताय ९४,३; ८२५
भ्रमाः २२,२; १७४

❀

मंहनाः ३७,६; २७१
मंहयद्रयिः ५२,५; ३५५ । ६७,१; ५६८
मंहयुः २०,७; १६५
मंहीयान् भूरिदाभ्यः चित् ६६,१७; ५५४
मंहिष्ठः १,३; ३ । १०२,६; ९६५
मघवा ८०,३; ६९८
मघवा मघवत्तमः ९७,५५; ९११
मघवा वीरेभिः अश्वैः ९६,११; ८४३
मणिः [पर्णमणिः] अथ० ३,५,३,८; ११७८,११८३
मतवान् ८६,१३; ७४०
मतिं जनयन् १०७,१८; १०१७
मतिभिः परिष्कृतः १०५,२; ९८१
मतिभिः पुनानः ९६,१५; ८४७
मतीनां जनिता ९६,५; ८३७
मतीनां परि (ने) णेता १०३,४; ९७१
मतीनां पिता ७६,४; ६७४
मती जुष्टः ४४,२; ३०९
मत्सरः-रासः १३,८; १११ । १७,३; १३९ । २१,१; १६६ । २६,६; २०५ । २७,५; २१० । ३०,६; २२९ । ३४,४; २५१ । ४६,४,६; ३२३,३२५ । ५३,४; ३५९ । ६३,१०,१७,२४; ४५७,४६४,४७१ । ६५,१०; ५१७ । ६६,७; ५४४ । ६९,६; ६१५ । ७२,७; ६४५ । ८६,१०,२१; ७३७,७४८ । ९६,८,१३; ८४०,८४५ । ९७,११; ८६७ । १०७,१४,२३,२५; १०१३,१०२२,१०२४
मत्सरवान् ९७,३२; ८८८
मत्सरिन्तमः ६३,२; ४४९ । ६७,२; ५६९ । ७६,५; ६७५ । ९९,८; ९३४
मदः-दाः-दासः १७,३; १३९ । २३,७; १८६ । २५,१; १९४ । २७,५; २१० । ४६,६; ३२५ । ६१,१७,१९; ४०४,४०६ । ६२,१४; ४३१ । ६३,१६; ४६३ । ६८,३; ६०२ । ६९,७; ६१६ । ७८,४; ६८४ । ७९,५; ६९० । ८०,२; ६९२ । ८५,२; ७१७ । ८६,१-२,३५; ७२८-७२९,७६२ । ९७,२; ८५८ । ९९,३; ९२९ । १०१,४; ९४७ । १०४,२; ९७५ । १०५,२; ९८१ । १०७,१७; १०१६ । १०८,१; १०२६ । १०,२५,१०; ११६९
मदच्युत् १२,३; ९७ । ३२,१; २३६ । ५३,४; ३५९ । ७९,२; ६८७ । १०८,११; १०३६
मदानां पतिः १०४,५; ९७८
मदिन्तमः १५,८; १२८ । २५,६; १९९ । ५०,४,५; ३४४,३४५ । ६७,१८; ५८५ । ७४,९; ६६५ । ८०,३; ६९३ । ८५,३; ७१८ । ८६,१,१०; ७२८,७३७ । ९६,१३; ८४५ । ९९,६; ९३२ । १०८,५,१५; १०३०,१०४० । १,९१,१७; १११७
मदिरः-रासः ८५,७; ७२२ । ८६,२; ७२९ । ९७,१५; ८७१ । १०७,१२; १०११ ।
मदिष्ठः ६,९; ४९ । ६,४७,२; ११२८
मदाः ते आहनसः विहायसः ७५,५; ६७०
मदाय जुष्टः ९७,१९; ८७५
मदेषु सर्वधाः १८,१-७; १४५-१५१
मद्यः ३८,५; २७६ । ८६,३५; ७६२
मद्वा ८६,३५; ७६२
मधु ११,५; ९० । १८,२; १४६ । ३९,१; २८१ । ५१,३; ३४८ । ६९,२; ६०० । ७०,८; ६२७ । ७१,४; ६३३ । ७२,२; ६४० । ७४,३; ६५९ । ८,४८,१; ११३५
मधुजिह्वाः ७३,४; ६५१
मधुपृष्ठः ८९,४; ७९६
मधुमान्-मन्तः ६१,९; ३९६ । ६३,३; ४५० । ६८,१,८; ६००,६०७ । ६९,२; ६११ । ८०,५; ६९५ । ८५,१०; ७२५ । ७७,१; ६७६ । ८५,६; ७२१ । ८६,१; ७२८ । ८७,४; ७७९ । ९६,१३; ८४५ । ९७,४८; ९०४ । १०६,७; ९९२ । ११०,११; १०७४ । ६,४७,१; ११२७
मधुमत्तमः-माः २२,१; ९५ । ३०,५-६; २२८-२२९ । ५१,२; ३४७ । ६२,२१; ४३८ । ६३,१६,१९; ४६३,४६६ । ६४,२२; ४९९ । ६७,१६; ५८३ । ८०,४; ६९४ । १००,६; ९४० । १०१,४; ९४७ । १०५,३; ९८२ । १०८,१,१५; १०२६,१०४०
मध्वः अंशुः ८९,६; ७९८
मध्वः अयासः ८९,३; ७९५
मध्वः रसः ६२,६; ४२३
मध्वः सूदः ९७,४४; ९००
मधुश्चुत् ५०,३; ३४३ । ६५,८; ५१५ । ६६,११; ५४८ । ६७,९; ५७६
मनः चित् ११,८; ९३
मनसः जवीयान् ९७,२८; ८८४
मनसस्पतिः ११,८; ९३ । २८,१; २११
मनीषी षिणः ६५,२९; ५३६ । ७८,३; ६८३ । ९६,८; ८४० । ९७,५६; ९११ । १०७,१४; १०१३
मनीषी प्रथमः ९१,१; ८०६

मनुषः ७१,४; ६४१
मनोता धिया ९१,१; ८०६
मन्दमानः ६५,५; ५१२
मन्दयन् ६७,१६; ५८३
मन्दानः ४७,१; ३२६
मन्दी-न्दिन: ५८,१,४; ३७६,३७९ । १०१,४; ९४७ ।
१०७,९; १००८
मन्द्रः ६५,२९; ५३६ । ६७,१; ५६८। ६८,६; ६०५।
१०९,८; १०४९
मन्द्रतमाः ९७,२६; ८०१
मयोभूः ६५,२८; ५३५ । ७८,४; ६८४
मरुद्वृणः ६६,२६; ५६३
मरुत्वान्-त्वन्तः १०७,२५; १०२४ । ६,४७,५: ११३१
मर्ज्यः १५,७; ११७ । ३४,४; २५१ । ६३,२०; ४६७।
१०७,१३; १०१२
मर्त्यानां राजा ९७,२४; ८००
मर्मृजानः-नासः ६४,१७; ४९४ । ७०,५; ६१४ । ९१,२;
८०७ । ९५,४; ८३१
मर्मृजानः अविभिः ८६,११; ७३८
मर्मृजानः आयुभिः ५७,३, ३७४। ६६,१३; ५६०
मर्मृजानः सिन्धुभिः ८६,११; ७३८
मर्मृज्यमानः ८५,५; ७२०
मर्मृज्यमानः आयुभिः ६१,१३; ४३०
मर्यः ९७,१८; ८७४
महः ७२,७; ६४५
महाम् (द्वि०) ६५,१; ५०८
महान् २,४,६; १४,१६ । ९,३; ७० । ६६,१६; ५५३।
७७,५; ६८०। १०९,४; १०४५। ६,४७,५; ११३७
महान् जायमानः ५९,४; ३८३
महागयः [अग्निः] ६६,२०; ५५७
महामहिव्रतम् ४८,२; ३३२
महि ७४,३; ६५९ । १०८,१; १०२६
महिव्रतः ९७,७; ८६९ । १०१,९; ९४३
महिषः ८२,३; ७०३। ८६,४०; ७६७। ९६,१८,१९;
८५०,८५१ । ९७,४१; ८९७ । १०३,५; १००४ ।
११३,३; १०८५
महिषः मृगाणाम् ९६,६; ८३८
महीनां शिशुः १०१,१; ९६०
महे (च०) ६५,७; ५१४
मादयन् देवजनम् ८०,५; ६९५ । ८४,३; ७१३
मादयित्नुः १०१,१; ९४४
मिक्षमाणः ७०,१; ६११
मित्रः-त्राः ७७,५; ६८० । १०१,१०; ९५३ । १,९१,३;
११०३
मित्राय जुष्टः १०८,१६; १०४१
मीढ्वान् ६१,१३; ४१० । ७४,७; ६६३ । ८५,४; ७१९ ।
१०७,७; १००६ । ८,७९,९; ११५८
मूर्धा १,४३,९; ११००
मृगाणां महिषः ९६,६; ८३८
मृजानः अद्भिः १०९,१७; १०५८
मृजानः अप्सु ९६,१०; ८४१
मृजानः तन्वम् ९६,२०; ८५१
मृज्यमानः ३०,२; २२५ । १०७,२१; १०२०
मृज्यमानः कविभिः ७४,९; ६६५
मृज्यमानः गभस्त्योः २०,६; १६४ । ३६,४; २६३ ।
६४,५; ४८२ । ६५,६; ५१३
मृज्यमानः मनीषिभिः ६४,१३; ४९०
मृज्यमानः सुकर्मभिः दशभिः ७०,४; ६१३
मृधः बाधमानः ९७,४३; ८९९
मृष्टाः २२,४; १७६
मृळयाकुः ८,७९,७; ११५६
मेधिरः ६८,४; ५९२
मेध्यः १०७,११; १०१०
यज्ञः १०१,३; ९४६
यज्ञपतिः वा०य० ८,२५; ११०४
यज्ञसाधनः ७२,४; ६४२
यज्ञस्य आत्मा ६,८; ४८
यज्ञस्य केतुः ८६,७; ७३४
यज्ञस्य ज्योतिः ८६,१०; ७३७
यज्ञस्य पूर्व्यः आत्मा २,१०; २०
यज्ञियः ७१,६; ६३५ । ७७,५; ६८०
यतः ६४,२९; ५०६
यतः नृभिः १०८,१५; १०४०
यतः वाजिभिः ६४,१५; ४९२
यतः वृषभिः ३४,३; २५०
यतिः ७१,७; ६३६
यशाः अथ० ६,५८,३; १२५४
यशसः ८,४८,५; ११३९
यशस्तरः ९७,३; ८५९
यातयन् इषः जनाय ३९,२; २७९

युजानः पदं ऋक्वभिः ६४,१९; ४९६
युजानः वृषभिः ९७,१८; ८८४
युजानः हरितः ८६,३७; ७६४
युत्सु अषाळहः १,९१,२१; ११११
युत्सु प्रथमः ८९,३; ७९५
युवा ९,५; ७२ । ६७,२९; ५९६
येमानः नृभिः ७५,३; ६६८ । १०७,१६; १०१५ ।
१०९,८,१८; १०४९,१०५९
रंहमाणः ११०,३; १०६६
रक्षमाणः वृजनम् ८७,२; ७७७
रक्षांसि अपजङ्घनत् ४९,५; ३४०
रक्षांसि सेधन् ११०,१२; १०७५
रक्षितः बार्हतैः १०,८५,४; ११७४
रक्षोहा १,२; २ । ३७,३; २६८ । ६७,२०; ५८७
रघुयामा ३९,४; २८१
रघुवर्तनिः ८१,२; ६९७
रजस्तुरः ४८,४; ३३४ । १०८,७; १०३२
रण्यः ९६,९; ८४१ ।
रण्यजित् ५९,१; ३८०
रत्ना दधानः दमेदमे सप्त ६,७४,१; ११११३
रत्नानि दाशुषे दधत् ३,६; २६
रथः ३८,१; २७२
रथजित् ७८,४; ६८४
रथिरः ९७,४६,४८; ९०२,९०४
रथिरः गविष्टिषु ७६,२; ६७२
रथीतमः ६६,२६; ५६३
रथ्यः १६,२; १३०
रन्ता विश्वेषु काव्येषु ९१,३; ८१४
रयिपतिः २,४०,६; १२२२
रयिपतिः रयीणाम् ९७,२४; ८८०
रयिषाट् ६८,८; ६०७
रयिं तुञ्जानः ८७,६; ७८१
रयीणां जननः २,४०,१; १२१७
रयीणां पतिः १०१,६; ९४९
रयीणां रयिपतिः ९७,२४; ८८०
रयीणां सिषासतुः ४७,५; ३३०
रसः ६,६; ४६ । ३८,५; २७६ । ६२,६; ४१३ । ७६,१; ६७१ । ७७,५; ६८० । ७९,५; ६९० । ८४,५; ७१५
रसः इन्द्रियः ४७,३; ३२८ । ८६,१०; ७३७
रसः सोम्यः ६७,८; ५७५
रसः संभृतः ऋषिभिः ६७,३१,३२; ५९८,५९९
रसवान् ६,४७,१; ११२७
रसः यस्य मद्यः तीव्रः ६५,१५; ५२२
रसाय्यः ९७,१४; ८७०
रसी ११३,५; १०८७
राजा १०,३; ८८ । ४८,३; ३३३ । ६१,१७; ४०४ । ६५,१६; ५२३ । ७८,१; ६८१ । ८३,५; ७१० । ८५,३,९; ७१८,७२४ । ८६,८,४०,४५; ७३५,७६७, ७७२ । १०७,१५,१६; १०१४,१०१५ । १०८,८; १०३३ । ११३,४; १०८६ । ११४,२,४; १०९५,१०९७ । ८,७९,८,९; ११५७,११५८ । १०,२५,७; ११६६ । १,९१,३-५; ११०३-११०५ । ६,७५,१८; ११२८ । १०,१६७,३; १२३९ । अथर्व० ५,३,७; ११८७ । ६,६८,३; १२५५ । ६,९९,३; १२६० । वा० य० २,२६; ११९६
राजा देवानाम् ९७,२४; ८८०
राजा भुवनस्य ९६,१; ८४२ । ९७,४०; ८९६
राजा मर्त्यानाम् ९७,२४; ८८०
राजा विश्वस्य ७६,४; ६७४
राजा विश्वस्य भुवनस्य ९७,५६; ९१२
राजा वृजनस्य ९७,१०; ८६६
राजा वृजन्यस्य ९७,२३; ८७९
राजा सिन्धूनाम् ९६,३३; ७६० । ८९,२; ७९४
रायाम् आनेता १०८,१३; १०३८
रिशादाः ६९,१०; ६१९
रीत्यापः १०६,९; ९९४
रुजत् वि दळहा ३४,१; २४८
रुक्षणिः शतं पुरः ४८,२; ३३२
रेतोधाः ८६,३९; ७६६
रेभः ७,६; ५५ । ६६,९; ५४६ । ८६,३१; ७५८
रेभन् ९६,६,१७; ८३८,८४९ । ९७,१,७,४७; ८५७, ८६३,९०३ । १०६,१४; ९९९
रोचना दिवः ३७,३; २६८
रोचमानः १११,२; १०७७
रोचयन् रुचा प्रत्नवत् ४९,५; ३४०
रोदस्योः जनिता ९०,१; ८००
लोककृत् ८६,२१; ७४८
लोककृत्नु २,८; १८
वक्वा ७५,२; ६६७
वचोविद् ९१,३; ८०८
वज्रः इन्द्रस्य ७२,७; ६४५ । ७७,१; ६७६

वध्रः सहस्वसा भुवत् ४७,३; ३१८
वत्सः १९,४; १५५
वदन् ऋतम् ११३,४; १०८६
वदन् श्रद्धाम् ११३,४; १०८६
वदन् सत्यम् ११३,४; १०८६
वधस्नुः ५२,३; ३५३
वधूयुः ६९,३; ६१२
वनक्रक्षः १०८,७; १०३१
वनवत् ७७,४; ६७९
वनस्पतिः १,९१,६; ११०६
वना वसानः ९०,२; ८०१
वनानां स्वधितिः ९६,६; ३८
वने क्रीळन् ६,५; ४५। १०६,११; ९९६
वने चक्रदः १०७,२२; १०२२
वन्वन् पृत्सु ९६,८; ८४०
वपुष्टरः वपुषः ७७,१; ६७६
वयः ८,४८,१; ११३५
वयस्कृतः २१,२; १६७। ६९,८; ६१७
वयोजुवः ६५,२६; ५३३
वयोधाः ८१,३; ६९८। ९०,२; ८०१। ९६,१२; ८४४। ११०,११; १०७४। ८,४८,१५; ११४९
वय्यः ६८,८; ६०७
वरः ९७,२२; ८७८
वराहः ९७,७; ८६३
वरिवांसि कृण्वन् ९७,१६; ८७२
वरिवोधातमः १,३; ३
वरिवोविद्-दः २१,२; १६७। ३७,५; २७०। ६१,१२; ३९९। ६२,९;४२६। ९६,१२;८४४। ११०,११;१०७४
वरिवोवित्तरः ८,४८,१; ११३५
वरुणः ७३,३; ६५०। ७७,५; ६८०। ९५,४; ८३१। १,९१,३; ११०३
वरुणेन शिष्टः अथ० ३,५,४; ११७९
वरुणाय जुष्टः १०८,१६; १०४१
वरूथं उरु ८,७९,३; ११५१
वरेण्यः ६१,१९; ४०६
वर्णम् ६५,८; ५१५
वर्धनः ९७,३९; ८९५
वर्धन्तः इन्द्रम् ६३,५; ४५१
वर्धयन् ५१,४; ३४९
वर्धिता ९७,३९; ८९५
वर्पांसि दुहितुः तिरोदधानः ९७,४७; ९०३
वर्धयन् द्याम् उत इमाम् ९६,३; ८३५
वशी वा०य० ८,५०; १२०९
वसानः अपः १६,२; १३० । ७८,१; ६८१ । ८६,४०; ७६७ । ९६,१३; ८४५ । १०७,४,१८,२६; १००३, १०१७,१०२५ । १०९. १०६१
वसानः ऊर्जम् ८०,३;
वसानः गाः अपः ३१,१; ६९६
वसानः घृतम् ८२,२; ७०१
वसानः [illegible]पिम् ८६,१४; ७४१
वसानः [illegible] ८३,५; ७१०
वसानः [illegible]णा ७,४; ५३
वसानः भद्रा वस्त्रा ९७,२; ८५८
वसानः वना ९०,२; ८०१
वसानः शर्म त्रिवरूथम् अप्सु ९७,४७; ९०३
वसुः ९८,५; ९११
वसुविद् ८६,३९; ७६६। ९६,१०; ८४२। १०१,११; ९५४। १०४,४; ९७७। १,९१,१२; ११११२
वसु आदधानः ९०,१; ८००
वसूनि विश्वा बिभ्रत् १०८,११; १०३६
वसूनाम् आनेता १०८,१३; १०३८
वस्त्रा वसानः ९७,२; ८५८
वस्वः उत्सः ९७,४४; ९००
वह्निः २०,५,६; १६३,१६४। ३६,२; २६१। ६४,१९; ४९६। ६५,२८; ५३५
वह्निः विशाम् १०८,१०; १०३५
वाचः पतिः २६,४; २०३
वाचस्पतिः १०१,५; ९४८
वाचम् इष्यन् ९५,५; ८३१
वाचं जनयन् ७८,१; ६८१। १०६,१२; ९९७
वाचं हिन्वानः ९७,३२; ८८८
वाजगन्ध्यः ९८,१२; ९१६
वाजपस्त्यः ९८,१२; ९१६
वाजयन् अपः ६८,४; ६०३
वाजयुः ४४,४; ३११। ६३,१९; ४६६। १०३,६; ९७३। १०६,१२; ९९७। १०७,११; १०१०
वाजयुः देववीतौ ९६,१४; ८४६
वाजसनिः ११०,११; १०७४
वाजसाः २,१०; ८२०
वाजसातमः ६६,२७; ५६४। १०१,६; ९४०

वाजानां पतिः ३१,१; २३१
वीजी-जिनः १४,७; ११९। १५,५; १२५। १७,७; १४३। ११,७; १७२। २२,१; १७३। २६,१; २००। २८,१; २१२। ३६,१; २६०। ३७,३; २६८। ४५,४; ३१७। ५३,४; ३५९। ६२,२,१८; ४१९, ४३५। ६३,१७; ४६४। ६४,२९; ५०६। ६५,११; ५१८। ६६,१०; ५४७। ७४,१; ६५७। ८०,१; ६९१। ८६,११; ७३८। ८७,१; ७७६। ८९,४; ७९६। ९७,१०; ८६६। १०६,११; ९९६। १०७,५; १००४। १०९,६,१०,१७,१९; १०४७,१०५१,१०५८, १०६०
वायवे जुष्टः १०८,२६; १०४१
वावशानः ९३,२,४; ८१९,८२१। ९५,४; ८३१। ९६,१४; ८४६
वावृधानः ८५,१०; ७२५
विघ्नन् दुरितानि ९७,१६; ८७२
विघ्नन्तः पुरु दुरिता ६१,२; ४१९
विघ्नन् रक्षांसि १७,३; १३९। ३७,१; २६६
विचक्षणः १२,४; ९८। ३७,२; २६७। ५१,५; ३५०। ६६,२३; ५६०। ७०,७; ६२६। ७५,१; ६६६। ८५,९; ७२४। ८६,११,१९,२३,३५; ७३८,७४६, ७५०,७६२। ९६,१; ८३४। ९७,२; ८५८। १०६,५; ९९०। १०७,३,५,७,१६,२४; १००२,१००४,१००६, १०१५,१०२३
विचक्षाणः ३९,३; २८०
विचरन् मातरा ६८,४; ६०३
विचर्षणिः ११,७; ९२। १८,५; २१६। ४०,१; २८४। ४१,५; २९४। ४४,३; ३१०। ४८,५; ३३५। ६०,१, ४; ३२५,३९८। ६२,१०; ४२७। ६७,२२; ५८९। ८४,१; ७११
विततः दिवस्पदे ८३,२; ७०७
विततः पवित्रे ७३,९; ६५६
विदत् गातुम् ९६,१०; ८४२
विदानः व्रता आयुधा ३५,४; २५७
विदानाः अस्य (ऋतस्य) योजनम् ७,१; ५०
विद्वान् ७०,१०; ६२९। ७३,८; ६५५। ७७,४; ६७९
विद्वान् देवानां उभयस्य जन्मनः ९१,२; ६९७
विधानैः गुपितः १०,८५,४; ११७४
विपश्चित्-तः ११,३; ९७। २३,३; १७५। ३३,१; २४२। ८६,३६,४४; ७६३,७७१। ९६,२२; ८५४। १०१,१२, ९५५
विप्रः १३,२; १०५। १८,१; १४६। ४०,१; २८४। ६५,२९; ५३६। ६६,८; ५४५। ८४,५; ७१५। ९७,३७; ८९३। १०७,६,७; १००५,१००६। ८,७९,१; ११५०
त्रिप्रवारिः ४४,५; ३११
विप्राणाम् ऋषिः ९६,६; ८३८
विभूवसुः ७२,७; ६४५। ८६,१०; ७३७
विभूत्वा ९६,१९; ८५१
विमानः अह्नाम् ८६,४५; ७७२
विमानः रजसः ६२,१४; ४३१
विरोचयन् ३९,३; २८०
विवस्वतः आपानसः १०,५; ८१
विवेविदत् इन्द्रस्य सख्यम् ८६,९; ७३६
विशां वह्निः १०८,१०; १०३५
विश्वचक्षाः ८६,५; ७३२
विश्वचर्षणिः १,२; २। ६६,१; ५३८
विश्वजित् ५९,१; ३८०। ८,७९,१; ११५०
विश्वतो गोपाः १०,२५,७; ११६६
विश्वदर्शतः ६५,१३; ५२०। १०६,५; ९९०
विश्वदेवः ९२,३; ८१४। १०३,४; ९७१
विश्ववारः ८८,३; ७८७। ९१,५; ८१०
विश्ववित् २७,३; २०८। २८,१,५; २१२,२१६। ६४,७; ४८४। ८६,२९,३९; ७५६,७६६। ९७,५६; ९१२
विश्ववेदाः १,९१,२; ११०२
विश्वस्मै साधारणः ४८,४; ३३४
विश्वस्य ईशानः १०१,५; ९४८
विश्वस्य भुवनस्य गोपाः २,४०,१; १२१७
विश्वस्य भुवनस्य राजा ९७,५६; ९१२
विश्वायुः ८६,४१; ७६८
विष्टपः ऋतस्य ३४,५; २५२
विष्टम्भः २,५; १५
विष्टम्भः दिवः ८६,३५; ७६२। ८७,२; ७७७। ८९,६; ७९८। १०८,१६; १०४१
विष्णोः जनिता ९६,५; ८३७
विहायाः ८,४८,११; ११४५
वीतिराधाः ६२,२९; ४४६
वीतये साधनः १०५,३; ९८९

वीरः ३५,३; २५६। १०१,१५; ९५८। ११०,७; १०७०
वीरः [पर्णमणिः] अथ० ३,५,८; ११८३
वीरयुः ३६,६; २६५
वीरुधाम् अधिपतिः अथ० ५,२४,७; ११८४
वीरुधां पतिः ११४,२; १०९५
वीर्यं वर्धन्तः (इन्द्रस्य) ८,१; ५९
वृकः ७९,३; ६८८
वृजनं रक्षमाणः ८७,२; ७७७
वृजनस्य गोपाः १,९१,२१; ११२१
वृजनस्य राजा ९७,१०; ८६६
वृजन्यस्य राजा ९७,२३; ८७९
वृजिनस्य हन्ता ९७,४३; ८९९
वृत्रहा २५,३; १९६। २८,३; २१४। ३७.५; २७०। ८९,७; ७९९। ९८,५; ९११। १,९१,५; ११०५
वृत्रहन्तमः १,३; ३। २४,६; १९२। १०,२५,९; ११६८
वृत्राणां हन्ता ८८,४; ७८८
वृत्राणि घ्नन्तः १७,१; १३७
वृषन्-षा २,१,२,६; ११,१२,१६। ६,१,६; ४१,४६। ७,३; ५२। १०,६; ८२। १९,३; १५४। २५,३; १९६। २७,३,६; २०८,२११। २८,४; २१५। २९,१; २१८। ३४,३; २५०। ३७,१,५; २६६,२७०। ३८,१; २७२। ४०,२,६; २८५,२८९। ५१,४; ३४९। ६१,२८; ४१५। ६२,११; ४२८। ६३,२०,२१; ४६७,४६८। ६४,१,२,३; ४७८,४७९,४८०। ६५,४,१०; ५११,५१७। ७०,९; ६२८। ८०,२,३; ६९२,६९३। ८१,२; ६९७। ८२,१; ७०१। ८६,३,७,११,१२,१९,३१,४४; ७३०,७३४,७३८,७३९,७४६,७५८,७७१। ८७,२४; ७७९। ९०,२; ८०१। ९१,३; ८०८। ९३,२; ८११। ९६,७; ८३९। ९७,१३,४०; ८६९,८९६। १०१,१६; ९५६। १०७,२२; १०११। १०८,१२; १०३७। १,९१,२; ११०२। २,४०,३; ११११९
वृषा वृषत्वेभिः महित्वा १,९१,२; ११०२
वृषभिः यतः ३४,३; २५०
वृषाभिः युजानः ९७,१८; ८८४
वृषच्युताः ६९,७; ६१६
वृषयुः ७७,५; ६८०
वृषव्रतः ६१,११; ४१८। ६४,१; ४७८
वृषभः १९,४; १५५। ७०,७; ६२६। ७२,७; ६४५। ७४,५; ६७५। ८०,५; ६९५। ८५,९; ७२४। ८६,३८; ७६५। १०८,८,११; १०३३,१०३६। ११०,९; १०७२। ६,४७,५; ११३१
वृष्टयः २२,२; १७४
वृष्टिद्यावः १०६,९; ९९४
वृष्टिमान् २,९; १९
वेधाः २,३; १३। १६,७; १३५। २६,३; २०२। १०२,४; ९६३। १०३,१; ९६८
वेविजानः ७१,२; ६९७
व्यक्तः ७१,७; ६३६
व्यश्नवत् रश्मिभिः ६६,२७; ५६४
शंसन् नित्रचनानि ९७,२; ८५८
शकुन ८५,११; ७२६। ९६,१९; ८५१
शताँ-वान् ८७,९; ७८४
शतधारः ८५,४; ७१९। ८६,११; ७३८। ९६,१४; ८४६
शतवाजः ९६,९; ८४१। ११०,१०; १०७३
शतामघः ६२,१४; ४३१
शत्रून् अपघ्नन् ९६,२३; ८५५
शं दिवे पृथिव्यै प्रजायै १०९,५; १०४६
शम्भविष्ठः ८८,३; ७८७
शर्धाय साधनः १०५,३; ९८२
शर्याणि तान्वा जहत् १४,४; ११६
शवसस्पतिः ३६,६; २६५
शिवः सखा १०,२५,९; ११६८
शिशानः शृङ्गे ७०,७; ६२६
शिशुः १,९; ९। ८५,११; ७२६। ८६,३१,३६; ७५८,७६३। ९६,१७; ८४९। १०९,१२; १०५३। १०,८५,१; ११३८
शिशुः दिवः ३३,५; २४६। ३८,५; २७६
शिशुः महीनाम् १०२,१; ९६०
शिष्टः वरुणेन अथ० ३,५,४; ११७९
शुक्रः-क्राः-क्रासः २१,६; १७१। ३३,२; २४३। ४६,४; ३२३। ६३,१४,२५; ४६१,४७२। ६४,४,२८; ४८१,५०५। ६५,२६; ५३३। ६६,५,२४; ५४२,५६१। ६७,१८; ५८५। ९७,१०,३२; ८७६,८८८। १०९,३; १०४४। ५,६; १०४६-४७। वा०य० ८,४८,४९; १२०६-७
शुचिः ९,३; ७०। २४,६,७; १९२,१९३। ७०,८; ६२७। ७२,४; ६४२। ७५,४; ६६९। ८६,१३; ७४०। ८८,८; ७९२। १,९१,३; ११०३
शुचिबन्धुः ९७,७; ८६३
शुद्धः ७८,१; ६८१

शुभ्रः १४,५; ११७ । ६१,५; ४११ । ६३,२६; ४७३ । ९६,१०; ८५१ । १०७,२४; १०२३

शुभ्रशस्तमः शुभ्रेभिः ६६,२६; ५६३

शुम्भमानः ऋतायुभिः ३६,४; २६३ । ६४,५; ४७२

शुष्मः ७९,५; ६९०

शुष्मी १४,३; ११५ । १८,७; १५१ । २७,६; २११ । २८,६; २१७ । ३०,१; २२४ । ४१,३; २९२ । ७१,१; ६३० । ८८,७; ७९१

शूरः १५,१; १२१ । ८९,३; ७९५ । ९६,१, ८३३

शूरग्रामः ९०,३; ८०१

शूरतरः शूरेभ्यः ६६,१७; ५६५

शूषः ७१,२; ६३१

शृंगाणि दोधुवत् १५,४; १२४

शोचन्तः ऋचा ७३,५; ६५१

शोणः ९७,१३; ८६९

श्येनः ९६,१९; ८५१

श्येनः गृध्राणाम् ९६,६; ८३८

श्येनज्यूतः ८९,२; ७९४

श्येनभृतः ८७,६; ७८१

श्रद्धां वदन् ११३,४; १०८६

श्रवस्यवः १०,१; ७७

श्रितः गौरी अधि १२,३; ९७

श्रितः सिन्धोः ऊर्मा अधि १४,१; ११३

श्रितः सिन्धुषु ८६,८; ७३५

श्रियः विश्वाः अभि अर्षन् १६,६; १३४ । ६२,१९; ४३६

श्रिये जातः ९४,४; ९२६

श्रीणन् अपः १०९,२१; १०६३

श्रीणानः गोभिः १०९,१७; १०५८

श्रीणानाः अप्सु २४,१; १८७ । ६५,२६; ५३३

श्रुष्टी जातासः १०६,१; ९८६

श्लोकयन्त्रासः ७३,६; ६५३

संयत ८६,४७; ७७४

संयतः ६९,३; ६१२

संवसानः २६,४; २०३

संविदानः पितृभिः ८,४८,१३; ११४७

संवृक्तधृष्णुः ४८,२; ३३२

संशिशानः ९०,१; ८००

सक्षणिः हर्म्यस्य ७८,३; ६८३

सखा १,९१,१५,१७; १११५,१११७;

सखा शिवः १०,२५,९; ११६८

सखा इन्द्रस्य ९६,२; ८३४ । १०१,६; ९४९ । १०,२५,९; ११६८ ।

सखा सखिभ्यः ६६,१,४; ५३८,५४१

सख्यं जुषाणः इन्द्रस्य ९७,११; ८६७ । ८,४८,२; ११३६

सचमानः अपाम् ऊर्मिम् ९६,१९; ८५१

सचमाणः ऊर्मिणा ७४,५; ६६१

संजग्मानः स्वस्तये ६४,३; ५०७

संजयन् विश्वा वसूनि २९,४; २२१

सत्ता ८६,६; ७३३

सत्पतिः १,९१,५; ११०५

सत्यः ९२,६; ८१७

सत्यं वदन् ११३,४; १०८६

सत्यानि कृण्वन् ७८,५; ६८५

सत्यकर्मा ११३,४, १०८६

सत्यमन्मा ९७,४८; ९०४

सत्यशुष्मः ९७,४६; ९०२

सत्राजित् २७,४; २०९

सत्वा ८७,७; ७८२

सदावान् ९०,३; ८०२

सदावृधः ४४,५; ३११

सदासरः ११०,४; १०६७

सधमाद्यः २३,६; १८५

सधस्था त्री १०३,२; ९६९

सन् ८६,५,६; ७३२,७३३

सनद्रयिः ५२,१; ३५१

सनिता धनानि ९०,३; ८०२

सन्ततिः ६९,२; ६११

सन्ददिः ९९,७; ९३३

सन्दहतः अव्रतान् ७३,५; ६५१

सप्तिः २९,२; २१९

सबर्दुघः धीनाम् अन्तः १२,७; १०१

समत्सु अषाळ्हः ९०,३; ८०१

समनाः ९६,९; ८४१

समाहृताः देवैः साम १३०१; १२१२

समितीः इयानः ९२,६; ८१७

समुद्रः २,५; १५ । ६४,८; ४८५ । ८६,२९; ७५६ । ९७,४०; ८९६ । १०१,६; ९४७ । १०९,४; १०४५

समुद्रियः १०७,१६; १०१५

समुद्रे आहितः ६४,१९; ४९६

संपश्यन् विश्वा भुवना १०,२५,६; ११६५

सम्भृतः ऋषिभिः ६७,१९; ५९८ । साम० १३००; १२११
सम्मनसः अथ० ६,७३,१; ११५६
संमिश्लः ६१,११; ४०८
सयोनिः [पर्णमणिः] अथर्व० ३,५,८; ११८३
सर्गाः सृष्टाः २२,१; १७३
सर्वधाः मदेषु १८,१-७; १४५-१५१
सर्ववीरः ९०,३; ८०२
सविता ९७,४८; ९०४
सस्वांसः २२,४; १७६
सखिः २४,४; १९०
सहः ७१,४; ६३३
सहमानः अभिमातीः ३,६२,१५; ११२६
सहमानः पृतन्यून् ११०,१२; १०७५
सहसावन् १,९१,२३; ११२३
सहस्र-अ (स्रा) प्साः ८८,७; ७९१
सहस्र-ऊ (स्रो) तिः ६२,१४; ४३१ । ६५,७; ५१४
सहस्रचक्षाः ६०,१,२; ३८४,३८५
सहस्रजित् ५५,४; ३६७ । ७८,४; ६८४ । ८०,४; ६९४ । ८४,४; ७१४
सहस्रधारः १३,१; १०४ । ८०,४; ६९४ । ८६,७, ३३; ७३४,७६० । ८९,१; ७९३ । ९६,९; ८४१ । ९७,५,१९; ८६१,८७५ । १०१,६; ९१९ । १०७,१७; १०१६ । १०८,८,११; १०३३,१०३६ । १०९,१६, १९; १०५७,१०६० । ११०,१०; १०७३ । साम० १३०२; १२१३
सहस्रनी-णीतिः ७१,७; ६३६
सहस्रनी-णीथः ८५,४; ७१९ । ९६,१८; ८५०
सहस्रपाजसः १३,३; १०६ । ४२,३; २९८
सहस्रभर्णस् ६०,२; ३८५
सहस्रभृष्टिः ८३,५; ७१० । ८६,४०; ७६७
सहस्रयामा १०६,५; ९९०
सहस्ररेतः ९६,८; ८४० । १०९,१७; १०५८
साधनः दक्षाय ६२,२९; ४४६
साधनः दक्षाय शर्धाय वीतये १०५,३; ९८?
साधारणः विश्वस्मै ४८,४; ३३४
सानसिः भराय १०६,२; ९८७
साम कृण्वन् ९६,२२; ८५४
सासहिः समत्सु ४,८; ३८
सासह्वान् शत्रून् ११०,१२; १०७५
साह्वान् २०,१; १५९ । ९०,३; ८०२ । १०५,६; ९८५
सिंहः ८९,३; ७९५
सिक्तः ९७,१५; ८७१
सिन्धुमाता ६१,७; ३९४
सिन्धुषु अन्तः उक्षितः ७२,७; ६४५
सिन्धुषु श्रितः ८६,८; ७३५
सिन्धूनां ऋाणा ८६,१९; ७४६
सिन्धूनां राजा ८६,३३; ७६० । ८९,२; ७९४
सिषासन् अपः ९०,४; ८०३
सिषासन् तृतीयं धाम ९६,१८; ८५०
सिषासितुः रयीणाम् ४७,५; ३३०
सदिन् ऋतस्य योनिम् आ ६४,११; ४८८
सीदन् योना वनेषु आ ६२,८; ४२५
सीदन् वनस्य जठरे ९५,१; ८२८
सुक्रतुः २,३; १३ । ११,४; ९८ । ४८,३; ३३३ । ६३,२८; ४७५ । ६५,३; ५३७ । ७०,६; ६२५ । ७२,८; ७४६ । ७३,८; ६५५ । ७४,३; ६५९ । १०२,३; ९६२ । १०,२५,८; ११६७
सुक्रतुः क्रतुभिः १,९१,२; ११०२
सुक्षितिः १,९१,२१; ११२१
सुक्षितीनाम् आनेता १०८,१३; १०३८
सुतः-सुताः २,३; १३ । १०,४; ८० । १६,७; १३५ । २४,७; १९३ । २७,३; २०८ । २९,१; २१८ । ३२,१; २३६ । ३३,३; २४४ । ३७,१; २६६ । ३८,६; २७७ । ३९,३,५; २८०,२८२ । ४०,२; २८५ । ४१,४; २९३ । ४२,२; २९७ । ४४,३; ३१० । ५१,४,५; ३४९,३५० । ६१,८,२८; ३९५,४१५ । ६२,१९; ४३६ । ६३,३, ६,१०,१५; ४५०,४५३,४५७,४६२ । ६६,७; ५४४ । ६७,२,११,१८; ५६९,५७९,५८५ । ६८,७; ६०६ । ६९,९; ६१८ । ८१,१; ६९६ । ९७,१,३५; ८५७, ८९१ । १००,४,५,६; ९३८,९३९,९४० । १०१,१,४; ९४४,९४७ । १०६,९; ९९४
सुतः अद्रिभिः २४,५; २८१ । ५१,१; ३४६ । ६३,१३; ४६० । ६८,९; ६०८ । ७१,३; ६३२ । ७१,४; ६६९ । ८६,२३; ७५० । १०९,१८; १०५९
सुतः हस्तच्युतेभिः अद्रिभिः ११,५; ९०
सुतः अद्रिभिः नृभिः ८६,३४; ७६१
सुतः ऋजीषेण वा०य० १९,७२; ११०९
सुतः ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा ११३,२; १०८४
सुतः ग्रावभिः ८०,४; ६९४

❀

सुतः धारया ३,१०; ३० । ७२,५; ६४३
सुतः नृभिः ६२,५,१६; ४२२,४३३ । ८६,३४; ७६१
सुतः इन्द्राय पातवे १,१; १ । १६,३; १३१
सुतः देवेभ्यः ३,९; २९ । २८,२; २१३ । ९९,७; ९३३ ।
१०३,६; ९७३
सुतः मरुत्वते १०७,१७; १०१६
सुतः भराय ६,६; ४६
सुतः चम्वोः ३६,१; २६०
सुताः यज्ञस्य सादने १२,१; ९५
सुदक्षः ८७,२; ७७७ । १०५,४; ९८३ । १०८,१०; १०३५ । १,९१,२; ११०१
सुदुघाः साम० १३००; १२११
सुदृशीकः ८६,४५; ७७२
सुधारः १०९,७; १०४८
सुन्वानः १०१,१३; ९९६
सुपर्णः ७१,९; ६३८ । ८५,११; ७२६ । ८६,१; ७२०
सुपर्ण्यः ८६,३७; ७६४ । ९७,३३; ८८०
सुपेशाः ७९,५; ६९० । ८१,१; ६९६
सुभ्वः ७९,५; ६९०
सुमंगलः ८०,३; ६९३
सुमतिः ८८,७; ७९१
सुमनाः १,९१,४; ११०४
सुमनस्यमानः ६,७४,४; १२२६
सुमित्रः १,९१,१२; ११११
सुमृळीकः ६९,१०; ६१९ । १,९१,११; ११११
सुमेधाः ९१,३; ८१४ । ९३,३; ८२० । ९७,२३; ८७९
सुरभिः ९७,१९; ८७५
सुरभिन्तरः १०७,२; १००१
सुवानः-नासः ६,३; ४३ । ९,१; ६८ । १०,४; ८० । १३,५; १०८ । १७,२; १३८ । १८,१; १४५ । ३४,१; २४८ । ६६,२८; ५६५ । ८७,७; ७८२ । ९१,१; ८१२ । ९७,४०; ८९६ । ९८,२,३; ९१६,९१७ । १०१,१०; ९५३ ।
सुवानः आ ८६,४७; ७७४
सुवानः प्र १०९,१६; १०५७
सुवानः अद्रिभिः १०७,१०; १००९
सुवानः चक्षसे १०७,३; १००२
सुवानः नहुष्येभिः ९१,२; ८०७
सुवानः सोतृभिः १०७,८; १००७
सुवितस्य दुराव्यः सेतुः ४१,२; २९१
सुवीरः २३,५; १८४ । ८६,३९; ७६६ । १,९१,१९; १११९
सुवीर्यं दधत् स्तोत्रे २०,७; १६५
सुवृध् ६८,६; ६०५
सुव्रतः २०,५; १६३ । ५७,३; ३७४
सुशेवः १,९१,१५; १११५ । ८,४८,४; ११३८ । ८,७९,७; ११५६ । ६,७४,४; १२२६
सुश्रवाः १,९१,२१; ११२१
सुश्रवस्तमः १,९१,१७; १११७
सुसं-षंसद् ६८,८; ६०७
सुस-पखा ८,४८,९; ११४३
सुष्टु-स्तु-तः कविभिः १०८,१२; १०३७
सुष्वाणः ६,८; ४८ । १३,२; १०५
सुष्वाणः-णासः-अद्रिभिः ६७,३; ५७० । १०१,११; ९५४
सुष्वाणः देववीतये ६५,१८; ५२५
सुहस्त्यः १०७,२१; १०२०
सूदः-मद्वः ९७,४४; ९००
सूनुः ९,३; ७० । १९,४; १५५
सूरः-राः १०,५; ८१ । ६३,८,९; ४५५,४५६ । ६५,१; ५०८ । ६६,१८; ५५५ । ९१,३; ७०८
सूरिः ६७,२; ५६९
सूर्यः तव ज्योतींषि ८६,२९; ७५६
सूर्यस्य जनिता ९६,५; ८३७
सृजानः ९५,१-२; ८२८-८२९
सृजानः कलशे ८६,१२; ७४९
सृत्वा ९६,२०; ८५२
सृष्टाः सर्गाः २२,१; १७३
सेतुः दुराव्यः सुवितस्य ४१,२; २९१
सेतवः ७३,४; ७५१
सेधन् रक्षांसि ११०,१; १०७५
सेनानीः ९६,१; ८३३
सोतृभिः पूयमानः ९६,१६; ८४८
सोतृभिः सुवानः १०७,८; १००७
सोमः
सोमाः-मासः } अयं निर्देशः प्रायः प्रतिसूक्तं दृश्यते ।
सोम्यासः ६,७५,१०; १२२७ । १०,१४,६; १२३०
सोम्यं मधु ७४,३; ६५९
सोम्यः रसः ६७,८; ५७५
स्कम्भः दिवः ८६,४६; ७७३
स्तनयन् १९,३; १५४ । ७२,६; ६४४ । ८६,९; ७३६

स्रवानः नृभिः ९७,५; ८६१
स्तुतः ६२,१५; ४३२
स्थाः क्षामणि ८५,११; ७२६
स्वः सिषासन् ७६,२; ६७२
स्वतवस् ११,४; ८९
स्वदितः मातरिश्वना ६७,३१; ५९८
स्वधितिः वनानाम् ९६,६; ८३८
स्वध्वरः ३,८; २८ । ८६,७; ७३४
स्ववशाः ९८,६; ९२०
स्वर्गाः ९०,४; ८०३
स्वर्चक्षाः ९७,४६; ९०२
स्वर्चनत: ८४,५; ७१५
स्वर्जज्ञानः ८६,१४; ७४१
स्वर्जित् २६,२; २०७ । ७८,४; ६८४
स्वर्दशः १३,९; ११२ । ६५,११; ५१८
स्वर्पतिः १९,२; १५३
स्वर्विद् ८,९; ६७ । २१,१; १६६ । ५९,४; ३८३ । ८४,५; ७१५ । ८६,३; ७३० । ९४,२; ८३४ । १०१,१०; ९५३ । १०६,१,९; ९८६,९९४ । १०७,१४; १०१३ । १०८,२; १०२७ । १०९,८, १०४९ । ८,४८, १५; ११४९
स्वर्षाः ९६,१८; ८५० । १,९१,२१; ११२१
स्वस्तये संजग्मानः ६४,३०; ५०७
स्वस्त्ययनीः साम० १३००; १२११ । १३०३, १२१४
स्वादिष्ठः ६२,९; ४२६ । ७८,४; ६८४ । ९७,४८; ९०४
स्वादुः ५६,४, ३७१ । ८५,६; ७२१ । ९७,४; ८६० । १०९,१; १०४२ । ११०,११; १०७४ । ६,४७,१,२; ११२७,११२८ । ८,४८,१; ११३५
स्वाध्यः ३१,१; २३० । ६५,४; ५११ । १०१,१०; ९५३
स्वानासः १०,१; ७७
स्वायुधः ४,७; ३७ । १५,८; १२८ । ३१,६; २३५ । ६५,५; ५१२ । ८६,१२; ७३९ । ८७,२; ७७७ । ९६,१६; ८४८ । १०८,१५; १०४० । ११०,१२; १०७५
स्वावतः ७४,२; ६५८
हन्ता अहिनाम्नाम् ८८,४; ७८८
हन्ता विश्वस्य दस्योः ८८,४; ७८८
हन्ता वृजिनस्य ९७,१३; ८९९
हन्ता वृत्राणाम् ८८,४; ७८८
हयाः १०७,२५; १०२४
हरसः (षष्ठी) १०,६; ८२
हरस्य दैन्यस्य अवयाता ८,४८,२; ११३६
हरिः २,६; १६ । ३,३,९; २३,२९ । ७,६; ५५ । ८,६; ६४ । १९,३; १५७ । २५,१; १९४ । २६,५; २०४ । २७,६; २११ । ३०,५; २२८ । ३२,२; २३७ । ३३,४; २४५ । ३४,४; २५१ । ३६,२; २६७ । ३८,२,६; २७३,२७७ । ३९,६; २८३ । ४१,१; २९६ । ५०,३; ३४३ । ५३,४; ३५९ । ५७,२; ३७३ । ६२,१८; ४३५ । ६३,१७; ४६४ । ६४,१४; ४९१ । ६५,८,१२,२५; ५१५,५१९,५३२ । ६६,२५,२६; ५६२,५६३ । ६७,४; ५७१ । ६८,२; ६०१ । ६९,३,५; ६१२,६१४ । ७०,८; ६२७ । ७१,१; ६३० । ७२,१,५; ६३९,६४३ । ७६,१; ६७१ । ७९,१; ६८६ । ८०,३; ६९३ । ८२,१; ७०१ । ८६,६,११,२५,२७,३१,३३, ४२,४४,४५; ७३३,७३८,७५२,७५४,७५८,७६०,७६९, ७७१,७७२ । ८९,३; ७९५ । ९२,१; ८१२ । ९३,१; ८१८ । ९५,१,२; ८२८,८२९ । ९६,२,२४; ८३४, ८५६ । ९७,६,१८; ८६२,८७४ । ९८,७; ९२१ । ९९,२; ९२८ । १००,७; ९४१ । १०१,१५,१६; ९५८,९५९ । १०३,२,४; ९६९,९७१ । १०६,१,१३; ९८६,९९८ । १०७,१०; १००९ । १०९,१२,२१; १०५३,१०६२ । १११,१; १०७६ । ११३,५; १०८७
हरिः दिवा ९७,९; ८६५
हरीणां पतिः १०५,५; ९८४
हरितः युजानः ८६,३७; ७६४
हर्यश्वस्य सक्षतिः ७८,३; ६८३
हर्यतः २५,४; १९७ । २६,५; २०४ । ४३,१,३; ३०२, ३०४ । ६५,२५; ५३२ । ९६,१७; ८४९ । ९८,७,८; ९२१,९२२ । ९९,१; ९२७ । १०६,१३, ९९८ । १०७,१३,१६; १०१२,१०१५
हर्यतः मदः ८६,४२; ७६९
हविः १०,१२४,६; १२१५
हविः उत्तमम् १०७,१; १०००
हविः चारु प्रियतमम् ३४,५; २४८
हविः हविषु वन्द्यः ७,२; ५१
हविष्मान् ८३,५; ७१० । ९६,१२; ८४४
हितः ६२,१०; ४२७
हितः ऋषिभिः मतिभिः धीतिभिः ६८,७, ६०६
हितः गुहा अध्वर्युभिः १०,९; ८५
हितः धिया २५,२; १९५ । ४४,२; ३०९
हितः धीतिभिः सप्त ९,४; ७२

हितः नृभिः १८,१; २११
हितः नप्त्योः ९,१; ६८
हितः प्रयसे ६६,२३; ५६०
हितः ब्राह्मणेषु साम० १३००; १२११
हिन्वन् ऋतस्य दीधितिम् १०२,१,८; ९६०,९६७
हिन्वानः-नामः १०,२; ७८। ३४,१; २४८। ६४,९; ४८६। १०५,२; ९८१
हिन्वानः प्र ६४,१६; ४९३। ९०,१; ८००। १०७, १५; १०१४
हिन्वानः अधः इन्द्रियम् ४८,५; ३३५
हिन्वानः आप्यं बृहत् ६२,१०; ४२७
हिन्वानः गोः अधि त्वचि ६५,२५; ५३२
हिन्वानः मानुषीः अपः ६३,७; ४५४
हिन्वानः वाचम् ९७,३२; ८८८
हिन्वानः वाचम् इषिराम् ८४,४; ७०३
हिन्वानः हंतृभिः ६४,२९; ५०६
हियानः सनये ९१,१; ८१२
हियानः सोतृभिः ३०,२; २२५
हिरण्यजित् ७८,४; ६८४
हिरण्ययः ८५,११; ७२६। १०७,४; १००३
हिरण्ययुः २७,४; २०९
हिरण्यविद् ८६,३९; ७६६
हृदं सनिः इन्द्रस्य ६१,१४; ४०१
होता ९२,६; ८१७

सोम-देवता-संहितान्तर्गत-

निपातदेवतानां वर्णानुक्रमसूची ।

(नवममण्डलस्थ-सूक्तानि)

अदितिः ८१,५। ९७,५८
अदितेः गर्भः ७४,५
अन्तरिक्षम् ८१,५
अर्यमा ६४,२४। ८१,५। १०८,१४
अश्विनौ ७,७। ८,२। ८१,४। [९७,४९ नरं धीजवनं रथेष्ठाम्। एक वचनम् अश्विनौ ॥]
आदित्याः ६१,७। ११४,३ [सप्त]।
इन्द्रः १; १,९,१०। २; १,९। ४; ४। ६; ४,७,९। ७; ७। ८, १,३,९। ९; ५। ११; ६,८,९। १२; १,२। १३; १,८। १५; १। १६; ३,५। १७; २। १९; २। २१; १। २३; ६,७। २४; २,३,५। २५; ५। २६; ६। २७; २,६। ३०; ५,६। ३२; २। ३३; ३। ३४; २,४। ३७; ६। ३८; २। ३९; ५। ४०; २। ४३; २। ४५; १,२। ४६; ३,६। ५०; ५। ५१; १,२। ५३; ४। ५६; २,४। ६०; ३,४। ६१; ८,१२,१४,२२,२५। ६२; ८,१४,१५,२९। ६३; २,३,५,६,९,१०,१५,१७,१९,२२। ६४; १२,१५,२२। ६५; ८,१०, [महत्वान्] १४,२०। ६६; ७,१५,१८, २९। ६७; २,७,८,१६। ६९; ६,९,१०। ७०; ९,१०। ७२; २,४,५। ७३; २। ७४; ३,९ [वृषा अपां नेता]। ७५; ५। ७६; २,३,५। ७७; १। ७८; २। ८०; २,३,५। ८१; १। ८४; १,३,४। ८५; १-५,६,७। ८६; २,९,१३,१६,१९,२२,२३,३०,३५,४१। ८७; ४,८,९। ८८; १। ८९; ७। ९०; १,५। ९५; ५। ९६; ३,८,९,१२,२१। ९७; ५,६,१०,११,१४,२५, ३२,३६,४१,४३,४४,४६,४९। ९८; ६,१०। ९९; ३,८। १००; १,५,६। १०१; ४,५,१६। १०३; ५। १०६; १-५,८। १०७; १७। १०८; १,२ [वृषभः] १४,१५,१६। १०९; १,२,१४,१८-२०,२२। ११०; ८,११। १११; ३। ११२; १-४। ११३; १-११। ११४; १-४
उशनाः ८७,३
उषसः १०,५
ऋतावृधा ९,३ [द्यावापृथिव्यौ]
ऋत्विजः सप्त ११४,३
गन्धर्वः ८३,४ [सूर्यः]; ८५,१२ [सूर्यः]।

त्वष्टा ८१,४;
दिव्यं जन्म ८५,६; [देवाः]
दिशः (सप्त) ११४; ३
देवाः १; ४। ३; ९। ८; ५। ११; ७। २३; ६। २५; १,३। २८; १। २९; १। ३९; १। ४२; ४.५। ४४; १,३,५। ४५; २,४। ४९; ४। ५१; ३। ६१; १३। ६२; २०,२१। ६५; २,३। ६८; १०। ६९; १०। ७८; ४। ८५; ६ [दिव्यं जन्म]। ८६; ३०। ९०; ५। ९४; ५। ९७; १,४-७,१२,२०,४१,४९। ९८; १० [सदनासद् देवः]। १००; ६। १०१; ४। १०३; ६। १०५; ३। १०६; ८,६। १०७; १८,२२, २३। १०९; ४,५,१२,२१
द्यावापृथिव्यौ ९; ३ [ऋतावृधा]। ६८; १०। ६९; १०। ८१; ५। ९७; ४२
द्यौः ९७; ५८। १०९; ५
ना दक्षिणावान् ९८; १०
पितरः ९६; ११
पूषा ६१; ९। ८१, ४। १०९; १
पृथिवी ९७; ५८। १०९; ५
पृश्निमातरः ३४; ५ [मरुतः]।
प्रजा १०९; ५
बृहस्पतिः ८१, ४। ८५; ६
ब्रह्मणस्पतिः ८३; १
भगः ७; ८। १०; ५। ४४; ६। ६१; ९। ८१; ५। १०८; १४। १०९; १।
मरुतः २५; १। ३३; ३। ३४; २,५ [पृश्निमातरः]। ५१; ३। ६१; १२। ६४; २४। ६५; २०। ६६; २६ [मरुद्गणः]। ७३; ७ [रुद्रासः]। ८१; ४। ९०; ५। ९७; ४ [मारुतं शर्धं]।
महान् इन्द्रः ९०; ५। [‘मरुत्वीन्द्रम्’ द्वि० पादः; ‘महि महामिन्द्रम्’ चतुर्थः पादः]
मित्रः ६१; ९। ६४; २४। ७०; ८। ८१; ४। ८५; ६। ९०; ५। ९७; ५८। १००; ५। १०४; ३। १०७; १५। १०९; १
मित्रावरुणौ ७; ८। ९७; ४२,४९
रुद्रासः ७३; ७। [मरुतः]
रोदसी १८; ५,६। ७४; २। ९७; २७
वरुणः ३३; ३। ३४; २। ६१; ९,१२। ६४; २४। ६५; २०। ७०; ८। ८१; ४। ८४; १। ८५; ६। ९०; ५। ९७; ५८। १००; ५। १०४; ३। १०७; १५
वाक् ७३; ७
वायुः ७; ७। ८; २। १३; १। २५; १,२। २७; १। ३३; ३। ३४; २। ४४; ५। ४६; २। ६१; ८,९। ६३; ३,१०,२२। ६५; २०। ६७; १८। ७०; ८। ८१; ४। ८४; १। ८५; ६। ९७; २५। ४२; ४९
विः ४८,४ [सुपर्णः]
विधाता ८१,५;
विश्वे देवाः १४,३। १८,३। ८०,४। ८१,५। ९२,४। ९८,७। ९९,४,७। १०२,५। १०९,२,१५
विष्णुः ३३;३। ३४,२। ५६;४। ६३;३। ६५,२०। ९०;५। १००,६
वैश्वानरः ६१,१६
श्रद्धा १,६ [सूर्यस्य दुहिता]।
सरस्वती ६७,३२। ८१,४
सविता ८१,४। ११०,६
सिन्धुः ९७,५८
सुपर्णः [विः] ४८,३·४
सूरः १०,९
सूर्यः २,६। ४,५,६। १७,५। २७,५। २८,५। ६४,३०। ९७,४१। ११४,३ [नानासूर्याः]।
सूर्यस्य दुहिता १,६ [श्रद्धा]
सूर्यस्य रश्मयः ६१,८
सूर्यात्मा ८३,३,४ [गन्धर्वः, पृश्निः अग्नियः, उक्षा] ८५,१२ [गन्धर्वः]

ऋग्वेदीय-सर्वानुक्रमण्यनुक्त-देवता-तद्विशेष-सूची ।

अग्निरक्षोहा [वृ० दे०] ७३,७ सहस्रधारे वितते पवित्र० ।
अश्विनौ ९७,४९ ('नर धीजवनः रथेष्ठाः= अश्विनौ)
अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानो३ ऽभि० ।
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठामेभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम् ॥
इन्द्रः १०,५ आपानासो ... भगम्। सूरा ... वि तन्वते॥
इन्द्रः ४०,२ गमदिन्द्रं वृषा सुतः ।
इन्द्रः ६१,२२ य आविथ इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।
इन्द्रः ६६,१८ पुनान इन्दुरिन्द्रमा ।
इन्द्रः ६९,६ नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन ।
इन्द्रः ६९,९ एते सोमाः पवमानास इन्द्रम् ।
इन्द्रः ७२,२ इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहुः ।
इन्द्रः ७६,२ इन्द्रस्य शुष्ममीरयन् ।
इन्द्रः ७६,३ इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा ।
इन्द्रः ७६,५ स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमः ।
इन्द्रः ८४,४ एन्द्रस्य हार्दि कलशेषु सीदति ।
इन्द्रः ८५,२ पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि ।
इन्द्रः ८५,३ आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुत्तमः ।
इन्द्रः ८७,८ सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा ।
इन्द्रः ९७,१० इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय ।
इन्द्रः ९७,११ इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणः ।
इन्द्रः ९७,१२ अभि प्रियाणि पवते पुनानो० ।
इन्द्रः ९७,४३ इन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः ।
इन्द्रः ९७,४१ अदधादिन्द्रे पवमान ओजः ।
इन्द्रः १००,१ अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
इन्द्रः १०१,६ सखेन्द्रस्य दिवे दिवे ।
इन्द्रः १०९,१२ इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते ।
इन्द्रधाम ६९,६ नेन्द्रादृते पवते धाम किंचन ।
दक्षिणावान् ना ९८,१० नरे च दक्षिणावते ।
दिव्यं जन्म [देवाः] ८५,६ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने।
देवाः ११,७ देवेभ्यः अनुकामकृत् ।
देवाः २५,२ पवमान धिया...कनिक्रदत्। धर्मणा...विश॥
देवाः २५,३ सं देवैः शोभते वृषा।
देवाः २५,६ आ पवस्व...कवे। अर्कस्य... योनिमासदम्॥
देवाः २८,२ सोमो देवेभ्यः सुतः ।
देवाः ३९,१ यत्र देवा इति ब्रवन् ।
देवाः ४५,४ इन्दुर्देवेषु पत्यते ।
देवाः ४९,४ देवासः शृणवन् हि कम् ।
देवाः ६५,२ देवो देवेभ्यस्परि ।
देवाः ८६,३० देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे ।
देवाः ९७,४१ अपां यद्गर्भोऽवृणीत देवान् ।
देवाः १०९,२१ देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसे ।
देवासः ७८,४ यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदम् ।
प्रजा १०९,५ दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै ।
मरुतः ५१,३ पवमानस्य मरुतः ।
मित्रः ६१,९ चारुर्मित्रे वरुणे च ।
वायुः १३,१ वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम्।
वायुः २५,२ धर्मणा वायुमा विश ।
वायुः ४६,२ वायुं सोमा असृक्षत ।
वायुः ६३,३ मधुमाँ अस्तु वायवे ।
वायुः ६३,१० परीतो वायवे सुतम् ।
वायुः ६३,२२ वायुमा रोह धर्मणा ।
वायुः ६७,१८ शुक्रा वायुमसृक्षत ।
वायुः ८४,१ अप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे ।
विष्णुः ६३,३ सुत इन्द्राय विष्णवे ।
विश्वे देवाः ९२,४ तव त्ये सोम पवमान निण्ये विश्वे देवाः ।
सदनासद् देवः ९८,१० देवाय सदनासदे।
सरस्वती ६७,३२ तस्मै सरस्वती दुहे ।
सविता ११०,६ वारं न देवः सविता व्यूर्णुते ।
सूर्यः ९७,४१ अजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ।
सूर्यः ६४,३० पवस्व सूर्यो दृशे ।

दैवत-संहिता ।

(४)

मरुद्देवता ।

सम्पादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)

संवत् १९९९; शके १८६४; सन् १९४२

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B. A.
स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध (जि० सातारा)

मरुत् देवता का परिचय।

मरुतों के विषय में कोशोंमें (wind, air, breeze) वायु, हवा, पवन, (vital air or breath, life-wind) प्राण, (the god of wind) वायु का देवता, (a kind of plant) मरुवक, मरुत्तक, ग्रंथपर्णी वनस्पति, (storm-gods) आंधी, प्रचंड वायु, आंधी का देवता इतने अर्थ दिये हैं ।

वैद्यक कोशों में ' मरुत् अथवा मरुतः ' का अर्थ ' घण्टापाटला, मरुवक वृक्ष, मरुत्तक वनस्पति, ग्रंथिपर्णी वनस्पति, पृक्का नामक साग (पिढिंग साग) [हिंदी भाषा में इस का नाम ' पुरी ' है] इतने अर्थ मरुत् के लिखे हैं । ' मरवा ' नामक सुगंध पौधा । मरुत् का यह अर्थ वैद्यकसंबंधी है ।

मरुत् का अर्थ विश्व में ' वायु ' और शरीर में ' प्राण ' है और ये वनस्पतियां प्राणधारण में सहायक होती हैं, प्राण का बल बढाती हैं । इस तरह इनकी संगति होना संभव है ।

निघण्टु में ' मरुत् ' शब्द का पाठ निम्नलिखित गणों में किया है-

१. ' मरुत् ' शब्दका पाठ ' हिरण्य ' नामोंमें (निघंटु० १।२ में) किया है, अतः ' मरुत् ' का अर्थ ' हिरण्य ' अर्थात् ' सुवर्ण ' है ।

२. ' मरुत् ' पदका पाठ ' रूप ' नामों में (निघंटु० ३।७ में) किया है, इसलिये इस का अर्थ ' रूप ' अथवा ' सुन्दरता ' होता है ।

३. ' मरुत् ' पद का पाठ ' ऋत्विक् ' नामों में (निघंटु. ३।१८ में) किया है, इसलिये इस का अर्थ ऋत्विज् अथवा याजक होता है ।

४. ' मरुतः ' पदका पाठ ' पद नामों ' में (निघंटु. ५।५) में किया है ।

निघंटुकार ' मरुत् ' के ये ही अर्थ देता है । निरुक्तकार श्री यास्काचार्य मरुत् के अर्थ निम्नलिखित प्रकार करते हैं-

अथातो मध्यमस्थाना देवगणाः । तेषां मरुतः प्रथमगामिनो भवन्ति । मरुतो मितराविणो वा मितरोचनो वा महद् द्रवन्तीति वा ।

(निरु. ११।२।१)

' मध्यम स्थान में जो देवगण हैं, उन में मरुत् पहिले आते हैं । मरुत् का अर्थ (मित-राविणः) मित-भाषी होता है, वे (मित-रोचनः) परिमित प्रकाश देते हैं, (महद्-द्रवन्ति) बडी गति से जाते हैं, अथवा बडे वेग से जलप्रवाह छोड देते हैं । '

ये इस के अर्थ निरुक्तकार के दिये हैं । पर इस निरुक्त के वाक्य का इस से भिन्न पदच्छेद करने से निम्नलिखित अर्थ होता है-

मरुतोऽमितराविणो वाऽमितरोचनो वा महद्रवन्तीति वा । (निरु० ११।२।१)

' मरुत् (अ-मित-राविणः) अपरिमित शब्द करनेवाले, (अ-मित-रोचनः) अपरिमित प्रकाश देनेवाले, (महत् रवन्ति) बडा शब्द करते हैं, वे मरुत् हैं । '

पाठक यहां ये दो प्रकार के निरुक्त के एक ही वचन के परस्परविरोधी अर्थ देखेंगे, तो आश्चर्य से चकित होंगे । पर ऐसे ही टीकाकार मानते आये हैं । इसलिये इस विषय

में हम कुछ नहीं कह सकते।

इसी तरह और भी ' मरुत् ' पद के अर्थ किये गये हैं और हो सकते हैं-

१. मरुत् (मा-रुद्) = न रोनेवाले, अर्थात् युद्ध में न रोते हुए अपना कर्तव्य करनेवाले।

२. मरुत् (मा-रुत्) = न बोलनेवाले, भकभक् न करनेवाले, बहुत न बोलनेवाले।

३. मरुत् (मर-उत्) = मरनेतक उठकर खडे हो कर युद्ध करनेवाले।

इस तरह विविध अर्थ मरुत् शब्द के किये जाते हैं। अब इस ' मरुत् ' के अर्थ ब्राह्मणग्रंथों में कैसे किये हैं, देखिये-

मरुतो रश्मयः। (तांड्य ब्रा० १४।१२।९)

ये ते मारुताः रश्मयस्ते। (श० ब्रा० ९।३।१।२५)

मरुतः... देवाः। (श० ब्रा० ५।१।४।९, अमरकोश ३।३।५८)

गणशो हि मरुतः। (ताण्ड्य ब्रा० १९।१४।२)

मरुतो गणानां पतयः। (तैं० ब्रा० ३।११।४।२)

सप्त हि मरुतो गणाः (श० ब्रा० ५।४।३।१७)

सप्त गणा वै मरुतः (तैं० ब्रा० १।६।२।३; २।७।२।२)

सप्त सप्त हि मारुता गणाः। (वा० य० १७।८०-८५; ३९।७; श० ब्रा० ९।३।१।२५)

मारुत सप्तकपालः (पुरोडाशः)। (ताण्ड्य ब्रा० २१।१०।२३, श० ब्रा० २।५।१।१२; ५।३।१।६)

मरुतो ह वै देवविशोऽन्तरिक्षभाजना ईश्वराः। (कौं० ब्रा० ७।८)

विशो वै मरुतो देवविशः। (तां० ब्रा० २।५।१।१२)

मरुतो वै देवानां विशः। (ऐ० ब्रा० १।९; तां. ब्रा. ६।१०।१०; १८।१।१४)

अहुतादो वै देवानां मरुतो विट्। (श. ब्रा. ४।५।२।१६)

विड् वै मरुतः (तै. ब्रा. १।८।३।३; २।७।२।२)

विशो मरुतः। (श. ब्रा. २।५।२।६, २७; ४।३।३।६; ३।९।१।१७)

मारुतो वैश्यः। (तै. ब्रा. २।७।२।२)

कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः। (तै. ब्रा. २।४।८।७)

पशवो वै मरुतः। (ऐ. ब्रा. ३।१९)

अन्नं वै मरुतः। (तै. १।७।३।५; १।७।५।२; १।७।७।३)

प्राणा वै मारुताः। (श. ब्रा. ९।३।१।७)

मारुता वै ग्रावाणाः। (तां ब्रा. ९।९।१४)

मरुतो वै देवानामपराजितमायतनम्। (तै. ब्रा. १।४।६।२)

अप्सु वै मरुतः श्रिताः। गौ. ब्रा. उ. १।२२, कौ. ब्रा. ५।४)

आपो वै मरुतः। (ऐ. ब्रा. ६।३०; कौ. ब्रा. १२।८)

मरुतो वै वर्षस्येशते। (श. ब्रा. ९।१।२।५)

इन्द्रस्य वै मरुतः। (कौ. ब्रा. ५।४।५)

मरुतो ह वै क्रीडिनो वृत्रं हनिष्यन्तमिन्द्रं आगतं तमभितः परिचिक्रीडुर्महयन्तः। (श. ब्रा. २।५।३।२०)

इन्द्रस्य वै मरुतः क्रीडिनः। (गो. ब्रा. उ. १।२३; कौ. ब्रा. ५।५)

" किरण मरुत् हैं, देव, समूह में रहनेवाले, सात मरुतों का एक गण है, मरुतों का पुरोडाश सात पात्रों में होता है, प्रजा ही मरुत् है, देवी प्रजा मरुत् है, वैश्य मरुतों से उत्पन्न है, उत्तम दान देनेवाले किसान मरुत् हैं, अन्न ही मरुत् हैं, प्राण मरुत् हैं, पत्थर मरुत् हैं। देवों का पराजयरहित स्थान मरुत हैं। मरुत् जल के आश्रय से रहते हैं, जल ही मरुत् हैं। मरुत् वृष्टि के स्वामी हैं। मरुत् इन्द्र के (सैनिक) हैं। जब इन्द्र वृत्र का हनन करता था, तब मरुतों ने खेलते हुए उसका गौरव किया था। "

मरुतों के सम्बन्ध में ब्राह्मणग्रंथों के वचनों का यह तात्पर्य है। ये अर्थ पाठक मरुतों के सूक्तों में देख सकते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिये यहां मरुतों के वर्णनों के मन्त्रोंमेंसे कुछ विशेष मंत्र उद्धृत करके रखते हैं, उन्हें पाठक देखें और मरुद्देवता के मंत्रों के विज्ञान को जानें-

मरुतों के शस्त्र।

(कण्वो घौरः। गायत्री।)

ये पृषतीभिः ऋष्टिभिः साकं वाशीभिः अञ्जिभिः।
अजायन्त स्वभानवः ॥ २ ॥
इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्।
नि यामञ्चित्रमृञ्जते ॥ ३ ॥ (ऋ० १।३७)

"(ये) जो (पृषतीभिः) चित्रविचित्र (ऋष्टिभिः) भालों के साथ (वाशिभिः अञ्जिभिः) शस्त्रों और भूषणों के साथ (स्वभानवः) अपने ही प्रकाश से प्रकाशित होनेवाले मरुत् (अजायन्त) प्रकट हुए हैं। (एषां कशा) इनके चाबुक इनके (हस्तेषु वदान्) हाथों में आवाज करते हैं, (यत् इह एव शृण्वे) जो शब्द मैं यहीं सुनता हूं, (यामन् चित्रं नि ऋञ्जते) संग्राम में विचित्र रीतिसे यह चाबूक मरुतोंको शोभित करता है।"

इन मंत्रों में कहा है कि, मरुतों के पास भाले, कुल्हाड कुठार, आभूषण और चाबूक हैं। इनसे ये मरुत शोभावान् हुए हैं।

(सोभरिः काण्वः। प्रगाथः = ककुप् + सतोबृहती।)

समानमञ्ज्येषां विभ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु।
दविद्युतत्यृष्टयः ॥ ११ ॥
त उग्रासो वृषण उग्रबाहवो नकिष्टनूषु येतिरे।
स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वोऽनीकेष्वधि श्रियः ॥ १२ ॥ (ऋ० ८।२०)

"(एषां अञ्जि समानं) इन सबके आभूषण समान हैं। इनके (ऋष्टयः दविद्युतत्) भाले चमक रहे हैं, (बाहुषु अधि रुक्मासः विभ्राजन्ते) बाहुओं पर सोने के भूषण चमकते हैं। (ते) वे (उग्रासः) शूर वीर (उग्रबाहवः) बडे बाहुओंवाले (वृषणाः) सुख की वर्षा करनेवाले, (तनूषु) अपने शरीर के विषय में (न किः येतिरे) कुछ भी यत्न नहीं करते। (वः रथेषु) आप के रथ पर (स्थिरा धन्वानि आयुधा) स्थिर धनुष्य और शस्त्र हैं तथा (अनीकेषु अधि श्रियः) सैन्य की धुरा में विजय निश्चित है।"

इन मंत्रों में मरुतों के शस्त्रों और आभूषणों का वर्णन देखनेयोग्य है। भाले, बाहुभूषण और कण्ठे तो हैं, पर इनके (रथेषु स्थिरा धन्वानि आयुधा) रथों में स्थिर धनुष्य और स्थिर आयुध हैं। यह वर्णन विशेष महत्व का है। स्थिर धनुष्य और चल धनुष्य ऐसे धनुष्यों के दो भेद हैं। चल धनुष्यों को ही धनुष्य कहते हैं, जो हाथों में लेकर इधर उधर वीर ले जा सकते हैं। प्रायः धनुर्धारी वीर इसी धनुष्य का उपयोग करते हैं। इसको हम 'चल धनुष्य,' 'धनुष्य' अथवा 'छोटा धनुष्य' कहेंगे।

पर इस मंत्र में मरुतों के रथों पर '**स्थिर धनुष्य**' रहते हैं, ऐसा कहा है। रथों पर ध्वजदण्ड खडा रहता है, उस दण्ड के साथ ये धनुष्य बांधे रहते हैं, ये हिलाये नहीं जाते, एक ही स्थान पर पक्के किये होते हैं। ये बडे प्रचण्ड धनुष्य होते हैं और इन पर से जो बाण फेंके जाते हैं, वे मामूली बाणों से दुगने तिगुने बडे भाले जैसे होते हैं। ये धनुष्य भी बहुत ही बडे होते हैं और इनकी रस्सी दोनों हाथों से खींची जाती है। इसलिये इनको रथ में ही सदा रहनेवाले 'स्थिर धनुष्य' कहा है। मरुतों के रथों की यह विशेषता है। रथों में 'चल धनुष्य' भी रहते हैं और स्थिर भी होते हैं। इसी तरह अन्यान्य आयुध भी रथ में स्थिर रहते हैं।

ये रथ चार घोडों से खींचे जानेवाले बडे मजबूत होते हैं। मरुतों के रथों को घोडे या हरिनियां जोती जाती थीं, ऐसा मंत्रों में लिखा है और ये घोडे या हरिनियां जिनके पीठपर श्वेत धब्बे होते हैं, ऐसी हैं, ऐसा वर्णन इन मंत्रों में पाठक देख सकते हैं।

ये मरुत् (तनूषु न किः येतिरे) अपने शरीरों की बिलकुल पर्वा न करते हुए युद्ध करते हैं। यह वर्णन भी यहां इन मंत्रों में देखनेयोग्य है।

(श्यावाश्व आत्रेयः। पुर उष्णिक्।)

ये अञ्जिषु ये वाशीषु स्वभानवः।
स्रक्षु रुक्मेषु खादिषु।
श्राया रथेषु धन्वसु ॥ ४ ॥
शर्धंशर्धं व एषां व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः।
अनु क्रामेम धीतिभिः ॥ ११ ॥ (ऋ० ५।५३)

"हे मरुतो! (ये स्वभानवः) जो आप के प्रकाश (अञ्जिषु) अलंकारों पर, (ये वाशीषु) जो हथियारों पर, (स्रक्षु) मालाओं पर, (रुक्मेषु) छाती के भूषणों

पर, (खादिषु) पांवों के भूषणों पर (रथेषु) रथों पर और (धन्वसु) धनुष्यों पर (आया) आश्रय पाये हैं।"

"हे मरुतो (वः शर्धं शर्धं) आप के बल, (व्रातं व्रातं) इनके समुदाय, (गणं गणं) और संघ की (सुशस्तिभिः) प्रशंसा के साथ और (धीतिभिः) कर्मोंके साथ अनुसरण करते हैं।"

अर्थात् मरुतों के हाथों में शस्त्र हैं, गले में मालाएं हैं, कमर में हथियार, तलवार, जंबिया आदि हैं, छाती पर आभूषण हैं, पावों और हाथों में कटक आदि जेवर हैं, रथों में धनुष्य हैं। इन शस्त्रों और भूषणों से ये वीर युक्त हैं।

आगे के मंत्र में ' हम (अनुक्रामेम) आप का अनुसरण करते हैं, ' ऐसा कहा है। मरुतोंके जो बलसे होनेवाले कर्म हैं, समूह से और संघ से होनेवाले कर्म हैं, उन सब का अनुसरण हम करते हैं, अर्थात् उनके समूहों के समान हम अपने संघ बनाते हैं, उनके गणों के समान हम अपने गण बनाते हैं, उनके पराक्रमों के समान हम पराक्रम करते हैं, उनकी बुद्धियों के समान हम अपनी बुद्धि के कर्म करते हैं। मरुतों जैसे हम पराक्रम करते हैं और वैसे हम स्वयं शूर वीर बनने का यत्न करते हैं।

मरुतों के संघों का यहां वर्णन है और आगे भी वर्णन बहुत ही है। मरुत् देवता संघ से रहनेवाले हैं। ये सात के संघ हैं, देखिये—

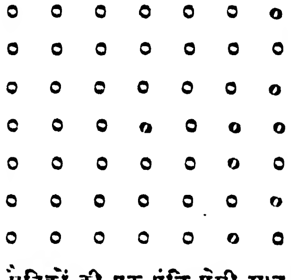

यहां सात सैनिकों की एक पंक्ति ऐसी सात पंक्तियां हैं। यहां ये ७×७=४९ मरुद्गण होते हैं। न्यूनसे न्यून सातोंकी एक पंक्ति है, ऐसी सात पंक्तियों का ' मारुत गण ' अथवा ' मरुतों का संघ ' होता है। इस तरह ४९ मरुतों का एक संघ, अथवा सेना का छोटे से छोटा विभाग होता है।

ऐसे ४९ विभागों की मरुतों की सेना को ' वाहिनी ' कहते हैं। इस वाहिनी में ४९×४९=२४०१ मरुद्गण होंगे। इस तरह यह संख्या सातों के घात से, अथवा ४९ के घात से बढती है। छोटी से छोटी मरुद्वीरों की संख्या ७ होगी, उस से बढ कर ४९ होगी, उस के बाद २४०१ होगी और इस के आगे ७ अथवा ४९ के घात से जितनी सेना रखनी होगी, उतनी सेना हो सकती है। इस की कल्पना पाठक कर सकते हैं।

ये मरुत् पैदल (पदाती), रथी (रथमें बैठे), घुडसवार (अश्वी) और विमानों में चढ कर ऐसे विभिन्न पथकों में रहते हैं। पर किसी भी पथक में क्यों न हों, इनकी संख्या ७ और ४९ के प्रमाण से रहेगी। मरुतों की सेना का विचार करने के समय यह तत्व जानना आवश्यक है।

(नोधा गौतमः । जगती ।)

युवानो रुद्रा अजरा अभोग्घनो ववक्षुरध्रिगावः
पर्वता इव। दृळ्हा चिद्विश्वा भुवनानि पार्थिवा
प्रच्यावयन्ति दिव्यानि मज्मना ॥ ३ ॥
चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षःसु रुक्माँ अधि
येतिरे शुभे। अंसेष्वेषां नि मिमिक्षुर्ऋष्टयः
साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः ॥ ४ ॥

(ऋ. १।६४)

"(रुद्राः) शत्रु को रुलानेवाले मरुत् (युवानः) जवान (अजरा) वृद्धावस्था को न प्राप्त हुए, (अभोग्घनः) देवों को हविर्भाग न देनेवालों का वध करनेवाले, (अध्रिगावः) अप्रतिहत गतिवान् अर्थात् जिन की गति को कोई रोक नहीं सकता, ऐसे मरुत् (पर्वता इव ववक्षुः) पर्वतों के समान सुदृढ होकर इष्ट सुख उपासकों को देने की इच्छा करते हैं। ये (मज्मना) अपने सामर्थ्य से (विश्वा पार्थिवा भुवना) सब पार्थिव भुवनों और (दृळ्हा दिव्यानि) सुदृढ दिव्य भुवनों को भी (प्रच्यावयन्ति) हिला देते हैं। अर्थात् इनके विरोध में कोई ठहर नहीं सकता।"

"ये मरुत् (चित्रैः अञ्जिभिः) विचित्र भूषणों से (वपुषे व्यञ्जते) अपने शरीरों को भूषित करते हैं। (शुभे) शोभा के लिये (रुक्मान् वक्षःसु) सोने की मालाएं छाती पर (अधि येतिरे) धारण करते हैं। (एषां अंसेषु) इन के कंधों पर (ऋष्टयः निमिमिक्षुः) भाले चमक रहे

हैं। ये (नरः) नेता वीर मरुत् (स्वधया साकं) अपनी धारणशक्तिके साथ (दिवः जज्ञिरे) द्युलोकसे जन्मे हैं।"

मरुतों की सेना में तरुण ही भरती होते हैं। बूढों (अजराः) का इन में स्थान नहीं है। सब (युवानः) जवान ही होते हैं। इनकी गतिको कोई रोक नहीं सकता। ये सैनिक जहां जाते हैं, वहां के प्रबल शत्रुओं को भी अपने स्थान से उखाड देते हैं। ये स्वयं जहां रहते हैं, वहां पर्वतों के समान स्थिर रहते हैं।

इनके शरीरों पर सोने की मालाएं रहती हैं, छाती पर विविध भूषण पहने होते हैं, बाहुओंपर सोनेके आभूषण रहते हैं, तीक्ष्ण भाले इन के हाथों में रहते हैं, अन्यान्य तलवार आदि तीक्ष्ण शस्त्र सदा इन के पास रहते हैं। ये दिव्य नेता लोग दिव्य और शुभ कार्य के लिये सदा तैयार रहते हैं, कभी पीछे नहीं हटते।

अपने शरीरों की पर्वाह न करते हुए ये लडते हैं और जो अपना अन्न यज्ञ में नहीं अर्पण करते, उन स्वार्थी लोगों को ये यथायोग दण्ड देते हैं। इसलिये इनसे सब डरते हैं और ये अपने यज्ञमार्ग में दत्तचित्त रहते हैं।

(गोतमो राहूगणः। प्रस्तारपंक्तिः।)

आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्कै रथेभिर्यात ऋष्टिमद्भिरश्वपर्णैः। आ वर्षिष्ठया न इषा वयो न पप्तता सुमायाः॥ १॥ (ऋ० १।८८)

"हे (सु-मायाः) उत्तम कुशल कर्मों को करनेवालो मरुतो! (विद्युन्मद्भिः) बिजली से चलनेवाले, (स्वर्कैः) तेजस्वी (अश्व-पर्णैः) घोडों के समान पंखवाले (ऋष्टिमद्भिः) उत्तम शस्त्रों से युक्त (रथेभिः) रथों से (आ यात) आओ, (वयो न) पक्षियों के समान (पप्तता) उडते हुए आओ और साथ (वर्षिष्ठया इषा न) उत्तम अन्नों के साथ (आ) आओ।"

यहां भी पक्षियों के समान आकाशमार्ग से उडते हुए मरुत् आते हैं और उन के विमानों में भरपूर अन्न, पर्याप्त शस्त्र होते हैं और गमन के लिये अश्व के समान पक्ष रहते हैं, ऐसा कहा है।

मरुतों के ये रथ निःसन्देह विमान ही हैं। क्योंकि ये (वयः न) पक्षियों के समान आकाश में उड कर आते हैं और (अश्व-पर्णैः) अश्वशक्तिवाले पंख इनको लगे होते हैं। (सुमायाः) उत्तम कारीगरी से ये बने हैं, तथा (विद्युन्मद्भिः) बिजली की शक्तिसे ये चलाये जाते हैं। पक्षी के समान आकाश में उडना, बिजली के साधन से गति मिलना, अश्वशक्ति से पक्षों का काम होना, आदि वर्णन इनका विमान होना ही निश्चित करता है।

मरुतों के ये विमान ही हैं। मरुतों की सेना के पास घोडे, रथ तथा विमान भी होते हैं, यह बात इस वर्णन से सिद्ध होती है। इन मरुतोंके विमानों में (ऋष्टिमद्भिः) पर्याप्त शस्त्र तथा पर्याप्त (इषा) अन्न होता है। ये वर्णन देखने से मरुतों के विमानों की कल्पना आ सकती है।

(श्यावाश्व आत्रेयः। जगती।)

वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः
सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः।
स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः
स्वायुधा मरुतो याथना शुभम्॥ २॥
ऋष्टयो वो मरुतो अंसयोरधि
सह ओजो बाह्वोर्वो बलं हितम्।
नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो
विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे॥ ६॥
(ऋ० ५।५७)

"हे मरुतो! (वाशीमन्तः) बरछियां धारण करनेवाले, (ऋष्टिमन्तः) भाले बर्तनेवाले, (सुधन्वानः) उत्तम धनुष्यों से युक्त, (निषंगिणः) तर्कस धारण करनेवाले, (सुरथाः) उत्तम रथ जिनके पास है तथा (स्वश्वाः) उत्तम घोडोंवाले, (स्वायुधाः) उत्तम आयुधों का उपयोग करनेवाले (पृश्निमातरः) मातृभूमि के उपासक आप (मनीषिणः स्थः) बुद्धिमान् हैं। हे मरुतो! आप (शुभं याथन) सबके हित करनेवाले मार्गसे चलो।"

"हे मरुतो! (वः अंसयोः अधि) आप के कंधों पर (ऋष्टयः) भाले हैं, (वः बाह्वोः) आप के बाहुओं में (सहः ओजः बलं हितं) बल, ओज और सामर्थ्य रखा है, (शीर्षसु नृम्णा) सिरोंपर सुन्दर साफे हैं, (वः रथेषु आयुधा) आप के रथों पर आयुध हैं, (वः तनूषु) आप के शरीरों पर (विश्वा श्रीः) सब शोभा (अधि

वीर मरुत्।

पिपिशे) विराजमान हुई है। ''

इन मंत्रों में मरुतों के शरीरों पर कैसे शस्त्र और कपडे रहते हैं, यह बताया है। बरछे, भाले, धनुष्य, बाण, तर्कस, तलवार आदि शस्त्र इनके पास हैं। सिर पर साफे अथवा मुकुट हैं। इनके रथ, घोडे आदि सब उत्तम हैं। शरीर सुडौल हैं। बाहुओं में प्रचण्ड बल है और ये (पृश्निमातरः) मातृभूमि की उपासना स्वकर्म से करते रहते हैं, मातृभूमि के लिये आत्मसमर्पण करते रहते हैं।

(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। त्रिष्टुप्।)

अंसेष्वा मरुतः खादयो वो
वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणाः।
वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचाना
अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः ॥१३॥ (ऋ० ७।५६)

" हे (मरुतः) मरुतो ! आप के (अंसेषु) कंधों पर आभूषण हैं, (वक्षःसु रुक्मा) छाती पर मालाएं (उपशिश्रियाणाः) शोभती हैं, (वृष्टिभिः) वृष्टि के साथ चमकती (विद्युतः न) बिजली के समान (विरुचानाः) आप चमक रहे हैं, (आयुधैः) और हथियारों के साथ (स्वधां अनुयच्छमानाः) अन्न को अनुकूलता के साथ आप देते हैं। "

यहां भी मरुतों के हथियारों और भूषणों का वर्णन है।

(श्यावाश्व आत्रेयः। जगती।)

अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयो वक्षःसु रुक्मा
मरुतो रथे शुभः। अग्निभ्राजसो विद्युतो
गभस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः ११
(ऋ० ५।५४)

" हे मरुतो ! (वः अंसेषु ऋष्टयः) आप के कंधों पर भाले हैं, (पत्सु खादयः) पावों में भूषण हैं, (वक्षःसु रुक्माः) छाती पर मालाएं हैं और (रथे शुभः) रथ में सब शुभ साधन हैं। (अग्निभ्राजसः) अग्नि के समान तेजस्वी (विद्युतः गभस्त्योः) चमकदार और किरणों से युक्त हैं और आप के (शीर्षसु) सिर पर (हिरण्ययी वितता शिप्राः) सोने के फैले हुए साफे हैं।

यहां भी मरुतों के शस्त्रों और अलंकारों का वर्णन है। इस समय तक मरुतों के शस्त्रों, अलंकारों और वस्त्रों का वर्णन आया है, इससे विदित होता है कि-

सिर में-

(१) शीर्षसु नृम्णा (ऋ. ५।५७।६); शिप्राः शीर्षन् हिरण्ययीः (ऋ. ८।७।२५); हिरण्यशिप्राः (ऋ. २-३४-३),

सिर पर साफे या मुकुट धारण किये हैं। ये सोनेके हैं, अर्थात् साफे होंगे, तो कलाबतू के होंगे।

कंधों पर-

(२) अंसेषु ऋष्टयः (ऋ. १-६४-४; ५-५४-११); ऋष्टयो... अंसयोरधि (ऋ. ५-५७-६); ऋष्टिमन्तः (ऋ. ५-५७-२); अंसेषु खादयः (ऋ. ७-५६-१३);

अंसेषु प्रपथेषु खादयः (१-१६६-९); **ऋष्टिविद्युतः** (ऋ. १-१६८-५; ५-५२-१३); **भ्राजद्-ऋष्टयः** (ऋ. १-८७-३).

मरुतों के कंधों पर भाले रहते हैं, इन कंधों पर बाहु-भूषण होते हैं। ये भूषण भी बडे चमकवाले होते हैं और भाले भी बडे तेजस्वी और चमकनेवाले होते हैं। ऋष्टि-शस्त्र भाले जैसा लंबा होता है, भाले के फाल विविध प्रकार के होते हैं। बडे तीक्ष्ण नोकवाले, अनेक मुख-वाले, कांटोंवाले तथा अन्यान्य छेदक नोकवाले होते हैं और इस कारण इनके नाम भी बहुत होते हैं। 'खादी' नामक एक आभूषण है, जो पावों में तथा बाहुओं में रखे जाते हैं।

हाथों में–

(३) **हस्तेषु कशा वदान्** (ऋ. १।३७।३) हाथों में चाबूक जो आवाज करता है। चाबूक का आवाज झिटकने से होता है, यह पाठक जान सकते हैं।

छाती पर–

(४) **वक्षःसु रुक्माँ** (ऋ. १-६४-४; ७-५६-१३; ५-५४), **रुक्मासः अधि बाहुषु** (ऋ. ८-२०-११); **तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मतः** (ऋ. १-८५-३)

छाती पर और बाहुओं पर तथा शरीरों पर रुक्म नामक सुवर्ण के भूषण धारण करते हैं। रुक्म मोहरों जैसे भूषण होते हैं, जिनकी माला बना कर कण्ठ में छाती पर रखते हैं और अन्यान्य अवयवों पर उस स्थान के योग्य अलंकार किया होता है।

इस तरह का वर्णन मंत्रों में देखनेयोग्य है।

बल से विजय।

(कण्वो घौरः । सतोबृहती।)

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत
प्रतिष्कभे । युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा
मर्त्यस्य मायिनः ॥ २ ॥ (ऋ. १-३९)

" (वः आयुधा स्थिरा सन्तु) आप के शस्त्र सुदृढ हों, (पराणुदे) शत्रु को दूर भगाने के लिये और (प्रति-स्कभे) शत्रु का प्रतिकार करने के लिये आप के शस्त्र (वीळू) सामर्थ्यवान् अर्थात् शत्रु के शस्त्रों से अधिक प्रभावी हों। (युष्माकं तविषी) आप का बल (पनीयसी अस्तु) प्रशंसनीय रहे, वैसा (मायिनः मर्त्यस्य मा) आप के कपटी शत्रु का बल न हो, अर्थात् शत्रु से आप का बल अधिक रहे।"

विजय तभी होगा, जब शत्रु से अपने साधन अधिक प्रभावी होंगे। अपने शस्त्रास्त्र शत्रु से प्रभाव में, परिणाम में, संख्या में, तथा अन्य सब प्रकारों से अधिक अच्छे रहेंगे, तभी विजय होगा, इसलिये विजय की इच्छा करनेवाले वीर अपना ऐसा उत्तम प्रबन्ध रखें।

जनता की सेवा।

(नोधा गौतमः । जगती।)

रोदसी आ वदता गणश्रियो नृषाचः शूराः
शवसाऽहिमन्यवः ।
आ वन्धुरेष्वमतिर्न दर्शता विद्युन्न तस्थौ
मरुतो रथेषु वः ॥ ९ ॥ (ऋ. १।६४)

" हे (गणश्रियः) समुदाय की शोभा से युक्त मरुतो ! हे (नृ-षाचः शूराः) मानवोंकी सेवा करनेवाले शूर, (शवसा अ-हि-मन्यवः) बल के कारण प्रबल कोप से युक्त मरुतो ! (रोदसी) द्युलोक और पृथ्वी में (आवदत) अपनी घोषणा करो। हे मरुतो ! (वः रथेषु) आप के रथों में (वन्धुरेषु) बैठकों में (दर्शता अमतिः न) दर्शनीय रूप के समान अथवा (विद्युत् न) बिजली के समान (आ तस्थौ) आप का तेजस्वी रूप ठहरा है।"

अर्थात् आप जनता की सेवा करनेवाले स्वयंसेवक वीर जब रथों में बैठकर जाते हैं, उस समय बडी शोभा दीखती है।

साम्यवाद।

(श्यावाश्व आत्रेयः। जगती।)

अज्येष्ठास अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो
महसा विवावृधुः । सुजातासो जनुषा पृश्नि-
मातरो दिवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन ॥६॥
(ऋ. ५-५९)

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः
सौभगाय । युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा
पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ॥ ५ ॥ (ऋ० १-६०)

" मरुतों में कोई श्रेष्ठ नहीं और कोई कनिष्ठ नहीं और कोई मध्यम भी नहीं। ये सब समान हैं। ये अपनी शक्ति से बढते हैं। ये (सुजातासः) कुलीन हैं और (पृश्निमातरः) भूमि को माता माननेवाले हैं। ये दिव्य नरवीर हैं।"

"ये अपने आप को (भ्रातरः) भाई कहते हैं और (सौभगाय सं वावृधुः) सौभाग्य के लिये मिलकर यत्न करते हैं। इनकी माता (पृश्निः सुदुघा) मातृभूमि इनके लिये उत्तम पोषण करनेवाली है।"

इन मंत्रों में मरुतों का साम्यवाद अच्छी तरह कहा है। ये अपने आपको भाई मानते हैं। यह भी साम्यवादियों के लिये योग्य ही है।

ये सैनिक हैं। सेना में कोई लडका नहीं भरती होता, कोई वृद्ध भी नहीं भरती होता। प्रायः सब तरुण ही भरती होते हैं। इसलिये न इन में कोई बडा है और न छोटा है, सब समान ही रहते हैं। ये सभी मातृभूमि के लिये प्राणों का अर्पण करनेवाले होनेके कारण सब समानतया सन्मान्य होते हैं।

इस समय तक के वर्णन से मरुत् ये सैनिक हैं, यह बात पाठकों के ध्यान में आ चुकी होगी। सैनिकों के पास शस्त्र होते हैं, उन के शरीर सुडौल होते हैं, सब प्रायः समान ऊंचाई के होने के कारण समान होते हैं। सब के सिरों पर साफे, मुकुट या शिरस्त्राण समान होते हैं, सब का रहनासहना समान होता है। सब सैनिक उक्त कारण अपने आप को भाई कहते हैं। सब मातृभूमि के लिये प्राणों का अर्पण करते हैं, अपने शरीरों की पर्वाह न करते हुए, देश के लिये लडते हैं, सब ही शत्रु को रुलानेवाले होते हैं, सब सैनिक सांघिक जीवन में ही रहते हैं, संघ के बिना ये कभी रहते नहीं, कतार में चलते हैं, सब के शस्त्र समान होते हैं। यह सब वर्णन सैनिकों का है और मरुतों का भी है। अतः पाठक मरुतों को सैनिक समझें और मंत्रों का आशय जान लें।

मरुतों की शोभा।

(गोतमो राहूगणः। जगती।)

प्र ये शुम्भन्ते जनयो न सप्तयो
यामन् रुद्रस्य सूनवः सुदंससः।
रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे
मदन्ति वीरा विदथेषु घृष्वयः ॥ १ ॥
गोमातरो यच्छुभयन्ते अंजिभिः
तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मतः।
बाधन्ते विश्वं अभिमातिनं अप
वर्त्मान्येषामनु रीयते घृतम् ॥ ३ ॥
वि ये भ्राजन्ते सुमखास ऋष्टिभिः
प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजसा।
मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्वा
वृषव्रातासः पृषतीरयुग्ध्वम् ॥ ४ ॥
(ऋ० १-८५)

" (ये मरुतः) जो मरुत् (जनयः न) स्त्रियोंके समान (यामन्) बाहर जाने के समय (प्र शुभन्ते) विशेष अलंकार धारण करते हैं। ये मरुत् (रुद्रस्य सूनवः) रुद्र के अर्थात शत्रु को रुलानेवाले वीर के पुत्र (सु-दंससः) उत्तम कर्म करनेवाले और (सप्तयः) शीघ्रगामी हैं। मरुतों ने (रोदसी) द्युलोक और पृथ्वी को (वृधे) अपनी वृद्धि के लिये साधन (चक्रिरे) बनाया, ये (घृष्वयः) शत्रु का घर्षण करनेवाले (वीराः) वीर (विदथेषु) युद्धों में (मदन्ति) आनन्दित होते हैं।"

" (गो-मातरः) गौको अथवा पृथ्वीको माता माननेवाले मरुत् (यत्) जब (अंजिभिः शुभयन्ते) अलंकारों से शोभित होते हैं, तब (तनूषु) वे अपने शरीरों पर (शुभ्राः विरुक्मतः) तेजस्वी और चमकनेवाले शस्त्र (दधिरे) धारण करते हैं। वे (विश्वं अभिमातिनं) सब शत्रु को (अप बाधन्ते) पराभूत करते हैं, प्रतिबन्ध करते हैं। (एषां वर्त्मानि) इनके गमन के मार्ग पर (घृतं अनु रीयते) घी आदि भोग्य पदार्थ (अनुरीयते) अनुकूलता के साथ मिलते हैं।"

"(ये सुमखासः) जो उत्तम यज्ञ करनेवाले मरुत् (ऋष्टिभिः वि भ्राजन्ते) अपने भालों से शोभते हैं। जो (ओजसा) अपने बल के साथ (अच्युता) न हिलनेवालों को भी (प्रच्यावयन्ते चित्) निश्चयपूर्वक हिला देते हैं। हे मरुतो! (यत्) जब आप अपने (रथेषु पृषतीः) रथों को विचित्र रंगोंवाली हरिणों या घोडियों

को जोतते हैं तब (वृष-व्रातासः) वीर्यवान् समूह करनेवाले आप (मनो-जुवः) मन जैसे वेगवान् होते हैं।"

इन मंत्रों में कहा है कि मरुत् वीर स्त्रियों के समान अलंकारोंसे सजते हैं, शत्रुका धर्षण करते हैं, युद्धों से आनंदित होते हैं, मातृभूमि को माता मानते हैं, भाले-बर्छियों को धारण करते हैं, सब शत्रुओं को स्थानभ्रष्ट करते हैं, समूहोंमें रहनेसे इनका बल बढा रहता है। शत्रु पर ये समूह से ही हमला करते हैं।

मरुत् वीर स्त्रियों के समान अपने आप को सजाते हैं। पाठक यहां सैनिकों की सजावट की ओर देखें। सैनिक अपनी वेषभूषा, शस्त्र, बूटसूट, साफे आदि सब जितना सुंदर रखा जा सकता है, उतना सुंदर, स्वच्छ और सुडौल रखते हैं। सैनिक जितने अच्छे सजते हैं और जितना सजावट का ख्याल करते हैं, उतना कोई और नहीं करता। इस सजावट में ही इनका प्रभाव रहता है। इसलिये यह सजावट बुरी नहीं है।

यहां के 'गो-मातरः, पृश्नि-मातरः' ये शब्द मातृभूमि और गौ को माता मानने का भाव बताते हैं। गोरक्षा करना इस तरह मरुतों का कर्तव्य दीखता है। गोरक्षण, मातृभूमिरक्षण, स्वभाषारक्षण आदि भाव 'गोमातरः' में स्पष्ट दीखते हैं।

(अगस्त्यो मैत्रावरुणः। जगती।)

विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो
मिथस्पृध्येव तविषाण्याहिता।
अंसेष्वा वः प्रपथेषु खादयो-
ऽक्षो वश्चक्रा समया वि वावृते ॥ ९ ॥

(ऋ. १-१६६)

"हे मरुतो! (वः रथेषु) आप के रथों में (विश्वानि भद्रा) सब कल्याणकारक पदार्थ रहते हैं। (मिथस्पृध्या इव) परस्पर स्पर्धा के (तविषाणि आहिता) सब शस्त्र रखे हैं। (अंसेषु) बाहुओं में तथा (वः प्रपथेषु) आप के पांवों में (खादयः) आभूषण रहते हैं और आप के चक्र का (अक्षः) अक्ष (चक्रा समया) चक्रों के समीप साथ साथ (वि वावृते) रहता है।"

मरुतों के रथों पर भरपूर अन्नादि पदार्थ और शस्त्र रहते हैं।

(गोतमो राहूगणः। जगती।)

शूरा इवेद् युयुधयो न जग्मयः।
श्रवस्यवो न पृतनासु येतिरे।
भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो
राजान इव त्वेषसंदृशो नरः ॥ ८ ॥

(ऋ. १।८५)

"(शूरा इव इत्) ये शूरों के समान (जग्मयः युयुधयः न) शत्रु पर दौडनेवाले योद्धाओं के समान (श्रवस्यवः न) यश की इच्छा करनेवालों के समान (पृतनासु येतिरे) लडाइयों में युद्ध करते हैं। (मरुद्भ्यः) मरुतों से (विश्वा भुवनानि) सब भुवन (भयन्ते) डरते हैं। ये मरुत् (राजानः इव) राजाओं के समान (त्वेष-संदृशः) क्रोधित दीखनेवाले (नरः) ये नेता हैं।"

युद्ध में मरुतों को आनन्द होता है। ये ऐसा पराक्रम करते हैं कि, जिससे सब विश्व इनसे डरता है। ऐसे पराक्रमी ये वीर हैं।

(अगस्त्यो मैत्रावरुणः। जगती।)

को वोऽन्तर्मरुतो ऋष्टिविद्युतो
रेजति त्मना हन्वेव जिह्वया।
धन्वच्युत इषां न यामनि
पुरुप्रैषा अहन्यो नैतशः ॥ (ऋ. १-१६८-५)

"हे (ऋष्टिविद्युतः) विद्युत् का शस्त्र बर्तनेवाले मरुतो! (वः अन्तः कः) आप के अन्दर कौन (रेजति) प्रेरणा करता है? अथवा (जिह्वया हन्वा इव) जिह्वा से हनु को प्रेरणा मिलती है, वैसी (त्मना) स्वयं हि तुम प्रेरित होते हो? अथवा तुम्हारे अन्दर रहकर कोई दूसरा तुम्हें प्रेरणा देता है? (इषां यामनि) अन्नों की प्राप्ति के लिये (धन्वच्युतः न) अन्तरिक्ष से चूनेवाले उदक की जैसी इच्छा करते हैं अथवा (अ-हन्यः एतशः न) शिक्षित घोडे के समान (पुरु-प्रैषाः) बहुत दान देनेवाला याजक तुम्हें बुलाता है।"

(अगस्त्यो मैत्रावरुणः। गायत्री।)

आरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जती शरुः
आरे अश्मा यमस्यथ ॥ (ऋ. १।१७२।२)

"हे (सुदानवः मरुतः) हे दानशील मरुतो! (वः सा ऋञ्जती शरुः) आप का वह तेजस्वी भाला (आरे)

हम से दूर रहें, तथा (यं अस्यथ) जिस को तुम फेंकते हो, वह (अश्मा) पत्थर भी हमसे (आरे) दूर रहे। "

अर्थात् तुम्हारा शस्त्र और तुम्हारा पत्थर शत्रु पर गिरे, हम उस से दूर रहें। यहां पत्थर भी एक मरुतों का शस्त्र कहा है। ये पत्थर हाथ से, पांव से और रस्सी से फेंके जाते हैं। हाथ से आगे, पांव से पीछे और 'क्षेपणी' नामक पत्थर फेंकनेवाली रस्सी से बडी दूरी पर फेंका जाता है। इस रस्सी को 'गोफन' (क्षेपणी) बोलते हैं, इस से आध सेर वजन का पत्थर सौ गज पर ऐसे वेगसे फेंका जाता है कि, जिससे शत्रुका हाथ भी टूट जाय।

प्रतिबंधरहित गति !

(श्यावाश्व आत्रेयः। जगती।)

न पर्वता न नद्यो वरन्त वो
यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत्।
उत द्यावापृथिवी याथना परि
शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥७॥ (ऋ. ५।५५)

" हे मरुतो! (न पर्वता) न पर्वत और (न नद्यः) न नदियां (वः वरन्त) आप के मार्ग को प्रतिबन्ध कर सकते हैं, (यत्र आचिध्वं) जहां जाना चाहते हैं, (तत् गच्छथ इत् उ) वहां तुम पहुंचते ही हो। तुम द्युलोक और पृथ्वी पर पहुंचते हो और (शुभं यातां) शुभ स्थान को पहुंचनेवाले आप के रथ आगे बढते हैं। "

यहां लिखा है कि, नदी और पर्वत से मरुत् वीरों को किसी तरह का प्रतिबन्ध नहीं होता है। वे जहां जहां पहुंचना चाहते हैं, पहुंचते ही हैं और वहां यश भी कमाते हैं।

बीच में पर्वत आ जाय, नदियाँ आ जायँ, बीच में जलाशय हों अथवा रेतीले मैदान हों, इन सब प्रतिबंधों को ये गिनते नहीं। इन के रथ ऐसे होते हैं कि, वे जहां चाहे वहां जाते और शत्रु को घेर लेते हैं।

जहां मरुत् जाना चाहते हैं, वहां वे पहुंचते हैं और जिस शत्रु को पराजित करना चाहते हैं, उस को पराजित कर छोडते हैं।

इनकी गति को रोकनेवाला पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में कोई नहीं है। शत्रु पर विजय प्राप्त करना हो, तो ऐसा ही सामर्थ्य प्राप्त करना चाहिये। अपना हरएक शस्त्र शत्रुसे अधिक प्रभावी रहना चाहिये, हरएक रथ शत्रु से अधिक सामर्थ्यशाली रहना चाहिये और अपना हरएक वीर शत्रुसे शक्ति, बुद्धि और युक्ति में श्रेष्ठ रहना चाहिये। तब विजय मिलता है। यह बात मरुतोंके वर्णनमें पाठक देख सकते हैं।

(कण्वो घौरः। सतोबृहती।)

असाम्योजो विभृथा सुदानवोऽसामि धूतयः शवः। ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इषुं न सृजत द्विषम् ॥ (ऋ. १-३९-१०)

" हे (सुदानवः) उत्तम दान देनेवाले मरुतो! (असामि ओजः विभृथः) अतुल बल आप धारण करते हैं! हे (धूतयः) शत्रुको कंपानेवाले मरुतो! (असामि शवः) अतुल सामर्थ्य आप के पास है। (ऋषिद्विषे) ऋषियों का द्वेष करनेवाले (परिमन्यवे) कोपकारी शत्रु के वध के लिये (द्विषं) विनाशक शस्त्र (इषुं न) बाण के समान (सृजत) छोड दो।

मरुतों का बल बहुत है, उस की तुलना किसी के साथ नहीं हो सकती। ज्ञानियों का द्वेष करनेवाले का नाश करने के लिये आप ऐसा शस्त्र छोडिए कि, जिस से उस शत्रु का पूर्ण नाश हो जावे।

धूम्रास्त्रप्रयोग।

(ब्रह्मा। त्रिष्टुप्।)

असौ या सेना मरुतः परेषां
अस्मानैत्योजसा स्पर्धमाना।
तां विध्यत तमसापव्रतेन
यथैषामन्यो अन्यं न जानात् ॥८॥ (अथर्व० ३।२)

" हे मरुतो! यह जो (परेषां) शत्रुओंकी सेना है, जो (अस्मान्) हम पर स्पर्धा करती हुई, (ओजसा एति) वेग से आ रही है, (तां) उस सेना को (अपव्रतेन तमसा) घबराहट करनेवाले तमसास्त्र से (विध्यत) वेध लो (यथा) जिस से इन में से कोई किसी को (न जानात्) न जान सके। "

यहां अंधेरा उत्पन्न करनेवाला धूवांरूप शस्त्र का वर्णन है। इस से एक दूसरे को जान नहीं सकता।

यहां 'अपव्रत तम' नामक अस्त्र का प्रयोग शत्रु की

सेना के ऊपर करने को कहा है। 'अपव्रत' का अर्थ यह है कि, जिस से कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान नहीं होता, शत्रुसैन्य घबरा जाता है और जो नहीं करना चाहिये वही करने लगता है। इस घबराहट के कारण शत्रु की सेना का निश्चय से पराभव होता है।

'तमस्' नामक अस्त्र अन्धेरा उत्पन्न करनेवाला है। यह धूवें जैसा ही होगा। आजकल इस को 'गैस' (Gas) कहते हैं। धूवें का पर्दा जैसा खडा करते हैं और उस की ओढ में रह कर शत्रु को सताते हैं।

'तमस्' और 'अपव्रत तमस्' ये दो विभिन्न अस्त्र होंगे। अधिक घबराहट करनेवाला तम ही अपव्रत कहलानेयोग्य हो सकता है। यह मरुतों का अस्त्र यहां कहा है। पूर्वोक्त अन्यान्य आयुधों के साथ पाठक इस का भी विचार करें।

(गृत्समदः शौनकः। जगती।)

उक्षन्ते अश्वाँ अत्याँ इवाजिषु
नदस्य कर्णैस्तुरयन्त आशुभिः।
हिरण्यशिप्रा मरुतो दविध्वतः
पृक्षं याथ पृषतीभिः समन्यवः ॥३॥
इन्धन्वभिर्धेनुभी रप्शदूधभिः
अध्वस्मभिः पथिभिर्भ्राजदृष्टयः।
आ हंसासो न स्वसराणि गन्तन
मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः ॥५॥
ते क्षोणीभिररुणेभिर्नाञ्जिभी
रुद्रा ऋतस्य सदनेषु वावृधुः।
निमेघमाना अत्येन पाजसा
सुश्चन्द्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम् ॥३॥

(ऋ. २-३४)

" हे (हिरण्यशिप्राः) सोने के मुकुट धारण करनेवाले (दविध्वतः) शत्रुको कंपानेवाले मरुतों ! (आजिषु) संग्रामों में (अत्यान् अश्वान्) चपल घोडों को (उक्षन्ते इव) जैसे स्नान कराते हैं, वैसे जो स्नान करते हैं और (नदस्य कर्णैः आशुभिः) हिनहिनानेवाले घोडों के कानों के समान चपल घोडोंके साथ (तुरयन्त) दौडते हैं, आप (समन्यवः) उत्साह वाले (पृषतीभिः) बिंदुवाली हरिणियों के साथ (पृक्षं याथ) हविष्यान्न के पास, यज्ञ के पास, जाओ। "

" हे (भ्राजद्-ऋष्टयः) चमकनेवाले भालों को धारण करनेवाले (समन्यवः) उत्साह से परिपूर्ण मरुतो! (इन्धन्वभिः) प्रदीप्त, तेजस्वी (रप्शद्-ऊधभिः) भरपूर दुग्धाशयवाली (धेनुभिः) धेनुओं के साथ रहते हुए (अध्वस्मभिः पथिभिः) अविनाशी मार्गों से (हंसासः न) हंसों के समान (मधोः मदाय) मधुर सोमरसपान के आनन्द के लिये (स्वसराणि गन्तन) यज्ञस्थानों के पास जाओ। "

" (रुद्राः) शत्रुको रुलानेवाले मरुत् (ऋतस्य सदने) यज्ञ के मण्डप में (क्षोणीभिः अरुणेभिः न अञ्जिभिः) शब्द करनेवाले, चमकनेवाले अलंकारों के समान (वावृधुः) बढते हैं। (निमेघमानाः) मेघके समान (अत्येन पाजसा) गमनशील बल से युक्त (सुश्चंद्रं वर्णं सुपेशसं) चमकनेवाला आनन्ददायक वर्ण (दधिरे) धारण करते हैं। "

विवरमार्ग।

(श्यावाश्व आत्रेयः। अनुष्टुप्। १७ पंक्तिः।)

आपथयो विपथयोऽन्तस्पथा अनुपथाः।
एतेभिर्मह्यं नामभिः यज्ञं विष्टार ओहते ॥१०॥
य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः कवयः सन्ति वेधसः।
तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा ॥१३॥
सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः।
यमुनायामधि श्रुतं उद्राधो गव्यं मृजे निराधो
अश्व्यं मृजे ॥ १७ ॥ (ऋ. ५।५२)

" (आपथयः) सीधे मार्गसे, (विपथयः) प्रतिकूल मार्ग से, (अन्तस्पथा) अन्दर के गुप्त मार्ग के, विवर के मार्ग से, (अनुपथाः) साथवाले अनुकूल मार्ग से अर्थात् (एतेभिः नामभिः) इन सब प्रसिद्ध मार्गोंसे (विष्टारः) यज्ञों का विस्तार करते हुए (यज्ञं ओहते) यज्ञ के पास आते हैं। "

" जो (ऋष्वा) दर्शनीय (ऋष्टिविद्युतः) शस्त्रों से विशेष प्रकाशित, (कवयः) ज्ञानी और (वेधसः) वेध करनेवाले (सन्ति) हैं, हे ऋषे! (तं मारुतं गणं) उन मरुतों के गणों को (नमस्या गिरा) नमन करनेवाली वाणी से (रमय) आनंदित कर। "

" (ते शाकिनः सप्त सप्ताः) वे समर्थ सातसातों के संघ (एकं एका शता ददुः) एक एक सौ दान देते रहे। (यमुनायां अधिश्रुतं) यमुना के तीर पर यह प्रसिद्ध है कि, (गव्यं राधः उद्मृजे) गौओं का धन दान में दिया और (अश्व्यं राधः निमृजे) घोडोंका धन दानमें दिया। "

इस में चार मार्गों का वर्णन है। मरुत् चारों मार्गों से यज्ञ के प्रति आते हैं, इन मार्गों में अन्तस्पथ अर्थात् भूमि के अन्दर का विवरमार्ग भी है। ये मरुत् गौओं और घोडों का दान देते हैं, इत्यादि बातें इन मंत्रों में मननीय हैं।

मरुतों का सामर्थ्य।

(श्यावाश्व आत्रेयः। जगती।)

विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो
वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः।
अब्दया चिन्मुहुरा ह्रादुनीवृतः
स्तनयदमा रभसा उदोजसः ॥ ३ ॥

न स जीयते मरुतो न हन्यते
न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति।
नास्य राय उपदस्यन्ति नोतय
ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ ॥ ७ ॥

नियुत्वतो ग्रामजितो यथा नरो-
ऽर्यमणो न मरुतः कबन्धिनः।
पिन्वन्त्युत्सं यदिनासो अस्वरन्
व्युन्दन्ति पृथिवीं मध्वो अन्धसा ॥ ८ ॥

(ऋ. ५-५४)

" ये (नरः मरुतः) नेता मरुत् (विद्युन्महसः) बिजुली के समान महातेजस्वी, (अश्म-दिद्यवः) उल्का के समान प्रकाशमान, (वात-त्विषः) वायु के समान वेगवान्, (पर्वतच्युतः) पर्वतों को भी स्थान से भ्रष्ट करनेवाले, (अब्दया चित् मुहुः आ) पानी देने की अर्थात् वृष्टि की इच्छा वारंवार करनेवाले, (ह्रादुनीवृतः) बिजुली को प्रेरित करनेवाले, (स्तनयद्-अमाः) गर्जना में भी जिन की शक्ति प्रकट होती है, ऐसे ये मरुत् (रभसा उत् ओजसः) वेग और सामर्थ्य से युक्त हैं। "

"हे मरुतो ! जिस (ऋषिं) ऋषिको (वा यं राजानं वा) अथवा जिस राजा को तुम (सुषूदिथ) प्रेरित करते हो, वह (न सः जीयते) पराजित नहीं होता, (न हन्यते) न मारा जाता, (न स्रेधति) न पीछे हटता है, (न व्यथते) पीडित नहीं होता और (न रिष्यति) नाश को प्राप्त नहीं होता। (अस्य रायः न उपदस्यन्ति) इसके धन क्षीण नहीं होते, (न ऊतयः) न उसकी रक्षाएं कम होती हैं। "

" (यथा ग्रामजितः नरः) जैसे नगर को जीतनेवाले नेतालोग गर्व से चलते हैं, वैसे (नियुत्वतः) घोडों पर सवार हुए ये मरुत् (अर्यमणः कबन्धिनः) सूर्य के समान तेजस्वी होकर जल देने लगते हैं। (इनासः) ये स्वामी (यत् अस्वरन्) जब शब्द करते हुए (उत्सं पिन्वन्ति) हौज को जल से भर देते हैं, तब (मध्वः अन्धसा) मधुर जल से (पृथिवीं व्युंदन्ति) पृथ्वी को भर देते हैं। "

मरुत् विजयी वीर हैं। सर्वत्र (क-बन्धिनः) ये पानी का प्रबन्ध सुरक्षित रखते हैं। (मध्वः अन्धसा) मधुर अन्न का प्रबन्ध भी सुरक्षित रखते हैं। अन्न और जल का प्रबन्ध सुरक्षित रखने के कारण इनका विजय होता है। सैनिकों का विजय पेट की पूर्ति से होता है। पाठक विजय का यह कारण अवश्य देखें और अपने सैनिकों के प्रबंध में ऐसी सुव्यवस्था रखें।

(कण्वो घौरः। बृहती।)

परा ह यत् स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु।
वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशाः पर्वतानाम् ॥

(ऋ. १।३९)

"हे (नरः) शूर नेताओ ! (यत् स्थिरं परा हथ) जो स्थावर पदार्थ है, उसको तुम तोड देते हो, और (गुरु वर्तयथाः) जो बडा भारी पदार्थ हो, उसको तुम हिलाते हो, (पृथिव्याः वनिनः वि याथन) पृथ्वी पर के बडे वृक्षों को तुम उखाड देते हो और (पर्वतानां आशाः वि) पर्वतों को फाडते हो। "

शूर सैनिक स्थिर पदार्थों को अपने मार्ग से हटा देते हैं, बडे भारी पदार्थों को तोडकर चूर्ण करते हैं, वनों में बडे बडे वृक्षों को तोडकर वहां उत्तम मार्ग बनाते हैं और पर्वतों को भी फाडकर बीच में से मार्ग निकालते हैं। अर्थात् शूरों को किसी का प्रतिबंध नहीं होता। शूरों को सब मार्ग खुले रहते हैं।

(कण्वो घौरः। सतोबृहती।)

नहि वः शत्रुर्विविदे अधि द्यवि न भूम्यां रिशादसः। युष्माकमस्तु तविषी तनायुजा रुद्रासो नू चिदाधृषे ॥ ४ ॥ (ऋ. १।३९)

" हे (रिशादसः) शत्रु का नाश करनेवाले मरुतो ! (अधि द्यवि) द्युलोक में (वः शत्रुः न विविदे) आप के लिये कोई शत्रु नहीं है, (न भूम्यां) पृथ्वी पर भी आप के लिये कोई शत्रु नहीं है। हे (रुद्रासः) शत्रु को रुलानेवाले मरुतो ! (युष्माकं युजा) आप की संघटना से (आधृषे) शत्रु पर आक्रमण करने के लिये (तना तविषी अस्तु) विस्तृत सामर्थ्य आपके पास हो। "

आप के सामने ठहरनेवाला कोई शत्रु नहीं है और आप का परस्पर आपस का संगठन ऐसा है कि, आप शत्रु पर हमला करते हैं और शत्रु को रुला देते हैं।

(पुनर्वत्सः काण्वः। गायत्री।)

वि वृत्रं पर्वशो ययुः वि पर्वताँ अराजिनः।
चक्राणा वृष्णि पौंस्यम् ॥ २३ ॥
अनु त्रितस्य युध्यतः शुष्ममावन्नुत क्रतुम्।
अन्विन्द्रं वृत्रतूर्ये ॥ २४ ॥
विद्युद्धस्ता अभिद्यवः शिप्राः शीर्षन् हिरण्ययीः।
शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये ॥ २५ ॥
आ नो मखस्य दावनेऽश्वैर्हिरण्यपाणिभिः।
देवास उप गन्तन ॥ २६ ॥
सहो षु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्निं मरुद्भिः।
स्तुषे हिरण्यवाशिभिः ॥ ३२ ॥ (ऋ. ८-७)

" (अ-राजिनः) राजाको न माननेवाले, अराजक (वृष्णि पौंस्यं चक्राणा) बल के साथ पराक्रम करनेवाले मरुत् (वृत्रं पर्वशः विययुः) वृत्र को जोडजोड में काटते रहे॥ (युध्यतः त्रितस्य) युद्ध करनेवाले त्रितका (शुष्मं अनु आवन्) बल बढाया (उत क्रतुं) और कर्म की शक्ति भी बढायी और (वृत्रतूर्ये इंद्रं अनु) वृत्र के युद्ध में इन्द्र की रक्षा की ॥ (अभिद्यवः विद्युत्-हस्ताः) तेजस्वी बिजली जैसा शस्त्र हाथ में लेकर खडे हुए मरुत् (हिरण्ययीः शिप्राः) सोनेके शिरस्त्राण (शीर्षन्) सिर पर धारण करते हैं, (शुभ्राः श्रिये व्यंजते) जो (शुभ्राः) शोभासे चमकते हैं। हे (देवासः) देव मरुतो ! (नः मखस्य दावने) हमारे यज्ञ के प्रति तुम (हिरण्यपाणिभिः अश्वैः) सोने के आभूषणों से युक्त घोडों के साथ (उप आगन्तन) आओ। (वज्रं हस्तैः) वज्र हाथ में धारण करनेवाले (हिरण्य-वाशिभिः) सोने की कुठार हाथ में लिये (मरुद्भिः) मरुतों के साथ अग्नि की भी (सहः) बल के लिये (कण्वासः) हे ज्ञानियो ! (स्तुषे) प्रशंसा करो। "

इन मंत्रों में मरुतों के शस्त्र बिजुली जैसे चमकनेवाले, सोनेकी नकशी किये कुठार और भाले हैं। मरुतोंके सिर पर सोने के मुकुट हैं, श्वेत पोषाख किये हैं। और ये शक्ति के कामों के लिये प्रसिद्ध हैं, ऐसा वर्णन है।

सिर पर सोने के मुकुट, अथवा जरतारी के साफे हैं, सोने के भूषण हाथों में धारण किये हैं, सोने की नकशी के कुठार हाथों में धारण किये हैं। यह वर्णन मरुतों का है। इन्द्र के ये सैनिक हैं।

(सोभरिः काण्वः। सतो बृहती।)

गीर्भिर्वाणो अज्यते सोभरीणां रथे कोशे हिरण्यये। गोबन्धवः सुजातास इषे भुजे महान्तो नः स्परसे नु ॥ (ऋ. ८-२०-८)

" (हिरण्यये रथे कोशे) सोनेके रथके बीचमें (सोभरीणां गीर्भिः) सोभरीयों की प्रशंसा के साथ (वाणः अज्यते) वाणनामक वाद्य बजने लगा। (गो-बन्धवः) गौओं के भाई (सुजातासः) उत्तम जन्मे हुए, उत्तम कुल में जन्म जिन का हुआ है। अतः (महान्तः) बडे मरुत् (नः इषे भुजे) हमारे अन्न का भोग करने के लिये (स्परसे नु) शीघ्र आ जांय। "

यहां मरुतों को गौओं के भाई कहा है। गौओं के साथ इन का इतना सम्बन्ध है। इन की बहिने गौवें हैं। ये मरुत् अपने रथ में वाण नामक वाद्य बजाते हैं। वाण वाद्य १०० तारों का है और छोटे ढोल जैसा चमडे का भी होता है।

औषधी ज्ञान।

(सोभरिः काण्वः। सतोबृहती।)

विश्वं पश्यन्तो बिभृथा तनूष्वा तेना नो अधि वोचत। क्षमा रपो मरुत् आतुरस्य न इष्कर्ता विह्रुतं पुनः ॥ (ऋ. ८।२०।२६)

" हे मरुतो ! (विश्वं पश्यन्तः) सब कुछ जाननेवाले

आप (नः तनूषु) हमारे शरीरों के पास (बिभृथः) औषध ले आओ और (तेन अधि वोचत) उस से हमें नीरोग होने का उपदेश करो। (नः आतुरस्य) हमारे में जो रोगी हो, उस के पाससे (रपः क्षमा) दोष दूर करो और (विन्हुतं पुनः इष्कर्ता) टूटेफूटे या जखमी को फिर निर्दोष करो।"

मरुत् सैनिक हैं, पर वे औषधिविद्या को जानते हैं, जखमियों की सेवा करना उन को मालूम है, पहिले से नीरोग रहने के लिये जो सावधानी रखनी चाहिये, वह भी उन को मालूम है। सैनिकों को दवाइयों का थोडा ज्ञान चाहिये।

(गोतमो राहूगणः। जगती।)

उपह्वरेषु यदचिध्वं ययिं
वय इव मरुतः केनचित् पथा।
श्चोतन्ति कोशा उप वो रथेष्वा
घृतमुक्षता मधुवर्णमर्चते ॥२॥
प्रैषामज्मेषु विथुरेव रेजते
भूमिर्यामेषु यद्ध युञ्जते शुभे।
ते क्रीळयो धुनयो भ्राजदृष्टयः
स्वयं महित्वं पनयंत धूतयः ॥३॥ (१-८७)

" हे (मरुतः) मरुतो! (वयः इव) पक्षियोंके समान (केन चित् पथा) जिस चाहे उस मार्ग से (उपह्वरेषु) आकाश में (यत्) जब (ययिं अचिध्वं) गमनमार्ग निश्चित करते हैं, तब (वः रथेषु) आप के रथों में (कोशाः उप आ श्चोतन्ति) खजाने खुले होते हैं और आप (अर्चते) उपासक के लिये (मधुवर्णं घृतं) शुद्ध घी (उक्षता) सींचते हैं।"

" (यत् ह) जब मरुत् (शुभे युञ्जते) शोभाके लिये रथ जोतते हैं, तब (एषां) इन के (अज्मेषु यामेषु) घुडदौड के गमनों से (भूमिः) भूमि (विथुरा इव) पति से वियुक्त स्त्री के समान (रेजते) कांपती रहती है। ये मरुत् (क्रीळयः) खेलों में प्रवीण (धुनयः) हिलानेवाले (भ्राजत्-ऋष्टयः) चमकनेवाले भाले धारण करनेवाले (धूतयः) चलानेवाले (स्वयं महित्वं) अपना ही महत्त्व स्वयं (पनयन्त) व्यवहार से बताते हैं।"

इन मंत्रों के वर्णन से स्पष्ट है कि, आकाश में जिस चाहे उस मार्ग से जानेवाले मरुतों के विमान पक्षियों जैसे भ्रमण करते हैं। तथा इन के वाहन जब भूमि पर से घूमने लगते हैं, तब भूमि कांपने लगती है। यह वर्णन बडी गाडियों का है और निःसंदेह विमानों का है, पक्षी जैसे जो आकाश में घूमते हैं। ये निःसंदेह विमान ही हैं।

वीरता और धन।

(गृत्समदः शौनकः। जगती।)

तं वः शर्धं मारुतं सुम्नयुर्गिरा
उपब्रुवे नमसा दैव्यं जनम्।
यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा
अपत्य-साचं श्रुत्यं दिवे दिवे ॥ (ऋ. २-३०-११)

" हे मरुतो! मैं (सुम्नयुः) सुख की इच्छा करनेवाला उपासक (तं वः मारुतं शर्धं) उस आप के मरुत्समूहरूपी बल को तथा (दैव्यं जनं) दिव्य जनों को (नमसा गिरा) प्रणाम से और वाणी से (उप ब्रुवे) प्रशंसित करते हैं। हमें (दिवे दिवे) प्रतिदिन (सर्ववीरं) सब वीरों से युक्त (अपत्यसाचं) संतानों से युक्त और (श्रुत्यं) यश से युक्त (रयिं) धन (नशामहै) प्राप्त हो।"

धन ऐसा चाहिये कि, जिस के साथ हमें वीरता, संतान और यश मिले। वीरता के विना धन मिलना असंभव है और सुरक्षित रखना भी असंभवही है।

मरुतों के विशेषणों का विचार।

अब मरुत्सूक्तों में जो विशेषण प्रयुक्त हुए हैं, इन का विचार करते हैं। यहां विचारार्थ थोडेसे ही विशेषण लिये हैं और इन के स्थान के निर्देश पाठक सूची में देख सकते हैं, इस लिये यहां दिये नहीं हैं—

भाई मरुत्।

ये मरुत् आपस में समान भाई हैं, न इन में (अज्येष्ठासः) कोई बडा है, न इनमें कोई (अमध्यमासः) मध्यम है और न इनमें कोई (अकनिष्ठासः) कनिष्ठ है, (अचरमाः) नीच भी इन में कोई नहीं है, तथापि गुणों से ये (ज्येष्ठासः) श्रेष्ठ हैं, और (वृद्धाः) गुणों से ये बडे भी हैं। ये (अन्-आनताः) किसीके सामने नमते भी नहीं, उग्र वृत्ति से रहते हैं, ये (सु-जातासः) कुलीन हैं और ये सब मरुत् आपसमें (भ्रातरः) भाई भाई हैं। ये आपस में परस्पर भाई ही अपने आप को कहते हैं।

जनता के सेवक।

मरुत् (**नृ-साचः**) जनता की सेवा करनेवाले हैं, (**नरः, वीराः**) ये नेता हैं, वीर हैं, जनता की (**त्रातारः**) रक्षा करनेवाले हैं। ये (**मानुषासः, विश्वकृष्टयः**) मनुष्य है, सब मानव ही मरुत हैं। ये (**अद्वेषः**) किसी का द्वेष नहीं करते, (**अमवन्तः**) ये बलवान् होते हैं। ये (**घोरवर्पसः**) बडे शरीरवाले होते हैं और (**पूत-दक्षसः**) पवित्र कार्यों में अपने बल का अर्पण करनेवाले होते हैं।

ये (**प्रक्रीडिनः**) विशेष खेलनेवाले अथवा खेलों में प्रेम रखनेवाले हैं, (**अदाभ्याः**) ये कभी दबे नहीं जाते और (**अधृष्टासः**) कोई इनको डर भी नहीं बता सकता।

ये मरुत् (**अच्युता ओजसा प्रच्यावयंतः**) स्वयं अपने स्थान से भ्रष्ट नहीं होते, पर अपनी शक्ति से सब शत्रुओं को स्थानभ्रष्ट करते हैं।

गोसेवा करनेवाले।

मरुत् (**गो-मातरः, पृश्निमातरः, पृश्नेः पुत्राः**) गौ को माता माननेवाले, भूमि को माता माननेवाले, मातृभूमि की सेवा करनेवाले हैं, (**गो-बंधवः**) गौ के भाई जैसे ये बर्तते हैं।

घोडे पास रखते हैं।

मरुत् वीर (**अश्वयुजः**) घोडों को अपने रथों को जोतनेवाले होते हैं, तथा (**स्वश्वाः**) उत्तम घोडोंवाले, (**अरुणाश्वाः रोहितः**) लाल रंगोंवाले घोडों को पास रखनेवाले, (**पृषतीः**) धब्बोवाले घोडोंसे युक्त, (**आशवः**) त्वरा से दौडनेवाले घोडों से युक्त, (**सुयमाः**) शिक्षित घोडोंवाले ऐसे मरुतों के घोडों का वर्णन हैं। इसलिये मरुतों को (**अनर्वाणः**) कहा है, यहां घोडों को अपने पास न रखनेवाले ऐसा अर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि पूर्वोक्त विशेषणों से यह अर्थ विरुद्ध है। इसलिये (**अन्-अर्वाणः**) का अर्थ हीन भावों को अपने पास न रखनेवाले, झगडालु वृत्तियों से रहित आदि अर्थ इस शब्द का करना योग्य है।

मरुतों का रथ।

मरुतों का रथ (**हिरण्यरथाः, हिरण्ययाः**) सोने का है, रथ के पहिये भी (**हिरण्यचक्राः**) सोने के हैं। ये रथ बडे (**सुरथाः**) सुंदर हैं, (**सुखाः**) अन्दर बैठने से सुख होता है, (**विद्युन्मन्तः**) बिजली की शक्ति इनके रथों में हैं। (**ऋष्टिमंतः**) शस्त्र इनके रथों पर होते हैं। (**अश्वपर्णाः**) घोडे ही इनके रथों के पंख हैं, अर्थात् अश्वशक्ति से ही ये रथ दौडते हैं। इस तरह इन के रथों का वर्णन है।

शत्रुनाश।

मरुतों के पास तेजस्वी शस्त्रास्त्र भरपूर हैं, इस के वर्णन पूर्वस्थान में आ गये हैं। इन शस्त्रों से ये (**रिशादसः**) शत्रु का नाश करते हैं और जनता की रक्षा करते हैं।

मरुतों के विशेषणों का विचार करने से इस तरह ज्ञान होता है।

स्वरूप।

मरुतों का स्वरूप अध्यात्म में ' **प्राण** ' है, अधिदैवत में ' **वायु** ' है और अधिभूत अर्थात् मानवों में ' **वीर** ' है। अतः मरुतों के मंत्रों में ' प्राण, वीर, और वायु ' के वर्णन हम देखते हैं।

प्रचण्ड वायु, आंधी, बादल, मेघ, ओले, वृष्टि आदि का वर्णन मरुतों के सूक्तों में है, पर वह इस ढंग से है कि, जिससे वीरों का ही वह है, ऐसा प्रतीत होता है। अध्यात्म, अधिभूत और अधिदैवत में मिलकर सामान्यतः मरुतों का वर्णन इन सूक्तों में है, इसी लिये ' प्राण, वीर और वायु ' का वर्णन इन सूक्तों में सूक्ष्म दृष्टि से प्रतीत होता है। पाठक इस तरह इन सूक्तों का विचार करें और वीरभाव का लाभ प्राप्त करें।

औंध, (जि. सातारा) २४।५।४२

श्री० दा० सातवलेकर,
अध्यक्ष-स्वाध्याय-मण्डल।

मरुद्देवता की विषयसूची ।

विषय	पृष्ठ
१ मरुद्देवता का परिचय ।	३
२ मरुतों के शस्त्र ।	५
३ बल से विजय ।	९
४ जनता की सेवा ।	९
५ साम्यवाद ।	९
६ मरुतों की शोभा ।	१०
७ प्रतिबन्धरहित गति ।	१२
८ धूम्रास्त्र-प्रयोग ।	१२
९ विवरमार्ग ।	१३
१० मरुतों का सामर्थ्य ।	१४
११ औषधि-ज्ञान ।	१५
१२ वीरता और धन ।	१६
१३ मरुतों का रथ ।	१७
१४ स्वरूप ।	१७

मरुद्देवता-मन्त्रों की ऋषिसूची ।

मरुतः ।

ऋषिः	मन्त्रसंख्या	पृष्ठम्
मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ।	१-४	१
मेधातिथिः काण्वः ।	५	,,
कण्वो घौरः ।	६-४५	,,
पुनर्वत्सः काण्वः ।	४६-८१	३
सोभरिः काण्वः ।	८२-१०७	४
नोधा गौतमः ।	१०८-१२२	६
गोतमो राहूगणः ।	१२३-१५६	७
परुच्छेपो दैवोदासिः ।	१५७	९
अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।	१५८-१९७	९
गृत्समदः शौनकः ।	१९८-२१३	१२
गाथिनो विश्वामित्रः ।	२१४-२१६	१४
श्यावाश्व आत्रेयः ।	२१७-३१७	,,
एवयामरुदात्रेयः ।	३१८-३२६	२१
शंयुर्बार्हस्पत्यः ।	३२७-३३३	२२
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।	३३४-३४४	,,
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।	३४५-३९४	२३
बिन्दुः पूतदक्षो वा आङ्गिरसः ।	३९५-४०६	२६
स्यूमरश्मिर्भार्गवः ।	४०७-४२२	२७
विवस्वानृषिः ।	४२३-४२८	२८
श्यावाश्व आत्रेयः ।	४२९	,,
ब्रह्मा ।	४३०-४३३	,,
अथर्वा ।	४३४-४३६	२९
शंतातिः ।	४३७-४३९	,,
मृगारः ।	४४०-४४६	,,
अङ्गिराः ।	४४७	३०

मरुत्सहचारी देवगणाः ।

(१) मरुद्रुद्रविष्णवः ।	वसुश्रुत आत्रेयः ।	४४८	,,
(२) मरुतोऽग्नामरुतौ वा ।	श्यावाश्व आत्रेय	४४९-४५६	,,
(३) सोमो मरुतः ।	अथर्वा ।	४५७	३१
(४) मरुत्पर्जन्यौ ।	अथर्वा ।	४५८	,,
(५) मरुत आपः ।	अथर्वा ।	४५९-४६४	३१

मरुद्देवता की सूचियाँ ।

१ पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।	पृ० ३१-३६
प्रथमं मण्डलम् ।	३२-३३
द्वितीयं ,, ।	३३
तृतीयं ,, ।	,,
पञ्चमं ,, ।	३३-३४
षष्ठं ,, ।	३४
सप्तमं ,, ।	३४-३५
अष्टमं ,, ।	३५-३६
दशमं ,, ।	३६
२ उपमासूची ।	३७-३९
३ अकारादि वर्णानुक्रमसूची ।	४०-४४
४ गुणबोधक-पदसूची ।	४४-५३
५ निपात-देवतानां सूची ।	५४
६ ,, ,, वर्णानुक्रमसूची	५५

दैवत-संहिता ।

[ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।]

४ मरुद्देवता ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।६। ४,६,८,९)

(१-४) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे । दधाना नाम यज्ञियम् ४
देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः । महामनूषत श्रुतम् ६
अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति । गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ८
अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि । समस्मिन्नृञ्जते गिरः ९ ४

॥ २ ॥ (ऋ० १।१५।२)

(५) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मरुतः पिबत ऋतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन । यूयं हि ष्ठा सुदानवः २ ५

॥ ३ ॥ (ऋ० १।३७।१-१५)

(६-४५) कण्वो घौरः । गायत्री ।

क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम् । कण्वा अभि प्र गायत १
ये पृषतीभिरृष्टिभिः साकं वाशीभिरञ्जिभिः । अजायन्त स्वभानवः २
इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद् वदान् । नि यामञ्चित्रमृञ्जते ३
प्र वः शर्धाय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय शुष्मिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत ४
प्र शंसा गोष्वघ्न्यं क्रीळं यच्छर्धो मारुतम् । जम्भे रसस्य वावृधे ५ १०
को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च ग्मश्च धूतयः । यत् सीमन्तं न धूनुथ ६
नि वो यामाय मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे । जिहीत पर्वतो गिरिः ७
येषामज्मेषु पृथिवी जुजुर्वाँ इव विश्पतिः । भिया यामेषु रेजते ८ १३

स्थिरं हि जानमेषां वयो मातुर्निरेतवे । यत् सीमनु द्विता शवः ९
उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा अज्मेष्वत्नत । वाश्रा अभिज्ञु यातवे १० १५
त्यं चिद् घा दीर्घं पृथुं मिहो नपातममृध्रम् । प्र च्यावयन्ति यामभिः ११
मरुतो यद्ध वो बलं जनाँ अचुच्यवीतन । गिरीँरचुच्यवीतन १२
यद्ध यान्ति मरुतः सं ह ब्रुवतेऽध्वन्ना । शृणोति कश्चिदेषाम् १३
प्र यात शीभमाशुभिः सन्ति कण्वेषु वो दुवः । तत्रो षु मादयाध्वै १४
अस्ति हि ष्मा मदाय वः स्मसि ष्मा वयमेषाम् । विश्वं चिदायुर्जीवसे १५ २०

॥ ४ ॥ (ऋ० १।३८।१-१५)

कद्ध नूनं कधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः । दधिध्वे वृक्तबर्हिषः १
क्व नूनं कद् वो अर्थं गन्ता दिवो न पृथिव्याः । क्व वो गावो न रण्यन्ति २
क्व वः सुम्ना नव्यांसि मरुतः क्व सुविता । क्वो३ विश्वानि सौभगा ३
यद् यूयं पृश्निमातरो मर्तासः स्यातन । स्तोता वो अमृतः स्यात् ४
मा वो मृगो न यवसे जरिता भूदजोष्यः । पथा यमस्य गादुप ५ २५
मो षु णः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणा वधीत् । पदीष्ट तृष्णया सह ६
सत्यं त्वेषा अमवन्तो धन्वञ्चिदा रुद्रियासः । मिहं कृण्वन्त्यवाताम् ७
वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न माता सिषक्ति । यदेषां वृष्टिरसर्जि ८
दिवा चित् तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनोदवाहेन । यत् पृथिवीं व्युन्दन्ति ९
अध स्वनान्मरुतां विश्वमा सद्म पार्थिवम् । अरेजन्त प्र मानुषाः १० ३०
मरुतो वीळुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु । यातेमखिद्रयामभिः ११
स्थिरा वः सन्तु नेमयो रथा अश्वास एषाम् । सुसंस्कृता अभीशवः १२
अच्छा वदा तना गिरा जरायै ब्रह्मणस्पतिम् । अग्निं मित्रं न दर्शतम् १३
मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्य इव ततनः । गाय गायत्रमुक्थ्यम् १४
वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्युमर्किणम् । अस्मे वृद्धा असन्निह १५ ३५

॥ ५ ॥ (ऋ० १।३९।१-१०)

(प्रगाथः=(विषमा) बृहती. (समा) सतो बृहती)।

प्र यदित्था परावतः शोचिर्न मानमस्यथ ।
कस्य क्रत्वा मरुतः कस्य वर्पसा कं याथ कं ह धूतयः १
स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे ।
युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः २ ३७

परा ह यत् स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु ।
वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशाः पर्वतानाम् ३
नहि वः शत्रुर्विविदे अधि द्यवि न भूम्यां रिशादसः ।
युष्माकमस्तु तविषी तना युजा रुद्रासो नू चिदाधृषे ४
प्र वेपयन्ति पर्वतान् वि विञ्चन्ति वनस्पतीन् ।
प्रो आरत मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वया विशा ५ ४०
उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं प्रष्टिर्वहति रोहितः ।
आ वो यामाय पृथिवी चिदश्रो-दबीभयन्त मानुषाः ६
आ वो मक्षू तनाय कं रुद्रा अवो वृणीमहे ।
गन्ता नूनं नोऽवसा यथा पुरे-त्था कण्वाय बिभ्युषे ७
युष्मेषितो मरुतो मर्त्येषित आ यो नो अभ्व ईषते ।
वि तं युयोत शवसा व्योजसा वि युष्माकाभिरूतिभिः ८
असामि हि प्रयज्यवः कण्वं दद प्रचेतसः ।
असामिभिर्मरुत आ न ऊतिभि-र्गन्ता वृष्टिं न विद्युतः ९
असाम्योजो बिभृथा सुदानवो ऽसामि धूतयः शवः ।
ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इषुं न सृजत द्विषम् १० ४५

॥ ६ ॥ (ऋ० ८।७।१-३६)
(४६-८१) पुनर्वत्सः काण्वः । गायत्री ।

प्र यद् वस्त्रिष्टुभमिषं मरुतो विप्रो अक्षरत् । वि पर्वतेषु राजथ १
यदङ्ग तविषीयवो यामं शुभ्रा अचिध्वम् । नि पर्वता अहासत २
उदीरयन्त वायुभि-र्वाश्रासः पृश्निमातरः । धुक्षन्त पिप्युषीमिषम् ३
वपन्ति मरुतो मिहं प्र वेपयन्ति पर्वतान् । यद् यामं यान्ति वायुभिः ४
नि यद् यामाय वो गिरि-र्नि सिन्धवो विधर्मणे । महे शुष्माय येमिरे ५ ५०
युष्माँ उ नक्तमूतये युष्मान् दिवा हवामहे । युष्मान् प्रयत्यध्वरे ६
उदु त्ये अरुणप्सव-श्चित्रा यामेभिरीरते । वाश्रा अधि ष्णुना दिवः ७
सृजन्ति रश्मिमोजसा पन्थां सूर्याय यातवे । ते भानुभिर्वि तस्थिरे ८
इमां मे मरुतो गिर-मिमं स्तोममृभुक्षणः । इमं मे वनता हवम् ९
त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुह्रे वज्रिणे मधु । उत्सं कवन्धमुद्रिणम् १० ५५
मरुतो यद्ध वो दिवः सुम्नायन्तो हवामहे । आ तू न उप गन्तन ११ ५६

यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा ऋभुक्षणो दमे । उत प्रचेतसो मदे १२
आ नो रयिं मदच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम् । इयर्ता मरुतो दिवः १३
अधीव यद् गिरीणां यामं शुभ्रा अचिध्वम् । सुवानैर्मन्दध्व इन्दुभिः १४
एतावतश्चिदेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः । अदाभ्यस्य मन्मभिः १५ ६०
ये द्रप्सा इव रोदसी धमन्त्यनु वृष्टिभिः । उत्सं दुहन्तो अक्षितम् १६
उदु स्वानेभिरीरत उद् रथैरुदु वायुभिः । उत् स्तोमैः पृश्निमातरः १७
येनाव तुर्वशं यदुं येन कण्वं धनस्पृतम् । राये सु तस्य धीमहि १८
इमा उ वः सुदानवो घृतं न पिप्युषीरिषः । वर्धान् काण्वस्य मन्मभिः १९
क्व नूनं सुदानवो मदथा वृक्तबर्हिषः । ब्रह्मा को वः सपर्यति २० ६५
नहि ष्म यद्ध वः पुरा स्तोमेभिर्वृक्तबर्हिषः । शर्धाँ ऋतस्य जिन्वथ २१
समु त्ये महतीरपः सं क्षोणी समु सूर्यम् । सं वज्रं पर्वशो दधुः २२
वि वृत्रं पर्वशो ययु-र्वि पर्वताँ अराजिनः । चक्राणा वृष्णि पौंस्यम् २३
अनु त्रितस्य युध्यतः शुष्ममावन्नुत क्रतुम् । अन्विन्द्रं वृत्रतूर्ये २४
विद्युद्धस्ता अभिद्यवः शिप्राः शीर्षन् हिरण्ययीः । शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये २५ ७०
उशना यत् परावत उक्ष्णो रन्ध्रमयातन । द्यौर्न चक्रदद् भिया २६
आ नो मखस्य दावने ऽश्वैर्हिरण्यपाणिभिः । देवास उप गन्तन २७
यदेषां पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः । यान्ति शुभ्रा रिणन्नपः २८
सुषोमे शर्यणावत्या-र्जीके पस्त्यावति । ययुर्निचक्रया नरः २९
कदा गच्छाथ मरुत इत्था विप्रं हवमानम् । मार्डीकेभिर्नाधमानम् ३० ७५
कद्ध नूनं कधप्रियो यदिन्द्रमजहातन । को वः सखित्व ओहते ३१
सहो षु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्निं मरुद्भिः । स्तुषे हिरण्यवाशीभिः ३२
ओ षु वृष्णः प्रयज्यू-ना नव्यसे सुविताय । ववृत्यां चित्रवाजान् ३३
गिरयश्चिन्नि जिहते पर्शानासो मन्यमानाः । पर्वताश्चिन्नि येमिरे ३४
आक्ष्णयावानो वह-न्त्यन्तरिक्षेण पततः । धातारः स्तुवते वयः ३५ ८०
अग्निर्हि जानि पूर्व्य-श्छन्दो न सूरो अर्चिषा । ते भानुभिर्वि तस्थिरे ३६ ८१

॥ ७ ॥ (ऋ० ८।२०।१-२६)

(८२-१०७) सोभरिः काण्वः । प्रगाथः=(विषमा ककुप्, समा सतोबृहती); १४ सतो विराट् ।

आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थाता समन्यवः । स्थिरा चिन्नमयिष्णवः १ ८२

वीळुपविभिर्मरुत ऋभुक्षण आ रुद्रासः सुदीतिभिः ।
इषा नो अद्या गता पुरुस्पृहो यज्ञमा सोभरीयवः २
विश्वा हि रुद्रियाणां शुष्ममुग्रं मरुतां शिमीवताम् । विष्णोरेषस्य मीळ्हुषाम् ३
वि द्वीपानि पापतन् तिष्ठद् दुच्छुना—भे युजन्त रोदसी ।
प्र धन्वान्यैरत शुभ्रखादयो यदेजथ स्वभानवः ४ ८५
अच्युता चिद् वो अज्मन्ना नानदति पर्वतासो वनस्पतिः । भूमिर्यामेषु रेजते ५
अमाय वो मरुतो यातवे द्यौ—र्जिहीत उत्तरा बृहत् ।
यत्रा नरो देदिशते तनू—ष्वा त्वक्षांसि बाह्वोजसः ६
स्वधामनु श्रियं नरो महि त्वेषा अमवन्तो वृषप्सवः । वहन्ते अह्रुतप्सवः ७
गोभिर्वाणो अज्यते सोभरीणां रथे कोशे हिरण्यये ।
गोबन्धवः सुजातास इषे भुजे महान्तो नः स्परसे नु ८
प्रति वो वृषदञ्जयो वृष्णे शर्धाय मारुताय भरध्वम् । हव्या वृषप्रयाव्णे ९ ९०
वृषणश्वेन मरुतो वृषप्सुना रथेन वृषनाभिना ।
आ श्येनासो न पक्षिणो वृथा नरो हव्या नो वीतये गत १०
समानमञ्ज्येषां वि भ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु । दविद्युतत्यृष्टयः ११
त उग्रासो वृषण उग्रबाहवो नकिष्टनूषु येतिरे ।
स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वो ऽनीकेष्वधि श्रियः १२
येषामर्णो न सप्रथो नाम त्वेषं शश्वतामेकमिद् भुजे । वयो न पित्र्यं सहः १३
तान् वन्दस्व मरुतस्ताँ उप स्तुहि तेषां हि धुनीनाम् ।
अराणां न चरमस्तदेषां दाना मह्ना तदेषाम् १४ ९५
सुभगः स व ऊति—ष्वास पूर्वासु मरुतो व्युष्टिषु । यो वा नूनमुतासति १५
यस्य वा यूयं प्रति वाजिनो नर आ हव्या वीतये गथ
अभि ष द्युम्नैरुत वाजसातिभिः सुम्ना वो धूतयो नशत् १६
यथा रुद्रस्य सूनवो दिवो वशन्त्यसुरस्य वेधसः । युवानस्तथेदसत् १७
ये चार्हन्ति मरुतः सुदानवः स्मन्मीळ्हुषश्चरन्ति ये ।
अतश्चिदा न उप वस्यसा हृदा युवान आ ववृध्वम् १८
यून ऊ षु नविष्ठया वृष्णः पावकाँ अभि सोभरे गिरा । गाय गा इव चर्कृषत् १९ १००
साहा ये सन्ति मुष्टिहेव हव्यो विश्वासु पृत्सु होतृषु ।
वृष्णश्चन्द्रान्न सुश्रवस्तमान् गिरा वन्दस्व मरुतो अह २० १०१

गावश्चिद् घा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः । रिहते ककुभो मिथः २१
गर्तश्चिद् वो नृतवो रुक्मवक्षस उप भ्रातृत्वमायति ।
अधि नो गात मरुतः सदा हि व आपित्वमस्ति निध्रुवि २२
मरुतो मारुतस्य न आ भेषजस्य वहता सुदानवः । यूयं सखायः सप्तयः २३
याभिः सिन्धुमवथ याभिस्तूर्वथ याभिर्दशस्यथा क्रिविम् ।
मयो नो भूतोतिभिर्मयोभुवः शिवाभिरसचद्विषः २४ १०५
यत् सिन्धौ यदसिक्न्यां यत् समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः । यत् पर्वतेषु भेषजम् २५
विश्वं पश्यन्तो बिभृथा तनूष्वा तेना नो अधि वोचत ।
क्षमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कर्ता विह्रुतं पुनः २६ १०७

॥ ८ ॥ (ऋ० १।६४।१-१५)

(१०८-१२२) नोधा गौतमः। जगती, १५ त्रिष्टुप्।

वृष्णे शर्धाय सुमखाय वेधसे नोधः सुवृक्तिं प्र भरा मरुद्भ्यः ।
अपो न धीरो मनसा सुहस्त्यो गिरः समञ्जे विदथेष्वाभुवः १
ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास उक्षणो रुद्रस्य मर्या असुरा अरेपसः
पावकासः शुचयः सूर्या इव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्पसः २
युवानो रुद्रा अजरा अभोग्घनो ववक्षुरध्रिगावः पर्वता इव ।
दृळ्हा चिद् विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्र च्यावयन्ति दिव्यानि मज्मना ३ ११०
चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षःसु रुक्माँ अधि येतिरे शुभे ।
अंसेष्वेषां नि मिमृक्षुरृष्टयः साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः ४
ईशानकृतो धुनयो रिशादसो वातान् विद्युतस्तविषीभिरक्रत ।
दुहन्त्यूधर्दिव्यानि धूतयो भूमिं पिन्वन्ति पयसा परिज्रयः ५
पिन्वन्त्यपो मरुतः सुदानवः पयो घृतवद् विदथेष्वाभुवः ।
अत्यं न मिहे वि नयन्ति वाजिन—मुत्सं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितम् ६
महिषासो मायिनश्चित्रभानवो गिरयो न स्वतवसो रघुष्यदः ।
मृगा इव हस्तिनः खादथा वना यदारुणीषु तविषीरयुग्ध्वम् ७
सिंहा इव नानदति प्रचेतसः पिशा इव सुपिशो विश्ववेदसः ।
क्षपो जिन्वन्तः पृषतीभिरृष्टिभिः समित् सबाधः शवसाहिमन्यवः ८ ११५
रोदसी आ वदता गणश्रियो नृषाचः शूराः शवसाहिमन्यवः ।
आ वन्धुरेष्वमतिर्न दर्शता विद्युन्न तस्थौ मरुतो रथेषु वः ९ ११६

विश्ववेदसो रयिभिः समोकसः संमिश्लासस्तविषीभिर्विरप्शिनः ।
अस्तार इषुं दधिरे गभस्त्यो-रनन्तशुष्मा वृषखादयो नरः १०
हिरण्ययेभिः पविभिः पयोवृध उज्जिघ्नन्त आपथ्यो३ न पर्वतान् ।
मखा अयासः स्वसृतो ध्रुवच्युतो दुध्रकृतो मरुतो भ्राजदृष्टयः ११
घृषुं पावकं वनिनं विचर्षणिं रुद्रस्य सूनुं हवसा गृणीमसि ।
रजस्तुरं तवसं मारुतं गण-मृजीषिणं वृषणं सश्चत श्रिये १२
प्र नू स मर्तः शवसा जनाँ अति तस्थौ व ऊती मरुतो यमावत ।
अर्वद्भिर्वाजं भरते धना नृभि-रापृच्छ्यं क्रतुमा क्षेति पुष्यति १३ १२०
चर्कृत्यं मरुतः पृत्सु दुष्टरं द्युमन्तं शुष्मं मघवत्सु धत्तन ।
धनस्पृतमुक्थ्यं विश्वचर्षणिं तोकं पुष्येम तनयं शतं हिमाः १४
नू ष्ठिरं मरुतो वीरवन्त-मृतीषाहं रयिमस्मासु धत्त ।
सहस्रिणं शतिनं शूशुवांसं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् १५ १२२

॥९॥ (ऋ० १।८५।१-१२)

(१२३-१३४) गोतमो राहूगणः । जगती; ५,१२ त्रिष्टुप् ।

प्र ये शुम्भन्ते जनयो न सप्तयो यामन् रुद्रस्य सूनवः सुदंससः ।
रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे मदन्ति वीरा विदथेषु घृष्वयः १
त उक्षितासो महिमानमाशत दिवि रुद्रासो अधि चक्रिरे सदः ।
अर्चन्तो अर्कं जनयन्त इन्द्रिय-मधि श्रियो दधिरे पृश्निमातरः २
गोमातरो यच्छुभयन्ते अञ्जिभि-स्तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मतः
बाधन्ते विश्वमभिमातिनमप वर्त्मान्येषामनु रीयते घृतम् ३ १२५
वि ये भ्राजन्ते सुमखास ऋष्टिभिः प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजसा
मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्वा वृषव्रातासः पृषतीरयुग्ध्वम् ४
प्र यद् रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं वाजे अद्रिं मरुतो रंहयन्तः ।
उतारुषस्य वि ष्यन्ति धारा-श्चर्मेवोदभिर्व्युन्दन्ति भूम ५
आ वो वहन्तु सप्तयो रघुष्यदो रघुपत्वानः प्र जिगात बाहुभिः ।
सीदता बर्हिरुरु वः सदस्कृतं मादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः ६
तेऽवर्धन्त स्वतवसो महित्वना नाकं तस्थुरुरु चक्रिरे सदः ।
विष्णुर्यद्धावद् वृषणं मदच्युतं वयो न सीदन्नधि बर्हिषि प्रिये ७ १२९

शूरा इवेद् युयुधयो न जग्मयः श्रवस्यवो न पृतनासु येतिरे ।
भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो राजान इव त्वेषसंदृशो नरः ८ १३०
त्वष्टा यद् वज्रं सुकृतं हिरण्ययं सहस्रभृष्टिं स्वपा अवर्तयत् ।
धत्त इन्द्रो नर्यपांसि कर्तवे ऽहन् वृत्रं निरपामौब्जदर्णवम् ९
ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं त ओजसा दादृहाणं चिद् बिभिदुर्वि पर्वतम् ।
धमन्तो वाणं मरुतः सुदानवो मदे सोमस्य रण्यानि चक्रिरे १०
जिह्मं नुनुद्रेऽवतं तया दिशा—सिञ्चन्नुत्सं गोतमाय तृष्णजे ।
आ गच्छन्तीमवसा चित्रभानवः कामं विप्रस्य तर्पयन्त धामभिः ११
या वः शर्म शशमानाय सन्ति त्रिधातूनि दाशुषे यच्छताधि ।
अस्मभ्यं तानि मरुतो वि यन्त रयिं नो धत्त वृषणः सुवीरम् १२

॥ १० ॥ (ऋ० १।८६।१-१०) गायत्री ।

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः १ १३५
यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो विप्रस्य वा मतीनाम् । मरुतः शृणुता हवम् २
उत वा यस्य वाजिनो ऽनु विप्रमतक्षत । स गन्ता गोमति व्रजे ३
अस्य वीरस्य बर्हिषि सुतः सोमो दिविष्टिषु । उक्थं मदश्च शस्यते ४
अस्य श्रोषन्त्वा भुवो विश्वा यश्चर्षणीरभि । सूरं चित् सस्रुषीरिषः ५
पूर्वीभिर्हि ददाशिम शरद्भिर्मरुतो वयम् । अवोभिश्चर्षणीनाम् ६ १४०
सुभगः स प्रयज्यवो मरुतो अस्तु मर्त्यः । यस्य प्रयांसि पर्षथ ७
शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्य वेनतः ८
यूयं तत् सत्यशवस आविष्कर्त महित्वना । विध्यता विद्युता रक्षः ९
गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम् । ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि १०

॥ ११ ॥ (ऋ० १।८७।१-६) जगती ।

प्रत्वक्षसः प्रतवसो विरप्शिनो ऽनानता अविथुरा ऋजीषिणः ।
जुष्टतमासो नृतमासो अञ्जिभि—र्व्यानज्रे के चिदुस्रा इव स्तृभिः १ १४५
उपह्वरेषु यदचिध्वं ययिं वय इव मरुतः केन चित् पथा ।
श्चोतन्ति कोशा उप वो रथेष्वा घृतमुक्षता मधुवर्णमर्चते २
प्रैषामज्मेषु विथुरेव रेजते भूमिर्यामेषु यद्ध युञ्जते शुभे ।
ते क्रीळयो धुनयो भ्राजदृष्टयः स्वयं महित्वं पनयन्त धूतयः ३ १४७

स हि स्वसृत् पृषदश्वो युवा गणोऽ स्या ईशानस्तविषीभिरावृतः ।
असि सत्य ऋणयावानेद्यो ऽस्या धियः प्राविताथा वृषा गणः ४
पितुः प्रत्नस्य जन्मना वदामसि सोमस्य जिह्वा प्र जिगाति चक्षसा ।
यदीमिन्द्रं शम्यृक्वाण आशता दिन्नामानि यज्ञियानि दधिरे ५
श्रियसे कं भानुभिः सं मिमिक्षिरे ते रश्मिभिस्त ऋक्वभिः सुखादयः ।
ते वाशीमन्त इष्मिणो अभीरवो विद्रे प्रियस्य मारुतस्य धाम्नः ६ १५०

॥ १२ ॥ (ऋ० १।८८।१-६)
(त्रिष्टुप्; १,६ प्रस्तारपंक्तिः, ५ विराड्रूपा)।

आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्कै रथेभिर्यात ऋष्टिमद्भिरश्वपर्णैः ।
आ वर्षिष्ठया न इषा वयो न पप्तता सुमायाः १
तेऽरुणेभिर्वरमा पिशङ्गैः शुभे कं यान्ति रथतूर्भिरश्वैः ।
रुक्मो न चित्रः स्वधितीवान् पव्या रथस्य जङ्घनन्त भूम २
श्रिये कं वो अधि तनूषु वाशी र्मेधा वना न कृणवन्त ऊर्ध्वा ।
युष्मभ्यं कं मरुतः सुजाता स्तुविद्युम्नासो धनयन्ते अद्रिम् ३
अहानि गृध्राः पर्या व आगु रिमां धियं वार्कार्यां च देवीम् ।
ब्रह्म कृण्वन्तो गोतमासो अर्कै रूर्ध्वं नुनुद्र उत्सधिं पिबध्यै ४
एतत् त्यन्न योजनमचेति सस्वर्ह यन्मरुतो गोतमो वः ।
पश्यन् हिरण्यचक्रानयोदंष्ट्रान् विधावतो वराहून् ५ १५५
एषा स्या वो मरुतोऽनुभर्त्री प्रति ष्टोभति वाघतो न वाणी ।
अस्तोभयद् वृथासा मनु स्वधां गभस्त्योः ६ १५६

॥ १३ ॥ (ऋ० १।१३९।८)
(१५७) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः ।

मो षु वो अस्मदभि तानि पौंस्या सना भूवन् द्युम्नानि मोत जारिषु रस्मत् पुरोत जारिषुः ।
यद् वश्चित्रं युगेयुगे नव्यं घोषादमर्त्यम् ।
अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टरं दिधृता यच्च दुष्टरम् ८ १५७

॥ १४ ॥ (ऋ० १।१६६।१-१५)
(१५८-१९७) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । जगती; १४-१५ त्रिष्टुप् ।

तन्नु वोचाम रभसाय जन्मने पूर्वं महित्वं वृषभस्य केतवे ।
ऐधेव यामन् मरुतस्तुविष्वणो युधेव शक्रास्तविषाणि कर्तन १ १५८

नित्यं न सूनुं मधु बिभ्रत उप क्रीळन्ति क्रीळा विदथेषु घृष्वयः ।
नक्षन्ति रुद्रा अवसा नमस्विनं न मर्धन्ति स्वतवसो हविष्कृतम् २
यस्मा ऊमासो अमृता अरासत रायस्पोषं च हविषा ददाशुषे ।
उक्षन्त्यस्मै मरुतो हिता इव पुरू रजांसि पयसा मयोभुवः ३ १६०
आ ये रजांसि तविषीभिरव्यत प्र व एवासः स्वयतासो अध्रजन् ।
भयन्ते विश्वा भुवनानि हर्म्या चित्रो वो यामः प्रयतास्वृष्टिषु ४
यत् त्वेषयामा नदयन्त पर्वतान् दिवो वा पृष्ठं नर्या अचुच्यवुः ।
विश्वो वो अज्मन् भयते वनस्पती रथीयन्तीव प्र जिहीत ओषधिः ५
यूयं न उग्रा मरुतः सुचेतुना ऽरिष्टग्रामाः सुमतिं पिपर्तन ।
यत्रा वो दिद्युद् रदति क्रिविर्दती रिणाति पश्वः सुधितेव बर्हणा ६
प्र स्कम्भदेष्णा अनवभ्रराधसो ऽलातृणासो विदथेषु सुष्टुताः ।
अर्चन्त्यर्कं मदिरस्य पीतये विदुर्वीरस्य प्रथमानि पौंस्या ७
शतभुजिभिस्तमभिह्रुतेरघात् पूर्भी रक्षता मरुतो यमावत ।
जनं यमुग्रास्तवसो विरप्शिनः पाथना शंसात् तनयस्य पुष्टिषु ८ १६५
विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो मिथस्पृध्येव तविषाण्याहिता ।
अंसेष्वा वः प्रपथेषु खादयो ऽक्षो वश्चक्रा समया वि वावृते ९
भूरीणि भद्रा नर्येषु बाहुषु वक्षःसु रुक्मा रभसासो अञ्जयः ।
अंसेष्वेताः पविषु क्षुरा अधि वयो न पक्षान् व्यनु श्रियो धिरे १०
महान्तो मह्ना विभ्वो३ विभूतयो दूरेदृशो ये दिव्या इव स्तृभिः ।
मन्द्राः सुजिह्वाः स्वरितार आसभिः संमिश्ला इन्द्रे मरुतः परिष्टुभः ११
तद् वः सुजाता मरुतो महित्वनं दीर्घं वो दात्रमदितेरिव व्रतम् ।
इन्द्रश्चन त्यजसा वि ह्रुणाति तज्जनाय यस्मै सुकृते अराध्वम् १२
तद् वो जामित्वं मरुतः परे युगे पुरू यच्छंसममृतास आवत ।
अया धिया मनवे श्रुष्टिमाव्या साकं नरो दंसनैरा चिकित्रिरे १३ १७०
येन दीर्घं मरुतः शूशवाम युष्माकेन परीणसा तुरासः ।
आ यत् ततनन् वृजने जनास एभिर्यज्ञेभिस्तदभीष्टिमश्याम् १४
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः ।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् १५ १७२

॥ १५ ॥ (ऋ० १।१६७।२-११) त्रिष्टुप्; (१० पुरस्ताज्ज्योतिः)।

आ नोऽवोभिर्मरुतो यान्त्वच्छा   ज्येष्ठेभिर्वा बृहद्दिवैः सुमायाः ।
अध यदेषां नियुतः परमाः   समुद्रस्य चिद् धनयन्त पारे २
मिम्यक्ष येषु सुधिता घृताची   हिरण्यनिर्णिगुपरा न ऋष्टिः ।
गुहा चरन्ती मनुषो न योषा   सभावती विदथ्येव सं वाक् ३
परा शुभ्रा अयासो यव्या   साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः ।
न रोदसी अप नुदन्त घोरा   जुषन्त वृधं सख्याय देवाः ४ १७५
जोषद् यदीमसुर्या सचध्यै   विषितस्तुका रोदसी नृमणाः ।
आ सूर्येव विधतो रथं गात्   त्वेषप्रतीका नभसो नेत्या ५
आस्थापयन्त युवतिं युवानः   शुभे निमिश्लां विदथेषु पज्राम् ।
अर्को यद् वो मरुतो हविष्मान्   गायद् गाथं सुतसोमो दुवस्यन् ६
प्र तं विवक्मि वक्म्यो य एषां   मरुतां महिमा सत्यो अस्ति ।
सचा यदीं वृषमणा अहंयुः   स्थिरा चिज्जनीर्वहते सुभागाः ७
पान्ति मित्रावरुणाववद्या—च्चयत ईमर्यमो अप्रशस्तान् ।
उत च्यवन्ते अच्युता ध्रुवाणि   वावृध ईं मरुतो दातिवारः ८
नही नु वो मरुतो अन्त्यस्मे   आरात्ताच्चिच्छवसो अन्तमापुः ।
ते धृष्णुना शवसा शूशुवांसो   ऽर्णो न द्वेषो धृषता परि ष्ठुः ९ १८०
वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा   वयं श्वो वोचेमहि समर्ये ।
वयं पुरा महि च नो अनु द्यून्   तन्न ऋभुक्षा नरामनु ष्यात् १०
एष वः स्तोमो मरुत इयं गी—र्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः ।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां   विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ११

॥ १६ ॥ (ऋ०१।१६८।१-१०) जगती; ८-१० त्रिष्टुप् ।

यज्ञायज्ञा वः समना तुतुर्वणि—र्धियंधियं वो देवया उ दधिध्वे ।
आ वोऽर्वाचः सुविताय रोदस्यो—र्महे ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः १
वव्रासो न ये स्वजाः स्वतवस   इषं स्वरभिजायन्त धूतयः ।
सहस्रियासो अपां नोर्मय   आसा गावो वन्द्यासो नोक्षणः २
सोमासो न ये सुतास्तृप्तांशवो   हृत्सु पीतासो दुवसो नासते ।
ऐषामंसेषु रम्भिणीव रारभे   हस्तेषु खादिश्च कृतिश्च सं दधे ३ १८५
अव स्वयुक्ता दिव आ वृथा ययु—रमर्त्याः कशया चोदत त्मना ।
अरेणवस्तुविजाता अचुच्यवु—र्दृळ्हानि चिन्मरुतो भ्राजदृष्टयः ४ १८६

को वोऽन्तर्मरुत ऋष्टिविद्युतो रेजति त्मना हन्वेव जिह्वया ।
धन्वच्युत इषां न यामनि पुरुप्रैषा अहन्यो३ नैतशः ५
क्व स्विदस्य रजसो महस्परं क्वावरं मरुतो यस्मिन्नायय ।
यच्च्यावयथ विथुरेव संहितं व्यद्रिणा पतथ त्वेषमर्णवम् ६
सातिर्न वोऽमवती स्वर्वती त्वेषा विपाका मरुतः पिपिष्वती ।
भद्रा वो रातिः पृणतो न दक्षिणा पृथुज्रयी असुर्येव जञ्जती ७
प्रति ष्टोभन्ति सिन्धवः पविभ्यो यदभ्रियां वाचमुदीरयन्ति ।
अव स्मयन्त विद्युतः पृथिव्यां यदी घृतं मरुतः प्रुष्णुवन्ति ८ १९०
असूत पृश्निर्महते रणाय त्वेषमयासां मरुतामनीकम् ।
ते सप्सरासोऽजनयन्ताभ्व-मादित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ९
एष वः स्तोमो मरुत इयं गी-र्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः ।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् १०

॥ १७ ॥ (ऋ० १।१७१।१-२) त्रिष्टुप् ।

प्रति व एना नमसाहमेमि सूक्तेन भिक्षे सुमतिं तुराणाम् ।
रराणता मरुतो वेद्याभि-र्नि हेळो धत्त वि मुचध्वमश्वान् १
एष वः स्तोमो मरुतो नमस्वान् हृदा तष्टो मनसा धायि देवाः ।
उपेमा यात मनसा जुषाणा यूयं हि ष्ठा नमस इद् वृधासः २

॥ १८ ॥ (१।१७२।१-३) गायत्री ।

चित्रो वोऽस्तु याम-श्चित्र ऊती सुदानवः । मरुतो अहिभानवः १ १९५
आरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जती शरुः । आरे अश्मा यमस्यथ २
तृणस्कन्दस्य नु विशः परि वृङ्क्त सुदानवः । ऊर्ध्वान् नः कर्त जीवसे ३

॥ १९ ॥ (ऋ० २।३०।११)

(१९८-२१३) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः) शौनकः । जगती ।

तं वः शर्धं मारुतं सुम्नयुर्गिरो-प ब्रुवे नमसा दैव्यं जनम् ।
यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा अपत्यसाचं श्रुत्यं दिवेदिवे ११

॥ २० ॥ (ऋ० २।३४।१-१५) जगती; १५ त्रिष्टुप् ।

धारावरा मरुतो धृष्ण्वोजसो मृगा न भीमास्तविषीभिरर्चिनः ।
अग्नयो न शुशुचाना ऋजीषिणो भृमिं धमन्तो अप गा अवृण्वत १ १९९

द्यावो न स्तृभिश्चितयन्त खादिनो व्य१भ्रिया न द्युतयन्त वृष्टयः ।
रुद्रो यद् वो मरुतो रुक्मवक्षसो वृषाजनि पृश्न्याः शुक्र ऊधनि २ २००
उक्षन्ते अश्वाँ अत्याँ इवाजिषु नदस्य कर्णैस्तुरयन्त आशुभिः ।
हिरण्यशिप्रा मरुतो दविध्वतः पृक्षं याथ पृषतीभिः समन्यवः ३
पृक्षे ता विश्वा भुवना ववक्षिरे मित्राय वा सदमा जीरदानवः ।
पृषदश्वासो अनवभ्रराधस ऋजिप्यासो न वयुनेषु धूर्षदः ४
इन्धन्वभिर्धेनुभी रप्शदूधभि-रध्वस्मभिः पथिभिर्भ्राजदृष्टयः ।
आ हंसासो न स्वसराणि गन्तन मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः ५
आ नो ब्रह्माणि मरुतः समन्यवो नरां न शंसः सवनानि गन्तन ।
अश्वामिव पिप्यत धेनुमूधनि कर्ता धियं जरित्रे वाजपेशसम् ६
तं नो दात मरुतो वाजिनं रथ आपानं ब्रह्म चितयद् दिवेदिवे ।
इषं स्तोतृभ्यो वृजनेषु कारवे सनिं मेधामरिष्टं दुष्टरं सहः ७ २०५
यद् युञ्जते मरुतो रुक्मवक्षसो ऽश्वान् रथेषु भग आ सुदानवः ।
धेनुर्न शिश्वे स्वसरेषु पिन्वते जनाय रातहविषे महीमिषम् ८
यो नो मरुतो वृकताति मर्त्यो रिपुर्दधे वसवो रक्षता रिषः ।
वर्तयत तपुषा चक्रियाभि त-मव रुद्रा अशसो हन्तना वधः ९
चित्रं तद् वो मरुतो याम चेकिते पृश्न्या यदूधरप्यापयो दुहुः ।
यद् वा निदे नवमानस्य रुद्रिया-स्त्रितं जराय जुरतामदाभ्याः १०
तान् वो महो मरुत एवयाव्नो विष्णोरेषस्य प्रभृथे हवामहे ।
हिरण्यवर्णान् ककुहान् यतस्रुचो ब्रह्मण्यन्तः शंस्यं राध ईमहे ११
ते दशग्वाः प्रथमा यज्ञमूहिरे ते नो हिन्वन्तूषसो व्युष्टिषु ।
उषा न रामीररुणैरपोर्णुते महो ज्योतिषा शुचता गोअर्णसा १२ २१०
ते क्षोणीभिररुणेभिर्नाञ्जिभी रुद्रा ऋतस्य सदनेषु वावृधुः ।
निमेघमाना अत्येन पाजसा सुश्चन्द्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम् १३
ताँ इयानो महि वरूथमूतय उप घेदेना नमसा गृणीमसि ।
त्रितो न यान् पञ्च होतॄनभिष्टय आववर्तदवराञ्चक्रियावसे १४
यया रध्रं पारयथात्यंहो यया निदो मुञ्चथ वन्दितारम् ।
अर्वाची सा मरुतो या व ऊति-रो षु वाश्रेव सुमतिर्जिगातु १५ २१३

॥ २१ ॥ (ऋ० ३।२६।४-६)

(२१४-२१६) गाथिनो विश्वामित्रः । जगती ।

प्र यन्तु वाजास्तविषीभिरग्नयः शुभे संमिश्लाः पृषतीरयुक्षत ।
बृहदुक्षो मरुतो विश्ववेदसः प्र वेपयन्ति पर्वताँ अदाभ्याः ४
अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्टय आ त्वेषमुग्रमव ईमहे वयम् ।
ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः सिंहा न हेषक्रतवः सुदानवः ५ २१५
व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभि रग्नेर्भामं मरुतामोज ईमहे ।
पृषदश्वासो अनवभ्रराधसो गन्तारो यज्ञं विदथेषु धीराः ६ २१६

॥ २२ ॥ (ऋ० ५।५२।१-१७)

(२१७-२३७) श्यावाश्व आत्रेयः । अनुष्टुप् ; ६,१६,१७ पङ्क्तिः ।

प्र श्यावाश्व धृष्णुया ऽर्चा मरुद्भिर्ऋक्वभिः ।
ये अद्रोघमनुष्वधं श्रवो मदन्ति यज्ञियाः १
ते हि स्थिरस्य शवसः सखायः सन्ति धृष्णुया ।
ते यामन्ना धृषद्विन स्त्मना पान्ति शश्वतः २
ते स्पन्द्रासो नोक्षणो ऽति ष्कन्दन्ति शर्वरीः ।
मरुतामधा महो दिवि क्षमा च मन्महे ३
मरुत्सु वो दधीमहि स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।
विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः ४ २२०
अर्हन्तो ये सुदानवो नरो असामिशवसः ।
प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः ५
आ रुक्मैरा युधा नर ऋष्वा ऋष्टीरसृक्षत ।
अन्वेनाँ अह विद्युतो मरुतो जज्झतीरिव भानुरर्त त्मना दिवः ६
ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ ।
वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो दिवः ७
शर्धो मारुतमुच्छंस सत्यशवसमृभ्वसम् ।
उत स्म ते शुभे नरः प्र स्पन्द्रा युजत त्मना ८
उत स्म ते परुष्ण्या मूर्णा वसत शुन्ध्यवः ।
उत पव्या रथाना मद्रिं भिन्दन्त्योजसा ९ २२५
आपथयो विपथयो ऽन्तस्पथा अनुपथाः ।
एतेभिर्मह्यं नामभि र्यज्ञं विष्टार ओहते १० २२६

अधा नरो न्योहते ऽधा नियुत ओहते ।
अधा पारावता इति चित्रा रूपाणि दर्श्या ११
छन्दःस्तुभः कुभन्यव उत्समा कीरिणो नृतुः ।
ते मे के चिन्न तायव ऊमा आसन् दृशि त्विषे १२
य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः कवयः सन्ति वेधसः ।
तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा १३
अच्छ ऋषे मारुतं गणं दाना मित्रं न योषणा ।
दिवो वा धृष्णव ओजसा स्तुता धीभिरिषण्यत १४ २३०
नू मन्वान एषां देवाँ अच्छा न वक्षणा ।
दाना सचेत सूरिभि-र्यामश्रुतेभिरञ्जिभिः १५
प्र ये मे बन्ध्वेषे गां वोचन्त सूरयः पृश्निं वोचन्त मातरम् ।
अधा पितरमिष्मिणं रुद्रं वोचन्त शिक्वसः १६
सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः ।
यमुनायामधि श्रुत-मुद् राधो गव्यं मृजे नि राधो अश्व्यं मृजे १७

॥ २३ ॥ (ऋ० ५।५३।१-१६)

(१,५,१०-११,१५ककुप्; २ बृहती; ३ अनुष्टुप्, ४ पुरउष्णिक्; ६,७,९,१३,१४,१६ सतो बृहती; ८,१२ गायत्री)।

को वेद जानमेषां को वा पुरा सुम्नेष्वास मरुताम् ।
यद् युयुज्रे किलास्यः १
ऐतान् रथेषु तस्थुषः कः शुश्राव कथा ययुः ।
कस्मै सस्रुः सुदासे अन्वापय इळाभिर्वृष्टयः सह २ २३५
ते म आहुर्य आययु-रुप द्युभिर्विभिर्मदे ।
नरो मर्या अरेपस इमान् पश्यन्निति ष्टुहि ३
ये अञ्जिषु ये वाशीषु स्वभानवः स्रक्षु रुक्मेषु खादिषु ।
श्राया रथेषु धन्वसु ४
युष्माकं स्मा रथाँ अनु मुदे दधे मरुतो जीरदानवः ।
वृष्टी द्यावो यतीरिव ५
आ यं नरः सुदानवो ददाशुषे दिवः कोशमचुच्यवुः ।
वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु धन्वना यन्ति वृष्टयः ६ २३९

तन्वानाः सिन्धवः क्षोदसा रजः प्र सस्रुर्धेनवो यथा ।
स्यन्ना अश्वा इवाध्वनो विमोचने वि यद् वर्तन्त एन्यः ७ १४०
आ यात मरुतो दिव आन्तरिक्षादमादुत ।
माव स्थात परावतः ८
मा वो रसानितभा कुभा क्रुमु- र्मा वः सिन्धुर्नि रीरमत् ।
मा वः परि ष्ठात् सरयुः पुरीषिण्य- स्मे इत् सुम्नमस्तु वः ९
तं वः शर्धं रथानां त्वेषं गणं मारुतं नव्यसीनाम् ।
अनु प्र यन्ति वृष्टयः १०
शर्धंशर्धं व एषां व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः ।
अनु क्रामेम धीतिभिः ११
कस्मा अद्य सुजाताय रातहव्याय प्र ययुः ।
एना यामेन मरुतः १२ १४५
येन तोकाय तनयाय धान्यं१ बीजं वहध्वे अक्षितम् ।
अस्मभ्यं तद् धत्तन यद् व ईमहे राधो विश्वायु सौभगम् १३
अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभि- र्हित्वावद्यमरातीः ।
वृष्ट्वी शं योराप उस्रि भेषजं स्याम मरुतः सह १४
सुदेवः समहासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः ।
यं त्रायध्वे स्याम ते १५
स्तुहि भोजान्स्तुवतो अस्य यामनि रणन् गावो न यवसे ।
यतः पूर्वाँ इव सखीँरनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः १६

॥ २४ ॥ (ऋ० ५।५४।१-१५) जगती, १४ त्रिष्टुप् ।

प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वाचमनजा पर्वतच्युते ।
घर्मस्तुभे दिव आ पृष्ठयज्वने द्युम्नश्रवसे महि नृम्णमर्चत १ १५०
प्र वो मरुतस्तविषा उदन्यवो वयोवृधो अश्वयुजः परिज्रयः ।
सं विद्युता दधति वाशति त्रितः स्वरन्त्यापोऽवना परिज्रयः २
विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः ।
अब्दया चिन्मुहुरा ह्रादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदोजसः ३
व्य१क्तून् रुद्रा व्यहानि शिक्वसो व्य१न्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः ।
वि यदज्राँ अजथ नाव ईं यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ ४ १५१

तद् वीर्यं वो मरुतो महित्वनं　दीर्घं ततान सूर्यो न योजनम्।
एता न यामे अगृभीतशोचिषो　ऽनश्वदां यन्न्ययातना गिरिम्　५
अभ्राजि शर्धो मरुतो यदर्णसं　मोषथा वृक्षं कपनेव वेधसः।
अध स्मा नो अरमतिं सजोषस श्चक्षुरिव यन्तमनु नेषथा सुगम्　६　२५५
न स जीयते मरुतो न हन्यते　न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति।
नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय　ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ　७
नियुत्वन्तो ग्रामजितो यथा नरो　ऽर्यमणो न मरुतः कबन्धिनः।
पिन्वन्त्युत्सं यदिनासो अस्वरन्　व्युन्दन्ति पृथिवीं मध्वो अन्धसा　८
प्रवत्वतीयं पृथिवी मरुद्भ्यः　प्रवत्वती द्यौर्भवति प्रयद्भ्यः।
प्रवत्वतीः पथ्या अन्तरिक्ष्याः　प्रवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः　९
यन्मरुतः सभरसः स्वर्णरः　सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः।
न वोऽश्वाः श्रथयन्ताह सिस्रतः　सद्यो अस्याध्वनः पारमश्नुथ　१०
अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयो　वक्षःसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः।
अग्निभ्राजसो विद्युतो गभस्त्योः　शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः　११　२६०
तं नाकमर्यो अगृभीतशोचिषं　रुशत् पिप्पलं मरुतो वि धूनुथ।
समच्यन्त वृजनातित्विषन्त यत्　स्वरन्ति घोषं विततमृतायवः　१२
युष्मादत्तस्य मरुतो विचेतसो　रायः स्याम रथ्यो३ वयस्वतः।
न यो युच्छति तिष्यो३ यथा दिवो३　ऽस्मे रारन्त मरुतः सहस्रिणम्　१३
यूयं रयिं मरुतः स्पार्हवीरं　यूयमृषिमवथ सामविप्रम्।
यूयमर्वन्तं भरताय वाजं　यूयं धत्थ राजानं श्रुष्टिमन्तम्　१४
तद् वो यामि द्रविणं सद्यऊतयो　येना स्व१र्ण ततनाम नॄँरभि।
इदं सु मे मरुतो हर्यता वचो　यस्य तरेम तरसा शतं हिमाः　१५

॥ २५ ॥ (ऋ० ५।५५।१-१०) जगती, १० त्रिष्टुप्।

प्रयज्यवो मरुतो भ्राजदृष्टयो　बृहद् वयो दधिरे रुक्मवक्षसः।
ईयन्ते अश्वैः सुयमेभिराशुभिः　शुभं यातामनु रथा अवृत्सत　१　२६५
स्वयं दधिध्वे तविषीं यथा विद　बृहन्महान्त उर्विया वि राजथ।
उतान्तरिक्षं ममिरे व्योजसा　शुभं यातामनु रथा अवृत्सत　२
साकं जाताः सुभ्वः साकमुक्षिताः　श्रिये चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः।
विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः　शुभं यातामनु रथा अवृत्सत　३　२६७

आभूषेण्यं वो मरुतो महित्वनं विदृक्षेण्यं सूर्यस्येव चक्षणम्।
उतो अस्माँ अमृतत्वे दधातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ४
उदीरयथा मरुतः समुद्रतो यूयं वृष्टिं वर्षयथा पुरीषिणः।
न वो दस्रा उप दस्यन्ति धेनवः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ५
यदश्वान् धूर्षु पृषतीरयुग्ध्वं हिरण्ययान् प्रत्यत्काँ अमुग्ध्वम्।
विश्वा इत् स्पृधो मरुतो व्यस्यथ शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ६ १७०
न पर्वता न नद्यो वरन्त वो यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत्।
उत द्यावापृथिवी याथना परि शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ७
यत् पूर्व्यं मरुतो यच्च नूतनं यदुद्यते वसवो यच्च शस्यते।
विश्वस्य तस्य भवथा नवेदसः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ८
मृळत नो मरुतो मा वधिष्टना-ऽस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन।
अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ९
यूयमस्मान् नयत वस्यो अच्छा निरंहतिभ्यो मरुतो गृणानाः।
जुषध्वं नो हव्यदातिं यजत्रा वयं स्याम पतयो रयीणाम् १०

॥ २६ ॥ (ऋ० ५।५६।१-९) बृहती; ३, ७ सतो बृहती।

अग्ने शर्धन्तमा गणं पिष्टं रुक्मेभिरञ्जिभिः।
विशो अद्य मरुतामव ह्वये दिवश्चित् रोचनादधि १ १७५
यथा चिन्मन्यसे हृदा तदिन्मे जग्मुराशसः।
ये ते नेदिष्ठं हवनान्यागमन् तान् वर्ध भीमसंदृशः २
मीळहुष्मतीव पृथिवी पराहता मदन्त्येत्यस्मदा।
ऋक्षो न वो मरुतः शिमीवाँ अमो दुध्रो गौरिव भीमयुः ३
नि ये रिणन्त्योजसा वृथा गावो न दुर्धुरः।
अश्मानं चित् स्वर्यं पर्वतं गिरिं प्र च्यावयन्ति यामभिः ४
उत तिष्ठ नूनमेषां स्तोमैः समुक्षितानाम्।
मरुतां पुरुतममपूर्व्यं गवां सर्गमिव ह्वये ५
युङ्ग्ध्वं ह्यरुषी रथे युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितः।
युङ्ग्ध्वं हरी अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे ६ १८०
उत स्य वाज्यरुषस्तुविष्वणि-रिह स्म धायि दर्शतः।
मा वो यामेषु मरुतश्चिरं करत् प्र तं रथेषु चोदत ७ १८१

रथं नु मारुतं वयं श्रवस्युमा हुवामहे ।
आ यस्मिन् तस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुत्सु रोदसी ८
तं वः शर्धं रथेशुभं त्वेषं पनस्युमा हुवे ।
यस्मिन्त्सुजाता सुभगा महीयते सचा मरुत्सु मीळ्हुषी ९

॥ २७ ॥ (ऋ० ५।५७।१-८) जगती, ७-८ त्रिष्टुप् ।

आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुविताय गन्तन ।
इयं वो अस्मत् प्रति हर्यते मति-स्तृष्णजे न दिव उत्सा उदन्यवे १
वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः ।
स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम् २ २८५
धूनुथ द्यां पर्वतान् दाशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया ।
कोपयथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यदुग्राः पृषतीरयुग्ध्वम् ३
वातत्विषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमा इव सुसदृशः सुपेशसः ।
पिशङ्गाश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवः ४
पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः सुदानव-स्त्वेषसंदृशो अनवभ्रराधसः ।
सुजातासो जनुषा रुक्मवक्षसो दिवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे ५
ऋष्टयो वो मरुतो अंसयोरधि सह ओजो बाह्वोर्वो बलं हितम् ।
नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे ६
गोमदश्वावद् रथवत् सुवीरं चन्द्रवद् राधो मरुतो ददा नः ।
प्रशस्तिं नः कृणुत रुद्रियासो भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य ७ २९०
हये नरो मरुतो मृळता न-स्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः ।
सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः ८

॥ २८ ॥ (ऋ० ५।५८।१-८) त्रिष्टुप् ।

तमु नूनं तविषीमन्तमेषां स्तुषे गणं मारुतं नव्यसीनाम् ।
य आश्वश्वा अमवद् वहन्त उतेशिरे अमृतस्य स्वराजः १
त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारम् ।
मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविराधसो नॄन् २
आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति ।
अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः ३
यूयं राजानमिर्यं जनाय विभ्वतष्टं जनयथा यजत्राः ।
युष्मदेति मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत् सदश्वो मरुतः सुवीरः ४ २९५

अरा इवेदचरमा अहेव प्रप्र जायन्ते अकवा महोभिः।
पृश्नेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः ५
यत् प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वै-र्वीळुपविभिर्मरुतो रथेभिः।
क्षोदन्त आपो रिणते वना-न्यवोस्रियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः ६
प्रथिष्ट यामन् पृथिवी चिदेषां भर्तेव गर्भं स्वमिच्छवो धुः।
वातान् ह्यश्वान् धुर्यायुयुज्रे वर्षं स्वेदं चक्रिरे रुद्रियासः ७
हये नरो मरुतो मृळता न-स्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।
सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः ८

॥ २९ ॥ (ऋ० ५।५९।१-८) जगती, ८ त्रिष्टुप्।

प्र वः स्पळक्रन्त्सुवितायं दावने ऽर्चा दिवे प्र पृथिव्या ऋतं भरे।
उक्षन्ते अश्वान् तरुषन्त आ रजो ऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः १ ३००
अमादेषां भियसा भूमिरेजति नौर्न पूर्णा क्षरति व्यथिर्यती।
दूरेदृशो ये चितयन्त एमभि-रन्तर्महे विदथे येतिरे नरः २
गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं सूर्यो न चक्षू रजसो विसर्जने।
अत्या इव सुभ्व१श्चारवः स्थन मर्या इव श्रियसे चेतथा नरः ३
को वो महान्ति महतामुदश्नवत् कस्काव्या मरुतः को ह पौंस्या।
यूयं ह भूमिं किरणं न रेजथ प्र यद् भरध्वे सुवितायं दावने ४
अश्वा इवेदरुषासः सबन्धवः शूरा इव प्रयुधः प्रोत युयुधुः।
मर्या इव सुवृधो वावृधुर्नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः ५
ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदो ऽमध्यमासो महसा वि वावृधुः।
सुजातासो जनुषा पृश्निमातरो दिवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन ६ ३०५
वयो न ये श्रेणीः पप्तुरोजसा ऽन्तान् दिवो बृहतः सानुनस्परि।
अश्वास एषामुभये यथा विदुः प्र पर्वतस्य नभनूँरचुच्यवुः ७
मिमातु द्यौरदितिर्वीतये नः सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम्।
आचुच्यवुर्दिव्यं कोशमेत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः ८

॥ ३० ॥ ऋ० ५।६१।१-४।११-१६) गायत्री, ३ निचृत्

के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा य एकएक आयय । परमस्याः परावतः १
क्व१ वोऽश्वाः क्वा३भीशवः कथं शेक कथा यय । पृष्ठे सदो नसोर्यमः २
जघने चोद एषां वि सक्थानि नरो यमुः । पुत्रकृथे न जनयः ३ ३१०

परा वीरास एतन मर्यासो भद्रजानयः । अग्नितपो यथासथ ४
य ईं वहन्त आशुभिः पिबन्तो मदिरं मधु । अत्र श्रवांसि दधिरे ११
येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्वा । दिवि रुक्म इवोपरि १२
युवा स मारुतो गण--स्त्वेषरथो अनेद्यः । शुभंयावाप्रतिष्कुतः १३
को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः । ऋतजाता अरेपसः १४ ३१५
यूयं मर्तं विपन्यवः प्रणेतारं इत्था धिया । श्रोतारो यामहूतिषु १५
ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः । आ यज्ञियासो ववृत्तन १६ ३१७

॥ ३१ ॥ (ऋ० ५।८७।१-९)

(३१८-३२६) एवयामरुदात्रेय । अतिजगती ।

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत् ।
प्र शर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे १
प्र ये जाता महिना ये च नु स्वयं प्र विद्मना ब्रुवत एवयामरुत् ।
क्रत्वा तद् वो मरुतो नाधृषे शवो दाना मह्ना तदेषा--मधृष्टासो नाद्रयः २
प्र ये दिवो बृहतः शृण्विरे गिरा सुशुक्वानः सुभ्व एवयामरुत् ।
न येषामिरी सधस्थ ईष्ट आँ अग्नयो न स्वविद्युतः प्र स्पन्द्रासो धुनीनाम् ३ ३२०
स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात् सदस एवयामरुत् ।
यदायुक्त त्मना स्वादधि ष्णुभि--र्विष्पर्धसो विमहसो जिगाति शेवृधो नृभिः ४
स्वनो न वोऽमवान् रेजयद् वृषा त्वेषो ययिस्तविष एवयामरुत् ।
येना सहन्त ऋञ्जत स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणः ५
अपारो वो महिमा वृद्धशवस--स्त्वेषं शवोऽवत्वेवयामरुत् ।
स्थातारो हि प्रसितौ संदृशि स्थन ते न उरुष्यता निदः शुशुक्वांसो नाग्नयः ६
ते रुद्रासः सुमखा अग्नयो यथा तुविद्युम्ना अवन्त्वेवयामरुत् ।
दीर्घं पृथु पप्रथे सद्म पार्थिवं येषामज्मेष्वा महः शर्धांस्यद्भुतैनसाम् ७
अद्वेषो नो मरुतो गातुमेतन श्रोता हवं जरितुरेवयामरुत् ।
विष्णोर्महः समन्यवो युयोतन स्मद् रथ्यो३ न दंसना ऽप द्वेषांसि सनुतः ८ ३२५
गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरक्ष एवयामरुत् ।
ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवो निदः ९, ३२६

॥ ३२ ॥ (ऋ० ६।४८।११-१५,२०-२१)

• (३२७-३३३) शंयुर्बार्हस्पत्यः (तृणपाणि); [१३-१५ लिङ्गोक्ता वा]। ११ ककुप्, १२ सतो बृहती, १३ पुरउष्णिक्, १४ बृहती, १५ अतिजगती, २० बृहती, २१ महाबृहती यवमध्या ।

आ सखायः सबर्दुघां धेनुमजध्वमुप नव्यसा वचः । सृजध्वमनपस्फुराम् ११
या शर्धाय मारुताय स्वभानवे श्रवोऽमृत्यु धुक्षत ।
या मृळीके मरुतां तुराणां या सुम्नैरेवयावरी १२
भरद्वाजायाव धुक्षत द्विता । धेनुं च विश्वदोहस मिषं च विश्वभोजसम् १३
तं व इन्द्रं न सुक्रतुं वरुणमिव मायिनम् ।
अर्यमणं न मन्द्रं सृप्रभोजसं विष्णुं न स्तुष आदिशे १४ ३३०
त्वेषं शर्धो न मारुतं तुविष्व ण्यनर्वाणं पूषणं सं यथा शता ।
सं सहस्रा कारिषच्चर्षणिभ्य आँ आविर्गूळ्हा वसू करत् सुवेदा नो वसू करत् १५
वामी वामस्य धूतयः प्रणीतिरस्तु सूनृता ।
देवस्य वा मरुतो मर्त्यस्य वे जानस्य प्रयज्यवः २०
सद्यश्चिद् यस्य चर्कृतिः परि द्यां देवो नैति सूर्यः ।
त्वेषं शवो दधिरे नाम यज्ञियं मरुतो वृत्रहं शवो ज्येष्ठं वृत्रहं शवः २१ ३३३

॥ ३३ ॥ (ऋ० ६।६६।१-११)

(३३४-३४४) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

वपुर्नु तच्चिकितुषे चिदस्तु समानं नाम धेनु पत्यमानम् ।
मर्तेष्वन्यद् दोहसे पीपाय सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः १
ये अग्नयो न शोशुचन्निधाना द्विर्यत् त्रिर्मरुतो वावृधन्त ।
अरेणवो हिरण्ययास एषां साकं नृम्णैः पौंस्येभिश्च भूवन् २ ३३५
रुद्रस्य ये मीळ्हुषः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधृविर्भरध्यै ।
विदे हि माता महो मही षा सेत् पृश्निः सुभ्वे गर्भमाधात् ३
न य ईषन्ते जनुषोऽया न्व न्तः सन्तोऽवद्यानि पुनानाः ।
निर्यद् दुह्रे शुचयोऽनु जोष मनु श्रिया तन्वमुक्षमाणाः ४
मक्षू न येषु दोहसे चिदया आ नाम धृष्णु मारुतं दधानाः ।
न ये स्तौना अयासो मह्ना नू चित् सुदानुरव यासदुग्रान् ५
त इदुग्राः शवसा धृष्णुषेणा उभे युजन्त रोदसी सुमेके ।
अध स्मैषु रोदसी स्वशोचि रामवत्सु तस्थौ न रोकः ६ ३३६

अनेनो वो मरुतो यामो अस्त्व-नश्वश्चिद् यमजत्यरथीः ।
अनवसो अनभीशू रजस्तू-र्वि रोदसी पथ्या याति साधन् ७ ३४०
नास्य वर्ता न तरुता न्वस्ति मरुतो यमवथ वाजसातौ ।
तोके वा गोषु तनये यमप्सु स व्रजं दर्ता पार्ये अध द्योः ८
प्र चित्रमर्कं गृणते तुराय मारुताय स्वतवसे भरध्वम् ।
ये सहांसि सहसा सहन्ते रेजते अग्ने पृथिवी मखेभ्यः ९
त्विषीमन्तो अध्वरस्येव दिद्युत् तृषुच्यवसो जुह्वो३ नाग्नेः ।
अर्चत्रयो धुनयो न वीरा भ्राजज्जन्मानो मरुतो अधृष्टाः १०
तं वृधन्तं मारुतं भ्राजदृष्टिं रुद्रस्य सूनुं हवसा विवासे ।
दिवः शर्धाय शुचयो मनीषा गिरयो नाप उग्रा अस्पृध्रन् ११ ३४४

॥ ३४ ॥ (ऋ० ७।५६।१-२५)
(३४५-३६९) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप्, १-११ द्विपदा विराट् ।

क ईं व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा स्वश्वाः १ ३४५
नकिर्ह्येषां जनूंषि वेद ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम् २
अभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त वातस्वनसः श्येना अस्पृध्रन् ३
एतानि धीरो निण्या चिकेत पृश्निर्यदूधो मही जभार ४
सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात् सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम् ५
यामं येष्ठाः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया संमिश्ला ओजोभिरुग्राः ६ ३५०
उग्रं व ओजः स्थिरा शवांस्य-धा मरुद्भिर्गणस्तुविष्मान् ७
शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोः ८
सनेम्यस्मद् युयोत दिद्युं मा वो दुर्मतिरिह प्रणङ्नः ९
प्रिया वो नाम हुवे तुराणा-मा यत् तृपन्मरुतो वावशानाः १०
स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्वः शुम्भमानाः ११ ३५५
शुची वो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः ।
ऋतेन सत्यमृतसाप आय-ञ्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः १२
अंसेष्वा मरुतः खादयो वो वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणाः ।
वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचाना अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः १३
प्र बुध्न्या व ईरते महांसि प्र नामानि प्रयज्यवस्तिरध्वम् ।
सहस्रियं दम्यं भागमेतं गृहमेधीयं मरुतो जुषध्वम् १४ ३५८

यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथे—त्था विप्रस्य वाजिनो हवीमन् ।
मक्षू रायः सुवीर्यस्य दात नू चिद् यमन्य आदभदरावा १५
अत्यासो न ये मरुतः स्वञ्चो यक्षदृशो न शुभयन्त मर्याः ।
ते हर्म्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न प्रक्रीळिनः पयोधाः १६ ३६०
दशस्यन्तो नो मरुतो मृळन्तु वरिवस्यन्तो रोदसी सुमेके ।
आरे गोहा नृहा वधो वो अस्तु सुम्नेभिरस्मे वसवो नमध्वम् १७
आ वो होता जोहवीति सत्तः सत्राचीं रातिं मरुतो गृणानः ।
य ईवतो वृषणो अस्ति गोपाः सो अद्वयावी हवते व उक्थैः १८
इमे तुरं मरुतो रामयन्ती—मे सहः सहस आ नमन्ति ।
इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अररुषे दधन्ति १९
इमे रध्रं चिन्मरुतो जुनन्ति भृमिं चिद् यथा वसवो जुषन्त ।
अप बाधध्वं वृषणस्तमांसि धत्त विश्वं तनयं तोकमस्मे २०
मा वो दात्रान्मरुतो निरराम मा पश्चाद् दघ्म रथ्यो विभागे ।
आ नः स्पार्हे भजतना वसव्ये यदीं सुजातं वृषणो वो अस्ति २१ ३६५
सं यद्धनन्त मन्युभिर्जनासः शूरा यह्वीष्वोषधीषु विक्षु ।
अध स्मा नो मरुतो रुद्रियास—स्त्रातारो भूत पृतनास्वर्यः २२
भूरि चक्र मरुतः पित्र्याण्यु—क्थानि या वः शस्यन्ते पुरा चित् ।
मरुद्भिरुग्रः पृतनासु साळ्हा मरुद्भिरित् सनिता वाजमर्वा २३
अस्मे वीरो मरुतः शुष्म्यस्तु जनानां यो असुरो विधर्ता ।
अपो येन सुक्षितये तरेमा—ऽध स्वमोको अभि वः स्याम २४
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्नि—राप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः २५

॥ ३५ ॥ (ऋ० ७।५७।१-७) त्रिष्टुप् ।

मध्वो वो नाम मारुतं यजत्राः प्र यज्ञेषु शवसा मदन्ति ।
ये रेजयन्ति रोदसी चिदुर्वी पिन्वन्त्युत्सं यदयासुरुग्राः १ ३७०
निचेतारो हि मरुतो गृणन्तं प्रणेतारो यजमानस्य मन्म ।
अस्माकमद्य विदथेषु बर्हि—रा वीतये सदत पिप्रियाणाः २
नैतावदन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते रुक्मैरायुधैस्तनूभिः ।
आ रोदसी विश्वपिशः पिशानाः समानमञ्ज्यञ्जते शुभे कम् ३ ३७१

ऋधक् सा वो मरुतो दिद्युदस्तु यद् व आगः पुरुषता कराम ।
मा वस्तस्यामपि भूमा यजत्रा अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ४
कृते चिदत्र मरुतो रणन्ता–ऽनवद्यासः शुचयः पावकाः ।
प्र णोऽवत सुमतिभिर्यजत्राः प्र वाजेभिस्तिरत पुष्यसे नः ५
उत स्तुतासो मरुतो व्यन्तु विश्वेभिर्नामभिर्नरो हवींषि ।
ददात नो अमृतस्य प्रजायै जिगृत रायः सूनृता मघानि ६ ३७५
आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती अच्छा सूरीन्त्सर्वताता जिगात ।
ये नस्त्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥ ३६ ॥ (ऋ० ७।५८।१-६)

प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय यो दैव्यस्य धाम्नस्तुविष्मान् ।
उत क्षोदन्ति रोदसी महित्वा नक्षन्ते नाकं निर्ऋतेरवंशात १
जनूश्चिद् वो मरुतस्त्वेष्येण भीमासस्तुविमन्यवोऽयासः ।
प्र ये महोभिरोजसोत सन्ति विश्वो वो यामन् भयते स्वर्दृक् २
बृहद् वयो मघवद्भ्यो दधात जुजोषन्निन्मरुतः सुष्टुतिं नः ।
गतो नाध्वा वि तिराति जन्तुं प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेत ३
युष्मोतो विप्रो मरुतः शतस्वी युष्मोतो अर्वा सहुरिः सहस्री ।
युष्मोतः सम्राळुत हन्ति वृत्रं प्र तद् वो अस्तु धूतयो देष्णम् ४ ३८०
ताँ आ रुद्रस्य मीळ्हुषो विवासे कुविन्नंसन्ते मरुतः पुनर्नः ।
यत् सस्वर्ता जिहीळिरे यदावि–रव तदेन ईमहे तुराणाम् ५
प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोना–मिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त ।
आराच्चिद् द्वेषो वृषणो युयोत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥ ३७ ॥ (७।५९।१-१२)

(प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती), ७-८ त्रिष्टुप्, ९-१२ गायत्री ।)

यं त्रायध्व इदमिदं देवासो यं च नयथ ।
तस्मा अग्ने वरुण मित्रार्यमन् मरुतः शर्म यच्छत १
युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिय ईजानस्तरति द्विषः ।
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति २
नहि वश्चरमं चन वसिष्ठः परिमंसते ।
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबत कामिनः ३ ३८५

नहि व ऊतिः पृतनासु मर्धति यस्मा अराध्वं नरः ।
अभि व आवर्त् सुमतिर्नवीयसी तूयं यात पिपीषवः ४
ओ षु घृष्विराधसो यातनान्धांसि पीतये ।
इमा वो हव्या मरुतो ररे हि कं मो ष्व१न्यत्र गन्तन ५
आ च नो बर्हिः सदताविता च नः स्पार्हाणि दातवे वसु ।
असेधन्तो मरुतः सोम्ये मधौ स्वाहेह मादयाध्वै ६
सस्वश्चिद्धि तन्व१ः शुम्भमाना आ हंसासो नीलपृष्ठा अपप्तन् ।
विश्वं शर्धो अभितो मा नि षेद नरो न रण्वाः सवने मदन्तः ७
यो नो मरुतो अभि दुर्हृणायु स्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति ।
द्रुहः पाशान् प्रति स मुचीष्ट तपिष्ठेन हन्मना हन्तना तम् ८ ३९०
सान्तपना इदं हवि र्मरुतस्तज्जुजुष्टन । युष्माकोती रिशादसः ९
गृहमेधास आ गत मरुतो माप भूतन । युष्माकोती सुदानवः १०
इहेह वः स्वतवसः कवयः सूर्यत्वचः । यज्ञं मरुत आ वृणे ११

॥ ३८ ॥ (ऋ० ७।१०४।१८) जगती ।

वि तिष्ठध्वं मरुतो विक्ष्वि१च्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन ।
वयो ये भूत्वी पतयन्ति नक्तभि र्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे १८ ३९४

॥ ३९ ॥ (ऋ० ८।९४।१-१२)

(३९५-४०६) बिन्दुः पूतदक्षो वा आङ्गिरसः । गायत्री ।

गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम् । युक्ता वह्नी रथानाम् १ ३९५
यस्या देवा उपस्थे व्रता विश्वे धारयन्ते । सूर्यामासा दृशे कम् २
तत् सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः । मरुतः सोमपीतये ३
अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः । उत स्वराजो अश्विना ४
पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः । त्रिषधस्थस्य जावतः ५
उतो न्वस्य जोषमाँ इन्द्रः सुतस्य गोमतः । प्रातर्होतेव मत्सति ६ ४००
कदत्विषन्त सूरय स्तिर आप इव स्रिधः । अर्षन्ति पूतदक्षसः ७
कद्वो अद्य महानां देवानामवो वृणे । त्मना च दस्मवर्चसाम् ८
आ ये विश्वा पार्थिवानि पप्रथन् रोचना दिवः । मरुतः सोमपीतये ९
त्यान् नु पूतदक्षसो दिवो वो मरुतो हुवे । अस्य सोमस्य पीतये १०
त्यान् नु ये वि रोदसी तस्तभुर्मरुतो हुवे । अस्य सोमस्य पीतये ११ ४०५
त्यं नु मारुतं गणं गिरिष्ठां वृषणं हुवे । अस्य सोमस्य पीतये १२ ४०६

॥ ४० ॥ (ऋ० १०।७७।१-८)

(४०७-४१२) स्यूमरश्मिर्भार्गवः । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

अभ्रप्रुषो न वाचा प्रुषा वसु हविष्मन्तो न यज्ञा विजानुषः
सुमारुतं न ब्रह्माणमर्हसे गणमस्तोष्येषां न शोभसे १
श्रिये मर्यासो अञ्जीँरकृण्वत सुमारुतं न पूर्वीरति क्षपः ।
दिवस्पुत्रास एता न येतिर आदित्यासस्ते अक्रा न वावृधुः २
प्र ये दिवः पृथिव्या न बर्हणा त्मना रिरिच्रे अभ्रान्न सूर्यः ।
पाजस्वन्तो न वीराः पनस्यवो रिशादसो न मर्या अभिद्यवः ३
युष्माकं बुध्ने अपां न यामनि विथुर्यति न मही श्रथर्यति ।
विश्वप्सुर्यज्ञो अर्वागयं सु वः प्रयस्वन्तो न सत्राच आ गत ४ ४१०
यूयं धूर्षु प्रयुजो न रश्मिभि र्ज्योतिष्मन्तो न भासा व्युष्टिषु ।
श्येनासो न स्वयशसो रिशादसः प्रवासो न प्रसितासः परिप्रुषः ५
प्र यद् वहध्वे मरुतः पराकाद् यूयं महः संवरणस्य वस्वः ।
विदानासो वसवो राध्यस्या ऽऽराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोत ६
य उदृचि यज्ञे अध्वरेष्ठा मरुद्भ्यो न मानुषो ददाशत् ।
रेवत् स वयो दधते सुवीरं स देवानामपि गोपीथे अस्तु ७
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमा आदित्येन नाम्ना शंभविष्ठाः ।
ते नोऽवन्तु रथतूर्मनीषां महश्च यामन्नध्वरे चकानाः ८

॥ ४१ ॥ (ऋ० १०।७८।१-८) त्रिष्टुप्, २,५-६ जगती ।

विप्रासो न मन्मभिः स्वाध्यो देवाव्यो न यज्ञैः स्वप्नसः ।
राजानो न चित्राः सुसंदृशः क्षितीनां न मर्या अरेपसः १ ४१५
अग्निर्न ये भ्राजसा रुक्मवक्षसो वातासो न स्वयुजः सद्यऊतयः ।
प्रज्ञातारो न ज्येष्ठाः सुनीतयः सुशर्माणो न सोमा ऋतं यते २
वातासो न ये धुनयो जिगत्नवो ऽग्नीनां न जिह्वा विरोकिणः ।
वर्मण्वन्तो न योधाः शिमीवन्तः पितॄणां न शंसाः सुरातयः ३
रथानां न येऽराः सनाभयो जिगीवांसो न शूरा अभिद्यवः ।
वरेयवो न मर्या घृतप्रुषो ऽभिस्वर्तारो अर्कं न सुष्टुभः ४
अश्वासो न ये ज्येष्ठास आशवो दिधिषवो न रथ्यः सुदानवः ।
आपो न निम्नैरुदभिर्जिगत्नवो विश्वरूपा अङ्गिरसो न सामभिः ५ ४१९

ग्रावा॑णो न सू॒रय॒: सिन्धु॑मातर आद॒र्दिरासो॒ अद्र॑यो॒ न वि॒श्वहा॑ ।
शि॒शूला न क्री॒ळय॑: सुमा॒तरो॑ महाग्रा॒मो न याम॑न्नु॒त त्वि॒षा ६ ४२०
उ॒षसां न के॒तवो॑ऽध्व॒रश्रिय॑: शुभं॒यवो॒ नाञ्जिभि॒र्व्य॑श्वितन् ।
सिन्ध॑वो॒ न य॒यियो॒ भ्राज॑दृष्टयः परा॒वतो॒ न योज॑नानि ममिरे ७
सुभा॒गान्नो॑ देवाः कृणुता सु॒रत्ना॑न॒स्मान्त्स्तो॒तॄन् म॑रुतो वावृधा॒नाः ।
अधि॑ स्तो॒त्रस्य॑ स॒ख्यस्य॑ गात स॒नाद्धि वो॑ रत्न॒धेया॑नि॒ सन्ति ८ ४२१

॥ ४२ ॥ (य० ३।४४)

प्र॒घा॒सिनो॑ हवामहे म॒रुत॑श्च रि॒शाद॑सः । क॒र॒म्भेण॑ स॒जोष॑सः ४४ ४२२

॥ ४३ ॥ (य० ७।३६)

उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑त ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑ते ।
उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि म॒रुतां॒ त्वौज॑से ३६ ४२४

॥ ४४ ॥ (४२५-४२७) (य० १७।८४-८६)

ई॒दृक्षा॑स एता॒दृक्षा॑स ऊ षु णः स॒दृक्षा॑सः प्रति॑सदृक्षास॒ एत॑न ।
मि॒तास॑श्च॒ सम्मि॑तासो नो अ॒द्य सभ॑रसो मरुतो य॒ज्ञे अ॒स्मिन् ८४ ४२५
स्वत॑वाँश्च प्रघा॒सी च॑ सान्तप॒नश्च॑ गृहमे॒धी च॑ । क्री॒डी च॑ शा॒की चो॑ज्जे॒षी ८५
इन्द्रं॒ दैवी॒र्विशो॑ म॒रुतो॒ऽनु॑वर्त्मानोऽभवन् यथेन्द्रं॒ दैवी॒र्विशो॑ म॒रुतो॒ऽनु॑वर्त्मा॒नोऽभ॑वन् ।
ए॒वमि॒मं यज॑मानं॒ दैवी॑श्च॒ विशो॑ मानु॒षीश्चानु॑वर्त्मानो भवन्तु ८६ ४२७

॥ ४५ ॥ (य० २५।२०)

पृष॑दश्वा म॒रुत॒: पृश्नि॑मातरः शु॒भं॒यावा॑नो वि॒दथे॑षु॒ जग्म॑यः ।
अ॒ग्नि॒जि॒ह्वा मन॑व॒: सूर॑चक्षसो॒ विश्वे॑ नो दे॒वा अव॒साग॑मन्नि॒ह २० ४२८

॥ ४६ ॥ (साम० ३५६) श्यावाश्व आत्रेयः । अनुष्टुप् ।

यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा । पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ५ ४२९

॥ ४७ ॥ (अथर्व० १।२६।३-४)

(४३०-४३१) ब्रह्मा । ३ गायत्री, ४ एकावसाना पादनिचृत् ।

यू॒यं नः॑ प्रवतो॒ नपा॒न्मरु॑त॒: सूर्य॑त्वचसः । शर्म॑ यच्छाथ स॒प्रथा॑: ३ ४३०
सु॒षू॒दत॑ मृ॒डत॑ मृ॒डया॑ नस्त॒नूभ्यो॒ मय॑स्तो॒केभ्य॑स्कृधि ४

॥ ४८ ॥ (अथर्व० ५।२६।५) द्विपदार्ची उष्णिक् ।

छन्दां॑सि य॒ज्ञे म॑रु॒तः स्वाहा॑ मा॒तेव॑ पु॒त्रं पि॑पृ॒तेह यु॒क्ताः ५ ४३१

॥ ४९ ॥ (अथर्व० १३।१।३) जगती ।

यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून् ।
आ वो रोहितः शृणवत् सुदानवस्त्रिषप्तासो मरुतः स्वादुसंमुदः ३ ४३३

॥ ५० ॥ (अथर्व० ३।१।२)
(४३४-४३६) अथर्वा । विराड्गर्भा भुरिक् ।

यूयमुग्रा मरुत ईदृशे स्थाभि प्रेत मृणत सहध्वम् ।
अमीमृणन् वसवो नाथिता इमे अग्निर्ह्येषां दूतः प्रत्येतु विद्वान् २

॥ ५१ ॥ (अथर्व० ३।२।६) त्रिष्टुप् ।

असौ या सेना मरुतः परेषामस्मानैत्यभ्योजसा स्पर्धमाना ।
तां विध्यत तमसापव्रतेन यथैषामन्यो अन्यं न जानात् ६ ४३५

॥ ५२ ॥ (अथर्व० ५।२४।६) चतुष्पदातिशक्वरी ।

मरुतः पर्वतानामधिपतयस्ते मावन्तु । अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां
प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ६ ४३६

॥ ५३ ॥ (अथर्व० ४।१३।४) (४३७-४३९) शंतातिः । अनुष्टुप् ।

त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां मरुतां गणाः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ४

॥ ५४ ॥ (अथर्व० ६।२२।२-३) २ चतुष्पदा भुरिग्जगती, ३ त्रिष्टुप् ।

पयस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षसः ।
ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु २
उदप्रुतो मरुतस्ताँ इयर्त वृष्टिर्या विश्वा निवतस्पृणाति ।
एजाति ग्लहा कन्येव तुन्नैरुं तुन्दाना पत्येव जाया ३ ४३९

॥ ५५ ॥ (अथर्व० ४।२७।१-७) (४४०-४४६) १-७ मृगारः । त्रिष्टुप् ।

मरुतां मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु प्रेमं वाजं वाजसाते अवन्तु ।
आशूनिव सुयमानह्व ऊतये ते नो मुञ्चन्त्वंहसः १ ४४०
उत्समक्षितं व्यचन्ति ये सदा य आसिञ्चन्ति रसमोषधीषु ।
पुरो दधे मरुतः पृश्निमातॄंस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः २
पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ ।
शग्मा भवन्तु मरुतो नः स्योनास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ३
अपः समुद्राद् दिवमुद्वहन्ति दिवस्पृथिवीमभि ये सृजन्ति ।
ये अद्भिरीशाना मरुतश्चरन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ४
ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति ।
ये अद्भिरीशाना मरुतो वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ५ ४४४

यदीदिदं मरुतो मारुतेन यदि देवा दैव्येनेहगार ।
यूयमीशिध्वे वसवस्तस्य निष्कृते—स्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ६
तिग्ममनीकं विदितं सहस्व—न्मारुतं शर्धः पृतनासूग्रम् ।
स्तौमि मरुतो नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ७ ४४६

॥ ५६ ॥ (अथर्व० ७।७७[८२]।३)(४४७) अङ्गिराः । जगती ।

संवत्सरीणा मरुतः स्वर्का उरुक्षयाः सगणा मानुषासः ।
ते अस्मत् पाशान् प्र मुञ्चन्त्वेनसः सांतपना मत्सरा मादयिष्णवः ३ ४४७

मरुत्सहचारी देवगणः ।

(१) मरुद्रुद्रविष्णवः ।

॥ ५७ ॥ (ऋ० ५।३।३) (४४८) वसुश्रुत आत्रेयः । त्रिष्टुप् ।

तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त रुद्र यत् ते जनिम चारु चित्रम् ।
पदं यद् विष्णोरुपमं निधायि तेन पासि गुह्यं नाम गोनाम् ३ ४४८

(२) मरुतोऽग्नामरुतौ वा ।

॥ ५८ ॥ (ऋ० ५।६०।१-८)

(४४९-४५६) श्यावाश्व आत्रेयः । त्रिष्टुप्, ७-८ जगती ।

ईळे अग्निं स्ववसं नमोभि—रिह प्रसत्तो वि चयत् कृतं नः ।
रथैरिव प्र भरे वाजयद्भिः प्रदक्षिणिन्मरुतां स्तोममृध्याम् १
आ ये तस्थुः पृषतीषु श्रुतासु सुखेषु रुद्रा मरुतो रथेषु ।
वना चिदुग्रा जिहते नि वो भिया पृथिवी चिद् रेजते पर्वतश्चित् २ ४५०
पर्वतश्चिन्महि वृद्धो बिभाय दिवश्चित् सानु रेजत स्वने वः ।
यत् क्रीळथ मरुत ऋष्टिमन्त आप इव सध्र्यञ्चो धवध्वे ३
वरा इवेद् रैवतासो हिरण्यै—रभि स्वधाभिस्तन्वः पिपिश्रे ।
श्रिये श्रेयांसस्तवसो रथेषु सत्रा महांसि चक्रिरे तनूषु ४
अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय ।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ५
यदुत्तमे मरुतो मध्यमे वा यद् वावमे सुभगासो दिवि ष्ठ ।
अतो नो रुद्रा उत वा न्वस्या—ऽग्ने वित्ताद्धविषो यद् यजाम ६
अग्निश्च यन्मरुतो विश्ववेदसो दिवो वहध्व उत्तरादधि ष्णुभिः ।
ते मन्दसाना धुनयो रिशादसो वामं धत्त यजमानाय सुन्वते ७ ४५५

अग्ने मरुद्भिः शुभयद्भिर्ऋक्वभिः सोमं पिब मन्दसानो गणश्रिभिः ।
पावकेभिर्विश्वमिन्वेभिरायुभि— र्वैश्वानर प्रदिवा केतुना सजूः　८　४५६

(३) सोमः मरुतः ।

॥ ५९ ॥ (अथर्व० १।२०।१) अथर्वा। त्रिष्टुप् ।

अदारसृद् भवतु देव सोमा—ऽस्मिन् यज्ञे मरुतो मृडता नः ।
मा नो विददभिभा मो अशस्ति—र्मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या　१　४५७

(४) मरुत्पर्जन्यौ ।

॥ ६० ॥ (अथर्व० ४।१५।४) विराट् पुरस्ताद्बृहती ।

गणास्त्वोप गायन्तु मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक् ।
सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु　४　४५८

(५) मरुत आपः ।

॥ ६१ ॥ (४५९-४६४) (अथर्व ४।१५।५-१०)
(५ विराड् जगती, ७ अनुष्टुप्, ६, ८ त्रिष्टुप्, ९ पथ्या पंक्तिः, १० भुरिक् ।)

उदीरयत मरुतः समुद्रत— स्त्वेषो अर्को नभ उत्पातयाथ ।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु　५
अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधिं भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्ग्धि ।
त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्ष—माशारैषी कृशगुरेत्वस्तम्　६　४६०
सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु　७
आशामाशां वि द्योततां वाता वान्तु दिशोदिशः ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु　८
आपो विद्युदभ्रं वर्षं सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु　९
अपामग्निस्तनूभिः संविदानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।
स नो वर्षं वनुतां जातवेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्परि　१०　४६४

मरुद्देवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम्।

[४] १।६।९ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। मरुतः)
दिवो वा रोचनादधि।
१।४९।१ (प्रस्कण्वः काण्वः। उषा)
दिवश्चिद् रोचनादधि।
(२७१) ५।५६।१ (श्यावाश्व आत्रेयः। मरुतः)
८।८।७ (सध्वंसः काण्वः। अश्विनौ)
दिवश्चिद् रोचनादध्या।
[५] १।१५।२ (मेधातिथिः काण्वः। मरुतः)
यूयं हि ष्ठा सुदानवः।
१।५१।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः। विश्वेदेवाः)
(१७) ८।७।१२ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
८।८३।९ (कुसीदी काण्वः। विश्वे देवाः)
[९] १।३७।४ (कण्वो घौरः। मरुतः)
प्र व ...।
देवत्तं ब्रह्म गायत।
(इन्द्रः २०६) ८।३२।२७ (मेधातिथिः काण्वः। इन्द्रः)
प्र व ...।
देवत्तं ब्रह्म गायत।
[३,१०] १।३७।१,५ क्रीळं वः शर्धो(५ क्रीळं यच्छर्धो)मारुतम्।
[१३] १।३७।८ (कण्वो घौरः। मरुतः)
भिया **यामेषु रेजते।**
(८६) ८।२०।५ (सोभरिः काण्वः। मरुतः)
भूमिर्**यामेषु रेजते।**
[१६] १।३७।११ (कण्वो घौरः। मरुतः)
प्र च्यावयन्ति यामभिः।
(२७८) ५।५६।४ (श्यावाश्व आत्रेयः। मरुतः)
[१७] १।३७।१२ (कण्वो घौरः। मरुतः)
मरुतो यद्ध वो बलं।
(५६) ८।७।११ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
... **वो** दिवः।
[२१] १।३८।१ (कण्वो घौरः। मरुतः)
कद्ध नूनं कधप्रियः।
(७६) ८।७।३१ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
[४०] १।३९।५ (कण्वो घौरः मरुतः)
प्र वेपयन्ति पर्वतान्।
प्रो आरत **मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वया विशा।**
५।२६।९ (वसूयव आत्रेयाः। विश्वे देवाः)
एदं **मरुतो।**
देवासः सर्वया विशा।
(४९) ८।७।४ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
वपन्ति **मरुतो** मिहं **प्र वेपयन्ति पर्वतान्।**
[४१] १।३९।६ (कण्वो घौरः। मरुतः)
उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं।
(१२७) १।८५।५ (गोतमो राहूगणः। मरुतः)
प्र यद् **रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं।**
[''] १।३९।६ (कण्वो घौरः। मरुतः)
उपो **रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं प्रष्टिर्वहति रोहितः।**
(७३) ७।७।२८ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
यदेषां **पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः।**
[४२] १।३९।७ महो **अवो वृणीमहे।**
१।४२।५ (कण्वो घौरः। पूषा)
पूषन्नवो **वृणीमहे।**
[११२] १।६४।४ (नोधा गोतमः। मरुतः)
वक्षःसु रुक्मां अधि येतिरे **शुभे।**
(२६०) ५।५४।११ (श्यावाश्व आत्रेयः। मरुतः)
वक्षःसु रुक्मा मरुतो रथे **शुभः।**
[११३] १।६४।६ अत्यं **दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितम्।**
९।७२।६ (हरिमन्त आङ्गिरसः। पवमानः सोमः)
अंशुं **दुहन्ति**—।
[११९] (नोधा गोतमः। मरुतः)
रुद्रस्य सूनुं हवसा गृणीमसि।
रजस्तुरं तवसं **मारुतं।**
(३४४) ६।६६।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। मरुतः)
तं वृधन्तं **मारुतं** भ्राजदृष्टिं **रुद्रस्य सूनुं हवसा** विवासे।
[१२०] १।६४।१३ (नोधा गोतमः। मरुतः)
तस्थौ व ऊती **मरुतो यमावत।**
(१६५) १।१६६।८ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। मरुतः)
पूर्भी रक्षता **मरुतो यमावत।**

[११०] १।६४।१३ (नोधा गौतमः । मरुतः)

मरुतो...... ।

अर्वद्भिर्वाजं भरते धना नृभिः ।

२।२६।३ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)

स इज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते धना नृभिः ।

(इन्द्रः १८०७) १०।१४७।४ (सुवेदाः शैरीषिः । इन्द्रः)

स इन् ... ।

मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः ।

[११४] १।८५।२ त उक्षितासो महिमानमाशत ।

(इन्द्रः ३२०३) ८।५९ (वाल० ११)।२

(सुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)

इन्द्रावरुणा महिमानमाशत ।

[११७] १।८५।५ प्र यद् रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।

(४१) १।३९।६ (कण्वो घौरः । मरुतः)

उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।

[१२०] १।८५।८ (गोतमो राहूगणः । मरुतः)

भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो ।

(१६१) १।१६६।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । मरुतः)

... भुवनानि हर्म्या ।

[१२१] १।८५।९ अहन् वृत्रं निरपामौब्जदर्णवम् ।

(इन्द्रः ८०९) १।५६।५ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[१३७] १।८६।३ स गन्ता गोमति व्रजे ।

(इन्द्रः २२४४) ७।३२।१० गमत्स गोमति व्रजे ।

(इन्द्रः १८९५) ८।४६।९ (वशोऽश्व्यः । इन्द्रः)

(इन्द्रः ५०९)८।५१ (वाल० ३)।५ गमेम गोमति व्रजे

[१३८] १।८६।४ (गोतमो राहूगणः । मरुतः)

सुतः सोमो दिविष्टिषु ।

उक्थं मदश्च शस्यते ।

(इन्द्रः ६३६) ८।७६।९ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)

सुतं सोमं दिविष्टिषु ।

[इन्द्रः ३३१७] ४।४९।१ [वामदेवो गौतमः । इन्द्राबृहस्पती]

उक्थं मदश्च शस्यते ।

[१३९] १।८६।५ [गोतमो राहूगणः । मरुतः]

विश्वा यश्चर्षणीरभि ।

[अग्निः ६९६] ४।७।४ [वामदेवो गौतमः । अग्निः]

[अग्निः ९०२] ५।२३।१ [द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्निः]

[१४८] १।८७।४ [गोतमो राहूगणः । मरुतः]

असि सत्य ऋणयावानेद्यो ।

२।२३।११ [गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः]

...ऋणया ब्रह्मणस्पत ।

[१९१] १।१६८।९ [अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । मरुतः]

आदित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।

१०।१५७।५ [भुवन आप्त्यः साधनो वा भौवनः । विश्वे देवाः]

[१९२] १।१६८।१०= [इन्द्रः ३२६४] १।१६५।१५

=[१७२] १।१६६।१५=[१८२] १।१६७।११

[अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । मरुत्वानिन्द्रः]

एष वः स्तोमो०.....कारोः ।

एषा यासीष्ट०.....जीरदानुम् ॥

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[१९८] २।३०।११ तं वः शर्धं मारुतं ।

(२४३) ५।५३।१० तं वः शर्धं रथानां ।

[२०२] २।३४।४ (गृत्समदः शौनकः । मरुतः)

पृषदश्वासो अनवभ्रराधसः ।

(२१६) ३।२६।६ (गाथिनो विश्वामित्रः । मरुतः)

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[२१६] ३।२६।६ = (२०२) २।३४।४

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[२३०] ५।५२।४ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]

वो.......स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।

[अग्निः१०६३] ६।१६।२२ [भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः]

वः ...... स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।

[२४३] ५।५३।१० त्वेषं गणं मारुतं नव्यसीनाम् ।

[२९१] ५।५८।१ स्तुषे गणं ... ।

[२४९] ५।५३।१६ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]

रणन् गावो न यवसे ।

१०।२५।१ [विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुकः। सोमः]
रणन् गावो न यवसे विवक्षसे ।
[२६०] ५।५४।११ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]
विद्युतो गभस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः ।
[७०] ८।७।२५ [पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः]
विद्युद्धस्ता......शिप्राः शीर्षन् हिरण्ययीः ।
[२६५ ७३] ५।५५।१-९ शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ।
[२६७] ५।५५।३ विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः ।
(अग्निः १६५४) १०।९१।४ (अरुणो वैतहव्यः । अग्निः)
अर्चयः सूर्यस्येव रश्मयः ।
[२७३] ५।५५।९ (श्यावाश्व आत्रेयः मरुतः)
अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन ।
अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातन ।
६।५१।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त ।
(४२२) १०।७८।८ (स्यूमरश्मिर्भार्गवः । मरुतः)
अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गात ।
[२७४] ५।५५।१०=४।५०।६ [वामदेवो गौतमः । बृहस्पतिः]
वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।
[२७५] ५।५६।१=१।४९।१ [प्रस्कण्वः काण्वः । उषा]
दिवश्चिद् रोचनादधि ।
[२७८] ५।५६।४=[२६] १।३७।११

प्र च्यावयन्ति यामभिः ।
[२८०] ५।५६।६ युङ्ग्ध्वं ह्यरुषी रथे ।
१।१४।१२ [मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः]
युक्ष्वा ह्यरुषी रथे ।
["] ५।५६।६ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]
रथे... ।
आजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे ।
१।१३४।३ [परुच्छेपो दैवोदासिः । वायुः]
[२९०] ५।५७।७ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]
भक्षीय वो ऽवसो दैव्यस्य ।
[इन्द्रः १५५३] ४।२१।१० [वामदेवो गौतमः । इन्द्रः]
भक्षीय ते ऽवसो दैव्यस्य ।
[२९१] ५।५७।८=[२९९] ५।५८।८ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]
हये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।
सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः।
[२९२] ५।५८।१=[२४३] ५।५३।१०
[३१९] ५।८७।२ (एवयामरुदात्रेयः । मरुतः)
दाना मह्ना तदेषाम् ।
(९५) ८।२०।१४ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)
[३२२] ५।८७।५ (एवयामरुदात्रेयः । मरुतः)
स्वायुधास इष्मिणः ।
(३५५) ७।५६।११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्काः ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३३४] ६।६६।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । मरुतः)
शुक्रं दुदुह्रे पृश्निरूधः ।
(अग्निः ६७५) ४।३।१० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
[३४१] ६।६६।८ नास्य वर्ता न तरुता न्वस्ति ।
१।४०।८ (कण्वो घौरः । ब्रह्मणस्पतिः)
नास्य वर्ता न तरुता महाधने ।
["] ६।६६।८ मरुतो यमवथ वाजसातौ ।

१०।३५।१४ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
यं देवासोऽवथ वाजसातौ ।
१०।६३।१४ (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)
["] ६।६६।८ तोके वा गोषु तनये यमप्सु ।
(इन्द्रः १९४१) ६।२५।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
......यदप्सु ।
[३४४] ६।६६।११=(११९) १।६४।१२

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३५५] ७।५६।११=(३२२) ५।८७।५
[३६७] ७।५६।२३ इन्द्र सनिता वाजमर्वा ।
(इन्द्रः २०१७) ६।३३।२ (शुनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
[३६९] ७।५६।२५=७।३४।२५ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।
["] ७।५६।२५ आप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।

१०।६६।९ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)
आप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया ।
७।३४।२५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
[३७३] ७।५७।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
यद्व आगः पुरुषता कराम ।
अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ।

१०।१५।६ (शङ्खो यामायनः। पितरः)
यद्ध......।
७।७०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
अस्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा।
[३७६] ७।५७।७ आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती।
५।४३।१० (अत्रिर्भौमः। विश्वे देवाः)
विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती।
[३७९] ७।५८।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। मरुतः)
प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेत।
(इन्द्रः ३१९४) ७।८४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। इन्द्रावरुणौ)
... रेतम्।
[३८१] ७।५८।६ आराच्चिद् द्वेषो वृषणो युयोत।
(इन्द्रः २१११) ६।४७।१३ (गर्गो भारद्वाजः। इन्द्रः)
आराच्चिद् द्वेषः सनुत युयोतु।
[३८४] ७।५९।२ युष्माकं देवा अवसाहनि।
१।११०।७ (कुत्स आंगिरसः। ऋभवः)
["] ७।५९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। मरुतः)
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति।
८।२७।१६ (मनुर्वैवस्वतः। विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम्।

[४६] ८।७।१ प्र यद् वस्त्रिष्टुभमिषं।
(इन्द्रः २३०४) ८।६९।१ (प्रियमेध आंगिरसः। इन्द्रः)
प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं।
[४७] ८।७।२ यदङ्ग तविषीयवो।
(इन्द्रः २६८ ८।६।२६ (वत्सः काण्वः। इन्द्रः)
यदङ्ग तविषीयसे।
[४७,५९] ८।७।२,१४ यामं शुभ्रा अचिध्वम्।
[४८] ८।७।३ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
धुक्षन्त पिप्युषीमिषम्।
(इन्द्रः ३४५) ८।१३।२५ (नारदः काण्वः। इन्द्रः)
धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च नः।
(इन्द्रः५३७) ८।५४(वाल० ६)।७ (मातरिश्वा काण्वः। इन्द्रः)
धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्।
९।६१।१५ अमहीयुराङ्गिरसः। पवमानः सोमः)
धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्।
[४९] ८।७।४ = (४०) १।३९।५
प्र वेपयन्ति पर्वतान्।
[५३,८१] ८।७।८,३६ ते भानुभिर्वि तस्थिरे।
[५५] ८।७।१० (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
दुदुह्रे वज्रिणे मधु।
(इन्द्रः २३०९) ८।६९।६ (प्रियमेध आंगिरसः। इन्द्रः)
[५६] ८।७।११ = (१७) १।३७।१२
मरुतो यद्ध वो दिवः [बलं]।
[५७] ८।७।१२ = (५) १।१५।२
यूयं हि ष्ठा सुदानवो [०व]।
[५८] ८।७।१३ पुरुक्षुं विश्वधायसम्।
८।५।१५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः। अश्विनौ)
[६०] ८।७।१५ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
एषां सुम्न भिक्षेत मर्त्यः।
८।१८।१ (इरिम्बिठिः काण्वः। आदित्याः)
[६५] ८।७।२० (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
ब्रह्मा को वः सपर्यति।
(इन्द्रः ५९५) ८।६४।७ प्रगाथः काण्वः। इन्द्रः)
ब्रह्मा कस्त सपर्यति।
[६७] ८।७।२२ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
सम् ... मं क्षोणी समु सूर्यम्। सम् ...।
(इन्द्रः ५२४) ८।५१ (वाल० ४)।१०
(आयुः काण्वः। इन्द्रः)
सम् ... मं क्षोणी समु सूर्यम्।
सम् ... मम्।
[६८] ८।७।२३ = (इन्द्रः २५५) ८।६।१३
वि वृत्रं पर्वशो ययुः (मरुत)।
[७०] ८।७।२५ = २६०) ५।५४।११
[७१] ८।७।२६ = (इन्द्रः १०१९) १।१३०।९
उशना यत् परावतः।
[७३] ८।७।२८ = (४१) १।३९।६
[७६] ८।७।३१ = (२१) १।३८।१
[८०] ८।७।३५ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)
वहन्त्यन्तरिक्षेण पततः।
१।२५।७ (शुनःशेप आजीगर्तिः। वरुणः)
पदमन्तरिक्षेण पतताम्।
[८६] ८।२०।५ = (१३) १।३७।८
भूमि (भिया) यामेषु रेजते।

[८९] ८।२०।८ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)
रथे कोशे हिरण्यये ।
८।२२।९ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
रथे कोशे हिरण्यये वृषण्वसू ।
[९५] ८।२०।१४ = (३१९) ५।८७।२
[१०७] ८।२०।२६ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)
तेना नो अधि वोचत ।
८।६७।६ (मत्स्यः साम्मदः मान्यो मैत्रावरुणिः बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)
["] ८।२०।२६ इष्कर्ता विहुतं पुनः ।
(इन्द्रः ९८) ८।१।१२ (मेधातिथि–मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
[३९७] ८।९४।२ तत् सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः।
६।४५।३३ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । बृबुस्तक्षा)
["] ८।९४।३ मरुतः सोमपीतये ।
१।२३।१० (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
[३९८] ८।९४।४ आस्ति सोमो अयं सुतः ।
(इन्द्रः १७६६) ५।४०।२ वृषा सोमो अयं सुतः ।
[४०१] ८।९४।८ = १।३८।१०
[४०३] ८।९४।९= १।२३।१०(मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
[४०४-६] ८।९४।१०-१२ अस्य सोमस्य पीतये ।
= १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
(इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायू)
(इन्द्रः ३३२१)४।४९।५(वामदेवो गौतमः। इन्द्राबृहस्पती)
(इन्द्रः ३०५५)६।५९।१०(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः। इन्द्राग्नी)
(इन्द्रः ६३३) ८।७६।६ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[४११] १०।७७।६ = (इन्द्रः २१११) ६।४७।१३
(गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः)
[४१४] १०।७७।८ ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः ।
७।३९।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
[४२२] १०।७८।८ = (२७३) ५।५५।९

दैवत-संहितान्तर्गत

मरुद्देवता-मन्त्राणां उपमासूची ।

अग्नय: न इधानाः ६,६६,२; ३३५ मरुत: शोशुचन् ।
अग्नय: न १,३४,१; १९९ शोशुचानाः ।
" " ५,८७,३; ३२० स्वविद्युतः ।
" " ५,८७,६; ३२३ शुशुक्वासः ।
अग्नि: न १०,७८,२; ४१६ भ्राजसा रुक्मवक्षसः ।
अग्नीनां न जिह्वा १०,७८,३; ४१७ विरोकिण: ।
अग्नितप: यथा ५,६१,४; ३११ [तद्वत् प्रदीप्ता:] ।
अङ्गिरस: न १०,७८,५; ४१९ सामभि: विश्वरूपाः ।
अत्यम् न १,६४.६; ११३ वाजिनं मिहे वि नयन्ति ।
अत्यास: न ७,५६,१६; ३६० स्वश्वा: ।
अत्या: इव ५,५९,३; ५०२ सुभ्व: चारवः ।
अत्यान् इव वाजिषु २,३४,३; २०१ अश्वान् उक्षन्ते ।
अदितेः इव व्रतम् १,१६६,१२; १६९ दीर्घं दात्रम् ।
अद्रय: न ५,८७,९; ३१९ अधृष्टासः ।
" " आदर्दिरास: १०,७८,६; ४२० विश्वहा ।
अध्वरस्य इव ६,६६,१०; ३४३ मरुतः दिद्युत् ।
अन्तम् न १,३७,६;११ सीम् धूनुथ ।
अप: न १,६४,१; १०८ मनसा गिर: समञ्जे ।
आप: इव ८,९६,७; ४०१ सूरय: तिर: इषन्त ।
" " ५,६०,३; ४५१ सध्य्यञ्च: धवध्वे ।
" " न १०,७८,५; ४१९ निम्नैः उद्भि: जिगत्नवः ।
अपां न ऊर्मय: १,१६८,२; १८४ सहस्रियास: मरुतः ।
अपां न यामनि १०,७७,४; ४१० युष्माकं बुध्ने मही न ।
अभ्रप्रुष: न १०,७७,१; ४०७ वाचा वसुप्रुषा ।
अभ्रात् न सूर्यः १०,७७,३; ४०९ त्मना प्र रिरिच्रे ।
आभ्रिया: न २,३४,२; २०० वृष्टय: वि द्युतयन्त ।
अमतिः न १,६४,९; ११६ [तेजः] रथेषु आ तस्थौ ।
अराः इव ५,५८,५; २९६ अचरमाः ।
अराणां न चरमः ८,२०,१४; ९५ एषां दाना मह्ना ।
अर्कम् न अभिस्वतारिः १०,७८,४; ४१८ सुष्टुभः ।
अर्णः न ८,२०,१३; ९४ सप्रथः त्वेषम् ।
" " १,१६७,९; १८० मरुतः द्वेषः परि स्थुः ।
अर्यमणम् न ६,४८,१४; ३३० मन्द्रम् ।
अर्यमणः न ५,५४,८; २५७ [दीप्ताः] ।
अश्वाः इव ५,५९,५; ३०४ [शीघ्रगन्तारः] ।
अश्वास: न १०,७८,५; ४१९ ज्येष्ठासः आशवः ।
अश्वाः इव अध्वनः ५,५३,७; २४० क्षोदसा रजः प्र सस्रु ।
अश्वाम् इव ऊधनि २,३४,६; २०४ धेनुं पिन्वत ।
असुर्या इव १,१६८,७; १८९ रातिः जञ्जती ।
अहा इव ५,५८,५; २९६ अचरमाः ।
आशून् इव अथ० ४,२७,१; ४४१ सुयमान् अह्व ऊतये ।
इत्था न नभसः १,१६७,६; १७६ त्वेष प्रतीका विधतः ।
इन्द्रम् न ६,४८,१४; ३३० सुक्रतुं मारुतं गणम् ।
इन्द्रम् दैवी यथा वा०य० १७,८६; ४२७ यजमानं विशः ।
इषुम् न १,३९,१०; ४५ द्विषं ऋषिद्विषे सृजत ।
उपरा न १,१६७,३; १७४ ऋष्टिः ।
उषा न रामीः अरुणैः २,३४,१२; २१० मद: ज्योतिषा ।
उपसां न केतवः १०,७८,७; ४२१ अध्वराश्रियः ।
उस्राः इव केचित् १,८७,१; १४५ अञ्जिभि: व्यानञ्जे ।
ऋक्षः न ५,५६,३; २७७ अमः शिमीवान् ।
ऋजिप्यास: न २,३४,४; २०३ वयुनेषु धूर्षदः ।
ऋष्टिषु प्रयतासु १,१६६,४; १६१ विश्वा हर्म्या भुवनानि
एतशः न अहन्यः १,१६८,५; १८७ पुरुप्रैषा [स्तोत्रैः] ।
एताः न यामे ५,५४.५; २५४ योजनं दीर्घं ततान ।
एधा इव १,१६६,१; १५८ तविषाणि कर्तना ।
किरणम् न ५,५९,३; ३०४ भूमिं रेजथ ।
क्षितीनां न मर्याः १०,७८,१; ४१५ अरेपसः ।
गर्भम् इव भर्ता ५,५८,७; २९८ स्वमित् शवः धुः ।
गवां सर्गम् इव ५,५६,५; २७९ [मरुतां सर्गं] हुये ।
गवाम् इव शृङ्गम् ५,५९,३; ३०१ उत्तमं श्रियसे [धारयथ] ।
गावः न १०,३८,१; ११ वः क रण्यन्ति ।
गावः न १,१६८,२; १८४ वन्द्यासः ।
गावः न वन्द्यासः १,१६८,२; १८४ उक्षणः ।
गावः न यवसे ५,५३,१६; २४९ [मरुतः] रणन् ।
गावः न दुर्धुरः ५,५६,४; २७८ ओजसा वृथा रिणन्ति ।
गाः इव चर्कृषत् ८,२०,१९; १०० वृष्णः गिरा अभि गाय ।
गिरयः न १,६४,७; ११४ स्वतवसः ।

गिरयः न ६,६६ ११; ३४४ अस्पृध्रन् ।
गौः इव दुधा भीमयुः ५,५६,३; २७७ शिमीवान् अमः।
ग्रामजितः नरः यथा ५,५४,८; २५७ मरुतः तथा ।
ग्रावाणः न सूरयः १०,७८,६; ४२० सिन्धुमातरः ।
घृतम् न ८,७,१९; ६४ इषः विप्रुषीः ।
घृतवत् आभुवः विदथेषु १,६४,६; ११३ मरुतः पयः ।
चक्षुः इव ५,५४,६; २५५ सुगं यन्तं अनु नेषथ ।
चर्म इव १,८५,५; १२७ धारा उदभिः भूम व्युन्दन्ति ।
जज्झती इव ५,५२,६। २२२ मरुतः विद्युतः ।
जनयः न १,८५,१; १२३ मरुतः प्र शुम्भन्ते ।
जिगीवांसः शूराः १०,७८,४; ४१८ अभिद्यवः ।
जुजुर्वान् इव विश्पतिः १,३७,८; १३ पृथिवी अजमेषु ।
जुह्वः न अग्नेः ६,६६,१०; ३४३ मरुतः त्विषीमन्तः ।
ज्योतिष्मन्तः न १०,७७,५; ४११ भासा युक्ताः ।
तायवः न ५,५२,१२, २२८ केचित् मरुतः ।
तिष्यः यथा ५,५४,१३; २६२ तथा यः [राः]न युच्छति।
तृष्णजे न दिवः उत्साः ५,५७,१; २८४ इयं अस्मत् मतिः।
त्यत् न १,८८,५; १५५ एतत् योजनं अचेति ।
त्विषिवः न १०,७८,५; ४१९ रथ्यः सुदानवः ।
दुर्मदाः इव १,३९,५; ४० मरुतः प्रो आरत ।
देवः न सूर्यः ६,४८,२१; ३३३ यस्य चर्कृतिः द्यां परि ।
देवाव्यः न यज्ञैः १०,७८,१; ४१५ मन्मभिः स्वाध्यः ।
द्यौः न ८,७,२६; ७१ (पृथिवी अपि) भिया चक्रदत् ।
द्यौः इव ५, ५७, ४; २८७ उरवः मरुतः ।
द्यावः इव ५,५३,५; २३८ वृष्टी यतीः ।
द्यावः न स्तृभिः चितयन्त, २,३४.२;२०० खादिनः मरुतः।
द्रप्सा इव ८,७,१६; ६१ रोदसी वृष्टिभिः अनु धमन्ति ।
धन्वच्युतः न इषां यामनि १.१६८,५;१८७ [इषां यामनि]।
धुनयः न ६,६६,१०; ३०३ वीराः ।
धेनुः न शिश्वे २,३४,८; २०६ जनाय मही इषं च पिन्वते ।
धेनवः यथा ५,५३,७; २४० क्षोदसा रजः प्र सस्रुः ।
नित्यं न सूनुम् १,१६६,२; १५९ मरुतः मधु बिभ्रतः ।
नरः न रण्वः सवने मदन्तः ७,५७,१; ३८९ विश्वं शर्धः ।
नरां न शंसः २,३४,६; २०४ सवनानि आ गन्त न ।
नौः न पूर्णा ५,५९,२; ३०१ भियसा भूमिः एजते ।
पत्या इव जाया अथ० ६,२२,३; ४३३ एजाति ग्लहा कन्येव
पथ्यः न १,६४,११; ११८ पर्वतान् उज्जिघ्नन्ते ।
परावतः न १०,७८,७; ४२१ योजनानि ममिरे ।
पर्जन्यः इव १,३८,१४; ३४ आस्ये श्लोकं ततनः ।

पर्वताः इव १,६४,३; ११० दृढाङ्गाः] मरुतः ।
पर्वतासः ज्येष्ठासः ५,८७,९; ३२६ [अतिप्रवृद्धाः] ।
पाजस्वन्तः न वीराः १० ७७ ३; ४०९ पनस्यवः मरुतः ।
पितॄणां न शंसाः १०.७८ ३; ४१७ सुरातयः ।
पिशाः इव १,६४,८; ११५ सुपिशः विश्ववेदसः ।
पुत्रं न हस्तयोः पिता १,३८ १; २१ अस्मान् कद्ध दधिध्वे ।
पुत्रकृथे न जनयः ५,६१,३; ३१० जघने चोदः सक्थानि।
पुरा यथा १,३९.७; ४२ इत्था कण्वाय नूनं गन्त ।
पृगतः न दक्षिणा १ १६८,७; १८९ वः रातिः भद्रा ।
पृथिवी इव मीळ्हुष्मती ५,५६,३; २७७ मदन्ती अस्मत् ।
प्रज्ञातारः न १०,७८,२; ४१६ ज्येष्ठाः सुनीतयः।
प्रयस्वन्तः न १०,७७,४; ४१० सम्राचः आगता ।
प्रयुजः न धूर्पु १०,७७,५; ४११ परिप्रुषः स्थ ।
प्रवासः न प्रसितासः १०,७७,५; ४११ परिप्रुषः ।

मतिम् यथा १,६.६;९ महाम् अच्छा अनूषत ।
मनुषः न योषा १,१६७,३; १७४ गुहा चरन्ती विद्युत् ।
मरुतः रुक्मैः यथा ७,५७ ३; ३७२ एतावत् अन्ये न ।
मरुत्वयः न १०,७७,७; ४१३ मानुषः ददाशत् ।
मर्याः इव ५,५९,३; ३०२ श्रियसे चेतथ ।
मर्याः इव ५,५९,५; ३०४ सुवृधः ।
महा ग्रामः न यामन् १०,७८ ६; ४२० मरुतः त्विषा ।
माता इव पुत्रम् अथ० ५.२६,५. ४३२ पिपृत इह युक्ताः ।
मित्रम् न ५,५२,१४; २३० मारुतं गणं दाना अच्छा ।
मित्राय वा सद्म् । २,३४,४; २०२ पृक्षे विश्वा भुवना ।
मुनिः इव ७,५६,८; ३५२ धुनिः ।
मुष्टिहा इव हव्यः ८ २०,२०; १०१ ये सहाः सन्ति ।
मृगः न यवसे १,३८,५; ३५ जरिता अजोष्यः मा भूत् ।
मृगाः इव १,६४,७; ११४ हस्तिनः वना खादथ ।
मृगाः न २.३४,१; १९९ भीमाः ।

यक्षदृशः न मर्याः ६,६६,१६; ३६० मरुतः शुभयन्त ।
यमाः इव ५,५७,४; २८७ सुसदृशः ।
युधा इव १,१६६,१; १५८ तविषाणि कर्तन ।
युयुधयः न १,८५,८; १३० जग्मयः ।
रथैः इव ५,६०,१; ४४९ वाजयाद्भिः प्र भरे ।
रथानां न अराः १०.७८,४; ४१८ सनाभयः ।
रथीयन्ती इव १,१६६,५; १६२ ओषधिः प्र जिहीते ।
रथ्यः न ५,८७,८; ३२५ दंसना द्वेषांसि अप युयोतन ।
रश्मिणी इव १.१६८,३; १८५ अंसेषु [लक्ष्मीः] रारभे ।
राजानः इव १,८५,८; १३० त्वेषसंदृशः ।

राजानः न चित्राः १० ७८,१; ४१५ चित्राः सुसंदृशः।
रिशादसः न मर्याः १०.७७,३; ४०९ अभिद्यवः।
रुक्मः न १,८८,२; १५२ चित्रः मरुद्गणः।
रुक्मः इव उपरि दिवि ५,६१,१२; ३१३ मरुतः रथेषु।
वत्सम् न मातरम् १,३८,८; २८ विद्युत् मरुतः सिषक्ति।
वत्सासः न ७.५६.१६; ३६०; प्रक्रीळिनः।
वना न १.८८,३; १५३ मेधा ऊर्ध्वा कृणवन्ते।
वयः न १,८५ ७; १२९ मरुतः बर्हिषि अधि सीदन्।
वयः इव १,८७,२; १४६ केनचित् पथा मरुतः ययिं अचिध्वम्
वयः न १.८८,१; १५१ नः आपसत्।
वयः न ५,५९,७; ३०६ मरुतः श्रेणीः परि पप्तुः।
वयः न पक्षान् १,१६६,१०; १६७ मरुतः श्रियः अनु वि धिरे।
वयः न पित्र्यं सहः ८,२०,१३; ९४ येषां एकमित् नाम भुजे।
वराः इव ५,६०,४; ४५२ रैवतासः हिरण्यैः तन्वः पिपिश्रे।
वरुणम् इव ६,४८,१४; ३३० मायिनम्।
वरेयवः न मर्याः १०,७८ ४; ४१८ घृतप्रुषः।
वर्मण्वन्तः न योधाः १०,७८,३; ४१७ शिमीवन्तः।
वव्रासः न १,१६८,२; १८४ मरुतः स्वजाः स्वतवसः।
वातासः न १०,७८,२; ४१६ स्वयुजः सद्य ऊतयः च।
वातासः न १०,७८,३, ४१७ धुनयः जिगत्नवः।
वाश्रा इव १,३७ ८; २८ विद्युत् मिमाति।
वाश्रा इव २,३४,१५; २१३ सुमतिः आ जिगातु।
विथुरा इव १,८७,३ १४७ एषां अज्मेषु भूमिः प्ररेजते।
विथुरा इव १.१६८,६; १८८ संहितं च्यावयथ।
विदथ्या इव वाक् १,१६७,३; १७४ सभावती।
विद्युत् न दर्शता १,१६६ ९; १६६ रथेषु वः(तेजः)आ तस्थौ।
विद्युतः न वृष्टिभिः ७,५६,१३; ३५७ रुचानाः।
विप्रासः न १०.७८,१; ४१५ मन्मभिः स्वाध्यः मरुतः।
विष्णुम् न ६.४८,१४; ३३० सृप्रभोजसम्।
वृष्टिम् न विद्युतः १,३९,९; ४४ ऊतिभिः नः आ गन्त।
शंसः नरां न २,३४,६; २०४ नः सवनानि आ गन्तन।
शिशवः न हर्म्येष्ठाः ७,५६.१६; ३६० शुभ्राः।
शिशूलाः न सुमातरः १०,७८,६; ४२० क्रीळयः।

शुभंयवः न १०,७८,७; ४२१ अञ्जिभिः व्यश्वितन्।
शूराः इव १,८५,८; १३० जग्मयः।
शूराः इव ५ ५९,५; ३०४ प्रयुधः।
शोचिः न १,३९,१; ३६ मानम् परावतः प्र अस्यथ।
श्येनासः न पक्षिणः ८,२०,१०; ९१ नः हव्यानि आ गत।
श्येनासः न १०,७७,५; ४११ स्वयशसः रिशादसः।
श्रवस्यवः न १.८५,८; १३० मरुतः पृतनासु येमिरे।

सश्चीन् इव पूर्वान् ५,५३,१६; २४९ मरुतः अनु ह्वय।
सत्वानः न १.६४,२; १०९ घोरवर्पसः।
सातिः न १,१६८,७; १८९ वः रातिः अमवती।
साधारण्या इव १.१६७,४; १७५ यव्या परा मिमिक्षुः।
सिंहाः इव १.६४,८; ११५ प्रचेतसः नानदति।
सिंहाः न हेषक्रतवः ३,२६,५; २१५ स्वानिनः रुद्रियाः।
सिन्धवः न १०,७८,७; ४२१ मरुतः ययियः।
सुधिता इव बर्हणा १,१६६,६; १६३ क्रिविर्दती दिद्युत्।
सूरः न छन्दः ८,७,३६;३१ अग्निः पूर्व्यः जानि।
सूर्यः न योजनम् ५,५४ ५; २५४ तद्वीर्यं दीर्घं ततान।
सूर्यः न ५,५९,३; ३०२ रजसः विसर्जने चक्षुः।
सूर्याः इव १,६४,२; १०९ शुचयः।
सूर्याः इव १,१६७,५; १७६ विषितस्तुका विधतः रथं।
सूर्यस्य इव चक्षणम् ५,५५,४; २६८ दिदृक्षेण्यं वः महत्वम्।
सूर्यस्य इव रश्मयः ५,५५,३; २६७ विरोकिणः।
सोमासः न सुताः तृप्तांशवः १.१६८,३; १८५ पीतासः हृत्सु।
सोमाः न १०,७८,२; ४१६ सुशर्माणः।
स्तृभिः इव दिव्याः १,१६६,११; १६८ दूरेदृशः।
स्वर् न ५,५४,१५; २६४ नॄन् अभि ततनाम।

हंसासः आ नीळपृष्ठाः ७,५९,७; ३८९ मरुतः अपप्तन्।
हंसासः न स्वसराणि २,३४,५; २०३ मधोः मदाय।
हन्वा इव जिह्वया १,१६८,५; १८७ रमना कः रेजति।
हविष्मन्तः न यज्ञाः १०,७७,१; ४०७ मरुतः वि जानुषः।
हिताः इव १,१६६,३; १६० मयोभुवः।
होता इव ८,९६,६; ४०० इन्द्रः प्रातः अस्य मत्सति।

दैवत-संहितान्तर्गत

मरुद्देवता-मन्त्राणां सूची ।

अंसेषु व ऋष्टयः	२६०
अंसेष्वा मरुतः खादयो	३५७
अग्निर्न ये भ्राजसा	४१६
अग्निर्हि जानि पूर्व्य	८१
अग्निश्च यन्मरुतो	४५५
अग्निश्रियो मरुतो	२१५
अग्ने मरुद्भिः शुभ	४५६
अग्ने शर्धन्तमा गणं	२७५
अच्छ ऋषे मारुतं	२३०
अच्छा वद तना गिरा	३३
अच्युता चिद् वो	८६
अज्येष्ठासो अकनिष्ठास	४५३
अतः परिज्मन्ना गहि	४
अतीयाम निदस्तिरः	२४७
अत्यासो न ये मरुतः	३६०
अद्वारसृद् भवतु देव	४५७
अद्वेषो नो मरुतो	३२५
अध स्वनान्मरुतां	३०
अधा नरो न्योहते	२२७
अधीव यद् गिरीणां	५९
अनवद्यैरभिद्युभिः	३
अनु त्रितस्य युध्यतः	६९
अनेनो वो मरुतो	३४०
अपः समुद्राद् दिवं	४४३
अपामग्निस्तनूभिः	४६४
अपारो वो महिमा	३१३
अभि क्रन्द स्तनया	४६०
अभि स्वपूभिर्मिथो	३४७
अभ्रप्रुषो न वाचा	४०७
अभ्राजि शर्धो मरुतो	२५५
अमादेषां भियसा	३०१
अमाय वो मरुतो	८७
अरा इवेदचरमा	२९६
अर्हन्तो ये सुदानवो	२२१
अव स्वयुक्ता दिव	१८६
अश्वा इवेदरुषासः	३०४
अश्वासो न ये ज्येष्ठास	४१९
असामि हि प्रयज्यवः	४४
असाम्योजो बिभृथा	४५
असूत पृश्निर्महते	१९१
असौ या सेना	४३५
अस्ति सोमो अयं सुतः	३९८
अस्ति हि ष्मा मदाय	२०
अस्मे वीरो मरुतः	३६८
अस्य वीरस्य बर्हिषि	१३८
अस्य श्रोषन्त्वा भुवो	१३९
अहानि गृध्राः पर्या	१५४
आश्वगयावानो वहन्ति	८०
आ गन्ता मा रिषण्यत	८२
आ च नो बर्हिः	३८८
आदह स्वधामनु	१
आ नोऽवोभिमरुतो	१७३
आ नो ब्रह्माणि	२०४
आ नो मखस्य दावने	७१
आ नो रयिं मदच्युतं	५८
आपथयो विपथयो	२२६
आपो विद्युदभ्रं वर्ष	४६३
आभूषेण्यं वो मरुतो	२६८
आ यं नरः सुदानवो	२३९
आ यात मरुतो	२४१
आ ये तस्थुः पृषतीषु	४५०
आ ये रजांसि	१६१
आ ये विश्वा पार्थिवानि	४०३
आ रुक्मैरा युधा	२१२
आ रुद्रास इन्द्रवन्तः	२८४
आरे सा वः सुदानवो	१९६
आ विद्युन्मद्भिः	१५१
आ वो मक्षू तनाय	४१
आ वो यन्तूदवाहासो	११४
आ वो वहन्तु	११८
आ वो होता जोहवीति	३६१
आशामाशां वि द्योतता	४६२
आ सखायः सबर्दुघां	३२७
आ स्तुतासो मरुतो	३७६
आस्थापयन्त युवतिं	१७७
इन्द्रं दैवीर्विशो	४२७
इन्धन्वभिर्धेनुभी	२०३
इमा उ वः सुदानवो	६४
इमां मे मरुतो	५४
इमे तुरं मरुतो	३६३
इमे रध्रं चिन्मरुतो	३६४
इहेव शृण्व एषां	८
इहेह वः स्वतवसः	३९३
ईदृक्षास एतादृक्षास	४१५
ईळे अग्निं स्ववसं	४४९
ईशानकृतो धुनयो	११२
उक्षन्ते अश्वाँ अत्याँ	२०१
उग्रं व ओजः स्थिरा	३५१
उत वा यस्य वाजिनो	१३७
उत स्तुतासो मरुतो	३७५
उत स्म ते परुष्ण्याम्	१२५
उत स्य वाज्यरुषः	२८१
उतो न्वस्य जोषमाँ	४००
उत् तिष्ठ नूनमेषां	२७९
उत्समक्षितं व्यचन्ति	४४१
उदप्रुतो मरुतस्ताँ	४३९
उदीरयत मरुतः	४५९
उदीरयथा मरुतः	२६९
उदीरयन्त वायुभिः	४८

उदु त्ये अरुणप्सव ५१
उदु त्ये सूनवो गिरः ६५
उदु स्वानेभिरीरत ६१
उपयामगृहीतोऽसि ४२४
उपह्वरेषु यदचिध्वं १४६
उपो रथेषु पृषती ४१
उशना यत् परावत ७१
उषसां न केतवोऽध्वर ४२१
ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं १३२
ऋधक् सा वो मरुतो ३७३
ऋष्टयो वो मरुतो २८९
एतत् त्यन्न योजन १५५
एतानि धीरो निण्या ३४८
एतावतश्चिदेषां ६०
एष वः स्तोमो मरुत १७२,१८२,१९२
एष वः स्तोमो मरुतो १९४
एषा स्या वो मरुतो १५६
ऐतान् रथेषु तस्थुषः २३५
ओ षु घृष्विराधसो ३८७
ओ षु वृष्णः प्रयज्यून ७८
क ईं व्यक्ता नरः ३४५
कदत्विषन्त सूरयः ४०१
कदा गच्छाथ मरुत ७५
कद्ध नूनं कधप्रियः २१,७६
कद्धो अद्य महानां ४०२
कस्मा अद्य सुजाताय २४५
कृते चिदत्र मरुतो ३७४
के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा ३०८
को वेद जानमेषां २३४
को वेद नूनमेषां ३१५
को वोऽन्तर्मरुत १८७
को वो महान्ति महता ३०३
को वो वर्षिष्ठ आ ११
क्रीळं वः शर्धो मारुत ६
क्व नूनं कद् वो २२
क्व नूनं सुदानवो ६५
क्व वः सुम्ना नव्यांसि २३
क१वोऽश्वाः क्वा३भीशवः ३०९
क्व स्विदस्य रजसो १८८
गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः ३१६
गणास्त्वोप गायन्तु ४५८
गवामिव श्रियसे ३०२
गावश्चिद् घा समन्यवः १०२
गिरयश्चिन्नि जिहते ७९
गूहता गुह्यं तमो १४४
गृहमेधास आ गत ३१२
गोभिर्वाणो अज्यते ८९
गोमदश्वावद् रथवत् २९०
गोमातरो यच्छुभयन्ते १२५
गौर्धयति मरुतां ३९५
ग्रावाणो न सूरयः ४२०
घृषुं पावकं वनिनं १२९
चक्रत्यं मरुतः पृत्सु १२१
चित्रं तद् वो मरुतो २०८
चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे १११
चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र १९५
छन्दःस्तुभः कुभन्यव २२८
छन्दांसि यज्ञे मरुतः ४३१
जघने चोद एषां ३१०
जनूश्चिद् वो मरुतस्त्वे ३७८
जिह्मं नुनुद्रेऽवतं १३३
जोषद् यदीमसुर्या १७६
तं व इन्द्रं न सुक्रतुं ३३०
तं वः शर्धं मारुतं १९८
तं वः शर्धं रथानां २४३
तं वः शर्धं रथेशुभं २८३
तं वृधन्तं मारुतं ३४४
त इदुग्राः शवसा ३३९
त उक्षितासो महिमान १२४
त उग्रासो वृषण ९३
तत् सु नो विश्वे अर्य ३९७
तद् वः सुजाता १६९
तद् वीर्यं वो मरुतो २५४
तद् वो जामित्वं १७०
तद् वो यामि द्रविणं २६४
तन्न इन्द्रो वरुणो ३६९
तं नाकमर्यो २६१
तन्नु वोचाम रभसाय १५८
तं नो दात मरुतो २०५
तदु नूनं तविषीं २९२
तव श्रिये मरुतो ४४८
ततृदानाः सिन्धवः २४०
तां आ रुद्रस्य मीळ्हुषो ३८१
तां इयानो महि २१२
तान् वन्दस्व मरुतस्तां ९५
तान् वो महो मरुत २०९
तिग्ममनीकं विदितं ४४३
तुग्रस्कन्दस्य नु विशः १९७
ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास ३०५
तेऽरुणेभिर्वरमा १५२
तेऽवर्धन्त स्वतवसो १२९
ते क्षोणीभिररुणेभिः २११
ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास १०९
ते दशग्वाः प्रथमा २२०
ते नो वसूनि काम्या ३१७
ते म आहुर्य २३६
ते रुद्रासः सुमखा ३२४
ते स्यन्द्रासो नोक्षणो २२९
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ४१४
ते हि स्थिरस्य २१८
त्यं चिद् घा दीर्घं १६
त्यं नु मारुतं गणं ४०६
त्यान् नु पूतदक्षसो ४०४
त्यान् नु ये वि रोदसी ४०५
त्रायन्तामिमं देवाः ४३७
त्रीणि सरांसि पृश्नयो ५५
त्वष्टा यद् वज्रं १३१
त्विषीमन्तो अध्वरस्येव ३४३
त्वेषं गणं तवसं २०३
त्वेषं शर्धो न मारुतं ३३१
दशस्यन्तो नो मरुतो ३६१
दिवा चित् तमः २९
देवयन्तो यथा मति २
द्यावो न स्तृभिश्चितयन्त २००
धारावरा मरुतो १९९
धूनुथ द्यां पर्वतान् १८६
नकिर्ह्येषां जनूंषि ३४६

न पर्वता न नद्यो २७१
न य ईषन्ते जनुषोऽया ३३७
न स जीयते मरुतो २५६
नहि व ऊतिः पृतनासु ३८६
नहि वश्चरमं चन ३८५
नहि वः शत्रुर्विविदे ३९
नहि ष्म यद्ध वः ६६
नहीं नु वो मरुतो १८०
नास्य वर्ता न तरुता ३४१
निचेतारो हि मरुतो ३७१
नित्यं न सूनुं मधु १५९
नि यद् यामाय वो ५०
नियुत्वन्तो ग्रामजितो २५७
नि ये रिणन्त्योजसा २७८
नि वो यामाय मानुषो १२
नू मन्वान एषां २३१
नू ष्ठिरं मरुतो १२२
नैतावदन्ये मरुतो ३७२

पयस्वतीः कृणुथाप ४३८
पयो धेनूनां रसं ४४२
परा वीरास एतन ३११
परा शुभ्रा अयासो १७५
परा ह यत् स्थिरं ३८
पर्वतश्चिन्महि वृद्धो ४५१
पान्ति मित्रावरुणा १७९
पितुः प्रत्नस्य १४९
पिन्वन्त्यपो मरुतः ११३
पिबन्ति मित्रो अर्यमा ३९९
पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः २८८
पूर्वीभिर्हि ददाशिम १४०
पृक्षे ता विश्वा भुवना २०२
पृषदश्वा मरुतः ४१८
प्रघासिनो हवामहे ४२३
प्र चित्रमर्कं गृणते ३४२
प्र तं विविक्म वक्म्यो १७८
प्रति व एना १९३
प्रति वो वृषदञ्जयो ९०
प्रति ष्टोभन्ति सिन्धवः १९०
प्रत्वक्षसः प्रतवसो १४५
प्रथिष्ट यामन् पृथिवी २९८
प्र नू स मर्तः १२०
प्र बुध्न्या व ईरते ३५८
प्रयज्यवो मरुतो २६५
प्र यदित्था परावतः ३६
प्र यद् रथेषु पृषती १२७
प्र यद् वस्त्रिष्टुभमिषं ४६
प्र यद् वहध्वे मरुतः ४११
प्र यन्तु वाजास्तविषी २१४
प्र यात शीभमाशुभिः १९
प्र ये जाता महिना ३१९
प्र ये दिवः पृथिव्या ४०९
प्र ये दिवो बृहतः ३२०
प्र ये मे बन्ध्वेषे २३२
प्र ये शुम्भन्ते जनयो १२३
प्रवत्वतीयं पृथिवी २५८
प्र वः शर्धाय घृष्वये ९
प्र वः स्पळक्रन्त्सुविताय ३००
प्र वेपयन्ति पर्वतान् ४०
प्र वो मरुतस्तविषा २५१
प्र वो महे मतयो ३१८
प्र शंसा गोष्वघ्न्यं १०
प्र शर्धाय मारुताय २५०
प्र श्यावाश्व धृष्णुया २१७
प्र साकमुक्षे अर्चता ३७७
प्र सा वाचि सुष्टुतिः ३८२
प्र स्कम्भदेष्णा १६४
प्रिया वो नाम हुवे ३५४
प्रैषामज्मेषु विथुरेव १४७
बृहद् वयो मघवद्भ्यो ३७९
भरद्वाजायाव धुक्षत ३२९
भूरि चक्र मरुतः ३६७
भूरीणि भद्रा नर्येषु १६७

मक्षू न येषु दोहसे ३३८
मध्वो वो नाम मारुतं ३७०
मरुतः पर्वतानाम् ४३६
मरुतः पिबत ऋतुना ५
मरुतां मन्वे अधि मे ४४०
मरुतो मारुतस्य न १०४
मरुतो यद्ध वो दिवः ५६
मरुतो यद्ध वो बलं १७
मरुतो यस्य हि क्षये १३५
मरुतो वीळुपाणिभि ३१
मरुत्सु वो दधीमहि २२०
मर्तश्चिद् वो नृतवो १०३
महान्तो मह्ना १६८
महिषासो मायिनः ११४
मा वो दात्रान्मरुतो ३६५
मा वो मृगो न यवसे २५
मा वो रसानितभा २४२
मिमातु द्यौरदितिः ३०७
मिमीहि श्लोकमास्ये ३४
मिम्यक्ष येषु सुधिता १७४
मीळ्हुष्मतीव पृथिवी २७७
मृळत नो मरुतो २७३
मो षु णः परापरा २६
मो षु वो अस्मदभि १५७
य ईं वहन्त आशुभिः ३११
य उदृचि यज्ञे अध्वरेष्ठा ४१३
य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः २२९
यज्ञायज्ञा वः समना १८३
यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो १३६
यत् त्वेषयामा १६१
यत् पूर्व्यं मरुतो २७२
यत् प्रायासिष्ट पृषती २९७
यत् सिन्धौ यदसिक्न्यां १०६
यथा चिन्मन्यसे हृदा २७६
यथा रुद्रस्य सूनवो ९८
यदङ्ग तविषीयवो ४७
यदश्वान् धूर्षु २७०
यदि स्तुतस्य मरुतो ३५९
यदीदिदं मरुतो ४४५
यदी वहन्त्याशवो ४२९
यदुत्तमे मरुतो ४५४
यदेषां पृषती रथे ७३
यद् युञ्जते मरुतो २०६
यद् यूयं पृश्निमातरो २४

यद्‌ यान्ति मरुतः १८
यं त्रायध्व इदमिदं ३८३
यन्मरुतः सभरसः ३५९
यया रध्रं पारयथा २१३
यस्मा ऊमासो अमृता १६०
यस्य वा यूयं प्रति ९७
यस्या देवा उपस्थे ३९६
याभिः सिन्धुमवथ १०५
यामं येष्ठाः शुभा ३५०
या वः शर्म शशमानाय १३४
या शर्धाय मारुताय ३१८
युङ्ध्वं ह्यरुषी रथे २८०
युवानो रुद्रा अजरा ११०
युवा स मारुतो गण ३१४
युष्माँ उ नक्तमूतये ५१
युष्माकं देवा अवसा ३८४
युष्माकं बुध्ने अपां ४१०
युष्माकं स्मा रथाँ २३८
युष्मादत्तस्य मरुतो २६२
युष्मेषितो मरुतो ४३
युष्मोतो विप्रो मरुतः ३८०
यून ऊ षु नविष्ठया १००
यूयं रयिं मरुतः २६३
यूयं राजानमिर्यं २९५
यूयं हि ष्ठा सुदानवो ५७
यूयं तत् सत्यशवस १४३
यूयं धूर्षु प्रयुजो ४११
यूयं न उग्रा मरुतः १६३
यूयं नः प्रवतो ४३०
यूयमस्मान् नयत २७४
यूयमुग्रा मरुत ईदृशे ४३४
यूयमुग्रा मरुतः पृश्नि ४३३
यूयं मर्तं विपन्यवः ३१६
ये अग्नयो न शोशुच ३३५
ये अग्निषु ये वाशीषु २३७
ये कीलालेन तर्पयन्ति ४४४
ये चार्हन्ति मरुतः ९९
ये द्रप्सा इव रोदसी ६१
येन तोकाय तनयाय २४६
येन दीर्घं मरुतः १७१
येनाव तुर्वशं यदुं ६३
ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः ७
ये वावृधन्त पार्थिवा २२३
येषामज्मेषु पृथिवी १३
येषामर्णो न सप्रथो ९४
येषां श्रियाधि रोदसी ३१२
यो नो मरुतो अभि २९०
यो नो मरुतो वृकताति २०७
रथं नु मारुतं वयं २८२
रथानां न येऽराः ४१४
रुद्रस्य ये मीळ्हुषः ३२६
रोदसी आ वदता ११६
वन्दस्व मारुतं गणं ३१
वपन्ति मरुतो मिहं ४९
वपुर्नु तच्चिकितुषे ३३४
वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा १८१
वयो न ये श्रेणीः ३०६
वरा इवेद्‌ रैवतासो ४५२
वभ्रासो न ये स्वजाः १८४
वातत्विषो मरुतो २८७
वातासो न ये धुनयो ४१७
वाश्री वाभस्य धूतयः ३३२
वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो २८५
वाश्रेव विद्युन्मिमाति २८
वि तिष्ठध्वं मरुतो ३९४
विद्मा हि रुद्रियाणां ८४
विद्युद्धस्ता अभिद्यवः ७०
विद्युन्महसो नरो १५२
वि द्वीपानि पापतन् ८५
विप्रासो न मन्मभिः ४१५
वि ये भ्राजन्ते सुमखास १२६
वि वृत्रं पर्वशो ययुर्वि ६८
विश्वं पश्यन्तो बिभृथा १०७
विश्ववेदसो रयिभिः ११७
विश्वानि भद्रा मरुतो १६६
वीळुपविभिर्मरुत ८३
वृषणश्वेन मरुतो ९१
वृष्णे शर्धाय सुमखाय १०८
व्यक्तून्‌ रुद्रा व्यहानि २५३
व्रातंव्रातं गणंगणं २१६
शतभुजिभिस्तमभि १६५
शर्धंशर्धं व एषां २४४
शर्धो मारुतमुच्छंस २२५
शशमानस्य वा नरः १४२
शुची वो हव्या मरुतः ३५६
शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी ३५२
शूरा इवेद्‌ युयुधयो १३०
श्रियसे कं भानुभिः १५०
श्रिये कं वो अधि १५३
श्रिये मर्यासो अञ्जीँ ४०८
सं यद्धनन्त मन्युभिः ३६६
संवत्सरीणा मरुतः ४४७
स वोऽवन्तु सुदानव ४६१
स चक्रमे महतो ३२१
सत्यं त्वेषा अमवन्तो २७
सद्यश्चिद्‌ यस्य चर्कृतिः ३३२
सनेम्यस्मद् युयोत ३५२
सप्त मे सप्त शाकिन २३३
समानमञ्ज्येषां ९२
समु त्ये महतीरपः ६७
सम्मिश्लिञ्‌ तन्वाः शुम्भमाना ३८९
स हि स्वसृत् १४८
सहो षु णो वज्रहस्तैः ७३
साकं जाताः सुभ्वः २६५
सातिर्न वोऽमवती १८९
सान्तपना इदं हविः ३९१
सा विट् सुवीरा मरुद्भिः ३२९
साहा ये सन्ति १०१
सिंहा इव नानदति ११५
सुदेवः समहासति २४८
सुभगः स प्रयज्यवो १४१
सुभगः स व ऊति ९६
सुमारुतं न्वो देवाः कृणुता ४२२
सुषूदत मृडत ४३१
सुषोमे शर्यणावति ७४
सृजन्ति रश्मिमोजसा ५३

सोमासो न ये सुता	१८५	स्थिरा वः सन्त्वायुधा	३७	स्वयं दधिध्वे तविषीं	२६६
स्तुहि भोजान्स्तुवतो	२४९	स्वतवाँश्च प्रघासी च	४१६	स्वायुधास इष्मिणः	३५५
स्थिरं हि जानमेषां	१४	स्वधामनु श्रियं नरो	८८	हये नरो मरुतो	२९१,२९९
स्थिरा वः सन्तु नेमयो	३२	स्वनो न वोऽमवान्	३२२	हिरण्ययेभिः पविभिः	११८

दैवत-संहितान्तर्गत-मरुद्देवतायाः

गुणबोधक–पदानां सूची।

['मरुतः' इति बहुत्वम्, 'मरुतां गणः' इति एकवचनम्। अतः गुणबोधकपदानि उभयवचनान्तानि संहितायां संदृश्यन्ते।]

अकनिष्ठासः ५,५९,६; ३०५। ६०,५; ४१३
अकवाः ५,५८,५; २९६
अक्राः १०,७७,२; ४०८
अखिद्रयामानः १,३८,११; ३१
अगृभीतशोचिषः ५,५४,५; २५४
अग्निजिह्वाः वा० य० २५,२०; ४९८
अग्निश्रियः ३,२६,५; २१५
अघ्न्यः १,३७,५; १०
अचरमाः ५,५८,५; २९६
अच्युताचित्-ओजसा प्रच्यावयन्तः १,८५,४; १२६
अजगराः अथ० ४,१५,७,९; ४६१,४६३
अजराः १,६४,३; ११०
अज्येष्ठाः ५,५९,६; ३०५। ६०,५; ४१३
अञ्जिमन्तः ५,५७,५; २८८
अद्राभ्याः २,३४,१०; २०८। ३,२६,४; २१४
अद्भुतैनसः ५,८७,७; ३२४
अद्रिं रंहयन्तः १,८५,५; १२७
अद्वेषः ५,८७,८; ३२५
अधिपतयः पर्वतानाम् अथ० ५,२४,६; ४३६
अध्रष्टाः-ष्टासः ५,८७,२; ३१९। ६,६६,१०; ३४३
अध्रिगावः १,६४,३; ११०
अध्वरश्रियः १०,७८,७; ४२१
अनन्तशुष्माः १,६४,१०; ११७
अनर्वा १,३७,१; ६। ६,४८,१५; ३३१
अनवद्याः १,६,८; ३। ७,५७,५; ३७४
अनवभ्रराधसः १,१६६,७; १६४। २,३४,४; २०२।
 ३,२६,६; २१६। ५,५७,५; २८८
अनानताः १,८७,१; १४५
अनीकं तिग्मम् अथ० ४,२७,७; ४४६
अनुपथाः ५,५२,१०; २२६
अनुवर्त्मानः इन्द्रं दैवीः विशः वा० य० १७,८६; ४२७
अनेद्यः १,८७,४; १४८। ५,६१,१३; ३१४
अन्तरिक्षेण पततः ८,७,३५; ८०
अन्तस्पथाः ५,५२,१०; २२६
अप्रतिष्कु-स्कु-तः ५,६१,१३; ३१४
अप्रया मुहुः ५,५४,३; २५२
अभिद्युः-द्यवः १,६,८; ३। ८,७,२५; ७०। १०,७७,३; ४०९। ७८,४; ४१८
अभिस्वर्तारः १०,७८,४; ४१८
अभीरवः १,८७,६; १५०
अभोग्घनः १,६४,३; ११०
अमध्यमासः ५,५९,६; ३०५
अमर्त्याः १,१६८,४; १८६
अमवन्तः १,३८,७; २७। ८,२०,७; ८८
अमिताः ५,५८,२; २९३
अमृताः-तासः १,१६६,३,१३; १६०,१७०। ५,५७,८; २९१। ५८,८; २९९
अयासः १,६४,११; ११८। १६७,४; १७५। १६८,९; १९१। ७,५८,२; ३७८
अयोदंष्ट्राः १,८८,५; १५५

अराजिनः ८,७,२३; ६८
अरिष्टग्रामाः १,१६६,६; १६३
अरुणप्सवः ८,७,७; ५२
अरुणाश्वाः ५,५७,४; २८७

मरुतां अश्वाः।

अजिरा ५,५६,६; २८०
अरुणाः १,८२,२; १५२
अरुषः ५,५६,७; २८१
अरुषी ५,५५,६; २७०
आशवः २,३४,३; २०१ । ५,६१,११; ३१२
एतासः १,१६६,४; १६१
तुविष्वणिः ५,५६,७; २८१
दर्शतः ५,५६,७; २८१
नियुतः ५,५४,८; २५७
पिशंगा १,८८,२; १५२
पृषती: १,३९,६; ४१ । ५,५५,६; २७० । ५७,३; २८६ । ५८,६; २९७
प्रष्टिः १,८५,४-५; १२६,१२७
रथतुरः १,८८,२; १५२
रोहितः १,३९,६; ४१ । ५,५६,६; २८०
वहिष्ठाः ५,५६,६; २८०
वाताः ५,५८,७; २९८
सुयमाः ५,५५,१; २६५
स्वयतासः १,१६६,४; १६१
हरी ५,५६,६; २८०

अरुषासः ५,५९,५; ३०४
अरेणवः १,१६८,४; १८६
अरेपसः १,६४,२; १०९। ५,५३,३; २३६। ५७,४; २८७। ६१,१४; ३१९। १०,७८,१; ४१५
अर्काः ५,५७,५; २८८
अर्क अर्चन्तः १,८५,२; १२४
अर्का १,३८,१५; ३५
अर्चत्रयः ६,६६,१०; ३४३
अर्चिनः तविषीभिः २,३४,१; १९९
अर्यः ५,५४,१२; २६१
अर्हन्तः ५,५२,५; २२१
अलातृणासः १,१६६,७; १६४
अविथुराः १,८७,१; १४५
अश्मदिद्यवः ५,५४,३; २५२
अश्वयुजः ५,५४,२; २५१
असश्चद्विषः ८,२०,२४; १०५
असामिशवसः ५,५२,५; २२१
असुराः १,६४,२; १०९
अस्तारः १,६४,१०; ११७
अस्रेधन्तः ७,५९,६; ३८८
अहिभानवः १,१७२,१; १९५
अहिमन्यवः शवसा १,६४,८-९; ११५,११६
अह्रुताप्सवः ८,२०,७; ८८
आदित्यासः १०,७७,२; ४०८
आपथयः ५,५२,१०; २२६
आपयः ५,५३,२; २३५
आयुधः ५,६०,८; ४१६
आशवः १०,७८,५; ४१९ । साम० ३५६, ४२९
आशवः ५,५६,२; २७६
आश्वश्वाः ५,५८,१; २९७
आसभिः स्वरितारः १,१६६,११; १६८
इनासः ५,५४,८; २५७
इन्द्रवन्तः ५,५७,१; २८४
इन्द्रियं जनयन्तः १,८५,२; १२४
इषुमन्तः ५,५७,२; २८५
इष्मिणः १,८७,६; १५० । ५,८७,५; ३२२ । ७,५६, ११; ३५५
ईड्क्षासः वा० य० १७,८४; ४२५
ईशानः--नाः १,८७,४; १४८ । अथ० ४,२७,४-५; ४४३,४४४
ईशानकृतः १,६४,५; ११२
उक्षणः १,६४,२; १०९
उक्षमाणाः तन्वम् ६,६६,४; ३३७
उक्षितासः १,८५,२; १२४
उक्षिताः साकम् ५,५५,३; २६७
उग्राः ग्रासः ८,२०,१२; ९३ । १,१६६,६,८; १६३,१६५ । ५,५७,३; २८६ । ६,६६,५-६; ३३८,३३९ । ७,५७,१; ३७० । अथ० १३,१,३; ४३३ । ३,१,२; ४३४
उग्रं पृतनासु अथ० ४,२७,७; ४४६
उग्राः ओजोभिः ७,५६,६; ३५०
उग्रवाहनः ८,२०,१२; ९३
उज्जेषी वा० य० १७,८५; ४२६
उत्साः अथ० ४,१५,७,९; ४६१,४६३
उदन्यवः ५,५४,२; २५१
उदप्रुतः अथ० ६,२२,३; ४३९

उद्वाहासः ५,५८,३; २९४
उद्रोजसः ५,५४,३; २५२
उक्षितः ५,५९,६; ३०५
उपमासः ५,५८,५; २९६
उपशिश्रियाणाः वक्षःसु रुक्मा ७,५६,१३; ३५७
उरवः ५,५७,४; २८७
उरुक्षयाः अथ० ७,७७,३; ४४७

ऊमासः १,१६६,३; १६०

ऋक्काणः १,८७,५; १४९ । ५,६०,८; ४५६
ऋजिषी-षिणः १,६४,१२; ११९ । ८७,१, १४५ ।
२,३४,१; १९९
ऋञ्जतः ५,८७,५; ३२२
ऋणयावा १,८७,४; १४८
ऋतजाताः ५,६१,१४; ३१५
ऋतज्ञाः ५,५७,८; २९१ । ५८,८; २९९
ऋता-त-थवः ५,५४,१२; २६१
ऋभुक्षणः ८,७,९,१२; ५४,५७ । २०,२; ८३
ऋभ्वसम् ५,५२,८; २२४
ऋष्टिमन्तः ५,५७.२; २८५ । ६०,३; ४५१
ऋष्टिविद्युतः १,१६८.५; १८७ । ५,५२,१३; २२९
ऋष्वाः-ष्वासः १,६४,२; १०९ । ५,५२,१३; २२९

एताः १०,७७,२; ४०८

एतादक्षासः वा० य० १७,८४; ४२५
एवयायानः २,३४,११; २०९

ककुहाः २,३४,११; २०९

कधप्रियः १,३८,१; २१ । ८,७,३१; ७६
कवन्धिनः ५,५४,८; २५७
कवयः ५,५२,१३; २२९ । ५७,८; २९१ । ५८,३,८;
२९४,२९९ । ७,५,११; ३९३ । अथ०४,२७,३; ४४२
कामिनः ५,५३,१६; २४९ । ७,५९,३; ३८५
काम्यः १,६,८; ३
कुभन्यवः ५,५२,१२; २२८
क्रीडी वा० य० १७,८५; ४२६
क्रीळम् [शर्धः] १,३७,१,५; ६,१०
क्रीळयः १,८७,३; १४७ । १०,७८,६; ४२०
क्षपः जिन्वन्तः १,६४,८; ११५

खादिनः २,३४,२; २००

खादिहस्ताः ५,५८,२; २९३

गणः-णाः १,६,८;३ । ८७,४;१४८ । ५,५६,१;२७५ ।
५,५८,२; २९३ । ७,५८,१; ३७७
गणाः मरुताम् अथ० ४.१३.४; ४३७
गणाः मारुताः अथ० ४,१५,४; ४५८
गणः मारुतः १,३८,१५;३५ । ६४,१२;११९ । ५,५३,१०;
२४३ । ५,६१,१३; ३१४ । ८,९४,१२; ४०६
गणश्रियः १,६४,९; ११६ । ५,६०,८; ४५६
गन्तारः यज्ञम् ३,२६,६; २१६
गिरः सूनवः १,३७,१०; १५
गिरिष्ठाः ८,९४.१२; ४०६
गृणानाः ५,५५,१०; २७४ । ५९,८; ३०७
गृहमेधासः ७,५९,१०; ३९२
गृहमेधी वा०य० १७,८५; ४२६
गोबन्धवः ८,२०,८; ८९
गोमातरः १,८५,३; १२५

मरुतां माता।

अनपस्फुरा ६,४८,११; ३२७
एवयावरी ६ ४८,१२; ३२८
गौः ८.९४,१; ३९५
धेनुः ६,४८,११; ३२७
पृश्निः ५,५२,१६; २३२
यस्या उपस्थं विश्वे देवा व्रतं धारयन्ते ८,९४,२;३९६
युक्ता ८,९४,१; ३९५
वह्निः रथानाम् ८,९४,१; ३९५
विश्वदोहाः ६,४८,१३; ३२९
विश्वभोजाः ६,४८,१३; ३२९
श्रवस्युः ८,९४,१; ३९५
सबर्दुघा ६,४८,११; ३२७
सुदुघा ५,६०,१; ४४९
सूर्यामासा दृशे कम् ८,९४,२, ३९६

गोषु अघ्न्यम् [शर्धः] १,३७,५; १०

घर्मस्तुभ् ५,५४,१; २५०

घृतप्रुषः १०,७८,४; ४१८
घृषुः १.६४,१२; ११९
घृष्वयः १,३७,४; ९ । ८५,१; १२३ । १६६,२; १५९
घृष्विराधसः ७,५९,५; ३८७
घोराः १,१६७,४; १७५
घोरवर्पसः १,६४,२; १०९
घोषिणः अथ० ४,१५,४; ४५८

चक्राणाः वृष्णि पौंस्यम् ८,७,२३; ६८
चन्द्राः ८,२०,२०, १०१
चारवः ५,५७,३, ३०१
चित्राः ८,७,७; ५१
चित्रभानवः १,६४,७, ११४ । ८५,११; १३३
चित्रवाजाः ८,७,३३, ७८
छन्दस्तुभः ५,५२,१२; २२८
जग्मयः १,८५,८; १३०
जग्मयः विदथेषु वा० य० २५,२०; ४२८
जनः दैव्यः २,३०,११; १९८
जाताः साकम् ५,५५,३, २६७
जिगत्नवः १०,७८,३,५; ४१७,४१९
जिन्वन्तः १,६४,८; ११५
जीरदानवः २,३४,४; २०२ । ५,५३,५; २३८
जुषाणाः मनसा १,१७१,२, १९४
जुष्टतमासः १,८७,१; १४५
ज्येष्ठाः-ष्ठासः १०,७८,२,५, ४१६,४१९
ततृदानाः ५,५३,७; २४०
तवसः १,६४,१२; ११९ । १६६,८; १६५ । ५,५८,२; २९३ । ६०,४, ४५२
तविषीभिः आवृताः १,८७,४; १४८
तविषीभिः [तृतीया] ३,२६,४; २१४
तविषीमान् ५,५८,१; २९२
तविषीयवः ८,७,२; ४७
तस्थिवांसः रथेषु ५,५३,२, २३५
तिग्मं अनीकम् अथ० ४,२७,७; ४४६
तुरः ६,६६,९; ३४२
तुरासः १,१६६,१४; १७१ । १७१,१; १९३ । ६,४८,१२; ३२० । ७,५६,१०; ३५४ । ५८,५; ३८१
तुविजाताः १,१६८,४; १८६
तुविद्युम्नाः ५,८७,७; ३१४
तुविमन्यवः ७,५८,२; ३७८
तुविराधसः ५,५८,२; २९३
तुविष्मान् गणः ७,५६,७; ३५१
तुविष्मान् दैव्यस्य धाम्नः ७,५८,१; ३७७
तुविष्वणिः स्वनिः ६,४८,१५; ३३१
तुवी-वि-मघासः ५,५७,८; २९१ । ५८,८; २९९
तृषुच्यवसः ६,६६,१०, ३४३
त्रातारः ७,५६,२२; ३६६
त्रिष-स-हासः अथ० १३,१,३; ४३३
त्विषीमन्तः ६,६६,१०; ३४३
त्वेषाः १,३८,७,१५; २७,३५ । ८,२०,७; ८८ । ६,४८, १५; ३३१
त्वेषः ५,५३,१०; २४३ । ५८,२; २९३
त्वेषद्युम्नाः १,३७,४; ९
त्वेषयामाः १,१६६,५; १६२
त्वेषरथः ५,६१,१३; ३१४
त्वेषसंदृशः ५,५७,५; २८८
दधानाः नाम यज्ञियम् १,६,४; १
दविध्वतः २,३४,३; २०१
दशग्वाः २,३४,१२; २१०
दशस्यन्तः ७,५६,१७; ३६१
दस्मवर्चसः ८,९४,२; ४०१
दस्माः ५,५२,५; २६९
दातिवारः ५,५८,२, २९३
दिवः नरः ५,५४,१०, २५९
दिवः पुत्रासः १०,७७,२; ४०८
दुध्रकृतः १,६४,११; ११८
दुर्धर्तवः ५,८७,९; ३१६
दुर्मदाः १,३९,५; ४०
दुहन्तः अक्षितं उत्सम् ८,७,१६; ६१
दूरेदृशः १,१६६,११; १६८ । ५,५९,२; ३०१
देवाः-वासः १,३९,५; ४० । ८,७,२७; ७२ । १,१७१,२; १९४ । ५,५२,१५; २३१ । ७,५९,१-२; ३८३,३८४ । ८,९४,८, ४०२ । १०,७८,८; ४३१ । अथ० ४,१३,४; ४३७ । २७,६; ४४५
दैव्यः जनः २,३०,११; १९८
द्युम्नश्रवसः ५,५४,२, २५०
द्रप्सिनः १,९४,२; १०९
धमन्तः भूमिम् २,३४,१; १९९
धमन्तः वाणम् १,८५,१०, १३२
धारावराः २,३४,१; १९९
धियावसुः १,६४,१५; १२२
धीराः विदथेषु ३,२६,६; २१६
धुनिः-नयः ८,२०,१४; ९५ । १,६४,५; ११२ । ८७,३; १४७ । ६,६६,१०; ३४३ । १०,७८,३; ४१७ । ५,६०,७; ४५५
धुनिव्रतः ५,५८,२; २९३ । ८७,१; ३१८
धूतयः १,३७,१,१०; ३६,४५ । ६४,५; ११२ । ८७,३; १४७ । १६८,२८; १८४ । ५,५४,४; २५३ । ६१,१४; ३१५ । ६,४८,२०; ३३१ । ७,५८,४; ३८०

धूतयः दिवश्च ग्मश्च १,३७,६; ११
धूर्षदः २,३४,४, २०२
धृषद्विनः ५,५२,२; २१८
धृष्णुः ७,५६,८; ३५२
धृष्णवः ओजसा ५,५२,१४; २३०
धृष्णुषेणाः ६,६६,६; ३३९
धृष्णवोजसः २,३४,१; १९०.
ध्रुवच्युतः १,६४,११; ११८
नमयिष्णवः ८,२०,१; ८२
नरः १,३९,३; ३८ । ८,२०,१०,१६; ९१, ९७ । १,६४, १०; ११७ । ८६,८; १४२ । ५,५२,५,११; २२१, २२७ । ५३,३,६,१५; २३६,२३९,२४८ । ५४,३; २५२ । ५७,८, २९१ । ५८,२; २९३ । ५९,२-३; ३०१,३०२ । ७,५६,१, ३४५ । ५७,६; ३७५ । ५९,४; ३८६; अथ० ६,२२,२; ४३८
नवेदसः ५,५१,८; २७९
नव्यसी ५,५८,१; २९२
निचेतारः गृणन्तम् ७,५७,२; ३७१
निमेघमानाः अत्येन पाजसा २,३४,१३; २११
नियुत्वन्तः ५,५४,८; २५७
निरुरुक्रमः ५,८७,४; ३११
निषङ्गिणः ५,५७,२; २८१
नृतमासः १,८७,१; १४५
नृतवः ८,२०,२२; १०३
नृषा·सा·चः १,६४,९; ११६
पनस्युः-स्यवः १,३८,१५; ३५ । १०,४७,३; ४०९
पयोधाः ७,५६,१६; ३६०
पयोवृधः १,६४,११; ११८
पराः १,१६७,४; १७५
परिजमन् १,६,९; ४
परिप्रयः १,६४,५; ११२ । ५,५४,२, २५१
परिप्रुषः १०,७७.५; ४११
परिष्टुभः १,१६६,११; १६८
पर्वतानां अधिपतयः अथ० ५,२४,६; ४३६
पर्वतच्युत् ५,५४,१; २५०
पाजस्वन्तः १०,७७,३; ४०९
पावकाः-कासः ८,२०,१९; १०० । १,६४,२,१२; १०९,११९ ७,५७,५; ३७४ । ५,६०,८; ४५६
पारावताः ५,५२,११; २२७
पिता रुद्रः एषाम् ५,६०,५; ४५३
पिपीषवः ७,५९,४; ३८६
पिप्रियाणाः वीतये ७,५७,२; ३७१
पिबन्तः मदिरं मधु साम० ३५६; ४२९
पिशङ्गाश्वाः ५,५७.४; २८७
पिशानाः ७,५७,३; ३७२
पुनानाः अवद्यानि अंतः ६,६६,४; ३३७
पुरीषिणः ५,५५,५; २६९
पुरुद्रप्साः ५,५७,५; २८८
पुरुश्च-च-न्द्राः ५,६१,१६; ३१७
पुरुस्पृहः ८,२०,२; ८३
पूतदक्षसः ८,९४,७,१०; ४०१,४०४
पूषा ६,४८,१५, ३३१
पृश्निमातरः १,३८,४; २४ । ८,७,३,१७; ४८,६२ । १,८५,२; १२४ । ५,५७,२-३; २८५-२८६ । ५९ ६; ३०५ । वा० य० २५,२०; ४२८ । अथ० ४,२७,२; ४४१ । १३,१,३; ४३३
पृश्नेः पुत्राः ५,५८,५; २९६
पृषदश्वाः १,८७,४; १४८ । २,३४,४; २०२ । ३,२६,६; २१६ । वा०य० २५,२०; ४२८
पृष्ठयज्वा ५,५४.१; २५०
प्रक्रीळिनः ७,५६,१६; ३६०
प्रघासी-सिनः वा०य० ३,४४; ४१३ । १७,८५; ४१६
प्रच्यावयन्तः अच्युता १,८५,४; १२६
प्रचेतसः १,३९,९; ४४ । ६४,८; ११५
प्रणेतारः ५,६१,१५, ३१६
प्रणेतारः यजमानस्य मन्म ७,५७,२; ३७१
प्रतवसः १,८७,१; १०५
प्रतिसदृक्षासः वा०य० १७,८४; ४१५
प्रत्वक्षसः १,८७,१; १०५ । ५,५७,४; २८७
प्रथमाः २,३४,१२; २१०
प्रयज्युः-ज्यवः १,३९,९; ४४ । ८,७,३३; ७८ । १,८६,७; १४१ । ५,५५,१, २६५ । ८७,१; ३१८ । ६,४८,२०; ३३२ । ७,५४,१४; ३५८
प्रयन्तः ५,५४.९; २५८
प्रयुधः ५,५९,५; ३०४
प्रसत्तः नमोभिः इह ५,६०,१; ४४९
प्रसितासः १०,७७,५, ४११
प्रस्थावानः ८,२०,१; ८२
बाह्वोजसः ८,२०,६; ८७
बिभ्रतः मधु १,१६६,२; १५९

बृहदुक्षमाणाः ५,५७,८; २९१ । ५८,८; २९९
बृहद्गिरयः ५,५७,८; २९१ । ५८,८; २९९
ब्रह्मणस्पतिः १,३८,१३; ३३
भद्रजानयः ५,६१,४; ३११
भन्दद्दिष्टिः ५,८७,१; ३१८
भीमाः० ... मासः २,३४,१; १९९ । ७,५८,२; ३७८
भीमसंदृशः ५,५६,२; २७६
भूमिं धमन्तः २,३४,१; १९९
भोजाः ५,५३,१६; २४९
भ्राजमानाः साम० ३५६; ४१९
भ्राजजन्मानः ६,६६,१०; ३४३
भ्राजदृष्टयः १,६४,११; ११८ । ८७,३; १४७ । १६८,४; १८६ । २,३४,५; २०३ । ५,५५,१; २६५ । १०,७८, ७; ४११
भ्रातरः ५,६०,५; ४५३
मखाः १,६४,११; ११८
मघवानः ८,९४,१; ३९५
मत्सराः अथ० ७,७७,३; ४४७
मधु बिभ्रतः १,१६६,२; १५९
मनवः वा० य० ९५,२०; ४१८
मनीषिणः ५,५७,२; २८५
मनोजुवः १,८५,४; १२६
मन्दसानाः ५,६०,७; ४५१
मन्द्राः १,१६६,११; १६८
मन्द्रः [अर्यमा] ६,४८,१४; ३३०
मयोभुवः ८,२०,२४; १०५ । १,१६६,३; १६० । ५,५८, २; २९३
मरुतः ५,६१,१-४,११-१६; ३०८-३१७
मरुतां गणाः अथ० ४,१३,४; ४३७
मरुतां सर्गः ५,५६,५; २७९
मरुत्वान् ५,८७,१; ३१८
मर्याः-र्यासः ५,५३,३; २३६ । ५९,६; ३०५ । ६१,४; ३११ । ७,५६,१; ३४५ । १०,७७,२; ४०८
महान्तः १,६,६; २ । ८,२०,८; ८९ । ५,५५,२; २६३ । ८,९४,८; ४०१
महान्तः मह्ना- १,१६६,११; १६८
महिषासः १,६४,७; ११४
मातृयिष्णवः अथ० ७,७७,३; ४४७
मानुषासः अथ० ७,७७,३; ४४७
मायी-यिनः १,६४,७; ११४ । ५,५८,२; २९३
मायी [वरुणः] ६,४८,१४; ३३०
मारुतम् ८,२०,९; ९०
मारुतः गणः १,३८,१५; ३५ । ६४,१२; ११९ । ५,५२, १३-१४; २२९,२३० । ५३,१०; २४३ । ५८,१; २९२ । ६१,१३; ३१४ । ८,९४,१२; ४०६
मारुतं शर्धः १,३७,१५; ६,१० । ८,२०,९; ९० । २,३०,११; १९८ । ५,५२,८; २२४ । ५४,१; २५० । अथ० ४,२७,७; ४४६
मितासः भा य० १७,८४; ४२०
मीळ्हुषः ८,२०,३,१८; ८४,९९
युक्षमाणाः स्वभाम् ७,५६,१३; ३५७
यजत्राः ५,५५,१०; २७४ । ५८,४; २९५ । ७,५७,१,४, ५; ३७०,३७३,३७४
यज्ञवाहसः १,८६,२; १२६
यज्ञियाः-यासः ५,५२,१; २१७ । ६१,१६; ३१७ । ८७, ९; ३२६ । १०,७७,८; ४१४
यतस्रुचः २,३४,११; २०९
ययियः १०,७८,७; ४११
यामं येष्ठाः ७,५६,६; ३५०
युक्ताः इह अथ० ५,२६,५; ४३१
युधा ५,५२,६; २२२
युवा-वानः ८,२०,१७-१९; ९८-१०० । १,६४, ३; ११० । ५,५७,८; २९१ । ५८,३,८; २९४,२९९ । ६१,१३; ३१४ । १,८७,४; १४८
रंहयन्तः अद्रिम्- १,८५,५; १२७
रघुपत्वानः १,८५,६; १२८
रघुष्य-स्य-दः १,६४,७; ११४
रजस्तुरः १,६४,१२; ११९
रथेशुभः १,३७,१; ६
रथेषु तस्थिवांसः ५,५३,२; २३५

मरुतां रथः।

अश्वपर्णाः १,८८,१; १५१
ऋष्टिमन्तः १,८८,१; १५१
पृषत्यः ५,६०,२; ४५०
विद्युन्मन्तः १,८८,१; १५१
वीळुपवयः ५,५८,६; २९७
अनश्वः ५,५४,८; २७४
श्रुताः ५,६०,२; ४५०
सुखाः ५,६०,२; ४५०

हिरण्ययाः ५,५७,१; २८४
*यस्मिन् तस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुत्सु रोदसी ५,५६,८; २८२
रथ्यः १०,७८,५; ४१९
रभिष्ठाः ४,५८,५, २९६
रिशादसः १,३९,४; ३९ । ६४,५; ११२ । ५,६१,१६; ३१७ । ७,५९,९; ३९१ । १०,७७,३,५; ४०९,४११ । वा० य० ३,४४; ४२३ । ऋ० ५,६०,७; ४५२
रुक्मवक्षसः ८,२०,२२; १०३ । २,३४,२,८; २००,२०६ । ५,५५,१; २६५ । ५७,५; २८८ । अथ० ६,२२,२; ४३०
रुचानाः वृष्टिभिः ७,५६,१३; ३५७
रुद्रः एषां पिता ५,५२,१६; २३२ । ६०,५; ४५३
रुद्रस्य पुत्राः ५,५९,८; ३०७ । ६,६६,३; ३३६
रुद्रस्य मर्याः १,६४,२; १०९ । ७,५६,१; ३४५
रुद्रस्य सूनुः-नवः ८,२०,१७; ९८ । १,६४,१२; ११९ । ८५,१; १२३ । ६,६६,११; ३४४
रुद्राः-द्रासः १,३९,४,७; ३९,४२ । ८,७,१२; ५७ । २०,२; ८३ । १,६४,३; ११० । ८५,२; १२४ । १६६, २; १५९ । २,३४,९; २०७ । ५,५४,४; २५३ । ५७, १; २८४ । ८७,७; ३२४ । ६०,२; ४५०

मरुतां पिता।

इष्मी ५,५२,१६; २३२
युवा ५,६०,५; ४५३
रुद्रः ५,५२,१६; २३२ । ६०,५; ४५३
स्वपाः ५,६०,५; ४५३
रुद्रियाः-यासः १,३८,७; २७ । ८,२०,३; ८४ । २,३४, १०; २०८ । ३,२६,५; २१५ । ५,५७,७; २९० । ५८,७; २९८ । ७,५६,२२; ३६६
रूपाणि चित्रा दर्श्या ५,५२,११; २२७
रेवतासः ५,६०,४; ४५२
रोहितः अथ० १३,१,३; ४३३
वज्रहस्ताः ८,७,३२; ७७
वनी १,६४,१२; ११९
वयोवृधः ५,५४,२; २५१
वराहवः १,८८,५; १५५
वरिवस्यन्तः ७,५६,१७; ३६१
वर्षनिर्णिजः ३,२६,५; २१५ । ५,५७,४; २८७
वर्षिष्ठः १,३७,६; ११
ववक्षुः १,६४,३; ११०
वसवः २,३४,९; २०७ । ५,५५,८; २७२ । ७,५६,१७; ३६१ । ५९,८; ३९० । १०,७७,६; ४१२ । अथ० ३, १,२; ४३४ । ४,२७,६; ४४५
वाणं धमन्तः १,८५,१०; १३२
वातत्विषः ५,५४,३; २५२ । ५७,४; २८७
वातस्वनसः ७,५६,३; ३४७
वावशानाः ७,५६,१०; ३५४
वावृधानाः स्तोतॄन् १०,७८,८; ४२२
वाशीमन्तः १,८७,६; १५० । ५,५७,२; २८५
वाश्राः-श्रासः ८,७,३,७; ४८,५२
विचयत् नः कृतम्- [अग्निः] ५,६०,१; ४४९
विचर्षणिः १,६४,१२; ११९
विचेतसः ५,५४,१३; २६२
विजानुषः १०,७७,१; ४०७
विदद्वसुः १,६,६; २
विदितम् अथ० ४,२७,७; ४४६
विद्युद्धस्ताः ८,७,२५; ७०
विद्युन्महसः ५,५४,३; २५२
विधावन्तः १,८८,५; १५५
विपथयः ५,५२,१०; २२६
विपन्यवः ५,६१,१६; ३१७
विप्रः १,८६,३; १३७
विभ्वः १,१६६,११; १६८
विभूतयः १,१६६,११; १६८
विमहसः १,८६,१; १३५ । ५,८७,४; ३२१
विरप्शिनः १,६४,१०; ११७ । ८७,१; १४१ । १६६,८; १६५
विरोकिणः १०,७८,३; ४१७
विश्वे ५,५८,३; २९४
विश्वकृष्टयः ३,२६,५; २१५
विश्वपिशः ७,५७,३; ३७१
विश्वमिन्वाः ५,६०,८; ४५६
विश्ववेदसः १,६४,८,१०; ११५, ११७ । ३,२६,४; २१४ । ५,६०,७; ४५५
विष्टारः यज्ञम् ५,५२,१०; २२६
विष्णुः ५,८७,१; ३१८
विष्पर्धा-स्पर्ध-सः ५,८७,४; ३२१
वीरः-राः-रासः १,८५,१; १२३ । ८६,४; १३८ । ५,६१, ४; ३११
वीळुपाणय १,३८,११; ३१
वृक्तबर्हिषः १,३८,१; २१ । ८,७,२०-२१; ६५-६६

वृद्धाः १,३८,१५; ३५
वृद्धशवसः ५,८७,६; ३१३
वृधन् ६,६६,११; ३४४
वृधासः तमसः हत् १,१७२,२; १९४
वृषा-षाणः ८,७,३३; ७८। २०,९,१२,१९,२०। ९०,९३, १००,१०१ । १,६४,१,१२; १०८,११९ । ७,४;८ १४८ । ७,५८,६, ३८१ । ८,९४,१२; ४०६
वृषखादयः १,६४,१०; ११७
वृषप्रयावा ८,२०,९; ९०
वृषप्सवः ८,२०,७; ८८
वृषव्रातासः १,८५,४; १२६
वृष्टयः २,३४,२; २०० । ५,५३,६, २२९
वेधाः १,६४,१; १०८ । ५,५२,१३ २२९ । ५४,६; २५५
वेधसः असुरस्य ८,२०,१७; ९८
व्यक्ताः ७,५६,१; ३४५
शग्माः अथ० ४,२७,३; ४४२
शम्भविष्ठाः आदित्येन नाम्ना- १०,७७,८; ४१४
शर्धः १,३७,४; ९ । ८,२०,९; ९० । १,६४,१ १०८ । ५,८७,१, ३१८ । ७,५६,८; ३५२
शर्धः मारुतम् १,३७,१,५, ६, १० । ८,२०,९; ९० । २,३०,११; १९८ ।,८ ५,५२; २२४ । ५४,१; २५० । अथ० ४,२७,७; ४४६
शर्धन् ५,५६,१; २७५
शर्धमारुतः ६,४८,१२,१५; ३२८,३३१
शवस् ५.८७,१; ३१८
शवसा आहिमन्यवः १,६४,८,९; ११५,११६
शश्वतः ५,५२,२; २१८
शाकी वा० य० १७,८५; ४२६
शाकिनः ५,५२,१७; २३३
शिक्वसः ५,५२,१६; २३२ । ५४,४; २५३
शिमीवन्तः ८,२०,३; ८४ । १०,७८,३; ४१७
शुचयः १,६४,२; १०९ । ६,६६,४; ३३७ । ७,५६,१२; ३५६ । ५७,५; ३७४
शुचिजन्मानः ७,५६,१२; ३५६
शुभं यान्तः ५,५५,१-९; २६५-२७३
शुभंयात्रा-वानः ५,६१,१३;३१४ । वा० य० २५,२०;४२८
शुभयन्तः ५,६०,८; ४५६
शुभा शोभिष्ठाः ७,५६,६; ३५०
शुभ्राः ८,७,२,१४,२५,२८; ४७,५९,७०,७३ । १,८५,३; १२५ । १६७,४; १७५ । ७,५६,१६; ३६०

शुभ्रखादयः ८,२०,४; ८५
शुम्भमानाः तन्वः ७,५६,११; ३५५ । ५९,७; ३८९
शुशुक्वांसः ५,८७,६; ३२३
शुशुचानाः २,३४,१; १०९
शुष्मी १,२७,४; ९
शूराः १,६४,९; ११६
शुशुवांसः धृष्णुना शवसा १,१६७,९; १८०
शंभुवः ५,८६,४; ३२७
[illegible]याः ५ [illegible]३,४; २[illegible]
श्रुतः १,[illegible]; २
श्रेयांसः [illegible] ये ५,६०,४; ४५२
श्रेष्ठतम [illegible].६१,१; ३०८
श्रोतारः यामहूतिषु ५,६१,१५; ३१६
संवत्सरीणाः अथ० ७,७७,३; ४४७
सखायः ८,२०,२३; १०४ । ६,६६,११; ३२७
सखायः स्थिरस्य शवसः:-- ५,५२,२; २१८
सगणाः अथ० ७,७७,३; ४४७
सजोषसः ५,५७,१; २८४
सजोषसः करम्भेण वा० य० ३,४४; ४२३
सत्यः १,८७,४; १४८
सत्यशवसः १,८६,८,९; १४२,१४३ । ५,५२,८; २२४
सत्यश्रुतः ५,५७,८; २९१ । ५८,८; २९९
सदक्षासः वा० य० १७,८४; ४२५
सद्यऊतयः १०,७८,२; ४१६
सद्यञ्चः ५,६०,३; ४५१
सनाभयः १०,७८,४; ४१८
सनीळाः ७,५६,१; ३४५
सहसस ५,५२,१७; २३३
सहयः ८,२०,२३; १०४ । १ ८५,१; १२३
सप्रथाः अथ० १,२६,३; ४३०
सप्सरासः १,१६८,९: १९१
सबन्धवः ८,२०,२१; १०२ । ५,५९,५; ३०४
सबाधः १,६४,८; ११५
सभरसः ५,५४,१०; २५९ । वा० य० १७,८४; ४२५
समन्यवः ८,२०,१,२१; ८२,१०२ । २,३४,३,५,६; २०२, २०३,२०४ । ५,८७,८; ३२५
समुक्षिताः स्तोमैः ५,५६,५; २७९
समोकसः १,६४,१०; ११७
सम्मितासः वा० य० १७,८४; ४२५
संमिश्लाः इन्द्रे १,१६६,११; १६८

संमिश्लास: तविषीभि: १,६४,१०; ११७
संमिश्ला: श्रिया ७,५६,६; ३५०
सर्गः मरुताम् ५,५६,५; २७९
सर्गाः वर्षस्य अथ० ४,१५,४; ४५८
सस्वः ७,५९,७: ३८९
सहन्तः ५,८७,५; ३२२
साकम् उक्षिताः ५,५५,३; २६७
साकंजाताः ५,५५,३; २६७
सान्तपनाः ७,५९,९;३९ । वा० य० १७,८५;४२६ । अथ० ७,७७,३; ४४७
सा (स) हाः ८,२०,२०; १०१
सिन्धवः ५,५३,७; २४०
सिन्धुमातरः १०,७८,६; ४२०
सुक्रतुः [इन्द्रः] ६,४८,१४; ३३०
सुखादिः ५,८७,१: ३१८
सुजाताः-- तासः ८,२०,८; ८९ । १,८८,३; १५३ । १६६,१२; १६९ । ५,५७,८; २८८ । ५९,६; ३०५
सुजिह्वाः १,१६६,११; १६८
सुदंससः १,८५,१; ११३
सुदानवः १,१५,२; ५ । ३९,१०; ४५ । ८,७,१२,१९, २०; ५७,६४,६५ । ८,२०,१८,२३; ९९,१०४ । १,६४,६; ११३ । ८५,१०; १३१ । १७२,१,२,३; १९५,१९६,१९७ । २,३४,८; २०६ । ३,२६,५; २१५। ५,५२,५: २२१ । ५३,६; २३९ । ५७,५; २८८ । ७,५९,१०; ३९२ । १०,७८,५; ४१९ । अथ० १३, १,३; ४३३ । ४,१५,७; ४६१
सुधन्वानः ५,५७,२; २८५
सुनिष्काः ७,५६,११; ३५५
सुनीतयः १०,७८,२; ४१६
सुपिशः १,६४,८; ११५
सुपेशसः ५,५७,४; २८७
सुबर्हिषः ८,२०,२५; १०६
सुभगासः ५,६०,६: ४५४
सुभ्वः ५,५५,३; २६७ । ५९,३; ३०२ । ८७,३; ३२०
सुमखः-खाः १,६४,१; १०८ । ८५,४; ११६ । ५,८७,७; ३२४
सुमातरः १०,७८,६; ४२०
सुमायाः १,८८,१; १५१
सुमारुतः गणः १०,७७,१,२; ४०७,४०८
सुरथाः ५,५७,२: २८५
सुरातयः १०,७८,३; ४१७
सुवृधः ५,५९,५; ३०४
सुशर्माणः १०,७८,२; ४१६
सुशुक्वानः ५,८७,३; ३२०
सुश्रवस्तमाः ८,२०,२०; १०१
सुष्टुताः विदथेषु १,१६६,७; १६४
सुष्टुभः १०,७८,४; ४१८
सुसदृशः ५,५७,४; २८७
सुसंदृशः १०,७८,१; ४१५
सूरयः ८,९४,७; ४०१ । १०,७८,६; ४२०
सूरचक्षसः वा० य० २५,२०; ४२८
सूर्यत्वचः--चसः ७,५९,११; ३९३ । अथ० १,२६,३; ४३०
सृप्रभोजाः [विष्णुः] ६,४८,१४; ३३०
सोभरीयवः ८,२०,२; ८३
स्कम्भदेष्णाः प्र १,१६६,७; १६४
स्तनयदमाः ५,५४,३; २५२
स्तुतासः ७,५७,६,७; ३७५,३७६
स्थातारः ५,८७,६; ३२३
स्थारश्मानः ५,८७,५; ३२२
स्थिराः ८,२०,१; ८२
स्पन्द्रासः ५,५२,३; २१९
स्पन्द्रासः धुनीनाम्- ५,८७,३०; ३२०
स्योनाः अथ० ४,२७,३; ४४२
स्वजाः १,१६८,२; १८४
स्वक्षः ७,५६,१६; ३६०
स्वतवसः १,१६६,२; १५९ । १६८,२; १८४ । ६,६६,९; ३४२ । ७,५९,११; ३९३
स्वतवान् वा० य० १७,८५; ४२६
स्वभानवः १,३७,२; ७ । ८,२०,४; ८५ । ५,५३,४; २३७। ५४,१; २५० । ६,४८,१२; ३२७
स्वयुक्ताः १,१६८,४; १८६
स्वयुजः १०,७८,२, ४१६
स्वराजः ५,५८,१; २९७ । ८,९४,४: ३९८
स्वरितारः भासाभि: १,१६६,११; १६८
स्वरोचिषः ५,८७,५; ३२२
स्वर्काः अथ० ७,७७,३; ४४७
स्वर्णरः ५,५४,१०; २५९
स्ववसः [अग्निः] ५,६०,१; ४४९
स्वविद्युतः ५,८७,३, ३२०
स्वश्वाः ५,५७,२; २८५ । ७,५७,१, ३४५

स्वसूत्--तः १,६४,११; १११ । ८७,४; १४८
स्वादुसंमुदः अथ० १३,१,३; ४३३
स्वानिनः ३,२६,५; २१५
स्वायुधाः--भासः ५,५७,२; २८५ । ८७,५; ३११
हृम्र्येष्ठाः ७,५६,१६; ३६०
हस्तिनः १,६४,७; ११४
हिरण्यचक्राः १,८८,५; १५५
हिरण्ययाः ५,८७,५; ३१२
हिरण्यरथाः ५,५७,१; १८४
हिरण्यवर्णाः २,३४,११; २०९
हिरण्यवाशी ८,७,३२; ७७
हिरण्यशिप्राः २,३४,३; २०१
ह्रादुनी-नि-वृतः ५,५४,३; १५२

मरुद्देवता-संहितान्तर्गत-निपातदेवतानां

सूची।

ऋत्विजः। १,६,६ ऋग्वेद
इन्द्रः। १,६,८
ऋतुः। १,१५,२
मरुतः क्रीळिनः। १,३७, १-१५
निर्ऋतिः। १,३८,६
मरुत्स्तोता ऋत्विग्गणः। १,३८,१३-१५
ब्रह्मणस्पतिः, अग्निः, मित्रः। १,३८,१३
वज्री [इन्द्रः]। ८,७,१०
अग्निः। ८,७,३६
रुद्राः। १,६४,३
*मरुदिन्द्रविष्णवः। [ऐत० ब्रा० १२,७] १,६४,६
रुद्राः। १,८५,२
*ऋभवः [ऐत० ब्रा० २८,४] १,६४,६
त्वष्टा, इन्द्रश्च। १,८५,९
*इन्द्रामरुतः [ऐत० ब्रा० २८,२] १,८६,१
*अग्निर्मरुत्वान् [ऐत० ब्रा० ३२,८] १,८६,१
रुद्राः। १,१६६,२
रोदसी [मरुत्पत्नी, विद्युत्] १,१६७,५
रोदसी। १,१६८,१
पृश्निः। १,१६८,९
अग्निः। ५,५६,१
मारुतः रथः। ५,५६,८
मीळ्हुषी [=रुद्रपत्नी] ५,५६,९
रुद्राः। ५,५७,१
अग्निः। ५,५८,३
द्यौः, अदितिः, उषसः। ५,५९,८
विष्णुः मरुत्वान्। ५,८७,१
रुद्राः। ५,८७,७
धेनुः। ६,४८,११-१३
धेनुः, इट्। ६,४८,१३
इन्द्रः, वरुणः, अर्यमा, विष्णुः। ६,४८,१४
पृश्निः। ६,६६,१-३
अग्निः। ६,६६,९
मरुतः क्रीळिनः। ७,५६,१६
इन्द्रः, मित्रः, वरुणः, अग्निः,
आपः, ओषधीः, वनिनः,
मरुतः च। ७,५६,२५
देवाः, अग्निः, वरुणः, मित्रः,
अर्यमा, मरुतः च। ७,५९,१
देवाः। ७,५९,२
सान्तपनाः मरुतः। ७,५९,९
गृहमेधासः मरुतः। ७,५९,१०
स्वतवसः मरुतः। ७,५९,११
गौः [मरुतां माता] ८,९४,१-२
मित्रः, अर्यमा, वरुणः। ८,९४,५
इन्द्रः। ८,९४,६
मरुतः, देवाः च। १०,७७,७

मरुद्देवता-संहितान्तर्गत

निपात-देवतानां वर्णानुक्रमसूची।

अग्निः ऋ० १,३८,१३; ८,७,३६; ५,५६,१; ५८,३; ६,६६,
९; ७,५६,२५; ७,५०,१
अदितिः ५,५९,८
अर्यमा ६,४८,१४; ७,५९,१; ८,९४,५
आपः ७,५६,२५
इट् ६,४८,१३
इन्द्रः १,६,८; ८,७,१०; १,८५,९; ६,४८,१४; ७,५६,
२५; ८,९४,६
उषासः ५,५९,८
ऋतुः १,१५,२
ऋत्विजः १,६,६
ऋत्विग्गणः [मरुत्स्तोता] १,३८,१३--१५
ओषधीः ७,५६,२५
क्रीळिनः मरुतः १,३७,१--१५; ७,५६,१६
गौः ८,९४,१-२
गृहमेधासः मरुतः ७,५९,१०
त्वष्टा १,८५,९
देवाः ७,५९,१-२; १०,७७,७
द्यौः ५,५९,८
धेनुः ६,४८,११--१३
निर्ऋतिः १,३८,६
पृश्निः १,१६८,९; ६,६६,१-३
ब्रह्मणस्पतिः १,३८,१३
मरुतः पश्य- 'क्रीळिनः,' 'गृहमेधासः,' 'सान्तपनाः,'
'स्वतवसः'
मित्रः १,३८,१३; ७,५६,२५; ७,५९,१; ८,९४,५
मीळ्हुषी ५,५६,९
रथः मारुतः ५,५६,८
रुद्राः १,६४,३; ८५,१; १६६,२; ५,५७,१; ५,८७,७
रोदसी १,१६७,५; १,१६८,१
वज्री [इन्द्रः] ८,७,१०
वनिनः ७,५६,२५
वरुणः ६,४८,१४; ७,५६,२५; ७,५९,१; ८,९४,५
विष्णुः ५,८७,१; ६,४८,१४
सान्तपनाः मरुतः ७,५९,९
स्वतवसः मरुतः ७,५९,११

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, पुस्तकालय
L.B.S. National Academy of Administration, Library

मसूरी

MUSSOORIE

यह पुस्तक निम्नाँकित तारीख तक वापिस करनी है ।

This book is to be returned on the date last stamped

दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No.

GLSANS294.5211
DAI

125353
LBSNAA

Sans
294.5211
दैवत

अवाप्ति सं० 12893
ACC. No.................

वर्ग सं.
Class No..............

पुस्तक सं.
Book No..............

लेखक
Author...

शीर्षक दैवत-संहिता - अग्निदेवता
Title...

294.5211
दैवत

12893

LIBRARY
LAL BAHADUR SHASTRI
National Academy of Administration
MUSSOORIE

Accession No. 125353

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving